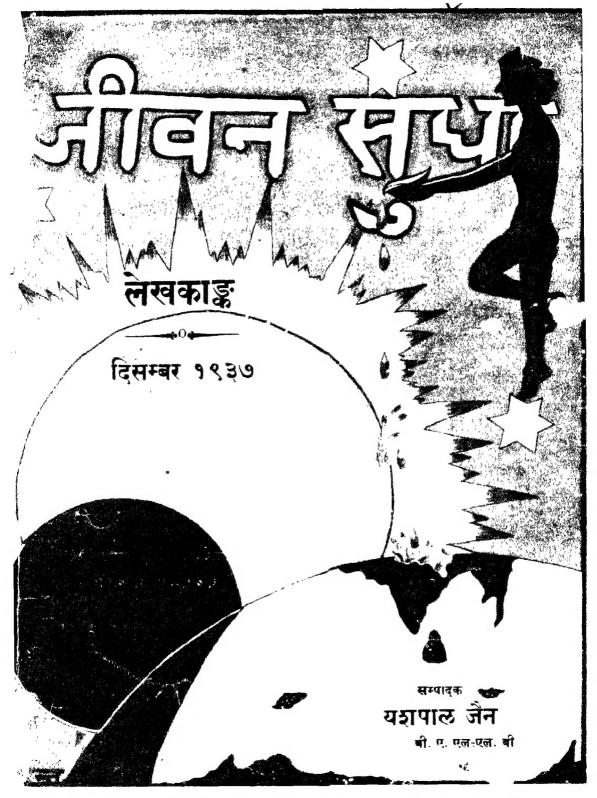
# 



इस ऋडू का मृत्य २)

उत्तरीय भारत की

प्रमुख मचित्र

# जीवन-सुधा

मासिक पत्रिका

के लियं रचनाएं भेजकर

तथा

# ग्राहक बन कर और बना कर

कृतार्थ कीजिए।

वर्ष में दो सुन्दर

# विशेषाक

भी आपको बिना मृल्य भेंट किए जावेंगे

सम्पादक--यशपाल जैन

बी॰ ए०. एल-एल० बी॰

पृष्ठ संख्या ८०

बार्षिक चन्दा ४) साधारमा श्रंक का मृल्य ।</

निवेदक-व्यवस्थापके

जीवन-सुधा

चांद्नी चौक, दिल्ली

Title printed at Popular Press, Delhi.

# जीवन सुधा—

ले-ख-कां-क

विशेषांक

सम्पादक

यशपाल जैन

बी ए, एल-एल, बी,

पृष्ठ मंख्या २६०

-0\*0-

चित्र संख्या ४०

—प्रकाशक—

वृहत् ऋायुर्वेदीय श्रोषध भागडार

जौहरी बाजार देहली

वार्षिक मृत्य ) ४)

इस श्रङ्क का

मृल्य २)

Printed and published प्रकाशक तथा मुद्रक-पंo महाबीर प्रसाद त्रिपाठी बैदा, मोहन प्रेस दिल्ली में मुद्रित

# आवश्यक सूचनाएँ

--

- रचनाएँ काराज पर केवल एक ही श्रोर शुद्ध व साफ तौर पर जगह छोड़- ,र लिखी होनी चाहिए। पैंसिल से लिखी हुई रचनाएँ स्वीकार नहीं की जावेंगी।
- २. श्ररलील रचनाएँ नहीं श्रानी चाहियें।
- ३. श्रास्वीकृत रचनाएँ तभी लौटाई जासकेगी जबिक उनके साथ जरूरी टिकट होंगी।
- ४. समालोचना के लिए पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिये। एक पुस्तक पर केवल स्वीकृति मात्र ही दी जा सकेगी।

सम्पादक— जीवन मुधा चाँदनी चौक दिल्ली

# विषय-सूची

### -2\*2-

	पृष्ठ
(१) प्रभु या दास ? [ कविता ] श्री मैैियलीशरण गुप्त	8
(२) विलम्ब [ गद्य-गीत ] श्री दिनेश नन्दिनी	হ্
(है <sup>भ</sup> ोजलन किविता ] श्रीराम <b>कुमार वर्मा</b>	3
( ४ ) ओमती वर्मा की काव्य-साधना-श्रीप्रतापनारायणसिंह 'पद्म'	8
( ধ ) जीवन-राग [ कविता ] यशपाल, बी. ए. एल-एल. बी	3
(६) उस किनारे [ कहानी ] श्री जैनेन्द्रकुमार	१०
(७) नीति के दोहे—महात्मा भगवान दीन	१३
( ८ ) नये-नये लेखकों से [ कहानी ] श्री प्रभाकर माचवे	87
( ६ ) भावुकता बनाम भावज्ञता—श्री इलाचन्द जोशी	१व
(१०) भूल-भुलैयां [ कहानी ] श्री ऊषादेवी मित्रा	Þα
(११) खिलौना [ कविता ] श्री सियाराम शरण गुप्त	<b>হ</b> ફ
( १२ ) साहित्य में राजनीति का स्थान—आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री	ېږ
( १३ ) कविता और जीवन—एक कहानी [ कहानी ] श्री 'ऋहेंय'	38
(१४) तुलसीदास के समय का हिन्दू समाज-पं. रामनरेश त्रिपाठी	३७
( १४ ) ज्ञान-भूमि भारतवर्ष [ गद्य-काट्य] श्रीएडवर्ड कार्पेटर	88
( १६ ) मेरे ध्येय [ कविता ] श्री तोरनदेवी शुक्त 'तली'	ઝફ
(१७) महापुरुष [ कहानी ] श्री भगवती प्रसाद बाजपेयी	४७
( १८ ) श्री जैतेन्द्र कुमार : एक व्यक्तित्वचित्र—श्री प्रभाकर माचवै	४३
( १६ ) ताण्डव [ कविता ] श्री जयशंकर प्रसाद	ĘŖ
(२०) माँ ने कहा था [ कहानी ] श्री विष्णु	<b>इ</b> ३
(२१) जवाहरलाल जी व महात्मा गाँधी का धर्म-श्री विचित्र नारायण शर्मी	६८
( २२ ) तुम दीपक [ कविता ] श्री तारा पांडे	<b>હ</b> રે
(२३) प्रतिभा का विकास [ कहानी ] श्री निर्मला मित्रा	৬৪
(२४) इंकिलाब [ कविता ] श्री प्रभाकर माचवे	UX

(२४) श्री जयशंकर 'प्रसाद' : महापथ के पथिक—श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	હફ
(२६) जब सो जाता है संसार ! [ कविता ] श्री 'श्रज्ञेय'	58
(२७) लहर [ कहानी ] श्री सुशीला आगा	==
(२८) प्रेमचन्दजी की कला—श्री जैनेन्द्र कुमार	23
(२६) "उठो भारत के बालक वीर" [ कविता ] श्री विमला बाई 'ऋवस्थी'	83
( ३० ) फूल का ऋंजाम [ कहानी ] श्री उपेन्द्रनाथ 'श्रश्क'	23
( ३१ ) माँभी [ कविता ] श्री 'बच्चन'	७ ३
( ३२ ) तीजो [ कहानी ] श्री <b>हरदयाल</b>	33
( ३३ ) 'वच्चन' जी ऋौर हिन्दी काव्य-धारा की नवीन प्रगति !	
श्री योगेन्द्रनाथ भार्गव	<b>tox</b>
(३४) श्रौर नहीं [ कविता ] श्री सोमेश्वरसिंह	११०
( ३४ ) ऋग-परिशोध [ कहानी ] श्री रूप किशोर जैन	888
(३६) पुत्र जन्म-सम्बन्धी प्राम्य-गीतश्री दमयन्ती प्रभाकर	११४
( ३७ ) शाहजहां [ कविता ] श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी	१२२
( ३५ ) जीवन त्र्याहुति [ कहानी ] श्री च्यादर्श कुमारी	१२४
( ३६ ) बन्दे मातरम् श्रीर् मुस्लिम जगत्—श्री गजेन्द्रनाथ पटैरया	१२६
(४०) गीत श्री नेमिचन्द जैन	१३२
( ४१ ) निमन्त्रण् [ कहानी ] श्री शकुन्तला प्रभाकर	१३३
( ४२ ) समाज श्रोर स्त्रियां —रामनारायण श्रीवास्तव 'गरीब'	230
( ४३ ) स्पृति [ कविता ] श्री सुरेन्द्र कुमार श्रष्टाना	१४३
(४४) लेखक की समस्या [ कहानी ] यशपाल जैन	188
( ४५ ) पतंग [ कविता ] श्री इन्दिरादेवी वैद्यशास्त्रिणी	940
( ४६ ) कला के सम्बन्ध मेंश्री राम रतन भटनागर 'हसरत' एम. ए.	242
(४७) अशोक की लाट [कविता] श्री रामचन्द्र तिवारी	EXX
( ४२ ) नियति [ कहानी ] श्री 'श्रनजान'	१४६
( ४६ ) स्त्री-जाति की स्थिति-श्री कमला देवी प्रधान बी. ए.	१६१
(४०) ये कविताएँ [ कविता ] श्री नरेन्द्र एम्. ए.	१६३
( ४१ ) नीलाम [ कहानी ] श्री अन्नय कुमार जैन	१६४
( ४२ ) श्राकांचा [ गद्य-काञ्य ] श्री काली प्रसाद 'विरही'	१६७
(४३) स्वप्न [ कविता ] पं० गोकुलचन्द शर्मा एम. ए	१६८
( ४४ ) बढ़े मियां [ कहानी ] श्री जयन्त	940
( ४४ ) कालाय-तस्मै नमः—साहित्याचार्य पं० गयाप्रसाद शास्त्री	१७६
( ४६ ) गीत-श्री मातादीन भगेरिया	१७६

( ५७ ) प्रेम या पाप [ कहानी ] श्री इन्द्रदेव	१८०
( ४८ ) श्रशांत [ गद्य काव्य ] श्री 'उमेश' चतुर्वेदी साहित्य भूषण, कविरत्न	१=३
(४६) पंत जी की कलाः 'युगान्त' के सम्बन्ध में श्री नगेन्द्र एम. ए.	१८४
(६०) हृदय की गूंज [ कविता ] श्री रत्नकुमारी माथुर	3=3
(६१) रूप-गर्विता [ गद्य-काव्य ] श्री हजारीलाल जैन	850
(६२) राजू [ कहानी ] श्री सागर	१६१
(६३) भूल किवता ] श्री शक्नोदेवी चतुर्वेदी हिन्दी रतन	१६६
(६४) मृत्यु की भेंट [नाटिका] श्री कृष्णचन्द्र मुद्गल 'दुखित'	१९७
(६४) फूल [ कविता ] श्री प्रभात कुमार एडवोकेट	२०१
(६६) भूत का धन [ कहानी ] श्रीरामचन्द्र तिवारी	२०२
(६७) मेरे ऋाँसू [ कविता ] श्री ईश्वरचन्द्र पांडे	२०७
(६८) श्रो देश के युवक और युवतियो !रमेशचन्द्र आर्य	२०८
(६६) प्रणय-रात्रि [ कहानी ] श्री अविनाशचन्द्र पांडेय 'चातक'	२१०
( ७० ) माँ की याद िकविता श्री श्रीनिला पाठक	२१३
( ७१ ) राज कवि मु <sup>.</sup> शी श्रजमेरी—श्री विष्णु	२१४
( ७२ ) सफल प्रेम [ कहानी ] श्री बजरंगलाल सुलतानिया	२१४
( ७३ ) मधुकर की गुंजार [ कविता ] श्री श्रोम प्रकाश शास्त्री	२२१
(७४) सम्पादकीय—चमायाचना, लेखकाङ्क के विषय में, हमारी विशेष कृतझ	ता, पुष्पाञ्जलि
'नये-नये लेखकों से : कविता श्रीर जीवन—एक कहानी : लेखकों की करि	ठेनाइयाँ-क्यों ?
हमारी श्रागामी योजना, हमारी कृतज्ञता श्रौर धन्यवाद	२२३
( ७४ ) जीवनियां	२२४
( ७६ ) विज्ञापन दाताओं से	

•

# देश को वीर देवी



# स्वर्गीया माता स्वरूपरानी नहरू

माता स्वरूप रानी के देहावसान की सूचना पाकर हमें अकथनीय वेदना हुई है। माता जी देश की एक बीर देवी थीं; उनका देश प्रेम ही सबसे बड़ा अनुराग था, उसी के निमित्त उन्होंने अपने सुपुत्र जवाहरलाल जी तथा पित स्वर्गीय पं० मोतीलाल जी एवं अन्य कुटिन्ययों को सहर्प समर्पित कर दिया था—स्वयं भी पीछे न रहीं, स्वतन्त्रता के संप्राम में बहादुरी से लड़ीं और कई बार लाठी प्रहार भी हंसते हंसते सहे।

पं० जवाहरलाल जी तथा उनके कुटुम्बियों के साथ संवेदना प्रगट करते हुये हम ईरवर से प्रार्थना करते हैं कि वे माता स्वरूपरानी की स्वर्गीय पवित्र श्रात्मा को शांति दें श्रीर शांक पीड़ित परिवार को इस श्रपार दुःख के सहने की शक्ति प्रदान करें।

# जीवन-सुधा



म्बर्गीय राजवैद्य, शीतलप्रमाद जी, रसायन शास्त्री ('जीवन-सुधा' के जन्मदाता)



बर्ष ७ }

वि० सम्वत् १६६४, वीर निर्वाण सम्वत् २४६४

दिसम्बर-जनवरी १६३७

# प्रभु या दास?

[ धा मैबिनीशरण गुप्त ]

- # --

युलाता है किसे हरे हरे, वह प्रभु है अथवा दाम? उसे आने का कप्टन दे अरे, जा तृही उमके पाम।

# विलम्ब

[श्री दिनेश नंदिनी ]

परदेशी,

तुम्हारे आगमन में विलम्ब क्यों हुआ ? यौवन की संध्या अलसा गई, जीवन की संध्या में रूप का ज्वार स्थित रहा, कोकिला की मीन ने वसन्त के आगमन को बांध रखा, उषा के लाल कपोलों पर प्रतीक्षा का ज्वार ज्यों का त्यां हुलका रहा। वासी शंगार से वेवसी उगल पड़ी। यौवन को संध्या अलसा गई, न जान भैया मेरे ! तुम्हारे--अ।गमन में विलम्य क्यों हुआ ???

### मतबना !

सखी!

मुझे शृंगारकला में पटुन बना, वे तो मुझे देखते ही मुख मोड़ लेते हैं। वसन्त ! मेरे कौमार्य का किट-त्रध ढोला न करा वे ता मेरी छाया मात्र से भड़क कर दूर भागते हैं;

मनीत ! मेरो कनक देह में अपना श्रावास न बना: उनके मेरे वोच तो अवद्या का अरुगा-चल खडा है !!

# जीवन–सुधा⊷→



श्री मैथिली शरण गुप्त



# मिलन

### [श्री रामकुमार वर्मा]

- %-

भेरो सांमों की धारा। वितने जीवन में बह यत, ्यासकी न कृत किनास 🖠 दुग्व-भ्रन्थकार फैला था, मरुभूमि महुश थी आशा, उस माय तुम्हारी ममृति के---श्रांस् ने दिया मगरा॥ जीवन की कठिन दिलाएं, जब मार्ग रोक लेनी थीं. तब नीचे में किम ध्वनि में-नुमने था मुके प्कारा ॥ इस विस्तृत नभ के नीचे, जीवन-संध्या छाई थी । सब िल हिल प्रतिविभिन्त था-चिर प्रेम-मिलन या नारा॥ याब नया बहुती जावेगी, वह दो लहरों की धारा, में, में न रहूं, साँसों में, बहता हो रूप तुम्हारा॥

# श्रीमती वर्मा की काव्य-साधना

[ श्री प्रताप नागयण मिह 'पद्म' ]

-:::::--कविता शाब्दिक परिभाषा की वस्तु नहीं है। बह हृदय की निर्भरणी है जो स्वच्छंदता पूर्वक हंसती, विहँसती तथा किलकती प्रवाहित होती है। कविता को परिभाषा में परिमित करने के प्रयत्न सैंकड़ों वर्ष पूर्व से हो रहे हैं। किसी ने कुछ कहा तो किसी दूसरे ने कुछ और । इस प्रकार अनेक विद्वानों ने श्रनेक परिभाषाएँ कीं; परन्तु एक के विचार दूसरे से भिन्न ही रहे। इस सभी विद्वानों की परिभाषात्रों में से हिंदी सार के सर्व श्रेष्ठ समालोचक रामचन्द्र जी शुक्ल की परिभाषा को सर्वेत्क्रिष्ट समक्रते हैं। "कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ-संबंधों के संकुचित भंडल से ऊपर उठाकर लोक-सामान्य भावभूमि पर ले जाती है जहाँ जगत् की नाना गतियों के मार्मिक स्वरूप का साजात्कार श्रीर शुद्ध श्रनुभूतियों का संचार होता है। इस भूमि पर पहुँचे हुए मनुष्य को कुछ काल के लिये अपना पता नहीं रहता। वह ऋपनी सत्ता लोक सत्ता में लीन किए रहता है। उसकी अनुभूति सबकी होती है या हो सकती है।" वस्तुत: सच्ची कविता वह है जो एक के हृदय से होकर दृसरे के हृद्य में समावेश कर जावे श्रथवा जिम कविता के पढ़ने से मानव जाति काल श्रीर मीमा की भूल जाती है। सभी कोई देखते हैं गर्वान्नत हिमालय को, कल-कल करती हुई प्रवाहिता जाह्नवी को; परन्तु उसे कवि श्रपनी साधारण श्रांखों से नहीं देखता वरन् श्रपने श्रतर्चत् से देखता है जिसमें परि-कल्पना का समन्वयँ रहता है। श्रतः उसे हिमा-लय में 'तपस्या लीन यती' का आभास होता है श्रीर वह जाह्नवी को प्रियतम की पर-धृलि के

श्रान्वेपण में निरत पाता है। इस प्रकार बाह्य जगत् श्रांतर्जगत में समाविष्ट हो, एक श्रमिनव ज्योति से युक्त होकर हमारे सम्मुख उपस्थित होता है। जिस कविता में हृद्य की सच्ची श्रमुभूति श्रीर कल्पना का सामंजस्य होगा वही स्वान्तः सुखाय के साथ ही लोक-हित में भी समर्थ हो सकेगी। जिन कविताश्रों का निर्माण सिर्फ कला को ही सम्मुख रखकर किया जाता है वह कभी भी, दो-चार व्यक्तियों को झोड़कर, सभी के द्वारा श्राहत तथा सम्मानित नहीं हो सकेगीं।

प्रागैतिहास के ऋध्ययन से पता चलता है कि प्राचीन काल में यहाँ बहुत-सी रमिएयाँ विदुषी तथा साहित्य-मर्मज्ञा थीं। उन्होंने ऋपनी विद्वता से कितने विद्वानों को पगजित किया था। कुञ्ज समय पूर्व भारतीय रमिणयाँ हिंदी-साहित्य-सेवा से विमुख थीं ऋर्थान हिंदी-चेत्र में उनका पदार्पम् नहीं हुन्त्रा थाः परन्तु न्त्राज यह देख कर् प्रसन्नता होती है कि हिंदी-संसार रमणियाँ से मृना नहीं है। उसमें एक से एक बद कर रतन उद्गासित हो रहे हैं। उन्हीं रत्नों में से श्रीमनी महादेवी वर्मा भी एक हैं, जो ऋपनी ऋनुपम काँति तथा निराली सुषमा के कारण उद्दीप्त हो रही हैं। इनका हिंदी-संसार में श्रापना खास स्थान है। हिंदी के सर्वोच स्थान-प्राप्त कवि मुमित्रानंदन जी पंत के उपराँत इन्हीं की परि-गणना होती है। कितने विद्वान इन्हें दूसरी भीरा कहा करते हैं, जो सर्वथा उपयुक्त ही है।

इनकी कविताओं का प्रधान बिपय वेदना, करुणा, लघुता और नश्वरता है। संसार में सुख, दुख सर्वदा से रहते आये हैं। हम किसी के

सुख में न प्रसन्न होते हैं श्रीर न उत्कुछ ही; परन्तु किसी सधा-पीड़ित भिखारी को देख कर, जिस का पेट पीठ में मिलता जा रहा है हमारे हृदय में करुणा का म्त्रोत उमड़ पड़ता है। इससे प्रकट हो जाता है कि दूसरे के दुख से हम दया-द्रवित होकर उसके कष्ट का निवारण नहीं भी करें; परन्तु उसके प्रति सहानुभूति अवश्य करेंगे। यदि कोई किसी मृत्यू का समाचार सुनता है तो ये शब्द उसके हृदय से ध्ववश्य ही निकल पड़ते हैं-हाय ! वह मर गया ! चाहे मृत्यु-मस्त आदमी उससे परिचित हो अथवा अपरिचित । सुख दो व्यक्तियों के बीच में दीवाल के सदृश अ।कर उपस्थित हो जाता है। उसके मद से मानव जाति प्रमत्त हो जाती है और साथ ही ऋधी भी। उसकी आँखों में मद लाल रंग का स्वरूप धारण कर आविर्भूत होता है जिसके कारण वह अपने श्रापको भी भूल जाती है; परन्तु दुख में ऐसी बातें नहीं पाई जातीं । दुख मानव जाति को मानवता की सामान्य अनुभूति-भूमि परसे विच-लित नहीं होने देता। वह सबों को अनुगग के रंगों में अनुरंजित किये रहता है। उस समय उसे कोई पराया नहीं मालूम होता, सब अपने-मे दीख पड़ते हैं। इस प्रकार जहाँ सुख मनुष्य को श्रभिमानी, प्रमत्त तथा श्रम्धा बना देता है वहाँ दुख उसको विनयी, नम्र तथा विचारशील बनाता है। अतएव हम श्रीमती वर्मी को वेदना का स्वागत तथा उसकी कामना करते हुए पाते हैं।

जीवन के दो प्रधान अंग होते हैं—गाना (सुख) श्रोर गेना(दुख)। जब मनुष्य उझसित तथा प्रकृष्टित रहता है उस समय 'गाने' में ही श्रानंद की उपलब्धि होती है। किसी को सुख के दिनों में 'रोना' नहीं भाता। जब मनुष्य का हृद्य व्यथा-पीड़ित तथा विमर्दित रहता है तब उमको गेने से कभी श्रावकाश ही नहीं मिलता। इसी भाव को वर्तमान काल के राष्ट्रीय कि में श्रिलीशरण जी गुप्त ने इन पंक्तियों में श्रीभव्यक्त किया है:-

"रोना-गाना बस यही जीवन के दो अंग।" श्रीमती वर्मा इस विषय की वेदना से व्यथित होकर रोने में ही सुख मानती हैं।

इनकी कृतियाँ (किवता-संग्रह ) निम्नलिखित अनुक्रम के अनुसार प्रकाशित हुई हैं—'नीहार' 'रिश्म' 'नीरजा' और 'सांध्य गीत'। 'सांध्य-गीत' का प्रकाशन अभी हाल में ही हुआ है। ये पुस्तकें एक-से एक बढ़कर हैं। 'नीहार' में सूदम परिकल्पनाओं तथा उद्भावनाओं की अधिकता है। इसमें सूद्म कल्पनाओं का कुशलता से समावेश हो सका है। 'रिश्म' की कविताओं में गम्भीर दार्शनिक भावनायें पाई जाती हैं। 'नीरजा' में श्रीमती वर्मा की अलंकरण प्रियता और प्रकृति की सुपमा के प्रति विह्वलता के भाव परिलक्तित होते हैं। और 'सांध्य-गीत' में सर्वोत्कृष्ट सरस, सुस्निग्ध और मधुरतम गीतों का संग्रह है।

अर्वाचीन काल में ऐसा कोई भी ज्ञेत्र नहीं है जिसमें किसी न किसी रूप में 'बाद' की उत्पत्ति न हुई हो ? यदि हम इस युग के। 'वादों' का ऋाविर्भाव काल' कहें तो कोई अत्युक्ति न होगी। हिन्दी किवतात्रों में भी बहुत-से 'वादों' की सृष्टि हुई है । उसमें झायावाद, हृदयवाद, निराशावाद, हाला वाद, आदि प्रमुख हैं। अब यह विचारणीय है कि श्रीमती वर्मा की कविताश्रों की परिगणना किस'वाद' में की जानी चाहिए। कोई किन कविता की रचना 'वाद' को सम्मुख रखकर नहीं फरता। यदि करता है तो उसकी कविता साम्प्रदायिकता के कारण लहय-भ्रप्ट हो जाती है। किवता हृदय का उद्गार है। वह स्वयं ही कवि-हृदय से धारा के समान फुट पडती है। कविता मस्तिष्क की वस्तु नहीं, हृदय की है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो गया कि किसी भी कवि की सभी कविताएं एक ही 'बाद' के श्रंतर्गत परिमित नहीं हो सकतीं। श्रीमती वर्मा की ऋधि-कांश कविताएं 'हृदयवाद' के अन्तर्गत आ सकती हैं। हृदयवाद के विषय में कुछ कहने के पहले

जीवन सुधा

हायाबाद क्या है, यह जान लेना भी आवश्यक हो जाता है। कवीन्द्र रवीन्द्र के शब्दों में कहेंगे— "The Poetry of mysticism might be defined on the one hand as a temperamental reaction to the vision of reality, on the other as a form of a prophecy".

भाव यही है कि छायाबादी किनता एक श्रोर तो सत्य के स्वरूप की श्रोर निर्देश करती है दूसरी श्रोर एक भविष्यबाणी का रूप प्रहण करती है। एक श्रोर उसकी छाया में सांत का मिलाप श्रमन त से होता है श्रीर दूसरीश्रोर वह एक श्रमर सन्देश का बहन करती है। \*जो वस्तु श्रथबा विषय हृदय को बहुत ही प्रिय है, सुखद है तथा श्रानन्द स्रोत में बहाने वाला है, उसकी परिकल्पना तथा उद्भावना ही हृदय बाद की सृष्टि करती है। इसमें किन की प्राश्चितक-सुपमा के प्रति जिल्लास-पूर्ण-सरस तथा स्निग्ध कल्पनायें रहती हैं। इनकी किनताएँ हृदयबाद की तो हैं ही; परन्तु इसमें करुण भावों का समावेश हुआ है, जो इनकी विशेषना है।

इस संसार में दुख का ही विस्तृत साम्राज्य है। यहाँ मुख के दशन दुर्लभ हैं। यहां वेदना का श्रकाँड ताँडव श्रार पीड़ाश्रों का भीषण हाहा-कार मचा हुश्रा है। इस चतुर्दिश दुखमय संसार के बीच रह कर तथा उसका श्रतुभव कर कवि-यित्री का जीवन भी दुखमय हो गया है। उनकी श्रांखों के सम्मुख पोड़ा ही पीड़ा हिटिगोचर होती है। श्रतण्य श्राप उसी में प्रियतम को दूदनी है। यदि श्राप का प्रियतम मिल भी गया तो भी वे श्रपनी संगिनी पीड़ा को नहीं विस्मरण् करना चाहती। श्राप प्रियतम में भी पीड़ा की खोज करेंगी।

> भ्यत संघ नहीं होगे यह मेरे प्राणा का काल, तुस्को पील में दृष्टा नुम में दुई निष्याहा ।

दिसम्बर

कितनी बेदना है इसमें । श्रीर कितनी है करुणा से भोत श्रोत! कवियित्री की सारी संगत्ति वेदना है, जीवन बेदना है, श्रीर उच्छ्यास भी है वेदना से परिपूर्ण।

श्राप श्रपने श्राँसू का हार गूँथती हैं, किसकी उपहार देने के लिए ? जिसने दुख को पाला है, जो पीड़ा को सुगन्धित चन्द्रन के सदश समभता है, जिसे तृफानों की छाया में ही श्रालिंगन का बोध होता है, जिसे जीवन की पराजय में ही विजयोद्धास की प्राप्ति होती है। देखिए, निम्न लिखित पंक्तियों में पर-दुख-कातरता की कैसी श्रच्छी व्यंजना हुई हैं—

"प्रिय िसते दुख पाता हो ! जिन प्राणों से जिपटा हो, धाड़ा सुर्शात चन्दन—मी; त्फानो को खाया हो जिसकी प्रिय आर्थितन—मी, जिसकी जीवन का हारें ही जय के अभिनन्दन—मी, बर दी यह भेरा आस् उसके उर की माना हो !"

वेदना की चे.टों से, पीड़ा से, कसक से तथा जलन से जो सुख की प्राप्ति होती है वह किसी दूसरी वस्तु से सुलभ नहीं। पीड़ा और वेदना की ज्वाला में घुल-घुल कर जलने में जैसा मधुर आनंद मिलता है, क्या यह और कहीं संभव है ? आपको भी वेदना की 'दीवानी चोटों' के मधुर प्रहार सहने में ही सुख मिलता है—

> "मेरी आहें साती हैं इन क्षोटों की कोटो में मेरा मर्वस्व द्विरा है इन दोबानी चोटो में।"

श्रीमनी वर्मा में वेदनामय गीतों की रचना करने की श्रद्भुत समता है। श्राप प्रियतम से मिलना चाहती हैं तो वेदनामयी माधना के ही द्वारा । आपके जीवन का सार वेदना ही है । देखिए निम्नलिखित पंक्तियों में करुणामयी साधना को-

अस्पुर-पथुरं भेरे दीयक जल !

युग-युग प्रति-दिन, प्रतिचल, प्रतिपतः

प्रियतम का पथ आलोकिन कर !

सीरभ पैजा विपुल घून बनः

मृदुन मोम-सा धुन रे मृदु तनः

रे प्रकाश का सिंधु अमरिमितः,

तेरे जीवन का अस्पु गण-गन !

पुलक-पुलक भेरे दीयक जल !"

साहित्य और दर्शन का घनिए सम्बन्ध है। उब कोटि के साहित्य में दार्शनिकता का अस्तित्व अवस्यमेव रहता है। सृत्म हिए से देखने पर यह स्वतः प्रकट होजाता है। श्रीमती वर्मा की किवता में जगत, जीव और प्रका की सात्विक विवेचना भी पाई जाती है। जिस प्रकार अशु कण का अस्तित्व नेत्रों में तथा जलकणों का अस्तित्व वारिधरों में वर्तमान है, उसी प्रकार असीम का अस्तित्व असीम के वहिर्गत स्थतों में नहीं है— उसी में है। इस भाव की अभिव्यक्ति 'मेरा पता'शीर्षक नामक किवता में स्पष्ट कपेण हई है:—

"क्या पता देते धनों को बारि-बिन्दु अमार ? क्या नहीं दृग जानते निज आंखुओं का भार ?'' अपना परिचय और इतिहास देते हुए वसीजी फहती हैं—

भै नीर भरी दुख का बदली विस्तृत नस का थाई काना भैरान कमा अपना नोना, परिचय इतना इतिज्ञास यहो उन्हीं चल थी भिट आए चली, भै नीर भरी दुख का बदला।

ब्रह्म (प्रियतम) के वियोग के कारण भव्य कवियों की स्थात्माएं सर्वदा उद्धिग्न ग्रहा, करती थीं। उनकी स्थात्मायें व्याकुलता का शिकार बन ग्रही थीं। उन भक्त कवियों में से

कुछ के प्रियतम निराकार थे, कुछ के साकार ! श्रीमती वर्मा भी अपने प्रियतम की उपासना वियोगिनी के सहश करती हैं। उनके प्रियतम निराकार नहीं साकार रूप में परिवर्तमान हैं:--

> "मुने न जाना श्रति ! उमने जाना दन श्रांखों का पानी; मैंने देखा उमे नहीं पदध्यनि है केंद्रल पहचानी। मैरे मानस में उसकी स्मृति भी तो स्मृति बन श्राता; उसके नीरब—मन्दिर में काया भी खाया होजाती; स्थों यह निर्मम खेल सजीन ! उसने मुक्तसे खेला है ?"

लित कला के पांच भेदों में से काव्य भी
एक है। यहाँ हम इसका 'संकुचित' अर्थ ले
रहे हैं। काव्य की परिगणना सर्व श्रेष्ठ कलाओं
में होती है। काव्य कला और संगीत कला का
अन्योन्याश्रय का भाव तो है ही, साथ ही
चित्रकला का संबंध भी कुछ कम नहीं है। जिस
किवता में मधुर हृदय-पशी तथा सरस कल्पनाएं
रहती हैं और साथ ही जिसके पढ़ने से हमारे
नेत्रों के सामने भाव चित्र रूप में प्रकटित होते
हैं, उमकी परिगणना सर्वोत्हृब्द किवता में होती
हैं। निम्नलिखित पक्तियां में प्रातःकालीन
अनुरंजित आकाश, सुगंधित बायु का बहना,
यहाँ के पल्लब का हिलना, बाल-तितली का उड़ना,
आदि भावों की बड़ी सुन्दर व्यंजना हुई है—

" मीरम का फैला केश-जात करता समीर-परियां विद्वार; गीतो केसर मद स्म-भूम, पीते तितला के नव जुमार; समीर का मथु-मंगीत छेट्-देते है हिला पहल प्रतान!"

इस के पढ़ने से प्रातःकाजीन नैसर्गिक सुषमा का चित्र-सा खिच जाता है।

इस विश्व में मानव जाति जितने कर्म करती हैं उन सबों के श्रंतर्गत उसका स्वार्थ सिमहित रहता है स्वार्थ का व्यापक रूप ही परमार्थ है। विश्व-वैद्य बापू जी का स्वार्थ देश-सेवा और जनता का कल्याण करना ही है। हम कह सकते हैं कि पूज्य गांधी जी ने परमार्थ (परमार्थ शब्द को नहीं, उसके द्यर्थ को ) को ही स्वार्थ बना लिया है। श्रीमती वर्मा अपने ऋाराध्य की श्चर्यना इसलिये नहीं करती हैं कि उन्हें श्रमरता की प्राप्ति हो, बल्कि ऐसा करना उनका कर्तव्य है। यहाँ किसी का यह कहना कि श्रीमती वर्मा स्वार्थ-रहित होकर ऋपने प्रियतम की प्रार्थन। करती हैं, ग़लत होगा। आप में सूरमरूप अंतर्निहित है, अमरता होने पर मनुष्य के पास जो एक मर मिटने का अधिकार रहता है, वह सदा के लिये जाता रहता है। श्रतएव श्राप श्रपने मिटने के श्रिध-कार को सुरक्तित रखना चाहती हैं, खोना नहीं चाहती-

(क्या श्रमरों का लोक मिलेगा तरी करुए। का उपहार ? रहने दो हे देव ! झरे यह मेरा मिटने का श्रथिकार ।"

जब कोई श्रपने कर्म में श्रनवरत निरत रहता है तब वह फल की प्राप्त के श्रानंद का उपभोग उस साधना में ही करता है। वह प्रत्येक स्तरा श्रानंदोहिंध में डुबकी लगाता रहता है। जब उसका श्रमीष्ट सिद्ध हो जाता है तो उसे पुन: श्रानन्द की उपलब्धि नहीं होती। फल की प्राप्त के कुछ समय के श्रनंतर ही श्रानन्द विलीन हो जाता है। हम कह सकते हैं जो सुख प्रयत्न या साधना में प्राप्त होता है वह फल की प्राप्ति पर सम्भव नहीं। श्रीमती वर्मा श्रपने प्रियन्तम से प्रार्थना करती हैं कि इस हितिज के उस पार सिक्षकट ही रहो। श्राप प्रियतम की प्राप्त के लिये प्रयत्न करती हैं; परन्तु प्राप्ति की कामना

से नहीं; बल्कि आप सदा प्रयत्नवान् ही रहना चाहती हैं:—

> "इस श्रचल चितिज—रेखा से, तुम रहो निकट जीवन के, पर तुम्हें पकड़ पाने के सारे प्रयत्न हों फीके।"

इस संसार के सारे कार्य श्राशा पर ही निर्भर होते हैं। यदि किसी को एक बार किसी काम में सफलता नहीं मिली तो वह सोचता है कि दूसरों बार श्रवश्य सफल होडँगा। बिना श्राशा के कोई कार्य हो ही नहीं सकता। श्रीमती वर्मा जी जीवन-रूपी-पात्र में दुःख की वारणी से परिपूर्ण प्याली को भरकर कुछ देर तक प्रतीज्ञा करती हैं कि किसी श्रसीम शक्ति के स्पर्श से जीवन सफलीभूत हो जायगा। उस प्याली में मुख-दुख के युद-युदे कैसे उठते हैं श्रीर विलीन हो जाते हैं—

"मुख-दुख को नुद्-नुद् सीलिइंगं बन-बन उसमें मिट जातीं, बृंद-यूंद होकर भरती बह, भर कर छलक-छनक जातीं।"

नव रसों में से हम करुण रस को ही मर्व श्रेष्ठ मानते हैं। कितने विद्वान शृंगार-रस को 'रसराज' की उपाधि देते हैं, पर हम उनसे सहमत नहीं हैं। करुण रस की श्रेष्ठता के विषय में दो शब्द कहरेना अनुचित न होगा। यहां हमारा विचार करुणा रस का विश्लेषण करना नहीं है। सिर्फ दो-चार विद्वानों के विचारों को उद्धृत कर देने से ही हमारे विचार की पुष्टि हो जायगी! आदि कवि चाल्मीकि के हदय से कींच पत्ती के बध की व्यथा से आदि श्लोक "मा निपाद" उद्गार के रूप में प्रकट हुआ था। इसके उद्धृत होने का एक मात्र कारण करुणा ही है। सभी विद्वान इसी श्लोक को पहिली किवता मानते हैं। इधर हिंदी-संसार के किवत सुमित्रा नन्दन जी पंत भी कहते हैं—

"बियोगी होगा पहला कवि, भाह से उपजा होगा गान; उमड़कर भांखों से चुपचाप, बही होगी कविता भनजान ॥"

इसी भाव की ऋभिव्यक्ति शैली कवि की निम्नलिखित पंक्तियों में हुई है:—

"Our sweetest songs are those That tell of suddest thoughts."
जापकी रचनाएं अंगरेजी की जालंकारिता, भाषा शैली तथा भाषनाओं से प्रभावित हुई हैं। जापकी कविताओं में स्निग्धता, सरसता, सरलता सजीवता तथा स्निग्ध प्रवाह है। कविताओं में अंतर तम के निगृद्दाम भाषनाओं की बारीकी

से व्यंजना हुई है। आपकी कविताओं के प्रत्येक शब्द से सुषमा, सौष्ठव तथा अंतः प्रदेश की मधुरतम आशा टपकी पड़ती है जो सुझान-बारि से अभिसिंचित है। किवताओं की प्रत्येक पंकि हृदय से निकली हुई प्रतीत होती है। भावों में मार्मिकता और सुबोधता है, उलक्षन तो लेश-मात्र भी नहीं। आपकी प्रायः सभी कविताएं मधुरता की मधुर धारा से परिप्लावित हैं। आपकी भाषा भी भाव के अनरूप ही है। यह प्रवाह युक्त, संयत तथा परिमार्जित रूप में प्रयुक्त हुई है। भाषा पर आपका अधिकार है आप उसे अपनी इच्छानुसार जिधर चाहती हैं, उधर मोइ लेती हैं।

# जीवन-राग

[ यहापाल, बी, ए, एल-एल, बी, ]

<del>--</del>\*--

सुनादे एक बार फिर आज— प्रिये ! जीवन का भूला राग |

चिर—परिचित बीखा ले फिरसे, टुटे तार भिला कर भट से,

> तारों में भाच्छादित नभ में, गूंब उठे तब राग ।

कान्पित स्वर में गाए तू जब, जग की सोती पीडा भी तब—

> मांगड़ाई ले उठे भाह भर, भौर करे चीत्कार ।

शिथिल, क्लांत, सूखा, मेरा तन, शोकातुर, चिन्तित, व्याकुल, मन

> धिकत हरय भी सिहर छडे, हो भाषण हाहाकार ।

सुनादै एक नार फिर आज---प्रिये ! जीवन का भूला राग |

### कहानी-

# उस किनारे

[श्रां जैनेन्द्रकुमार]

में क्यों अपनी कहानी कहने चली हूँ, मैं नहीं जानती। पर यहाँ इतनी ऊँचाई पर चीड़ के दरहतों से घरे अस्पताल में पड़े-पड़े कभी बहुत सूना लग आता है। एक ऐसा खोखलापन चारों ओर से मुझे घेर लेता है, कि लील ही लेगा। समय खाली रहता है और उस समय की शून्यता पर अपने इस तमाम जीवन की व्यर्थता यहाँ से वहाँ तक मुझे लिखी जान पड़ती है। उसको सामने देखकर जीना मुश्किल होजाता है। ऐसी ही घड़ी में मैं सोच बैठी हूँ कि चलो अपनी कहानी ही लिखें।

खुद ही सीचती हूं कि इसमें किसका क्या लाभ होगा ? लाभ कहीं कुछ भी नजर नहीं त्राता है। जो कहती हूं, क्या वह कभी छपेगा भी ? शायद नहीं छपेगा—पर छपने न छपने के बारे में मेरे मन में विचार भी कुछ नहीं है। फिर क्यों मैं कहानी कहती हूं, ठीक ठीक जानती नहीं। इतन। जानती हूं कि ऐसे मेरा समय कुछ तो कटेगा। नहीं तो वह नहीं कटता है, उल्टे काटता है।

श्रस्पताल में हूं। श्रकेली हूं, बस नीकर एक साथ है। बरुचे दूर हैं श्रीर वह—वह भी दूर हैं। पर उनकी बात, उनकी याद करते डर होता है। किस मुंह से वह बात करूं! श्रपने ही हाथों से मैंने उन्हें दूर कर दिया है। श्रपने ही हाथों मैंने श्रपना श्रभाग्य बनाया है। कभी मेरी मोने की गृहम्थी थी। श्राज वह सब कुछ उजड़ गया है।

व्यपने ही कमीं मैंने उजाड़ा है। और आज

यद्यपि मैं जानती हूं कि मुझे छोड़ श्रीर कुछ भी नहीं बिगड़ा है, बही गृहस्थी श्राज भी लहलहाती हुई जुड़ सकती है। पर नहीं, मैं उसके योग्य नहीं।

डाक्टरों ने जान लिया है कि रोग काफ़ी श्रागे बढ़ गया है, थर्ड स्टेज है। फिर भी यहां के भले डाक्टर को आस है और वह कहता रहता है कि देखो, ख़ुश रहना चाहिये, चिन्ता नहीं करनी चाहिये, आदि । बेचारा डाक्टर ! वह मुझ खुश रखता है, बहलाने की बातें करता है, हर प्रकार से वह मुभ पर महरवान है। जाने कैसे मेरे नाम के गौरव के प्रति उसमें संभ्रम है, मेरे प्रति उसका बहुत उदार भाव है-पर बिचारा डाक्टर क्यों नहीं जानता है कि मुभ, जैसी के जीने में अब अर्थ शेष नहीं रह गया है। मुक्त में भी कुछ रोष नहीं रह गया है। ऋायु मेरी ऋभी ३०-३२ वर्ष की है-ठीक है। लेकिन इतनी आयु भी मेरे लिए क्यों बहुत नहीं है। आज तो यही मुझे पता नहीं चल पाता है कि विधाता ने इतने वर्षों का जीवन देकर भी मुझे यहां क्यों भेजा ? मैंने क्या किया ? किस बल पर मैं अब और श्रधिक जीने की इच्छा कर सकती हूं ?

बरामदे में खाट बिछ जाती है। मैं लेटती हूं तब देखती हूं-सामने सिर्फ फैलावट है; न मकान है; न मनुष्य है; न कोई श्रीर है-केवल दृश्य सामने है। जैसे समन्न बस एक चित्र फैला हो, बीच में बाधा कोई न हो। कुछ ही दूर पर धरती ढल गई है। वहां ढाल पर सटे-सटे बहुत से चीड़ के दरस्त हैं। धरती वह ढलती हुई जाने फिर कहां श्राथाह में पहुंच गई है। उसके श्रागे मैदान है, यों बिछा है जैसे प्रतीज्ञा में हो। वहां कहीं सके द पीले मकानों के चिन्ह भी दीखते हैं। कहीं हरियाली इकड़ी होगई है, कहीं मटमैला रंग भी फैला है। पर दूर होते होते यह सब कुछ मानों एक धुंधली रेखा में सिमट कर समाप होजाता है। किर क्या रह जाता है, क्या रह जाता है?

बरामदे में खाट पर पड़ी-पड़ी इस अनन्त दूर तक बिछे चित्र को देखती रहती हूं। इसकी समाप्ति कहां है ? जहाँ मेरी आंखों की दृष्टि समाप्त है, वहां वह भी समाप्त है। अन्यथा वह अनन्त ही है। इस चित्र के विस्तार में सभी कुछ का स्थान है। मेरा भी कोई स्थान होगा, काली बूंद की भी कोई जगह होगी। वह बूंद अपने आप में तो काली ही है फिर चिधाता जाने इस निरंतर बनते हुए और बिगड़ते हुए, फिर भी सदा मौजूद इस चित्र पर मेरी जैसी काली बूंद के कालेपन से किस आभ-प्राय की पूर्ति होती है ? ओह, वह अभिप्राय मेरी समम में कुछ भी नहीं आता है। होगा अगर वह कुछ, तो होगा। आज तो में उस कालेपन से बहद अधिक त्रस्त हूं।

जान गई हूं, मैं धीमे-धीमे किनारे लग रही हूं। किनारे के उस पार क्या है ? कीन जाने। पर जोभी है, अधाह है। उसी अधाह, अगाध, अनन्त के किनारे लगती जारही हूं। कोई यहाँ कुछ कहता है। अनुमान असंख्य हैं। वे सभी झूठ और सभी सच हैं। झूठ इसीलिए कि अनुमान हैं, सच भी इसीलिये कि आनिर अनुमान तो हैं ही। उस किनारे के पार जो गम्भीर वास्तविकता है-पर नहीं, उसकी बात नहीं सोचूंगी। मुझे ख्याल रखना चाहिये कि मेरा स्वास्थ्य खराब है। मैं खांसी की ऋणी है कि यह वार-गर जल्दी-जल्दी आजाती है और

मुझे याद दिला देती है कि मैं एक तुच्छ रोगिगी स्त्री हूं।

में तुरु हूँ, रोगिणी हूं—सचमुच और कुछ नहीं हूं। फिर भी बक्त काटने के लिये यह कहानी कहती हूं। प्रच कहूं तो मुक्त में लोभ बना है कि कभी यह कहानी छपे और लोगों की आंखों में आवे। ऐसा हुआ और लोगों ने मुक्तपर करणा की तो में आशा करती हूं कि अपने परलोक में मुझे कैसे वह सांत्वना पहुंचेगी। परलोक में मुझे कैसे वह सांत्वना पहुंचेगी। परलोक में मुझे कैसे वह सांत्वना पहुंचे जायेगी, यह जानती तो नहीं हूँ। शायद नर्क बहां मेरे लिये तय्यार हो। फिर भी आज यह कहानी लिखते समय मेरे मन में अपने अज्ञात और अनिश्चत पाठक की करणा पाने की साध तो अवश्य ही है। कहते हैं परलोक की पूँजी धर्म है। सो धम तो मैं कुछ नहीं जानती। पर इस प्रकार की करणा भी वहां काम आती होगी, ऐसा मेरे मन को लगता है।

कोई हैं जो अन्तर्यामी हैं। वह कहाँ हैं ? क्या उनका स्वरूप है ? यह मैं कुछ भी नहीं जानती हूं—जानने की चाहना भी नहीं होती है। पर वह अन्तर्यामी तो मेरे भीतर का सब कुछ जानते हैं। उन्हें पाऊँ तो चरणों में निवेदित होकर कहूँ – तुम भला क्या नहीं जानते हो। तब जो कुछ मैंने किया उस पर कैसे तुम जा सकते हो ? क्यों कि जो कुछ भी मैं हूं, सबकी सब तुम्हारे आगे प्रगट हूं।

आज ही डाक से एक चिट्टी आई है। जवाब भी लिख चुकी हूं। चिट्टी स्त्रामी की थी। लिखा था कि 'तुम्हारी हालत का पता तुम्हारी माता जी से मिलता रहता है। एक बार तुम्हें देखने आना चाहता हूं। उसके लिये तुम अनुमित दो तो पत्र लिखना। अगर यह सोचो कि मुझे नहीं आना चाहिये तो पत्र मत लिखना।' यह भी लिखा था कि 'सुखदा, देखो, पैसे के, कारण किसी प्रकार का कोई कष्ट मत उठाना। मैंने जवाब में अपनी माता को लिख दिया है कि

जीवन सुधाः

खगर उनका पत्र काये तो लिख देना कि मेरी हालत ठीक होती जा रही है, उनके आने की जरूरत नहीं है। और उन्हें यह भी लिख देना कि खगर उनसे बने तो बहां मुझे वह पत्र न भेजा करें।

दोपहर को जब डाक छाई थी तभी जबाब में मैंने माँ को खत लिख दिया था। अब भी इस तीसरे पहर जब कि अकेले सुनसान में काराजों को सामने लेकर अपनी कहानी लिखने बैठी हूं, तब भी मालूम होता है कि हतभागिनी में ऐसा ही जवाब देने के योग्य थी। मुमसे क्यों नहीं हो सका कि अपने पति से खुलकर लाख-लाख बमा मांगलूँ, और लिख दूँ कि तुम तुरन्त आजाओ, जिससे कि तुम्हारे चरणों की घूल अपने माथे में लगाने को पासकूं नहीं तो हर घड़ी में अन्त की छोर सरकती जा रही हूँ!—नहीं, मैं वह कुछ भी नहीं लिख सकी। आज इसी सेतो अत्यन्त अवश होकर अपने अभाग्य की कहानी कहने बैठी हूं, अन्यथा मन की पीड़ा सही नहीं जाती है।

दो बरस, शायद तीन बरस, बाद यह चिट्ठी उनकी मुझे मिली हैं। यह दो-तीन बरस किस भांति वह बिना चिट्ठी डाले रहे होंगे, क्या मैं यह नहीं जानती हूँ ? श्रीर श्राखिर इन बड़े-बड़े तीन बरसों के बाद किस श्रमझ सहिष्णुता की सामर्थ्य के कारण यह पत्र लिख सके होंगे, क्या यह श्री मैं नहीं जानती हूं ? लेकिन श्राज मैं इसी योग्य हूं कि मां की मार्फ त उन्हें लिखा दूं कि

नहीं, कृपा है; मेरे बारे में सोचने का कब्ट जाप न कीजिये.....

......पर अब आगे न लिखूंगी। थक गई हूं। इस तरह लिखती ही जाऊंगी तो कहानी भी आरम्भ न होगी,—मन की व्यथा ही निकलेगी। अब झोड़ती हूं। कल से कहानी शुरू करूंगी— बाहर डाक्टर भी आते मालूम होते हैं.....।

\* \* \*

डाक्टर के पैरों की आहट मानों सिर पर ही आगई। सुखदा ने भटपट काराज छिपा दिया। वह तुरन्त खड़ी हुई कि जाकर खाट पर लेट जाय। वह कुछ घबरा रही थी। पलंग की ओर बढ़ी—पर डाक्टर सामने थे। सुखदा ने अनायास कहा, 'ओह!डाक्टर!'

डाक्टर ने साभिवादन पूड़ा— "कहिये, क्या होता था ?" "कुछ नहीं, कुछ नहीं—"

"कुछ नहीं ही सही, पर देखिये इस वक्तृ दिल और दिमाग को आराम मिलना चाहिये।" सुखदा ने विलक्तण भाव से मुस्करा कर कहा

"वहीं तो मिल रहा है, डाक्टर।"

कह कर वह थकी हुई सी डाक्टर के सामने ही पलंग पर लेट गई। बोली,

"इस करवट लेट सकती हूं ?"
"ज़रूर लेट सकती हैं।"
"तो सामने आप बैठिये। कुर्सी ते खीजिये।"
डाक्टर बैठ गये और यथावश्यक बातें होने
लगीं।

# गीति के दोह

महात्मा भगवानदीन

-- 0 --

हित चिन्तक को रिपु समभा, मूरल देय निकार, सांप सप्रभ्न श्रम्था तजे ज्यों पुष्पों का हार ॥ १ ॥ दाता बहु जो दान दे, खुद गुरीब घर जाय, पबन जाय उथीं मूक की नित प्रति गंध सुंघाय ॥२ ॥ वर्षों जीवित रह मरें इक ज्ञाण ज्योति दिखाय, ज्यों वर्षों बाह्य दिस इब च्या में उड जाय ॥ ३ ॥ रिपुको को संकिस तरह रिपुका रिपु में आप। बिजली रिपुता पर पड़े, रिपुता बेशक पाप ॥ ४ ॥ मन को ठण्डा रख सके, वस दे दान झर्मार, जैसे रिजते घड़े में, ठण्डा रहता नार ॥ ५ ॥ रिपु पुचकारे नृप इसें, रिपु इंडित अपनाय. श्राक जवास जराय ज्यों, जल कण दूह उगाय ॥ ६॥ उपजे रहे, विनाश हो, शेय श्रवस्था तीन. नहाा, विष्यु, महेरा कह, रहें प्रसन्त प्रवीसा ।। ।। कलयुग के राजा सभी, हाड़ मांस की मूर्ति, दर्शन दं सकते हमें, वे न सको स्कूर्ति ॥-५॥ देव बना पाषाण के, जो पूज वह मूर्ज, लगे तोड़ने जो अन्हें, सवा मूर्ख वह मूर्क ॥ ९॥ खट्टी बातें जो करें, दब माठे बतरांय, मीठे होते पाल दब, श्राम जो अति खटरांय ॥ १०॥ भारतीय, भन्दर न कुछ बाहर गोल मठील, जैसे पीड़ चुनार की मोटी, भोतर पोल ॥ ११ ॥

दबान छं, टेको, बड़ा तुम को देय दबाय, टकराता तरु की पवन, पर्वत से दकराय ॥ १२ ॥ सुजनों तक में दुष्ट मिल देता फूट कराय, यथा फिटकरी दूध गिर, नीर चीर बिलगांच ॥ १३॥ पर पछे पड़ बली हो, राष्ट्र अवेर सवेर. स्त बने जैसे रुई चर्ले के पड़ केर ॥ १४॥ व्यवनत हिन ईरवर सदा, उन्नत डाले फीड़, प्यासो धरती सींचता, बादल तोड़ मरोड़ ॥ १५॥ बनाई पगन इक, पर पीड़ा ले जान, फटा सब बिधि ही बिपरीत है, तू हमसे भगवान ॥ १६॥ भर्भ गढ़े जाते रहें, इक इक के प्रतिकृत, मनुजन सब जबतक बने इकमालाके फूका।। १७॥ खुले हृदय जिस दिन करे, सबको प्रेम बिर्ताण, उस दिन इसकी जांच में तू होगा जतार्थी ॥ १८॥ समभाने पर बहुत ही, मन दे हाथ पसार, पर पसार कुछ दिनों की, पड़ जाता बीमार ॥ १९॥ सम्भाने पर बहुत ही मन दे हाथ पसार, पर पसार कुछ दिनों तक, चलता वही विचार ॥ २०॥ भूल कभा न छोड़ना आन भरोसे काम. जान बुम्मकर खोड़ना, पर उसका परिखाम ॥ २१॥ बह स्वतंत्र जो और को दे स्वतंत्र करवाय. पढ़ा सके जो अपीर को। पंजिल वही कहाया। २२ 🛭

# नये-नये लेखकों से

### [श्री प्रभाकर माचवे]

सुधीर को मैं बचपन से जानता हूँ। भला लड़का है, पढ़ने में भी मन लगाता रहता है। दुनिया की बातों को अच्छी तरह समभता है। जड़ बुद्धि नहीं है। तोभी परसों जब सुधीर की बड़ी बहन शान्ता मुक से आकर कहने लगी कि—सुनो तो, सुधीर लेखक बन गया है। तो मैं ने बह खबर ठीक उतने ही अचरज और घबराहट से सुनी, मानों मुझे कोई कह रहा था—सुधीर पागल हो गया है।

श्रीर बाद में मैंने सोचा कि मेरा श्रनुमान बहुत गलत नहीं था। परसों वह प्रकारा जी का लड़का, मुना किवता बनाने लगा। श्रीर कल की ही तो बात है कि डाक्टर साहब की दुधमुँ ही लड़की इन्दु ने क्या लिख डाला—गद्य-काव्य! तोवा, तोबा। यही बीस के पहले-पहले तक की उन्न, कहलो कैशोर्य। क्या इस उन्न में भी कुछ लिखना हो सकता है? यह रचना करने का बच्चों में बढ़ता हुआ मर्ज क्या है, क्यों है, कैसे है। इसका इलाज क्या, इसको योग्य दिशा-दर्शन क्या दिया जा सकता है, वगैरह बातें मैं सुधीर को सममा देना चाहता था। सुधीर का बैसे घर किसी गांव में है। सुधीर, इसी साल इंटर के दूसरे साल में गया है। पर देखो, वह सुधीर श्रा भी गया श्रीर हमने कुछ बात श्रक कर दी।

मैंने पूछा-कैंसे हाल चाल हैं, मुधीर ? प्रसन्न तो हो। पढ़ाई वरीरह ?

सुधीर ने मानो 'दुनिया क्या है' ऐसे लापरवाह श्रीर विश्वस्त भाव से कहा— 'पढ़ाई का क्या। उसे क्या कुछ करना होता है ? बह तो हो ही जायगी। पर यह बताइये कि आजकल के नयं लेखकों में आपको किसकी कहानी, किसकी काव्य रचना अच्छी लगती है ?'

मुझे उम्मीद नहीं थीं कि मेरा ऐसे सवाल के साथ पाला पड़ेगा। मैंने पूछना चाहा—नये छौर पुराने लेखक की बात छोड़ो। तुम्हारा पढ़ना- लिखना तो ठीक चल रहा है न ? छौर यह तो बताछो, तुम इस बेरा छुट्टियों में गांव क्यों नहीं गये ? क्या शहर की जिन्दगी ज्यादह भाती है ?

पर उसने बात काट कर कहा—'वाह जी श्राप बड़े नामी-गिरामी साहित्यक कहलाते हैं श्रीर मेरी जिज्ञासा का समाधान नहीं करते। मुझे उम्मीद नहीं थी कि, साहित्यक भी इतनी नीरस बातें कर सकता है। यह उसने ऐसे कहा माने उसका श्रहंकार श्राहत हो रहा हो।

मुझे इन दो बातों से ही नये-नये बने हुए लेखक में, दो बातों का दोष बनकर घर कर बैठना नजर आ गया, एक तो दुनिया को 'अच्छे-बुरे' के खानों में से बड़ी जल्दी से बाँट डालने की उत्सुकता, धैर्य का अभाव और दूसरी बात रस की एक बड़ी संकुचित और घिचित्र कल्पना।

मैंने तो भी उसे टालकर जानबूभकर पूँछा— 'सुधीर, क्या ग़ैरजरूरी बात करते हो। तुम ने यह भी सोचा है कि पढ़कर आगे क्या करोगे।'

सुधीर तो उस वक्त स्वप्न-लोक की श्रातीनिद्रय परियों के सुकोमेल स्पर्श से पुलिकत, किसी सूने में ड्यांखें टांगे, जबर्दस्ती वास्तव से श्रापने को विच्छिन्न करने की कोशिश में है। उसके लिये भविष्य कुछ नहीं, चिंता कुछ नहीं। एक तरह की पीनक है। मैंने श्रापने श्राप से पूछा-'क्या इस नशेवाजी को मस्ती

कहना होगा ? क्या इसी को इम भावना की उत्कटता का जन्म कहें ? क्या यह जन्म प्रामाणिक है ? क्या इसमें से निकला हुआ लेखन अनुभूति की सर्वाई और गहराई से उपजा होसकता है ? क्या यह छद्म और अवान्तव पर आधारित कल्पना विलास और खयालों की रंगीनी नहीं ? वह सब क्या है ?'—ऐसे कई सवालों से मेरा चित्त जब मेघस हो चला, तभी मैंने सोचा, अब दूसरी तरह बात करूं।

श्रौर कहा—'मैंने सुना है तुमने लिखना शुरू किया है। क्या लिखा—गद्य या पद्य ?'

'कुछ नहीं, कुछनहीं।' बेहद भौपता हुआ सुधीर मानो मानशील होता चला; श्रीर तोभी उसमें का कुछ बाहर से उधार लिया हुआ सा जो ऋहं-भाव था वह मिरता मुझे नहीं देखा। मैंने सोच लिया कि यह आरमलीनता का आतिरेक (100 much subj cuvity) क्या नये लेखक में श्रीर साहित्य में, जहां कहीं हो, खतरा नहीं है ? क्योंकि इस तरह की भित्तिपर मुक्त-बाय-जीवी श्रीर विश्व-प्राग् संबर्धक साहित्य पैदा ही नहीं हो सकता। यह सुधीर वाला लेखन तो किसी मुग़ल अन्तः पूर में शाही शान से रहने वाली रूपगर्विता सा है, जिसकी असल कीमत सिर्फ इतनी-सी होती हैं कि किसी भी दिन जब अन्त:पुर के किन-खाव के पर्दे काश हुए, श्रीर वह नाचीज बांदी, अपने आपमें बेहद अपूर्ण और ग़रीब-कहीं की न रहजाय!

सुधीर त्रागे कह रहा था-'वह पड़ोसियों के यहां विश्वन्भर है न, वह ऐसी 'वंडरक ल' कहा-नियां लिखता है कि मैं क्या त्राप से कहूं। त्राप तो श्रव पुराने होचले। श्रापके साहित्य की श्रव क़द्र न्यूजियम में रखने से इतनी ही रहेगी। पर वह ऐसी 'रीयलिस्टिक' श्रीर रसमय चीजें लिखता है कि—'

'मैं तुमसे तुम्हारे लिखने के बारे में पूंछ रहा था। तुम दुनिया भर की बातें सुनाने लगे। सिर्फ सुनाने नहीं, साधिकार समीक्षा के साथ बताने लगे। सुधीर, समीक्षा-शंका से उपजा हुआ साहित्य किएक रस दे सके, पर ज्यादह काम का, टिकाऊ और कियाबान साहित्य तो नहीं होता। और क्यों जी, तुम यह भी सोचते हो कि साहित्य में भी कोई नई-पुरानी आत्मा होती है। क्या आत्मा भी कोई फैशन या पैटर्न है जो बदलती चली जाय। यह सब नासमभी है तुम्हारी, सुधीर।

'नासमभी ? नया तो नया ही रहेगा। पुरानी क्यों नहीं ? श्रव चरडीप्रसाद 'हृदयेश' का सा शब्द-जंगल खड़ा कीजिये श्रीर देखिये कीन पढ़ता है। श्रीर श्रव कोई पोप जैसी या महावीर-प्रमाद द्विवेदी जैसी ब्रह्मचर्य पर कविता पसन्द करेगा ?'

'पहले यह ठहरालो, सुधीर, कि तुम या नये कहलानेवाल लेखक क्या जमाने की पसन्द पर लिख रहे हो। क्या वहीं तुम्हारा अन्तिम साध्य है। और युग-कृचि तो इतनी अध्थिर और क्या-क्या परिवर्ती है कि उसके आधार पर लिखने की आत्मा कुछ ठहर ही नहीं सकेगी।'

'नहीं, नहीं—िकसी के लिये क्यों, हम अपने लिये लिखते हैं। लिखते हैं, इसलिये लिखते हैं। श्रीर वेंसे ही आप कहते हैं तो दुनिया से, आस-पास की देशकाल परिस्थिति के प्रभाव से छुटकर अलहदा लेखक क्या रहेगा ? शून्य,…'

मैं—'श्रच्छा, इतना तुम समक लेते हो सुधीर ? फिर भी लिखने का मर्ज तुम्हें लगा है। ताउजुब है। क्या तुम नहीं सोचते, लिखना श्रक- मंग्यों का धन्धा नहीं है ? जो कर्मशील होंगे वे भला श्रासमान में श्रांखें टांगे, लिखते ही क्यों बैठे रहेंगे ? बात श्रसल में यह है कि श्रादमी दो तरह के होते हैं—श्रन्तर्वर्ती, बहिर्वर्ती। हर एक श्रपनी स्थित से श्रसन्तुष्ट है। जीवन इसी हिंट से एक निरन्तर द्वंद्व है। श्रब लो, तुम में भी कुछ श्रभाव है। तुम चाहते हो, हर कोई

जीवन सुध ┈

माहता है कि अपनी अपूर्णताओं में से पूर्ण की ओर बढ़े। अभाव सब भर जावं; पर आदमी कम्बाब्त कमजोरियों का ऐसा महत है कि वे अभाव पुरते ही नहीं, लाख कोशिश करते जाओ। अब इस अभावपूर्ति की प्रक्रिया में से लेख भी एक है। न वह है स्वान्तः सुखाय, न है वह जनहिताय। वह तो एकदम से अनिवार्य और अवश्यम्भावी सन की चाहना है। उसे रोको, जीवन की अभिव्यक्ति की राह रुकती जान पढ़ती है। इसीलिये लिखना है। अब कहो, सुर्धार, तुमने क्यो खिखा है समक्तलों कि वही लिखना सबा है जो अन्तिवार्य को उत्प्रेरित है। अन्यथा लिखने के नाम पर काराज रंगना है, वक्त जाया करना है, दिमारा खराब करना है, पागलपन है।

सुधीर—'मैंने इतना ज्यादा सोचा-घोचा तो नहीं है। मैं भावना को बुद्धि के श्रीर मनन के discipline से बचा रखना चाहता हूं। मैंने तो कविता

लिखी है।

में—'शुभ किया है। में कब कहता हूँ तुम भावना को वर्दी पहनाओ। पर प्रकृति को भी नियमित रहना पड़ता है। क्या तुम कह सहते हो, सुधीर, कि कला कभी भी असंयम में बस सकेगी। अरे, आस्म नियमन कब मुक्ति की राह का रोड़ा बना है। मुक्ति के माने तो दायित्य—हान है। न सममो अपनी मर्यादाएं,न कहो अपने को मुक्त। मनुष्य का स्वातंत्र्य ससीम होगा। सर्यादा—हीन मुक्ति के कहा माने नहीं।'

सुधीर-'फिर आप दार्शनिकपन बघारने लगे। मैंने कहा न, इसीलिये मैंने मुक्त छंद में कविता नहीं लिखी। महादेवी के छंद में लिखी है।

मैं—'महादेवी का छन्द! यह क्या बला है? क्या किता जो भावना का सहजतम, सच्चा उद्गार है उसे किसी कटे-कटाये बैठने वाले दर्जी के से नाप में से बहना लाजमी है सुधीर, छंद का खर्य जानते हो — झंदोग्योपनिवत् कभी पड़ी थी? फिर यह क्या है महादेवी का छंद ? वैसे तो बैंड

बजाने बाले भी नई फिल्म की तर्ज भट से अपनी क्लोरोनेट पर बैठा लेते हैं। मर्यादाएं बनाओ। अपने हाथों उन्हें खींचो। मर्यादा मौलिक हो। साहित्य में किसी के पिछलागे न बनो।साहित्य के साम्राज्य में ए. डी. सी. नहीं हुन्ना करते।

सुधीर—स्थाप बस कुछ कहने-सुनाने तो देते नहीं श्रपनी ही छाँटते जाते हैं—तो बह कविता

'गीत' है।

मैं—बहुत हर्ष के समाचार हैं कि तुम्हारी किवता गीत है—गीत क्यों कहते हो, किसी ने गाया भी है उसे छाब तक ठीक से। मैं तुम्हारे बारे में जानता हूं कि तुम्हारा संगीत का अध्यास प्राय: शुन्य है। फिर अब तुम्हारी कविता का विषय क्या है?

सुधीर-विषय, विषय, वह ऐसे कह नहीं डाला जा सकता। वह कोई राषेश्याम की रामायण थोड़ी ही है। वह आपादशीर्ष रहस्यवादी रचना है। उसमें दुनिया को बताया गया है एक मदिरालय। प्रेम है साकी, वह शराब पिलाता है। आत्मा पीती है, अकती है। और बाद में वह वासना प्रेम वगैरहक्ष्मीतिक, रोहिक, बंधन कुछ नहीं, पान-पुण्य कुछ नहीं का पैग़ाम देती है। और अन्त में ऐसे मजेदार रूपक से कहा गया है कि जैसे शिरीष के फूल भर-भर जाते हैं वैसे यह सुन्दर मिट्टी की काया भड़ जावेगी और बचेगा युन्त-वृन्त। वृन्त क्या दुआ काल—बस इत्ता भी नहीं आप समझ ?

में मुंह बाये सुधीर का यह प्रलाप सुन रहा था। में ताड़ गया कि श्रवश्य सुधीर के दिमाग में कोई कीड़ा रेंग रहा है जो उससे इस तरह श्रसं-बद्ध श्रीर दूरीकृत कल्पना-निरंकुशता बुलवा रहा है। (मानों यह भी पं०बनारसीदास जी या प्रिंस कोपाट-किन का कोई श्रराजकवाद हो) श्रीर घवराकर एक सच्चे मनोविज्ञानिक जैसे मैंने तर्क लगाकर कारण मीमांसा करने पूंछा—'क्यों श्राज तुन्हें कृब्ब-वब्ज तो कहीं नहीं था। तिबयत बिल्कुल साक तो है न ?' सुधीर जैसे एकदम चिद् गया। उसने सोच लिया कि दुनिया में उसकी कविता समभने वाले शायद दो ही जीवधारी हो सकते हैं। एक तो वह खुद, दूसरा उसका वह दोस्त, जिसकी उसने पहिले ही तारीफ कर दी थी और तारीफ का बदला जो निंदा से कैसे चुका सकता था? मुझे सुधीर के चेहरे पर elegy (विलाप-काव्य)लिखने की जबर्दस्त स्कूर्ति हुई । उसे रोक कर मैंने दूसरा कारण खोज।—'क्यों, मैंने सुना है तुम्हारे अझोस-पड़ोस में कोई लेखिका भी—तुम्हारे जैसी ही नई-नई, लिखने के कन में दीसिता रहती है।

श्रवकी बार कड़ ड़ी बराबर खू गई । बह तिलिमिला कर बोला—'वह लिखती है ऊल-जलल उसे भी कोई तमीज है। वह क्या जाने लिखने की बात ? बेटूदा, बदराकल, बेमतलब, बेतरतीब गद्य-काट्य-लेखिका!' मैंने सुधीर की गालियों की बोझार पूरी सुनी नहीं। इस झोटी सी बच्चों की को रपद्धीमय मूर्खता से मुझे बड़े बड़े साहित्यकार कहलाने वालों की श्रसहिष्युता की बात याद श्रागई। श्रीर मन ही मन मानों किसी ने याद दिलाई—श्रादमी श्राखिर कुछक प्रश्रुत्ति का शिकार बना रहता है—श्राखिरी दमतक। उस बांदमारों से बचने भागने की कोशिश का ही नाम श्रादशोंन्मुख जिन्दगी है। वे प्रश्रुत्तियाँ हैं श्रुधा, भय, सुख, स्वार्थ, मैथुन श्रादि।

तो क्यों, सुधीर, उसके लिखने की बात छोड़ो

उससे अगर तुम्हारी शादी हो जाय ?'

श्रीर सुधीर ने श्रमपेक्ति रूप से लम्बा चेहरा बना लिया, एक सर्द सी निसास छोड़ी। श्रीर भारी श्रावाज में कहा—'विश्वम्भर की वह पहिली कहानी है न एक impressionalistic tragedy है (यानी एक छाया बादी दुखान्त कथा)। (श्रीर जैसे मेरी प्रश्नार्थक सुद्रा देखकर श्रागे सुनाने लगा उसका वह श्राजीवन न भुलाने जैसा हृदय पर श्राधात है। उसकी एक श्रमुक लड़की से होने

बाली थी शादी। सो नहीं हुई। (होती भी क्यों ?)
मैंने मनमें कहा—नहीं तो यह विश्व साहित्यकी
अमर(१)कलावृति फिर जी कैसे जाती ? और
यह आजीवन कीमार्थ अत साधे, रात में तारे
गिनते, वेदनावादी गल्पें रचते बैठता है।'
मेरा मन इस मूर्वतापूर्ण बात पर करुणा से भर
आया। इस समाज व्यवस्था के दोष पर उतना
नहीं, जितना उस युवक के कच्चे दिल पर मुझे
तरस हुआ। ऐसा ही अन्दर-अन्दर घुटने बाला,
सस्ता रमण्या समय (Cheap romanticism से
भरा) भावुकता के नाम पर अप्रबुद्धि लेखन
करते रहने की एक बहक सी इधर लड़कों और
लड़कियों में बढ़ती चली जारही है, जिसमें रकावट डालना सामाजिक हित की दृष्टि से, बहुत
जरूरी है।

यह माना जाने लगा है कि आदमी की कमजोरी ही पूजनीय अंश है, (यथा शरद के उपन्यास) पर मेरे ख्याल से ऐसा विश्व—करुणा वाद हमारी असामध्यं, भीरुता, अप्रबुद्धता और कायरता का छोतक है। हमें यह आंसू-आह-ऊह अब ज्यादा नहीं वाहिये। मास्को की घड़ी में रात के वारहवजे Internationale (रूस का राष्ट्र-गीत) जोर-जोर से पुकार रहा है 'Reason in revolt now thunders.' विवेक विद्रोही बन-कर गरज रहा है। कहां है भारत, कहां है हिन्दी, कहां है सुधीर, और कहां है बेचारे की स्वीकृत—अस्वीकृत जरा-जरा सी प्रेयसियाँ, इस महान कर्म-चक्र में?

'सुधीर, (यानी नये—नये लेखक) तुम जान लो, लिखना किसके लिये और कैसे होगा। लिखना rationalize (प्रबुद्धि) करना होगा। बनना होगा objective (सर्वात्मदर्शी) और यह राजा—रानी के इश्क के किस्सों के Romance के पाश फैंक देने होंगे, क्योंकि युग कुछ और मांग रहा है। आजका जग दूसरी ही तरफ इशारा कर रहा है।

(शेष १८ वें पृष्ठ पर )

# भावुकता बनाम भावज्ञता

[ श्री इलाचन्द जोशी ]

----

हमारे छायावादी साहित्य में कुछ श्राचार्यों तथा कुछ उदीयमान प्रतिभाशाली नवयुवक कियों की किवताओं को छोड़कर शेप सब रचनाश्रों में कोरी छिछली भावुकता (जिसे श्रंगरेजी में Cheap sentiment alisan कहते हैं) इस प्रकार सघनता स छाई हुई है जिस प्रकार एक छिछले ताला के ऊपर सिवार छाई रहती है। मैं भावुकता के सहत्व को खर्व नहीं करना चाहता, पर मेरी यह धु थ धारणा है कि जो भावुकता बुद्धि द्वारा सुसंयत और अनुशीलन हारा सुसंस्कृत नहीं होती वह या तो साहित्य की चिर-प्रग तशिल धारा में वह जायगी। वा स्वयं एक बावड़ी के ध्यावद्ध जल की तरह चिर-प्रवद्ध होकर साहित्य के नन्दन कानन के मुक्त बातावरण के बीच में हुर्गिध्य फैलान के सिवा और कुछ नहीं कर पावेगी।

भावुकता ऐसी नहीं होनी चाहिये कि साबुन के फेनिल बुद्बुद्दों की तरह बायु की तरकों में कुछ समय के लिये लम्बी उड़ान भरकर सदा के लिये चिलीन हो जाय। उसका आधार निरी हवाई कल्पना नहीं, बल्कि कोई बास्तविक Con-

सुधीर, तुम्हें क्या मंजूर है: घर में बैठे जार तुकों जोड़ते बैठना या जीवन में जिनके जिन्दा रहने तककी तुक नहीं मिल पाती ऐसे बेतुकों के लिये चौर कर्मएय तहिएों का संघ जोड़ना। मेरा सवाल सभी नये-नये लेखकों से है। सुधीर, लिखो मगर मानवता के लिये लिखो।

'Against all the oppressors with all the oppressed'

Romain Rolland

टार्गा सत्य होना चाहिये। उसका मूल उद्गम काकाश की शून्यता नहीं, बल्कि श्रन्तप्रांण की मार्मिक अनुभूति हो। श्रर्थात् किव के लिये कोरा भावुक नहीं, बल्कि भावज्ञ होना आवश्यक है। भावज्ञता-रहित भावुकता कुछ समय के लिये भले ही हृदय में मीठी वेदना उपजाने में समर्थ हो, पर उसका खोखलापन अन्त को प्रकट होकर रहता है। फाँच श्रीर जर्मन साहित्य का तुलनात्मक श्रध्ययन करने में इस बात का उदाहरण स्पष्ट हो जायगा।

रूसो के समय में फ़र्नेच लोगों ने निशी भावुकता के फेर में पड़कर उसके उहाम वेग को ऋत्यन्त उच्छ स्वल बना दिया। रूसो की सुन्दर भावुकता में भावज्ञता की पुट रहने से उसका महत्क फिर भी किसी अंश तक स्थायी रहा। भावज्ञता का श्राधार किसी न किसी हद तक रहने से रूसो की भावुकता का अस कुछ समय तक अत्थन्त प्रखर तथा मर्म-भेदी बना रहा श्रौर पीछे भी किंचित परिमाण में स्थिर रहा। पर जहां-कहीं वह कोरी भाद्यकता के आवेग में तुकान की तरह बहता चला गया, वहाँ उसने अपने-आपको भी धोखा दिया और दूसरों को भी भ्रमजाल में डाल दिया। इस प्रकार के निराधार भाष-प्रवणता का प्रभाव अधिक समय तक स्थायी न रह सका श्रीर शून्य में विलीन हो गया। जिन-जिन फॉच लेखकों ने रूसो का अनुसरण किया ( श्रौर ऐसे लेखकों की संख्या आवश्यकता से बहुत अधिक रही ) वे भी आँधी की तरह आये और उसी तरह मिट भी राए। करेंच साहित्य में एक मात्र विकर ह्यूगो ( Victor Hugo ) ऐसा कवि रहा है

# जीवन-सुधा•



श्री इलाचन्द जोशी

जो भाषक्षता के रस में पूर्णतया शराबोर था। उसकी भावकता उसकी भावकता के सागर की भावका गहराई के उपर तैरने वाली फेनिस सहिरयों के लोल लीला-लाभ के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

बहुत लोगों की धारणा है कि फ्रेंच साहित्य से संसार की अन्य सब भाषाओं के साहित्य से अंध्ठ है। यह लोगों का भ्रम है। यूरोपियन साहित्य के बास्तविक मर्मझों ने कभी उसे बिशेष महत्व नहीं दिया। फ्रांस का कोई किय वर्ष सबर्थ कालेरिज, रोली, वायरन आदि अंगरेज कियों सुगम्भीर भावझता-समाबित किया की समकच्चता कदापि न कर सका। कारण यहां है कि पूर्में-लिलस्तित अंगरेज किया कारते ये अपेर कल्पना को शत्य में लटकने बाले इन्द्रधनुष की बर्णच्छटा तथा धूप में निरुद्देश्य भटकने वाले बादलों के बिस्सार रेशमी संसार तक ही सीमित नहीं रखते थे।

क्रंच साहित्य की तुलना में यदि जर्मन साहित्य को हम सामने रखें तो माळ्म होगा कि उसकी धारा ही कुछ दूसरी है। आधुनिक जर्मन साहित्य का प्रारम्भ ग्येटे-युग से होगा। ग्येटे (Goeithe) अपनी सर्व प्रथम रचना 'वेटेंर' (Warther) में मानुकता के प्रवाह में वह गया था। इस अगनुकता का प्रभाव मारम्भ में बड़ा जवर्दस्त रहा और उसकी बाद में बहुत से लेखक वह गये। पर यह प्रभाव स्वभावतः अधिक समय तक स्थायी न रह सका। ग्येटे शीध ही

अपनी भूल समक गया। इसलिये उसकी परवर्ती रचनाओं में सत्व हीन भावुकता के बदले जीवन के बास्तविक तत्व से निचोडे गए रस की ही प्रचुरता पाई जाती है, जिसकी चरम परिएति हम उसकी संसार प्रसिद्ध रचना कौस्ट (Faust) में पाते हैं। केवल ग्येटे ही नहीं, शिलर, लैसिंग, हाइने (Heine) आदि अह जर्मन कलाकारों में हम यही विशेषता पाते हैं। जर्मनों ने मूल प्राएशिक को अपनाया और माँचों ने केवल इदय के अस्थिर आवेगमयी प्रवृत्तियों का फुतकार बाहर निकालने में ही अपनी सारी चेटा समाप्त कर दी।

रस सृष्टि करना ही साहित्व-कला का सूल उद्देश है, सन्देह नहीं। मीठी अञ्चलवा भी एक विशेष रस है, इस बात को कोई व्यक्षीकार नहीं कर सकता। पर वह रस अंगूर, अनार और संतरे की तरह है जो आसानी से, बिना अधिक परिश्रम के निचोइकर निकाला जा सकता है। ऐसा रस थोड़ी देर के लिए कलेजे को ठरहा कर सकता है। पर नव-जीवन का उत्पादन नहीं कर सकता। जीवन की शक्ति का संचार करने वाला रस बही हो सकता है जो पारे तथा श्रन्यान्य धातुश्रों की तरह कठिन श्रांच में तपकर रस-सिन्दर। आदि के रूप में परिएत होता है, अर्थात् जो भावश्वता तथा जीवन की मार्मिक अनुभूति द्वारा परिपुष्ट होता है। अष्ठ कलाकार अक्र प्रकार का रासायनिक है जो जीवन के क्रांठिन से कठिन तत्वों को भी अपनी श्रात्मा के स्तायनिक यंत्र में परिपक्व करके श्राभिनव रस के रूप में परिशात कर देता है।

## भूल भुलैयां

[श्री उपादेवी मित्रा]

-- \*\*--

सरजू प्रसाद ने जय आंखें खोलीं तो पाया अपने को अस्पताल के एक कमरे में। एक अवम्भे से वह ताकने लगा। सुध उसकी बिलकुल जाती रही हो, ऐसा नहीं, किन्तु कुछ भूल में, कुछ ग़लती में वह रहा। था वह एक उन्ह्रंसल, बिलासी युवक।

दुनिया में सरजूपसाद था अकेला—बिलकुल अकेला। असहाय, सम्पत्ति विहीन। कुछ थोड़ा-सा पढ़ लिया था। न उसे चिन्ता थी, न किसी बात की भावना।

किन्तु फिर भी उसके रहन-सहन को देखकर लोग उसे अमीर सोचते। सिल्क के कुरते, महीन धोती, कीमती जूता पहन कर मोटरों में घूमता फिरता। शराब के बिना मिनट भर भी न चलता। वेश्याएं उसे देखकर मुककर सलाम करती।

एक छोटा-सा मकान भाड़े पर ले रखा था।

मकान का भाड़ा सालभर का बाक़ी पड़ा था।

मांगने पर लम्बी-लम्बी ऐसी लाख-दो लाख की

बातें करता कि मकान मालिक से सुनते ही
बनता। नौकर-चाकर कुछ नहीं थे, न घर में
खाने को। इन सब बातों का उसके मन में
विचार मात्र नहीं था। सरजू सङ्गीत इ था। शहर

में बह एक प्रसिद्ध गवैया कहलाता था। धनवानों
के घर उसका आहर सत्कार होता। जब रुपयों
की उसे बहुत जरूरत पड़ती तो राजा-महाराजों
के घर चला जाता और गायन के बदले दो-चार
सौ लेकर लौटता। दो दिन में सब फूंक देता।

भोजन होटल से मंगाता या तो ऋमीरों के घर से खा जाता। राजा, जमीदारों के घर से सदा उसके गाने के लिए निमन्त्रण झाता। कभी खीकार करता, कभी आनायास अस्वीकार कर देता। रुपयों-पैसों को वह कंकड़, कूड़े-सा समभता।

श्रीर समभता जीवन को एक ख़ुशी। वस, ख़ुशी-ख़ुशी, गहरी ख़ुशी। जीवन का मूल्य था उसके निकट इतना ही। वह श्रनायास कह देता—शराब पियो, चाप, कटलेट खाओ। नित नयी-नयी रूपसी से मिलो, बस करना क्या है। श्राये तो इस दुनिया में ख़ुशी मनाने के लिए हैं न ? दुनिया भर में यह जो ख़ुशी का मैंला लगा दुशा है उसी में यदि हम भी सौदा करने रहें, तो ख़राब क्या है ?

वह जानता खुशी को, पहँचानता ऐयाशी को। दु:ख, दारिद्र, अभाव की भावना उसकी दुनिया में थी नहीं, और न विछुड़ने की सम्भावना। मिलने की रागिनी उसकी बांसुरी सदा आलापा करती। तो ऐसा द्दी एक सरजूपसाद जब पड़ गया बीमार तो चकराना-सा रह गया। शराब पी-पी कर उसका लिभार खराब होगया था। उस पर जोर से बुखार और निमोनिया होगया तो मित्र उसे अस्पताल ले आये।

दो दिन के बाद सरजू ने आंखें खोलीं तो पाया अपने को नूतन स्थान में, श्रीर पाया कराहते हुए दूसरे पलंग पर एक रोगी को। बड़ा-सा कमरा था। बार पलंग थे, जिनमें एक खाली था, जीवन सुधा----

श्रीर एक में वह स्वयं। दो में दो श्रीर रोगी। रात होगई थी। नर्स देवल पर मुकी कुछ लिख रही थी। बाहर के पेड़ पर पेचक बोल उठा। सरजू के खुशी अरे जीवन में कुछ खटका सा, श्रीर वह भी पहली बार। रात की श्रीचेरी, मरीजों का संग, श्रस्पताल का कमरा, पेचक की पुकार, बूढ़ी नर्स श्रीर श्रपनी बीमारी, यह सब मिलाकर उसे वह स्थान प्रेतपुरी-सा लगने लगा। वहाँ से भाग जाने के लिए वह एक दम श्रीरथर होगया। चाहने लगा कि उठकर भाग श्रावे। श्रीर वैसा न हो सकने से बिलकुल घवरा गया।

नर्स दवा लेकर सिरहाने श्रागई-"पी लीजिए।"

"तुम कौन हो ?" उसने रूखे स्वर से पूंछा। "नर्स हूं, महाशय।"

"नहीं—नहीं, तुम हो प्रेत लोक की प्रेतिनी।" बूदी नर्स मुसकराई—"हाँ, त्र्योर प्रेतों की सेवा करती हूं।" न जाने क्यों सरजू ऋत्यन्त प्रसन्न होगया। बोला, "तुम झूठ नहीं बोलतीं, इसलिए श्रक्की हो"।

"हाँ, ऋौर च्राप भी श्रच्छे हैं, इसे पी लीजिए।"

"हाँ-हाँ, पीछ्ंगा। शराब ही से तो मैं जीता हं। दे दो।"

नर्स ने द्वापिला दी।

मुँह विचकाकर सरजू ने कहा-"कैसी शराब है यह शराब तुम्हारे प्रेतलोक में क्या श्रच्छी शराब नहीं मिलती ?"

"नहीं।" शान्त स्वर से नर्स बोली श्रौर फिर धीरे से चली गई। सन-सन-सन पवन बहुता श्रौर बाहुर पेचक बाल रहा था।

(२)

रात श्राधी से ज्यादा निकल चुकी थी। श्रास्पताल में सन्नाटा छाया था। दालान में विजली का प्रकाश था। कमरे में धीमां प्रकाश फैल रहा था। बहर पेचक कराह रहा था, और सरजू जाग रहा था। पलंग का रोकी निस्तेज-सा हो रहा था। उसका कराहना बन्द था। कमरे में डाक्टर, नर्स आ-जा रहे थे। बार-नार उस रोची की नव्ज देख रहेथे। दका, इनजैक्शन दे रहे थे। रोगी का मुँह विकृत हो रहा था और सरजू उस मुख पर टुट्टि निबद्ध किए पड़ा था।

उसके देखते ही देखते रोगी को वहाँ से लोग उठाने लगे। झिन्न-मिलन वस्त्र पहने एक स्त्री अचानक पहुँच गई। हृदय में वह एक मृत-प्राय शिशु को दवाए थी। स्त्री रोगी के , , पैर से लियटकर सिसकने लगी।

"चुप-चुप चिह्नाक्रो नहीं।" डाक्टर बोला। उस स्त्री को देख कर सरजू रोमाञ्चित हो यबा। इस नर कंकाल की जगह दुनिया के किस कोने में हो सकी है ? वह विस्मय से विचारने लता— इस खुशी की दुनिया में इस मूर्त दारिद्र, कंकाल का स्थान कैसे और कहाँ हो सका है ? वह विचार चला— इस प्रेतलोक में अचानक आज जिससे मेरी भेंट हो गई, क्या वह मुक्तसा जीवित व्यक्ति है ? और इसी दुनिया का जीव है ?

स्त्री उठी, डाक्टर के पैरों से लिपट कर कहने लगी- 'मुफ भिखारिन को भीख दे दो, डाक्टर जी! मेरे पित को जिलादो ? बिना बाप के बच्चे मर जायेंगे। कंगालिन को भीख दे दो, डाक्टर जी! मेरे पित को जिलादो। पित की भीख! मुफ कंगालिन के पास कुछ भी नहीं है। प्रन्त्रह दिन का बच्चा दृध के बिना मर रहा है। सूख कर कांटा होरहा है। दो बच्चे अन्नाभाव से घर में पड़े तड़प रहे हैं। और मैं—मैं—" वह रो पड़ी। फूट-फूट कर रोने लगी।

सरजू को लगा—डाक्टर के स्वर से दया वहीं पड़ रही हैं। बोला डाक्टर—"हम कोशिश कर रहे हैं, बेटी, घवराश्रो नहीं, चिहाश्रो मत, धीरज धरो।" वे सब रोगी को लेकर दूसरे कमरे में चले गये। स्त्री शीत में ठिठुरती, बच्चे को हृदय से लगा कर खड़ी ही रह गई। नर्स पहुँची, कहा-"घर चली जाख्रो।" "मैं उनके पास रहूंगी, माई।" विनीत स्त्री ने कहा। "नहीं, ऐसा नहीं हो सकता है। देख लिया है, श्रव चली जाख्रो।" "नहीं-मईया रहने दो! जनम गुलामी कम्जी। उनसे मुझ खलग मत करो। बच्चे भूखे मर रहे हैं, मरने दो, किन्तु उनसे मुझे खलग मत करो, विनती रखो, माई।"

"हल्ला मत करो, जास्रो ! बाहर जास्रो।"

स्ती दुर्निवार-सी होगई। कहने लगी—'नहीं जाऊंगी। मेरे पति, मेरे अपने पति, दुनिया के सब कुछ, और अपने ही पति के पास मैं न रहने पाऊं? कैसा अन्वेर है। भूख-प्यास जिसका मुँह देख कर सह लेती हूँ उसके पास से चली जाऊँ?" वह उन्मादिनी-सी कह चली—"किन्तु क्यों? मेरे पति के पास से मुझे हटाने वाली तुम कौन होती हो? मैं नहीं जाऊँगी, नहीं जाऊँगी।"

"तुम्हारे अच्छे के लिये कहती हूँ, बेटी।' वृदी नर्स कोमल स्वर से कहने लगी—''तुम्हारे पति अच्छे हो जायेंगे। सबेरे आजाना। तुम्हारे रहने से उन्हें हानि पहुँचेगी।"

"वे अच्छे हो जायेंगे, माता ?" "हाँ !-हाँ ! ऋच्छे होजायंगे।"

श्री धीरे-धीरे बाहर गई, फिर श्रन्थकार में एकाकार-सी हो गई। गृह निस्तब्ध हो गया। पलंग पर पड़े दृसरे रोगी का दीर्घ श्वास कमर में मदगन-सा लगा। श्रस्पताल के कोने से रोने की श्रावाज श्रा रही थी श्रीर उस श्रन्थकार में पेचक बोल रहा था।

(३)

रात कटने ही पाई थी कि कागों ने कलरव कर दिन की सम्बर्जना आरम्भ कर दी। सरजू ने आँखें खोलीं। रात्रि के शेप प्रहर में वह सो गया था। शरीर हलका-सा लगा। ज्वर विलकुल उतर गयाथा। किन्तु फिर भी उसका मन विरक्त था। बराल के कमरे में कोई हाहाकार कर उठा। सरजू चौंक पड़ा। किसी ने कहा—"चुप—चुप, चिल्लाम्यो मत। घर जाकर रोश्रो। अस्पताल के मरीज घबरा के जायेंगे।"

किन्तु फिर भी कोई जिलख-बिलख कर रोने लगा। सरजू का मन एक दम उचाटन हो गया। खुशी भरी दुनिया में इस आंसू के सामने उस क। उच्छ खल मन हतवाक हो रहा-विमृद् सा।

उसे लगा यह कुत्सित आंसू उसे बहाकर ले जायेंगे, ले भागेंगे। न जाने कीन सी दुर्गन्ध के नरक में उसे दकेल देवेंगे, जहां न तो शराब की बोतलें रहेंगी और न खुशी के रंगीन गुलाब। नहीं, कुछ नहीं, पाजेब की एक हलकी-सी फंकार भी न उठ पायेगी, भौरों की टोली न भन भनायगी। पद म पर न मधुमक्खी गुनगुनायगी, न कुछ। रहेंगे केवल आंसू के उमड़ते काल बादल, मेंह से भरते विरामहीन आंसू, और आंसू के असुन्दर सागर, महासागर। प्रेते. का भयावद चीत्कार, जिस चीत्कार में उसकी सत्ता भी गुम जायगी। सरजू सिहर उठा। उसके कमरे के सामने से कुछ मनुष्य डोली पर शब लेकर निकल गए, एवं पीछे पीछे सर पीटती एक स्त्री।

सरजू ने उस कीए काया, मिलन वसना स्त्री को पहचान लिया-वहीं तो है जो रात में डाक्टरों के पैर से लिपटी रो रही थीं। श्रीर जिसे डाक्टरों ने श्राह्वासन दिया था—तेरे पति श्रद्धे हो जायंगे।

श्रभी कुछ ही घरटे तो कटने पाए होंगे। उस व्यथातुर श्रांसू के सामने सरजू चकरा-सा गया। घरटे वीत रहे थे श्रीर पृथ्वी श्रपनी कौतुक-ित्रया में मस्त थी। रास्ते से शहनाई की श्रावाज श्राने लगी, कोई बरात बधू लिये लौट रही थी। उस कन्दन के साथ शहनाई का स्वर मिलकर एकाकार हो गया। सरजू को एक जोर का धक्त लगा दूसर बारी। श्राज कैसो विचित्र

वातों के रहस्य उसकी आंखों के सामने खुल रहे हैं ? सरजू विचारने लगा-ख़शी के साथ रोदन को यदि पहचानने का समय आया भी तो मैं उसे सहूं कैसे ? और शहनाई की ख़शी भरी श्रावाज के साथ कन्द्रन की मर्यादा का मेल हो ही कैसे सका ? नहीं-नहीं; वह ख़शी को पहचानता है, श्रीर उसी को पहचानेगा। कोई मरे या जिए, उसे करनाक्या है ? किन्तु अभी-अभी जो स्त्री श्चर्द्ध नग्न, उन्मादिनी-सी पति के शव के साथ चली आरही है, वह करेगी क्या ? भोजन तक जिसके पास नहीं है, बच्चों को तो आधापेट भोजन भी नहीं देसकती है, वह शव संस्कार करेगी कैसे ? कदाचित उसी के घर के पास बरात उतरेगी, शहनाई श्रीर बैंड के स्वर के नीचे उसके रोने की चीला स्रावाज दव जायगी। की श्रोर उसकी कदाचित् उस ऋ।नन्द जल पूर्ण आंखें उठ पड़ेंगी और कदाचित अपने श्रापकी दुलहिन बनना उसे स्मरण हो श्रावेगा, ऋौर उसी श्रतीत में वह श्रपने दुल्हा का स्वप्न देखेगी, एवं उसके पैर के निकट पड़े शव में तब तक लाखों चींटे लग जायँगे, उस ऋनशन क्लिष्ट रक्त से अपना पेट भरेंगे। भूख से विकत बच्चे माता से भोजन मागे गे, श्रोर मां न बोलेगी तब मृत पिता से लिपट जायँगे श्रीर भोजन देने के लिए शत्र को खींचेंगे। जब कोई न बोलेगा तब चधा पीड़ित बच्चों का शरीर पिता के बगल में शिथिल हो पड़ेगा श्रीर माता तब उठेगी, न श्रतीत के महौर बांधे दुल्हा पति को देखेगी, न वर्तमान के मृत शरीर की। नहीं, वरन वह उठेगी, बच्चों को हृदय से लगावेगी श्रीर भित्ता-पात्र लेकर धनी के द्वार पर खड़ी हो जायगी। प्रतिवासी के घर शहनाई बजती रहेगी। मृत शरीर घर में पड़ा सड़ता रहेगा और भिदापात्र लिए घर-घर घूमती फिरेगी।

नर्स, डाक्टर श्राए, ज्वर देखा। सरजू चैंक पड़ा। श्रपने बिखरे हुए चित्त को समेट कर उसने उस श्रोर देखा। इन्हीं दोनों ने उस दुखिया को कल श्राश्वासन दिया था, श्रीर देथा, सहानुभूति से इन्हीं दोनों के नेत्र कल छलछला श्राए थे। विस्मय-विमृद्ध सरजू ने देख:— उस दया के चिन्ह मात्र उन मुखों में नहीं है, न एक दीर्घ श्वास ही है— उस दुखिया के लिए। कर्तव्यनिक्ठ व्यक्ति-से, कलपुर्जों के बने जीव-से वह बोले— "बुखार विलक्जल नहीं है। हफ्ते भर में तुम चल फिर सकोगे।" डाक्टर चला गया। नर्स ने दवा उठाई— "पीलो।" किर इसके बाद उसने चार्ट लिखा, दूसरे रोगी को देखा श्रीर चली गई। स्तव्ध, श्रचल सरजू बैठा रह गया।

अस्पताल में व्यस्तता थी। सब श्रपने काम में व्यस्त थे। बृतों पर काग पुकार रहे थे श्रीर पृथ्वी श्रपने कौतुक में मस्त थी।

दिन दूल चुका था। घाट से धोबी लौट रहे थे। उठ सकने की सरजू को खुशी थी। ऋरपताल के बर्गाचे में एक बेंच पर वह बैठा था। सड़क की दुकान से गरम अने चने की सुगन्य आ रही थी। माली फुलवारी सींच रहा था। कमरे से रोगी के कराहने की आवाज आ रही थी। तितलियां फूलों पर काँप रही थीं और पृथ्वी ऋपनी धुन में व्यस्त थी। उधर सरजू को उठ सकने की खुशी थी।

फूल-पत्तियों में बैठा सरजू एक गन्धर्य-सा गन्धर्व लोक में विचरने लग गया—कल्पना के हलके पलने पर । बह औरों-सा गुनगुनाने लगा। जाने कितने ही मीठे राग-रागनी उसे समरण हो आये। एक रोगी धीरे-धीरे चलकर आगया। उसके शरीर के घावों पर पट्टी बंधी थी। उम दवा की गन्ध से उसके आस-पास का पत्रन भारी हो गया। रोगी सरजू के निकट बैठ गया। विरक्ति से सरजू का मुँह कुंठित हुआ। उसने मुंह फेरना चाहा।

जीवन सुधा

रोगी बोला—'क्या श्रापही प्रसिद्ध गवैया सरजूपसाद हैं ?"

A SECOND SOCIETY OF THE SECOND SOCIETY OF TH

व्यक्ति सरजू को परिचित-सा लगा। उसने अच्छी तरह देखा। वह एक दम सिहर उठा। जमीदार चौधरी उसके सामने था, चेहरा घाव से, फुन्सियों से ऐसा कुत्सित हो रहा था कि पहचानना एक प्रकार असम्भव-सा था। सन्देह से सरजू ने पृंछा—

"श्राप जमीदार चौधरी तो नहीं हैं ?"

"वहीं हूँ।"—रोगी मिलन हंसा—"विश्वास नहीं श्राता ? अस्पताल में छिपकर टिका हूं। रोग कुस्सित है। दुनिया से इसे छिपाना चाहता हूँ। तुमसे ? नहीं। क्योंकि हम दोनों एक ही पथ के यात्री हैं। श्राज इस भयानक व्याधि ने दें मुझे पकड़ लिया, किन्तु कल का दिन तो तुम्हारे लिये हैं न।"

"मेरे लिये।" भय विवर्ण मुख से सरजू ने कहा। रोगी जोर से इंस पड़ा—' हां, हां, तुम्हारे लिये। हम दोनों में न कोई कम है न ज्यादा।"

सरजू के हृदय में एक आँधी उठ पड़ी। कैसे-कैसे भीषण रहस्यों से उसकी भेंट हो रही है ? विचारने लगा वह—यह उन्माद कह क्या रहा है ? सुख सेवित शरीर, जिसे रीज कीम, साबुन से साफ किया जाता है, पाउडर जिस पर लगता है, क्रीम, सेन्ट से जिसे सुगन्धित किया जाता है, उसी शरीर पर ऐसा कुत्सित व्याधि का आक्रमण ? घृणा से पृथ्वी मुंह फेरेगी, मित्रगण, जो आज उसे आदर से पास बैठाते हैं, गान सुनते हैं, देवता सा पूजते हैं, वे ही घूणा से कल मुंह फेर लेवेंगे। मक्खी भनभनाएंगी, यह सुन्दर मुख कुत्सित हो जायगा। श्रौर पल-पल में उसका सब कुछ लुट जायगा, पल-पल में जो पृथ्वी उसका आदर करती थी, वही उससे घृणा करने लगेगी। घृणा ? हां, हां-- घृणा, जैसा कि वह स्वयं अभी-अभी इस जमीदार से कर रहा है। एक पल पहले

तक शायद इस व्यक्ति के लिये उसी के मन में आदर-सम्मान था। सरजू का मन जाने केंसा करने लगा। वह उठा और चल पड़ा। रोगी विस्मय से उसे देखने लगा। चहुं और एक शान्त नीरवता थी। नर्स अपनी डचूटी में लगी थी। उसे वृकों की आड़ से सन्ध्या मांक रही थी। अस्पताल में रहा, विजली' का प्रकाश। बाहर इसे भौंक रहे थे और पृथ्वी अपनी धुन में व्यस्त थी।

#### ( )

दिन रिववार का था। पथ जनाकी एँ हो यहा था। बाजार के लिये धनी, दिद्र भपटे चले जा रहे थे। कोई सीदा खरीद रहा था, कोई किसी से कलह। बच्चे खिलीने की दुकान पर इकट्टे थे। बिछुड़े साथी के गले से कोई मिल रहा था। कोई किसी से भेंट करने में जुटा था। कोई विवाह के लिये साग-भाजी खरीद रहा था। कोई पिता-पुत्र के श्राद्ध के लिये कुमदों के मोल में व्यस्त था।

सरज् स्वस्थ था, कुद्र दुर्बल था। ऋपने घर की खिड़की पर बैठा वह बाजार का दृश्य देख रहा था। पड़ोसिन वृद्धा खिड़की पर खड़ी उसकी कुशल पूंछ रही थी। रास्ते के उस पार के, दो मंजिल मकान की खुली खिड़की के सामने खाट पर पड़ी एक वृद्धा ऋन्तिम श्वास ले रही थी। मृत्यु यातना से उसके नेत्र विस्कारित होरहे थे, जीम निकल पड़ी थी। पुत्र कन्याएँ खड़ी उसे राम नाम सुना रहीं थीं। सरजू की झांखें उस पर गड़-सी गई। पथ पर कोई बिरहा गाता चला जा रहा था, श्रीर पृथ्वी का रथ-चक्क एक-सा घूम रहा था।

दूसरे दिन का सबेरा जब सरजूं के द्वार पर पहुँच गया तब उसका चित्त एक दम बिरक्त हो रहा था, मन था सूना। वृद्धा का शब उसकी श्रांखों के सामने चला जा रहा था श्रीर दूसरी वृद्धा खिड्की पर खड़ी भय विवर्ण मुँख से उस दृश्य को देख रही थी।

सरजू ने श्रावाज लगाई-"मांजी, क्या कर रही हो ? गंगा स्नान को न जाश्रोगी ?"

"देख रही हूं, बेटा। कामिनी की दादी तो चल बसीं। अब मेरी बारी है, दिन निकट है।"

"दिन निकट हैं—दिन निकट हैं"—सरजू के कान में मड़राने लगा—'दिन निकट हैं, किसका? वृद्धा का, बृद्धा के पित का, या तो, कदाचित उसी का ही। उस ऋरपताल के रोगी की तरह बह भी कुत्सित हो जायगा, श्रीर नहीं तो इस वृद्धा जैसे उसके बाल सक द होजायँगे, कमर मुक जायगी, श्रावाज में कर्कशता श्रावेगी श्रीर यन्त्रणा में पिस-पिस कर, घुल-घुल कर एक दिन उसकी मृत्यु हो जायगी। मारे डर के सरजू काँपने लगा। श्रीर फिर दूसरे पल परिहास से हँसा भी। कुत्सितता कैसी? ऋत्यु कैसी? कष्ट, दुख कैसा? वह जीवित रहेगा—इसी तरह इन्द्र-सा बना वह जीवित रहेगा। महे दुनिया, उससे मतलब?

मरे एक दिन दुनिया, किन्तु उस एक दिन के लिये वह प्रस्तुत नहीं है।

पड़ोसिन बृद्धा की अटारी पर सरजू की दृष्टि विस्मय से विमृद्सी हो रही। वृद्धा श्राइने के सामने बैठी सन से सक द बालों को संभाल रही थी; पोपले मुहँ को घुमा-फिरा कर देख रही थी। सरजुका जी उस दृश्य को देखकर श्रवम्भे से हतवाक्-सा हो रहा। वह विचार न पाया कि अभी जो बृद्धा दूसरी की मृत्यु से अचेतन-सी हो रही थी वही अभी शृंगार करने कैंस बैठ गई? वृद्धा के जप की माला खूंटी पर लटक रही थी। सरजुका मन उदास था। श्रीर पृथ्वी का रथ चक्र एक सा घूम रहा था। बाहर पेचक बोल रहा था। आकाश में तारों की जमघट थी, शृगाल द्र पुकार रहे थे। तबला की ठनक मधुर थी। सामने की श्रष्टालिका पर युवती नारी पति-विच्छेद से करुण चीत्कार कर रही थी। सरजू का कमरा दीप-प्रकाश से उज्ज्वल हो रहा था। सरजू बैठा आकंठ शराव पीने लगा। पड़ोसिन वेश्या विहाग अलाप रही थी श्रीर प्रथ्वी श्रपनी धुन में मस्त थी।

## खिलोना

#### (भी सियाराम शरण गुप्त )

--\*--

'में तो बही खिलीना लूंगा'

मचल गया दीना का लाल,—
'सेल रहा था जिसको लेकर

राजकुमार उछाल उछाल ।'

व्यधित हो उठी मैं विचारी—

'शा सुवर्ण-निर्मित वह तो ! सेल इसी से लाल,—नहीं है राजा के घर भी यह तो ! ?

> 'राजा के घर ! नहीं नहीं माँ, तू मुक्तको बहकाती है; इस मिट्टी से खेलेगा क्या राज पुत्र तु ही कह तो।'

भंक दिया मिट्टी में उसने

मिट्टी का गुड्दा तत्काल;

भैं तो बही खिलीना लूंगा'—

मचल गया दीना का लाल ।

मैं तो बही खिलीना लूंगा'

मचल गया शिशु राजकुमार,—

बह बालक पुचकार रहा था

भथ मैं जिसको बारंबार।'

ध्वह तो मिट्टी का ही होगा खेलो तुम तो सोने से ।' दीड़ पड़े सब दास-दासियां राजपुत्र के रोने से ।

> 'भिट्टी का हो या सोने का इनमें वैसा एक नहीं; खेल रहा था उछल उछल कर वह तो उसी खिलीने से।'

राजहरी ने फेंक दिये सब अपने रजत - हेम - उपहार; 'ल्रॅंगा वही, वही ल्र्ंगा में !' मचल गया वह राजकुमार। २६

# जीवन-सुधा+++



श्री सियाराम शरगा गुप्त

## साहित्य में राजनीति का स्थान

[ श्राचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ]

साहित्य के लिये यदि भारत को जगद्गुर की पद्वी दी जाये तो सम्भवतः श्रयोग्य न होगा। यद्यपि आज यूरोपीय भाषाएं और विशेषकर इक्सलिश, फ्रॉच और जर्मन भाषाएं संसार सभी विषयों में अत्यधिक उन्नति कर रही हैं, उनकी यह सब उन्नति यूरोपीय इतिहास के रिनासेंस अथवा साहित्यिक जागृति काल के बाद की है। भारतवर्ष ने जितनी साहिरियक उन्नति प्रागैतिहासिक काल कहलाने वाले समय में कर ली थी, उतनी उन्नति का उहे ख उस समय के अन्य किसी देश के इतिहास में नहीं मिलता। त्राज भी ऋग्वेद संसार भर की सब से प्राचीन पुस्तक है।

यह अवश्य है कि आजकत राजनीति इतनी श्रिधिक उन्नत हो गई है कि उसके साहित्य का सभी भाषाओं के साहित्य में एक विशेष स्थान है; किन्तु प्ररन यह है कि क्या प्राचीन काल में भी राजनीति को इसी प्रकार मुख्य स्थान मिला हुआ था ?

प्राचीन भारतीय इतिहास के प्रेमी इस बात को जानते हैं कि प्राचीनकाल में चित्रयों के राजा होते हुए भी मंत्रियों का पद ब्राह्मणों को दिया जाता था। वशिष्ठ और विश्वामित्र यक्न कराने वाले ब्राह्मण होते हुए भी अपने समय के सबसे बड़े राजनीतिक्न थे। प्राचीन प्रन्थों में उन के दिये हुए उपदेशों को पढ़ने से पता चलता है कि जिस समय भारतवर्ष में काव्य, दर्शनों और नाटकों श्रादि की रचना नहीं हुई थी, राजनीतिक विचार उस समय भी पर्याप्त रूप में परिपक्ष हो चुके थे। उस समय सब साधारण जनता विशेष शिचित नहीं थी। शिचा केवल शासकवर्ग चित्रोयों और ब्राह्मणों में ही थी। शासकवर्ग को तो उस राजनीति का सुन्दर ज्ञान सम्पादन करना पड़ता ही था, किन्तु बिना राजनीति की शिचा के उस समय ब्राह्मणों को भी विद्वान नहीं गिना जाता था। उस समय का साहित्य केवल वेद थे। अतएव ब्राह्मणों को वेदों के शाब्दिक ज्ञान के साथ-साथ राजनीति का व्यवहारिक ज्ञान भी प्राप्त करना पड़ता था। उस समय के प्रायः ब्राह्मणों के राज्या-श्रित होने के कारण तो राजनीति का झान उनके लिये और भी महत्वपूर्ण एवं आवश्यक हो गया था।

यह निश्चय-पूर्वक कहा जा सकता है कि उस समय राजनीति के ज्ञान को सभी विषयों की अपेता अधिक तरजीह दी जाती थी। वेदों तक के अन्दर राजनीति का बड़ा सुन्दर क्र्यान हमारे इस कथन की पुष्टि में पर्याप्त प्रमाण है। उस समय की राजनीति आजकल से कम महत्य-पूर्ण नहीं थी । उस समय निरंकुश प्रणाली (Absolute राजतंत्र monarchy) नियमित राजतंत्र प्रणाली ( Limited monarchy ) अल्पस त्तात्मक शासन प्रणाली (Oligarchy) आदि सभी प्रकार की शासन विधियों से परिचित थे। उस समय राज-तंत्र, गरातंत्र, और प्रजातंत्र सभी प्रकार के राज्य थे। उस समय भारतवर्ष छोटे-होहे भक्तों में बंटा हुआ था। अतएव उस समय परिमित स्थान की देशभक्ति का अत्यधिक प्रचार था। इसीलिये वह लोग उस समय वैदिक युग में भी स्वराज्य और पर-राज्य के महत्व को ख़ृब सममते थे। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के ५० वें सूक्त का तो नाम ही स्वराज्य सूक्त है। इस सूक्त में कुज ११ मंत्र हैं छोर प्रत्येक मंत्र के अन्त में 'स्वराज्य' शब्द आया है।

सारांश यह है कि उस समय के साहित्य में राजनीति का सर्वोच स्थान था।

यह सत्य है कि प्राचीन बैदिक युग में भी ब्राह्माणों में वेदों के पठन-पाठन की प्रणाली पाठ रूप में ही थी। अर्थ रूप में तो वेदों को इने-गिने विद्वान ही जानते थे। अतः वेदों के पश्चात् अर्थ रूप में पढ़ने के लिये केवल राजनीति ही रह जाती थी।

यह निश्चय है कि राजनीति के उस समय भी सुन्दर-सुन्दर प्रन्थ उपस्थित थे। कौटिल्य द्यर्थशास शुक्र और वृहस्पति को राजनीति के प्राचीनतम श्राचार्यों के रूप में उपस्थित करता है। यद्यपि द्याज उनके नाम से बहुत छोटे-छोटे प्रन्थ ही मिलते हैं; किन्तु यह जान पड़ता है कि छोटे-छोटे प्रन्थ भी उनके प्राचीन बड़े प्रन्थों के श्राधार पर ही बनाये गये थे।

महाभारत के समय तक शुक्त, वृहस्यति, विश्वा मित्र, विशाद और परशुराम द्यादि राजनीति के त्राचार्य समझे जाते थे। किन्तु महाभारत के समय में तीन महा धुरंधर नीति विशारदों का जन्म हुआ। इनमें भगवान कृष्णचन्द्र सबसे प्रमुख थे। मीष्म पितामह तथा महात्मा विदुर भी उस समय के सर्वश्रेष्ठ राजनीति हों में से थे। इसप्रकार महाभारत के समय तक साहित्य में राजनीति का ही सर्वोच्च स्थान रहा।

महाभारत के बाद के डेढ़ सहस्र वर्ष के समय को भारतवर्ष का रिनासेंस अथवा साहित्यिक जामित काल कहा जा सकता है। इस समय सब से प्रथम पुराण नामक एक प्रथ की रचना की गई, जिसमें अनेक प्रकार की कथाओं का समावेश समय समय पर किया जाता रहा। वाद में इसी पुराण के अनेक नाम देकर अनेक पुराणों की रचना की गई। इसके अतिरिक्त वेदों की व्याख्या रूप ब्राह्मण-मन्थों की रचना भी इस समय ही सबसे प्रथम हुई। इन दोनों ही प्रकार के मंथों में यज्ञ के साथ-साथ राजनीति को अत्यधिक महत्व दिया गया। पुराण में तो राजाओं की कथा के बहाने से राजनीति की ही शिचा विशेष रूप से दी गई थी। इस प्रकार इस समय भी राजनीति ने आसन को सर्वोच्च बनाए रक्खा।

महाभारत की घटना के बाद ज्ञत्रियों के पतन का समय आया। इस समय वह निर्वल थे। ब्राह्मण मंत्री इतने कि राजा उनके हाथ की प्राय: कटपुतली ही बनगये। अनेक राजा उस समय धार्मिक तथा दार्शनिक चर्चा में ही श्रपना सारा समय बिताने लगे। मिथिला श्रीर काशी के राज-दरबार तो राजनीति से बहुत दूर जा पड़े। इसी समय यज्ञ पटक, श्रोत सूत्र, संस्कार पटक, धर्म सूत्र श्रीर उपनिषदों ऋादि की रचना हुई। इस समय धर्म सूत्रों की रचना भी की गई, ऋौर उनेक द्वारा फिर भी राजनीति को मुख्य स्थान देने का यत्न किया गया।

चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में यद्यपि जैन और बौद्ध साहित्य की अत्यधिक उन्नति हुई; किन्तु इस समय अकेले आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य अथवा कौटिल्य के अर्थशास्त्र के कारण ही राजनीति को फिर प्रधानता मिल गई। साहित्य में राजनीति को गौण स्थान वास्तव में उस समय दिया गया जब विक्रम की चौथी शताब्दी से अलंकारमय काव्य मंथों का निर्माण किया जाने लगा। इस समय के राजा लोग काव्यों की मधुरता पर मुग्ध होकर काव्य धर्म इस कवियों को अधिक आश्रय देते थे। महाराज विक्रमादित्य और राजा भोज इस के उदा-इरण हैं। तो भी यह कहा जा सकता है कि महाराजा विक्रमादित्य के समय में भी काव्यों को राजनीति से अधिक आदर नहीं दिया गया

# जीवन-सुधा⊷→



श्री चन्द्रशेखर शा**स्त्री** 

		,
		¢

था। उन्होंने भारतवर्ष से शब्दों को निकाल कर ब्रद्भुत पराक्रम का परिचय देफर यह सिद्ध कर दिया था कि काठ्यों की शृंगार बाणी से उनके मनका ब्रोजकम

नहीं हुआ था। कालीदास के प्रन्थ रघुवंश में शृंगार की अपेका राजनीति का कम न होना इस बात का प्रमाण है। किन्तु वह राजा भोज साहित्य माधुरी की चाशनी में इतने पग गये थे कि वह राज-काज तक से बेसुध हो गये और उनको अपने अन्तिम दिन शत्रु के जेल-स्ताने में बिताने पड़े।

हमें यह कहने का दु:साहस होता है कि तत्कालीन राजाओं की निर्वलता का कारण बहुत अंशों में हमारा शृंगार-मय वर्णन वाला काव्य साहित्य ही था। महाराजा पृथ्वीराज वाहान तक इतने वीर होने हुये भी इसी शृंगार के बशवर्ती होकर ग़ाफिल दशा में ही, साबधान होने से पूर्व, शत्रु द्वारा दबा लिये गये, जिस से अन्त में उनको अपने प्राणीं से ही हाथ धोना पडा।

सारांश यह है कि यह समय साहित्य में राजनीति की अवनित का युगथा और इसी कारण हमारे हिन्दू राज्यों की भी अवनित हुई।

इसके परचान भारतीय साहित्यों में काञ्य बिरिन्न, दर्शन शास्त्र श्रीर भक्ति रस की बाद सी श्रा गई। दुःखी श्रीर परतन्त्र लोग मगवान् को स्मरण न करें तो श्रीर क्या करें ? श्रतएव इस समय के भारतीय लेखकों की लेखनी में राजनीति का स्थान बहुत गीण हो गया था। मुसलमान शासकों में भी पठानों में राजनीति कम थी। उन में श्रलाउदीन खिलजी श्रीर फिरोज-नुग़लक के श्रतिरक्त शेष राजनीतिक्त कहलाने योग्य नहीं थे। हां, मुगलों के शासन काल में शेर-शाहसूर श्रार श्रक कर इतने भारी राज नीतिक्त थे कि उनको संसार के महान् राजनीतिक्तों में स्थान दिया जा सकता है।

श्रमकर का दरकार राजनीतकों का दरवार था। उसके प्रमान से सारे देश में राजनीति का फिर उत्थान हुन्ना। इसकें कुछ समय परचान् ही महाराष्ट्र में छत्रपति शिवाजी ने अपनी अभूतपूर्व राजनीति का परिचय दिया। औरक्रुजेव के अत्याचारों ने सोते हुये देश को किर आगा दिया। इस समय बीर शिवाजी के श्रतिरक्त, महाराण राजसिंह और गुक्त गोविंद सिंह जैसे चतुर राजनीतिक हुए। उनके आश्रय से महा कवि भूषणं तथा राजपूताना के अनेक चारणों ने वीररस तथा नीति के अनेक मन्थों का निर्माण किया। राजनीति ने साहित्य में एक बार फिर अपने उच्च स्थान होने की घोषणा की, किन्तु वास्तव में यह स्थायी प्रयत्न नहीं था।

श्रीरंग से के परचात निर्वस मुसल सम्राटों, स्थानीय मुसलमान शासकों श्रीर मरह ठों ने देश के अनेक भागों पर शासन किया, किन्तु इस शासन में उच्च कोटि की राजनीति का स्थाय होने के कारण उन सकते ही बिटिश नीति की बुहारी ने एक अटके में ही बुहार दिया।

इस समय रेल और तार का आविष्कार होने के कारण हमको यह पता चला कि हम छोटे छोटे अंग, बंग, कलिंग या मगध आदि देशों के निवासी न होकर एक विशाल आहत-वर्ष के निवासी हैं। यूरोप के विदेशियों के हमले से हमको पता चला कि सारे भारत यासियों के (मुसलमानों सहित) राजनीतिक और आर्थिक स्वार्थ एक हैं। इस लिये इस समय सबके सब एक भारत भूमि की संतान होने के कारण देश-भक्ति के मंत्र से दी जित होगए।

इस समय विदेशी भाषाओं के अध्ययन से हमको पता लगा कि विदेशों में साहित्य में राज-नीति का प्रमुख स्थान है। वहां एक मजदूर बोझे को उठाये हुए भी दैनिक पत्र को अपनी जेब में डालता है और मस्ताने का अवसर जीवन सुधा मिलते ही बोझे को एक स्त्रोर रखकर जेव से अखबार निकाल कर पढ़ने लगता है।

यश्वि योरोप की सभी भाषाओं ने साहित्य के सभी अंगों में अत्यधिक उन्नति की है, किन्नु वहां नागरिक-शास्त्र की सब से अधिक प्रधानता है। यूरोप का प्रत्येक निवासी पहले नागरिक बनना चाहता है; बहानिक, साम्बित्बक गणितज्ञ अथवा अर्थशास्त्री पीछे।

इसी नागरिक शास्त्र की उसति के कारण बहां साहित्य में राजनीति का प्रधान स्थान है; क्योंकि नागरिक बनते ही नागरिक अधिकारों का प्रश्न झाता है। इन अधिकारों में ही वह अधिकार भी हैं, जो देश के प्रवन्थ में प्रत्येक नागरिक को प्राप्त हैं। अतएब बहां यदि सुद्म हिन्से विचार किया जावे तो नागरिक शास्त्र का ही विकसित होकर राजनीति नाम होजाता है। अथवा यह भी कहा जासकता है कि नागरिक शास्त्र भी राजनीति का ही धांग है।

खेद है कि हम भारतवासी यूरोपवासियों के इतने सम्पर्क से भी अधिक न सीख पाए। हमारे हृदय में आज भी काव्य और उपन्यासों की अपेक्षा राजनीति के लिये मान नहीं है। बिद आज किसी से हिन्दी लेखकों के नामों को पूंछा जादे तो वह तुरन्त ही अव्छे-अव्छे कियों और उपन्यास लेखकों के नाम गिना देगा। राजनीति तथा इतिहास आहि लेखकों को तो शायद पूंछा भी न जावेगा। यह है हमारी आजकल की दृषित मनोवृत्ति। वास्तव में जिस समाज में जिस विषय का प्रेम होता है, वह जसी में उसति करता है। आज राजनीति में कम प्रेम होने के कारणा ही हम राजनीति में इतने अधिक शिका है हम है।

साहित्य में राजनीति के स्थान का यूरोप के विषय में श्रध्ययन करते हुए हम देखते हैं कि वहां राज-सीति के प्रस्थ सिखने वालों का अधिक मान है। आजितिका की हिन्द से भी सूरोप और अमेरिका में राजनीति के लेखकों को लेखन व्यवसाय
से अधिक पैसा मिलता है। राजनीति के पश्चात्
वहां अर्थ शास्त्र और इतिहास विषय के लेखके
अधिक मान, प्रतिष्ठा और आजीविका प्राप्त किए
दुए हैं। इसके पश्चात् वैज्ञानिकों का और फिर,
कार्थ्य तथा उपन्यास आदि के लेखकों के मान
का नम्बर आता है।

वास्तव में उन्नत राष्ट्र में इन विषयों के सन्मान और स्थान का यही कम है। किंतु अब-नतिशील श्रीर पतित राष्ट्री की दशा बिल्कुल दूसरी होती है। उन देशों की राजनीति के ऋारमा का विनाश श्रथवा पतन होजाने के कारण वहाँ राजनीति आदि उच्च कोटि के विषयों को नीचा स्थान दिया जाता है। भारत विषय का एक उदाहरण है । ऋषने राजनीति की ऋात्मा के पतन के कारण ही साहित्य में यहां विभिन्न विषयों को उपरोक्त कम से ठीक, उलटे क्रम में मान दिया जाता है। इसीलिये यहां उक्त मान का कम निम्नलिखित है:--

उपन्यास, काञ्च विज्ञान, इतिहास, ऋर्थ-शास्त्र श्रीर राजनीति ।

इस प्रकार साहित्य में सर्वाब स्थान की अधिकारिसी होते हुए भी राजनीति को भार-तिव साहित्य में सक्से नीचा स्थान दिया जाता है। यही कारण है कि भारतचर्ष में लेखकों की गिनती की जाने पर पहले काव्य और उपन्यास लेखकों को ही गिना जाता है, राजनीति और इतिहास के प्रन्थ लिखने वालों को तो कोई पृछता भी नहीं।

सारांश यह है कि वास्तव में राजनीति का साहित्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं स्वीब स्थान है और वह पाश्चास्य देशों में उसको प्राप्त भी है, किन्तु भारतवर्ष में राजनीतिक जागृति के अभाव के कारण राजनीति को साहित्य में

## काविता और जीवन-एक कहानी

श्री 'श्रद्धेय'

में आपको सिर्फ कहानी नहीं, कहानी से अधिक कुछ सुनाने लगा हूँ। जरा कान लगा कर और कान से अधिक मन लगाकर सुन लीजिए। जो गाली आप देना चाहते हैं — पढ़कर आप गाली देंगे यह तो निश्चित है — उसे जरा अन्त तक रोक रिखए। 'सब का फल मीठा होता है' — क्या पता आपके सब का मुझे मिलने वाला फल, यह गाली, भी मीठी हो जाय ? इस 'कहानी' पर कलम घिसने का पारिश्रमिक मुझे नहीं मिलेगा, यह तो आप जानते ही होंगे, इसलिये गाली के बारे में किकमन्द होने के लिए आप मुझे समा कर देंगे, यह उम्मीद है।

श्रीर जब 'कहानो से श्रधिक छुद्ध' कहने लगा हूँ, तब प्लाट-कथानक के भगड़े में क्या पड़ना । ये छोटी बार्ते कहानी के लिये ठीक होती हैं। यहाँ तो जो सामने ह्या जाय वही उपयुक्त है। तो लीजिए, याद श्राती है हरिद्वार की एक बात—

शिवसुन्दर को सूमा था कि वह कलकत्ते में रहकर गली-गली की साक छानकर कविता करना चाहता है, तभी कविता नहीं बनती। बंगाली कलके, सिख ब्राइवर, एंग्लो-इण्डियन लोकर-लफंगे, विद्वारी कान्स्टेबल और सभी जगह के भिष्वमंगे—सब आदमी, आदमी—भला यह भी कोई कविता का विषय है? इन्सान और कविता — हुइ! कविता के लिए चाहिए प्रकृति, नदी—नाले, पलारा के उपवन, लता-फूल, मलय-पवन, और दूर कहीं कुछ अस्पष्ट, आहष्ट नहीं, दूर कहीं किसी नृपुर-बलयित रहस्यमयी की

पंगध्वनि..... और इस सूम के उठते ही वह बोरिया-बिस्तर — बिस्तर कम बोरिया अधिक— लेकर हरिद्वार चला आवा था। गुरुकुल की तरफ नहर के किनारे एकान्त में एक मकान में सिरे का कमरा उसे मिल गया था, वहीं रहकर वह कविता के पादुर्भाव की प्रतीका कर रहा था।

वह अभी प्रकटी नहीं थी। दिन भर घरहर के खेतों में भटकमा उसे अन्त्रा लगा था, दूर एक पहाड़ी की चोटीपर बने हुए देवी के मन्दिर की आदम सूर्व का मुँह किया लेना और भी अञ्झा लगा थाः और शाम को गंगा की छोर से को तेज और शीतल हवा आकर बारीक पिसे हुए रेत का परिमल उसके सारं चेहरे पर चिपका गई थी, बहु भी उसे बुरी नहीं लगी थी...लेकिन बाच्छे लगकर ही यह सब रह गए थे. जिस दैवी घटना की, उन्मेष की बाशा उसने की थी वह नहीं हुन्त्रा था। रात को चारपाई पर लेटा-लेटा वह सोच रहा था कि क्यों नहीं हुआ वह उन्सेष. और कुछ क्तर नहीं पारहा था। केवल एक अतृति-सी उसे घेर रही थी। वह कभी ऊँच लेता. फिर जाग जाता, और जागने पर न जाने क्यों उसे सूना-सूना लगता और अल्लाहट होती। उसे लगता कि जीवन बहुत अधिक नीरस उसे जीने के लिए कविता की जरूरत है. मुखर सौन्दर्य की जरूरत है .....

बह फिर ऊँघ गया, और जब बह चौंक कर जागा तब आधी रात थी। उस सन्नाट में अकस्मात जाग जाने का कारण उसे नहीं समम आया; बह कान लगाकर सुनने लगा कि किस स्वर ने उसे जगाया था। कुछ नहीं। योंही जग गया वह ।
लेकिन—उसे जान पड़ा कि कमरे की खिड़की के
बाहर कहीं न्युरों की ध्वनि हो रही है, रह-रह
कर और बदल-बदल कर, मानो कोई स्त्री
संभ्रान्त गति से चल रही है, कभी हक कर और
कभी तेजी से।

इतनी घनी रात में कौन बाहर ? और क्यों ? शिवसुन्दर पूरी तरह जाग गया। उसकी अशानित केन्द्रित होकर एक तनी हुई सी प्रतीचा बन गई।

नूपुरों की घ्वनि फिर आई। उसने कोशिश की, कान लगाकर पहुँचान सके कि कहाँ से आती है, लेकिन उसे लगा कि कभी वह एक तरफ से आती है, कभी दूसरी ।

क्या हवा ही उसे धोखा दे रही है ? रह-रह कर एक मीठा सा कोंका आ जाता है, कभी एक तरफ से, कभी दूसरी तरफ से, क्या इसी लिए तो नहीं वह स्वर भी भागता हुआ जान पड़ता ? क्योंकि किसी अभिसारिका का—यदि वह स्त्री अभिसारिका है तो, लेकिन और हो क्या सकती है?—ऐसे समय इथर-उथर भागना, वह भी जब उसके पायल इतनी जोर से बज रहे हों, कुछ जँचता नहीं। किय भी कह गए हैं, "मुखरमधीरं त्यज मञ्जीरं—"

तभी पायल बड़े जोर से बज उटे--खन्न-

खन्न्!

शिवसुन्दर उठ बैठा। वह स्वर मानो उसके सिरहाने के पास से ही आ रहा था। उसका हृदय धकथक करने लगा—इस एकान्त निर्जन स्थल में किसी अपरिचिता का इतना साहस...

पायल फिर बजे, ऋौर शिवसुन्दर जान गया कि वे कहाँ हैं। उसके सिरहाने के पास की खिड़की के बाहर ही वह स्वर है।

लेकिन कौन है वह की, श्रीर इतनी रात वहाँ क्यों है ? श्रीर इतना होसला कैसे है उसका कि—? शायद कोई पुंश्चली की होगी—लेकिन पुंश्चली होती, तो क्या इससे श्रीधक चतुर न होती, चुपचाप न श्राती ?

शिवसुन्दर को प्रतीत हुआ कि बहुत तेज गति से बहुत सा सोच जाने की जरूरत है। वह जल्दी-जल्दी दिनभर में देखे हुए प्रत्येक स्थी-मुख की याद करने लगा—कीन हो सकती है जो उसके पास ऋाई है ?

.....तमोलिन से जब पान लिया था, तब वह पैसा लेते हुए सिर मटका कर मुस्करा दी थी। लेकिन उस मुस्कराहट में तो खास कोई बात नहीं थी—लगी तो वह ऐसी ही थी मानों गाहक का दस्तूर हो—जैसे पान के साथ तम्बाकू मुक्त मिलता है वैसे ही मुक्त यह मुस्कान दी गई जान पड़ती थी। लेकिन कौन जाने, यह आधोरात में बजते हुए पायल भी उसके 'दस्तूर' ही में शामिल हों.....

.....शामको उसने हलवाई से दृध लिया था, त्व हलवाई की लड़की भी बैठी थी। शिव- सुन्दर एकटक उसकी श्रोर देख रहा है, सहसा यह जानकर वह शर्म से लाल हो आई थी और भीतर चली गई थी। शर्म क्या है? पुरुष को श्रांक पिंत करने का एक साधन — तभी तो मारबाड़िनें पित के सामने धूँ यट निकालती हैं लेकिन मेलों में श्रधनंगी नहा श्राती हैं—पित को श्राक पिंत करना होता है श्रीर दूसर श्रादमी श्रादमी थोड़े ही हैं, सिर्फ ग़ैर हैं।

..... और वह माँगने वाली औरत—ऐसी उसने कभी नहीं देखी थी। जब वह साधारण अभील से आकृष्ट नहीं हुआ, तब बोली, "तेरा धोवन पी छूँ, बाबू एक पैसा दे। तेरा थूक चाट छूँ, वाबू—"जब इसस भी उसे ग्लानि ही हुई तब—तेरे गुलाबी गालों पै मरूं, बाबू, एक पैसा दे। तेरी दादी को हाथ लगाऊँ, बाबू, —" और वहकर ठोदी ही तो पकड़ली थी उसने.....

शिवसुन्दर उस खिड़की पर जा पहुँचा। श्राँखें फाड़-फाड़ कर उसने बाहर देखा, कोई नहीं दीखा। यह फिर श्राकर चारपाई पर लेट गया। इप्रीर तभी पायल फिर बजे। वह फिर उठ बैठा।

श्रपने हृद्य का स्पन्दन उसके लिए श्रसहा होने लगा। उसने फिर खिड़की पर जाकर देखा— कुछ नहीं। तब उसने एकदम किवाड़ खोल दिए छौर बाहर निकल आया। घरका चक्कर काटा, लेकिन कोई नहीं दीखा। वह फिर किवाड़ पर आकर कका—कि दूर कहीं पायल पिर बजे! शायद वह की हनाश होकर लीटी जारही है, श्ररहर के खेतों में से वह स्वर आया था। शिवसुन्दर के भीतर उत्कर्ण्टा इतनी उमड़ आई थी कि अब उस रहस्य को खोल डालना बहुन जरूरी हो गयाथा— उस की को खोज लना...श्रीर रात भी नीत्र गति से बीतती जा रही है, यह भी फिक उसे हो आई थी। नींद उसकी आँखों में नहीं थी, कुछ और था जो उसके लिए अभ्यस्त नहीं था और जिसका वह नाम नहीं जानता था.....

वह लपक कर अरहर के खेन में घुसा। उसके मनमें अथा, अगर में शब्द बेधी बाए चलाने की किया जानता ते। उसे बाएों से ऐसा घर लेता कि एक जगह टिक कर खड़ी रहती! लेकिन—लेकिन—

उसका हृदय धक् से हो गया—बहुत पास ही कहीं बहुत मधुर कं मल स्वर से पायल बजे— खनम !

शिवसुन्दर की श्रातुर श्राँखों ने श्रन्धकार को भेद डालना चाहा, पर कुछ दीखा नहीं। उसे शीघ्र ही श्राने वाले सबेरे की याद श्राई, पर सबेरा होने से सब चौपट होजायगा! उसने धारे से पुकारा, "कीन हो तुम?"

जवाब नहीं श्राया। उसने फिर कहा, "कौन हो? इधर निकल श्राश्रो।"

फिर भी उत्तर नहीं मिला। उसे विहारी का एक दोहा याद श्राया—श्ररहर, कपास, ईख सब कट जायँगे ... श्रभी श्ररहर कटने के दिन नहीं त्राए, पर वह तो रात भी नहीं बीतने देना चाहता... उसने फिर पुकारा, "कहाँ हो तुम ?"

उत्तर में कुछ दूरपर पायल बजे ! दाई स्रोर कहीं पर—लेकिन नहीं, वे फिर वजे तो उसे प्रतीत हु स्रा कि बाई स्रोर हैं। वह खेत से बाहर निकलकर मेंड़ पर स्राया, हताश—सा बंठ गया।

हवा का भोंका कभी-कभी आता था, तब उसमें बसे हुए शीत से शिवसुन्दर का कुण्ठित मन और भी सिकुड़ जाता था... और तब दूर कहीं, कभी इधर, कभी उधर, पायल बज उठते थे...

रात—या यों कहें कि भोर, क्योंकियो फटने ही वाली थी—श्चत्यन्त सुन्दर थी। लेकिन शिब-सुन्दर का ध्यान उधर नहीं था, वह मर्माहत-सा मेंड़ पर बैठाथा...

उपा की एक लाल किरण आकाश में फिर गई, मानों देवी के आने के लिए मार्ग को बुहार गई, किसी लाल मंगल सूचक चूर्ण से चौक पूर गई । शिवसुन्दर की थकी आँखों ने देखा; चारों और प्रकृति का लास है—नदी है, नहर है, पलाशके फूले हुए उपवन हैं, समीरण धीरे-धीर बहने लगा है और फिर न जाने किसके पायलों की ध्वनि उसके पास लिए आररहा है ...लेकिन इस सबकी जैसे उसपर छाप नहीं पड़ी। उसमें सिक एक ही जिहासा थी-जिसके पायल हैं, वह कहाँ हैं?

पायल उसके हाथ के पास कहीं बजे। उसने चौंककर देखा, वहाँ एक छंटा सा,सूखा-सा पौधा था, और कुछ नहीं!

श्रीर पौधा हवा के भीके में फिर काँपकर वोला, खनन्!

च्या भर शिव सुन्दर स्तव्ध रह गया, फिर मानों त्र्याकाश से गिरा...फिर उसमें एकाएक निराशा का क्रोध उमड़ त्र्याया, उसने एक ही भटके में उस पौधे को जड़ समेत नोंच लिया। और उसके क्रोधक म्पित हाथों में भी उस पौधे में लगी हुई पकी फलियों ने कहा, खनन !

शिषसुन्दर ने उस हताशा में मानी सत्य को देख लिया, लेकिन सममने से पहिले ही वह सत्य बुम भी गया—उसने जाना किवह सिर्फ किवता नहीं चाहता है, सिर्फ सीन्दर्य नहीं चाहता है, इससे अधिक कुछ चाहता है...लेकिन क्या चाहता है? वह नहीं जानता, इतना जानता है कि वह अतुम रह गया है, भूखा रह गया है, चौंक कर ऐसे जाग गया है कि उन्निद्र होगया है उसे...

[ २ ]

शिवसुन्दर धीरे-धीरे घर लौटा। गत भर की घटनाएं मानों एक पहले कभी सुने हुए प्राम्य-गीत की एक पंक्ति में सिमट कर उसके मन में गूँजने लगीं-"तेरी पैंजनिया न्यूँ बाजें ज्यूँ बाजे बीज सणी दा!" बेबकूक कहीं का--उलटी बात कहता है! द्याखिर गँवार रहा होगा! "बीज सणी दा न्यूँ बाजे ज्यूँ बाजे तेरी पैंजन" यों होना चाहिए था!

पर घर पहुँचते-पहुँचते वे घटनाएँ इससे भी छोटी एक सूक्ति में सिमट आईं-वह जीवन माँगता है।

कविता माँगना, सौंदर्य माँगना, वेवक्की है। जहाँ जीवन नहीं है, वहाँ कविता क्या और सौंदर्य क्या ? वे होंगे वसे ही खोखल जैसा यह बजता हुआ सनी का बीज!

तत्र फिर कलकता ? लेकिन कलकता जीवन कहाँ है, वह तो निरा सत्य ही सत्य है, कड़वाहट है। वाक्यं रसात्मकं काव्यं—श्रोर कड़वा श्रीधक से श्रीधक छः रसों में से एक है, तब सत्य भी जीवन का श्रीधक से श्रीधक एक छठा हिस्सा है......वाक्री पाँच ? बाक्री पाँच ? श्रीर कहाँ हैं, मधुरेण समाप्यन । मधुर नहीं तो कुछ नहीं—बही रसों में रस है...

शिवसुन्दर की समक्ष में आगया कि उसने गुरुकुल की तरफ आकर गलती की। वह सामान लकर हर-की-पौड़ी पहुँचा, वहाँ मेल की भीड़ को चीरता हुआ भीतर घुसा और अन्त में ठीक-ठाक करके उसने एक कमरा ले लिया जिससे गंगा और उसके पार की पहाड़ियाँ, भी दीखती थी, और इस पार घाट की सीढ़ियाँ उसपर आने-जाने वाली भक्त-भक्तिनियों की भीड़ें और उपर का रास्ता भी दीखता था।

सामान एक क्रोर रखकर वह भरोखे पर बैठ गया क्रीर नीचे भाँकने लगा।

जीवन पाने का यही ठीक ढंग है। कलकत्ते में तो आदमी पिस जाता है—वह भी किन में? गन्दे, मैंने कुचैले लोगों में जिनसे झू जाने पर दिनभर अपने शरीर में बू आती है। यहाँ और बात हैं—सौंदर्य भी है, लोग भी हैं, गित भी है, और फिर भी वह अलग है, इस भीड़-भड़के के अधीन नहीं, उससे उपर है, दर्शक है। दर्शक होकर ही जीवन से काव्यनस खींचा जा सकता है—जो स्वयं उसमें पड़ गया वह तो तिल हो गया जिसे पेर कर तेल खींचा जायगा।

शिवसुन्दर की हिन्द नीचे घाट की सीर्द्याँ चढ़ती हुई दो स्त्रियों पर टिक गई। तभी न जाने क्यों उन्होंने भी श्रापस में बात करते-करते ही ऊपर देखा। शिवसुन्दर से श्रांख मिलने पर वे सुकरा दी श्रोर श्रागे बढ़ गई।

हाँ, ठीक तो है। जिस चीज की छोर यह इशारा है, वह प्रेम ही तो है। जीवन ही तो है, क्योंकि प्रेम जीवन का मधुरतम रस है।

लेकिन मन शिवसुन्दर का चाहे जितना भागे, ट्रांस्ट उसकी नीचं ही लगी हुई थी। दां श्रीर क्षियाँ उसके ट्रांस्ट-५थ से गुजर रही थीं। शिवसुन्दर एकटक उनकी श्रीर देख रहा था। एक ने तिरखी चितवन से उसे देखा, वह ट्रांस्ट मानों कींध कर कुछ कह गई; पर दूसरी ने एक तिसी, सशंक श्रीर कुछ कुछ भीत ट्रांस्ट श्रपनी संगिनी श्रीर शिवसुन्दर पर डाली श्रीर श्रिधक तीत्र गति से श्रागे चल पड़ी। शिवसुन्दर थोड़ा-सा सुस्करा दिया। फूल के साथ कांटे तो होने ही चाहिए, नहीं तो जीवन का मजा क्या। एक स्रोर स्नाकर्षण, दूसरी स्रोर विदन, यही तो है जीवन।

न जाने क्यों, क्षियाँ जोड़ियों में ही जा रही थीं, अकेली नहीं। एक और जोड़ा सामने से गुजरा। इन्होंने भी न जाने क्यों भरोखे के पास आकर उपर देखा। उन की दृष्टि में सन्देह पहले से था, जब उन्होंने शिवसुन्दर को एकटक देखते हुए पाया तब उसमें कोध भी आ मिला। अवज्ञा से सिर हिला कर वे आगे निकल गईं।

शिवसुन्दर ने सोचा, बिरोध में एक आकर्षण होता है. एक ललकार होती है। वह आह्वान करता है कि आश्रो सुम से दो-दो हाथ खेल लो। श्राचार्य भी कह गए हैं कि बिना संघर्ष के, conflict के, कला का विकास नहीं होता! हो कैसे सकता है?

ज्यों ज्यों दिन बढ़ता स्त्राता था, स्नानार्थी स्रिधकाधिक संख्यामें स्त्राते जाते थे। जब स्रौरनें भी मुन्ड बाँध-बाँध कर स्नारही थीं, स्रौर मुन्ड ही लौटने लगे थे।

एक टोली शिवसुन्दर के भरोवे के नीचे से निकली। उन कई-एक श्रीरतों में से एक ने भी श्राँख उठाकर नहीं देखा, उनके लिए मानों शिवसुन्दर था ही नहीं।

शिवसुन्दर ने तड़पकर कहा "नहीं, नहीं यह नहीं है जीवन ! यह झूठ है, यह ऋसत् है, ऋशिव है, ऋसुन्दर है ! यह हो ही नहीं सकता। यह जीवन नहीं है !"

लेकिन वह समूह निकल गया; उसके बाद श्रीर भी कई टोलियाँ स्त्रियों की आई और निकल गई, पर किसी ने नहीं देखा कि जीवन का भिन्न शिवसुन्दर भरोखे में खड़ा है, वह प्रवाह उसकी आंखों के आगे से वैसे ही निकल गया जैसे नदी के बीच में अथाह पानी बहता हुआ चला जाता पर किनारे से सटे हुए और सड़ते हुए तगा को वहीं पड़ा रहने देता है हिलाता भी नहीं...उसे लगा, वह समुद्र की लहरों द्वार उच्छिष्ट रेत पर पड़े एक घोंचे के भीतर सहते हुए जीव की तरह है, कि वह इस प्रवाह के आगे जुठन की तरह ऋत्यंत नगएय, क्षुद्र होगया है...

स्रौर उसने फिर तड़प कर कहा, "नहीं, यह सूठ है, यह नहीं है जीवन ! मैं नहीं माँगता यह !

लेकिन वह क्या माँगता है आ किर ? बह जानता है कि यह नहीं है जो उसने माँगा था; लेकिन क्या माँगा था उसने, यह तो वह नहीं जानता है। वह इतना ही जानता है कि वह सुद्र होगया है, अपनी आंखों में गिर गया है, जब कि आशा थी उसे बड़े हो जाने की, स्वामीत्व की...

वह भरोखे से हट गया और सोचने लगा, क्या में कलकत्ते लीट जाऊँ ? लेकिन इस विचार से वह सहम गया। कलकत्ते में तो कविता नहीं बनेगी; यहाँ शायह—इस अतृप्ति और अपदस्थता में शायद...

विधि हँसती है। विधि हँसती है या नहीं, कीन जाने; पर वह हँसती जरूर है। मुहाबरे ने उसे हँसने का हक दिया है।

लेकिन शिवसुन्दर की भाँगें ? उसकी श्रवृप्ति ? उमकी वासनाएँ ?

विज्ञान की कुछ पुस्तकें उसकी समस्याओं का उत्तर देने की कोशिश करती हैं। लेकिन वे विदेशी हैं। विदेशी ज्ञान शिवसुन्दर क्यों चाहे? वह हिंदी लेखक हैं। हिंदी राष्ट्रभाषा है। वह राष्ट्रभाषा का लेखक हैं। क्या इतना ही इसलिए पर्याप्त नहीं हैं कि वह आँखें बन्द करके गाया करे, गाया करे अपनी माँग के गान, अपनी अनुभूति के गीत, नहीं, अनुभूति के अपने अननुभव के आलाप! चाहे वह गाना उस सिखाए हुए मंगते की पुकार की तरह क्यों न हो जो एक दमड़ी की उपलब्धि के लिए पहले स्वर में दीनता लाता है, किर उस दीन स्वर को सुन कर स्वयं मान लेता है, वह आते हैं? शिवशंकर भी तो आकाश के तारे तोड़ने का दम नहीं भरता, सामर्थ की डींग नहीं हाँकता;

श्रभिमान के तिक्त श्रौर कर्म के कपाय रसों से उसे क्या, वह तो 'मधुरेण समापन' चाहता है ; वह तो मांगता है, सिक्ष मांगता है एक छदाम !

 $\times$   $\times$ 

श्रव श्राप को मोका है कि श्राप गाली दे लें। कहानी खत्म हो गई है। लेकिन जो कुछ श्राप को कहना है जल्दी कह डालिए, क्योंकि मुझे श्रभी कुछ श्रोर निवेदन करना है ? मैंने कहा था न 'कहानी से श्राधिक कुछ कहंगा ?

शायद आप को लगे कि मैंने कहानी भी नहीं

कही, श्रिधिक की क्या बात । लेकिन अगर आप को यह लगा है तो आप अब तक दिल के गुबार निकाल चुके होंगे। अन्त में 'अधिक कुब्र' मुझे यह कहना है कि अगर मेरी रचना में आप को में 'छोटा मुंह बड़ी बात' जान पड़ी हो, तो यह सोच कर तमा कर दीजिए कि आखिर में भी एक दुर्भाय का मारा हिन्दी लेखक हूँ, उस हैं सियत से मैं भी आकाश के तारे तोड़ने या सामर्थ की हींग मारने वाला, अभिमान का तिक और कर्म का कषाय रस पीने वाला कीन होता हूँ, में भी तो मधुरेण समापयेत के लिए माँगता हूँ सिखाए हुए आर्त्तर में आप की दया का एक छदाम !

### [ ३० वें पुष्ठ का शेप ]

श्रिधिक मान नहीं दिया जाता। इसको हम भारत-वर्ष का केंवल दुर्भाग्य ही कह सकते हैं ।

यद्यपि श्राजकल भारत वर्ष के साहित्य में राजनीति का स्थान श्रत्यन्त महत्वपूर्ण नहीं है; किन्तु यह निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि उसका भविष्य उज्ज्वल हैं।

सन् १६१७ से कांग्रेम ने राष्ट्रीय जामित के कार्य को इस जोर-शोर के साथ उठाया है कि अब भारत वर्ष के किसान तक 'स्वराज्य' शद्द से परिचित हो गए हैं। कांग्रेस कार्य-कर्ताओं ने इस विषय में कुझ साहित्य निर्माण करने का यत्न भी किया है, किन्तु जैसा उपर लिखा जा चुका है, इस प्रकार के साहित्य को अभी उपन्यासों और काव्यों की तुलना में

श्राहर नहीं मिला है।

सन् १६३७ का वर्ष भारतीय राजनीतिं के इतिहास में अत्यन्त महत्व पूर्ण वर्ष है। इसी वर्ष भारत कांग्रेस ने यह निर्णय किया कि प्रान्तीय कांग्रेस नेता मंत्री—पदों को महर्ण करें। कांग्रेस के इस कार्य का इतिहास और साहित्य दोनों पर ही बहुत कुड़ प्रभाव पड़ा है। जिसके फल स्वरूप राजनीति फिर अपने उस सर्वोच अलंकृत आसन को अपनाने के लिये उद्योग कर रही है।

श्राजकल की भारतीय राजनीति पर हिट-पात करने से यह निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि साहित्य में राजनीति का भविष्य उज्ज्ञल है श्रोर वह दिन दूर नहीं है जब साहित्य में राजनीति श्रपने उसी ऊँचे श्रासन की फिर प्राप्त कर लेगी।

## तुलसीदास के समय का हिन्दू समाज

[ पं ० रामनरेश त्रिपाठी ]

**--**\*--

भारतवर्ष ही के नहीं, संसार के इतिहास
में वह दिन बड़े ही दुर्भाग्य का था, जिस दिन
हिन्दुओं की स्वतन्त्रता का अपहरण हुआ। एक
समय था, जब मनु ने इस देश के निवासियों के
बारे में अभिमान से यह लिखा था।—

एतद् शप्रसृतस्य स्काशादमजन्मनः। स्वं न्यं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिच्यां सर्वमानगः॥

मनु हो ने नहीं, इस देश के समस्त ऋषियों,
मुनियों, स्मृतिकारों, दार्शनिकों, कित्रयों और
विचारकों ने संसार को सुख और शान्ति से
विभूषित करना ही प्रत्येक मनुष्य के जीवन का
ध्येय बताया था। हिन्दुओं के पूर्व ज आर्यों ने
अपने आतिमक और सामाजिक विकास का
लाभ सम्पूर्ण विश्व को देने के लिये अपना यह
सिद्धान्त बना रक्खा था।—

कुल्बंतो विश्वमार्यम् ।

'संसार को आर्य बनाओ।' हिन्दू शास्त्रों के सुप्रसिद्ध यूरोपीय पंडित तथा वेद-भाष्यकार मैक्समूलर भारतवर्ष के सम्बन्ध में लिखते हैं।—

If I were to look over the whole world to find out the country most richly endowed with all the wealth, power, and beauty that nature can bestow—in some parts a very paradise on earth,—I should

point to India. If I were asked under what sky, the human mind has most fully developed some of its choisest gifts, has most deeply pondered on the greatest problems of life, and has found solutions of some of them which will deserve the attention even of those who have studied Plato and Kant, I should point to India And if I were to ask myself from what literature, we, here in Europe, we who have been nurtured almost exclusively on the thoughts of Greeks and Romans, and of one semitic race, the jewish, may draw that corrective which is most wanted in order to make our inner life more perfect, more comprehensive, more universal, in fact more truly human-a life not for this life only, but a transfigured and internal life-again I should point to India. Whatever sphere of the human mind you select for your special study, whether it be language, or religion or mythology, or philosophy, whether it be laws or custom primitive art or primitive science, everywhere you have to go to India, whether you like it or not, because some of the most valuable and most instructive materials in the history of man are treasured in India and in India only.

"यदि मुभे उस देश का पता लगाने के लिये, समस्त संसार पर दृष्टिपात करना पड़े, जो सब प्रकार के धन-धान्य, शांक्त ब्रोर सोन्दर्य से, जिन्हें प्रकृति प्रदान कर सकतो हे, पूर्ण हो; अंत जो कुछ घंशों तक पृथ्वी पर स्वर्ग-मा हो, ते। मै भारतवर्ष की द्योर संकेत कहाँ गा। यदि मुक्त से पूजा जाय कि फिस आकाश के निवं मनुष्य के मस्ति-क ने अपने चुने हुये गुर्गा के। पृर्णतः दिकसित किया है, किसने जीवन के महावपूर्ण प्रश्ना पर गहराई तक मनन किया कोर उनमे स अनेक की हल किया है, जो उन लेगो का ध्यान अपनी प्रोर श्राकर्षित करने के ये ग्या है, जिन्होंने प्लेटी घीर कैन्ट को अध्ययन किया है, ता मै भारतवर्ष की श्रोर सॅकेत करूँगा। यदि मे स्वयं श्रपने श्राम से पृद्धॅ कि यहाँ(येतरप में ) हम लोग, जो कि मोन, यूनोनी तथा एक समेटिक जाति यहकी ही के विचारों पर सर्वथा शिक्ति हुये हैं, किस साहित्य से वह सत्य, जा कि हमारे आन्तरिक जीवन फा श्रधिक निर्दोप, श्रधिक व्यापक, श्रधिक गार्न-भौमिक श्रीर बालव में विश्वातका से मानवीय बनाने के लिये आवश्यक है, तथा वह जीवन जी केवल इसी जीवन के जित्रे न हो, बल्कि एक श्रादश ( रूपान्तरित ) एवं श्राभ्यन्तरीय (श्रान्त-रिक ) जीवन हो, किस साहित्य से प्राप्त कर सकते हैं, तो मैं पुनः भारतवर्ष की स्त्रोर संकेत करू गा। श्रपने विशेष श्रध्ययन के लिये मनुष्य की मेधा-शक्ति के जिस पहलू के। भी आप पसन्द करें, चाहे बह भाषा हो, चाहे धर्म, चाहे पुराण, चाहे दर्शन, चाहे क़ान्न हो या लाफ-रीति, चाहे प्राचीन कला हो, या प्राचीन विज्ञान, सब के लिये आपको भारतव न जाना पड़ेगा; चाहे आप इसे पसन्द करें यान करें, प्रयोक्ति मनुष्य-जाति के इतिहास की अमूल्य आए शिलापद सामिष्रयाँ भारतवर्ष में छोर केवल भारतवर्ष ही में, संचित (संग्रहीत) हैं।"

पर समय के प्रभाव से सामाजिक शक्ति की ग होती गई श्रौर जनता पर से समाज-निर्माताश्रों का नियन्त्रए ढीला पड़ गया। श्रीर भिन्न स-यता भिन्न साहित्य \* का अगमन इस देश में हुआ, जिससे हमारी शृंखजा ही नहीं दूट गई, हमारा नैतिक पतन सः प्रारम्भ है।सया । तुनसीदास के समय तक पहुँ चत-पहुँचते तो हम मे अनेक तुराइनी ने घर कर जिया और हम सर्वनाश का और डंका बजाते हुं। बोड़ने लगे । तुलसीदास ने हमारे पतन का जो शब्द-चित्र खीचा है, उसे देखकर <sup>च्यपने</sup> प्राचीन गीरव से ऋभिज्ञ जन पीडित हो उठने हैं।

उनके समय में राज्य-शासन ऐसे हाथों में था, जो हिन्दु श्रों की सभ्यता की उपेत्ता ही नहीं, उसके नष्ट करने का भी पृशा प्रयत्न करता था।

शासक-ममुदाय के लोग बड़ा उपद्रव करते थे प्रीर अनेक प्रकार के टोंग रचकर, धर्म की निर्माल वरने के लिये वेड-विरुद्ध कार्य कर के थे। जहाँ कटी वे गायें और ब्राह्मणों की पाने थे, चाहे वह शहर हो या गाँव या पुरवा, उसमें आग लगा देते थे।—

> करिं उद्रव श्रपुर निकाया । नाना रूप धरिं किर माया ॥ जेि ।िनि होत्र धरम निरमूला । सन्सव करिं बेद प्रतिकृता ॥ जिल्लाह देस धेनु दि । पार्के । नगर गाव पुर श्रानि लगाविं ॥

( बान-काट )

न कोई अन्छे आचरण कर पाता था, न देवता, ब्राह्मण और गुरुका सत्कार ही होने पाता था। न किसी में हरि-भक्ति थो; न काई यज्ञ, जप आर दान हो करता था। वेदों और पुराणों को तो कोई स्वप्न में भी नहीं सुनता था।— सुभ आयरण कर्त इं नहिं होई ।
देव बिप्र गुरु मान न कोई ॥
नहिं हिर भगि जन्य जप दाना ।
सपने हुँ सुनिय न बेट पुराना ॥
(बाल-काट)

शामक लोग रावण की तरह इत्याचारी हो रहे थे। जप, यंता, येराम्य, तप ख्रीर यज्ञ की चर्चा सुनकर वे स्वयं उठ दोड़ते थे छीर जप खादि करने वालों को वे रहने नहीं देते थे। संसार का खाचार—विचार अटट होगया था; धर्म कहीं कान से भी नहीं सुनाई पहता था। जो कोई वेद और पुराण का समें सम्भाता था; बह बहुत प्रकार से भयभीत किया जाता था और देश से निकाल दिया जाता था।—

> जप जोग विरागा तथ ग्रह्म भागा स्वचन सुनद दससीला।
> आपुन उठि धावद रहद न पाग्रह
> धरि सब धालह सीमा॥
> अस अप्ट अचागा, भा समान धरम सुन्य नहि काना।
> तिहिबह विवि जासन देस निकासद जो कह बद पुराना॥
> (बान-कांड)

जनता पर होनेवाले श्रत्याचार इतने बढ़ गये थे कि उनका प्रा-पूरा वर्णन तुलसीदाम भी नहीं कर सके। हिंसा ही जिनकी प्रति का विषय था, उनके पापों की सीमा ही क्या हो सकती थी।—

> बर्गन न लाइ श्रमीति, धार निमाधर ना बरहिं। हिंसा पर श्रिति प्राप्ति, निनर्के पापिस् कवनि मिति॥ (बाज-काउ)

शासन की प्रतिकृत्ता से दुष्ट, चोर, जुआरी और परधन और परदारा के अपहरण करने वाले बढ़ गये थे। माता, पिता और देवता का सम्मान नहीं था। लोग साधुओं से सेवा-कार्य लेने लगे थे।—

> बाढ़ें खन बहु चोर जुन्नारा। जो लंपट परथन परदारा॥ मानिजं मानु पिता निहें देवा। साधुन्द सन करवादि सेवा॥ (बाल-कांड)

हिन्दुश्रों का शासन न रहने से धार्मिक प्रतिबन्ध इठ गया था। शासक-जाति के भय से सद्यन्थ लुप्त हो गये थे श्रीर दंभियों ने अपनी-श्रपनी बुद्धि से कल्पना कर-करके नये मत श्रीर पन्थ चला लिये थे।—

कलिमल मसे धरम सब,
लुप्त भये सद्यन्य |
दंभिन निज मिन कलप यदि,
प्रगट किये बहु पन्था।
( उत्तर-माड )

वर्णाश्रम धर्म का नाश हो गया था, लोग वेदों के विरोध में लग गये थे, ब्राह्मण बेद-द्वारा धन प्राप्त करने लगे थे श्रोर राजा लोग प्रजा का भज्ञण करने लगे थे। वेदों के नियंत्रण में कोई नहीं था।—

> बरन धरम निर्ध श्रास्त्रम चारी । स्रुति विरोध रत सब नरनारी॥ दिज स्रुति वेचक भूष प्रजासन । कोउन प्रान निगम अनुसासन ॥ (उत्तर-कोड)

जिसे जो पसन्द होता था, उसे ही वह श्रपने जीवन का मार्ग मानता था। जो तर्क-वितर्क में वहुत निपुण होता था, वही पण्डित कहलाता था। झूठे ढकोमलेवाले पाखंडी लोगों को सब लोग सन्त सममते थे।—

> मारग सोइ जाकहुँ जो भावा। पंटित सोइ जो गाल बजावा।।

जीवन सुधा---

ग्निध्यारम्भ दम्भरत जोई | ताककु संत कहाह सबु कोई ॥ (उत्तर-काह)

जो हँसी-मजाक में पटु श्रौर झूठा होता था, बही गुगावन्त कहा जाता था। जिसकी बड़ी-बड़ी जटायें श्रौर लम्बे-लम्बे नख होते थे, बही तपस्वी सममा जाता था।—

जो कह्यु मूठ मसकरी जाना। कलिजुग सेंद्र गुनवन्त बखाना॥ जाके नख भरु जटा विसाला। सोद्र तापस प्रसिद्ध कलिकाला॥ (उत्तर-कांड)

शूद्र लोग ब्राह्मणों को ज्ञानोपदेश करते थे, जनेऊ पहन कर वे भूमि का दान लेते थे, खियाँ दुराचारिणी हो गई थीं, सौभाग्यवती खियाँ तो गहनों से रहित थीं श्रौर विधवायें नित्य नये-नये सिगार किया करती थीं।—

सद्ग द्विजन्द उपदेसिं शाना।
भेलि जनेक लेहिं कुदाना॥
गुन मन्दिर सुन्दर पति त्यागी।
भन्नहिं नारि परपुरुष श्रमायी॥
सौमायिनी विभूपन होना।
विभवन्द्व के सिंगार नर्वाना॥
(उत्तर-कांड)

लोग ब्रह्म-क्सान के सिवा दूसरी बात ही नहीं करते थे, पर वे एक कोड़ी के लिये ब्राह्मण और गुरु की हत्या कर डालते थे। शूद्र ब्राह्मणों से बहस करते थे कि क्या हम तुमसे घटकर हैं? जो ब्रह्म को जाने, वही ब्राह्मण; यह कहकर वे घड़ककर आँखें दिखलाते थे।—

महा क्षान बिनु नारि नर,

कहिं न दूसरि बात।

कौंड़ी लागि मोह बस,

करिं बिप्र गुरु घात॥

बादिह सुद्र द्विजन्ह सन,

हम तुम तों कक्क् घाटि।

जानह ब्रह्म सो बिप्रबर, आंखि देखावहि डांटि॥ (उत्तर-कांड)

नीच वर्ण के लोग स्त्री के मर जाने और घर की सम्पत्ति नष्ट होजाने पर सिर मुड़ाकर सन्यासी हो जाते थे। ब्राह्मण अत्तर-ज्ञान से रहित लोभी, कामी, आचारहीन और पुंश्चली स्त्रियों से प्रेम रखने वाले होगये थे। सब लोग स्वकल्पित आचार विचार-करते थे। अवर्णनीय अनाचार फैला हुआ था।—

नारि सुई घर संपति नासी।
मूँ इ सुड़ाय अये सन्यासी।।
विप्र निरच्छर लोलुप कामी।
निराचार सठ वृषली स्वामी।।
सब नर कल्पित करहि अचारा।
जाइ न वरनि अनीति अपारा॥

( उत्तर-कांड )

यती लोग खूब धन लगाकर सुन्दर-सुन्दर महल बनवाते थे; तपस्वी धनी थे श्रौर गृहस्थ ग़रीब हो गये थे, राजा पापी हो गये थे; जूनमें धर्म नहीं रह गया था, वे सदा दंड दे-देकर प्रजा की विडंबना किया करते थे।—

बहुदाम सँवारहि थाम जती।
विषया हरि लोन्डिरही विरती॥
तपसी भनवंत दरिद्र गृही।
कलि कौतुक तात न जात कही॥
नृप पाप परायन धर्म नहीं।
करि दंड विखंब प्रजा नितही॥

( उत्तर-कांड )

बार-बार श्रकाल पड़ता था, सब लोग श्रम्न बिना दुखी होकर मर रहे थे, लोग रोगों से पीड़ित थे, सुख का कहीं नाम नहीं था, श्रकारण ही उनमें श्रभिमान श्रीर कोध उत्पन्न होता था, उनकी श्रायु छोटी होगई थी, पर वे समभते थे कि कल्पांत तक उनका नाश न होगा। उनमें न संतोष था, न विवेक श्रीर न नम्नता; सुजाति जीवन सुधा --

श्रीर कुजाति सभी तरह के लोग भिखमंगे होगये थे।

प्रीति, विवाह-संबंध, सब गुए श्रोर व्यापार श्रादि श्रनेक उपायों से लोग एक दूसरे को कल, क्ल श्रीर छल से ठगते रहते थे।—

> प्रीति, सगाई, सकत गुन, बनिज उपाय मनेक। कल बल झन कलिमल मलिन, डहकत एकहि एक॥

> > (दोइ।वली)

दंभ-सहित धर्म, छल-युक्त व्यवहार, स्वार्थ-मय स्तेह श्रीर हचि के श्रनुसार श्राचार रह गया था। चोर, चतुर, ठग,नट, भँडुवे श्रीर भाँडु ही स्वामी को प्रिय लगते थे। जो सर्वभन्नी होता था, वही परमार्थी कहलाता था। पाखंड ही सुपथ था।—

दंभ सहित कलि धर्म सब, छल समेत थ्यवहार। स्वारथ सहित सनेह सब, , रुचि ब्रनुहरन ऋचार।

(दोहाबली) चोर चतुर बटमार नट,

प्रभुप्तिय भेंडुका भेंड। सन भच्छक परमारधी, कलि सुपन्थ पार्खडा।

(दोहावती)
कित्युग के भक्त लोग (कबीरपंथी, गोरख-नाथी त्रादि) साखी, शब्द, दोहरे त्रीर किस्से-कहानियां कह कर भक्ति का निरूपण करते हुये वेदों त्रीर पराणों की निन्दा करते थे।

साखी सगदी दोहरा,
काहि किहिनी उपखान।
भगति निरूपहिं भगत कलि
निद्दिषे बेद पुरान॥
(दोहावली)

मन्दिरों और तीथों में बड़ा ही दुराचार फैल गया था। मानों कलयुग ऋपने दल-बल सहित वहाँ किला बांघ कर बैठ गया था।—

सुर सदननि तीरथपुरिन,
निषट कुचािल कुसाज।
मनहुँ मनासे मारि कलि,
राजत सिंहत समाज॥
(दोहाबली)

गोंड़ श्रीर गँवार तो राजा थे श्रीर यवन महाराजाधिराज। साम, दाम श्रीर भेद से काम नहीं लिया जाता था; केवल कराल दंड ही राज्य-शासन का श्राधार था।—

> गोंड गेंबार नृपाल महि, यमन महा महिपान । साम न दाम न मेद कालि, केवल दंड करान ॥

> > ( दोहाबली )

यवन शासकों के सहधमीं लोग मूर्सि के संदेह में हिन्दुओं के घर के सिल और बहे तक फोड़ डालते थे। उनके टुकड़ों के पहाब खड़े होगये थे। हिन्दू लोग कायर, कर और कुपुत्र हो रहे थे, उनके घर-घर में सैकड़ों रास्ते थे। लोगों में एका नहीं था।—

> फोर्राह सिल लोड़ा मरन, लागे श्रद्धक पहार। कायर कूर कपूत कलि, घर धर सहस डहार॥

> > (दो हावली)

तुलसीदास के समय में गोरख-पंथियों के प्रभाव से हिन्दू समाज में जो उच्छ खलता फैल गई थी, तुलसीदास ने उसका चित्र इन छन्दों में खींचा है।—

बरन धरम गयो झालम निवास सज्यो त्रासन चिंतन सो परावनो परो सो है। बेद पुरान िहाइ सुपंथ तुमारग केटि कुवाल चला है।। काल कराल नृपाल कुवाल न राज समाज बड़ोई छली है।। धर्न विभाग न श्रास्त्रम धर्म दुनी दुख दोष दिद दली है। स्वारथ को परमारथ को किल राम को नाम प्रताप बली है।।

#### उस समय लोगों की श्रार्थिक स्थिति बड़ी ही शोचनीय हो गई थी।

किसबी किसान कुछ बनिक भिखारी भांट चाकर चपल नट चोर चार चेटका। पेट को पढ़त गुन गढ़त चढ़न निरि प्यटत गहन गन प्रहन प्रखेटका।। ऊँचे नोचे करम घरम प्रधरम करि पेट ही का पचत बेचत बेटा बेटकी। जुलसो बुक्ताय एक राम घनस्याम ही तें प्रानि बड़वायि तें यही है श्रामि पेट की।।

खेती न किसान के। भिखारों के। न भीख ब लि ब निक के। बनिज न चाकर के। चाकरों। जीबिका विद्यान लेगा सीच मान सीच पस कहें एक एकन सो कहां जाई का करी। बेदहू पुरान कहीं लोकहू विलोकियत साकरे सबै पै राम राबरे कुण करों। दारिद दसानन द**र्बाई दुनो** दोनगंधु दुरित दहन देखि तुलसी हहा करी॥ (कवितावली)

साम्प्रदायिक मत-मतान्तरों के प्रावल्य से समाज की बोद्धिक प्रगति डाँबाडोल हो रही थी। परस्पर राग-द्रेग की बृद्धि हो रही थी, श्रीर भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय वाले अपने-अपने विचारों का समर्थन श्रीर अन्यों का खण्डन कर रहे थे। कुछ मुनिगण अपने को देव-कोटि में गिनने लगे थे श्रीर अपने अनुयायियों से पूजा प्राप्त करने लगे थे।—

श्चागम वेद पुरान बलानत मारग कोटिन जाहि न जाने। जे मुनि ते पुनि श्वापु हि श्चापुको ईस कहावत सिर्ध सयाने॥ धर्म सवै कलिकाल ग्रसं जप जोग विराग लै जीव पराने। को करि सोच मरै तुलसी हम जानकीनाथ के हाथ विकाने।

(कवितावली)

शैवों और वैष्णवों का विरोध निर्णुण और सगुण का खंडन-मंडन चरम सीमा तक पहुँच चुकाथा। परस्वर कलह, वितंडावाद, निंदा-अपवाद, हिंसा और प्रति-हिंसा, ये ही शितित समाज के बोद्धिक विषय बन गये थे। तुलसीदास ने मानस के उत्तर-काँड में काग भुसुंडि का उनके गुरु के साथ जो विवाद वर्णन किया है, वैसी घटनायें तुलसीदास को नित्य ही देखने को मिलती होंगी।

एक बार गुरु लोन्ह दोलाई।
मोहिं नीति बहु भांति सिखाई।
शिव सेवा कै फल सुत सोई।
अबिरल भगति रामपद होई॥
हर कहुँ हरिसेवक गुरु कहेऊ।

**विसम्बर** 

मुनि खगनाथ हृदय मम दहेऊ ॥

एक बार हरमन्दिर,

जपत रहेउँ हरनाम ।

गुरु आयेज अभिमान तें,

उठि महि कोन प्रनाम ।

(उत्तर-कांड)

पुनि पुनि सगुन पच्छ में रोपा।
तब मुनि बोलेउ बचन सकोपा॥
मूढ़ परम सिख देउंन मानसि।
उत्तर प्रतिउत्तर बहु झानसि॥
सठ स्वपच्छ तब हृदय विसाला।
सगदि होहु पच्छी चंडाला॥
( उत्तर-कांड)

उतर के उद्धरणों से हमारे पाठक अनुमान कर सकेंगे कि तुलसीदास के समय के और आज-कल के समय में इतना ही अन्तर है कि यद्यपि महात्मा तुलसीदास की कृपा से अब हम में

तत्कालीन शैवों श्रीर वैष्णवों की कटुता नहीं रह गई है, पर अन्य विषयों में हम उस समय की अपे हा अधिक पतितावस्था में पहुँच गये हैं। तुलसीदास से अपने तत्कालीन समाज की दुर्दशा देखी न गई। वे व्यथित हुये, उद्विग्न हुये; पर कायर की तरह मन मसोस कर नहीं रह गये; उन्होंने अपना जीवन अपने समाज पर निल्लावर कर दिया। वे ऋशरण के शरण, भक्त-वत्सल राम को लेकर हमारे बीच में आ बैठे श्रीर उनके जीवन के प्रकाश से हमारे दु:ख-पूर्ण घर के कोने-कोने को भरना प्रारम्भ कर दिया। यद्यपि हमारे दुःख कम नहीं हुये, पर जहाँ तक तुलसीदास का प्रकाश पहुँ चा है, वहाँ तक हम में दुःख को धैर्य के साथ सहने की शक्ति और दुःख से निवृत्ति पाने की लालसा बढ़ गई है।

( लेखक की अप्रकाशित पुस्तक से )

## ज्ञान-मूमि भारतवर्ष

[ पडवर्ड कार्पेंटर ]

वहाँ भारतवर्ष में भी—आस्वर्यमय, रहस्यमय हजारों मीलों के बिस्तार के उपर, हजारों मीलों तक फैली नारियल की कुंजों के बीच विशाल नदियों के बल खाते तटों पर, धान के खेतों के अन्तहीन विस्तार के उपर,

पूर्वी और पश्चमी घाटों और हिमालय के उपर, जंगली जानवरों से भरे विस्तीर्ण अरण्यों के बीच, निरंभ उज्ज्वल आकारा के नीचे—जहाँ सामर्थ्य और सीन्दर्य दोंनो ही बातों में प्रचण्ड सूर्य—जहाँ पेडों के मुरसूटों से मांकता चन्द्रमा, ऐसा प्रसर और उज्ज्वल.

विशाल जनाकीर्या नगरों में, वर्यों, धर्मों और मत-मतान्तरों और जातियों और परिवारों की श्रीट में,

जात-पांत और रीति-रिवाजों की अन्तहीन घनीभृतस्तरों के नीचे,

यहां भी, गुहाप्रविष्ट, दिव्य-ज्ञान, दिव्य-रहस्य।

युगों पहले, अन्धकारमय भूतकाल में श्रीमल हजारों बरस पहले,

उत्तरी पर्वतों को पार करते हुए, सत्यदृष्टाओं की एक जाति अपने पालतू पशुक्रों के अन्हों सहित, जान-भिम भारत में अवतीर्ण हुई,

बड़े-बूदे नेता बने हुए-पीछे पिछड़े हुए नहीं-

गहरू-सम नेत्रवाले, करुणापूर्ण नेत्र वाले वयो वृद्ध,

प्रशांत मुख-मण्डलों सहित,

दृद्द-निश्चय अंकित मुखों सहित,

फुर्तीले-शरीरों पर पूरा नियंत्रण रखने वाले और उन्हें भरपूर शक्ति से संचालन करने वाले— उन्हें दीर्घावस्था तक धारण किये रहने वाले अथवा स्वेच्छा से मृत्यु को सौंप देने वाले। जीवन होगा

इन मनुष्यों ने सूर्य अथवा तारागएं के तले, विस्तृत उन्मुक्त में दोनों के बीच, स्वेच्झा से ध्यान मग्न होकर इच्छा के भोग को भुगता और उसे परे हटा, संकल्प-विकल्प और अविधा के चिपटे हुए आवरएों को अपने ऊपर से उठा देने और इटा देने के परचात,

श्चित्तरवर विश्व देखा श्चौर उसी के साथ एकाकार हो गए।
उनके भीतर सूर्य श्चौर चन्द्र श्चौर नचत्रगण उनके भीतर भूत श्चौर भविष्य,
उनके भीतर वस्तुश्चों श्चौर विचारों का श्चन्तरतम रहस्य-उद्घटित-भूतमात्र के साथ एकाकार—
जीवन से श्चतीत—मरण से श्चतीत—प्रशांत श्चौर श्चपार समुद्र,

गहन-गम्भीर,श्रवय श्रीर श्रवर्णनीय श्रानन्द के। श्रीर श्रव श्राजकल, जात-पांत श्रीर रीति-रिवाजों की घनीभृत स्तरों के नीचे छिपे पड़े हुए, वहीं सत्य-हष्टा,वहीं ज्ञान।

इन हजारों वर्षों के बीच लंबी परंपराश्चलुख्या चली झाती हुई, पवित्र-विद्या गुरु-शिष्य-परंपरा-द्वारा चली झाती हुई; भली-भाँति सुरिवित;

हिमय बाहरी देखावों के नीचे, मत-मतान्तरों और जात-पांतों के समस्त बन्धनों के नीचे, नदी की धारा के समान बहता हुआ, जिसे बांध रखने की सामध्ये किसी को भी नहीं, जो समय आने पर स्वयं ही समस्त बंधनों और मत-मतान्तरों को बहा ते जायगा;

वह जीवात्मा का सत्य-स्वरूप—वह विश्व-ञ्यापी, बिराट, उन्मुक्तजीवन-स्वतन्त्रता, समता— लोक-श्रात्मा—प्रभु सर्वसाधारण का अमृल्यवीर्य

अनुवादक-=डा० राम**रु**ष्ण

## मेरे ध्येय

#### [श्री तोरन देशी शुक्ल 'लली']

-#-

ध्वेय तुम्हीं हो मेरे, मैंने फिर भी तुम्हें कहां पाया, अपने को अतृप्त आशा में अब तक कितना भरमाया।

धन, बेशव, सीन्दर्व, सुक्क मी और अनेकी माया भी देखी हैं, पर नहीं मिल सकी वहां तुन्हारी बाया भी।

> नीरस है यह प्रणयकधार्ये शुःक विरह गाधार्ये भी; मुक्ते निरध<sup>°</sup>क ही जनती हैं मोहक मूक व्यथार्ये भी।

धन में देखा, जन में देखा, बन में भी जाकर देखा। मिलतो तो कृतार्थ हो जाती कहीं एक धूमिल रेखा।

> माया के इस महा नृत्य में अभिमानी हुँकारों में, नहीं छिपे हो जान चुकी हूं जजैर उलके तारों में।

तुम्हीं न यदि मिल सके मुक्ते तो मुक्ति मला क्यों कर लूंगी; पा जाने को तुम्हें कदाचित् जग में जीवन फिर लूंगी।

> जब मेरे इठ पर हो मां का सहज गर्व से मुसकाना; इस स्वर्षिम अवसर पर भेरे भ्येय अचानक मिल जाना।

### महापुरुष

[श्री मगतीमसाद वांजपेयी ]

-\*-

नाजिरात में बैठा हूं। ऐसा ही कुछ, कचहरी का काम आगया है। यों काम बाहे न भी लगे, पर कभी-कभी जब मैं खुदु ही ऐसे काम में लग जाता हूं, तो चारा क्या है ? जीवन में तृष्णा है श्रीर तब्ला में दन्द्र। श्रीर फिर दन्द्र ही जीवन है। महाचक्र के इस आवर्तन में मैं क्या हूं, कौन हुं, जो कचहरी से भागता रहूं, बचता रहूं और घुगा से विवर्ण हो-होकर व्यर्थ ही में अपने मन-प्राण को आम्लान करता रहूं। द्वंद्व से भागकर, कर्तव्य-पराइ-मुख होकर, मनुष्य जायगा कहाँ ? हाँ, कृष्ण से भाग सकता है वह; किन्तु चराभर के लिए। क्योंकि, श्रचिर भविष्य में, मनस्ताप से आप ही जल-जल कर, एक बार फिर जब बह फूत्कार कर उठता है, तो सुहासिनी तृष्णा की कोमल गोद ही उसे महोल्लास का पावन जीवन देतीं है।

हाँ, वो मैंने कहा न, मैं नाजिरात में बैंडा हूँ। कुछ सोच रहा हूँ और देख रहा हूँ। सोच-सीच कर देखता हूँ और देख-देखकर सोचता हूँ। विविधि प्रकार के चित्र सामने आ-जा रहे हैं।

एक वकील साहब पेंट में हाथ डाले हुए जारहे हैं। गति उनकी मन्द है। कोट की काहरी जेत्र में मोड़कर रक्खा हुआ चश्मा मलक रहा है। साइकिल पर आये हैं और पैंट के निम्न

भाग को मोड़कर जो क्लिप लगाया जाता हैं, वह अभी तक ज्यों-का-त्यों लगा हुआ है। उस अोर वकील साहब का ध्यान नहीं गया है। ध्वाम जाब भी क्यों ? उसकी जहारत ? सिर के बाल सके ब होगये हैं। पूरे तो नहीं, अधिकांशा लेकिन इससे क्या. बालों की सफोदी कोई बीज नहीं होती। दिल जिसका सफ्रें इ-डज्ज्बल, क्या उसके बाल कभी सकें दहीं सकते हैं ? हों भी जाँबा, तो उनका मूल्य क्या? शरीर की वृद्धता हमारा करेंगीक्या ? त्रसल चीज मन है। और वकील साहब ने जेब में हाथ डालकर देखा, नोट कहीं गायब तो नहीं होगये। तभी उन्हें निकाल कर निमने लगे एक दो, तीन । ठीक तो है । दस-दस रूपवे वाले तीन नोट हैं और सुरक्ति हैं। फिर दूसरे क्षा से आहरी जेव में से चरमा निकालना चाहा । जरान्ता उसे ऊपर को उठाया भी किन्तु फिर जहाँ-का-सहाँ एका दिया और आगे बढ़ बते । किन्त जाने बहुकर फिर लौट पड़े। शायद कोई चीक भूक लखे हैं।

इसी त्रण एक दूसरे साहब दीख पड़े। सास्य खसी दादी है आपकी। बाल अभी सक्ष द नहीं हुए हैं। लेकिन मंशा उनकी ऐसी ही जान पढ़ती है। गीर वर्ण है। सिर पर गोल स्केद मारकीन की, टोपी है। पायजामा कुछ ऊँचा— पैरों की गर्द-गुबार से सर्घया निश्चिन्त। हाथी-काब का पुराने ढब का जूता पहने हुए हैं। शारि अचकन से चिपका हुआ है, या अचकन ही शारिर से चिपक गयी है, कौन जाने ? इस विषय पर में बहस नहीं करना चाहता। आप चाहे जो समफ लें, मुझे एतराज नहीं। हाँ, तो में आगे बढ़ता हूँ। बाई और एक दुर्जाई बगल से दबाये हुए हैं और उसके नीचे चारख़ाने का पक हस्टर लटक रहा है। दायें हाथ में टॉटीदार एक लोटा भी है। गरजेकि आप इसी बक्त देहात से चले आ रहे हैं।

में बाहर आ गया था। जाड़े की धूप खड़ी-

खड़ी खिलखिला रही थी।

उन्होने तपाक से आदावश्चर्या किया, तो अपरिचय के कारण में ज्ञाण भर उन्हें देखता रह गया । उत्तर में मैंने तसलीम अर्ज तो किया—लेकिन जरासा ठहर कर।

वे बोले-क्यों भाईजान, बाबू चन्दरपरकाश साहब बकील किथर तशरीक रखते हैं?

मैंने कहा—जान पड़ता है—कचहरी में

आप शायद पहली ही बार आये हैं।

"जी, आप बहुत बजा फरमाते हैं। मैं तो कम्बख्ती का मारा आ भी गया, मगर कसम कुरान की, जो इसमें एक हुरूक भी झूठ हो। मेरे बुजुर्गवार तो इस हरामजादी से सौ कोस दूर रहा करते थे—सौ कोस !"

"यह नाजिरात है, मुन्शी जी। यहाँ वकील लोग नहीं बैठते । वे लाग ज्यादातर या तो पश्चिम यानी मगरिब की जानिब बैठते हैं, वहाँ उनके झलग-श्रलग कमरे भी हैं।—या फिर उस बौरासी गजे बाली धर्मशाला में जिधर से आप आ रहे हैं।

"श्रच्छा, तो श्रापको जो तकलीक दी, उसके लिये माक कीजियेगा। हुजूर का दौलतन्त्राना ?"

"मैं ! मैं तो परदेसी आदमी हूँ, यहाँ ऐसे ही आ गया। (इस) ग़रीब का घर कान पुर जिले में है।"

"तभी। तभी तो मुझे ताउजुव हो रहा था

कि ऐसी शायस्ता जवान यहाँ अलाहाबाद में कहाँ से आयेगी! अच्छा, इजाजत चाहता हूं—आदावर्ज।''

वे चले गये।

चले तो गये, लेकिन आगे बढ़कर, जो साहब उनके सामने आये, उनसे भी उन्होंने यही प्रश्न किया—क्यों भाईजान, बाबू चन्दरपरकाश बकील \*\*\*\* ?

"मैं बाबू चन्द्रप्रकाश का मुहरिर हूं कि मुद्राक्किल, जो उनके पोछे-पीछे घूमता होऊँ।

उत्पर से नीचे तक अंगरेजी डूस से लक़ दक़ हैं। सरदी में सताये हुए कभी-कभी सी-सी करने लगते हैं। हवा जो चल रही है। हाथ पर हाथ रगड़ रहे हैं। मुनशी जी के प्रश्नपर जरा देर ठहरे और "फिर चल दिये और खीज उठे। बोले—अजीब देहाती दहकानी आदमी मिल जाते हैं!

ये साहब एक बैरिस्टर हैं। अपने एक मित्र से पूछ्रकर मैं अभी जान सका हूँ। बद जबान बहुत हैं अप। अक्तसर कहा करते हैं—दुनिया में जितने भी महा पुरुष हुए हैं, सब इसी तरह के थे। लोग बात करना तो दूर रहा, उनके सामने होकर निकलने से भी कांपते थे। आतक्क बह चीज है जनाब कि मोची से मिनिस्टर तक बना सकता है!

मेरा काम हो चुका है। बस, मुझे किसी तरह यहाँ चार बजा देने हैं। श्रीर श्रपने मित्र राजेश्वर के साथ चला जाना है। इसी नाजिरात में वह कलर्क है। मैंने सोचा—जरा-सा घूम हो ॡँ। ऐसा सजीव बायस्कोप भला श्रीर कहाँ देखने को मिलेगा!

एक-एक करके कई इजलासों में घूम आया। कहीं कोई परिचित व्यक्ति नहीं देख पड़ा। न मुन्शीजी देख पड़े, न वे वकील साहब—न वे भावी महा पुरुष। और मैं सोचता यही हूँ कि इन्हीं लोगो में से कोई मिल जाता, तो अच्छा होता।

बकील साहब को केवल थोड़ी देर देखना चाहता हूँ। बैरिस्टर साहब से उलम पड़ने की तिवयत है, श्रीर मुन्शीजी से मिलकर उनकी बातें सुनने की लालसा है।

एक श्रोर पीपल के पेड़-नले धूप से लिपटा हुआ में चुपचाप खड़ा हुआ था कि राजेश्वर ने आफिस से बाहर आकर कहा—चलो तुनको घुमा लायें।यहाँ खड़े-खड़े अकेले में तुम्हारा जी ऊच रहा होगा...श्ररे सुनो महाराज, कोई ताजी गरम चीज भी बनाई है ?

"समोसे बन रहे हैं। पाब भर ले आऊँ ?" "और कोई मीठी चीज ?"

"बरकी बहुत बढ़िया है।"

"दोनों श्राध-ब्राध पाव ! लेकिन यहाँ मत लाना । कोई साला...। चलो, वहीं चलें । तीन बज गया । भूख जग उठी है । काम में तिवयत नहीं लग रही थी।"— कहते हुए मेरे कन्चे पर हाथ रखकर राजेश्वर चल दिया।

हम लोग अभी महाराज के पास पहुँच भी न पाय थे कि दिखलाई पड़े मुन्शीजी। राजश्वर का साथ छोड़कर मैं तुरन्त उधर बद गया। राजश्वर पूछता ही रह गया—अरे कहाँ जाते हो ? कुछ खाये तो जाओ। लेकिन मुझे तो उस समय दूसरी ही खुराक चाहिये थी।

निकट पहुँचते ही मैंने पूछा—कहिए, भेंट

हई ?

कहाँ हो सकी ! वे ऋपने मुकाम पर भी नहीं मिले । यहीं कहीं होंगे—उनके मुन्शीजी फरमा रहे हैं।

"उनको आप पहचानते हैं ?" "यही तो दिक्कत दरपेश है।"

'ता उनके मुन्शी जा से क्यों नहीं कहा कि उनसे मिलार्दे।''

"कहना चाइता था, तेकिन कहता कैसे ? मुमकिन है कि इसके लिये भी वह कोई सवाल कर बैठता । भाषको तो मासूम ही है कि व्यवहाँ विना पैसे के कोई काम नहीं होता। " ) अपन

'लॅकिन यह तो उसी का फर्ज भा । इसमें पैसे की कीन बात भी ?''

"कर्ज क्या चीज है और किस बक पर, किस जानिब से उसकी शुरुआत हुआ करती है, इसका कै सला भी तो यही लोग, सुना है कि अपने आप कर लिया करते हैं।"

"चितिये। मैं आपके संग चलता हूँ । इनके मुन्शी को एक ऐसी डाँट बतावा हूँ कि घटा भी याद करे। यह भी नहीं सोचा कि जिनसे काम निकलता है, उनकी सह लियत की ओर भी तो जरा सौर करना होता ह !"

में मुन्शी जी के साथ चला दिया। चलते-चलते मेंने पूजा-भाप किस काम से तशरीक लाये हैं ?

"एक रुक्के की नालिश करती है। रूपया तमारी हुआ जाता है। दोस्तों ने कहा हिमी करवाली। पीछे क्सूल होने का मौकातो रहेगा।"

"श्रासामी की हैसियत क्या है ?" मैंने पूछा । "हैसियत की बात न पूछिए। एक जोड़ी हैस की खेती करता है। जिस बक्त रुपया क्या था, काकी खुशहाल था। अब बह बात तो नहीं रही; लेकिन देना चाहता, तो थोड़ा-थोड़ा करके भी, देसकता था।"—वे बोले।

"कभी आपने तक्ताजा भी किया ?"

"तकाजा ! तकाजा करना मैंने मुनासिक नहीं ममभा । बहुत सीधा आदमी है । 'चल्का-चल्का' कहते उसकी जवान से फूज-से भड़ते हैं !"

में चुप रह गया 'तक्काजा इन्होंने कभी किया नहीं! आदमी भी वह बहुत सीधा है, और देना चाहता तो थोड़ा-थोड़ा करके दे भी सकता था। आखिर इसका मतलब क्या है ?' सोचते हुए मैंने उनकी ओर देखा। बड़े परेशान नजर आरहे थे। मुद्रा पर उद्दाम अनुशोचन स्पष्ट फलक रहा था। बोले—मेरा मतलब उसे परेशान करना नहीं

है। मैं तो महज कायदे की कार्यवाई करने चला श्राया हूँ। मुझे डिग्री इजराय नहीं करनी है। लेकिन इन्सान की जिन्दगी तो महज कर्ज को लेकर है न ? श्रापने मेरा मतलब सममा कि नहीं ?

अब हम लोग बाबू चन्द्रप्रकाश वकील के कमरे में थे। मुन्शी बोला—बाबू साहब आते ही होंगे। आप नाहक परेशान होरहे हैं। तशरीक रखिये।

वे जमीन में बिछे हुये टाट पर बैठ गये।

मैंने देखा, दुलाई ब्रीर लोटा एक जगह कोने में बदस्तूर रक्खा है, तो पूछ दिया—श्राप खाना खाचुके कि नहीं ?

"खाना तो आजकल शाम को ही मिलता है, क्योंकि रमजान के दिन हैं।" कहते हुए यकायक उनके मुख पर सात्विक दृढ़ता का अकृत्रिम उहास मुखरित हो उठा। अब मैंने सोचा—राजेश्वर क्या कहता होगा।

च्चीर तब--

—राजेश्वर ? वह भूत्वा है , क्योंकि उसने नौ बजे खाना खाया है ऋौर क्योंकि समोसे ताजे बन रहे हैं!

—श्रीर मुन्शी जी देहात से दस मील पैदल श्राये हैं।श्रीर उनकी भूखे मुखपर रमजान का मृदुल प्यार श्रालीकित होरहा है!

मुहरिंर से कहा-

क्यों मुनशीजी, इसी तरह से श्राप श्रपने वकील साहब के साथ कर्ज श्रदायगी किया करते हैं? ये बकील साहब से मिलने के लिए कितने उत्सुक हैं, श्रापको शायद इसका इल्म होचुका है। इनका काम ज़रूरी भी होसकता है, यह भी श्राप सोच सकते हैं, तो भी श्राप इनको तुरन्त उनसे मिला देने की ज़रूरत नहीं सममते! क्यों?"

तुरन्त उत्तर मिला—

"मैं एक श्रोर जरूरी काम में लगा हुआ।...चिल्ये, श्राप मेरे साथ चले चिलये।"

उधर से बकील साहब आरहे थे। बहुत परेशान-से दीख पड़े। मुख पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। अपने मुन्शी को देखते ही बोले — वे तीनों नोट मालूम नहीं कहाँ गिर पड़े।

"नोट गिर पड़े!" च कितमुद्रा से मुन्शी बोला।

"क्या फरमाया श्रापने ? नोट गिर पड़े ! कितने के नोट थे। कब, कहाँ गिर पड़े ?" मौलाना ने पुत्र दिया।

वकील साहब अप्रतिभ तो थे, किन्तु मीलाना के प्रश्न पर—'किस वक्त, कहाँ गिर पड़े' उनके होठों पर चिएक हास उदय होकर अस्त हो गया। नोट कहाँ गिर पड़े हैं, यह भी क्या उनके हान की बात है ?

क्षेर साहब हम सब बकील साहब के कमरे में ऋाकर बैठ गये।

मुन्शी बोला — बतलाइए, कहाँ खोजूं? बकील साहब वोले — खोजने की ज़रूरत नहीं है। सुबह से ही मुझे डर लग रहाथा — कहीं गिर न पड़ें। वहीं बात हुई। उसी जेब में और भी कई काराजात थे। कई बार इनकी बाहर निकालने की ज़रूरत पड़ी थी। किसी बक्त वे नाट भी साथ ही निकलकर गिर पड़े होंगे।... अब हो क्या सकता हैं? जो बीज जाने वाली है, उसके चले जाने में आरचर्य क्या? ( मुंशी से बोले) जाओ, मैं चेक देता हूं। बैंक से रूपया ले आक्रो।

"लेकिन श्रव तो सवातीन हो रहा है!" मुंशी बोला।

"तो त्रिवेणी बाबू की नालिश स्राज भी रह गर्या।" कहते हुए उसकी फायल देखने लगे।

मैंने कहा — ये मौलाना बड़ी देर से आपको खोज रहे थे। देहात से आये हैं। इनको आप से जरूरी काम है। बेहतर होगा, आप इनकी बात भी सुनलें।

"मेरा काम ऐसा नहीं है कि उसे आज ही कर डालने की जरूरत हो। आप इतमीनान से अपने कागजात देख लीजिये। यों भी मुझे वापस नहीं जाना है। मकान पर सारा मामला सममा दूंगा। यहाँ आपको तरहूद भी हो सकता है!'' कह कर संकेत से मौलाना मुझे लेकर बाहर आ गये।

हम लोग फिर बाहर धूप में आकर खड़े हो गये।

मीलाना बोले-मुझे कुछ शक हो रहा है। कहिए कहूँ, कहिए न कहूँ ?

"कहिए—कहिए ! न कहने की बात हो, तो भी, तिवयत हो तो कह डालिए।" मैंने कहा।

"एक साहब से मैंने इन वकील साहव का पता पूछा था। वे ज़रा बिगड़े दिल थे। बड़बड़ा उठे। मैं उनकी शक्त देखता रह गया। उसके बाद इन वकील साहब को खोजने के सिलसिले में मैं जो इथर-उथर घूमता फिरा, तो वे साहब एक जगह पड़े हुए कुछ काग्ज़ात उठाते हुए देख पड़े। मैंने सममा—उनके होंगे लिकन"।"

इसी 'लेकिन' के साथ उनका वक्तव्य स्थिर हो कर रह गया। मैं उस समय उनसे कुछ कह नहीं सका। सन्देह अन्ततः सन्देह ही है। उसका आस्तत्य क्या? बहुतेरी निराधार बार्ते मानस पर आ-आकर तैरती रहती हैं। क्या-क्या पर हमारे भीतर अनेक प्रश्नोत्तर उत्थित-विनष्ट होते रहते हैं। मैं कैसे कहूं कि बैरिस्टर ऐसा काम कर सकता है?

उसी त्रण राजेश्वर ने देख लिया। दूर से ही बोला—श्रजीव मनकी श्रादमी हो! में बुलाता ही रह गया श्रोर तुमने ध्यान नहीं दिया। महाराज के यहाँ भी मैंन इन्तज़ार किया—लेकिन तुम बेकार यहाँ खड़े-खड़े मीजाना का बक्त ख्राब कर रहे हो। यहाँ श्राये ही थे, तो कोई कोजदारी का मुकदमा देखते; कोई-न-कोई श्राइडिया ही मिलता। लेकिन तुम ठहर एक नम्बर के चुगृद!... श्राश्रो, चलो इधर । मौलाना साहब माफ़ कीजिएगा, यह मेरा माशुक्त है ।

बाँह में हाथ डाल कर राजेश्वर ने मुझे अपने साथ कर लिया। मैंने और उपाय न देख कर मोलाना से कह दिया—आप वकील साहब के यहाँ तशरीक रक्खें। मैं अभी आता हूँ।

राजेश्वर बोला यानी इन मौलाना को तुमने क्यों फाँस रक्खा है ? इन से तुम्हारी कब की दोस्ती है ? कभी इनके घर भी गये हो, बीबी फातिया से भी परिचय प्राप्त किया है ? सुना है, एक नम्बर हसीन है वह ! सच, ... के जमीदार हैं ये। ये मुझे नहीं जानते, लेकिन मैं इन से परिचित हूँ।

"बड़े शैतान हो तुम। छि: छि:, ऐसी बात करते हुए तुमको शर्म भी नहीं आती। कितना शरीक आदमी है यह! अरे, इन्सान की कुछ तो इज्जत करना सीखो!"

"आक्जा! यह कहो कि बिहारी बाबू न होकर तुम कोई महात्मा हो—करिश्ते! और सातर्वे फलक से बोल रहे हो!—अरे जमीन पर चलो, मियाँ, जमीन पर!"

"ऋच्छा तो मुझे जाने दो। मैं इस तरहः मुझे यह तरीकाः "शेम ऋान यू!"

उसे जबरदस्ती छोड़कर मैं भागने लगा, तो वह एकदम से प्रतिहत होकर बोल उठा—

"एक्सक्यूज मी, बिहारी बाबू ! ऐम बेरी सॉरी कार दिस सार्ट श्रॉब टॉक।"

च्रणभर तक हम दोनों मौन रहे।

राजेश्वर बोला—तुम नहीं जानते, में तुम्हारी कितनी इञ्जत करता हूं। लेकिन में करूँ क्या, में श्रगर इस तरह से न रहूं, तो यह क्लर्की मेरा प्राण लेकर दम ले। तुम जानते हो, श्रादमी मशीन तो नहीं बन सकता।

में अब भी जुप रहा। "कुछ खालो, तो मैं थोड़ा निश्चित होकर अपने काम में लगूँ। मेरे साथ ही खाया था। मैं सा भी जुका, और तुम ... तुमको मूख लगी होगी।" वह

बोला।

"श्रन्छा, मैं जरा मीलाना से मिल श्रार्ड । श्रमी श्राता हूँ। साना तो अब मैं तुम्हारे घर पर ही स्वार्जगा। तुम ठीक चार बजे तो मेरे साथ चल दोगें नि।"

"चार बजे! चार बजे तो नाजिरजी भी नहीं उठते! अञ्छा,आज उनसे कहकर कुछ पहले

ही चला चल्या।"

में मोलाना के पास चल दिया । वे अभी तक वहीं खड़े-खड़े मेरी प्रतीका कर रहे थे। में जो उनके निकट पहुँचा तो वे बोले - अब में लीट जाना चाहता हूँ, पंडितजी। में नाहक आया। रुपया वसूल हो, चाहे न हो। में उस आसामी पर नालिश कर नहीं सकता। बहु जब मुक्त से चच्चा कहकर बात करेगा, तो उसके सामने से मेरी आंखें लच जायँगी। थोड़े-से रुपये के लिये में अपनी ही नजरों में गिरका नहीं चाहता। और रुपया भी, मेरा ख्याल है, अगर में तक्ताजा करें, तो, वह दे देगा।

Mr. Burn Barre Barre Barrella

जन्होंने इन राक्तों के साथ अपना हाय बढ़ा विया। फिर हाथ मिलाते हुए वे बोले-आप से मिल-कर निहायत ख़शी हुई! क्या आप कभी मेरे रारीब-ख़ाने पर आसकते हैं? मैं उनकी ज्योतिमंत्री मुद्री, को ही देखता रह गया। कुछ कह नहीं सका। वे बोले-आप जैसा कोई भी आदमी मेरी नजरी, से अभी तक नहीं गुजरा था और मैं तो कभी क्यास में भी न ला सकता था कि ऐसी जगह में आप जैसे लोग भी मिल सकते हैं।

अब मुफ से चुप नहीं रहा जा सका। मैंने कहा में नहीं जानता, किस तरह आपका शुक्रिया अदा कहें ?

मौलाना से विदालेकर फिर में कौजदारी खदालत की छोर जा पड़ा। वरायडे में खड़े—खड़े वही बैरिस्टर साहब अपने किसी साथी से कह रहे थे—उल्लू हो तुम!—चान्स खोते हों। चान्स खोने वाला आदमी कभी राहज नहीं कर सकता। तुमको यह सुनके ताज्जुव होगा कि आज एक मिनट के करामकश में मैंने तीस रूपये पैदा किये।

ton e di Territa

Profession 1.

X3 :

# जीवन-सुधा<del>•→</del>



श्री जैनेन्द्र कुमार

			<sup>9</sup> ъ.	
	•,		t	

### श्री जैनेन्द्रकुमार : एक व्यक्तित्व-चित्र

[श्रां प्रभाकर माचवे]

-- %---

( ? )

श्रीयामा ने तो रेखाश्रों में जैनेन्द्र का व्यक्तित्व खींच लिया श्रीर बड़ी सफलता के साथ। श्राज मैं चाहता हूं कि उसी व्यक्तित्व को शब्दों में खींचूँ श्रीर यह मैं बिलकुल भी नहीं जानता कि मैं कहाँ तक सफल हूँ गा। पर मुझे सन्तोष है कि जंनेन्द्र श्रसफलताश्रों को भी उदार मन से श्रपना सकते हैं। साथ ही स्व० प्० प्रेमचन्दजी की श्राह्मा — कि 'जैनेन्द्र पर तुम एक लेख लिखो, मनुष्य श्रीर कला दोनों पर' — का भी कैसे उल्लंघन हो सकता है ? यों साहस बटोर कर मैं चलूँ, पहिले मोटी बाह्मरेखाएँ खींचना होगा, फिर धीरे-धीरे व्यक्तित्व की सदमताएँ श्रीर श्रन्त में रंग भरना होगा।

देहली में साहित्य-सम्मेलन हुए तीन साल हो गये। जैनेन्द्रजी से पहिली भेंट वहीं हुई। साहित्य-परिपद् में वे बोले; गल्प-परिषद् में बोलने-बोलते उन्हें सक जाना पड़ा (भीड़ की मनोर्श्वात के कारण) श्रीर पहिली ही बार ऐस जान पड़ा जैसे इस श्रनसँवारी-सी शाल श्रोढ़े हुए व्यक्ति की बोली के पीछे छुछ श्रवश्य है जो गहरा है, ठोस है, श्रनभूत है; श्रीर यह व्यक्ति केवल बोलना है इसलिये नहीं बोलता वरन बोल बिना नहीं रहा जा सकेगा इसलिये बोल रहा है। परिषदें श्रास्वर परिषदें हैं, श्रवकाश के श्रमाय में बहुत कम जो भी हुझ वे बोल पाये उसमें सहजता थी, विचारों का वेग था श्रोर

ऐसी कुछ बात थी जो सीधी भीतर श्रसर डालकी हुई पैठती है। उनके बोलने के बीच-बीच में श्रंगरेजी के शब्द अपनी खास जरूरत के साथ बिखरे पड़े थे।

पर बाद में व्यक्तिगत भेंट हुई । और परिषद् में के जैनेन्द्र और परिषद् के बाद के जैनेन्द्र में कोई फर्क न पाया: जैसे यह साहित्य-सृष्टा जो व्यक्ति है वह एकरस व्याप्त, लगन-भरा श्रीर बिलकुल निरामय सारल्य से श्रोतप्रीत है: जैसे इसके व्यक्तित्व को ऋहम-मद् छ भी न गया हो, जैसे वह पूरी तरह भूल गया है कि वह जीवन-समीद्यक से अधिक या अलगे भी और कुछ है। जीवन और साहित्य को इस प्रकार एक सूत्राबद्ध पानेवाले जैनेन्द्र की अपनी निजता उनसे पहिली भेंट ही में व्यक्ति की मिलती है। श्रतिशय मिलनसार, निरालस और श्रमितभाषी। जिसका निर्दम्भ भी एक प्रकार का दम्भ लगे ऐसा यह जीव यों लगता है माना सभा सोसाइटी या परिषदों के लिये बना ही न हो; जैसे पूरी तौर से उस जीवन का वही फ़कीर-ढंग ऋपनाना है जिसे कि वह ऋपने 'साहित्य श्रीर समाज' (विश्वमित्र में प्रकाशित ) लेख में बनिया-ढंग से अलग कर चुके हैं। या कि जो 'जल्दी में' व्यक्त किये हुए कला सम्बन्धी अपने विचारों में उपयोगी या शुष्क सत्य से परे सुन्दर होकर जो सत्य कला के सिंहासन पर विराजमान होता है उसी सुन्दर सत्य की

उपासना में जिन्द्गी विताना चाहता है। पर परिषद् या सभा या समाज जब उसे अपने में खींच ही लेता है तब भी उसके और समूह के बीच की गाँठ साफ अलग मलकती रहती है। 'आलोचक' कहानी में कान्फ्रोन्स में जाना और 'जरूरी भेदाभेद' में का धार्मिक सोशलिज्म, सब जैसे इसी बात के द्योतक हैं कि यह न्यक्ति सभा में पहुँचेगा भी तो उसका एक अंग बनने की अपना, उसी के पंडाल के आसपास किसी एक हरिप्रसन्न को, किसी मनावैज्ञानिक माँडल को खोज निकालना ज्यादह पसन्द करेगा।

बाहर से ऋधिक हमें जैनेन्द्र को घर में जानना होगा। वहाँ वे पुत्र, पति, पिता सब एक साथ बने रहकर भी निरन्तर पुस्तकों में रत, ज्यादह मंभटों से बचते हुए एकाकी-से रहते हैं। जीवन की जरूरी समस्याश्रों के साथ वे जरूरी ही चए। देते हैं, उनसे ऋधिक देर उलझे रहने की जमता नहीं । यहाँ ऋाशय उनके बहिर्रूप से हैं, **श्चन्तर्राप में तो जैनेन्द्र का पूरा व्यक्तित्व ही** जैसे अनुभव की ऐसी एक-एक ईंट को हृद्यता की, बाहकता की सीमेंट से जुड़कर बना हुआ है। त्र्यीर यही कारण है कि उनका एकाकीपन उन्हें मनइस नहीं बना देता, तो भी सत्र में मिलते-जुलते रहते हुए भी वह एकाकीपन ऋलग भलकता रहता है, मानो वह भी जयराज के मन में की गाँठ हो। उनकी गृहस्थी का कासा खाका पढ़ाई? या 'एक दिन' में पाया जा सकता है । शायद एक वर्ष भी न हुआ होगा, उनकी माता का निधन हुआ और यह भी अब उनके भीतर बैठी हुई, उनकी चिन्ताशीलता को उद्वेलित करनेवाली. एक नहीं-भूली जा-सकती-ऐसी बात है। भाभी जैनेन्द्र के वैसे सगी कोई नहीं, तो भी न जाने वे अपनी रचन। श्रों में 'भाभी' (वातायन) राजीव और भाभां और 'हरिष्रसन्न की भाभी' सुनीता जैसी चीज इतनी सफाई त्रार सुन्दरता के साथ कैसे खींच ला सके हैं। जैनेन्द्र की

चीजों में पग-पगपर फूट पड़नेवाला जो घरेलू पन श्रोर खांसकर हिन्दू-घर श्रीर हिन्दू-नारी की सारी बेबसी श्रीर निष्ठा जैनेन्द्र के जीवन के प्रत्यत्त श्रीर सूदम अध्ययन से पाई हुई निजी निधि है।

बस्तुतः जैनेन्द्र में, क्या जीवन में और क्या साहित्य में, घर और बाहर, व्यक्ति और समष्टि एक दूसरे के प्रति चिर-अप नाशील रहे हैं। जैसे एक का दूसरे विना अस्तित्व ही असम्भव है। और तो भी उसमें व्यक्ति और घरवाला जो तत्व है वह दूसरे के ऊपर अधिकार से रोग जमाता हुआ चलता जान पड़ता है। माना कि परख में 'दायित्व' है पर उस दायित्व से सुनीता के मन के अन्तर्मुखो दायित्व से तुलना करने पर, जैनेन्द्र की विचार-धारा का विकास अपने ही भीतर की और सम्मुख आधिक है यह मानना पड़ेगा और इसीसे ता परख का नायक सुनीता का हरिप्रसन्न-सा और कुछ-कुछ जयराज-सा लगता है।

यही लोकिक और अलोकिक, वास्तव और मत्य, अनेक और एक का भेदाभद जो है वहीं जैनेन्द्र के व्यक्तित्व की विशेषता है। दोनों बातें जैनेन्द्र में चलती रहती हैं अपने 'कु' और 'सु' के पूरे छाया-प्रकाश के साथ-साथ । इस सब चर्चा को संचेप में कहना हो तो जैनेन्द्र के व्यक्तित्व के लिये ठीक वहीं कहा जा सकता कि जो अब प्रेमवन्द्रजी ने 'हंस' (वर्ष ३ संख्या ४) में परख पर सम्मति देते हुए कहा था—'श्रम्तः हेरणा और दार्शनिक संकाच का संघर्ष है, इतना हृद्य को समोसनेवाला, इतना स्वच्छन्द और निष्कपट जैसे बन्धनों में जकड़ी हुई आहमा का पुकार हो।'

जैनेन्द्र ऐसी सुलमन हैं जो पहेली से भी श्रिधक गृढ़ हों। वे इतने सरल हैं कि उनकी सरलाई भी वक लगे, वे इतने निर्मिमान हैं कि वही उनका श्रिभमान हैं। ये परिस्थितियों से ंजीवन सुधा प्रेसे आबद्ध हैं कि उसी में उन्होंने आपनी मुक्ति मान ली है।

( ? )

तो जैनेन्द्र के, क्या व्यक्तित्व और क्या साहित्य में एक इम आकर्षित कर लेनेवाली पहली बात है उनमें कूट-कूटकर भरी हुई सरलता। और इस रहन-सहन और बोलचाल के बहुत सीधे-से आदमी के भीतर भी क्या ऐसी ही निरम्न, खुली-खुली श्रकृत्रिमता भरी हुई होगी, ऐसा प्रश्न सहसा उठ खड़ा होता है।

पर इस सरलता के ऋतिरेक के साथ-साथ उममें की जिज्ञासा, कुत्रल, सब-कुञ्ज मान लेने की वृत्ति में मिली हुई एक रहस्यमयता भरी पड़ी है। इसी रहस्य-खंड में से जैनेन्द्र की ऋप्रस्तुत तथा ऋलोकिक मृष्टि का विधान होता है।

श्रीर जैनेन्द्र का बात-चीत का ढंग श्रपने में कितनी श्रपनापन की विशेषता लेकर मूर्त हुआ है ! ऋपना ही वाक्य-विन्यास, ऋपना ही शब्द-गुन्थन, अपनी ही शैली । प्रेमचन्दजी ने परख, पर सम्मति देते हुए ठीक ही तो कहा था--उनमें साधारण-सी बात की भी कुछ इस ढंग से कहने की शक्ति है, जो तुरन्त आकर्षित करती है। उनकी भाषा में एक खास लोच, एक खास अन्दाज है। श्रोर श्रंपेजी के शब्द-समूह तो इस युक्तता के साथ 'फ्रिट' बैठते हुए उस बोलने में चले श्राते हैं कि एक श्रोर तो विद्यालयीन शिता में श्रलग रह कर भी श्रंग्रेजी पर ऐसा प्रभुत्व जमान वाली उस जवान पर कुत्रवल होने लगता है तो द्मरी श्रोर उसकी गहरे पैठते चले जाने वाली वृत्ति के साथ-साथ चलते हुए कार्ना को थकान-सी लगने लग जाती है, जैसे वे उस ज्वान के साथ-साथ दौड़ सकने में श्रहमर्थ हों। जैनेन्द्र का यही बात कहने का, लिखने का, ढंग इतना अपनत्व-पूर्ण है

कि वह अननुकरणीय है। वह अद्वितीय भी इसी दृष्टि से है।

जैनेन्द्र का श्रपनाएक खास चिनोद-भाव भी है। उनके साहित्य में तो उसके दर्शन बहुत जगह होते ही रहते हैं ( यथा 'मौत कहानी' 'कश्मीर प्रवास अनुभव' में 'महातमा जी' शब्द का प्रयोग और 'श्रम्बूलकर'। 'टाइप' में श्रीर खासकर 'शान्ता का रंग' में ) परन्तु उनके व्यक्तिगत व्यवहार में भी वह भाव श्रदृश्य नहीं रहता। विल्कुल भोले भलेमानस बनकर दूसरे के जी की बात निकाल लेने का कौशल उनकी बात करने की शैली में जैसे भरा हुआ है। वह बाहर से जितनी बुद्ध पन की लगती है उतनी ही वह भीतर से दूसरों को हतबुद्ध बनात चलती है। जैनेन्द्र की यही मैं।लिक विशे ता. क्या साहित्य और क्या परस्पर सम्बन्धीं में. अपनी एक अमिट याद छोड़ जाती है।

जैनेन्द्र एक मनोवैज्ञानिक हैं श्रीर सो भी बहुत 'काँन्शस' मनोवैज्ञानिक नहीं। इसी कारण जैनेन्द्र के पास पुस्तकों पर, लेखकों पर, व्यक्तियों पर, राजनीति पर, साहित्य पर अपनी एक-एक खास राय सुरिवत रहती है श्रीर वह मन की खदान से खुरदरी निकली हुई सम्मति अनुभूति की खराद पर चढ़ कर अन्झी तरह कटी-बूँटी, मांक श्रीर निभीक, चिर-उद्यन रहती है। इसी चाह के कारण ही तो जैनेन्द्र हर प्रकार के व्यक्ति के साथ बड़ी ही श्रासानी से मिल जा सकते हैं श्रीर उम प्रयोग के लह्य के श्रम्तरंग का कोना-कोना झानने-उटोलने पर ही उसे वे छोड़ते हैं।

अपियह उनके व्यक्तित्व का एक और मूलि विशेष है। अनावश्यक के त्याग के मोह में कभी-कभी वे आवश्यकत; भी भूल जाते हैं। विशेष उनमें भी विद्यमान हैं। पर वह जैसे सब किसी अन्तिम अविरोध के लिए उपस्थित रहता है। आदर्शवादी वे अवश्य हैं पर उनका आदर्शवाद एक तरह का

स्वाभाविक मानवतावाद है; पर वे कभी-कभी श्राचारवादी (प्यूरिटन) रूप में हमारे सामने त्राते हैं। वे मृलतः जैन हैं, यह भूल कर कैसे चला जा सकेगा। (जैन का अर्थ है ज्ञानसाधक) साहित्य में इतनी साधुता आजकल बहुत बांछनीय नहीं, पर जैनेन्द्र के लिए अवांछनीय क्या है ? वे कभी बुद्धिवादी लगते हैं तो कभी भाववादी। पर मात्रवादी-प्रतिचादी के इस चक्कर में वे कभी अटकते ही नहीं। उन्हीं के अपने शब्दों में--'ऋपनी रचनाक्रों की विविधता पर मैं अप्रसन्न नहीं हूँ । न उनमें ऐसा कोई ऐसा विरोध देखता हैं। हाँ, विविधता तो देखता ही हैं और सब का विविध मृत्य भी आँकता हूँ। 'एक टाइप' श्रीर 'राजपथिक' में स्थान-भेद श्रीर मृल्य भेद तो है ही। पर मेरी श्रपेक्षा से तो दोनों ही एक-सी ही सत्य हैं।' एक पत्र का श्रंश)

श्राशय यह है कि उन्हें तो किसी भी 'वाद' में बाँधना सम्भव नहीं। वह वन्य मुक्त-धारा के समान काल और परिस्थिति के चक्करदार कटीले पथ की परवाह न करता हुआ, नये-नये पथ खोजता हुआ, सजीव-सहज-गति से आगे बदना मात्र जानता है। उससे अधिक की न उसने कभी अपेता की न उसे आवश्यता ही है। हमें तो इस हृद्य शून्य युग में उनकी हार्दिकता पर सम्मान और उनकी आत्म-नुष्टि पर संतोष होना चाहिए। अपने जीवन से रंग लेकर अपने आदशों की रेखाओं में भरने, हाथों की कूँचा बनाकर युग की चित्रपट पर साहित्य का अमर चित्र खड़ा करने वालों में जैनेन्द्र का भी एक नाम, इन्हीं बातों से लेना पड़ेगा।

(3)

जैनेन्द्र में घर-बाहर, सारलय-गृहता जैसा ही एक और दंद्र हैं, विनय और अभिमान है।

जैनेन्द्र को बहत से लोग सममते हैं, मानते हैं; पर वे वेही लोग हैं. जो कि उनके जितने समीप चाहिए उतने नहीं जा सके हैं। श्रीर दूर से रह कर किसी को कुछ भी मान लिया जा सकता है। इस बारे में मैं उनके पत्रों में से तीन अंश उद्घृत करना चाहता हूँ—'मेरे बारे में यह बात आप जानलें कि मेरी किताबों में पहुँच कम है। इसलिये मेरा जवाब थोड़ा श्रीर सादा ही हो सकता है।' श्रीर एक बार--'मैं लिखना न छोड़ूँ, हो जो हो-यह आप कहते हैं। आप ठीक हैं; लेकिन मैं अपने लिखने को बैसा महत्व नहीं दे पाता। मैं नहीं लिखता. इससे साहित्य की चिति होती है, यह चिंता मुझे लगाए भी नहीं लगती। जब मुक्त में वह भाव नहीं है. तब उसे श्रोह क्यों ? मैं उसे श्रपने उपर श्रोद कर बैठना नहीं चाहता। साहित्यिक-एक विशिष्ट व्यक्ति मैं अपने को एक त्राग के लिए भी नहीं समभना चाहता। ऐसा समभना ऋनिष्ट है। ऐसी समफ, मैं देख रहा हूँ, बहुत ऋंश में श्राज हिन्दी के साहित्य को हीन बनाए हुए है। मानो जो साहित्यिक हैं उसे कम आदमी होने का अधिकार हो जाता है, अथवा कि वह उसी कारण अधिक आदमी है। इसलिए मैं उस तरह की बात को अपने भीतर प्रश्रय नहीं देना चाहता। पर, मैं तो देखता हूँ, मुझ अपने ही कारण लिखना नहीं छोड़ना है। क्योंकि जब साहित्य का जिम्मा मेरे ऊपर नहीं है तब मेरी अपनी मुक्ति तो मेरा अपना ही काम है। और कब आत्मव्यक्तीकरण मुक्ति की राह में नहीं है ?' श्रोर श्रहंकार वाली बात पर उनकी स्वष्ट सम्मति वृज्जने पर उन्होंने लिख भेजा-'पर दिल से श्रहंकार निकाल डालने का तरीका ही यह है कि उसे हथेली पर ले लिया जाय। जिसे निन्दा से डरना नहीं है वह प्रशंसा सें डरे ? जो अपवाद पर महाते हैं वे ही पर्याप्त से अधिक संकुचित हो सकते हैं। पर वे दोनों

जीवन सुधा== \*\* \* \* \* \*

एक रोग हैं—भीति और लालसा।' इस प्रकार जहाँ तक मैं जैनेन्द्र जी के सन्निकट रहा हूँ और आ पाया हूँ मुझे तो उँगली रखने को भी तिलमात्र स्थल नहीं मिलता जहाँ मैं उन्हें ऋ कारी समसूँ। रालत समभने वालों के लिए उपाय ही क्या है ?

ठीक इसी तरह की, या कि इससे भी गहरी रालतफहमा जैनेन्द्र के नारीचित्रण के समभने के साथ हुई है। इवर सुनीता के प्रकाशन के बाद से ता यह होहला बहुत ही मचा ! दो-चार खियों के हिमायती ( चाँद में श्री० 'रतन' का एक लेख आर एक सुनीता पर चर्चा) जैनेन्द्र की बासना के प्रचारक, भाभी के साथ कुत्सित प्रेन के चित्रए-कर्ता कह कर चिह्ना उठे है। पर लागों ने जैनेन्द्र का भाभी, बहिन, शिष्या, साली, पड़ासिन, इन सत्र रिश्तों जो मात्र नारी ह आर जो सुनयना (एक रात) जैसी मात्र निर्वोध ऋस्तित्व-प्राय हे, जो कि 'सेक्स' कं बन्धन से भी परे है, उस जैनेन्द्र की ऋतीन्द्रिय नारीत्व की धारणा-ऋल्पना को समका नहीं ह । सुनाता की तो वात ही दूसरी हे, बह तो एक ऋन्यांकि है। अन्योक्ति भूलकर, मात्र अ के आधार हा से चिपटे रहने वालों का दशा दयनीय श्चवश्य कही जायगी। 'ब्रामाकीन की रिकार्ड' वाली कहानी पर आदेशों के उत्तर चाँद में स्वयम जैनेन्द्रजा ने ही दिए हैं। आज़े से की दूसरी श्रेणी इतन। अनुदार नहीं। यह जैनेन्द्र पश्चिमी आग विदेशी गंध पाने लगे हैं। पहिले तो जैनेन्द्र का कल्पना का अमं(लिक मानना हा एक बड़ा साहस करना है श्रीर चए। भर के लिए यह मान भा लिया कि यह सब बाहर का तत्व है, ताक्या साहित्य के चेत्र में भा स्वदेशा-आन्दालन नामक वस्तु है कि जो विदेशी का बहिष्कार मनालोक में भा किया जाय ? दूसरी बात है कि हमें नयं युग के बढ़ते हुए पैरों के साथ चलना होगा, नीति के दक्तियानूसी आदशीं की मर्याद् के घूँ घड़ में हिन्दी की कथा, पर्दा-प्रथा

के तथा और दुर्ग हों के समान ही, प्राण-वायु के श्रभाव में, रुग्ण-पीत, दुर्बल-काय, श्रस्वस्थ होती आरही है। उसे मुक्त होकर ही रहना पड़ेगा। 'सुनीता' के समान ही 'एक रात' भी ऋन्योक्ति है पर 'हंस' में उस पर लिखते समय क्या जनार्दनराय और 'पैरेडी' करते समय अवनेश्वर प्रसाद दोनों ही उसका परोच्च मूल्य पूरी तरह भूल गय थे ? भारतीय नारीत्व ( देववास की पारू ), जैनेन्द्र के लिये सदा श्रद्धा की वस्तु रही है, (देखिये 'क्या देवदास ट्रेजडी है ?' चित्रपट विशेषाँक ) पर इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि वही श्रवस्था श्रन्तिम हो। कट्टो का सत्यधन से श्रार्ग्वार में विदा होना ऋोर सुनीता का उलटे हुए विराम चिन्हों जैसे हरिप्रसत्र से बिदा होना इस दृष्टि से विचारपूर्वक तौली जाने चं जों हं। 'कुछ उलकन' की चंचल-मन नारी श्रीर 'एक रात' की सुनयन। खासे विरोध के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। तात्पर्य, नारी के नाम से ही ब्रालोचकों को एक दम 'बलित-चिन्त' न हो जाना चाहिए, बल्कि कुछ धैर्य के साथ, जैनेन्द्र के साथ न्याय करने की कोशिश करनी चाहिए। नारी एक पहेली है श्रीर लेखनी उससे कम गृह नहीं।

(8)

उनका श्रंतरंग सब से श्रधिक सहज रूप से व्यक्त होता है उनकी चिट्टियों में। नीचे में उनके पत्रों में से बहुत से श्रंश, लम्बे भी क्यों न हों, देना चाहता हू, जिनसे जैनेन्द्र की परख' में एक 'वातायन' खुल सकता है। उन पत्रों में सवाल-जवाब भी हैं, कुद्र मेरे श्रीर उनके बीच में विचार-विनिमय का सिलमिला भी है। कुद्र चर्चाश्रों का जिक्क है श्रोर कुद्र विवाद भी। एक बार जब मैंने उन्हें श्रास्कर बाइल्ड के 'मृष। का हाम' नामक निबन्ध के श्रावेश में झाकर जीवन

जीवन सुधा

श्रीर कला का कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता, यों
लिख भेजा था तब के उनके पत्र का कुछ भाग—

'जीवन से कला को तोड़कर मैं नहीं देख पाता । सत्याभिमुख जीवन की अभिव्यक्ति कला है। शब्दाङ्कित अभिव्यक्ति साहित्य है।

'श्राप देखें, जीवन के साथ सत्याभिसुख विशेषण मैंने लगाया है; श्रर्थान् जो हम हैं वही हमारा वास्तविक जीवन नहीं है। जो होना चाहते हैं, हमारा वास्तव जीवन तो वही है। जीवन एक श्रभिलाषा है! जब कला के सम्बन्ध में जीवन शब्द का उपयोग करता हूँ तब उसे श्राप उस चिर-श्रभिलाषा की परिभाषा ही में समर्से। उस श्रथ में समस्रने से जीवन श्रीर कला का विरोध या Parallelism\* उड़ जाता है।

'क्या जो होना चाहते हैं, बही हम हैं ? क्य कभी भी वैसे हो सकेंगे? राष्ट्रतः नहीं; किन्तु इसका क्या कभी भी यह भतलब है कि aspiration! व्यर्थ है ? यह मतलब करना तो सारी गति और चेष्टा को मिटा देना है।

'श्रादर्श और व्यवहार में श्रन्तर है। वह भन्तर एक दृष्टि से श्रनन्तकाल तक रहेगा। उस दृष्टि से वह श्रनुल्लंधनीय भी है; किन्तु इसीलिए तो उस श्रन्तर को कम करना और भी श्रनिवार्य है। श्रादर्श श्रप्राप्य है, क्या इसीसे उसके माथ एकाकारिता पाने के दायित्व से हमारी मुक्ति हो जाती है?

'इमी से कला को 'कला' के ही चेत्र की वस्तु न मानने देकर उसे जीवन में उतारने की वस्तु कहते रहना होता है।

'जो कला वास्तव से असम्बद्ध होकर ही जी सकती है, वास्तव के स्पर्श से जो सर्वथा छिन्न- भिन्न हो रहती है, मेरे निकट तो वह हस्व-प्राण हो है। मैं उसे गिनती में नहीं लाता। कला अपने भीतर भरी अझा की शक्ति से वास्तव' को संस्कृत करने के लिये हैं, उससे प्रास्त होने के लिये नहीं।

'कला मात्र स्वप्न नहीं। वह वास्तव के भीतर रमी हुई वास्तविकता है, जैसे शरीर के भीतर रमी हुई त्रात्मा। वह ऋधिक वास्तव है। जिस आदर्श तेत्र को हम कलात्मक चेतना से स्पर्श करते हैं, जिस स्वर्ग की हम इस प्रकार माँकी पाते हैं, और उसके ऋहाद को व्यक्त करते हैं, क्या उस स्वर्ग में अपने इस समन्न शरीर और शारीरिक जीवन के समेत पहुँचे विना हम तृष्त हों? तृष्त नहीं हुआ जा सकेगा। इसीसे तमाम जीवन के जोर से कला को पाना और वहाँ पहुँचना होगा।'

इसी पत्र का एक श्रीर भाग—'मैं चाहता हूँ ब्रोटी श्रीर तुम्छ वस्तु मेरे लिये कहीं कुछ रहे ही नहीं। धूल के कण में भी मैं परम प्रेमांस्पद परम-रहस्य को क्यों न देख लेना चाहूँ जिसे परमात्मा कहते हैं ? श्रीर वह परमात्मा कहाँ नहीं है। श्राज कीचड़ में ही उसे देखना होगा। यही श्रास्तिकता की कसौटी है। मूर्ति में तो श्रल्प श्रद्धावान भी देख पाता है। मूर्ति में तो श्रल्प श्रद्धावान भी देख पाता है। मूर्ति में तो श्रल्प श्रद्धावान भी देख पाता है। मूर्ति में तो श्रल्प श्रद्धावान भी देख पाता है। मूर्ति में तो श्रल्प श्रद्धावान भी देख पाता है। मूर्ति में तो श्रल्प श्रद्धावान भी देख पाता है। मूर्ति में तो श्रल्प श्रद्धावान भी देख पाता है। मूर्ति में तो श्रद्धा समकता है। यहि मैं स्वाद की उपयोगिता के मम्बन्ध में कुछ श्रपना मौलिक, उपयोगी श्रनुभव लोगों को यता मकूँ तो यह मैं माहित्यिक जैनेन्द्र के लिए कोई कलंक की बात नहीं समझ्ंगा, प्रत्युत श्रेय

<sup>\*</sup> सरलता ।

<sup>†</sup> आकांचा।

<sup>🕽</sup> मैल ।

की बात ही समझूँगा। हम क्यों कला को खुई-मुई सी वस्तु, Hot-house Product \* बनावें। वह शीशो में बंद प्रदर्शन की वस्तु ही बनकर रहने वाली क्यों बने; वह क्यों न महाप्राणवान, खुली दुनिया में अपने ही बल पर प्रतिष्ठित बनी खड़ी हो ?'

इसी पत्र के बाद एक दूसरे पत्र में 'सत्य' श्रीर 'वास्तव' का श्रन्तर समकाते हुए जैनेन्द्र लिखते हैं — 'हमको मान लेना चाहिए, जो शब्दों में श्राता है सत्य उससे परे रह जाता है। उसकी श्रोर संकेत कर सकें, यही बस है। वह भला कहीं परिभाषा में बँधने वाला है ? समस्त परिभाषाएँ जो उससे निकली हैं।...मैं जिसे 'सत्य' शब्द से बूकता हूँ, उसमें तो सत्ता मात्र समाई है। जगत का मच-झूठ सब उसमें है। 'वास्तव' से मेरा श्रीभाय लौकिक सत्य से हैं। 'वास्तव' से मेरा श्रीभाय लौकिक सत्य से हैं। 'वास्तव' से मेरा श्रीभाय लौकिक सत्य से हैं। जावता होती हैं। जीवन में तो इंद्र है ही। किन्तु लह्य तो निद्ध दता है। जीवन विकासशील है। क्या कला जीवन से श्रीवर्य ही रह मके ? ऐसी कला तो दंभ को पंषिण दे सकती है।'

ऐसे उद्धरण कहाँ तक दिये जायँ, पर जी नहीं मानता इससे एक लंबे पत्र में के कुछ लंब श्रंश, श्रन्त में, देही देना चाहता हं...

प्रथ—कला हेतु प्रधान होती है कि हेतु शून्य ? उ०—'मैं कहूँगा कि कलाकार अपने में देखे, तो कला हेतु-प्रधान क्यों हेतु-मय होती है। कला कृति के मूल में मात्र न रहकर, उसका हेतु तो उस कृति के शरीर के साथ अभिन्न रहता है। वह अणु-अणु में व्याप है। कलाकार की टिप्ट से कभी कला हेतु हीन (अर्थान नियमहीन, प्रभाव- हीन ) हो सकती है ? अरे यह तो हेतु-प्राण है । कलाकार के अस्तित्य का हेतु ही उसकी कला में ध्वनित, चित्रित होता है ।

'लेकिन बाहर की दृष्टि से उसे सहेतुक मैं कैसे मानूँ ? इस भाँति उसे सहेतुक मानना कला-कृति और कलाकार के बीच में खाई खोदने जैसा है। मनुष्य श्रीर उसका धंधा ये दो हो सकते हैं। पर मनुष्य श्रीर उसकी मनुष्यता ( यानी, उसकी भावनाएं) दो नहीं हैं। उसका व्यवसाय उसके साथ प्रयोजन-जन्य, मनुष्यता उसके साथ प्रकृति-गति है। जहाँ मानव अपनी घनिष्टता में, अपनी निजता में प्रकाशित है, वहाँ उतनी ही कला है; जहाँ अपने से अलग रक्खे हुए हेतुओं के निर्देश पर रचता है, वहाँ उतनी ही कम कला है। कला में जात्मवान है। आत्मवान सबसे बड़ा धर्म है, सब से बड़ी नीति है। सबसे बड़ा उपकार है और सबसे बड़ा सुधार है। ऋतः कला-सुधार, उपकार, नीति श्रीर धर्म सबसे अपरिवद्ध है। इस प्रकार कला सत्य की साधना का रूप है। वह परमभेय हैं। कला तो निःश्रेयस की साधिका ही है। जहाँ ऐसा नहीं है वहाँ वह भानत है, यह कहिए कि वहाँ कला ही नहीं है।

'बात यह है कि मानव का ज्ञान अपने संबन्ध में बेहद अध्रा है। वह अपनी ही भीतरी प्रेरणाओं को नहीं जानता। यह सही नहीं है कि वह प्रयोजन को ही सामने रखकर बलता है या बल सकता है। हेतु उसके भीतर संश्लिष्ट है, Inherent है। जिसको अहं-विकृतज्ञान में मानव हेतु मान उठता है, उसके प्रति वह सकाम होता है। वह इस तरह हेतु होता ही नहीं। मनमानी लोगों की गरजें उनके जीवनों का वास्तव हेतु नहीं हैं। इस हिन्ट से हेनुवाद एक बड़ा भारी जीवन सुधा -

मायाजाल है। जो जितना महत्पुरुष है वह उतनी ही दृद्ता श्रीर स्पष्टता के साथ जानता है कि व्यक्तिगत कारण से कोई बड़ा ही कारण उसे चला रहा है। इतिहास के सब महापुरुष इसके साथी हैं श्रीर में कहता हूँ कि इस व्यक्तिगत हेतु की भावना से उपर उठने पर ही सच्चे जीवन का श्रारंभ श्रीर सच्ची कला का सृजन होता है। हेतुवादी वह संसारी है जो सांसारिकता से उँचा उठना नहीं चाहता।...

(और तुम पूछते हो कि) अगर कला Self-expression (आत्मव्यक्ति) ही है तो फिर जीवन से उसका दायित्व क्या है?

'मैं तो आज कला को Self-expression की परिभाषा में ही समक्तने की इजाजत देना चाहता हूँ। यद्यपि इसमें (समभने में ) खतरा है फिर भी उसी प्रकार की परिभाषा ऋधिक निकट और श्रन्तत: ऋधिक उपयोगी है; पर फिर भी वह तनिक भी उच्छ खल नहीं और अधिक-से-अधिक दाांयत्वशील है। वह इसलिए कि जो हमारा भीतरी इसी असली इसी है वहबाहरी जगन् के साथ श्रभेद्दमक है। हम असल म विश्व के साथ एकात्म है। इसलिय प्रत्यक का Sell-expression ऋगर वह ऋपने साथ सच्चा और जागरूक है, ता प्रेमात्मक ही हा सकता है, विद्वेषात्मक तो हो सकता ही नहीं। साधनों में जो आत्मवंचना कर जाता है, उसकी बात तो मैं करूं क्या-पर साधक व्यक्ति का Self-expression कभी ऋहित कर नहीं हो सकता। श्रीर कलाकार साधक है। असल में साधक ऋतुभव करता है कि वासनाओं में उसका मच्चा 'स्व' ही नहीं है, श्रीर वह वासना-रस का अन(यास छोड़ता चलता है। वह ऋति-सहज-भाव स दायित्वशीलता की ऋोर बढ़ता है स्रोर साथ ही चिनम्रता की स्रोर बढ़ता है। इस भाँति साधक कलाकार के लिये जाहरी हो जाता है कि वह इस बाहर की कसौटी पर अपनी साधना को कसता भी रहे—िक वह उच्छ खल, अनियमशील, अहम्मन्य तो नहीं हो है रहा है। रोग की जड़ अहम्मन्यता है श्रीर कलाकार अहम्मन्यता का खोखलापन आरम्भ से ही देखता है।

इस तरह के साधक कलाकार हैं जैनेद्र!

( )

इस तरह मैंने कोशिश की कि जैनेद्र के व्यक्तित्व के श्रास-पाम शब्दों के रेखा-बन्धन खड़े कहाँ श्रार इस प्रयास में बहुत-सी मदद उन्हीं के रंगों ने दी है। पचास—साठ कहानियों के तीन चार संप्रह वातायन, फाँसी, दो चिड़ियाँ, एक रात श्रार दो उपन्याम—जिसमें से भी 'परख' एक बड़ी कहानी ही समभो—जैसी संज्ञिप पूँजी के साथ श्रुपना एक दर्शन, एक खास विचारमाला लेकर जैनेन्द्र हिन्दी में श्रवतीर्ण हुए हैं। श्रार उनकी वस्तुश्रों का मृल्य हमारी दु बल लेखनी से श्रधिक प्रवल काल की तराज ही श्रांक सकेगी।

कुळ लोग तुलनाश्रों पर नाराज होते हैं, पर तुलनाएँ तो होंगी ही। उसके बिना मनुष्य का सीमित परिवेद्दण आगे कैसे बढ़ेगा। किसा ने (शायद मैथिलीशरणजी ने) जैनेन्द्र में शरत् वाबू और रवीन्द्र आदि की एक साथ पा लिया तो उसमें उन (कविवर गुनजी) के व्यक्तिगत मत को लंकर कुढ़ने, आत्रेप करने की कीन-सी आव-श्यकता है? जैनेन्द्र की प्रतिभा में स्व० ललामभूत गोकों और प्रेमचन्द की जीवन और साहित्य को एकरम पाने की पूरी चमता, शरत बाबू का प्रसाद-गुण सहज-कातर आकर्षण, रिव बाबू की कल्पना और सूम की सुधराई, मोपासाँ के उञ्चलते हुए, स्वस्थ, सजीब वर्णन तथा चेखव का सूदम-सहद्य

मनालोक का अध्ययन सभी गुणों के बीज विद्यमान हैं। और जैनेन्द्र पर कुछ भी कहते या लिखते समय यह कभी न भूलना होगा कि वे अभी प्रगति-मान स्थिति में हैं। उनका भविष्य-तेत्र अभी बहुत खुला पड़ा है और साहित्य में नवीनता की विचित्रता का स्वागत उदार—मन से करना होगा। नवीन जो है वह विचित्र होने ही के कारण स्वीकृत न किया जाय यह अप्रेम का प्रदर्शक है। 'आलो—चक के प्रति' के अंत में जैनेन्द्र ने अपने आलोचक से इसी सहद्यता की अपेता की है। तो यह जो कुछ लिखा गया यह जैनेन्द्र पर कभी भी अन्तिम नहीं, यह तो श्रीगरोश ही माना जाय। और सब बातें निर्णयात्मक न मानकर मेरी व्यक्तिगत भावनाओं की अभिव्यक्ति मानी जायँ।

यह जानते हुए भी कि ऋभी जैनेन्द्र पर लिखने का परिपक्त समय नहीं स्त्राया है, स्व० प्रेमचन्द्रजी की श्रद्धास्पद श्राइ टालना कैसे हो सकता था ? फिर से यह दुहराना व्यर्थ होगा कि जैनेन्द्र की विचारावित को जो मात्र श्रस्पष्ट कह कर छोड़ देते हैं वे भूल करते हैं। तार्किक की-सी शुष्क नियमबद्धता न होने पर भी उनके दर्शन में एक सुसंगत सूत्र श्रवश्य है श्रीर वह उन्होंने श्रपने जीवन की कीमत देकर पाया है।

सारांश, जैनेन्द्र ने क्या जीवन और क्या साहित्य में यह तत्व श्रम्बी तरह पहिचान लिया है कि —'सत्य स्थिरता से घिरा नहीं है' न श्रमु—शासन से परिबद्ध । काल भंग सत्य ही है, काल जो बनने और मिटने का श्रावेय है। श्रतः स्थिरता सिद्धि नहीं, गति भी श्रावश्यक है। जीवन श्रस्तित्व से श्रिधक कर्म है।'

#### ताण्डव

[श्री जयशंकर 'प्रमाद']

बन गया तमस था अलक जाल, सर्वाग ज्योतिमय था विञाल :

> भ्रम्निनाद भ्र्वान मे पृरित , थी शून्य-भेदनी सत्ता चित् ; नटराज स्वयं थे नृत्य निरत ! था भ्रांतरिच प्रहसित सुखरित ;

4.

स्वर लय हीकर दे रहे ताल, में लुप्त हो रहे दिशाकाल। लोला का स्पन्दित आल्हाद, महाभाषुंज चिति मथ प्रसाद:

> भानन्द पूर्ण ताण्डव सुन्दर, भरते थे उज्ज्वल भ्रम सीकर ; बनते तारा, हिमकर दिनकर, उड़ रहे धूल-कण से भूषर ;

संनार स्वान से युगल पाद-गति शाल, अनाहत हुआ नाद। निखरे असंख्य नहाएड गोल, युग त्याग ग्रहण कर रहे नोल;

> विवयुत बटास चल गया जिथर , कंपित संस्कृति बन रही जथर ; चेतन परमाणु भनन्त बिस्तर , करते विलीन होते स्रण भर ।

यह थिथ भूलता महा दोल , परिवर्त्तन का पट रहा खोल । उस शक्ति शरीरी का प्रकाश, सन शप पाप का कर विनाश—

> नर्तन में निरत, प्रकृति गल कर , उस कांति सिंधु में धुल मिल कर; भाषना स्वरूप भरती सुन्दर , कमनीय बना था भाषणतर;

बीस्क गिरि पर विद्युत विलास , क्लासित महा हिम भवल हास !

### माँ ने कहा था

[श्री विष्णु]

बरसात आई और चली गई। सरिद्यों का मौसम पूरे साज-बाज के साथ आ पहुँचा। कार्तिक की एक ऐसी ही संध्या को वह उठकर बैठ गया। उसका नाम जदु था और वह १४ वर्ष का एक लड़का था। जिस भौंपड़ी में वह लेटा हुआ था, वह बहुत ही तंग था। दरवाजे में सिर अड़ता था। कठिनता से दो आदमी उसमें सो मकते थे। आज न जाने क्यों उसने सभी कुछ गौर से देख डाला। बाहर से ठएडी-ठएडी हवा आ रही थी और बिछाने के नाम उसके पास पुत्राल का देर था, औदने को मेली-कुचैली दुतई का एक चिथड़ा और बदन पर सिर्फ फटी हुई एक कमीज।

मन ही मन उसने कहा—आज दिवाली हैं
और मेरे पास रात के भोजन का भी ब्योंत नहीं।
रोशनी और मिठाई.....। उहूं! यह भी क्या
मेरे करने की बात है। मुझे तो अपने पेट की
सोचनी चाि ये। उसने फिर एक बार बड़ी
सूदमता से भींपड़ी को देख हाला। तब उसे कुछ
पुरानी बात याद आने लगी। याद कुछ मीठी थी,
कुछ कड़वी। इसी से आंखों में आँस् भर आए।
बहुत नहीं दो साल पहिले ही की बात थी। तब
माँ जीती थी। इसी भींपड़ी के दरबाजे पर मिट्टी
के तीन दीवे उसने जलाये थे। तेल के मीठे सेल
और खील लेकर उसने लक्सी का पूजन भी किया
था। माँ ने कहा था—कुछ भी हो हिन्दू के घर
में लक्सी का पूजन तो होना ही चाहिये।

यही बात थी। अंधेरा बड़ा चला आरहा था। बाहिर दूर में चहल-पहल जान पहती थी। 'लस्मी का पूजन तो होना चाहिये।'—ऐसा सोबकर दुतई में लिपटा-लिपटा जदु बाहिर निकल आया।

जहां जदु रहता था वहाँ बढ़ा ऋषेरा था। दिवाली की रात में तो लगता था मानों शहर का सारा अँधेरा इर कर वहाँ आ छिपा हो। कहीं-कहीं किरोसिन तेल की डिविया धुँचा उगल रही थी जैसे अपनी रोशनी को आपही निगल जाने की चेष्टा में हो। बरुने बढ़ों की चिक्क्यों ऋलग कान फोड़े डालती थी। अँधेरे में सुना है, भूत रहते हैं, इसी से वह आवाज और भी भयानक जान पड़ी और फिर उसका ध्यान रोशनी पर लगा हुआ था। बार-बार ठोकर खाता था। सडक पर आया तो रोशनी का कोहर वरस रहा था। दिन-सा निकला जान पड़ता था । वैसे ही रात की रोशनी में कालापन बहुत कुछ छिप जाता है फिर आज तो दिवाली थी। अमावस्या को भी ढंढे पनाह नहीं मिलती थी। कितने ही लोग सङ्क पर घम रहे थे। वे रोशनी की आलोचना भी करते जाते थे। बच्चे-- त्राहा जी ! चाहा जी !--करते हुए खुशी से चिहा रहे थे। कुछ उसके समवयस्क भी थे जो द्कानों की सजाबट में व्यस्त थे। कुछ व्यवसाय में ऋपने बड़ों का हाथ बटा रहे थे।

वह धीरे-धीरे बढ़ा चला जारहा था। "इस दुकान की रोशनी कैसी सुन्दर हैं।" उसने सोचा ऋरे! यह प्यालों में लाल-लाल शराव सी क्या जल रही है ? श्रीर ये मोमबत्तियां! काड़-कन्न्स लाल-नीली बिजली की बत्तियां !....

"उधर वे बड़े-बड़े शमादान!"

कुछ श्रोर श्रागे बढ़ा। बड़ी-बड़ी तसवीरें सजी हुई थीं। सुन्दर-सुन्दर खिलौने भी बिखरे पड़े थे। बाजार दिन से भी श्रिधिक व्यस्त था।

एक बालक मचल रहा था—पिता जी ! हम महात्मा जी की तस्वीर लेंगे।

'श्रौर वह फूलदान भी।' 'श्रौर वह खिलीना।'

फिर मिठाइयों की दुकानें थीं। मिठाई के छोटे-छोटे दुकड़ों के बड़े-बड़े मिन्दर-से बनाए हुए थे और उन्हीं को तोड़-तोड़कर वे तोल रहे थे। लोग यहाँ भी स्तूब व्यस्त थे। थाल पर थाल चले जा रहे थे......। लगा उसे भी — मैं भी इन्ह लेता। और उसे याद आया — लदमी का पूजन तो होना ही चाहिये।.....

उधर बाजार की समाप्ति थीं, इसी से आगे रोनक जरा भी नहीं थीं, सब और सकाटा था। फूछ थोड़े से लोग आ जा रहे थे। शायद वे लक्षी के प्रिय पात्र थे, जुआरी थे। बस मन को मन हीं में समेटे-समेटे लौट पड़ा। सरदी भी पल-पल बढ़ती ही जारही थीं।

#### (२)

इला ने श्राज श्रपनी सबसे सुन्दर पोशाक पहनी थी। खुशी से बह भरी-भरी फिरती थी। चेहरे पर थी दिल में समा न सकने वाली मधुरिमा श्रीर वह बार-बार खिड़की के पास श्राकर भाँक जाती थी।

त्राखिर उसने यशपाल को बुला ही भेजा। वह उसका पति था।

और वह आ भी गया।

इला बोली — बहु पारमाल वाली बात तो श्राप भूल न जात्रागे ना। —क्या भला ?

कॅ—हूँ—कॅं, करिये याद। मैं ही क्यों बताकं । यशपाल कुछ सोचने की चेष्टा-सी करने लगा, पर कुछ पा न सका तो हँसकर बोला — श्राप ही कुपा कर दीजिए।

इला भी हँस पड़ी। उस हँसी में गर्व था। बोली — उस साल जब माँ थीं तो उन्होंने कहा था — लहमी पूजन के श्रवसर पर उन शमादानों को मत भूलना। ये..... श्रीर श्रागे वह कह न सकी।

यशपाल का भी गला रुंधने-सा लगा। बोला — वह भी क्या भूलने वाली बात है, इला। श्रीर सुनो इला, श्राज उस पाषाण प्रतिमा के स्थान पर मैं अपनी जीवित लक्ष्मी की पूजा करना वाहता हूँ.....।

श्रीर तभी उसे सुन पड़ा — सरकार..... मुड़कर देखा — बिहारी था। बोला — क्या हन्ना ? हाँक क्यों रहे हो, रे।

सरकार, एक बदमाश वह शमादान लेकर 🦽

यशपाल चिह्ना उठा — क्या कहा? वह भाग गया और तुम देखते रहे .....!

नहीं सरकार, बिहारी बोला — देवत और भन्दु उसे दूंदने गये हैं।

यशपाल कका नहीं। विहारी को लेकर उनके पीछे ही गया। इला भींचकी-सी होकर यह सब देखती रही। वह कुछ कह न सकी, केवल खिड़की से उस जगमगाते हुए विशाल मार्ग की श्रार देखने लगी। उसका दिल जोर-जोर से धड़क रहा था। बड़े परिश्रम से वह केवल इतनी ही प्रार्थना कर सकी — उस शमादान को हमसे मत छीनना, प्रभु। वह हमारी जीवन की चिर-समरगीय घटना का स्मारक है, देव।

श्रौर वह घटना!

माँ कहता थीं -- हमारे जीवन में एक दिन

# जीवन-सुघा⊷⊶



श्री रूपिंस्शोर जैन



FOPULAR PRESS, DELHI.



स्माया जब हम सब कुछ खोकर रारीब हुये। तब मुम्हारे पिता के पास यह शमादान एक मात्र सम्पति के रूप में बचा था। वे इसे बेच ही न सके। श्रजीब-सी ममता थी इस जड़ बस्तु से उन्हें। भगवान की कृपा, बेटी, यह ममता फला फूली। वह दिवाली! इला बेटी! केवल इसी शमादान को लेकर उन्होंने लद्मी का पूजन किया। रूपया भी एक में उधार माँग लाई थी। ..... श्रोर माँ कहती-कहती रो पड़ी थी। इला भी कुछ-कुछ प्रयल चली.....।

'बस बही दिवाली थी। वहीं से भाग्य चमका सो चमका। अगली ही दीवाली को पूरे १०० ६० का पूजन हमने किया। भगवती की यह ऋपा क्या भूलेगी, इला। इसीसे कहती हूँ—'लदमी पूजन के अवसर पर उस शमादान को न भूलना। 'सोचती-सोचती इला आनन्द विभोर हो उठी।

उधर देवत, तन्दृ और बिहारी को लेकर यशपाल जहाँ पहुँचा बह जदु की भोंपड़ी थी। उस समय लद्मी की फटी-सी तसवीर के आगे रह घुटने टेके बैठा था। हाथ जुड़े हुए थे ऋाँस्वें मिची हुई। पास ही शमादान जल रहा था। भोंपड़ी के भरे खों (?) से होकर उसकी रोशनी द्रतक ऋषें घेरेकी छाती परफैल श्रनन्त चाँधकार में मानों प्रकाश के कुछ छींटे बिखर पड़े थे। लेकिन भौपड़ी जगमगा रही थी। जदु अनन्त अद्धासे लच्मी को गुहार रहा था। मुरमाया हुआ चेहरा चमक आया था। शित मे ठिठरती दुई देह में भक्ति की गरमी भर चली थी। पर देवत ने देखातो पकड़ कर फँफोड़ हाला। ऐसा घूँ सा मारा कि ऋाँखों की सारी रोशनी बाहिर श्रागई। नन्द्र ने ठोकर मारकर फोंपड़ी से बाहर ढकेल दिया।

शमादान उसी तरह जल गहा था।

जदु इतनी मार खाकर भी उठ बैठा। उसके चेहरे पर भय का कोई चिन्ह नहीं था! यशपाल ने कड़क कर कहा हरामजादे, बदमाश ! तुने चोरी की है।

जदु इतना ही कह सका—माँ ने कहा था हिन्दू के घर दिवाली के दिन लक्ष्मी का पूजन होना ही खाहिये।

'रर तूने चोरी क्यों की, सुझर ?'

'और क्या करता, सरकार ! रोशनी को पैसे कहाँ पाता श्रीर रोशनी के बिना पूजन कैसे होता।"

बिहारी ने जोर से लात जमा कर कहा—ऐसे ! मेहनत नहीं होती तुम से, पाजी।

बह अब भी नहीं रोया । पड़ोस के कुछ श्रीर लोग भी आगये। वह फिर भी बोला—आपकी रोशनी इसके कारण कम नहीं हुई लेकिन मेरी भोंपड़ी जगमगा उठी हैं। मैंने सोचा था.... वह आगे कह भी न सका था कि उस पर लातों और घूँसों का तूकान टूट पड़ा। फिर उसे पता नहीं रहा कि क्या हुआ, किसने क्या कहा, उसकी लदमी पूजा की पूर्णाहुति किसने डाली आग किसने शान्ति पाठ किया।

उन लोगों ने देखा- वह बेहोश हो चला है तो खींच कर पुत्राल पर डाल दिया। दुतई उदाई और शमादान लंकर चल गये।

(३)

यशपाल शमादान लेकर लीट आया। इला बड़ी व्यमता से उसकी बाट जोह रही थी। बोजी—कान था वह ?

'एक भिम्बमंगा।'

'उसका इतना साहस।'

श्रीर तिसं पर कहता भी था — माँ ने कहा था, हिन्दू के घर पर लक्ष्मी का पूजन होना ही चाहिये। हाँ-श्राँ-श्राँ। – इला अचरज से केवल इतना ही कह सकी। शमादान मिल जाने की ख़ुशी से वह कुछ भर-सी उठी थी।

फिर पूजा का आयोजन हुआ। लद्मी की विशाल प्रतिमा के सामने घुटने टेक कर इलाने प्रार्थना का-माँ तुम्हार अनुल प्रताप से हमने जीवन की कीमत आँकी हैं। तुम रुष्ट न हो जाना, देवि। श्रीर कितना भव्य था वह हरय — प्रकाश से जगमग करते हुए उस पूजा-मन्दिर में धूप की सुगन्ध उद रही थी। लच्मी की सुन्दर प्रतिमा तो मानों फूलों की प्रतिमा थी श्रीर उसके दोनों श्रोर जलते हुए वे बहुमूल्य शमादान श्रपनी रोशनी चारों श्रोर फेंक रहे थे। उनके ठीक सामने थे, इला श्रीर यश। दोनो पास-पास थे दोनों एक दूसरे को देखते रहे थे.....।

यरापाल ने कहां — माँ ने कहा था, लस्मी युजन के अवसर पर लस्मी को न भूल जाना।

श्रीर इला बोली—देवि! माँ ने कहा था लच्मी पूजन के श्रवसर पर लच्मी पति को न भूल जाना। यशपाल हँस पड़ा। इला भी हंसते-हंसते रुक-सी गई. न जाने क्यों।

इंसते-इंसते वह बोला-हम दोनों ने माँ की आज्ञा का पालन किया, इला !

पर इला नहीं बोली।

इला ! यशपाल ने कहा—नुम क्या सोचने लगी ?

कुछ नहीं — यही कि उस भिस्तारी ने भी कहा था— माँ ने कहा था, हिन्दू के घर लब्मी का पूजन होना ही चाहिये।

उँहूं... क्या सोचने लगीं तुम ! उसने तो यह भी कहा था—श्रापकी राशनी इसके कारण कम नहीं हुई; लेकिन मेरी फॉपड़ी जगमगा उठी।

हाँ-आँ।-श्रीर वह भी हंस पड़ी।

पर यशपाल जब चला गया तो उसे फिर ध्यान त्राया—माँ ने कहा था.....इत्यादि-इत्यादि।

, उसने रोशनी में हँसते हुए कमरे की देखा और चुपके से एक मोमक्ती बुक्त दी।

देखती रही ।..... फिर दूसरी बुभा दी । देखती रही । ...... श्रीर नीमरी श्रीर चौथी । श्रीर देखती रही । ...... सच तो कहता है— उसने देखा—कुछ भी अन्तर नहीं पड़ता। सागर में से एक खुल्लू जल ले लेने से क्या उसमें कमी पड़ जाती है ? और बह उद्विग्न हो उठी। यह कैसी बात है। उसकें अन्दर कुछ उठने-सा लगा, और लगा वह सीधे-साबे रास्ते पर चलती-चलती कुछ साधारण से बदकर असाधारण वस्तु पागई। उसी असाधारणता के भेद को वह भेदना चाहती है, पर है वह अनुभवहीन, इसी से तड़फड़ा उठी है। गाँठ खुले तो शान्ति मिले।

बिहारी ! क्यो बिहारी !—उसने पुकारा ।
बिहारी दौड़ा-दौड़ा क्याया—क्याक्सा, रानीजी ?
इलाने कहा—जब तुम भिखारी के पास
पहुँ वे तो वह क्या कर रहा था, बिहारी ?

बिहारी बोला—कर क्या रहा था. रानो जी ! चोर तो ढोंगी होते ही हैं। वह भी ऋाँख मींचे लक्षमी की एक फटी-सी तसवीर के आगे बैठा था।

और ?

श्रीर तो कुछ, नहीं था, रानी जी, श्रीमादान जल रहा था।

इला फिर सोच में पड़ गई। इस बार गाँठ खुलती जा रही थी। माँ ने कहा था—िहन्दू के घर में लक्ष्मी का पूजन होना ही चाहिये। श्रीर वह पूजन ही कर रहा था। ......पर चोरी ? हाँ, श्रीर वह करता भी क्या ? कीन उसे हंसते-हंसते सौंप देता। ...... विषमता क्यों! छी:, छी: उन्हें भी तो जीने का श्रीधकार है, काँटे तो हमने ही बोये हैं। माँ..... की श्राज्ञा। श्ररे, यह तो होनी ही थी श्रीर यही वह कर रहा था। ..... श्रीर हमने ..... ऊँ हँ—यह भी चोरी है .....

श्रीर उसी बीच में ऐसे एक के बाद एक— बहुत से भाव उनके भीतर श्रा-श्राकर चले जाने लगे। माँ की श्राका वाली बात ने तो उसे मथ ही हाला। बस सोचकर बोली—नुम मुझ वहाँ ले चलोगे, बिहारी? रानी जी ....!

कुछ नहीं, बिहारी। लो, यह शमादान लो। कुछ मिठाई भी लो और चलो। वे १२ बजे से पहिले नहीं लौटेंगे।

श्रीर जा रही थी इला उसी श्रंधेर में टटोल-टटोल कर। बिहारी श्रागे-श्रागे था। एक श्रजीव तरह का सम्राटा ल्लाया हुश्रा था। शमादान की रोशनी के पीछे चलती हुई इला ऐसे जान पड़ती थी, मानों स्वयं लदमी भक्तों की गुहार सुनकर घराधाम पर शागई हो। रोशनी से वींध्या कर कहीं-कहीं कुले भूक पड़ते थे। मोंपड़ी का दरवाजा वैसे ही खुला हुश्रा था श्रीर जदु भी शायद वैसे ही लेटा हुश्रा था। शायद गहरी नींद में सो रहा था। इलाने उस नज़ारे को देखा श्रीर देखकर काँप उठी —क्या यहीं नग्क नहीं है!

उसने साथ का बोम एक तरफ रक्सा और लौट चली। वहाँ का सारा वातावरण उसे खाये जा रहा था और वह जल्दी से जल्दी निकल भागा चाहती थी। चलते-चलते उसने अपनाशाल भी उसे उदा दिया। बिहारी ने चाहा भी उसे जगा दे, पर इला बोली—उसे सोने ही दो। सबेरे इसे देखकर वह रात वाली बात भूल जावेगा। लह्मी के भक्त को यह तो माळूम होना ही चाहिये कि रात उसके घर सचमुच ही लह्मी आई थी।

(8)

सवेरा हुआ और सूरजकी किरणें चारों ओर बिखर पड़ी मानों रातभर के समुद्र मन्थन के बाद यह अमृत का घट दुनिया ने पाया। जदु की भोंपड़ी के पास भी चहल-पहल बदी। चिड़ियों ने चर-पर आरम्भ की। कुत्ते कान फटफटा कर "युद्धं देहि " की सर्वप्रिय चुनौती के लिये तैयार हुए। किसी के आगमन का चिर-सन्देश लेकर कौन्ना भी काँ-काँ करता हुन्ना द्वार पर न्ना डटा। पर जदु उसी तरह पड़ा रहा। शायद बेचारे की हिल्ह्याँ दरद कर रही थीं। शायद जीवन की दौड़ में थककर वह जी भरकर सोने के लिये लेटा था। उसे जगाता भी कौन? तो भी रातवाली घटना के कारण जास-पास के लोग कौत्हल से भरे-भरे वहाँ न्ना ही गये। वहाँ का हरय देखा तो चौंक पड़े। चाँखें काड़-काड़कर मानों जानना चाहने लगे—चरे, यह क्या सब सत्य है।

'चारे कितना क्रीमती रामादान है' — एक ने कहा।

'होगा तीस चालीस का।' 'सबा माल है।'

फिर क्या था पंचों की सलाह हुई। हामादान बंट गया। फिर दुशाले की बारी आई, और-और चीजें भी वे लोग उठाकर ले गये।

'रात सचमुच इस पर भगवती की दया हुई-उन्होंने कहा।

एक बोला—लड़का है भी भगत। श्राठी पहर धरम में नीयत रखता है।

दूसरे ने कहा—पर जब वह उठेगा तव '''? ऊँह ।—तीसरा बीच ही में बोल उठा, रहे तुम भी निरं बौड़म ही। धरं जिस पर भगवती मेहरवान है उसे अब इन चीजों की चिन्ता क्या। अब तो सब यही प्रार्थना करो—भगवती उससे कभी न रूठे।

श्रीर तब सबने मन ही मन बड़ी श्रद्धा से कहा — भगवती जदु से कभी न रूठे। पर उसी दोपहर को चौकीदार ने श्राकर देखा—जदु की भोंपड़ी में एक लाश पड़ी थी जिस की नाक से खन बह कर गल तक जम गया था।

Ž.

## ''जवाहरलालजी व महात्मा गाँधी का धर्म''

[ श्री विचित्र नारायण शर्मा ]

जवाहरलालजी के प्रतिसदा मेरे हृद्य में स्नेहश्रद्धा मिश्रित एक विचित्र-सा भाव रहा है। एक
श्रजीब-से श्राकर्षण का श्रनुभव में उनके प्रति
करता हूँ। मैं क्या, प्रायः सभी नौजवान ऐसा ही
एक भाव उनके प्रति रखने हैं। उन्हें इसीसे तो
"नव युवक हृद्य सम्राट" की पदवी से विभूषित
किया गया है।

जवाहरलालजी वास्तव में बहुत महान बहुत उदार हैं। फिर भी कभी कभी उनके विचार मुझे कुछ अधूरे से, कुछ धुँधले से कुछ, भिभके हुए में और कछ संकुचाय हुए से माल्म होते हैं, लामकुर जब मैं उन्हें महात्माजीके मिछांनां विचारों या कार्यक्रम को समभने में अममर्थ पाता हूँ। महात्माजी की अहिंमा, उनकी खादी, उनकी अखुश्यता, उनके धर्म को जवाहरलालजी बहुधा पूर्णतः नहीं समभ पाते।

'मेरी कहानी।" में उन्होंने इस पर कई स्थानों में सन्देह प्रकट किये हैं। कई बार उन्होंने महात्माजी के कार्यों को ठीक नहीं समसा! "मेरी कहानी" में तो फिर भी परिमार्जित भाषा का प्रयोग किया है, किन्तु साधारण बोल-चाल में वे इतने मंकोच से काम नहीं लेते। धर्म कर्म के पुजारियों की वे कभी-कभी अच्छी खबर ले लेते हैं।

इस वजह से मेरी श्रद्धा उनके प्रति कुछ कम नहीं होजाते हैं। सच तो यह **है**, वह और भी बढ़ जाती है। मैं स्वयं एक दार्शनिक-सी, सिड़ान्तिक-सी प्रकृति का हूँ। बहुस श्रीर तर्क करने में मुझे एक विशेष मजा श्राता है। बड़ी-बड़ी बात बनाने, ऊंचे-ऊंचे श्रादर्श ब्राँटने में ही मैं श्रिषक संतोष पा लेता हूँ। श्रीर कार्य न करने से जो श्राभाव रह जाता है, उसे ज्यादा महसूस नहीं कर पाता हूँ।

जवाहर लाल जी ठीक इसके विपरीत हैं। वे विचार से कर्म को कहीं अधिक महत्व देते हैं। वे उन थोड़े से आदिमियों में से हैं जो महात्माजी के बाद इस कर्म करने की भावना के जीवित उदाहरण हैं। 'धर्म' शब्द उनकी श्रद्धा भले ही प्राप्त न कर सके, पर धर्म-तत्व उनके जीवन का आधार है। इसी से महात्मा जी के वे इतने निकट पहुँच सके हैं। इसीम आज ही से महात्माजी ने अपना उत्तराधिकारी उन्हें ही बना दिया है, और अपने जीते जी देश की बागड़ोर उनके हाथ में मांप दी है।

महात्माजी का उत्तराधिकारी श्रीर देश का राष्ट्रपति धर्म का विरोधी-सा होने पर भी धर्म-भावना से हीन नहीं है। जवाहरलालजी को शायद स्वयं मालूम नहीं है कि वे वास्तव में इतने श्रीधक धार्मिक हैं। श्रीर उनका सारा जीवन वास्तविक, सच्ची धर्म-भावना से श्रोत-प्रोत है।

महात्माजी और जवाहरलालजी का पारस्प-रिक स्नह अद्भुत है, महज और स्वाभाविक है।

उसका सम्बन्ध मस्तिष्क से उतना नहीं है जितना दो ऋत्यन्त सरल और निर्मल हदयों से हैं।

हमारी धारणा है श्रगर जवाहरलाल जी महात्मा जी की विचारधारा के भी उतना ही निकट पहुँच जाते जितना निकट वे उनके हृद्य हैं, तो देश का निचश्य ही बहुत अधिक कल्याए होता। श्रीर श्रव जो कभी कभी महात्मा जी श्रीर जवाहरताल जी की हो प्रालग-प्रालग-सी ध्वनियाँ निकलती हुई दिखलाई देती हैं या देश में कभी-कभी कुछ भ्रम-सा, संदेह-सा, उत्पन्न हो जाता है, यह सब फिर नहीं रहता। निश्चित विचार श्रीर हद कदमों से हम रोज-बरोज नये नये सफर तय कर सकते ऋोर शीघ ही अपने लव पर पहुँच जाते।

गाँधी जी इतने सरल हैं कि वे रहस्यमय और टर्गम मालम होते हैं। वे इतने धार्मिक हैं कि राजनैतिक श्रीर श्रार्थिक लेत्रों में श्रयोग्य समझे जाते हैं। इतने आदर्श बादी हैं कि एक स्वम हुद्रा या कल्पनास्त्रों में विचरने वाले माछम है।ते हैं। श्रीर कभी-कभी रचनात्मक कार्य पर इतना जोर देते हुए माऌ्म होते हैं कि हमारे राज-नैतिक दावे से उनका कुछ भी सीधा सम्बन्ध प्रतीत नहीं होता।

श्रीर यह सब होते हुये भी उनके व्यापक प्रभाव से, उनकी ऋलौकिक शक्तियों से कोई इन्कार नहीं कर सकता है श्रीर इन सबसे महात्मा जी श्रोर भी दुईय, श्रीर भी दर्गम मालम होते हैं।

महात्मा जी मुनी इस पहेली को हर पहलू से सुलकाने का प्रयत्न इस समय नहीं किया जायगा। पर यदि हम महात्मा जी के धर्म को समभ लें तो उनके सभी कार्यी श्रीर वक्तव्यों को हम श्रासानी से समभ सकेंगे। फिर हमें एक इतनी जटिल पहेली न माळूम होंगे। वास्तव में महात्मा जी की श्राहिंसा उनका सत्य और उनकी सारी फिलोसकी तथा उनके सारे कार्य-राजनैतिक. सामाजिक और व्यक्तिगत-उनके अपने धर्म में से ही प्रस्कृटित श्रीर विभाजित होते हैं।

महात्माजी का यह धर्म क्या है ? धर्म महात्माजी का प्राण है, तथा है उनकी स्वांस स्त्रीर प्रतिस्वांस; दूसरे शब्दों में उनके जीवन की एक मात्र कंजी।

महात्माजी की हिन्द में धर्म जीवन का पर्यायवाची है। धर्म को वे जीवन का विज्ञान-जीवन की कला मानते हैं। अग्नि का धर्म जिस तरह जलाना है और आग से पृथक जिस तरह वह नहीं हो सकता है, ठीक उसी तरह जीना हमारा धर्म है और जीवन से भिन्न वह ( हमारा धर्म ) नहीं रह सकता है। जिस वस्त्र का जितना घना सम्बन्ध जीवन से है उतना ही घना सम्बन्ध उसका धर्म से भी है।

जीने में है ज्ञानन्द ! इससे धर्म का ध्येय है ऋानन्द प्राप्त करना। हमारी सारी चेष्टाझों की गति-भुकान सुख, श्रानन्द की स्रोर है। चाहे हमारी ये चेष्टायें हमारी जाप्रत श्रवस्था का परिणाम हो या सुप्रावस्था का ! जिन चेब्टाऋों पर हम समभते हैं हमारा कुछ भी ऋधिकार नहीं है, उन सबका उद्देश्य भी हमारे जीवन को हमारे अनुकृत बनाना ही है, श्रीर जीवस्तु हमारे जीवन में बाधक हो, ऋप्रिय हो उसे दूर करना, है। धर्म-विज्ञान का एक मात्र कार्य है उन सिद्वान्तों को जानना या खोजना श्रीर स्थिर करना जिनके ऋनुसार जीवन निर्वाह करने से हमारा जीवन सुखमय हो सके, श्रीर जीवन की जो आकांनायें, अभिलापायें और अपूर्णताएं हैं वह पूरी तरह पूरी हो सकें। जीवन की जितनी व्यापकता है, जितना विस्तार है उतना ही व्यापक श्रोर विस्तृत होना धर्म है। जीवन मं जो समानता है वही समानता होनी में जो भिज्ञतायें हैं, धर्म में, ऋोर जीवन भिन्नतार्ये होंगी धम

मृत्त से मानव जीवन, उसकी आवश्यकतायें जैसे एक हैं उसी तरह धर्म भी मृत में एक ही है, आर उसका नाम है मानव धर्म । प्रवृति, प्रकृति, श्रवस्था, स्थान भेद से जीवन में जो थोड़े-थोड़े श्रवस्था, इंडाने श्रिन्वार्य हैं।

भावुक श्रीर मननशील या कियाशील व्यक्तियों के जीवन में जैसे अन्तर होगा, वैसे ही उनके व्यक्तिगत धर्म में भी अन्तर होना ही चाहिये। छोटे श्रीर बड़े में, स्त्री श्रीर पुज्य में, स्वस्थ श्रीर बीमार में, गृहस्थ श्रीर विद्यार्थी में, जिस तरह अन्तर है ठीक उसी तरह उनके धर्म में भी उतना ही अन्तर होना आवश्यक है।

यह बात हमें ठीक से समक लेनी चाहिये। धर्म जीवन से सम्बन्ध रखता है। श्रीर जीवन की श्रावश्यकताश्रों श्रीर संभावनाश्रों को श्रातिविम्य करता है। श्रार जीवन के छोटे श्रन्तरों की हम थोड़ी देर की भूल सकें श्रीर उसे समूहों श्रीर वर्गी में विभक्त कर दें, तो जीवन के विज्ञान श्रशीत धर्म-विज्ञान की सृष्टि की जा सकती है। संसार के सार धर्म वास्तव में श्रपने-श्रपने काल में, श्रपने-श्रपने स्थान में जीवन की समस्याश्रों के हल ही थे। वे पूर्ण न भी हों; पर उनके श्राधार पर हम श्रागे वढ़ सकते हैं। धर्म का ठीक एक विज्ञान की तरह श्रध्ययन कर सकते हें श्रीर उसकी स्रष्टि वेज्ञानिक हिंद से कर सकते हें।

इसी से महातमा जी किमी भी धर्म की उपेता नहीं करते। मबको श्रद्धा और भक्ति से देखते हैं आर चाहते हैं, दूसरे भी ऐसा ही करें। अपने धर्म को वे विशेष श्रद्धा, भक्ति अथवा प्रेम से देखते हैं। पर वह इपिलये कि उनके जीवन की आवश्यकताओं को उनका अपना धर्म ही सबसे अधिक पूरा करता है।

इस ऋर्थ में धर्म को ग्रह्म किया जाय, यह

महात्मा जी की श्राभिलापा है। जिस तरह गिएत शास्त्र, भूगोल या खगोल-शास्त्र श्रथवा फिजिक्स वा केमिस्ट्री किसी खास देश या जाति या युग की सम्पत्ति नहीं है, उसी तरह धर्म भी किसी एक जाति या देश या सदी की सम्पति नहीं है। विज्ञानों में जिस प्रकार सत्य सिद्धान्तों का श्रन्वेपए किया जाता है, ठीक उसी प्रकार धर्म-विज्ञान में भी सत्य सिद्धान्तों का श्रन्वेपए होना चाहिये। वेज्ञानिक सिद्धान्तों की रचना नहीं करता है, वह सिर्फ उनकी खोज करता है। इसी तरह श्रवतार, पेगम्बर, रसूल, श्रपि-महर्षि भी धर्म-विज्ञान में खोज करते थे श्रीर श्रपने श्रनुभूतों को जनता के सामने रखते थे।

विज्ञान में जैसे अनुभवों और प्रयोगों में भूल हो जाती है या भिन्न-भिन्न परिमाण आ जाते है उसी प्रकार धर्म भी भूलों या भिन्न परिगणमें से मुक नहीं हैं। पर इससे धर्म की एकता मीलिक समानता नष्ट नहीं होती है। सिके यह साबित होता है कि और भी अनुभवों या प्रयोगों की आवश्यकता है, और भी गहन खोज की जम्मत है।

महात्मा जी की यह विचार-रौली एकदम नई है, ऐसा नहीं है। मनु महाराज ने हिन्दू धर्म को ऐसे ही सत्य सिद्धान्तों में प्रगट करने का प्रयास किया था, इसीसे उन्होंने धर्म को आर्य या हिन्दू धर्म नहीं कहा था। उन्होंने उसका नाम रक्खा था मानव धर्म। उपनिपदों और गीता तो एक वड़ा ही प्रयत्न प्रत्यत्त है। वास्तव में गीता तो एक वड़ा ही प्रयत्न प्रत्यत्त है। वास्तव में गीता तो एक वड़ा ही मिन्दर समन्वय है। गीता ने सबध्ममी और धर्मान्तरों को एक ही हढ़ सूत्र में बांधने की चेप्टा की है। गीता ने तो यहां तक कहा है कि हरएक की अपनी प्रकृति और अवस्था के अनुसार अपना धर्म मानना चाहिए। अपना धर्म अगर कुझ अपूर्ण है तो वह अधिक अर्ड है, बनिस्वत दूसरे के श्रेष्ठ धर्म के, क्योंकि, वह उसके लिये नहीं है।

पौराणिक काल में भी यह समन्वय की प्रवृत्ति कार्य करती थी। इसीसे आज हिन्दू-धर्म में नाना मतमतान्तर पाये जाते हैं। हिन्दू, जैन, बौद्द, सिक्ख, ईश्वरवादी,— अनीश्वरवादी सब इसके अन्तरगत हैं। सांख्य न्यायकर्म-मीमांसा और चारवाक आदि अनेक मत इस एक ही धर्म के भिन्न-भिन्न अंग प्रत्यंग समझे जाते हैं।

श्रकबर के काल में 'दीन इलाही' व उसके बाद ही भक्त किवयों की किवतायें इसी एक भावना से प्रभावित हैं। हाल में ब्रह्मसमाज, थियोसकी इसके उदाहरण हैं। स्वामी रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द और रामतीर्थ श्रादि उसी एक भावना के देवदृत हैं।

ईसामसीह ने स्वयं कहा था, 'मैं पिछले धर्मी को नष्ट करने नहीं आया हूँ, उन्हें पूर्ण करने आया हूँ।' मुहम्मद साहित्र ने पिछले रस्तूलों और पैगम्बरों के कार्य को झुठा या छोटा नहीं कहा है, बल्कि उन्हें इज्जत और ताजीम की नजर से देखना सिखाया है।

तात्विक या बैज्ञानिक दृष्टि से देखने का पहला परिणाम तो हुआ यह कि सब धर्मों में हमें समानता या एकता देखने और खोजने की कोशिश करनी चाहिये। और उन्हें एक ही विज्ञान के बहुत से अंग मानना चाहिये और इसी दृष्टि से भविष्य में खोज और अनुभव, प्रयोग और रचना करनी चाहिये। दृसरा परिणाम होगा धर्म की व्यापकता को सममने का प्रयत्न। धर्म फिर पातवें दिन की एक रम्म या सुबह शाम की एक ह्यूटी या पाँच बार की निमाज भर नहीं रह जायगा। धर्म तब फिर चौबीस घन्टे का साथी सहायक मित्र, सलाहकार या गुक हो जायगा। हमें अपना सारा जीवन किस तरह व्यतीत करना चाहिये यह बतलाना ही धर्म का मुख्य काम होगा।

हम किस लिये जीयें, जीवन का क्या उद्देश्य हैं, उसका क्या श्रमिश्राय हैं, यह सब बतलाने का प्रयत्न धर्म का होगा। साफ हैं—इतने बड़े विज्ञान में किर बहुत से अंग होंगे। इतिहास, राजनीति, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, सम्पतिशास्त्र, वैद्यक श्रादि-श्रादि, सब इस एक व्यापक महान शास्त्र के अंग प्रत्यंग होंगे। वे सब मनुष्य की जरूरतों, सम्भावनाओं, श्राकांचाओं और श्राशाओं को पूरी करने के प्रयत्नमात्र होंगे। पर श्रपनी श्रपनी मिन्नताओं और दिशाओं में वे मनुष्य की व्यापक एकता और जीवन की शाश्वत प्रवृत्तियों की उपेचा न कर सकेंगे। तब धर्म विज्ञान को भी श्रपने को श्रर्थशास्त्र के मुनाबिक न बनाना होगा; बल्कि श्रर्थशास्त्र को स्वयं श्रपने को धर्म विज्ञान के नियमों के श्रनुकूल बनाना होगा।

इसी दृष्टि से विचार करने से हमारा श्राज का मारा मुख और हमारे सारे तरीके बदल जावेंगे। श्रीर तब महात्माजी की राजनीति, उनका श्र्यशास्त्र, उनकी खादी, उनके प्राम उद्योगधंधे, उनकी अस्पृश्यता, मद्यपान निषेध सब सहज ही में समभ में श्राजायेंगे। तब हम यह भी समभ सकेंगे कि राजनीति का नेता वास्तव में एक महात्मा भी कैसे हो सकता है।

एक समय था राजनीति हमारे जीवन में ज्यादा असर नहीं डालती थी। प्राम पंचायतों हारा शासित हमारे प्राम अपना जीवन यापन बहुधा निर्विकार रूप या निर्विचत रूप से करते रहते थे। चाहे दिल्ली या बड़े बड़े शहरों में कैसे ही भारी से भारी उलट-फेर क्यों न होजाँय।पर आज समय बदल गया है। हवाई जहाज, मोटर, रेल, तार, रक्तल, कालेज, विद्यालय, अखबार, प्रस आदि-अनेक आधुनिक प्रयोगों ने गावों को नगरों में आ पटका है, और नगरों को गांवों के कोने कोने में ले जाकर फैंक दिया है। सच तो यह है कि इनकी वजह से सारा संसार एक होटे से आँगन में

जीवन सुधा

जाकर समेट कर बैठा दियागया है। राष्ट्र इतने व्यापक हो गये हैं कि जीवन के हर एक श्रंग-प्रत्यंग को प्रभावित करते हैं। ऋौर इसी से राजनीति श्राज धर्म का सब से प्रथम श्रंग बन गई है। यही अर्थशास्त्र के सम्बन्ध में भी कहा जा सकता है। श्रीर इसी से हमारा राजनैतिक नेता एक महात्मा है। महात्मा का चेत्र है, राजनीति, श्चर्थशास्त्र, समाजशास्त्र श्चादि-स्रादि, श्चौर इसीसे धर्म शब्द से कुत्र विरोध रखते हुए भी जवाहर-लाल स्त्राज वास्तव में एक महान धार्मिक कार्य में प्रवृत्त हैं। यह प्रश्न हमें धर्म के दूसरे पहलु पर विवार करने को विवश करता है। धर्म जिस हद तक एक विज्ञान है उसी हद तक यह एक कला भी है। विज्ञान हमें ज्ञान देता है। पर यदि इस विज्ञान को हम कार्य में परिएात नहीं करते हैं--अपने जीवन में सीन्दर्यश्रीर चातुर्यको प्रयोग में नहीं लाते हैं तो उस विज्ञान से हमारा कोई

लाभ न होगा। धर्म की सब से अधिक उपयोगित।
है इसी में कि वह हमारे जीवन को उज्ज्वल
करे, सुद्र करे, संपूर्ण करे। अगर धर्म
विज्ञान ने जवाहरलाल को कुछ दिया है तो धर्म
की कला उन के जीवन में जगमगा रही है, इसे
कीन इन्कार करेगा।

धर्म पर श्रीर भी गम्भीर विचार हो सकता है श्रीर बहुत से दूसरे पहलुश्रों से हम देख सकते हैं। पर हमारा वर्तमान उदेश्य तो यही था कि टिप्ट विरोध होने पर भी हम महात्माजी श्रीर जवाहर-लाल जी में एक ही भावना का प्रभाव देख सकें।

क्या हम आशा करें यह विचारशैली महासाजी और जवाहरलालजी को आर भी निकट लायेगी। इसकी इसमें और भी ज्यादा जरूरत है कि आज ऐसी शक्तियाँ हिन्द-गोचर हो रही हैं जो उन्हें एक दूसरे से दूर लेजाने की कोशिश में हैं।

## तुम दीपक —

[ श्री तारा पांडे ]

तुम दीपक हो मैं लघु पतंग! हे देव! तुम्हारे जलने में है— कर्म योग की मृदु-उमंग!

तुम जलते भिलती उजियाली १९८१ में जलता होती अवियाली १९८१ पागल प्राणी में कहलाया— प्रभु ! जला तुम्हारे संग-संग !

तुम को जीवन में शान्ति मिली परसुम को वेवल आन्ति मिली तुम ने यञ्ज पाया इस जग में — मेंने खोया सब राग-रंग !

इस लाली से मैं मुख्य हुआ जल गया भीर श्रतिक्षुब्ध हुआ तुमने खींचा चुम्बक बन कर— हो गए शिथिल सब श्रंग-भंग !

मेरा भी सुन्दर था शैशव नत था इस वसुधा का वैभव तुमने ही सिखलाई. इँसकर मरने की यह नारक उमंग!

#### प्रतिभा का विकास

#### [श्री निर्मला मित्रा]

गीली — श्रीर गन्दी गली दाहिने हाथ पर थोड़े सड़क से इटकर सुरंग, - सुरंग के अन्दर जहां तक चला। जाए — श्रंधेरा घुप,

किर, कुछ धीमा-सा प्रकाश,-

काँच के आधार में मामूली लैम्प म्लान ज्योति फैलाकर अपना अस्तित्व पथिकों के लिये काफी सोचकर जल रहा है।

बाजु में केफ े-

रोटी वाले की दुकान ही।

एक बड़ा-सा कमरा, फूटे काँच पर काग़ज़ 【लिए सहना ही पड़ता है।" विपका कर हैंगिंग लैम्प कमरे के बीचों-बीच लटक रहा है, श्रीर उस कमरे में यत्र-तत्र श्रण्डे के ख़िलके, सिगार के जल टुकड़े, दूटी माचिसें, श्रीर शराबों की टूटी बोतलों के ढेर !

उसी गन्दे कमरे के अन्दर बैठकर कतिपय मजदूर-क्लास भोजन के साथ हो-हल्ला उड़ाते जा रहे हैं!

लेकिन, परसने वाली एक ही लड़की,—श्रीर इन श्रशिव्तित-दुर्वृ तों की श्रसभ्यता का प्रतिरूप मानों मृतिं लेकर कमरे में उतर श्राया हो, उसी विचारी लड़की को घेर कर अश्लील और निषिद्ध सभ्यता के खिलाफ मर्मान्तिक आचरण, प्रति मुहूर्त बर्बता को जन्म दान करने को तैयार है।

उँचे क़द, भूरे बाल, गेंहुंप रंग का एक युवक आया, और गरदन भुकाए बाजू की कोठरी में प्रवेश कर गया।

ऋब, परसने वाली लड़की इधर मुड़ी, स्त्रीर परदा उठाकर युवक का खाना, एक टेबुल पर ला रक्खा-

यवक ने भरे कोध से ताका-तरुणी काँप गई,

युवक धिक्कार से बोला "तुम नारी हो !" तक्त्यी चुप।

"तुम इन धिकृतों की प्रणय-लीला बरदाश्त कर रही हो!"

तरुणी धीरे-धीरे बोली "क्या करूँ, पेट के

क्यों, दूसरा साधन नहीं है ?"

तक्सी कुछ देर चुप रही, फिर जब मुँह । उठाया तो श्राँखों में पानी भरा था बोली— नहीं, श्रन्य कोई उपाय नहीं है, चारों श्रोर दारिद्व श्रीर प्रवंचना का पारावार अविचार और अत्याचार का शासन दण्ड पीड़ित प्रजा को दम तक नहीं लेने देता है - फिर, दुर्वल नारी के लिए-असहाय परिचारिका के लिये, इस से भला कौन-सा साधन देश में श्रव शेष 章!"

युक्क के कण्ड से निकला "क्या, माँ, बाप, भाई, बहन, कहीं कोई नहीं है ?"

''कोई नहीं है, पिता सैनिक संस्था कर्मचारी थे, विद्रोह के झुंठे अपराध से साइबेरिया भेजे गये हैं, श्रीर इस मनमाने राज में - असहाय द्रिट्रों का, निपीड़ित श्रमिकों का,

श्रशिक्ति जनता का कोई श्रन्छा साधन नहीं रह सकता। पेसकफ, ख़ुद को सोच लो न, इस गन्दी कोठरी में रहते उम्र बीत रही है, जीविका के लिये दिन-रात प्राणान्तकर परिश्रम कर रहे हो, फिर भी श्रवस्था ज्यों की त्यों है, तनिक भी नहीं सुधरी, तब पेट के लिये, एक नारी को, श्रशिक्तित जनों से भला-बुरा सुनना क्या बड़े श्राश्चर्य की बात है!"

रोटी टेबुल पर पड़ी रही, पेसकफ उठ खड़ा हुआ। टोप हाथ मैं उठाया, और जीर्ण श्रोवर-कोट पहन लिया। तहणी सुरंग के द्वार तक ज्यथा में भरकर आई —"पेसकफ, पेसकफ!"

लेकिन, पेसकफ नहीं, एक बफीली ठएडी

बायु का मकोरा उसके उद्वेग को शान्त कर बह गया —हा, हा !

 $\times$   $\times$   $\times$ 

श्रीर, श्रपने निर्वासित जीवन में, उन्मुक्त 'भला' नदी के तीर पर मैक्सिम गोर्की की कलम से, जो दुसहा-श्रसहायों का, पीड़ित-प्रवंचितों का दर्दमय इतिहास निकला, वह आज श्रमर साहित्य है—लेकिन, युवक पेसकफ के प्रतिभा विकास के मूल में, जो ज्वालामय विद्य्यता रही, वह क्या केवल गोर्की की श्रमिश्चता ही रही ? प्रेरणा के मिस में — उस कहण श्राँखों वाली तहणी की हृदय-स्था क्या कुछ भी नहीं, कोई ऋषं नहीं रखती!

### इंकिलाब

#### [ श्री प्रभाकर माचवे ]

मिट चले दृष्टि में से कुहरा, भिट चले रूढ़ियों की कारा फोड़ दे मूर्ति प्रभु है बहरा,

खुट चले कान्य की मदिर इस, खुट चले कर्य से शून्य गिरा तोड़ दें बीन की शिरा-शिरा मिट चले शान का वृथा दम्म; भिटचले मिटाने का बिलम्ब। फोड़ो देवालय-हेम स्तम्भ॥

छुट चले रूप का वृथा मोह कर्म से शून्य शब्द में द्रोह। तोड़ दे लय, सकल स्वरारोह॥

## श्री जयशंकर 'प्रसाद' : महापथ के पार्थक

[ श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी ]

मेरी आहों में जागो सुस्मित में सोने वाले अपरों से हॅसते-हॅसते आंखों से रोने वाले!

**~"श्राँसू"** 

१६-११-३७। आज के प्रभात की बोती हुई रात में शुक्ल पत्त था, किन्तु हमारे जीवन में स्मशान का जो दुर्भेद्य नैश-श्रन्धकार एक पहेली चनकर हम हाड़-मांस के पुतलों को बड़ी निश्चिन्तता से समय की चिलाक भूलभूलेयों में खिलाता रहता है, उस निदारुए कीड़ा की पीड़ा में बदहोश रहने के कारण मेरे जैसे को यह क्या मालूम कि कब शुक्ल पत्त था, कब कुष्ण पत्त ! विधाता ने जिसे टेजिंडियों का उपहार दे दिया हो, उसके लिए जीवन में केवल दो ही प्राकृतिक सत्य रह जाते हैं-समशान और श्रम्धकार । श्रीर जब श्रपने ही-जैसे कुछ जीव समय की विशेष कृपा से कभी भूले-भटके विश्व सिन्धु के किमी तट पर मिल पड़ते हैं तब अपने उसी स्मशान और अंधकार-मय जीवन में भैरव के ताएडव नत्य की कला-वान्ह में,ऋपनी सस्मृतियों की ऋाहृति दे-देकर दो ज्ञाण हँस-बोल कर कल के लिए विदा लेते हैं, यदि वह कल हमारे भाग्य में हो तो ! आज की बीती हुई रात के अन्धकार में भी इसी प्रकार भेरव स्मरण-बन्दन कर् हम हो मित्र अपने-अपने घरौधों को लीटे थे। प्रतिदिन की भाँति स्मशान के सूनपन की बेहोशी में सोए-सोए जब सुबह उठे

तब हमारे सामने फिर प्रतिदिन का दैनिक संसार श्रश्रान्त खिलाड़ी की भाँति हमारे श्रिस्थि-शेष जीवन के साथ खिलवाड़ करने को खिलखिला रहा था। कल दिन-रात के चौबीस घन्टों विश्व-चक्र घूमते-घूमते कहाँ-से-कहाँ चला है, मनुष्य के इस श्रीपन्यासिक कौतहल मिटाने के लिए या श्राज के चौबीस घटों के लिए हमें प्रस्तुत करने के लिए, हमारे जागने के पहले ही विश्व-चक्र के चित्रकार के मानों निर्देश-पत्र के रूप में सामने पड़ा मिला एक दैनिक अखबीर। पन्ने पर पन्ने उलट कर एक जगह दृष्टि सकती है तो देखते हैं — "प्रसाद जी का देहान्त!" हाय, क्या कल रात का भैरव-कीर्त्त न<sup>े</sup> इसी निदारुणसम्बाद के कठोर स्वागत के लिए था! श्राज के प्रभात में जब हमारे लिए यह भीषण सम्बाद था, तब इसके एक-दिन पहिले ही १४ नवम्बर के प्रभात में, साढ़े चार बज प्रसाद जी इस दैनिक जगत के सम्बाद-विवाद हर्ष-विषाद से चिरविदा होचुके थे। आये संस्कृति का वह दार्शनिक पुजारी श्रवना में ही अबर्लान हागया ! हम दुनिया के आदमी जागते हैं साने के लिए. प्रसाद जी सोगए चिर जामत रहने के लिए -हमारी स्मृतियों में, हमारे साहित्य में, हमारी भावी पीढियों में !

प्रसाद जी चले गए ! दुनिया के ूलोग आते जाते रहने हैं, किन्तु प्रसाद जी उन आने-जाने जीवन सुधा-

बालों में नहीं थे। वे तो उन प्रिय आत्माओं में थे, जिनके लिए गोस्वामी जी ने कहा है—

"विछड़त एक प्राण ६र लेहां।"

जो उनको निकट से जानते हैं, जिन्होंने उनके साथ अपनी कुछ घड़ियाँ मनोहर बनाई हैं, उन्हीं का मसोसता हुआ हृदय जानता है कि उनके बीच से कंसी प्यारी बिभूति चली गई है! साहित्य के नाते हिन्दी-समाज, आत्मीय के नाते मित्र समाज प्रसाद जी के चिर-विछोह से कैसी दाकण मर्म बेदना से विद्यध है, यह अकथनीय है।

प्रसाद जी से मेरा परिचयसन् २४ या २४ में हुआ था। मुझे एक बीष्म के प्रारम्भिक दिवसों का वह तृतीय प्रहर बाद है, जब प्रसाद जी के दर्शनों के लिए उनके घर गया था। गोवर्धन सराय का वह पुराना मुहल्ला जहाँ प्रसाद जी का घर था, पुरान ढंग के हिन्दू गृहस्थों की, नगर के बीच एक पुराने ढांचे की बस्तो है। नवीन राजपथ पर आने के लिए वहाँ सड़ कें ऋौर गलियाँ हैं, किन्तु स्त्रयं वह नवीनता का दर्शक मात्र है। उस मुहल्ले में "सुंघनी साहु" का महाजनी मकान अतीत बैभव का एक वासन्ती इतिहास सुरचित रखते हुए पुरातत्वावशेष की भाँति एक ऋाकर्षण रखता है, क्योंकि यह हिन्दी साहित्य के प्रकारड कलाकार प्रसाद जी का आवास बन चुका है। पुराना मुहल्ला, पुराना मकान, श्रीर चारों श्रीर का प्राचीन वातावरण, सुर्ती श्रीर जुर्दे का कारखाना, यह सब कुछ देखकर विश्वास नहीं होता था कि हमारे साहित्य नवीनतम युग का एक श्रेष्ठ साष्टा इन्हीं के भीतर जन्म लेकर रहा है। किन्तु प्रसाद जी कोरे साहित्यक नहीं, एक किव होकर उत्पन्न हुए थे, श्रौर उनका वह कवि प्राचीनता की गोद एक नवीन शिशु के समान था। उस नवीन शिशु ने नए फूल की भाँति पुराने बग़ीचे में रहकर भी श्रपने नव सौरभ से चारों श्रोर के बाताबरण को नवीन श्रीर सजीव कर रक्खा था, मानों १८ वीं-१६ वीं शताब्दी के पुरातन कलेवर में २० वीं शताब्दी का हीरे-जैसा हृदय जगमग पड़ा हो। वह स्वयं अपने व्यक्तित्व में एक पूर्ण आलोकित संसार थे, उस संसार की देखकर उसके चारों श्रोर के लौकिक फ्रोमों की श्रोर ध्यान ही नहीं जाना था। सब कुद्ध गौएा से भी गौएा होगया था — श्राकेल प्रसाद जी धुव-केन्द्र होकर सब के श्राकर्षण बन गए थे!

नवीन युग के विसमय को ल कर जब मैं उस पुराने मुहह में पहुंचा तो यह जानते हुए भी कि प्रसाद जी वहाँ करते हैं, यह विश्वास ही नहीं होता था कि वह वहां मिलेंगे ही। कहां प्रसाद जी ऋौर कहां गोवर्द्धन सराय ! राह चलते प्रसाद की गली में मैं इस असमंजस को हल कर रहा था कि मैं ग़रीब किस तरह महाजन प्रसाद को किस से श्रपनी मुलाकात के लिए कहलाऊंगा । किन्तु द्वार पर पहुंचते न पहुंचते, किसी से कुछ कहते न कहते, प्रसाद जी ने अप्रत्याशित स्वागत के रूप में दुतल्ले की ख़िड़की से मुझे उपर त्राने का मौन संकेत दिया। त्र्रौर सचतो यह कि उन्होंने अपनी खिड़की से मुझे गली में आते ही देख लिया था। ऐसी थी उन की पैनी दृष्टि ! बह दृष्टि उन के साहित्य में भी बड़ी दुर तक चली गई È 1

उन दिनों हिन्दी की नई कविता-शैली की ताजी-ताजी धूम थी। निराला और पन्त पाठकों के लिए एक जादूभरी पहेली हो रहे थे, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार प्रसाद जी अपने 'प्रेम पथिक'' "मरना" और "कानन कुसुम" की कविताओं द्वारा रीति काल के अवशिष्ट वयोवृद्ध साहित्यिक समाज में कुत्हल-जनक हो चुके थे। इस पथ के वे बुजुर्ग थे; वयोवृद्ध नहीं, बल्कि एक रिसक अनुभवी। लोकमत का जो तमाशा वे देख चुके थे, उसके कारण अपने ही आँखों के सामने अपनी पीढ़ी के इन नए साहित्यिकों के प्रति लोकमत की कीड़ा से अपरिचित नहीं थे। इसी लिए सब कुछ होते और खेले हुए मुसाफिर की तरह वे इस प्रकार मसकरी कर मिलते थे जैसे वे अपने अनुभवों के लिए तस्त्रीक पारहे हैं।

उस पहली भेंट में मेरी श्रीर प्रसाद जी की बार्ता नए कवियों की काव्य-चर्चा से हुई। प्रसाद जो ने उन सभी साहित्यिक नवीनताश्रों के लिए जो पुरानी-रुचि क लोगों को विप-चूंट हो रही थीं, श्रपनी सहमत इस प्रकार दी कि मानी उन्हों-ने कहा—इसके लिए हम से क्या जानना चाहते हो, मैं तो इसके लिए पुराना बदनाम हूँ, मुझ श्रलग समम कर तुम लोग श्रलग मत रहना।

इस प्रथम परिचय के बाद प्रसाद जी से धीरे-धीरे मिलने की धड़क खुली। काशी के सन् २४ सं ३० के दिन, साहित्यिक मौज-बहार के दिन थे। साहित्यिकों का एक प्रेमपूर्ण परिवार-सा वन गया था। हम लोगों का कोई क्लब नहीं था, कोई सभा-सोसाइटी नहीं थी, किन्तु हम लोग मिल-जुलकर हंसी-मजाक श्रीर साहित्यिक वार्ता-लापों का वह लुका उठाते थे, जो बड़े-बड़े क्लजों श्रीर सभा-सभाजों के भाग्य में नहीं। हम लोगों के समाज में प्रसाद जी ही हम सबके शरमीर थे। यह शरमीरता उन्हें दो कारणों से स्वयं प्राप्त थी- एक तो यह कि वे हम लोगों से बड़े साहि-त्यकार थे। हम में से कितने जब पृथ्वी पर रहे थे, मुलमुला प्रसाद जा ने हमारे साहित्य में नवयुग का श्रीगरोश कर दिया था श्रीर जब हम लोग उन के परिचय में आये तब वे श्रकेले ही रूढ़ियों से लड़ते हुये हमारे साहित्य में एक निश्चित श्रीर गंभीर स्थान बना चुके थे। दूसरी बात जिसके कारण वे हमारे सिरताज थे, उनका प्यारा हंसमुख स्वभाव था, एक गंभीर कृतिकार और एक गंभीर कर्मठ होते हुये भी वे प्रसन्नता श्रोर सजीवता की मृति थे, वे जीवित श्रानन्द थे। कला में वे जैसे हम लोगों में सबसे आगे थे, वैसे ही हँसने-हँसाने श्रीर मिलने-जुलने में भी हम सब से

आगे थे। यदि नव युवकों में कभी आपस में वयोचित स्वभाव-वश तक़रीर होती थी, तो वे ही हमारे रूठे हुये हृद्यों को बड़ी सुन्दर मुसकराहट से अपने स्नेह-तन्तुओं से जोड़ कर एक कर देते थे। कभी-कभी हम लोग उन की सहृद्यता से लाभ उठाकर उनसे भी रूठने का मैत्री-सुख लेते थे; क्योंकि वे बड़ होकर भी हम लोगों में हमी लोगों जैसे अभिन्न हो गये थे। इस रूठा-रूठी में प्रसाद जी आत्मीयता की मानां मौन शपथ देते हुये स्नेह के दो-चार सीधे-साथे शब्दों में ही अपने जी की बात कह देते थे। वे रूठे हुओं को मनाने की कला में भी एक प्रियतम व्यक्ति थे।

उन्होंने 'श्रांसू' में लिखा है।

हो उदासीन दोनों से दुख सुख से मेल कराये । ममता को हानि उठाकर दो रूठे ६ए मनाये ।

जीवन के प्रति यह प्रसाद जी का दार्श, निक दृष्टिकोण ही सुख-दुख के रोग-रहित रागी हो कर, लोकरहित लौकिक हो कर ही वे जीवन पथ में चल सके।

कभी सुत्रह, कभी दोपहर में, कभी शाम को उनके घर पर हम लोग उनसे मिलते रहते थे। श्रौर यदि दिन में किसी समय न भी मिल पाते तो शाम को चिरारा जलते उनकी द्वान पर हम-लोगों की मजलिस जरूर रोशन होती थी। हम सब चारों ऋोर से घूम फिर कर साँक बीतते-बीतते प्रसाद जी की दकान पर निश्चय एकत्र होजाते थे। वहीं हम लोगों का साहित्य-सम्मेलन होता था वहीं विविधि दिशास्त्रों की त्रिवेशियों का संगम होता था। प्रसाद जी की दुकान की वह सात हाथ लम्बी और दो हाथ चौड़ी तख्ती, जिस पर बीरे की एक लम्बी परत श्रीर एक साधारण तख्तपोश पड़ा रहता था. लोगों के स्नेह-समागम से केवट की नाव की तरह सजीव होजाती थी। प्रसाद जी उस पर बडी , स्त्रशिंदली श्रौर निश्चिन्तता से बैठ जाते थे, समाज धीरे-धीरे जुड़ने लगता था। घएटों की उस बैठक में जीवन की सभा दिशाओं के पथिक क्या राजनीतिक, क्या साहित्यिक, क्या व्यापारिक,क्या सामाजिक, सभी वपना माँकी देजाते थे, सभी अपनी अपनी बात कह जाते थे। काशी तथा बाहर से ज्ञाने वाले प्रतिष्ठित से प्रतिष्ठित लाहित्यकों का तो वह टाउन हाल ही था। बराल ही में एक पानवाला पान देता जाता था। प्रसाद जी खुद खाते, लोगों को खिलाते और राह चलते बन्दगा देने वालों को भी नजर करते जाते थे। इस मकार सभी चेत्रों के सम्मिलन से विना पोथी-पत्रा, बिना असबार-किताव के ही इतनी जानकारी की बात हम लोगों को मिलती कि वह किसी विद्यालय के ज्ञान से कम महत्वपूर्ण न होती । प्रसाद जी की बह काशी के अनेक नवयुवक साहित्यकों की विद्या-पीठ है, प्रसाद जी का मकान हम अनेक तर लों का कला-मन्दिर है।

प्रोहता को पार कर जाने पर भी वे आजीयन वही सत्रह-श्रठारह वर्ष के नटवर भावुक किशोर थे। उसी भादुक किशोर को लह्य कर उनके वाल्यसखा अश्री राय कृष्णादास जी ने एकबार प्रेम-परिहास पूर्वक लिखा था—"गई ने द्विशाशुता की कलक।" हाय, श्री श्राज वही प्रसाद जी हम लोगों की दुनिया सूनी कर गए। मृत्यु ने मानों हकती करके उन्हें हमारे बीच से झीन लिया।

प्रसाद जी से जब मेरी प्रथम मेंट हुई थी तभी से उनके भीतर के एक भौतिक विचाद का ज्ञाभास मुझे मिल गया था। उन्होंने बातों ही बातों में मेरी अगण्य आधिक स्थिति जान कर कहा था—सब के सब साहित्य में ही बले आ रहे हैं। अरे बाबा, दो रोटी कमाने खाने का उपाय करो। इसी उद्गार में प्रसाद जी की मर्भ-वेदना छिपी हुई है। यह नहीं कि साहित्य-क्षेत्र

में वे निर्धनों को देखना नहीं चाहते थे; बल्कि उनका विश्वास था कि इन निर्धनों को ही लेकर हिन्दी इस शताब्दी में शक्ति बहुए करेगी। उनके कबि-हृदय में दीन-दुखियों के लिये सम्वेदना थी, उसी सम्वेदना से विद्या होकर वे निर्धनों का साहित्यिक बलिदान नहीं देख सकते थे। वे एक कुलीन गृहस्थ थे, उनके ऋतीत की सम्पन्नता उन्हें श्रपनी पीड़ा कहने से बरजती थी, रूदियों के नाम पर उनमें एक यही मर्यादा शेष रह गई थी। इसीलिये पीड़ितों की पीड़ा में ही वे अपने मन का चीभ प्रकट कर देते थे। वे सीधे अपने की क्यक नहीं करते थे, किसी माध्यम से ही अपने मर्मोदघाटन करते थे । सन्पन्न कुल में उत्पन्न होकर साहित्य के लिए उन्होंने अपना जो लौकिक बलिदान दिया, वे उस बलि के भुक्तभोगी थे, और उसी बलिदान के क्षेत्र में वे किसी ग्रशब की अप्रसर होते देखते तो उसे हतोत्साह करने के लिये नहीं बल्कि खतरे का घंटा बजा देने के लिए बुझ कह देते थे, मानों साहस को साबधान कर देते थे --

> नाविक साहस है खेलागे? जर्जर तरी भरी पथिकों से भड़ में क्यों केलोगे? —"स्कन्दगुस"

उनका जीवन एक ऐसे व्यक्ति का पुरुषार्थी जीवन था, जो 'किंब' था। किंब था, इसलिये जीवन के संकटों में भी मनोरम था; पुरुषार्थी था, इसलिये जीवन के संकटों को झेल सका। शायद सन् १६३० में एक दिन, रात के समय घर लौटते हुए उन्होंने राह में मुझे एक बोभ फेंकें हुए मजदूर की तरह सांस लेकर बताया था कि लगातार बीस बर्ष उक एक बहुत बड़ी रक्तम का कर्ज खुकाने में वे रुद्ध साँस थे। एक 'झोह' कह कर उन्होंने प्रसन्नता प्रकट की कि झव जान में जान आई है। जो लोग बाहर से प्रसाद जी को एक धनी साहित्यिक के रूप में जानते आये हैं वे प्रसाद जी के जीवन के पीड़ित इतिहास को नहीं जानते। प्रसाद जी धनी कुल में अवश्य उत्पन्न हुए, किन्तु धनी कुल उनके लिए समस्या हो गया। उनके हाथ में जब अपने कुल की बागडोर आई, उस ममय वे १७ वर्ष के बालक मात्र थे। बागडोर हाथ में आने के पहले ही से उनके व्यापार में लूट-पाट हो चुकी थी, जो कुछ रोष था उसमें भी उनके नाबालिग्रपन का लाभ उठाकर बटमारों ने हाथ साफ किया। वयस्क होते-होते प्रसाद जी पूर्व वेंभव का पत्रभड़ मात्र लेकर विश्वमंच पर खड़े हुए—

पतकाड़ था, काड़ खड़े थे सर्खा-सा फुलवारी में, किसनथ नब फुसुम विद्या कर भाये तुम इस क्यारी में।

—-"श्रांग्<sup>\*</sup>

उनके हार्दिक संस्कार कलाकार के संस्कार थे। किन्तु इस निर्दय जगत में केवल कला को ही सम्बल बनाकर पथ में नहीं चला जा सकता, यह उन्होंने अपने जीवन के प्रारम्भिक अनुभवों से जान लिया था। उनके 'आंसू' में स्वार्थों की मात्रा में मंलगन निर्मम संसार का यह रूप है—

> सुख-दुख में उठता-गिरता संसार तिराहित होगा, सुड़ कर न कथा देखेगा किसका हित अन्हित होगा।

अतएव जीवन-यापन के लिए लाँकिक उद्योग के रूप में अपने पूर्वजों के व्यापार को ही उन्होंने अपनाया । प्रमाद जी के लिये वह व्यापार, कलाकार के लिए अर्थ शास्त्र का प्रश्न था। प्रसाद जी इस प्रश्न को हल कर ले जाते, किन्तु हाथों में शांकि आने से पहले ही उपरोक्त परि-स्थितियों द्वारा व्यायहारिक जीवों ने ऋण के बहाने उन पर सम्पन्न कुल में उत्पन्न होने का टैक्स लगारक्साथा। जीवन की इस दुतरका लड़ाई में उस कवि को जीवन-संग्राम के अनेक विचित्र अनुभव हुए। उन अनुभवों ने उन्हें एक दार्शनिक कलाकार बना दिया। अपने कवि-हृद्य की स्वाभाविक सम्वेदना को बौद्ध-धर्म की करुए। का रूप देकर उन्होंने ऐतिहासिक नाटकों की रचना की। माथ ही, रूदि-प्रस्त, श्रात्मिलप्त, परपीड्क समाज के प्र.त उनके मन में एक व्यंगपूर्ण विद्रोह भी उद्य हो गया था। वही विद्रोह उनके उपन्यासों में मिलता है। प्रसाद जी ब्रादशे के नाम पर हुईलताकों का नग्न नृत्य करने वात्ते पशुक्रीं के एक बीत्राग विरोधी थे। किन्तु सम्पन्नी श्रीर झुठ श्रादरीवादियों से सताय हुए दुवेलों के लिये वे सहानुभूतिशील थे। ऋदिशी का चायुक मारने के बजाय केवल एक मानवी सहानुभूति देने में उनका विश्वास था। कवि की हेसियत से सहदय, अनुभवी की हैसियत से, दार्शानक और विद्रोही की हैसियत से पुरुपार्थी होकर उन्होंने जीवन का खेल खेला । उनका जीवन कितना कोमल और कितना आकारत था. इसका परिचय ''स्कन्द्गुप्त'' नाटक के इस वार्त्तालाप से मिलत: है-

सर्खा--3ुम्हें इतना दुःख है, मैं यह कल्पना भीन कर सकी थी।

देवसेना -- (सम्हल कर) यही तू भूलती है। मुझ तो इसी में सुख भिलता है। मेरा हृदय मुक स अनुरोध करता है, मचलता है, रूठता हे, मैं उसे मनाती हूँ। आँखें प्रणय-कलह उत्पन्न कराती हैं, चिन्न उन्लेजित करता है, बुद्धि मिड़-कती हैं, कान सुनते ही नहीं! मैं सबको समकाती हूँ, विवाद मिटाती हूँ, सखी! मैं फिर भी इसी मगझाल्द कुदुस्त में गृहस्थी सन्हाल कर, स्वस्थ होकर बेठती हूँ।

इन पंक्तियों में प्रसाद जी ने मानो श्वपनो ही अपत्माको उपस्थित किया है -- जीवन सुधा
ऐसी ही करुण सरिता में उनकी जीवन-नैय्या
पार गई है।

वे जाते-जाते श्रमने पीछे वे ही गाई स्थिक परिस्थितियां छोड़ गए हैं, जिन परिस्थितियों को लेकर उन्होंने संसार में प्रवेश किया था—सत्रह वर्ष का पुत्र चिरंजीय रतनशंकर, उसकी विधवा माता श्रीर सामने एक लुटी हुई गृहस्थी!

ऐश्वर्य के पर्वत से नीचे उतरने में प्रसाद जी काफी थक गए थे। वे ऊब चुके थे श्रीर नवीन जीवन धारण करना चाहते थे। पूर्व वैभव उनके लिए मनोविनोद की कहानी मात्र रह गया था, जिसे फ़ रसत के समय बड़े रस के साथ मित्रों को सुनाया करते थे। ऐश्वर्य्य का जीवन श्रीर घोर दरिद्रता का जीवन, दोनों में से कोई भी उन्हें अभिप्रेत न था। वे मध्यम श्रेणी के एक सद्गुहस्थ बने रहना चाहते थे। "कंकाल" में एक स्थान पर उन्होंने लिखा भी है-"हम उन्नति करते-करते ऐश्वर्घ्य के टीले न बन जाय, हां, हमारी उन्नति फल-फूल बाले बुनों की-सी हो, जिसमें शीतल छाया मिले, विश्राम मिले, शांति मिले।" उनके मुख से सम्पन्न अतीत की बसन्ती बातें सुनते समय एक बार मैंने कहा था-- आपको कभी-कभी उस जीवन की बडी इन्झा होती होगी। उन्होंने जुरा दुल कर कहा:-नहीं यार, जब कोई (बैभवशाली)मुँह बिरावता ( चिढ़ाता ) है, तब मन कचोटता है । मानों यही कवाट उनके 'श्रांसु' को इन पंक्तियों में है-

> खाली न सुनहली सन्ध्या मानिक मदिरा से जिनकी वैकब सुनने वाले हैं दुख की घड़ियां भी दिन की!

उन्होंने ऋपने नाटकों (विशेषतः "कामना") श्रीर उपन्यासों में यत्र-तत्र वैभव की, विडम्बना दिखलाई है श्रीर पद-रिलत दीन दुखियों को मानबी सहानुभूति दी है। "स्क्र-द्गुप्त" में उन्होंने मानों पूर्जावाद के तिरस्कार में कहलाया है :-- "राजा का मुकुट श्रम जीवियों के टोकरों से भी तुच्छ है ।"

प्रसाद के शब्दों में यह त्राने वाले युग की ध्वनि है। प्रसाद के साहित्य ने पीड़ा और दरिद्रता में ही मानवता और कला का दर्शन किया है। उनकी "लहर" नामक कविता-पुस्तक में "पेशोला की प्रति ध्वनि" शीर्षक कविता की ये पंक्तियां—"भोंपड़े खड़े हैं बने शिल्प-से विषाद के दग्ध श्रवसाद से।"

तथा "मरना" की "विषाद" शीर्षक कविता की ये पंक्तियां—

''उत्तेजित कर मत दौड़ाक्यो करुणा को यह थका-चरण है।'

उनके निगृद्दतम करुएतम कवि हृद्य की कोमल सम्बेदना की ऋभिव्यक्ति है।

ऋण-मुक्त होने के बाद से ही, शायद सन्
१६२६-३० से, प्रसाद जी ऋरवस्थ रहने लगे।
इतने दिनों तक दुनिया के तकाजों से झुटकारा
पाने के लिए ही वे स्वास्थ प्रहण किए हुए थे;
क्योंकि वे एक ईमानदार गृहस्थ थे। इसके बाद
से उनका शरीर शिथिल होता गया, बीच-बीच में
सँभल कर फिर-फिर शिथिल होता गया, और
श्रान्तिम बार वे उस सांघातिक बीमारी में पड़
गए जब कि रुग्ण शैया से फिर उठ ही न सके,
एक निरीह श्राँसू की तरह विश्व-महोद्धि में वे
सटा के लिए ढलक गए।

श्रभी जीवित रहने की उन्हें इच्छा थी, श्रपने बिखरे हुए साहित्यक कार्यों को, श्रपने श्रधूरे स्वप्नों की पूर्णता की मनोवाञ्चित सीमा तक पहुँचा देने के लिए! इसीलिए श्रन्तिम चर्गों में श्रन्तिम बात कहने के लिए डाक्टर के संकेत करने पर उन्होंने कहा था— मुझे साँस लेने में तकलीक होरही है, मुझे साँस लेने की दवा दीजिए।

घार कर्म-श्रान्त जीवन के भीतर से ही उन्होंने श्रापनी साहित्यिक रचनार्ये की । व्यापारिक जगत की विकट समस्या उनके सामने थी, साथ ही कला की उपासना 'भी उनसे अपने लिये समय माँगती थी। लेकिन कभी भी उनके चेहरे पर उदासी नहीं दीख पड़ी, अगर वे ही उदास हो जाते तो हम हिन्दी के छुटभैयों की क्या दशा होती ? वे तो मानों इसका उदाहरण उपस्थित करना चाहते थे कि कम करते हुये किस प्रकार कला के कोमल स्नेह को बनाए रक्खा जा सकता है। एक दिन मुँह बनाकर हँसते-हँसते उन्होंने कहा था—रोजगार का काम करते-करते अपने साहित्यिक कार्यों का ध्यान आ जाता है और उससे छुटकारा पाते-न-पाते रोजगार का मसला सामने आ जाता है।

साहित्यिक कार्य श्रीर व्यापारिक कंकट तो थे ही, उपर से सुबह से रात तक मिलने वालों का ताँता लगा रहता। किसी से मिलने से उन्हें इनकार करते नहीं पाया, बल्कि मिले बिना वे जी नहीं सकते थे। बड़ी ललक से सबसे काकी समय तक तथा खूब खुशदिली से हिलते-मिलते थे। श्रीर श्राश्चर्य तो यह कि वे कैसे लिखते थे, किस समय लिखते थे।

उन्होंने जिस समय जो लिखा, युग की प्रगति के हिसाब से परिपूर्ण लिखा। कवि, कहानीकार, निवन्धकार-ऐसे नाटककारः उपन्यासकार, पुञ्जीभूत प्रतिभाशाली साहित्य को बड़े बरदान से ही मिलते हैं। मुझ यह कहने की आज्ञा हो कि वे हमारे साहित्य के विकटर ह्युगो थे । इस विश्व मंच से जात-जाते वे "कामायिनी" जैसा महाकाव्य श्रपने कीतिं शिखर पर गुम्बज की भाँति शोभित कर गये हैं, जैसे प्रेमचन्द अपने 'गोदान' को । प्रेमचन्द श्रौर प्रसाद, दोनों इस युग के सफल-साहित्य यात्री हैं। प्रसाद जी ने श्रपने जिस किशोर जीवन में मिडिल क्लास की गृहस्थी पाई थी, उसी मिडिल क्लास की उन्होंने स्कूली पढ़ाई पाई थी । किन्तु जिस स्वावलम्बी पुरुषार्थ से उन्होंने अपनी गृहस्थी का संचालन किया, उसी पुरुषार्थ के स्वावलम्बन अध्ययन, मनन, चिन्तन, निरीच्च श्रीर संप्रह्मा से उन्होंने अपनी मानसिक योग्यता को समृद्ध कर हमारे साहित्य को सुसम्पन्न किया। जीवन के अनुभवों में अटघ्ट की भलक ने उन्हें दार्शनिक बना दिया था, वेदना ने किव और सुरुचि ने कलाकर, रिसकता ने हंस मुख, कठनाइयों ने मनोवैज्ञानिक, व्यावहारिकता ने राजनीतिज्ञ। अपने इस समष्टि व्यक्तित्व को उन्होंने अपने नाटकों में घनीभूत किया है उनकी सम्पूर्ण कृतियों में उनका 'आंसू' नामक काव्य उनकी प्रेम पूर्ण भावुकता और जीवन के प्रति उनकी जागहक दार्शनिकता का सत्त है।

हमारे साहित्य में द्विवेदी युग के तीन प्रमुख साहित्यिक महारथी-प्रेमचन्द्र, मैथलीशरण श्रीर जयशंकर प्रसाद, उस युग के ब्रह्मा, विष्णु, मद्देश हैं । भारतेन्दु युग साहित्य के जिस चित्रपट पर रेखाएं खींच कर उसे ऋपूर्ण छोड़ गया था, उसे इसी चित्र मूर्ति ने ऋपने ही व्यक्तित्व के रूप-रंग से एक आकार दिया । ये तीनों हमारे साहित्य के चित्रपट पर श्रपने भार-तीय रूप में ही अंकित हैं, तीनों के भीतर भारतीय संस्कृति है, किन्तु त्रिवेशी के रूप में प्रसाद श्रीर गुप्त जी में यह संस्कृति गंगा-यमूना की तरह स्पष्ट है, किन्तु प्रेमचन्द में सरस्वती की भाँति श्रदृश्य। गुप्त जी ने वैष्ण्य संस्कृति क श्रनरूप बीसवीं शताब्दी की साहित्य-कला को प्रहण किया प्रसाद जी ने वौद्ध संस्कृति के श्रनरूप। इसीसे उनकी कला गुप्त जी से भिन्न होगई है; किन्तु काव्य-द्वारा जिस चिरन्तन भार तीय संस्कृति को जगाना गुप्त जी को श्रमिप्रेत है, वही नाटकों द्वारा प्रसाद जी को भी अभिप्रेत था। दोनों की कला धर्ममूलक है। प्रेमचन्द जी ने इन दोनों कलाकारों से भिन्न पथ प्रहरा किया। उन्होंने सामयिक राष्ट्रीयता को अपनाया। चूंकि

राष्ट्रीयता थी, इसलिए उसमें भारतीयता थी, किन्तु वह धर्म्म-मूलक न होकर द्यर्थ-मूलक है। वह बीसवीं शताब्दी के राष्ट्रीय ख्रान्दोलन की भारतीयता है। उसमें जो सहृदयता और उदारता के संस्कार हैं; संस्कृति के नाम पर बस उतनी ही भारतीयता है, ख्रान्यथा वह विदेशी परतन्त्रता के हाथों पीड़ित तात्कालिक भारतीयता है, जिसके धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक सभी प्रश्न भविष्याधीन हैं। एक ही मनुष्यता की प्रतिष्ठापना में यह सांस्कृतिक त्रिकोण, इन तीन महान कला-कारों की अपनी ख्रापनी सामाजिक परिस्थितियों से उत्पन्न हिच का द्योतक है।

प्रसाद जी भी गुप्त जी की भाँति ही हिन्दू-संस्कृति के नए विश्व के नए जीवन पर विजय चाहते थे। इस सम्बन्ध में उनका भी एक बौद्धिक स्वप्प था, जिसे हम "कंकाल" में यित्कञ्चित् देख सकते हैं।

विश्व के जीवन में आज क्या-क्या भौतिक विडम्बनाएँ आ गई हैं, प्रवृत्तियों ने जीवन को कितना विकृत कर दिया है, इसका एक रूप उनकी "कामना" में हैं; साथ ही वर्तमान परिस्थितियों से निष्कृति के लिए भारत का हिन्दू दार्शनिक दृष्टिकोण भी उसमें इंगित है। बौद्ध संस्कृति, वैद्याव संस्कृति का ही सार-रूप सार्व-भौम रूप थी। 'प्रसाद जी' उसी सार्व-भौम रूप से हिन्दू संस्कृति की विश्व-विजय पर विश्वास रखते थे।

प्रसाद जी ने दुनिया खूब देखी थी, अपने जीवन के पूर्वार्क्ष में उन्होंने खूब भ्रमण किया था, सब कुछ देख-सुन कर गृहस्थ रूप में वे काशी में स्थिर रहे। और जब उन्होंने अपनी यात्रा की, तब इस संसार को ही छोड़ कर चले गये! हाय! क्या अब प्रसाद जी नहीं मिलेंगे, प्यारे प्रसाद जी का हंसता मुखड़ा क्या अब न दीखेगा! उनके "आँस्" में हमारी इस विकल उत्कण्ठा का मौन उत्तर है, मानों प्रसाद जी अपने अनन्त अहरय पथ से कह रहे हैं:—

"चेतना लहर न उठेगी जीवन समुद्र थिर होगा, सन्ध्या हो सर्ग प्रलय की विच्छेद मिलन फिर होगा।

\* \* \* 'वमक् गा धूल-कर्णो में सीरम हो उड़ जाक गा, पाजंगा कहीं तुन्हें तो मह-पथ में टकराक गा।

## —जब सो जाता है संसार !

#### [ श्री 'ऋशेय' ]

हाय, दिवस में नहीं जागती प्राणों में कोई भँकार;
किन्तु रुदन का ज्वार साथ ले आना है तम-पारावार !
जग की आंखों के आगे मुरकाए-से रहते हैं प्राण—
इसी लिए जुप-जुप रोता हूँ जब सो जाता है संसार!

दिन की अपरिवर्त मुद्रा को
पोड़ा की करुणा तन्द्रा को
पिश्रा कर करती विकृत—
(द्रवीभृत ताँवे पर मानों छायाएँ हो विलुलित —)
भेदक, तींच चेतना एक भयावह—
रो-रो बार-बार कहती है,
'चला गया वह, नही आयगा, चला गया वह !'
दिन में वह आयात न जाने कैसे आत्मा सहती है,
किन्तु रात्रि में रोम-रोम हो जाता है जीवित चीत्कार—
हसीलिये चुप-चुप रोता हूँ जब सोजाता है संसार !

तारीं की श्राणित संख्या कहती है,

'तुम हो चिर एकाकी ! चिर एकाकी !'

नीलन्यन्त में भी तो यही चुभन, बहती है—

'श्राणित गण में भो एकाकी !'

चला गया वह, तेरे श्रतुल स्नेह का भागी—

चला गया जे। था तुम में श्राचुरागा !'

सने ही में श्रव विखरेगा भेरा सब सोहाई-दुत्तार !

इसीलिये चुद-चुप रोता हूं जब सोजाता है संसार !

यह जो नम में निर्भर,

श्रविशान्त बहता जाता है निर्भर,

# जीवन-सुधा•→



श्री सच्चिदानन्द वात्स्यायन ('त्र्यज्ञेयः)



एक भीर यह निश्व दु: व का भाव सालता ही रहता है,
किन्तु दूसरी भीर साथ ही मन कहना है,
भिथ्या! मिथ्या! आत्म प्रवंचन! माया!
हतनी बड़ी सिष्ट क्या तेरी ही प्रतिविभ्वित खाया?
तेरे आत्मा—तेरे भावों—तेरी पोड़ा का प्रति रूप?
तुच्छ तू !' हा , विद्रृप !
नियति प्रगति में व्यर्थ लिए किरना हूँ में अपना यह प्यार!
इसोलिये चुप-चुप रोता हूँ जब मो जाता है संसार!

एक पहेली यह विकरानी——
सुलभ कटापि न सकने वाली!
पाकर सुभे श्रकेला, यहां अचानक
उर में भेद-भेद जाती है एक विप-नुभा कण्टक—
चुभता भी है वह पर जलता भी है;
मृद्धित करना जाता है पर खलता भी है;
मर्म स्थल को वाँधे मानी कसक रहा हो कोई तार!
इसीलिये चुप-चुप रोता हूँ जब सो जाता है संसार!

हा ये भेरे विफल प्रयास !

सो च-सोच कर रह जाता है केंबल संशय भेरे पास !

जिमे न जीवन मृलभा पावे,

मृत्यु भला उसका जैमे सुलभावे ?

श्रीर कदन यह—रोने मे यदि मृत्यु दृग्ही जाता,

सो जीवन का हुँसी स्वयं ही अजर अमरना पानी !

भै संशय निधि मे उतराता, तुम खोगये पहुँचकर पार !

इसालिये चुप-चूप रोता हुँ जब मो जाता है संसार!

#### लहर

#### [ श्री सुशीला आगा ]

वह गङ्गा के समीप ही पेड़ों के एक भुरमुट के नीचे नेत्र बन्द किये जड़बन बैठा रहता। बस फेबल कभी-कभी एक नीरस संगीत-ध्वनि उम शाँति को भंग करने के निभित्त तड़प उठती। वह पुकारने लगता—'हे गोविन्द राखा शरण १' । उसकी इस पुकार में वेदना श्रोर विद्यलता का समिश्रण रहता।

काशी-निवासी ऐसे बहुत कम लीग होंगे जिन्होंने भीकू की न देखा हो, परन्तु उसे हाथ फैला कर माँगते आज तक किसो न न देखाथा। याचना करना उसे आता ही न था। खुड़ा के बन्दे बहुत से दयाबान लोग उसे एक-डो पेसे दे कर उसके प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट कर देते थे।

उसके मान रहने का कारण जानने की बहुतों को उत्कंठा रहती। स्नानार्थ जाते हुए स्त्री-पुरुष मार्ग में एक कर देर तक उसकी श्रीर ताकते, परन्तु उनका ऐसा व्यवहार भीकू पर श्रपना जादू न डाल पाता। वालक उसके निकट जा कर प्रश्न करते 'बूढ़े बावा पैसा लोगे ?' पर वे भी उत्तर न मिलने पर निराश लोट जाते।

भीकू ने विवाह नहीं किया था। जो लोग उससे बहुत दिनों से पर्गिचन थे, वे बहुधा श्राकर छेड़-छाड़ करते, कहते — दादा श्रव तो द्याह कर लो। बहु श्रायंगी तो दूध-भात विला दिया करेगी। भीकृ इसका उत्तर दिये विना न मानता। उसके भुर्रियाँ पड़े सुखे मुख पर एक शान्त हुँसी नृत्य करने लगती, वह कहता—"मैं तो स्रापे राम की बहुरिया हूँ।" उसके ये शब्द लोगों के मुहों पर मोहर का काम करते।

रात्रिका समय था। जाड़े के स्रागमन की सुचना देती हुई वायु ऋपने प्रयत्न वेग से वह रही थीं। भीकु अपनी दिन भर की कमाई बटोर कर भोपड़ी में त्राया। बहुत ही सामान्य छोटी-सी मापड़ी था। उसने धीरे से व्याले में से व्यानी पूँजां की थैली निकाली। यही उसका सर्वश्वाधी। व्यवतक सुखे चबैने चबका उमने बहुत कुब्र धन इकट्टा किया था। केवल इस इच्छा से कि कभी हाथ-पैर ढीले पड़ गये तो रोटी का सहारा रहेगा । उसने श्राँधकार में टटोल कर ढिवरी जलाई, एक हल्का-सा अस्थिर प्रकाश हुआ। भोपड़ी की एक-एक चीज जो श्रंथकार का श्रावरण डाने छिपी बैठी थी अब अपनी द्रिता का उनहास करने लगी। भीकू ने पेड़ों के नीचे की कुञ्ज टहनियाँ जमा कर रक्ष्यी थी उनसे चृत्हा जलाया। पास एक मिट्टी की हाँडी रखी थी उसमें थोड़ा-मा चायल डालकर चुल्हे पर चढ़ा दिया अप **आप पास** ही सुद्धियों के ढेर पर लेट गया। मानव लालमात्रों का कितना संविध स्वरूप था ! भोप**ड़ी की सारी वस्तुयें मतु**ष्य के जीवन-प्रेम का। उपहास कर रहो थीं। धीरे-धीरे भीकृ की आँख लग गई। हाँड़ी में के खद्बद् करते हुए चावल उसे मीठी लोरियाँ सुना कर थपिकयाँ दे रहे थे।

आंखें बन्द किये कुछ ही त्रण बीते होंगे कि भीकू को लगा, कोई उसे पुकार रहा है। चौंक कर उसने आँखें खोल दीं, और साँस रोक कर इधर-उधर ताकने लगा। किसी शिशु के रोने का शब्द वायु के कोंकों के साथ भीतर आ रहा था। इतनी रात गये, ऐसे निर्जन स्थान में यह रुदन सुन कर भीकृ को श्राश्चर्य हुआ। लफ्क कर उसने ढिबरी उठाई श्रीर आवाज का अनुसरण करता हुआ चल दिया। उसी पेड़ों के भुरमुट के नीचे जहाँ उसने श्रपने जीवन के कितने ही दिन व्यतीत किये थे - श्रीर कर रहा था - ध्रंघले प्रकाश में उसने देखा एक नवजात शिश ऋछ कपड़ों में लिपटा पड़ा रो रहा है। भीकू ने लपक कर शिश को उठा लिया श्रौर अपनी भोपड़ी की श्रीर दीड़ा। भीबर जाकर उसने देखा कि वह चॉद-सी मुन्दर एक बालिका है। उसके मुख से निकल पडा, ''हाय, किसका इतना कटोर हृदय है जो ऐसी प्यारी बिटिया को फेंक गया।" उसके नोरस हृदय में प्रथम बार सहातुभूति ने भाँका। उसे भासने लगा, मानों भगवान ने उसकी प्रार्थनात्रों पर रीभ कर यह सुन्दर खिलीना उसे परस्कार-स्वरूप दिया है।

हृदयं की भावनायें पलट गईं। जिस संसार में उसे कोई आकर्षण नथा वह सुन्दर प्रतीत होने लगा। भीकू ने बालिका को हृदयं से चिपटा लिया—उसे अपने में एक नवीनता की अनुभूति होने लगी, आर वह थी कोमलता। गरमी पाकर बालिका तुरत सो गई। भीकू ने उसे अपनी गुद्दड़ियों में दुबका कर लिटा दिया और स्वयं कुछ पैसे लेकर दूध लेने चल दिया। जब तक उसकी दृष्टि पहुँच सकती थी वह मुझ-मुझ कर देखता, कहीं बालिका जग न उठे। दूध लेकर भीकू साँस छोड़कर घर की और देखि। उ उसकी सूर्वा टाँगों में विद्युत-की-सी शक्ति आ गई, लोटने पर देखा चुल्हे पर का भात जल चुका था; परन्तु उसने लागरवाही से उठा कर हाँडी एक कोने में फेंक वी श्रीर दृध का कुल्ह श्राग के समीप रख दिया। दृध गरम होते होते बालिका कुल बुला उठी — भीकू ने उसे गोदी में उठा लिया श्रीर किसी प्रकार कई की बत्ती से उसके मुख में दृध डाल ने लगा। बालिका भूखी थी, दृध पीकर सो गई। भीकू के नेत्रों में नींद नहीं थी, वह बालिका को गोद में लिये बैठा उत्सुक दृष्टि से रह-रह कर उसका मुख निहारने लगता — शेख चिह्नों के मनस्बों की नांई वह भी वल्पना करने लगा — मेरी बिटिया का नाम रानी होगा; बड़ी होगी; पांव-पांच चलेगी; मुझे 'काका' कह कर पुकारेगी; घर की रोटी पकाया करेगी।

भीकू बालिका को देखकर कभी-कभी सिहर उठता, यदि किसी को फ्ता चल गया तो बालिका उससे छिन जायगी—वह मन ही मन भगवान से प्रार्थना करता।

ज्यों ज्यों करके सबेरा हुआ। किक् को अपनी वहुत दिन की गाढ़ी कमाई का सदुपयोग सूमने लगा। सबेरे उठ कर उसने बिटिया को दूध पिलाया। वह बहुत तीए। थी। इस कारए। दूध पीते ही सो गई। भीकू लपका हुआ। बाजार गया और वहाँ से उसने कुछ बने-बनाये कपड़े खरीदे। लौटती बार उसे बहुत से लोगों ने देखा। उसकी चाल की गति देख कितनों ही को विस्मय हुआ। राह में जिनने सामने पड़ते, बिना हिच-किचाये वह उनसे याचना करने लगता—'दे दो भैंग्या, राम भला करेगा।' इस परिवर्तन का कारण लोगों की समक में नहीं आया परन्तु उसे जल्दी में देख, बिना कुछ पूज़ने का साहस किए, उन्होंने उसके फैले हुए हाथों पर पैसे रख दिये।

छ: दिन व्यतीत हो चुके थे, भीकू श्रव गृहस्थ श्रादमी था। जम कर वैठ कर भीख माँगने का समय उसे न मिलता; उसका बैठने का स्थान श्रिधिकतर सूना पड़ा रहता। लोग कारण पूछते तो हँस कर कहता क्या करें भैप्या, श्रव पौरुख थक गये हैं, पर श्रव थोड़े समय में ही उसे कहीं

जीवन सुधा व्यवस्था विसम्बर श्रिधिक भीख मिल जाती। भीकू श्रिपनी रानी के भाग्य की सराहना करता।

बालिका दिनों-दिन कीए होती जा रही थी। श्रव तो वह श्रिधिकतर नेत्र बन्द किए पड़ी रहती थी। अनिभन्न भीकृ सोचता, मगन पड़ी है-प्यारी बिटिया है, अपने काका को तंग नहीं करती।

सातवें दिन भीकृ को मालूम हुआ, रानी की तबियत ठीक नहीं है। वह सबेरे से शान्त पड़ी विचित्र प्रकार से श्वाँस ले रही है। भीकू ने बहत दुलार से उसके मुख में दूध डालने का प्रयत्न किया, परन्तु सब निष्फल। रह-रह कर भीकृ के नेत्र डब-डबा आते। सोचता वैद्य को दिखाये, परन्त बालिका के छिन जाने का भय था। वह चुप-चाप हतबुद्धि-सा उसे हृदय से लगाए बैठा रहा, न भूख थी न प्यास ।

भगवान की माया। वालिका ने एक सप्ताह

बाद रात्रि के उसी पहर में अपनी लीला समाप्त करदी ।

भीक अधीर होकर चिल्ला उठा। उसकी श्रावाजें शून्य श्रन्धकार से टकरा कर फिर उसके कानों में गूँजने लगीं। जिस श्रपने जीवन में कभी श्रांसू गिराना नहीं सीखा था, श्राज वही श्रपने संचित कोष का स्वतंत्रता-पूर्वक व्यवहार कर रहा था।

दो दिन के उपराँत लोगों ने देखा, भीकू उसी स्थान पर उसी प्रकार नेत्र बन्द किए बैठा है। केवल रह-रह कर एक नीरस संगीत ध्वीन उस शान्ति को भंग करने के निमित्त तड़प उठती है। वह पुकारने लगता है —'हे गोविन्द राखो शरण।' लोगों ने प्रश्न किया —

"भीकृ वही पुराना ढँग क्यों ?" उसके नेत्रों से बूँदें टपक पड़ी स्त्रीर मुंख से निकला, "वह एक 'लहर' थी।"

# जीवन-सुधा



श्री प्रेमचन्द् ( मृत्यु-शय्या पर )

		;
		f

### प्रेमचन्द्जी की कला

#### [श्री जैनेन्द्र कुमार ]

श्री प्रेमचन्द्रजी का ताजा उपन्यास 'राबन' हाल ही निकला है। निकला तभी मैंने इसे पढ़ लिया। लेकिन, जो मुझे बक्तव्य हो सकता है, वह लिखता श्रव हूँ। चीज को समभने श्रीर पुस्तक के असर को ठंडा होने देने के लिए मैंने कुछ समय ले लिया है। ठंडा होकर बात कहना ठीक होता है, — जब व्यक्ति पुस्तक से श्रपने को श्रलहदा खड़ा करके मानों उसपर सर्वभक्षी निगाह डाल सके।

प्रेमचन्द्रजी हिन्दी के सबसे बड़े लेखक हैं। हम हिन्दी भाषाभाषी उनके मूल्य को ठीक आँक नहीं सकते। हम चित्र के इतने निकट हैं कि उसकी विविधता, उसका रंग-त्रैपम्य हमें आच्छल कर देता है, उसमें निवास करती हुई और उस चित्र को सजीवता प्रदान करती हुई एकता हमारी पकड़ में नहीं आती। जो एकाथ दशाब्दि अथवा एक दो भाषा का अन्तर बीच में डालकर प्रेमचन्द्र को देखेंगे, वे, मेरा अनुमान है, प्रेमचन्द्र को अधिकसममेंगे, अधिकसराहेंगे। यर्तमान की अपेत्ता भविष्य में और हिन्दी को छोड़ कर जहाँ अनुवादों हारा अन्य भाषाओं में पहुँचेगे, वहाँ उनको थिशेष सराहना प्राप्त होगी।

लेकिन, यत्न द्वारा हम अपनी दृष्टि में कुछ कुछ वैसी चमता ला सकते हैं कि वहुत पास की चीज को मानों इतनी दूर से देख सकें कि वह हमें अपनी सन्पूर्णता में, अपनी एकता में, दीखे। अगर रचनात्रों के भीतर पैठकर, मानों इस सीढ़ी से, हम रचनाकार के हृदय में पहुँच जाँय जहाँ से कि उसकी रचनात्रों का उद्गम है और जहाँ से उसे एकता प्राप्त होती है, तो हम रस में इब जाँय।

अपने भीतर के स्नेह, सहानुभूति और कोशल को विविधि भाँति से कलम की राह उतार कर कलाकार ने तुम्हारे सामने ला रक्खा है। तुम उन शब्दों, भाषा, प्लाट, और प्लाट के पात्रों का मानों सहारा भर लेकर यदि हृदय में से फूटते हुए भरनों तक पहुँच जा सकते हो, तो वहाँ स्नान कर के आनिन्दत और धन्य हो जाओं।। नहीं तो, कालिजीय विद्वान की तरह उसकी भाषा की खूबी और तुटि और उसके व्याकरण की निदींपता-सदोपता में फँसे रहकर उसकी छान-वीन का मजा ले सकते हो।

मुझे व्याकरण की चिन्ता पढ़ते सयय बहुत नहीं गहती। भाषा की चुस्ती का या शिथिलता का ध्यान उसो के ध्यान की ग्रारज से में नहीं रख पाता। भाषा की खूबी या कमी की, सम्पूर्ण बस्नु के मर्भ के साथ उसका किसी न किसी प्रकार सामंजस्य बैठाकर, मैं देख लेना चाहता हूँ। अतः यह नहीं कि मैं उस छोर से नितांत उदासीन या चमाशील हो रहता हूँ, किन्तु वहाँ समान्न कर के नहीं बैठ रहता।

प्रेमचन्द्रजी की कलम की धूम है। बेशक,

वह धूम के लायक है। उनकी चुस्त-दुक्स्त भाषा पर, उनके सुजड़ित वाक्यों पर, में किसी से कम मुग्य नहीं हूँ। बात को ऐसा सुलक्षा कर कहने की धादत, में नहीं जानता, मैंने श्रीर कहीं देखी है। बड़ी से बड़ी बात को उलक्ष्म के अवसर पर ऐसे सुलक्षा कर, थोड़े से शब्दों में भरकर कुझ इस तरह से कह जाते हैं जैसे यह गृह, गहरी, श्रप्रत्यत्व वात उनके लिए नित्य-प्रति घरेळ व्यवहार की जानी-पहचानी चीज हो। इस तरह, जगह जगह उनकी रचनाश्रों में ऐसे वाक्यांश विखरे भरे पड़े हैं, जिनहें जी चाहता है कि श्रादमी कंठस्थ कर ले। उनमें ऐसा कुछ श्रानुभव का मर्भ भरा रहता है!

प्रेमचन्द्र जी तत्व की उल्सान खोलने का काम करते हैं, श्रीर वह भी सकाई श्रीर सहजपन के साथ। उनकी भाषा का लेत्र व्यापक है, उनकी कलम सब जगह पहुँचती हैं; लेकिन, श्र धेरे से श्र धेरे में भी वह धोका नहीं देती। बह वहाँ भी सरलता से श्रपना मार्ग बनाती चली जाती हैं। सुदर्शन जी श्रीर कोशिक जी की भी कलम वड़ मजे-मजे में चलती हैं, लेकिन, जैसे वह सड़कों पर चलती हैं, उलक्षनों से भरे विश्लेपण के जङ्गल में भी उसी तरह सकाई से श्रपना राखा काटती हुई चली चलेगी, इसका मुझे परिचय नहीं हैं।

स्वष्टता के मैदान में प्रेमचन्द सहज ऋविजेय
हैं। उनकी बात निर्णीत, खुती, निश्चित होती
है। अपने पात्रों को भी मुस्पष्ट, चारों स्रोर से
सम्पूर्ण बना कर बह सामने लाते हैं। उनकी
पूरा मृर्ति सामने आ जाती है। अपने पात्रों की
भावनास्त्रों के उत्थान-पतन, घात-प्रतिघात का
पूरा-पूरा नकशा बह पाठक के सामने रख देते
हैं। तद्गत कारण, पिरणाम, उसका स्थिचित्य,
उनकी स्थानवायेता स्थाद के सम्बन्ध में पाठक के
हदय में संशय की गुंजायश नहीं रह जाती।
इसलिए, कोई बस्नु उनकी रचना में ऐसी नहीं

श्राती जिसे अस्वाभाविक कहने को जी चाहे, जिस पर विस्मय हो, श्रीति हो, बलात श्रद्धा हो। सब का परिपाक इस तरह क्रमिक होता है, ऐसा लगता है, कि मानों बिल्कुल श्रवश्यम्भावी है। अपने पाठक के साथ मानों वे अपने भेद को बाँटते चलते हैं। अंघे जी में यों कहेंगे कि वह पाठक की Confidence में, विश्वास में, ले लेते हैं। अमुक पात्र अब क्यों ऐसी अवस्था में हैं,--पाठक इस बारे में असमंजस में नहीं रहने दिया जाता । सब-कुञ्ज उसे खोल-खोल कर बतला दिया जाता है । इस तरह, पाठक सहज रूप में पुस्तक की कहानी के साथ आगे बढ़ता जाता है, इसमें उसे अपनी श्रोर से बुद्धि प्रयोग की श्रावश्यकता नहीं होती,-पात्रों के साथ मानों उसकी सहज जान-पहचान रहती है। इसलिए, पुस्तक में ऐसास्थल नहीं आता जहाँ पाठक श्रनुभव करे कि वह पात्र के साथ नहीं चल रहा है,—जरा रक कर उसके साथ हो ले। वह पुस्तक पढ़ने को जरा थामकर अपने का सँभालने की जरूरत में नहीं पड़ता। ऐसा स्थल नहीं आता जहाँ आह खींच कर वह पुस्तक को बन्द करके पटक दे और कुछ देर आँसू ढालने और पोंछने में उसे लगाना पड़े; स्त्रांर फिर, तुरंत ही फिर पड़ना शुरू करदे। पाठक बड़ी दिलचस्पी के साथ पुस्तक पढ़ता है, अोर उसके इतने साथ-साथ होकर चलता है कि कभी उसके जी को ज़ार का श्राघात नहीं लगता, जो बरबस उसे रुला दे ।

'रावन' में मार्मिक स्थल कम नहीं है, पर, प्रेमचन्द्र जी ऐसे विश्वास सैत्री और परिचय के साथ सव-जुड़ बतलाते हुए पाठक को वहाँ तक ले जाते हैं कि उसे धद्धा-मा कुड़ भी नहीं लगता। वह सारे रास्ते-भर प्रसन्न होता हुआ चलता है, और अपने साथी प्रंथकार की जानकारी पर, कुश-लता पर, और उसके अपने प्रांत विश्वास पर, जगह-जगह मुग्ध हो जाता है। पग-पग पर उसे पता चलता रहता है कि कहानी के स्वर्ग में उसका हाथ पकड़ कर ले जाता हुन्ना उसका पथदर्शक वड़ा सह़दय श्रीर विलक्षण पुरुष है। पाठक विलक्षल उसका होकर रहने को तैयार होता हैं। वह बहुत सतर्क न्नोर उद्वुह होकर नहीं चलता, क्योंकि, उसे भरोसा रहता है कि प्रनथकार उसे छोड़कर इधर-उधर भागा नहीं जायगा, उसको साथ लिये चलेगा। इसलिये, प्रथकार को भागकर छूने का श्रभ्यास करके उसके साथ रहने श्रीर, इस प्रकार त्रपरि-चित रास्ते पर फटकों-ध क्रोंको खाते कभी उन पर हँसते श्रीर कभी रोते हुए चलने का मजा पाठक को नहीं मिलता; पर पाठक इस स्वाद को भी चाहता है।

में 'ग्रबन' पढ़ते हुए कहीं भी रो नहीं पड़ा। रवीन्द्र की एकाध किताब पढ़ने में, बंकिम पढ़ने में, शरद पढ़ने में, कई बार बरवस आँखों में याँम फूट आये हैं। फिर भी, प्रेमचन्द की कृतियों से जान पड़ता है कि मैं उनके निकट आ जाता हूँ, उन पर विश्वास करने लगता हूँ। शरद पढ़ते हुए कई बार गुस्से में मैने उसकी कृतियों को पटक दिया है, और रोते-रोते उसे कोसने को जी किया है। 'कम्बन्त न जाने हमें कितना और तंग करेगा!' इस भाव से फिर उसकी पुम्तक उठा कर पढ़ना शुरू कर दी है। ऐसा मेरे साथ हुआ है। इसके प्रतिकृत, प्रेमचन्द की कृतियों से उनके प्रति अनजाने सम्मान और परिचय का भाव उत्पन्न होता है।

शरद श्रार कई श्रम्य की रचनाएँ पढ़ते वक्त जान पड़ता है जैसे इन के लेखक हम से परिचय बनाना नहीं चाहते; हमारी, — श्रथीत पाठक की इन्हें बिलकुल पर्वाह नहीं है; हमारे भावों की रता करने की इन्हें बिलकुल चिन्ता नहीं है; जैसे हमारा जी दुखता है या नहीं दुखता, हम नाराज होते हैं या खुश, हमें श्रच्छा लगता है या दुरा, — इसके स्थाल करने का जरा भी दायित्व उन पर नहीं है; हमारे लिए उनके पास जरा द्या नहीं है। ये लेखक निरपेत्त छौर निश्चिन्त होकर हमें जी चाहे जितना रुला सकते हैं, परन्तु, प्रेमचन्द हमारे प्रति निरपेत्त नहीं हो सकते।

शायद इसी निरपेत्तता की आवश्यकता को विचार कर अंगरेजी की उक्ति बन गई थी, Art for Art's sake ( =कला कलाके लिए )। किन्तु, यह बचन मेरी समभ में सत्य को बहुत अध्रे ढंग में प्रकट करता है; या, कहें, सत्य को खोलकर प्रकट नहीं करता, उसे मानों बाँधकर बन्द करने की चेष्टा करता है। मुझे कहना हो तो कहूँ,—Art for God's sake (=कला परमात्मा के लिए )

रवीन्द्र श्रादि की कृति में किसी एक स्थल पर उँगली रखकर कहना कठिन है कि,—'कैसा अच्छा है !' शरद की ख़्बी समम में नहीं श्राती कि किस जास जगह हैं। एक-एक वाक्य करके देखों तो कहीं कोई खास बात नहीं दिखाई देती। इधर प्रेमचन्द का कहीं से कोई वाक्य उठा लें;— मानों, स्वयं सम्पूर्ण है,—चुस्त, कसा हुश्चा, अर्थ पूर्ण।

पहले ढंग की किताब को जी श्रक्कलायगा तभी हम उठाकर देखने लग जायँगे। चाहे कितनी ही बार पढ़ी हो हमें वह नबीन-सी लगेगी। प्रेमचन्द की किताब को एक बाग पढ़ लेने पर उसे फिर-फिर पढ़ने की तबीयत कम शेष रहती है।

मैंने कहा है,—Art for God's sake श्रर्थान, परमात्मा के प्रति,—सत्य के प्रति कलाकार का दायित्व है। इसको कलाकार जब समझेगा तो पायगा कि उसका अपने प्रति दायित्व है, इसलिए, वह पाठक-समाज की धारणात्रों की श्रार से निरपेत श्रीर निरिचन्त होकर अपने प्रति सच्चा रह कर श्रपने को प्रकट कर सकता है। एक व्यक्ति, समाज या पुस्तक के पात्र की भावनात्रों की रत्ता के प्रति श्रत्यन्त श्रातुर हो। उठने का कलाकार को श्रिधकार नहीं है।

जीवन सुधा----

इस सम्बन्ध में उसे श्रात्यन्त निरंकुश होकर चलना पड़ता है। जिस प्रकार परमात्मा अपने विश्व का संचालन (हमारी-तुम्हारी परिमित समभ के अनुसार ) अत्यन्त निरंकुश होकर करते हैं; विश्व को जरा व्याधि, रोग-शोक और जन्म-मृत्य से बनाये रखते भरा या समूह की किसी खास व्यक्ति कोई विशेष चिन्ता करते नहीं माळम होते; -इतना होने पर भी वे परम द्याल हैं। उनकी द्यालुता किसी विशेष बस्तु या प्राणी के अच्छा लगने न लगने पर निर्भर होकर नहीं रहती। वह इतनी कर्मगत, इतनी व्याप्त अगर इतनी बृहद् है कि उसका कार्य-परिएमन हम छोटी बुद्धि वालों को निरंकुश जँचता है। उसी सबके पिता सिरजन-हार के अनुरूप सर्जन का अधिकार रखने वाले कलाकार को रहना पड़ता है। वह रचना में अत्यन्त निरंकुश होगा, किसी के प्रति उसमें विशेष ममता-भाय है, ऐसा वह नहीं दिखला सकेगा। विद्वान पर मोत श्रायेगी तो उसे दिखला देगा, शठ समृद्धि-बान बनता होगा तो उसे बनने देगा। फिर भी, सहानुभूति ऋौर भेम से उसका हृदयं भरा होना ही चाहिए। यह सहातुभूति या स्नेह इतना उथला न हो कि छलकता फिरे।

संसार में प्रकट में दीखने वाली निरंकुराता के मार्ग से एक वृहद् सत्य की लीला सम्पन्न हो रही है। हम नहीं जानते, इसलिए रोते-भींकते हैं। हम जिन छोटी–मोटी वातों को सिद्धान्त बनाकर काम चलाते हैं, उनकी ज्यों की त्यों रत्ता जब हमें होती नहीं दीखती तब हम दुखी होते श्रीर श्रिक्षर होते हैं। इस तरह, श्रपने अहं-ज्ञान की बीचमें डालकर, हम जिस परमात्मा का विश्वास हमारे लिए सहज होना चाहिए था, उसी को अपने लिए दुष्प्राध्या बारा दुर्बोध्य बना तेते हैं । सबमें निवास करती हुई उसकी द्या-लुता हम नहीं देख पति, इसलिए कहते हैं, 'वह है नहीं; है तो दयालु नहीं हैं, मनमाना (=Cupricious)है।' हमारा तर्क यह होता है--

'हम भले मानस हैं, फिर भी गरीब हैं ; इसलिए, ईश्वर नहीं है; है, तो ठीक नहीं है। 'इसी तरह, कलाकार की वृत्ति में किसी अन्तरतर सत्यको पाने श्रीर सम्बन्न करनेकी चेष्टा होती है,—दुनिया की बनाई धारणात्रों की रज्ञा करने की चिन्ता उसे नहीं होती। सदाचार के श्रीर श्रन्य भाँति के श्रपने नियम कानून बनाकर जीती रहनेवाला दुनिया श्रपनी सत्र धारणात्रों का समर्थन वहाँ पाये ही, ऐसा नहीं होने पाता । ऊपर के तर्क से चलनेवाली दुनियाकी तुष्टिके लिए श्रीर उसके श्रहं-समर्थनके लिए कलाकार नहीं लिखता। इसीसे कहा गया है कि Art for Art's sake,—कला कला के लिए. जिसका कि सम्पूर्ण शुद्ध रूप है Art for God's sake, श्रीर जिसका कि अर्थ है कि कला श्रहंवादी, बुद्धिवादी दुनियाको खुश रखनेकी खातिर नहीं होती; वह God अर्थान् सत्य की प्रतिष्टा के लिए होती है।

प्रेमचन्दजी में उक्त प्रकार की निरपेदता ृपूरे तौर पर नहीं त्राई है। वे पाठक की बराबर परवाह करते हुए चलते हैं, और अपनी किसी बात से सहसा दुनिया को धक्का नहीं देना चाहते। उन्होंन कोशिश करके जिसे सुन्दर श्रीर शिवहर समभा है, लोगों की वर्त्तमान स्थिति को किसी विशेष गड़-बड़में न डालने की चिन्ता रखते हुए वह उसी को लिखते हैं। उनके पात्र श्रशरीरी नहीं होते, सूदम-शरीर भी नहीं होते; वे अतक्ये नहीं हो पाले। वे उंग कुद्ध भी होते हैं, Commonsense (=सामान्य साधारण-बुद्धि ) के मार्ग से ही होते हैं। श्रसाधारणता उनमें यदि प्रेमचन्द कहीं कुछ रखते भी हैं तो मानों साधारणता के मागे स ही उसे प्राप्त ऋ(र प्राप्य बना लते हैं। पाठक के दिल में श्रेमचन्द्रजी के पात्रों से प्रकार का संतोष होता है, कोई गहरी बेचैनो नहीं जाग उठती, कोई गहरा खिचाव जो मित्रता सं त्रागे हो। एक गम्भीर तृप्ति जो संतोप से गहरी हो, नहीं होती। प्रेमचन्द्रजी पाठक का सन

जीवन सुधा-

रख तेते हैं; अपना ही मन पाठक के सामने रखदें, यह नहीं करते।

मैं फिर भी प्रेमचन्दजी को, हिन्दी का नहीं, संसार का लेखक मानता हूँ। बहुत जल्दी संसार भी यह मान लेगा। — क्यों ?

सः मियकता को लाँघकर, मानों सामियकता का श्राधार पकड़ गहरी उतर कर, जो कृति जितनी ही सत्य के श्रमुरूप होकर चलती है, वह उतने ही श्रंश में सर्वकालीन श्रीर सर्वदेशीय होती हैं;— उतने ही श्रंश में वह काल को चुनोती देती हुई चिरजीवी श्रीर देश श्रीर भाषा परिधियों को फाँदती हुई विश्वव्यापी हो जाती है।

सत् है एक, श्रर्थात सत्य है ऐक्य। संपूण सत्ता को सचेतन एकमय देखो, वही है परमात्मा। इस सनातन ऐक्य को पाने की चेष्टा का नाम है. 'श्रेम'। पर वह प्रेम सहज सम्पन्न नहीं होता। यह जो चारों स्रोर लुभाती हुई, भरमाती हुई, भिन्नता फैली है,—उस सब लोभ और भ्रम श्रीर माया के समुद्र में, श्राँख-कान मूँद कर गहरी डुबकी लगाकर पैठने से वह प्रेम कुत्र कुत्र दिखाई पड़ सकता है। इसके लिए गहरी साधना की ऋावश्यकता है। तो भी इस ऐक्य को पाने की भूख भी प्राणी में कम गहरी नहीं है। पर, बहुत-कुंब्र उसकी तृपि में आड़े श्राता है श्रीर वह भूख बहुत तरफ से परिमित, संकुचित भूखी रहती है। श्रीर तो क्या, शरीर ही रुकावट बनकर सामने आता है। यह हमको सबसे एकाकार तो होने दे सकता ही नहीं, फिर भी, इसकी सहायता से भी हम आगे बढ़ते हैं। स्त्री, माँ, भाई, बहिन, पिता आदि नातोंद्वारा, जो इस शरीर के कारण बन जाते हैं. हम अपने प्रेम का विस्तार फैलाते हैं। वह प्रेम नाना स्थानों पर नाना रूप में प्रकट होता है। वह प्रेम तत्काल को पार कर जितन। चिर-स्थायी श्रीर शरीर के प्रतिबंध को लाँघ कर जितना श्राखिल-

व्यापी छोर स्रमजीवी होता है, — छोर इस तरह, तात्विएक स्थूल तृप्ति में न जीकर वह जितना उत्सर्गजीवी होता है, उतना ही वह सत्य के अनुरूप, अर्थात् शुद्ध, बास्तविक छोर आनंद-मय होता है। लेकिन, काल छोर प्रदेश की रेखा-छों से घिर कर ही तो जीव की जीवन-यात्रा चलती है, इसलिए, उसका प्रेम पूर्ण निर्विकार सत्या-गुरूरी नहीं हो पाता। इस तरह, व्यक्ति के जीवन में सहा ही द्वन्द्व चलता है।

इस दृष्टि से देखा जाय तो कलुपित कुत्सित प्रेम कुछ नहीं होता। विस्तृत ऐक्य के जिस तल तक मनुष्य उठ आया है उस तल से नीचे की चेष्टाएँ जब किसी में देखता है, तो उसे कुत्सित आदि कहने लगता है।

तो नाना रूपिणी माया जब व्यक्ति की अन्य सबके प्रति एक प्रकार के विरोध से उकसा कर उसे अहं-भाव में दृढ़ रखने का आयोजन करती है, तब उसके भीतर का गुप्त सिंब शनद इस आयोजन को तोड़-कोड़ कर स्वयं प्रतिष्ठित रहने को सतत उत्सुक रहता है। यह द्वंद्वावस्था ही जीवन की चेष्टा का और उपन्यास का मूल है। यही साहित्य-क्षेत्र है।

प्रेमचन्दजी इस इंडाबस्था की अच्छी सूद्म दिन्द और सहानुभूति के साथ चित्रित करते हैं और इस इन्द्र में वह जिस निर्मल प्रेमभाव की प्रतिष्ठा करते हैं वह देहातीत होता है, —वह बीतते हुए चए के साथ मिटता नहीं। वह सेवामय प्रेम दुनियादारी की ग़लतफहमियों की, अझानता की, विफलता की, हीनता की कितनी ही किठनाइयों के साथ लड़ता-मगड़ता हुआ भी अक्षुएए और उत्सर्ग-तत्पर रहता और रह सकता है, — इसका चित्र प्रेमचन्दजी सजीव करके उठा लेते हैं। वहीं सजीव प्रेम, अर्थात् सत्य, जो स्वयं टिकाऊ है, उनकी कृति को भी चलते समय के साथ मरने नहीं देगा। मैं कहता हूँ कि जीवन सुधा प्रेमचन्द्जी ने श्रपनी कृति में जो चिरस्थायी श्रीर कर्मशील प्रेम का बीज रख दिया है, वह सामियक नहीं है, उसमें स्थायित्व है।

सामयिकता से प्राण खींच कर कहयों ने रचनायें की हैं जो रंगीन होकर सामने आ गई हैं, पर अगर आज वह हाथों-हाथ बिकती हैं तो, हमने देखा है, कल वह मर भी जाती है। जो रचना शाश्वत सत्य के श्वास से जितनी अनु-प्रणित होगी, वह उतनो ही शाश्वत और अमर होगी। माया में से रस खींचकर, देश और काल के प्रतिच्चण श्रोर प्रति-पग बदलते जाते हुए श्रादशों श्रीर भावों को श्राधार बनाकर, सामयि-कता की लहर पर नाचती हुई जो कृति हमें लुभाने श्राती है, वह श्राज हमें लुभा ले सही, पर कल हमें ही उसकी याद भूल जायगी, इसका हम विश्वास रखें।

प्रेमचन्द्रजी की कृति सामयिकता को परिधि को लाँच कर और हिन्दीभाषा की परिधि को लाँच कर किसी न किसी हद तक विश्व और भविष्य की खोर बढ़ेगी। निस्संदेह, उसमें ऐसा बीज है।

### "उठो भारत के बालक वीर"

[ श्री विमला बाई अवस्थी |

भारत जननी दुखी तुम्हारी बहे नयन सों नीर,
राह तुम्हारी मात देखती होकर विकल अर्थार ॥ उठो ॥
कर्म चेत्र में जुटो कमर कस, हरो सकल मिल पीर,
थके बृद्धगण सम्हलो सुत सब, पड़ी देश पर भीर ॥ २॥
दीन दशा तन चीण हुए सब रहा न तन में चीर,
ऐसी दशा देखकर भी सुत हा ! हुए मौन गम्भीर ॥ ३ ॥
कर की घड़ी छड़ी अब छोड़ो, गहा धनुष औं तीर,
"विमल" वीर माता कहलावे, जभी मिटे उर पीर ॥ ४ ॥

### फूलका अजाम

THE THE TREE TARREST STATES AND ALL AND MANAGEMENT AND ALL AND

#### [ श्री उपेन्द्रनाथ ऋश्क ]

वह सिनेमा पर लप्ट थी।

हर दूसरे तीसरे सिनेमा देखने जाना उसके नित्य-क्रम का एक भाग हो चुका था। देशी चित्रपटों से उसे खास लगाव था श्रीर उनकी बृदियों के बावजूद वह उन्हें ही देखना पसन्द करती थी। कई किल्में तो उसने कितनी ही बार देखी थीं।

कालेज से डिमी लेकर एक श्रच्छी एक्ट्रेस बनने की श्राकांचा उसके दिल में मोजूद थी।

बह शिक्तित थी, सुन्दर थी, श्रंगृर की बेल की भांति कोमल, कमल के फूल की तरह विकसित।

#### (?)

श्राज उसे श्रपने सामने बैठा देखकर वह श्रपने श्रापको भूल गई।

वह पंजाब युनिवर्सिटी का प्रेजुएट था श्रीर प्रसिद्ध फिल्म कम्पनी का प्रधान एक्टर । उसके मुख पर मुस्कराहट खेल रही थी, श्रीर वह चित्र-लिखित-सी उसे देख रही थी।

श्रभिनेता इतने रूपवान नहीं होने जितने वे रूपहली परदे पर दिखाई देते हैं—यह बात उसे श्रसत्य प्रतीत हुई। वह कितना सुन्दर था, कितना विलिष्ठ, कितना प्रसन्न-मुख !

फिल्म में भी वही पार्ट कर रहा था । वह कभी परदे पर निगाह डालती कभी उसके सुन्दर चेहरे पर। श्राज तक वह कल्पना में ही उस देखा करती थी—जब उसकी कोई फिल्म देख कर घर जाती तो कल्पना में उसके चित्र बनाया करती। श्राज वह प्रत्यत्त उसके सामने बैठाथा। उसी की फिल्म लगी हुई थी। वह उसमें श्रपना पार्ट, श्रपना श्रमिनय देखता था। श्रीर श्रपने मित्रों के किसी मजाक पर मुस्करा पड़ता था। श्रीर वह कितनी प्रसन्न थी, कितनी उद्धसित ?—परदे से हटकर उसकी हिंद्य उसपर जम चुकी थी।

फिल्म समाप्त हो गई--उसके दिल को धका लगा ।

वह ऋनिच्छापूर्वक घर की ऋोर चली— परीता में फेल होने वालं विद्यार्थी की तरह, घर से रुपये उठाकर भागे हुये लड़के की भांति!

#### (३)

दूसरे दिन वही फिल्म चल रहा था फिर भी उसे देखन चली गई। वह वहाँ मौजूद न था। वह उसकी प्रतीक्षा करती रही; पर वह कहीं दिखाई न दिया। परदे पर आया 'गुड नाइट'—श्रीर वह निराश, उद्धिम उठ खड़ी हुई।

घर श्राकर उसने उसे पत्र लिखा श्रीर उसमें श्रपना हृदय खोलकर रख दिया—में तुम्हें दिल से प्यार करती हूँ.....में तुम्हारे लिये संसार भर को तिलांजली दे सकती हूँ। कीयन सुधा

...सुन्दर हूँ, सुशिद्यित हूँ...श्रीर चन्द ऐसे ही तोल में कमजोर पर प्रेम भरे वाक्य !

उसने पत्र को बन्द किया ऋौर स्वयँ जाकर लेटरबक्स में डाल आई। सारे दिन उसके हृदय में उथल-पथल मची रही।

#### [8]

उसकी अभिलाषा पूरी हो चुकी थी। वे दोनों बाटिका की रिवशों पर टहल रहे थे। उसने एक फूल तोड़ा और एक अच्छे एक्टर की भाँति उसकी खोर ले गया।

उसने उसे सूंचा श्रोर फिर उसकी सुगन्धि से श्रपनी प्यास बुका कर बेखुरी में मसल डाला श्रीर धरती पर फेंक दिया।

नाजुक फूल उसके पाँबों तले आकर रोन्दा गया उसने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया और अपने प्रेमी के हाथ में हाथ दिए द्वार की ओर चल दी।

#### [ x ]

वह एक सफल अभिनेत्री थी।

लोग उसके नाम को सुन कर बेताब हो जाते थे। उसका ऋभिनय देखने के लिए टूटे पड़ते थे उसके चित्रों से ऋपने ड्रायंगरूम की शोभा बढ़ाते थे।

ं उसकी मेज पर पत्रों का—प्रेम से सने हुए पत्रों का—श्रंबर लगा रहता।

उसके चित्र देशभर की पत्र-पत्रिकाश्रों में निकलते। उसकी श्राकाँ ज्ञाश्रों का यह हिस्सा भी पूरा हो चुका था; किन्तु बड़ी कीमत देने के बाद—उसके पहलू में वह दिल नहीं था—काम-नाम्रों की दुनिया उजड़ चुकी थी, श्राशाम्त्रों का स्तात सुख गया था।

श्रपना उल्लास खोकर वह श्रब दृसरों के लिए प्रसम्नता जुटाने का रोजगार करती थी। उसके श्रन्तस्तल में किसी घटना की कसक मौजूद थी।

#### [ ६ ]

वह शृंगार के कमरे में बैठी श्रयने श्राप में खोई जा चुकी थी।

सामने श्रंगीठी पर, बड़े कद-श्रादम दर्पण के दोनों श्रोर दो फूनों के गुलदरों रक्ते हुए थे। वेखुदी में उसने एक फून तोड़ा श्रोर श्रन्य-मनस्कता से उसे श्राप्ती श्राप्तीलयों में मसलने लगी।

सहसा उसे बाटिका की याद हो ऋाई ऋौर उसके दिल से एक लम्बी सांस निकल गई।

—क्याउ काभीफूल कासा श्रंजाम न हुश्राथा?

"मिस स्रहिबा तैयाः हो गई ?" डायरेक्टर की कर्कश द्यावाज ने उसे चोंका दिया। उसके विचारों का सिलसिला दूट गया। कल्पना की किल्म बीच में ही कट गई। गुलाम वह, लाचार वह, पराजित वह !!!

उसने एक दीर्घ निश्वास छोड़ा श्रीर श्रपने बालों को सँवारने—श्रपने भाग्य को श्रधिकाधिक उलमाने श्रीर युलमाने में लग गई।

[ श्री 'बच्चन' ]

धृलि-मय नभ, क्या इसीमे बांध दूँ मैं नाच तट पर ?

(8)

(२) प्रात की स्वर्धिय विभा में

भौर दिन की रोधनी में,

सांध्य नम को लालिमा

देखने बेग से वर शब्द 'सन-सन' टूट पृथ्वी पर पहेगा पश्चिमी नभ ,सं प्रभंजन,

भीत हो सारी दिशाएँ , धन तिमिर में जा छिपेगो, जायगा भर धोर हाहा-कार से बन और उपवन,

> हो विकल-विद्वल तरंगे बढ गिरंगी, निर वहेंगी, जल-धपेड़े खा उठेगी कांप मेरी नाव धर-धर

> > धूलिमय नम क्या इसीसे नाभ दूँ मैं नाव तटनर ?

वायु के भनुक्त अपना पाल कैलाता, गिराता मै चुँका हूँ पूम गाता

स्बच्छ बल बहोतिनी में;

इवेत श्लीतल

भाज में तम-तोम भातर देख कर पीछे रहूं यदि, काम किस दिन भा सकेगा जो रही जग ज्याल अन्दर ?

> धूलि-पय नम, क्या इसी से बान्ध दूं में नाव तट पर ?

( ₹ )

ठीक, लहरों से प्रताड़ित हो करेगी नाव 'मर-मर' फेन फैलाता तटों पर कर उठेगा नीर 'धर-धर'

ध्योम के सुनसान घर में शब्द 'सन-सन' भर उठेगा, कर चलेगी तीर पर फैली दुई बन-राजि 'हर-इर'

> किन्तु इतने से मला वह किस तरह हो मौन दैठे, विद्य का चीस्कार गाने जो चला है राग में भर!

> > भूलि-मय नभ क्या इसी से बांभ दूं मैं नाव तट पर?

> > > ( )

श्राज है अस्थिर गगन
श्रास्थिर सलिल-तल हो रहा है,
किन्तु अस्थिर हो न मांभी
धैर्य अपना खा रहा है,
केलने को इस बड़े
तुफान के कॉके-भकोरे

मानवी सम्पूर्ण साहस वत्त बीच सैनी रहा है

अविन अध्यर की तरान् साम्मे यव दी गई है, क्यों न तोल्ं आज अपनी इक्ति इस पर गर्वे से घर ? धृलि-मय नभ क्या इसी से बांघ टूं मैं नाव तट पर ? (8)

जायमा उड़ पाल होकर तार-तार विशद गगन में; ट्टकर मस्तूल सिर पर आ गिरेगा एक चया में,

नाव से होकर श्रलग पतवार धारा में बहेगी, डांड छूटेगा करों से, पर बचा यदि प्राण तन में,

> तैर कर हो क्या न अपने ध्येय को मैं जा सक्तृगा, मध चुके है कर न जाने बार कितनों विश्व—सागर

> > धृलि-मय नम क्या १सी में बांध दूं में नाव तट पर ?

### तीजो

#### [श्री हरदयाल ]

गनपति सुबह सबेरे उठा और पत्नी से बोला-फिर जाता हूँ, दो-एक जगह और उम्मेद है, शायद रूपये मिल जायं और पायल तुम्हारी खुट जायं। 'फिर पायल !.... कुछ काम नहीं?' खिन्न होकर वह बोली।

'काम तो रोज ही रहता है, पर तीजो-'

'तीजो! तीजो कहती है कि पागल बन जाश्रो! श्राज दस दिन घूमते हो गये श्रौर फिर भी समम नहीं श्राई। पूछती हूँ— चीज वापिस श्राती तो जाती ही क्यों ? एक दस रुपयों के लिए तब भी तो श्रठवारों टक्कर मारते फिरे थे श्रौर श्राखिर वह नहीं रकी। वही वहम फिर श्रव सवार.....। यही क्यों ? मैंने तो उसी वक्क कहा था—यह चीज मुम पर नहीं रहेगी, फजूल तन-पेट काट कर जो ये रुपये बचे हैं, उन्हें खोते हो। लेकिन न मानी। श्रौर वही हुआ,— जहाँ से श्राई थी वहीं फिर पहुँच गई। सिर्फ इतना दंड भरना था—' वह कहती जा रही थी श्रौर गनपति गरदन नीची किए खड़ा था।

'खैर गई तो गई, पर उसके पीछे, अपने को क्यों खाते हो। कल सुबह के गये आधी रात लीटे आरे अब फिर जाते हो। 'सुझे भय होता है कि तुम कहीं...... मुँह देखों न ? पायल ही तो शायद चाहिए ? मैं कहती हूँ—मर-खप कर आज एक चीज पैरो पड़ ही गई, तो कौन शान बढ़ जायगी, या नहीं मिली, तो भी क्या—रहने दो, पाँच पड़ती हूँ' तीजों का यह चाव जहाँ

श्रच्छा लगता है, लगता है, यहाँ नहीं!' उसका ' गला भर श्राया।

'लेकिन तीजो.....मनानी तो है ही—सभी मनाते हैं।'

'तो मैं कब मना करती हूँ ? मनाश्रो। यह सब स्वांग बिन पायल भी हो सकता है ? पर हाँ, उनके बिना वह पूरा कैसे होगा ?' कहते कहते उसकी खिन्नता हँसी के एक टहके में फूट निकली श्रीर वह बोली—'जाश्रो न, जाश्रो तीजो की उमंग को रोकना श्रच्छा नहीं, वर्ना वह नाराज हो जायगी।'

वह हँस रही थी और गन रित पागल सा-खड़ा देख रहा था। पर इस दिन पत्नी को पायल-पहने देखने की जो उत्कर्टा वह इतने दिनों से पोषित करता आया था, कैसे एक-दम खत्म कर दे। वह सोच ही रहा था कि टद-प्रतिज्ञ हुआ, किन्तु कुछ हरता-सा, आखिर बोला—अब तो और भी देखूं। तुम जानती नहीं—किसी आभूषण का न होना आज कितना अशुभ लगता है।... अच्छा आता हूँ। यह कह कर वह बाहर की ओर घूम गया और चला गया।

वहीं किवाड़ के सहारे दुलक कर वह भी 'मरना तो शुभ है !' यह कहते हुए बैठ गई।

 $\times$   $\times$   $\times$   $\times$ 

वह घूम रहा था—श्राशा लगाये। यहाँ नहीं, अच्छा वहाँ, तो वहाँ, वहाँ तो श्रीर भी—धूमना ही रहा। इससे मिल, उससे मिल, फिर मिल-फिर भी श्राशा बनी ही थी।

घूमते-घूमते कितने ही ऐसे तारे, दूर-बहुत दूर से, उसके घ्राशा-चितिज पर प्रकट हुए श्रीर श्रस्त हो गये। कुछ भी जानकारी जिनसे थी, के भी कुछ चए के लिये मित्र बने श्रीर लुप्त हो गये।

श्राखिर सभी से वह मिल लिया श्रीर फिर कोई दिमारा में न चढ़ा। पैर तब जबाब देते जान पड़े श्रीर श्राँखों के श्रागे श्रंधेरा घिरने लगा। चुनाचे चलते-चलते श्रानायास ही उसके पैर एक पार्क की श्रोर घूम गये श्रीर बह धम से एक बेंच पर श्रा रक्खा जैसे गया।

बैठा हुन्ना था किंतु समूचा त्रपने ही मीतर समाया हुन्ना, बाह्य-जगत की पहुँच के मानों नितांत बाहर । भीतर ही भीतर बह किसी को सममा रहा था, त्रौर किसी को धिकार रहा था, किसो को सुला रहा था, त्रौर किसी को जगा रहा था,—बहुत व्यस्त मालूम होता था किंतु धीरे-धीरे उसके चेहरे का काठि त्रौर कसाब ढीला हुन्मा मोर वह किसी सांस्वना की गोदी में सोया-सा जाने लगा।

पर आकस्मात् उसका मुँह उपर की स्रोर उठ गया—देखा एक बदली है जिसकी फुहार उसके मुंह को गीला कर रही है। एक बार सारे ही स्नाकाश पर उसकी हिंद फिर गई स्रोर बह अपने से निकल कर जैसे बाहर स्ना गया। काले, पीले, सकें द बादल ही बादल सारे में घूसते दिखाई दिये। फिर तो धीरे-धीरे बहती हुई ठंडी पुर्वा भी कानों में सरसराती महसूस हुई स्रोर उसी चए, सामने सड़क के उस पार, मर्स्ता से झूमते हुये पेड़-पौघे भी उसकी स्नालों में स्नागये—स्रोर उसी स्रोर से उसके कानों में पड़ी एक रसीली तान—

> बालें हैं मोर री ! बरखा में। कौन भुलावें भूलना बरखा में।।

वह दत्त-चित्त हुआ उस श्रोर देखने लगा। हरी, पीली, नीली, लाल—िक्तमिल-िक्तमिल साढ़ियों और चम-चम होते श्राभूषणों से विभूषित युवितयों का एक मनोहर पुष्पोद्यान-सा विकसित हो रहा था। तीजो ! वह बोला और फिर अपने ही में जैसे वापिस होगया लेकिन 'तीजो !'फिर उसके मन ने कहा श्रीर उस शर्राक का घर उसकी श्राँखों के सामने श्रा गया।

'तीजो, तीजो'—तीजो से उसकी चेतना ही खोत-प्रोत हो गई और वह सिमट कर उस एक कोने में—जहाँ पायल रक्खी थी—फँसी-फँसी सी फण पटकने लगी । थक-थक कर उसे बीच-बीच में ध्यान हो उठता था घर का, किंतु घर जैसे व्यंग कर पृद्धता था—क्या गये ? वह खिंचा-खिंचा, मिंचा-मिंचा-मा जा रहा था।

आखिर फिर! उसकी सहायता मेघ की एक मल्हार ने की और किमी के पंजे से छुटकर मानों उसे फिर बाहर की और देखने का मोका मिला। लेकिन देखते-देखते वहीं तो वह फिर पहुंच गया जहाँ से लौटा था—उस तीजो में।

श्ररसे तक उसके हृदय का यह उलट फेर होता रहा। किंतु एक चाग जैसे ही उसे घर का ध्यान श्राया; कोई कहते सुन पड़ा—फिर पागल! कुछ काम नहीं न ? तीजो! तीजो कहती है कि पागल बन जाश्रो।

पागल हूँ, पागल, सचमुच पागल हूं—मन ही मन स्त्रीकार कर वह अपने को जैसे कोसने लगा। पागलपन है, निरा पागलपन—इस प्रकार बेकार समय वरवाद करना—वह सोचने लगा और सोचने-सोचते 'आग लगे तीजो में' यह कह कर बेंच से उठ खड़ा हुआ।

उठा श्रौर सड़क पर श्रा गया—जो उसके घर को जाती थी।

वह जा रहा था—दुनियाँ से सर्वथा विरक्त सा हुआ। विरक्ति ही नहीं, उसके चित्त में ग्लानि भरी थी- उन सबके प्रति जिन्हें देखकर ऋभी वह विकल हो उठा था। इधर उधर देखते भी उसका मन घृणा से सिहर-सिहर उठता था।

वह जा रहा था — अपने भीतर चारों श्रोर से तालें ठोंक कर श्रीर उन पर अपनी श्रात्मा का प्रहरी बिठ ता कर।

किन्तु जाते-जाते, उसे किसी ने मानो यकायक रोक दिया। 'मीठा!' एक दम उसके कान कह उठे। कोन ?' किसी ने उसके भीतर से पूछा श्रोर श्रांख एक दम कुछ देखने को प्रशृत्त हो गई। भीतर से ध्वनि श्राई 'सुन्दर!' श्रोर वह समूचे का समूचा उस श्रोर श्राकुष्ट हो गया।

वह सुन रहा था, देख रहा था। श्रीर सुनते देखते-देखते भीतर से मानो उसकी निराशा ने देवे-देबे कहा—'तीजो हैं! उंह!' श्रीर फिर उसका रून घर में पत्नी श्रीर पत्नी की पायलों में पहुंच गया। वह फिर कह उठा—बकार। चलो! श्रीर चलने को उद्यत हुआ।

कितु पैरों में गति होकर रह गई। कानों में किसी ने कहा—मैं, मैं अमृत हूँ, मुझे पी लो। आंखों से कोई बोला—मैं, मैं जीवन हूं, मुझे ले लो। उसका दामन पकड़ कर कोई पूछ रहाथा—हम, हम से क्यों रूठते हो? हमने तुम्हें क्या कब्ट दिया है ? वह हिल न सका।

वह खड़ा था, सुन रहा था, और सव कुछ देख रहा था। पर मन ही मन कह रहा था—क्या यह सव बेकार है ? घुणा योग्य है ? बिल्कुल झूठ ? किंतु फिर भी इस हृदय को ये मीठे क्यों लगते हैं ? तो क्या जो कुछ मीठा है, वह कड़ वा है ? मीठा लगना ही कड़ वापन है, तो क्या मीठा लगना नाम ही निर्ध्यक नहीं है ? ये तो सुझे कुछ देते ही हैं, माँगते तो नहीं ? फिर भी इन्हें देखकर न जाने क्यों मुझे घुणा हुई। इन्हीं को देखकर शायद मुझे कष्ट हुआ था, इसलिए ? पर इनमें तो कष्ट देने की समता ही नहीं। मैं इन से कैसे मुँह मोड़ लूँ, कैसे नाक सिकोड़ खं। तो किर कुछ मेरा ही कसूर होगा। होगा, मेरा ही होगा। श्रीर किसका हो सकता है? लेकिन मेरा क्या कसूर? ..... क्यों नहीं? है तो। मैं इन्हें क्यों देखता हूं, जब कि इन्हें देखना मुझे वर्जित हैं? मैं क्यों इनके संसर्ग का श्रीसलाश करता हूँ, जब कि मुझे श्रीधकार नहीं है? श्रव्हा, श्री मधुर बनो, खूब मधुर! श्रीर सुन्दर! तुम खूब सुन्दर! तुम्हें मेरा श्राशीवाद हैं! लेकिन मेरे साथ एक भलाई करो, करोगे? मेरे सामने मत श्राश्री! ..... पर, यह, यह मैं क्या कह गया? श्ररे, ये तो स्वयं ही वर्जित हैं। नहीं, नहीं, मैं ही तुम्हारे सामने क्यों आऊँ? श्रव्हा ..... अच्छा।

वह फिर घर की श्रोर प्रवृत्त हुआ।

वह जा रहा था। उसका सब ध्यान बस खब एक द्योर था — उस द्योर जहाँ वह किसी को इन्तजार करने के लिये छोड़ द्याया था। उसके संतोष, धंर्य, द्योर शाँत स्वभाव पर ज्यों-ज्यों वह विचार करता था, त्यों-त्यों उसकी गति तीव्र होती जा रही थी। कहीं-कहीं इधर-उधर से जब कोई भी किसी प्रकार उसे तीजो का स्मरण कराता था, बस एक द्यारीर्वाद की भावना से उस द्योर देखकर, द्रापने हृदय पर हाथ रख लेता था और कहता था— रहो, रहो!

इसी मार्ग पर वह उस गली के सामने से
गुजरा, जिसमें कुछ ही दूर पर शर्राक का घर
दीखता था। उसकी स्मृति जग उठी, बही तो बह
दुकान है। कह आया था— तीजो से पहले ले
जाऊँगा। रक्खी होंगी—यहीं इसी दुकान में तो।
दूकान तो बन्द होगी। आज तीजो है। सेठ जी
बच्चों को घुमाने ले गये होंगे। वे रक्खी होंगी
दूकान में। तो शिश्वोह! में क्या सोचने लगा।
रक्खी हैं, रक्खी रहने दो। उनका क़सूर श्रीर
न रखने वाले उन्हीं का क़सूर शरखते नहीं तो
क्या फेंक देते शरखना तो नियम ही है। सभी
अपनी-अपनी चीज रखते हैं। और जितना ही

जो कोई रक्खे, रक्खेगा ही, रख सकता है तभी तो रक्खेगा। लेकिन फिर भी वे किसी पर कुछ छोड़ दें, तो यह उनकी दया है, उनका परोपकार है। शेर जब तक किसी को नहीं खाता है, उसकी कृपा है, सभी की एक साथ नहीं चर पाइता, यह उसका संतोप है, छौर निकाल सकने की शक्ति रखते हुए भी किसी को अपने जंगल में रहने देता है, यह उसकी उदारता है। ये ही सब गुए हैं। श्रीर इनके लिए निर्वल का होना जरूरी है। जरूरी है, नहीं तो गुणों का विकास कैसे होगा ? तब तो मेरा भी जीवन सार्थक ही है । श्रोह ! मैं दीन हूँ, तो क्या ? इसमें मेरी सार्थकता है। जितना भी मैं दीन हुं अपने को धन्य समझ्ँ। क्यों न समझूँ १-मानो मैं सड़ ही रहा हूँ, पर क्या एक स्वस्थ हृदय में मुझे देखते ही, दया का स्रोत न उमड़ पड़ेगा ? यही क्यों ? उस दया की फलक मात्र ही से मैं गद्गद् हो उट्गा। श्रद्धा श्रोर भक्ति पुकार उठेगी—नुम देवता हो ! क्या यह सार्थकता नहीं है ? मुझे दिखता है, साक दीखता है—दैन्य ही से तो सब गुणों का विकास हुन्ना। नहीं तो कें।न जानता द्या, परोपकार, उदारता या ऋहिंसा को १ ऋार कहां देखने को मिलते सज्जन। यही क्यों..... मुझे तो कुञ्ज श्रीर भी दीखता है। सज्जन से साधु, साधु से संत, संत से महात्मा, महात्मा से देवता, र्खार देवता से ?..... हां, ठीक तो है ..... **ईश्वर, ईश्वर से परमेश्वर—यह सब उ**सी का नो विकास है। उसी का, उस दीन ही का तो। च्योह ! उस की यह महिमा ! महिमा ? उस की ? तो क्या वह दीन नहीं ? यह मैं कैसे मान 🥳 । बह रोता है, रोला है। हैं, दूसरा तो नहीं। मैं दुख जानता हुं: पर उसे सुखकैसे मान हुँ । खीर यदि मान भी लूं, तो फिर मैं दीन कैसा ? और वह सार्थकता-महिमा-कहां ? नहीं, नहीं वह दीन तो है ही कीर सार्थक भी है ही, महिमा उस की हो न हो, क्यों कि उसीने सब का विकास कराया

है । लेकिन .....इसगुण-विकासकी सार्थकता ? वह दैव्य को हरने में है। हरने में नहीं, तो वे गुण गुण ही न रहेंगे। हां, हरते ही हैं। तो इस तरह तो दीन कभी चुक सकते हैं ? श्रीर दया, परोपकार, उदारता, श्रद्धा; भक्ति--ये सब फिर कहां रहेंगे ? संत, देवता, ईश्वर, परमेश्वर कहां किस मन में ठहरेंगे १ इन के बिना जीवन फीका न लगने लगेगा ? नहीं, कुछ न कुछ दीन रहते ही चाहिए, दया और भक्तिका स्रोत बहना चाहिए ही। फिर कुछ ही क्यों ? अधिक से अधिक दया श्रीर भक्ति के लिए अधिक से श्रविक ही दीन न हों ? हों..... दीन हों .... अधिक से अधिक ऋं र वे.....सच सुच दीन हों १ ऐं ... यह मैं कैसे कह दूँ १ तो क्या हो १ क्या न हो १ एँ 🤈 भैं जानता हूं-दीन कैमा होता है ? खोह ! वह ? न हो, न हो श्रीर सभी दीन यह चाहते हैं। लेकिन उन के चाहने संक्या होता है ? होता, तो ये दोन क्यों होते १ नहीं उन्हें रहना पड़ेगा आर ईश्वर ? .... ईश्वर ! तू ईश्वर रहेगा, परमेश्वर रहेगा! देवता, महातमा. संत ऋार साधु--पह सब तेरा समाज रहेगा! श्रीर द्या,श्रद्धा... सब कुत्र रहेगा ! स्त्रोर दीन भी रहेगा ? हे ईश्वर ! इस रहने से.....क्या.....क्या..... श्ररे! मैं यह क्यों पृञ्जने लगा। मैं भी नो दीन ही हूँ। पूजने का मुझे अधिकार ? हो भी तो सुनेगा कान ! श्रीर सुनता तो में दीन ही क्यों होता.....मै क्या क्या सांच गया? सत्र बेकार बेकार!

गरने भर इसी प्रकार उसके मस्तिष्क में बादल के बादल जैसे विचार उठते श्रीर लुत होते रहे। वह चला जा रहा था—सुलक्षाने की कीशिश में श्रीर श्रीधक उलकता हुआ। किंतु उसके पैर स्वयं ही उस चिरपरिचित स्थान की श्रीर श्रीर अप्रसर रहे श्रीर उसे उस दरवाजे पर ला खड़ा किया जहाँ से यांता प्रारंभ की थी।

गनपति दरवाजे पर पहुंचते ही सहम स। गया और ठिठक कर एक ओर खड़ा हो गया। किंतु जीवन सुधा

उसका प्रयास व्यर्थ ही हुन्ना क्योंकि मकान
मालिक की लड़की—सजी—प्रजी साज्ञात तीजो
जैसी—उसे देखते ही उधर लपकी न्नोर बोली—
भैया! भाभी झूलने को नहीं चल रही हैं। चिलये,
जरा उनसे कहिए तो। इतना ही नहीं, पकड़ कर
उसने उसे वहीं ला खड़ा किया, जहाँ भाभी बैठी
थीं। गनपित को मानो बिजली छ गई। बह निष्चेष्ट, नतटिष्ट न्नीर न्नोरनेतन सा खड़ा सोचने
लगा—में कहां न्ना गया?

लेकिन तुरंत ही पत्नी बोली—तुम तो मेरी बात मुनते ही नहीं ?.........खेर, अब तो बैठो। खडे रहने से क्या होगा ?'

गनपति ने मानो अभय का वृंट पिया। किंतु फिर भी वह नुचा-नुचा ही जा रहा था-क्या इसी योग्य हूं, केवल दया योग्य १ न वह बैठा, न उसने कुळ उत्तर ही दिया।

पर हाँ इसी बीच में वह पास खड़ी हुई लड़की बोल उठी—भैया, तुम्हीं क्यों नहीं इनसे जल्ही तैयार होने की कहते हो ?

कैसी तैयारी ? गनपित समक गया श्रीर इस शब्द से उसका रोम-रोम खड़ा हो गया। कुछ उत्तर न देकर उसने श्रपनी श्रीय श्रीर श्रिधक दृद्वा से जमीन पर गड़ा लीं।

किन्तु उसी वक् भी नहीं जा गी, बिटिया ! भैने कह दिया। ये भी लाख कहें, तो न जाऊंगी। तुम क्यों खड़ी हो ? पर हां , अपनी तीजो खोनी हो तो खड़ी रही।

इस हड़ विश्वास को सुनकर विटिया से चलते ही बना छोर वह कमरे से बाहर हो गई।

त्रब वह फिर गन गित की स्रोर प्रवत्त हुई धोर वोली—खड़े ही रहेगे ? स्रच्छा खड़े ही रहने की इच्छा है, तो सास्रो घूमने चलें। स्रोर उठ-कर गनपति का हाथ स्रपने हाथ में ले लिया। गनपति आपत्ति ही क्या कर सकता था, मुँह खोलने को उसकी तबियत न होती थी।

दोनों घूमने निकल गये श्रीर चलते गये, शहर से बाहर, दूर, दूर जहां तीजो का एक चिन्ह न दिखाई देता था।

जाकर वहीं सड़क के किनारे एक घास के मैदान में बैठ गये। सामने हरियाली का विस्तार था-दूर चितिज के उस छोर तक। पीछे शहर के ऊंचे ऊंचे मकानों का एक पहाड़ साथा। वे बैठे थे।

दोनों खामोश थे। किन्तु निःस्तब्धता को भंग करते आख़िर वह बोली ही—यह घास कितनी अच्छी लगती है।

'हां' गनपति ने कोशिश करके उत्तर दिया। श्रोर हवा कितनी स्वच्छ माछ्म होती हैं ? 'हां'

एक दम खामोशी है। शहर की धौं-धौं, पौं-पों से क्या यह ऋच्छी नहीं लगती ? जी होता है यहीं बस जायं।

'हां'

'हां-हां—बस ! कुझ और भी ? अब भी तीजो ही चढ़ी हैं क्या ?'

'हां, चढ़ी है' गनपित विवश होकर बोला। 'लेफिन में सब कुछ मुन रहा हूँ। यह जगह भी अच्छी है, हवा भी साक है और खामोशी भी उस धों-धों पों-भें से अच्छी ही है। इससे कीन इन्कार कर सकता है? हां ही ता कहनी पड़ेगी। पर मैं सोचता हूँ—क्या हमें अभी ही शहर नहीं लोट जाना होगा? या जहां तुम बसना चाहती हो, वहां दूसरे वसना न चाहेंगे। पगली! जहां शहर बसा है, वहां भी कभी ऐसा ही मैदान था।' वह कह रहा था और उसकी संगिनी वास्तव में पागल सी देख रही थी।

'यहां सब कुछ अच्छा है, क्योंकि यहां मनुष्य नहीं है, मनुष्य होंगे तो शहर हो जायगा १०३ श्राप ठीक कहते हैं, मैं गलत समकी थी। ख़ैर श्रव श्राप में समक श्रा तो गई। इनसे ख़ुट-कारा नहीं पा सकते। लेकिन श्राप तो फिर भी सोच करते मालूम होते हैं। क्यों, सोच करना क्या वृथा नहीं है ?'

वथा मालूम होता है क्यों कि अभी हम इस शहर से प्राण क्याकर थोड़ी-बहुत देर सांस लेने के लिए यहां आ सकते हैं। समभी! लेकिन न मुझे दीखता है कि कुछ क्क में यह भी वृथा होने लगेगा। और हमें सोचना ही पड़ेगा, सोचना ही पड़ेगा।

'क्या ?'

यही कि एक जगह बिना रहे हम नहीं रह सकते, बिना शहर बसाये हम नहीं बस सकते, और बिनातीओ लगाये हम नहीं जी सकते। लेकिन सोचता हूँ क्या मिलकर रहने का यही एक तरीका है ? बेहतर शहर नहीं बसा सकते? और श्रव्ही तीजो नहीं लगा सकते?—

पूछती हो—क्यों सोच करते हो ? तो बताऊं ? मैं जितनी ही दूर शहर से चला आया हूँ, उतनी ही अधिक बेचैनी मुझे हो रही है। जी होता है—वहीं चलूं, अभी चलूं, बहीं रहूँ और देखूं कि मैं उसमें क्या कर.....उसकी वाणी रक गई, आँखें तन गईं, चेहरा तमतमा उठा और प्रातःकाल के उठते हुए सूर्य की तरह काँपने लगा।

देखकर सामने बैठी मूर्ति भी ऋधीर हो उठी। बोर्ली—ऋच्छा, देर होती है, चर्ले।

वे उठे और चल दिए। सामने शहर था, पीछे मैदान और शून्य। दोनों तेजी से बढ़ें चले जा रहे थे।

# 'बच्चन' जी और हिन्दी-काव्य-धारा की नवीन प्रगति !

भी योगेन्द्र नाथ भार्गव ]

श्रीयुत 'बच्चन जी' के साथ साथ हिन्दी-साहित्य में 'हालावाद' का भी शब्द बड़े जोरों से सुनाई पड़ता है। श्राज हिन्दी-साहित्य में 'बच्चन' जी को प्रत्येक साहित्यिक भली-प्रकार जानता है। हिन्दी-जगत में उनकी छः पुस्तकें, 'ख़य्याम की मधुशाला,' 'मधुशाला,' 'तेरा हार,' 'तेरी बाँसुरी,' 'मधुबाला' स्रीर 'मधु-कलरा' स्राज विद्यमान हैं।

श्रीयुत 'बच्चन' जी ही इस हिन्दी-मँसार में ऐसे पहले नवयुवक हैं, जिन्होंने इतनी थोड़ी-सी उम्र में ही एक अच्छे कवि का स्थान प्राप्त कर लिया है। 'बच्चन' जी की प्रथम रचना 'ख्राय्याम की मध्शाला' है। 'बच्चन' जी ने मदिरा को कितना महत्व दिया है उसका पता इन रफुट कवाइयों द्वारा मिलता है:-

भिये मदिशा से देना सीच अधर मेरे होते मृत-स्तान, मरूँ तब मदिरा से ही प्रारा ! कराना मेरे शव को स्नान । श्रॅगूरी पत्ती में मृत देह, मूँद अनका हा शैया डास, लिटा देना मुक्त की चुपचाप किसी मधुमय उनवन के पास। 'खट्याम की मधुशाला' से-

፨

मेरे अधरों पर हो अन्तिम वस्तु न तुलसीदल, प्याला, मेरो जिह्ना पर हो झन्तिम वस्तु न गॅगाजल, हाला, मेरे शव के पीछे, चलने-वालो, याद इसे रखना, 'राम नाम है सत्य' न कहना, कहना 'सच्ची मधुशाला' ! 'मधुशाला' से---

श्रीपुरी बलशाली महसूद, विजयकारी समाद महान, नशै की जोशीली तलवार, हाथ में ले करती प्रस्थान । 'खरयाम की मध्याला' से-

किया मदिरा ने मुफ से घात मान की पगड़ी मेरी छीन, मगर, का उसकी समका हैय ? मगर, कर उसकी सत्रका हीन ?

> मुक्ते प्राय: इस पर आइचर्ये देचता मद स्थी दीन कलाल,

कहाँ तें कि के टकड़े चार! कहूँ। माथिका-सा उसका माता ! 'खटवाम की मधुशाला' से-

श्रीयृत 'बच्चन'जी ने रुवाइयाँ उमरखय्याम का हिंदी रूपान्तर 'ख्रय्याम की मधुशाला' किया है। 'ख्रयाम की मधुशाला' के सम्बोधन में लिखा हे:—

"इन फूलों पर अपने अश्र-बिन्दु छिड़क-छिड़क कर तथा इनको अपने उच्छ्वासों से फूँक-फूँककर ताजा बन्दाने का प्रयत्न किया है। प्रयत्न से अधिक मेरे वश में और क्या है ?"

इस समस्या को हल करने में कवि पूर्ण-तया सफल हुआ है। प्रयत्न से श्रिधिक कवि के वश की बात नहीं। कहीं कहीं पर किव ने रूपान्तर करने में कविता का सौन्दर्य द्विगुरिएत कर दिया है। एक श्राँगरेजी की रुवाई है:—

The moving Finger writes; and, having writ,

Moves on: nor all thy piety nor wit.

Shall lure it back to cancel half a line,

Nor all thy tears wash out a word of it.

'बच्चन' जी ने इस रुवाई का हिन्दी-श्रनुवाद इस प्रकार किया है:—

किसी की लोह लेखनी भाग शिला पर निख दें । कुछ लेख, न फिर फिरनी पीछे की छोर लिखा क्या, शतनातों ले देख! न कम कर देवी छापी पंक्ति देख सब तेरी भक्ति, विवेय ; न तेरे छांस, की ही धार सकेगी थो लयु छचर एक ! कितना कमाल किया है 'बच्चन' जी ने । जो बात-'लोह लेखनी' में है, Moving Finger में नहीं है।

'बच्चन' जी की द्वितीय लिखित पुस्तक 'मधुशाला' है। 'बच्चन' जी को 'मधुशाला' में उतनी सफलता प्राप्त नहीं हुई जितनी 'खय्याम की मधुशाला' में हुई है। ऋधिक भाव किन ने 'खय्याम की मधुशाला' से 'मधुशाला' में लिये हैं। किन ने 'मयुशाला' को एक रस बना दिया है। 'मधुशाला' में 'खय्याम की मधुशाला' की प्रति-च्छाया है।

'मधुशाला' का स्वयं कवि पाठकों को इस प्रकार परिचय देता है:—

भाद्यकता श्रेंग्र लगा में खीच कल्पना की हाजा, कवि बनकर है साकी श्राया, भरकर कविना का प्याचा । कभी न कण भर खाली होगा, लाख पियें दो लाख पियें, पाठक-गणा है पीने वाले पुस्तक मेरी मधुशाला । जो समालोचक 'मधुशाला' की श्रालोचना करते हैं, उनके लिये किं श्रागे चलकर लिखता है:—

> विना थिये जो सधुराला को हुरा कहे, वह मतवाला, पी लेने पर तो जायेगा पड उमके मुँह पर ताला।

श्रो मन्दिर श्रोर मसजिद के करदानी! कुछ इस मधुशाला से भी तो सीखा। यह वह न्यायालय नहीं है जहाँ चोरी का श्रपराध लगा कर जेल में भज दिया जाता हो—या किसी की हत्या करने पर फाँसी का दण्ड दिया जाता हो। यहाँ साम्यवाद काश्रखण्ड राज्य है। यहाँ सद्भाव का भी बीजारोपण किया जाता है। मन्दिर, मनजिद या चर्च तुन्हें हिन्दू, मुसलमान श्रोर किराचियन कहकर लड़वाते हैं। श्रोर यह मधुशाला तो तुन्हें 'एकता' के मादक शूँट पिलाती है। तुमका घवराहट, डर तथा चिंता से कोसों दूर रखती हैं।

मदिरालय के बाहर भले ही तुम ऋपने को हिन्दू, मुसलमान, ईसाई ऋथवा ऋछ्त कह लो, लेकिन भीतर जाते ही एक हो जास्रोगे और तुम्हें कहना पड़ेगाः—

नाम अगर पूछे कोई तो कहना, बस पीने बाजा, काम, डाजना श्रीर दलाना सबको मदिरा को प्याला। जाति, प्रिये, पूछे यदि कोई, कह देना दीवानों की,

धर्म बनाना, प्यानी काले माला जपना सधुशाला

मदिरालय में 'तू' श्रोर 'में' का श्रस्तित्व नहीं है, यहाँ तो साकार साम्यवाद है:—

रॅंक राव का भेद हुआ है कमी नहीं मदिरालय में, साम्यवाद की प्रथम प्रचारक है यह मेरी मधुशाला। 'तेरा हार' 'बच्चन' जी की तृतीय पुस्तक है। इसमें किव की रकुट पर्शों का मंग्रह है, जो समय-समय पर मासिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। इसमें कुछ पदा ऐसे भी हैं जो किसी भी मासिक पत्रिका में नहीं प्रकाशित हुये हैं। किय इसके सम्बोधन में लिखता है:—

"मुझे-तो अपना हार गूँ धते समय सदा इस वात का डर लगा रहता है, कि तुझे कहीं इसका पता न चल जाय और यह अधगुँ घा हार इस 'शुभ-श्रवसर' के होने के पहिले ही मेरे हाथों से छिन कर तेरे गले में पहुँ च जाय। कुछ याद है, कितनी वार जब मैंने हार गूँ धने के लिये कली उठाई, तू मेरे हाथों में से छीन कर चम्पतहो गई। खैर, श्रव यह पूरा बन गया है, और तू इसे ले ही लेगी। इसी से मैंने इस हार (किवताओं का संग्रह) का नाम 'तरा हार' रखा है।"

श्रहा! किय ने कितना सुन्दर नाम रखा है इस पुस्तक का। कितना से डरत हुये भी किय कियता को श्रपनाता है। इस संप्रह को तैयार करने में सचमुच श्रिषक समय लगा है, इसका साची उक्त गद्य का प्रथम वाक्य है, जो स्वयं किय की लेखनी हाग लिखा गया है।

कवि श्रागे चल कर इसी सम्बोधन में लिखता है:-

"वह (संमार) मुक्त पर खूब हँमें । मुझे इसका दुः व नहीं, क्यों कि मेरे सिर पर यह कोई नई बला नहीं। मँसार हमेशा से ही मुक्त पर हमेशा सो हो। मुक्त पर हमेशा हो तो है कि उसकी इस मँसार की कुछ भी परवा नहीं है। वह एक-एक लगा को मृल्यवान ममक्ता है, अगर उसका यथाचित प्रयोग भी किया है। वह अपना कार्य करने में तल्जीन रहना है। यह सँमार के हमने की परवा नहीं करना।

इन महान दिभृतियां के सामने में तुच्छ गानव, क्यों लगा होने किसी को किर भन्ना परवाह मेरी।

'तेरा हार' में 'कीर' 'भंडा' 'बन्दी' आदि कविताओं की रचना हुई। कीर को पिंजड़े में बैठा देखकर कवि के उद्गार निकले हैं:—

<sup>46</sup>कीर ! तू क्यों बैठा मन मार,

शोक बनकर साकार, शिथिल-तन मण्न विचार ? आकर तुकार हुट पड़ा है किस वि

श्राकर तुकार दूर पड़ा है जिस जिला का भार ?" भँडे को फहराता हुन्या देखकर कवि कल्पना करता हैं: —

> भहे नहीं फहराना मेंडा बायु वेग से चॅचल हो, हमें बुनानी है में। भारत जिला-दिला कर श्रेंचन की !

जब कवि बन्दी से कारागार में पड़े रहने का कारण पूछता है तो कवि को सुनाई देता है: —

शीश पर मार्ग-भूनि-ऋण-भार

उसे हूँ रहा उतार, देश कित कारागार— कारागार नशी, वह तो है स्वतन्त्रता का द्वार ! इस दीन-देश की दशापर तग्स खा किव कोयल के राग सेप्रश्न करता है:—

क किने । पर यह तरा राज

हमारे नग्न-बुभुचित देश के लिये लाया क्या मेंदेश? साथ प्रकृति के बदलेगा इस दीन देशका भाग! दुःग्वों का स्थागत करता हुआ कवि

गुनगुनाता है:-प्यार पास आये प्यारंग के
सुख मृज्यियों पर छाये,
श्रासिप श्रासिप-वानों पर, मुक्त

दुखिया पर दुख आये!

्रेम की श्रालोचना करता हुश्राकवि लिखता है:— लेलेना सुगन्ध सुमनों की, तोड़ उन्हें सुरकाना क्या?

> प्रेमहार पहनाना लेकिन — प्रेम-पाश फैलाना क्या ?

गुण का बाहक बनना, लेकिन — गाकर उसे सुनाना क्या ? मन के कल्पित भावों से कौरों को अस्म में लाना क्या ?

> प्यार किसो को करना लेकिन—-कह कर उसे बताना क्या?

देकर हृदयं हृदय पाने की स्राह्मा क्यर्थलगाना क्या?

'मधुशाला' तथा 'तेरा हार' के पश्चान् किंब की 'मधुशाला' ही से सम्बन्ध रखने वाली 'मधुबाला' श्रीर 'मधुकलश' लिखी गई। इन पुस्तकों में भी रफुट पद्यों का संमह है। किंब अपने श्रालोचकों से कहता है:—

> करे कोई निन्दा दिन-रात, मुबदा कापीटे कोई डील, किये अपने कानों की बँद रही बुलबुल डाजों पर बोल !

जब कभी कवि के उत्तर सँसार हँसता है, तो कवि कोध न कर, सन्तोष से कहता है:—

बृद्ध जग को क्यों अखरती है चिधिक मेरी जवानी ?

किन एक ऐतिहासिक उदाहरण देकर सँसार की च्या भंगुरता बतलाई है, श्रीर जो वर्तमान में है, उसकी सुखों का पूर्ण-उपभोग करने का उपदेश दिया है। क्योंकि मनुष्य श्रपने भविष्य के विषय में कुछ नहीं जानता। कवि लिखता है:— कहाँ है अब नृप औरंगज़ेब कहाँ उसकी नेंगी तलवार !

कडाँ अन उसका कोभ कराल, केंदा जो देताथा सँसार!

एक मिट्टी पत्थर की कृतू दक रहीं उसका आज शरीर, बता करती उसका उपहास बन्द हैं इसमें आलमगीर!

कि के हिन्दी विचारों पर संसार श्रसंतुष्ट है, श्रीर उसके विचारों में उसको (संसार को) किव की वासना की श्राशंका होती है। किव इस बात को समभता है, श्रतएव किव सँसार की नासमभी पर तरस खाता हुआ। गा उठता है:—

सिंध के प्रारम्भ में,
मैंने कथा के गान चूमे,
बाल रिव के भाग्य वाले.
दीप्त भान विशाल चूमे,
प्रथम संध्या के श्रक्ष दुग
चूमकर मेंने सुलाये,
तारिका-कलि से सुसक्षित

नव-निशा के बात चूमे, बायु के रस-प्रथ अधर

पहले सके ख़्होठ मेरे, मृत्तिका को पुतिलियों से

अभिसार मेरा।

कह रहा जग बासना मय हो रहा उद्गार मेरा

कितना सुन्दर लिखा है कवि ने । इतना होते हुये भी यदि कोई, कुछ का कुछ समझे ता किसका दोष है ? समकने वालों का, न कि किब का। चाहे छायावाद हो, चाहे हालाबाद हो, चाहे और कोई अन्य वाद हो, 'बच्चन' जी की किवता में सर्वत्र भाष प्रधान माना गया है। ंगरं जो के कवि वर्ड सबर्थ की भाँति श्रीयुत 'बच्चन' जी ने भी प्राकृतिक वस्तुत्रों का वर्णन किया है :—

जल में, थल में, नभ-मंटन में है जीवन को पारा बहती; संमृति के कृल-किनारों की प्रतिच्या मिचित करती रहती।

जब कभी 'वरुचन जी' कह्ते हैं:—

मदिरा पीने की श्रभिनापा

हो बन जाए जब हाला
श्रथमें की श्रातुरता में ही

जब श्रामामित हो प्याला,

बने प्यान ही करने-करने

जब साकी साकार सम्बे,

रहेन हाला, प्याला साकी

तमें मिलेगी मध्याला ।

तो हम उन्हें 'साहित्य के विगड़े बालक' कह कर धमका देते हैं, छौर जब भारतेन्दु बाबू 'पां प्रेम विवाला भर-भर कर,

कुछ इस भय का भी देख प्रज़ा?

कहते हैं तो हम उन्हें ईश्वर-भक्ति का उदाहरण मान उनका आदर करते हैं। इतना में कह सकता हूँ कि आज यदि इसी तरह की कविता करीर, जूर, तुलसी या मीरा ने बनाई होती तो हम उन पद्यों को कंटस्थ कर मिदरों में गाते फिरते, और हम उन्हें ईश्वर-भक्ति का उदाहरण मानते । यह श्रीयुत 'बच्चन' जी का दुर्भाग्य है।

'बन्चन' जी में वे गुण विद्यमान हैं जो एक मकल कि में होने आवश्यक हैं। उनकी किवता की सबसे बड़ी विशेषता यह हैं कि भाषा आति सबल, कल्पनाएँ क्लिप्ट नहीं हैं, और अस्पटता हूं हैं भी कहा न मिलेगी। किवनार्ये सुन्दर, सरल, और सरस हैं, और भाव भी उत्तम हैं। किवतार्ये ऐसी जान पड़नी हैं मानों निश्जल या निष्कपट हृदय के सीधे-सादे उद्गार हों। जब-जब किंव ने भाव-तरंगों को उठते पाया, उसने उन भावों को लिख डाला। भावों को समभने में कहीं पर भी हिंदी-प्रेमियों को कठिनाई नहीं होती। 'बच्चन' जी की किंवतायें नवीन-शैली की हैं, श्रीर इसीलिये श्राधुनिक-काव्य में 'बच्चन' जी का समुवित श्रादर हो रहा है।

कवि को कविता में कितनी भक्ति है—वह कविता को कितना प्रेम करता है—यह इस निम्न-पद्य से माळ्म हो जाता है। कवि कविता के 'जन्म दिवस' को याद करता हुआ गुन-गुनाता है:—

> श्रा यद दिलाएँ 'जन्म-दिवस' की, हर्ष श्रानेक श्रापार तुम्हें । हो, श्रीर मुवारक जन्म-दिवस प्यारी किन्ति ! सी बाग तुम्हें । हम दोन बड़े हम दूर पटे, क्या भेंट करें उपहार तुम्हें ? सन्तीप दर्मा से कर लेना सी बार हमारा प्यार तुम्हें ।

'तेरा हार' के अन्त में, जब कवि पुस्तक को खनम करता है तो कविना से पुन्तक का अन्त करने के लिये, विदा माँगता हुआ लिखता है:—

अच्छा कविते ! अव तमा-प्रार्थना-प्यार— आर विदा !...यात्री के आशीर्वाद फूलो-फ्लो, आवाद गही, राजी गही, खुश रहो; फिर मिलेंगे

अच्छा !

कितनी सुन्दर विदा मांगी है कवि ने कविता से !

### और नहीं

#### [ श्री सोमेश्वर सिंह ]

इन श्राशाओं से है सम्भव श्रव जी बहलाना श्रीर नही। पगली दुनिया में प्रिय है पागल कहलाना श्रीर नहीं। भर ंदी-इंदी आहें भर भाना शरमाना श्रीर नहीं। सम्भव अपने मन को अपन है प्रतिपन भरमाना और नहीं। चुप चाप दृगों में है अविरल श्रांस् बरसाना श्रीर नहीं। नेंज्र अधिक अब हिय तरसाना और नहीं। है आज विकल विह्वल जीवन चलता अपना वश श्रीर नहीं। है रोम-रोम कह-अह उठना, बस श्रीर नहीं, इस श्रीर नहीं ॥

### ऋण परिशोध

### [ श्री रूप किशोर जैन ]

श्रापत्म मित्रं जानियाचु श्ररतृषे शुन्तिम् । भार्था चीरेषु वित्तेषु व्यसनेषु च बा⊋धवान्॥

(?)

"सेठ जी ने क्या उत्तर दिया, विश्तृ बाबू ?" "वही जवाब—जगह नहीं है। क्या करूँ, प्रारुध्ध ही उल्टी है। सभी श्रीर स निराशा।"

''तब तुम कोई व्यापार क्यों नहीं करते ?'' फुलचन्द् गम्भीरता-पृत्रक कह कर उत्तर की प्रतीजा करने लगे।

''व्यापार कैसे हो, अपने पास धन है न लेगों में विश्वास !''

"उथार-सुधार से भी तो काम चल सकता है ?"

''ऋगा देगा कीन!"

तुम्हारे तो कई मित्र हैं उनसे ही ऋग लेकर फाम चाल कर दें।"

''मित्र से ऋण लेना शत्रुता मोल लेना हैं। हमारे पिता बड़े अनुभवी थे। बह कहा करते थे— किसी मित्र को ऋण देने से यह अच्छा है कि जो कुछ दे महायता दें, उसकी लोटाने की आशा न गरें।''

"यदि सब लोग तुम्हारी तरह विवेकी बन जावें तो दुनिया का काम ही बदल जाय। समय पर मित्रों से सहायता ले ली जावे और काम निकाल कर सूद सहित लौटा दी जावे, तो कोई <mark>हर्ज नहीं</mark> हो सकता ।"

"मित्रों से सहायता लेना में बुरा नहीं समभता। ऋग लेना निस्मन्देह बुरा है, मेत्री-भाव नहीं रह जाता। स्वयं ही मित्र को विषद्मस्त देख यथाराक्ति तन-धन से सहायता करना धर्म कहा है। इसके में विरोध में कदापि नहीं हूँ।

"श्रच्छा तुम यह चतात्रो कम से कम कितने रुपयों से क्या काम कर सकते हो ?"

"तीन हजार में काम चल जायगा बनियान, स्वेटर, मोजा इत्यादि का काम खोल दूँगा। समुन्नत देश जापान की सोकियो कम्पनी को दो हजार जमानत-चक्रप जमा कर देने से उनकी एजन्सी मिल जायगी। एक हजार से यहाँ काम चाल्द् हो . जायगा।"

( ? )

क्यों जी, विश्तृ को तीन हजार रूपया दे दें ? बड़ा सत्यनिष्ट, विश्वासी और सच्वरित्र है। वचार को कहीं कोई नोकरी नहीं मिली, व्यापार करने का विचार है।

फ़लचन्द की स्त्री मनोरमा की अन्द्रा न लगा। वह विश्वन हो कहने लगी—''ठीक हैं जी, जीवन सुधा कार्याक्य कार्य

कुञ्ज सोचकर फ़ुलचन्द ने पूछा—"क्या तुम्हारे भाई होरी से एपया मँगाकर विश्नू को लगा दें ?"

"एलोजी, भाई का ताना क्या देते हो। वह तो घर में रखे हैं। उनसे मांगना कैया! वह तुम्हारा पानी तक तो पीते नहीं हैं। उनके पास आपकी कौड़ी भी न रह जायगी, विना माँगे दे जाँयगे।"

"तब क्या घर से ही काम हो जायगा ?"

"मुभ से क्या पूछते हो ! आपका रूपया आपके पास है । जी में आवे उसकी वखशो । मेरा कहना लगता जरूर बुग होगा । अच्छा है, किसी दिन बता दूँगी।"

तीन हजार है भी तो नहीं। विवश कल होरीलाल के पास जावेंगे यदि एक हजार भी उसने दे दिया तो काम चल जायगा। रक्तम भी ज्यादा हो गई है।"

#### ( 3 )

स्वामिभक्त कुन्दन को साथ लिए फूलचन्द श्रपनी सुसराल हैंदर नगर पहुँचे। होरीलाल उनके चचर साले थे। स्वयं उनकी सुमगल में श्रन्थी सास को छोड़कर श्रीर कोई न था। मकान के बीचोंबीच दीवार लगाकर एक श्रीर उनकी साम श्रीर दूसरी श्रीर होरीलाल रहते थे।

श्रव तक होरीलाल फुलचन्द के प्रति बहुत पूरुयभाव रखते थे। बड़े श्राहर सम्मान से उन्हें रक्खा।

सन्ध्या समय जब फूलचन्द्र ने रूपया माँगा तो होरीलाल को बहुन श्रमह्य हुश्रा, जैसे पैर के नीचे साँप पड़ गया। उछल पड़ा। समस्त शरीर काँप उठा। वह समभता था बहिन का रूपया है, देना थोड़े ही पड़ेगा; परन्तु मन के भाव को छिपाकर वह बाहर चला गया। कैसे फुलचन्द्र का मुँह सदैव को वन्द कर दिया जावे, वह अनेक उपाय सोचन लगा।

फूलचन्द निराला पा होरीलाल की बहू से जो अनेकों को शरीर अर्थण कर पति की आँखों में धूल भौंकती रहती थी, कुटिल आभू मंगी और हँसी-दिझ्गी से जी बहलाने लगे।

बाहर आकर होरीलाल अपने मित्र नरायन से बड़े धीरे-धीरे छुद्ध परामर्श करने लगा। यद्यपि छुन्दन भी निकट ही बैठा था; परन्तु उसने सोचा-खाने पीने का आयोजन हो रहा है।

नगयन ने बहुत समकाया; परन्तु होरीलाल सहमत न हुआ। वह बड़े रोप से कहने लगा— "माकँगा, यदि अब तकाजा किया। वस तुम खड़े रहना, मैं सब देखळूँगा।"

होग्रेह्माल लाल-लाल नेत्र किये घर में पहुँची श्रीर कम्पित स्वर से कहने लगा—"जीजा जी, श्राज-कल रूपये का कोई प्रवन्ध नहीं है। कई जगह गया, एक पैसा नहीं मिला। सावन में बहिन को बुलावेंगे, तब उसी को सब दे देंगे। इस समृय इसा की जिये।"

"यदि एक हजार भी दे देते तो हमारा काम चल जाता.....।"

"आप बार-बार क्या कहते हैं। रापया होता तो दे देते। बस अब अधिक कुछ न कहिए।"

श्रभी फूलचन्द शायद श्रौर कुझ कहते; परन्तु होरीलाल श्रपनी स्त्री को दपट कर कहने लगा— "कैसी घुल-युल कर बार्ते बना रही थी। मैं सब दखते हुए श्रन्धा बन गया था! यदि श्रौर कोई तर शरीर में हाथ लगाता तो हाथ ही नहीं सिर श्रुलग कर देता। क्या कहाँ बहनोई है।"

श्रश्रु विसर्जन कर स्त्री कहने लगी—"तमा कीजिय। मैं क्या करती जब उन्होंने मुझे बलान् श्रपनी श्रोर खींच लिया श्रीर मेरी चोली फाड़ डाली।"

स्त्री की बातें सुनकर फूलचन्द श्रवाक् रह गये। उन्होंने उसका शरीर छुत्रा तक नथा। बहुत

Larr Community to Marie of Samuel Community Color of the Company सम्भव है होरीलाल मार बैठे या बिप देकर मार डाले ।

यद्यपि सन्ध्या हो गई थी; परन्तु वायु सेवन मिस से श्रमवात्र वहीं छोड़, फुन्च द सीधे स्टेशन पहुँचे और १४) रु० की ऋँगूठी ४) रु० में बेचकर ११ बजे रात को अपने घर आगए।

घर श्राकर फुलचन्द्र ने श्रपनी स्त्री को कुछ नहीं बताया; परन्तु उनकी दशा देखकर उसे सब घटना का ऋाभास भिल गया। वह पति की शैया पर बेठी दिन निकलने तक अनाप-शनाप होरीलाल को कोसती रही।

#### (8)

फुलचन्द ने बिश्नू राबू को तीन हजार रपया दे दिये । हुंडी-प्रचिक्क लिखाया नहीं। मुलधन सुमीता होने पर श्रीर व्याज प्रति मास देने को वचन ले लिया।

होरीतात का रुक्का था। जब उसकी मियाद श्रा गई श्रीर दुसरा सक्का बदला नहीं, तब विवश हो फूनदर, नोटिस देकर नालिश करदी। यद्यपि कई बहाने बनाये, चतुर बकीली द्वारा उन्नदारीकी; परन्तु अदालत ने माना नहीं। ४४५०)४० की डिमी देही। अपील हुआ अन्ततः तीन हजार जायदाद पर और १४५०) २० जात पर डिबी हो गई।

जात की डिमी में क्या रखा था। होरीलाल को गिरफ्तार करास्रो, तो खर्च लुगक की डिश्री अपने ऊपर और करो।

हेदरनगर के लाला लेकमनदास ४००२० की डिग्री होरीलाल के नाम और थी। इजराय में मकान नं लाम पर रखाया था। इस प्रकार सहज हो मकान नीलाम होगया। फुलचन्द को १२०० र० भिल गए, वरना सब पर पानी पड़ जाता, डिमी श्रलमारी की शोभा रह जाती। चलो जी, साले थे रुपया में चार त्याने मिल गए यही बहुत है।

डिमी वसूल करके फूलचन्द घर लीटे तो विश्नु वाबू की दुकान बन्द पाई। न जाने वह कहाँ चले गए थे !

फुलचन्द्र के पास अधिक धन न था, केवल दस हजार रूपया उनके पिता ने छोड़ा था। वेचारे उसी के सृद से सी डेढ़ सी रूपया मासिक उपार्जन कर लेते थे। यह तो उनकी स्त्री घर-गृहस्थी के काम में बड़ी क़ुराल थी । ६०-७० रु० मासिक से कभी र्याधक ब्यय न कर्ती, परन्तु 'नंगी न्हा कर क्या निचोड़े' वेचारी करे ही क्या ? पाँच हजार कु० निकल जाने से बड़ी कठिन समस्या उपस्थित होगई थी । बड़ी लड़की को १४ वाँ वर्ष लग गयाथा। उसके विवाह की चिन्ता दिन रात सोच निमय्न रखती थी।

पृत्व नर्की स्त्री अपने भाई होरीलाल खोर विश्त् वात्रृको दिन-रात कोसा करती । दुख है विश्नुका कोई पता नहीं था। नकाजा भजते, कुछ न कुछ देता ही । विवाह में बहुत सहायता पिल जाती ।

#### (火)

विष्णु या गृकाम न चलने से अर्लागृह छोड़ सीकीक बंडवा चला गया था। शुभादय से काम श्ररुद्धा चला। उसने एक वर्ष में ही फुलचन्द का राज्या बचाकर कुद्र भूँजी खड़ने पास भी करली। विक्त की पत्नी सुशीला प्रति दिन आपह कर्रतः— जब बाप इस बीम्य हागए हैं तः सद् सहित फ़ानन्द्र का रुपया दे काळी।

चार हजार तपया लेकर विश्नु बार्ट कैसे ही जाने के उद्युत हुए कि बैनीसम की 🗍 देवाला निकल गया था। उसका माल बहुन धोड़े दामों में नीलाम हीरहा था। सस्ता सीटा देख विश्नू ने आठ हजार की बोली लगादी; निदान उन्हीं के नाम नीलाम खतम होगया।

सुर्शाला को बहुत बुरा लगा। दृसरे का रूपया जीखम में डाल दिया; परन्तु नीलाम खतम हा चुका था। करते ही क्या— "बहुत लाभ कासीदा है, जो कुछ लाभ होगा आधा मेरा और आधा फूलचन्द को देंगे।"

दो महीने में सब माल बिक गया। दुगुने होगए। अब सुशीला ने आठ हजार रूपया फूलचन्द को दे स्राने का विशेप-स्राप्यह किया।

चार महीना बीते, जब विश्नू बाधू ने बिजली का काम लेने की प्रार्थना की थी। त्र्याज सहसा श्रध्यत ने पूर्ण अधिकार देने की सूचना दी। इस काम में उसे तीन महीने लगे। लाभ त्राशा-तीत ३२ हजार रुपया होगया।

विश्तृ १६ हजार रूपया लेकर फूलचन्द के नाम वेंक में जमा करने चला। वेंक में कोई अमेरिकन व्यापारी अपने कपड़े के जहाज का सौदा कर रहा था। वह किसी एक के नाम जहाज देना चाहता था। इच्छा न रहते भी वेंक के एजेन्ट के कहने से विश्नृ यायू ने जहाज का सौदा कर लिया। ३० हजार रूपया जमानत स्वरूप वेंक में जमा कर दिया, शेप रूपया चार किस्तों में अदा कर दिया।

श्रव विश्नू बाबू के पाम एक लाख रूपया नक्द होगया। जैसे ही उन्होंने घर में प्रवेश किया, उनकी स्त्री सुशीला ने दैनिक श्रर्जुन का एक विज्ञापन दिखाया "विश्नू बाबू का पता देने बाले को ४० रूपया पारितोषिक ! यदि सौभाग्य से स्वयं विश्नू बावू तक यह ऋँक पहुँच जावे तो उन्हें तुरंत हमारा रूपया भेज देना चाहिए। आगामी १० जून को विमला का विवाह है।"

सुशीला ने दुख प्रकाशित करते हुए कहा—आज पहली जून है। विवाह में केवल नौ दिन रहे हैं। न जाने फूलचन्द को कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा होगा। यदि रुपया की कमी न होती तो विज्ञापन न निकालते, और यहाँ तुम मौज कर रहे हो। यद्यपि आपने उनका रुपया १७ गुना बड़ा दिया है; परन्तु किस काम का जब कि समय पर काम न आया।

विश्नू बाबू सपत्नीक ४० हजार रूपया लेकर ऋलीगढ़ को चल दिए।

दूसरे दिन ४० थैली ६५यों से भरी फूलचन्द् के घर पहुँची। दम्पति के हर्प का क्या कहना। मर्यादा तोड़कर बहुत दीनता से पुत्री विमला का विवाह कर रहे थे। सहसा ६५या पाकर उनके आनन्द की सीमा न रही।

मनीरमा, सुशीला का आभार मान शत् मुख से यशोगान कर कहने लगी— नाते सम्बन्धी और विशेषकर मायके वालों को ऋण देना श्रम और मूर्यता है। नातेदारीसे हाथ धो शत्रुता मोल लेनी पड़ती है; परन्तु विपद समय में धन के व्यवहार से सच्चे मित्र को ऋण देना समय पर काम दे ही जाता है।

### पुत्र-जन्म सम्बन्धी याम्य-गीत

[श्री दायन्ती प्रभाकर]

शिशु वसुवा का उज्ज्ञल रत्न, माँ की गोदी का शृंगार, निर्वन का धन, एवं प्रकृति का मोदर्य है। माता पिता का अमित प्रेम रिशु के रूप में साकार होता है। वह दम्पति के प्रेम की प्रतिमा है। गाईस्थ्य-जीवन में नवजीवन और नव रस का सञ्जार करने वाला है। संसार-संप्राम की उलभनों में फँसकर जब दम्यति उकता उठते हैं और उनके हदय में एक कमक उठती है—

कभी था मेरा शैशव-काल । नव्यापाथा जग का जंजाल ॥

तब सन्तान के रूप में उनका शैशव मानों फिर लीट श्राता है श्रीर कुछ समय के लिये हृदय को बाल्यचपलता से भर देता है। वह बच्चे के साथ हँ मते-खेलते हैं, तुतलाते हैं, श्राव्यामचीनी करते हैं। श्रीमती सुभद्रा कुमारी जी ने इन भावों का अपनी कविता में वड़ा सुन्दर चित्रण किया है। वह कहती है—

श्राजा बचपन एक बार फिर, दे दे श्रपनी निर्मल शान्ति ।

च्याकुल व्यथा मिटाने वाली, दह ध्यपनी श्राकृति विश्रांत ।

बह भोली सी मधुर सरलता, वह ध्यारा जीवन निष्पाप ।

क्या फिर श्राकर मिटा सकेगा, तू मेरे मन का सन्ताप ।

मैं वचपन को बुला रही थी,

बोल उठी विटिया मेरी ।
नन्दन-बन सी कुहुक उठी,
यह छोटी सी कुटिया मेरी ।
पाया मैंने बचपन फिरसे,
बचपन बेटी बनशाया ।
उसकी मंजुल मूर्ति देखकर ,
मुक्तमें नव जीवन श्राया ।

शिशु को जन्म देने के कारण 'माता' का स्थान संसार में श्रात्यन्त उच्च माना गया है। भगवान मनु ने कहा है—

'शिशु को जन्म देने के कारण की पूजनीया श्रीर महाभागा है।'

श्री मैथिली शरण जी ने कहा है--नारी निन्दा मत करो, नारी नर की खान । नारी ही से उपजें घव प्रहलाद समान ॥

हिंदू-परिवार में माता बनते ही स्त्री का सम्मान बहुत बढ़ जाता है। गीतों में जहाँ-तहाँ इसका सुन्दर चित्रण हैं। मैं तो थाग हाजिर बन्दा जी,

के म्हारी धर्मा कस क्यूं गई। कही तो स्रम्मा बुलावें जी,

कहो तो चङ्या हमीं चढ़ार्वे जी। कॅ न्हारी०। कहो तो भाभी बुलावें जी,

कहो तो मंजा हमी विद्यार्थे जी। कॅ म्हारी०। कहो दौरानी बुलावें जी, जीवन सुधा -- =====

कहो तो दीया हमीं जलावें जी। क म्हारी धर्माणी कहो तो बाबी बुलावें जी, कहो तो सतिये हमीं धरावें जी। क म्हारीणी कहो तो दाई बुलावें जी, कहो तो बच्चा हमीं जनावें जी। क म्हारी धर्माणी कहो तो बांदी बुलावें जी, कहो तो पोतड़े हमीं धोवें जी। क म्हारी धर्माणी मैं तो थारा बन्दा हाजिर जी। क म्हारी धर्माणी

सास-ससुर तो पौत्र को पाकर खुशी से पूल ही उठते हैं, किन्तु पति भी पत्नी का श्रिधक मम्मान करने लगता है। श्रोर उसका प्रेम पत्नी के प्रति श्रिधक चिर स्थायी होता है। गीत की नायिका पति से किसी यात से नाराज होगई है। पति उसे मना रहा है। वह उसकी सब सेवार्य करने के लिये तथ्यार है, श्रीर विनय भरे शक्तों में कह रहा है-

'है' स्त्री मैं तो तुम्हारा सेवक हर समय उपस्थित ही हूं। जो कहो वही काम करदूं।'

धन्य है मातृत्व ! इसीलिये तो स्त्रियां माता बनने के लिये लालायित रहती हैं । एक कवि ने पुत्र की प्रशंसा में कहा है—

नृपति, योद्धा, कवि, पण्डित साधु,
हुवे शिग्रु से हैं विकत्तित सभी ।
इससे शिग्रु के प्रति सद्भाव
कभी निष्कल जा सकते नहीं ।
ऐसे सुन्दर शिग्रु को जन्म देने वाली श्री
क्यों न पूजनीया होगी ?
लीपन पाति खोर्यास्या रे,

जगर मगर करत रे। मोरो ए बहुझा, छोगन में रतुलि पर्लागया, श्रोवरि लड़के डासह

मचियहिं बइठी हैं रनियां,

न राजा से अरज करें हो। सनवां के हमाराइ नइहर,

रुपवा केबड़िया लागे हो।

मोरे ए साहेब, सातों भइया की बहिनियां, पलंगिया कइसे डासहु हो। श्ररे वंगला से उठे सीरा साहेब,

तो बन के सिधारेन हो। छोड़े पीठ भये हों ऋसवार,

तो केदरिया बन गयेन हो। मोरे पछवड्वा बढइया,

बढ़ह्या भह्या मितवा ।

भइया चंदना क डोलिया फनात्री,

साहेब के संग जहबे। अरे एक बन गई हैं, दसरी वन गई हैं,

तीसरे में मधुवन हो।

सीरे साहेब, पांयन घुंघरू लदाओ,

नुम्हारे संग चलित्रै।

पिछवदर लीटेइ पिया तो चिनवह हो,

तो रनियाँ गोहन लागी हो।

सुनवा के तुम्हाराइ हीनइहर,

रूपे के केवड़िया लागे हो।

मोरी ए रनियां, सातों बीरन की बहिनियां,

गोहनत्रां कइसे चलियै।

छोड़बो सुनवा के नइहर,

रूपे के केवड़िया लागे हो।

में।रे ए राजा, छोड़वड सातां विरनवा,

गोहनवां ताहे चलियो।

पित ने स्त्री से कहा—'हे स्त्री, लोगी पाती हुई कोठरी त्राज जगमण रही है। मेरा सुन्दर पलंग उस में बिज़ा दो।' स्त्री का मन इस समय कुज़ काम करने को नहीं चाहता, फिल्लु वह बई। ही नासमक है। विनीत उत्तर देने के स्थान पर बह कहती है।

'मेरे पिता का घर सोने का बना हुआ है। उस में चाँदी के किवाड़ लगे हुए हैं। हे प्रिय, मैं सात भाइयों की बहिन हूं। तुन्हीं बताख्रो, मैं कैसे पलंग बिछाऊं?'

पत्नी की इस गर्वोक्ति से अपमानित होकर पति घर छोड़ कर चल दिया। पुरुपों का स्वभाव

# र्जावन-सुधा•



श्री द्मयंती प्र<mark>माकर</mark>

		•	

है, कि वह स्त्री द्वारा उसके पिता के घर की प्रशंसा नहीं सुन सकते। यह एक ऐसा श्रपराध है, जिसे वह कभी चमा नहीं कर सकते, फिर स्त्री की ऐसी श्रभिमान पूर्ण वातों को सहन करना तो पुरुषों के लिये श्रसम्भव ही है। पित के चले जाने पर पत्नी को श्रपनी भूल मालूम हुई श्रोर वह पित को मनाने चली। पित को दिया गया पत्नी का उत्तर लो बड़ा ही, भावपूर्ण हैं। वह कहती है—

'मेरे सर्वस्त्र' मैं अपने चांदी के कियाड़ बाले स्वर्ण-मण्डित पितृगृह को छोड़ दूंगी। यही नहीं, मैं अपने नैन सितारे प्यारे भाइयां को भी छोड़ प्टूंगी किन्तु है प्रिय, नै तुम्हारे साथ चर्ह्या। '

प्रेमी के जीवन का अथ और इति आत्म बिलदान है। महात्मा कवीरदास जी ने कहा है। "जो 'मैं' है तो तू नहीं,

जो 'नू' है मैं नाहिं।

प्रेम-गली ऋति साँकरी,

जा में दो न समाहिं॥

प्रेमयोग में भी लिखा है— इक रक्षी बिनु कारनाहें,

इक रस सदान समान। गनहिं प्रिय सर्वत्त्र जो,

सोई प्रेम समान॥

प्रियतम की प्राप्त के लिये अपने पिता, भाई मां आदि सब परिजनों को कत्या छोड़ देती है। जिस प्रकार विद्युन-गृह से ही विजली सब आर जाती है, उसी प्रकार वह अपने जीवन की सम्पूर्ण अभालापाओं को 'एक' में केन्द्रित करती है, और उसी को आत्मसमर्पण करती है। इसी से तो विवाह का इतना महत्व है। स्त्री के इस आत्मोसर्ग के कारण ही यह सम्बन्ध चिरम्थायी रहता है, इस लिये समाज में स्त्री विशेष आदर की हिन्द से देखी जाती है। बिन्दराबन से चिलाय गवन्गी,

कजरी वन मंह आई, मेरे राम जी।

कजरी वन में सिंह धड़कें,

सिंह नै घेरी है आई, मेरे राम जी।। सुन रे सिंहनी जाये मुझे मत भक्तियो.

घर पै बछड़ रांभें, मेरे राम जी। चाँद सुरुज मेरे सास्ती हुइयो,

बङ्ग चुंघातेई आई, मेरे राम जी। गंगा जमना मेरे साखी हुइयो,

बद्धहु चुंघातेई आई, मेरे राम जी। कजरी बन ते चलिय गवन्गी,

विन्दरावन मंह आई। मेरे राम जी। लेरे बछड़ दुधवा चूंघ ले,

बचनों की बांधी माय, मेरे राम जी ! बच्चों का दूध श्रम्माहरवी ना पीयूं.

चर्छंगा तुम्हारे साथ, मेरे राम जी। श्रागे बछड़ूपीछे गवन्गी,

कजरी बन मंह ऋाई, मेरे राम जी। लेरे मामा मुझे भछ करले,

पीछे गवन्गी माय, मेरे राम जी। काहे का मामा, काहे का भानजा, काहे की गवन्त्री भैन, मेरे राम जी।

काह की ग्वन्त्री भन, मेरे राम जी सत का मामा, धरम का भानजा,

नेम की गवन्त्री भैन, मेरे राम जी। श्रपने भानजे को मैं लाख टके दूँगा,

श्रतलस-मसक्त भैन, मेरे राम जी। लंह लाइके चिलय गवन्गी,

विन्द्रावन महं आई, मेरे राम जी। किस ने रेमेरे वेटा सिख बुध दीन्ही,

किस ने पढ़ाये चटसाल, मेरे राम जी। ऋम्माँ ने मेरी ऋम्मासिख बुधिदीन्हीं,

पिता ने पढ़ाये चटसाल. मेरे राम जी। सोने से मेरे बेटा खुर मड़वा दूँ,

रूपे से दोनों सींग, मेरे राम जी। श्रपने बेटापें में सब कुछ बारूँ, ऐसा मीठा बोल, मेरे राम जी।

कैसी प्रभावोत्सदक सोहर है। गाय के रूप में किसी स्त्री ने अपना हृदय चित्रित किया है। स्त्री दुष्टों के फन्दे में फँस गई। उसे अपने प्यारे पुत्र की याद हो आई। माँ का प्यार अतुलनीय है। वह अपने बच्चे को एक ज्ञाण के भी लिए विस्मृत नहीं कर सकती। अन्त में पुत्र ने अपनी बोली से उसकी रज्ञा करली। मधुर भाषण की शक्ति अपरिमित है। एक किव ने कहा है--

कागा का को धन हरे, कोयल का को देत। मीठे सबद सुनाय के, मन सबको हरि लेत।। मीठे शब्द मुख में मिश्री-सी घोलते हैं। भाई-बहन श्रीर मामा-भानजा के सम्बन्ध श्रपूर्व प्रेम से परिपूर्ण हैं, श्रीर इन सम्बोधनों में एक प्रकार का ऐसा श्राकर्पण है, जो श्रोताश्रों पर मोहिनी डाल देता है। माँ पूछती है, 'बेटा' तुम्हें इतनी श्रच्छी शिला किसने दी है ?' पुत्र का उत्तर कैसा सुन्दर है!

'हे माँ, तुम्हींने तो मुझे मधुर भाषण की यह उत्तम शिक्षा दी है और अपने माननीय पिता की प्रेम पाठशाला में पढ़कर ही मैंने ज्ञानार्जन किया है।'

सच है, माता-पिता से बढ़ कर कोई गुरु संसार
में नहीं है। माता के बिचारों का शिशु पर
गर्भावस्था से ही प्रभाव पड़ता है, और जन्म के
परचान भी माँ-बाप के आचरणों को अप्रकारय
म्प से बच्चे सीखते हैं। नवयुग के सभी शिज्ञाविशेपज्ञों ने इसे स्वीकार किया है। पाँच वर्ष
की अवस्था तक बच्चे के जैसे संस्कार बन जाने
हैं, वह जीवन भर अमिट रहते हैं। इस प्रकार
यह गीत हमें बतलाता है, बिल्क प्रामीण-युवित्यों
ने भी उम की उपयोगिता को स्वीकार किया है।

साम् कहेगा बहु हिया, ननर मेरी भवजिया। राजा मेरा फहेगा बंकोटिया, जीवन कैसे होयगा। मेरे री ऋंगना श्रामला, ऋरे लहर लहर करे। राजा श्रमला के। डाली कटवाय, महक हमें श्राई। जूते मारूँ गापचास, पलइयाँ मारूं डेढ़ सै। गोरी महलों से करूंगा जवाब, चली जाश्रो बाप कै। इक वन उल्लुखा, दूजा वन उल्लुखा, तीजे में गङ्गा हिलोरें। मेरे बंशा मल्हा के डरें क्यूंना श्रास्त्री। जल्दी से नाव डलात्री, जाऊँगी श्रपने बाप कै। श्राज बसो मेरी सेज, सबेरे डाल्ड्रंनाव, सबेरे जाना बाप कै।

मल्हा मूँद्धों पे धरूँगी श्रँगार,

डाढ़ी तो मूँडू तेरे बाप की। चन्द्र बदन हीरे लाल, सेजों पे छोड़े एकले। मार कझाला तिरिया उतर गई,

मल्हा का मींजे दोनों हाथ, गजब तिरिया कर गई। एक पग दीया है देहल पै, दूजा पलंग पै, ए जी होय पड़े नंदलाल, ऋष्वियाँ खुत पड़ीं। जो लाला होते ऋपनी दादी के, ऋपनी ताई के। लाला साब सोने की ऋजुध्या,

में दोनों हाथों से लुटावती। अब लाला हुए हो अपने नाना के अपने मामा के। बेटा अब मेरी कछ ना बसाय,

विपति में सम्पत भई । जो लाला होते दादा के घर, ताऊ के घर , लाला बजते तबल निसान, गवन लगते सोहिले ।

स्त्री के सन्तान नहीं है। वह सोचती है कि यदि जीवन भर मेरे बच्चा न हुन्ना तो सास ननद न्नीर पित के प्रेम से मैं विध्वत होजाउंगी। ऐसी दारण कल्पना करके कौन ऐसी स्त्री होगी, जो न सिहर उठे। प्रेम-हीन जीवन उस रमशान के समान है, जहाँ निरन्तर ही चितायें धधका करती हैं। नारी के मुख पर प्रेम ही की न्नाभा है। प्रमश्चन निर्म को ऐसी करण पुकार को सुनकर भगवान द्रवित होते हैं, न्नोर वह गर्भवती होती है। उसने न्नपने पित से न्नांगन में लगे हुए न्नांक के वृत्त को कटवा डालने के लिए कहा। पित ने उसका तिरस्कार किया। जिसके लिए वह न्नपना जीवन विलदान कर देती है, उसी पुरुष के

हारा ऋपनी छोटी छोटी इच्छाओं को इस प्रकार ठुकराये जाते देखकर कोन ऐसी स्त्री होगी जिसका हृदय टूक-टूक न होजाये। उसका हृदय ऋपमान की तीव ज्वाला में भुलस उठा श्रीर उसका सारा ज्ञान लुप्त होगया। वह बिना सोचे विचारे ही पिता के घर जाने को तय्यार होगई। यद्यपि पिता के यहाँ बिना बुलाए जाने में कोई हानि नहीं है, तथापि पित से क्रुकर जाने में तो कहीं भी सम्मान नहीं होता। तुलसीदासजी ने ठीक ही लिखा है—

जदिप मित्र, प्रभु, पितु, गुरु गेहा, ्

जइये बिनु बोले न संदेहा। तद्रि विरोधमान जहं कोई,

तहाँ गए कल्यान न होई। 'एकहिं से सब होन हैं, सब तें एक न होत।'

पति-पत्नी का कर्तव्य है, कि छं।टे छोटे भगड़ों को स्वयं ही मुलमालें और कानोंकान किसी को खबर भी न होने हैं। गाईस्थ्य जीवन में स्त्री को अत्यन्त सहनशीला बनना पड़ता है। जो स्त्रियाँ ऐसा नहीं करतीं बह दुख भोगती हैं, और गृहलहमी के गोरवमय आमन में पतित होजाती हैं।

स्त्री यद्यपि पति से कठकर ऋाई थी, तथापि उसमें पातिव्रत श्लोर श्लात्मगीरव की मात्रा भी कम न थी। उसने नाविक को कैसा कराग उत्तर दिया है—

'हे मल्लाह' तेरी दाड़ी खार मूं अजला देने के योग्य है। तूपुरात्य का श्रिषक री नहीं है। जिस म्त्री ने 'भाई' कड़का स्थोपन किया, स्मका भी तू श्रपमान करने को तत्यर है। 'भण्या' जैमा मधुर शब्द भी जिस पर कोई प्रभाव न डाल सके, वह 'मनुष्य' की पदवी का खिश होरों नहीं है। ऐसे पामर की जन्म देने बाला पिता भी दाड़ो मुड़ाने के योग्य है।'' किर वह गीरव से कहती है— "हे नीच, मेरे पति का मुख चन्द्रमा के समान उज्ज्वल है। हीरे श्रीर लालों की-सी उनकी शोभा है। उन्हें क्या शय्या पर श्रकेला ही मैं इसलिए छोड़ श्राई हूँ ?"

भारतीय नारी की नस नस में जोहर-व्रत-धारिणी पिद्मानी का रक्त प्रवाहित है। जैसे हाथ लगाने से सर्प काट लेता है, उसी प्रकार कोमल-हत्या भारतीय नारी अपने सतीत्व पर आक्रमण होता देख मानों गहम निद्रा स जाग उठती है। और उसके मुख पर वहीं प्राचीन गौरव आलोंकित हो उठता है।

अन्तिम पिक्तयों में स्त्री के हृदय की वेदना भलक रही है। उसका हृदय पश्वासाय की विह्न में धधक रहा है। वह अपने नवजात शिग्र की सम्बोधन करके कहती हैं—

'हे पुत्र, यदि आज तुम अपने पिता के यहाँ होते, तो तुम्हारे बाबा, ताऊ आर पिता कितने प्रसन्न होते और कितना उत्सव मनाया जाता! मैं दोनों हाथों से धन दान करती। किन्तु मेरे लाल, तुम अपने नाना, मामा के यहाँ उत्पन्न हुए हो। तभी तो मनोहारिणी मोहर की ध्वनि सुनने से विञ्चत हो।

श्रजी रामहिं तिल्लिमन दोनों भह्या,

वे वन खण्ड कूँ जायं। यृ त्रियति पड़ी सीता पै, मैं सासू के घर होती। हरे

श्चनहोते दग्व लुटार्ता, मैं सामृ के घर होती। हरे।

श्ररे दाई री माई सबै बुलाती,

अन्त ववाई घर करती।

चार सर्म्यः मिल मंगल गातीं,

घा घर भाजी बाँटती । मैं सासू॥

अरे दस री महीना सीता वीक मरी है,

बहकी फिरै है बन में।

अरे भर भर आँसू रोती, मैं सासू के घर होती। हरे। श्ररी माल दरब मेरे भौत भुतेरे,

चुन्नी की मेरे लगी री चिनाई। बैठी दरब लुटार्थों जा,

तूसासू के मत जड़यो री बेटी। हरे। ऋरे श्राग लगे तेरे माल दरब में,

जल जइयो सब गहना रे बामें। ऐसे में भगवान भिले कोइ ऋपने पुरुख संगजाती। ॥ मैं सासू॥

महारानी सीता की विपत्ति ने ित्रयों को बहुत ही प्रभावित किया है। स्त्रो होने के नाते उन्हें नारी-इद्देय का अधिक ज्ञान होना स्त्राभाविक ही है। इपलिये प्रातः समरणीया देवी सीता के चरित्र को उन्होंने अपने अपने भावों के अनुसार नाना भाँति से गाया है। हिंदू समाज में आये दिन ऐसी घटनायें घटित होती रहती हैं, जब कि सती-साध्वी रित्रयों को मिध्या कलक्क के भय से निकाल दिया जाता है, और हिसक पशुआों से भरे हुये संसार में निराधार छोड़ दिया जाता है। सीताजी का दुख भारतीय नारी का दुख है। इसलिये उसे उहोंने ऐसी ककणा-जनक भाषा में व्यक्त किया है, कि रोना आता है।

गीत कितना भावपूर्ण है। सीता जी वन में अपने पुत्रों के जन्म पर विलाप कर रही हैं। 'हाय' यदि आज मैं अपनी सास के घर होती तो कितना दान करती और कितने उत्सव मनाती।'

हिंदू परिवार में संयुक्त-परिवार की प्रथा संसार से निराली है। श्राजकल यह प्रथा दृषित हो गई है, किन्तु प्राचीन काल में यह प्रथा कितनी हितकर थी। कन्या श्रपने मात- भिता के म्नेटाञ्चल से विलग हो जब ससुराल में श्राती थी, तब सास-ससुर की प्रेममयी गोदो में उनका वियोग-विह्वल-इद्य शान्ति पाता था। देवर-जेठ,ननद,देवरानी-जेठानी श्रादि भाई-बहिनों के समान व्यहार करते थे। श्राजकल भी यह प्रथा कहीं-कहीं बहुत ही मधुर रूप में विद्यमान

है, यगि व्यधिकांश स्थानों पर इसके खंडहर ही श्रवशिष्ट हैं, श्रीर इसके प्राचीन सुखमय रूप की स्मृति दिलाते रहते हैं। गीतों में सर्वत्र इसका वर्णन है।

सीता को दुखी देखकर जनक जी कहते हैं—
"त्यारी बेटी, मेरे पास बहुतेरा धन है। रत्नों
की मेरे पास कमी नहीं है। तू जितना चाहे दान
कर। श्रव भी तुझे समुराल याद श्राता है, जहाँ
इतना श्रपमान हुश्रा था ? श्रव बहां न जाना।"
सीता कहती हैं—

'हे पिता, तुम्हारा धन मेरे किस काम का। यदि श्रव भी मेरे पित मुझे प्रहण कर लें, तो में उनके साथ चली जाऊं।''भारतीय-नारी की नस-नस में पातिश्रत कूट कर भरा है। भारतीय नारी का श्रादर्श तुलसोदास जी ने इस प्रकार वर्णन किया 'है—

वृद्ध रोग वस जड़ धन-होना, श्रन्थ, बिधर, क्रोधी श्रित दीना। ऐसेहु पति कर किय श्रपमाना, बारि पाव यसपुर दुख नाना।

हिन्दू-ला में स्त्री विवाह के पश्चात पिता की किसी भी वस्तु की अधिकारिणी नहीं है। भारतीयनारी शैशव से ही उसे जानती है। अतः पित से अपमानित होकर पिता के पास रहना उसे आश्रित जीवन के समान प्रतीत होना स्वाभाविक ही है। इसमें उसके पित की निन्दा है। 'विवाह' के द्वारा दो आत्रायें एक होती हैं, और हृद्य से उन में काई भेद नहीं रह जाता। ऐसी अवस्था में पित की निन्दा पत्नी की निन्दा है, और पत्नी की निन्दा

यद्यपि जग दारुन टु:ख नाना, सब से ऋधिक जाति ऋपमाना।

हिन्दूनारी पित से अपमानित होकर संसार में मुंह दिखाना भी पाप समभती हैं, श्रीर पित की छत्र छाया में वह कुटियों में भी महलों का सुख पाती हैं। पित के हृदय की रानी बन कर वह जिस आल्हाद का अनुभव करती है, वह पति के प्रेम से बब्चित हो कर दुनिया का शासन पा कर भी नहीं कर सकती। उस प्रवृत्ति के कारण महि-लाओं ने 'सीता' को आदर्श बताया है, श्रीर विपत्ति के समय में उसी स्मरणीया देवी की मूर्ति उनके जलते हृदय को शान्ति श्रौर उत्साह प्रदान करती है। इस युग में जब कि हमारे भाई विदेशी-सभ्यता के जाल में फंसने के लिये शीवता से दौड़े जा रहे हैं, श्रीर उस श्राम के गोले ने उन की दृष्टि को चकाचोंध कर दिया है, हमारी बहिने ही गाईरध्य-जीवन की रज्ञा किये हुए हैं, श्रौर भारत को रसातल में जाने से रोकने में सतत प्रयत्नशील हैं। वह अशि-चिता हैं, इतिहास से अपरचित हैं, इस लिये उन के गीतों में ऐतिहासिक त्रृटियां बहुत पाई जाती हैं। जनक जी का सीता जी से वन में वार्चालाप कहीं नहीं पाया जाता, परन्तु श्रक्सर पुत्री को दुखी देख कर पिता ही सान्त्वता देते हैं, संसार से तिरस्कृत हो कर यदि उसका हृदय कुछ शान्ति पा सकता है, तो वह उन्हों की छाया में । इसलिय सीता जी के लिये भी गीत-रचित्री ने यही कल्पना की है। वह तो केवत राम स्त्रीर मीता के नाम से परिचित हैं । अपनी दशा के ब्रमुसार ही वह उनकी भी कल्पना करती है, श्रीर श्रपनी विपत्ति के समान हो उनकी विपत्ति को समभ कर वह रो उठती है।

किस घर मीला है अमवा,

किस घर नारियल बे:या जी।

किस घर चुवै है मजीठ।

बाप घर मोला, सुसर घर नारियल,
मंडगाँ घर चुवै है मजीठ।
बालो घर के पुरोहिन,
पुत्तक लाखी और बाँच मुनाओ जी।

माँ उनकी कहिये रानी,

बाबल कहिये राजा जी।

सहया अर्जुन बीर, कहन राधा सकमन।

बोलो बर के पुरोहित,
पुस्तक लास्रो स्रौर बाँच सुनास्रो जी।
माँ इसकी कहिये नटनी,
बाबल इसका नटवा जी।

वायल इसका नटना जा। पाँचों भइया चोर उचका, भैन दारी जम्बनी।

भैन दारी उरखनी। इतना बचन सुन जच्चारानी रूस गई। दे लई चन्दन कियार,

होलर लइ के पड़ि रहीं। वाहर से श्राये कवन रामा,

ये मन रहंसत, ये मन बिलखत। गोरी खोल डारो चँदन किवार, होलर दिखलास्रो ।

मैं नटनी की हूँ जाई, तुम्हें ना दिखाइये। गोरी खोलों न चँदन किवार,

होलर दिखलाड्ये । माँ थारी गङ्गा-जमना, बाबल राजा सृरज पाँचों भइया श्चर्जुन वीर,

बह्न निरमल चाँदनी।

इस गीत में भी माहत्व का महत्व दर्शाया गया है। विवाह के समय कन्या का पुरोहित कहता है—" कन्या के पिता राजा हैं, श्रीर माता रानी है। पांचों भाई बीर श्रर्जुन के समान हैं श्रीर बहिन कक्मिए। नुल्य है।" वर-पह का पुरोहित कहता है—

'न ीं, कन्या की माता नटनी स्त्रीर पिता नट हैं। पांची भाई चोर उचकके हैं। इसकी बहिन वेश्या है।"

गाँवों में इस तरह के हास्य की प्रथा है किन्तु यह हास्य मभ्यता का श्रितिक्रमण कर गया है। कन्या भला श्रिपने माता-पिता श्रीर भाई बहिनों का इतना श्रिपिक श्रिपमान कैसे सहन करे! किन्तु श्रवसर न जान कर उसे उस समय चुप रहना पड़ा।

[ शेष पृष्ठ १२८ पर ]

#### शाहजहां

#### श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी ]

इयामा संध्या भाई नृतन साज सजाकर । शाहजहाँ जल पड़ा प्रेयसी की समाधि पर ॥ सरल शाँति नीरवता छाई सभी कोर थी। केवल यमुनाकल-कल का कर रही शोर थी।। जिसमें करुणा मानों विखरे हुए अश्रुदल। बहा रही थी बना-बना निर्मेल उज्ज्वल जल ॥ दिग्दिगन्त जब शाहजहाँ के लोचन गड़ते । शब्द उसे कुछ अन्तरिद्य में यूँ सुन पड़ते ॥ मानौ उसकी बुला-बुला कहता था कोई-"बाबो है सबाट! अकेली मैं हूँ सोई। क्या जीवन पर्थ्यन्त कभी यह हो सकता है? क्या फिए अपने प्रिय मिए को भो खो सकता है? मृत्यु भिन्न क्या कभी मुक्ते तुमसे कर लेगी ? नहीं कभी पैसा होगा पृथ्वी पलटेगी। श्राप्ति प्रचंड सूर्यं की उँडी हो जावेगी। शोतल चन्द्र रिंम ऊपणता बरसाएगी ॥" शाहजहाँ सुन-सुन कर अति व्याकुल होता था। भपनी प्रेयसि की ही प्रिय स्मृति में रोता था ॥ याद उसे बातें अतीत की जब आती थी। शूल सदृश मानस में उसके चुम जाती थीं ॥ सरस ज्योतस्ना शशि की नृत्य किया करती थीं। प्रभा चन्द्रिका को मन मोह लिया करती भी॥ १२२

न्ध वृष्टि जब पृथ्वी का आनन भोती थीं। नाव डाल यमुना में जल-क्रीड़ा होती थी। प्रेम-सुधा का पान युगल प्रेमी करते थे । श्रहा! मधुर प्रेमासन के भरने भरते थे ॥ भीरे भीरे रात्रि ू बीतती प्रेमी सोता , बचस्थल पर शीश प्रेमिका का ही होता I नहीं उन दिनों ध्यान कभी ऐसा आता था , हाय विदित था नहीं चार दिन का नाता था। पर उसका सुख भव तो विधि ने नष्ट किया था। रोंने रोते दिन कटते थे, बह दुखिया था ॥ यथि अन भी थी बसंत मुस्काती आती। कोयल भी थी मृदुस्वर से वैंसी ई। गाती॥ किंत रम्य उद्यान प्रोम का उजड् चुका था। जीवन का भानंद कहें। उसकी मिलता था।। कुसुमी की सुवास उसे अब नहीं सुहाती। उसी प्रेमभय जीवन की बस याद सताती ॥ पुष्प-वाटिकामें जब यदा-कदा वह जाता। मुख कैसा, वह तनिक सांखना भी नहि पाता ॥ श्रिय के साथ विचरना कैसे विस्मृति होता । कैसा सुख आनंद अहिनिश वह था रोता। बैठ गया सन्नाट प्रेयसी की समाधि पर ।

हैट गया सन्नाट प्रेयसी की समाधि पर ।

राजि बिताई उसी कृत पर उसने रोकर ॥

नयनों ने ही श्रक्ण, सलिल का श्रीत बहाया ।

बीती सारी राजि भोर होने की श्राया ॥

उसी समय मुर्गे ने भी श्रावाज़ लगाई ।

कानों में श्रावाज़ श्रज़ों की पड़ी मुनाई ॥

नीरवला होगई भंग ऊषा मुसकाई ।

चारों श्रोर ज्योति इलकी दिनकर की छाई ॥

शीश उठाया शाहजहाँ ने कहा — "संदेरा
हुआ, चलूँ आऊँगा फिर संद्या की बेरा ॥"

### जीवन-आहुति

[श्री मादर्श कुमारी ]

रात-भर वर्षा हुई। ऐसा जान पड़ता था मानों सस्पूर्ण संसार का पानी बादल बनकर ऊपर चला गया है, श्रीर श्रव मेंह का कभी श्रन्त ही नहोगा। मेरा जी घबरा उठा। जिधर देखी उधर पानी ही पानी। चारपाई पर जाकर लेटी। संभव है थोड़ा समय नींद श्राते पर ही कट जाय। श्रभी नींद न श्राई थी, हाँ, पलक कुछ-कुछ भारी हो गये थे कि कुसुम श्रीर शशी में द्वन्द्व-युद्ध छिड़ गया। रबर के खिलौने पर दोनों ही श्रपना-श्रपना समानाधिकार दिखा रही थीं। मैं भल्ला उठी, खिलौना उनसे छीन लिया। पर मेरे कोध ने उनके रोदन को श्रीर बढ़ा दिया। विवश मुझे श्रपना वह व्यवहार छोड़ना पड़ा।

भागते बादलों की श्रोर संकेत कर मैंने कहा "शशी देख, यह तेरा हाथी हैं, देख एक पैर उधर है, एक यह है, श्रोर दो वह । चारों हो गये न ? श्रीर देख वह लर्म्या सुँड़ ।"

"तो जीजी! जब हाथी सूँड़ में से पानी फैंक-ता है तभी तो में ह बरसता है न ?" शशी ने चुप होकर कहा। पहिले निकले खाँमू अब भी वह रहे थे।

मैंन कमाल से उन्हें पोंडकर कहा, 'हाँ वीबी, हाथी पेट में पानी भर लेता है, श्रीर जब सूँड़ में होकर निकालता है;' तब पानी बरसता है।''

"जीजी यह ऊँट ! देखो, वह भागा जा रहा है। इसे तो मैं ढूँगी।" सिसकती कुसू ने कहा। मैंने कहा, "श्रन्छा।"

फिर दोनों चुप हो गये।

मैं भी उन्हें छोड़ दूसरी श्रोर चली गई।
कुर्सी पर बैठ मैंने फिर नैपोलियन की जीवनी
उठाई। थोड़ा सा पढ़ा। पर जी घवरा उठा। वह
नैपोलियन जिसने श्रपने बाहु-वल से फांस को ही
नहीं सम्पूर्ण संसार को हिला दिया था— वह वीर
जिसका नाम बच्चे-बच्चे की जिहवा पर था, वह
साहसी नैपोलियन जिसका उद्देश्य फ्रांस के
श्राधिपत्य में संसार को जीत स्वयं मुकुट-यारी राजाधिराज बनने का था, वह हिम्मत न हारने वाला
व्यक्ति जिसकी कीर्ति ध्वजा संसार में फहरा रही
थी—श्रव साधारण व्यक्ति की भाँति ऐल्बा में बन्दी
था।

पर भला उस साहसी पुरुष का उत्साह, उसके बड़े-बड़े उद्देश्य, उस छोटे से द्वीप में समाने वाले कहाँ थे। लम्बे-चौड़े विस्तृत-राज्य के स्वप्न ने उसके हृद्य को हिला दिया। वह निकत भागा। किन्तु फूांस अब पुराना फूांस न था। किर भी उसका साहस कम न हुआ। पुराने सिगहियों को अपने विरुद्ध खड़े देख, उसने कोट के बटन हटाकर हृद्य खोल दिया आर बोला—

"सिपाहियो ! तुम गोली चला सक रे हो ! क्या अब तुम मुझे अपने राजाधिराज के स्वरूप में नहीं मानते ?क्या अब में तुन्हारा जनरल नहीं हूँ ?" और इन शब्दों ने अपना पूरा असर दिखाया। रक्त की एक बूँद न गिरी श्रीर वह थोड़े से समय (सौ दित) तक राज्य करने को फिर फ्रांस का 'सब कुड़' बन गया । पर उसकी शक्ति का हास करने के लिये कीड़ा पहिले ही से लग गया था। समय ने पलटा खाया।

श्रवका पतन सर्वदा के लिये था !

वाटरल् के युद्ध ने उसकी सभी आशाएँ मिट्टी में मिला दी। वह अब एक साधारण व्यक्ति की भाँति सेंट हैलीना में वंदी था। अब उसका कोई न था। उसकी स्त्री "आस्ट्रिया की राजकुमारी" ने भी उसे बोड़ दिया, और वह दूसरे की हो रही।

बह बीर पुरुष जो कहता था— "कार्य ही मेरी मूल-बस्तु हैं। मैं कार्य करने ही के लिये पैदा हुआ हूँ और बनाया गया हूँ।" और जिसने बाटर-छू के चार दिन के घमसान युद्ध में कठिनाई से २० घंटे का विश्राम लिया था और ३७ घंटे से अधिक घोड़े की पीठ पर बिताय थे, एक छोटे से द्वीप में पड़ा जीवन के दिन गिन रहा था।

श्रोफ, कैसा उत्थान था श्रीर कैसा पतन !

मेरा जो एक दम घवरा उठा ।ऐसा माळूम हुआ, मानों अपने ही किसी आत्मीय का ऐसा हाल हुआ। हृदय बहुत भारी हो गया।

जी बहलाने को बाहर वरांडे में मैं कुर्सी पर जा बैठी, वर्षा अभी हो रही थी, पर मेरा ध्यान उधर न था। नेपोलियन के जीवन-चरित्र ने विचार-धारा बाँध-सी दी थी। वही विचार वार-बार आते थे।

न जानेकब तक आते कि सहमा मेरी कुर्मी के पास किसी के गिरने का शब्द हुआ। मैंने मुड़कर देखा, एक कबूदर का छोटा-मा बच्च था, मेरा ध्यात उनकी और हुआ। मैंने करर देखा। नोम के पेड़ की धनी डालियों के बीच बने घोंसले से बह नोचे आ पड़ा था। उसे उठाकर मैंने हाथ पर रख लिया। नन्हा सा था, पंख छोटे-छोटे से निकले थे, और बह धामी ते। एक माँस का लोथड़ा ही था। मैंने उसके उपर हाथ फिराया, बड़ा मुलायम

था। उसकी चोंच पकड़कर मैंने श्रपनी श्रोर की। इस सहानुभूति के लिये उसने मेरी श्रोर एक बार देखा। मुझ उससे विशेष मोह हो गया।

थोड़ी देर हुई होगी कि उसकी माँ श्रा गई, सीधी घोंसले में गई, पर बच्चे को न पाकर चारों श्रोर बेकल हो देखने लगी। मैंने उसे एक श्रोर पृथ्वी पर रख दिया। माँ चोंच में भरे हुए दाने के कारण कुछ बोल न सकी। हाँ, श्रापने बच्चे की इस दशा पर वह सुन्त-सी हो गई। जिस साइस से वह उड़ कर श्राई थी, वह श्रव न रहा। वह कुछ वच्चेन थी। फिर बच्चे के पास श्राई। बच्चा माँ को देख कर दछल पड़ा। नन्हें नन्हें पैरों से उसकी श्रोर खिसकने का प्रयास करने लगा। माँ ने चोंच खोलकर दाना उसकी चोंच में रख दिया, फिर बोली—

"बेटा! तू यहाँ कैसे श्राया?"

"क्या पूज्रती है ऋत्माँ, मैं घर में बैठा था। भूख से प्राण छटपटा रहे थे, तुम्हें देखने की ज्यों ही मैंने मुँह निकाला कि हवा के भोंके ने मुझे नीचे गिरा दिया।"

माँ बेकल हो गई, जल्दी से बोली,

"हाय बेटा ! कहीं लगी तो नहीं — इतने ऊँ चे से गिराथा ! हाय! नहीं जिन्दगानी हुई ।"

फिर माँ ने बेटे को चोंच से चोंच मिला कर ज्यार किया।

मैंने यह सब देखा। माँ के प्रेम श्रोर सहातु-भृति का श्रतुभव किया।

नीचे लटकी डाल में मैंने थोड़ी-सो घास रख दी, बच्चे को भी उसी में रख दिया। माँ-बेटे श्रव दोनों उसी में रहने लगे। पुराने घर को तो मानों श्रव भूल-सा गये।

इस घटना कोकई दिन बीत गर्व । मेरा अधिकतर समय उसी बच्चे के साथ कटना था। उसके पंख बड़े-बड़े हो गयेथे श्रीर बह उनके सहारे धीरे-धीरे चल लेता था। में चने के दाने और रोटी के दुकड़े उस के लिये डाल देती और वह अपने घोंसले से गिर कर पंत्रों के सहारे नीचे आ जाता और उन्हें खा लेता, फिर कृतज्ञता की हिंद से मेरी ओर देखता और में उसे उठाकर उस के घर में रख देती। वह घोंसले में बैठा-बैठा मेरी ओर देखता रहता। मैंने उसका नाम 'मोती' रख दिया था और मानों वह भी समभने लगा था कि 'मोती' उसी का नाम है।

मैं पुकार कर कहती, "मोती आश्रो!" तो वह कूद कर तुरन्त मेरे पास श्रा जाता। मैं प्रेम से हाथ में उठा लेती। यों ही दिन चलते गये।

कुसू और शशी भी बड़ी हो गई थीं। वह दोनों भी मोती से खेलती रहतीं, वह भी उन से विशेष प्रेम मानता था।

मेरा मोह मोती की श्रोर बढ़ता ही गया। उसके सुख-दुख मेरे सुख-दुख हो गये। एक दिन कुसू ने उसे बुलाया। वह श्रपनी माँ के पास बैठा था, वह न श्राया। कुसू को बुरा लगा। उस ने एक बाजार से रबर का कबूतर मँगाया, श्रीर उसे दिखा कर बोली "ले देख मोती! श्रव में तेरे साथ कभी न खेळूँगी। मेरे बुलाने पर तू नहीं श्राया। मैं श्रव इस को, देख इसको खाना खिलाया कहाँगी।"

मोती ने ये शब्द सुने श्रीर मानों उसके शरीर में लग-से गये। वह सुस्त हो गया। दोपहर बीत चला। उसने कुछ भी न खाया। सबेरे के दाने ज्यों के त्यों पड़े थे। मैं श्राई। देखा, मोती बैठा श्राँसू गिग रहा है।

मैंने आवाज दी-

''मोती, मोती, ऋऋते''

पर वह हिला भी नहीं, वहीं बैठारहा। जभी कुसू श्राई। रबर का कबतर हाथ में था। बोली—

"जीजी, मैं श्रव इसके साथ न खेळूँगी। मैंने मवेरे इसे बुलाया, श्रीर यह न श्राया। जीजी ! मैं तो अब इस रबर के कबूतर के साथ खेळूँगी। मैंने मोती से भी यही कह दिया है।"

मेरी समम में आ गया। मोती को दुख हुआ है। मैंने उसे घोंसले से पकड़ लिया। ओर दो दाने उसकी चोंच खोल कर हाल दिये। उसने उन्हें खा लिया और मानों पुरानी बात को वह भूल-सा गया।

मैं उसे लिये माँ के पास पहुँची ऋौर बोली "श्रम्मा देख, यह कुसू मेरे मोती से लड़ती है। आज विचारे ने सबेरे से कुछ भी नहीं खाया, इसने उसे इतना गुस्सा कर दिया।"

मोती ने भी सुना। उसने अपना शरीर फुलाया। मानों कुसू की बुराई वह स्वयं माँ से करना चाहता था। उसके जी में बहुत-ती वार्ते भरी थीं और मानों उसके शरीर में समाती ही न थीं।

वह मेरे हाथ से माँ की श्रोर कूर पड़ा, माँ के सामने खड़ा हो श्रपने हृद्य की व्यथा सुनाने ही वाला था कि पास ही के कमरे से बिल्ला करारी। उसने मोती की गर्दन पकड़ ली। हमारी मानों जान-सी निकल गई। हाथ-पैर बहुत पीटने पर बिल्ली ने उसे झोड़ तो दिया, पर मोती श्रव इस संसार में नहीं था।

उसकी गर्दन पर दो दाँत गड़े थे, जिन से रक्त की बूँदें गिर रही थीं। मैंने भटनट पाना लाकर घोषा। बूग भरकर पट्टो बाँधी। पर मोती के शरीर में जान न थी। मेर हृदय में ऐसा जान पड़ रहा था, मानों कोई मेरा भ्रातनीय-जन चला गया। उसके नेत्र दन्द थे श्रीर वह चैन की नींद सो रहा था। मुझे जीवन को चए-भंगुरता पर बड़ा दुख हुआ।

मोती की माँ ऋाई। पहिले सीधी घोंसले में गई, पर मोती वहाँ नथा। उसने ढूँढ़ा, मोती साँगन में पड़ाथा।

# जीवन-सुधा



श्री विमला बाई ऋवस्थी



श्री आदर्श कुमारी



श्री रान्नो देवी

वह उसके पास आ गई, उसकी चोंच में थोड़ा-सा खाना था। मोती को खिलाने को हुई पर उसने न खाया। माँ घबरा-सी गई। खाना एक स्रोर फेंक दिया, उसने घबराकर पूछा-

"बेटा! क्या हुआ ?" पर बेटा बहाँ न था। माँ को मालूम हो गया कि मोती चला गया। वह रो न सकी। रोने का प्रयत्न किया, पर ऋाँसू न निकले । मानों उसका जी बहुत भरा था । वह कुछ बोल भी न सकी। शरीर की बार-बार फुलाती थी। मानों कहने भर को उसके पास बहुत-कुछ था किन्तु उसका मुँह किसी ने पकड़ लिया था। थोड़ी देर ऐसा ही होता रहा, पर उसका दुख हलका न हुआ। उसने फिर एक बार प्रयास किया कि थोड़ा रो ले, और हृद्य की व्यथा को आँसुओं में बहा दे। लेकिन रोन सकी। श्राँखों के पलक भी भारी थे, श्रीर उसका जी भी भारी था। वह न जानती थी कि उसका एकमात्र सहारा मोती भी चला जायगा, किन्तु वह चला गया। माँ का शरीर सन्त हो गया, मानों ऋपने पुत्र के चले जाने के दुख को अनुभव करने के लिए उसके शरीर ही नहीं था, और न मानों पुत्र क श्रन्तिम समय पर श्रांसू बहाने के लिए उसकी ऋषों में पार्त था।

एक बार रोने की उसने चेष्टा फिर की। श्राँग्वें बन्द करके उसने जी पर जोर लगाया कि दो श्राँग्यू टपटप गिर पड़ें श्रौर फिर वह भी भरकर रो ले... कि घातक बिल्ली ने भपट कर उसकी भी गर्दन पकड़ ली। वह तो श्रपने को भूली बैठी थी, उसके पंजे से न बच सकी।

में भी कपटी, श्रीर उसे छुड़ा लिया; पर उसकी भी जीवन-लीला समाप्त होगई। फिर भी उसे बचाने का प्रयत्न मैंने किया। उसके मुँह में पानी डाला, पर वह तो श्रपने बेटे के पास ही चली गई।

सुझे बड़ा दुख हुआ। माँ रोई। शशी सौर कुसू ने भी ऋश गिराए।

\* \* \*

माँ बेटा दोनों पास-पास पड़े थे। दोनों के जीवन का कैसा अन्त हुआ !

घर में बड़ा कोलाहल मचा। सभी का हृद्य भारी था। पर वे दोनों चैन से सो रहे थे।

मैंने कहा "क्या जीवन का सार इसी में है! ये दोनों संसार की व्यथात्रों, सुख-दुख से दृर चले गए। माँ का प्रेम! बेटे के लिए स्वयं भी चली गई। चाहनी तो बच जाती, पर बह तो उसके पेट का निकाला था, उससे शरीर का एक अंश था— प्रेम था और माँ की ममता!"

मुझे अचम्भा हुआ—श्रोह! झान-शक्ति-रहित होते हुए भी मानु-शेम का इतना उच्च आदर्श! विचारी स्वयं भी चली गई। हाँ, बेटे के लिए ही गई। वह समक्त गई थी कि उसका बेटा चला गया। बस इसी लिए उसने भी जान का लोभ न किया, श्रीर वह भी चली गई। चाहती तो रह जाती, श्रकेले क्या दुनिया में रहते नहीं हैं। पर वह क्यों रहती, उसके लिए दुनिया में क्या था। श्रव तक तो दो थे श्रीर श्रव बह श्रकेली ही रह गई थी। इसी लिए चली गई।

में कैमरा लाई। माँ-वेटा दोनों पड़े थे। मैंने 'कोकस' लिया, श्रीर उन दोनों की स्मृति रखने के लिए उनका चित्र ले लिया।

फिर दोनों को सफेद-वस्त्र में लपेटा। जभी सामने लटके कर्लेंडर पर मेरी दृष्टि गई। ४ मई थी। मुझे ध्यान श्राया "नैपोलियन भी श्राज ही के दिन गया था — तो क्या मेरा मोती यदि मनुष्य होता तो नैपोलियन ही बनकर रहता!" फिर मैंने होनों को सर्वदा के लिए घर से बाहर एक गड़ हे में सुला दिया। वे दोनों चले गए। मैं घर चली आई। 'प्लेट' धोया— 'प्रॅट' लिया। दोनों मोती और उसकी माँ, पड़े थे। मोती के गले में पट्टी बँधी थी। मैंने एक सुन्दर 'प्रॅट' शीशे में जड़वाया और नैपोलियन के चित्र के बराबर ही लटका दिया।

उसे रोज देखकर दो आँसू गिरा देती हूँ।
माँ के जीवन की आहुति की याद आते ही
न जाने कितने आँसू गिर पड़ते हैं। हृदय रो
उठता है, और तुरन्त ही नैपो लियन की घटना
के साथ-साथ मोती की घटना याद आ जाती
है—नैपोलियन के साथ वह आया था और उसी
के साथ ही चला गया।

#### [ १२१ प्रष्ठ का शेष ]

कुछ समय पश्चात् वह पुत्र की माता बनी। तब उसने मानलीला आरम्भ की। उस के पति ने उस से पुत्र दिखाने की प्रार्थना की। उसने उत्तर दिया—

"मैं नटनी की कन्या श्रोर चोर-उचकों की बहिन हूँ। मेरा पुत्र देखकर क्या करोगे ?" तब पित ने उसके सम्बन्धियों की कैसी प्रशंसा की है-

"तुम्हारी माँ गंगा-जमना के समान पिबत्र हैं। तुम्हारे पिता सूर्य्य के समान तेजस्वी हैं। प्रियम्बदे, तुम्हारे भाई ऋर्जुन के समान बीर हैं श्रोर तुम्हारी प्यारी बहिन चन्द्रमा की धवल ज्योत्सना के समान ब्रह्मचर्च्य की श्राभा से पूर्ण हैं।"

श्रव ऐसा क्यों न कहा जायेगा। पत्नी के पिता का घर पित का ससुराल है। ससुराल की निन्दा है। श्रीर श्रव तो उसकी पत्नी पुत्र-रत्न से सुशोभित है। मनुस्पृति में लिखा है—

"श्राचार्य्य दस उपाध्यायों से श्रधिक पूजनीय है। परन्तु माता पिता से भी श्राधिक पूजनीय है, श्रीर शिज्ञा देने वाली है।"

### वन्देमातरम् और मुस्लिम जगत

#### [ श्री गजेन्द्रनाथ पटेरया ]

आये दिन कुछ साम्प्रादायवादी मुसलसात नेताओं ने एक अजीव सवाल को लेकर मुसल-मानों के दिलों को कांग्रेस की खोर से फेरने की कुत्सित चेष्टा की हैं। अतएव यह आवश्यक हैं कि भारतीय मुसलमानों को खुले शन्दों में यह बता दिया जाये कि इन स्वयं निर्मित नेताओं की निन्दनीय हरकतों के पीछे इस्लाम की सच्ची सेवा की भावना नहीं है, वरन अपने स्वार्थ सिद्धि की इच्छा छिपी हुई है।

प्रथम तो 'बन्दे' शब्द का स्पष्ट अर्थ है "मैं प्रणाम करता हूँ " और "मातरम्" का अर्थ है 'माता को' अतएव इसका अर्थ हुआ "मैं माता को प्रणाम करता हूँ ।" इन शुद्ध और सरल शब्दों से किसी भी वर्ण, धर्म और जातिवाले मनुष्य को एतराज नहीं हो सकता। माता सक्को प्यारी होती है। और यहाँ भारत भूमि को माता का रूप सिर्फ हदय में नंसर्गिक प्रेम उत्पन्न करने के लिये दिया गया है।

कुइ मुस्लिम नेताओं ने गायन पर आपत्ति की है उनका कहना है प्रथम तो यह इस्लाम के विरुद्ध युद्ध की घोषणा है। दोयम यह सूर्तिपूजा का प्रतीक है और तीसरे मुस्लमानों के विरुद्ध है।

'वन्देमातरम् गान' स्व० वंकिम चन्द्र चटर्जी के प्रसिद्ध उपन्यास 'त्रानन्द मठ, से लिया गया है। उपन्यास का कथानक ऐतिहासिक-सत्य के श्राधार पर है। संबोप में घटना इस प्रकार है। देश-क्रेही मीरजाकर —क्लाइव की सहायता से— बंगाल के नवाब सिराजुहौला को कपट और बिस्वा-संघात से प्लासी के युद्ध-ब्रेंब में हराकर खयं बंगाल का नवाब बन बैठा। उस इत्यारे ने सिराजुदीका को मही से ही नहीं उत्तारा वरन उनकी इत्या तक करा डाली । इस देश-द्रोहका और धावक-कर्म का मूल्य उसे बंगाल की बालमदारी के रूप में मिला। वह नाम का ही नवाब था। पर वस्तव में वह क्लाइब के हाथों की कठपुतत्वी था। फल्वः बंगाल का शासन एक नवीन अगाली के आधार पर किया जाने लगा ।शासन का भार बीरजाकर पर था और जामदनी की बसुली ईस्ट-इण्डिया-कम्पनी के हाओं में। इतिहास से परिचित प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि इस नवीन शासन म्याली से किस प्रकार बंगाल की जनता—हिन्दू और मुसलमान होनों-पर घोर घत्याचार किया । जनता त्राह-बाह कर बठी। १८७६ के ऐतिहासिक अकाल के समय कम्पनी ने जमान-बस्त्ती में किंचित मात्र भी द्या न दिखलाई और उसके मूल स्वरूप जनवा में श्रराजकता फैलने लगी। इन श्रह्या-चारों के विरुद्ध सन्यासियों ने व्यावत का अंडा उठाया । इस घटना के आधार पर सन्यासी विद्रोह चौर तात्कानिक घत्याचारों का कलात्मक चर्णन स्व० वंकिम बाबू के "आनन्द मठ" उपन्यास का कथानक है।

साम्प्रदायवादी मुसलमानों का यह श्राह्मेप कि "वन्देमातरम् गान" इस्ताम के विरुद्ध युद्ध की घोषणा है, विल्कुल निस्सार श्रीर श्रसत्य है; क्योंकि 'श्रानन्द-मठ' में जातीय द्वेष का लेश मात्र भी पता नहीं मिलता। वह तो श्रत्याचारों की कहानी है। 'श्रमृत बाजार पत्रिका' में एक विद्वान लेखक ने यह ऐतिहासिक खोज से सिद्ध कर दिया है कि "वन्देमातरम् गान" वंकिम बाबू के "श्रानन्द मठ" लिखने के बहुत पूर्व लिखा था। श्रतएव यदि यह भी मान लिया जाये कि 'श्रानन्द मठ' मुसलमानों के विरुद्ध पुस्तक है तो भी 'वन्देमातरम् गान' पर कोई श्राह्मेप नहीं किया जा सकता।

साम्प्रदायवादियों का यह कहना कि 'वन्दे-मातरम् गान' मूर्तिपूजा का प्रतीक है-इस बात का प्रत्यज्ञ प्रमाण है कि वे या तो इस गायन के वास्तविक अर्थ से पूर्ण अन्भिज्ञ हैं अथवा वे जान-बुक्त कर अर्थ का अनर्थ कर रहे हैं। मैं उनका ध्यान "श्रोरियन्ट इलस्टेटंड वीकर्ला" के ता० २४ अक्टूबर के अंक की ओर आकर्षित करता हूँ। उसमें विश्ववन्द्य महात्मा ऋरविन्दघोष चौर मि० ली० आई० सी० एस द्वारा प्रथक-प्रथक 'वन्देमातरम् गान' का इङ्गलिश में अनुवाद प्रकाशित हुआ है। वे देखें कि इस आदर्श गान में कवि ने श्रपने कलात्मक भावों का किस सुन्दरता से सामंजस्य स्थापित किया है। उसमें "दुर्गा" की वन्दना हिन्दुऋों की दुर्गादेवी की वन्दना नहीं है; बल्कि भारतभूमि को दुर्गा का रूप देकर कवि अपनी सात्विक भावनायें प्रगट करता है। वह कहता है "भारत-भूमि रूपी दुर्गा शक्तिवान, सर्वगुण सम्पन्न होकर देश में श्रानन्द का साम्राज्य स्थापित करें। फिर इसके ऋलावा समस्त गान तो कहीं भी नहीं गाया जाता है। सिर्फ उन्हीं श्रंशो का गायन किया जाता है जो कि भारत-भूमि की पुन्दरता, महान शोभा श्रीर प्राकृतिक रमणीयता का वर्णन करते हैं। विश्व के प्रत्येक देश में इस प्रकार की स्तुति महिमा की प्रणाली प्रचित्तित है। कोई भी देशभक्त चाई हिन्दू, मुसलमान या ईसाई क्यों न हो अपने देश के ऐसे सुन्दर और विस्तृत वर्णन पर कदापि आदोप नहीं कर सकता। क्या यह कहना कि भारत-भूमि में सुन्दर निद्याँ बहती हैं—उत्तम-उत्तम फल फलते हैं, ठण्डी-ठण्डी वायु बहती है। वह सुन्दर है, प्रकृति की श्रनूठी रचना है, किसी धर्मविशेष वाले को श्रापित्त का कारण हो सकता है?

तीसरा त्राचेप यह कि "वन्देमातरम् गान" मुसलमानों के विरुद्ध है बिल्कुल हास्यारपद है। तम्पूर्ण गायन में कहीं भी इस बात का आभास नहीं मिलता कि वह किसी भी धर्म पर त्राघात कर रहा है। वह तो जुल्म श्रौर श्रत्याचार के विरुद्ध कवि की आवाज है। अत्याचारी चाहे जिस वर्ग या धर्म का हो इससे लेखक को कोई प्रयोजन नहीं रहता है। उसमें कवि कहता है कि सात करोड़ मानव कएठ माता (बंगाल भूमि ) की महिमा का गान कर रहे हैं श्रीर चौदह करोड़ प्रवल बाहु दुंश्मनों से उसकी रत्ता करने को प्रस्तुत हैं। यह वर्णन 'च्यानन्द मठ' के 'वन्देमातरम्' में दिया गया ह । परन्तु प्रचलित गान में सात करोड़ कण्ठों के स्थान में तीस करोड़ कर दिया गया है। ताकि वह आवाज सारे भारतवासियों की प्रतिनिधि कहलाई जाये। सात करोड़ कण्ठी से निकली ब्रावाज साधारण से साधारण बुद्धि वाला व्यक्ति समभ सकता है कि यह आवाज-बंगाल की समस्त जनता की आवाज है, न कि सिर्फ हिन्दुत्र्यों की। क्योंकि ६० वर्ष पूर्व जब यह गान लिखा गया था उस समय बंगाल की जन संख्या सात करोड़ थी। श्रतएव सात करोड़ करठ हिन्दू-मुसलमान श्रीर बंगाल की समस्त जातियों के कण्ठ हैं। फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि यह आवाज सिर्फ हिन्दुओं की है और मुसलमानों के विरुद्ध है।

मुसलमानों द्वारा मीरजाफर उतनी घृणा से देखा जाता है जितनी घृणा से हिन्दुओं द्वारा। भला कोई धर्म क्या अत्याचार का समर्थन कर सकता है ? मीरजाफर के शासन का चित्र अद्भित करने वाला सद्दा लेखक — चाहे वह मुसलमान क्यों न हो — वही चित्र अद्भित करेगा जो वंकिम बाबू ने "आनन्द मठ" में किया है। यदि मीरजाफर के स्थान में कोई हिन्दू राजा होता तो 'आनन्द मठ' के कथानक अथवा भाषा में जरा भी फरक न आता। वह तो अत्याचार के विरुद्ध आवाज है न कि धर्म या जाति विशेष के।

श्राज तीस वर्षों से 'वन्देमातरम गान' का प्रचार हो रहा है पर अभी तक किसी ने इसका विरोध नहीं किया जो इस बात का प्रवल प्रमाण है कि 'वन्देमातरम गान' मुसलमानों की धार्भिक भावनात्रों के विरुद्ध कदापि नहीं है। लाखों की संख्या में मुसलमानों ने इसे उसी इञ्जत श्रीर प्रेम के साथ अपनाया है जिस प्रकार हिन्दुओं ने । मिस्टर जिन्या ने जो चाल खेली है उसे युक्त प्रान्त के रेवन्यू मिनिस्टर माननीय रफ़ीक-श्रहमद किडवाई ने खले शब्दों में राष्ट्र कर दिया है। आप कहते हैं-श्री जिन्ना "वन्देमातरम गान" को इस्लाम के बतलाते हैं। श्री जिन्ना वर्षों तक काँमेस उसकी मुख्य कार्य कारिगी - श्राल इन्डिया काँग्रेस कमेटी के अनुपम और उत्साही सदस्य रहे हैं। हर साल कांग्रेस का श्रोधवेशन 'वन्देमातरम्' गान के साथ आरम्भ होता रहा है श्रीर हर साल श्री जिल्ला प्लेटकार्म पर खड़े हुए एक भक्त की तरह उसे सुनते हुए देखे गये हैं।

उस समय क्या कभी उन्होंने विरोध किया था। श्री जिन्ना ने काँमेंस इसलिए नहीं छोड़ी कि वे उसे इस्लाम विरोधी गान सममते थे बल्कि इसलिए छोड़ी कि नागपुर में उसने चपना ध्येय "श्रीपनिवेशक" पद से बदल कर "स्वराज्य" प्राप्त करना कर दिया था।

यहां एक सवाल यह उठता है कि काँग्रेस साम्प्रदायवादियों को उन्हीं की चाल से अर्थात 'वन्द्रेमातरम' को पृथक कर के उन्हें क्यों नहीं मात देदेती है ? इसका जवाब यही है कि जब काँग्रेस साम्राज्यवादी शक्तियों से साहसपूर्ण श्रौर सफल लोहा लेगई तो फिर इन चन्द वादियों से किस प्रकार डर सकती है। सान्प्रदाय-वादियों ने शुरू से ऋाजादी की जंग में रोडे अटकाये हैं और अटकाते जारहे हैं --यद्यपि एक दिन ऐसा आयेगा जब इनका नामो निशान ही मिट जायेंगा — फिर भी अगर इस वक्त इनकी यह चाल मानली जायेगी तो निस्सन्देह इनके हांसले बढ़ेंगे श्रीर यह कांप्रेस की शक्ति को श्राचात पहुँचाने की कोशिश करेंगे। श्रतः उनकी माँगों को ठुकराना ही कांग्रेस के लिये उत्तम मार्ग है। इसके ऋलावा एक महान कारण पं० जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में, यह भी है कि "वन्देमातरम" पर हजारों भारतवासियों ने प्राणों की आहतियां दी हैं। इसने करोड़ों के हृदयों में देश श्रेम की अग्नि प्रज्वलित की है। सारा बंगाल इस दीवाना है। श्रतएव स्वतन्त्रता-संप्राम के पुनीत महामंत्र की काँग्रेस कदापि साम्प्रदायवादियों की चालों में श्राकर नहीं कर सकती। अगर काँग्रेस प्रथक करने की कोशिश भी करेगी तं प्रत्येक देश-भक्त का यह कर्तव्य होगा कि वह इसके विरोध में अपनी श्रावाज उठावे।

### गीत

### [ श्री नेमिचन्द जैन ]

#### काक मन में इतर कारी ।

बसो दो पल को बटोडी छीन कुछ लेगा न कोई जलस दोपडरी न जाओ दो घड़ी विश्राम पाये।

हाँ, तुन्हारी राह परापत्त देख होते होंन स्थानुका? पर स्टीही, हृदय नेवस सजल से नुष्य करण क्रियाये।

बहुत .बोते दिवस पहले कमन सा भम्लान गुल ले कक प्रदेशी क्रकेला चल दिया था दिल चुराये ।

फिर न वह वेददै आया हो गया अपना पराया पविक देसालगा नुमर्गे उसी के से प्राण आये।

भीर देवस हो पड़ी मैं इस इसलकती सी घड़ी में बुरा कुछ मत मानना इस भूख दन जाना, पराये !

#### निमन्त्रण

[ श्रो शकुन्तला प्रभाकर ]

प्रभावती को आज निमन्त्रण में जाना है। उसी की तैयारी में लगी हुई है। प्रेमा तैयार हो चुकी है, बार-बार उत्सुकता से माँ के पास जा-जा कर देख रही है कि माँ तैयार हो पाई हैं या नहीं।

प्रेमा की उम्र सात वर्ष की होगी। श्राज उसे वड़ी ख़शी हो रही है, अपनी भाभी के साथ निमन्त्रण में जाने की। माँ को वह भाभी ही कहा करती थी; क्योंकि पैदाहोते ही घर में बच्चों को भाभी ही करते सुना, इसी वजह से उसका भाभी कहना स्वाभाविक है। वह घर में सब की प्रिय थी। देखते में प्रेमा घर में सबसे सुन्दर दीख पड़ती थी। बाल कटे हुये थे। फ्राक-जाँगिया उसकी पोशाक थी। शायद इसी सुन्दर बेश के कारम् वह सबकी प्रिय थी। माँ का वह सदैव कहना माना करती थी। देह से भी काफी स्वस्थ्थ थी। श्राज उसने जब श्रपनी भामी से दूसरे के घर निमन्त्रित होना सुना था तभी से उस खुशी में अपना सब काम मुलाये बैठी थी। जाने की उत्सकता में चार बजने के इंतजार में श्राज उसने कितनी बार घड़ी देखी थी, इसको तो वही जानती है।

प्रेमा के बाबू जी तो प्रतिदिन के अनुसार अपने काम पर सुबह ही से चले गये थे। घर पर अब केवल उसकी भाभी प्रभावती और उसके बाबा रामलाल थे। प्रेमा अपने बाबा से घर पर कुछ न कुछ पढ़ा करती थी। स्कूल तो यह केवल भाषा सीखने के भिभिनाय से जाया करती थी। बाबा को बड़ी चाह थी कि रानी मेमा सब भाषाओं का काफी झान नाम करते, ताकि फिर किसी भी मंडली में बैठकर सुगमतापूर्वक अपना काम चला सके। इसी वजह से उन्होंने बंगला भाषा साखनेके लिए नेमा को स्कूल भेजना आरंभ कर दिया था। बाकी उसकी पढ़ाई की पूर्ति खुद ही घर पर दिया करते थे। आज नेमा को जाने की खुशी थी। इसी खुशी में उसने आज दिन भर की पढ़ाई को बेमन पढ़ा था।

प्रभावती ने तैयार होकर प्रेमा से कहा—प्रेमा जा तू यशेदा को साथ लेकर एक ताँगा लेका।

घर पर केवल यशोदा नाम की एक हो वाली
भी, जो मेमा से केवल पाँग वर्ष बड़ी थी। प्रेमा
और यशोदा में सम्य-भाव था। दोनों आपस में
बहन के नाते अपने काम धन्धे से समय बचाकर
खला करनी थीं। प्रेमा ने यशोदा को कुछ अक्ररज्ञान भी करा दिया था। इस कारण यशोदा बड़ी
होने पर मी प्रेमा से द्वी-द्वी सी रहा करती थी।
यशोदा अपने को उम वक्त मुला बैठती थी, जब
कि वह प्रेमा के साथ तल्लीन हो खेला करनी थी।
पर वह कुछ जाए ही तक अपने को मुला सकती
थी। मालिक की कठोरता भरी लाल
पीली आँखें उसकी इस बात के लिए विवश कर
देती थीं कि वहसमझे कि वह एक दामी है, प्रेमा

की सहपाठिनी नहीं। उस वक्त यशोदा अपने मन को मसोस कर रह जाती। तब एक बार उसको अपनी भूली माँ की धुँ घली स्मृति याद हो आती। वह कुछ चएा के लिए ज्ञान-शून्य अवस्था में अपने को अनाथ समभ बे-मन से काम करने लगती। पिता से आँख बचा अपने सहज स्वभाव के कारए प्रोमा जब उसको उस निस्महायअवस्था में धीरज बँधाया करती तब वह अपनेको प्रेमा की उस कुपा के लिए ऋएी अनुभव करती थी।

प्रोमा यशोदा को साथ ले ताँगे के लिए चल दी।

प्रेमा के घर से ताँगे का ऋडडा करीव ऋाध मील दूर था। जहाँ अड्डा था वहीं पर प्रेमा के बाव जी के परिचित मित्र की दुकान थी। इसी दुकान पर प्रभावती ने चिट्ठी देकर दोनों को भेजा था श्रीर कहा था-कि वही तुम्हें सस्ते में ताँगा करा र्देंगे । जहाँ प्रेमा रहा करनी थी वह छोटा सा शहर (या कस्वा कहना कहना चाहिए) था। वहाँ बड़े शहरों की भाँति ताँगे इधर से उधर चक्कर नहीं काटा करते थे। वह तो अपने निर्मित किये हुए स्थान पर ही विना किसी प्रकार की मेह-नत किए सवारी पा जा थि। वह सवारी के पास नहीं जाते थे; बल्कि मवारी ही उन के पाम श्राती थी। ऐसा जान पड़ता थामानों उन्हें सवारीसे कोई गरज हीं नहीं है। जो प्यासा है वह खुद ही कुएं पर ऋायगा और ऋपने की तुन्न करेगा। कहीं कुश्राँ बटो ही के पास जाता है !शायद यही सीच-कर वह ऋपनी इस हैरानी से बचते थे।

प्रेमा श्रोर यहोटा होनों बातचीन करती हुई चली जा रही थीं। प्रेमा ने दूर से एक ताँगा खाली श्रात देखा श्रोर शरारत करने की इच्छा से कहा—यशोदा मैं इस ताँगे के पीछ जाती हूँ, श्रोर तुम तेजी से मेरे पीछे भागती श्राना। जब मेरी बारी खतम हो जायगी तब तुम चढ़ना श्रोर में पीछे—पीछे श्राऊंगी।

यशोदा को प्रेमा की यह सलाह श्रन्छी लगी वह बोली—इस प्रकार से रास्ता मालूम नहीं पड़ेगा श्रीर हम शीघ ही श्रपने उस स्थान पर पहुँच जाँयगे। इतने में ताँगा पास श्रागया श्रीर यशोदा "पहले मेरी वारी"—कह उस चलते हुए ताँगे पर चढ़ गई। प्रेमा "नहीं पहले मेरी—गहने मेरी—"ही करती रह गई। श्रीर "प्रव मेरी वारी हैं उतरों जी, श्रव मेरी वारी हैं ।" कहती हुई खूब तेजी से दौड़ने लगी।

यशोदा अपनी चह्डी का मजा ले रही थी और प्रेमा के दीड़ने और हाँपने की अबहेलना कर रही थी। ताँगे का अड्डा अभी कुछ दृर था। "ले अब तेरी बारी है, मैं तो अडडी का मजा ले चुकी" कहकर यशोदा उत्तर पड़ी!

प्रेमा भी अपनी बहादुरी का परिचय देती हुई चलते ताँगे पर चढ़ गई। ताँगे की चाल पहले की अपेसा तेज हो गई। अड्डा किंगी श्रमाया। दुकान भी एक फर्लाझ दृर रहगई। ताँगा उसी तेजी से आगे ब चाला जा रहा था। ताँगे वाला उन दोनों भोली भाली नासमक बिच्चयों की शरारत से विना किसी आशंका के आनित्त हो रहा था। प्रेमा को उस तेजी में उतरने की हिम्मत न होती थी। दुकान पास आई देख प्रेमा हिम्मत करके उतरी। परन्तु उतरते वक्त वह हाथ छोड़ना भूल गई और इस भारी भूल के कारण वह ताँगे के साथ सात-आठ गज तक विमटी हुई चली गई।

पीछे दे।इती हुई यशोदा चिहा-चिहा कर कह रही थी "प्रेमा हाथ छोड़दो, हाथ छोड़दो।"

किन्तु प्रेमा उस समय हतवृद्धि हो रही थी। जब वह काफी घायल हो गई, तब स्वयं ही हाथ छट गए।

यशोदा ने पास आकर उसे उठाया। आस-पास के दुकानदार भी उसे उठाने के लिए अपना-अपना काम छोड़ भाग आए। प्रेमा थोड़ी देर में कुछ स्वस्थ हुई और अपने चारों ओर भीड़ जमती देख भट्टपट उठी श्रौर श्रपनी फाक उन लहूं-लुहान घुटनों से खींच-खींच कर नीची करने लगी, ताकि कहीं वह इसी मरहम-पट्टी में फैंस कर निमंत्रण में जाने से न रुक जाय।

दुकान जमीन से खासी उंचाई पर थी। वहीं जाकर प्रेमा को भाभी का दिया हुआ पत्र देना था। प्रेमा ने अपनी तकलीक को छिपा कर और अपने को सीढ़ी की आड़ में खड़ा कर, पत्र दे दिया और उत्तर की प्रतीचा करने लगी! प्रेमा को दुकान पर उपर आने को कहा गया पर वह यह कह कर वहीं खड़ी रही कि जल्दी जाना है।

नोकर ने मालिक के कहने के अनुसार ताँगा कर दिया और वह उसमें बैठकर उसी रास्ते से गुजरी जिसमें वह घटना घटी थी। आसपास के दुकानदार प्रेमा के बेरोक-टोक बहते हुए सन को देख रहे थे और ताँगा अपनी चाल से चलता जा रहा था।

प्रेमा ने कहा, "यशोदा देख भाभी तो घर पर पर तैयार बैठी होंगी। मैं ताँगे में ही बैठी रहूँगी स्रोग तू जाकर भाभी को भेज देना। मेरी चोट की बात मत कहना, नहीं तो भाभी मुझ अपने साथ न ले जावेगी।"

यशोदा ने हाँ, हूँ, करके कहा—"क्या भाभी को यहाँ त्राकर पता नहीं चलेगा ?"

"मैं आगे बैठ जाउँगी। भाभी पीछे बैठैंगी। तब मैं भाभी को कैस दीख़्गी ? वहाँ जाने की खुशी में आज मैंने कुछ भी तो नहीं पढ़ा। स्कूल में भी मन नहीं लगा। इनने पर भी मैं वहाँ न जाऊँ!"

यशोदा ने स्विजाते हुए कहा "मैं तो जरूर कर्ॅुनी जी।"

"यशोदा, मैं तेरे हाथ जोड़ती हूँ।"

विनीत स्वर से प्रेमा कह रही थी। "सच कहती हूँ, में तुझे वह बहुत अच्छी तसवीर वाली किताब दूँगी, जो बाबू जी कानपुर से लाए हैं। तुझे खूब पढ़ाऊँगी। क्या फिर भी तू कह देगी? बस श्रौर चाहें [जो कह लीजो, चोट वाली बात नहीं।"

यशोदा का प्रेमा की उस भोली-भाली सूरत चौर उसकी विनीत प्रार्थना पर साम्य-भाव से भरा हृद्य "ऋच्छा" कह ही कर रहा।

यशादा यह लूब जानती थी कि यदि मैं न कहूँगी तो मालिक और मालिकन मुक्ती को दोषी साबित करेंगे और अपनी क्रोधित वाणी की बौछार से मुझे बेध देंगे, तब मैं क्या कहाँगी! मैं मालिक की युरी बनकर कहाँ रह सकती हूँ। प्रेमा की तो कोई बात नहीं, कुछ देर न बोलेगी। फिर बुझ ही च्या के बाद एकसे हैं। उधर बह प्रेमा को भी तो बचन दे चुकी है, भाभी स चोट वाली बात न कहने का। वह प्रेमा के माथ विश्वासघात कैसे करे! इस दुविधा में पड़ कर बह अपनेको सुलमा ही नहीं पाती है। इधर खाई उधर कुँ आ। सहमा नाँगा कका! घर आया जान यशोदा उतर पड़ी और प्रेमा आगे जा बैठी।

प्रेमा ने चिल्ला कर कहा "यशोदा, बस वही बातयाद है न।"

यशोदा उसको सुनी-अनसुनी करके उपर जा पहुँची और अपने निर्णित किए हुए विचारों को मालिक के सामने पेश कर दिया और प्रेमा की चोट वाली घटना संचिप्त शब्दों में सुना कर वह भाग गई।

प्रेमा भाभी के आने की राह देख रही थी। जब उनके आने में देर हुई तब उसका घबराहट पैदा होने लगी और वह बार-पार यशीदा आभागिन को कांसने लगी। उसे कभी स्वप्न में भी खबाल न था कि कभी यशोदा उसके साथ ऐसा दुर्व्यवहार कर सकेगी। इतने में आवाज आई "प्रेमा! अप्रेमा! अन्दर आ क्या हो गया!"

प्रेमा सहमी-सी ताँगे से उतर कर ऋन्दर गई श्रोर श्रपराधिन की भाँति खड़ी होकर ऋपनी चोट को छिपाने का प्रयत्न करने लगी।

वाबाने कहा,

"बहू तुम जाश्रो, तुन्हें देर होती है। प्रेमा को ऐसी हालत में ले जा कर क्या करोगी। चोट काफी लगी है। खून भी बहुत मिकल चुका है। मैं सब ठीक-ठाक कर लुँगा। तुम जाश्रो।"

प्रभावती प्रेमा को प्रेम-भरी दृष्टि से देर कर अपनी अनिच्छा प्रगट करती ताँगे पर जाकर सवार होगई। ताँगा चल दिया। प्रेमा की सारी आशाओं पर पानी फिर गया, उसका रचा-रचाया प्रपंच सब लएभर में ही धूल में मिल गया। निराश हो वह बाबा जी के पास बैठ गई। आह! उसकी भाभी ऐसे कठोर दिल की निकली जा अपनी इकलोती लाड़ली पुत्री प्रेमा की उस करूणामयी मूर्ति से भी न पिघली और स्वयं चली ही गई। उसने अपने को किस दीन रूप में भाभी और बाबा के सामन पेश किया था; पर उसका किसी ने भी मूल्य न आँका। अब उसे अपनी चोट की तकलीक माल्य हुई, वह चीखने लगी—

"यशोदा पानी ला, पानी।" यशोदा बार-बार ऋपने को धिकार रही कि मैंने क्यों कहा ? क्या यह छिपाने की चीज थी ? पता तो लगही जाता; पर मैंने क्यों कहा ? बहु जी खुद ही देख लेतीं। क्या होता, एक दो शब्द कह लेती ! पर भेमा मुझे क्या समक रही होगी !सोचती होगी कि यशोदा कितनी नीच प्रकृति श्रपनी बात की पत्रकी नहीं है, विश्वासघात करती है। हाँ, मैंने न कहने के लिए 'हाँ' भी तो कर ली थी । किर मैंने क्यों कहा ! उसे ऋपने ऊपर बार-बार गुस्सा ऋा रहा था। विचारी सुबह से तो जाने-जाने का शार कर रही थी; फिर भी नहीं जा पाई । चोट लगी थी तत्र कैसे जाती ! उमी ने ता जान-रूफ कर चोट लगाई। क्यों नहीं छोड़े अपने हाथ नाँगे से उतरते समय ! अपने आप ही तो सब कुछ किया है फिर मेरा क्या है इसमें दोप! इसी विचार-धारा में कभी यशोदा अपने को निर्दोष साबित करती, कभी दोषी। पर बह

श्रपने को इस दुविधा से निकाल कर किसी निश्चित निर्णय पर नहीं पहुँचा पाती थी। वह बार-बार सोचती—जब मैं प्रेमा के सामने जाऊँगी तब वह मुझे कितनी नीच समझेगी श्रीर मेरी तरफ कर दृष्टि से देखेगी। तब मैं क्या जबाब दूँगी उसे ? यही कहूँगी न कि मैंने श्रपना कर्वव्य पूरा किया! न, छि: छि: ऐसा न हो सकेगा, कभी भी नहीं। उसके ऋएा से ऋणी होकर प्रति दिन उसके भार से दबी जा रही हूँ। उसके सामने कुछ भी न कह सकूँगी। मौन ही एक मेरा साधन है।

यशोदा अपने को सँभाल कर चिकित्सा के लिये जल लेकर जा उपस्थित हुई।

रामलाल प्रेमा की चिकित्सा में लग गए।

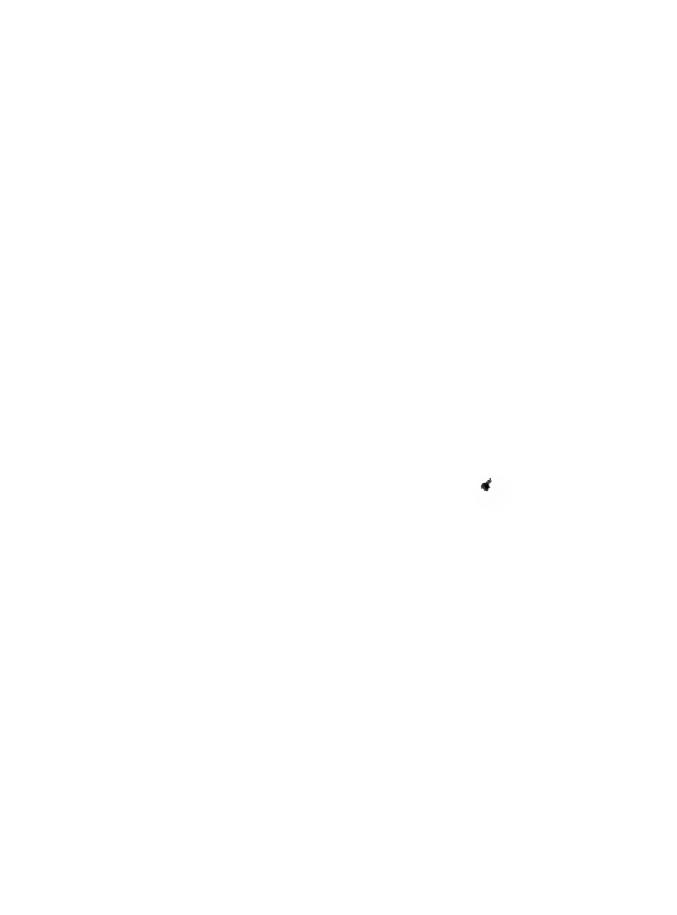
प्रभावती निमंत्रण में पहुँच तो गई; पर मन उसका प्रेमा ही के पास था। निमंत्रण में खाँर भी खामंत्रित स्ती-पुरुष थे। बच्चे का नामकरण संस्कार था। वहाँ खामी रोनक होग्ही थी। बच्चे खुशी मना रहे थे, बार-बार इधर से उधर चक्कर काट रहे थे। बच्चों को देख्य भावती प्रेमा का रह-रह कर याद कर उठती खाँर बह घर बापस खाने के लिए उत्सुक हो उठती। घरकी एक स्त्री ने पूछा कि खाप प्रेमा को माथ क्यों नहीं लाई। उन्होंने प्रेमा के न खाने का कारण बता दिया। सब सुनकर खवाक रह गए।

किसी प्रकार से प्रभावती आमन्त्रित मे लौटकर ऋाई श्रीर घर लाइली प्रमा का ख्य खुल कर प्यार किया। मोनावस्था में जिन बिन्दुओं बड़ी कठिनता से रोक पाई थी वे यहाँ आकर फ़ुट पड़े। कीन जान सकता है कि उन पानी के छोटे-छोटे जिन्दुओं में अपार दुख भग है, या खुशी का साम्राज्य बसा हुआ है। इसकी तो वही जान संकेगी। माँ के भेद-भरे रहस्य का का पता क्या उन मातियों से श्रीर कोई समभ सकेगा !

# जीवन-सुधा+++



श्री शक्ंतला कुमारी प्रभाकर



#### समाज और स्त्रियां

[श्री रामनारायण श्रीवास्तव 'गरीब']]

श्राधुनिक युग में न केवल भारतवर्ष, श्रापितु समस्त संसार, 'समाज श्रौर स्त्रियाँ' इस विषय पर तर्क-वितर्कादि द्वारा, स्त्रियों को समाज में उनके श्राधिकार पुनः प्राप्त करा देने की चेष्टा कर रहा है श्रौर कई राष्ट्रों को इस श्रान्दोलन में सफलता भी प्राप्त हो चुकी है, किन्तु इस विषय की प्रगतिशीलता जितनी श्रन्य राष्ट्रों द्वारा हुई है, उतनी भारतवर्ष द्वारा नहीं।

सबसे प्रथम, हिन्दू-नारियों पर पाशविक श्चत्याचार एवं समाज के कलंकपूर्ण घृष्णित ऋस्तित्व पर विचार करना चाहिये । हिन्दु-समाज धार्मिक भावनात्रों के संसार में, इतनी भीरुता, दाम्भिकता एवं पुंसत्वविद्यानता का परिचय दे रहा है, जिसके भविष्य पर प्रत्येक विचारशील पुरुष का हृदय काँप उठता है। यह हिन्दू-जाति का वह सुन्दर हास नहीं है जिस पर स्वार्थी विदेशी स्नानन्दोनमाद में नाच उठें; किन्तु, यह वह भयंकर हास है जिस पर नीच से नीच समाज के नेत्रों से भी ऋविरल ऋशु-प्रवाह की धारा बह निकलती है, श्रीर हिन्दु श्रों की कापुरुपता एवं श्रसमर्थता की प्रशंसा, कायर से कायर मनुष्य भी व्यंग शब्दों में करते हैं। गुरुडों श्रीर बदमाशों द्वारा श्रपहृत नारियों का त्याग कर हिन्दू-समाज नित्य प्रति, हिन्दू-जाति के उस रत्न को खो रहा है, जिसके द्वारा प्राचीन भारत समृद्धि-शाली, शक्ति-शाली एवं बुद्धिशाली बनकर, समस्त वसुधा को रौदते हुए विजय-पताका फहराता था, तथा जिस अमृल्य रत्न की कमी के कारण ही भारत का भविष्य अन्धारमय होता जा रहा है। क्या समाज नारियों पर पाशविक ऋत्याचार करते हुए भी अपने अस्तित्व का इंका पीट सकता है ? इसका उत्तर निश्चय ही 'नहीं' है। समाज का ऐसा श्रस्तित्व-हीन-श्रस्तित्व श्रधिक समय तक टिकने वाला नहीं है। समाज की दयनीय श्रवस्था पर दृष्टि-पात करते हुए, भारत के प्रत्येक नव-युवक का यह कर्तव्य है कि समाज के अन्ध-विश्वास को जड़ से उखाड़ कर, पुन: नवजीवन के श्रंकुर को सुधार के जल से सींच कर उसे विशाल वृत्त का स्वरूप दे, जिसकी छत्र-झाया में हिन्दू जाति त्र्यानन्दोल्लाम से करतल-ध्वनि करती हुई सुख-पूर्वक अपना जीवन बितावे ।

समाज में सियों का पतन, श्रिश्चा के कारण भी है; क्योंकि श्रिश्चित्त होने के फल-स्वरूप ही उन्हें श्रपने श्रिधकारों का पूर्ण झान नहीं रह सकता। हि का श्रर्थ उस शिवा से है जो हृदय में धार्मिक-प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन दे, न कि मानव-जीवन में प्रेमलीलाश्चों की गाथा सुनावे श्रथवा श्रन्थे-पशु के साहश्य वक्त-गामी एवं कंटक-पूर्ण पथ पर दोड़ना सिखावे। यद्यपि कुछ श्रार्थ-विदुषियों ने समाज का

ऋार्थिक-अवहेलना करके अथवा पुरुषों की दासता से मुक्त होने की इच्छा से, ंभारत के विशाल ललाट पर शिवा के गौरव-पूर्ण को लगाने की चेप्टा की है, किन्तु ऐसी आदर्श-युवतियाँ उँगली पर गिने जाने योग्य हैं। चाहे वडे-बड़े शहरों में, कुछ धनी-सज्जनों की बालिकाएँ भले ही थोड़ी वहुत शिक्षा (जिसे मैं लाभ-कारक शिवा समभता ही नहीं )प्राप्त करलें , किन्तु भारत की ६० प्रतिशन जन-संख्या वाले देहातों एवं गाँवों में उसका पूर्ण रूप से अभाव है। बेचारे भोल-भाल देहाती, समाज के एवं लोक-लाज के विचार से पीड़ित होकर अपनी बालिकात्रों को गुड्डा-गुड्डी त्रादि श्राज्ञा सहर्ष दे देते हैं किन्तु शिचा प्राप्त करने की नहीं। उनके समज्ञ समाज से बहिष्कृत होजाने का प्रश्न सतन् उपस्थित रहता है। भारतीय समाज उस समय भी नहीं चेतता है जब देहातों में ईसाई लोग मिशन-पाठशालाश्री द्वारा जनता में, शिचा का नहीं, किन्तु ईसाई-धर्म का प्रचार करते हैं, स्रौर नित्यप्रति भोले कुट्रम्व तथा निर्मल-हृद्या बालिका श्रों को अपने धर्म में दीचित करके हिन्दुओं का हास करते हैं। इतना सब होते हुए भी, भारत में हिन्दू-समाज द्वारा स्थापित पाठ-शालाएँ बहुत नहीं हैं। इसका कारण यह हो सकता है, कि समाज के बिचार से, यदि अयाँ शिचित होजावेंगी तो अपने अधिकारों को पुन: प्राप्त करने की चेच्टा में लग जावेंगी। भारतीय नारी की श्रसाधारण पवित्रता, हृद्य की मरलता, नि:स्वार्थ उत्सर्ग श्रीर सराहनीय भोलंदन का प्रकार देग्हा है। जिस बदला, समाज इस समाज में नारियों की इसनी दयनीय दशा हो उस समाज का उत्कर्ग तथा भविष्य, केवल ईश्वर पर ही निर्भर है।

समाज ने स्त्रियों के कोमल हृदय में यह बात कूट कूट कर भरदी है कि सतीत्व की ग्हा केवल परदे पर ही निर्भर है। इस विषय में नारी-हृदय की परिस्थिति, स्त्रभाव एवँ परतन्त्रता पर विचार करने की कोई आवश्यकता ही नहीं समभी गई है।

नारियों के समन्न; पुरुष-जाति की अवलाओं के प्रति सहानुभूति का जीता-जागता नङ्गा नृत इन्हीं प्रथाश्रों की आड़ में हो रहा है। विभीपिका-पूर्ण कृत्यों के मन्थन से जनको हलाहल विष पिलाकर काल कवलित किया जा रहा है और फिर सक्चे समाज-भक्त होने का दावा वना ही हुआ है।

पर्दे जैसी भयङ्कर प्रथा के वहाने वह उन्हें वक-र्टाप्ट से देख रहा है तथा उनके मिर उठाते ही उन्हें कुचल देने का नित्य-प्रति प्रयतन रहा है। यह बात अवश्य ही माननीय है श्रत्यन्त-प्राचीन प्रथाओं के बहिएकार च्यान्दोलन च्यत्यन्त निष्कुष्ट है<sub>।</sub> किन्तु पर्दे की प्रथा अभी अभी ही प्रचलित हुई है। मुराली की पाप-पूर्ण दृष्टि की ज्वाला से हिन्दू-समाज इतना पीड़ित हुआ है कि कुछ हिन्दू-युद्धिमानों ने पर्दे की प्रथा का प्रचार कर डीला; किन्तु, यदि वे इस बात को जानते कि इसी प्रथा के कारण भारत का भविष्य पूर्णतः अन्धकार-मय होजावेगा तो सम्भवतः इस प्रथा का प्रचार कदापि न होता। नारियों की अन्तरात्मा में उस दैवी-शक्ति का समावेश रहता है जिसके द्वारा वे समस्त संसार की वाग-डार ऋपने हाथ में कर सकती हैं; किन्तू पुरुष-समाज उन्हें इस प्रकार दबोच बैठा है कि वे उस शक्ति का समयानुकूल उपय ग, इच्छा रहते हुए भी, नहीं कर सकती हैं। ऋतएव, ऐसा दशा में प्रत्येक नारी का यह कर्तव्य है कि जैसी नाशकारी प्रथा को जड़-मूल से नव्ट कर देने के आन्दोलन में, वे सशक्ति भाग लें समाज को स्त्री-शक्ति का श्रन्छा परिचय हैं।

उपर कहा जा चुका है कि श्रत्यन्त प्राचीन प्रथाश्रों के बहिष्कार का श्रान्दोलन निकृष्ट है। विधवा-विवाह का निषेध भी श्रत्यन्त प्राचीन

परिस्थिति में नहीं तो प्राचीन श्रवश्य है। ऐसी इसके पुन: प्रचार का आन्दोलन करना, पूज्य-पूर्वजों के मुख़-कमल को, कलंक-कालिमा द्वारा कुरूप करना है; किन्तु, स्त्रियों पर ऋस्तित्व जमाने का जन्म-सिद्ध अधिकार वाले समाज के स्वार्थ श्रीर गृद-सत्ता की श्रोर भी दृष्टि-पात कीजिए। एक श्रोर तो निर्वुद्धि विदेशियों को, पूज्य-पूर्वजों की अपेत्रा अधिक बुद्धिमान् एवं शक्ति-शाली मान कर, उनके स्वार्थ-पूर्ण प्रयन्न को सफलीभूत करने तथा चमकते हुए कलदारों द्वारा गृहीं को सुशोभित के उहे श्य से मती-प्रथा करने दसरी श्रोर उठा दी गई ऋौर विधवा-विवाह का निषेध श्रपनी शक्ति का परिचय दे ही रहा है। इस स्थान पर यदि प्राचीन-रिवाजों का चित्र सामने लाया जावे तो अत्युत्तम प्राचीन-काल में जो स्नी कामारिन के कर सकती थी. उत्ताप की वेदना महन नहीं श्रथवा पति-देव के श्रनन्य-प्रेम हारा, प्रेमेन्यादक का प्राप्त बनकर बैधव्य के कठिन श्चाक्रमण द्वारा श्रपने को नहीं बचा सकती थी, वह सहर्ष पति के साथ धधकती हुई चिना में जलकर भरम होजाती थी और किसी भी विचार-शील तथा दूरदर्शी विद्वान की उसके इस कर्म पर कोई आर्यात्त नहीं होती थी। किन्तु जिधवाश्रों के हिर्ताचन्तक प्राचीन विद्वान रहें १ ऋव तो प्राचीन विद्वानी की 'मुखे' विशेषण द्वारा विभूषित करने वृद्धिशाली आधुनिक विद्वान पेदा हो। चुके हैं। जो सुरुवे समाज-पूर्वा होने के नाने अर्द्ध-त्रयस्क क्रमारियों को धैवन्य का दारुश दुच सहा रहे हैं। हुइय में परिवर्तन होते अववा नहीं, मन की र्नाच-वासनाए, त्रिक अभाव से आए धधक उठ: कर्जापन विचार और भी प्रकट हो उठे,किन्तु विधवा को मन मारकर ही रहना पड़ता है। समाज का यही कथन है। हिन्दु धर्म र्श्वार देश की यही मर्यादा है। समाज के उत्कर्ष

का यही प्रधान साधन है। श्रीर पुरुष-जाति की श्रोर ? एक स्त्री के काल-कव लित होते ही दूसरा विवाह ऋत्यन्त आवश्यक है। विधवाओं के विषय का उपरोक्त नियम पुरुष जाति पर लागू नहीं होता। समाज के कथन, धर्म की मर्यादा, वेश के उत्कर्पार्थ, पुरुषों को इस किसी भी तपस्या की ऋावश्यकता नहीं है। कुछ करें, केवल स्त्रियाँ । पुरुष-जाति सामाजिक लेकर सर पर कुछ ही दूरी पर का बह खोखलापन दृष्टि गोचर होता है, जिसकी कल्पना-मात्र से अत्यन्त कामी-पुरुष का हृद्य भी भय, क्रोध श्रीर घृगा से दहल जाता है। उन श्रद्ध प्रमुक्तित बालिकान्त्रों पर, जो 'विधवा' शब्द का श्चर्य न जानते हुए भी, उसके कठोर,पाशों द्वारा जकड़ी हुई है, देश-भक्ति की रट जगाने वाले, धर्म की मयोदा रखने वाले, समाज की उन्नति का डंका पीटने वाले, बढ़े-खुमट-नरपिशाचों द्वारा गृहों में , विधवा-श्राश्रमों में, अनाथालयों में, तात्यच्ये यह कि ऐसे प्रत्येक स्थानीं में, जहाँ कि विभवाएँ आश्रयार्थ याचक के रूप में जाती हैं. केवल काम-वासना की तृति के हेन भाँति भाँति के पाशविक अत्याचार उन पर किये जाते हैं. जिसका भएडा फोड़, बेचारी कोमल-हृदया विधवा एँ, केवल समाज के भय से हुनहीं करती हैं। ऋन्त में पाप का घड़ा, नव-जात शिशु के रूप में फुटकर, पतिता-विधवात्रों पर किये गय निन्दा कर्मी का भण्डाफोड़ उन्हीं ढोंगी, नीच, स्वार्थी समाजियों के समज करता है जिसके अवग्-प्रात्र से, समाज का उन्नति के शिवाग्यर चढाने वाले पावएडी. विविध-भौति के लांद्रत द्वारा उस नारी का, समाज स वहिष्कार कर देते हैं।

ऋत वह विधवा जाने कहाँ १ गुण्डों को ऋहरय सृत्र द्वारा यह समाचार प्राप्त होते ही वे लोग उस ऋवला के ऋषहरणार्थ, जी जान से लग जाते हैं, जिसके परिणाम-स्वरूप ऋनार्यों की संस्था तथा सभ्यता का प्रतिदिन शक्ति-शाली होना तथा हिंद-समाज का जर्जर, चीगा एवं कापुरुष होना निश्चित ही है। हिंदू-समाज, कुमारी-विधवात्रों को न सती होने की आजा देता है, न पुनर्विवाह करने देता है श्रीर न उनकी रचा ही कर सकता है। ऐसी अवस्था में, यदि करोड़ों भारत-ललनाएँ पतित हो जाबें, लाखों बाल-विधवाएँ समाज की पुनविवाह कर लेवें श्रथवा उपेचा करके सैकडो क्रमारी-बालिकाएं श्रात्महत्या तेवें तो इसका दोष किसके सिर पर है? क्या वे विदेशी लोग, जो भारत में सती-प्रथा, श्रपनी शक्ति की सहायता से उठाकर, श्रपनी राजनीति श्रीर बुद्धि का परिचय देते हुए मुखंता प्रकट कर रहे हैं, जो भारत में, सुद्रवर्सी देशों के साहरय पतिताच्यों की उन्नति में प्राणपण से चेष्टा कर रहे हैं तथा जो भारत का वह मस्तक, जो प्राचीन-काल से ही बीर-ललनात्रों के शील, सतीत्व के कारण, वर्ग में उठा हुन्ना है, नत-मस्तक करके कुचल देना चाहते हैं, वे ही भारतीय हिन्द-समाज के हितेथी (?) विदेशी, इस दोष के पात्र नहीं बन सकते ? श्रीर साथ ही साथ क्या वे समाजी भी दोपी नहीं हैं जो काम-लोलपता-पूर्ण दृष्टि द्वारा विधवाश्ची तथा अन्य सतियों पर दृष्टिपात करके, उन में से ऋधिकाँश के जीवन को नष्ट-भ्रष्ट कर विदेशियों की नीति का अनुसरण कर रहे हैं हिन्द्-समाज ऋपने पूर्व-पथ पर सुचारुह्मप से श्रमसर होता जाता तथा सुद्रवर्त्ती देश, भाषा, धर्म श्रीर सभ्यता को श्रपन श्रिधकारों से उध न मानता, तो विदेशियों की शक्ति में ऐमा कोई प्रभाव नहीं था, जो हमारे धार्मिक-कृत्यों पर हस्तचेप करके हमें अवनति के कुएं की ओर बलात् द्रतगामी करता। जीवन के कठोर-तम, उत्तरदायित्वपूर्ण कार्यों की बागडोर विदेशियों के हाथ में देकर हिन्द्-ममाज कदापि उन्नति नहीं कर सकता।

हृद्य की उच्च तथा निर्मल सरिता को,

दुरामह व कुत्सित स्वार्थी की नौका द्वारा पाट करना, निष्फल प्रयत्न पर सहानुभूति करना है। संसार में कीन-सा ऐसा उच श्रादर्श समाज है, जो सती-प्रथा, विधवा-विवाह गुएडों द्वारा अपहृता नारियों को पुन: धर्म में दीचित करने का निषेध करते हुए तथा नारियों की सम्मान-रत्ता का प्रयत्न न करते हुए भी, सोलह-सोलह वर्ष की कुमारी-विधवात्रों द्वारा बलात् वैधव्य-धर्म पालन कराने में ही, धर्म श्रीर देश की उन्नति समभता है ? इन सिद्धान्तों कं जीवन-दाता, समाज के वे ही ढोंगी लोग हैं जो निर्बु ढि विदेशी श्राचार्यों की शिता के प्रभाव में तथा स्वार्थ और लोभ में ही भागत की उन्नति पर श्राशा लगाये, भारत को श्राशिखा-पदान्त, पर-तन्त्रता के भंबर में फंसाये बैठे हैं श्रीर भारत की वीराँगनात्रों को समाज का भय दिखला कर उन्हें अनिधकारता और अशक्ति का प्रमाण-पत्र दे चुके हैं।

स्त्रियों के प्रति समाज इंतनी निर्दयता का परिवय दे रहा है कि जिसक श्रवण-मात्र से श्रविग्ल-श्रश्र-प्रवाह, हिलोर लेने लगता है। यद्यपि बाल-विवाह श्रीर वृद्ध-विबाह के विरुद्ध, लोकमत प्रायः पूर्ण-रूप से गठित हो चुका है किन्तु लोक-मत, लोक-मत की सीमा तंक ही जाकर रक गया; समाज-मत नहीं होने पाया। बेचारे सुधारक गला फाइ-फाइ कर, सुधार की वेदी पर बिलदान होने तथा जाति का उद्धार करने के प्रस्ताव समाज के समझ लाते हैं किन्तु समाजियों को लोभ, दाम्भिकता, पाश्विक-श्रत्याचार श्रीर कायुरुषता की उन्नति से जब श्रवकाश मिले, तब तो वे किसी श्रीर की सुनें।

जिन दुध-मुंहे बालकों के रदनों का हिलना श्रमी-श्रमी ही श्रारम्भ हुश्रा है, जो जनक-जननी के श्रर्थ को भी भलीभाँति नहीं समभ पाये हैं, जिनके समझ भगिनी तथा पत्नी दोनों में कोई श्रन्तर नहीं है, जो श्रपने वस्तों को धारण करना

भी नहीं सीख पाये हैं, उन्हीं श्रबोध कोमल बालकों श्रीर बालकाश्रों को, जो भारत के भावी कार्य-कर्ता हैं, वैवाहिक जैसे उत्तर-दायित्व-पूर्ण कार्य की शक्तिशाली जंजीरों में कस देना कहाँ का न्याय है ? जन-संख्या की श्रीर दृष्टि-पात् करने से ज्ञात होता है कि इस मृत्यु-संख्या में पुरुष ही श्रिधक होते हैं, इसिलये श्रिधकाँशतः कियाँ विधवा हो जाती हैं श्रीर समाज की कृपाकाँ चिणी बनी रहकर, वैधव्य का दुःख, इच्छा न रहते हुए भी, चुपचाप सहती हैं। ठिकाना है कहीं समाज के इस निन्दनीय श्रस्तित्व का ?

श्रव वृद्ध-विवाह को लीजिये ! यह बात निर्विवाद सत्य है कि 'विवाह' विषय की सबसे नीच श्रौर निन्द्य प्रथाश्रों में, सर्व प्रथम वृद्ध-विवाह ही है। धन, बैभव, मान, कुल स्वार्थाद के लोभ में पड़कर अपनी नव-यौवना कन्या का पाणि-प्रहण, ऐसे बृद्ध पुरुष के साथ करा देना, जिसमें श्राँख से बहे हुए कीच को पोंछने तक की शक्ति नहीं है, अत्यन्त कुत्सित कर्म है। ऐसे कर्म करने के पूर्व, बालिकान्त्रों की उन मानान्त्रों से परामर्श लेना बहुत ही श्रावश्यक है, जो नारी-हृदय का ऋनुभव रखती हैं, जो दाम्पत्यजीवन को सुख-मय बनाने का यत्न जानती हैं श्रीर जो यह भी जानती हैं कि किस और कैसे पुरुष द्वारा, नारियों की, समाजरूपी सरिता पर हगमगाती नैय्या, पार जा सकती है । किन्तु 'माताएँ' भी तो नारियों में ही सिमलित हैं ! उनसे परामर्श नेकर तथा उनकी राय के श्रमुसार कार्य करके, समाज द्वारा 'स्त्री के गुलाम' की पदवी कीन प्रहुण करे ? कन्यात्रों के पिता समभते हैं कि अमुक व्यक्ति के साथ कन्या का सम्बन्ध हो जाने से, उन्हें धन, मान, वैभवादि की चिन्ताओं से मुक्ति मिल जावेगी; किन्तु, स्मरण रहे कि ये समस्त वस्तुएँ उस सम्पति तथा गौरव के समन् तुच्छाति-तुच्छ हैं, जिसके द्वारा नारी-जाति के यौवन-कानन

में नित्य-प्रति नवीन उमंगों का सञ्चार होता है, जिस पर स्त्री-जाति का महान् उत्कर्ष श्रवल-म्बित है तथा जिसके अभाव-मात्र से अबलायें, 'माता' कहलाने के गौरव से सद्वैव श्रस्त्रती बनी रहती हैं। इसके परिएाम का ताएडव-नृत्य भी देख लीजिये। वे बालिकार्ये, जो पूर्ण-प्रस्कृटित होने के पश्चात श्रपने हृदय की ज्वाला को शान्ति प्रदान नहीं कर सकतीं, जो दुर्लभ मानव-जीवन को सार्थक बनाना चाहती हैं तथा जो समाज के अभेद्य कारागार को भेदकर, उसकी संकुचित श्रीर दुर्गन्ध-युक्त वायु से त्रिविधसमीर के श्रावरण में प्रवेश करना चाहती हैं, कामलोलुप-घातकों की कुट्टिंपड़ते ही, ऋपने उस ऋलंकार को खो देती हैं, जिनकी रहा में करोड़ों वीरांगनात्रों ने अपने प्राण तक को तुच्छ समभा है। समाज के कट्टरपन्थियों को तनिक से सुत्र का पता लगाते ही, वे उस नारी को बहिष्कृत कर देते हैं। उसके दयनीय कष्ट को निवारण करना तो दूर रहा, कोई उस विदग्ध-हृदय को सान्त्वना तक नहीं देता, जिससे उसका कलेजा भुलस जाता है और वह आत्मघात तक करने में उतारू हो जाती है। यदि आत्मधात द्वारा बच गई तो भी समाज को कोई लाभ नहीं होता। वह नारी या तो विधर्मियों की संख्या अधिकाधिक करती है ऋथवा 'पतिता' कहलाकर, वेश्या बन जाती है। समाज में स्त्रियों का ह्यास इससे ऋधिक ऋौर क्या हो सकता है ?

स्त्रियों द्वारा अपने पति का नामोच्चारण । धर्म-शास्त्र के विरुद्ध माना जाता है। ठीक है। किन्तु, मैं पाठकों का ध्यान उन पूज्या, प्रातःस्मर-णीया, प्राचीन ललनाओं की श्रोर श्राकर्षित करना चाहता हूं, जिनके कर्तव्य-कर्मों का निर्मल । यश, भारत के ही नहीं श्रपितु समस्त संसार के वश्चे-बश्चे गाते हैं, सती-शिरोमणि सीता जी को । ही देखिये। उन्होंने श्रानेक प्रकरणों में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रामचन्द्र जी को 'राम' 'रघुवर' 'रघुन।थ' त्रादि कहा है जिसका स्पष्ट प्रमाण गोस्वामी तुलसीदास जी कृत राम-चरित्र-मानस से प्राप्त होता है। गोपिकात्रों ने भी, जिनके प्रेम-प्रवाह में ऊधो जैसे ज्ञान के भएडार भी गोते लगा चुके हैं, पोड़प-कला श्रवतारी पूर्ण-ब्रह्म भगवान् श्रीकृष्ण को 'नाथ' 'प्रागेश्वर' ऋादि द्वारा सम्बोधित करते हुए भी, 'मुरारी' 'कृष्ण' 'गोपाल' श्रादि कहा है। महा-सती द्रोपदी ने भी श्रानेक स्थानों पर, पञ्च-पाग्डवों को, उनके नाम द्वारा ही सम्बोधित किया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि किसी भी युग में इस प्रथा का सामाजिक रूप से प्रचार नहीं हुआ। हाँ, इतना **ऋवश्य है कि प्राचीनकाल में नामों** सम्बोधित किये जाने के साथ ही साथ 'प्रियतम' 'प्राणनाथ' त्र्यादि भी कहा जाता था; किन्तु, उस समय इस सम्बोधन ने किसी प्रकार की प्रथा का रूप धारण नहीं किया था जैसा कि आधुनिक काल में स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है। ऋतः यह कुछ स्त्रावश्यक नहीं है कि स्नियाँ, पति-देव की, 'प्राण-नाथ' 'प्राणबह्नभ' 'त्रार्य-पुत्र' 'डीयर— डार्लिंग' आदि शद्धों द्वारा सम्बोधित करें। इस बात को मानने में किसी भी विचार-शील पुरुष को श्रापत्ति न होगी कि श्रादरनीय जेष्ठ सम्ब-न्धियों का नामोचारण शिष्टाचार को समाज की श्रोर से प्रथा का स्वरूप दे देना अत्यन्त निन्दा है। यदि श्रभाग्यवश किसी स्त्री के मुख से पति देव का नाम निकल गया तो बस ! प्रायश्चिन का भूत सिर पर सवार होकर चीखने लगता है। क्या शिष्टाचार की प्रथा में परिणित कर देना अन्याय नहीं है ?

इस प्रकार हम देखते हैं कि समाज में स्त्रियों की इतनी दुईशा है कि जिसे देख कर शरीर के रोएँ खड़े हो जाते हैं। इस का यह अर्थ नहीं है कि समाज में ऐसे मनुष्यों का अभाव है जो

निःस्वार्थ-भाव से स्त्रियों को, उनके ऋधिकार पुनः प्राप्त करा देने की चेष्टा में लगे रहते हैं; किन्तु कहना न होगा कि ऐसे सच्चे समाज-उद्घारकों की संख्या, ढोगीं समाजियों के समन्न बहुत ही श्रल्प है इसलिये सच्चे-समाजियों को प्रोत्साहन देने के लिये बलिदान की आवश्यकता है। केवल मुंह से चिहाना कि 'समाज में स्वियों को न्याया-नुकूल अधिकार प्राप्त हों।' पर्याप्त नहीं है। यदि हमारा हृद्य सत्य की श्रोर भुक कर सच्चा न बनेगा तो यह ऋाशा करना ही व्यर्थ है कि किसी कार्य-चेत्र में सफलता प्राप्त कर सर्वेंगे। भारत का उत्कर्ष, सदैव सत्य के श्राधार पर श्रवलम्बित रहा है और भविष्य में भी रहेगा। इसी सत्य ने भारत को भाग्य पर विश्वास दिला कर, पुरुषार्थी होने की शिज्ञा दी है। भाग्यवाद तथा पुरुषार्थ-वाद की सम्मिश्रणता, इसी शक्ति, की स्वच्छ धारा है। अन्धी साम्प्रदायिकता का नाश करके, तर्क-प्रधान-धर्म की स्थापना इसी ने की है तथा अपने निर्मल श्रोर पवित्र मुखार्यवन्द से संसार को शाँति तथा कर्मोद्यम का पाठ पढ़ा कर भारत की कीर्ति में और भी चार चाँद इसी ने लगाए हैं। अतएव, यदि समाज-सुधार की विशाल ऋट्टालिका, स्वार्थ, कापुरुषता,दाम्भिकता आदि को त्याग कर 'सत्यता' की नींव पर खड़ी की जावे तो ऋत्युत्तम और लाभ-कारी होगा।देश तथा समाज के हितचिन्तकों की चाहिये कि वे स्त्रियों का सुधार, केवल श्रापना कर्त्तव्य समभकर, सत्यता पूर्वक करें न कि किसी स्वार्थ की भावना को हृदय में स्थान देते हुए समाज की अवनति की ओर अपसर करें। उन्हें इस बात पर श्रवश्य ध्यान रखना चाहिये कि स्त्री ही भावी सन्तानों की शिच्चिका है। ऐसी अवस्था में तन, मन, धन से स्त्री-उद्घार का आन्दोलन उठा देना. चाहिये, क्यों कि यदि ऐसा न किया जावेगा तो स्त्रियां शित्ता, वैवाहिक-स्वतंत्रादि से पूर्ववत् निर्वे द्धि श्रीर निस्तेज होकर, उत्थान के स्थान पर भारत का

पतन करती जावेंगी। यदि समाज में स्त्रियों की इतनी शोचनीय अवस्था नहीं होती तो यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि भारत का पतन कदापि न होता। अत्र एव, भारत के उन पुरुषों से जो 'हिन्दू' कहलाने में अपना गौरव समफते हैं, मेरी प्रार्थना है, कि उक्त लेख को त्रुटियों पर चमा कर के, उस पर गम्भीरता-पूर्वक मनन करें और विदेशियों, विधर्मियों तथा स्वार्थियों के कठोर-पाशों से जकड़े

हुए समाज के उत्थान का बीड़ा उठा कर जीवन को सफल बनायें। साथ ही साथ यह स्मरण रखें कि विदेशी और विधमीं सदैव अपने स्वार्थ पर ही दुलकेंगे, चाहें इसके लिये उन्हें सैकड़ों का बलिदान क्यों न करना पड़े। अत: भावी-संतानों को सावधान रखने की शिक्षा का प्रचार करके और समाज में स्त्रियों को पूर्ण-रूप से स्वतंत्र करके, भारत के ऋण से मुक्त होजावें!

## ''स्मृति''

[ श्री मुरें प्रकृतार अष्ठाना ]

इस शान्त हदय के श्रंतरगत बतलादों फिर क्यों कर श्राईं ? ॥१॥ श्रिय हृदय-बाटिका में तेरे मधुमास मनाने को श्राई । बनकर कीयल नित कृत-कृक सृदुराग सुनाने को श्राई ॥२॥

क्यों मेरे सुखमय जीवन की फिर याद दिलाने की आई ? धोर विग्रह की ज्वाला की फिर से भट्काने की आई ? ॥३॥

हो शान्त हृदय मत हो चिन्तित
मैं उसे जगाने को आई
दुख दर्द मिटा करके मनका
कुछ शान्ति वैधाने को आई ॥४॥

निश्चेष्ट निरख अपनी स्मृति

क्या उसे जगाने को आईं?

या मेरे मन की पीड़ा को
कुछ और बढ़ाने को आईं? ॥५॥

लख अपनी सी एक मूर्ति वहाँ

मैं उसे हटाने को आई

कनकर धनवन्तरि उनके प्रति

मैं उन्हें मिटाने की आई ॥६॥

जलता लख मेरा हृदय-दीप
क्या उसे बुकाने की आईं ?
या बुकते दीपक को मेरे
प्रज्वलित बनाने को आईं ? ॥७॥
प्रिय प्रेम स्नेह से भर उसको
कुछ आप बढ़ाने को आई
बन कर कोयल नित कूक-कृक
मृदु राग सुनाने को आई ॥५॥

## जीवन-सुधा⊷⊸



श्री रामकुमार वर्मा



श्री मागर





### लेखक की समस्या

[ यशपाल जैन ]

प्रभात का समय था।

किशोरी ने दुखी-भाव से कहा, "देखों जी, यों घर का काम-काज कभी भी नहीं चल सकता। इस लेखकी को छोड़ कर छोर कोई धंधा देखों, नुम्हारे पीछे गिरिस्ती है। उसका पट तो भरना ही पड़ेगा।"

गिरीश ने किताव पर से निगाह उठा कर यहा, "किशोरी, सोच तो मैं भी रहा हूँ कि कोई धधा देखूँ। इस नरह काम नहीं चल सकेगा। मुझे बच्चों का पेट भरना है। ऋकेला होता तो कोई बात नहीं थी। गेटी न मिलती नो चने चबा कर ही ऋपनी गुजर कर लेता; किन्तु ऋब तो बैसा नहीं हो सकता।"

किशोरी ने कहा, "हाँ, यही तो में चाहती हूँ। नौकरी होगी तो बंधी आमदनी होगी। उसमं घर का खर्च भी संभल जायगा। जरा-जरासी बात की तंगी भी नहीं रहेगी और यह रात-दिन की जो चिन्ता है वह भी मिट जायगी।"

गिरीश बोला, "यह तो ठीक है, किशोरी, पर नौकरी मिले कैसे ? देखतानहीं हो चारों छोर आदमी मारे-मारे फिर रहे हैं ! जिनके नौदरी मिलता है, वे बड़े भाग्यवाल होते हैं, किशोरी। इनकी दर्श दर्श किशोरिश होती हैं। उनके रिश्तेदार बड़े-बड़े श्रोहदों पर होते हैं। मेरा तो कोई भी नहीं है। श्राज को तुम्हारे पिता जी...!

गिरीश का गला भर आया, आँखें डबडबा आईं। किशोरी के भी कई आँमू टपक पड़े। खुछ देर बाद गिरीश ने संभल कर कहा 'श्रिये, जाने भी दा, इन बातों को, किशोरी । वे दिन गये सो गये । श्रिव तो श्रीये की सोचनी ही पड़ेगी। विना सोचे काम भी कैसे चल सकेगा । किशोरी, सच्ची लगन स श्रिव तो किसी नेकिरी के पीछे पड़ना ही होगा, नहीं तो ...नहीं तो, किशोरी ...।"

किशोरी ने ढाँडस बँधाया "इतने दु:खी क्यों होते हो ? कोशिश करो । फिर भी अगर नोकरो नहीं मिलतो है तो देखा जायगा । अपनी सी करती फल तो ईश्वर के हाथ है ।"

ने कहा,—"ऋच्छा, किशोरी जी-जान से कोशिश करूँगा । जैसी मिलगी वैसी हो कर छँगा। मेरी रुचि नोकरी की श्रोर नहीं है तो न सही । सब चीजें श्रपनी रुचि की ही थोड़ी मिलती है! किशोरी, तुम तो जानती हो बचपन से ही मेरी इन्छा थी कि नौकरी किसो की भी नहीं कहाँगा। पराधीनता में सुख कहाँ मिलता है। वहाँ तो मर्शन बने मालिक के इशारे पर चलो। चल सकी तो चलो, न चल मको ता चला । श्रीर बैसे नौकरी मालिक के हक्म की अबहेलना करने की हो भी कैसे सकती है ! न सही, इस समय तो विचारों की हत्या करने में ही हमारा कल्याण है।"

किशारी रोती-सीबोली, "मैं सचकहती हूँ, मैं नहीं चाहती कि तुम्हारे विचारों की हत्या हो, किन्तु साथ जीवन सुधा

में यह भी नहीं देख सकती कि बच्चे भूखों मरें। ये वच्चे मेरे ही तो हैं, किर इन्हें कैसे भूखा देखूँ। उनका पेट तो कैसे न कैसे भरना ही है।"

तभी दस वरस के सबसे बड़े लड़के नन्दन ने आकर मुँह बनाते हुये कहा, "अरे अम्मा, तुम यहाँ बैठी हो और चूल्हे में आग भी नहीं मुलगी । मुझे तो बड़ी भूख लग रही है । सबेरे से मैंने कुछ भी तो नहीं खाया और अब देखो बारह बजे हैं। क्या मुझे भूख नहीं लगती, श्रममा ?"

किशोरी ने कहा,"वेटा....."

श्रीर श्राँस्-भरी श्राँखों से उसने गिरीश की श्रोर देखा, श्राँखें मानों कह रही थीं—श्रव तुम्हीं बताश्रो मैं क्या कहाँ। नन्दन का मुँह देखो, भूख के मारे कैसा उतर रहा है।

नन्दन ने फिर कहा, "श्रम्मा, मुक्तसे तो भूख श्रब सही नहीं जा रही है। कुछ नहीं है तो एक पैसा दो। चना ले श्राऊँ फिर धीरे-धीर रोटी बनाती रहना।"

कशोरी ने काँपते होठों से कहा, "वेटा, पैसा नहीं हैं !"

इन शब्दों के कहते ही मानों आँमुओं का बाँध जो अब तक रका हुआ था दूर गया। किशोरी ने फटी-फटाई धोती में अपना मुँह छिपा लिया और सिमिकियाँ भर-भर कर रोने लगी। किशोरी को यों रोते देखा तो नन्दन का जी भर आया। वह मन ही मन अपने को कोस कर कह रहा था—हाय मैंने पैसा क्यों माँगा ? उनके पास जब होता था तो वह विना माँगे ही दे दिया करती थीं।

उसने किशोर्ग की पीठ पर हाथ रख कर कहा, "श्रम्मा रोती क्यों हो ? रहने दो मैं पैसा नहीं ॡ्र्गा, श्रौर न रोटी की ही कहूँगा । श्रम्मा सच समभो मुझे भूखा रहना इत्ता बुरा नहीं लगता जित्ता कि तुम्हारायों रोना बुरा लगता है।" श्रीर किशोरी रो ही रही थी। नन्दन ने फिर कहा, "श्रम्मा चुप हो जाश्रो, नहीं तो लो मैं जाता हूँ। तुम रोती रहोगी तो मैं घर नहीं श्राऊँगा, भूखा बाहर ही घूमता रहूँगा।"

किशोरी ने फिर भी मुँह ऊपर को नहीं उठाया, और न जाते हुए नन्दन को रोकने को एक शब्द ही कहा।

गिरीश ने कहा, "किशोरी....." किशोरी चुप!

गिरीश ने फिर कहा, "अरे देखती हो न, नन्दन बिना कुछ खाये ही स्कूल जा रहा है। उठा, उसके लिये थोड़े-बहुत खाने का इन्तजाम कर दो। मेरी कहानी के रूपये आने ही वाले हैं। आते ही दे टूँगा।"

किशोरी चुपके से उठी। घड़े में से पानी लेकर उसने मुँह के आँसू \*तो धो डाले; किन्तु हृदय और मन पर जो व्यथा के बादल छाये हुए थे उन्हें किसी भी उपाय से न धो सकी । आर नन्दन को साथ ले पड़ोसिन के घर की और चल दी।

[२]

गिरीश कमरे में अकेला वैठा-वैठा सम्बद्ध (१) के पत्र को बार-बार पढ़ रहा था : महोदय ,

कुपा पत्रके लिये धन्यवाद । इस महिने के बजट में से कुछ भी नहीं बचा है । अगले महिने में अवश्य ही आपकी कहानी का पारिश्रमिक भेज दिया जायगा । आशा है देरी के लिये समा करेंगे। भवतीय

सम्पादक

गिरीश ने पत्र समाप्त कर एक गहरी श्रसंतोप की साँस ली और दोनों हाथों से मुँह की ऐसे पोंछा मानों सोते से जगा है। उसे लग रहा था मानों स्त्री श्रीर बच्चे भूख से पीड़ित खड़े कह रहे हैं जीवन सुधः ===

श्रब कैसे होगी। दो दिन तो बत करते हो गये। तुम्हारा श्रासरा तो बस कहानियों के रूपयों पर ही तो था। श्रब क्या है, वहाँ से भी कोरा जवाब मिल गया।

नन्दन कह रहाथा—श्रम्मा रोटी में देर हैं तो एक पैसा ही दे दो, चने ले आऊँ। भूख तो अब मुफ से सही नहीं जा रही हैं।

किशन और विकुत कह रहे थे—माँ, दृध दो पीने को । श्रीर रोटी भी दो।

किशोरी कह रही थी—कैसे जाड़े पड़ रहे हैं छोर बच्चों के पास कोई भी कपड़ा नहीं हैं। ऐसे जाड़े तो बहुत दिनों से नहीं पड़े। देखते हो न, नन्दन एक कमीज पहिन कर ही थर-थर काँपता स्कूल जाता है।

गिरीश का सर चक्कर खा उठा। वह किस से माँगने का साहस करे। सभी जानते हैं वह नामी लेखक है। उसकी कलम से निकला एक-एक शब्द पुजता है। जहाँ कहीं वह जाता है, उसका आदर होता है। पर कोई नहीं जानता कि ऐसे नामी लेखक की घरेळ् स्थिनि ऐसी भी हो सकती है। लोगों में जब उसका ऐसा सम्मान है तो वह कैसे मुह खोलकर कहे कि मेरे वाल-पच्चे भूखें हैं, कुछ रूपया दे दो। क्या इस बात पर कोई विश्वास कर सकेगा!

श्रव गिरीश कुछ मंभला। कुछ न कुछ तो करना ही होगा— उसने टढ़ता के साथ कहा। यों सोचते-मोचते यह पेट की समस्या नहीं हल हो मकेगी। पुस्तक गई है; पर पारतीपिक ' ऊँह, कोन श्राशा हैं! श्रीर-श्रीर नामी लेखकों की छतियों के सामने क्या वह पुस्तक टिक मकेगी! बारह मो ! बहुत होते हैं। मभी कठिनाइयाँ दूर हो जाँयगी। चालीस की नौकरी पर तो इतने दो वर्ष में भी नहीं भिलेंगे। पर कीन जाने, वह मुझे मिल ही जायगा। ऐसे ही भाग्य होने तो यह दशा ही क्यों होती!

गिरीश ने एक श्रॅंगड़ाई ली श्रीर उठ कर खड़ा हो गया।

शाम होने को थी। गिरीश ने एक बार चारों श्रोर कमरे में निगाह डाली; फिर बाहर चला गया।

बाहर खड़े होकर सोचा—कमलेश भी तो मित्र है। उसी से ऋाज कुछ रुपये ले ऋाऊँ।

गिरीश कमलेश के घर की श्रोर चल दिया।
गारते भर वह सोचता गया कि किस तरह रूपया
माँगा जाय। न जाने कितनी तरकी बें निकाली
गईं; किन्तु सीधे-सच्चे गिरीश को एक भी
उपयुक्त न जान पड़ी। वह चाहता था कि न तो
झूंठ ही बोलना पड़े श्रोर न अपनी दयनीय दशा
को ही प्रगट करना पड़े, श्रीर रूपया भी मिल
जाय।

इन्हीं विचारों में उलका वह धीरे-धीरे नीचे को देखता हुआ चला जा रहा था, कि किसी ने पीछे से उसके कंधों पर हाथ रक्खा गिरीश ने मुड़कर देखा नो कमलेश ही था। कमलेश हँसता हुआ बोला—

"कहिए, गिरीश बाबू, आज इधर कैसे निकल पड़े १°

गिरीश ने हृद्य के भावों को छिपाते हुए कहा, "यों ही, तुमसे विना बहुत दिन हो गये थे। सोचा आज तुमसे मिल ही आऊँ।"

'ऋो हो, सचमुच श्रापन मेरे उपर बड़ी कृपा की । त्राइये , त्राइये ।''

कमलेश का घर आ गया और दोनों मित्र एक सजे-सजाये कमरे में बैठ कर बातें करने लगे।

कमलेश ने कहा, "गिरीश बाबू, तुम्हारी लेखनी में बड़ा जोर है। तुम्हारा प्रत्यक शब्द प्रतिभा से भरा हुआ होता है। इन दिनों क्या लिखा है ?"

"श्ररे भाई कमलेश क्या चताऊँ। इन दिनों तो कुछ भी नहीं लिख पाया।" कमलेश ने कहा, "भाई, मुझे क्यों बनाते हो ! पारतोपिक के लिये जो पुस्तक भेजी है, उसकी क्या मुझे माऌम नहीं है ?"

गिरीश बोला, "ऋरे, योंही भेज दी है।"

कमलेश ने हँसकर कहा, "गिरीश बाबू, बारह सो मिलेंगे। मिठाई खिलाश्रोगे न ?" "बारह सो !" (श्रम्माएक पैसा ही दे दो। चने ले श्राऊँ।.....देखते नहीं नन्दन जाड़े में थर-थर काँपता श्रकेली कमीज पहन कर स्कूल जाता है .....)

गिरीश खोया-सा बैठा था।

कमलेश ने उस के मुँह की श्रोर ध्यान से देखा, कैसा श्रप्रतिम हो उठा था!

कमलेश ने बात बदलने को कहा, "कहो, गिरीश बाबू, भाभी किशोरी खोर बच्चे अच्छ हैं न ?"

गिरीश ने कहा "ठीक हैं। किन्तु..... किन्तु.....।" मुँह पर श्राई बात रुक गई।

कमलेश ने गिरीश को रुकते देख व्ययता से कहा, "हाँ, हाँ कहो, रुक कैसे गये ?"

गिरीश के जी में श्राई कहरूँ—नुम्हारी भाभी श्रीर बच्चे वड़ी मुमीवत में हैं, किन्तु उसकी वास्तविक दशा जान कर कमलेश क्या सोचेगा। गिरीश ने साहस किया; फिर भी वह कुछ न कह सका।

कमलेश ने फिर कहा, "यार कहते क्यों नहीं, क्या कह रहे थे ?"

गिरीश ने कहा, "यही तो कह रहा था कि सब अच्छी तरह से हैं। श्रीर कुछ नहीं, सच मानो।"

बहुत देर तक बानें होती रहीं; फिर भी गिरीश कुछ न कह सका और ज्यादा रात होती देख वह घर चला आया।

#### [3]

पड़ोस की घड़ी ने एक बजाया। जाड़े के मारे गिरीश को नींट नहीं आ रही थी और न किशोरी को ही; पर दोनों चुपचाप पड़े थे। सहसा नन्दन ने धीरे से कहा, "श्रम्मा, श्रम्मा मुझे जाड़ा लग रहा है।"

किशोरी मानों सन्न होगई। जैसे देह में जान ही नहीं है।

नन्दन ने फिर चिल्ला कर कहा, "श्रम्मा, श्रम्मा, मुनती नहीं हो, मुझे कुछ उढ़ा दो। बड़ा जाड़ा लग रहा है। हाथ-पैर बरक से ढंडे हो रहे हैं।"

गिरीश ने कँधे गले से कहा, "बेटा !"

किशोरी चुपचाप उठी श्रीर नन्दन की चारपाई पर जा लेटी। जाड़े में काँपते नन्दन की उसने छाती से कस कर चिपटा लिया श्रीर उसके पैर श्रपने पेट में लगा लिये।

नन्दन ने कहा, "हाँ, ऋम्मा ऋत्र ठीक है। जाड़े के मारे काँप रहा था।" ॢ

किशोरी कुञ्ज कह न सकी। वह नन्दन को छाती से चुपटाये ज्यों की त्यों पड़ी रही। कुञ्ज ही देर में नन्दन गहरी नींद में सो गया; किन्तु किशोरी.....!

दिन निकलने में अभी काफी देर बाकी थी।। गिरीश रात भर एक इाए को भी नहीं सौया था। उसने कहा, "किशोरी, सो रही हो क्या १"

किशोरी भी रात भर जगी पड़ी रही थी। बोर्ला, "नहीं तो, कहिए।"

गिरीश ने करुण-भाव से कहा, "किशोगी, कुछ भी समक में नहीं त्याता है! चारों छोग से मुसीवर्ते त्या गही हैं। पेट भर ग्वाना भी समय पर नहीं मिलता, इससे ज्यादा और क्या होगा! क्या इस ईश्वरीय प्रकोप के लिये हमीं रहे हैं ?"

किशोगी बोली, "तुम तो यों ही घवराते हो। संघर्ष किसके जीवन में नहीं रहता है। अरे, उसी में तो जिन्दगी है। चिन्ता-रहित व्यक्ति तो अकर्मण्य होता है। तुम्हीं बताओं पेट भगने की चिन्ता होती है तभी तो आदमी कमाता है, और उस कमाने की विविध गीतियों से ही तो उसमें जीवन सुधा

स्फूर्ति रहती है। परिश्रम जीवन देता है। दार्शनिक बनने का अब समय नहीं है।"

गिरीश ने कहा, "किशोरी, मैं कब दार्शनिक बनता हूँ। तुम देखती हो कितना लिखता हूँ; फिर भी पैसा नहीं मिलता है। इसमें मेरा क्या अपराध है।"

किशांगी ने मिलन भाव से कहा, "अपराध तो किसी का भी नहीं है। सब भाग्य के फेर हैं। पर यह भी तो है कि मनुष्य को समय और पिरिध्धितयों के अनुसार बदल जाना चाहिए। यह लिखन का काम ऐसा है कि आर घंधा करते हुए भी किया जा सकता है। पेट भरने के लिये इस पर निर्भर नहीं.....।"

तसी बात काटते हुए नन्द्रन ने कहा, 'बाबू जी, कल मास्टर जी कह रहे थे—कल कीस न लाया तो नाम काट हूँगा । की महीने की जीस नहीं दा गई है—नवस्त्रर, दिसम्बर, जनवरी हा, ते.सरा महिना चल रहा है।''

गिरीश चुन रहा।

किशोरी ने इपट कर कहा, "चुप, पार्जा कहीं के, रोजनोज कीम की ही चची होतो रहती है। कट जाने दे नाम, हम अब तुझे नहीं पढ़ावेंगे।"

सत्त्व ने कहा, "श्रम्मा, यह छः महिने की पढ़ाई जो हो चुकी है सो ? नहीं पढ़ाना था तो जोलाई से न पढ़ाया होता !"

किशोरी इस पर और भी कोधित हो उठी। बोली, "भाइ में जाने दे अब तक की पढ़ाई। खबरदार, जो कीस के बारे में कभी एक शब्द भी कहा। सममा, रे ?"

गिरीश ने शाँत-भाव से कहा, ''इतना क्यों विगड़नी हो, किशोरी ! क्या एकसी हालत सदा किसी की भी रही है जो हमारी रहेगी।''

फिर उन्होंने नन्दन से कहा, "बेटा, घबराओं मत, ईश्वर ने चाहा तो दो-एक दिन में कुछ न कुछ प्रवन्थ प्रवश्य कर दूँगा।" नन्दन बोला, "बाबूजी, बिना फीस लिए तो श्रव में कभी स्कूल नहीं जाऊँगा। मास्टरजी इस बात पर मारते हैं।"

किशोरी इस पर बेहद चिल्ला उठी, "मत जाना अब कभी मत जाना। देखो न, ऐसा अहमान कर रहा है मानों इसके न पढ़ने से धरती-आसमान ही फट जायंगे।"

गिरीश-नन्दन दोनों ही चुप रहे।

थोड़ी-सी रात वर्चा थी। सबके सब चुपचाप पड़े थे। पर सन्नाट को भेदता हुआ मानों कोई कह रहा था— त्रो जीवन-पथ के यात्रियो! क्या थक गए! साहस वटोरो, अभी तुन्हें बहुत चलना है। यो थके हुए-से बैठ रहने से यात्रा समाप्त न होगी त्रार जब अफ़ल्य समय निकल जायगा, तब पहनाने के ऋतिरिक्त स्रोर कुछ भी हाथ न ऋषिगा।

[8]

उपा आई। उसमें न्यूतन स्कृति थी, जीवन था, हर्ष था: किन्तु गिरीश अभागे की उस छोटी-सी चिन्ताओं में बस्त गृहस्थी के लिये कुछ भी तो सुख-दायक उसमें नहीं था।

स्रज की किरणें फैलीं; पर घर का बाता-वरण अयों का त्यों हना रहा। उसमें कोई भी परिवर्तन नहीं हुआ।

गिरीश बाहर के कमरे में बैठा था। चारों श्रोर की परिस्थितियों ने उसकी श्रांखों में श्रांस् वुला दिए थे। श्राज वरसों बाद उसकी श्रांखों में श्रांस् श्राए थे।

बह मीच रहा था—जीवन में बैभव यथेण्ड नहीं है, उसमें पैसे का भी महत्व-पूर्ण स्थान है। त्याज उसके पास बैभव है; किन्तु पैसा के न होने के कारण उसकी दशा कैसी दयनीय है, दुखमय हैं!

यह सीचते-सीचते उसकी व्याँग्यों से एक-एक वृंद गिरी; दो-दो गिरी, पिर नाता वैधा गया। जीवन सुधा

सिसकियाँ आने लगीं, और गिरीश .....!

तभी किशोरी कमरे में आई। उसने गिरीश को उस दशा में देखा तो आन्तरिक वेदना से उसका हृदय फटने लगा। फिर भी उसे छिपाते हुए बोली, "छि:, छि:, मई होकर यों बच्चों की तरह रोते हो! उठो, हाथ-मुँह धो श्रो। सब भगवान भली .....।"

श्रावाज श्राई — बाबू जी, तार सीजिये।

गिरीश उठा, श्रौर तारवाले से तार ले लिया। कॉंपते हाथों से खोलकर पढ़ा। लिखा था—

"त्रापकी पुस्तक (?) पर जो कि सर्वोत्छव्ट ठहराई गई है, बारह सौ रुपये का पारतोषिक दिया गया है।"

व्यप्र और उत्सुक किशोरी ने भी तार सुना। फिर बड़ी देर तक दोनों हँसते रहे।

### पतंग

### [ श्री इन्दिरादेवी वैद्यशास्त्रिणी ]

पतंग ! तू मत कर मुक्तसे प्यार;

मेरी रूप-राशि पर व्यारे, तन, मन कर न निसार!
तू है प्रेम-मुधा का प्यासा, यहाँ कहाँ वह सार;
जलती दीप-शिखा में तेरा, होगा तन, मन ह्यार!
भोले-भाले प्रेमी मेरे, मैं तुक्त पर बलिहार;
यौवन की मदिश को पीकर, जीवन-धन न निसार!
मेरी रूप-ज्योति में कितने, जले हृदय सुकुमार;
मोहमयी वह दीप-शिखा हूँ, मन में तनिक बिचार!

# जीवन-मुधाम्य



श्री इन्दिगदेवी शास्त्रिणी
श्राप कविगज प० गयाप्रसाद जी साहिन्याचार्य श्रीहरिं की धर्मपत्नी हैं। श्रापक लेख श्रीजस्वी तथा कविताएं सधुर श्रीर सावपूर्ण होती हैं। श्राप वड़ी सौम्य, सुशील एवं सधुर आषिणी हैं। जीवन-सुधा में श्रापक लेख श्रीर कविताएं बहुधा छपती रहती है। नारी श्रागंग्य मन्दिर, गणशगंज, लखनऊ की

## कला के संबंध में

भी रामरतन भटनागर इसरत एम. ए.

चित्रकार श्रीर किव दोनों विश्वात्मा तक कल्पनानुभूति के द्वारा पहुँचते हैं। श्रपनी श्राधार वस्तुएँ वे इस सृष्टि से ही लेते हैं, प्रकृति श्रीर मनुष्य को वे श्रपना विषय बनाते हैं; परन्तु प्रत्येक सन्चे कलाकार की कृति की तरह काव्य श्रीर चित्र में भी श्रात्मा श्राधार-त्रस्तु पर विजय पा जाती है।

कल्पना को यदि कला की सूची में श्राना हो तो उसे स्थूल रूप लेना पड़ेगा, कारण यह है कि कला और श्रमिनय ही का सीधा-साधा संबंध है। किसी भी वस्तु के कला होने के लिये उसे जाने-बृझे प्रतीक (Symbols) में लिखा जाना श्रावश्यक है। जिस श्रनुभव को व्यक्त करना हो उसकी विशेषता (Nature) श्रथवा प्रकृति श्राधार (Form) निश्चित कर देगी और जब एक बार श्राधार निश्चित हो जायगा तो वह श्राधार वस्तु ही जो कलाकार सीन्दर्यानुभूति के विकास के लिये चुनेगा, उसकी स्वतन्त्रता की सीमा निर्धारित कर देगी। इसी का फल होता है 'टेकनीक' (Technique) श्रीर यहाँ से भिन्न-भिन्न कलाओं में टेकनीक की भिन्नता भी श्राती है।

पृथ्वी की पंक से कोई भी कलाकार सम्पूर्णतः बच नहीं सकता। यही नहीं कि उसे अपने आधार—पत्थर, रँग या म्याही — ही दुनिया से लेने होते हैं, परन्तु यह भी है कि जो आकार

वह रचने की चेध्टा करता है वह उसे दुनिया के उसके अनुभवों में ही मिलेंगे। वह जब कल्पना के संसार में होता है 'तो 'वह 'संसार के ही रँग और आकार मिला रहा होता है और इस प्रकार वह भिन्न-भिन्न प्रकार के रंग और आकार पैदा कर देता है। इसी दुनिया का संघर्ष उसे अपने आदर्श को प्रकाश में लाने के लिये उकसाता है। इसके न होने पर तो वह शायद चुप ही रह गया होता। परन्तु रंग और पत्थर से बाहर की किसी चीज की और उसका लह्य होता है। इस दिशा में उसकी सफलता प्रकृति के उपर आतमा की और मृत्य के उपर अमृत्य की विजय है।

कला और प्रकृति में तात्विक भेद कोई नहीं हैं। जो ख़ास भेद है उसे यों कह सकते हैं कि कला का 'घनत्व' (Intensity of Art) अधिक होता है। चाहे कलाकार वस्तु के भीतर की और से मानसिक चित्रण करे अथवा बाहर की ओर से वाग्र-चित्रण, वह कहे-आदम-चित्र में से किसी एक विशेष नुकृते अथवा स्थान पर जोर दे रहा होता है। वह अपनी कचि के अनुसार किसी खास चित्र को देना चाहता है और अपना दृरदर्शक यंत्र उसकी ओर 'फोकस' (Focus) करता है। और सब वह भुला देता है। और सब एकान्त प्रयोगशाला में प्रवेश नहीं कर पाता और यों उसका अस्तित्व ही नहीं रह पाता। इस 'घनत्व' के साथ कलाकार के व्यक्तित्व और चुनाव का

प्रश्न श्राजाता है। बहुत से दृश्यों, वस्तुश्रों,
मुद्राश्रों श्रथवा घटनाश्रों में से कलाकार कुछ
चुन लेता है स्थार दृसरे उसी समय शून्य पड़
जाते हैं। उसका चुनाव उसके सामने श्राई हुई
वस्तुश्रों के प्रति उसकी व्यक्तिगत रुचि श्रीर
उसकी सहानुभूति श्रथवा विदेप से रंगा होता
है। मनोविज्ञान कज़ाकार के इसी पहत्दू पर
विचार करता है।

यह भी जानना आवश्यक है कि सभी कलाएँ एक सी उपयोगी नहीं हैं। उपयोगिता से मेरा अर्थ मौन्दर्यानुभूति देना है । काव्यकला सर्वोच कला है, इसलिये कि वह कल्पना को उत्तेजना देकर महाशून्य को चित्र ऋँग त्राकार की स्थलता प्रदान करती है। इस दृष्टिकीए से बह केवल संगीतकला के नीचे आती है जो स्वयं शून्य में निर्माण करती है और अन्यतम सृहम आधार द्वारा । संगीत के स्वर शून्य में एक बड़े मन्दिर का निर्माण करते हैं। उसका साधन शुद्र श्रीर श्रमिश्रित नाद है। काव्य का श्राधार ज्यादा कड़ा है, क्योंकि सुन्दर और कला एवं रसपूर्श ध्वनित्रों के साथ हा वह शहों का प्रयोग करता है जो अर्द भी रखने हैं। अधिकतः तो अर्थों का सम्बन्ध ठोस बस्तुत्रों से होता है और यह सम्बन्ध ही श्रोता के मन में चित्र वुला देता है। केंचे संगीत में कोई अर्थ नहीं होता, सम्पर्कार्थ ( association value) बहुत ही कम, फिर भी संगीतज्ञ का काम इतना ही वड़ा है जितना कवि का। नतीजा यह होता है कि संगीतज्ञ कुछ सीमिन फल पेटा कर सकता है। चौर उसके लिये उसे कवि से अधिक प्रयास करना होता है । जो चित्र यह देना है यह धूंधला रेखा चित्र रह जाता है और वह इस श्रस्पष्ट द्यानिश्चित और संकेत प्रधान प्रकार के भाव की जन्म देता है। संगीतज्ञ इस बात को जानता है श्रीर इस श्रनिश्चय को दूर करने के लिए। वह कवि के गढ़े शब्दों का प्रयोग करता है और साथ

ही अपनी अमिव्यक्ति का सेत्र भी बढ़ा लेता

कला के स्वास्थ्य के लिए यह आवश्यक है कि सभी स्त्रनावश्यक बातें दबा दी जायें जिससे सौंदर्यानुभव स्थाई हो। यह श्रासम्भव नहीं है कि इसी विचार को लेकर मनुष्य ने कला की सृष्टि की हो। इस विचार की प्रतिक्रिया श्रीर रस सृष्टि के विचार ने शताब्दियों बाद सनुष्य समाज में ऋलंकार शास्त्र की सृष्टिः की। ऋपनी जगह पर सभी अलंकार अच्छे हैं, परन्त् उनका बाहुल्य बुरा है। कविता में ही नहीं, ऋालेख्य जैसी कला में भी अलंकारों का प्रवेश है। कामसूत्र में वास्यायन ने रूप भेद, प्रमाण्य, भाव, लावएय-योजन, साहश्य और वर्षिकाभंग नाम के आलेम्य-विद्या के पडाँग का कथन किया है त्रगर हम माहित्य, संगीत श्रीहर श्रालेख्य शास्त्री का अध्ययन करके उन पर से विभिन्न भाषाओं का अवरण उठा सकें तो हमें मालूम हो जायगा कि अलंकार स्वतः बड़े काम की चीज है। संगीत में अलंकार आवृति अनावृति द्वारा इनके क्रामिक विकास में सहायता देते हैं। सभी कजाओं अलंकारों के नीचे साहश्य है। संगीत में अलं-कारों की कला पूर्णना तक पहुँच जाती है छोर उनकी सहायता से हमें काल और स्थान की श्रनन्त मत्ता का श्रीर उनके महान विस्तार का पता चलता है। अनन्त काल और अनन्त स्थान का अपनी आत्मा में अनुभव करना ही मनुष्य का चिर ध्वेय रहा है। इसी से तो वह अनन्त मना तक पहुँचता है और फिर कला की सर्भाव उड़ान उसे अनन्त काल और स्थान का स्वर्श कराकर इस ध्येय तक पहुंचाने में क्या अहापता नहीं करती।

परन्तु प्रत्येक कला में रस की ऋभिव्यिकि एक मी नहीं होती — एक हद तक नहीं होती। कोई विशेष रम किसी एक विशेष कला में अर्ज्जी तरह दिया नहीं जा सकता हो अथवा किसी ष्टांश में ही श्राभिन्यक्त किया जा सकता हो, यह बात सम्भव है। कला की श्राभिन्यक्ति की सफलता साधन पर बहुत हद तक निर्भर है। एक मूर्तिकार ने प्रकृतिदर्शन के समय ऐसा दश्य देखा कि उत्तके स्नायु तन्तुश्रों पर तंद्रा का भाव पंदा हो गया। वह इस श्रद्भुत श्रनुभूति का श्रपने पत्थर के श्राधार में सीधी तरह चित्र नहीं दे सकता था। उसने यह किया कि सोते हुए वालक की एक मूर्ति बनाई श्रीर उसकी कला इतनी पूर्ण थी कि मूर्ति को देखने से देखने बाल में सुबुद्धि श्रीर तंद्रा के भाव उत्पन्न हो जाते थे। प्रत्येक कलाकार इस हद तक पूर्णता को नहीं पहुँच सकता। उसके लिए यह श्रावश्यक है कि समक्त ले कि कला को उसकी विशेष शाखा का स्रेत्र कहाँ समाप्त हो जाता है।

परन्तु सभी अनुपयोगी अथवा अञ्यवहारिक कलात्रों की लेते हुए मेरे विचार में कला की सबसं बड़ी विशेषता उसका संकेत ( Suggestiveness ) है । कलाकार व्यक्ति (Indiscriminate) चुनाव के ज़ेत्र में काप करता है और एक ही अन्छे प्रहार से या पेन्सिल या लेखनी के एक ही स्पर्श से वह अपने चित्रों और जाकारों की बाह्य-रेखाओं ( Outlines ) से आगं बढ़जाता है और बाहरी रेखात्रों की पहुँच के बाहर जो है उसकी श्रीर संकेत करता है। हप्टान्त के लिये, चित्रकार दो स्वरों में काम करता है परन्तु यदि आप Cubic School ( पठ्-काण्-स्कृत ) के चित्र देखें नो श्रापको जान पड़ेगा कि कलाकार श्रपने श्राकारों में उन अकारों की मतक देना चाहता है जो चार स्वरों ( Four Dimensions ) में रहते हैं। स्पष्ट है कि वह दूसरी कला के ज्ञेत्र में वड़ रहा है--मूर्तिकना के चेत्र में । परन्त उसका आधार दो वस्तुओं में रहने वाला है और इस लिए चार स्तरीं की अभिव्यक्ति वह केवल

संकेत द्वारा कर सकता है। ऐसा वह प्रति द्वन्दी रेखाओं (Counter-lines) श्रीर झाया (Shades) के द्वारा करता है।

इस संकेत करने की प्रक्रिया को परिभाषा में संकेतवाद ( Symbolisation ) कहने हैं। श्रसल में परिभाषा में जिसे संकेतवाद कहते हैं वह संकेत करने का केवल एक ढंग है, प्रतीक ( Symbol) कुछ हद तक उस वस्तू का जिस लिए वह प्रयुक्त होता है। किसी विशेष प्रतीक के प्रयोग से कलाकार उस आत्मा को जागत करता है जो प्रतीक द्वारा केवल एक ही श्रंश में श्रभिव्यक्त हो सकती है श्रोर उसके प्रतीक की सफाई और तैयारी प्रतीक शब्द और सम्पर्कार्थ पर निश्चित होती है। दर्शन का एक स्कूल है जिसके अनुसार असीम की अभिन्यिक ससीम सम्भव है। प्रतीक का विचार यहीं से उत्पन्न होता है। हर्ष ऋोर विषाद के चए। समीप वस्तृतत्व के जाल में प्रतीक के प्रयोग द्वारा पकड़े जा सकते हैं।

उ.चे दरजे की कला अधिकतः संकेत प्रधान (अत्राप्त्र प्रतीक प्रधान) रहती है। सीमा से वह असीम की श्रोर ले जाती है। संकेत करने का सार्वभीमिक साधन प्रतीक है श्रीर डॉर्चा कला में प्रतीकवाद की प्रधानता रहती है। प्रत्येक काल श्रीर प्रत्येक समय के कलाकारों ने प्रतीकों का प्रयोग किया है, कुछ ने जान-बूभकर, कुछ ने श्रनजान में। पिछले कुछ वर्षों में रिसर्चस्का-लगें की प्रवृत्ति महान कलाकारों के प्रतीकों का ढूंढ़ निकालने श्रीर मनोविज्ञानिक तत्त्वों के श्राधार पर उनकी व्याख्या करने की रही है। उन्होंने प्रतीक-विज्ञान ही खड़ा कर दिया है।

श्रॅमेजी साहित्य में कला का एक विशेष स्कूल प्रतीकबाद को ही लेकर चला है। मैं प्री-रेफिलाइट (Pre-Raphelite) स्कूल के चित्रकारी श्रीर कवियों की बात कह रहा हैं। इस स्कूल का सबसे प्रसिद्ध चित्रकार-किन रोजेटी, डी. जी. (Rossetti, D. G.) है। मुझे याद है कि मैंने रोजेटी के एक चित्र में मृत्यु को पत्ती (गृद्ध) बनकर एक सुन्दर तहणी का खून चूसते देखा पृष्ठ भूमि में वाद्य हैं। रोजेटी जानता था कि संगीत से प्रतीकानुभव की अभिन्यक्ति बहुत अच्छी तरह हो सकती है और उसने जो वाद्यालंकार चित्र में दिये हैं वह अस्तित्व के संगीत की ओर संकेत करते हैं। बाद को इन प्रतीकों का अर्थ और उनका वैज्ञानिक प्रयोग भुला दिया गया और बाद की किवता (Decadence Poetry) में हम देखते हैं कि उनका प्रयोग असुन्दर और अलंकारिक तत्वों के लिये हुआ है।

इस प्रकार हमें पता चलता है कि साधारण तत्त्वों से बाहर की बात की श्रोर प्रतीकद्वारा संकेत करना कला की सबसे ऊंची उड़ान है।

हिमगर्भित हिमालय की गंभीर तलैटियों में खड़े होकर वेद की उस ऋचा के श्रृषि ने जब पुकारा

था— कस्मै देवाय हिवषा विश्वेम:— तो उसने ससीम में असीम के महण करने का अनुभव किया था। जब हम किसी बड़े हाल में प्रवेश करते हैं या चितिज से घिरी हुई प्रकृति के अवकाश में खड़े होते हैं, तब हमें मन की इस उड़ान का अनुभव होता है। आत्मा महानता को प्रहण कर लेती है और उसे जान पड़ता है जैसे जीवन का सत्य कहीं है और वह उससे संपर्क स्थापित कर रही है। विदिशा, इलोरा और अजंता के महान मन्दिर-भवन इस महानता का स्पर्श हमें देते हैं और उनके निर्माण के समय हमारे कलाकार जानते थे कि वह अपनी आधार-वस्तु के सहारे क्या भाव पदा कर रहे हैं।

कलाकार की महानता और सफलता इसी में है कि वह मनुष्य के मन को श्रव्छी चीजों श्रीर घेरे हुए वातावरण के ऊपर उठा दे श्रीर श्रनन्त श्रदृश्य सत्ता के सामने खड़ा कर दे। तब मनुष्य की श्रात्मा में पूजा-भाव भर जाता है। सच्ची कला पूजा ही तो है।

# अशोक की लाट

### [ श्री रामचन्द्र तिवारी ]

मनगढ़ पाषाया खण्ड विरचित यह दात निकाले महल खड़ा, जिस पर काली काई छाई सिर मुकुट धरे अतिकाय, बड़ा।

यह राज्य-विहीन महीपति सा, शिशु सा, बिनु वाणी प्रिंडन-सा माकारा पतित ग्रह खण्ड यथा, तन खण्डित गुरा गरा मण्डिन-सा ।

यह बुद्ध पताका सी अविचल वर दीप शिखा-सी दसों दिशा उज्ज्वल करती दे रिहम-राशि कर क्षीरा अन्ध-अज्ञान-निशा ।

निदर्यता-हीन सुदृद्ता-सी बाखी सी युग-युग च्याप्त रहे । यह नपी-तुली ढढ़ भाषा-सी नद सी, प्रवाह ना रुके, वह ।

बुद्धा के खेतों से चलकर नद नीज की छाती पर तरणी। पर चढ़े हुए मलाइ सभी सुनते थे कथा बुद्ध-बरणी ।

तुगलक-कुल के कुछ तरत भाव दल कर साचे में खड़े हुये। उस पर अशोक के मूर्तिमान हो शान्त भाव से जड़े हुये।

पथ दर्शक-सी, अभिलाषा-मी जो नित्य चूमने गगन बढ़ें। दुख में चिर स्थित आशा-मी जो स्वप्न दिखाती स्वर्ण-मंहै।

यह पूर्वकाल का दृत खड़ा सन्देश मुनाने भाज चाणस्य, मीर्थ, यूनान वीर की याद दिलाने आज इमें 1

बल-वैभव-पूरित भारत संसार-मुक्ट का रत्न बना ताला जिसने नहिं नाम सुना वह देश है, हा ! यह शोक धना ।

विनसे पाखण्ड, कपट, मद, भय उधडें भारत के हृदय कपाट खड़ी-खड़ी नित बाट देखती कद से यह अशोक की लाट !

### नियति

[श्री 'श्रनजान']

राकेश अपने जीवन में एक अलसाई हुई ताजगी लेकर आया है। उसका जी छुछ भारी-भारी-सा रहता है। उसे अभी तक कोई ऐसा नहीं मिल पाया है कि जिसके सामने बैठ कर वह अपने जी को हल्का कर पाए। वह मन ही मन घुटता सा रहता है। उसका जी जैसे उसे काटने को दौड़ता है। उसकी कुछ समक में नहीं आता कि वह क्या करे।

वह सोचता है कि मुझे बी० ए० करने के बाद क्या करना होगा! वह कभी-कभी जीवन की सार्थकता और असार्थकता की उलकन में चुरी तरह फँस जाता है। और आखिर को इन विचारों से छुटकारा पाने के लिए वह एक कागज और पेंसिल लेकर विज बनाने में लग जाता है। इसो प्रकार उसके जीवन के कई वर्ष बीत चुके हैं। पर वह अभी भी नहीं जान पाया है कि वह आज कैसे अपने और अपने विचारों के संघर्ष में से होकर बी० ए० तक पहुँच सका है।

बी० ए० क्लास में लड़िकयाँ भी कई पढ़ती है। प्रवेधा, सुनीजा, सुकान्ता आदि आदि, इस कजास में सुकान्ता को अँगे जी सब से अच्छी है। उसके प्रोफेसर उससे बहुत ही प्रभावित हैं। और उनसे भी अधिक राकेश, न जाने क्यों!

अपनी क्लास में सुकान्ता की ऐसी प्रखर बुद्धि देख कर राकेरा का जी कुछ बैठ जाता है और ईश्यों भी कत्तक अती है। पर इन सुर बातों के ऊपरी सतह पर एक श्रीर चीज तैरती है जो इन सब को एक दम शान्त कर देती है। वह है नारी जाति के प्रति प्रेम।

राकेश सुकान्ता को देख बहुत कुछ धीरज पाता है। उसके जी को बड़ी सांत्वना मिलती है। उसका मस्तिष्क उम चाए एक दश स्तब्ध—शान्त हो जाता है।

सुकान्ता के पिता राजनगर की पुलिस के इन्सपेक्टर हैं। ४०) के क़रीब मिलते हैं। बह् बहुत साबधानी से खर्च करने पर भी बहुत कम बचा पाने हैं। इन्हें सुकान्ता के व्याह की बहुत किक लगी है। उसकी माँ भी इस छोर से निश्चिन्त नहीं है।

मुकान्ता साँवने रंग की है। नाक गोल श्रीर थेर्ड़ी लम्बी हैं। श्राँग्वें बड़ी-बड़ी हैं, माथा भी चौड़ा है।

सुकान्ता श्रानी कजाम में राकेश को बहुत कम बालने पानी है। जब देखती है तब गम्भीर; हमेशा उसे दार्शनिकों की तरह कुछ सीचने पानी है। यह सब उसे श्रसझ हो उठता है। वह समभ जाना चाहनी है कि राकेश बाबू किस गृह पहेली को सुलमाने में लगे हैं। जब देखा तब मोन, गम्भीर श्रार बहुत ही श्रहत । यह सब कुछ बहुत मोचने पर भी उसकी समभ में नहीं श्राता है। वह चाहनी है कि राकेश हो से पूछे कि वह इतने उदाक्षीन क्यों रहते हैं? पर न जाने किस संकोच- वरा वह पूछ नहीं पाती है। अपने को वह न जाने क्यों कुत्र भीक सा अनुभव करती है।

वह रोज सोचती है कि श्राज जरूर पृक्षंगी उनकी उदासी का कारण। पर कालेज पहुँचते ही सब विचार बह जाते। इसी सँमट में काकी दिन बीत गए। पर वह पूँछ ही नहीं सकी।

एक रोज सुकान्ता ने पाया कि राकेश बाबू कालिज नहीं श्राए हैं। उस रोज उसका जी उसके नियंत्रण से बाहर हो चना। पढ़ने में भी उसका मन नहीं लगा। उसने राकेश के बारे में माळूम किया तो पता लगा कि उनको बुखार श्रागया है। इस कारण वह कालिज नहीं श्रा सके हैं।

कालिज से छुटी पाकर सुकान्ता राकेश के घर गई, जाकर देखा कि राकेश एक पलंग पर चादर छोड़े लेटे हुए हैं। सुकान्ता ने पूछा, "कही राकेश बाबू कैमी तिवियत है ? बुखार ने पीछा छोड़ा या नहीं ?"

राकेश ने उठने की चेप्टा करते हुए सुकान्ता को बैठने को कहा। सुकान्ता उसे उठते देख कर कहने लगी, 'नहीं-नहीं, तुम लेटे रहा। मैं बेठी जाती हूँ।"

राकेश—"दिन भर तो लेटे लेटे बीत गया। श्रव थोड़ी देर बैठना भी तो चाहिये।"

सुकान्ता—"नहीं नहीं, श्रमी तुमको बुखार है। तुम लंट जान्त्रा।" मुकान्ता ने उसे हाथ पकड़ कर लिटा दिया, श्रीर कुर्सी को उसके समीप खींच कर बैठ गई।

राकेश सुकान्ता के हाथ के स्पर्श-मात्र से अपने को बिल्कुल भूल गया उसे कुझ भी सुध नहीं रही कि वह कहाँ पड़ा है। उसने इस स्पर्श से कितना सुख पाया, कितनी तृप्ति पाई ? कीन जान सकता है।

सुकान्ता इस बीच कमरे में लगे चित्रों को देखने में व्यस्त रही। एक से एक सुन्दर है। सब में कैसी नूतनता है ? कैसे-कैसे भाव चित्रित किए हैं इनमें ? सब हाथ के ही बने हुए हैं।

राकेश से बोली, "क्या यह सब तुम्हारे ही बनाये हुये हैं ?"

राकेश करवट बदलते हुये बोला, "हाँ... ...श्राँ। कहो कैसे लगते हैं १"

सुकान्ता, "तुम तो बहुत ही श्रन्छे चित्रकार हो। कैसी कूट-कूट कर माइकता भरी है इन चित्रों में। महात्मा बुद्ध की इतनी भोली-भाली तस्वीर है कि देखते ही बनता है...।"

सुकान्ता कहती ही चली जाती। श्रीर गकेश मौन साथे पड़ा रहता। फिर सुकान्ता भी चुप हो जाती। थोड़ी देर दोनों चुप रहते। पर सुकान्ता फिर बोल उठती श्रीर राकेश से पूछती, "राकेश तुम क्या बनोगे ? क्या जीवन-उद्देश्य चूना है तुमने ?" राकेश कहता, "जो तुम बनाश्रोगी सो बनुँगा।" श्रीर दोनों हुँस पड़ते।...

सुकान्ता मुस्कराते हुये कहती. "मैं क्या बना सकती हुँ ?"

राकेश, "तुम ? तुम जो चाहो सो बना सकती हो...।"

मुकानना लौटने को देर होते देख कर श्राहा माँग चली गई। उसके जाने के बाद राकेश ने श्रपने को उन टँगे हुये चित्रों में उलका लिया। इसी प्रकार जब तक राकेश बीमार रहा सुकान्ता का श्राना जाना बराबर रहा। दोनों में रोज बात-चीत होती, श्रीर इस प्रकार दोनों एक दूसरे के समीप श्राने चले गए।

※ ※

गकेश का स्वास्थ्य जल्दी ही सुधर गया श्रीर वह कालिज श्राने लगा। वह श्रव श्रपने को ऐसे पाता है कि मानों वह बीमार पड़ कर कुछ श्रधिक स्कृतिं पा गया है। न जाने किस ज्योति का विकास अब उसमें होगया है। उसमें ताजगी श्रा गई है। उसकी कल्पना शक्ति भी वड़ गई है। वह श्रव पहिले से श्रधिक सुन्दर चित्र बनाने लगा है। वह जब चित्र बनाता है तो सब कुछ जीवन सुधा- 🚐

भूल जाता है। सुबह से दोहर हो जाता श्रौर दो पहर से शाम हो जाती पर राकेश बाबू चित्र में ही रहते।

सुकान्ता के भी जी का बोक, राकेश को खुश पाकर कुछ हलका हो जाता है। उसको इसमें मुख मिलता है कि राकेश बाबू को हमेशा प्रसन्त पाए।

[२]
श्राज सुकान्ता के छोटे भाई की वर्ष गांठ
मनाई जायगा। उसके उपलज्ञ में उसने श्रपने सह
पाठियों को निमन्त्रण भेज दिये हैं। राकेश के पास
भी निमन्त्रण भेजा गया है।

सुकानता आज घर के काम-काज में बहुत ही व्यस्त है। जरा भी कुरसत नहीं मिल रही है। काम करने में बुरी तरह जुटी हुई है। उसे अचानक किसी कायेत्रश पढ़ने के कमर में होकर गुज-रना पड़ा। वहाँ एक पत्र रक्खा था, जिसे उसके पिता वहाँ एख कर भूल गये थे। वह लाल रोशनाई से लिखा हुआ था। उसने लाल शब्दों में लिखा पत्र कभी नहीं देखा था। उसे उसकी देखने का इच्छा हुई।

सुकान्ता ने पत्र पढ़ा उसमें लिखा था--

श्रा जीवनलाल जी, श्राप का कृपा पत्र मिला। लड़का श्रापने देख ही लिया है। मुझे कोई इन्कार नहीं है। श्रापका सम्बन्ध सहर्थ स्वीकार है।

अपिक[—....

सुकान्ता के सामने अन्वेग हो आया। पत्र उसके हाथ से छूट गया। वह चुग् भर अपने को भूली सी वहीं खड़ी रही । उसे विलकुत सुब नहीं रही की बह कहाँ हैं।

कोन जानता है कि इस समय उसके जी को कितना ठेस पहुंचा है। उसके जी में आता है कि वह इस सम्बन्ध की इन्कार कर दे। क्या अभी कोई नहीं जानता कि वह पहिते ही अपने आप को किसी दूसरे को सोंप चुकी है ?

उसके दिल में तरह तरह के विचारों का संघर्ष मचा हुआ था कि एक दम घड़ी ने टन से चार बजाये। उसकी बिचार धारा दूटी। घड़ी की श्रोर श्राँख उठा कर देखा कि चार बज चुके हैं। उसने सब को पाँच बजे श्राने का निमन्त्रण दिया है। उन सब के श्राने में बस घंटे भर की देर है। फिर क्यों वह इस तरह बुत की नाई खड़ी है? जैसे श्रजान हो; निर्जीव हो। क्यों नहीं श्रपने काम में लग जाती? वह चार बजे देख फिर से श्रपने काम में जुट गई। श्रव की बार उसके काम करने में वह बात नहीं थी। हाथ काम में थे श्रीर शरीर भी वहीं था, पर मन किसी श्रार ही जगह था। वह इस समय बड़ी बचेन है। उसका जी जैसे ऊपर को उबला श्राता है। वह जलदी ही राकेश को देख लेना चाहती है।

र्धारे धीरे पांच वज गये त्र्यार प्रैस्ट-हम भी त्र्यामंत्रित व्यक्तियों से भर गया।

जीवनलाल शर्मा ने सब को खुत जी खोल कर खिलाया। सुकान्ता ने भी पर्यसने में कोई कमी नहीं रक्खी। सब को खूत्र ही परोसा। राकेश के सामने तो मना करते करते भी कई रमगुन्ते परोस दिये।

राकेश ने पृंछा, "क्यों सुकान्ता सब हमें ही खिला दोगी, ऋपने लिये भी कुछ रखना है ?''

सुकान्ता इस पर तिनक मुस्कराई और परो-सने में लग गई। जैसे यह ऋपनी कथा की ऋपने में समाप्त ही रखना चाहती है।

राकेश ने पाया कि मुकानता के मुक्कराने में वह बात नहीं है। उसके मुक्कराने में जरूर कोई व्यथा भरी हुई है। जिसे यह छिपाना चाहती है। पर राकेश उसकी छोर देखते हुए चुनाती देता है कि क्यों मुकान्ता तुम छपनी व्यथा मुक्त छिपाना चाहती हो ?

जीवन गाल ने सब को सम्बोधित करते हुए कहा कि मैं अपने को धन्य समफता हूँ जो आपने मेरा निमन्त्रण स्वीकार यहाँ पधारने की कृपा की। और शोभा बढ़ाई। मैं आप लेगों का कृतज्ञ हूँ। इसके बाद सब विदा हुये। सबने खूब पेट भर कर खाया था। सब के श्रोठों पर इसी प्रकार की चर्चा थी; पर राकेश खाने के साथ-साथ श्रपने जी में कुछ गांठे बाँध ले चला था। वह सोचता है कि श्राज सुकान्ता को हुआ क्या है जो उसकी मुस्कान में ऐसा रूखा-पन था। सुकान्ता के लिये वह बहुत ही चिन्तित है।

श्रगते दिन राकेश अपनी मोटर में कालिज जा रहा था। बरसात बीत चुकी थी, पर श्रास्मान में बादल थे। श्रोर नन्हीं नन्हीं बृदें भी गिर रहीं थीं। हवा ठंडी बह रही थी। उसकी मोटर सड़क पर से सर्पट दोड़ रही थी कि उसे दीखा, सुकान्ता लम्बे पैरों कालिज जा रही है। उसने मोटर रोकी श्रोर सुकान्ता से बैठने का श्रामह किया। सुकान्ता भी इन्कार नहीं कर सकी, श्रीर मोटर में बैठ गई। मोटर चल दी।

राकेश के जी में कल वाली बात आभी भी जगह किये बैठी थी। बह चाह रहा था कि उससे पृष्ठ, "तुम क्यों चिन्तित हो सुकान्ता ?" पर यह चाह कर भी नहीं पृंद्ध पा रहा था।

उसने अपना साग जोर इकट्टा कर कहना शुक्र किया, ''कल खूब शराल रहा, क्यों सुकान्तः, था न ?''

सुकान्ता ने धीरे और हड़ता के साथ कहा, "हाँ... आँ, खूब रहा।" और सुकान्ता यह कह चुक कर स्विड्की के लाहर सिर निकाल कर उस सुहाबने समय का सीन्दर्य अनुभव करने में लग गई।

इस 'हाँ...प्राँ' में ऐसी ध्वनि गुंजरित हुई जैसे वह कह रही हो कि 'अरे वह बहुत दुखी है। उससे मन बोलो। 'वह अब तुम्हारी नहीं रहेगी। फिर तुम व्यर्थ ही उसके लिए इनने चिन्तित क्यों होते हो ? क्यों दुखी होते हो ? अपने मन से अब तुम उसे निकाल दो।'

राकेस उसकी कामी उठा कर बोला, 'यह तो बहुत ही सुन्दर है। कारी मालूम होती है। क्या लिखोगी इसमें ? राकेश ने उसे खोलकर देखा तो उसमें एक पत्र रक्खा था वहीं पत्र जिसको पद्कर सुकान्ता इतनी दुखी है। 'उसने देखने देखने में ही उसे पद भी डाला। पद्ते ही जैसे उसके शरीर को बिजली झुगई हो। एक दम सुन्न। जरासी देर में उसकी ऋजब हालत होगई। चेहरा अप्रतिभ होगया। माथे पर सिकुड़न पड़ गई, और साथ साथ उस पर छोटी छोटी बुंदें भी मलक आई।

आज राकेश का ल्कास में रत्ती भर जी नहीं लगा। आँखें किताब पर रहतीं, और मन भटका भटका फिरता। उसक जीवन में ऐसा दिन कभी भी नहीं आया है, जैसा कि वह आज अनुभव कर रहा है। उसका जो आज बहुत ही कड़वा है। वह आज अपने जीवन से एक दम हिरास हो चला है। उसे सब जगह अधेरा ही लगता है। उसकी कुछ समक में नहीं आता, कि कब क्या होना है।

कालेज खत्म होगया, श्रोर राकेश श्रानी कार में बैठ चलने का हुआ। इतने में सुकान्ता भी क्रीव से गुजरा । उसके मुँह से श्रानायास निकल गया, ''श्राश्रो सुकान्ता, तुम्हें घर पहुँचाते हुये में चला जाऊँ गा। उधर होकर मोटर जाती ना है ही।''

सुकान्ता 'ऋच्छी वात हैं' कह कर कार में बैठ गई स्रोर कार हवा में उड़ चली।

सुकानता आज सुबह से ही राकेश की सुस्त और बहुत ही चिन्तित देख रही थी। उसे किल्कुल नहीं मालूम था कि वह पत्र राकेश ने भी पढ़ लिया है। उसने जानना चाहा कि वह आज इतना वेचैन क्यों है ? उसे किस बात की फिक है ?

सुकान्ता ने बोमे से पृजा, "क्यों राकेश बाबू, त्याज इनने सुस्त क्यों हो ? तुम्हारी त्याज का सी हालन तो मैंने कभी भी नहीं देखी। कुछ कटे-क्ठे स लगते हो, क्या बात है ? कुछ बताबा नो।"

रकिस जैसे सोते से जागा, ऋोर उसकी ऋोर कुद्र मार्कता में देखते हुए बोना, "सुकान्ता, मैं क्रठा क्रठा लगता हूँ ? यह तुम क्या कहती हो सुकान्ता ? स्वप्न में भी ऐसी कल्पना मत करना। तुम अभी नहीं जान पाई हो कि मैं तुम्हें कितना चाहता हूँ .....।" राकेश आगे कुछ न कह सका, मानों किसी ने उसके होंठ दबा लिए हों।

सुकान्ता लज्जा के मारे पानी पानी होगई। उसकी आँखें जमीन में जा लगीं। वह चाहने लगी कि वह उसके पैरों में लोट कर कहे, "देखों में यह हूँ। मैं तुम्हारी ही हूँ। मैं तो तुमको अपना सर्वस्व सोंप चुकी हूँ। फिर भी तुम कहते हो कि मैं तुम्हें अभी नहीं जान पाई .....।"

सहसा मोटर रुकी श्रीर सुकान्ता की विचार-श्रंखला विखर पड़ी। उसने जाना कि उसे श्रव उतरना है। उसका घर श्रागया है। वह उतर गई। श्रीर मोटर चल दी।

सुकान्ता ऋन्दर पहुँची तो देखा कि उसकी माँ घर को सिंग-वाने में लगी हैं। वह चाहतीं हैं—'सकान्ता का ब्याह इसी अगले ही महीने में कर दिया जाय। लड़की सयानी होगई है। 'इन्हीं विचारों में लीन हुई वह दक्ष्तर में पहुंची तो उसे दीखा कि मेज पर बहुत धूल जमी हुई है उस पर सुकान्ता की किताई भी रक्खी हैं। वह मेज की साफ करने लगीं। सफाई करने में सुकान्ता एक किताब नीचे गिर गई श्रीर उसमें से चित्र जो उसमें रक्खा हुन्ना था बाहर निकल पड़ा। माँ ने उसे देखा तो राकेश का था। उसे यह बात समभते देर न लगी। उसने फीरन सुकान्ता को बुलाया श्रीर कहा कि यह किसका चित्र है ? तुझे नहीं मालूम कि वह कायम्थ है। तू ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर कलंक लगाना चाहती है। समाज क्या कहेगी? इसका तुम्हें जरा भी भय नहीं है। कोई दो कौड़ी को भी नहीं

पूछेगा। मैं अब जान पाई कि तेरा ऐसा हाल क्यों होता जा रहा है। अब कल से कालिज जाना बन्द में बाज आई ऐसे पढ़ाने से....।"

सुकान्ता नीची गर्दन किये स्तब्ध खड़ी रही। एक भी शब्द मुँह से नहीं निकला। कीन जान सकता है कि इस समय उस पर कैसी बीती। जब उसने देखा कि माँ काम में लग गई तब वह वहाँ से दबे पाँव चली श्राई।

सुकान्ता को आज कालेज से उठे दो माह् बीत चुके हैं। इन बीते दिनों में बहु राकेश से एक भी बार नहीं मिल सकी है। और आज उसके व्याह का भी दिन आ पहुँचा है। चाहती है कि विदा होने से पहले राकेश से एक बार अवश्य मिलले, और उससे कहे कि "देखो में यह हूँ। में अब तुम्हारी नहीं रही हूं। अब में तुमसे बहुत दूर हो रही हूँ। पर हमारा प्रेम आमट रहेगा। उसमें कौन वाधा डाल सकता है? तुम अब मेर लिए दुखी मत हो। मुक्त को अब भुलादे। "

सुकान्ता त्राज विदा होगई पर राकेश से नहीं मिल पाई त्रौर उसके जी की त्रभिलापा जी ही में रह गई।

X

कुछ समय बाद-

श्राज राकेश एक सफल चित्रकार है। उसके चित्रों की सब जगह चाहना है। पर श्रव उसने चित्र बनाना छोड़ दिया है। उसने सुकान्ता की एक सुन्दर मूर्ति बनाली है श्रीर उसकी श्राराधना किया करता है। श्राराधना के समय ऐसा लगता है कि मानों मूर्ति पृझ रही है, "राकेश नुम क्या बनोगे ?" श्रीर राकेश की श्राराधना से मानों ध्वनित होता कि "जोतुम बना श्रोगी।"

# जीवन-मुधा



श्री उपन्द्रनाथ अश्क



श्री अच्चयकुमार



श्री कृष्णचन्द्र मुद्रगल



श्री श्रमजानः



श्री जगदीशप्रमाद

# स्त्री-जाति की स्थिति

[ श्री कमला देवी प्रधान बी, ए, ]

समय-परिवर्तन के साथ साथ स्त्रियों का स्थिति-परिवर्तन का इतिहास भी बड़ा रोचक रहा है। प्रारम्भिक इतिहास के पृष्ठ उलटने से प्रकट होता है कि भारत वर्ष की स्त्रियाँ सर्व प्रकार से योग्य होती थीं श्रीर उनका श्रादर भी ममुचित होता था। उसी समय हमारे किसी पूर्वज नीतिकार ने लिखा है —

यत्र नार्थ्यस्तु पृज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता । यत्रैतास्तु न पृज्यन्ते सर्वाम्तत्राफलाः कियाः ॥ अर्थान् जहाँ स्त्रियों का भादर होता है वहाँ देवताश्रों का बास होता है, श्रीर जहाँ स्त्रियों का आद्र नहीं होता वहाँ के सब कार्य निष्फल होते हैं । स्त्रो प्रूप के श्राधिकार समान समझे जाते

थे। इसी से स्त्री को श्रद्धींगिनी की उपाधि दी गई।

धीरे धीरे धन धान्य सम्पन्न भारत-भूमि की श्री का हास होने लगा। विदेशी शासक यहाँ पर पाँव जमाने लगे जिससे स्त्री-जाति को बड़ा भारी धक्का लगा। घर से बाहर निकलना उसके लिए विपत्ति का कारण होने लगा। श्रपने सतीत्व की रहा के लिये स्त्रियों के श्रपने कला-केशल व विद्या को बलि करना पड़ा। पर्दे के भीतर उनका गुप्त रक्खा गया। फल यह हुआ कि स्त्रियों की दशा धीरे धीरे श्रत्यंत शोचनीय होगई। जो नारी एक समय में देवी-तुल्य समभी जाती थी, गुण कीशल से हीन वही नारी एक पशु के तुल्य समभी जाने लगी। तुलसीदासजी के काल में

तो स्त्रियों की दुर्दशा श्रपनी चरम सीमापर पहुँच चुकी थी, उन्होंने स्पष्ट लिख भी दिया कि — ढोर, गवाँर, शूद्र, पशु, नारी,

ये सब ताड़न के ऋधिकारी।

मनुष्य इससे और ऋधिक क्या हीन हो

सकता था जब उसने ऋपने ऋषे आंग की यह
दशा कर डाली।

किन्तु समय ने फिर पलटा खाया। राजा राममोहन राय व द्यानन्द जैसे सुधारकों ने श्राकर स्त्री-संधार व स्त्री-उन्नति की छोर भारत-वासियों का ध्यान आकर्षित किया। माम्राज्य के साथ साथ पारचात्य सभ्यता का प्रभाव भी विशेष रूप से पड़ने लगा। कन्यास्त्री की शिक्षा का प्रबन्ध होने लगा, उन्हें बाहर निकलने का श्रवसर मिला। श्रधिक उन्नति की श्राकाँचा ने स्त्री जाति को श्रीर श्रागे बढ़ा दिया, पुरुषों ने उन्हें सहायक का काम दिया। स्त्रियों का श्रादर होने लगा। पाश्चात्य श्रनुसार यहाँ भी स्त्री को Fair sex व better कहने लगे। स्त्रियों को योग्य बनाने के लिए सब श्रोर से प्र यत्न पाठशालायें व कालेजों की संख्या बढने लगी. पर्दे की प्रथा का लोप हो चला Wemen's Conferences व महिला . समितियाँ स्थापित की गईं। विवाह के समय भी पुरुषों ने जब पढ़ी लिखी कन्याओं को ही अपनाना पसन्द किया तो परानी

लीक पीटने वाले माता-पिताओं ने हार कर कन्याओं को श्रिधक नहीं तो विवाह के लिए ही पढ़ाना व कला सिखाना स्त्रीकार किया । इसी में कितनी ही नारियों ने प्रमाणित कर दिखाया कि वे पुरुष जाति से किसी प्रकार भी हीन नहीं हैं। वे यूनिवर्सिटी की बड़ी बड़ी डिप्रियाँ प्राप्त करने लगीं, साहित्य, दर्शन व विद्वान-गास्त्र हाक्टरी, राजनीति, सिनेमा, व संगीत श्रादि के सभी चेत्रों में कियों का समावेश होगया श्रीर कोई भी विषय उनसे श्रव्यता न बचा।

नारी-जाति जब सब प्रकार से योग्य होने लगी तो उसे पुरुष जाति से न तो मध्य काल की भाँति भय रह गया श्रीर न वह श्रपने को तुच्छ सममने लगी। उसमें श्रात्म-गौरव बढ़ने लगा, श्रवला कहलाने में संकोच होने लगा, स्वतन्त्र होने की प्रवल इच्छा ने कुछ रित्रयों को यहाँ तक बढ़ा डाला कि वे स्वायलम्बी होने के मार्ग निकालने लगीं श्रीर इसिलिये विवाह की श्रावश्यकता कम प्रतीत होने लगी। स्वतन्त्र बनने के लिये रित्रयों को श्रव धन कमाने की श्रावश्यकता पड़ी। श्रवः अपनी श्रवा के स्वायता की साधन बना धन संवय करने लगीं।

वर्त्तमान समय में स्त्री-संसार की विचित्र स्थिति हो रही है, जहाँ नारी जाति का एक भाग सर्व प्रकार योग्य, श्रमगण्य व माननीय समका जाता है वहाँ दूसरी श्रोर स्त्री जाति का बहुत बहा भाग श्रभी निरत्तर ही पड़ा है। उसे नहीं मालूम कि संसार उन्नित-शिखर की कौन सी सीढ़ी तक पहुंच चुका है श्रथवा उसका इस संसार में कुछ अस्वित्व है भी या नहीं या उसके द्वारा स्त्री-जाति का कुछ भी उद्वार सम्भव है। स्त्री-जाति की एक श्रोर दुकड़ी है जिसने योग्यता प्राप्त करके विवाह बन्धन को स्त्रीकार किया है। किन्तु इनमें से कुछ ने तो स्वच्छन्दता पूर्वक श्रानन्दमय जीवन व्यतीत करना ही ध्येय बना

लिया है श्रीर कुछ ने श्रपना श्रस्तित्व श्रपनी श्रन्य बहिनों के श्रस्तित्व में ही मिला दिया है, श्रीर ऐसी तो कुछ इनी-गिनी ही महिलायें हैं जिन्होंने श्रपने गाईस्थ्य जीवन के साथ साथ नारी-जाति के उन्नित-कार्यों में हाथ बटाना कर्त्तव्य सममा हो।

नारी जाति का भविष्य सुधारने के लिये यह ऋत्यावश्यक है कि प्रत्येक महिला को श्रपनी जाति के प्रति कुछ कर्त्तव्य समभ लेना चाहिये—

विदुधी सियों का रहन सहन ऐसा हो कि उनका अनुकरण अन्य बहिनें सरलता पूर्वक कर सकें। विवाहित सियां उस मध्यम श्रेणी में हैं जो पूर्व विर्णित होनों प्रकार की सियों को शृंखलाबढ़ करके समस्त नारी-जाति में समानता ला सकती है।

पारचात्य सभ्यता से जहाँ नारी जाति की इतनी उन्नित हुई है वहाँ भारत का पुरातन सतीत्वादर्श ब्रुट जाता है। मालूम नहीं यहाँ के वायु-मण्डल के अनुकूल यह कभी हो सकता है अथवा नहीं किन्तु इतना तो म्ण्ड्ट है कि अभी तो इस प्रकार की घटनाओं से भारत-जगत में ऐसी क्रान्ति फैली हुई है कि जनता कन्याओं को अधिक पढ़ाने लिखाने से विमुख होती जा रही है। इसलिये यदि महिलाएं चाहती हैं कि उन्हें फिर कहीं ठेस न लगे तो अपनी उन्नित के साथ साथ प्राचीन आदर्श को भी स्थिर रक्खें और वास्तव में अनुकरणीय वन जावें।

भारत की ऋार्थिक कठिनाइयों का ध्यान रखते हुए ऋपनी वेश-भूषा व शृंगार बनाव ऐसा रक्खें कि ऋपव्ययी होने का ऋपवाद उन पर लागून हो सके।

स्थान स्थान पर ऐसी संस्थाएं नियत करें जिनसे सब प्रकार की स्त्रियाँ लाभ उठा सकें श्रीर परस्पर विचार-विनिमय उन्नति के साधनों को ढूँढ कर उनका प्रयोग कर सकें।

# -ये कविताएँ ?

### [ श्री नरेन्द्र एम.ए ]

(१)

श्रन्तर भव ज्वालामुखी बना ---बद्द निकला लावा नस-नस में ! में विवश, भाइ, बद चला कहाँ ? क्यों तन-मन आज नहीं बदा में ?

( ? ) कैसी ऋभिनाषा गई आज मेरे मन में, ज्वाला कर

क्.ण-करण

में !

नव-यीव**न** के गुलदस्ते रख दी यह चिनगारी किसने ? भेरा तो छोटा-सा मन बन के बन फूँक दिए इसने !

( 3 )

( 8 )

मेरो श्रशान्ति का अन्त कहाँ --मानस अथाह अस्थिर सागर ! मरुदेश-सहारा की नृध्गा जो सोख चुकी शतह: जलधर !

(4)

यह

रहती

शोखित

जलती

मेरे

( ) होगा हलका न भार शिय का

उर में श्रमाव का भार निष भाँ खों में बुद्ध भरिधर सपने ! वं ठगत लिए भवरुद्ध प्राम गाता हूँ करुए गीत भपने ! 🕝

दिन रोकॅ-गाऊँ. चाहे निशि होगा न भार इलका चाहे पिस वर कान-कान में मिल जाऊँ !

( 9)

हिम-भार हिमाजय का अब तक कर सर्वी सरिवार मेरा उर भी इलका मर देंगी फिर ये कविताएँ

.

### नीलाम

[ श्री अचय कुमार जैन ]

"भाभी"— "हाँ, कुँवर जी क्या है ?"

"ऐसे कब तक चल सकता है ? आखिर हमारे भी तो बाल-बच्चे हैं।"

**'हैं** तो, फिर ?"

"फिर जब आपके रघुवीर को वह अच्छा भोदे पहने, खाते पीते देखते हैं तो क्या उनका मन नहीं चलता ? वह कुछ हमारी तरह समम-दार तो हैं नहीं—" यह कहते-कहते वह रुक गया।

"श्रन्छा कुँ वर जी, तुम्हें हमारे रघुवीर का खाना-भीना श्रन्छा नहीं लगता। जिसके पास जैसा हो करे"— श्रीर कोध से भाभी ने मुँह फेर लिया।

"पर भाभी करें कहाँ से, जिमीदारी, सीर, मौरूसी तो मुखिया जी (बड़े भाई) के हाथ में है फिर हम कहाँ से पैदा करें। सारी सम्मत्ति कुछ मुखिया जी की स्वयं की पैदा की हुई नहीं है। ठाकुर (स्वर्गीय पिता) की है श्रीर उसके हम श्रीर श्राप दोनों बराबर के श्रिधकारी हैं।"

यहाँ पर इनका कुछ इतिहास देना अनिवार्य है। ठाकुर विक्रमसिंह बड़े अच्छे आदमी थे, उन्होंने खेती में से मेहनत मजदूरी करके कुछ जिमीदारी ले ली और मौरूसी तो पुश्तैनी थी ही। अच्छी परिस्थिति होने से वे गाँव के मुखिया हो गये और उनके मरने के बाद भी उनके बड़े पुत्र वीरसिंह को लोग मुखिया जी कहने लगे, यद्यपि बह हैं नहीं। छोटा मुहरसिंह कुँवर जी कहलाता है। विक्रमसिंह को मरे चार वर्ष हो गए, तब से सारी जायदाद 🕸 मुखिया जी का ही कब्जा है। घर में जो भोजन बनता है उसमें कुँवर जी, उसकी स्त्री श्रीर उसके बच्चे खा भर सकते हैं इससे परे वस्तादि के लिए उन्हें कुछ नहीं मिलता। और मिले भी कहाँ से, बड़ा घर होने से पटवारी, पतरौल, तहसील का चपरासी सभी वहाँ ठहरते हैं, भोजन करते हैं। फिर ठाकुर होकर मदिरा न पी तो क्या हुआ इसलिए मुखिया जी थोड़ी मदिरा पीने की लत्त भी रखते हैं, उसके बाद उनके चालीस वर्ष की खबस्था में केवल एक ही पुत्र रघुवीर तो है। उसका अरण-पोषण भी बड़े अच्छे ढंग पर होता रहा है। इससे कुछ बचता नहीं।

चार साल से कुँबर जी बिलकुल चुप रहा; पर गाँव के कुछ न्यायकारी व्यक्तियों (?) ने उसे सुभाया कि क्यों नहीं वह बटवारा करवा डालता क्या कारण है कि वह ग़रीबी में रहे और मुखिया जी गुलझरें उड़ाएं। श्राख़िर उसकी भी तो गृहस्थी है!! उसका भी खाने पीने के श्रातिरिक्त कुछ खर्च है। इधर उसकी स्त्री ने चाहा होता तो चार वर्ष काटना भी कठिन था; पर वह तो सदैव यही कहती रही कि मुखियां जी स्वयं न्याय करेंगे, तुम आगे से क्यों बिगाइते हो। पर बार वर्ष का समय काफी होता है कम नहीं। किसी प्रकार कुँवर जी ने यह बार साल काट दिये हैं; पर अब गाड़ी नहीं चलती और दो टूक करने को ही वह आज भाभी के पास पहुँचा है।

भाभी ने जब सुना कि कुँवर जी की इतनी हिम्मत कि अपने को बराबर का अधिकारी कहें आने दो मुखिया जी को कल ही, कल क्यों ? आज ही बटवारा हो जायगा। और निश्चयात्मक रूप से उसने उत्तर दिया—"अच्छा, अगर मुखिया जी को तुम समभते हो कि दिगाइते हैं

श्राज ही बटबारा हो जायगा।" कुँबरजी को यह बात लगी। वह मुख्यिया जी के प्रति सदैव ही उच्चभाव रखे रहा है फिर इस समस्या को कैसे सुलमावे, बड़ा नरम श्रीर लिजित सा होकर वह बोला—"भावज, मैं यह कब कहता हूँ" पर सामने अपने पुत्र जुगला को रोता हुशा देखकर वह बोला—"सामने जुगला को तो देखो कैसा रो रहा है।" श्रीर जैसे जुगला ने भूला कर्त्तव्य फिर याद दिला दिया हो—"भाभी, श्रब हम बिना बटबारा किये नहीं रह सकते हमारे बच्चे क्या बाजार की मिर्जई भी नहीं पहर सकते जबकि रघुवीर कश्मीरा पहरता है।"

इस बार भाभी ने कुँ वरजी के हृदय में छिपे मर्मस्थल को भेदा—"कुँ वरजी, वही तुम हो जिसने ठाकुर के श्राद्ध पर कहा था कि ठाकुर न रहे तो क्या मुख्याजी तो हैं और अब मुख्याजी पर अविश्वास रखते हो । अरे कलजुग में जो न हो थोड़ा है।"

श्चन्तिम वाक्य ने कुवरजी पर पड़े सारे प्रभाव को धो डाला श्रीर वह बोला—"भाभी, मुखियाजी श्राएँ तो कह देना कि कुँवरजी बटवारे की कहताथा। तुम जानती ही हो कि उनके सामने पड़ने की मेरी हिम्मत नहीं"—िक मुखियाजी आ पहुँचे और बिना देखे कीन क्या कह रहा है बोलने लगे—"रघुवीर की माँ—अरे सुना तुमने मिश्रीलाल, वही पंच की बातें, कहने लगे कुँ वरजी बटवारा कराना चाहता है। देखा कैसे घर में फूट डलवाना चाहता है। अरे आजकल मेल किसी को अच्छा थोड़े ही लगता है। मला कहीं यह भी सम्भव—"कहते कहते उनकी हिष्ट कुँवरजी पर पड़ी जो उनहें देखकर जाने का प्रयास कर रहा था। रघुवीर की माँ बोली—"इसमें बुराई ही क्या हैं। दूसरों का बुरा क्यों मानते हो। खुर कुँवरजी इसीलिए आये हैं। पूछ लो ना। सन्न क्या रह गये।"

कुँवरजी को काटो तो खून नहीं। श्रव क्या कहें। मुखिया जी को इस बात का गुमान भी न था कि कुंवरजी बटवारे के बारे में सोच भी सकता है। उसके कोमल हृदय पर श्राधात पहुंचा। बड़े सम्भल कर और बाद विवाद को मस्तिष्क में ठण्डा करने के लिये उन्होंने सोचा-श्राखिर वह भी तो गृहस्थी है। भले ही मुखिया जी अकर्मण्य थे पर थे न्याय प्रिय। दूसरे ही दिन गिरवर सिंह, मिश्रीलाल, शेरसिंह, भजनलाल और रामप्रसाद तिवारी के सम्मुख बटवारा सम्पन्न होगया।

बटवारे के एक वर्ष बाद ही मुखियाजी की आर्थिक अवस्था दिनों दिन हीने होने लगी। खर्च कम होन सका पर आय बिल्कुल आधी थी। फलतः बौहरों के रुक्के बढ़ने लगे। ठीक वही दशा होगई कि सरोवर में जल आना बन्द होजाय और खर्च बरावर बना रहे तो कभी न कभी मुखेगा ही। वह ऋण की फिक्क से दिन-रात घुलने लगे। घर की इच्चत रखने के लिये अब भी पटवारी, पतरील आदि उन्हीं की चौपाल पर ठहरते थे और उनका खर्चा बना रहा। हाँ, कमी हुई तो खाने पहिनने में ! सदा से अच्छा खाया, पहना पर बुढ़ापे में यह सब बन्द

करना पड़ा—रघुवीर की माँ सदैव अपने देवर और देवरानी को कोसती रही जिसकी खबर इधर उधर से कुँ वरजी को भी लगती रही। और अपने को अज्ञम्य अपराधी समम उन्होंने बड़े भाई के पास भी जाना छोड़ दिया। इधर मुखिया जी भी प्रेम या सहदयता इसलिये न दिखा सके कि कहीं यह अर्थ न लगाया जाये कि खुशामद करने की सूभी है, सम्भवतः कुछ सहायता चाहते हैं। स्वाभिमानी मुखिया ऐसा कभी सहन नहीं कर सकते थे और इसी सोचा सोची में एक दूसरे से बहुत दूर होगए कि एक घटना हो गई —

बौहरे फूलचन्द ने अपने तीन रह्मों की नालिश दायर करदी। यदि मुख्या ने चाहा होता तो रुपये की खन्दी हो जाती अथवा कुछ मियाद मिल जाती; पर कुछ लजावश, कुछ स्वाभिमानी होने के कारण डिकी हो गई। रघुवीर की माँ ने जब मुना कि कुँवर जी कल शाम बौहरे के यहाँ गए थे सो उसे संदेह न रहा कि यह सब कुँवर जी ने कराया है। पहले बटवारा करा लिया अव इज्जत लेने की ठानी है।

वह दिन भी श्राया जब कुर्कश्रमीन जायदाद तथा मकान नीलाम कराने श्राया। मुखिया जी लज्जावश घर से बाहर न निकल सके । बंसी नाई ने सूचना दी कि नीलाम कुँवर जी की बोली पर खत्म होगया। मुखिया जी को विश्वास नहीं हो रहा था कि घर की जायदाद पर कैसे कुँ वर जी बोली बोल सका। पर रघुबीर की माँ को कोई सन्देह न था। वह बराबर कुँ वरजी को गालियाँ दे रही थीं।

कुँ बरजी नीचा सिर किए मुखिया जी के घर पहुँ चे। ऐसा वातावरण देख उसकी हिम्मत न हुई कि कुछ बोलता। उघर मुखियाजी निर्धन थे पर कायर न थे चुप न रह सके बोले—"कुँ बरजी मुझे तुमसे ऐसी आशा कभी न थी। खैर यह तो दिनों। का फेर है। क्यों कुं वर जी—क्या हम लोगों को अभी मकान भी खाली कर देना पढ़ेगा ?"

कुंबरजी ऋन्तिम वाक्य को न सह सका और लौट पड़ा—दुबारी में रघुवीर पेड़े खा रहा था। उसी से बोला—"रघुवीर, यह काराज मुखियाजी को दे देना। उनके सामने बोलने की मुफ में हिम्मत नहीं। बटवारे की बात भी में न कह सका और अब नीलाम की बात भी न कह सक्रंगा।" रघुवीर ने काराज ले लिया और भीतर जाकर कहा कि कुंबर जी चाचा रोते-रोते कुछ कह के यह काराज तुम्हें देने को कह गए हैं। ऋाशातीत समाचार था नीलाम की बोली रघुवीर के नाम खत्म हुई थी कुंबरजी के नहीं। मुखिया जी के नेत्रों से श्रांसू निकल पड़े—उधर रघुवीर की माँ बराबर कुंबरजी के पितृपत्त को कोस रही

## आकांक्षा

श्री कालीप्रसाद 'विरही' ]

एक मिट्टी का दीपक—

जिसने जगती के घने अन्धकार में, अपने जोबन की श्रीण-ज्योति जला कर-

> भटकों को मार्ग लनाया,— श्रंधकार को 'प्रकाश' बनाया ,— शलभ को प्यार किया,— श्रीर—

श्चन्त तक जलता हुआ, 'प्रकाश' में विलीन हुआ। है प्रभु! मुझे भी ऐसा 'जीवन' दो!!

वह मिट्टी का छोटा-सा दोपक-

जो भीनन भर 'स्नेह' पाकर भी 'नलता' रहा— श्रन्थकार खाकर, 'प्रकाश' देता रहा,— श्रेमियों को गले लगाता रहा,— श्रीर— ?

निश्चलता पूर्वक, जीवन की सारी जलन,— सारी कसक,— सारी वेदना,—

विना 'उफ़' किये, चट्टान की भांति सहतः रहा ! हे प्रभु ! मुझे भी ऐसा जीवन दो!!

### स्वप्न

### [ पं० गोकुलचन्द शर्मा एम. ए. ]

स्वप्तों से संसार बना है, स्वप्तों की सब माया,
सारा खेल खिलाड़ी का है स्वप्तों ने दिखलाया।

कीन यहां है जिसने कोई देखा कभी न सपना ?

किसने नहीं स्वप्ता में पहले ढाला साँचा अपना ?

किसकी दुनिया सपने में ही पहले नहीं बनी है?

केह दो कौन बढ़ा आपे जो सपने का न धनी है?

मेरा जीवन-स्वर्ग स्वप्ता से स्वप्तों की सब माया।

मनोभूमि में स्वप्नों के ही बँकुर है उग बाते, हरे-हरे फिर प्यारे-प्यारे दो दल है दिखलाते । उनके ऊपर लहराती-सी उठती शाखावित्याँ, जिनमें कर्जित कुसुम को लेकर खिलतीं कोमल |कलियाँ । उन कलियों में मीठा-मीठा फल भी मैंने पाया, स्वप्नों से संसार बना है स्वप्नों को सब माया।

कहता है जब कोई मुक्तसे जग भूठा व्यों सपना,
तभी देखने लग जाता हूँ इयप्नलोक में भपना ।
पड़ता वहाँ दिखाई मुक्तको जन कवियों का लेखा,
भव तक दमक रही है जिनकी इवप्न-सृष्टि को रेखा ।
बाल्मीिक वे राम नहीं हैं क्या स्वप्नों की साया !
अवप्नों से संसार बना है स्वप्नों की सब माया ।

कितना बल-बन्धन रखते हैं सोचो धार्ग करूचे ?

कितनो शक्ति खिपाये रखते छोटे-छोटे बच्चे ?

मन के महलों से ही बनते राज-भवन भी पक्के,
लघु-लघु लहरों से लगते हैं कितने गहरे धक्के ।

सपने की डोरी ने ही यह सारा नाच नचाया,
स्वपनों से सैसार बना है स्वपनों की सब माया।

स्विप्तित लहरों में जो डूबा पाया उसने मोती, स्वप्तों को खोकर ही दुनिया घपना सब कुछ खोती। 'भूली' देख-देख स्वप्तों को रही सदा ही रोती, 'जागी' के सम्मुख जगती में स्वप्त-जगत की ज्योति। मेरे स्वप्तों ने है कैसा सुधा-बिंदु टपकाया; स्वप्तों से संसार बना है, स्वप्तों की सब माया।

स्वप्न जगाते, स्वप्न उठाते, स्वप्न मुफे दौड़ाते,
रवप्न रुवाते, स्वप्न इसाने, स्वप्न महो ! बौराते ।
बन बैठा हूँ स्वप्नों का ही में तो एक खिलोना,
मेरी कुटिया में मचला है स्वप्नों का बज-द्वीना ।
उसकी लीलाओं के आगे मुफ को और न आया,
स्वप्नों से संसार बना है स्वप्नों की सब माया।

# बड़े मियां

श्रीजयन्त ]

एक पतली सी गली थी ख्रौर उसमें एक छोटा सा मकान था, उसमें रिमया अपने माता पिता के साथ रहती थी।

पिता एक सेठ के यहाँ साईस था । तीन संतुष्ट प्रकृति के जीवों की तृप्ति के लिये काफी कमाई हो जाती थी। वह छोटासा परिवार सुखी था।

उनका रहने का स्थान एक कोठरी थी। एक श्रोर एक लकड़ी का बक्स, एक कपड़ों की गठरी, दूसरे कोने में कुछ बरतन श्रीर घड़ा श्रीर खिड़की के पास एक श्रंगीठी। इसी प्रकार उन लोगों ने श्रपना सारा रहन-सहन सुत्र्यवस्थित कर रक्खा था।

रिमया के पिता का एक दोस्त था जिसे बड़े मियाँ के नाम से लोग पुकारते थे। वह उस गली के फाटक पर बैंडे रहते। बड़े मियाँ के बेटे थे, पोते थे पर वह घर पर न रह कर वहीं गली के दरवाचे पर आ बैठते।

लोगों ने बहुत समकाया, "बड़े मियाँ, श्रपना घर-बार छोड़ यहाँ लावारासियों की तरह फाटक पर क्यों पड़े रहते हो ?"

बड़े मियाँ कहते, "भाई श्रपना पराया क्या! कोई ख़ुरा के घर से किसी मकान या जगह के लिये सनद लिखा कर तो लाया नहीं। जहाँ लोगों ने बताया कि उनका क़ब्ज़ा है वहाँ से उठे श्रपने श्रकेले में जा बैठे। कोई उसे सनकी और कोई पागल सममता। लोग आते जाते उससे चुटकले छेड़ जाते। बड़े मियाँ चुपचाप सब सह लेते और लोगों का लड़क-पन कह कर हँस देते।

कभी कभी वह रिमया के मकान की तरक निकल जाते तो उसके लिखे कुछ न कुछ जरूर ले जाते।

रिमया कहती, 'बड़े मियां की चिट्टी दादी, परी ने जैसे कई हो कॉढ़ी।"

श्रीर खिल खिलाकर हँस देती। बड़े मियाँ जवाब देते, "इसका, मेरी बेटी, श्रपने लिये स्वेटर बुनेगी न ? ले जा इसे।"

रिमया कई बार यह कहकर जाती कि, "कैंची लाई।" पर कुछ देर बाद कैंची न मिलने का बहाना बना कर लौटती और उसके स्थान पर कंघा और तेल लेती आती।

"अभी उन कुछ कम है, बाबा। थोड़ा पाल-पोस कर इसे बढ़ालूं फिर मेरे खेटर लायक उन निकल आयेगी। उन तो बढ़ी नहीं, और क्यों बाबा मैं तो बढ़ रही हूं न ?"

बड़े मियाँ उसके गाल पर हल्की सी चपत लगा कर कहते, "मेरी बिटिया सब से बड़ी है। बड़ी श्रच्छी है।"

रिमया कहती, "नहीं बाबा, हम तो छोटे ही रहना चाहते हैं। बड़ों को तो, आज यह काम, कल वह काम, कभी भी अपने बर्तन सजाने को, गुड़िया खेलने को, अपनी चूड़ियों को सजा कर रखने को और-और बाबा बुरा तो न मानोगे तुम्हारी वाढ़ी का स्वेटर बुनने को बक्त ही नहीं मिलता। ऐसा भी क्या बड़ा होना !" रिमया बड़े मियाँ की दाढ़ी के साथ खेलती हुई कहती।

बड़े मियाँ ने एक दिन कहा, "रिमया बेटी, देखे, तुम्हारी चड़ियां तो देखें, कैसी कैसी हैं। तुम उनकी बहुत तारीक किया करती हो। देखों सब देखेंगा।"

रमिया अपनी चूड़ियों का डब्बा ले आई। बड़े मियाँ ने उसे लेने को हाथ बढ़ाया।

"ना बाबा ऐसे नहीं। हम अपने आप दिखायेंगे। देखों ये हैं जो बाबूजी बनारस से लाये थे और ये तखनऊ के बिलायती रबड़ के लच्छे और य 'रेशमी काँच की चूड़ियाँ लो' बाली चूड़ियाँ और....।"

बड़े मियाँ ने कहा — "श्स, बस और बस। ये लड़की इतना सारा बोल गई कि मैं एक लक्ष्य भी न समभा। अच्छा अब तो तेरे को ऐसी ऐसी चूड़ियाँ ला कर दूँगा कि तूने आज तक देखी भी न होंगी।"

इसी समय माँ आगई और उसने कहा — "तेरे पास इतनी तो चूड़ियाँ हैं। अब और क्या करेगी ?"

"चुप रहो जी तुम। यह हमारा श्रीर हमारी बिटिया का मामला है इस में मत बोलो।" गुस्से का सा श्रमिनय करते हुए श्रीर श्रांख जल्दी जल्दी भपकते हुए बड़े मियाँ ने कहा। रिमया की माँ चलने लगीं तो बड़े मियाँ ने कहा, "रिमया की माँ, नाराज हो गई। श्रच्छा, मुझे माफ करना बेटी। तू तो मेरी धरम की बेटी है श्रीर हमीश श्रीर रशीश को तो पात्र की बेटियाँ समस्ता हूँ। नाराज तो न हुई न बेटी," बाबा ने भावुकता स कहा।

"तुम भी तो बड़ी जल्दी दुखी हो जाते हो। भला में तुमसे क्यों नाराज होने लगी। तुम तो मेरे बाप के बराबर हो न ?"

बड़े मियाँ का गला भर आता और वह सारे परिवार को आसीसें देते। आँखों में आँसू भर कर वह कहते, "जब इस दुनिया को छोड़ूँगा तो मुझे और किसी चीज का दुख न होगा, सिर्फ तुम लोगों को छोड़ने का ज़रूर होगा। इसी प्रकार धीरे धीरे बड़े मियाँ उस परिवार से इतना सम्बन्धित हो गये कि दिन का अधिक भाग वह रिमयां के पास बैठ कर बिताते।

अब रिमया तेरह चौदह साल की होगई थी। उसके माँ बाप ने सोचा कि रिमया की शादी करदी जाये। बड़े मियाँ के सामने यह सवाल आते ही उन्होंने कहा, "रिमया अभी छोटी है, कुछ सममती नहीं। एक नये घर का सारा काम वह कैसे सम्हाल सकेगी ? अभी थोड़ा बड़ा हो लेने दो।"

रिमया की माँ ने कहा, "बाबा, मोह से ही तो सारे काम नहीं होते, आख़िर कभी तो इसे अलग होना ही हैं"।"

"तो इसका मतलब, उसे कल जाना हो तो उसे आज ही निकाल हो। बंटी, लोग मेरे लिये भी ऐसा ही सोचते हैं। मेरे बंदे कहते हैं 'इस बुड्दे को कल तो मरना ही है अभी क्यों नहीं मर जाता, पाप कटे।'दुनिया ही ऐसी है। तेरा क्या क़सूर।"

रिमया की माँ ने बड़े मियाँ को दुखी होते देख कर कहा, "श्रच्छा बाबा, श्रगले साल ?"

"तेकिन, बेटा, पहले तुम लोगों क्रकी । खुशी श्रीर फिर मेरी । तुम जो कह रही थीं ठीक है श्रीर मुझे हक भी क्या है जो ....।"

"नहीं या ग ऐसा न कहो। कभी आज तक मैंने दुन्हारी बात टाली है ? तुम ही तो[हमारे बड़े . हो, बड़े मियाँ।"

बाबा खुश हो जाते और रिमया को अपने पास विठा कर कहानियाँ सुनाते। साल भर भी पूरा हो गया। रिमया की शादी हो गई। लड़के के माँ बाप कोई नहीं था। वह भी रिमया के पिता के ही घर आकर रहने लगा। परिवार तीन से चार का होगया।

"रिमिया बेटी, मैं अन्दर आ सकता हूँ ?"

बड़े मियाँ ने बाहर से पुकारा।

रमिया के पति ने पूछा, "कौन है ?"

"बड़े मियाँ हैं। हमारे यहाँ हमेशा से आते हैं। बड़े अच्छे आदमी हैं।" रिमया की माँने जवाब दिया।

बड़े मियाँ धन्दर आए। उन्होंने इधर उधर देखा, सब कुछ बदला हुआ सा दिखाई दिया। उन्होंने अपने जीवन में प्रथम बार यह सममा कि रिमया आज़ाद कोयल की तरह कूकने और फुद्रकने बाली चिड़िया से एक पिजरे में बन्द पत्ती की तरह संकुचित और सहमी हुई सी भी बन सकती है। उन्हें बड़ा दुख हुआ। मन की बात छिपाते हुए उन्होंने कहा, "रिमया की माँ, इतने दिन की पाली पोसी इस ऊन का खेटर अब कीन बनायेगा?" कोई उत्तर न पाकर, कुछ पल तक सोचने के बाद वापिस चलने लगे।

रिसिया की माँ ने कहा, "बाबा अभी मत जाओ। आज पहली बार तुम लड़के को देख रहे हो। अपने वर्षों को आसोस भी न दोगे ?"

"हाँ, अभी श्राया एक मिनट में, बेटी।" कह कर बड़े मियाँ जल्दी जल्दी चले गये।

रिमया के पित ने कहा, "यह मियाँ तो यहाँ हमेशा से आता दीखता है।"

"हाँ, यह हमेशा से आते हैं। मैं भी तो उन्हें बचपन से जानती हूँ।" रिमया की माँ ने कहा। उसने देखा कि लड़के की भावभंगी साफ बता रही थी कि वह बड़े मियाँ को पसन्द नहीं करता। वह सममता है कि मुसलमान तो कभी भरोसा करने लायक होते ही नहीं।

जब बड़े मियाँ दो तीन मिनट बाद लौटे तो उन्होंने रिमया के पति को बाहर जाते देखा। "हैं, मैं तो दोनों के लिये कुछ लाया था और वह चल ही दिया।"

"हाँ बाबा, उन्हें बहुत कहा कि 'बाबा अपने आदमी हैं अगर तुमने इनसे असीस न ली तो बह बुरा मानेंगे' लेकिन वह बोले जिसे जरूरत हो वह ले लें।" शिकायत के तौर पर रिमया ने कहा।

बड़े मियाँ ने कहा, "बेटी, तू दुखी मत हो अभी लड़का है। आगे समभने भी लगेगा।" लेकिन वह अपने मन में ही जानते थे कि उन्हें कितना दुख हुआ। रिमया रो रही थी। उसकी माँ चुप बैठी थी।

बढ़े मियाँ ने श्राँगोछा खोला श्रीर उसमें से कुछ मिठाई श्रीर फल निकाले।

"परवाह न कर बेटी, इन छोटी छोटी बातों का बुरा नहीं मानते ।"

रिमया उठी और उसी और धोती का पहा फैलाकर उसने कहा, "बाबा और किसी को नहीं तो मुझे तो अपने बाबा का प्यार और असीस चाहिये।"

बड़े मियाँ की भूरी आँखें सजल हो आई और उन्होंने उपरने समेत सब चीजों को रिमया की भोली में डाल दिया। "मेरी रिमया बहुत बहुत जीये। रिमया-सी बेटी खुदा सब घरों में दे।" बड़े मियाँ से और न बोला गया।

रिमया ने अपने आँसू पींछते हुये कहा, "बाबा यह उपरना भी अब न लौटाऊँगी । मुझे दे दिया न १"

"हाँ बेटी।" बड़े मियाँ ने कहा। रिमया ने सब चीजों को बाँध कर रख दिया। बड़े मियाँ ने कुछ सोचते हुये कहा, "अरे मैं एक चीज तो भूल ही गया। अच्छा रिमया, बता तो, क्या लाया हूँ तेरे लिये ?"

"में नहीं बताती तुम बतात्रो ?"

"नहीं बताएगी ?" बड़े मियाँ ने गुस्सा दिखाने का प्रयत्न करते हुये कहा।



श्री 'डमश' चतुर्वेट्रो

श्री जयंत

POPULAR PRESS, DELHI.

		ł	

"बच्छा, नहीं देना तो न दो। तुमसे माँगता कौन है ?"

परन्तु रिमया को भी गुस्सा दिखाते देखकर बड़े मियाँ ने धीरे से कहा, "अच्छा ले।" श्रीर उन्होंने अपनी वास्कट की जेव में से चार चूड़ियाँ निकालीं।

रिमया ने हाथ बरा दिये। "बाबा तुम ही

पहना दो।"

उसकी माँ ने कहा, "बाबा इनकी क्या जरूरत हैं ? तुम्हारी ही तो दुआओं से यह

खाती पहनती है।"

रिमया ने कहा, "तुम्हें नहीं लाकर देते इसीलिये चिहती हो ?" यह कह ही रही थी कि दरवाजे से उसने अपने पति को आते देखा। उसका चेहरा गुम्से से लाज हो रहाथा। दरवाजे ही पर से वह लौट गया। बड़े मियाँ ने भी देखा।

जल्दी जल्दी चूड़ियाँ पहना कर बड़े मियाँ ने कहा, "बेटी श्रव में जाता हूँ।" वह श्रपन मन में कुब श्रपमानित सा श्रतुभव कर रहे थे।

रमिया ने बड़ी हिम्मत कर के पूद्रा, "फिर

कव ऋाश्रोगे ?"

"जब खुरा चाहेगा। बड़े मियाँ ने रिमयाँ

के सिर पर हाथ फेरने हुये कहा।

"सामबार की श्राना बाता, माँ का उस दिन जनम हुत्रा था । माँ के लिये भो चूड़ियाँ लाश्रोगेन १"

् "मरी वेदी तो सममहार हो गई है।"

बड़े सियाँ कहते हुय चले गय।

"बाता मुक्तसे नाराज हा गये हैं क्या, माँ?" कीई उत्तर न पाकर रिनया ने कहा, "मैंने ता उन्हें कुछ कहा नहीं। माँ, में जानती हूँ मेरी शादी कर के तुमने खट्डा नहीं किया। सार घर की खीर बाता को भी दुखों कर दिया। मुझे तो तुम कोई भो खुश नहीं दीखतो।"

माँ ने बात को घुमाते हुये कहा, "मैं भी" बाबा के बारे में सोच रही थी। वह नहीं आये इतने दिन से। आज जब वह काम पर चले जायें तो हम दोनों गली के फाटक पर चलेंगे। आज बाबा का पता लगायेंगे।"

"माँ, मैं बाबा को मनाल्ड्ँगी । वह मेरा बड़ा कहना मानते हैं ।"

स्वाना खाकर रिमया का पित तो अपने काम पर चला गया और रिमया और उसकी माँ दरवाजे पर बाबा को देखने गये । वहाँ पर कोई न था। पास ही हजवाई की दुकान थी। उससे पूजने पर पता लगा—तीन दिन हुये एक दिन बड़े मियाँ उसके पास आये थे और कुनीन की गोलियाँ माँग रहे थे ! शायद जाड़ा चढ़ रहा था।

दोनों की और कुद्ध पूक्कने की हिश्मत न पड़ी और चुरवार वाविस घर चा गई।

घर पहुँ चते ही देखा कि रिमया के पिता खड़े उन दोनों की राह देख रहे थे। "आज जल्दी आ गये बाबू जी ? रिमया ने पूजा।

"हाँ बेटा, आज मालिक बन्धई चले गये हैं। दो हफ्ते गाड़ी काम नहीं आवेगी। कहाँ से आरही हो तुम लोग ?"

'बागको देखने गरेथे।"

"कुञ्ज पता लगा १ में भी कल मिलने गया तो वह मिते ही नहीं। सुना है वह कहीं चले गये हैं।"

उस दिन शाम का रिमया का पित आया तो सा लोग भींच करे से रह गये। चार आदमी उसे उठा कर लागे थे। वह बेहोश था। पता लगा, निल मैनेजर के साथ उसने अमद्रता का व्यवहार किया इस लिये उसकी यह दशा हुई। वह दबग और अक्यड़ प्रकृति का आदमी था। जहाँ अपने को ठीक समस्ता बड़े से बड़े अफसर से लड़ पड़ता।

उसे चारपाई पर लिटाया। उसके बदन पर

अमिन्सुवा-

कहीं ज्ञान नथा पर बूँसों और लातों की चोट से सारा बदन दुख रहा था।

चार दिन बीते। रिमया श्रीर उसकी माँ दिन रात बीमार के पास बैठे रहे श्रीर उसकी पूरी तरह सेवा की। दवाइयों पर भी पूरा खर्च किया। बदन की सूजन के साथ बुक्तार भी बढ़ गया। रिमया को बड़ी फिकर हो रही है।

रिमया अपने पित को पसन्द नहीं करती थी, फिर भी वह उसका पित ही था। पहले, बड़े मियाँ का इतने दिन गायब रहना और फिर पित का इस हालत में पड़ा होना देख कर रिमया, शायद ही कोई ऐसा समय बीता होगा जब वह बेचैन न रहती हो।

गली में ही एक डाक्टर रहते थे उन्हें बुलाया तो वह बोले, "लड़के की हालत चिंताजनक है। चोट अन्दरूनी है। मेरे अस्पताल में दाखिल कराओ। रोज का पाँच रुपया खर्च पड़ेगा और पन्द्रह दिन लगेंगे।"

उस परिवार को इतनी छोटी कमाई में से कुछ बचा लेना तो श्रमम्भव ही था यही काफी था कि बिना कठिनाई के वे कर्ज श्रादि के भगड़ों से बचे सब काम श्रम्छी तरह चला लेते थे। पाँच रुपया रोज तो वैसे ही बहुत होता है श्रीर फिर पन्द्रह दिन तक! मालिक भी नहीं थे कि रिमया का पिता उससे जाकर कुछ माँगता चुप साध कर बैठ जाना पड़ा।

इतनी सेवा करने पर भी रिमया का पित फिर मैनेजर की भिड़कियों और मार न सहने के लिये रिमया, उसकी माँ और उसके पिता को रोता छोड़ कर चल दिया।

आज उस बात को हुए एक हफ्ताह बीत चुका था। शाम का समयथा। माँ-बेटी बैठी थीं। बाहर से आवाज आई, "रिमया मैं आ सकता हूँ।" आवाज पहिचानी हुई थी। वह बढ़े मियाँ की थी।

रिभेवा में बल न था कि दरबाजा खोलती— श्रीर श्रपने बाबा को घर में बुला लेती। दूसरी श्राद्धान पर रिभया की माँ उठी, दरबाजा खोला के तो उसने देखा बड़े मियाँ बराल में तीन-चार बंडल उठाए खड़े हैं।

बढ़े "मियाँ ने उत्सुकता से पूछा "रिमया है या अपनी सुसराल चली गई।"

"गई।"रिमया की माँ ने उस दुखी समाचार को जितनी देर टल सके टालने के विचार से कहा। "आज अगर वह यहाँ होती तो कितनी खुश होती। क्या क्या चीजें मैं अपनी बिटिया के लिये लाया हूँ। एक जोड़ा जूता तेरे लिये लाया हूँ। लखनऊ गया था न। लेकिन तुम उदास क्यों हो ? कुछ बोलती ही नहीं।"

'क्या बोॡँ, बाबा।<sup>क</sup> उसने हृद्य की व्यथा छिपाते हुए कहा।

"श्रच्छा रहने दो। यह ले। इस लिफाफे में चूड़ियाँ हैं। विटिया को यह लिफाफा आज ही डाक से भिजवा देना, समभी ?"

"लेकिन बाबा श्रव चूड़ियों की जरूरत ही क्या है ?"

"उससे तुम्हें क्या ?"

बड़े मियाँ लिकाका रिमया की माँ को देकर चलने लगे। रिमया की माँ को होश न था। हाथ से लिकाका गिर गया श्रीर सब चुड़ियाँचूर चूर हो गईं।

बड़े मियाँ की छाती में जैसे किसी ने कुछ मार दिया हो। वहीं सिर पर हाथ रखकर चैठ गये।

"बाबा परवाह न करो । अच्छा ही हुआ यह चूड़ियाँ टूट गईं। इनकी खब सचमुच जरू-रत नहीं है बाबा, अब तुम्हें यहाँ आने से कोई नहीं रोकेगा। रोकने वाले तो चले ही गए। कह रहे थे, 'बाबा ने मुझे आसीस नहीं दी। उसके बिना में कैसे रहूँ।' मैंने कहा 'धोड़ा और ठहरो' पर वह न माने और कहने लगे 'अब तो जाऊँगा ही।' बाबा, उन्हें मिल वालों ने मारा भी कितना था। सारा बदन सूज आया था।" बड़े मियाँ को बात समभते देर न लगी।

श्रपने को कोसते हुए बोले, "हे खुदा ! श्रगर यह सारा दुख इन लोगों को मेरी वजह से हुआ है तो मुझे सज़ा देना। लेकिन रिमया में कितना बदनसीब हूँ तेरे सुख़ के लिये कुछ भी न कर सका।"

रिमया ने बाहर आकर कहा, "बाबा, छोड़ो भी इन बातों को जो कुछ होना था सो हो ही गया।"

बड़े मियाँ मुँह बाये सुनते रहे । कुछ समभ

में न श्राया। रिमया श्रागे बड़ी श्रीर बड़े मियाँ को सहारा देकर श्रन्दर लाई। बड़े मिया श्राँखें फाड़ कर देख रहे थे।

रात हो गई थी। रिमया ने भारी मन से फहा, "बाबा तुम रात को मुझे कहानियां सुनाया करते थे। आज भी सुनाओ।" बड़े मियाँ का भाड़क हदय भर आया। इतने दुख में रिमया अपने को कितने संयम से रोके बैठी थी। जैसे कुछ हुआ ही नहीं। रो लेती तो दुख हलका हो जाता। दुख के घूंटों को पी जाना कितना भयानक होता है। बड़े मियाँ समफ रहे थे पर करते क्या?

कहानी सुनानी शुरू की उसी प्रकार रिसया के सिर पर हाथ फेरते हुए। रिसमा सुन रही थी उसी प्रकार बाबा की दाढ़ी से खेलने का विफल प्रयास करती हुई।

## कालाय तस्मै नमः

साहित्याचार्यं पं व गयाप्रसाद शास्त्री ]

विश्व विनश्वर है और ऋनित्य है। मृत्यु श्रनिवार्य है । इच्छा या श्रनिच्छा-पूर्वक एक दिन सभी को मरना है। राजा-रह, ज्ञानी-ध्यानी पंडित-मूर्ख पुरयात्मा एवं पापी सभी को एक न एक दिन, आगे या पीछे कर कर्मा, कराल काल का प्रास बनना पड़ेगा। कोई भी महा शक्ति किसी को काल के मुख से नहीं बचा सकती है। किन्तु समय पर मरना और स्वाभाविक मृत्यु से मरना एक बात है श्रीर श्रकाल मीत से मरना दूसरी बात है। भारत के लोग अकाल मौत को पाप का फल मानते हैं। किसी जमाने में भूचाल, महामारी ऋदि के द्वारा जनपद (देश) का विध्वंस जब हुआ करता था तो उसे घोर पाप का कारण मान कर बड़े बड़े यज्ञ, शान्ति तथा महादान आदि हुआ करते थे। किन्तु आज तो समस्त बिश्व में मृत्यु का नहीं किन्तु महा प्रजय का अकारह तारहव मचा हुआ है, फिर इसे क्या कहा जाय ? इसे तो राष्ट्रों का घोर पाप कहना चाहिए। पर इस पाप का प्रायश्चित श्रौर किसी उत्तय से न होकर विश्व का सर्वनाश या उसे श्मशान बना कर ही हो सकेगा !

पुराणों की कथात्रों को पड़कर यदि उम्हें कोरी गण्यवाजी न मान कर कुछ उनसे जीवन की दिशा में प्रकाश लिया जाय तो देश तथा समाज का बहुत बड़ा कल्याण हो सकता है। पर, मृत्यु का श्रामन्त्रण करने वाले लोगों को इन सब बातों

को सोचने का मीका कहाँ ? कहते हैं, किसी जमाने में (त्रेतायुग में ) भारत के ससुद्र में एक द्वीप था, उसे लङ्का के नाम से पुकारा जाता था। सारी लङ्का सोने की थी। उसके राजा का नाम था रावण । रावण बहुत बड़ा बैज्ञानिक, पंडित और बीर था। उसने पंच महाभूतों ( पृथ्वी, जल, तेज, वायु श्रीर श्राकारा) तक पर अपना अधिकार कर रखाथा। उसने इतनी बड़ी अजेय शक्ति प्राप्त करली थी कि मौन तक को भी श्रपने पलंग के एक पाए में बाँध रखा था। उसका एक एक अनुयायी ज्ञाण भर में सारे विश्व को नष्ट कर देने की शक्ति रखता था। उसने ऋपनी शक्ति से सारा संसार, स्वर्ग लोक श्रीर पाताल लोक श्रादि चौदहीं लोकों को कर अपने वश में कर रखा था। सभी लोग उसके नाम से काँपते थे श्रीर उसे राज-कर देते थे। उसने सात्विक-गुग्ग-सम्बन्न सभी व्यक्तियों को (इन्द्र, चन्द्र आदि देवताओं को) जेलावानों में डाल रखा था। उसके राज्य में कोई भी व्यक्ति भ जा काम नहीं कर सकता था। वह सारे संसार के जुन का प्यासा था और उसे रुलाता था, इसी लिए उस का "रावए" यह नाम पड़ा यद्यपि वह इनना बड़ा सम्राट था, फिर भी रात्तसराज के नाम से पुकारा जाता था। उसका एक नाम दशमुख भी था। कहते हैं वह शास्त्र ऋौर चारों वेदों का जानने वाला तथा

इसीलिए उसे प्रतिभाशाली था। "दशमुख" उक्त उपाधि प्रदान की गई थी। इन सब विशेषताश्रों के होते हुए भी उसने श्रासुरी शक्तियों का श्रवलम्बन विनाशिनी किया था। राम-रावण के युद्ध में जिन श्रासुरी शक्तियों का प्रदर्शन हुआ था, उसे स्मरण करके श्राज भी हृदय काँप जाता है। किन्तु शक्तियों के चरम विकास या उन्नति का नाम ही प्रलय या विनाश है। जिस समय रावण अपने प्रखर प्रताप के कारण मध्याह्न के सूर्य के समान तप रहा था श्रीर उसके अत्याचारों से त्राहि-त्राहि मची हुई थी, उसी समय सीता का अपहरण करके उसने अपनी मृत्यु को श्रामन्त्रित किया । देखते देखते स्वप्न लोक के समान सोने की लड्डा राख हो गई श्रीर रावण स्वयं ऋपने विश्व-विजेता सामन्त. श्रीर समस्त परिवार के साथ इस लोक से बिदा होगया। इस ऐतिहासिक रावण को मरे हुए आज कितने ही युग बीत गए, फिर भी उसके राजसी ऋत्याचारों के प्रति घृणा प्रकट करने के उसे अब भी राज्ञस राज के नाम से पुकारा जाता है और उसके विज्ञता-द्योतक दश शिरों के अपर गर्ध के चिन्ह प्रदर्शित किए जाते हैं।

इन सब बातों से पता लगता है कि श्रासुरी शक्तियाँ कैसी भी श्रजेय क्यों न हों उनका नाश अवश्यम्भावी है। साथ ही एक बात का पता श्रीर चलता है कि कोई व्यक्ति कैसा ही महा पिंडत श्रीर वैज्ञानिक क्यों न हो, याद उसकी विद्या-बुद्धि का उपयोग विश्व-विनाश कारी कामों के लिए होता है तो इसमें कोई भी सन्देह नहीं है कि श्राने बाल युग में उसे राज्ञ की उपाधि दीं जायगी श्रीर उसका सम्मान रावण के समान ही शिर पर गधा विठलाकर किया जायगा।

रावण की श्रासुरी शक्तियों की तुलना जब हम योरोप तथा जापान जैसे एशियाई राष्ट्रों की शक्तियों के साथ करते हैं तो हृदय काँप जाता है

और विश्व-विनाश के सम्पूर्ण दृश्य एक एक करके श्राँखों के सामने श्रा जाते हैं। श्रासुरी शक्तियों के विकास और उनके द्वारा होने वाले अत्याचार चरम सीमा तक पहुँच गए हैं। विश्व माता का वत्तःस्थल बेकसों श्रीर बेबसों के ज़न स रँग गया है एवं रँगा जा रहा है श्रासुरी शक्ति मद साम्राज्य लोलप. शक्तिशाली राष्ट्रों राज़र्सों की रक्त-पिपासा अब तक शान्त होती हुई न दिखलाई पड़ती है। प्रत्युत उत्तरोत्तर बढ़ती ही जा रही है। नरसंहार के वीभत्स दृश्य एक एक करके इस कम से आँखों के सामने आ रहे हैं, मानों वे इस कात की सूचना दे रहे हैं कि वह दिन अब अधिक दूर नहीं है, जब योरोप में श्रीर एशिया के एक भाग चीन में लगा हुआ। युद्ध का दावानल विश्व के कोने कोने में फैल कर इन मायावी राज्ञसों को उनकी आसुरी शक्ति तथा सभ्यता के साथ खाक कर हालेगा। सामाज्यवादलिप्सा रूप उनकी सोने की लंका का कहीं नामो-निशान भी न रह जायगा। इन कर-कर्मा नृशंस राज्ञसों ने अगिरात अबोध, निरपराध, निर्दोष एवं निरीह बच्चों ऋौर खियों की हत्या कराके न केवस मानवता को ही लिजित किया है: बल्कि इस बात को सिद्ध कर दिखाया है कि स्वार्थी और शक्तिशाली मनुष्य स्वार्थ की मदिरा को पीकर शैतान से भी बढ़कर कर और निर्दय हो जाता है। मनुष्यों के हृदय-मन्दिर में प्रेम श्रीर द्या का दीपक जलाने वाले महात्मा ईमा और भगवान बुद्धदेव कभी इस बात की कल्पना भी न कर सके होंगे कि उनके अनुयायी शक्तिमद् से मतवाले होकर इस प्रकार मनुष्यता का तिरस्कार करेंगे। आज मृत्युमुख में पड़े हुए असंख्य नर-नारियों श्रीर शिशुश्रों के करुए-कन्दन के साथ-साथ उन महात्मात्रों की ऋात्माएं भी स्वर्ग में रो रही होंगी।

सृष्टि के सामूहिक विनाश का नाम ही प्रलय

या महाप्रलय है। प्रलय और महाप्रलय इन दोनों में बहुत बड़ा अन्तर है। प्रलय एक देशीय भी हुचा करता है। महायुद्ध, महामारी, जलप्लावन तथा भूचाल आदि के द्वारा जो सामृहिक विनाश होता है, उसे "प्रलय" कहते हैं एवं चराचर जगत का सम्पूर्ण रूपेण जो सर्वनाश है, उसे "महाप्रलय" कहते हैं। प्रलय श्रीर महाप्रलय दोनों ही प्रकृति के विज्ञोभ से होते हैं। प्रकृति के साधारण विज्ञोभ से "प्रलय" श्रीर श्रमाधारण विज्ञोभ से "महाप्रलय" हुआ करता है। जिस प्रकार वात, पित्त और कफ्त का सामञ्जास्य नष्ट हो जाने से शरीर नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार सत्व, रज श्रीर तम इन तीनों गुणों का सामञ्ज्ञस्य नष्ट हो जाने से त्रिगुणात्मक सृद्धि का नाश होता है। शरीर नाश में मिथ्या ब्राहार-विहार के द्वारा प्रकृति का विज्ञोभ होता है श्रीर सृष्टिनाश में श्राप्तुरी भावनाश्रों की वृद्धि के द्वारा प्रकृति का विज्ञोभ होता है। इस समय प्रकृति बेहद विश्वब्ध हो रही है। आधुनिक विज्ञान में पंच महाभूतों पर श्रिधकार करके प्रकृति को पददितत करने में कोई कोर-कसर नहीं की है। वैज्ञानिकों की सारी शक्ति विश्व के कल्याएकारी कार्यों की श्रोर से हटकर विश्व के विध्वंस के लिए विषेती, घातक गैसों एवं युद्ध के अन्यान्य अख-राखों के बनाने में लगी हुई है। सत्वगुण की कमी एवं रजोगुण तथा तमोगुण की ऋसाधारण षृद्धि के कारण श्रासुरी भावनाओं ने समस्त संसार के ऊपर श्रपना श्राधिपत्य जमा लिया है। यही ऋासुरी भावनाएं (सीमातिवाती काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या तथा द्वेष आदि ) आसुरी शक्तियों के साथ मिल कर विश्व के विनाश का कारण वन जाती हैं। यदि विचार की दृष्टि से देखा जाय तो खनन्त प्रलोभनों के रूप में श्राज समध्य जगत् में श्रशान्ति का दावानल लगा हुआ है। जिस प्रकार पतंगों का समूह श्रपनी भावी मृत्यु की तनिक भी चिन्ता न करके

बड़ी तेजी के साथ दीपक की झोर दौड़ता चला जाता है और मृत्यु के बाद ही या साथ ही उसे अपनी भूल का ज्ञान होता है, उसके पहले नहीं, उसी प्रकार इस बीसवीं सदी. में सर्वसाधारण प्राणियों के साथ-साथ बड़े-बड़े राष्ट्रभी प्रलोभनों एवं सामज्य-लिप्सा की आग की ओर (युद्ध की ओर) दौड़े जा रहे हैं, जिसका परिणाम सृष्टि-विनाश के सिवाय और कुछ भी नहीं हो सकता है।

जिस प्रकार पत्रभड़ के बाद ही कोमल-किसलयों या नवपल्लवों की सम्भावना की जा सकती है, उसी प्रकार एक बार सामृहिक प्रलय इथवा नरसंहारलीला को देख लेने के बाद ही बचे-ख़ुचे लोगों में सात्विक भावनात्रों के उदय के साथ-साथ विवेक या प्राणिप्रेम का प्रकाश हो सकता है। इसके पूर्व जो व्यक्ति या राष्ट्रशान्ति सम्मेलनों के द्वारा शान्ति-शान्ति का बेसुरा राग श्रलाप रहे हैं, उनमें से कुछ लोग तो भारी श्रम में हैं ऋौर कुछ एक शान्ति के ठेकेदार दुर्वली एवं श्रसहाय राष्ट्रों का सर्वस्व श्रपहरण करके उसे पचा डालने की इच्छा से ही लोगों की आँखों में धूल भोंक रहे हैं। वास्तव में इन सर्वभन्ती धूर्तराष्ट्रों के शान्ति-सम्मेलनों के सुनहले आवरण के नीचे ही सर्वसंहारकारी विश्वव्यापी युद्ध का ज्वालामुखी स्रिपा हुन्ना है, जिसके भड़क उठने में अब घड़ी-पल की ही देर है। विश्वब्ध प्रकृति श्रपने श्रत्याचारियों को दण्ड देने में बड़ी निष्ट्रर है। जो लोग शक्तिमद से मतवाले होकर प्रकृति माता की इस सुन्दर रंगस्थली की उजाड़ने लगे हुए हैं, उनके पापों श्रीर अत्याचारों फल आज नहीं तो कल मिल कर ही रहेगा। एक बार चिश्वव्यापी युद्ध के द्वारा प्रलय या सर्वन(श के बाद जिस संसार का पुनर्निमाण होगा, वह सात्विक होगा। अन्धकार के बाद प्रकाश का होना जिस प्रकार स्वाभाविक है, उसी प्रकार

------ }िसम्बर

जीवन स्था

रज श्रीर तम के दब जाने के बाद सत्वगुरा का प्रकाश होना अत्यन्त स्वाभाविक है।

संतार की इन सभी हलचलों तथा परिवर्तनों विकास तथा उसके द्वारा एक बार फिर संसार का एक मात्र कारण काल है, श्रतः विवश होकर में सत्य का प्रभात अथवा सुख-शान्ति का "कालाय तस्मै नमः" कह कर ही मौन होना पड़ता है।

## [ श्री मातादीन भगेरिया ]

उषे! भरुणिमा आगरी क्यों गाती हो कीन सनैगा **भ**मरपुरी राग री 1 का भाँचल में भनुराग या संजीवन फाग धरे, सिख तुम जग में टिक न सकोगी भव का विभव विभावरी। तुम्हें सुमन ख़िलते प्रिय हैं यहाँ बज निर्मित दिय है उन्हें कुचलते विभते क्या तुम देख सकोगी नागरी माली माकर कुछुम चुने भीर अहेरी विद्या इने, पशु बल का है राज्य विश्व में शीघ्र यहाँ से भाग री । तुम्हें देखने सर-सिज खिलते खग-कुल हिल-भिल कर सुर भरते, खग-प्रस्न सब तेरी निधिका पाते हैं सम्भाग री। उषे, अरुखिमा जागरी !

## प्रेम या पाप

िश्री इन्द्र देव ]

अपनी छत पर अकेला लेटा सोच रहा हूँ— प्रेम करना क्या पाप है ?

समभ नहीं पड़ता—कभी सोचता हूँ पाप है—कभी संसार के सामने चिछा चिछा कर कहने को जी चाहता है—"नहीं। पाप नहीं है, पाप नहीं है।"

पर समाज है, कानून है, नियम है, सरकार है और सब से उत्पर "नैतिकता" है। सभी तो कहते हैं प्रेम पाप है। कुछ स्थानों पर उन्होंने इसे सहन करने की भी उदारता दिखाई है, पर मात्र उदारता।

श्रमी श्रमी मेरे पास मेरा श्रनन्य मित्र बैठा था। श्रमी श्रमी वह पच्छिम को जाने वाली गाड़ी पकड़ने के लिये स्टेशन गया है। उसकी पीड़ा देख विद्रोह जाग उठता है। न जाने कितनी बार ऐसा मन श्राया था कि समाज या श्रपने मित्र दोनों में से एक का श्रन्त कर दूँ। न रहेगा बाँस, न वजेगी बाँसुरी। पर मित्र का श्रन्त कैसे करूँ, श्रीर समाज ! यह वहुत शक्तिशाली मालुम होता है।

तारों से भरा श्राकाश मुझे बहुत प्रिय लगता है। कम ज्यादा चमकते मूक तारों को देख कर मुझे जीवन में बड़ा संतोष मिला है। मुझे ऐसा लगता है मानों श्रसद्य पीड़ा सहन करके भी ये तारे रोते चिहाते नहीं, चमकते ही जाते हैं—
चमकते ही जाते हैं। फिर मानव क्यों श्रपनी
पीड़ा सहन करके अपना कर्तव्य न किए जाय।
फिर भी अन्याय के प्रति चुप होकर तो बैठा नहीं
जा सकता, विद्रोह करने को ज़ी चाहता है।
सोचता हूँ यदि "कर्तव्य" की परिभाषा स्पष्ट हो।
जाय तो परिस्थिति की तनावट कम हो जाय।
क्या काम "कर्तव्य" की सीमा में आता है और क्या नहीं यह बात जानना भी जरूरी है। पर
इतना समय तो मेरे पास नहीं। मेरे सामने तो
मेरा मित्र है और उसकी पीड़ा। इसकी मेरे पर
जो प्रतिक्रिया हो रही है वह इतनी ज्यादा है कि
मैं कुछ और सोचने की अपने में शक्ति नहीं
पाता।

अभी के माह पूर्व की बात है। मित्र की शादी बड़ी धूम-धाम से हुई थी। सारा दुर्भाग्य लेकर मैं पैदा हुआ हूँ न, इसीलिए मैं अपने अनन्य से अनन्य मित्रों की भी शादी में आज तक कभी शामिल न हो सका—पर किर भी मेरे मित्र की शादी धूम-धाम से की गई, यह सत्य है।

हाँ तो मैं कह रहा था, अभी हैं माह हुए, मित्र की शादी हुई थी। मित्र अन्छे खाते पीते आदमी हैं। कुटुन्य बड़ा नहीं—नीकरी से २४० ६० मासिक वेतन पा लेते हैं—इसी से कुछ दिन अपने गाँव में रह कर सुहाग मनाने की ठानी। गाँव ज्यादा मुन्दर है यह तो मैं नहीं कह सकता पर आस-पास थोड़ी बहुत दूर तक वह स्वारूय के लिये प्रसिद्ध है। गंगा के किनारे बसा है—पास ही मैं हिमालय पर्वत की शाखाएँ शुरू हो जाती हैं। अक्टूबर माह में यहाँ आस-पास के धनी-मानी पुरुष आ जाया करते हैं। मैं और मेरे मित्र का यही गाँव है। नौकरी तो दोनों अलग-अगल शहरों में करते हैं पर इस गाँव के प्रति मोह दोनों में से शायद एक का भी कम नहीं हुआ है।

सो इसी गाँव में मित्र अपनी पत्नी को लेकर
सुहागरात के बहाने आठ-इस रोज बिताने गए।
अपनी शादी पर मित्र स्वयं ही विशेष उत्साहित
प्रतीत नहीं होने थे। पर शादी करनी थी इसी से
कर ली। मित्र को अधिक भावुक कहना भी ठीक
न होगा पर प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में एक ऐसा
समय आता है जब उसे अपने को असहाय पाना
पड़ता है। इस बार बही अवसर मित्र के जीवन
में आया।

गाँव बड़ा नहीं है पर विदेशियों के ठहरने के लिए कुछ ठेकेदारों ने चन्द मकानात बनवा दिए हैं। साल में तीन माह वे किराए पर चढ़े रहते हैं पर उसी समय में उनके मालिक साल किराया निकाल लेते भित्र के मकान के सामने मी एक ही मकान बना था। इस बार दुर्भाग्य वश उसमें एक पंजाबी सञ्जन ऋपनी पुत्री के साथ आकर ठहरे थे। एक सप्ताह तक घूमने जाते समय मित्र का पड़ौस के पंजाबी सज्जन तथा उनकी पूत्री से साज्ञातकार होता रहा। विदेश में जाकर प्रत्येक व्यक्ति से जानकारी प्राप्त करने की जो लालसा मनुष्य मात्र में स्वाभाविक है उसी के बशीभूत होकर पंजाबी सज्जन ने भी मित्र से जान पहचान कर लीं। काफी पढ़े लिखे तथा सममदार व्यक्ति थे। पंजाब में सरकारी इंजीनियर थे। पुत्री उस समय एक. ए. की तैयारी कर रही थी।

श्रीर फिर मित्र की श्रापनी एक सप्ताह की खुडियाँ बढ़ानी पड़ी।—एक श्रीर, एक श्रोर श्रीर दो माह बाद मित्र गाँव से वापिस नौकरी पर लौटे। दफ्तर से ही उन्होंने मुझे चिट्ठी लिखी थी कि वे बढ़े व्यप हैं, पीड़ित हैं, मिलना चाहते हैं। मैं तुरन्त उनके पास गया। देखा भित्र पीले पड़े थे श्रांखें श्रन्दर धँस गईं थीं। जीवन का कोई श्रासार दिखाई नहीं देता था। मैं बड़ा चिन्तित हुआ। पूजा—''ये सब क्या है ? क्या हुआ। तुम्हें ?"

मित्र जवाब में हँस भर दिया। नई बीबी उन दिनों माँ के घर गई हुई थी। घर पर बह अकेले तथा एक नौकर मात्र था। मुझे नहाने थेने का समय देने के लिए वे जरा अखबार खोल कर पढ़ने लगे, और फिर खाना खाया और दफ्तर जाने की जल्दी में कोई बात नहीं हो सकी। शाम को आने में भी उन्हें देर हुई। में अत पर लेटा था। उस दिन भी आकाश में तारे छिटके हुए थे। मैं मित्र की प्रतीचा में था। आखिर वह आए और सीचे छत पर चले आए। आज वे खासतीर पर व्यव प्रतीत होते थे। मेरे पास ही नीचे चारपाई पर बैठ गए। खाना आया और मशीन की भाँति दो चार कीर निगल कर मित्र ने थाली दूर सरकादी।

में सब कुछ देख रहा था। मित्र की हालत देख कर मुझे किसी भारी भय की आशंका थी। मैंने मित्र का हाथ पकड़ कर कहा—"क्या है ये सब। अपने को क्या मार डालने की प्रतिज्ञा कर बैठे हो। यह हाल एक दिन में तो हो नहीं सकता। फिर पहले से सूचना क्यों नहीं दी?"

मित्र फिर हँस दिए। मैंने गम्भीर होकर पूछा—"किसी डाक्टर को दिखाया है ?"

सूखी हँसी हँसते हुए, मित्र ने कहा—"नहीं, जारूरत भी तो नहीं है।"

श्रास्तिर बहुत पूछताछ करने पर मासूम हुआ कि मित्र श्रापनी सुहाग रात मनाते समय पड़ीस में आकृत दिने हुए पंजाबी की पुत्री से प्रेम करने लगे हैं और इस बीच में तक्की के कई पत्र भी उन्हें मिल चुके हैं।

मैं सम रह गया। ऐसा कभी भी समय हो सकता है वह मैंने सोचा ही नहीं था। न जाने क्यों मेरा दिल मसोस उठता था। तीन प्राणी हैं, मित्र, भाभी और मित्र की प्रेमिका। मिनिट-मिनिट में मेरा ख़याल तीनों पर दौड़ जाता था। कभी पंजाबी सज्जन की लड़की, कभी मित्र और कभी भाभी। एक पर भी टिक कर गंभीर विचार करमे की चमता मानों उस दिन मैंने खो दी थी, और उस दिन हम दोनों एक ही खाट पर पड़े-पड़े बातें करते रहे थे, न जाने क्या क्या बातें।

सुबह देर से जगे। पहले सुना करता था कि असहा पीड़ा होने पर मरीज को पीड़ा का अनुभव ही नहीं होता, पर उस दिन अनुभव किया। न जाने कैसा खोया सा घूमता रहा। मित्र उस दिन भी दफ्तर चले गए। इसी प्रकार तीन चार दिन वहाँ रहा, खूब बातें हुई, पर समाधान कोई न मिला।

घर आने पर न जाने कितनी रातें मैंने जाग कर बिता दी हैं। ख्याल आता है, मित्र पदे लिखे सममदार व्यक्ति हैं। उन्हें सोच समम कर शादी करनी चाहिए थी और जब शादी करली ही है तो क्या अच्छी क्या बुरी। उनका कर्तव्य अपनी पत्नी के प्रति सच्चा रहना हो जाता है। आसिर उस बेचारा का क्या क्रमूर। कहाँ हिन्दू घरान में वह पलें थी और माता पिता के इच्छा-नुसार जिन को अपना स्वामी मान कर वह उन्हें छोड़ आई। अब उसका तो "स्वामी" ही है। ऐसी निरपराध को क्या इस प्रकार धोखा देना ठीक होगा? पर मित्र को भी तो अपराधी नहीं बता सकता। चारों और से फटकार पढ़ने पर ही मित्र ने शादी की थी। शादी के प्रति उनका बिसेप उत्साह नहीं है, यह किसी से नहीं किया

था, पर समाज के वे प्राणी ये और समाज में शादी करके ही रहना होता है। शादी करती। है इसी से वे प्रेम न करें यह कहना तो अन्याय होगा। और अब जब उन्होंने प्रेम कर तिया है तो मार्ग क्या हो ? किस रास्ते का अबलम्बन करना होगा ताकि सब कुछ ठीक होजाय। पर कुछ सुभी ही नहीं।

कल अवासक मित्र मेरे यहाँ आए थे। अपनी प्रेक्सी के कई पत्र मिलने पर भी उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया था। अब प्रेयसी के पिता ने उन्हें अपने यहाँ निमंत्रित किया है। उनसे क्या कहें। मना करने को जी होता है पर मना कर तो नहीं सकते। हाँ भी कैसे कहें। भाभी की याद आते ही काँप उठता हूँ। आखिर अभी अभी वह हजार हजार माफी माँग कर चले गए हैं। प्रेयसी के घर उसके पिता के महमान बन कर जायंगे, और मैं पढ़ा पड़ा सोच रहा हूँ— "कैसे होगा।"

शादी की वर्तमान प्रथा को मैं पृएा की नजर स देखता हूँ और इसीसे उसमें बँघना चाहता, बँधा भी नहीं हूँ। पर ज बँध तथा जिसने ऋपने साथ एक और प्राणी को बाँध लिया है वह क्या करे ? अकेले उस बन्धन को काट कर भाग जाना किसी तरह भी ठीक नहीं। वह दसरे साथी के प्रति अन्याय होगा। दोनों की सहमति हो — दोनों के सामने प्रशस्त भाग हो तो दोनों ही उस बन्धन को काटकर अपने उद्देश्य की ओर जा सकते हैं। यह दोनों ही के लिए स्वास्थ्यकर होगा। पर जहाँ दूसरा प्रासी स्त्रतस्त्र नहीं, जहाँ वह अपनी तमाम इच्छाओं, भावनाओं और अस्तित्व तक को अपने दूसरे साथी - "स्वामी" के अर्पण कर चुका हो वहाँ क्या किया जाय ? वहाँ तो उसके कोई बात कही भी नहीं जा सकती। हाँ आज्ञा दी जा सकती है पर वह वर्बरता होगी।

[शेष प्रमु १८४ पर ]

### अभान्त

[ ब्री 'उमेश ' चतुर्वेदी साहित्यभूषण कविरत्न ]



वह घरान्त था । संसार उसको घमागा कहता । काराए ? स्वार्थी कूर जगत उस को ठुकरा चुका था ।

बह युवा था। उसके ऋक प्रत्यंग में यौषन की उत्ताल तरंगें हिलोरें मार रही थीं। पलकें पल पल में प्रणय पियुष लुटा रही थीं। सींदर्य उसका दास था।

मधुर ऋतु ने ऋठखेलियाँ करते हुये मन्थर मादक गति से जगतोद्यान में पदार्पण किया। ऋाम्र-मंजरी मधुपों को मनमाने सुधा के ध्याले पान कराने लगी। तमाल तरुपर भ्रमर-संघ प्रस्कृटित प्रसूतों के भूलों में भूलने लगे। किलयों ने ऋलिवृन्द को ऋात्म-समर्पण कर दिया। ऋशान्त के ऋधरों पर भी मधुर मन्द मुस्कान का नृत्य होने लगा। मुँह खुला, कदाचित कुछ गाने के लिये। परन्तु फिर बन्द हो गया। न जाने क्यों ? उसी सण इदयार्णव से निकले हुए कुछ अमूल्य अश्रमुक्ता हग-कमलों की राह से ऋाकर रज-कर्णों से मिल गये।

कल्पना सहचारी एवं हत्तन्त्री की मधुर कंकारों द्वारा प्रेरित होकर वह विवश हो गया। प्रवल इच्छा भी जागृत हो उठी। मधुर लहरी वातावरण में गूँज उठी—

<sup>44</sup>जगत में जीवन दो दिन का ।

थीलन सद संहि रहे सदा, नयीं गर्व वरे इनका रें?

"श्रद्धान्य" अश्रन हता निकुंत में दिनमणि की सुनहती रिश्ममों की सुन्दर कारीगती है। विभूषित हरित छाया के तले बैठा हुआ प्रकृति की रूप-राशि पर मंत्र विसुन्ध सा अपलक नेतों से निहा-रता हुआ तन मन नोझावर कर रहा था।

प्रकृति ने सींदर्य को छिपाने के लिये अपने मुख-मंडल पर काली नक्षाव डाल ली। गगत में उडुगण टिमटिमाने लगे। रजनी-देवी का प्रादुर्भाव हुआ। इधर रजनी-पित प्रकृति सुन्दरी की मुखच्छिव अवलोकन करने को लालायित हो उठे। चन्द्रिका को आज्ञा हुई। तिमिराञ्जन नभ-मण्डल में उसी चण चन्द्रिका की प्रभा फैल गई।

नीलाम्बर के सरस विस्तृत प्राँगण में जगमगाते नखत समृह नीरव हो "अशान्त" की मधुर लहरी की प्रतीचा कर रहे थे। राकेश देव की सरस ज्योत्स्ना उत्सुक होकर पाटल प्रसून की कोमल पंखुिं यों से अनुरोध-पूर्वक प्रश्न कर रही थी कि संगीत-सरिता कब कछोल करेगी ? किन्तु बह बेचारी क्या बतातो ? वह तो स्वयं संगीत लहरी के उन्माद पर थिरकने का भावी सुख-स्वप्न देखने में तझीन थी। वह मदमत्त मस्ती के साथ अभिसार करने में विभोर थी। किन्तु अशान्त.....? वह शान्त था।

कल-कल करती हुई तरल तरंगिणी ने उसको अपने हृदय से लगा लिया। संसार द्वारा ठुकराये हुये "अशान्त" को उस यौवनोन्मादिनी के हृदय से लग कर प्रियतम की भाँति उसके आलिंगन-पाश में बद्ध होकर कुछ शान्ति प्राप्त हुई। उसकी संगीत लहरी उसकी प्रियतमा की कोमल ध्वनि से मिल मिलकर अधिक मनमोहक होगई। कभी कभी उस निर्जन शून्य तट पर भी वही संगीत लहरी वातावरण में गूँज उठती थी। वही प्रतिध्वनि केवल उस अशान्त की पूर्व पुण्य स्पृति को जागृत कर देती थी; क्योंकि वह भी तो "अशान्त" थी।

### [ १८२ पृष्ठ का शेष ]

श्रीर में उलका हुआ हूँ। सोच रहा हूँ— श्राठ बज कर दस मिनट पर मित्र की गाड़ी रवाना हुई होगी, सुवह तक "बह" पहुँच जाएँगे, इस समय उनकी गाड़ी "कलाने"स्टेशन पर पहुँची होगी, बह क्या सोचते होंगे ? कितना उद्यास

होगा उनके हृदय में आज और अभी... श्रोह कितनी पीड़ा हो रही है। मैं सोना चाहता हूँ। नींद क्यों नहीं श्राती ? श्रीर भाभी बेचारी कुछ भी नहीं जानती!

सुबह हो गई। अब में तनिक स्वस्थ हूँ।



श्री सु**मित्रानन्दन** पंत



भी नगेन्द्र



# पंतजी की कला : 'युगान्त' के सम्बन्ध में-

[श्रीनगेन्द्र एम. ए.]

युगान्त पन्तजी की अबतक की अंतिम कृति है। इससे पूर्व वे 'ज्योत्सना' श्रीर 'पांच कहानी' लिख चुके थे। इस संघह की ऋधिकांश रचनायें १६३४-३४ की ही हैं-यदापि इनमें एक-आध कृति जैसे 'सन्ध्या' सन् १६३० की भी है । युगान्त की कविताएं चिन्तन प्रधान हैं। ३४-३४ में लिखी हुई प्राय: सभी कवितात्रों में दार्शनिक गांभीर्घ्य मिलेगा। साथ ही इन समस्त कवितात्रों में एक सूत्र गुन्कित मिलेगा-एक श्रंतर्धारा मिलेगी जो कवि के तात्कालिक विचारों श्रीर भावनात्रों से सम्बन्ध रखती है। इन सभी में मानव जगत की मंगलाशा श्रोत श्रोत भरी हुई है। पल्लव का करुणाक्लिष्ट भाव जो गुंजन में श्राकर समभौते का रूप धारण कर चुका था युगान्त में आकर पूर्णतया मांगलिक कामनाओं का वाहक होगया है । इन कृतियों में कि जगत के जीर्ए उद्यान में मधु प्रभात लाने की शुभाकांचा बार-बार करता हुन्ना देखा जाता है। उसका करुणातप्त-इदय मानव हित से पूर्ण हो गया है। वह मानवता के विकास द्वारा जीवन की पूर्णता स्थापित करने की शभेच्छाओं से आकल है--

> में भारता जीवन बाली से साहाद श्रिदिर का शीर्ख-पात

फिर से जगती के कानन में आ जाता नव मधु का प्रभात !

वह वार वार अपने गीत-खग से कहता है—

जगती के जन पथ कानन म

तुम गाओ विहग अनादि गान

चिर शून्य शिशिर-पीड़ित जग में

निज अमर खरों से भरी प्राण।

# # # में जो सोये स्वप्नों के तम में वे जागेंगे यह सस्य बात जो देख चुके जीवन निशीध वे देखेंगे जीवन प्रभात।

यही विचार धारा युगांत की प्राण-धारा है। किव ने अधिकांश गीतों में इसी की नवीन नवीन ढंग से अभिन्यं जना की है। युगांत की कविताएँ इसी संदेश से मुखरित हैं। प्रकृति की रंगस्थली को शतदल की भाँति सद्यस्मित देख, कवि का हृदय मानवता की दीन दशा का स्मरण करके एक साथ कह उठता है।—

है पूर्ण प्राकृतिक सत्य ! किन्तु मानव जग ! क्यो म्लान तुम्हारे कुंज, कुसुम, घातप, खग ? इसका कारण भी स्पष्ट हैं—वह कहता है कि— "जो **एंक असीम अखण्ड मधुर ज्यापकता** स्त्रो गई तुम्हारी वह जीवन सार्थकता ।"

इसी श्रासण्ड श्रीर मधुर व्यापकता को फिर से मानव जग में देखने के लिये मंगलाशी कि का हृदय व्याकुल है। देखिये वह किस प्रकार कोकिल से मनुहारे करता है।—

'गा कोकिल, बरसा पावक कथा !'
नध्य भूष्ट हो जीर्यो पुरातन
ध्वंस-भूश जगके, जड़-बंधन
पावक-पगधर आर्थे नृतन
हो पहावित नवल मानवपन।

युगांत में पन्त जी की रचनायें पूर्णरूप से आध्यात्मिक (Ethical) हो गई है। वे प्रभुसे प्रार्थना करते हैं—

'जग जीवन में जो चिर महान , सींदर्भ पूर्ण भीर सत्य प्राय में उसका प्रेमी बन् नाथ ! जिसमें मानव-हित हो समान ।

परन्तु फिर भी उक्त भावनाएं केवल शुष्क दार्शनिक बिचार नहीं हैं। किव का हह्य उनमें विभार हो रहा है। इन कविताओं में आवेश और आवेग की कभी नहीं है, उनमें उन्मुक्तता पूरी है। एक दिन पात:काल किव देखता है कि—

> वे डूब गये, वे डूब गये दुर्गम, उदय-दिश आदि शिखर स्वय्नस्थ दुये स्वर्णालय में, लो स्वर्ण स्वर्ण श्रव सव भूषर !

तुरन्त ही उसके हृदय में श्राशा का संचार हो उठता है श्रीर वह एक साथ फूट पड़वा है ।

मानव जग में गिरि कारा सी गत युग की संस्कृतियाँ दुधैर; बंदी की हैं मानवता का स्वदेश जाति की मिक्ति अमर। वे दूर्वेगी, सब दूर्वेगी पातेरा मानवता का विकास, इस देगा स्वर्णिम वज्र लीह खुमानव भारमा का प्रकाश।

पहिले पद में 'ह्रबगये' श्रीर दूसरे में 'ह्रबेंगी' श्री पुनरावृष्ति हर्य के उमने हुए खाह लाद श्रीर श्रावेग की कितनी स्पष्ट व्यंजना कर रही है। यही बात इससे श्रगली किवता 'तारों का तम, तारों का नम' में है। हाँ, एकाथ स्थान पर जब वे ग्रुद्ध श्रदेतवाद का बखान-सा कर निकलते हैं तो कुछ शुष्कता श्राजाती है—उदाहरणार्थ "शत-वाहुपाद, शतनामरूप किवता में। इससे श्रागे की भी दो किवतायें दार्शनिक सत्य का व्याख्यान करती हैं परन्तु किव की कल्पना ने जो प्रभूत श्रावंकरण-सामग्री (Imager ) उन पर व्यय की है, उसने उनके शुष्क तापसी रूप को शकुत्तला बना दिया है। देखिये विश्व-सुजन के दृश्य का चित्रण कितना सुन्दर है—

गुष गये अजान तिभिर-प्रकाश दे दे नग जीवन को विकास, बहु इत्य-रॅंब रेख्नाओं में भर विरह मिलन का अस्-दास।

इस संग्रह में दो एक आश्री: वचन जैसी कृतियाँ भी हैं जो अपने ढंग पर काफी सुन्दर हैं—

> 'खबि के नव-नम्भव बांधी भाव कप में, गीत स्वरों में, गॅथ कुसुम में, हिमति खधरों में जीवन की तमिका बेग्गों में, निज प्रकाश-कुख बांधोऽ !'

'मानव' किवता से पंत जी की मानव पूजा। मुखरित हो उठी है।

इस आध्यात्मिक गीत-माला का सुमेरु है

जीवन सुधा----

'बाप के प्रति' कविता । वास्तव मैं कवि ने वापू में अपने आदशों का मूर्तिमान स्वरूप पा लिया है। बापू मानवता को मुक्त करने के लिये अव-तरित हुए हैं अतः मानवणन का पूर्ण विकास उनमें उसे मिल गया है इसी कारण इस कविता में उसका चित्रव अनुमृति से भेरित होने के कारण बोल एठा है और अपनी अपूर्व मूर्ति विधायिनी कल्पना की सहायता से जो इस कविता को विषयानुस्प (Worthy of the subject ) कह देना इसका सबसे बड़ा गौरव है। भँगरेकी फोड (Ods) की शैली पर होने के कारण इस में सन्बोधन ( address ) की प्रधानका है-भौर हमारे मनीषी कताकार ने उनके चयन एवँ निर्माण में अपूर्व कौशल और भावुकता का परिचय दिया है। पहिले ही पद में कई विशेषण हीरे के सहश जड़े इए हैं-

१ -- तुम शुद्ध नुद्ध अस्तमा केवल --

२ — तुम पूर्व इलाई जीवन की, जिस वें क्यांसार अब झून्य सीन।

### आगे कवि कहता है-

सुख भीग खोजने भाते सब भाष तुम करने सत्य क्लोज ! जग के मिट्टी के पुतले जन तुम भारम के मन के मनोज !

इस कृति में किय ने बापू के सिद्धान्तों और कृत्यों का भी काट्यमय सुन्दर वर्शन किया है— देखिये महात्मा जी की चर्छा-योजना का कितना विशाद वर्णन है—

> उर के जरले में कास स्क्रम बुग-युग का विषय अनित विकाद, गुँजित कर दिया गमन जग का भर तुमने भारमा को निभाद।

इसी प्रकार एसमें एक एक में उनके असहयोग आम्दोलन, अहिंसा, दार्शनिक विद्वान, आदि का बड़ा कवित्वपूर्ण चित्रण किया है। सुनिये कितने थोड़े शब्दों में किब गाँधी-दर्शन की व्याख्या करता है—

यें राज्य, प्रजा, जन, साम्य-तन्त्र, शासन-चालन के कृतक मान, मानस, मानुषी विकास-शास्त्र, है तुलनात्मक सापेक्ष-हान; भौतिक विद्यानों की प्रस्ति जीवन उपकरण-चयन-प्रभान; मन संस्कृ स्थूल जग बोले तुम मनन मानवेता का विभान।

अन्त में आइये इस भी कवि के साथ वापू को अद्धापूर्वक नमस्कार कर लें।

> काय तुन मुक्त पुरुष, कहने— मिन्या, जड़ बंधन सत्व राम, जानृतं जयति सत्यं मा दै: जय क्षान-ज्योति तुमको प्रयाम ।

इन कविताओं के अतिरिक्त थुगाँत में कुछ कृतियाँ कि के जन्म-सिद्ध बकुति-मेम की व्याख्या करती हैं। वे हैं बसन्त, तितकी. स्टब्या, शुक्र, द्वाया, 'वाँसों का मुरमुट' आदि। युगाँत में कि का प्रकृति के प्रति भी टिन्टिकीए कुछ बदल गया है। इन कृतियों में प्राकृतिक दृश्यों के ऐन्द्रिय चित्रए न मिलेंगे। किन तो अब बाह्य प्रकृति की अन्तरात्मा को पहित्रामने लगा है इसीलिये इन प्रकृति-निषयक किताओं में आँतरिकता अधिक है। साथ ही इनके सभी दृश्य हर्षोत्मुझ और अह लादपूर्ण हैं और इसी किये उनके रॅग बटकी ले और गहरे हैं। बसंत चित्रों के कुछ रॅग देशिये —

> प्रकृत प्रस्ता में नवस रुधिर--पत्रों में मांसल रंग खिला

आवा नोली बीली लो से पुष्पों के चित्रित दीप जला---

 #
 #
 #

 किल के पलकों में मिलन स्वप्त,

 मिल के मन्तर में प्रणय गान,

 लेकर माया प्रेमी बसला,

 माकुल जड़ चेतन सोह-प्राण!

—में बसंत का चित्र श्रत्यन्त भावमय हो गया है। श्रागे श्रल्मोड़े का बसंत तो देखिये कितना सजीव है—

> लो चित्र शतभ सी पंख खोल, उड़ने को है सस्मित घाटी, यह है अल्मोड़े का दसंत, खिल पड़ी निखिल पर्वत - पाटी।

दूसरी पंक्ति में अनुभूति बोल रही है। 'छाया' पर लिखी दोनों कविताएँ अनमोल है— उनमें पहिली शुद्ध, भावमय गीति का उदाहरण है—दूसरी में दाशोनिकता और विंतन का प्राधान्य है। छाया की गहनता का वर्णन देखिये व्यव्जना से छलक रहा है।

पट पर पट केवल तम अपार पट पर पट खुले न मिलापार।

इसके उपरांत ही 'शुक्त' किबता पाटक की बढ़ती हुई टिंड से एक साथ चमक कर 'कौन' उठती हैं—

> द्राभा के एकाकी प्रेमी, नीरव दिगंत के शब्द मीन। रिव के जाते स्थल पर आते, कहते तुम तम से चमक कीन?

श्रन्तिम पंक्ति में पन्त जी की सूद्म ग्राहिगी दिष्ट श्रीर मूर्तिमती कल्पना एक साथ सजग हो उठी हैं। 'तितली' में तितली का-साही चटकी- लापन और चाँचल्य है। उसके दो एक विशेषणों की सांकेतिकता पर विचार कीजिये—

र — तुमने यह सुम्म-विद्या ! लिबास क्या अपने सुख से स्वयं कुना ? 
स्या बाहर से आया रंगिणि ! 
उर का यह आतप वह दुलास, 
या फूलों से ली अनिल-कुसुम । 
तुमने मन के मधु की मिठास,

'सुमन-विहग' श्रीर 'श्रनिल-कुसुम' से अच्छा तितली का श्रीर क्या वर्णन हो सकेगा।

युगांत में कवि की कला और शैली में भी एक साथ परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। गुँजन में जो कला तितली के पँख लेकर उड़ी थी बह युगाँत में आकर माँसल हो गई है। उसके लघु-लघु गात अब पृथु और बक्षिष्ठ हो गये हैं। जैसा कवि ने स्वयं लिखा है युगाँत में पल्लव की कोंमल कान्त कला का अभाव मिलेगा । उसकी भाषा में ज्योलना के गीतों की रनकुन नहीं है-उसमें है एक सबल छोज। कवि को यहाँ अन।-वश्यक काट-छाँट (Chiselling) करने की त्रावश्यकता नहीं पड़ी, इसीलिये युगाँत की भाषा में वांब्रित महाप्राणता है। उसकी व्यञ्जनाशक्ति अत्यन्त विकसित और सशक्त है। गुंजन और ज्योत्स्ना के गीतों के उपरान्त पन्त जी की सुकुमारी भाषा में यौवन की नहीं-शौदता की 'मांसल स्वस्थ गंध' चा गई है--उसके स्नायुर्ची में ऋव यथेष्ठ काठिन्य श्रागया है। ज्योतस्ता के गद्य श्रीर युगांत के गीतों में भाषा की हिष्ट से एक विशेष साम्य है। साराँश यह है कि कि की नारी-कला पौरुषमय हो गई है।

अन्त में युगांत में कित ने जिस 'नवीन होत्र को अपनाने की चेष्टा की है, हमें विश्वास है कि भविष्य में वे उसे अधिक परिपूर्णक्रप में प्रहण एवँ प्रगान कर सकेंगे।'

# जीवन-सुधा



श्री रत्नकुमारी माधुर

# हृदय की गूंज

### [ भी रत्न कुमारी माथुर ]

नहीं जानती भन्त:स्थल में, कौन भाग सुलगाता। रह-रह कर के, क्या-कथा भर में मीठी टीस उठाता ॥ कर देता इत्हान मुमे जब अपनी तान सुनाता। ज्ञात यही होता है 'कोई' इसमें भलख जगाता ॥ कभी-कभी बनुभव करती हूँ, करने की सी कर-कर । बहता जो भन्नात देश में, गुम्मको बेकल कर-कर ॥ यदि कोई बतला सकता हो, तो आकर बतलावे । जैसे भी हो करे अनुबह, पीड़ा दूर हटाने ॥ भदो ! सुनो, 'वह' कहता है -- ''यह विकल प्रेम का अरना। सिखलाता निज-जन्म-भूमि पर प्राच निकावर करना॥ जोगी भलख जगाता है, यह तुम्हें यही सममाता। काम करी ! कुछ काम करो !! वह जीवन दीता जाता॥ नारी-मण्डल सुपध-भविक हो, निज-स्वरूप पहचाने। उठें जगत के कोण-कोण से ऐसे सुन्दर गाने — भन्य ! भन्य ! हे बनिता-मण्डल, भन्य तुम्हारा प्रेम ! भन्य तुम्हारी चमा-शीलता । भन्य तुम्हारा नेम !!"

### [श्रो इज़ारीलाल जैन ]

उषा की लाली में उसका सौन्दर्य और भी चमक उठा। वह श्रपनी पास की सहेली कली से बोली, "बहिन, देखों तो मैं कैसी सुन्दर हूँ।" सहेली कली चुप रही।

इस मौन पर तनिक खिन्नता दिखाते हुए रूप-गर्विता कली बोली, "बहिन ऐसी भी क्या।। मुँह खोलकर दो-एक शब्द कह दोगी तो तुम्हारा क्या बिगड़ जायगा। देखो न मेरी देह कैसी कोमल है, कितनी मुलायम !"

सहेबी कवी फिर भी चुप ही रही।

श्चव की बार कुछ श्रौर श्रधिक रोध दिखाते हुए उसने कहा, ''क्षेक भी है बहिन, दूसरों के रूप-रंग से सभी को ही ईर्ष्या होती है। यही दुनिया भर का ढ़ंग है, तुम भी तो दुनिया का ही एक अंग हो। फिर भला तम मेरे हम सौन्दर्य को कैसे सह सकती हो !"

सहेली कली ने मुँह खोला-

"ब्रो, मेरी भूली बहिन, इस दो दिन के अस्थाई हप-रंग पर क्यों भूल रही है ! दो दिन बाद तो तेरा कुछ भी शेप नहीं...।" वीच में ही वह अवदेखना करती हुई बोली, "रहने दो अपनी इन बातों को। सीन्दर्य मिला है तो क्यों न उस पर गर्व करें! तुमको निल्धा ही नहीं है तो तुम गर्व क्या करोगी!" सहैली कली उसकी ना समभी पर जोर से हँस पड़ी।

घृणा से पहिली कली ने मुँह फेर लिया।

\*

\*

गोधृलि का धुंधलापन धीरे-धीरे फैलता जा रहा था। चारों त्रोर निस्तब्धता थी ।

विचारी रूप-गर्वित कली वहीं भुरमुट के पास मिट्टी में पड़ी थी। एक आह खींचकर उसने श्रपनी सहेली कली से कहा,

"ठीक है बहिन, मिर् से पैदा होकर मिट्टी में मिल जाना ही प्रकृति का नियम है, सुन्दरता-श्रमुन्दरता का उसमें मूल्य नहीं। सचमुन में भूली थी।"

सहेली कली के हृदय में वेदना उमड़ आई और कई-एक आँस नीचे टपक पड़े।

## राजू

### [श्री सागर]

उसके पिवा रोशन पुर में खेती फिया करते थे। वह केक्ल दो हो भाई थे। उस छोटी सी फोंपड़ी में वह धाराम का जीवन व्यतीत करते थे। राज् श्रभी बच्चा ही था-कि माँ इय रोग से मर गई। समय खुब बीतता था। बचपन से ही मक्खन खाने और खेलने कूदने के सिवा उसे कोई काम न था। उसके पिता अक्सर श्चपने मित्र धर्मसिंह का किस्सा सुनाया करते । वह कहते कि वह भी इसी बाम में खेती किया करते थे। भाग्य ने उन्हें सहारा दिया था। बह एक दिन एक ऐसे मनुष्य से मिलं कि जिसने कहा 'मैं तुम्हें लखपती बना सकता हूँ।' अस फिर क्या था। उन्होंने शहर में जाकर कुछ शेक्ट खरीद लिये, भौंपड़ी से मकानचीर मकान से कोठियाँ बना लीं। इसी तरह गाँव में श्राकर उन्होंने श्रपनी सारी अमीन बेच दी और उसके बाद वह फिर गाँव न सीटे।

उस समय राजू पूछता, "पिताजी, ऋापने शेयर क्यों न खरीदे १ ऋाप भी धनी बन जाते ।"

उसके पिता हँसकर जवाब देते, "राजू, यह जूआ होता है। जम्दी नहीं कि हरएक का पासा ठंक पढ़े, भौर, हमें धनी बन कर करना ही क्या है ? हमें किसी चीज की कमी ता है नहीं, बेटा।"

उस समय राजू सोचा कहता, "हाय, शहर में कितना अच्छा रहता होगा। बड़ा होकर एक बार मैं भी अवश्य ही वहाँ जाऊँया।"

तब वह उन्नोस वर्ष का था। प्राम में अपने पासंग का एक ही युवक था। कुश्ती वगैरा में तो बहुतों का स्वाभिमान तोड़ चुका या । सांबला रंग,बड़ा मुँह, हंसती हुई झाँखें, चौड़ी छाती, कद भी छ: फुट से कुछ ऊपर ही था।

एक दिन बह हल चला रहा था कि देखा, एक मोटर गाँव में धूल उड़ाती हुई चली आ रही है। वह हल वहीं का वहीं छोड़कर उस ओर भाग खड़ा हुआ। गाँव के सब बच्चे-बूढ़े भी उसी और भाग रहे थे।

मोटर में से एक साहब उतरा श्रीर उसने पूछा "कल्यास सिंह कहाँ है ?"

"क्रोंपड़े में होंगे।" राजू ने आगे बढ़ते हुए कहा, "कहिये क्या काम है ?"

इतने में उसके पिता आगये। पहिले तो उन्होंने एक टक उसकी और देखा और फिर चिक्का उठे "धरमू!" उन्होंने उसे गले से लगा लिया और फिर भोंपड़े में ले आए।

धर्मसिंह इतने धर्ना बन जाने पर भी स्वभाव में तनिक भी न बदले थे। रात भर राजू के पिता और वह खुब बार्ने करते रहे।

बातों ही बातों में धर्मसिंह कह उठे "तुम्हें कुछ दिन के लिये मेरे साथ चलना ही होगा। बच्चों को भी शहर दिखा लाना।"

"बह तो बहुत मुश्किल है। खेती पीछे से कौन सम्हालेगा? मेरा जाना तो हो ही नहीं सकता।"

'देखो मैं तुम्हें लेने ही आया हूँ।"

"परन्तु.....।"

"श्रच्छा बच्चों को तो भेज ही दो।"

''हाँ राजू को बेशक ले जाखो। जल्दी बापिस भेज देना।"

राजू सुनते ही उछल पड़ा। 'श्राह नगर देखने को मिलेगा। जीवन की श्राशा पूरी होगी।' हृदय में एक उमँग सी उठी। इतने में ही उसके पिता बोल उठे, "राजू थोड़ीसी हिन्दी के सिवा तो कुछ भी नहीं पढ़ा है। उसे फैशन-वैशन तो श्राते नहीं।''

"श्रो ! उसकी फिक्क न करो । स्नुद सब कुछ वहाँ पर सीख जायेगा।"

\* \* \*

सारी रात राजू को नींद न आई। वह शहर के ही स्वप्न देखता रहा।

दूसरे दिन वह लोग मोटर में चढ़ कर शहर की श्रोर चल दिये। गाँव उसे काकी प्यारा था; परन्तु शहर देखने की लालसा उससे कहीं बढ़ कर थी। मित्रों ने श्राप्रह किया, "न जाश्रों " परन्तु जाना तो था ही। रास्ते में कभी सोचता, 'श्ररे तेरा वहाँ पर क्या दिल लगेगा।' श्रीर दूसरे ही च्या कह उठता, 'शहर देखने को तो मिलेगा ही। मोटरें होंगी। बड़े बड़े मकान होंगे।' यही सोच रहा था कि धर्मासह बोल उठे, "राजू! बहाँ उदास न होना।"

"श्रन्छा जी" श्रधिक बोलने से वह धवराता था, इसीलिये कि कहीं कोई मूर्खता की बात न कह बैठे।

"राजू, तुझे देखकर तेरी चाची और बच्चे बहुत खुश होंगे। राधा ने तो खासतीर पर कह दिया था कि राजू को जरूर लाना।"

"हाँ ? और वह मोचने लगा "तोक्याचाची जी खुश होंगी, बच्चे खुश होंगे और राधा ?"

उसके पिताजी कहा करने थे कि राधा उससे केवल दो ही महीने छोटी है और यह भी कहने थे कि वह बहुत हँसमुख है। तो उसका दिल बहल जायेगा।' उसने अनुमान लगाया। फिर सोचता, 'लेकिन राधा को तो मैंने कभी देखा ही नहीं। वह पढ़ी लिखी होगी। वह मुक्त जैसे गँवार से क्यों बातें करने लगी ?' वह निराश होजाता और इसी, निर्णय पर पहुँचता कि उसका जी वहाँ न लगेगा।

फिर सहसा ही कह उठता 'परन्तु राधा ने खासतौर पर यह क्यों कह दिया कि राजू को लेते आना। शायद वह बहुत आच्छी थी। 'उसका मन डाँवाडोल हो रहा था। वह कुछ भी फैसला न कर सकता था। सर घूमने लगा, वह निराश होगया। उसके हृदय में आवाज उठी, "मैं गाँव से क्यों चला आया। परन्तु—"

उसी समय उसने देखा कि चहल-पहल शुरू होगई थी। इतनी रोशनियाँ! तो क्या नगर आ गया? हृदय से यही प्रश्न उठा। वह काँप सा गया, थिरकनी सी आई, न अने हर से या प्रसन्नता से।

अभी वावीजी मिलेंगी, राधा मिलेगी और .. फिर क्या होगा ?" वह सोच ही रहा था कि मोटर एक फाटक में से होकर एक बहुत वड़े मकान के बाहर जाकर कक गई। नौकर आया और उसने मोटर की खिड़की खोली। उसने सामने देखा कि चाची जी खड़ी थीं। वह उतरा और उसने उन हे पैरों की धूल ली। चाची जी ने हृद्य से आशीर्वां दिया और कहा—"राधा राजू को अन्दर ले चलो। '

राधा ने कहा, "श्राश्ची" श्चीर राजू लड़खड़ाता हुआ पीछे पीछे चल दिया । "श्रोह, कितना ठाट बाट है।" वह सोच ग्हा था। कई कमरों को लाँघ कर गधा एक कमरे में ठहर गई श्चार बोली, "यह है आपका कमरा।"

"इतना बड़ा कमरा ! मुझे तो कोई छोटी सी कोठरी...।"

"कैसी बातें कर रहे हो ? कपड़े बदल लो। खाना तैयार है फिर खाना खायेंगे।" यह कहकर वह चली गई।

कुछ समय बाद वह फिर आई और बोली,

जीवन सुधा=

"राजू तुम यहाँ बैठे हो श्रीर मेज पर सब तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं , चलो नाँ।"

वह उठा और साथ चल दिया।

उसने थाली को देखा । कैसा खाना था । तरह तरह की तरकारियाँ न जाने क्या क्या । मेज पर खाना तो राजू ने कभी खाते देखा भी न था। वह बहुत घबराया।

कुछ दिन बाद ।

स्रव राजू बहुत कुछ सीख गया था। वह भी अपने को घर का एक प्राणी सममने लग गया था। वह चाची जी को माता कहता था। वह कई दका कहती, "राजू तू मेरा ही पुत्र बन जा।" श्रीर पिताजी (धर्मासंह को वह पुकारता था) कहते, "राजू को हम श्रव कभी न जाने देंगे।" वह हँस दिया करता श्रीर राधा? वह बहुत श्रद्धी थी। वही तो उसकी संगिनी थी। उसी का तो वह चित्र खींचता हुश्रा नगर श्राया था।

उस समय राजू कमरे में बैठा हुआ था कि राधा भागती हुई आई और बोली, "वाह, तुम अभी तक तय्यार नहीं हुए।"

"तय्यार ? कहाँ जाना 🕏 ?"

"जैसे कुछ माछ्म ही नहीं मोहन बाबू को लने नहीं जाना है क्या ?"

"मोहन बाबू ? कहाँ पर ?"

"स्टेशन पर । चिलये समय थोड़ा है।"

"परन्तु यह मोहन बाबृ हैं कौन ?"

"श्रारे, कहते हैं, बहुत श्रन्छे, श्रादमी हैं। धनी, खूद धनी श्रीर फिर इस साल एम, ए, की परीचा में बैठ रहे हैं। कहते हैं संगीत में भी नियुग् हैं।"

"तत्र तो इन साहत्र के साथ में कुछ समय अच्छा त्रीतेगा।"

"हाँ तो फिर स्टेशन पर चलोगे न १" "क्यों नहीं, क्यों नहीं, उन्हें तो कार के पीछे वाँध कर लाना होगा। चलेंगे हम भी।" **द्यौर वह चल** दिये हँसते हुये ।

\* \* \*

मोहन बाबू श्राये। राजू ने स्वभाव में उन जैसा कोई न देखा था। संगीत के सम्बन्ध में उनके लिये जितना उसने सुना था उससे श्राधक ही थे। परन्तु राजू को उनकी एक चीज न भाती थी—वह सदा राधा की खुशामद किया करते थे। उनके पास कोई भेद था जिसे राजू न समभ सकता था। बह कहा करते, "राधा, तू मेरी हो जा।"

कुछ दिन के बाद वह लौट गये । राजू ने चाची और पिता जी को मोहन बाबू की बहुत तारीफ करते देखा वह कहा करते, "कितना अच्छा लड़का है" राजू इसका मतलब भी यह निकालता कि मोहन बाबू अच्छे हैं, पर इस बात को चुपके-चुपके कहने की बार-बार क्या जहरत है।

कुछ दिन बाद राजू को डर लगने लगा था, वह काँप उठा करता और ईश्वर से प्रार्थना करता, 'हे भगवान मेरा भय ग़लत निकले।'

एक दिन पिता जी ने कहा,"राजू तुम्हें एक ख़बर सुनानी हैं।"

"खबर कैसी, पिता जी ?"

"हमने राधा का व्याह मोहन बाबू से पक्का कर दिया है।"

"हाँ, बहुत अच्छा किया।" और तो राजू कुछ कह ही नहीं सकता था। वह जुपके से अपने कमरे में चला गया। राजू न जानता था कि उसे प्रसन्न होना चाहिये अथवा रोना चाहिये। वह पागल सा बना जा रहा था। राधा चली जायगी दूसरे की हो जायगी। परन्तु मेरा जीवन? इसका क्या होगा? देवी मन्दिर छोड़कर चली जायेगी और पुजारी उसका क्या होगा? राजू सोच रहा था, "मैं कितना मूर्ख हूँ। मैं गंवार, अनपइ, निर्धन और राधा क्या कभी मेरी हो सकती थी। मेरा गाँव, हाय मैं उसे

जीवन सुधा -----

छोड़कर क्यों चला आया। मेरे पिता जी मेरा प्यारा भण्या, जो सचमुच मेरे थे, मैं उन्हें क्यों भूल गया ? केवल स्वार्थ के लिये ही । वह गांव में परिश्रम कर के, पसीना बहाकर मेरे लिये इतना करते थे, मुक्त पर आशाएं बाँघे बैठे थे श्रीर में इधर उन्हें भूल गया। श्रीर मेरी वह भौंपड़ी? मैं उसमें ही कितना सुखी था। दूसरों के झुठे सुख पर उसको झोड़ ऋाया । वह मेरे खेत पर दिन भर की मेहनत के बाद सूखी बाजरे की रोटी श्रीर यह श्राराम का जीवन । उस समय राजू ऐसा श्रनुभव कर रहाथाकि वह कैंद था। वह वहाँ अपने घर का राजा था, अब दूसरे पर आश्रित था। फिर उसने सोचा, "जो मेरी कभी नहीं हो सकती, उसे मैं भी भुला दूंगा। उसकी स्पृति को कुचल डालूंगा । उसके लिये चाहे मुझे अपने श्चाप को भ कुचलना पड़े।"

गजू की यही सीचते सोचते गत बीती जा रही थी। वह उठ खड़ा हुआ श्रीर बाहर घूमने को निकल गया। विचारों में मग्न घूमते घूमते जाने कितना समय बीत गया। श्रीर जब वह थक गया तो वापिस श्राया श्रीर अपनी चारपाई पर लेट गया। श्राज की सी श्रशांति उसके हृदय में कभी भी न हुई थी। कुछ उजियाला हुशा तो वह पास के कमरे में गया। गधा श्रभी बड़ी चन की नींद मो गही थी। गजू निराश लौट श्राया। थोड़ी देर बाद गधा श्राई, "चिल्ये दृध पी लीजिये।" श्रीर इसने श्रायं नीची कर लीं। राजू की श्रांगों में श्रांगू भर श्राये।

"तुम रो रहे हो, क्यों ?"

"राधा मैं ऋाज जाऊंगा ।"

"नहीं, अभी नहीं, तुम्हें कुछ दिन और रहना

पड़ेगा ः" "क्यों ?"

"मेरे लिये। राजु, तुम्हारे आगे मेरी यह अंतिम प्रार्थना है। मानारो ?" "क्या हां।" उसका मस्तक भुक गया। "मैं पागल हो जाऊंगा राधा, निश्चय ही ।"

"राजू ।"

"राधा, श्रव में यहां नहीं ठहर सकता। मुझे श्राज ही गांव को लौट जाना होगा। वे दिन एक मीठा सपना बन गये हैं पर में उन्हें भूलने की कोशिश करूंगा।"

\* \* \*

राजू ने सोचा कि वह पागल हो गया है।
"क्यों सचमुच ?" श्रीर वह श्राइने के पास गया।
"कुछ साफ नहीं दीखता।" देखते-देखते उसने
कहा, "जरूर मुझे कुछ हो गया।" वह भागा श्रीर
राधा के कमरे में पहुंचा। वह न जाने क्या कर
रही थी।

ं राजू ने उससे पूछा, "राधा, देखना मुझे कुछ हो गया था ।"

"क्या हुन्ना है , राजू 'ं?''

"वह तेरा मोहन बाबू मुझे एक पल को भी चैन से नहीं बैठने देता। अभी पानी पीने लगा तो उसने आकर कहा, कहो बाजी किसकी रही।"

तुम पागल तो नहीं हो गये हो, राजू ?'' "ठीक, तो मैं निश्चय पागल होगया हूं।''

राजू बाहर को भागा, रास्ते में चाची जी मिली, उसने उन्हें कंचे से पकड़ लिया द्यार कहा, 'चाची जी देखना मैं पागल होगया हूं।''

"तू कैसी बातें कर रहा है ?"

'कैसी बातें ? तव तो में ऋवश्य पागल होगया हूं।"

"तुझे क्या होगया है राजू ?"

"मैं पागल होगया हूँ ।" कह कर राजू कोठः के बाहर को भागा ।

"दरवान, तुम मेरी स्त्रोर घूर-घूर कर क्या देख रहे हो १ कहना चाहते हो कि मैं पागल हुँ १"

े राजू भागा जा रहा था। संसार घूम रहा था ऋथवा उमका सिर, उसे माऌम न था। राजू ने देखा एक आदमी झूमता हुआ चला जा रहा था। संसार की श्रव राजू को परवाह न थी। वह ठोकर खाकर भी हँस देता। क्या वह देवता था? राजू भागा श्रीर उस आदमी के हाथ पकड़ लिये।

"क्या चाहते हो भाई ?" उसने मजे में

कहा।

''क्यों क्या मैं पागल हूं ?''राजू ने विनीत-भाव से पूछा ।''

"कौन कहता है तुम पागल हो ?"

"राधा, चाची जी, सब कहते हैं मैं पागल हूं । देखो न, क्या मैं सचमुच पागल हूं ?"

'श्रो, तुम पागल नहीं, संसार ही पागल हो गया है। श्राश्रो मेरे साथ श्राश्रो।"

राजू उसके साथ चुपचाप चल पड़ा जैसे मां के साथ बालक।

"तो मैं पागच नहीं हूं ।" राजू ने रुक कर

ं "द्यभी माॡम हो जायगा । मेरे साथ चलो।"

वह राजू को ले चला, वहाँ—जहाँ पागल दुनिया को पागल पाता है, जहाँ संसार भर के दुखों को मनुष्य कुझ समय के लिये भुला देता है, जहाँ साक्षी था श्रीर पीने वाले।

राजू ने भागकर एक प्याला ले लिया और एक ही बूँट में उसे खतम कर दिया और पीते-ीते ही अपना सब कुछ भूल गया। कितना सरल उपाय था सब कुछ भुलाने का।

राजू खूब पीता। वहाँ के पीने वाले ही उसके जीवन सँगी थे। वह इतनी पीता कि होश न रहता, इतनी पीता कि वह बहक जाता। लोग उससे घृणा करते थे; परन्तु इससे उसे क्या। वह श्रपना दुख़ भूले रहना चाहता था। शराव ही उसकी स्त्राशा, त्र्याश्रय स्त्रीर धन व सुख थी।

उसका त्राज का दिन कल के दिन की तरह बीतता त्रीर त्र्याले दिन में परिवर्तन की कोई त्राशा न दीखती थी। दिन रातों में बदल जाते त्रीर राजू पीता ही जाता।

 $\langle \quad \quad \times \quad \quad \times$ 

उस दिन राजू सो ही रहा था कि राधा ऋाई श्रीर उसने उसे उठाया। वह उठा। उस समय वह होश में था। राधा घत्रराई हुई थी। उसने कहा, "पिताजी बुला रहे हैं।"

"पिता जी ?"

"हाँ, जल्दी चलो।"

राजू उठकर गया । पिताजी ने कहा— "राजेन्द्र! तार श्राया है।"

"कैसा ?" उसने घवराहट से पूछा ।

"राजू, यह राज, यह इतनी बड़ी कोठी, यह सुन्दर सुन्दर बस्तुयें, सब बिक जायेंगी। त्राज से मैं दर-दर का भिस्तारी हूँ।"

"लेकिन आखिर क्या हुआ चाचा जी।" "शेयर मार्केट में मुझे कई लाख का घाटा

श्राया है।"

"पिताजी घवराने की कोई बात नहीं, जिसने दिया था, उसे वापिस ले लेने का भी पूरा श्रिधकार है। यह दो दिन की तड़क-भड़क थी, चार दिन की चांदनी थी। वह समाप्त होगई। ६न कहानियों को भूलकर चिलये चलें।"

'परन्तु श्रव कहाँ जायेंगे ?"

"वापिस गाँव को। जहाँ से आये थे, वहीं।" श्रीर हम सब वहाँ से लौट श्राये। धर्मसिंह ने फिर से खेती बारी शुरू करदी। अब वह शेयर मार्केट को याद करके हँस दिया करते थे।

राधा श्रव मेरी थी । किसान की कन्या किसान की ही होगी, यह निश्चित हो चुका था।

## मूल

## [ श्री शत्रोदेवी चतुर्वेदी 'हिन्दी रत्न' ]

त्रपने धन दौलत आदिक पर<sub>,</sub> अधिक फूल इस मृांत हुए। भूल रहे हैं काल भँक में, हमसे कितने शान्त हुए । नही ध्यान में लाते हैं यह, जग में जीवन दो विन का ! श्रन्त बही होगा सब का ही, हमको पना नहीं जिसका । धन चंचल है, जीवन चंचल, चंचल है साग संसार । चंबलता में फॅसा हुआ है, मानव जीवन का सब सार । चंचल ब्राशा ब्रीर निराशा, चंचल जीवन का मुबम्ता। चंचल दु:व-मुख चंचल सबकुछ, नंधलता भें अन्त । सबका धन मुख्डा कुछ काम न आवे, जिस पर तुम फूले भाई। भूनो, वह धमन्ट, गद, तुम सब, भन्त सम्भ कर दुखदाई !

नाटिका ----

# मृत्यु की भेंट

[ श्री कृष्णचन्द्र मुद्गल 'दुखित' ]

(श्रंथकार नष्ट होता जा रहा है। प्रकाश की किरएों श्रपना श्रस्तित्व जमा रही हैं। उपर नील नभ-मण्डल है, नीचे उसी रंग की जल राशि। यहाँ वहाँ बीच-बीच में बड़े-बड़े कमल पत्रों का कालीन बिल्ला है, श्रीर इधर उधर कमल पुष्प श्रधिखले रूप में शोभित हैं। कमल पत्रों पर मोती के समान श्रस्थिर कई श्रोस बिन्दु नृत्य कर रहे हैं। ऐसा मालूम होता है मानों कमलवल के मध्य से श्रद्धत संगीत की तानें उठ रही हैं। सब श्रपने श्रपने रंग में मस्त हैं। श्रोस बिन्दु श्रापस में बातें करते से प्रतीत होते हैं।) श्रोस बिन्दु १—

जीवन नृत्य नहीं तो फिर क्या है ? युग-युग बीत गये, कभी हमने इन कमल पत्रों पर विश्रम भी किया है ? ऐसा नीला भव्य व्योम श्रीर इतना सरस जल ! श्रात्म संगीत की प्रिय तान में दो ज्ञा जीवन की श्रस्थिरता भूल सी जाती है। मुझे तो सदा ऐसे ही बने रहने की इच्छा होती है।

श्रीस बिन्दु २— ( गम्भीरता से)

श्रोह ! यदि कोई दिन्य संगीत सदा नृत्य में निरत रखे तो में इसे कभी न होड़ूँ, लेकिन दुख केवल यही है श्रीर यही निराशा है; न जाने कब श्रीर क्यों हमारी श्रात्मा लुट न जाय ! (निराशा से) उक ! कीन जाने कब क्या होगा ? यह तो सब उस पार के प्रश्न हैं; जहाँ केवल

अंधकार ही श्रंधकार है श्रीर कल्पना पंगु हो जाती है।

श्रोस बिन्दु ३— (जल बाला से)

तुम न होती तो मैं क्या जीवित रह सकता था? ऋष तो मैं मौत से भी नहीं हरू गा, जलवाला! हृद्तंत्री के तार पर राग रागिनियाँ गाकर मस्ती में झूलने वाले को कहीं मौत भी सता सकती हैं? (हँसते हुये) ऋष तो मुझे तुम्हारे ही संकेत पर जीना और मरना है। ऋोस बिन्दु ४—(कुछ गंभीर होकर)

हृदय को रोकता हूँ तो भी नहीं रुकता। वह देखो पानी की लहरें मेरे हृदय को नचा रही हैं। जो किसी को श्रम्खा लगता है वही दूसरे को बुरा भी! लेकिन इससे क्या,( रुक कर) जिसे हम प्यार करते हैं वह मृत्यु के मुख में तो जावेगा ही, फिर भला ऐसे लगने से भी क्या १ श्रोस बिन्दु ४—

भाई, मौत भी श्राजाय तो भी ठीक! श्राखिर जीवन भी कब तक एकसा नाचता रहे। कुद्र विश्रान्ति भी तो चाहिये!

(चारों श्रोर शान्ति हो जाती है; लेकिन नृत्य चाळू ही रहता है। पानी एवं हवा की एक लहर फैल जाती है। कमल-पत्र हिलने लगते हैं, श्रीर बिन्दुश्रों का नृत्य कुछ शिथिल सा हो जाता है।)

अर्थास विन्दु ४— (चौंक कर)

जोःन सुधा =====

श्रोहो, मृत्यू ! श्रा गई ? इतनी जल्दी ! श्रोस बिन्दु १— ( हर्प से )

श्राज श्रावेगी यह तो मुझे याद ही नहीं रही। मैंने क्याक्या सोच एखा था—( याद करते हुये ) वर्षी पहिले इसी ने मुझे इन पत्रों पर नृत्य करने को भेजा था, उस समय मैंने सोचा था किसी दिन मिलने पर इस से कांगा—देव, मुझे एक सबल देह श्रीर अनुपम आतमा की भेंट देना। (निराशा से) लेकिन मैं तो सब कुछ भूल गया। सिर्फ नाचता ही रहा जीवन भर !

श्रोस बिन्दु २—(दुःख से)

है ईश्वर ! अब क्या होगा ? क्या बे-मीत मर जाना होगा!

श्रोस बिन्दु ३—( भय मे )

जल-बाले ! देखो मौत सर पर नाँच रही है। श्रभी तो मैं जीवन की उपा-संध्या भली भाँति देख भी नहीं पाया हूं ! तो क्या चला जाना होगा ? (राने का सा होकर) तुम न बचालोगी जल-बाला, मुझे मीत के मुंह से ! श्रोस विन्दु ४—

हृदय को कितना ही पत्थर क्यों न बना ली पर वह मात के सामने पसीज ही जायगा । श्राशा की अनेकों दीवारें क्यों न चुत डाली, वे भी चकनाचूर हो जाँयगी; भावनाओं के अभेग दुर्ग में क्यों न छिप जाश्रो पर वह भी सत्य की चिनगारित्रों से जलकर खाक़ हो ही जायगा। जीवन को सात-सात किलों में क्यों न बन्द कर दो लेकिन वह भी मीत के सामने टूट-फूट जाँयगे। ( दृढ़ता से ) मत्र झूट हैं। वस केवल मृत्यु ही सच है। विश्व से क्यों प्रेम किया जाय, मृत्यु के समान सत्य को छोड़कर ?

श्रीस बिन्दु ४—

नाचो, नाचो; मीत का नृत्य से स्वागत करो, काल के बर हास्य की मुँह अप्रीर मृकुटियों की मुरकराहट से वशीभून कर लो। यह तो आत्मा त्रीर मृत्यु, त्रनन्तत्रीर त्रन्त का मिलन है !

(सब नाचने लगते हैं ऋौर ऋपने अंग-प्रत्यंगों से कला की भांकी का जी तोड़ परिश्रम करते हैं। सहसा हवा में तैरती हुई एक नौका दिखाई देती है मानों खेत मानस हंस हो। काली देह का एक मजबूत पुरुष अन्दर बैठा है। उसकी आंखें नत्य करने वालों की श्रोर एक टकी लगाये देख रही हैं। नौका कमलदल के निकट आकर रुक जाती है ।)

श्रोस बिन्दु ४-- (काँपते हुए)

श्रोह ! यह तो मृत्यु है !

ष्ट्रोस विन्दु १---

आओ ! देवा-धि-देव आओ !! मैं तो धक गया ऋव नाचते नाचते...।

श्रोस चिन्दु २— (विषाद से )

आशा, अर्मे, कल्पना सब झूठ है ! केवल यही सत्य है; परन्तु कितनी भयंकर, श्रीह ! श्रोस विन्दु ३— ( त्रसित होकर )

जल-वाला !...प्रियत . . में ॥--

श्रोस बिन्दु ४--

जितने प्रेम से मैंने जगत को प्यार किया यदि उतने ही प्रेम से तुन्हें प्यार करता तो ? ( मृत्यु के होंठ फड़फड़ाने लगते हैं। सब शांत हो जाते हैं , नृत्य बंद हो जाता है । मृत्यु-देव नौका में खड़े हो जाते हैं। कामदेव भी देह प्रभा उनके श्रंग प्रत्यंग में चमकने लगती है। सौंदर्य श्रीर शक्ति का मिश्रित तेज प्रकाश हो जाता है। फिर भी आँखों में विषाद की बदलियाँ छायी रहती 音!

मृत्यू--(गंभीरता से) क्या तुम सब तैयार हो १ (वातावरण में हलचल मच जाती है)

श्रोस बिन्दु १— श्राइये देव !

श्रोस बिन्दु२ --आइय स्वागत है !! श्रोस बिन्दु ३- (कॉंपते हुये)

न मृत्यु देव न आवो (घत्रा कर) जल देवि. श्रो जल देवि! तुम कहाँ हो ? मुझे कहीं छिपालो—?

श्रीस बिन्दु ४-- (प्रेम से)

जीवन के श्रंतिम श्रीर श्रलौकिक सत्य श्राश्रो, विनाश की भस्म से हमें बचालो, देव ! श्रोस विन्दु ४— (गंभीर शांति से)

जीवन में स्थभी एक स्रोर साथ है, देव! तुमने भी वचन दिया था (चारों स्रोर गंभीरता फैल जाती है) मुझे सबल स्थीर समर्थ स्थात्मा दो, देव!! क्या भूल गये इसे! (मृत्यु की साँखों में निराशा की वेदना छा जाती है)

मृत्यु-- (वेदना से )

स्रोह, तुम भूल में हो स्रोस बिंदु ! नाचते हो, गाते हो, झूलते हो, बूसते हो, सब कुद्र करते हो, फिर भी मुझे ही दोष देते हो ? स्रोस बिन्दु ४—

तुन्हारा दोष नहीं तो और किसका है, देव ? श्रोस बिन्दु ४—

नहीं तुम्हारा दोष नहीं है। मदन के इस भव्य रूप को कौन असत्य कह कर दोषी ठहरा सकता है!

श्रोस बिंदु १---

मैं तो नाचते-नाचते थक गया देव ? अव मुझ इस फन्दे से झुड़ाजो ।

श्रीस बिंदु २— (कुछ सोचते हुये)

ऋगम्य में मिलने पर ही मैं शायद इसका रहस्य बतला सकूँ।

श्रोस बिंदु ३- (रोते हुये)

जीवन में जहाँ प्रेम का संचार हुआ नहीं कि तुम आगये। जलबाला! जगत जितना भन्य है उतना ही भयंकर भी, जितना दिन्य है उतना करणा भी! जो आज हँसता है वही कल रोता भी है!
आसे बिन्दू ४—

जीवन का खंतिम सत्य मृत्यु ही है श्रीर फिर सत्य तो सदासुन्दर श्रीर कल्याणमय है। तब फिर मौत से क्यों डरा जाय! (चारों श्रीर मृत्यु देखने लगते हैं। उनकी श्राँखों में निराशा छा जाती है)

श्रोस बेंदु १--

देव ! ऋापके मुंह पर निराशा क्यों ? ऋोस बिंदु २—

श्राँखों में विषाद क्यों है ?

श्रोस बिंदु ३---

शायद हमारे दुःख से दुःखी होंगे। स्रोस बिंदु ४— ( मुग्ध होकर )

सौंदर्य की निराशा भी कितनी भव्य और मन-मोहक होती है, देव ! श्रोस बिंदू ४—

मालूम होता है मृत्यु कला को ऋपने वश में कर लिया है।

(मृत्यु मस्तक ऊंचा करते हैं, नेत्रों में निराशा और कर्तव्य की मलक दिखाई देती है, वह धीरे धीरे कुछ कहने लगते हैं)

मृत्यु—

इसमें मेरा कोई दोष नहीं ! मैंने सदा तुन्हें उत्साहित किया है। जगत श्रीर जीवन की सेवायें की हैं। लेकिन कोई नहीं जानता। लोग जगत को एकटकी लगाये देखते जाँय, इसीलिये मैंने सदैव उस में रमगीयता रक्खी है। दिन के बाद रात श्रीर उपा के बाद संध्या के जगाजीवी बनाया है। श्रीस चिन्दु ४—( प्रेम से )

च्चणजीवी ही तो चिरजीवी है, देव!

मृत्यु -

प्रेम को मेरी छाया में रखकर सदा स्वच्छ श्रीर पवित्र रक्खा है। पाप की ज्वाला जब जीवन को भुजसने लगती है तब मैं उसे बचाता हूं।

श्रोस बिन्दु १—( हर्ष से ) श्रोह ! दिव्य शरण —। जीवन सुधा ∸

मृत्यु--

तो भी मैं मृत्यु हूँ ! विनाश-प्रलय, रुद्र, मुझे देख कर तुम काँप उठते हो; माया के पाश से मुक्त करता हूँ तो गालियाँ देते हो, कोसते हो ! श्रोस बिन्दु ३—

तो क्या तुम्हारी पूजा करें ? स्वर्ग का सिंहासन भी मेरी जलवाला के सामने कुछ नहीं है।

मृत्यु—

तुम लोग कहते हो—देव, प्राण दो तो अपूर्व दो, आत्मा दो तो तेजस्वी दो, देह दो तो देव के समान दो ! परन्तु तुमने मुझे क्या दिया ? ओस बिन्दु १—

नृत्य में सब कुछ भूल गये, देव !

मृत्यु-—

श्रीर यदि श्रात्मापूर्णं कला से न खिले तो कला विश्व में कहाँ से ठहर सकती है । सरिता का प्रवाह सागर में जाता है; श्रतः प्रवल तो होना ही चाहिये। (निराशा से)

मैं चाहता था कि तुम में से कोई ऋद्भुत व्यक्ति ले जाऊँ, लेकिन निराश होकर लौट जाता हूं। क्या तुम्हें मेरी इस वेदना का दुःख नहीं है ? सूठ-मूठ नृत्य करोगे तो थकोगे ही। मुझे संताप क्यों दिलाते हो, क्यों गालियाँ देते हो युग-युग से? श्रोस बिन्दु ४—

देव ज्ञमा करो हमें ?

श्रोस बिन्दु १—

यमदेव ! हम तो ऋव थक गये हैं।

मृत्यु--

निष्फल श्रीर श्रमत्य नृत्य थकावट तो देगा ही। विश्वदेव के भव्य-सँगीत के साथ तुम्हारे पैर कैसे टिक सकते हैं। श्रीस विन्दु ४देव ! ऐसा माछम होता है मानों नई सृष्टि का सृजन ही होगा।

श्रोस बिन्दु ३—

जलबाले ! प्रियतमे-प्र-णा-म !

श्रोस बिन्दु ४—

जाना ही होगा ! मृत्यु चाहे कितनी भी सत्य हो, लेकिन फिर भी उसका क्या विश्वास !

(मृत्यु एक क्ली हँसी को लेकर अन्धकार में लीन होजाता है)

श्रोस बिन्दु १— ( हर्ष से )

अब कुंद्र न भूलूँगा।सोच समक्र कर नाचूँगा।

श्रोस बिन्दु २---

श्रव तो कर्तव्य के पथ से विलग न होना चाहिये।

श्रोस बिन्दु ३—

सौन्दर्य के जाल में ऋव न फँसूंगा। ऋव ते। विश्व सौन्दर्य को ही प्रेम कहाँगा।

श्रोस विन्दु ४---

अपने कार्यों से अब मृत्यु को खुश करूंगा।

श्रोस बिन्दु ५—

अपेह बच गये, नहीं तो बेमीत भरना होता। देखो कितनी मुकोमल है, यह कमल-बेल!

(कमल दल के बीच से फिर वहीं संगीत सुनाई देता है। फिर सब नाँचने लगते हैं) छोम किन्दु १—

श्रोफ़ ! मृत्यु कितना सत्य, कितना गहन !!!

(संगीत बढ़ता जाता है। कल्पना की देह पर सत्य की चादर बिछ जाती है, और अन्धकार में मृत्यु देव की नौका कमल-दल तथा आसे बिन्दु सब धुंधले होजाते हैं)

## फूल

## [ श्री प्रभात कुमार एडवोकेट ]

मलयानिल के सखा सुमन है ! सुन्दरता के सुत सुकुमार । स्नेही सहचर प्रिय प्रभात के इष्टदेव के प्रिय उपहार । विश्व नन्दिनी सुन्दरता के तुम हो एक चित्र उज्ज्वल प्रेमी-मक्त मधुप कुल के हो बाति पुनीत तुम तीर्थस्थल ।

लिंत लता के तुम सुद्दाग हो रत्न किरीट विटप वर के तुम ऋतुराज-राज्य के गौरव हो दिच्यास्त्र पंचशर के । सौरभ के तुम प्रिय स्वदेश हो कोकिल की मदिरा के पात्र कान्त कलेवर बतलाको क्यों कण्टक बलित तुम्हारा गोत?

कीमलता, सुन्दरता, सुचिता के हो मूर्तिमान उपमेय इसीलिये क्या तुम्हें यद्य ने दिया मेघु को था पायेय ? चारु चाव से रमणी वेणी का करती तुमसे विन्यास इस उठती हैं दशों दिशायें देल तुम्हारा दिन्य विकास ।

खबि मन हो मुस्कान प्रकृति की उपवन के सुन्दर शृंगार शांत तपोवन के वैभव हो सुषमा के अनुपम भंडार। लड़जा लिल कुमारी कमल पुष्पों की माला लेकह हदय, प्रेम, जीवन सब अपित करतीं निर्वाचित वर पर।

> मपुर मिलन के तुम साची हो, कभी विरद्द के बनी निशान बालक के तुम सरल खेल हो, रम्य रूप के हो अभिमान। इन्द्रमती के कठिन काल हो हो अभीष्ट प्रेमी जन के बन बासिनी सती सीता कें, हो उपाय मनरंबन के।

जब बसन्त में कुसुमित होते लेता वृच्च मण्डप सारे भ्रम होना है क्या वसुधा पर उतरे हैं उत्सुक तारे । नष्ट होगये जग में कितने ही वैभवशाली साम्राज्य है प्रभु! नष्ट न होने पावे फूलों का यह सुन्दर राज्य ।



### भत का धन

9

[श्री रामचन्द्र तिवारी]

रामनरायन सेठ थे। उनकी दूकानें थीं। वे पहिले देहाती थे। गाँव में रहते और जैसे तैसे गुजारा करते। उन्हें नगर में आये ४० वर्ष हो गये।

वे परिश्रमी थे। सुबह उठकर रात के दो बजे तक बही पर दृष्टि रखते। उनके नौफर थे मकान था। संचेपतः संसार के सफल मनुष्य को जो कुछ चाहिये वह सब उनके पास था।

उन्होंने मकान खरीदा वह बड़े धूम-धड़ाके के साथ पिनत्र किया गया। प्रह्शान्ति के पश्चान् शुभ मुहूर्त में खेठ जी किराए के मकान से ऋपने घर में ऋाये। वह परदेसी से दिल्ली वाले हो गये।

मकान भाग्यवान निकला। उसमें त्राने से सेठ जी के काराबार को काई धक्का न पहुँचा। उनकी उत्तरोत्तर उन्नति होनी चली गई। वे सहस्र-पति थे अब लव पति हुये।

मामवार का दिन था। सेठ जी ने ऊपर से त्राकर बैठक का द्वार खोला। सब सोते पड़े थे। उन्होंने दिया जलाया। कपड़े उतारे।

"हैं! यह क्या ?" उन्होंने बहुत धीरे से आश्चर्य से कहा और एक कोने की और बढ़े। चृहों के बिल के पास कोई गोल गोल चमकती हुई वस्तु पड़ी हुई थी। उन्होंने उसे उठा लिया। वह पीली थी। सेठ जी सोना पहिचानते थे। वह पीतल न थी। वह अशकी थी। सेठ जी की आसे आनन्द से चमक उठी।

"हैं ! इस घर में दीलत भरी पड़ी है । मैंने इसे बड़ी श्रन्छी साइत में खरीदा था । हमारे पण्डित जी भी कहते थे कि बड़ा भाग्यवान घर है। चूहों ने एक मुहर लाकर डाली है। या तो वे घड़े में होंगी, या कलसे का ढकना खुल गया होगा। हैं तो पास ही, थोड़ी सी मेहनत से निकल आर्येगी। वह वैठ गये और चुहे के बिल को बड़े ध्यान से देखने लगे । भिट्टी की हाथ से सरका कर एक श्रोर को कर दिया श्रीर विल में दो उँगली डाल इधर उधर टटोलने लगे । फिर एक दम भटके से उँगलियाँ बाहर खींच लीं। "गड़े धनों की रज्ञा सर्प करने हैं। कहीं यहाँ भी कोई विषधर न हो। अगर कहीं मुझे काट खाता ?" उनका शरीर पसीने से नहा उठा । वह बिल से हट ऋपने प्लंग पर ऋग बेंठे । स्त्रीर महर को जेब में डाल लिया । फिर बाहर निकाला और गीर से देखने लगे ।

"वादशाही मुहर हैं। भारी है। ये कितनी होंगी। पांच सी से तो कम क्या होंगी ? श्रारं सिर्फ पांच सी! यह मकान तो बहुत बड़ा हैं इसके मालिक के पास क्या बस इतनी ही मुहरें रही होंगी? नहीं ऐसा नहीं हो सकता। जरूर इसमें जगह जगह इसी प्रकार धनराशि दबी पड़ी होंगी। मैं इसे भूमि से निकाल छूँ। पूरा मकान खाली कर के कोने कोने को तलाशी छूँगा। परन्तु इतने किराएदारों के निकलने पर ३५०० मासिक की हानि है। कोई परवाह नहीं।

यिंड चार मुहरें भी मिल गई तो सब हानि पूरी हो जायगी। नहीं नहीं यह तरकीब ठीक नहीं। किराएदार सदा तो इसमें बैठे ही न रहेंगे। ज्यों ही कोई मकान छोड़ेगा। मैं लूंगा । बैठक बना ढूंढ कर दफ़ीने कोना-कोना निकाॡँगा।" उन्होंने मुहर को उलटा श्रीर ध्यान से देखा। "क्या ही ऋच्छी चीज है । अब पता मिलगया है तो मैं झोड़ने वाला नहीं। चाहे कितना भी गहरा क्यों न हो, निकाल कर ही मानूँगा।" उन्हें जोश द्यागया । वे पलंग पर उठे और कमरे में टहलने लगे। छिपे चोर को बाहर निकालने के लिये तरकीवें सोचने लगे। "क्या मैं अकेले पक्के फर्रा को खोद सकूँगा ? नहीं ! नहीं ! किसी दृसरे की सहायता लेना मुर्खता होगी। यह मुझे श्रकेले ही करना होगा।" वे बिल के पास पहुँचे और श्रास पास के कर्श की श्रोर देखने लगे। "बस इस पत्थर के जोड़ में गेंती का सहारा देकर जरा उभार देने से यह पटिया ऋलग हो जायगी, फिर खरपे से या गहदाले से धीरे धीरे मिट्टी निकालुँगा । यदि किसी ने गहदाले की आवाज सुनली ?" वह तनिक सिहर उठे श्रीर संभल गये। "नहीं ऐसा न होगा। यह सब बड़ी सावधानी से करूँगा । किसी को कार्नो-कान खबर न होगी। यकायक खोदते समय खुरपा किसी वस्तु से टकरा जायगा ।" उनका दिल तेजी से धड़कने लगा। "इसी आवाज से पता लग जायगा कि मुहरें देश में हैं अथवा घड़े में।

वे अचानक चौंक पड़े, धूम कर देखा तो सेठानी खाना लिये खड़ी थीं और न जाने कब स उनकी चेंग्टायें देख रही थीं । सेठ जी को पसीना आगया। गुस्सा भी आया। उन्होंने कोध को द्वाया और सेठानी जी से पूजा "तुम यहाँ कब से खड़ी हो?" उनकी हिन्ट पत्नी के मुख में कुछ खोज रही थी।

"अभी तो श्राई हूँ सेठानी जी ने उत्तर

दिया।" "श्राज तुन्हें क्या होगया है ?" वह उत्सुकता से उत्तर की प्रतीचा करने लगी।

"कहाँ, कुछ भी तो नहीं।" उन्होंने धड़कते दिल से उत्तर दिया।

"तो फिर बैचेनी से इधर उधर क्यों फिर रहे थे ? मैंने तो तुम्हें कभी भी ऐसा करते नहीं देखा। क्या दुकान में कुछ..."

"नहीं! नहीं!! हाँ, आज हिसाब में कुछ गड़बड़ी होगई है। बड़ा परिश्रम करने पर भी विधि नहीं मिली। चवकी का फर्क पड़ता है, कुछ पता नहीं चला। तुम जानती होन, डाक्टर ने मुझे अधिक काम करने को मना कर दिया है। कह रहे थे कि इतना काम अब आप बहुत दिन नहीं कर सकते।" छेठ जी यह सब एक साँस में कह गये।

"तो फिर एक और मुनीम क्यों नहीं रख लेते त्राम्निर यह पैसा किस दिन काम में आएगा ?" उन्होंने चिन्तित स्वर में कहा।

"हाँ, वह तो करना ही होगा। श्रव कहीं से कुछ रूपया और मिल जाय तो एक मुनीम और बढ़ा दूँगा। मगर फिर भी हिसाब देखना तो पढ़ेगा ही, तुम्हीं बताश्रो क्या इतना बड़ा काम कहीं दूसरे के हाथ में यों ही सौंप दिया जा सकता है ?"

"श्ररे तो क्या इतना रूपया थोड़ा है ? क्या एक मुनीम की तनस्वाह भी न निकलेगी ? इतना लोभ न करो। तुम्हें मेरी सौगन्द, कल से ही मुनीम रख लो। तुम भले चंगे रहांगे तो सब कुछ हो जायगा।"

जिस समय सेठानी जी मुनीम रखने का
श्रामह कर रही थी। सेठ जी कौर हाथ में लिए
सोच रहे थे कि बैठक में न तो गेंती है न खुरपा।
वह कभी यहाँ रक्खें भी नहीं जाते। वह यहाँ
किस वहाने से लाये जायें।यदि न लाए जाँय तो
सब बेकार है—लाना ही होगा। गेंती तो हमारे
यहाँ शायद होगी। मगर खुरपा! वह तो खरीदना
पड़ेगा। दोनों को लाकर कहीं छिपाना चाहिये,

खुले रखने से लोग देखकर शँका करेंगे। क्या इस लोहे लँगड़ को रखने को कहीं और स्थान नहीं था।" उन्होंने कौर मुँह में डाल कमरे के चारों कोनों में नजर डाली। वह निश्चय कर रहे थे कि आगामी युद्ध हथियार कहाँ छुपाए जायें "बस यह कोना है, कपड़ों की अल्मारी के पीछे! हाँ, वहाँ कौन देखने जाता है? दो दिन में सब काम हो जायगा तब उन्हें हटा देंगे।"

सेठानी जी ने श्रीर बातें करनी चाहीं; पर, उन्होंने उनमें कुछ रुचि न दिखलाई। सेठानी जी समम गई कि श्राज उनका चित्त चवन्नी के फर्क के पीछे घूम रहा है। वह चुप हो रहीं। सेठ जी ने भोजन कर लिया। श्राज उनसे श्रीधक न खाया गया। सेठानी ने थाली उठा जीने का रास्ता लिया श्रार सेठ जी दिया बुक्ता पलँग पर जा लटे।

श्रॅंघेरा होते ही सेंठ जी का भय मालूम होने लगा। उन्हें बचपन की सुनी बातों का ध्यान हो श्राया। 'धनवाला भूत बनकर श्रपने गड़े धन की रत्ता करता है। जो काई उसे निकालने की इच्छा करता है वह उससे बदला श्रवश्य लता है। बदलू को एक हांड़ी रूपये मिले थे। श्रीर उसका इकलाता लड़का उसके दूसरे दिन ही मर गया। भूत लोग इस प्रकार धन देकर श्रपना परिवार बढ़ाते हैं। क्या पता इस धन की रत्ता भी कोई भूत करता हो? तो वह क्या चाहता है? मेरी जान लेना चाहता है?

उनका समस्त शरीर काँप उठा। उन्होंने दोनों आँ सें हाथों से ढकलीं। "ऐ में इतना डरपोक! इस मृत की कल्पना से में डर उठा! श्रसम्भव हैं।" उन्होंने खुद सख्त मुट्टी बाँध कर हवा में प्रहार किया और जबरदस्ती श्रपने मुख पर हँसी लाने की चेटा की। वे श्रपनी कायरता पर सबय ही हँसना चाहने थे। उनका डर दूर होगया। परन्तु दिल की धड़कन श्रभी साधारण से कुद्र तेज थी।

"मान लिया कि कोई भूत इस धन की रक्ता करता है, तो इससे क्या ? मैंने स्वयँ धन को ढूँ ढ़ने का कोई प्रयत्न नहीं किया।

यह मोहर मेरे सामने फेंक दी गई है। धन का पता मुझे अपने आप दिया गया है। क्या पता मुहर चूहे लाए हैं, या वहीं रात वाला भूत!" भूत का ख्याल आते ही उन्हें पसीना हो आया। "तो क्या वह मुझे लालच देकर फँसाना चाहता वह कोई जी चाहता है। मैं नहीं दूँगा। आखिर होंगी ही कितनी? हमारे कारोबार में उनका क्या पता चलेगा।"

उन्होंने मुहर जेव से निकाली श्रीर श्रॅंथरे में उसे उलट-पलट कर देखने की कोशिश करने लगे। "हूँ, यह मछली का काँटा मेरे सामने फेंका गया है। नहीं! नहीं! मैं इस फन्दे में न फंस् गा।" वह उठ कर पलँग पर बैठ गये श्रीर जोर से मुहर को चूहे के बिल की श्रोर फेंक दिया। उसने दीवार से टकरा कर एक श्रावांज की श्रीर फर्श पर श्रा पड़ी। "वस चलो पाप कट गया। न रहा बाँस न बजेगी बाँसरी। लो भूत महाराज, क्या मुँह की खाई है। मूर्ख तूने मुझं इतना लालची समका था।"

वह पलंग पर फिर लेट गये। "श्ररे? में बड़ा मूर्व हूं। एक सोने की मुहर को इस प्रकार फेंक दिया! घरवाले जागते न हों, ईश्वर करे उसके टकराने की श्रावाज किसी के कानों में न पहुँ वी हो। हूँ! मैं त्यर्थ ही इसकी चिन्ता करने लगा। किसे पता हैं कि मेंने मुहर फेंकी हैं! समझगा चूहे ने कुछ गिरा दिया होगा।" वे इस श्रोर से श्वस्थ हो गये। "मैं पागल होगया हूँ। भजा जिस लहमी की मैंने जीवन भर पूजा की, उसी को घर श्राने पर ठुकरा दिया। लहमी मैया! मेरा अपराध चमा करना।" वे खाट पर से नीचे उतर, दियासलाई जलाई, श्रीर बिल की श्रोर बढ़े। इस धुंधले प्रकाश में भूमि पर पड़ी मुहर सेठ जी की दशा पर मुहकरा रहा थी।

उन्होंने काँपते हुए हाथों से उसे उठा लिया और माथे से लगा कर कहा, "लक्षी भैया, तुन्हारी जय हो। मेरा क़सूर माक करना।" दियासलाई बुक्त गई। वह पतंग पर लौट आये। मुहर को तिकये के नीचे रख दिया और बहर क़पर खींच ली।

वह सोचने लगे—मैं ज्यर्थ ही हरा । भला भूत भी कोई चीज होती है ? यह मूर्खों की कल्पना है, लेकिन ऐसा तो नहीं है । बड़े बड़े बुद्धिमान भी भूत का श्रस्तित्व मानते हैं। तो क्या सचमुच किसी भूत के पंजे में पड़ गया हूँ ? उनकी श्रांखों के सामने एक श्रस्पट काला धम्बा श्रम्थकार में वूमता प्रतीत हुआ। उनहें जान पड़ा कि वह घूर-धूर कर उनकी ही श्रोर देख रहा है। वे डर गये। श्रांखों मूंद कर उत्तटे लेंट गये श्रीर थोड़ी देर में उनके सोने की श्रावाज से बैठक गूँ जने लगी।

\* \*

सेठ जी की नींद खुली। उन्होंने श्रपनी चाँदी की श्रंगूठी के दर्शन किये। श्राँखें मलीं। तकिये को ज्लाटा श्रीर मुहर निकालकर देखने लगे।

वे दुकान पहुंचे। एक खुर्पा मंगाया। श्रीर कोई काराज ले श्राने के बहाने घर जाकर उसे रख गये। गैंसी भी किसी बहाने से बैठक में श्रा किसी।

बाज का दिन उन्हें पहाड़ सा उपन पढ़ता था। दिन-भर उनका जी न लगा । वह बड़ी उत्सुकता से रात्रि की बाट जोह रहे थे, परन्तु रात्रि प्रत्येक क्या और पीछे को सरकती जाती थी। उनके पेट में दर्द हो आया। वे गड़ी पर लेट गये और रात्रि का कार्यक्रम सोचने लगे—में किस प्रकार दिया जलाऊंगा। मेरे किस प्रकार सावध्मती करने पर भी गैंती फर्श से टकरा जायेगी, जिसे सुन किरायेदार बैठक के द्वार पर इकट्ठे हो जावेंगे और द्वार खोलने को मुझे आवाज देंगे। तब मैं क्या करूँगा? क्या जवाब दूंगा। मैं खाट पर लेट जाऊँगा और गैंती को छुपा दूँगा। फिर कराहते हुए उठकर किवाड़ कोल दूँगा और पूछूँगा—माई इतनी रात को क्या काम है ? वे कहेंगे—हमने आपकी बैठक में कोई आवाज सुनी है । मैं तत्काल ही उत्तर दूँगा मैंने तो नहीं सुनी । यदि वे मान कर उल्टे लौट गये तब तो ठीक ही है और यदि किसी ने बैठक में घुस खुदी हुई मिट्टी देखली तब तो राजब ही हो जायगा । सब अरहा फूट जायगा । नहीं ! नहीं !! ऐसा नहीं होसकता मैं बड़ी सावधानी से हर एक कामको करूँगा। किसी को पता भी न चलेगा कि इस घर में कोई बड़ी घटना हो रही है । उन्होंने करबट ली और इसी प्रकार तरह तरह के तर्क-कितर्क करते दिन बिता दिया।

सम्ध्या आई। सेठ जी उठे। तुकान के बाहर तक आए और किर जाकरलेट रहे। दस बजेतक तो वैसे भी किराएकर जागते रहते हैं। काम में बारह बजे से पहिले हाथ न लगाना चाहिये। आज दुकान साढ़े ग्यारह बजे बढ़ा देनी होगी। इस के लिए इन्होंने नौकर को आझा दे दी।

\* \*

बह बारह बजे घर पहुँचे। सेठामी जी खाना लेकर आई। परन्तु पेट के दर्द के बहाने से उन्होंने कुछ न साया। उन्हें अकेले लेटे रहने में अधिक आराम माख्म देता था। इस कारण सेठानी जी उनकी कुछ सेवा न कर सकी। वे दुखित मन से उपर चली गई।

एक बज गया। सब लोग सो रहे थे। काम का समय आगया। सेठ जी जाट पर से उठे। दिया जल ही रहा था। उन्होंने गेंती अल्मारी के पिछे से निकाली और पटिया के जोड़ में उसकी नोंक आड़ा कर जोर लगाया। पत्थर पुराना और ठीला था। वह कोनों पर से मड़ कर अलग हो गया। सेठ जी ने बन्द साँस से उसे उठा कर एक और रक्ता। यह कुछ देर मुसताये और फिर सुरपा लेकर मिट्टी खोदने लगे। काम कठिन था, उन्होंने फर्रा पर एक बड़ा मिट्टी का ढेर लगा दिया,

परन्तु धन का **ऋभी कहीं पता भी न**ेथा। वह निराश होकर बैठ गये।

'काम श्रधूरा न छोड़ना होगा' वह फिर खोदने लगे। यकायक उनका खुरण किसी पोली भूमि में लगा। सेठ जी ठहरे। उन्हें चूहों का बिल मिल गया था। 'बस वह भी कहीं बिल के सहारे ही होगा। नहीं तो चूहों को वह मुहर कहाँ से मिलती! उनकी हिम्मत बढ़ गई, वे दुगनी सावधानी से बिल के सहारे खोदने लगे।

खुरपा मिट्टी को तेजी से काट रहा था उसके रास्ते में कोई हकावट न थी। "एँ, क्या नीचे कंकड़ हैं ? खुरपा किस से टकराया!" उन्होंने मिट्टी को सावधानी से हटाया। एक फूटा घड़ा! उनकी सावधानी बढ़ गई। वह सम्भाल सम्भाल कर मिट्टी हटाने लगे। अब मुहरों से भरा घड़ा साफ दिखाई देने लगा।

सेठजी उसे निकाल न सकते थे। उसका केवल मुंह ही खुला था। रोष भाग फर्रा के नीचे था। 'इसको निकालने का प्रयत्न करना व्यर्थ है।' उन्होंने चहर-भूमि पर विद्वा दी और मुहरों की मुट्ठी भर-भर कर घड़े से निकाल उस पर देर करने लगे। उन्होंने एक सांस में यह काम कर डाला। मुहरों का देर दिये के प्रकाश में चमकने लगा। बैठक का प्रकाश कई गुना बढ़ गया। सेठजी ने सोचा कि पहिले यह गड़दा बन्द कर लिया जाय। फिर मुहरों को गिना जायगा। वैसे तो डढ़-दो हजार से कम नहीं जान पड़तीं।

गड्ढा भर कर पटिया उसपर बिछा दी गई। श्रीर वह इस काम सं निश्चिन्त हो गये।

'क्या अव इन्हें गिना जाये ? नहीं । मैं ऐसी मूर्खता न करूँ गा यदि कोई जागता हो ? नहीं ! नहीं ! अभी गिनना ठीक नहीं । अभी इसे योही पड़ा गहने दिया जाये । यह भी तो ठीक नहीं । अच्छा तो दिया युकाकर अंधेर में स्पर्श के सहारे गिना जाये । ठीक है कोई आकर अंदर भांककर देख भी न सकेगा कि मैं क्या कर रहा हूँ ।"

उन्होंने दिया बुक्ता दिया श्रीर मुहरों को गिन-ने बैठे। अंधेरा होते ही कोई काली शकल उनके दिल को दबाने लगी। उन्हें भूत का ध्यान हो आया। भैने अब उसका धन निकाल लिया है। वह अवश्य बदला लेगा। कहीं मेरी श्रोर श्राता न हो। उन्होंने ऋंधकार में ऋांखें फाड़ ऋपने चारों श्रोर देखा । उनकी हिंद्य जाकर उखड़ी हुई परिया पर ठहर गई। उन्होंने ऋनुभव किया कि उसमें से कोई काली काली बस्तु निकल रही है। वह घवड़ा उठे। उनका शरीर पसीने में तर हो गया, श्रीर ग़ौर से उसकी ही श्रीर देखने लगे । उनकी कल्पित मूर्ति धीरे-धीरे पटिया से बाहर निकली, श्रीर उनकी श्रोर बढ़ने लगी । सठजी हर से थर-थर कांपने लगे। वह चहर पर से उठ खड़े हुए। उनको लगा कि अब मूर्ति ने अपना हाथ उंचा उठाया। उसके हाथ भे कोई भारी हथियार है। वह उनके सिर पर श्रव गिरा ही चाहता है। वह भाग निकले और बैठक के दरवाजे पर आ गये। कुण्डा खोला। किवाइ खोलने ही वाले थे कि ध्यान आया। "अरे यह सब मेरी ही कल्पना है। भला भूत भी कोई वस्तु होती है ?"

उन्होंने हिम्मत की आंर तिकय के नीचे से चाकू निकाल लिया। चाकू के फल से अंधकार चीरते वह महरों की आर बढ़े। वहाँ तो कोई भी नहीं था। वह हंस पड़े; मगर अभी दिल धड़क रहा था। वह विल की ओर बढ़े। तमाम पिटया हाथसे टटोल चाकू से कुरेद कर देखी। कुछ भी नहीं वह। लीट आय और मोहरें गिनने के लिये सरकाई । उन्हें अनुभव हुआ मानों किसी ने उनकी चादर खींची है। उन्होंने हर कर चारों ओर देखा। चाकू को हवा में हिलाया। कहीं कुछ भी नहीं था। एक पंजा गिनने पर उन्होंने फिर पांच मुहरें सरकाई । "एं, यह क्या ?" वह कल्पना करने लगे, "कोई दूसरा भी मेरी तरह इसमें से मुहरें गिन रहा है।" वह सका हो गये। चाकू को ढेर के चारों ओर फिराया। 'यह क्या है जो मुझे इस प्रकार तंग

कर रहा है ?' वह उपर को देखने लगे। वहीं काला धच्चा उनकी श्रोर सरक रहा था। उन्होंने चाकू संभाला। "हूँ, तू भुहर ले जाना चाहता है! मैं एक न दूँगा। मैंने इन्हें बड़े परिश्रम से पाया है। कानूनन श्रव ये मेरी हैं।" वह मुहरों पर पेट रखकर श्रोंचे लेट गये।

वह श्रनुभव करने लगे कि कोई उनके शरीर पर हाथ फेर रहा था। उन्होंने चाकू उठाने की कोशिश की, परन्तु हाथ न हिला, चिल्लाना चाहा जवान बंद, उठकर भागना चाहा, किंनु सब श्रंग जकड़ा हुश्रा था। वह पसीने में स्नान कर रहेथे। मुख काला पड़ गया था। वह बहोश हो गये श्रीर मुहरों पर से एक श्रोर को लुढ़क पड़े। के के सेठानी ने देखा ऋाज सेठजी को उठने में देखा ऋाज सेठजी को उठने में देर क्यों हुई ? क्या पता तिबयत ऋधिक खराब तो नहीं हो गई ?

वह नीचे उतरी । बैठक के दरवाजे को धक्का दिया तो किवारें खुल गईं। सामने मुहरों का ढेर जगमगा रहा था। उन्होंने द्वार बन्द कर लिया। ढेर के एक स्रोर सेठजी की लाश पड़ी थी। एक स्रोर एक खुला चाकू पड़ा था। इसके ऋतिरिक्त बैठक का स्रोर कोई परिवर्त्तन उन्हें दिखाई न पड़ा।

वह इस पद्देली को हल करने की कोशिश करने लगीं।

## मेरे आंसू

[ श्री ईश्वरचन्द्र पाण्डे ]

ए भेरी आखों के ऑम् ! बहा, बहा, दिल खोल बहा ! याम यहां है, तुम्हें, अभागा ! बहा, बहा, हां — बहा, बहा ! रहां न च्या भर शाना तुम्हें आता है बहना, बहा, बहा ! जला भूनी आशाओं को ले — जितना चाहा बहा, बहा !

नहीं ज़रा ऋधिकार धृदय का दर्द खोलने का मुक्तको । भीन-मन्त्र हैं लक्ष्य, नहीं आदेश बोलने का मुक्तको । अपने मन के मार रहा हूँ जुल-युल पर तुम बही, बही ! काम यही है तुम्हें अभागा ! बही, बही हाँ — बहो, बही !

> क्या विनाद ? क्या शान्ति भीर आनन्द ? इन्हें जाने देा तुम ! रखा वेदना का हालाहल, इन्हें चढ़ा जाने देा तुम ! कसक-टास सब सहो, न निकले हुक ज़रा भी सहो, सहो ! काम यहां है तुम्हे अभागा ! बहो, बहा हां — बहो, बहा !

धभक रहा है उर के भीतर ज्वालामुखी धभकने दा। प्रलय मचादे कहीं — इसे मत फटने दो, मत फटने दो ! इसीलिये तो कहता हूँ, ए मेरे आँस् ! वहो, वहो ! काम यही है, तुम्हें, अभागो ! वहो, वहो हाँ — वहो, वहो !

## ओ, देश के युवक और युवतिओ !

श्रीरमेशचन्द्र भार्थे

में 'लेखकांक' के लिये क्या लिखें ? भाई यशपालजी का तकाजा है। टाल भी तो नहीं सकता। इसी उवेड़-बुन में था कि एक महाशय कार्यालय में आये और बोले-अखवार में यह खबर निकाल दीजिए कि "...लड़की की इच्छा के प्रतिकृत उसके पिता एक बड़ी आयु के पुरुप के साथ शादी कर रहे हैं। कन्या परेशान श्रीर किंकर्त्तव्य-विमृद है।" मैंने सोचा इससे क्या लाभ ? केवल आखबार में यह खबर प्रकाशित होने मात्र से तो समस्या का हल नहीं हो सकता ? फिर यह कोई नई बात भी नहीं । आये दिन ऐसी घटनायें नित्य होती ही रहती हैं। अभी कल परसों की बात है-यहीं, भारत की राजधानी दिल्ली में ही मैंने एक घटना सुनी थी। एक यवा कन्या ने खेच्छा से श्रपना जीवन-सहचर चुन लिया है। घरवालों पर यह बात प्रकट भी करदी गई : लेकिन वह भला क्यों मानने लगे ? इधर लड़की ने भी भीपण प्रतिज्ञा करली है-'यदि वहीं पति मिलेगा तब तो जीवन है अन्यया मृत्यु की गोद ही भली।' अब दुसरी ओर श्राइये ! पिछले दिनों पत्रों में यह समाचार निकला ही था कि एक महाशय अपनी कन्याओं के लिए योग्य वर न मिलने के कारण हिन्द्र-धर्म को ही अन्तिम प्रणाम कर रहे हैं।

इस प्रकार हमारे समाज की व्यवस्था के

अनेक शिकार आज मिल सकते हैं। सचाई यह है कि हिंदुओं की समाजिकता सिदयों से ऐसी विनाशकारी एवं संकीर्ण हो चली है कि उसके असंख्य दुष्परिणाम हमारे स्पमने हैं, हो चुके हैं और शायद आगे भी होंगे। फिर भी कृदिवादियों की आंखें नहीं खुलतीं, यही खेद है।

स्त्रियों के प्रति तो हमारे इतने कलुधित कारनामे हैं कि जिन्हें लिखते भिभक होता है, शर्म त्राती है और सोचते हैं-काश, हम जो श्राज हैं यदि वह न होते तो ही श्रच्छा था। हमने उन्हें गुलामी का पट्टा पहनाया था, ऋपाहिज किया, ऋबला के बाद पैर की जुती तक बना डाला। वे मूर्खा रहीं, कामिमी बनी चौर पुरुषों के हाथ की कठपुतली हो गई। अब उन्हें चाहे बढ़ों से व्याहो, श्रवीध वच्चों के सिर बाँध दो या श्रव्धे. ख़िले, लंगड़े के सुपुर्व कर दो। सब-क़ब्र वरा में है न १ दुखिया की आह पर हंमा ! किश्ववा की दाह पर हाथ सका परिस्यक्तात्रीं से रंग-रेलियाँ करो हमारे लिए चम्य है ! हम सर्व शक्ति सम्पन्न जो ठहरे।-लेकिन मावधान! पुरुष समाज सावधान ! कहीं भूल मत जाना । तनिक भी इतराये तो वह मजी चलना पड़ेगा कि जन्म-भर याद रक्खोगे।

श्राज स्वतंत्रता का युग है । क्षियाँ भी समय का उपयोग करने में पीछे नहीं रह रही हैं। पश्चिम में, श्रमेरिका, इग्लेंड, फ्राँस, जर्मनी श्रादि देशों में उनकी विजय-दुन्दुभि बज चुकी है। भारत में भी सूत्र-पात हो गया है। यहाँ भी वे श्रव सो नहीं रहीं, कर्त्तव्य की श्रोर मुड़ चली हैं। श्रगर होश हो तो श्रव भी संभल जाना श्रन्यथा ये श्रवला नामधारी मूर्तियाँ यथोचित प्रसाद देने को बाध्य होंगी।

भारतीय बहिनो ! अब तुम भी चेतो ! जब तक तुम साहसी बनकर मैदान में न आश्रोगी तब तक यह निश्चित है कि तुम इसी प्रकार पददिलत होती रहोगी। अतः कर्तव्य पर हद होकर कह दो कि अपने जीवन को सुखी बनाने का हम स्वयं अधिकार रखती हैं। अगर कोई न माने तो करो इलाज ! बढ़े वर के आगे जाते ही कहो 'पिताजी, नमस्ते !' बच्चे के सामने जाते ही खेलने या खिलाने लग जाश्रो । फिर देखो. कैसे वह तुम्हें पत्नी बनाने का साहस स्थिर रख सकता है ? पिताजी भी मुँह ब्रिपा लेंगे, माताजी भी कोने में खिसक जायेंगी । उस समय तम निश्शंक सिंहनी के सदृश जमी रही । किसी की क्या मजाल जो तुम्हारी तरफ फूटी झाँख भी देख जाय ? 'वीर भोग्या वसुन्धरा ' इस तथ्य को साथ लेकर जब तक आगे न आस्रोगी तब तक ठीक इलाज होने का नहीं । इसलिये दृदता के साथ त्रागे क्रदम बढ़ात्रो । ये सारी गड़बड़ियाँ तब स्वयं ही मिट जार्येगी। नहीं तो तुम्हारी सहानुभूति में ऐसे एक नहीं अनेक समाचार भी यदि श्रास्त्रवारों में छप जाँय तब भी कुछ भला होने का नहीं।

#### प्रणय रात्रि

श्री ग्रविनाशचन्द्र पाण्डेय 'चातक' ]

उस दिन सूर्यास्त से वर्ण होने लगी। कोधित वायु के ककोरे और भी कोधातुर हो चले। वृत्त पर लगे हुये सुन्दर-सुन्दर पत्तों की हरियाली उन्हें सहा कहाँ थी ? नोंच-नोंच कर बेचारों को पृथ्वी पर गिरा ही तो दिया और न जाने क्यों समीपवर्ती सरोवर को छलछलाती हुई लहरों से अशान्त कर दिया ? वह भी क्या मुक्त दुखिया का हृदय था ? मैं अपने कमरे में सम्पूर्ण दु:खों का जो आगार अपने भीतर छिपाये बैठा था, बाहर प्रकृति उसे प्रकट कर देने के लिये दर्पण स्वरूपा बन गई—अशांत, बिल्कुल अशांत!

\* \* \*

मेरे हृदय-विदारक दुःख को देखकर द्वार भी विद्या उठा। मैंने वृमकर देखा, वह वही थी—मेरी प्रियतमा।...नहीं नहीं, ऋब वह मेरी कहाँ थी ? कमरे में पदार्पण करते ही उसने वहाँ का सम्पूर्ण वातावरण परिवर्तित कर दिया। उसने द्वार को खूब सटा कर बन्द किया मानों उस प्रलयकारिणी प्रकृति को बाहर ही मूँद दिया हो। अंगीठी जला कर कमरे को गरम और प्रकाशमान बना दिया, ऋपना भीगा हुआ शाल मटककर खूंटी पर लटका दिया, दस्तान एक आर डाल दिये और अपने लम्बे सटकार बाल नीचे लटका दिये। उन पर जल-विंदु मोती के समान मिलमिला रहे थे। वह मेरे पाम बैठ गई और मुझे सम्बंधित किया। मैं इस अनहोनी घटना पर चुपचाप मंत्र-

मुग्ध सा बैठा रहा। कभी स्वप्त में भी मैंने यह आशा न की थी कि वह ऋायेगी तो क्या, मैं उसे कभी देख भी सकूंगा।

उसने मेरा हाथ अपने एक में ले लिया श्रीर दूसरे से श्रपना गीर वर्ण कंधा खोला, ऋपने बालों को, जो उस पर बिखरे थे, हटाया श्रीर मेरे कपोल को वहाँ रखकर केशों के भूरे रेशमी परदे से ढाँप दिया। इसके परचान उसने धीमे स्वरों में मुक्त से कहना प्रारम्भ किया, "मैं तुम्हें प्रेम करती हूँ—बहुत श्रधिक प्रेम ! किंतु तुम जानते हो मैंने श्राज तक क्यों नहीं बताया-- क्यों मैंने चुपके ही चुपक अपना सर्वस्व तुम्हारे अर्पण कर दिया? मे उच कुल में जन्मी हूँ--उसकी मर्यादा, दाम्पत्य प्रेम का उच्च ऋादर्श, ज्ञागभंगुर संसार के थोथ ले नियम तथा मामाजिक ऋढियां इन मत्र की तोड़ने की शक्ति मेरे निर्वल स्त्री हृदय में कहाँ थी ? इनकी वेदी पर मैं तुम्हारे स्वर्गीय प्रेम की अहित देती रही--हाँ ! स्वर्गीय प्रेम की आहित !!

मेरा हृद्य चाहता था कि मैं खुल्तम खुड़ा— संसार के सामने—तुमसे प्रेत कर सर्ह । श्रन्तन: मैंने श्रपनी दुर्वलता से घोर युद्ध करके उस पर विजय प्राप्त की हैं। श्राज एक दावत में बैठे बैठे सहसा मुझे तुम्हारा ध्यान श्राया। तुरन्त ही मैं व्याकुल हो उठी। इसी वर्षा श्रीर तृकान की व्या-मात्र भी चिंता मुझे न व्यापी। मैं तुम्हारे पास चली श्राई।" वह कुछ चए को रुक गई। फिर एक ठंढी सांस खींचकर मेरी श्रोर देखते हुये कहना प्रारम्भ किया, "संसार की स्त्रियाँ प्रियतम को रिमाती हैं—उन्हें प्रसन्न रखने की चेंड्या करती हैं। किन्तु एक में हूँ—हतभागिनी कहीं की—जिसने तुन्हें सदैव दुःख ही दिया है। इसीलिये तो तुन्हारा फूल सा सुन्दर तथा कोमल मुख कुन्हला कर पीला पड़ गया है।"

मैंने सगर्व दृष्टि से उसकी श्रोर प्रसन्नतापूर्वक देखा। यह मुझे श्राज ही ज्ञात हुशा कि
वह भी मुक्त से प्रेम करती है—केवल श्राज ही।
मेरा मन उल्लास श्रोर श्राश्चर्य से सराबोर हो रहा
था—मैं फूला न समाता था। मैंने उसे श्रपने
वत्तस्थल से चिपटा लिया, श्रपनी खोई हुई
सम्पत्ति को सदा के लिये सुरत्तित कर लेने को,
मानों मैंने खूब बलपूर्वक दवा कर उसे श्रपने
हृद्य की तंग कोठरी में बन्द कर देना चाहा।
श्राज वह मेरी है—समूची मेरी! कितनी पवित्र
तथा शुभ्र मूर्तिमान स्वर्ग की देवी है मानों वह!!

यह संसार उसके लिये उपयुक्त स्थान न था—वह स्वर्गीय थी। मेरे बाहुपाश, जिनसे मैंने उसे कसकर जकड़ रक्खा था, ढीलं हो चले। मैं विचार-धारा में वह चला। स्त्राज वह मेरी है। स्त्राज ही मेरे प्रेम ने उसके दुर्बल हृद्य पर विजय पाई हैं, वह फिर भी तो पराजित हो सकता है। उसका दाम्बत्य कर्त्तव्य, समाज का भय सब मेरे समज्ञ विकराल रूपेण नर्तन करने लगे। सम्भव हैं कि कल वह मेरी न रह जाय। विचार पलटने पर वह फिर मेरी कभी न हो सकेगी। किन्तु ऐसा तो मैं कभी होने ही न दूँगा। वह मेरी है स्त्रीर जीवनानत तक मेरी ही रहेगी।

उसके गले में बलखानी हुई सुन्दर केशों की वेगी जो मैंने स्वयं ही गूंथी थी, मेरे नेत्रों का आकर्षण बनी हुई थी। उसी की श्रोर निश्चल हृष्टि से देखता हुश्रा मैं यह सब सोच रहा था और उसे ही देखते-देखते मैंने उपाय सोच कर काय रूप में परिएात भी कर डाला।

वह मेरे पास सो रही थी। उसे कोई कष्ट नहीं प्रतीत होता था—वह परम सुली थी। उसके नेत्र-कमल मुंद रहे थे किन्तु भौरा भीतर ही गूंज रहा था। मैंने धीरे-धीरे उन्हें खोला मानों वे हँसते थे। उनसे शान्ति तथा प्रसन्नता छलकी पड़ती थी। उसके सुन्दर कपोलों पर यौवन की लालिमा छाई थी। उसके लजीले अधरों को बिचुन्त्रित कर, सिर को मैंने अपने कंचे पर रख लिया। जीवन में पहिता ही बार यह सौभाग्य सुष्ट्रा मिला था।

उसने भी श्राज सम्पूर्ण वाधाश्रों का दमन करके अपने प्रियतम को सदा के लिये पा लिया । इसी प्रसन्नता से श्राज उसका सुन्दर मुख खिलखिला रहा है । वह श्राज कितनी प्रसन्न है ? उसकी एकमात्र श्रीभजापा पूर्ण हो गई ।

हम दोनों सारी रात उसी प्रकार जकड़े बैठे रहे—बह बिल्कुल निश्चल थी। एक बार आँख मूंद कर फिर उसने खोलीं ही नहीं। इस स्वर्गीय देवी के अपूर्व मिलन पर मैंने सोचा था कि कोई स्वर्गीय देवता अवश्य हमें बधाई देने आवेगा। किन्तु यह मेरा अनुमान मात्र ही निकला। रात्रि व्यतीत हो गई, न कोई आया न गया।—

\* \*

मेरे इस जीवन की यह सर्व प्रथम और अन्तिम प्रण्य गाँत थी। उसे अब समाज का भय है न उरच कुल का मान। अपने दाम्पत्य जीवन के कर्तव्यों से भी वह मुक्त है। उसके विचार पलट कर, मंसार की वड़ी से बड़ी शक्ति भी अब हमें प्रथक नहीं कर सकती। शीघ ही स्वर्ग में हम दोनों का पुनर्मिलन होगा—नितान्त स्थाई तथा अट्ट!—

#### मां की याद

#### [श्री ऋोनिला पाठक ]

8

बीते कितने दिवस और में ! बोत गई अब कितनी रातें। फिर भी नहीं भूल पाई हूँ , प्यार भरी में तेरी बार्ते।

Ę

सुनती थी मैं जिसे चाव से वहीं न भाती आज कहानी ! जो सुमको प्यारे लगते थे , अब न सुदाने "राजा-रानी" । ş

चाची यह कह कर फुसलाती, "अम्मा गंगा गई नहाने" कहतीं—"अभी आ रही होंगी गई दुई हैं नीर चढ़ाने।

ोग हो

में। तू मेरा हाथ पकट कर देवी के मन्दिर ले जाती बांद पकड कर बड़े प्रेम से टन, टन,टन धंटा बजवाती।

£q.

क्यों तु छोड़ भकेला मुसको चली गई मां सोते-सोते। एठ कर फिर न सो सकी हूं, थक गई रात-दिन रोते-रोते । ٩

गंगा पर या मन्दिर में ही क्या इतने दिन है लग जाते ? जब गई में गिनते-गिनते, फिर भी बीत नहीं वह पाते :

9

सोते-जगते स्वाने-पीते

में हूं उनको देखा करती।
कहां गई वह अम्मा मेरी
भी जो सब दुखों को हरती?

२१२

ς

"सो जा रानी, सो जा बेटी" कह कर चाची मुक्ते सुलाती उनकी यही लोरियां मुक्तको भ्रम्मा तेरी याद दिलातीं । जिसे चूम कर सुखद भोर में मां तुम मन में प्रमुदित होती, वहला-बहला कर धीरे से स्लेह-सहित मेरा मुख धोती ।

१०

श्रद न जगाने श्राता कोई पड़ी देर तक रहती सोती श्रपने सूखे में मुंह को मैं। रहती हूं श्रांसू में धोती।

११

श्रंचल से मुंह पोंछ प्यार में काजल जिनमें रोज लगानी, वही श्रामाणिन श्रांखें श्रमा मूजगई श्रम बहुत पिराती । १२

दूर-दूर थी भागी फिश्ती तुम गोदी में पकड़ विठाती, "ना-ना" करने पर भी थीं तुम मुके मिठाई निरी खिलातीं ।

१३

भाज न मुक्त को कुछ भी भाता लट्ड — पेड़ा भ्यालू — रोटी, सा घर लगता है मूना-सा लगती हैं सब बातें खोटी ।

88

भाप अनेलो बैठी-बैठी मैं चौखर पर रोती रहती, भाती ही होगी अस्मा जी यही निरस्तर भाशा रहती। 2 4

शाम हो जली भव बखड़ों से — बिछड़ी गायें मिलने भ्रातीं, म्हां-म्हां कर श्री' रंभा-रंभा कर भ्रम्मा तेरी याद दिलातीं।

१६

श्रम्मा नी श्रव रहा न जाता रात हो चली श्रव ता श्रात्रो, बहुतरी चुकी विलख-बिलख कर में। छाती से मुफे लगाओ ।

#### राज कवि मुंशी अजमेरी जी

[श्री विष्णु]

चिरगाँव निवासी मुँशी अजमेरी श्रोरछा नरेश के राजकविथे। गत उपेष्ठ की पहिली प्रतिपदा को ही आपका स्वर्गवास हुआ है। उस समय आप केवल ४४ वर्ष ही के थे।

वैसे तो आप सत्कवि थे परन्तु आप ने लिखा कम ही है। हेमल सत्ता, गोकुलदास आदि ही उनकी प्रसिद्ध किवता पुस्तकें हैं। कुछ दिन 'सूरसागर' का सम्पादन भी आपने किया था। शिवल साहित्य की ओर आपका विशेष रुभान था। बच्चों के लिए रामायण भी वह लिख रहे थे। उसके कुछ आंश हमने 'मुधा' में पढ़े थे। भाषा पर उनका अपना अधिकार था। अज भाषा, राजस्थानी और आजकल की हिन्दी में वे समान रूप से किवता रच सकते थे। स्वर्गीय साहित्याचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा के स्वर्गवास पर आपने 'पुनवन्तो पद्म' नाम की किवता डिंगल भाषा में लिखी थी। उसके दो एक छन्द हम यहाँ लिखते हैं:—

पायो पदम पमान, छीलो दे सागर छल्यो, आछोड़ा अमरान, रूप सगहे राजवो । दर्ब सक्यों नदी देख, मागर रे। सोजाग-सुख; लिस्या बेहरा लेख, कुण अस्दर कुटा करें। सोगानयों सगायाट, माच्यों सारे भोनसर; भंवर करें सगायाट, हावई हा जरता हुआ।

वे हिन्दु थे या मुसलमान इसमें सहा है। शंका रहती थी। सच तो यह है हम उनके स्वर्गवासी होने पर ही ठीक-ठीक जान सके कि वे वास्तव में मुसलमान थे। हमने तो सना था वे हरि-कथा किया करते थे। संस्कार स वे वैष्ण्व थे। उनसे कहा गया — "मुन्शी जी आप शुद्ध होकर हिन्दू हो जाइए, विचारों से आप हिन्दू हैं ही।" उन्होंने उत्तर दिया—ऐसा मुफ्तें अशुद्ध क्या है जो मैं शुद्धि कराने जाऊँ। स्व० पद्मसिंह शर्मा जी ने तो आपसे कहा भी था — 'शुद्ध हुए लोगों से तो मुझे घृणा होती है पर आपके साथ भोजन करने में मुझे आनन्द आता है। उचिकत्व आपका खरा था।

भारत के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि श्री मैथिली-शरण गुप्त तथा उनके परिवार से मुन्शी जी का जो सम्बन्ध था वह नाते रिश्ते की सीमा से कहीं स्रागे बढ़ा हुस्रा था। कहते हैं मृत्यु की गोदी में जाते जाने भी वे चिल्ला उठे थे — मैथिली शरण. मैथिलीशरण । यह गीरव ही का विषय है कि जो कुछ भी उन्होंने लिखा उसके पीछे। श्री सियागम शरण जी गुप्त ही की प्रेरणा काम करती थी। प्रेरणा के भण्डार में कवि भी हमारे धन्यवाद के श्राधिकारी हैं। सियाराम शरणजी ने उनकी मृत्य पर एक मार्मिक लेख जुलाई के 'हंम' में लिखा है। वे लिखने हैं--- कवित्व उनके लिए स्वामाविक होने के कारण ही सम्भवतः उसकी श्रोर वे यथोचित ध्यान न देसके। स्वयं लिखने की श्रपेत्ता दूसरों की रचना में मंशोधन करने श्रीर उन्हें उचित सलाह देने में ही उनके कविन्य का सन्तोष हो जाता था।

द्याज कल के साहित्यकों में इस वात का पूर्णनः त्रभाव है तभी उनकी मृत्यु हमें विशेष रूप से खटकती है।

# जीवन-सुधा⊷→



स्वगाय मुन्छा श्रजमेरी जी



श्री रमेशचन्द्र आर्य



श्री स्रोम्प्रकाश शास्त्री

#### सफल प्रेम

श्री बजरंगलाल सुलनानिया ]

(8)

युवक सरिता-तट पर बैठा हुआ स्कटिक से स्वच्छ जल में सांध्य गगन के पिथक का अपूर्व मनोरम दृश्य देख रहा था। जल में सूर्य की लाल किरगों अठग्वेलियां कर रही थीं। सूर्य का धीरे धीरे हिलता हुआ चए भर में तेज की कमी के कारण पीला होता हुआ मुख सरित-गर्भ में एक अनुलनीय सौंदर्य की सृष्टि कर रहा था। आकाश पर दृश्य बदलते थे और जल में उनके प्रतिबिम्ब। यदा-कदा छोटी छोटी मछलियां दीख जाती थीं जिनका कर्त्वच ही जल-प्रवाह, काट कर रंगरेलियां मचाना था। युवक आनन्द में मग्न हो रहा था। एक तरह से मन ही मन उसने नित्य ही इस दृश्य का निरीक्षण करने का संकल्प कर लिया।

जहाँ पर युवक वैठा था—वहाँ से कुछ दूर हट कर एक घाट था। पका घाट नहीं—कच्चा घाट, प्रातःकाल गांव की कुछ स्त्रियां वहाँ स्नान करने श्राती थीं। वह स्थान जहाँ समतल था श्रतः उसे ही घाट का नाम दे दिया गया था। युवक ने घाट की श्रोर देखा—एक सुन्दरी घुटने तक जलमें बैठी हुई मुककर घड़ा भर रही थी। वह एक सफेद साड़ी पहने थी जो शायद श्रपने ही हाथों धोई गई थी। साड़ी का पहा सिर से खिसक कर कंधों पर श्रा गया था। उसका सिर नीचे की श्रोर भुका हुआ था—जल में कांपता

हुआ उसके सुन्दर मुख का सुन्दर प्रतिबिम्ब युवक को साफ साफ दिखाई दिया। उसके शरीर पर गहने न थे—पैरों में शायद मामूली छड़े रहे हों—पर वे जल में होने के कारण दीख नहीं रहे थे। वह लापन्वाही से जल भर रही थी। युवक उसकी स्रोर देखता ही रह गया।

घढ़ा भर गया था। उसने उसे लाकर किनारे पर रख दिया और खड़ी होकर चारों ओर देखने लगी। युवक उसी ओर देख रहा था। चार्य भर उसने भी युवक को देखा। दोनों एक दूसरे को देखते रहे फिर युवक ने आंखें फेर ली और जल की ओर देखने लगा। वह जल में उसके मुख का प्रतिबिम्ब देखने का लोभ संवरण न कर सका था।

युवती उसे देखकर जरा लजाई। सिर से खिसकने वाली साड़ी को उसने ठीक कर लिया। किर नीचे देखती हुई चुपचाप घड़ा उठाकर चली। युवक उसे जी भरकर देखना चाहता था। न जाने क्यों उसका मन उसे देखते रहने का इच्छुक हो गया था। उसने अपने को समकाया—किसी अपरिचित स्त्री की श्रोर देखना पाप है।

मन ने सात्विकता से उत्तर दिया—'शुद्धभाव से प्रकृति के सींदर्भ का निरीक्षण करना पाप नहीं।'

मन ने उसे समभा दिया। यदि वह चाहता

जीवन सुधा

तो इस पर और भी तर्क कर सकता था। तर्क करने के लिये बहुत जगह थी। शायद वह तर्क में मन को परास्त भी कर सकता; पर यहाँ पर उसने मन की बात मान ली। मानता कैसे नहीं— मन ने उसके श्रमुकूल ही तो बात कही थी। वह भी तो युवती को जी भर कर देखना चाहता था। केवल यही एक श्राशंका थी उसे मन ने दूर कर दिया श्रीर नेत्रों ने श्रपना कार्य श्रारम्भ कर दिया।

वह कुछ दूर जा चुकी थी। आखिर इस तर्क-विर्तक में कुछ समय तो लगा ही होगा। उसे क्या आवश्यकता थी कि इस तर्क का अन्त होने तक खड़ी रहती! वह चलती गई और तर्क होता रहा। तर्क समाप्त होने तक उसका कुछ दूर चले जाना अनिवाय ही था और वह जा भी चुकी थी।

युवक ने उसकी श्रोर देखा- घड़े की कमर पर रक्खे मंथर गति से वह चली जा रही थी। उसकी दृष्टि नीचे की ऋोर थी पर पृथ्वी पर नहीं। वह इस समय विचार-मग्न थी--जाने क्या सोच रही थी। दृष्टि नीचे की ओर होते हुए भी उसे पृथ्वी की कोई चीज दिखाई न देती थी। इस समय वह इस कोलाहलमय संमार से वहुत दूर-- स्वप्त-संसार के शांत वातावरण में विचरण कर रही थी। उसके संसार में इस समय केवल वह श्रीर उसके विचार थे-श्रीर कोई भी न था। वह विना विचारे चली जा रही थी। रास्ते की श्रीर उसका ध्यान भी न था। राम्ता ब्रुट जाने का ध्यान उसे उस समय ऋाया जब वह सामने के वृत्त से टकराती टकराती बची। उसने धूम कर देखा—रास्ता पार करके उसकी नजर नदी के किनारे तक पहुंची। युवक वैठा था; पर् नदी की श्रोर दृष्टि करके नहीं, उसी श्रोर देखना हुआ। अपनी इस चेप्टा को छिपाते हुए वह पथ की त्र्योर घूम पड़ी श्रीर उसी चाल से श्रमसर होती रही ।

युवक उसे देखता रहा,—जब तक वह आँखों से श्रोभल न हो गई। उसके श्रदृश्य होने के बाद वह बड़ी देर तक वहीं बैठा उसके बारे में सोचता रहा। सूर्य्य डूब चुका था—श्रंघेरा भी हो गया। श्राकाश पर यत्र तत्र एकाध तारे भी दीखने लगे। युवक भारी हृद्य से चुपचाप उठ कर घर की श्रोर चला। वह विचार-मग्न था।

माता ने कहा—'भोजन कर लो।' युवक ने उत्तर दिया—'भूख नहीं।' भाभी का आमह था—'कुछ तो खाही लो।'

युवक ने करुणा श्रीर दु:ख से भरी लाल श्रांखें खोल दीं। भाभी घबरा उठीं। पिता ने श्राकर पूड़ा—'क्या बात है ?'

युवक ने संज्ञिप्त उत्तर दिया—'कुछ नहीं, जरा सिर में दर्द है ।'

भनी का एकलीता बेटा, सुशील श्रीर सुशिज्ञित—माता पिता जान देते थे। सिर में दर्द सुनकर सन्न रह गये। डाक्टर श्राया, द्वा दी श्रीर चला गया। माता के जागरण का सामान हो गया। युवक चादर में मुंह लपेट पड़ा रहा—शायद सारी रात जागता ही रहा। सुबह उठा—शायद सारी रात जागता ही रहा। सुबह उठा—शांखें लाल थीं, सिर जल रहा था, बुखार का श्रेशा हुआ। डाक्टर को फिर बुलाया गया। वह भामुली बुखार हैं —कहकर कीस लेकर चला गया। पर माता का परितोप तो भामूली बुखार हैं कहने से नहीं होता। वह तो साचता है —'वुखार हैं कहने से नहीं होता। वह तो साचता है क्यों ? श्रपने पुत्र का जरा सा कष्ट देखकर ही उसकी श्रातमा रो उठती है।

जरा देर में ही गाँव भर में यह खबर फैल गई कि पिण्डत चन्द्रधर श्रमी के पुत्र विमलकुमार को गत से ही बुखार है। पिण्डत जी धनी थे, नम्र थे, मिष्ट भाषो थे। सभी से उनका मेल था। जिसने विमल की बीमारी की खबर सुनी वही देखने गया। रजनी की माता ने उससे कहा—'बेटी, सुना है पिएडत चन्द्रधर जी के पुत्र को बुम्नार है। मेरी तबीयत भी खराब है—नहीं तो में ही जाती। जा, तू ही चली जा। विमल की मां से पूछ श्राना श्रीर देखती श्राना कैसा है। बेचारा परसों ही तो श्राया श्रीर श्राज ही बीमार भी पड़ गया।'

रजनी ने विमल की मां से जाकर पूजा — 'चाची जी, विमल कैसे हैं ?'

'वैसा ही है, बेटी। देख ले, उस कमरे में है।'—किसी दवा की तलाश करती हुई इशारे से कमरा दिखला कर विमल की माता बोलीं।

रजनी कमरे में चली गई। विमल सिर तक स्रोड़ कर लेटा था। भाभी सिरहाने बैठी थीं। रजनी ने पूछा—'क्या सो रहे हैं? कैसी तिबयत है।'

विमल ने चादर सिर से हटादी । रजनी चौंक पड़ी । विमन विस्कारित नेत्रों से देखता ही रह गया । भाभी आश्चर्य में डूब गई, रजनी चीख उठी । विमल आवाक रह गया । भाभी ने विस्मय के समुद्र में इबते उतराते पूजा—'क्यों क्या बात है ?'

रजनी ने बात बनायी—'इनका तो एक ही दिन में चेहरा बदल गया।'

विमल ने श्रिपाया—'भाभी, दर्द ज्यों का त्यों है।'

भाभी का परिताप हो गया। रजनी भाभी के पास जा बैठी। विमल के सिर पर हाथ रखकर देखा—तबे की तरह जल रहा था। विमल ने मन ही मन स्वर्गीय सुख का श्रनुभव किया।

विमल ने कहा-'भाभी पानी लादी ।'

भाभी पानी लेने चली गयीं। विमल ने आँखें खोल दीं और चुप चाप रजनी की और देखता रहा। फिर होठों पर सूखी हंसी लाकर बोला— 'तुम्हारा नाम!'

रजनी ने शर्मा कर उत्तर दिया—'रजनी।' विमल ने कहा—'नहीं,च न्द्रिका।' रजनी कुञ्ज न बोली। विमल उसे ही देखता रहा। वह पृथ्वी को देखती रही। भाभी पानी लेकर आयीं। विमल ने नाम करने के लिये पानी पिया फिर ग्लास रखने एक और को भुका। रजनी ने बढ़कर ग्लास हाथ से ले लिया। विमल बोला—'यह क्या करती हो ?'

रजनी ने भी यह बात सुनी श्रीर भाभी ने भी, पर दोनों ने इसके दो श्रर्थ निकाले । रजनी ने इसे प्रिय-सम्बोधन जाना श्रीर भाभी ने केवल सभ्यता-जनित सुवाक्य !

रजनी चली गयी। विमल ने भाभी से गम्भीर होकर पूज्ञा—'यह कौन थी, भाभी ?' 'रजनी'

'ऋोह, मैं नाम नहीं पूछता। परिचय पूछता हूँ।'--भाभी के चेहरे पर विमल ने टिब्ट गड़ाकर पूछा।

भाभी ने सरल भाव से उत्तर दिया—'वड जो गाँव के कोने पर बृद्धिया रहती है-वही वेचारी ठक्रगइन जो परसों ऋपने यहाँ ऋाई थी। उसी की लड़की है। बेचारी बुढ़िया बहुत ग़रीब है। किसी समय उसके पास भी पैसा था। पति सेना में सुबेदार था। महीने महीने खर्च आता था। एक बार वह लड़ाई पर गया। रजनी उस समय दो साल की थी। एक दिन तार आया-'रजनी के पिता की लड़ाई में मृत्यु होगई ।' वह बहुत रोई। सरकार से कुत्र रूपये मिले । कुत्र दिन काम चला। अववह पीस कूट कर गुजर करती है। रजनी इतनी बड़ी हो गई। इसका ब्याह कैसे करे ?'—भाभी रजनी की माता की रारीबी का वर्णन करने लगीं। सबकुद्ध विमल सुनता रहा-पर वे मन से। मुख्य बात तो उसे माल्यम हो ही चुकी थी। रजनी—नहीं उसकी चन्द्रिका-का परिचय उसे माॡम हो चुका था श्रीर यही वह चाहता भी था।

विमल धीरे धीरे अच्छा हो चला ।

(२)

एक दिन विमल टहलता टहलता रजनी के घर की छोर चला गया। द्वार पर उसकी बुढ़िया माँ बैठी हुई थी। विमल को देख कर बोली—'श्रव कैसी तबीयत है, बेटा १ मैं उस दिन श्रस्त्रस्थ होने के कारण तुम्हें देखने न जा सकी।'

'श्रच्छा हूँ माता जी, श्रापकी कृपा से बीमारी दूर हो गई।'—उसके सामने जाकर विमल बोला।

इतने में विमल की त्रावाज सुनकर रजनो काहर ऋहि।

बुढ़िया बोली—'रजनी, चटाई विछादे श्रोर थोड़ा सा ताजी पानी ला ।'

रजनी घर की ओर मुझी। विमल उसी की श्रोर देख रहा था। रजनी ने पीछे घूम कर देखा। विमल मुस्कराया, वह भी मन ही मन इंसती हुई भीतर घुस गई।

रजनी ने चटाई बिछा दी—यह चटाई बुदिया ने बहुत दिनों से बचा रक्खी थी । यदा- कदा ही बहु इसे बाहर निकालती थी । रजनी घड़ा लेकर पानी लाने चली। विमल ने कहा— 'सैं जरा घूम आता हूँ, माता जी। डाक्टर का आदेश हैं।'

बुदिया ने कहा—'रजनी पानी लाती है। पानी पी लेना तब चले जाना।'

'मैं स्रभी श्राता हूं । रात हो जाने से देर हो जायगी ।'

विमल रजनी की ठीक विपरीत दिशा में चला पर कुछ ही दृर जाते जाने देग्नों मिल गये। विमल ने नजदीक जाकर रजनी के कंघे पर हाथ रखते हुए कहा—'चन्द्रिका!'

रजनी ने जरा मुक्करा कर गर्दन घुमा ली श्रीर विमल को देखते हुए बोली—'नहीं, रजनी!'

विमल ने छड़ी धुमाते हुये कहा—'किन्सु में चन्द्रिका ही कहंगा।' रजनी ने जरा इंसफर कहा—'बच्छा यों ही सही।'

फिर दोनों नदी के तट पर गये। नदी के जल में पैर डालकर दोनों बहुत देर तक पास पास बैठे हुए बार्ने करते रहे। सूर्य देव श्वास्ताचल को चले गये। श्वांचेरा हो चला। रजनी घड़ा उठा कर घर की स्रोर चली। विमल ने कहा — 'पहुँचा श्वाऊ'?'

'रहने दीजिये। सदी पड़ने लगी है। एक दिन जरा देर बाहर रहे थे तो सिर में दर्द होने लगा था और एक हफ्ते तक पड़े रहे थे। देर हो जाने से श्राज भी कुछ गड़बड़ न हो।' रजनी खिलखिला कर हँस पड़ी।

विमल ने मुक्तराते हुए कहा — 'श्रगर किस्मत ऐसा जोर मारा कर तो में नित्य ही बीमार पड़ा करूं।'

रजनी ने स्तेह-जनित तिरस्कार से कहा --धत ! ऐसी बार्ने नहीं कहा करते । बीमार पड़ें तुम्हारे दुश्मन ।,

विमल अपने घर की ओर चला गया श्रौर रजनी श्रपने घर की श्रोर।

दूसरे दिन फिर दोनों नदी के तट पर मिले और बड़ी देर तक बार्ते करते रहे। दोनों एक दूसरे के प्रति खिंच गए थे। विमल ने कहा — 'चन्द्रिका, में तुम्हें प्यार करता हूं।'

रजनी हँसी श्रीर दिल खोलकर हँसी। विमल ने पृद्धा -- 'हँसती क्यों हो ?'

रजनी ने कहा — 'क्योंकि तुम मुझे प्यार करते हो पर मैं तुम्हें प्यार नहीं करती।'

विमल अवाक होगवा। उसे अपने कानों पर विश्वास ही न हुआ। उसने रजनी का कंघा पकड़ कर उसे मकमोरते हुए कहा — 'क्या ? क्या यह सच है ? बोलो, शीघ बोलो !'

रजनी श्रीर भी जोर से हंसी।

विमल सशंकित होगया। बोला—'श्रव क्यों हंसी ?' 'तुम्हारी दशा पर । तुम भी मजाक को सच मान लेते हो । सचमुच विमल, तुम्हारा सा भोला मनुष्य मैंने चाज तक नहीं देखा।'

विमल लिजित होगया—'सच ही तो, इस जरा से मजाक को भी मैं न समफ सका। मैं बड़ा मूर्ख हूं।'

फिर बोला—'तो क्या यह सच है कि तुम मुझे प्यार करती हो!'

यह भी कहने की वार्ते हुआ करती हैं! अपने हृदय से पूछो!'

विमल प्रेम से विद्वल होगया। बोला— 'रजनी' तुमने मुझे जीबित कर दिया। मैं यह बात ऋपने मुंह से निकालते बड़ा डर रहा था।' रजनी ने कहा — 'पर एक बात है।'

शंकित सा होकर विमल बोला — 'बह क्या ?'

'यही कि समाज हमारे श्रेम की कर्जांवत यतलायेगा। समाज में रह कर कोई किसी विजातीय से श्रेम करने का ऋधिकारी नहीं।' —विमल पर हाँच्ट गड़ाते हुए रजनी बोली।

विमल कुछ चिन्तित सा हुआ। फिर बोला--'पर रजनी! क्या समाज से ऋलग नहीं हो सकते ?'

'ऐसी कल्पना भी न करना' विमल। समाज से निकल कर भला हम कहाँ जायंगे।'— चिन्ता कुल स्वर में रजनी बोली।

'श्रच्झा तो मैं इस पर विचार कर के तुम्हें फिर बतलाऊंगा।' — विमल उठकर चला। रजनी भी श्रपना घड़ा भर कर चली।

( ३

विमल के पिता चिन्तित सी दशा में मेज के सामने बैठे थे। उनके सामने एक पत्र पड़ा था। वे रह रह कर उसे पढ़ने लगते थे। इस समय उनके मन में गहरा विष्लव मचा हुआ था। वे बीच बीच में बड़बड़ाने लगते। आँखें बन्द करके कुछ सोचने लगते फिर कुछ उदास से हो जाते।

उनके माथे पर बल पड़े हुए थे। आज उन्होंने दोपहर को ओजन भी नहीं किया था।

विमल की माता ने श्राकर पूड़ा — 'क्यों, उदास क्यों हो ?'

पंडित जी रो से पड़े। बोले — 'बड़ी विकट समस्या है। एक श्रोर समाज है श्रीर एक श्रोर पुत्र। बोलो — क्या करूं? यह विमल का पन्न है। उसकी दशा को तुम देख ही रही हो।'

विमल की माता ने पत्र को पढ़ा और वे भी चिम्ला-मस्त हो गयीं।

पंडित जी फिर बोले — -'त्रोलें, सुम्हीं क्ललाको।'

'मैं क्या वताऊ"। श्राप ही सोचिये। मैं तो सममती हूं विमल को बुला कर परिस्थिति सममा दीजिये। लड़का है, मान जायगा।

'नहीं, यह वात नहीं है। मैं उसकी हालत जानता हूं। क्या तुम उसे इतना विवेकहीन समभती हो। उसने बहुत कुछ सोचने के बाद ही यह पत्र लिखा है। उसके विचार भी मैं जानता हूं।'

'तो क्या समाज को छोड़ दीजिएगा ?'

यकायक पंडित जी कठोर हो गये। दोले — 'नहीं, यह नहीं होगा। मुझे विमल से हाथ भोना मंजूर है पर मैं समाज को नहीं छोड़ गा। मैं समाज में शान्ति बनाए रखने के लिये अपना सर्वस्व छोड़ सकता हूँ।'

विमल की माता घत्ररा गयीं। पंडित जी का यह भयक्कर रूप उनसे न देखा गया उन्होंने उन्हें सममाने के विचार से कहा — किन्तु.....

पंडित जी बात काट कर बोले — 'यह मेरा ऋगितम निश्चय है। मैं इस बारे में 'किन्तु-परन्तु' नहीं सुन सकता।'

उन्होंने पत्र पर कलम उठा कर 'ऋस्वीकृत' लिख दिया।श्रीर उसे विमल के पास पहुँ चा देने की आज्ञा देकर नौकर के हाथ में रख दिया।

श्रासन विपत्ति से विमल की माता का हृदय काँप उठा। श्राँखें उमड़ने सी लगीं। पंडित जी को श्रटल समक्त कर वे जी भर कर रोने के लिए कमरे के बाहर जाने लगीं। जाते जाते उन्होंने देखा—पंडित जी बालकों की भाँति फूट फूट कर रो रहे थे।

\* \*

दूसरे ही दिन गाँव वाले रजनी की माता का शव शमशान ले गये। उसके एक हफ्ते बाद लोगों ने एक दिन सुबह उठकर देखा — रजनी श्रीर विमल का कहीं पता नह है। लोगों ने भाँति-भाँति की टिप्पियाँ कीं। पंडित चन्द्रधर जी के शोक का पारावार न रहा।

वे उसी दिन से चिन्ताकुल रहने लगे। इस समय उनका एक मात्र आधार विमल का श्रन्तिम पत्र था जो उसने अपने प्रयाण की पहली रात को लिखा था।

\* \* \*

प्राम में 'श्री कुमार' जी सपत्नीक स्ताने वाले थे। देश के प्रसिद्ध नेता के प्रति उस प्राम के निवासियों ने भी स्त्रागत की तप्यारी कर रक्खी थी। स्टेशन पर गाँव उमड़ स्त्राया था। पंडित चन्द्रधर जी स्त्रपने साथियों सहित स्टेशन पर इधर से उधर इन्तजाम करते हुए दौड़ रहे थे। उनका हृद्य स्त्राज उत्साह से भरा था। उन्हीं की चेष्टा से उस प्राम के निवासियों को स्त्रपने देश प्रसिद्ध नेता के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हो रहा था। पन्द्रह साल के बाद — पुत्र विद्याह होने के उपरान्त — स्त्राज ही पंडित चन्द्रधर जी के मुख मण्डल पर थे। इस सी प्रसन्नता का स्त्राभास मिला था। वे बार वार 'कुमार' जी का पत्र जब से

निकाल कर पढ़ते थे। उन्होंने लिखा था:— 'पूज्यपाद श्रद्धेय,

कृपा पत्र प्राप्त हुआ 'श्री चरणों के दर्शनार्थ १८ ता० को दस बजे की ट्रोग से आऊँगा।'

श्रनुचर' 'कुमार'

पत्र पढ़ कर वे श्रीर भी फूले न समाते थे। इनके बड़े नेता ने उनको 'पूज्यपाद श्रद्धेय,' श्रीर श्रपने को 'श्रनुचर' लिखा था। भला कौन इतना सौभाग्यशाली होगा। पंडित जी की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं था।

ट्रेन आगई। 'जयधोष' से स्टेशन गूंज उठा। 'कुमार' जी पत्नी सहित् शुश्र खहर परिहित ट्रेन से उतरे। चन्द्रधर जी दोहकर माला लिए हुए उनके पाम पहुंचे। पर माला गले में पड़ने के पहले ही 'कुमार' जी उनके पैरों पर गिर पड़े और रोने लगे। श्रीमती 'कुमार' घुटने के बल हाथ जोड़कर दृष्टि नीची किए हुए उनक पैरों के पास बैठ गयीं। उनके नेत्रों में भी दो बड़े बड़े मोती मलक रहे थे।

मामवासी श्रवाक् थे। उनकी समक में ही न श्राया कि माजरा क्या है। पहले तो पंडित जी भी चकराये; फिर श्रपने बिछुड़े हुए पुत्र 'विमल कुमार' को देश-रत्न 'कुमार' के रूप में श्रपनी पत्नी स्वनामधन्या चिन्द्रका रूपिणी रजनी के साथ पाकर उनका हृद्य भर श्राया। उनकी श्राखों से श्रास् वह चले। विमल की हृद्य से लगा कर रजनी के सिर पर हाथ फेरते हुये गद्गद् स्वर में उन्होंने कहा—'तुमने मेरा गाम उज्ज्वल किया है, बेटा, मुझं तुम दोनों पर गर्व है।'

## मधुकर की गुंजार

#### [ श्री त्र्योमप्रकाश शास्त्री ]

मुनो रे, मधुवर की गुजार !

भूम रहा पुर्णो पर कद से, च्म-च्म मध् मधुकर तब में , श्रनुभव-पृणं कह रहा सब में — भ्यंग न करना यार किसी से, है स्वार्धि संसार !" सनीरे, मधुकर की गुंजार!

(:)

रूप मुग्ध में चला उधर को , खिले मनोहर कमल जिथर की. पाया भेने उस सरवर को, निपटा खिया कमल-पृथ्यों की ; किया उन्हीं से प्यार। सुनारे, मचुबर की गुंजार !!

( 3 )

पैठा जाय प्रेम का प्यासा,
मधुप बना मधु-चूसत सारा,
मस्त हुआ मैं मद का मारा,
सब बुद्ध मैंने उस पर बारा;
किया न नेक विचार!
मुनोरे, मधुकर की गुंजार!

(8)

सायं समय श्रान्त मुर्यं जब चले गये छिपने श्रस्ताचल। मुँदे दुखी हो तभी कमल सब , कैसा किया गया मुक्त से छल ! छलिया है संसार ! मुनोरे मधुकर की गुँजार

( x )

बन्द रहा में निशि-भर उस में ,
रहा ठिटुरता बीतल जल में ,
कैसा फँसा प्रेम-दलदल में ,
भनुभव है अब किया प्रेम का
पाकर कारागार ,
सुनोरे मधुकर की गुंजार ।

हुआ सबेरा बन-गज आये, कमल तोड़ सब खाद्य बनाये, पर कैसे ही हम बच आये, धायल होकर लगे सुनागे, जग को यह गुंजार। सुनारे मधुकर की गुंजार!!

#### सम्पादकीय

#### चमा याचना-

विशेषाङ्क के निकलने में काफी देर होगई ! कुछ हमारे कृपालु पाठकों ने तो निराश होकर हमें लिखा भी है, कि विशेषाङ्क निकलेगा या नहीं ! कुछेक ने व्यंग भरी हँसी भी हँसी है । कुछ भी हो पाठकों को प्रतीज्ञा काफी करनी पड़ी । उसके लिए यदि वे हमें दोपी ठहराते हैं तो स्वाभाविक ही है । हमारी घोषणा के अनुसार विशेषाङ्क उनको पहिली जनवरी को अवश्य ही मिल जाना चाहिए था: किन्तु उस तिथि के बाद भी कितने दिन और बीत गए।

फिर भी यदि दयालु पाठक हमारी परिस्थितयाँ देखेंगे तो उनका रोष बहुत कम हो जायगा। मनुष्य परिस्थितियों का दास है। हमारी परिस्थितियाँ कुछ ऐसी थीं कि जिन पर हमारा तिनक भी काबू नहीं था।

#### हमारी कठिनाइयां---

हमारे पाठक अनिभन्न नहीं हैं कि जीवन-सुधा अब तक बैद्यक की पत्रिका रही हैं। साहित्यिक पाठक तो उसके छ: वर्ष के लम्बे जीवन के उपराँत भी उसके नाम से परिचित नहीं थे। अत: हम पत्रिका का साहित्यक अङ्क निकालने के लिए साहित्यिक लेखकों से रचनाओं की आशा करना एक प्रकार से अनिधकार चेटा करना था। लेखकों के विश्वास पात्र बनने में हमें काकी समय लगा। पाठकों को अचम्भा होगा कि सब कुछ केवल दो ही माह में हुआ है।

हमारी दूसरी कठिनाई कुछ लेखकों का असहयोग था। उन्होंने अपनी रचनाएँ भेजने से पहिले उनका मूल्य लिख भेजा और यह भी लिखा कि यदि जीवन-सुधा उन्हें उतना देने में असमर्थ है तो उसे जीने का कोई अधिकार नहीं है, उसे मर जाना चाहिए। हम इन लेखकों के भी कृतज्ञ हैं इन्होंने पत्रों के उत्तर तो दिए। कुछ लेखक तो ऐसे हैं कि जिन्होंने लगातार कई पत्र लिखने पर भी कोई उत्तर तक नहीं दिया। हमारी समक में नहीं आता कि मनुष्यता के नाते भी कहाँ तक यह संगत था।

हमारी अन्य किठनाई प्रेस की थी। हमारी हार्निक इन्छा थी कि छपाई अन्छी से अन्छी हो, और मोहन प्रेस के पास उतनी सुविधाएँ नहीं थीं। अनः टाइप आदि के प्रबन्ध में भी काकी देर लगीं। टाइप के प्रबन्ध के बाद भी प्रेस के कुछ आन्तरिक भगड़ों ने देर कर दी।

लेख हमारे पास बहुत से आए; किन्तु उनमें विशेषाङ्क के योग्य बहुत ही कम थे। हमारे पुराने लेखकों के लेख तो अधिकतर वैद्यक के थे जिनको हम इस अङ्क में स्थान नहीं दे सकते थे। इनके अलावा और और लेख बहुत ही मामूली थे जिन्हें मनमाना संशोधन करने पर भी अपने काम के लायक नहीं बनाया जा सकता था।

इन्हीं कारणों से इतनी देर लग गई। हम श्रपने कृपालु पाठकों से इसके लिए चमा-प्रार्थी हैं श्रीर उन्हें विश्वास दिलाए देते हैं कि भविष्य में जीवन-सुधा उन्हें ठीक समय पर ही मिल जाया करेगी।

#### लेखकांक' के विषय में--

पाठकों को इस विशेषाङ्क का नाम 'लेखकाङ्क' कुछ खटकेगा। वास्तव में नाम इस ऋङ्क के उपयुक्त नहीं है। हमारा विचार था कि प्रसिद्ध प्रसिद्ध लेखकों के पहिले चित्र होंगे, उसके बाद उनकी जीवनियाँ, तत्पश्चात् उनकी रचनाएँ। इस योजना को पूरा करने के विचार से ही इस श्रङ्क का नाम 'लेखकाङ्क' घोषित किया गया था, किन्तु हमें शोक है कि इस योजना में हमें सफ-लता न मिल सकी । इसका मुख्य कारण यह था कि अन्त तक हम साहित्यिकों के विश्वास पात्र न बन सके। दूसरे समय भी कम मिला। श्रकटुबर के श्रान्तिम सप्ताह में इस विशेषाङ्क का काम मेरे हाथ में सींपा गया था। उसके बाद नवस्वर के श्रङ्क का भी सम्बादन करना था। यो नवस्वर दिसम्बर के दो महीनों में उपयुक्त तथा मन बांद्धित सामिमी भरसक प्रयत्न करने पर भी इकट्ठी न हो सकी।

फिर भी नाम को थोड़ा बहुत सार्थक बनाने के लिए श्रद्ध के आखीर में लेखकों की जीवनियाँ दी जारही हैं। वह भी सब की नहीं हैं। कुछ लेखकों ने तो अपनी जीवनियाँ छापने से ही इन्कार कर दिया और कुछ ने अपनी जीवनियों के बार में एक भी शब्द नहीं लिखा। उधर हमारे पास इतना समय भी न था कि इधर-उधर से खोज-बीन करके उनकी जीवनियाँ तैयार करते। अतः जिन लेखकों की जीवनियाँ इस में नहीं हैं वे हम से अप्रसन्न न हों। वैसे तो यह हमारी धुव्दता ही है और उसके लिए हम उनसे चमा भी चाहते हैं।

कृपालु लेखकों की जो जीवनियाँ दी गई हैं, वह किसी प्रकार से भी पूरी नहीं हैं। समयाभाव के कारण जल्दी में जैसी तैयार कर सके दे दी गईं। दयालु पाठक, हम श्राशा करते हैं उनमें किसी प्रकार की भी छान-त्रीन नहीं करेंगे श्रीर यदि उनमें गलतियाँ रह गई हों तो उन्हें विना ध्यान में लाए हमें सूचना दे देंगे। हम सहर्ष उन्हें श्रपने श्रागामी श्रद्ध में प्रकाशित कर सुधार देंगे।

इसके श्रांतिरक्त जगह-जगह रचनात्रों में श्रशुद्धियाँ भी रह गई हैं। उनके विषय में श्रिधिक क्या लिखा जाय ! हमारी हार्दिक श्रांभिलापा यही रही थी कि जहाँ तक हो सके श्रङ्क शुद्ध श्रोर साफ निकले और वैसी कोशिश भी की। इतने पर भी गलतियाँ रह ही गई हैं। हम श्रपने पाठकों से प्रार्थना करने हैं कि वे उन्हें स्वयं ही सुधार लें।

#### हमारो विशेष कृतज्ञता—

वैसे तो हम सभी साहित्यिकों के कृतज्ञ हैं कि उन्होंने कृपा कर के हमें इतना सहयोग दिया। विना उनके इस सहयोग के हम कुछ भी तो नहीं कर पाते। पर श्री जैनेन्द्र कुमार के हम विशेषकृप से कृतज्ञ हैं। ज्ञाप ही की सहायता से हमें इस छांक के कृपानु लेखकों से परिचय मिला, जिससे हमारा काम बहुत-कुछ सुगम होगया!

जैनेन्द्र जी के अतिरिक्त हम श्री 'श्रक्तेय' के भी कम आभारी नहीं हैं। आपकी विशेष कृषा से ही इस अंक के कई-एक दुष्प्राप्य कोटोग्राफ हमें मिल सके हैं। मुंशी श्रजमेरी जी तथा श्री प्रेमचन्द जी के चित्र तो चाहे जितना मूल्य देने पर भी इतने सुन्दर हमें न मिल पाते। श्रत: हम आप के भी कृतक्त हैं।

श्री विष्णुदत्त प्रभाकर के कुछ जीवनियों में सहायता देने के लिए श्रीर श्री जयंतकुमार के टाइ-टिल-पेज बनाने के लिए हम श्राभारी हैं।

# जीवन-सुधा



श्री शगरचन्द्र चटर्जी

#### पुष्पाञ्जलि--

इस साहित्यिक श्रंक को प्रकाशित करते समय हमें बार-बार कुछ हिन्दी-साहित्य के रत्नों की याद श्राजाती है जो हमसे छीन लिए गए हैं, और ऐसे छिन गए हैं कि श्रव कभी लौट कर हमारे पास ने नहीं आवेंगे।

श्री मुंशी श्रजमेरी जी, श्री प्रेमचन्द जी, श्री रामदास जी गौड़ तो इस विशेषाङ्क की योजना से पहिले ही चले गए थे; किन्तु श्री जयशंकर 'प्रसाद' गत् १४ नवस्त्रर को श्रीर श्री झजमोहन जी वर्मा इस १० दिसम्बर को गए हैं। 'प्रसाद' जी को तो दो-तीन पत्र भी लेखकाङ्क में प्रकाशनार्थ कोई रचना भेजने के लिए भेजे गए थे। शायद वे उनकी श्रांखों के सामने श्राए हों, या उनके बारे में उनसे जिक्क किया गया हो।

हमें शोक है कि हम अपनी इस तुच्छ भेंट को उनके सम्मुख नरख सके। वे सब आज को होते तो हमें न जाने कितना प्रोत्साहित करते; किन्तु हमारा दुर्भाग्य है कि हम उनकी शुभ कामनाएँ न ले सके।

फिर भी यह श्रंक उनकी स्वर्गीय उच्चात्मा के लिए पुष्पाँजलि है। काल की कर गित जो न करे सो थोड़ा है। "प्रसाद" जी के निघन से निकले झाँसू अभी सूखने भी न पाए थे कि सूचना मिली है श्रीयुत शरच्चन्द्र भी हमारे बीच से चले गए।

इस समय उनकी अवस्था लगभग ४८ वर्ष के थी। आपने आजन्म विवाह नहीं किया था। साहित्य में उनका कौनसा स्थान था, यह क्या शब्दों में कहा जा सकता है। वे उपन्यास-सम्राट थे, और उनका स्थान श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर से भी कहीं ऊँचा था।

श्राप श्रपनी रचनाश्रों में समाज की बुराइयों तथा भलाइयों का बड़ा ही सुन्दर चित्र खींचते थे। मानव वेदना का बर्णन करने में तो कोई भी लेखक श्रापकी समता नहीं कर सकता था।

श्रापके उपन्यासों श्रीर कहानियों का श्रन्य कई भाषाश्रों में भी श्रनुवाद हुआ है।

ईश्वर से हमारी प्रार्थना है कि उनकी पवित्रात्मा को शान्ति दें, और उनके शोक-पीड़ित परिवार को इस भीषण वेदना के सहने की शक्ति दें।

#### 'नए-नए लेखकों से

श्री प्रभाकर माचवे की यह कहानी बहुत 'से नये-नये लेखकों को हतोत्साहित करेगी। पर हम क्या श्राशा न करें कि वे नए-नए लेखक जिनकी जड़ कच्ची नहीं है श्रीर जो श्रपनी बुद्धिमत्ता में विश्वास कर साहित्य में घुसे हैं, उनके लिये यह कहानी श्रमृत का भी काम करेगी ? माना गालियाँ बुरी होती हैं; किन्तु क्या उन्हें लेकर गाली खाने वाले को मिट जाने मात्र का ही रास्ता शेप रह जाता है ?

यह तो सच है कि युग की माँग को देखते हुए 'राजा-रानी के इश्क के किस्सों के Romance के पाश फेंक देने होंगे।' साहित्य में अब उनको स्थान नहीं है। समय की प्रगति के अनुसार साहित्य में बहुत परिवर्तन हो गया है। साहित्य अब गंभीर चीजें चाहता है। वहीं चीजें टिका हैं होंगी। भावुकता के चिएक आवेग में लिखी हुई चीजें उतनी ही स्थाई होती हैं, जितनी भावुकता स्वयं। जब तक कि वे ठोस न होंगी, साहित्य में चिग-स्थान उन्हें कभी भी नहीं मिल सकेगा।

यह तो नहीं है कि प्रेम के किस्से साहित्य से विल्कुल मिट ही जांयगे। मूरदास के कृष्ण, नुलसी के राम, मीरा के गिरधर गांपाल उनके प्रेमी ही तो थे, श्रीर उनकी प्रेम-कथाएं साहित्य की श्रमर कृतियाँ हैं; किन्तु सूर, नुलसी श्रीर मीग का प्रेम (श्राज कल की तरह) सस्ता प्रेम नहीं था। तभी तो उनके प्रेमपूर्ण साहित्य को इनना ऊँचा स्थान मिला।

हमारे नए-नए लेखक भी यदि श्रपने किस्सों के प्रेम को इतना ही उच्च श्रीर मूल्यवान बना सकें तो श्रवश्य ही उनकी कृतियों को साहित्य में म्थान मिलेगा। पर क्या यह सम्भव है कि वे वेंसा कर सकेंगे ? क्या सूर, तुलसी, मीरा, श्रादि बनने की उन में शक्ति है, साहस है? श्रत: उन्हें यही उचित श्रीर संगत है कि श्रपने निर्धारित विशाल-भवन की नींव बाल्ह् पर न रक्खें जो जरा से भोंके पर नीचे था पहें। वे उसे मजबूत बनावें जिससे 'प्रलय में भी वह श्रचल सड़ी रहे।

#### 'कविता और जीवन-एक कहानी'

इसमें 'श्रज्ञेय' जी ने 'कहानी से श्रधिक कुछ' कहा है जो हिन्दी काव्य के सेवियों को रुचिकर न होगा। यही नहीं, सम्भव है जैसा 'श्रज्ञेय' जी श्रमुमान करते हैं, वे 'गाली' भी देंगे।

वास्तव में किव की यह कड़ी समालीचना है, यदि यह तिनक भी श्रालोचनात्मक होती तो शायद इसका तीखापन बहुत कुछ कम हो जाता। किन्तु श्रहोय'जी ने पक्की घारणा करके इसे लिखाहै कि 'कलम घिसने का' उन्हें कुछ भी पारिश्रमिक नहीं मिलेगा। इसीलिए एक श्रार का कांध उन्होंने दूसरी श्रोर उतारा है। सोचा होगा पारिश्रमिक तो मिला नहीं, फिर जी की थेंड़ी-बहुत बातों को निकाल कर हल्के क्यों न हो लें।

फिर भी यदि ध्यान-पूर्वक देखा जाय तो कहानी में गुस्सा होने लायक कुछ भी तो नहीं है। किव की पहुँच बड़ी ऊँची होती है, असम्भव को सम्भव और सम्भव को असंभव तक दन देना उसके दाएं हाथ का खेल है। किसी ने कहा भी है—

जहाँ न पहुँचे रवि वहां पहुँचे कवि ।

श्रतः कवि वहाँ भी पहुँच जाता है, जहाँ सूर्य भी पहुँचने में श्रसमर्थ है।

तो फिर 'शिवसुन्दर' सूर्य से भी श्रिधिक प्रभावशाली—'किवि' बनने की इच्छा करता है श्रीर उस साधना में निरत रहता है तो इसमें श्रमुचित क्या है ?

श्रीर कविता है कहाँ नहीं ! कवि का चेत्र तो बहुत ही विस्तृत है। उसमें 'प्रकृति, नदी-नाले, पलारा के उपवन...श्रीर दूर कहीं किसी न्पुर-वलियत रहस्यमयी की पगध्विन, तमोलिन का सिर मटका कर मुस्करा देना, हलवाई की लड़की का लाल हो श्राना, माँगने वाली श्रीरत का 'बाब्' के गुलाबी गालों पर मरना...'श्रादि सभी छुछ किय के होत्र में श्रा जाते हैं। किब का होत्र तो निस्सीम है। उसी निस्सीम होत्र में ही तो किब को किवता मिलती है।

फिर 'अझेय' जी ने 'शिव सुन्दर' के मस्तिष्क में उन बातों को स्थान दे रिया है तो उसमें अनुचित क्या है!

#### लेखकों की कठिनाइयाँ-- क्यों ?

इस विशेषाङ्क के ऋधिकतर लेखकों ने हमें लिखा है कि उनकी रचनाओं के लिए उन्हें पारि-श्रामक श्रवश्य कुछ न कुछ न मिलना चाहिए। कुछ ने लिखा है कि पारिश्रमिक १४) से कम न हो, किसी ने लिखा है—श्राप २०) दें तो हम श्रपनी रचना भेजें। कुछ कुपालु लेखकों ने रचना प्रकाशित होने से पहिले ही पारिश्रमिक भेज देने का श्रागृह किया है।

इन सब से यही अनुमान किया जा सकता है कि लेखकों की आर्थिक दशा मंतोपजनक नहीं है। वैसा क्यां है ?

लेखकों की श्रीर ध्यान-पूर्वक देखते हुए हमें यही लगता है कि लेखकों ने श्रपनी यह दशा स्वयं ही बना ली है। वह लिखना चाहते हैं, इस लिए नहीं लिखते; बल्कि इस लिए लिखते हैं कि उसके बरले में उन्हें पैसा मिले। इस स्वार्थभाव के श्रात ही लेखक श्रपने श्रादर्श से गिर जाता है। यही नहीं जो कुछ वह लिखता है उसमें भी इस स्वार्थ भाव की भलक स्पष्ट दिखाई देती है। तो फिर वह क्या साहित्य होगा! लिखने को व्यवसाय बना कर उस पर ही पेट भरने के लिये निर्भर रहने का समय श्राज कल नहीं है। मैं यह नहीं कहता कि व्यवसायी लेखक (Professional Writers) हों ही नहीं। वे श्रवश्य हों; किन्तु मात्र गिने चुने। वे पैसे के लिए लिखें। पर अन्य लेखकों का लिखना लिखने के लिए (Writing for writing's sake)हो, उसमें पैसे का स्वार्थ न हो, साहित्य-सेवा-भाव हो।

पेट भरने के लिए उन्हें ऋन्य किसी व्यवसाय का ऋनुकरण करना होगा। इस प्रकार पेट की समस्या हल करने के पञ्चान् यदि उनके जी में लिखने की ऋाती है तो लिखें, श्चन्यथा नहीं।

इस प्रकार व्यवसाई लेखकों को भी पैसा मिल जाता है और अन्य लेखकों की भी पहेली हल हो जाती हैं।

श्रव प्रश्न होगा कि ऐसा व्यवसाय रक्खा कीन सा है जिसका स्वावलंबन किया जाय ? इसका उत्तर तो राजनीति ( Politica ) या अर्थ-शास्त्र ( Economics ) देगा । मैं इतना अवश्य कहूँगा कि आज कल युवकों में अधिकार नौकरी की खोज करते हैं। उनमें initiative की शक्ति नहीं होती, रनमें साहस की कमी होती है। इन दुबंलताओं के साथ साथ दूसरी और उनमें बहुत सी अन्य अनावश्यक बातें पैदा हो हो जाती हैं। छोटे-छोटे काम करने में उन्हें लजा आती है। कुछ भी सही, इस विचार से हमारा इस समय संबंध नहीं है।

ता मैं कह रहा था कि पैसे के स्वार्थ की भलक दर्शाते हुए जो साहित्य निकलेगा वह स्थायी नहीं होगा।

"स्थायी साहित्य वह जिसमें मानव की ऋधिक स्थायी वृत्तियों का समर्पण हो ।''

्र अतः स्थायी साहित्य के प्रादुर्भाव के लिए अपने को बहुत कुळ बनाना पड़ेगा।

#### हमारी आगामी योजना-

इस साहित्यिक श्रंक को निकालने के पश्चात् विचार हुआ है कि जीवन-सुधा को श्रव साहित्यिक रूप ही दें दिया जाय। उसे साहित्यिक बनाने की श्रावश्यकता यों भी प्रतीत होती है कि दिल्ली से एक भी साहित्यिक मासिक पत्रिका नहीं निकलती है। इसी कमी को दूर करने के लिए हमें सलाह दी गई है कि जीवन-सुधा को ही हम साहित्यिक बना दें। एकदम तो पूर्णरूप से उसे साहित्यिक न बनाया जा सकेगा, किन्तु धीरे-धीरे कुछ समय परचान् वह वैसी बन जायगी, ऐसा पक्का विश्वास है।

अपनी इस योजना की सफलता के लिए हम को कुछ परिवर्त्तन भी करने पड़े हैं। प्रति-मास अब तक जीवन-सुधा ४० पृष्ठों की निकलती रही है। अब वह ८० पृष्ठों की निकला करेगी और उसका वार्षिक चन्दा भी अब २॥) की जगह ४) होगा।

हमारी इस योजना की सफलता बिल्कुल हमारे रूपालु पाठकों तथा प्राहकों के ऊपर निर्भर है। यदि उनका सहयोग जैसा कि इस समय मिला है, भविष्य में भी मिलता रहा तो हमें पूर्णाशा है कि हमारे सभी विचार पूरे हो जाँयगे।

किसी अंक की अच्छाई-बुराई तो उसकी

सामिमी के उपर निर्भर होती है। यदि अच्छी सामिमी हमें अपने पाठकों की कृपा से प्रति मास मिलती रही तो शीध ही सफलता मिल जायगी, और जीवन सुधा थोड़े ही समय में काफी उन्नति कर जायगी।

दयालु पाठकों से हमारा अनुरोध है कि भविष्य में वे स्वयं हर मास कोई न कोई रचना अवश्य भेजते रहें।

## हमारी कृतज्ञता, श्रीर धन्यवाद ।

अन्त में हम अपने सभी दयालु लेखकों को उनकी कृपा के लिए हार्दिक धन्यवाद देते हैं, और उन्हें विश्वास विलाए देते हैं कि उनकी इस अनुकम्या के लिए हम आज्न्म उनके कृतज्ञ रहेंगे।

कुड़ लेखकों की रचनायें स्थानाभाव के कारण इस श्रद्ध में नहीं जा सकी हैं। हम उन लेखकों से त्रमा चाहते हैं। उन रचनाश्चों को श्रागामी श्रद्ध में झापने की यथा साध्य चेष्टा की जायगी। हम श्राशा करते हैं कि कृपालु लेखक बुरा न मानेंगे।

> —यशपाल जैन बी. ए. एल-एल. बी.

# जीवन-सुधा⊷→



यशपाल जैन, बी॰ ए०, एल-एल० बी० ( सम्पादक- जीवन-सुधा )

# जीवनियां

#### श्री मैथिलीशरण गुप्त

आपका जन्म सं० १६४३ चिरगाँव माँसी में हुआ। अब आप लगभग ४२ वर्ष के हैं। इस उमर में आकर आपको पुत्र वियोग भी सहना पड़ा है। इतने कष्ट और परिश्रम के बाद भी पाठक का अन्धा स्वार्थ आशा करता है— वे कुछ और भी लिखें।

उनकी कुछ मौलिक श्रीर कुछ अनुदित पुस्तक निम्न लिखित हैं -

भारत भारती, जयद्रथ-बध, रंग में भंग, किसान, शक्कुन्तला, गुरुकुल, हिन्दु, तिलोत्तमा, पलासी का युद्ध, चन्द्रहास, पंचवटी, मेघनाश्व बध, स्वदेशी संगीत, ज्ञेराङ्गना, साकेत, यशोधरा, द्वापर सिद्धराज श्रौर मंगल-घट।

श्चापका व्यक्तित्व बड़ा सरल श्चौर महान है। श्चाप मिलनसार, निरिभमानी, शुद्ध श्चौर शान्ति प्रकृति के मनुष्य हैं। वैष्णव सम्प्रदाय के मानने वाले होने पर भी श्चाप श्चनुदार नहीं हैं। 'द्वापर' में जो भाव व्यक्त हुये हैं उनमें एक महान क्रान्ति की भलक है। सत्य ही कवि क्या किसी सम्प्रदाय विशेष का होता है। कवि तो मानवता का प्रतिनिधि है। फिर गुप्त जी तो युग प्रतिनिधि कवि हैं ही। उनके लिए कुछ भी बाधा-बन्धन क्यों बनें।

गुप्त जी की किवता को क्या विशेषता है, यह बात श्रव हमारे कहने और पाठक के जानने की नहीं रह जाती। काव्य के विभिन्न श्रंगों को उन्होंने बुश्रा है। जनता की व्याप्त सहानुभूति उनके साथ है, उनकी किवता में मानवता ने साकार होकर श्रपना एक नया संसार बसाया है जिसमें मुख और दुख, सम्बेदन श्रार चिन्तन, कल्पना श्रीर कीशज, प्रकृति श्रीर परमात्मभाव समान रूप से इकट्टे हुये हैं।

श्रन्त में पाठक हमारे साथ कहें - स्वयभू जो स्वयं कवि हैं उन्हें चिरायु करें।

—वि०

## दिनेश नन्दिनी चोरड्या-

गद्य गीतों का साहित्य में विशेष स्थान है और गद्य गीत लिखने में श्री दिनेश निन्दनी जी का अपना स्थान है। श्री वियोगीहरि जी के बाद आप ही जीवन की भावनाओं को इतनी सफलतापूर्वक अङ्कित करने में समर्थ हुई हैं। वास्तव में आपने एक प्राकृतिक आवश्यकता को समका है और उसकी पूर्ति में जी-जान से संलग्न हैं। 'शबनम' की भूमिका में प्रो० राम-कुमार वर्मा लिखने हैं:—

'दिनेश निन्दिनी जी का संसार भस्म और अन्धकार से बना हुआ है पर प्रकाश पाने के लिए उसके कए अनन्त गित से अमण कर रहे हैं। उसमें शीत का आतंक रहते हुए भी बसन्त के स्वागत की आकाँ ता है। मानव जीवन की यही कामना उसे परिष्कृत करती हैं, उसे उस आरसी का रूप देती है जिसमें ईश्वरीय शक्ति अपने रूप और यौवन की छवि निहारती है।'

वैसे तो आपकी रचनार्ये समय समय पर उब कोटि की साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं; परन्तु पिछले वर्ष आपकी पुस्तक 'शबनम' पर ४०० क० का 'सेकरिया पुरस्कार' हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से प्रदान किया गया है।

श्रापकी दूसरी पुस्तक 'माक्तिक माल' गद्य- काव्यों का ताजा संग्रह है। हिन्दी माता को श्रापसे श्रभी बहुत सी श्राशायें हैं।

— বি০

## श्री रामकुमार वर्मा एम. ए.--

हिन्दी काव्य जगत का कीन ऐसा अभागा होगा जो श्री रामकुमार वर्मी के नाम से परिचित्त नहीं है।

वर्मा जी प्रयाग विश्वविद्यालय से एम. ए. पास करने के पश्चान कई वर्षों से प्रयाग विश्व-विद्यालय में ही हिन्दी-विभाग में प्रोफेसर हैं। आपकी जन्म-भूमि मध्य-प्रदेश है।

वर्मा जी बड़े ही सुन्दर किय हैं। आपकी कविताओं की 'क्रप राशि' 'चित्र रेखा' चन्द्र-किरण' आदि पुस्तकें निकल चुकी हैं। 'चन्द्र- किरण' अभी हाल ही में निकली है। वह स्कृटिक कविताओं का संग्रह है। 'चित्र रेखा' पर वर्मा जी को २०० क० का देव-पुरस्कार मिला था।

इन पुस्तकों के अतिरिक्त गद्य में भी वर्मा जी ने 'कबीर का रहस्यवाद' लिखा है।

कुमार रहस्य वादी है; कल्पना का किव है; वैराग्य श्रीर विपाद का चित्रकार है, श्रीर सबसे बढ़ कर वह श्राध्यात्मिक निराशावाद का कुशल गायक है।

सुन्दर में त्रसुन्दर देखने की भावना को इन पंक्तियों में देखिए: --

क्या शरीर है ! शुष्क धूल का-

थोड़ा सा छवि जाल.

उस छवि में ही जिपा हुआ है,

वह भोषण कंकाल।

श्चापकी श्चन्य पुस्तकें — वीर-हमीर; कुल-ललना; प्रणयपरिचय; भीष्म प्रतिज्ञा; माँ; सरोजिनी; चित्तौड़ की चिता; स्वदेश गान, निशीथ; श्वमिशाप; श्रव्जलि श्रादि हैं। श्वभी तो वर्मा जी से बहुत कुछ श्वाशाएँ हैं।

— य ०

### श्री प्रतापनारायणसिंह 'पद्म,---

श्राप बिहार के पूर्णिया प्राँत के निवासी हैं श्रीर कुछ समय से गोवर्धन साहित्य महा विद्यालय, देवघर में हिन्दी-साहित्य का श्रध्ययन कर रहे हैं। श्रापने हाल ही में लिखना श्रारम्भ किया है। निबन्धों के श्रातिरिक्त श्राप कहानी श्रीर एकांकी नाटक भी लिखते हैं।

--य0

## श्रीयुत यशपाल जैन बी. ए. एल-एल. बी.—

ंश्रापके विषय में इतना कह देना बस न होगा कि श्राप प्रस्तुत पत्र के सम्पादक हैं। तब सम्पादक का परिचय क्यां! पत्र के प्रत्येक श्रज्ञर में उसका बास है। पाठक स्वतंत्र हैं चाहे जिस रूप में उसे देखें श्रौर समर्भे।

आप संयुक्त प्राँत के अन्तर्गत अलीगढ़ जिले के निवासी हैं। जीवन की लड़ाई लड़ने के लिए आप हिन्दी के सुप्रसिद्ध दार्शीनक लेखक श्री जैनेन्द्रकुमार के साथ देहली में रहते हैं। इसी वर्ष आपने प्रयाग विश्व विद्यालय से एल.-एल. वी. पास किया है। आपकी अवस्था २३-२४ वर्ष के लगभग है।

अप कहानी लेखक होने के साथ ही साथ सुकवि भी हैं। व्यक्तित्व आपका सुलभा हुआ है। संभवतः उसी से वकालत छोड़ कर साहित्य में घुसे हैं। तो भी आप अभी नये हैं। आपका विकास अभी होना है। तब हम क्यों न आशा करें आप शीघ ही एक कुशल सम्पादक, सफल कहानी लेखक, मुकवि तथा अन्य साहित्यक विषयों के सुलेखक के रूप में प्रसिद्ध होंगे।

--वि०

## श्री जैनेन्द्र कुमार—

श्रापका जन्म सन् १६०४ में कीड़ियागंज (श्रालीगढ़) में हुन्ना था। १३-१४ वर्ष की श्रावस्था में मैट्रिक पास करने के पश्चात् श्राप काशी विद्याध्ययन के लिए चले गए; किन्तु देश की धथकती श्राग में कृद पड़ने के कारण श्रापको पढ़ाई शीच ही समाप्त करनी पड़ी।

सन् २८ से जैनेन्द्र जी का साहित्यिक जीवन आरम्भ होता है। आपकी मौलिकता और

श्रद्भत तथा नई शैली ने श्रापको शीब ही हिन्दी साहित्य जगत में प्रसिद्ध कर दिया।

श्रापने श्रभी बहुत थोड़ा लिखा है। कहानी संग्रह 'बातायन', 'एक रात', 'कांसी' 'हो चिड़ियाँ' हैं तथा उपन्याम 'परख', 'सुनीता', 'त्याग पत्र' हैं। 'परख' पर श्रापको हिन्दुस्तानी-एकेडेमी प्रयाग की श्रोर में ४००) का पुरस्कार मिला था। श्रापके निबन्धों श्रादि का एक संग्रह श्रभी हाल ही में प्रकाशित हुश्रा है।

जैनेन्द्र जी बड़े सफल कलाकार हैं। उपन्यासकारों में तो आपका आज कल सब से ऊँचा स्थान है। स्वर्गीय प्रेमचन्द्र के निधन के बाद से आप को ही उपन्यास-सम्राट कहा जा सकता है।

भाषापर आपका पूर्व छिधिकार है। आपकी भाषा में सरमता बहुत पाई जाती है, किन्तु जैनेन्द्र जी भाषा के माधुर्य में कभी भी भावों के छिपने नहीं देते। आपकी सभी कहानियों, उपन्यासों, तथा निबन्धों में भावों की प्रधानता रहती है। भाषा तो आश्रित मात्र रहती है।

अपका अपेजी पर भी समानाधिकार है। यद्यपि अपेजी में जैनेन्द्र जी ने अभी अधिक नहीं

लिखा है; किन्तु द्याशा की जाती है कि श्रंप्रेजी के भी त्राप सकल लेखक होंगे।

जैनेन्द्रजी श्रभी ३२ वर्ष के नव युवक हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर श्रापकी चिरायु करें जिससे श्राप श्रधिक से श्रधिक साहित्य-सेवा कर सकें।

जैनेन्द्र जी ऋपनी पत्नी, दो पुत्रों तथा एक पुत्री के साथ दिल्ली में रहते हैं।

व्यक्तिगत परिचय के लिए इसी श्रङ्क में श्री प्रभाकर माचवे का 'जैनेन्द्रकुमारः एक व्यक्तित्व चित्र' लेख देखिये।

—·四(

#### महात्मा भगवानदोन जी-

साहित्यिक तथा । राजनैतिक चेत्र में आज बहुत कम ऐसे होंगे जो महात्मा भगवान दोन जी के नाम से पर्तिचत न हों।

त्रापकी अवस्था लगभग ४२ वर्ष के हैं। आपका जन्म अतरोली में हुआ। आरम्भ में आप रेलवे विभाग में स्टेशन मास्टर थे। २४ वर्ष की अवस्था में नौकरी तथा घर-वार छोड़ कर आपने देश-सेवा तथा परोपकार का काम अपने उपर ले लिया। उन्हीं दिनों महात्मा जी ने हस्तिना-पुर में एक आश्रम की नींव डाली जिसमें बहुत दिनों तक आप स्वयं अध्यक्त का काम करते रहे। महात्मा जी स्वभाव के बड़े सरल हैं। इसके अतिरिक्त आप हससुख भी बहुत हैं।

बच्चों के विषय में आपका अध्ययन अत्यन्त गहन है। दैनिक हिन्दुस्तान के बाल-विनोद कालम मैं श्राप बहुधा लिखते रहते हैं।

जेल में महात्मा जी ने १२०० दोहे लिखे हैं जिनमें से अधिकतर अभी अप्रकाशित हैं। महात्मा जी का रहन-सहन बहुत ही साधारण है। जाकट-जाँचिया और चादर, बस यही श्रापका पहनावा है।

हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक श्री जैनेन्द्रकुमार श्रापके भानजे हैं।

महात्मा जी श्राज कल हिसार में रहते हैं । श्रापकी धर्मपत्नी श्रीर श्रापके पुत्र सागर (सी. पी.) में हैं।

-य०

### श्री प्रभाकर माचवे एम, ए, साहित्य-रत्न-

श्रीयत माचवे आज-कल माधव कालिज उज्जैन में दर्शन शास्त्र के प्रोफ सर है। श्राप हिन्दी के अच्छे लेखक हैं। श्रापकी कहानियां तथा अन्य रचनाओं की भाषा बड़ी गृद होती है उससे आपकी गहन अध्ययन-शीलता का अनुभव होता है। माचवे जी की सीमा गद्य तक ही सीमित नहीं है, आप सुन्दर कवि भी हैं।

श्रापके सम्पादकत्व में श्री जैनेन्द्र कुमार के निवंधों का संग्रह "जैनेन्द्र के विचार" के नाम से श्रभी-श्रभी निकला है। माचवे जी ने प्रत्येक निबन्ध पर बहुत टिप्पर्णा दी है।

-य०

#### श्री इलाचन्द जोशी--

श्राप हिन्दी-साहित्य के पुराने सेवी हैं । विश्व-मित्र को जो श्राधुनिक श्रन्तर्राष्ट्रीय रूप मिला है उसका श्रेय आप ही को है। आपका जन्म नवस्वर सन १६०२ में अल्मोड़ा में हुआ।

आरम्भ में जब कि विश्वमित्र निकला था तो आप ही अपने बड़े भाई श्री हैमचन्द जोशी के साथ उसका सम्पादन करते थे। उस समय श्राप हिन्दी साहित्य पर बड़ी ही सन्दर श्रालीचनायें लिखा करते थे।

इलाचन्द्र जी स्वभाव के बड़े सरल हैं और बड़े ही मिलनसार हैं।

त्राप प्रसिद्ध कवि हैं । ब्रापकी कवितात्रों का संग्रह श्रभी हाल ही में 'विजनवती' के नाम से निकला है। जोशी जी की कविताओं में सौंदर्य है। त्यापका एक उपन्यास 'घृणामयी' भी प्रकाशित हो चुका है। इनके व्यक्तिक 'परदेशी'तथा 'सन्यासी' उपन्यास शीघ ही प्रकाशित होने वाले हैं।

जोशी जी आजकल प्रयाग में रहते हैं।

#### श्री उषादेवी मित्रा--

श्राप का जन्म जबलपुर केदत्त बिला के प्रसिद्ध रईस दत्त वंश में हुआ।

श्राप की प्रतिभा वंशगत है। श्राप के पिता स्वर्गीय बाबू हरिश्चन्द्र दत्त साहित्य सेवी थे उन्होंने उर्दू में श्रीर शिकार की (श्रंमेजी) कई पुस्तकें लिखी थीं। श्राप की मातामही श्री मती विनोदिनीदेवी श्रपने समय की श्रव्ही सुकवि-यित्री थीं।

उपादेवी जी के पति श्री चितीशचन्द्र मित्र इंजीनियर थे। विधवा होने के बाद से आप जवलपुर में ही रहती हैं।

श्राप की प्रतिभा से प्रभावित होकर श्राप के मामा ने कलकत्ते में लेजाकर श्राप की संस्कृत श्रीर साहित्य की कई साल तक शिचा दी।

उपादेवी जी ३-४ वर्ष से हिन्दी में लिख रही हैं। इस बीच में आपने कोई सवा सौ कहानियाँ और तीन उपन्यास तथा एक नाटक लिखा है। 'बचन' का मोल तथा 'पिया' उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। दो कहानी-संग्रह 'मेघ-मल्लार' तथा 'आँधी के छन्द' छप रहे हैं। तीसरा उपन्यास जीवन की 'मुम्कान' और नाटक 'निदर्शन' अप्रकाशित हैं।

--य०

#### श्री सियाराम शरण जी गुप्त--

श्राप चिरगाँव (भाँसी) में रहते हैं । श्रपका जन्म भाद्र पद शुक्ल १४ स० १६४२ को हुआ। सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि श्री मैथली शरण गुप्त के श्राप छोटे भाई हैं।

व्यापक सहानुभूति श्रीर सम्वेदन श्रापकी रचनाश्चों के विशेष गुए हैं पाठक के हृदय के श्रम्तरतम कोर को छती हुई करुए। मानों श्रापकी रचनाश्चों से बही पड़ती है। यही कारए। है कि श्रापकी कहानियाँ इतनी सजीव है। उठती हैं। मानों श्रापकी भाषा शुद्ध श्रीर परिमार्जित होती ही है पर किसी हश्य का शहद चित्र श्रीकत करने की श्राप में श्रद्धत समता है।

सियाराम शरण जी की कविना में अनुभूति हैं, चिन्तन है और हैं। कलाकार की कुशलता तभी वह स्थान-स्थान पर मर्म को छू जाती है और तब चिरकाल तक पाठक के मन और मिस्तिष्क में इन्द चलता रहता है।

कि का व्यक्तित्व इतना सीम्य श्रीर सरल है कि अचरज सा होता है इसके हृदय में पीड़ित मानवता की इतनी व्यापक भावना कैसे समाई है। उपर से मोसे पर भीतर पैनी हिट छिपाये हुय हैं। दमा ने जबरदम्ती श्रापको तपम्बीर सा बना डाला है। भेप भूषा से भी श्राप गंबार से जान पड़ते हैं। सियाराम शरण जी मात्र किव ही नहीं हैं उपन्यासकार श्रीर कहानी लेखक भी हैं। किव का सम्वेदन यहाँ भी मूर्नकृप में उतरा है। श्राद्यां, दूर्वादल विपाद, मृण्मयी श्रादि श्रापकी कविताश्रों के संग्रह हैं। 'मौर्य विजय' श्रीर 'श्रनाथ' दो छोटे-छोटे काव्य हैं। 'पाथेय' कहानी संग्रह श्रीर'गोद' श्रांतिम श्राकां हां। 'नारी' उपन्यास हैं।

इन सब बातों के अलावा श्री मैथिलीशरण गुप्त के महाकाव्यों के पीछे श्राप ही की प्रेरणा काम कर रही है।

---य 🤈

#### श्री चन्द्रशेखर शास्त्री---

शास्त्री जी दिही के निवासी हैं। श्रापकी श्रवस्था ३७-३८ वर्ष के लगभग है। श्रारम्भ में श्रापने काशी में शिज्ञा पाई थी।

श्राप बड़े अध्ययन शील हैं, श्रीर अब तक कई पुस्तकें तथा अनुवाद प्रकाशित कर चुके हैं। शास्त्री जी की 'पृथ्वी श्रीर आकाश' 'हिटलर महान' 'आधुनिक आविष्काए' 'आतम निर्माण' 'चरित्र निर्माण' 'न्याय-विन्दु' तथा अन्य पुस्तकों के अतिरिक्त 'राष्ट्रिनिर्माता सुमालिनी श्रीर 'शरीर विज्ञान' अभी हाल ही में प्रकाशित हुए हैं।

#### श्री सचिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'---

'त्रज्ञेय' जी हिन्दी साहित्य के पुराने प्रसिद्ध लेखक हैं। त्र्याप पंजाबी ब्रह्मण् हैं।

वैसे सुप्रसिद्ध कहानी लेखक श्रीर उपन्यासकार तो श्राप हैं ही; किन्तु उससे कहीं श्रधिक श्रीर के चे श्राप किन हैं। श्रापकी किनताश्रों में भानों का समावेश इतनी सिद्ध हस्तता से किया जाता है कि ने पाटक के हृदय को गुदगुदा देते हैं।

श्राप कुछ समय नक 'सैनिक' के सम्पादक रहे थे, श्रीर श्राज कल 'विशाल-भारत' का सम्पादन कर रहे हैं।

'अज्ञेय' जी अंग्रेजी के भी बड़े मुन्दर लेखक हैं। अंग्रेजी भाषा पर आपका अधिकार है। इन सब के अर्तिरक्त आपको कोटोमाकी से भी बहुत शौक है और आप अच्छे आर्टिस्ट भी हैं। आपको कहानियों का एक संमह 'भग्नदून' के नाम से प्रकाशित हो चुका है और दूसरा हाल ही में 'विपथगा' नाम से प्रकाशित होने वाला है।

'अज्ञेय' जी की अवस्था लगभग २= वर्ष के हैं। हमें विश्वाश है कि हिन्दी साहित्य की अभी आप से बहुत कुछ मिलेगा।

—य०

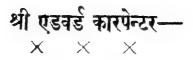
#### श्री रामनरेश त्रिपाठी---

हिन्दी मन्दिर प्रयाग के संचालक त्रिपाठी जी ने साहित्य के विभिन्न अंगों पर लेखनी उठाई है। किव वे हैं। कहानी उपन्यास भी उन्होंने लिखे हैं। केवल पाँच ही दिन में नाटक लिखने की बात भी हमने सुनी है। उन्होंने बालोपयोगी अनेक पुस्तकों निकाली जो मद्रास ऐसे प्रान्तों में भी हिन्दी प्रचार में सहायक हुई हैं। लेकिन हिन्दी, उर्दे, संस्कृत आदि भाषाओं के किव और उनकी किवताओं का संग्रह जो उन्होंने किवता कौ सुदी के नाम से चार भागों में प्रकाशित किया है, वह उनकी अपूर्व देन है। प्रामनीतों का संग्रह भी उन्होंने किया और जहाँ तक हमें जान पड़ता है इस और इनका ही ध्यान सब से पहिले गया था।

तो भी हम समभते हैं किव के रूप में जो सफलता उन्हें मिली वह उपन्यास लेखक के रूप में न प्राप्त हो सकी। उनके 'पिथक' नामक खण्ड कान्य की चर्चा बहुत दिनों रही। त्रिपाठी जी ने समय की विचारधारा का लाभ उठा कर 'पिथक' 'मिलन' तथा 'स्वप्न' नामक देश-प्रेम से स्रोत-प्रोत तीन खंड कान्य-लिखे। उनकी ख्याति के पीछे कविता से स्राधिक देश प्रेम की भावना थी। भारत के भविष्य की उज्ज्वल भावना का जो चित्र खींचा उसने बरबस ही पाठक के मन को मोह लिया।

इन काव्यों में किन ने जो प्रकृति-चित्रण किया है वह अद्भुत चीज है। जान पड़ता है किन को प्रकृति से विशेष अनुराग है तभी वह अपनी कल्पना से अद्भृती रख कर भी उसे सजीव बना देता है।

भाषा की सफाई पर ध्यान रखते हुये भी आप हिन्दी, उर्दू दोनों के छन्दों का समान रूप से व्यवहार करते हैं। आपकी फुटकर किवताओं का संमह 'मानमी' नाम से श्री गोपाल नेविटया ने किया है। 'रामचिरत मानम' पर भी आपने टीका लिखी है। त्रिपाठी जी ने 'किवता कौ मुदी, की भूमिका और किव-पिरचय में जो गद्य लिखा है, वह भी अपनी विशेषता रखता है। उसमें गहराई है, प्रवाह है। स्थान और भाव के अनुसार उनकी शैली के विभिन्न रूप हैं। उनका स्वाभाविक प्रकृति चित्रण गद्य में भी खूब निभा है और उर्दू का प्रभाव यहाँ भी वे मुला नहीं सके हैं। सब मिला कर त्रिपाठी जी एक गद्य शैलीकार के रूप में भी अमर रहेंगे।



## तोरणदेवो शुक्ल 'ललो,साहित्य चन्द्रिका--

श्रापका जन्म कान्यकुटज ब्राह्मण वंश में सं० १६५३ वि० श्रावण शुक्ल द्वादशी को श्रापकी निनिहाल (ब्राम पिपिरिय, जिला जबलपुर) हुआ। आपके पिता पं० कन्हैयालाल जी तिवारी का स्थान दिलवल जिला उन्नाव है, परन्तु आपके स्वर्गीय पितामह पं० लालताप्रसाद जी तिवारी सन् १८५७ में वहाँ से प्रयाग चले आये, तब से वह लोग प्रयाग में ही रहते हैं।

सन् १६१२ ई० में 'लली' जी का विवाह जिला रायबरेली में पं० कैलाशनाथ जी शुक्ल बी. ए. एल-एल, बी. के साथ हुआ, और सन् १६१४ ई० में आपके पुत्र चिरंजीव हरिहरनाथ शुक्ल 'सरोज' का जन्म हुआ जो अब बी एस- सी इंजिनियर हैं। 'लली' जी अनुमानतः १४ वर्षों से लखनऊ रहती हैं।

हिन्दी काव्य की कोकिलाओं में 'लली' जी भी एक हैं। आपकी कविताएँ बड़ी ही सरस और भाव-पूर्ण होती हैं।

आप एक पत्रिका का सम्पादन भी कर चुकी हैं, और कई बार अनेक प्रभुख सभात्रों की सभानेत्री भी हुई हैं।

श्रापने क विता की एक पुस्तक 'ज्योति' भी लिखी है जो श्रभी तक श्रप्रकाशित है।

—य

#### श्री भगवती प्रसाद वाजपेयी-

वाजपेयी जी का जन्म संवत् १६४६ वि० में हुआ था। आप मंगलपुर जिला कानपुर के निवासी हैं और आज कल इलाहाबाद में रहते हैं। चौदह वर्ष की अवस्था से ही गृहस्थ-जीवन का उत्तरदायित्व सिर पर आजाने के कारण आप उच्च-शिक्षा से वंचित ही गये। पहले तो अपने गाँव में ही कुछ काल तक अध्यापक रहे। पगन्तु उस जीवन से सन्तुष्ट न होकर जो निकल भागे, होम-कल लीग कानपुर की लाइबेरी में लाइबेरियन हो गये। यहाँ आपका अध्ययनशीलता का ऐसा चसका लगा और आपको असाधारण प्रतिभा ने ऐसा विकसित किया कि क्रम-क्रम से 'संसार,' दैनिक 'विक्रम' तथा 'माधुरी' के सम्पादन-विभाग में कार्य करने का सुअवसर पाते गये। चार वर्ष तक आप हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के सहायक मंत्री भा रह चुके हैं। इधर अनेक चर्षों से आप यहाँ, स्वतन्त्र रूप से, एक साहित्य-सेवी का जीवन व्यतीत करते हैं।

वाजपेयी जी का विकास, बहुत साधारण जीवन से उठने के कारण, यद्यपि मन्दगति से हुन्ना है, तथापि जीवन का असन्तोष, भयानक, कटु और प्राण-पीड़क अनुभूतियों का समुद्र मंथन आपकी इस कान की कृतियों की मोलिक मजीवता का एक दुर्लभ गुण बन गया है। अब

तक लगभग दो सौ कहानियाँ तथा सात-श्राठ उपन्यास श्राप लिख चुके हैं। इधर सन ३० से श्रापकी रचनाश्रों में कला का जो श्रभिराम प्रस्कुटन हुआ है, वह सर्वथा श्रभिनन्दनीय है । आपकी कल कहानियाँ तो सर्वथा मनोवैज्ञानिक हैं। वे वर्णात्मक होने पर भी चरित्र-चित्रण की हिन्द से श्रानीखी श्रीर मनोहर हैं। परन्तु इनकी छोटी कहानियों में कला की श्राच्छी फलक मिलती है।

श्चापके कहानी-संग्रह मधुपर्क 'दीप मालिका' 'तथा उपन्यास मीठी चुटकी' त्यागमयी' श्चनाथ पत्नी''लालिमा.' 'प्रेम पत्र''प्रेम-निर्वाह' 'पतिता की साधना' 'पिपासा हैं। जिनमें 'पतिता की साधना तथा 'पिपासा' ने श्रच्छा सम्मान पाया है।

वाजपेयी जी से अभी हमें बहुत आशायें हैं।

–य०

# प्रभाकर माचवे एम ए साहित्य-रत्न— ( पृष्ठ २३४ पर देखिये )

#### श्री स्वर्गीय जयशंकर 'प्रसाद'—

'प्रसाद' जी के सम्बन्ध में श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी का लेख इसी आहू के ७६ वें प्रष्ट पर दिया हुआ है।

'प्रसाद' जी ४८ वर्ष की अवस्था में गत १४ नवस्त्रर को हिन्दी साहित्य को सुना करके चले गए ।

श्राप उच्च श्रेग़ी के कवि थे, कहानी लेखक थे, उपन्यासकार थे, नाटककार थे, श्रीर थे क्या नहीं ? सब कुछ थे। 'प्रसाद' जी की कृतियाँ उन्हें सर्वदा हिन्दी साहित्य में श्रमर रक्खेंगी।

ईश्वर 'प्रसाद' जी की उच्चात्मा को शान्ति दें!

य०

#### श्री विष्णुदत्त प्रभाकर--

श्चापका जन्म यू. पी. में मुजफ्कर नगर प्रांत के श्रन्तर्गत 'मीरापुर' क़रबे में २१ जून सन् १६१२ को हुआ। ११-१२ वर्ष की आयु में ही आप हिसार चले गए और तब से अभी तक वहीं रहते हैं।

नयं कहानी लेखकों में विष्णु जी का महत्व-पूर्ण स्थान है। श्रापकी कहानियां श्रन्य पत्रों के श्राविशक 'हंम' में नियमित रूप से निकलती रहती हैं। श्रापकी शैली बिल्कुल नई है, श्रीर श्रापके वर्णन करने का ढंग भी निराला है।

लेखक से अधिक प्रशंसनीय आपका व्यक्तित्व है। विष्णु जी स्वभाव के अत्यन्त ही सरल और मिलनसार हैं। जीवन की भिन्न-भिन्न परिस्थितियों ने त्रापको बड़ा अनुभवी बना दिया है।

विज्या जी का भविष्य बड़ा उज्ज्वल है। वह श्रभी नव युवक हैं। हम श्राशा करते हैं कि वह शीघ्र ही कहानी लेखक के रूप में ख्याति प्राप्त करेंगे।

## पं० विचित्र नारायण शर्मा-

श्चापका जन्म देहरादून प्रान्त के एक भद्र ब्राह्मए कुल में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा देहरादून में ही समाप्त कर श्चाप हिन्दू यूनीवर्सिटी बनारस में विद्याध्ययन के लिए चले गए।

स्वास्थ्य श्रीर स्वाध्याय दोनों ही उत्तम होने के कारण श्राप वहाँ से कोई ऊँची डिप्री लेकर निकलते, किन्तु विचारों की स्वतन्त्रता श्रीर देश की दुर्दशा ने यूनीवर्सिटी की चहार दीवारों से बाहर निकाल कर उन्हें प्रत्यत्त रूप से सार्वजनिक जीवन में डाल दिया। फल स्वरूप कई बार विचित्र भाई जेल गए।

त्राप श्राचार्य कृपलानी जी की देख-रेख में खादी में लगातार भिन्न-भिन्न रूपों में काम करते रहे हैं। यू. पी. में जो खादी की श्रपूर्व उन्नति दिखाई पड़ती है, उसमें श्रापका विशेष हाथ है। श्रापकी मिलनसारी श्रार कार्यपदता युवकों में नव जीवन का संचार करती है।

विचित्र भाई श्राज-कल मेरठ गांधी श्राश्रम में मन्त्री हैं।

— य०

#### श्री तारा पागडे-

तारा जी हिन्दी काव्य जगत की इन-गिनी कवियित्रियों में से एक हैं। श्री महादेवी वर्मा की कविता की भाँति आपकी कविताओं के पीछे भी किसी की आराधना छिपी रहती है।

आपकी प्रत्येक रचना बड़ी भाव-पूर्ण होती है। इसके अतिरिक्त आपकी भाषा बड़ी सरल होती है। आपकी कविताओं में 'वेदना' कूट-कूट कर भरी होती है। वास्तव में जीवन है भी वेदना मय।

श्रीमती तारा जी से भविष्य में बहुत कुछ त्राशा की जाती है। त्राप नैनीताल की निवासिनी हैं।

-य0

#### श्री निर्मला मित्रा

श्राप होशंगाबाद की निवासिनी हैं।

निर्मला जी बंगला भाषा भाषिणी होने पर भी हिन्दी की भाव-पूर्ण कहानी और गद्य-काव्य लेखिका हैं। आप की रचनार्थे हिन्दी के भिन्न-भिन्न मासिक पत्रों में अक्सर निकलती रहती हैं। आप प्रतिभाशालिनी लेखिका हैं।

## श्री प्रभाकर माचवे एम ए साहित्य-रत्न---

( पृष्ठ २३४ पर देखिये )

#### श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी

काशी के वे दिन भी चिर स्मरणीय रहेंगे जब कि वहाँ पर स्वर्गीय प्रेमचन्द्र जी, उपन्यास-कार; स्वर्गीय जयशंकर 'प्रमाद' जी, नाटक कार; श्री श्रयोध्यासिंह जी, कवि; श्री रामचन्द्र जी शुक्ल, श्रालोचक, के रूप में इकट्ठे होते थे। उन्हीं के बीच में श्री शान्तिश्रय द्विवेदी गद्य-सम्राट के रूप में जाते थे।

द्विवेदी जी ने बहुत कुछ लिखा है। उससे उनकी ऋध्ययन शीलता का पता चलता है। द्विवेदी जी कुछ कम सुनने के कारण दुनिया की बहुत सी बातों से बचे रहते हैं। बहुत समय हुआ आपने भिन्न-भिन्न किवयों की किवताओं का एक संमह 'परिचय' नाम से निकाला था।

शान्तिप्रिय जी प्रतिभाशाली लेखक हैं । श्रापकी श्रवस्था लगभग ३०-३४ वर्ष के है । श्राज कल श्राप प्रयाग में रहते हैं ।

--य०

### श्री सचिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन 'अन्नेय'---

( पुष्ठ २४० पर देखिये )

## श्री सुशीला आगा बी. ए.--

श्रापका जन्म जौन पुर में श्रकटूबर सन १६१४ में हुआ । आज कल सुशीला जी प्रयाग विश्व-विद्यालय में एम. ए. फाइनल की विद्यार्थिनी हैं।

हिन्दी कहानी साहित्य के पाठक सुशीला जी के नाम से भली भाँति परिचित हैं। आपकी कहानियाँ बड़ी सुन्दर और रोचक होती हैं। भाषा भी बड़ी सरल होती है।

कई वर्ष प्रयाग विश्वविद्यालय की गल्प- प्रतियोगिता में श्राप पुरस्कार पा चुकी हैं।

जीवन सधा-

ःदिसम्बर

श्रापकी कुछ कहानियों का संग्रह 'श्रतीत के चित्र' नाम से प्रकाशित हुश्रा है श्रीर दूसरा संग्रह शीघ ही निकलने वाला है।

---य०

## श्री जैनेन्द्रकुमार-

( २३३ पृष्ठ पर देखिये )

## श्री विमला बाई अवस्थी-

श्चाप शान्ति कुटीर, मुरादाबाद की निवासिनी हैं।

--य०

## श्री उपेन्द्रनाथ अश्क बी. ए. एल-एल. बी.--

श्री उपेन्द्रनाथ लाहौर के निवासी हैं। हिन्दी के अच्छे कहानी लेखक और किव होने के अतिरिक्त आप उर्दू में भी अच्छा लिखते हैं। आपका नाटक 'जय-पराजय ' अभी हाल में ही प्रकाशित हुआ है। अश्क जी अभी नव युवक हैं। हिन्दी साहित्य आपसे भविष्य में बहुत कुछ आशार्ये रखता है।

--य०

## श्री हरवंश सहाय 'बचन बी ए ---

'बच्चन जी' आजकल प्रयाग में रहते हैं। सन् २० में प्रयाग विश्वविद्यालय में एम. ए. प्रीवियस पास करने के पश्चान् आपने पढ़ना छोड़ दिया था। इस वर्ष आप उक्त विश्वविद्यालय से एम. ए. फाइनल कर रहे हैं।

'बच्चन' जी एक नवीन 'वाद' के प्रवर्त्तक हैं, श्रीर वह है—हालावाद। श्रापके हालावाद की धूम श्राजकल हिन्दी-काव्य जगत में खूब जोरों की मची हुई है ।

श्रापकी छ: पुस्तकें श्रव तक निकली हैं। 'खय्याम की मधुशाला' 'मधुशाला' 'तेरा हार' 'तेरी बाँसुरी', 'मधुवाला' श्रीर 'मधुकलश'।

'बच्चन 'जी ने २६२७ वर्ष की आयु में ही जो ख्याति पाई है, वह प्रशंसनीय और बधाई के योग्य है। —य०

## श्री हरदयाल 'मौजी' बी. ए.—

'मौजी 'जी हिन्दू कालिज दिल्ली में संस्कृत में एम ए के प्रथम वर्ष में अध्ययन कर रहे हैं। आपकी अवस्था लगभग २३-२४ वर्ष की है।

त्र्याप अन्छे कहानी लेखक हैं। आपकी कहानियों में मनोवेदना का बड़ा ही सुन्दर चित्र खिचा

दिखाई देता है।

श्रापकी कविताएँ भी बहुधा 'नवयुग' में निकलती रहती हैं । उनसे पता लगता है कि आप अच्छे किन भी हैं। —य०

## श्री योगेन्द्रनाथ भार्गव--

त्रापका जन्म श्रक्ट्वर मास में सम्वन् १६७८ के दशहरे के दिन श्रागरे में हुआ था। श्राप श्रीयुत द्वारकानाथ भार्गव जो राजपूत स्कूल जोधपुर में देड मास्टर हैं, के सुपुत्र हैं। योगेन्द्र जो श्रभी विद्यार्थी हैं, श्रीर साहित्यिक जीवन का श्रभी उनका प्रारम्भ ही है।

--य०

## श्री सोमेश्वरसिंह बी ए एल एल बी ---

श्री सोमेश्वर सिंह जी हिन्दी के सुप्रसिद्ध तथा गन्य मान्य कविवर ठाकुर गोपाल-शरण सिंह जी के सुपुत्र हैं। त्रापका जन्म सन् १६१० में नईगढ़ी रीवाँ में हुआ था।

प्रयाग विश्वविद्यालय से एल एल बी करने के पश्चात् आप आजकल नईगढ़ी (रीवाँ) में रहते हैं।

सोमेश्वर जी भी श्रपने पिताजी की भाँति बड़े सुन्दर किव हैं। श्रापकी प्रत्येक किवता के पीछे किसी श्रप्राप्यकी साधना छिपी रहती है। उसी साधना के द्वारा वे पाठक के हृदय को श्राकर्षित कर लेते हैं। उनके हृदय में छिपी वेदना है, कसक है, टीस है, जो उनकी कविता में निरन्तर बहती रहती है।

श्राप की स्कृटिक कविताश्रों का संग्रह 'रत्ना' नाम से प्रकाशित हो चुका है। दूसरा संग्रह शीघ ही प्रकाशित होने वाला है।

आपकी अवस्था लगभग २८ वर्ष के हैं।

#### श्री रूपिकशोर जैन-

भी रूपिकशोर जैन विजयगढ़ ( ऋलीगढ़ ) के निवासी हैं। आपकी ऋवस्था लगभग ४४-४६ वर्ष के हैं।

श्चापने 'श्चलिफ-लेला' का श्रनुवाद हिन्दी में "सहस्र-मंजरी" के नाम से किया है। इसके श्चितिरिक्त श्चापने बहुत सी सुन्दर श्चीर शिचा-प्रद कहानियाँ श्चीर नाटक लिखे हैं। श्चाप उर्दू में भी उतनी ही सुगमता से लिखते हैं जितना हिन्दी में।

आपकी कृतियाँ समय की किसी समस्या को लिये हुये होती हैं।

श्राप श्रन्छे श्राटिंस्ट भी हैं।

---य०

#### श्री दमयन्ती प्रभाकर-

श्रापका जन्म २२ सितम्बर सन् १६१८ ई० को हापुड़ शहर में एक प्रतिष्ठित पंजाबी श्रार्य परिवार में हुआ । श्रापके बाबा पंजाब के एक छोटे से गाँव बरबैल में रहा करते थे । श्रतः श्रापके बचपन के बहुत से दिन गाँव में ही ज्यतीत हुए।

वहीं पर दमयंती जी ने साढ़े बारह वर्ष की आयु में प्राइवेट मैंट्रिक और चौदह वर्ष की आयु में प्रभाकर की परीचायें पास की । इस वर्ष आप प्राइवेट एक ए की परीचा की तैयारी कर रही हैं। आपको घोड़े की सवारी से भी शीक़ है।

श्राजकल श्रापके पिता श्री रिपुसृदन सिंह हापुड़ में चेम्बर श्रॉब कामर्स के सैकेंट्री हैं। उन्हीं के साथ श्राप रहती हैं।

त्रापने एक उपन्यास तथा एक सीरीज बैटिक- धर्म पर लिखी है। एक पुस्तक 'धूल-धूसरित मिर्णयाँ' भाम्य-गीतों पर श्रापने श्रपनी बड़ी बहन के साथ मिलकर लिखी है। सभी पुस्तकें अप्रकाशित हैं।

—य०

## श्री जगदीश प्रमाद चतुर्वेदी बी. ए.—

श्री जगदीश प्रसाद का जन्म १४ श्रप्रेल सन् १६१७ को हुश्रा । श्राप बरेली निवासी राय साहव पं० रामप्रसाद चतुर्वेदी जेलर के सुपुत्र हैं। - जीवन स्रधा------ं-- दिसम्बर

लखनऊ विश्वविद्यालय से १६२६ में बी ए करने के पश्चात् इस वर्ष काशी विश्वविद्यालय में राजनीति शास्त्र (Politics) का एम ए का कोर्स पढ़ रहे हैं। आप अच्छे कहानी लेखक और किव हैं।

—य०

# श्री आदर्शकुमारी एफ. ए.-

श्री श्रादर्श कुमारी की श्रायु लगभग २० वर्ष के हैं। श्राप श्रालीगढ़ निवासी बा० काम्ता-प्रसाद एडवोकेट की सुपुत्री हैं। श्रापने कास्थवेट गर्ल्स कालिज इलाहात्राद से सन् १६३७ में इ'टरमीडियेट की परीज्ञा पास की श्रीर श्राव बी ए की तैयारी कर रही हैं।

श्चाप श्रन्छी कहानी लेखिका हैं। इसके श्रतिरिक्त श्रादर्श कुमारी जी को सँगीत विद्या से विशेष प्रेम है।

आजकल टीकाराम गर्ल्स हाई स्कूल अलीगढ़ में आप ऋध्यापिका हैं। आदर्श जी अच्छी आर्टिस्ट भी हैं।

—य०

## श्री गजेन्द्रनाथ पटेरया वो ए एल-एल बी--

श्राप का जन्म जुमोतियाँ ब्राह्मण कुल में आज से करीब २६ वर्ष पूर्व मध्यप्रदेश में हुआ। आपके पिता पं० देवीप्रसाद पटरेखा जी० आई० पी० रेलवे में एक उच्च पद पर हैं। बाल्य जीवन से आपको हिन्दी साहित्य से अनुपम प्रेम है। आपको मेंट्री-क्यूलेशन परीचा पास करने के पश्चान नौकरी के लिये ललचाया गया; पर आपने अपनी स्वतन्त्र प्रकृति के अनुसार उच्च शिचा की श्रोर बढ़ने का प्रयास किया।

देश प्रेम आपका रोग है। साहित्य सेवा भी आप करते रहते हैं। राष्ट्रीय विषय के लेख भी आप लिखते हैं। कभी-कभी आप कविताएँ भी लिखा करते हैं।

श्राप दमाह (सी० पी०) के निवासी हैं।

--य0

#### श्री नेमिचन्द जैन-

श्रापका जन्म २७ श्रगस्त सन् १६१६ को श्रागरे में हुआ। श्राज कल श्राप श्रागरा कालिज में धर्ड ईयर के विद्यार्थी हैं।

नेमिचन्द जी की कविताएँ और गद्य-काव्य 'कर्मवीर' में छपे हैं। इधर आप की कई-एक कविताएँ 'हंस' में भी छपी हैं।

स्कूल के जीवन में आपको कहानी, कविताओं पर पुरस्कार भी मिला है।

--य0

# श्री शकुन्तला कुमारी प्रभाकर—

शकुन्तला कुमारी जी दिल्ली की निवासिनी हैं। आपकी आवस्था २० वर्ष के लगभग है। आपने सन्' ३४ में प्रभाकर की परीचा पास की और अब दिल्ली के क्विन मेरी स्कूल में अध्यापिका हैं।

शकुन्तला कुमारी जैनेन्द्र जी की भानजी हैं।

--य०

## श्री रामनारायण श्रीवास्तव 'ग्ररीब'—

श्चापका जन्म १४ श्वक्टूबर सन् १६२० में मध्यप्रदेश के छिन्दवाड़े श्विले में हुआ। श्चाप श्रीयत मुन्शी महादेव प्रसाद श्रीवास्तव के सुपुत्र हैं।

१० श्रगस्त सन् १६३६ को कृष्णाष्टमी के श्रवसर पर 'व्यावहारिक-जीवन में गीता की उपयोगिता' विषय पर श्रापको हिन्दी-प्रचारिणी समिति क्किन्दवाड़ा की श्रोर से सर्ब-प्रथम पुरस्कार मिला। बाद में दो पुरस्कार श्रीर मिले जो सर्व-प्रथम थे।

रामनारायण जी त्राज कल "गरीब-भारत" नामक नाटक लिख रहे हैं जो शीघ ही प्रकाशित होने वाला है।

—य०

# श्री सुरेन्द्रकुमार अष्ठाना बी. एस-सी, एल-एल. बी.--

श्री सुरेन्द्रकुमार बा० एम. पी. श्रष्टाना, एडीशनल जज गोंडा के सुपुत्र हैं। प्रयाग विश्व-विद्यालय से बी. एस-सी, एल-एल. बी. करने के पश्चात् आई. पी. ऐस की परीक्ष की तैयारी कर रहे हैं।

गत जून में आपने भिन्न भिन्न कवियों की कविताओं का एक संग्रह "संग्रह" नाम से

प्रकाशित किया है।

श्राप प्रयाग में रहते हैं। श्रापकी श्रवस्था लगभग २२-२३ वर्ष के है। सुन्दर कविताओं के श्रातिरिक्त श्राप श्रव्छी कहानियाँ भी लिखते हैं।

---य०

#### श्री रामचन्द्र तिवारी--

आप स्थानीय हिन्दू कालिज में बी. एस-सी प्रीवियस के विद्यार्थी हैं। आप की अवस्था लग-भग २२-२३ वर्ष के हैं।

तिवारी जी की कहानियाँ तथा कविताएँ बड़ी सुन्दर होती हैं। आपका अध्ययन गहन है। कहानी और कविताओं के स्थलों का आप बड़ा ही स्पष्ट चित्र चित्रित कर देते हैं। यही आप की विशेषता है।

—य०

#### श्री रंजीतप्रसाद जैन 'अनजान'—

श्राप का जन्म सन् १६१७ में कौड़ियागंज (श्रालीगढ़) में हुश्रा था। फर्स्टईयर से पढ़ना छोड़ कर श्राज कल श्राप स्थानीय श्रायुर्वेदिक एएड यूनानी तिब्बी कालेज के द्वितीय वर्ष के विद्यार्थी हैं। श्रपने कालिज के मासिक पत्र 'श्राचार्य धन्वन्तिर' के श्राप सम्पादक हैं। 'श्रनजान' बड़े ही हँस-मुख युवक हैं। सादगी श्रापके जीवन की विशेषता है। श्राप कहानियों के श्रातिरिक्त किवताएँ भी लिखते हैं।

#### श्री कमलादेवी प्रधान बी० ए०-

कमला जी प्रयाग विश्वविद्यालय की ग्रेजुएट हैं। श्राप की रचनाएँ 'माधुरी' श्रीर 'चाँद' में श्रारंभ में छपती थीं। श्रापको संगीत से बहुत प्रेम है।

---य०

#### श्री नरेन्द्र एम० ए०--

नरेन्द्र जी ने हिन्दी के किवयों में अपना स्थान बना लिया है। प्रयाग विश्वविद्यालय से एम. ए. करने के बाद अब आप प्रयाग में ही रहते हैं। आप की अवस्था लगभग २३-२४ वर्ष के है। आप वड़े ही मिलनसार हैं।

नरेन्द्र जी का भविष्य उज्ज्वल है। हमें पूर्णाशा है कि एक दिन हिन्दी-काव्य जगत में वे ऊंचा स्थान पार्वेंगे।

--य०

## श्री अज्ञय कुमार जैन-

श्चाप विजयगढ़ ( ऋलीगढ़ ) निवासी श्री रूप किशोर जैन के सुपुत्र हैं। होल्कर कालिज, इन्हीर से श्चापने इंटरमीडियट पास किया है श्रीर इस वर्ष बी. ए. की परीचा दे रहे हैं।

अत्य जी की कहानियाँ इधर 'अर्जुन' श्रीर 'बीए।' में प्रकाशित होती रहती हैं। फिर भी हिन्दी माहित्य के लिए अभी वह नए हैं।

मंगीत विद्या से आपको शीक है। आप भिन्न-भिन्न प्रकार के गायन-यन्त्रों का प्रयोग जानते हैं।

श्रवय जी का व्यक्तित्व सुलका हुआ है। वह बहुत मिलनसार हैं।

-य०

#### श्री काली प्रसाद 'विरही'—

त्राप ग्वालियर राज्यांतगत चचौड़ा प्राम के निवासी हैं। मध्य-भारतीय हिन्दी साहित्य के कवियों में आपका विशिष्ट स्थान है।

मानव हृदय की गहरी संवेदनामय अनुभूति आपकी कविता का मुख्य विषय है। मानव हृदय के घात-प्रतिघात का सुन्दर चित्र आपकी कविता से चित्रित होता है।

"श्रापकी कविता पुस्तक "उच्छ्वास" प्रकाशित हो चुकी है। 'बेदना की बूँ दें' श्रापकी अप्रकाशित रचना है।

'विरही' जी आज कल एक खंड-काव्य लिख रहे हैं।

<del>-</del>-य०

## पं० गोकुलचन्द शर्मा, एम. ए.-

पं० गोकुत्तवन् का जीवन आरंभ ही से साहित्यिक रहा है। जीवन में कुछ करने तथा कुछ बनने की प्रेरणा आपको सर्वदा ऊँचा उठाती गई है।

पंडित जी ने मैट्रिक, इंटर, बी. ए., एम. ए. सभी परीचाएँ प्राइवेट पास की हैं। आज कल आप धर्म समाज इंटरमीडियेट कालिज अलीगढ़ में हिन्दी विभाग में प्रोफ़ सर हैं।

पंडित जी हिन्दी के उत्कृष्ट कवि हैं। 'जयद्रथवध' आदि पुस्तकें आपकी प्रकाशित हो चुकी

श्राप स्वभाव के बहुत ही सरल श्रीर सीधे हैं। श्रहंकार आपको छू तक नहीं गया। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि साहित्य सेवा के लिए उन्हें बहुत से वर्ष हैं।

—य०

#### श्री जयंत---

आपका जन्म १७ मई सन् १६१७ की लुधियाने में हुआ। आप घो० इन्द्र के सुपुत्र हैं श्रीर स्थानीय कमर्शियल कालिज के विद्यार्थी हैं।

इधर एक वर्ष से आपने कहानियाँ लिखना आरम्भ किया है। इसी बीच में जयन्त जी ने लगभग पच्चीस कहानियां लिखी हैं। श्रापको चित्र बनाने का शौक है। श्रपनी कहानियों के लिए श्राप स्वयं चित्र बनाते हैं। श्रापके बनाये चित्र समय-समय पर 'साप्ताहिक श्रार्जु न' में छपते रहते हैं।

खेलों की दुनिया में भी श्राप पीछे नहीं हैं। श्राप सब खेलों के खिलाड़ी हैं। श्रापकी रचना से श्रापका भविष्य उज्ज्वल दिखाई पड़ता है।

--य0

#### श्री मातादीन भगेरिया--

श्चापका जन्म सन् १६१२ में शेखावाटी चिड़ावा नामक स्थान पर एक उन्च कुल में हुन्ना है।

श्राजकल श्राप दिल्ली में रहते हैं। श्रापका व्यक्तित्व बहुत खरा है। मातादीन जी सुन्दर किव हैं श्रीर उस श्रोर श्रापका विशेष रूमान है। —यव

#### श्री इन्द्रदेव---

श्चापका जन्म १२ श्रक्टूबर सन् १६१२ को श्रजमेर में हुआ। श्राज कज इन्द्रदेव जी दिल्ली में रहते हैं और स्थानीय साप्ताहिक 'नवयुग' में सह।यक सम्पादक हैं।

### प० 'उमेश' चतुर्वेदी साहित्य भूषण, कविरत्न-

श्राप का जन्म ३ मई सन् १६१६ को बरेली में हुआ।

आज कल आप जयपुर में रहते हैं। इंटरमी हियेट तक आप ने उर्दू के साथ शित्ता पाई है और हिन्दी की उपाधियाँ सब प्राइवेट प्राप्त की हैं।

'उमेश' जी के 'भक्त सुधन्वा', 'नल-दमयन्ती', 'सावित्री', 'श्रवर कुमार' श्रादि नाटक हैं तथा 'तलाकवाली' 'हिन्दू-पति' श्रादि उपन्यास हैं। —य०

## श्री नगेन्द्र -एम ए —

आप दिल्ली में रहते हैं, और स्थानीय कमर्शियल कालिज में प्रीफेसर हैं। आपने आगरा कालिज से दो बार हिन्दी और अंग्रेजी में एम. ए. किया है।

सुमित्रानन्दन 'पंत' जी पर श्राप एक पुस्तक लिख रहे हैं। श्रापकी स्कृटिक कविताश्रों का संग्रह श्रभी 'वन-त्राला' के नाम से निकता है।

—**π**α

## श्री हजारीलाल जैन-

श्चापका जन्म विजयगढ़ (श्रलीगढ़) के एक भद्र जैन कुल में हुआ। श्रापकी श्रवस्था लगभग २८-२६ वर्ष के हैं।

श्राजकल श्राप श्रलीगढ़ से प्रकाशित 'स्वराज्य' श्रीर श्रंभेजी के पत्र 'श्रलीगढ़ टाइम्स' का सम्पादन कर गहे हैं। -य०

#### श्री सागर—

श्राप स्थानीय सेन्ट्ल बैंक के एकाउन्टेन्ट, पं० जगन्नाथ के सुपुत्र हैं। पिछले साल २२ वर्ष की श्रायु में एक. एस-सी. पास करके अब स्थानीय रैमिंग्टन टाइपराइटर कम्पनी में काम कर रहे हैं। साहित्य में श्रापका प्रवेश अभी प्रारम्भिक है। —य०

## श्री शत्रोदेवी चतुर्वेदी 'हिंदी-रव'---

शक्नोदेवीजी का जन्म २४ जून १६२० को हुआ। आप श्री जगदीशप्रसाद की धर्म-पत्नी तथा शिमला निवासी पं० जमुना प्रसादजी की सुपुत्री हैं।

श्रापने पंजाब विश्वांवद्यालय की 'हिंदी रत्न' की परीचा सन् १६३४ में पास की। श्राप कहानी लेखका हैं श्रीर कविता भी करती हैं। फोटोगाकी से श्रापको शौक है।

--य0

श्री रत्नकुमारी माथुर--

श्चापकी श्रवस्था १४ वर्ष की है, श्चाप श्री हरदयाल, फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट की सुद्री हैं, श्रीर सांभर लेक की रहने वाली हैं। श्चाप इतनी श्चल्प श्चायु में ही सुन्दर कविता करती हैं। श्च.पका भविष्य बड़ा उज्ज्वल है।

#### श्री कृष्णचन्द्र 'मुद्गल-

श्राप इन्दौर के निवासी हैं। श्रापकी श्रवस्था इस समय २७ वर्ष की है। श्राप इन्दौर से प्रकाशित 'फिल्म लोक का संस्पादन कर चुके हैं। सिनेमा साहित्य से श्रापको विशेष प्रेम है, इसी में श्रापने लिखा भी श्राधिक ह। कृष्णचन्द्रजी एकांकी नाटिकाएँ भी लिखते हैं।

— यव

## श्री प्रभात कुमार बी, ए, एल-एल, बी, ऐडवोकेट--

श्राप इलाहाबाद हाई कोर्ट में बकालत करते हैं। श्रापकी श्रवस्था लगभग ४० वर्ष के है। श्राप सुन्दर किव हैं। श्रारंभ में श्रापकी किवताएँ भिन्न-भिन्न पत्रों में छपती रहती थीं। इन दिनों तो श्रापने बहुत कम लिखा है। श्रापकी किवता 'हिमालय' बड़ी सुन्दर है। श्राप श्रपनी दो पुत्रियों तथा धर्मपत्नी सहित प्रयाग में ही रहते हैं। —य०

#### श्री रमेश चन्द्र आर्य-

श्चाप विजयगढ़ (श्वलीगढ़) श्रार्थ्य-समाज के मंत्री श्री लाला बैनीराम श्चार्थ्य के सुपुत्र हैं। बचपन से सार्वजनिक सेवाश्चों की लगन होने के कारण श्चाप धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक श्रीर साहित्यिक प्रगतियों में सदा भाग लेते रहे हैं। रमेराजी विभिन्न संस्थाश्चों के पदाधिकारी हैं। कांप्रेस श्चान्दोलन में जेल-यात्रा भी की है।

त्राजकत त्राप दिल्ली में दैनिक 'त्रर्जुन' के स० सम्पादक हैं। त्रापकी लिखी 'श्री सुभाष चन्द्र बोस' नामक पुस्तक हाल ही में प्रकाशित हो रही है। त्रापकी उम्र लगभग २६-२७ वष की है।
—य०

#### श्री अविनाश चन्द्र पाग्डेय चातक'—

श्रापका जन्म सन १६१० में बहरांइच (श्रवध) के एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण कुल में हुआ। श्रापकी श्रवस्था २१ वर्ष के लग भग है। इन दिनों श्राप मेरठ कालिज में बी.ए. के विद्यार्थी हैं। श्रापकी रचनाएं बहुधा सामयिक पत्रों में प्रकाशित होती रहती हैं। पाएडे जी एक सुमधुर गायक भाव पूर्ण किव तथा एक होनहार कहानी लेखक हैं साथ ही साथ है सामुख, नम्न, सभ्य तथा मिलनसार हैं।

#### श्री श्रोनिला पाठक--

चाप स्थानीय क्विन मेरी स्कूल की ६ वीं कत्ता की विद्यार्थिनी हैं।

---य०

#### श्री श्रोमप्रकाश शास्त्री विद्याभास्कर—

श्रापका जन्म जिला सहारनपुर के श्रंतर्गत देवबन्द नामक स्थान पर हुश्रा । श्रापने स्नातक ज्वालासुर महाविद्यालय में शिका पाई श्रीर वहीं से 'शास्ती' श्रीर 'विद्या-भास्कर' की परीज्ञाएं पास कीं ।

श्चाप श्चार्योपदेशक तथा पुरोहित भी हैं। मंगीत से श्चापको विशेष रुचि है। श्चाज कल शास्त्री जी दिल्ली में रहते हैं।

—य०

#### विज्ञापन दाताओं से—

कुछ विशेष कारणों से हमने सभी विज्ञापन जो हमारे पास जीवन-सुधा में छपने के लिए आए हैं, इस ऋडू में जाने से रोक लिए हैं। हमें स्वयं इसका दुख है।

हम अपने विज्ञापन-दाताओं से प्रार्थना करते हैं। कि वे इसके लिए हमें ज्ञमा करदें। जीवन-सुधा के आगामी अङ्कों में उन्हें निकाल दिया जावेगा।

> --व्यवस्थापक जीवन-सुधा, चाँदनी चौक दिह्मी।

#### to the standard for the standard to the standard to the standard and the standard to the stand

#### सिद्ध सालब पाक रसायन

( रजिस्टर्ड ) यह रसायन वीर्य-सम्बन्धी सब रोगों को दूर करके उसे शुद्ध-पुष्ट एवं सन्तानोत्पत्ति के योग्य श्रमोध बना देती है। धातु दौर्बल्य रोग से त्राकान्त होकर जिन मनुष्यों के रस, रक्त माँस शुकादि सम्पूर्ण धातु ज्ञीण हो गये हैं तथा बीर्य के पतला होनेसे म्बप्नदोप, शीघ्र पतन, इन्द्रिय की शिथिलता, प्रतपत्वहानि, अधिक शुक्रपात तथा ध्वजभङ्गादि रोगों के कारण से इन्द्रिय-सुख रहित वंशलोप की श्राशङ्का से समय व्यतीत कर रहे हैं, उन्हें इस रसायन का सेवन करना संसार-सुख एवं सान्तानोत्पत्ति के लिए अतीव सुखकारी होगा। यह देवी औषध बृद्ध पुरुषों को भी युवा तुल्य शक्तिमान बना देती है, दिमारा को बड़ी नाक़त देती है। इस कारण उन लोगों के लिए जिन्हें दिमासी काम करना होता है जजों, बैरिस्टरों, वक लों एवं पत्र-सम्पादकों, व्याख्यान-दाताओं आदि को बड़ी सुखकारी वस्तु है। हर तरह की निर्वलता को दूर करने वाली एक उत्तम स्वादिष्ट अनुपम खराक है। मूल्य एक सेर का ७) १—पाव का डिब्बा २) क० डाक ब्यय पृथक

#### मिद्ध-कस्तूरी रसायन तिला

(र्गजस्टर्ड)

अक्न की कुटिलता, दुर्बलता; शिथिलता आदि नष्टकरके नपुंसक को पुरुपत्व देता है। मृ० प्रति तोला १०) १ शीशी २॥) छोटी शीशी १।) डाक व्यय पृथक।

#### शेरनी के दूध का सुरमा ( र्राजर्स्ड )

यह हमारे श्रीपधालय का सुविख्यात मुग्मा है। यह श्रमस्त मुनि का श्राविष्कृत शास्त्रीय है। तथा सिंहनी के दुग्धादि श्रमेक दवाश्रों से दन । है। नेत्र के स-पूर्ण रोगों को दूर करता है तथा नेत्रों की ज्योति की बढ़ाता है। कुझ दिन का सबन ऐनक छुड़ा देता है। मृ० प्रति शीशी १) नमूना॥) डाक ब्बय पृथक

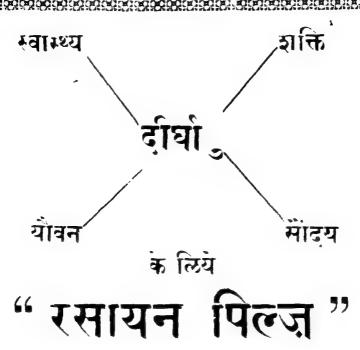
वृहत आयुर्वेदाय श्रीपन मांडार जीहरी वाजार देहली

# श्वेतकु ष्ठाँतक

-0\*0-

यह हमारी खानदानी
परम्परा से अनुभूत, देश
देशान्तरों में प्रसिद्ध
अद्वितीय दवा है। जिस
के सेवन से लाखों रोगियों
को लाभ हुआ है। चाहे
शरीर का सारा ही भाग
क्यों न स्वेत होगया हो
इसके सेवन से अवस्य लाभ
होगा।

एक बार इस द्वा को अवश्य सेवन कर देखें।
पूरा विवरण जानने के लिए
हमारी 'श्वेत कुष्ठ' नामक
पुस्तक सुफ्त मंगाकर पहें।
१ मास की द्वा ४) क०,
लेप करने की ४ गोली ४) क०,
नमूने की एक गोली
१) क०। डाक व्यय पृथक



# तमाम ताकृत की दवाओं की मरताज

### का संवन करें।

म्नायिविक दुर्वलता. भृष्य न लगना. शिद् न आना पौरुपहीनता. शारीरिक निबंलता इत्यादि रोगों को दूर करके जीवन बर्धक अंशों को शारीर में पहुंचाती हैं। इनके थोड़ ही दिन के सेवन से शारारिक, मिन्नकह्व व पुरुपत्व शिक्त बढ़ जाती है। हाज्ये की नाकत तेज होकर भृष्य खूब लगती है। जो भाजन खाया जाता है सब शोध पच कर आहार रस में परिण्त होजाता है। शारीर मोटा नाजा मुझेल और नाकतवर होकर मुख सुन्दर और नेजस्बी बन जाता है।

> मूल्य प्रति शीशी (४८ गोलियां) २) डाक ब्यय पृथक

वहत् आयुर्वेदीय औषध भाण्डार चान्द्नी चौक दहली

# लेखकाङ्क के लिए

## शुभ संदेश

भारत में ऋषेजी राज्य' के रचियता महात्मा सुन्दरलाल जी लिस्नत हैं-

प्रिय यशपाल जो !

जीवन-सुधा के लेखकाङ्क के लिये आप मेरा सन्देश चाहते हैं। यह आपकी सम्रादनमन्दी है। आपके श्रीर आपके इस प्रयास दानों के लिये मेरा आशीवाद, मेरी शुभकामना है।

सस्तेह-सुन्दरलाल

हिन्दी साहित्यके सर्वोत्कृष्ट कलाकार श्री जैनेन्द्र कुमार लिखते हैं-

जो शल्मी श्रीर समाजी जीवन में सचाई श्रीर स्वच्छता के लिय बढ़ता है, उस सब के मैं साथ हूँ। मैं चाहता हूँ कि जीवनसुधा रहे ता इसी के लिय, नहीं ता नहीं।

···जैनेन्द्र कुमार

श्राचार्य चतुरसेन शास्त्री वैदा लिखतं है-

ंजीवन-सुधां निरन्तर अपने पाठकों को जिस प्रकार जोवनसुधा प्रदान करता रहा है वह स्तुत्य है, लेखकाङ्क का श्रायोजन उस से भी अधिक। उसकी दत्तरांत्तर वृद्धि हो यही मेरी अन्तः कामना है। -

- चतुरसेन शास्त्री वैद्य

#### अर्जुन सम्पादक श्री रामगोपाल विद्यालंकार लिखत है-

प्रिय यशपाल जी

...्त्रापने इसके लिये 'मेंटर' संबंध करने में कमाल ही कर दिया है।

...निश्चय है कि काई भी पाठक इसे बिना पमन्द किये न रह सकेगा। श्रीर एक बार उठा कर विना समाप्त किये न छोड़ना चाहेगा।

... श्रीर सब से बढ़ कर यह कि आपका यह एक बार पढ़कर भी मदा सम्भाल कर रखने योग्य वस्तु बन गयी हैं।

देखिय, श्रंक प्रकाशित होने पर मेरी प्रति भेजना न भूल जाइयेगा !

ञापका-

रामगोपास

उत्कल भारती डा० (श्रीमती) कुन्तल कुमारी देवी लिखती हैं-

......इमका लेखकांक रूप नृतन वेश देख कर बड़ी प्रसन्नता हो रही है। हमारे उत्साही नवयुवक साहित्यक श्री यशपाल जी जैन के सुयाग्य सम्पादकत्व में यह श्रीभनव साहित्यिक श्रोक जरूर बहुत ही श्रम्छा निकलगा।

दिर्ला।

-शीमतो कुन्तल कुमारी देवी

-1

以美.

JIVAN SUDHA

DELIH

1.2.3.

:X3

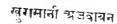
विष विज्ञान





टॅन्ट्राथ्मा





# जीवन सुधा

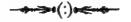
# विषविज्ञान

(विशेषाङ्क )

इस अङ्क के विशेष सम्पादक

पं० चन्द्रशेखरानन्द 'बहुगुणा' वैद्यशास्त्री

( प्रो०-ए० एएड पू० तिन्बी कालेज देहली )



प्रकाशक

वृहत् आयुर्वेदीय श्रीषध भागडार

(रजिस्टर्ड)

चांदनी चौक देहली

अशोक प्रिंटिंग प्रेस चांवनी चौक विल्ली में पं अहाबीर मसाव जी द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित

# विषय सूची

# ---()o[]o()----

क्रम संख	या विषय	<b>'B</b>	कम संख्य	।। विषय	ម <b>ិន</b>
٤.	विष	9	१६.	मीठ विष ( Aconite )	¥Ξ
₹.	कार्वोत्निक एसिड	8	<b>१७</b> .	श्रकोम ( opium)	६३
₹.	एसिड हाइड्रो सियानिक (Hydroc	У	۲ <b>=</b> .	श्रकीम विष नाशक उपाय	
	anic acid.)	3	88.	बेलंडीना (Bella lona)	७१
8,	हाइड्रो क्लोरिक एसिड्, सल्पर्यारव	5	₹0.	डिजिटेलिस ( Digitalis )	৬৪
	एसिङ्, नाइट्रिक एसिङ्, फारकोरिक	5	₹१.	कपूरे ( Camphor )	40
	एसिड्, एसिड् श्रीग्जलिकम	१४	ર્ર્	सैलोल ( Salol )	= ?
¥.	एमोनियम ( Ammonium )	१६	२३.	सल्कोनल ( Sulphonal )	<b>5</b> 2
<b>Ę</b> .	संखिया ( Arsenic )	?=	₹8.	क़्लोरीन ( Chlorine )	<b>=</b> 2
<b>v</b> .	एन्टिमनी ऋलोराइड, एन्टिमनी कम्पै	<b>i</b> -	₹¥.	ह्रायोसायमस ( Hyocymus )	58
	न्ड टार टार एमेटिक	३३	રફ.	कैन्थरीडीज ( Cantharides )	83
۲.	कास्टिक पोटास ( Caustie Pota	J	ર્હ.	लाबीलिया ( Lobelia )	23
	ss)	६३	₹5.	विष सम्बन्धी कुछ साधारण बार्ते	ورد
٤,	र्संसा ( Lead )	₹¥	₹.	मृषिक विष	१०२
<b>₹0.</b>	तृतिया ( Copper Sulphate )	३⊏	₹0.	कौलविकम ( Colchicum )	११०
88.	श्रायोडीन ( lodine )	४२			
१₹.	पारद ( Mercury )	84	३१.	चाय में विपैला तत्व	११३
<b>१</b> ३.	कारकोरस ( Phosphorus)	४३	३२.	विष विज्ञान	११६
<b>88</b> °	चान्दी (Silver)	XX	<b>३</b> ३.	त्रिषैली सुन्दरी ( कहानी )	१२२
१४.	র্নি <b>ক (</b> Zinc )	ሂ	₹8.	सम्पादकीय ।	

# जीवन सुधा



वेदाराज श्री. इंश्वरदत्त (मश्र) वेदा शास्त्री उन्दोर ।



श्री कविराज 'हर्जु लः मिश्र ऋायुर्वेद।चार्य रायपुर । (सी. पी.)



श्री पंज्ञचन्द्रशेखरानन्द्र बहुगुगाः वैद्यशास्त्री प्राव्यतिवयां कालिल देहली।



श्री**यु**त डाट बी. मी. शुक्ला L. M. S. H. M. I) शुक्ला भवन, मेरठ।



वर्ष ७

वीर निर्वाण सम्वत् २४६४, अप्रैल-मई सन् १६३७

अंक १-२

# शिव का विषपान

सोचा शिव शंकर ने सिन्धु में विकिध रतन.

ष्मव प्रकरेंगे क्योंकि मन्थन करारा है।

कोई लेगा लदमी - रत्न, कोई हय गज - रत्न,

बिस ने सुधा सा रत्न मन में बिबारा है।

विन्तु यह स्वार्थियों का ध्येय है सदैव,

परमार्थ युक्त पंथ अति कठिन करारा है।

दु:स्वी दीन जन देतु सारे रत्न तुच्छ हुए,

दीन जन प्यारा, विष रत्न ही हमारा है।

Consideration and All Association and Comments

## दो शब्द

- (o)-

पाठक सज्जन गए।

आज हम उस सर्वशक्ति युक्त समर्राष्ट्र परम पिता परमात्मा की कृपा से जीवनसुधा का यह विष विज्ञान--विशेषाङ्क आपके सामने उपस्थित कर रहे हैं। भावना तो यह थी कि इस अङ्क को और भी सुन्दर एवं सुपाठ्य बनाते परन्तु इसका आकार बढ़ जाने तथा दूसरे समय बहुत हो जाने के भय से फिरभी इसे जितना सफल एवं उपयोगी बनाने के लिये निरन्तर परिश्रम करके जो कुछ हम तैयार कर सके हैं वह आपके सामने प्रस्तुत किया जाता है।

जिस कार्य की पूर्त का भार हमने इस विशेषाक्क हारा अपने हाथों में लिया था यदि यथाथ में पूर्ण-तया उसे किखा जाय तो एक बहुत बड़ा श म्त्र बन जाये तथापि जिस इच्छा का हम इसमें समा-वेश करना चाहते थे किसी हद तक उसकी पूर्ति करने में सफल प्रयत्न हुये हैं। भारतवर्ष में प्रायः विप खाकर आक्ष्मचात करने की कुप्रथा आजकल बहुन सुनने व देखने में आती है और ऐसे विष प्रायः अकीम, संग्विया, धतुरा, कुचला, हड़ताल, मंमिल जमालगोटा इन्यादि तथा इनके मिश्रण ही हैं जिनसे ऐसी घटनायें हवा करती हैं कुछ उच्च श्रेणी के पढ़े लिखे प्रभी मनुष्यों में उच्च दरजे के विष जैसे पोटाम माईनाइड, एमिड हाइडामिया-क इत्यादि खाकर प्रेम बिरह में मर जाने की दशा भी बहुत जोर पकड़ती जारही है, इसलिए दोनों ही प्रकार के विषों के बर्णन हमने इस श्रद्ध में समावेश करने का भरसक प्रयत्न किया है जिससे ऐसी हालत होने पर लक्षण जान कर उस विष के विषे को दूर करने का प्रयत्न किया जा सके।

हम अपने लेखकींका हार्दिक धन्यवाद करने में भी नहीं चुक सकते जिनकी कृपाके कारण इस इस महान उपकार के कार्य की पूर्ण करने में सफल प्रयत्न हुए हैं। इस श्रीयुन पं । चन्द्रशेखरानन्द "बहुगुण्"वैद्यशास्त्री प्रो**ं**श्राफकेंमिष्टी निब्बीकालेज देहली, की कृपा के बड़े आभारी हैं जिन्होंने हमारी प्रार्थन। को स्वीकार कर इस विशेषाङ्क के सम्पादकत्व का भार प्रहण सहर्ष स्वीकार किया श्रीर अपने अमृत्य समय को प्रदान कर हमें कृतार्थ किया । बहुत से लेग्यक सज्जनों की रचनार्ये हम स्थानाभाव से छापने में असमर्थ हुये है उनमें से कुछ की रचनायें परिशिष्टाङ्क में देरहे है बाकी अगले अङ्कों में देंगे उनके भी हम बड़े आभारी हैं जो अपना अमृल्य समय लगाकर श्रपनी श्रमूल्य रचनार्ये भेजकर सुधाके प्रति श्रपना प्रेम दर्शायः। अज्ञान और प्रमाद वश बृटियों -और अशुद्धियों का रहना स्वाभाविक है। आशा है पाठक इसके लिये समा करेंगे।

> एम० के० जैन मैनेजर जीवनसुधा

# विष

[ ले०-पं० चन्द्रशंखरानन्द 'बहुगुणा' श्रायुर्वेद शास्त्री, प्रो० तिच्बी कालिज देहली ]

**--**\*--

संसार को समभ ने के लिये आकाश बाय तेज जल और पृथ्वी इन भूतोंको समभना चाहिये किन्तु ये अत्यन्त सूर्म हैं इस लिये प्रत्यत्त नहीं हो सकते, शब्द स्पर्श हृप रस श्रीर गन्ध गुर्णों के द्वारा इनका ज्ञान उचित तद्भृत प्रधान इन्द्रियों से प्रत्यच हो जाता है। इन के परमाखुओं से महाभूत श्रौर मह।भूतों के परस्परानुप्रवेश ढारा तथा प्रत्येक के तार तम्यानुसार सम्पूर्ण भौतिक पदार्थ बनते हैं। इसी की प्रकृति का विकार कहते हैं। इसिन्ये आकाश भाग अधिक होने से आकाशीय वायुतस्व अधिक होनेसे वायबीय आदि मोटी नजर से पांच प्रकारकी भौतिक सृष्टि को बांट सकते हैं। किन्तु आकारायि वायवीय या तैजस बहुत पदार्थी में आरनेयान्श अधिक ही रहता है और जलीय या पार्थित भाग बहुल पदार्थी में आपेतिक आग्नेयांश न्यून और सीम गुण अधिक रहता है। इसलिये इस सारे संसार को दो विभागों में विभक्त कर सकते हैं प्रथम आरतेय और दिनोय सौम्य। आरते-यान्श प्रधान पदार्थ शरीर में बनिस्बत सौम्य पदार्थ के शीव फैलता है इस लिये उसके दोष गुण अत्य-नत आशुकारी होते हैं। सौन्य पदार्थ इतने शीघ नहीं व्याप्त होते हैं इस लिये स्थित स्थापक होते हैं।

जो पदार्थ जितने वलवान और आग्नेया श अधिक होंगे उनके दोष गुण उतने ही अधिक शीव्र व्यापक बलवान दोप या गुण वाले होंगे। आज हम पाठकों के समझ उस पदार्थ की लेकर उपस्थित हो रहे हैं जो कि अपने दोषों के कारण महा भयंकर है और गुणों के कारण अमृत के समान है।

यह पदार्थ 'विष' शब्द से परिचित है जिसका शाब्दिक अर्थ 'शीघ व्यापक होने वाला' है। वस्तु जात मात्रानुक्ष्प शरीर के अन्दर व्याप्त होते हैं व्याप्त होने के कारण ही शरीर के आंग बन सकते हैं किन्तु मात्रा से अधिक होजाने पर सबपदार्थ विष कार्य करने वाले हो जाते हैं इससे यह निष्क-पं निकलता है कि वस्तु जात शरीर में व्याप्त होते हैं किन्तु अधिक मात्रा से दुर्गुण (दोषका कार्य) करते हैं, इस लिये पदार्थ मात्र विष हैं। अब यह सिद्ध हो जाता है कि पदार्थ जात अपनी मात्रा के अनुकर्ण अमृत हैं किन्तु अधिक मात्रा में विष हैं क्यों कि तब वो विष कार्य से शरीर को नाश की ओर ले जाते हैं।

उपरोक्त कथन से वस्तुजात के "विष" कहने में कोई अत्युक्तिन होने पर भी हम यहां पर उन विषों के विषय पर ही संसेप से वर्णन करेंगे जिनको कि आरम्भ काल से विष कहते आये हैं, जो कि अत्यन्त आशुकारी और मारक हैं, या युक्ति युक्त प्रयोग करने से अमृत के समान हैं।

पहिले लिख आये हैं कि सारा संसार "श्रम्नी-षोमात्मक" है इस लिये कोई भी पदार्थ इन विभा-गों से बाहर नहीं जा सकते हैं किन्तु श्रम्नि गुरा भृयिष्ट पदार्थ ही आग्नेयान्श अधिक होने से शीघ्र फैलते हैं इस लिये विष मात्र का अग्नि गुण भृयि-ष्ठ होना निश्चित है किन्तु तरतम (कमोवेशी) भाव यहां भी रहता है इसलिये जितन। अधिक सोम भाग निस विष के साथ होगा वह उतना ही शरीर के योग्य और कम खतर नाक होगा।

शात्रों में कन्द विष १ प्रकार के गिनाये हैं। जिनमें प्रमोम्य श्रीर १० उन्न (त्राग्नेय) कहे गये हैं। सीम्य भक्तम से तथा उन्न स्पर्श या सुंघने से ही मारक हैं। इसमें साफ माल्ट्रम पड़ता है कि प्रविष (सीम्य) ही प्रयोग में लाने चाहियें।

सम्पूर्ण संसार स्थावर और जंगम भेद से दो विभागों में विभक्त है इस दृष्टि से विप भी दो भागों में बट जाता है प्रथम स्थावर जिसके % न्तर्गत कृत्रिम विष भी आजाता है । द्वितीय जंगम विष ।

स्थावर विष के द्याश्रय इस होते हैं। जैसे— मृत, पत्र, फल, पुष्प, छात्र, दृष, सन्व, निर्याम धानु औं कन्द्र।

जंगम विष के आश्रय १६ हैं ! जैसे—हिट, नि:श्वाम, दंष्ट्रा, नख, मृत्र, मज़, शुक्र, लाला, मुख, स्पर्श संदेश, विश्वधित, (गुद्द्यातिष्य ) गुद्द, आस्थि, पित्त और शुक्र !

स्थावर जंगम या कृतिस विष श्रगर श्रपने सब गुर्हों से प्रवत्त हैं। तो वह विष तत्कात सनुष्य रारीर को नष्ट कर देने हैं। विष में रहनेवर्ष्ट्र निम्निसिखन १० गुरु होते हैं।

#### (१) रौच्यः-

यह गुण् वायु का है इससे शीच वायु कुपित होकर अपनी रूतना को प्रकट कर देना है।

#### (२) तैच्याः—

यह गुण तेज का है। इसिलये शीघशरीरस्थ पित्त को कुपित कर मित विश्रम श्रीर मर्म बन्धों को छित्र कर देता है।

#### (३) ऋंष्णियः —

यहभी तैजस श्रधान गुण है जिससे शीघ रक्त और भिन्न विगड़ जाते हैं।

#### ( ४ ) सूच्म:-

सूरमातिसूरम स्रोतों के द्वारा सर्व शरीर में ज्यान हो शरीर के ऋंग प्रत्यंग को विकृत कर देता है यह भी वायु का गुगा है।

#### (४) ऋाशुः--

यह भो बायुका गुण है अथवा आशुकारी पित्त भी होमकता है। इस्रतिये यह शीघ शरीर में पहुंचजाता है या पित्तोत्वरण सिक्रपात के लज्ञण जैसे—अतिसार अस, मृत्र्झी आदि कर देता है।

#### (६) व्यवायिः—

जो पदार्थ पाक होने से पहिते शरीर में व्याप्त डो जाता है और पश्चान पान की प्राप्त होता है उसकी ''व्यवायि''कहते हैं। इस गुण से विष बरीर पाक हुए सब शरीर में व्याप्त होकर प्रकृति की नष्ट कर देता है।

#### (७) विकाशिः-

यह सन्धि बन्धनों की ढीला कर देता है और धान्योज की सुखा कर दोष धातु और सलीं की नष्ट कर देता है।

#### (=) विश्द:-

यह भी वायु का गुण है जो स्तकेद का शोपक होता है। ( ६ ) लघुः--

यह गुण भी वायु का है। इससे यह दुश्च-कित्स्य होता है।

(१०) अविपाकिः---

इसका शीघ्र विपाक नहीं होता है इसलिये बहुत समय तक कष्टकारी बना ग्हता हैं।

स्थावर जंगम विष के सामान्य तत्त्वण जो स्वाने से या शरीर में पहुंच जाने से प्रकट होते हैं नीचे लिखे जाते हैं। स्थावर:--

इसमें अत्र. हिचाकी, दन्तहर्ष, गलप्रह, फेनळ्दि श्रकाश श्वास श्रीर मूच्छा होती है। जंगम:---

इसमें निद्राः तन्द्राः करतमः, दाहः करपः,रोमहर्ष शोफ और अतीसार होता है।

इनके बेग आठ होते हैं। प्रथम में संताप, द्वितीय में कांपना, तृतीय में दृष्ट, चतुर्थ में निपतन पांचावे में भाग का बमन, इंटे में विकलता, मातर्वे में जड़ता और अठावें में मृत्यु।

जंगम वियों में सब से तीव्या सर्प-विष होते हैं। इनकी तीन जातियां प्रधान होती है। प्रथम "भोगि" दिनीय 'मगडजी' तृतीय 'राजिल'। भोगि: —

इनके देश में काला पन श्रीर सब बीमारियां बात प्रधान होती हैं।

मग्डली: -

इनका दंश पीला और मृदु शोथवाला नथा पित्तके विकार करने वाला होता हैं।

राजिलः -

इतके दंश स्थान पर स्थिर शोध होता है स्थान पिन्छिल रहना है पाण्डुवर्ण स्निग्ध और अत्यन्त सान्द्र (घन) रक्त निकलता है और कफके रोगों को करने वाले होते हैं।

उपरोक्त प्राह्म तिथों में से विधों की उचित रीति से शुद्धि करली जाय तो विध ठीक २ मात्रा के प्रयोग करने से श्रमृत कार्य करते हैं। क्योंकि विप ही एक ऐसे हैं जो कि सब रसायनों में श्रह्मन्त बत्तवान हैं श्रीर सम्पूर्ण व्याधियों को नष्ट करने वाले हैं।

विष अत्यन्त रसायन हैं ताकत देने वाले बात और कक के रोगों को हरने वाले हैं यह कटु (वायु और अग्नि गुण भूयिष्ट) िक्त (वायु और आकाश गुण भूयिष्ट) और कपाय (वायु और पाथिव गुण भूयिष्ट) रसवाला है। मदकारि (तमो गुण प्रधान होने से बुद्धिनाशक) है। यह व्यवायि विकाशि, आग्नेय, योगवाहि (संगि के गुण को प्रदेश करने वाला) शीत नाशक, और प्राहि है। युक्ति से सेवन करने से अत्यन्त सुख देने वाला है।

पण्यभोजी के लिये त्रिदोपहन है। बृंहण और वीर्य वर्द्धक है। कुष्ट वातरक्त, श्वास, ऋग्निमान्द्य, प्लीहा, उद्दर, भगन्द्र, गुल्म, पाण्डु बण और अर्श आदि रोगों को नष्ट करने वाला है। युक्तिपूर्वक सेवन से प्राण वर्द्धक और रसायन है किन्नु अयुक्ति से सेवन करने पर प्राणों को हरलेता है।

इस लिये सबसे प्रथम प्राह्म विषों को युक्ति पूर्वक शुद्ध करलेना चाहिये क्योंकि शुद्धि करलेने सो इसके दुग्ण कमजोर पड़ जाते हैं श्रीर शरीर के विशंष अपयोगी होजाते हैं किन्तु इसके सेवन में मात्रा पश्य श्रीर घृतदुरधादिक सेवन का विशेष ध्यान रखना चाहिये (रोगें के नाट करने के लिये हिताशी और घृताशी होना चाहिये। रसायन के लिये दुष्धाशी विशेष होना चाहिये कल्प के लिये भी पश्य मेवी ब्रह्मचारी दहना पूर्वक बना रहना चाहिये तब सिद्धि होने में कोई संशय नहीं रहना है।

उपरोक्त विधि से यदि विष उचित मात्रा से ठीक २ सेवन किया जाय तो किसी श्रीपधि से नष्ट न होने वाली दुष्ट व्यधियां व वात कक से उत्पन्न व्यधियां शीद्य नष्ट हो जाती हैं।

इसका प्रयोग शरद, भीष्म, वर्षा श्रीर वसंत में नहीं करना चाहिये तथा कोधित. विचार्न, कतीय, राजयदमा, भूख प्यास, श्रम, अर्ध्वसेवि चय रोगी, गर्भिणी, बाल ( च वर्ष) बृद्ध =0 वर्ष श्रीर राज मन्दिर में प्रयोग नहीं करना चाहिये। हेमन्त श्रीर शिशिर ऋतु में ही दुक्ति पूर्वक मात्रा नुसार ही सेवन करना चाहिये। इस में पथ्य नीचे लिखा जाता है। भी दुध मिश्री मधु गेहं चावल जो काजी मिचं संधा नमक मुनक्का मीठे शर्वन (पानक) ठण्ड ब्रह्मचर्य हिमदेश हिमकाल हिमजल श्रादिका सेवन करना चाहिये।

यदि कभी प्रसाद से ऋधिक मात्रा सेवन की जाय तो इसके सेवन से शरीन में आठ वेग होते हैं जिनका वर्णन पहिले कर ऋधि हैं। उन वेगी का ध्यान रख कर तब मंत्र तंत्र या ऋषिव प्रयोग से विष नष्ट करने का प्रयत्न करना चाहिये।

सबसे प्रथम स्थावर विष की ऋधिक मात्रा वाले को वमन कराता ही सबसे श्रेष्ट है जो कि कड़बी कोपात की (वसदाल डोडा) का क्वाथ बना उसमें मधु और घी मिला (प्रसेप भाग) कर पिलवाना चाहिये। अथवा कडुवी तोम्बी की जड़ या पत्र चूर्ण पानी के साथ प्रयोग करना चाहिये। चिप अत्यन्त उद्या होता है यह अपने औद्यय तथा तैद्दल्यसे पितको कुपितकर देताहै। इसलिये शीवल जल से जिन्चन करना चाहिये और जल्दी विघन औषधियों को मधु और घी के साथ देना चाहिये। अथवा जिन र दोषों के लक्कण मिलते हों उन दोषों को शान्त करने वाली औषधियों का प्रयोग करना चाहिये।

वमन के बाद बकरी के दूध का प्रयोग तब तक कराना चाहिये जब तक कि वमन होता रहे जब वमन बन्द हो जाय तब दूध बन्द कर सकते हैं। जब दूध पेट में ठहरने लग जाय तब सममन ना चाहिये कि विप निकता चुका है वा जीगां (पाक) हो चुका है।

हल्दी और चौलाई का रस पीने से विष नष्ट होजाता है। नाई (सर्पात्ती) और मुहागा घो के साथ सेवन करने से विष बेग नष्ट होजाते हैं। अथवा घी मुहागा ही मिलाकर पीने से भी सवेग विष नष्ट होजाना है अथवा विष सेवित को उभय तो ठीक शोधन कर मृद्म ताम्न चूर्ण सधु के साथ देने से हदय शुद्ध होजाना है।

सर्प दंध्य के लिये शीच ही मिण मन्त्र श्रीर श्रीपधियों का प्रयोग करना चाहिये क्योंकि मिण मन्त्रादिक श्रीचन्त्य प्रभाव करने हैं।

चौताई की जड़के चूर्ण को चावलों के पानी के साथ पीने से मनुष्य निर्विष होजाता है। घी मधु नौर्णा (मक्खन) विष्यती, झद्रक काली मिर्च [शंष पृष्ठ १२२ पर देखिये]

# कारबोलिक एसिइ (Acidum Carbolicum)

[ लंक--- **रा**० एन० एन० घोष M. B. B. S. ]

स अम्ल को कोलतार के तेल से विशेष रसायानक विधि द्वारा खेंच कर तैयार करते हैं।
यह वे रंग सुई की नरह पतली २ क्रलमें मिली
हुई होती हैं। जो आसानी से पिघल जाती और
जिससे टार के किस्स की बु आती ह स्वाद
किसी कदर मिठास लिए हुए और खगशदार, हवा
में खुला रखने से प्राय: इस का रंग सुर्खी मायल
हो जाता है जो कि इसमें किसी अन्य वस्तुओं
के मिलावट का प्रदशंक है, १०२ हि० फारनहाइट
पर पिंचल जाता है। और इस समय इस का
भार प्राय: १'०६० से १'०६६ तक होता है और
३४६'६ दरखे फारनहाइट पर उचलने लगता है।
फेनोल नीले लिटमस पेपर को सुर्खा नहीं करता—
लेकिन पेलव्यमन को जमा देता है।

कारबंक्तिक . एसिड १ भाग तीस या चालीस भाग पानी में इल हो जाता है। अल्कोहल, ईथर, क्लोरोफार्म, ग्लीसरीन लाइकर- पुटासी और लाइकर सोडियाई में भी आसानी से हल हो जाता है।

अगर ६० डिगरी फारनहाइट की उद्यात। पर कार्योक्तिक एसिड में ६ से १० की सदी तक पानी मिलाया आये तो वह पतला हो जाता है।

#### मिलावट--

आयरन ( लोहा ) और रोज़ितिक पसिब् के मिलाने से और खुला रखने से इसका रंग सुर्जी मायल हो जाता है तथा कि जोल के मिलने से कारबैंकिक मिश्रित जल गदला मालूम होता है। पहचान—— इस में से एक विशेष प्रकार की गांध जो तारकोल की सी होती है जाती है यही इसकी पहचान है। विशेषि—क्लोरल और फ्रेस्स सल्फेट।

मात्रा-१ से ३ प्रेन।

इसको गोली या मिक्स बर के रूप में दिया जाता है। १२ बेन कार्बोलिक एसिड २४ बेन मुलेठी का चुर्ण मिलाने से बढ़िया गोलियां बनजाती हैं।

१२मेन कार्बोलिक एसिड. लिकरिस पाउडर ८७ मेन ७ मेनकतीरा गोंद पाउडर मिलाकर गोली क्नार्ये

मरहम कार्यालिक---

किनोल १ भाग

ग्लिसरीन ३ ,.

में सार्चे।

ह्याइटपेर।फीन आयंटमेंट १२ भाग

पहते फ़िनोल को ग्लीसरीन में हलकर के फिर पेराफीन आंयटमेंट को इसमें मिलालें। यह लगाने के लिये मरहम तैयार हो गया।

कार्बोलिक तेल— कार्बोलिक एसिड १ भाग श्रांतसी का तेल १६ भाग मिलाकर इल करलें फिर इस्तेमाल करें। केथेटर श्राइल— फिनोल १ भाग केस्टर श्राइल ४ भाग बादाम का तेल २० भाग इन सब की श्रांत्रझी तरह निला कर काम

#### कार्वोलिक लोशन---

्रिया ्रीत की शक्ति का श्रर्थात १ या २ भाग कार्वोलिक एसिड शुद्ध निर्मल पानी भाग ४० में मिला कर इस्तेमाल किया जाता है।

एन्टीमीस्किटो--वाबोलिक एसिड ३० ब्रेन साफ निर्मल पानी ७ श्रींस

यह लोशन मच्छरों के काटे हुए स्थानों पर लगाने से खारिश, दर्द, श्रीर शोध को दुर करता है।

यदि इस लोशन में जरासी ग्लीसरीन मिला कर रात को सोने से पहले मुंह हाथीं पर मल लिया जाय तो मच्छर नहीं काटते ।

#### प्रभाव

#### श्रान्तरिक-

तालिश कार्बोलिक एसिड मेदा श्रीर अतिहर्यो पर शोध का प्रभाव करता है। यह जहर कारिल है लेकिन इसका सल्युशन कम मात्रा में दिया जाये तो मेदे में पहुंचकर सल्को कार्बोलेट के रूप में बदल जाता है। यह मेदे में जाकर इम कदर डायल्यूट हो जाता है कि इसकी एण्टिजाय-मेटिक (नशा लाने वाला) प्रभाव नष्ट हो जाता है श्रक्तवत्ता इसको बड़ी मात्रा में श्रथांत जहरीली खुराक में दिया जाये तो इसका श्रमर उपस्थित रहता है।

#### रक्त परिश्रमग्।--

त्वचा, व्राप्त. श्लेष्मच्छद्कला श्वास तथा श्रामाशय के द्वारा कार्वेलिक एसिड बहुत जल्द रक्त में प्रवेश हो जाता है। श्रीर गालिकन चलकेलाइनकार्बनिट के का में यह रक्त में पाया जाता है। लेकिन इसकी जारा अधिक मात्रा में देनेसे पहिले यह केन्द्रों में जाता है जिससे मफ्-खूज हो जाता है। इस लिये पहले रक्त का भार श्रीर नाड़ी की चाल बढ़ जाती है फिर बाद में चीमाता हो जाती है इसलिये पहले रक्त का वेग श्रीर नाड़ी की गति बढ़ जाने से कुछ समय बाद कमजीरी आ जाती है।

थोड़ी मात्रा में देने से हृदय पर इसका कुछ असर नहीं होता लेकिन अधिक मात्रा-देने से हृदय की धड़कन जीए हो जाती है।

कम मात्रा में प्रयोग करने से इसका श्वास संस्थान पर कुछ असर मालुम नहीं होता। परन्तु बड़ी मात्रा देने से केन्द्र का नेज कर देता है जिस कारण से पहले नो श्वाम नेअ हो जाता है लेकिन अन्त में श्वाससंस्थान पर पनाधान होकर मृत्यु होजानी है।

#### शागीरिक ताप

विधि पूर्वक माश्रा देने से शरीर के तापमान पर इस का कुछ प्रभाव नहीं पड़ता लेकिन आधिक मात्रा में खालेने से शरीर की उच्छता कम होजाती है और इमका निकास बढ़ जाता है।

बड़ी मात्राओं में देने से मस्तिष्कीय शोध पर उन्हा असर पड़ना है।

#### विप लक्तगा

विपात्मक मात्रा देने से सिर में दव होने लगता है और चक्कर आता है बांखों की पुतलियां मुकड़ जाती हैं और अन्त में बेहोशी होजाती है।

#### मृत्र---

कार्वेशिक व्रसिष्ठ काथिकतर भूत्र द्वारा बाहर निकलता है। यदि इस का सेवन वेतरतीयी से किया हो उस के मूत्र की रंगत काली हो जाती है और परीक्षा लेने से सल्को कार्वेलिट्स, ग्लायको रोनिक एसिक, हाइड्डो कोनीन और पाइरो केटिकीन मिश्रण प्राप्त होते हैं, जो कार्वेशिक एसिड के आकसाइड होने के कारण पैदा हो जाते हैं। क्योंकि पाइरोकेटिकीन मिश्रण का वर्ण वाला होता है इस कारण इस से मृत्र भी काला आता है। मृत्र के काला होने का एक येही कारण नहीं हो सकता है, सम्भव है कान्य कोई कारण

इस के कारण से कभी कभी मृत्र में श्रालब्यु-मेन भी पात्रा गया है। मृत्र में स्वास्थावस्था में जो सल्पेट्स पार्थ जाने हैं, वह इस एसिड के विष में विलकुल नहीं रहते लेकिन इस हालत में मत्र श्रामें तक स्वराव नहीं होता।

#### निःसरसा --

कार्वेलिक एसिड शरीर से मृत्र पसीनादि हारा निस्सरित होता है और कुछ भाग इस का शरीर में से उड़जाता है जो कार्वोनेट और आगजीलेट में बदल जाता है।

#### बाह्य उपयोग---

क्योंकि कार्बोलिक एसिड पूर्तिनाशक और कृमिनाशक है इसलिये गंदी बदब्दार नालियों खबबों और शौचालबों में डालने के काम आता है। अस्पतालों में रोगियों के कमरों की सफाई के लिये बर्ता जाता है। कपड़ों को कृमि बिहीन करने के लिये बर्ता जाता है।

ढाई की सदी वाले कावें लिक एसिंड के लोशन में एक बाहर भिगों कर रोगी के कनरे के दरवाजें पर लटका देने से कमरे की हवा शुद्ध हो जाती है। एन्टि सैपटिक (क्रिम नाशक) और पूर्तिनाशक होने के कारण बहुत अधिक इस्तेमाल में आता है इस लिये कावें लिक लोशन (८० माग में १ भाग था २० में १ भाग की शक्ति का) सर्जरी के काम आता है। सर्जन चीड़ फाइ से पहिले हाथ तथा औजार कीटा लु रहित करने के लिये इसीसे धोते हैं और मरीज की उस जगह की भी साफ किया जाता है जहां आपरेशन करना है।

कमजोर लराब व्राणें को ठीक करने के लिये जिससे उसमें स्वस्थ ऋंगुर पैदा होकर जल्द व्राण भर जाये, गंत्रीन, अलसर या बदब्दार व्राण से बदब् को रोकने के लिये व्राणों के ऋंगूरों को रिस्त रखने के लिये कार्बेलिक एसिड् होशान का लगाना बहुत ही मुकीद है।

पित्ति, एजिमा (जलनदार फुंसी) की जलन दूर करने के लिये २० की सदी का लोशन काम आता है। ग्लीसरीन आफ कार्बोलिक एसिड दाद व गंज के लिये अच्छी दवा है। संधिष्लेष्मिक कला का प्रदाह और राद्दों की सूजन गठिया शोध, विसर्प जहरीले ज्ञण, गहराई में प्रदाह में इसकी गहरी जिल्द की पिचकारी डा० विटला के कथनान नुसार बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है।

मात्रा -- २० बूंद शुद्ध जल में आधी प्रेन इल करें। श्राधी मेन कार्बोलिक एसिड्को ४ बृंद पानी में हल करके श्रश् के मस्सों में इंजेक्ट करें।

गर्भाशय सम्बन्धि रोगों में लगाने से दद की कमी हो जाती हैं — इस को १ की मदी के लोशन-से धोने से श्वेत प्रदर गर्भाशय व्रण और कैंसर में लाभ देता है।

नोट — इसे हाशियारी से लगायें वरना स्तारिश व प्रदाह होने का डर रहता है।

यदि तीव कार्बोलिक एमिड पी निया जाये तो मरीच के मुंह से लंकर मंदे तक श्वेत शोध मालूम होता है। श्लेष्मिक कला के जल जाने से मुख में सफद दारा पड़ जाते हैं और बह बहुत जल्द रागी हो जाता है क्योंकि उसका शरीर शीतल पड़ जाता है। शरीर का नापमान स्वस्थावस्था की अपेता कम हो जाता है। नाडी कमजार चलत लगता है। श्वाम जीए स्रीर बालाई हाकर मुश्किल से आने लगेता है फिर अन्त में बन्द हो नाना है। श्वासावरोध हो जाने के साथ ही साथ हट्य की चान भी बन्द होजाती है। श्वास में से कार्वीतिक एसिंड की तीव गंध आती है। आंख की पुतलियाँ। शुरू में सु हड़ी हुई मालुम होती हैं फिर अन्त में फैन जाया करती हैं। मुत्र का वर्ण काला और हरा होता है और मारे शरीर की हरकत बन्द होकर मरीज निश्चेष्ठ होका बेहोश होजाता है।

# पोस्टमार्टम--

रोगी के मुख, अन्नप्रणाली और आमाशय में श्वेतदाग्र पाये जाते हैं जिस के इधर उपर मुखं शोध होता है रंग काला हो जाता है और उसकी शारीरिक शक्ति नष्ट हो जाती है।

#### चिकित्सा--

पहले आमाशय में स्टमक ट्यूब प्रवेश करा कर निस्न छोषधियों में से किसी एक से उस समय तक बराबर धोते रहें जबतक कार्बोलिक एमिड की गंध छानी बन्द न होजाये।

- ?—सोडियम सल्केट बाचा श्रौं० एक पाइन्ट गर्म पानी में मिला कर।
- ३—सेकेरेटिस सल्यूशन चाफलाइम १ हाम जल १ औं में मिलाकर 1

यदि किसी कारण वश आमाशय धुल न सके ते। शीय से शीय एपोमार्कीन का इंजेक्शन दें जिससे वमन होकर आमाशय साफ होजाये। फिर मगने-शियम सल्केट १ औं या सोस्यिम सल्केट आधा औं को आठ औंस पानी में मिलाकर फीरन पिलावें।

नोट--क्योंकि सोहियम सल्केट आदि कार्बीलिक एसिड के साथ मिलाकर ''सल्कों कार्बीनेट
मिश्रण नैयार कर देते हैं जो कि विषेते . नहीं
होते इसलिए मगनेशियम सल्केट और सोहियम
सल्केट कार्बीलिक एडिस को दूर करने के लिये
बहुत अच्छी विपनाशक धस्तुयें हैं । यदि
होगी को बमन कराने या दवा पिलाने का
समय व्यतीत हो चुका हो तो किर ''सोहियम
मल्केट'' का त्वचा मध्य इंजक शन करें या पेरीटोनियम में पहुंचाना चाहिए।

आमाशय को साफ कर तेने के बाद बादाम कानेल या जेतून का तेल, २ झटांक गम पानी में

# एसिड हाइड्रोसियानिक (Hydrocyanic Acid)

[ ले०--श्री शान्ति ]

वह अन्त एक घातक निष है इसके चन्द विन्दू यदि असावधानी सं अधिक देदिए जार्ये तो भयंकर परिणाम कर देता है। इसके प्रयोग में हमेशा मतर्कता से काम लेन चाहिए।

केरोसाईनाइड आक पोटेशियम और डायल्य्टेडसज्जम्युरिक एसिड को सम भाग

मिलाकर पिलार्थे या दूध जितना रोगी पी मकता है पिलार्दे।

जोफ (कमजोरी)की हालतमें उत्तजक मसलन यरान्ही आदि दें, या इधर स्ट्रिकनीन का न्वचा मध्य प्रवेश कर रानों तथा बगलों में गर्म पानी की योतल रखें स्वासाबरोध होने लगे तो कृत्रिम स्वास किया करनी चाहिए ताकि स्वास आना प्रारंभ होजाये।

कभी वृक्षिक्ष के द्वारा कार्बोलिक एसिड धीरे ? भन्दर प्रवेश होकर बिव लक्षण उत्पन्न कर देता है। इस कारण रोगी के सर में दर्द होता है ज्ञा नष्ट हो जाती है नींद नहीं आती बुखार हो जाता है विशेषकर मूत्र सब्ज, स्याही मायल धुयें के रंग कामाने लगता है।

नोट—सब्ज याधुर्ये के रंगका मूत्र ज्ञाना पूर्व लक्षण हुआ करते हैं मरीजों के मूत्र की परीक्षा करके मालूम कर लेना चाहिये कि मृत्र में मामुली सल्केट उपस्थित हैं कि या नहीं। मिलाने से जो तरल पदार्थ बनता है उसमें इस परिमाण में जल मिश्रित करें कि इसके १०० मेन या ११० बृन्द में नाइट्रेट आफ सिलवर के मिलाने से जो साइनाइड आफ सिलवर नीचे तल भाग में बैठ जावे उसे शुक्त करने पर तोले तो वह पूरा१० मेन हो।

शक्ति--

इसमें २ प्रेन हाइड्रोजन साईनाईड होता है। यह अम्ल हमेशा अम्बरी या नीली शीशी में मज़-यूत शीशं की डाटवाली बोतल में रखना चाहिए और बोतल के सिरों को बांध कर उलटा कर के रखना चाहिए कभी इस का प्रभाव नष्ट न होजाये। पुराना पड़ जाने पर इसका असर नष्ट होजाता है जब इसका रंग भूरा होजाये तब औषध के काम का नहीं रहता।

Scheels Prussic Acid

यह युरोप में प्राय: कुत्तों के मारने के काम आता है यह ऋपर के अम्ल से दुगना तीत्र होता है।

सल्क्ष्यूरिक एसिड् खोट और हाइइड्रोक्लोरिक एसिड् विरोधी—कौपर (तांबा) लोहा, चांदी के साल्ट (लवण) सरक्यूरिक औक्साइड सल्काइड्स।

खांसी में इनको आमन्ड एमल्शन में मिला कर देना चाहिए। और हुँ से सोडियम कार्वोनेट, विस्मथ कार्बोनेट तथा पिपरमेन्ट बाटर को मिना कर देना विशेष लाभदायक साबित हुआ है।

यह बहुत ही घातक विप हैं तथापि रोगा-वस्था में इसका श्रीषधि के रूप में ही सेवन किया जाता है।

यह इतना जबरद्गन घानक विष है इसकी कुछ ही बृन्दों से मिनटों में मृत्यु हो जानी है यदि स्योर एसिड की एक बृन्द भा एक जवान की आंखों में डाल दी जाये नो वह मनुष्य फीरन मर जाताहै यह आंपिध्यों में लालिस अन्त काममें नहीं आता हमेशा पानी मिला हुआ ही व्यवहार में आता है इससे निर्मित मिलग भी प्योर अवस्था में हलाहल है।

#### बाह्य प्रयोग ---

खायन्यूटिड हाइड्रो सियनिक एसिड जिन्द पर लगाने पर त्वचा में प्रवेश करके श्र्यता पैदा करदेता है मिश्रित लोशन से हर प्रकार की खुजली. पित्ती श्रीर खाज पर बहुत श्राच्छा श्रासर पड़ता है इसके लिये १० यून्द फी श्रीन्म वाला लोशन स्यवहार में लाना चाहिये।

यह एक तीत्र विष है इसिनिये त्रण या छिनी त्यचा पर नगाना नहीं चाहिल।

#### अन्तरीय प्रयोग

यह अन्नप्रधानी द्वारा शीव अभिशोषित होजाता है और स्युक्तम सेस्नेन द्वारा भी इसी प्रकार शोषित होता है। मुख और आमाशय पर भी इस का ऐसा ही प्रभाव होता है जैसा कि त्रचा पर होता है, यह एक आमाशय गुन्यक अस्त है। रक्त--

यह प्रत्येक भाग से अभिशोधित होकर रक्त में

कौरन मिल जाता है। यदि इसके उयोग के बाद शीघ ही मृत्यु होजाये तो शरीर का समस्त रक्त बहुत हो ऋषिक रक्ताम होजाता है जिसका कारण यह होता है कि रक्त औक्साइड होजाता है ऋथांत हिमोग्लोबीन में औक्सीजन मिल जाती है डा० विलंगटन के कथनानुसार रक्त बिना मामूली नबदीलों के नेज़े से चला जाता है। लेकिन मृत्यु कुछ मिनट बाद ऋथांत २० से ३० मिनट के बाद हो तो किर रक्त का बर्ग काला पड़ जाता है जिसका कारण यह होता है कि इम ऋम्ल का ऋसर केन्द्रों पर पड़ कर और श्वासाबरोध है।कर रक्त का औक्सी जन, कारबं। लिक एसिड गैन में परिवर्तित हो जाता है।

#### दिल

इसल्यन्त की एक बड़ी माला दिल को शीध बन्द करदेता है यदि इस अम्ल को दिल के ऊपर लगायें तब भी दिल की गति बन्द होजाती हैं। कम माला में इसे देने से मैंडला में लागमनब का केन्द्र तेज़ होजाता है और नाड़ी की गति मन्द पड़ जाती है क्योंकि श्वासपथ केन्द्र पर इस का प्रभाव पहले किसी कदर उसे जक पड़ना है फिर बाद में उस पर फालिज का नसर होजाता है किसी में रक्त का दबाब बढ़ जाता है परन्तु वाद में वह बहुत कम होजाता है।

#### श्वामपथ---

श्वाम का केन्द्र भी हाइडोसियनिक एसिड के प्रभाव से कालिजयुक्त होजाता है बल्कि हृदय श्रीर धम-नियास भी शीघ कालिज के प्रभाव में खाजाता है। चुनार्चे श्वासपथ के कालिज का श्रसर होजाने से श्वाम की गति श्रीर नाकन में कमी श्वाजाती है। रोगी प्रायः श्वास स्रवरोध के कारण मर जाता है।

जय इस श्रम्त की एक यही मात्रा दी जाती हैतो हृदय की गति बन्द होजाती है। मस्तिष्क —

कम मात्रा में इस की देने से मस्तिक पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ता, अगर बड़ी मात्रा अर्थात ज़ड़-रीली मात्रा दे तो बेहोशी कोमा हो जाता है जिसका कारण यह होना है किया तो सीधा मस्तिक पर इसका असर पड़ता है या श्वासायरोध के कारण सुर्ख रक्त काला होजाता है तब दिमाग पर नारकाटिक और डीप्रेसेन्ट असर होता है। पशुओं में पहले कमेड़ा होने लगता है फिर कोमा होजाना है परन्तु मनुष्यों में इसके समप्रभाव के कारण कमेड़ा उत्पन्न नहीं होता है।

# मेडिल्ला व स्पाइनलकार्ड---

जैसा कि पहले बर्णन हो चुका कि हाइड्रोसिय-निक एसिड्सेमेडल्ला में हदय चौर रक्त की धम-निया पर फालिज पड़ जाता है निगाह भी इससे मफलूज होजाने से पहले इसकी हरकत कम-चोर हो जाती है परन्तु अन्त में फालिज का असर होजाने से वह हरकत विलक्ज जाती रहती है। नि:सरशा

यह श्रम्लश्रधिकतर श्वास के मार्ग से निकलता है कुछ भाग इसका सल्यूसाई नरईंड की शक्ल में कुकों के द्वारा भी बाहर निकलता है।

# स्रीषधि में बाहिय प्रयोग---

हिपल्यूटिड हाइड्रोसियानिक एसिड के लोशन से प्रत्येक प्रकार की कन्ड्र (खुजली) की और विशेष कर शीतिपिश और जुं के काटने की स्नारिश वरों रह को बहुत फायदा होता है इस आशय के लिये प्राय: १० बन्द की औस पानी वाला लोशन इस्तेमाल किया जाता है इसका यह नुस्ता बहुत मुकीद होता है।

#### प्रयोग लोशन---

हाईड्रोमियानिक एसिड डि॰ २ ड्रा॰ ग्लीसरीन २ ड्रा० रोजवाटर ७ चीं०

इनको मिलाकर सार्रिश की जगह लगाये। मरहम----

हाइड्रोसियानिक एसिड हि॰ आधा डा० सादा मरहस १ औं०

मिताकर खारिश की जगह इस्तेमाल करें। नोट—इसका लोशन या मरहम छिली हुई या श्रग बाली त्वचा पर हरगिज नहीं लगाना चाहिए वना इसके कौरन श्रम्पर प्रवेश होने से विकलक्षण उत्पन्न होने का कर रहता है।

# आन्तरिक प्रयोग----

इसका मेदे पर सुन करने वाला प्रभाव पहता है इसलिये इसकी एंडनदार आमाशय के शूल में और एंडनदार दर्द मैदा और डिसपेप्सिया में देने से अधिक लाभ होता है शूल शान्त होजाता है। और के का आना हक जाता है जो बदहज्मी के कारण से हृद्य घड़कता है उसमें भी लाभ दिखाई देता है क्योंकि इसका प्रभाव रक्त प्रणालीस्थ केन्द्रों पर पहता है। ईसलिये खुडक खांसी में दमा रोग में काली खांसी हिचकी में इसके देने से लाभ होता है। खुरक खांसी बग़ रह में यह नुख्या निहायन मुकीव पहता है। हाई होसियानिक एसिड डिल २॥ बू० लाइकर मार्फिया हाइड्रो होरागड ७॥ बू० इंफ्युं कुन सीरप टोल्ड ४० वृंद रोजी एसडी ४ फ्लूड हाम ऐसी १-१ मात्रा दिन में दो बार दें। प्रभाव----

एसिड हाईड्रोस।यनिक बड़ी मात्रा में देने से मृत्यु शीघ से शीघ उपस्थित होती हैं। प्रायः चन्द सेकिन्ड से २ मिनट के अन्दर अन्दर आदामी मर जाता है थोड़ी मात्रा में देने से मनुष्य विल्कुत वेहोश होजाता हे उसकी आंखों की टकटकी बंध जाती है और आंखों की पुतिलयां फैल जानी हैं नाड़ी कमजोर अनियमित होजाती है। या विल्कुल सखत होजाती हैं। श्वास मन्द और गाध (गहरा) खिचकर आता है और मुंह में भाग भर आते हैं। त्वचा ठंडी और विपचिपी होजानी है और आविरकार मृत्यु मुख में चला जाना है।

शरीर में से एसिड हाइडोसियानिक की गंध श्राती है त्वचा का चरा नीला पड़ जाता है हाथों की श्रंगुलियां श्रन्दर को मुड़ी हुई और मुद्धियां बंधी हुई होती हैं जोर से जवड़ा बन्द होजाता है मुंह में फेन होते हैं श्रांखों के टेन स्थिर श्रीर चमकत्तार होते हैं श्रीर पुत्रलियां फैली हुई सारे शरीर का रक्त कृष्ण वर्ण होजाता है श्रीर मेदे में किसी कृदर जमा हुआ खून पाया जाता है। चिकित्सा---

क्योंकि यह बहुत तीव्र विष है यदि इसका इलाज शीव्र किया जाये तो मरीज़ के बचने की स्थाशा रहती है नहीं तो मृत्यु होजाती है। यदि जहर खाने ही मरीज़ के इलाज का मौका मिले तो शीघ खुली हवा में लेजाकर इसके आमाशय को स्टमक पम्पसे शीघ थो डालें। या कोई वमन कारक श्रीवधि देकर के करा दें। फिर एक या हो गज के फासले से इसके सर और पृष्ठ बंश पर जल का सेचन करते रहें या इन पर बारी २ से शीतल और गर्म पानी डालते रहें। मसनूई श्वास किया करें तंज इथर या सेल वाले टायल या बराएडी वगैरह यदि होसके तो स्ट्रिकनीन व एट्।पीन की शीघ पिचारी (इंजकशन) कर दें। अक्सीजन, एपोनियां मुंघायें और विजली का इस्तेमल करें।

यह द्वा विष नष्ट करने के लिये पिलार्थे— फेराइ सल्क १८ प्रे ० टिं फैराई परक्रोराइड २० व्० पानी २ औं

इसमें १ या २ हु।म भैगनशियम कार्बोनेट . जिसको पहले ही से पानी में बे।लकर शारे की तरह बना रखा है ) को मिला कर मरीज को शीघ पिलार्वे यदि आबश्यकता है। तो थोड़ी २ देर बाद इस दवा को २-३ बार पिला सकते हैं।

प्रयोग----

<b>३ व</b> ्0
<b>ξ</b> α ,,
२० श्रे०
৬ ৰুণ
٠ <u>,</u>
१ श्रौंत

ऐसी १-१ खुराक प्रत्येक चौथे घंटे दें।

भुगा

न्वारश्मदा में लाभ देता है।

२एसिड हाइड्रोसायनिक डि०	१व०	ऐसी १,१ मात्रा प्रत्येक चौथे या	छठे घंटे दें
स्प्रिट एमोनियेफेटेडा	- ن ,,	२-३ खुराक तक ।	
टि० हायोसायमस	8 ,,	गुग	
सिरप चोरंशियाई	१४ ,,	प्टेंटनदार श्रामाशय के शूल में जि	स में साथ
एका एनिसी आई	२ हा०	ही कै भी आती हो लाभदायक है।	1 VI VI VII VII VII VII VII VII VII VII
ऐसी १-१ मात्रा दवा प्रत्येक ४-४	घंटे में दे।	एसिड हाइडोमायनिक डि०	४ बू०
गुग्		<b>कि</b> योजृट	۶ ,,
वच्चों के खुन्नाक में लाभ देता है	1	टेरेविन्थ	80 ,,
एसिड हाइडोस।यानक डिल	३ ब्०	म्युसलिज एकेशिया	₹o ,,
लाइकर मार्की हाइड्रोठ	₹0 ,,	एका सिनेमोमाई	४ डा०
सोडा बाई कार्ब	२० मे	ऐसी १-१ ख़ुराक दवा फौरन पि	तार्थे अगर
म्युसलिज एकेशिया	त्राधा डा०	मर्जनो लाभ नही १ घंटेबाद फि	
क्रियोज्द	१ ब्	दें जब भी खास प्रणाली में ऐंठ	न हो लाभ
शुद्ध जल	१ श्रींत	देना है।	

# शेरनी के दूध का सुर्मा

रजिस्टडे

यह हमारे औपधानय का तैयार किया हुआ आजीको रारीब सुविख्यात सुर्मा है। इसमें जेरनी के लिये जो सुलक आसाम के भीलों से मिलता है बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। मोती, मूंगा, कररोजा, लाल, बदावशानी, जर्म रद, याइत अक्रीक यमनी, लाजबद चांदी, सोना मक्खी, दहना फरंग जाफान, सुश्क, अम्बर, मामीरा चीनी, भीमसैनीकपूर संगवसरी, सुर्मा अस्फद्दानी वगैग २, ४० कीमनी अद्वियात से सम्ब हरड़ के पानी में ६ पाह तक कांसे के सिलबटे पर पीमा जाता है, बाद अमें दराज तक नीम की जड़ को खोखना करके उसमें रखते हैं। इसके बाद दा बार पीसकर काम में लाया जाता है, इसके इस्तेमाल से बहुत दिनों का अन्धापन वशनें कि आंख की बनावट में बिगाड़ न आया हो अच्छा हो सकता है। इसके सेवन करने वाले की आंख का कोई रोग नहीं होमकता, टिंट को साफ तेज, और रोशन करता है, ऐनक लगाने की आदत खुड़ा देता है आंखों की कमजोगी, शुक्त मोनिया बिन्द, आंखों की धुन्ध, जाला, फूना, खारिश, हलका नाखूना वगैरा आंख की बीमारियों में मुजर्शव है। मृन्य फी तोले ४) नमूना शीशी।।)

यह सुर्मा हमने उन साहिवान के लिये तैयार किया है। कि जो कालो सुरमा लगाना पसम्द नहीं करते, इसके तमाम गुण करनी के दृध वाल सुर्में के मानिन्द ही हैं। मूल्य की तोल ४) नमूने की शीशी।)

बृहत अ।युवेदीय अषेषध भागडार (रजिस्टर्ड) जोहरी वाजार, देहली।

# हाइड्रांक्लोरिक-एसिड, सल्फूरिक-एसिड, नाइट्रिक-एसिड, फास्फोरिक-एसिड एसिड-ग्रोग्जालिकम

[ लंक-डा० के० पी**० भारद्वाज**]

#### वाद्य प्रयोग

दे सारे अम्लांका त्वचापर दाहकारीप्रभाव पड़ता है सिंदु धानुन अम्लक प्रयोग से अलब्यूमेन जम जाते हैं इनसे स्थानिक नाड़ियां मंकुचित हो जाती हैं इनको इसलिये कभी कभी मकोड़ देने और रक्तरो-धन के लिये इस्तेमाल करते हैं। अधिक जल में मिलाकर शरीर पर कपड़ा तर करके फरने से उन्हर में कमी हो जाती है। शरीर में टंडक अनुभव होती है जब अधिकता से प्रमीना आरहा हो इस के इस्तेमाल से कक जाता है। ये सब अम्ल द्र्यान्थ नाशक हैं।

#### आन्तरिक प्रयोग

# मुख, आमाशय, अंत्र -

इनके सेवन से मुख में लुझाव अधिक पैदा होता है इसलिए प्यास की वुभाने हैं। श्रामाशय में ये सब तेज्य स्वतंत्र जार के साथ मिल कर उदासीन जार में परिवर्तित हो जाने हैं। इसी श्रवस्था में रक्त में सम्मिलित हो जाने हैं इन मृदु श्रमलों को भोजन से पूर्व दिया जाये तो श्रामाश-थिक रस का उत्पन्न होना बन्द हो जाना है जन इन को भोजन के साथ या बाद में दिया जाता है ना यकृत में पेंकियास ऋौर ऋन्तिङ्गेंके झन्धि का अन्त रस ऋधिक पैदा होने लगता है।

शोरा तथा नमक के श्रम्ल ये यकृत की नाकत देने वाले श्रीर पित्त की निकालने वाले हैं। रक्त--

रक्त में यह अम्ल उदासीन अवस्था में होकर दौरा क ने रहते हैं इनके सेवन से जार भाग कम हो जाता है परन्तु रक्त अम्लीय कभी नहीं बनता क्लोरोसिस (स्त्रिया का पाएडु) में हाइड्रो-क्लोरिकाम्ल से रक्तारण बढ़ काते हैं लेकिन रक्त रंजक हिमोरलीबीन पर कोई प्रभाव नहीं होता।

#### वृक्त ---

इनके सेवन से मूत्र में जारीय भाग ऋधिक नहीं होता वर्लिक नाइटिक एर्सिड कुछ भाग मूत्र को श्रम्त धर्मी बना देना हैं।

#### विष लक्षण--

यह सारे अम्ल छील देने (स्त्रगराद्दर) या जलन पैदा करने वाले हैं। यदि इन में से कोई अम्ल रालनी से पीलिया जाये मुंह से लेकर आमाशय तक तीबदाह और शोध होजाता है बोड व मुख अन्दर से दग्ध होकर भूरे या जादी मायः धब्बे पड़ जाते हैं काले रंग की रक्तमिश्रित वमन होती है।

वमन का पदार्थ पृथ्वी पर पड़ने पर माग-दार युलवुले देता है। खाना पीना श्वास लेना सब कठिन होजाता है। श्वासपथ में शोथ होजाने से श्वास कठिनता से आने के श्वतिरक्त आवाज भी बैठ जाती है। तीब प्याम लगती है पेट जरा ही हिलने से कड़ा दर्द होने लगता है। प्रायः कोष्ठ-बढ़ता होती है। यदि दस्त आये तो रक्त मिल रहने से रंग काला होता है। मूत्र आता नहीं बल्क बनना बन्द हो गता है हिचकियां आर्ती हैं मर्द पसीना आकर रोगी बहुत जीए होजाता है। श्चन्त में निर्वलना से या एंडन से या श्वासावरोध से मृत्यु होजानी है।

#### घातक मात्रा

गंधकाम्ल १ ड्राम शोरकाम्ल २ डाम लवग्राम्ल ४ डाम ।

#### चिकित्सा

त्रामाशय की धोने वाले स्टमक पम्प, स्टमक ट्यूब या की लाने बाली श्रीपधियों का प्रयोग कभी नहीं करना चाहिए क्योंकि जहां न से कंट श्रीर श्रामाशय में दग्ध श्रण होते हैं स्टमक ट्यूब के लगने या क़ैं के होने से रक्त निकलने ा भय रहता है।

निम्निलिखित ज्ञारीय श्रीषिधयां सेवन करनी च हिये।

- १—सकेदी चृना १ नोला ढाई पाव पानी में मिलाकर।
- २-- १ तो० या १॥ तो०चाक या खड़िया मिट्टी पानी में मिलाकर।
- ३--पोटेशियम कार्बोनेट अधा या १ औ० १ पाइन्ट पानी में मिलाकर ।
- ४-सं।डियम कार्वेनिट १ तो० या १। नो० १पाइन्ट पानी में मिलाकर ।
- ५—देसी या विकारकी सावुन पानी में घोलकर शीघ रोगी को विज्ञादें, और उसके बात जैनून का तेल १२॥ तो० १ पाइन्ट पानी में मिलाकर या आगरोट या मैदा ३-४तो० १ गिलास पानी में घोलकर पिलाई दर्द को दूर करने के लिये मार्फिया का इंजक्शन करें। हाथ पांच शीतल होने लगें तो रानों व बगलों में गर्म पानी की बोतलें रखें।

शक्ति क्रायम रखने के लिये थोड़ा २ दूध गुदा हारा पहुंचाना चाहिए।

\$ 2 2 2

\$5 \$5 B

# एमोनियम Ammonium

[ ले०—डा० पी० एन० बनर्जी ]

यह एक उन्न गन्ध गैस है । जो गोतादर श्रौर चूना के मिश्रए से उत्पन्न होती है ।

नौसादर एक भाग चृना २ भाग । दोनो को खरल में डालकर ज्य पीमों, पिसते समय इसमें से उम्र गंध वाली एक गैस निकलने लगती है बस यही एमोनिया है। खाल, मांस, ज्युर, सींग और बाल आदि के जज़ने से एक तीन व्यू वाली गंध निकलने लगती है यह एमानिया का ही कारण है एमोनिया कोई घातु विशेष नहीं है यह और अम्लं के साथ मिलकर लवण बनता है इसका प्रीमद्ध लवण नौसादर है।

यह एमोनियम और लवगाम्ल के संयोग से बनता है। इससे आर भी उपयोगी पदार्थ और लवगा बनते हैं जो तहुत कामों में प्रयोग किये जाते हैं।

# प्रधान २ ऋषिियाँ

- १ म्युट एमानियम एरोमेटिक
- २ लाइका एमोनिया फोर्ट
- ३ लिन्सिन्ट कैम्कोरो असोनीयेटा
- प्र टिंगोमाई गर्मानियेट।
- प्र बाई इर अमोनियाई एसीटीटम

# लाइकर एमोनिया कोर्ट

(Liq Ammonia Strong)

इसका दूसरा नाम स्ट्रीगसल्यूशन आफ एमी-

नियां है।

# निर्माण विधि

नौसादर (एमोनियम होराइड) की बुझे हुए चुने में मिला कर अग्नि देने से जो एमोनिया गैस उत्पन्न हो उसको डिस्टिलवाटर में घोल ले।

यह बहुत ही तीव गंध पाला वर्ण रहित उत्पन्न जारीय पदार्थ होता है।

यह आंतरिक प्रयोग के सिये व्यवहार में नहीं आता बल्कि त्वचा के उत्पर जब कोई झाला डालना हो तब इसका प्रयोग होता है।

यह और भी कई श्रीपाधियों के निर्माण में काम श्राता है जैसे—जिनिमेंट कैम्कोरी एमोनिया, स्पृट एमोनिया एरोमेटिक जाइकर एमोनी एमोनियाई बोमाइइस, इत्यादि ।

# स्प्रिट एमोनिया एरोभेटिक

(Spritus Ammoniae aromaticus)

एमोनियम कार्बोनेट ४ औं स्ट्रांग सल्युशन आक एमोनियां = औं०, आइल आफ नटमग था फनुइड ड्राम आइन काफ लेगन आ फनुइड ड्राम, एलकोहल ६० फीसदी का ६ पाइन्ट पानी ३ पाइन्ट।

प्रथम, आइन आफ नटमंग और आहल आफ लेमन की एनकीहल और पानी के सध मिलाकर ७ पाइन्ट जल बनाकर श्रह्मग रखले किर ६ श्रों० जहां श्री ६ मिला र्ले, साथ में स्ट्रांग सल्यूरान श्राफ एमोनिया श्रीर एमोनिया कार्बोनेट को मिलाकर इतनी श्राप्त दें जिससे पिघल कर मिला जाये। तब इसमें ७ पाइन्ट पहिला छना हुआ जल मिला दें इसका श्रपे ज्ञित भार प्रह० होन। चाहिए यह लगभग वर्ण बिहीन होता है।

मात्रा—जब लगातार प्रयोग करना हो २० से ४० बू० यदि एक बारही देना हो ६० से ४० बुन्द तक देसकते हैं

नोट—हिन्नट एमोनिया एरोमेटिक के साथ सीरप मिल्ला कभी नहीं देना चाहिए। यह मिश्रण सेत्रा में पड़ना है।

# टिं॰ एमानी कम्पोजिटा।

Tinctura ammoniae Composita,

इसको श्रो डी छूस ( Eau, de, Luce भी कहते हैं यह सर्प विष की स्नास दवा है।

#### प्रभाव

#### वाद्य प्रयोग

द्यों नियां प्राय: विषैतं की इे मकी ड़ों के विष कोष्रभाव हीन कर देता है इसलिये वर्र, ततैया, बिच्कू मधुमक्खी कान खजूरा, मकड़ी रेत में रहने बाले विषेते सकड़ आदि जानवरों के काटने पर एमोनियां का कम शक्ति का सल्यशन लगाने से वेदना और शोध कम होजाता है। अम्ल विष सर्प के काट लेने पर दंशित स्थान पर दिंचर अमोनिया कम्पोजिटा का त्वचा मध्य इंजेकशन देने से लाभ होजाता है, वेहोश मनुष्य की एमोनियां सुंघाने से तत्काल होश आजाता है क्योंकि इसके स्घन से परावर्त्तित रूप से श्वास निःश्वास और हृद्य तीव्र गति करने लगता है। बोट, मूर्झा निद्रा अकीम आदि के कारण से होने बाली मूर्झा में इसके सुंघाने से होश आ जाता है।

#### श्रमोनियां द्वारा विष ल्वास

श्रगर श्रामोनियां के तीत्र मिश्रण की एक वड़ी मात्रा पी लो जाये तो स्वरयंत्र के श्राचेषप्रस्त होने से श्वास की ककावट के कारण मृत्यु हो सकती है नहीं तो कास्टिक सोड़ा (दाहकज्ञार) पोटास वगैरह के लुज्जण होजाते हैं।

#### चिकित्सा

जो हारीय विधोकी चिचित्सा है वही इसकी है।



# संविया (Arscnic)

[ ले॰--डा॰ एस॰ एम॰ भारद्वाज M. B. B. S. ]

यह एक घातक विप है। दूसरों को चुपचाप भारने के इस्तमाल में अधिक आता है क्योंकि इसमें कोई स्वाद गंध नहीं होती है।

यह लोहा-गंधक, सुरमा काला, श्रीर विस्मिश्व श्रादि धातुश्रों के साथ मिला हुआ कानों में पाया जाता है—इन धातुश्रों को डमक् यंत्र द्वारा उड़ाकर प्राप्त किया जाता है —संख्या उपर वाले पात्र में उड़कर लम जाता है संख्या फीलाद की शक्त की तरह अथान—सुरमई रंग की एक चमक दार धातु है जो आसानी से टूट जाती श्रीर चर्णात हो जाती है। तीत्र श्रीमन देने के विना इवीमूत हुये ही उड़जाती है इम ममय इस में से तीत्र लहसन की सी व्(गंध) श्राती है। एका की रूप से सेवन नहीं की जाती लेकिन श्रांकसी-मिश्रित श्रीयधियों के साथ करते हैं।

बाजार में सोमल श्वेत पीत कृष्ण रक्त चार प्रकार का प्राप्त होता है इसे आयुर्वेदीय प्रंथ भी चारही प्रकार का मानते हैं। परन्तु आंतरिक सेवन रूप में श्वेत वर्ण का ही बाता है।

#### इसका आकार ---

साधारणतया मोमल सेंधाल वस छोर कांच के महश पारदर्शक श्वेत रंग के भारी टुकडों में बार्वित चूर्ण रूप में मिलता है स्वाद फीका होता है। चूलने की शक्ती—

१ भाग सकेंद्र संखिया-१०० भाग शीतल जल में । ,, ,, ,,-२० भाग उनलते हुए जल में ।

त्राक्त सोडियमकाबोनेट में

खाने की मात्रा -

१ से १ ग्रेन तक

# सेवनविधि -

संस्तिया को ऋकं-कुर्म-या गोली के रूप में सेवन करना चाहिए-यदि इसकी बहिया गोलियां बनानी हों तो इसको मिल्क शूगर (दूध की शकर) के साथ डायल्युटिड म्ह्कोज (ऋंगूर का मीरा) मिला कर बनानी चाहिए।

ल।इकर अभिसेनिकेलिस के साथ जब नुस्खे में नाइकर स्टिकनीन लिखना हो तो इस बातका ध्यान रायना चाहिए ऐसी हालत में लाइकर आरसनि के लिस हाइडों होरिकस लिखें और लाइकर आरसनिकेलिस न लिखें।

# मंग्विया से निर्मित श्रीपियाँ लाइकर श्रारसनिकेलिस

(Liquor Arsenicalis)

श्वेत संस्विया द्या घेन, पोटाशिय । कार्यनिट द्या घेन,कम्पीन्ड टिंचर लिवन्डर ४ फ्लुइड डाम हित बाटर ऋ। त्रश्यकतानुसार या इस कदर जिस से सब ऋौषधि परिमाण में एक पाइन्ट होजाथे।

# निर्माण विधि

पहले संख्या और पोटाशियम कार्बोनेट को १० पलुइड औस पानी के साथ एक कंच के बर्तन में डालकर अग्नि दो जब वह साफ मिलकर एक द्रव अर्क जैसा तैयार होजाये उतार कर शीतल होने दो ठंडा होजाने तर टिचर लिवेन्डर मिलाकर इसमें इतनी मिकदार में डिलवाटर मिलाओ जिससे पूरी औषधि १ पाइन्ट होजाये।

यह एक साफ निर्मल सुर्खी मायल द्रव होता है जिससे लिवेन्डर की गंध आती है, इसका स्त्राद खारी होता है।

एक फीसदी या ११० बृठ में १ प्रेन मंखिया होता है।

मात्रा २ से = बृन्द तक।

लाइकर आग्मनिमाई हाइड्रो क्रोरिक्स

इसे हाइड्रो क्लोरिक सल्यूशन आफ आरस-निक भी कहते हैं। श्वेत संख्ये का चूर्ण दजा मेन, हाइड्रो क्लोरिक एसिड (नमक का तेज्ञाब) २ फ्लुइड ड्राम। डिस्टिल वाटर आवश्यकतानुसार या इस परिमाण में जिससे सब औपध १ पाइन्ट हो जाये।

# निर्माण विधि

पहले संखिया और एसिड को २ पलुइड औंस डिलवाटर में मिलाकर एक कांच पात्र में डाल कर इतना उप्पा करें जिससे द्रवित होकर एक हो जाय फिर शीतल करने के लिए इसमें इतने परिमाण में डिलवाटर मिलायें जिससे सारी औषधि १ पाइन्ट होजाये। यह साफ निर्मत बिनारंग का द्रव होता है जिसका स्वाद स्वद्वा होता है।

मात्रा

२ से 🗕 बून्द तक

#### उपयोग

यह त्वचा के उन रोगों पर अक्सीर है जिनका सम्बन्ध आतशक से है या जिन मनुष्यों को आतशक होचुकी हो किर त्वचा रोग प्रस्त हों। इसके इस्तेमाल से बहुत लाभ होता है। आरसनी आयोडाइडम

Arseni lodidum

संख्रिया और आयोडाइड के संघोलन की मिलाने से अग्नि द्वारा जल उड़ा देने से यह यौग तैयार होता है इसकी नांरजी रंग की छोटी छोटी क्रमें होती हैं।

इसका १ भाग जल के ग्यार**ह भा**ग या चालीस भाग (६० फीसदी) में **इल होजाता है।** 

शरीर में शक्ति देता है।

मात्रा-- 🛵 से 🎋 प्रेन तक ।

नोट-एक खुराक में इसको 🦙 प्रेन और एक रोज में ! प्रेन से अधिक न दें।

लाइकर आर्सेनाइ एट हाइड्रेजिराई आयोडीन Liquor arseni et Hydrargyri Iodidi of Denovans Solution.

मंनिया श्रीर पारद के श्रायोडाइड का संघो-लन, इसकोही उनवांस सल्यशन कहते हैं।

श्रारसनिक श्रायोडाइड ८७॥ प्रेन रेड श्रायो-डाइड श्राफ मरकरी ( Red Todide of mercary) ८७॥ प्रेन डिस्टिलवाटर श्रावश्यकतानुसार । पहले ४ ऋों हिलवाटर में दोनों श्रीपिधयों को डालकर खरल कर लें छान लें। फिर छानते समय इतना हिलवाटर मिलायें जिस से पूरी दवा १ पाइन्ट होजाये।

यह हत्तके जर्द रंग का एक साफ द्रव होता हैं स्वाद धातु के समान कसेला होता है।

एक कीसदी यानी ११० बृन्द में १-१ प्रेन दोनों श्रीपधि होती हैं

#### गुगा:

रसावन है-

श्रातशक के लिये निहायन फायदेमंद होना है। मात्रा—प्र से १४ वृन्द ।

एसिडस, मार्फीन, साल्ट्स वगैरह घल्कलाइड ( ज्ञारीय ) और दारचिकना इसमें मिला देते हैं।

# फेरी आरसेनास (Ferri arsenas)

इसे आरसनेट आफ आयश्न भी कहते हैं। यह सब्ज़ रंग का एक चुर्ण सब्जीज़ार है जो संख्ये कसीस के मिलने से नेयार होता है।

पहचान—श्रायरेन कास्केट से इसका रंग नीता होता है। इसकी पहचान करने में भूल नहीं करनी चाहिए।

यह पानी में तो हत नहीं होना परन्तु हायड़ो-कोरिक एसिड (Hydrochloric acid) में शीधता से हल होजाता है।

इसमें लगभग २० फीमदी केरीब्रामिनेट होता है।

#### गुगाः

रसायन है शरीर में शक्ति देता है । आसिनी एसिड के समान स्फूर्ति पैंदा होनी है ।

# सोडियाई आर्सेनास

Sodii arsenas

इमको सोखियम आसैनेट (Sodium arsenate ) भी कहते हैं।

यह एक खेत वर्श का चूर्ण होता है। जो एक भाग दो भाग पानी में हल होजाता है।

इसमें २४ से ३२ फीसदी आर्सनिक एसिड होता है।

#### मात्रा

१ से १ प्रेन तक।

# लाइकर सोडिथाई आरमनेट

Liq Sodii Arsenate.

सीडियाई आरमीनास (३०० डिग्री की अग्नि पर खुश्क किया हुआ) क्या ग्रेन यानी एक भाग की डिस्टिलवाटर ४ फ्लुइड खींस यानी ६६ भाग में मिलाकर हल करें। यह बिना रंग का तरल होता है ।

#### शक्ति

१ फीसदी या ११० बृन्द में १ घेन।

नोट—लाइकर आरसनिकेलिस की अपेदा इसकी नाकत आधी होती है! लेकिन पियर सन्म मन्युशन (Pearson's Solution) की शक्ति २०० में १ होती है।

यह निहायत सुन्दर शक्तिदायक टानिक हैं त्वचा के रोगों से पीड़ित जीए मनुष्यों के लिए विशेषकर एग्जिमा रोग में विशेष लाभ प्रद सिद्ध हुआ है।

नोट-इसके सेवन से मेदे में खराश कम पैदा होते हैं।

# मात्रा -२ से ८ बृन्द नक। ब्रोमाइड आफ आर्सेनिकम

(Bremide of arsenicum)
इसकी जदीमायल छोटी छोटी कल्में होती हैं जो पानी में श्रासानी से हल होजाती हैं। मात्रा—ुं से नुष्येन तक।

#### गुग

यह मधुमेह (डायावेटीज) श्रीर इपिलेप्सी में लाभ देता है।

# लाइकर आर्सेनीसी ब्रोमेटम

Liq Arsenici Bromatus.

श्रार्मेनीश्रस इन हाइड्रोट का पतला चुर्ग १ भाग पोटेंशयम कार्येनिट १ भाग डिस्टिल वाटर ८० भाग ।

# विधि

दोनों श्रीषिथों का हिल्बाटर में मिलाकर इतना गर्म करें कि दोनों मिल जार्थे फिर शोतल जगह पर रखदं। ठंडा होने पर श्रोमीन २ भाग मिलाकर इसमें फिर हिस्टिलबाटर मिलार्थे जिससे सब मिलकर पूरा सौ भाग होजाये। फिर इसे यहां तक श्राम्त दें कि बह एक बेरंग का तरल इट्य बन जाए।

मात्रा-- ४ वृ०।

#### गुगा

यह मुनासित्र पथ्य के साथ मधुमेह श्रीर पिपलैप्सी में दिया जाये तो बहुत मुफीद पड़ता है नोट= यह श्रीपध कई हक्तों या महीनों तक लगातार सेवन किया जासकता है। इससे संस्थिये के बिष लक्षण प्रकट नहीं होते।

# कापर श्रासेनास

( Copper Arsenite ) यह लाइट हरे रंग का चूर्ण होता है। मात्रा—, ..., से ूर, धेन।

कम मात्रा में बार बार इसका देन। बहुत लाभ दायक पाया गया है। इसिलये एक युवा रोगी की पहले हा का से क्षांत्र भेन की मात्रामें प्रत्येक १०-१० मिनट बाद एक घंटे तक दें और फिर १-१ घंटे बाद दें। बच्चों की पूर्ण मात्रा से आधी मात्रा दें।

#### गुरा

श्रंतिह्यों के बहुत से रोग जैसे कालरा (हैजा) हायरिया ( मंग्रहणी ) हिसेन्द्री ( पेकिस ) तथा श्रान्तिरक सिन्तिपात ज्वर में लाभदायक पाया है। क्लोरोसिस (हलीमक) रक्त की कमी में इसको क्षेत्र से क्षेत्र श्रेन की मात्रा में दिन में ३ वार देना चाहिए।

# किनीन आर्सेनास

(Quinine Arsenas)

यह सक्तेद रंग की छोटी छोटी चारीक कल्में होती हैं जो शीतल पानी में इल नहीं होतीं।

#### शक्ति

इसमें अनुमानिक २० कीसदी संख्या और २ से २४ कीसदी तक किनीन होती है।

#### गुगा

यह पुराने मलेरिया उनरों में लाभ प्रव साबित हुआ है। एन्टि पिरियाडिक ऋर्थात दौरे से पैदा होने वाले रोगों में लाभ देता है।

# भारसनिकल सिगरिट्स

(Arsenical Cigarettes)

हरएक सिगरिट में १ प्रेन सोडियाई श्रारसे-नस होती हैं।

#### गुगा

श्वास, श्वासपथ सम्बन्ध रोगों में इसको सिगरट की तरह पिलाया जाना है रोगी को ३-४ बार इसका धूम्र पीना चाहिए।

# लाइकर खोरी एट ब्रासेनाई बोमाइड Liq Auri et Arsenir Bromide.

श्वारसिनइस एसिड ४ से २ व्राप्त. ट्राई बीमा इड श्राफ गोल्ड २४ से ३ व्राप्त, त्रोमीन वाटर श्रावश्वकतानुसार डिस्टिलवाटर श्रावश्यकनानुमार या इस परिमाण में कि तरन १००० क्योविक सेन्टिमीटर हो नाये।

मात्रा - १ से २ बृन्द । इसको ब्रातशक श्रीर न्यूरिम धीनियां में देने हैं । श्रारसनिकत पेस्ट (Arsonneal Paste)

स्त्रारसिन्दस एसिड २ भाग मार्फिनसल्केट १ भाग, कियोजुट इस कदर मिलायें जिससे सरेस जैसा गाढा पेस्ट वन जाये।

#### गुगा -

एक सुई के सिर के बराबर या ख़शस्ताश के दाने के बराबर जो एक बार लगाने के लिये काफी होता है जरासी मई पर रखकर विकृत दांत से रखटें डगैर उपर से जरासी मई डौर भरदें। यह ख़राब भाग को ठीक कर देता है।

२-पेस्ट श्रार्मेनिकेलिम (Past Arsenicallis) संखिया २ भाग कॅकिनहाइड्रोक्लोगस ४ भाग मैन्थल तथा ग्लीसरीन आवश्यकतानुसार इनको मिलाकर पेस्ट बनाकर लगायें

# आर्सेनिसी एक्योरे टिक

Past Arsenici Eschoratic

संग्विया १ भाग चारकोत्त १ भाग रेष्ठ सल्फेट ग्राफ मरकरी ४ भाग पानी श्रावश्यकतानुमार सब को मिलाले।

#### गुगा

यह सिर के बाल उड़ जाने पर लगाना चाहिए श्रोर सरनान बरीरह में जलाने के लिये इम्नेमाल किया जाता है।

# मोडियम काकोडीलेट

(Sodium Cacodylate)

यह सोडा और काकोडायलक एसिड का मिश्रमा है जिसमें संख्या एक वड़ी मात्रा में मिला रहता है जिससे शरीर में बड़ी मात्रा संख्ये की जा सकती है।

#### गुगा

श्रभी हाल में फांम के श्रनुसंधानकर्ता डाक्टरों ने इस श्रीपधि के श्रनुभव लिखे हैं कि यह श्रभीमियां (रक्त की कमी) जो विविध कारणीं से उत्पन्न हुई हो नपेदिक न्युरसंखे नयां, डाय-वटीज में विशेष लाभदायक बनाया हैं।

#### नोट---

इसका हमेशा हाइपोइर्मिक इंजैस्शन देना चाहित । इसके ट्यूब्ज भी आते हैं।

मात्र।-- ,'. से ' ग्रेन नक ।

# डी० सोडियम मेथिलारसीनेट

(Di-Sodium methylarsinate)

इसको अर्ग्हानाल (Arrhinal) भी कहते हैं यह भी काकोडायल एसिड का मिश्रण है। जिसको द्वर क्लोसिस, मौसमी युखार, स्लीपिंग-आदि रोगों में दिया जाता है

मात्रा-३ से ४ ग्रेन तक।

# मोडियम-एमिनो फिनेल अर्सेनेट

(Sodium Amino Phenyl Arsinate)

यह एक कल्मी चुर्ग है जिसका म्बाद खारी होता है क्योंकि यह विषेता नहीं होता है इस लिये इसे निभय बड़ी मात्रा में दे सकते हैं।

मात्रा— : से ३ ब्रेन तक कभी कभी १० ब्रेन तक भी दे सकते हैं।

#### गुगा---

कःला श्रजार मलेरिया, श्रानशक पर इसका श्रानुभव किया जारहा है श्राभी पृरा लाभद यक होना सिद्ध नहीं हुआ।

# आर्सेनिक की गोली

(Pilula Ariatica) खेत सांग्वियां ७ घेन काली मिरच ७४ घेन गमाकेशिया आवश्यक-तानुसार।

मंग्विये की अधिक पीसकर कालीमिरच के चुर्म के साथ ख़ब खरल करें फिर गोली बनालें।

प्रत्येक गोली में 👍 भेन संख्या होता है बाज नसकों में 🎠 से 🏰 तक रहता है।

मात्रा--१ से २ गोली

गुग्--

श्रान्तेपहर-दौरे के रोगों को लाभ देता है। त्ववाजन्य रोगों में इसका सेवन लाभ देता है। नोट—यह एशिया की गोलियां योरप कें कई देशों में अभी तक इम्लेमाल होती हैं।

#### विष प्रभाव-

संखिय के विष का प्रभाव दो प्रकार से होता है एक ताटकालिक दूसरा चिरकालिक।

२—३ मेन या १—२ रशी संख्या साने से प्राय: मृत्यु हो जाती हैं।

संखिया खाने के थीड़ी देर बाद ही मून्छां सी महस्यस होने लगती है, जी मिचलाता श्रीर वमन श्राती है। मेदे की दबाने से वेदना होती है। यह सच्छा शीझ बढ़ जाते हैं।

वमन भूरे रंग की अवसर खुन अमेज आती है। और पेट में तील शुल होने लगता है और पेटन के साथ बहुन से दम्न आने प्रारम्भ हो जाते हैं। तथा पिड़ालयों में तशक्र जा गिंठन) होता है। वमन शीधना से आने लगती है और लगातार जारी रहती है। गले में जलन प्रतीत होती है और तील प्यास लगती है। मृत्र आना बन्द हो जाना है नाड़ी सुस्त चलने लगती है। रोगी बहुत बचेनी महस्स करता है शरीर शीतल पड़जाता है या बहुत कमजोरी होकर या मुच्छी की हालतमें मर जाता है।

• मृत्यु समय-

कभी २० मिनट,पायः १ दिन, कभी कभी दस दिन भी लगजाते हैं।

मंद्रिये के तात्कालिक विषात्मक लहाए। विश्विका (हैजा) से मिले जुले होते हैं।

#### पोस्ट मार्टम-

सीखिया ग्वाये हुए श्वादमी की लग्श चीर कर याँद देखी जाये तो उसके मेदा (श्वामाशय) श्रीर होटों आतों में प्रदाह के लज्ञण मिलते हैं और इनमें कहीं २ रक्त के धब्वे या जलम होते हैं।

यदि रोगी किसी कारण मृत्युसे बच जाये श्रीर चन्द साल तक जीवन व्यतीत करे—उसके मरने पर यकृत या गर्दन या हृद्य की परीज्ञा की जाये तो ये सख्त चर्ची में बदली हुई मिलती हैं।

#### नोट-

यदि संख्या मुँह के द्वारा न भी दिया जाये केवल किसी अण या सर्तान पर श्रिधिक मात्रा में लेप कर दिया जाये तो यह त्वचा द्वारा शोपित होकर विष लक्षण पैदा कर देता है। तव भी श्रामाशय (मेदा) में सख्त प्रदाह पाई जाती है जिससे यह परिगणम निकलता है। कि संख्या रक्त से मेदे में स्ववित होता है।

# चिकित्सा -

श्रामाशय को स्टमक पन्य से थे। डार्ले या वमनकारक श्रीपीययों का सेवन करायें।

एकोमाक्षीन हाइड्राक्लागइड का जल्द इंजेक्शन दें जब बमन होकर मेदा बिलकुल खाली होजाये तब निस्त विपनाशक श्रीपधियों में से किसी एक का सेवन करायें।

१—लाइकर फेराइपर कत्तोराइड !! अलुइड श्रींस को २ श्रींस पानी में मिला हें श्रीर मोडियम कार्बेनिट श्राधा श्रींस प्रथक दो श्रींस जल में हल करें फिर इन दोनी दवाश्रींकी हमवजन साथ मिलाकर इसमें से श्राध श्रींस की मात्रा में प्रत्येक ४-४ या १०-१० मिनट के श्रन्तर से दें।

यह दवा संख्यिये के साथ मिलकर इसे नाकाविले तहलील कर देती है जो शरीर को हानि नहीं पहुँचाती रेचन द्वरा श्रासानी से शरीर से निकल जाती है। नोट--

उपरोक्त कादजहर की चार मात्रा ४-४ मेन संखिये की बेकार बना देती है।

२ - टिंचर स्टील ४ ड्राम में इतना ही पानी मिलाकर उसमें सोडियम कार्बोनेट या एमोनियम कार्बोनेट ६० प्रेन मिलावें इस को जल्दी से मलमल के कपड़े में छान कर रोगी को पिलादें और ऐसी एक एक मात्रा आध र घंटे के बाद दो तीन वार पिला दें। या

३—फ़ेरीक क्लोगइड (Freric Chlorid) या स्ट्रोंग सल्युशन श्राफ फोरी क्लोगइड ३ भाग साफ पानी १७ भाग।

दोनों की मिलाकर एक कांच कर डाट वाली बोतल में रखें और कालमी नेटिड मगनेशिया या मगनेशिया श्रीकसाइड १ भाग साफ पानी १६ भाग में खूब मिलाकर एक दूसरी शीशी में रखें श्रावश्यकता के समय दोनों द्वाश्रों को सम भाग मिला कर दें।

यह ध्यान में रखना चाहिए इस दवा को नाजा नैयार करके सेवन करायें।

डायल्यृटिड फोर सल्यूशन और मेगनेशिया श्रीक्साइड दो प्रथक २ बोतल में तैयार करके हमेशा तैयार रक्यों जिससे शीच सम भाग मिला कर दी जाये।

#### संवन विधि

देश्नों दवाओं को सम भाग सिला कर ४ हाम या खाना खाने का चमचा भरकर ४-४ या १०-१० मिनट बाद तत्र तक पिलाते रहें जब तक विश्व का ससर न आये या जितनी तादाद में संख्या खावा गया हो उससे १२ गुनी मात्रा अधिक पिलानी चाहिए । यदि इसमें से कोई भी दवा मौके पर मिल न सके तब कैलिसनेटिड मेगनेशिया या एनीमल चारकोल या जैतून का तेल या लाइम बाटर (चूने का पानी) अधिक मात्रा में दें। प्यास के लिये बरफ चुसवार्थे यदि यह मिल न सके नो शीवल जल को घृंट २ करके दें। कमजोरी के लिये शक्ति बर्डक दवा दें या बाराएडी या विश्की बरोरह दें।

यदि शरीर शीतल होने लगे तो बगलों और रानों में गर्म पानी की बीतलें रखें कम्बल उदायें यदि श्वास बन्द होने लगे तो कृत्रिम किया करें। जब सब विष के लक्षण शान्त होजार्ये बेचैनी बगैरह को दूर करने के लिये ''मार्फिया'' का इंजिक्शन दें।

विषनाशक द्वाकों के सेवन के वाद दस्त लाने के लिये मेगनेशिया सल्फ २४० झेन या कास्ट्र-चायल ४ द्वाम ४ घोंस दूध के साथ दें। नोट---

संस्थिये के साथे हुए कादमी की तुर्श (स्वर्टी) बस्तु नहीं देना बाहिए ।

मकीय के पत्तों के रस या शाक या दूध में घी या जैतून का तेल पिलार्थे। हरताल खाये जाने पर कूष्मांस का रस निरन्तर पीने को हैं।

#### इसके अन्य योग

#### १----हरताल

(Sulphide of Arsenic or Trisulphurate at Arsenic)

इसमें चार भाग गंधक और ४ भाग संखिये के होते हैं बाजार में यह दो प्रकार की आती है।

१-वंशीपत्री अथवा वकी

२--पिएड

पहलीका रंग स्वर्णवत् चमकीला उज्ज्वल भार गुरु सूद्म पत्रों से निर्मित यही दवाश्रों के काम में श्राती है।

पिएड हरताल में कोई चमक नहीं होतीं केवल हिरमजी के से डले होते हैं।

#### शोधन

चूने का पानी, कांजी, नीम्बूरस किसी एक के साथ मर्दन कर गर्मपानी से भो डालने से शुद्ध हो जाती है। इरताल को एक चस्त्र में बान्ध पोटली बनालें, पेठे के रस में दोलायन्त्र द्वारा पकालें।

#### मारग

शुद्ध हरताल को थोड़े चूने के पानी में मर्दन कर टिकिया बना मज बूत हान्डो में दुगनी या तिगनी पुनर्नवा, पीपल की भरम, टाक की भरम, किसी एक की भरम के मध्ममें टिकिया बना धतृरे के पत्तों में लपेट कर रखर्दे उत्पर से हाएडी का मुख बन्द हड़ता से करें १ या २ दिन कोयलों की द्याग पर रखें।

### द्वितीय प्रकार

हरताज ४ तो० शुक्ति भस्म ४ तो० समुद्र फेन या घी कुवार के साथ घोट कर टिकिया तैयार करें ''बराह पुट'' दें भस्म होजायगी।

#### २--मनःशिला

(Bisulphurate of Arsenic)

यह खनिज भी आती है। तीन भाग गंचक

श्रीर ४ भाग संखिया को किसी पात्र में रखकर श्रीन द्वारा पिघलाने से तैयार होती हैं।

इसका रंग लाल और चमकीला होता है। इसके खंड धजनी होते हैं स्वभावतः प्राकृतिक संख्या और लोहे की कवी धानुश्रों का मिला ऊर्ध्वपातन करने से प्राप्त होती है।

#### शोधन

भृंगराज निम्बृरस, श्रद्धक स्वरस की सान भावना देने से ।

#### मंग्विय का प्रभाव

#### बाह्य

संख्या स्वस्थ त्वचा पर लगाया जाये तो इस का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता यदि छिली हुई त्वचा या त्रण ही उसपर लगाने पर प्रदाह या खराश पैदा हो जायेगी और कास्टिक अर्थान जलानेवाला असर होता है वशने कि साख्या अधिक मात्रा में लगाया जाये, अगर कम मात्रा में लगाया गया है तो त्वचा के द्वारा आंभशोपित होकर अन्दर वय लक्षण उत्पन्न कर देता है।

#### श्रान्तरिक

इसको छोटी मात्रा में सेवन करने से ( , से े प्रोन ) मंद का नाड़ियां बौड़ी हो जाती हैं और श्रामाशियक रम अधिक परिमाण में बनने लगते हैं। इसी कारण से सोमल अधा बर्डक है और मेदे को शक्ति देने बाला है।

यदि इसका अधिक मात्रा में सेवन किया जाये तो आंतों में तील प्रदाह और खगाश उत्पन्न होजाती है।

खरार संख्यि की इंजैक्शन द्वारा शरीर में प्रवेश करें तब भी मेदे में ही जाकर जमाहीता

# है और तीन्न प्रदाह के लक्षण पैदा होजाते हैं। रक्त

मंखिया रक्त में शीव्र प्रवेश करता है स्वस्था-वस्था में तो मंखिये का कोई असर नहीं होता लेकिन पाण्डू में इसके सेवन से रक्ताणु की वृद्धि और रक्त में सुखीं बढ़ जाती है।

#### हृद्य तथा रक्त परिश्रमण

बहुत हो कम मात्रा में जैसे लाइकर आर्मेनिक्लिस की आधी बिन्दु से १ बृत्द तक हृद्य को शक्ति हैता है लेकिन अधिक मात्रा देने से एक का वेग और नाड़ी की बाल में कमी आजाती है और नाड़ियों में कुछ परिवर्तन ऐसे होजाते हैं जिनके कारण वे फट जाती हैं और रक्त प्रवाह हो जाता है।

# शारीविक परिवर्तन

इसमें डाक्टरों के भिन्न ? मत हैं सारांश यह है कि शारीरिक परिवर्तन पर सोमल का खास प्रभाव पड़ता है शरीर के प्रत्येक झंगप्रत्यंगों की रचना व कार्यों की ऐसे कम से बदल देता है जो भीजन के दोगों से रोग पैड़ा हो जाते हैं उनकी इनसे बहुत लाभ होता है। इसलिये यह खनप्रद और रक्तशोधक हैं।

#### र्वास

श्वाम क्रिया पर होने बाले प्रभाव का निश्चय-रूप से मालम नहीं परन्तु श्याम देश के मनुष्य तथा भारतवर्ष में सर्वी को पकेड़ने वाली जातियां सेवन करती हैं।

इससे उनका स्वास गहरा और त्वचा सुन्दर तथा चमकीली हो जाती है बहुत से मनुष्य इसको द-१० प्रेन की सान्ना तक भी खा लेते हैं।

#### **वातसंस्थान**

बहुत थोड़ी मात्रा में मंखिया बातमंत्थान को ताक़त देता है लेकिन बड़ी मात्रा सेवन करने पर पहों की ध्पर्श शक्ति और उनके केन्द्रों की संचालन शक्ति को कम कर देता है।

नीट—चिरकात तक संखिये का सेवन करने से स्नायविक प्रदाह होकर अंगी पर कालिज का असर होजान। है शोध भी होत! है।

#### त्वचा

त्यचा पर मंखिये का विशेष श्रमर होता है उसके सेवन से त्वचा की शक्ति तथा नीचे रहने वाली बसा में वृद्धि होने लगती है। कभी इसका निस्मरण पमीने के द्वारा भी होता है उसिलये कोई फुंमी ददोड़े हैं। जाते हैं श्रीर त्यचा का धर्ण स्याहा मायल होजाता है कभी इसमें एक विशेष प्रभार की चमक श्राजाती है।

# हड्डी

यह इड्डी की बनावट को मजबूत करता है। श्रीर मलेरिया तपेदिक श्रादि के कीटागुओं की बढ़ने से रोकता है।

#### नि:सरग

संख्यि का निःसरण अधिक तथा मूत्र द्वारा होता है लेकिन आंसु, पित्त, मल और धृक के द्वरा भी होता है।

कई डाक्टरों का मन है कि दूध के हारा भी मंखिया निकलता है। माता के उदर में भी बच्चे पर इसका प्रभाव पड़ता है इसिलये ऐसी हालत में इसे नहीं देना चाहिए।

संखिया यकृत, वृक्कमें जमा रहता है,इसे खाने के कई मास बाद भी मरने पर उनके शरीर में पाया गया है।

#### सहनशक्ति

अध्यास करने पर बड़ी मात्रा सेवन करने की आदत हो जाती है। प्राय: आधी रत्ती की मात्रा मार देनी है। बच्चों को बढ़ों से अधिक सहनशक्ति होती। बढ़ों की यह अच्छी तरह बर्दास्त भी नहीं होता।

#### संखिये का व्यवहार

वनीर कास्टिक (जलानेवाला) के रूप में गंज, गुद्दलिंगादि में चारों तरक की शोध तथा सस्सों का उत्पन्न होना इत्यादि में मरहम, चूर्ण लेप के रूप में इसे लगाते हैं।

इन दो वातों का ध्याम रखना चाहिए लेप करने पर शीच जल कर जिल्दका मुर्दार भाग अलग होजाये, २—यदि रोग दूर तक फेला है तो प्रथम थोड़े भाग में ही लगार्थे थोड़े २ मस्से, आटन (चट्टे) लाइकर आर्सैनिकलिस के लगाने से अन्छ होजाते हैं।

दवा लगाने से पूर्व हद स्वचा को छीन देना चाहिए। प्रायः बवासीर के मस्सों का इलाज भी इससे ही किया करते हैं मस्से कट कर गिर जाने हैं।

#### आंतरिक प्रयोग

रांतों के चिकित्सक प्रायः ऐसा करते हैं स्वीखते दांत में मसाला भरते से पूर्व संखिये की पेस्ट से दांत के मांसल भाग की जला दिया करते हैं अपित सुद्म मात्रा में मंखिया रक्त की संचालन शक्ति बढ़ाने बाला स्वीर स्नामा-शय की बलदायक है, इससे हाजमा बढ़ जाता है भूक की वृद्धि होती है। श्रम्लिपत्त, श्रजीर्गा, दर्द मेदा श्रामाशय के श्रण, मेदे के सरतान में लाभ देता है इन रोगों में भोजन से पहिले देना श्रन्छ। होगा।

#### हृदय, फुप्फुस--

दिल के दर्द में और हृदय की जीए करने बाले ज्वर या अन्य रोगों में चौथाई से १ बृन्द लाइकर आर्मेंनिक देना हृदय की बल देता है जब हृदय के कमजीर होजाने से पैरों पर शोध होजाता है ऐसी हालन में सींख्ये की मुनासिब तौर पर देने से रक्त परिश्रमण ठीक हो जाता है और शोध नष्ट होजाना है। बानज कास तथा बान प्रधान श्वास रोग में दमकशी में न्यूमीनियां में इसके सेवन से लाभ होना है।

डा० त्रेन्टे साहब का कहना है कि दिक्त की प्रारम्भिक अवस्था में लाभ होता है परन्तु बढ़ जाने पर कोई लाभ नहीं होता।

मलेरिया के दौरे से होने बान पट्टी के दर्द में श्राह्मिक्सेदक बरोरिह में इससे लाभ होता है। जब मलेरिया के जबर में किनीन लाभ नहीं देती तो संख्यि से लाभ होता है ऐसी हालत में बड़ी मात्रा में देना चाहिए।

श्लीपद (फील पांच) के ज्यर की रोकता है कम्पवान की विजेष लाभ देता है इसकी यड़ी माजामें दें। प्रथम ४ वृश्से प्रारम्भ करके १४ वृत्द की खुराक में दिन में ३ बार दे सकते हैं।

डाo गोवग कहते हैं कि चाल में बेतरतीबी ( शंकुगति ) में संख्या विशेष लाभ देता है।

डा० मरे साहब मधुमेह में ला भदायक बनाने हैं रोगी को चंद दिन तक अफीम का सन देने के बाद पेशाब में शंकर बंद करनेके लिये फिर इसे

# देते हैं। ध्यान देने योग्प बातें--

जब स्वचा में प्रदाह हो। इसका सेवन न करें मंथिये की प्राय: भीजन के बाद देना चाहिए, कम माश्र से शुरू करना चाहिए जब संखिये का मेदे पर श्रमर डाजना हो तो भीजन से पूर्व देना चाहिए चूंकि संस्थिया उन विपों में से हैं जो धीरे न जमा होकर एकदम विप लक्षण पैदा कर देते हैं इसलिए इस्तेमाल करते हुए १०-१४ दिन बाद बन्द कर देना चाहिए। मिथिये को लगातार सेवन से चिरकालिक विष लक्षण पैदा होजाने हैं।

मेदे में दर्व जलन, जी मिचलाना कभी यमन होजाती हैं कभी मरोड़ के साथ दिन में दस्त हो जाते हैं। नेत्र सुर्ख नीचे के पपोटों में शोध हा जाता है आंख और नाक से जल बहने लगता है सर भारी होता है मूत्र कम होता है जब ऐसी हालत हो दवा की मात्रा कम कर देनी चाहिए तब भी लच्छा शान्त न हों तो द्वा बन्द कर देनी चाहिए।

यदि त्यचामें प्रदाहकारी खाज हो तो एक पस्त दिया जाये।

# मंखियं से निमित श्रायुर्वेदीय श्रीर युनानी श्रापियां

श्रीपधि में डालने से पूर्व संखित की शुद्ध करना चाहिए।

संख्या के दुकड़ों की दूध सुहागा, चूने के पानी के साथ या जारीय जल या कांजी के साथ डोकार्यत्र द्वारा पका कर घोलिया जाता है। निस्धृ रसमें भी २-३ दिन रखनेसे शुद्ध होजाता है। रस

39

प्रति दिन बदलते रहना चाहिए।

#### सोमल भस्म

शङ्कनाभी में मंखिये को भर कर उपर से अर्कटुग्ध डालकर मुख बन्द कर लघुपुट देने से भस्म होती है शङ्क नाभि सहित चूर्ण कर प्रयोग करना चाहिए।

मात्रा-! से २ यव ।

रोग

दमा, मलेरिया, गठिया कमजोरी ।

#### जौहर सीम

संख्या १ ती० बराएडी १ नम्बर ३ ती०।
खूब खरल करें फिर मिट्टी के दो प्यालों में
बन्द करके उनके जोड़ को आदे से बन्द करके
सन्द आग्नि पर रखें और उत्पर के प्याले पर पानी
से भीगा कपड़ा रखदें और कपड़े को तर रक्खें।
२-३ इंटे में जौहर उड़ कर उत्पर के प्याले में
लग जायेगा।

#### गुगा:

नामदी, जलोदर कफ़ ज ज्वर मलेरिया बुग्तार श्रीर तजले को श्राराम करता है।

#### सेवन विधि

नामर्दी और कमजोरी में माजून जालीन्स छलुई ४ माशा के साथ, जलीदर में दबीदुलवर्द ४ मा० के साथ सेवन करें। उवरों में मुनक्का में रखकर।

मात्रा-१ से २ चावल

#### हब्बे श्रहमर

शुद्ध संविद्या शु० तत्रकी हरताल और हिंगुल तथा गंधक १-१ तीला। सबको १०० निब्रु के रस में मर्दन करके मूंग के बराबर गोलियां बनालें।

#### गुग्

काम शक्ति को बढ़ाने में और नामर्दी को दूर करने के लिये अजीब व ग़रीव चीज है यह हकीम अजमल खां साहब का खास नुसखा है।

#### संवन विधि

पहिले ७ दिन तक आधी गोली फिर १-१ गी० दूध के साथ।

इसे शग्द् काल में सेवन करना चाहिए इस को खाते समय बी दूध ज्यादह खार्ये।

#### परहेज

तेल, गुड़, खटाई श्रीर भारी वस्तुर्ये ।

# तिला मजलुक

कुचला १ तो० के छोटे २ टुकड़े करके ३ दिन तक शराव में भिगो दें।

६ माशा अकीम, आसगंव २ ती०, संखिया ६ माशा अकरकरा ६ नाशा को २४ बंटे शराब में भिगोकर पीस कर पिचली हुई मोम में मिलाकर तिला बनार्ये।

#### गुग्

हस्त मैश्रुन से उत्पन्न हुई नपुंसकता की नष्ट करता है इन्द्रिय की हड़ करता है विशेष लाभ-दायक है।

# तिला जदीद

संख्या २॥ तोला, श्राक का द्ध ४ तोला जावित्री जायकल; श्रकरका लौंग १-१ तोला केसर ४ माशा, कस्तूरी ३ माशा, गाय का घं ३ इटांक। पहले संखिये को कुछ समय तक आक के दूध में खरल करें फिर सब द्वाइयां पतली पीसकर मिला दें फिर घी में खरल करें।

#### गुरा

शिथिलता दूर करती हैं चाहे किसी कारण से क्यों न हो। बुद्धावस्था में विशेष हितकर है।

#### जीहरे कलां

रस कपूर, संख्या, पाग्द और शिगरक १-१ तीला शराव और गुलावक अर्क में घोटकर जीहर उड़ालें।

अप्रातशक. वायुकं रोगों पर विद्याप लाभदा-यक है।

#### सेवन विधि

दो चावल मुनक्का में रखकर निगल जार्ये । जौहर **मुनक्का** 

संखिया, रसकपूर, दारचिकना १-१ नोला। बरागडी में घोटकर जीहर उड़ालें। मात्रा—१ से २ चावल।

मुनक्तका में रखकर निगत जायें। दांत से लगने न पाये नहीं तो मुंह आजायेगा।

#### गुगा

श्रातशक और बातब्याधि अंग के मुझ हो जाने में।

#### पुगना नजला

संख्यि का सन्त्र १ माशा शिलाजीन ६ माशा लोह भरम ६ माशा अम्बर ३ माशा लेकर सबकी गावजुबां के अर्क में चीट कर काली मिरच के बराबर गोलियां बनालें १-१ गोली प्रात: समय खिलाने से पुराना जुकाम नष्ट होता है।

#### संखिये का तेल

१ भाग हल्दी को रात भर दुगने दूध में भिगो दें, दिन में सुखार्थे, इस प्रकार ७ दिन के पश्चात आधा भाग संख्या श्वेतको, पातालयंत्र विधि द्वारा इ. १० घंटे की अगिन देवें।

नोट—इसी श्रकार हरताल श्रीर मनःशिला का भी तेल निकलता है।

#### रोग

रक्तविकार, श्वास कमजोरी, नपुंमकता । मात्रा—सुई का अग्र भाग मात्र ।

### संखिये का इत

संख्या ४ तोला दश सेर भैंस के दूध में होट २ दुकड़े कर पोटली बना दोला यंत्र की तरह दूध में लटकारें मुख वन्द कर सुखालें। फिर मृदु श्रान्त से पकार्ये भाप बाहर न निकल सके। ४ प्रहर की श्रामी दें शीतल होजाने पर दूध की जमादें फिर मथ कर यी निकाल लें गर्म करके रखें।

#### गुरा

बातज और कक्षज रोगों पर।

# सोमल मृगशृंग भस्म

संखिया १ भाग, मृगश्रांग ४ भाग श्रक दुग्ध द्वारा सर्दन कर बराह पुट दे।

मात्रा १ से ४ में न।

रोग-स्वास ।

# हरनालादि लेप--

हरतालं, मनःशिला, गंधक, चक्रमदं बीज, बावची, मुहागा, तुत्थ १-१ तोला। कपूर आधा नोला। कपड्छन चूर्ण बनावे वैसलीन में मिलाकर लेप करें।

रोग-कण्डू और टाद, छाजन, फुंसी चर्म रोग।

# मोमल स्कटिका---

संखिया १ तीला स्फटिका १० तीला। निम्बू स्वरस में मर्दन कर लघुपुट में फूंक दो।

मात्रा-न्नाघे से १ यव।

रोग श्वास रोग तथा मलेरिया।

#### हरताल स्फटिका---

वर्की हरताल १ ती० फटकरी श्वेत १० तीला निम्त्रू रस में मर्दन कर लघु पुट में फूंक दें। मात्रा—श्राधे से १ यव। रोग—मलेरिया, श्वास।

# उन्माद गज केश्री---

शुत पारद० शु० गंधक, मन:शिला धतूरे के बीज १-१ तो० की बच, बाह्या और शंख पुष्पी के रस की ७ भावनार्ये हैं।

मात्रा—श्राधी र० से २॥ र०। रोग—श्रपस्मार, उन्माद, हिस्टीरिया।

# मोमलादि गुग्गुल-=-

संख्या, हरताल, हिंगुल, कुचला शुद्ध मीठा तेलिया, रस कपूर १-१ तोला।

केशर ; तो० जायफल,जावित्री,प्रत्येक 11 नो० काली मिरच पीपल, गंधक शुद्ध, '२-२ तो०।

सब के बराबर गुग्गुल, धीकुमार के रस से मर्दन कर गोलियां बनाए। मात्रा-४ से १० यव।

गेग-गृष्ठसीशूल नाड़ीशूल, आमवान, पत्ता-घात, कमजोरी ।

# पौष्टिक वटी---

शु० सोमल-शु० कुचला चूर्गा, बंग, नाग, लोहभस्म १-१ लो० शिंगरक भस्म ६ माशा शिला जीत १ तोला वंश लोचन ६ माशा छोटी इलायची १ तोला।

सबको शिलाजीत में मिला कर रखलें। २-३ रत्ती शरीर को पुष्ट करती हैं काम शक्ति बढ़ती हैं भूक लगती है। दूध और वी खुब लाये। हिरताल और मनसल के योग—

# तालमिन्द्र-

पारद १ भाग गंधक २ भाग हरताल १ भाग धृतकुमारी के रस में घोट कर कज्जली बनायें फिर कपड़ मिट्टी की हुइ आतशी शीशी भर कर रसिसन्दूर विधि से तैयार करलें।

#### नाट-

इस प्रकार हरताल के उस स्थान पर संखिया या मनसल डाल दिया जाये तो उसे ही नाम का सिंदर तैयार होगा।

मात्रा— े से २ यव

रक्तदोष, श्रामवात कुष्ठ उपदंश, चीएता-मल्लसिंदूर में कस्तुरी, कर्पूर श्रम्बरादि मिलार्दें तो यह उत्तम बलप्रद हो जाता है हिस्टीरिया में लाभ दायक है।

#### रम माशिक्य--

हरनाल के चूर्ण को अभ्रक पन्न पर बिझा ऊपर से दूसरा अभ्रक पन्न रख संधिवन्द करदें फिर कोयलों पर मंदी आंच से पकार्ये शीवल हो जाने पर पन्न इटार्ये चमकीले स्फटिक छुड़ालें।

मात्रा-१ से ४ यव

रोग--रक्तदोष-उपदंश खुजली श्रादि प्रयोग-

१—लाइकर आर्सेनिकेलिस १ ब् सोडाबाई कार्ब = ग्रेन० स्पिट क्लोरो कोर्म ७ वृत् श्रक्त सींक १ औं० ऐसी १—१ मात्रा दिन में ३ बार भोजन के वाद दें। यह क्रानिक (पुराने एिजमाम लाभ देनी हैं। २—डोनोबेन्ज सल्यूशन १२ वृत् लाइकर हाइडाजराइ परक्लोगइड ३० व०

स्त्रिट क्तोरी कर्म

इंक्यूजन चिरेटा (चिरायतेका क्वाथ) १ तोला ऐसी १—१ खुराक दिन में ३ वार भोजन के बाद दें। यह अतिशय लाभ देता है।

३लाइकर आर्सेनिकलिस	४ बु०
पोटाससिडेटिस <b></b>	१४ मेन
वाइनम कालचीसाई	६ बु०
टि० मिमसी पयुजा	ও স্বৃত
सर्वत नीवृ	3 <b>5</b> [0
पानी	४ डा०

ऐसी १—१ खुराक दिन में ३ बार भीजन के बाद देना। जोड़ों के सख्त होजाने पर लाभ देनी हैं।

८ व०

# 

ये गोलियां अत्यंत पाष्टिक और श्रायिक दुर्बलता तथा बाल्यावस्था में किये श्रीय अनुचित कार्यों से, अथवा युवावस्था में की गई अमावधानियों से उत्पन्न हुई कि मुख्य का को दूर करने में जाद का अमर रखती हैं। इनके थांडे ही दिनके सेवन से शिक्ति अपना पूर्वावस्था को प्राप्त होजाती हैं, भूख खब लगती हैं, जो भोजन खाया जाता है उसका आहार रम बना कर शर्गर को मोटा, ताजा सुन्दर, मुडौल और ताकतवर बना देती हैं। सुख, सुन्दर, तेजस्वी होजाता है, ओर स्वास कर हिमाणिकाम करने वालों के लिये ये गोलियां निहायत अक्सीर हैं, हर मौसम में इस्तेमाल की जासकर्ता हैं। कीमत ४ मोलियों की शीशी २) दो रूपया। तीन श्रीशियों के ४) डाक व्यय प्रथक।

बृहत् आयुर्वेदीय श्रोषध भागडार (रजिम्टर्ड) जौहरी वाजार देहली ।

ŧ

# एन्टिमनि क्लोराइड एन्टियनी कम्पोन्ड ऋोर टारटार एमेटिक

Antimony Comp -Tartar Emetic

#### विष लच्चा

इसके विष लज्ञ वही हैं जो संख्या के । पोस्टमार्टम करने पर भी वही लज्ञ कि मिलते हैं, गैस्ट्रो इन्टस टाइनल इस्टिशन वैसी ही होती है जैसे कि मंखिये में परन्तु इसके निशानात वैसे बाज ह तीर पर नहीं पाये जाते।

#### चिकित्सा

जब तक वमन खुते तौर पर न श्राने लगे एपोमार्कीन को इंजैक्ट करदें।

# कास्टिक पोटास Caustic Potas

सल्यूशन आफ पुटैश्यम कोलेकर गर्भ करें और सब पानी को उड़ातें। सांचों में भर दें।

विशेषतः --- कड़ा सफेद, चाक को पेंसिल के समान हवा में खुले रहने से नमी को खेंचकर पिचल जाता है जिया पर लगने से जला देता है। प्रभाव

वाह्य

यदि तीझ घोल त्वचा पर लगाया जाये तो इस स्थान के तरल को चूस कर जला देता है अर्थात इरीटेन्ट प्रभाव करता है दाह करता है यदि त्वचा पर किसी प्रकार की चर्बी लगी हुई हो तो हल कर लेता है, यदि बहुत मृदु घोल (सल्यूशन) त्वचा पर लगाया जाये तो सेडेटिव और रेन्टोसिव जिंक सल्फेट से मुंह द्वारा य स्टमक पम्प द्वारा मेदे को साफ करें। टेनिक एसिड और गेलिक एसिड आधा डाम जल में मिश्रिश करके लगातार देते रहना चाहिए।

तेज चाय या काफी या ऐसे झर्कों का सेवन लाभदायक है जिसमें गोंद का मिलाव हो।

स्टिम्युलैन्ट ( उत्तेजक)श्रीपिधयां देनी चाहिएं गर्म पानीकी बोनज श्रीर गर्म कम्बल भी ज़रूरी हैं।

(तेजाब के प्रभाव को दूर बरने वाला) असर होता है।

#### श्रान्तरिक

मुख --क्योंकि खारी घोल हमेशा खारी पन के रिसने को कम कर दिया करते हैं इसलिए लाइकर पुटेशी मैलाइया (लालारस) को कम कर देता है।

#### ग्रामाश्य

इस के मिश्रण तुर्श (स्वहे ) रस को श्रांधक निकालते हैं इसलिये गैस्टिक जूस (श्रामाशियक रस ) भोजन से पूर्व इसके देने से बढ़ जाता है। यह ध्यान रहे कि मेदे में एल कली के न्यूटल (उदासीन) होजाने पर भी आमाशायिक रस का स्नाव होता रहता है, लेकिन भोजन के बाद यदि इनका सेवन कराया जाये तो सारा आमाशयिक रस जो पहले उपस्थित होता है उसकी तुशी जाती रहती है।

स्तारी दवा मेदे में बहुत शीघ्र शोपण हो जाती है। क्योंकि वह शीच घुल जाती है।

#### रक्त

यह अधिक खारी होजाता है भायः सभी खारी औंषधियां रक्त में कार्बनिट की शक्त में दौरा करती हैं मगर उनकी रक्त को खारी करने की तासीर चिएाक होती है क्योंकि ये रक्त से शीघ्र निकल जाती हैं। कहा जाता है कि हिमोग्लो-बीन (रक्त रंजक) की संख्या कम हो तो इनके सेवनसे पूर्ण होजाती है। जब खारी औपधियोंको कुछ असे तक लगातार सेवन किया जाये तो चर्चाकी मात्रा घट जाती है।

#### हृदय

पुटेश्यम के प्रयोग वड़ी मात्रा में मांमपेशी के तन्तुओं की गति कम करते हैं इसलिये हृद्य की शक्ति को भी कम करते हैं। अन्त में हृद्य डाय-स्टली की हालत में स्कड़ने से रह जाता है।

#### च्**क्क**

पुटैश्यिम के मिश्रण ब्रुक्क की भिल्ली पर मृत्रल प्रभाव करते हैं ।

यह मिश्रयः मृत्र द्वारः श्रीघ्र निकल जाते हैं। इसिलिये मृत्र की चारीय बना देते हैं। ऐसे चारीय मृत्र में यूरिक एमिड की मात्रा श्रधिक युनी रह सकती हैं।

श्वास संस्थान फेफड़े से कफ अधिक निकत पड़ना है और तरत हो जाता है मगर ब्रोंकाइटिस के रोगियों में कफ कम होजाना है।

#### मांसपेशी

बेरट्रीन श्रीर वेरियम के मिश्रण से जो एँठन पैदा होजाती है बह पुटैश्यिम से आतीरहती है। इन मिश्रणों का प्रभाव मांस पेशी, मित्रिक श्रीर पृष्ठवंश के तन्तुश्रों को सुस्त कर देदा है।

#### उपयोग

बाह्य----

पोटास का पहले बाह्य प्रयोग बहुत होता था मगर अब नहीं होता। गंज की बीमारी में रोगीस्थान जला दिया करते हैं यदि ऐसा करता पड़ जाये तो होशियारी से करना चाहिये ताकि म्बर्ध स्थान पर फैलकर नुक्रमान न करे । त्वचा पर से चिकनाइ उतारने और शखकिया से पहिल त्वचा को पूरे तौर से शुद्ध करने के लिये लाइकर पे।टेशी की काम में तुने हैं। त्वचा की बीमारी में झिलके की उनारने के लिए उसका हलका घोल काम में लाते हैं। इनघोड़गटोनेल की बीमारी ४० फीसदी का मल्यशन नायून की निकालने के लिये लगाते हैं। ऐसा करते हैं कि शीमार नाल्न पर सल्यशन की खुब लगा देते हैं चन्द सेकन्ड के अन्दर ही वह नाल्न मुलायम होजाता है। फिर उसको आसानी से तराश डालते हैं यह किया बराबर करते हैं यह नाखून पतला होजाता है फिर कैंची के द्वारा आसानी से उताग जा सकता है।

इसके डायल्युट सील्युशन सुन्नताकारक प्रभाव के कारण खाज की कम करते हैं।

#### श्रान्तरिक

इसका आन्तरिक प्रयोग नहीं होता है। नोट—कास्टिक सोडियम के लच्नगा भी कास्टिक पोटाशियम के समान ही हैं।

#### विष लच्चगा--

इससे कभी कहीं विष लच्चा नहीं होते हैं। स्वाद कास्टिक होता है। लेकिन गैस्ट्रो इन्टस्टाइनल की नाली में खराश के लच्चा होजाते हैं अर्थान गले में जलन, वमन होने लगती है। दस्त होते हैं। पेट में शूल होता है। नाड़ी चीया, हदय गिरा हुआ होने लगता है। त्वचा शीतल और चिपचिपी होजाती हैं ओष्ठ, जिह्ना, गला मृज जाता है और सुर्ख व मुलायम होजाते हैं।

# चिकित्सा--

मेदे को धो डार्ले या वमन लाने वाली श्रीपधि

देकर वमन कराई । जैसे-जिंक सल्फेट २० मेन या इपिक्केबाना ३० मे० या कीपर सल्फेट ४ मेन को आधा पाइन्ट नीम गरम जल में मिलाकर या वाइमन इपिकाक १ औं० या राई का २ टेवि-ल स्पूनफुल ई पाइन्ट नीमगर्म जल में।

र्सेधानमक २॥ तो० । पाइन्ट गर्म पानी में।

यदि इनमें कोई भी श्रीपथ न हो तो गर्म जल को बड़ी मात्रा में पिलवार्य श्रीर हलक के श्रन्तर किसी चीज से या उँगली से खुजलाना चाहिये इसके बाद खट्टी वस्तुश्रों का सेवन कराना चाहिए। जैसे सिरका डाइल्यूट किया हुआ लैमन जूम डाइल्यूट सल्यूशन श्राफ साईट्रिक एसि डाइल्यूट एसिटिक एसिड बाद में स्निग्धता कर वाली द्वार्य देनी चाहिय जैसे श्राइल लिनसिड (श्रलमी का नैल)



सिके बहुत से मिश्रण तथ्यार होते हैं।
सि हिंदी हैं।
सि हम यहां केवल उन मिश्रणों के सि हम यहां केवल उन मिश्रणों के सि हिंदी हम यहां बिप लक्षण तथा उनके विकित्सा सम्बन्धि प्रयोगों ही का वर्णन करते हैं।

# मीसे के मिश्रगों के बाह्य प्रयोग

लोशनों या मरहमों की शक्ल में स्तम्भन और सुन्न करने के लिए सीसे के प्रयोग उस एग्जिमा में जिस से रतुबत रिसती है, और कई प्रकार के त्रणों में काम में लाये जाते हैं। श्रागर इन हालतों में सब एसिटेट की ग्लीसरीन को ४ मेन ग्लीसरीन या दूध को मिलाकर इस्तेमाल किया जाये तो विशंष लाभदायक है इंजैक्शन के तौर पर इसके लोशन श्वेत प्रदर, प्रदर-ग्लीट (सृजाक केत्रण) कान बहने में इस्तेमाल होते हैं। लेकिन नेत्र के त्रणा में इस्तेमाल नहीं करना चाहिये क्यों कि कार्नियां के त्रणों में यह नीचे बैठकर उसकी धुम्धला कर दिया करते हैं जो हमेशा के लिये धुंधले हो जाते हैं। स्वाज की बीमारी में इसके सुझ करने की तासीर बहुतकायदा करती है।

यदि हो सके खाज के कारण को ही दूर करना चाहिये जब इस का सेवन करना हो हो तो डाय-ल्यूट् सौल्यूशन का सेवन करें क्यों कि तीब्र मिश्रण से जलन पदा हो जाती है इस लोशन को प्रायः कनट्यू जन (त्वचा के नीचे की धमनी फट जाये परन्तु ऊपर की त्वचा न फटे) में इस्तेमाल करते हैं इसके लिये यह अच्छा प्रयोग हैं:—

लाइकर प्लम्बाई सब एमिटेटस डिन. १ ऋौ० एक्स० ऋोपियम ४ प्रेन जल १ ऋौ०

इसके लोशन में कपड़ा तर करके उस पर रक्षें।

#### श्रान्तरिक-

अन्दर सेवन के लिये केवल एमिटेट आक-लैंड का ही सेवन होता है। नीमातिसार में एस्ट्रि-नर्जेन्ट (स्तम्भक) के तौर पर देते हैं। जैसे-टाई-फाइड फीवर में या रक्तरोधन के लिये गैस्ट्रिक अल्सर (आमाराय के लए) टाईफाइड फीवर,स्यु-बर क्लोसिस में अन्दुम्नी रक्त स्नाव को रोकते के लिये पिछला एसम्बाई ओपियम अधिक लाभदायक होती है। रेकटम (गुददार) से रक्त स्नाव को रोकने के लिये इसकी वर्ता अयोग की जानी है सीसे के मिश्रगों से सख्त कव्ज हो जाता है प्राय: दूसरी ऑपियमें को प्रधानतादी जाती है लेकिन सब एसिटेट आकलैंड का गारगल (कुल्ले) के तौर पर इस्तेमाल होता है या जब मुंह और मेंठ में एस्टिजेन्ट फायदा करना हो तो इसकी ग्रीसरीन स्थानिक तौर पर ज्या से लगा देते हैं।

#### तीत्र विष लच्चण-

जिस प्रकार लैंड के तीव्र मिश्रण बाह्य तौर पर इरिटेन्ट प्रभाव पैदा करते हैं इसी प्रकार यदि उनके कन्सन्टें टिड मल्युशन इत्तेमाल किये जार्बे तो तेज इरिटेन्ट प्रभाव करते हैं लैंड (सोसा) के तीव्र विष लक्षण बाले रोगी कम देखने में आते हैं। अक्सर एसिटेट आफ लैंड से ही विषक्षक लक्षण होते हैं।

मुख़ में जलन मीठा जायका श्रनुभव होता है प्याम लगती है बमन होने लगती है उदर में दर्द होने लगता है श्रायः क़ब्ज होजाती है लेकिन यदि दस्त आये उनके रंगः काली होती है। शरीर शीतल हो जाता है और कोलैप्स (पसीना आकर शरीर का शीतल होजाना) होजाता है । यदि रोगी कुछ देर तक जीवित रहे तो पैरों में एँठन शुम्र होजानी है। सिर में चकर आते हैं। नन्द्रा हो जाती है। फिर बेहीशी और एँठन पैदा होजाती है।

# पोस्ट मार्टम

त्रामाशय श्रीर श्राता से इस्टिन्ट विधनत्रण मालम होते हैं।

### चिकित्सा

वमन कारक द्वाओं का इस्तेमाल करायें और
मेदे की थी डालें सोडियम और मैगनेशियम
सक्केट दे जिससे सक्केट विना युलने बाला बन
जाये। और नीव अतिसार शुरू होजाये यदि
कोलेंप्स उपस्थित हो तो उत्तेजक द्वाओं का सेवन
कराएं और शरीर को उपल्ला पहुंचायें।

#### पुरातन विष लच्च

प्रायः यह उन लोंगों को होता है जो सीसे का काम करते हैं क्योंकि यह खाने से पहले का अपने हाथ नहीं घोते और इसिलये उनकी रोटी के साथ उसके हिस्से अन्दर चले जाते हैं। यह जहर उन आदमियों में प्रायः होता है जो उन कारखानों में काम करते हैं जहां सफ़ेदा तैयार होता है और कई प्रकार से भी इसका बिप चढ़ जाता है अर्थात जब किसी कारण से खाने पीने की वस्तुओं में सीसा जा पड़े खासकर जबकि सीसे के तालाबों या नलकों में मुलायम पानी जमा किया जावे।

#### लचण

सबसे पहले कटक और आंनों में दर्द होता है सीसा वास्तव में अभिशोषित हो जाता है। क्योंकि यह रक्त में दौरा करता है और मल बुक्क द्वारा बाहर निकल जाता है। यह खयाल किया गया है कि यह एल्ब्य्मीनेट की सुरत में जज़क हो जाते 🐧। लेकिन खून में यह एल्डयमीनेट की शक्ल में नहीं रहता क्योंकि यह रक्त के चारीय धर्म से जम जाना है। अभिशोषित होने के बाद यह हिमोग्लोबीन की मात्रा और श्कासुओं की संख्या कम करना है और एनीमियां क्क न्युनता े पेंदा हो जाता है। यह यूरेट्रम को रक्त से प्रथक होने नही देता और उनको वृक्षों के बाहर निकलने से रोकता है। इसलिये इन मनुष्यों में जिन में सीसे का विष हुआ हो प्राय: गाउट (आमबात) की बोमारी अक्सर होती रहती है जब यह दौरा करता हुआ। मस्ड्री में पहुंचता 🕻 उनके एपिथोलि-यम में सीसे का भरा हुआ क्षाज मारच जाता है

श्रीर वहां उस गंधक के साथ मिलता है जो गिजा के बाकी श्रीर दांतों के मैल में उपस्थित होती है इस गंधक के साथ मिलकर सीसे का लैडसल्पेट मिश्रण बनकर ममुड़ों के उपर काली लकीर बन जाती है। इसी सबब से कभी कभी मल द्वार के इधर उधर भी नीली लकीर देखी जातीं है। श्रीर मृत्यु के बाद श्रांतों में भी काला रंग मिलता है।

जब यह वात तन्तुओं में दौरा करता है तो श्रकसर पेरी फरल पेशियों में पुरातन दाह उत्पन्न कर देता है। लेकिन खास तौर पर इन असबों में जो हाथ के जहर में रिस्टडोप एक त्राम लन्गा है किसी अजले या शरीर की सारी पेशियों के बात तन्तुत्रों में प्रदाह होकर फालिज हो सकता है। यह बात याद रखने योग्य है कि सोपाईनेटर लौगस् पट्टा पद्माधात होने से प्रायः बच जाता है बहुत बार श्रजलों के सन्सरी रेशों पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता इसिनये दर्द और कभी सुन्नपना देखने में आता है। लेकिन दर्द अममन जोड़ों के पास होता है स्पाइनल कोडे के एन्टीरियरकारनवा की एटोफी हो जाती है रीड़ की इड़डी के अन्दर का भाग बढ़ जाता है और सीसे से दियाग पर असर होजाता है याने दीवाना होजाता है। और उसमें कमेड़ा आने लगता है आंख की रगों में प्रदाह होता है और रोगी अधा होजाता है।

लेकिन पट्ठों में विना किसी परिवर्तन के नेक्डपोति कम होजाती है प्रायः वृक्कों में पुरानी प्रदाह होती है। इस का कारण मास्ट्रम नर्टी कि यह सीसे के काम्ण होती है या गाउट के सबब से, जो सीसे से होजाता है।

# तृतिया (Copper Sulphat) [ कविराज हपुंज आयुर्वेदाचार्थ ]

कौपर श्रौर सल्पयुरिक एसिड के मिलाने से प्राप्त होता है। इसकी गहरे नीले रंग की तिरखी कलमें होती हैं स्वाद कसैला होता है। यह ३।। भाग पानी में १ भाग हल होजाता है। इसके सल्युशन का रिएकशन निहायत तेज एमिड होता है।

मिलावट--लोहा

#### विरोधि----

एलकली और उनके कार्बानेट के मिश्रण लाइमबाटर धातूज मिश्रग् सिवा सन्फेट के आयो-डाइड मिश्रग

मात्रा—श्राधे मेन से २ मेन नक। त्रिया का रसायनिक विश्लेषण---

ताम्र के लवलों में यह सबसे अधिक महत्व का है। यह बड़े नीले रंग के (कीस्टाल) के रूप में

( प्रष्टु ३७ का जीप )

#### चिकित्मा

इसका इलाज पहला यह कि सीमा शरीर में जाना रोका जावे ।

पोटास आफ आयोडाइड का अन्टक्ती प्रयोग किया जावे यह विश्वास किया जाता है कि सीसा इससे मुत्र के द्वारा बाहर निकल जाता है।

मगर यह सिद्धान्त ठीक नहीं मालूम होता है क्योंकि मूत्र के द्वारा सीसा बहुत कम निकलता है। बहुत सारा भाग शीच के द्वारा निकलता है। यह भी ख़याल किया जाता कि पित्त, स्वेद दुम्ब द्वारा भी बाहर निकलता है।

पाया जाता है। नीलाधोधा का नीला पन जलीय पदार्थ है। आप हमारे इस कथन की परीक्षा नीचे लिखे अनुसार कर सकते हैं:---

नीला थोथा के नील ट्रकड़ों को एक आतशी शीशी में डालकर एक गोल छिट बाले कार्क से उसका मुख बंद कर दीजिये। फिर उस छिद्र बाले कार्क मेंएक वक नली लगाकर, आतशी श्रीशी को लोहे की तीपाई पर रख कर धीरे धीरे स्प्रिट लैंग्य से ताप देना प्रारंभ कीजिये। उस नलिका से वार्य निकले उसे झन्य शीतल आतशी शीशी में एकत्रित कीजिये धीरे धीरे नीला थोथा का नीला वर्ण लोप होने लागेगा और वह श्वेन वर्ण का चर्ण बन जायगा। इसी प्रकार शीतल आतशी शीशी में एकत्रित बाध्य जल बृन्द के रूप में दिम्बाई पड़ेगी। इस किया के बाद तृतिया के श्वेत च्रण् को फिर जल में मिला दीजिये तुरंत खेत चर्म नीत वर्ण का घोल वन जायगा। इस प्रयोग से स्पष्ट होजाता है कि तृतिया की नीलिमा जलीय पदाथ है।

जल के अतिरिक्त तितया में अन्य पदार्थ का भी मिश्रम् मिलता है। रसायनिक विश्लेपसा से तुत्थ. गंधक र्यार ताम्रका योगिक मालम होता है। इसकी जांच भी श्राप नीचे लिखे श्रनसार कर सकते हैं।

तम्त्र के अध्यन्त मह्न चुर्गको संधक के साथ गरम करो । थोड़े ही देर के बाद दोनों पढार्थ मिलकर एक नया रसायनिक योगिक बन जायेंगे आप इस योगिक की परी हा करें आपको मालूम होजायगा कि गंधक और ताम्न के योग से बना हुआ सल्फाइड आफ कीपर (Sulphid of Copper) ताम्न गन्धक अर्थात नीलिमा रहित तृतिया है फिर इस ताम्न गन्धक को जल से मिगो बायु में थोड़ी देर रहने दें तो वह धीरे धीरे कापर आफ सल्फेट (नीला थोथा) के हप में परिणित हो जायगा।

तृतिया के उपर्युक्त रसायनिक विश्लेषण से यह स्पष्ट होजाता हैं कि नीलाथोथा गंधक, ताम्र श्रीर जल का रसायनिक योगिक है। इस प्रकार विश्लेपण करने से हमें तृतिया में स्थित विपैले पदार्थों का भी पूरा २ पता लग गया। श्रव हम कह सकते हैं कि नृतिया में भयंकर विषैला प्रभाव उत्पन्न करने वाला यदि कोई पदार्थ है तो वह ताम्र है। ताम्र के विपों में भ्रांति वमन और विरेचन श्रादि लच्छों की प्रधानता रहती है। श्रम्तर इतना ही है कि तृतिया में गंधक के विष का प्रभाव हिष्टा गोवर होता है, ताम्र में नहीं होता।

#### प्रभाव

नाह्य---

यदि ताम्र के मिश्रण बण पर लगाये जार्वे तो बहुत तेज कास्टिक प्रभाव करते हैं। इनके डाय-ल्यूटेड अर्थात मृदु सल्यूशन सल्केट आफ जिंक के समान एट्रें जैंट (संकोचक) प्रभाव करते हैं मगर इससे जरा ज्यादह तेज होते हैं।

# आन्तरिक-

भोजन की नाली-वड़ी खुराक में अगर सहवेट आफ कापर वा इम्तेमाल करायें या

इसे निहायत तेज शक्त में प्रयोग करें तो इसका प्रभाव तेज कास्टिक इरिटेन्ट (दाहकारी) पड़ता है।

लेकिन इसका विपात्मक प्रभाव कभी श्रवानक ही होता है, श्रीपध की मात्रा में इसकी तासीर बहुत तीत्र काबिडा पड़ती है। ५ से १० प्रेन मात्रा में सल्केट श्राफ कापर का प्रभाव तीत्र वमन कारक है। क्योंकि इस का प्रभाव श्रधिक इस्टेन्ट धर्थात दाहक होता है इसलिये सल्फेट श्राफ जिंक की अपेता कुत शीघ्र प्रभाव पड़ता है परन्तु हानि इसमें यह है कि इसके देने के बाद यदि वमन न बावे तो किसी श्रीर विधि या श्रीपध से वमन करानी पड़ती है क्योंकि यह श्रामाश्य के श्रन्दर कक जाये तो श्रामाशय में तीत्र प्रदाह उत्पन्न कर देता है।

चिरकालिक कायर के मिश्रण धीरे धीरे स्राभिशोषित हो जाते हैं स्रीर फिर यकृत के रास्ते पित्त में मिल कर निकल जाते हैं।

#### उपयोग

वाह्य----

सल्केट आफ कापर अपने द्रश्वकारी प्रभाव से अस के उसरे हुए दानों को कम कर देना है और टेनियाटारसाई की विमारी में पलकों के किनारों पर मला जाता है। नाइट्रेट आफ सिल्वर की अपेता यह हलका होता है इस के लगाने से दुई कम होजना है एक मिश्रस और जिसका नाम लेपिसडीवाईनस (Lepis Divimus) है प्रायः इस प्रकार की बीमारियों में व्यवहत होता है।

# इसका नुस्खा यह है।

सल्फेट आफ कौपर ३ औंस नाइट्रेट आफ पुटाशियम ३ औंस एलम (फिटकरी) ३ औंस कपूर ६० ग्रेन।

पहली तीन वस्तुओं को इकट्टे पिघला लें वाद में काफूर मिलाकर वर्त्तियां बनाने के लिए साचों में ढाल देते हैं।

सल्केट आफ कापर के लोशन २ बोन फी ओंस शक्ति के स्ट्रैन्जन्ट तौर पर इन्हीं अवस्थाओं में इस्तेमाल हो सकते हैं जिनमें सल्केट आफ जिंक के लोशन इस्तेमाल होते हैं परन्तु इस बात का ध्यान रखना चाहिये ये बहुत शक्तिशाली होते हैं इससे जरा ज्यादह तेज ताकत का सल्यशन होमोस्टेटिक तौर पर ही इस्तेमाल होसकना है।

श्रीलिएट श्राफ कापर की लेनोलीन के साथ १० से २० की सदी शक्ति की एक मरहम बनाई जाती है जो दादके लिये उम्दा कीटास नाशक है। श्रान्तिग्क—

कम मात्रा देने पर सल्कंट आफ कापर वीव डायरिया में लाभदायक है प्रायः इसकं गोली की शक्त में देते हैं मगर रेक्टम 'गुदा, में इंजेंक्शन के तौर पर भी इस्तेमाल होसकता है इसका यमन कारक प्रभाव भी बहुत शीच उत्पन्न होता है इस-लिये बच्चों के लिए लंग्जाइटिम, ब्रांकाइटिम में इस्तेमाल कर सकते हैं और नारकोटिक जाति के विशों में जिसमें यमन शीच करने की आवश्य-कता होती है देसकते हैं।

क्योंकि फास्फोरस के ऊपर तांबे की तह चढ़ जाती है फिर फासकोरस का कुछ असर नहीं हो सकता प्राय: ३ बा ४ प्रेन सल्फेट आफ कापर को पानी में इत कर के ४-४ मिनट बाद देते जाते हैं जब तक कि वमन आनी शुरू होजाये, सल्फेट आफ कापर को वमन कराने के विचार से देने से एक ही बार वमन आती है। मगर यह वमन ऐसी होती है सारा आमाशय बिल्कुल रिक्त होजाता है। क्लोरोसिस की बीमारी में सल्फेट आफ कापर बहुत लाभ पहुंचाता है।

#### विषप्रभाव---

कापर (तांबे) के मिश्रगों को एक बड़ी मात्रा में देने से पेट में ती व्रद्र होने लगता है परन्तु पुरातन विपलत्त्रण कहीं ही देखने में आते हैं यदि कापर को थोड़ी मात्रा में सेवन कराया जाये तो बिना किसी खराब असर उत्पन्न होने के इसकी बहुत देर तक सेवन किया जासकता है क्योंकि बहुत से मनुष्य ऐसी हरी शाक भाजियों का सेवन करते हैं जोकि काकी असे से रक्खी रहती हैं और जिनका हरियाला पन, कापर के मिश्रगों के कारण होता है।

उन मनुष्यों को जो तांबे का काम करते हैं आम तौर पर तपेदिक हो जाती है और उनकी यह बिमारी बैंसी ही होती है जैसी कि अन्य मनुष्यों को होसकती है।

जो मनुष्य पीतल का काम करते हैं एनिमगं (रक्त की कमी) की विमारी में फंस सकते हैं। इनके दांनों की सनह पर और जड़ों पर एक सच्छ रंग की लकीर पड़ जानी है, शरीर कमजीर और दुवला हो जाना है। पाचन शक्ति में भी खराबी आजानी है सर में दुई और अन्य भागों में भी दुई होने लगता है। फेफड़े खीर हलक के जुकाम में जिसके साथ कभी कभी नकसीर और इकोनिया भी होता है पसीना अधिक छाता है जिस की रंगत कभी हरी भी होती है इसका कारण तांबा है जो पीतल में मिला हुआ होता है। कभी २ तांबा और पीतल से सीसे की मिलावट के कारण अंत्र शुल होजाता है।

# तृतिया का शरीर पर विषैला प्रभाव:--

इसका चूर्स या घोल आंखों में पड़ जाना है तो प्राणी श्रंधा हो जाता है और कही मुख में चला जाता है तो अत्यन्त प्रदाह और त्रण उत्पन्न करता है इस का लेप शरीर की कोमल त्वचा को नुरंत छील देता है। श्रिधक मात्रा में सेवन करने से अग्न नती से लेकर मलाश्य तक समस्त अंत्रों में प्रदाह उत्पन्न कर उन्हें प्रणों के द्वारा चलनी की तरह बना आंतों में भयंकर पीड़ा और ऐंठन करदेता है। बार बार बीले रंग का बमन तथा विरेचन होता है। शी प्र उपचार न किया जाय तो क्लातिसार उत्पन्न हो कर शाणान्त तक हो जाता है। दाह, ज्वर, बमन श्रान्ति, घवराहट तथा ग्लानि आदि उपद्रव कभी २ एक साथ ही होने लगते हैं। तृतिया के विष से नीले गंग का वमन तथाप्रदाह होना प्रधान लक्षण है। इसके व्रण में भयंकर पीड़ा और जलन होती है।

# तृतिया के विष शांति के उपाय:--

नृतिया तिप के द्वारा यदि आंतों में आग हो जाय तो त्रिफला के क्वाथ में गो घृत मिलाकर पिलाना चाहिय। बाहरी झलमें गो घृत और नवनीत आदि का लेंग लाभप्रद हैं। शरीर में फैले हुए विय को शांत करने के लिये जंबीरी का रस परम हितकारी है। इलायची का शा माशा चूर्ण मिश्री और नव नीत के साथ चटाने से वमन होना तुरंत बंद होता है। मीठा इन्द्रजौ का चूर्ण ३ माशा यो घृत तथा मिश्री के साथ चटाने से विरेचन बंद हो जाता है

वसन तथा विरेचन की प्रारंभिक अवस्था में एक दस न रोकना चाहिये। कुछ वसन और हो जाय तब शामक ओषधि का प्रयोग करना चाहिये।

सुजाक व कुरहा का अच्क इलाज

रजस्वला स्त्री के साथ विषय करने से, गर्म बीजों के इस्तेमाल से अथवा चूने की तपी हुई छत पर गरमी में पंशाव करने से और धूप में अधिक देर तक काम करने से अक्सर यह रोग हो जाता है। जिस्से लिगिन्द्रिय के मुख पर बरम है। जाता है पेशाव में जलन खून, और पीप का आना शुक्त है। जाता है। किर धीरे २ उसमें क्रग्हा पड़ जाता है। हमारा कुच्छ नाश्क इन हुव दर्दनाक हालतों को एक सप्ताह ही में पूर्णत्या आराम करदेता है। बीस, चवक, जलन तो २४ घण्टे में ही जाती रहती है मूल्य की शीशी १।) तीन शीशी एक बार लेने पर ३) डाक ब्यय प्रथक।

बृहत श्रायुर्वेदीय श्रीषध भाएडार चाँदनी चौक, देहली।

# त्र्यायोडीन

( प्रो०-मातादीन 'भार्गव' B. Se; M. B. S. )

**→→→**0%<

यह समुद्री जड़ी वृटियों की भस्म से प्राप्त की जाती है। इसके ऋतिरिक्त आयोडाइड और आयोडीट के मिश्रगों से भी प्राप्त करते हैं।

यह मंसूर किस्म या अठ पहलू कल्मों की शक्ल में होती है। जिनसे विशेष प्रकार की गंध आती है। वर्ग काला होता है मगर अगि दिखाने से इससे बेंगनी रंग की वाष्प निकलती है। पानी के ४००० भाग में १ भाग हल होजाती है, अल्कोहल (६० की सदी) ईथर, क्लोरोकोर्म और आयोडाइड आफ पोटेशांयम या क्लो-राइड आफ सोडियम के अर्क में बहुल ही सरलता से हल होजाती है।

# विराधी

एमोनियां, धातुत्रों के मिश्रमा, पृथ्वी से उत्पन्न होने वाले श्रम्ल वानस्पतिक श्रोधियों के सत्व।

खोद-

श्रायोडाइड श्राफ सायनोजन, कौलाद श्रीर पानी ।

#### मिश्रग

लाइकर अयोडाई फोर्टीम

( Ligr. Jodi-Fortis )

आयोडीन ४ भाग पोटाशियम आयोडाइड ३ भाग, पानी ४ भाग, अलकोहल (६० फी सदी) ३६ भाग।

#### शक्ति--

्रं की सदी आयोडीन, यह मिश्रण ब्रिटिश फार्मोकोपिया १८८४ सन के लिनिमेन्ट के बकाय रक्या गया है।

टिंचर आयोडीन

(Tinctura Iodine)

श्रायोडीन १ भाग श्रायोडाइड श्राकपोटा-शियम १ भाग पानी १ भाग श्रलकोहल (६० फीं सदी) ३७ भाग ।

शक्ति—४० बृत्द में १ प्रेन या २५ की सदी स्रायोडीन ।

मात्रा—२ से ४ वृत्द तक। स्रङ्ग एएटम स्रायोडाई

(Unguentum Io-di)

इसको आइंटमेन्ट आफ आयोडीन भी कहते हैं। आयोडीन १ भाग आयोडाइड आफ पोटाशियम १ भाग ग्लीसरीन ३ भाग चर्बी २० भाग।

शक्ति-- ४ की सदी आयोडीन

#### प्रभाव

बाह्य-

जय बाहरी तौर पर म्बचा के उपर आयोडीन लगाई जाती है नब इसका प्रभाव वैसाही पड़ता है जैसे क्लोरीन का यानी यह भी तेज डिसिन-फैक्टेन्ट और इरिटेन्ट होतीहै डिसिनफैक्टेन्ट की निस्वत इसका इरिटेन्ट प्रभाव अधिक है। आयोडीन के लगाने से त्वचा पर जर्द वर्ण का घड्या हो जाता है जिस के उपर अगर कोई खारी दवाई या दाइपोसल्काइट आफ सोडियम लगाया जाये तो दारा (धट्या) हटजाता है इसके लगाते ही इस स्थान पर उप्णता और दाह (जलन)अनुभव होने लगती है रगें फैल जाती हैं।

जगह मुर्ल होजाती है और किसी कदर शोथ होजाता है और श्वेताणु रोगों से बाहर निकल आते हैं और गृालियन इसी बात पर इसकी बड़ो भारी अभिशोषित तामीर होने का प्रभाव माना जाना है और प्राय: स्वचा के वालाई तबके के नीचे सीरम जमा होकर आबला की शक्ल पैदा करना है। आडीन के मिश्रण ऐसी तीव शक्ति बाले कभी इस्तेमाल नहीं होने हैं। क जिससे अधिक इरिटेन्ट प्रभाव उत्पन्न करें।

#### बाह्य-

इसके लगाने मात्रा से उस स्थान के नीचे के भागों पर रेकलेक्स के नीर पर प्रभाव पड़ता है यानी बहां की गों फैल जाती हैं यह आयोडीन को कोनट्डिंग्टेन्ट प्रभाव है, यदि इसके मिश्रण बहुत तंत्र लगाये जायें तो उनसे फफोले पड़जाते हैं या पश्चुवल की किस्म के दाने निकल कर गहरे बण होजाते हैं त्वचा के ऊपर काक्यू-टिकल इनके लगाने से मुख्य पड़ जाता है। इस लिये जब कभी इसकी लगाया जाता है तो बहां की त्वचा पर से छिलके उत्तरने लगते हैं आयोडीन त्वचा के अन्दर प्रवेश करती है। रक्त के सीरम के जारीय माहों से सोडियम श्रायोडाइड तथा सोडियम श्रायोडीट बनजाते हैं।यह जब किसी एसिड के साथ मिलते हैं तब इनमें दोहरी तबदीली होती हैं इस लिये श्रामाशय श्रीर बुक्क में फ़ोरीश्रयोडीन बन जाती है।

#### अन्तरिक प्रभाव--

जब आयोडीन अन्दर सेवन के लिये दिया जाये तो यह किसी आयोडाइड के मिश्रण में परिवर्तित हो जाता है बहुत थोड़ी मन्त्रा में टिंचर आफ आयोडीन के प्रयोग से वमन का आना बन्द हो जाता है। इसकी वाष्प वायुपथ में स्तराश उत्पन्न कर देती है।

#### उपयोग--

एन्टिसेपटिक लाभ के लिए आयोडीन का सेवन क्लोगीन से बहुत कम होता है क्योंकि क्लोगीन बहुत लाभप्रद पड़ती है मगर इरिटेन्ट और कोन्ट्रे रीटेन्ट कायदे के लिये आयोडीन के मिश्रण बनिस्वत अयोडायड लिनिमेन्ट के जो कि स्न १८८४ के बिटिश कार्मी कोपिया में आकीशियल था अधिक सेवन होते हैं।

इसके मरहम टिंचर, और लाइकर बहुत हल-के होते हैं। जोड़ों की तंज सृजन, प्लुरसी पेरी पस्टाईटिम बहुत मी ऐसी ही हालतों में कोन्ट्रे-रीटन्ट प्रभाव के लिये आयोडीन के मिश्रण इस्तेमाल होते हैं। आयोडीन के मृदु मिश्रण बढ़े हुए लम्फोटिक रादूदों के ऊपर पेन्ट किये जाते हैं विशेषकर जब इसके कारण की नष्ट न कर सकते हों।

त्रायोडीन का एक सफेद टिंचर भी होता है जिसमें त्रायोडीन को रेक्टिफाइड स्प्रिट में हल कर के इस में स्ट्रॉग सल्यूशन आफ एमोनियां डालते हैं इसमें आयोडीन का रंग उड़ जाता है। इसके ४० भाग में करीब १ भाग आयोडीन होता है इस मिश्रण का लाभ यह होता है कि त्वचापर दाग नहीं पड़ना है परन्तु इस मिश्रण के अन्दर आयोडीन नहीं के बराबर होती है क्योंक आयोडीन नहीं के बराबर होती है क्योंक आयोडीन आयोडाइड, आयोडीट आफ एमोनियम में पिरवर्तित हो जाती है, इस लिये यह मिश्रण आयोडीन के अन्य मिश्रणों के मुकाबिल वहत मृद होना है।

श्रगर इस से कुछ इिटन्ट प्रभाव पड़ता भी है वह एमोनियां की वजह से ही जो इसमें श्रधिक काम श्राता है। इिटन्ट प्रभाव के लिय श्रायोडीन के श्राफिशल टिचर को हाइड मील या किसी श्रीर सिस्ट में इंजैक्शन द्वारा प्रवेश किया जाता हूं श्रीर जोड़ों व फोड़ों के अन्दर पीव खूत में शामिल होजाने के बाद में इसे प्रवेश किया जाता है सगर ऐसी हालत में बड़ी सावधानी की श्रावश्यकता होती है ताकि इससे जो प्रदाह उत्पन्त हो वह कहीं उम्र रूप धारण न कर ले, श्राज कल इस प्रकार की चिकित्सा बहुत कम की जाती है क्योंकि उत्युक्त रोगों में इत स्थानों को ऐन्टीसेप्टिय तीर पर साफ रहें जायें तो यह स्थान बहुत शीघ ठीक हो जाते हैं।

दाद की बीमारी में कृमिनाशक लाम के लिये इसका टिचर या यह सहन न हो सके तो लाइकर प्राय: सेवन किया जाता है। इसी रोग में कास्टर्ज पेस्ट नामक मरहम इस्तेमाल कीजाती है।

#### त्रयोग--

आयो**डींन १२० ग्र**े० **लायट** अध्यत आफ तुह-

टार १ श्रीं० इसको मिलाकर खूब हल करें एक श्रक श्रायोडीन का जो प्राय: हाइड्रोसील में पिचकारी के द्वरा प्रवेश किया जाता है Morton's Fluid कहलाता है

# नुस्का यह है-

अयोडीन १० ग्रेन आयोडाइड आक पोटा-शियम २० ग्रेन ग्लीसरीन १ औस

#### त्रान्तरीय प्रयोग-

श्रायोडीन की बादा कभी ने फेफड़ों की बीमारी में सुंघाई जाती है मगर इससे लाभ के बजाय हानि ही होती है।

१-२ बुन्द की मात्रा में टिचर आफ आवोडीन आधा औंस पानी में हल करके आधे २ घंट के बाद इम्पिरकल तौर पर बमन रोकने के लिये दिया जाता है कभी इससे लाभ भी होता है। अशिचित लोगों में समुद्र की जड़ी ब्रिटियों के मिश्रग् स्थूलता को नष्ट करने के लिये अधिक ल।भदायक समझे जाते हैं . यदि इन में कोई ऐसा प्रभाव है तो इस कारण से है कि इन में जो अयोडीन क्लोरीन औरबोमीन होती है इतनी बद्हञ्जमी पेदा कर देती है कि जिससे हाजमा विगड़ जाता है और भोजन का पचना रुक जाता है। एक्सट्रेक्ट आफ फुक्स (Extract of Fucus ) विमित्रयुलेस (\asiculasus ) जिसको Bledderurack या सीरेक (Seawrack) भी कहते हैं, में इस्तेमालमें आता है, श्रीर अशिवित इनको अन्य कार्यों में भी ठयबहार करते हैं।

# पारद

( भे० धर्मदन जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल कांगड़ी )

<del>----(</del>(%):(%)----

रस कपूर:—नाम:—Calomel, रासायनिक Mercurous Chloride पारदस हरिद् ।

निर्माण विधि:— भर्जित कासीस,सैन्धव, पारद्द भर्जित स्कटिका प्रत्येक ४ तो० अच्छी तरह मर्दन कर हमक्रयन्त्र में डाल मन्दाग्नि से १२ से २४ चंदे तक पकाएं अथवा इनको बालुकायंत्र में स्कली कांच कुष्पी को । भर दें और जलीय वाष्प्र निकल जाने पर स्कटिका से मुख बन्द करदें और उपा लगा हुआ रस ले लें। नवीन विधि के अनुसार पारे को एक प्याले में सान्द्र गन्धकारल से मिला गरम कर मुखा पार्श्वक गन्धित बनाएं, किर उसे ग्यान में थोंड़े से पारद में मिला मर्दन करें तो

#### श्रायोडीन

विष प्रभाव-

यदि यह प्योर अवस्था में धोड़ी सी भी खाली जाये तो एक दम गले में आग लगजाती है मुंह में छाले पड़जाते हैं बीनाई धुंधली हो जाती है दिल घड़बने लगता है, हाथ पांच कांपने लगते हैं और पित्त की बमन होने लगती हैं।

चिकित्सा-

स्टमक पम्प से मेदे को घो डार्ले, और पानी में आटा घोल कर खुब पिलार्चे तथा एनीमा द्वारा आंतों को साफ कर डार्ले। यह पारदस गन्धित बन जाता है। इसमें लखण मिला उर्ध्वपातनयंत्र में हालकर पकाएं तो उपर की हिण्डिका में रसकपूर के स्कटिक मिलते हैं। उपर की हिण्डिका में लगे स्कटिकों को गरम जल में थी, सुखाकर लेना चाहिये, जिससे यदि इसमें दाहक रसकपूर भी बन गया हो तो वह जल में घुल जाए।

परी ज्ञा-स्स कर्पूर की परी ज्ञा करने के लिख उसे चाकू या लोहें की फलक पर रख, उपर मद्य सार की विन्दु डाल दें तो लोहें का बह प्रदेश का जा नहीं होता, किन्तु यदि थोड़े से भी दाहक रस कर्पूर का मिश्रण हो तो वह काला हो जाना है।

रस कर्पूर भारी रवे । चूर्ण के रूप में होता है जल, मदासार और ईथर में नहीं चुलता ।

मात्रा-- १ से ४ यव तक।

पसकर्प्र के याग ---

रसकपूरादि वटी--

कपूरि, चन्दन, कुङकुम, मरिच समान भाग ते, गोलियां बनाएं।

मात्रा ४ से १० यव तक। रोग—फिरङ्गा

रसकपूर प्रलेप ---

२४ गुना मधूचिछ्छ की मलहम या शतधौत घृत में मिलाकर बनाएं। रोग-फिरङ्ग वर्ण। इसमें रसकर्पर के समान मृहारशृंग और दो गुना या तीन गुना खदिरसार भी मिला सकते हैं।

# रसकपूर द्राव--

रसकपूर १, ग्लीसरीन = सुधाजल १६० भाग तक मिलाकर बनाएं ।

# प्रभाव तथा उपयोग----

रसकपूर पित्तरेचक हैं, शरीर में विद्यमान विषों को निकालने के लिए उत्तम श्रीपथ हैं। फिरक्न रोग के लिए विशेषतः घातक हैं। फिरक्न जन्य बरों को इसके द्राव से धोकर उन पर इसी की मलहम लगाई जाती है। शरीर से पित्त को निकालने के लिए रात्रि को रस कपूर की एक मात्रा दें र प्रातः तिरुत्त चुर्ण ४ माशे शरवत के साथ या एक दो हर्गतकी का मदन कर बना हुआ शीत कपाय पिला दिया दिया जाता है। आंत्रज्वर तथा विश्वित्वता की आर्रास्थक अवस्थाओं में कुछ रसकपूर की छोटी छोटी मात्राओं के दे देने से रोगका देग हलका होजाता है। फिरक्न रोग में इसको थोड़ी थोड़ी मात्रा में कुछ दिन तक देना चाहिए।

# दाहक रसकप्रीर----

Corresion sublimate. Mercuric Chloride । पारदिक हरिद ) । दालचिकना (हिन्दी)—

# निर्माण विधि---

पारद को है गुगा गंधकारत में डालकर अग्नि पर रख द्रव भाग उड़ादें। इससे पारदिक गंधित वन जाता है। इसमें सैन्धव मिला उर्ध्वपातन या बालुकायंत्र में ६ घंटे अग्नि दें उत्तर लगे हुए स्फटिक ले लें। लबए के साथ थोड़ा मांगल का काला छोषिद् ( Black oxide of Manganese) भी मिला दिया जाता है। इसके मिलाने से दाहक रसकपूर ही बनता है रसकपूर का मिअए नहीं होता है। यह भारी रवेत स्फटिकों के रूप में होता है। यह तीज़ विष है। मात्रा — १ से १ चावल तक।

# दाहक रस कर्प्र के प्रयोग:--

(१) दाहक रस कर्प्र चृर्या--४० भाग रुडि में १ भाग दाहक रसकर्प्र मिलाकर बनाएं मात्रा--१ से ३ यब नक।

रोग—श्वतिसार, विशृचिका, प्रवाहिका तथा फिरक्का

मःत्रा--- सं १ हाम ।

(३) दाहक रसकर्प् रादि प्रलेप --दाहक रसकर्प्र, कर्प्र, मुद्रांसक्क प्रत्येक १ भाग श्वेतस्वदिरसार १२ भाग और मध्किष्ठष्ट प्रत्येष या शत धीत घृत =0 भाग मिलाकर प्रत्येप बनाएं।

#### रोग

पामा श्रीर स्फोट ब्रह्म :

( ४ ) दाहक रसकर्पू र द्राव--१००० से १०००० गुने जल में मिलाकर बनाएं।

# प्रभाव तथा उपयोग

यह बहिः तथा अन्तः प्रयोग में जीवासुहर 💈

शलयकर्म में हाथ धोने, शलयकर्म योग्य स्थान धोने, धारबीय शस्त्रों के अतिरिक्त अन्य उपकरणों के धोने, रेंगी के जीवाखुयुक्त वस्त्रों, जीवाखुयुक्त गृहों को धोने के लिये १००० भाग जल में १ की शक्ति का द्राव प्रयुक्त होता है। फिरङ्ग अण धोने के लिए भी यही द्राव काम आता है। नेत्र, योनि-मार्ग, गर्भाशय तथा साधारण अणों को धोने के लिए भी ४००० से १०००० तक उल में १ की शक्ति का द्राव काम आता है। आन्त्रज्वर, प्रवाहिका, आतसार मंगदणी में इसका उपर्युक्त जल वा चूर्ण अन्य अन्य औषधियों के साथ मिलाकर दिया जाता है।

#### रसिस्दर ( Red Mercuric sulphide )

पारद १ भाग तथा गंधक २ भाग को नीव के स्वरम, कुशारी स्वरस, बटजटा कवाय, कर्पासी पुष्य स्वरस में से किसी एक से तीन चार दिन मर्जन कर सुन्वा बालुकायंत्र की कूपी में उसके ; भाग में डाल २ से ४ दिन तक पाक किया जाता है। इसमें गंथक दिग्ण, चतुर्ण या परगुण भी डाली जाती है और पाक में उतना हो अधिक समय लगता है। जब तक गंधक का पीला सा भूम निकलता रहे लोहे की पतली सी शलाका को शीशी की प्रीवा में कभी कभी फरेत रहें। जब पीला धूम्र निकलना बन्द होजाय और शलाका पर भी गंबक का पीजापन न साल्वम हो तब शलाका डालना बन्द करने श्रीर खड़िया का डाट दे दें। कुछ काल में शीशो का प्रीवा स्वयमेव भी बन्द होजाती है। यह भारी लाल स्फटिकाकार होता है। जल में नहीं घुलता। मात्रा-१ से ४ में न तक। १ वर्ष के बालक के लिये ।, २ वर्ष के वालक के लिखे । चावल । इस रस सिन्दूर में २ भाग गंधक मिला पाक करें तो वह चतुर्गुण चौर फिर उसमें द्विगुण गंधक डाल पाक करें तो वह पढगुण बलिजारित रससिंदूर कहाता है।

#### त्रभाव तथा उपयोग

यह बल्य द्रव्य शरीर के सभी श्रवयदों को बल देता है। योगवाही होने के कारण जिम किसी श्रीषध के साथ मिलाकर दिया जाता है उसकी शक्ति को बढ़ा देता है। इसिलए तय रोग तथा युद्धावस्था की निर्वलता में स्वर्णभस्म तथा अभक-भस्म के साथ तथा अन्यान्य रोगों में श्रीषध के श्रव्यान से दिया जाता है।

# हिंगुल

नाम—Cinnabar | English | Mercuric sulphide यह स्थाभाविक तौर पर प्रकृति में मिनता है, अथवा रस गंधक की कडजली को बालुकायंत्र में रखी कांच कुप्पी में डाल रससिंदूर की विधि से बनाया जाता है स्वभावतः मिलने वाले हिंगुल को निंबुकादि अञ्लब्धी, आईक स्वध्स या शुष्ठीकषाय किसी से ७ दिन भावना दे जल से धी सुखा लिया जाता है।

मात्रा-१ से ४ प्रेन।

# हिंगुल के प्रयोग

(१) पक हिंगुल—हिंगुल को कई श्रीपिधयों के रस में पश्चिया जाता या उनके करक में रख़ लघुपुट दिया जाता है। उदाहरणतया ४ भाग धत्तर स्वरस में १ भाग हिंगुल को कड़ाही में तब तक पकाया जाता है जब तक सारा रस हिंगुल में विलीन नहीं होजाता। कारस्कर करक या विजया (भाग) स्वरस में भी पकाया जाता है। फिर इसकी उच्छाता कम करने के लिए इसे थोड़े घृत में भी पकाया जाता है। १० गुणा धत्रा रस और विजया के मिश्रित कल्क में रख पुट में डाल कपड़ मिट्टी कर हलका सा पुट भी दिया जा सकता है। पक्कहिंगुल उत्तम वातरोगहर निर्वेत्तताहर, क्लीव-रोगहर और अतिसारहर है।

हिंगुल से बनने वाले प्रसिद्ध प्रयोग

हिंगुलेश्वर, सिन्निपात भैरव, विपूची विध्वन्सक रस, दुग्धवटी ।

(इनके प्रयोग आयुर्वेदिक पुस्तकों में देखिये)

(१) पारद सोमलयोग रसकप्र, दाहक रस कप्र, हिंगुल और सोमल प्रत्येक १ भाग की ब्रांडी से कुझ दिन मर्दन कर १०। १२ घंटे तक जर्ध्वपातन यंत्र वा इड़ पुटयंत्र में मन्दान्नि देकर उड़ाएं।

मात्रा—ः सं । यत्र तक ।

रोग-निर्वलता, श्वास ज्वर, श्वास रोग श्रीर फिरङ्ग ।

(२)हिंगुलादि प्रलेप—हिंगुल १, मुद्रारश्रंग, सिन्दूर, स्फटिकी प्रत्येक ', कर्पूर /, मध्चिछ्रष्ट प्रलेप १२ भाग मिलाकर बनाएं।

रोग-पामा, स्कोट और बगा।

(१) हिंगुलादिधृम—हिगुल, श्रकंमृल, माया-फल समान भाग मिला १२ पहर कोयलों पर रख धूम दें।

रोग-क्रिड्ड।

प्रमात तथा उपयोग भांत्रविदाहहर होने के कारण बहुणी अति- सार आदि रोगों तथा बल्य होने के कारण उर्ध्वव अनेक रोगों में इसका उपयोग होता है। हिंगुल रसकपूर, सोमल, शोरक, नवसार मुर्दारशृंग गंधक १।१ भाग, नारियल के कठोरभागके खरड ४ भाग मिला डेकी यंत्र में तेल निकाल लिया जाता है इसे लाहौरसोर [लाहौरीचत ] पर कुछ दिन लगाने से लाभदायक कहा जाता है। मकरध्वज के प्रयोग—

चन्द्रोद्य रस-मकरध्यज, भीमसेनी कंपूर १-१ तोला मरिच, जातिफल, लवंग, कस्तूरी

प्रत्येक 🕆 तोला मर्दन कर गोलियां बनावे।

मात्रा⊸२ से = रत्ती तक।

( इन गोलियों में मदरध्यज से प्राप्त हुई स्वर्ण भरम भी 👍 भाग मिला सकते हैं )

(२) स्वल्प चन्द्रोद्य रम्—रस सिंदूर ४, जातीफल, लवंग, कपूर, मिरच प्रत्येक १, स्वर्श भरम, कस्तुरी प्रत्येक ८ भाग मिला मर्दन कर गोलियां बनाएं ! मात्रा—२ से = यव ।

प्रभाव और उपयोग—मकरध्यज, त्रिदे।पहर और बल्य द्रव्य है। सर्वांग या किसी आंग की निर्वलता के लिये तील रोगों में हदय की निर्वलता और बालकों एवं बृद्धों के रोगों की निर्वलता को हटान के लिए शहद के साथ चटाया जाता है। सथ प्रकार की (चरस्थाई निबलता के लिए कुछ काल तक इसका उपयोग करना चाहिए।

# रम पर्पटी का उपयोग

इस पर्पटी का उपयोग उपद्रवोंसे युक्त प्रहिशी रोग के लिए विशेषतः किया जाता है। प्रातःकाल मधु के साथ इसकी १ मात्रा दीजाती है जो घीरे घीरे २० यब तक बढ़ाई जाती श्रीग फिर इसी प्रकार धीरे धीरे घटाई जाती है। सेवन काल में पानी मिला दुग्ध और तक ही देना चाहिए। अम्लएवं उच्चा भोजन नहीं देना चाहिए। दूधमें थोड़ी मिश्री डाल सकते हैं। कुटज भस्म,शंख व कुटजके अन्य योग लशुनादि बटी आदि प्रह्मीहर योग पर्पटी के सेवनकाल में दे सकते हैं।

#### रस्रकज्जली

पारद् में समान या द्विगुरा गंधक मिलाकर अन्द्री प्रकार मईन किया जाता है।

मात्रा १ से ४ यव। यह त्रामाशय और आंतों के लिये जीवागुहर है। इन में किसी प्रकार का बिदाह हो तो बसे हटाती है। अजीरो, आमातिसार आदि उपद्रवों के लिए विशेष रूप से हितकर है। रससिंदूर आदि के समान यह उत्तम योग वाही है। अतः आयुर्वेद में प्रायः औषधियां रसकज्जली के साथ मिलाकर दी जाती हैं। रसकज्जली, रसमिंदूर हिंगुल आदि के साथ थोड़ी मात्रा में भी औषध दी जाए तो वह कई गुणा लाभ दिखाती हैं, इस कारण प्रायः रसीषधियां पारद के साथ बनाई जाती हैं।

# पारदादि प्रलेप

पारद, गंधक, सिन्दूर, राज, कम्पिह, मुद्दार-शृंग, खदिरसार, तुत्थ समान भाग मिला ४ गुगा घृत में मिलाकर बनाएं। रोग --त्रण एवं दुष्ट त्रण ।

# रसोत्तमादि चूर्ण तथा प्रलेप

रस, गन्धक, सिंदूर, श्वेत लारक, कृष्ण जीरक, मरिच, दोनों हरिद्रा, प्रत्येक १, मनः शिला, कपूर प्रत्येक आधा भाग मिला चूर्ण करें, ६ गुना तेल मोम या मधूच्छिष्ट भी मलहम में मिला-कर लगाएँ। रोग—कर्ण्डु आदि त्वक् रोग।

# कज्जली करिपल्ल आदि प्रलेप-

कउजली २, कम्पिह ८, मृहारशृंग २, तुत्थ भाग मिला ६ गुने मधूच्छिष्ट प्रलेप में मिला मलहम बनाएँ। रोग—कंडू आदि त्वग्रोग।

# पारद के प्रयोग

(१) भैरव रस-

पारद १००, स्वाग्ड ३०० थव को लोहे के खरल में निम्बरंड से मर्न कर श्वेत स्वदिर-सार चुर् १०० यव मिला फिर झच्छी तरह मईन कर ४ से १० यव की गोलिया बनाएँ। प्रथम मात्रा तीन दिन तीन तीन गोली फिर प्रति दिन एक गोली कुल २० गोलियां दें। रोग—फिरंग।

पध्य-पृत, स्तांड चावल । चपध्य-उद्गाद्रस्य ।

(२) रस गुग्गुल-रस १००, स्नांड ३०० और गुग्गुल ४०० यव मिला घृत में मर्दन कर ४ से = यव की गोलियां बनाएं।

मात्रा—तीन दिन तीन तीन, फिर एक-एक कुल बीस गोलियां। रोग-फिरंग

(३) रस शेखर-पारद ४, श्राहिफेन २४ यव, मर्दन कर फिर हिंगुल ४, जातिफल, जावित्री, पारसीक यवानिका [ श्राजवायन ] श्रकारकरभ प्रत्येक ६४, श्वेत खदिरसार १२८ यव डाल तुलसी स्वरस से मर्दन करे।

मात्रा-२ से १० यव । रोग फिरङ्ग ।

(४) सुधारस कज्जली—पारद १, सुधाच्यौ २ भाग मिलाकर मर्दन करें।

मात्रा-१ वर्ष के बालक के लिये ; से 🖟 यव । रोग-भातकों का अतिसार ।

#### (४) पारद प्रलेप-

पारद ६, मधुच्छिष्ठ प्रतेप १३, गृहध्म १ भाग मईन कर बनाएँ।

रोग--फिरंगव्रमा, फिरंग ग्रंथि।

# (६) पारद कपूरादि प्रलेप-

उपरोक्त पारद प्रलंप १०, मधुच्छिष्ट ६, कर्पूर ३, जैतून का तेल ६ आग मिलाकर बनाएं। पहले वर्पुर को जैतून के तेल में मिला लें।

रोग-सन्धिशोथ, प्रन्थशोथ, अर्बुद ।

# (७) पारद कपू रादि लेव-

पारद प्रलेप ४, जैतून का तेल ६॥, श्रमोनियां जल ४, कपूर १॥ भाग लेकर कपूर को जैतून के तेल में मिला पारद प्रलेप को श्रमोनियाजल से मईन कर फिर दोनों को मिला दें।

रोग-सन्धिशोथ, प्रन्थिशोध, अवु ता।

# (**८) पारदादिधृम**ा

पारद, हरताल, मृदार शृंग, तुत्थ प्रत्येक १॥ स्कटिक, यवचार, टंकण, श्रकं मृल त्वक, लवण प्रत्येक १ भाग, हिंगुल—१॥ भाग, मिलाकर चूणे करे। १४-२० यव को कोयलां पर रस्वकर धुश्चां दें श्रांख श्रोर मुखको धुश्चां से बचाएं।

#### (ह) पारद गुटिका

पारद की गोलियां अनेक विधियों से बनाई जाती हैं जिनमें से एक दो ये हैं—

१ ती० पारद छोटी कदाई में डाल तुत्थ और सैंधव १-१ ती० ऊपर डाल दें, प्याले से डक दें। प्याले, के ऊपर के भाग में पानी डाल दें। प्याला धीरे उठा लेने से पानी उपरोक्त द्रव्यों से मिल जाएगा इसे अग्नि पर रखें। जब पानी थोड़ा शंष रह जाए तो कहाई उतार लें। पारद की गोली सी बना उसे अनेक बार पानी से अच्छी तरह धोएं अथवा १० तो० पारद एक मिट्टी के पात्र में ४ सेर धत्तूर रस में पका आध सेर शंव रह जाने पर जतनत्रित २॥ तो० डाल आध पाव शंव रहने पर पारा लेलें। इसे निम्यु स्वरस में कई बार धो साफ कर व पड़े में छान लें। कपड़े के ऊपर रहे पारे की गोलियां बनाएं। इसे थोड़ी देर तेल में पकाने से ये हड़ हो जाती हैं।

पारद की रजत पत्रों के साथ रगड़ कर गोली बना थोड़ी देर तेल में पका है ते हैं। इनके मुख में रख़ने अथवा इनसे पकाया हुआ दूध पीने से ये बल्य हैं।

#### (१०) पारद भस्म

काकोदुम्बर के दूध से ४ तो० हिंगु को भावनाएं दे देकर दो सम्पुट बनाएँ। १ तो० पारद को काकोदुम्बर के दूध से कई बार मर्दन कर इसे सम्पुट में रख सन्धिबन्धन कर दें। इस सम्पुट को एक बड़े मिट्टी के सम्पुट में रख मिट्टी के सम्पुट में रख मिट्टी के सम्पुट के उपर खटिका लबए तथा लोह किट्ट को महिषी के दूध में गूंध कर लेप कर दें। निर्वान प्रदेश में १ सेर उपलों की निर्ध् म अग्न में इस सम्पुट को रम्ब दें। स्वांग शीत होने पर पुट को खोल पारद की भरम लें। इसे फिर हिंगु की मुणा में रखकर इसी प्रकार पुट दें।

मात्रा—∮ से ¦ या तक। भिन्न २ ऋनुपानी से सभी रोगों में इसका प्रयोग होता है।

# [१] शिगरफ

शिंगरफ रासायनिक नाम पाग्द (Oxide of mercury) यह दो प्रकार का होता है। लाल

और पीला।

# निर्माग विधि

लाल शिंगरफ बनाने के लिए पारद नित्रत को पृथक प्रथवा थोड़े से पारद के साथ मिलाकर गर्म किया जाये तो लाल स्फटिक से बन जाते हैं। यदि पारद को थोड़ी देर ३४ डिग्री शतांश तक गरम किया जाए तो भी लाल शिंगरफ के स्फटिक बन जाते हैं।

पीला शिगरफ बनाने के लिए दाहक रसकपूर के द्राव में कुछ ज्ञार जैसे पोटाशियम, सोडियम, खमोनियम आदि के उद्रित डाल दिए जाएँ तो पीलाशिंगरफ नीचे बैठ जाता है।

#### योग-पारद पात प्रलेप

पीले शिंगरफ को ४० गुना वृत या वैसलीन आदि में मिलाकर वनाएं।

रोग-नेत्रवण, नेत्रकण्डू ।

#### पारद रक्त प्रलेप

१० गुना धृत मक्खन झादि में बनाएं। रोग-त्वक्रोग, फिरङ्गवण। पारद नैलिद (Iodide of mercury)

# निर्माण

इसके बनाने के लिए दो वस्तुओं की आवश्य-कता है एक दाहक रस हपूर और दूसरा पोटा-शियम नैलिद। दाहक रस कपूर बनाने के लिए ऊपर लिखा जाचुका है। पोटाशियम नैलिद बनाने की विधि निम्न है:—

कास्टिक पोटास को गरम पानी में घोल आयोडीन डालें, घोल को मुखा थोड़ा सा पिसा हुआ कोयता मिलाएं और गरम करें, ठएडा होने पर गरम पानी डाल कर छान लें। कोयला उपर रह जायगा नीचे आए द्रव को गाढ़। कर एकान्त में रख दें स्कटिक नीचे बैठ जायेंगे इस में फिर कोयला मिलाने से सम्पूर्णतः प्राप्त हुए पोटाशियम नैलिद के घोल में दाहक रसकपूर मिला गरम करें तो पोरद नैलिदका लाल प्रचेप नीचे बैठ जाता है।

मात्रा—है से प्रश्न यव तक।

योग पारट नैलिट चूर्ण—

६४ गुनी खाएड में मिलाकर बनाएं।

मात्रा—१ से ४ बेन।

रोग—फिरंग रोग, प्रन्थिशोध।

प्रलेप— २४ गुना साधारए मरहम में मिलाकर बनाएं।

रोग--गलगण्ड और फिरंग बंधि।

#### पारद के प्रभाव

पारद को जिस द्रव्य के साथ मूर्च्छन मर्दन आदि द्वारा मिला दिया जाया है उसके गुगों को तीव्र कर देता है। स्वयं शरीर के अवयवों में फैल जाता है, और अपने सहयोगी द्रव्य के प्रभाव को दिखाता है, अतः आयुर्वेद में प्रायः पारद के साथ या पारद के किसी अनुपान से औपिधयां दी जाती हैं। पारद शरीर के सब अवयवों की निर्वलताओं में बल्य होने के कारण दिया जाता है। वह इसलिए बल्य है कि इसके देने से रक्त में रक्तायुओं की संख्या और उनका रंजक द्रव्य बढ़ जाता है। महासोतस पर भी इसका विशेष प्रभाव होता है। पारद के योग आंतोंमें होने वाले विदाह को हटाते हैं, इसलए,रसपर्पटी,हिंल,ग

सुधारस कउन्नली आदि महणीरोग हर और आति-सार हर हैं। रसकपूर विदाह हर होने के आति-रिक्त वृक्क से पित्त को निकलाना और रेचक है। किरक्क रोग की प्रथम और दितियावस्था पर पारद का विशेष प्रभाव होता है। इस रोग के विष के लिए यह घातक है।

बाह्य प्रयोग करने में पारद के योग जैसे दाहक रसकपूर, रसकज्जली, शिंगरक इत्यादि जोनाणुहर हैं। दाहक कपूर के २४ हजार में १ की शक्ति के द्राव में सभी साधारण जीनाणु नष्ट हो जाते हैं, नेत्र रोग के जीनाणु भी रसकपूर शिंगरक हिंगुल आदि की मलहमों के लगाने से सर जाते हैं। पारद के प्रलेप तथा लेप लगाने में स्थानिक शोधहर हैं। इसके लगाने से या मलने से सन्धियों आदि में एकत्र हुआ। श्लेष्म द्रव्य विलीन होजाता है।

पारद, मल मूत्र और लार द्वारा शरीर से बाहर निकलता है, और निकलता हुआ इन लावों को बढ़ा देता है, अत: कभी अधिक मात्रा में स्वाया जाए तो मुख का स्वाद कपैला, दांत मांस और तालु पक जाते, और दन्त हिल जाते हैं, और वृक्क भी रुग्ए हो जाते हैं। पारद शरीर के अन्दर हरएक अंग में फैलकर मंचित हो जाता है विज्ञ-पत: यक्कत और अस्थियों के सिंहद्र भाग में इकट्ठा हो जाता है।

#### उपयोग -

दाहक रसकपूर का द्राव शहय कर्म में शोधन के लिए अधिक काम में आना है। कराडू शोध, साब आदि से युक्त त्वक् रोगों में रसोत्त-मादि हिंगुलादि पारद के प्रलेप लगाए जाते हैं। फिरंग जन्य झणों के लिए पारद के प्रलेप बहुत अधिक प्रयुक्त होते हैं, फिरंग जन्य नेत्र झणों में रस कपूर हिंगुल, शिंगरफ, आदि के प्रलेप लगाए जाते हैं, मुख में यदि फिरंग जन्य झण हो तो बला स्वरम डालकर तब तक मर्दन किया जाता है जब तक सारा पारा विलीन न हो जाए। २० से ६० यव की मात्रा में किसी पारद प्रलेप को कल या बंदण की त्वचा पर मर्दन किया जाता है। श्रारीर के सिझ सिझ अंगों की बातिक निबंलताओं में रस सिंदूर, मकरध्वज को थोड़ी स्वर्णभस्म के साथ मिनाकर दिया जाता है।

#### पध्यापध्य

पारद के सेवन काल में गोधूम, यव, चावल द्ध, घृत, मूंग, ऋरहर, म्बांड, सैंधव, जीरक. हिंगु, ऋार्ट्रक तथा मधुर फल पण्य हैं।

#### **अपध्य**

तीदग्, उष्ण, अस्तरस्य, गृहगुग्, अजीर्था कारक भोजन नहीं देने चाहिये। इसलिए तल, खड़ी, दही, मांम, समूर, मटर छादि गुरू दालें, अस्तफल, पान खादि अवश्य हैं।

# पारद का त्रिपैला प्रभाव और उसकी चिकित्सा

कई बार भूल से दाहक रसकप्रादि पारद के नीत्र योग श्रांत मात्रा में ग्वाण जाते हैं जिससे श्रामाशय, श्रोर श्रांतों में बाह, श्रामाशय शूल, श्रांतसार, बमन तथा बुक्कों पर श्रसर हो जाते से रक्त मेह, मूत्राधात श्रांद हो जाते हैं, बहुत श्रांधक मात्रा ग्वाण जाने पर शीध मृत्यु हो जाती है। साधारणत: पारद की कुछ श्रांधक मात्रा

# फॉसफोरस (Phosphorous) ऋस्थिसार

[ कविराज हपु ल मिश श्रायुर्वेदाचार्य ]

**——**(\*):(\*)——

अभी तक वैद्य समाज, कास को राह वात्य विद्वानों का ही आविष्कार मानते हुए आया है, किन्तु कास को स्पत्ति का इतिहास माल्ड्स हो जाने पर यह पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है कि यह आयुर्वेदोक्त अस्थिसार से भिन्न वस्तु नहीं है। भारत पर विदेशियों के अनेक आक्रमण हुए, आक्रमणकारी विधमीं और क्रूरकर्मी थे, उनके द्वारा भारत की आर्यकता और साहित्य अनेक यार नष्ट अष्ट किए राए। अब जो कुछ भारतीय प्राचीन साहित्य में मिलना है वह केवल भरताव— शेप है। आयुर्वेद भी तत्कालिक समय के प्रभाव

श्रीराध में चला जाए तो विशेष लज्ञाण होते हैं।
मुख कसैता हो जाता, दन्त मांम सूत्र जाते, दांत
हिंतने लगते, मुख से राल बहने बगती, श्वास
में दुर्गन्ध श्राने लगती है, यदि:—

"पार के विषेते लहाए तीत्र हों तो दूध में घृत हाल कर, पिता दें। पारे के ।वप को श्रामाशय से निकालने के लिए १ सेर भर लबए।दक पिला उल्टी करा दें। श्रांतों में दाह होती हो तो दुध की वस्ति दें। मूत्र को श्राधिक मात्रा में लाने के लिए चार श्रीपधियां दें। यदि पारद के विषेते लच्छा हलके हों तो श्राहफेनके हल्के द्राव के गएडूप दें, श्रीर १०-१० यव गन्धक चूर्ण दुग्ध के साथ कुछ दिन तक दो तीन बार निरन्तर दें।

"माला से"

से अञ्जूता नहीं रह सका, उसमें अब जो कुछ है बह उसके प्राचीन विशाल भण्डार के फूटे जाने के बाद का अवशिष्ट अंश मात्र है और वह भी संज्ञित और सूत्र रूप में है, जिसे समसना श्रसम्भव नहीं तो कम से कम कठिन तो श्रवश्य है। श्रायुर्वेद में रक्तसार, मांससार, मज्जासार, मेदसार, अस्थिसार आदि का वर्णन मिलता है किन्तु उनके वार्स्तविक स्वरूप का विवेचन नहीं पाया जाता वैद्य समुदाय भी, धातुसार क्यां वस्तु है और उसका स्वरूप क्या है, इस पर विचार कर अपने मस्तिष्क को थीड़ा देना नहीं चाहता। यदि भियक वर्ग इस विषय पर थोड़ा भी मनन करे तो 'कासफोरस' शब्द के ऋतिरिक्त सब भांति भारतीय प्रतीत होगा। यह परम रसायन श्रीर महीपधि है:-इसकी श्रल्पमात्रा में श्रन्य वस्तुश्री के साथ मिश्रण बनाकर श्रीपधि रूप में प्रयोग किया जाता है। इसका इस प्रकार का प्रयोग जीवन दायक होता है, किन्तु अधिक मात्रा में अथवा शुद्ध क्य में इसका प्रयोग हानिकारक श्रीर प्राग्या-तक हो जाता है।

# फास्फोरस् की उत्पत्ति

हमने पहले ही लिग्वा है कि यह अस्थिसार है अतः इसकी उत्पत्ति भी अस्थियों से होना स्वाभा-विक है। परन्तु यहां यह बताना आवश्यक है कि यह अस्थियों से किस प्रकार प्राप्त होता है। सर्व प्रथम श्रास्थियों को श्रात्यन्त उद्याता देकर उनको खडिया मिट्टी श्राथवा चाक मिट्टी के रूप में परिवर्तन किया जाता है, तदुपरांत उनका चूर्ण बना
लिया जाता है। इस श्रास्थ चूर्ण को सल्प्यूरिक
एसिड (गंधकाम्ल) व पानी में मिलाया जाता है
श्रीर इस मिश्रण के लाल होने तक उद्याता देने
के उपरांत यह मेटे फास्केट श्राफ कैलिशियम नाम
का पदार्थ बन जाता है। इस पदार्थ को वक
नाड़िन यंत्र में डालकर श्रत्यंत उन्चे तापमान
की उद्याता दी जाती है जिमसे कास कोरस निकल
श्राता है। कास कोरस निकलते ममय धृश्रां के
समान दिखाई देता है, उसे पानी में एकत्रित कर
घन किया जाता है। यह पदार्थ सर्वथा पानी में ही
रखा जाता है। पानी के श्रलग होने ही यह जलने
लगता है।

# अस्थिसार (फासफोरस) का विपैला प्रभाव

श्रालकोहल श्रादि के साथ मिश्रण कर श्रीपिध रूप में इसका प्रयोग स्वास्थ्य कर तथा रोगनाशक होता है। इससे शरीरमें श्रीज श्रीर बीर्य की विपुल वृद्धि होती है, किन्तु विशुद्धावस्थामें इसका श्रयोग विष तुल्य होता है। शरीर पर इसका विषेता प्रभाव नीचे लिखे श्रनुसार देखा रया है:—

(१) संख्या की तरह इसके विष में भी अन्तदाह प्रधान लक्षण हैं। सारे शरीर में मानो आग लग गई हो इस प्रकार जलन होती है। शरीर की त्वचा में विज्ञाप प्रकार की जलन होती है। शरीर की त्वचा में विज्ञाप प्रकार की जलन होती है। प्राणी मछली के समान तड़फ़ते लगता है। शिशिर कानु में भयंकर गर्मी का अनुभव होता है कभी २ इस भयंकर ज्वाला से प्राणी मर भी जाता है।

- (२) तथा का वेग भीवण होता है बार २ उद्या जाल का वमन होता है।
- (३) उदर में शृत्यता का बोध, भयंकर ऋति-सार ऋथवा मलावरोध भी हो जाता है।
  - (४) कान बहरे होजाते हैं।
- (४) रित किया दुर्बल होजाती है और मनुष्य नाना प्रकार का व्यभिचार करने लगता है।
- (६) आतों में विशुद्ध रूप में पहुंचने पर भयं-कर प्रदाह उत्पन्न कर मनुष्य को मार डालता है।
  - (७) भदमक रोग उत्पन्न होजाता है।
- (=) श्वास नली में प्रदाह होजाता है जिससे गला बैठ जाता है, समीप बैठने वाले को भी रोगी के कंठ से निक्ते हुए शब्द साफ साफ सुनाई नहीं पड़ते।
  - (६) फुफ्फुस में भयंकर दाह होने लगता है।
- (१०) रक्त पित्त होजाता है। रक्त का वमन
  श्रीर विरेचन करते २ रोगी प्रागा त्याग देता है।
- (११) धीरे २ श्रांग्यों में ज्याला उत्पन्न होकर श्रांग्यें रक्त वर्ण होजानी हैं श्रीर देखने की शक्ति नष्ट होजानी है।
- (१२) रक्त का जलीय भाग नष्ट होने लगना है, जिससे भीषण दाह होता है और हृदय की गति एक दम तील होकर फिर मंद होने लगती है। शीध उपाय न किये जाने पर मृत्यु भी हो जाती है।

#### विष शांति का उपाय

अस्थिसार की उत्पत्ति और प्रभाव को देखते हुए उसके विष को शांत करने वाली एक मात्र औषधि शुद्ध गो घृत ही होना चाहिये।

# सिलवर (चांदी)

[ ले**०--ए**म० के० जैन H. H. P. ]

इस बात को बहुत प्रचीन समय से प्रायः सभी मनुष्य जानते हैं कि ऋौषध विज्ञान में सबसे पहिले घरब के हकीमों ने इसे काम में लिया। वो इसे मिरतष्क रोग, कम्प वायु दिल की धड़कन छादि में प्रयोग करते थे। घव भी यूनानी हकीम छौर वैद्य लोग चान्दों के बरक और इसके कुरते को दिल और दिमाग की बीमारियों में प्रयोग करते हैं। ऐलीपैथी में प्रायः निम्मालिखित चान्दी के मुरक्षवात काम में लिये जाते हैं।

- (१) सिल्बर नाइट्टेंट।
- (२) श्रर्जन्टाई नाइट्रास एन्डयूरेस्।
- (३) ऋर्जन्टाई ,नाइट्स मिटिगेटस् ।
- (४) श्रजन्टाई श्रीक्साइडम् ।

अलावा इनके चान्दी के मुरक्कव से बनी हुई बहुत सी पेटेन्ट द्वाइयां बाजार में विकती हैं।

कासकोरस का प्रयोग आज कल पाश्चात्य चिकित्सक ही अधिक करते हैं। इसिलये इसके विष को शांत करने की विष के जलगानुसार भिन्न २ प्रकार की श्रीष्वियां पाश्चात्य चिकित्सा शास्त्र में विषि ते हैं। वैश्वक शास्त्रानुसार 'अध्यसार' पिन प्रधान विष होना चाहिये इसके अतिरिक्त सभी विष वातिषत्त प्रधान होते हैं अतः हमारा उपयुक्त गोधृत कासकोरस के पिन्त प्रधान जलगों की सर्वोत्तम शामक औषधि होनी चाहिये।

-

सिल्वर नाइटेट — नाइट्रिक एसिंड और सिल्वर के मिलने से बनता है इसकी वेरंग की चीड़ी २ सफेद रंग की कल्में या वित्तयां सी होती है जो १ भाग पानी में दो भाग हल हो जाती हैं। इसे अधकार में रखना चाहिये नहीं तो काला पड़ जाता है।

#### प्रमाव

बाह्य--

इसके मिश्रण के प्रभाव ठीक सीसे ही जैसे होते हैं परन्तु तेज अधिक होते हैं। इसनिये नाइ-ट्रेट आफ सिल्बर का प्रयोग दग्ध करने के लिये अधिक किया जाता है, परन्तु इसका दग्धकारी प्रभाव गहराई तक नहीं पहुंचता ि इसलिये जब किसी उपरी स्थान पर इसकी प्रयोग करना हो तो ये दवा दग्ध प्रभाव में बहुत गुए। दिखलाती है। इसके लोशन संकोचक प्रभाव भी रखते हैं। लेकिन इस काम के लिये विशेषतया लैंड लोशन ही अधिक प्रयोग में लाया जाता है क्योंकि इससे स्त्रराश पैदा हो जाती है और उस स्थान पर दर्द होने लगता है। चान्दां के मिश्रण लैंड के मिश्रण की मान्ति हेमोस्टेटिक प्रभाव भी रखते हैं यदि इन्डोलेन्ट बर्गोकी सतहपर सिल्वर नाइट टके हल्के सल्युशन लगाये जार्ये तो उन त्रणों पर स्टिमुलैन्ट प्रभाव होता है और बण पूर्णतया ठीक हो जाते हैं।

त्र्यान्तरिक--

इस के मिश्रण यदि म्युकस मैम्ब्रेन पर मुकामी तौर पर लगाये जावें तो उनकी त्वचा के मणों के अनुकृत ही प्रभाव होता है। मेदे में पहुँचकर इस के मिश्रण के अरु प्रथक होजाने हैं श्रीर नया मिश्रण बन जाता है जिसकी बाबत श्रभी तक केवल इतना ही ज्ञात होसका है कि यह मिश्रण अलेट जैन्ट प्रभाव नहीं रखता। अले-मेन्टी कनाल के रास्ते से इसके मिश्रण शरीर में प्रवेश होजाते हैं। चःन्श्रीके मिश्रणका अधिक समय तक प्रयोग करते से होटों कपोलों की अन्दरूती सतह, मसुढ़ों, नथनों और पपोटों का रंग काला नीला सलटी हो जाता है और बाद में शरीर की रगत भी ऐसी हा होजाती है। इसकी अधिक मात्रा यानी जहरीली खुराक देने से बमन और कमेड़े जारी होजाते हैं और फालिज की अलामान पैदा होजाती हैं जैसे सीसे से होजाया करती हैं। अल्ब्यमन खारिज होने लगती हैं जिल्द की रंगत काली पड़ती चली जाती है। इसका कुछ मिश्रग सल्काइड आफ सिल्बर की शकत में मन के राहते से खारिज होने सगता है और बाकी जिस्म के अन्दरती भागों में विज्ञपतया गरदे और मसाने में जमा हो जाता है।

#### रोग चिकित्सा

बाह्य

इसका उपयोग प्रेनुनेशन की जल ने के लिये, जानवरों के कार्ट पर लगाने के लिये अधिक होता है। गहराई तक जलाने के लिये इसका प्रयोग करना कोई कायदा नहीं करता, इसके ४ प्रेन की श्रींस वाले लोशन को कमजीर नहीं,

वडसूर, कानिकफ़रेन्जाइटिस, लेरनगाइटिस में लगाने से बहुत कायदा होता है, इसका इन्जैक्शन ग्लेट और आस्योटाइ की प्रदाह में भी फायदा करता है २ मे न की अप्रैंस वाला लोशन मेन्युलू रल्डज् और कई प्रकार के आफ्थेलिमिया में प्रयोग होता है जो बड़ा गुण करता है। उसके मिश्रण कभी कभी प्रदाह में भी फायदा करते हैं । बहुत से डाक्टर एरी सिफिलस में नाइ-टेट आफ सिल्वर का सोल्यूशन तथा टीनियां टारसाइ में इसकी बत्ती भी लगादिया करते हैं। बगों के रक्त को बन्द करने के लिये वा जोकी के ब्रागों से रक्त को रोकने के लिये यह निहायत मुकीद हेमीस्टेटिक द्वा है। चेचक के दानों में भी बाद में उनमें गढ़ा पड़ने से रोकने के लिये इसे लगाते हैं छोटे २ फोड़ों पर इसे लगाने से फीड़े बैठ जाया करते हैं। ऋतिक सरवाइकल कटार में सरीकस यूटराइ पर भी इसकी लगाया जाता है। श्रीटारगल, जिसमें 🗕 की सदी सिल्बर मिश्रित होती है और जो आमानी से जल में हल ही जाता है गनोरिया में इन्जैंक्शन के तीर पर प्रयोग किया जाता है। इसके लिये १ की सदी का लोशन व्यवहार करना चाहिये।

श्रान्तिकि-इमका प्रयोग बहुतकम होता है। मिल्वर नाइट्रेट बच्चों के डायरिया में कभी २ प्रयोग किया जाता है। डिसेन्टरी की बीमारियों में ६० मेन मिल्वर नाइट्रेट को ३ पाइन्ट नीम गरम जल में मिलाकर एनीमा के तौर पर रेक्टम के राग्ने से खुब उपर तक पहुँचाने से कायदा होता है।

# ज़िक (जस्त)

[ तें o--एमo केo जैन H. H. P. ]

——(**%**):(**%**)——

प्राकृतिक तौर पर इस धात का सल्फाइड या कार्बोनट ही प्राप्त होता है इसको लेकर जोश देने से आक्साइड बनजाता है। इसमें कोयला मिलाकर पुन:जोश देने से आक्सीजन अलहदा होकर प्योग जस्त बन जाता है।

इसके सिम्त लिखित सिश्रण इल्मे श्राहयात में प्रयोग किये जाते हैं।

- (१) लाइकर जिन्साइ क्लोगइडाई
- (२) सील्युरान आफ क्लोराइड आफ जिंक
- (३) जिन्माई सल्कास
- (४) अस्पेन्टम जिन्साइ स्रोलियेट
- (प्राचित्सा**इ कार्वोनास**
- (६) जिन्माई श्रीक्साइडम
- 🔞) जिन्साइ एमीटास
- ्दः जिन्साइ सल्फो कार्यानाम
- (६) जिल्लाई वेलेरियेनाम
- (१०) जिन्क फोर शहर

#### जिन्साइ सल्फास

यह निश्रण जस्त को डायल्यूटेड सल्क्यूरिक एसिड में इल करने से बनना है।

लखाग्-मन्त्र्र की विस्म की छोटी २ कल्में होती हैं सल्केट श्राफ मैगनेशियम से बहुत कुछ मिन्नी जुलनी हुई दोती हैं जायका कमैला होता है। ये ७ भाग जल में १० भाग हल हो जाता है। मात्रा—१ से ३ मंन तक ( बतौर टानिक ) १० से ३० में न तक (बतौर एमेटिक)

#### प्रभाव

इसके मिश्रण त्वचा पर लगाने से एस्ट्रॅं नजैन्ट प्रभाव पैदा करते हैं इसिलिये इसके मिश्रण सीसा चान्दी ऋदि के मिश्रणों जैसा ही प्रभाव रखते हैं मगर ताकत में इनसे जरा कम होते हैं इन मिश्रणों में सबसे ऋषिक ताकतवर सल्केट और असीटेट आफ जिंक होते हैं।

# चिकित्सा में प्रयोग

बाह्य--

सल्केट आक जिंक का प्रयोग कई प्रकार के सल्यूरानों की सूरत में अक्सर हुवा करता है। जैसे — लोश्यो कवा, रेडवाश इत्यादि । जो:—

मल्फेट आफ जिंक २ प्रे०

दिं लंबेन्डुला कम्पा० १२ बृन्द

ए+वा डिस्टिनेटा १ श्रींस

के मिश्रण से बनते हैं। ये लोशन कई प्रकार के जातों में संकांचक और उत्तेजक प्रभाव के लिये बाह्य प्रयोग में आते हैं गनोरिया, लिकोरिया, योनिकएड और ओटाइरिस में इसी फायदे केलिये बरते जाते हैं। केवल सल्केट आफ जिंकका सोल्यूशन २ प्रेन फी ऑस बाला आंखों के रोहों की दूर करने के लिये आंखों में डाला जाना है। जिंक ओलीयेट थोड़ा संकोचक प्रभाव के लिये सर्व

Ą.

# मीठा विष

[ ले०-राजवैद्य महावीर प्रसाद जैन प्रोप्राइटर 'जीवनसुधा' ]

काले, गरल, द्वेड, विष, दारत, सौराष्ट्रिक, शौल्क-केय, ब्रह्मपुत्र, प्रदीपन आहेय, अमृत, गरल, कालकृट' कसाकृल, दारिद्र, रक्तशृङ्किक, नील, गर, घोर, हलाहल, शृङ्की, अगर, जाङ्कल, तीदण, रस, रसायन, जंगुल, जांगुल, वत्सनाभ जीवना-घात, किषल, प्राण्हर इन नामों से भी बोला जाता है।

प्रकार के बर्धों पर अत्यन्त उत्तम साबित हुव। है। भौक्साइड और कार्बोनेट आफ जिंक चुर्ण की सूरत में या मरहम की शक्त में उन मौकों पर रोजाना इस्तमाल होते हैं जहां थोड़ा सा संकोचक प्रभाव करना हो।

#### श्रान्तरिक

अतिसार के रोग में इसके आक्साइड और सल्केट अच्छे वमन कारक हैं क्योंकि इसका प्रभाव शीध पड़ता है और जी नहीं मिचलाता और न दिल घबराता है इसिलये जहरों में वमन लाने के लिये दिया करते हैं बच्चों में जब छाती पर कफ जमा हो निकालने के लिये दिया करते हैं ओक्साईड आफ जिंक तपेदिक रोग में राजि स्वेद रोकने को दिया जाता है।

सल्फोट श्राफ जिंक को १ से ३ मेंन तक की माश्रामें दिनमें तीन बार हिस्टीरिया, मृगी, कुक्शुर . स्नांसी भौर कम्प वायु में भी दिया करते हैं।

	भाषान्तरों में नाम					
सं:—	वत्सनाभ	व्यमृत				
fg:—	बचनाग,	मीठाविष				
ताम:—	वसनावी					
तै:—	वसनाभी,	नाभी				
कन:	वसनवी					
पीॡ:—	वसनर्भा					
वंग:—	काठविष,	चमृतविष				
गु:—	द्धिगंडियो,	बच्छन।ग				
महाः	वरञ्जनाग					
फा:—जहर,	विवशतग्रमी,	ताजुनमॡक				
श्चर:—र्षाव	<b>खानिक उत्तज्य</b> ब					
इं:—श्रकोनाई	ट वुल्पस <b>बेन</b>					
लै:—एकोनाईट	प्रेरोक्स, सांक्स	ige				
य्नानी:अकृ	नीतृन,					

सर्व साधारण में इसकी मीठातेलिय।, मीठा-दुधिया या मीठा जहर कहते हैं। इसका युनानी-नाम अकृतीत्न है जो अकृता शब्द से बना है। जिसका कर्य पत्थर का तख्ता है, चृंकि यह उंचे २ पर्वतीपर उपता है इसिलये इसका नाम अकृतीत्त्व रक्खा गया-इसके फूल की आकृति प्राचीन अंग्रेजों के साधुओं की टोपी से मिलती है इस लिए अंग्रेजी में मांक्सहुड कहते हैं। परन्तु ईरानी बाग्रवानों ने इसके फुलों का ताज सुलतानीकी तरह देख कर इसका नाम ताजउलमलक रख दिया है। प्राचीन समय में भेड़िये चीते छारि जंगली भयानक जीवीं को इसका विष देकर मारा करते थे इससे इसका नाम वुल्क्सबेन पड़ गया है। विष शतरामी इस कारण इसका नाम रक्खा गया कि इसकी जड़ छोटे शलराम से मिलती जुलती है।

यूनानी पुस्तवों में इसे पांच प्रकार का लिखा है। आयुर्वेद शास्त्र में १८ प्रकार का परन्तु योरोप भौर भन्नीका के डाक्टरों ने बीस संभी विशेष क्रिस्में लिखी हैं।

युनानी हकीम देसक्रींद्स ने अक्रनीनृत के नाम से जिस विष का बयान सिरू। है। वह एकी नाईट नेपालस अर्थात विशलरामी ही है परंतु हकीम जालीन्स ने लाईकांकयेन के नाम से जिस पील रंगके विषका वर्णन किया है उसको प्राचीन समयमें जंगली भयानक जीवीं को मारने के काम में लाया करते थे--प्राचीन समय में एक प्रकार का जहर बनाया जाता था जिससे खनका बदला लिया जाता था--फ्रांस वाले इसके जहर में अपने तीरों को बुभाया करते थे। जो व्यक्ति दस तीर से घायल होता था उसकी मृत्यु अवश्य हो जाती थी । अब भी अफ़ीका के कोई २ हवशी अपने तीरोंको इसी ज्ञहर से वृक्ताते हैं।

भावप्रकाश ने भी कई भेद किये हैं। उनके कालग कालग नाम बनावट तथा गुण नीचे लिखे जाते हैं।

# विष के भेद

बत्सनाम, हारिष्ठ,सक्त्क, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, श्वक्रिक, कालकूट, हालाहल और ब्रह्मपुत्र ।

बत्सनाभ-यह संभाल के पत्ते और बछड़े की नामि की चाकृतिसे पतला होता है इसके समीप पर होता है। प्रायः योसेपदेराल्पस पर्वत पर

दूसरा वृक्त नहीं लग सकता।

हारिद्र-इसकी जड़ हलदी के समान होती है।

सक्त क-इस की गांठ को तोइने से मैदा जैसी बीज मिलती है, जो बिविश्वर्ण कमल कन्द के समान होती है।

प्रदेखन-इसका रंग लाल चमकता हुआ होता है। खाने से एक दम सारे बदन और पेट में श्राम्त सी लग जाती है।

सौराष्ट्रिक—यह विष सौराष्ट्र देश (सूरत) में पैदा होता है। इस ही से इसका नाम सौराष्ट्रिक पद गया है।

श्रिक-कहते हैं इस को गाय के सींगी से बांधने से दुग्ध लाल होजाता है।

काल हट-वीपल के समान एक वृत्त श्राहिच्छेत्र, शृक्तवेर, कोकस भीर पत्तवार में होता है। उस के गोंद को कालकुट बिप कहते हैं।

हलाहल-इस प्रकार के बिष का वृत्त दक्षिण समुद्र के तट के देशों और कोकड़ आदि देशों में उत्पन्न होता है। फल कांगूरों के गमन्त्रे समान श्रीर वृत्त ताड़ के सहश होते हैं। इसकी गरमी से समीप के वृत्त जल जाते हैं।

मक्ष पुत्र - यह कविल वर्ण का होता है। और रस भी ऐसाही होता है। यह मलयाचल पर्वत पर उत्पन्न होता है।

#### उत्पत्तिस्थान

योरोप और एशिया के कई देशों के पर्वतों

श्रीर एशिया में हिमालय पर कमायूं से कश्मीर तक श्रीर सिकस से गढ़वाल तक कही २ पैदा होता है । नेपाल में जो विष पैदा होता है । जिस को Aconite Foron कहते हैं बहुत जहरीला होता है यह विष चीन श्रीर जापान में भी पैदा होता है ।

इस विष का कुल बड़ा मुन्दर मन को लुभाने वाला बैन्जनी रङ्ग का होता है। इस कारण बागों में इसे पहिले बहुत लगाया करते थे मगर श्रव कम लगाते हैं क्योंकि इसके श्रनुपम मुन्दर विषैले फूलों को तोड़ने श्रीर लगाने से कई मुन्द्रियां इस लोक से परलोक को चल बसीं। विष शलगमी Aconite Nepellus की बरतानियां वाले श्रव भी खेती करते हैं क्योंकि इसकी जड़ श्रीपिधयों में काम श्राती है।

उपरोक्त सब प्रकार के विषों में से बन्सनाभ Acorite Feron विज्ञेप रूप से श्रीयधियों में काम लाया जाता है।

इसे स्वतन्त्र ह्रप से और बहुत मी श्रीपधियों में मिश्रित ह्रप से भी सेवन कराते हैं। प्राचीन शास्त्रीक तथा श्रनुभृत बहुत से प्रयोगों में से थोड़े से प्रयोगों का नीचे वर्णन करूंगा जिम में इस का मिश्रण किया गया है।

#### बनावट

वत्मनाभ [ Acomite ferox ] का रंग भ्याह होता है. यह अंग्रेजी विष से बहुत बड़ा होता है यह अंग्रेजी में \conite nepellus कहलाता है, आकार में गाबदुम अर्थात उपर से मोटा और नीचे से पतला होता है प्राय: २ से ४ इंच लम्बा और उपर के हिस्सेमें आधेसे चौथाई इंच तक चौड़ा निचला भाग मोटा होता है। इसका रंग बाहर से विल्कुल काला और अन्दरसे सफेद होता है। जड़के ऊपरी स्थान परटूटे हुए तन्तुओं के से चिन्ह होते हैं जो आसानी से ट्ट जाते हैं और उस की लम्बाई में प्राय: भुरियां होती हैं। बत्सनाभ आकार मैं ६ इंच लम्बा अन्दर से रंग हलका पीला, भूग लाली मा विष् हुए और काले रंग गुणों में Aconite nepellus से मिलता हुआ होता है बिल्क उससे कुछ अधिक गुण्कारी है यदि मुंह में चकाया जावे तो कुछ मिनट के बाद मुंह में भनभनाहट मालूम होने लग्नी है।

इस में से एक प्रकार का खारी जौहर निकलना है जिसको एकोनाईटीन (Aconoten) कहते हैं। इसके अनिरिक्त दो जौहर और भी निकलते हैं। जिनको Acorine और Berza-Corine कहते हैं परन्तु एकोनोटीन विद्याप विपेता होता है।

विष ( Aconite ) की भी श्रशुद्ध सेवन नहीं करना चाहिये इससे शरीर की बहुत हानि होती है।

शुद्ध वत्मनाभ (विष) के गुरा

वान और कक से उत्पन्न होनेवान हर तरह के रंगा इसके सेवन से निष्ट हो जाते हैं सिनि-प्रात को दूर करता है। मंदारिन, श्वास, खांसी प्लीह, उदररोग, भगन्दर, वायगाला, पांडुरोग और बवासीर को निष्ट करने वाला है, और कुछों को विनाश करता है, विधि पूर्वक सब रोगों को दूर करने वाला रसायन है, और शुद्ध सेवन करने से डाक्टरी मतानुसार गुणोंका वर्णन आगे करेंगे। वत्सनाभ वर्ण भेद-पांडु रंग का विष शक्षण, काले रंग का चत्रिय पीले रंग का खेरिय, श्रीर काले रंग का शूद्र होता है। रसायन में बाह्मण विष, वीर्य की पुष्ट करने में चत्रिय विष, कुष्ट को दूर करने में वैश्य श्रीर मारण के लिये शुद्र जाति का विष लेना चाहिये।

#### ग्रहण योग विष

विष को उसके फल पकने के पीछ प्रहण करें जो नवीन, विकना, भारी-पथन और आतप से शोपित न हो-

#### विष शोधन

विश्व के छोटे छोटे टुकड़े करके कपड़े में रख पोटली सी बांध दोलायंत्र में पानी झौर दुख्य डाल कर एक पहर नक स्वेदन करे तो शुद्ध हो जाता है।

#### मतान्तर

विष के छोटे छोटे टुकड़े करके मिट्टी के पात्र में डाल गों मूत्र भरदें। तीन दिन तक नथा मूत्र रोज बदलते रहें और पूप में रक्खे-फिर निकाल कर छात्रा में सुखावें और विष के ऊपर से छिनका इटा देवें किर योगों में काम में जावे।

# अकेला विष सेवन विधि विषकल्य

शरीर को रेननादि कियाओं से शुद्ध करके विषका सेवन करें। प्रथम दिन एक सरसों प्रमाण, दूसरे दिन दो सरसों के वरावर, नीसरे दिन तीन सरसों के वरावर इसी प्रकार ७ दिन तक एक २ सरसों बढ़ाता रहें। दूसरे सप्ताह में सात सारसों प्रमाण देता रहें। तीसरे सप्ताह में फिर २—१ सरसों कम से बदाता जाते। अर्थात पन्द्रहते दिन बढ़ावे नहीं म सरसों बराबर सोलहते दिन ह सरसों बराबर हम ही तरह २१ वे दिन १४ सरसों प्रमाण ले फिर चौथे सप्ताह में कम से बढ़ावे इस तरह ४१ दिवस पर्य्यन्त तक देवे इस प्रकार सप्ताह बीतने पर विष्य की परम मात्रा मानी जाती है। इसके पश्चात इसकी छोड़ते समय घटाता हुआ चले और फिर अन्द करदे। इससे सब प्रकार के रोग नष्ट होकर शरीर बलवान बीर्यवान बन जाता है। कुट्टी रोगियों को १ रत्ती प्रकरण से सेबन करना चाहिये। विष्य की बड़ी से बड़ी मात्रा मानी है। यह मात्रा कम से बढ़ाई जाती है। एक दम देने से मृत्यु हो सकती है।

विषम ज्वर—नीलाधोधा और पारद के साथ।
रक्तिपत्त—मुल्हरी, रास्ता, खस, कमलगट्टा
के चर्मा, चावल के धोवन के साथ।

श्वासकाम — रास्ना, वायविडंग, त्रिफला, देबदास, त्रिकुटा, कमलगटा, शहद श्रीर गिलीय के रस के साथ।

ज्वररष्टन—मिश्री, पारा, दूध, मूंग की दास, श्रीर शहद के साथ।

यच्मा—शहद, वित्त,पापड़े, कारस, मद्य, नोन, हल्दी, कुड़ाकी छाल, च्यवन प्राश वलेह । ववासीर, गोला, प्रमोह, तिमिरकृमि,

पाएडु, गलप्रह, उन्माद, कुष्ट

भाग, पीपलामृत, छोटी पीपल, गजपीपत, चित्रक, पोकरमूल, कचूर, दाख, श्रजवायन, जवास्त्रार, अजमोद मिश्री, गुलहटी, दोनों कटहती, सेंधानमक, निसोध, और विष प्रत्येक २-२ तोला एक प्रस्थवृत में भूनकर अनुपान मासिक सेवन करे, पचने पर घृतपान करे।

कुड़ा की छाल, संग्रहराी --नागर मौथा, पारद, चित्रक, सींठ, मिरच, पीपल ऋतीस, धाय के फूल, मोचरस, आम की गुठली, में विष पीला मिलाकर खार्वे।

पथरी झौर उटावर्त-हड, चित्रक, दन्ती, हाटव. श्रफीस, अनुगा, शिलाजीन, त्रिकुटा के साथ विष स्रेवन करे।

पथरी-गोमूत्र, संधानमक, पापाण भेद के साथ विष का सेवन करे।

गोला विकता और सर्वासार के साथ विष सेवत करे।

क्रमि रोगश्ल-पीवन, पीपनामन के साथ विष सेवन करे।

प्लीह-द्वती, महद्या, दाख, रास्ना, कचर, पीपल, वायविडग, सौंफ स्रोर दुग्ध के साथ विष सेवन करे या श्रमततासकी छाल त्रायमान बावची खरैटी की दुग्ध के साथ विष का सेवन करे।

कमि --सौंठ के साथ विष सेवन करे।

कुप्ट-मकीय की जड़ के काढ़े के साथ बिष सेवन करे या बावची, एल्झा, सङ्जीखार जवा-लार, सेंधानमक और सीगिया विष को जल में पीस कर तेप करे अथवा विष भिलावा चित्रक, व घर्चा, मित्रीली का लेप करे।

कृष्ट्-नाडीब्रग अर्ची-चित्रक, आक, गज-पीपल, बाबची, बच्छनाग विष, कपूर, स्त्रामाला, नाग केसर, कंजा का फल, सेंधा नमक, त्रिबुटा जवाखार, हल्दी, दारुहल्दी का सङ्जीखार. मेबन करे।

# 一番の一つな

# இல்ல் கல்ல் க்கல்ல் க்கல்ல் க்கல் க்கல் க்கல்க்கல் க்கல்க்கல்க்கல்க்கல்

# बृहत् ममीर पन्नग वटी रसायन

( र्गजस्टर्ह )

दमके सेवन से एड़ी से हिसी भी दीप व किसी कारण के असर दिखाती है। पर्द से वेचे की एक शीशी का १) डाक व्यय बृहत् आयुर्वेद इसके सेवन से एड़ी से चोटी तक के सर्व प्रकार के शारीरिक दर्द चाहे वह बान पित्तादि किसी भी दोष व किसी कारण से कैसा ही सन्त क्यों न हो उसे दूर करने में विजली की भांति श्रमण दिखाती है। ५ई से वेचैन मनुष्य तुरन्त हंसने लगता है। इसके श्रांतरिक्त यह गोलियां माहवारी को साफ लाने व नलों के दर्द में अपना तुरन्त असर दिखाती है। मृत्य ३२ गीलियो की एक शीशी का १) डाक व्यय पृथक।

बृहत श्रायुर्वेददीय श्रोषध भागडार जोहरी बाजार, देहली

# त्र्रफ़ीम (Opium)

[ ले०—डा० बी० सी० शुक्ला विशारद वैद्या 11. 11. 1). ]

---

हिन्दी—अक्षीम, आफू। अर्थी—अक्षय्न। बंग--आक्षीम। मं०—अकुकडीर तथा अक्ष्न। माल०—अकिन। ति०—नत्तमण्डू। सं०—अहि-केन। ई०—अोपीयम् ले० सोमनीकेंग्म, पोपी-पापावर इत्यादि" Opium.

स्वाद में कड़बी, मादक, निद्रा कारक, दर्द व श्राच्चेप निवारक, कक नाशक, बात पित्त वर्द्धक, स्वश्चे शक्ति की हानीकारक, मस्तिष्क उत्तेजक, स्वेदजनक, मलमूत्र श्रवरोधक, बलकारक और वीर्य्य स्तम्भक हैं।

यह समर्ना चौर मालवा में विशेष उत्पन्न की जाती है। ये चार प्रकार की होती है।

(१) श्वेत = श्रक्तपाचक (२) कृष्ण = प्राग्ग नाराक (३) पीत = मलमृत्रावरोधक (४) विविध रंगवानी = मल मृत्रविदेचक।

भारत में प्रायः कृष्णवर्गा की श्राहिकेन राज्य द्वारा विका की जाती है इसकी उपज के लिये भी प्रतिबन्ध हैं देशी राज्यों में इतनी विशेष रोक टोन नहीं हैं,

#### उत्पत्ति

अपकीम प्राप्त करने की विधि यह है कि पोश्त के बृज्ञ पर जब फल आजाता है तो उसके पकने पर सन्ध्या के समय सुइयों से ४-४ जगह खरींच लगा देते हैं रात्रि की इसे ऐसे ही छोड़ देते हैं इसमें से दुश्ध निक्ल कर उपर जम जाता है प्रातः काल जाकर उसे एकत्रित कर लेते हैं और दुवारा फिर खरोंच लगा देते हैं। इसी प्रकार जबतक उसमें से दुग्ध निकलता रहता है यह किया करते रहते हैं बाद में समस्त दुग्ध इकट्टा करके मिट्टी के वर्तनों में भर देते हैं। मिट्टी इत्यादि भी इसमें मिल जाती है या बहुत से मिला भी देते हैं। थोड़े समय बाद यह जमकर कृष्ण वर्ण होजाती है राज्य के एक्साईज कर्मचारी इसका निरीक्षण करके विक्री के वास्ते गोदामों में भेज देते हैं। यही इसकी संक्रिप उत्पत्ति है।

मात्रा-- ? चावल से १ रत्ती तक। इसे शुद्ध करके ब्यवहार करना श्रात उत्तम है।

#### वृत्त

इसका बृत १॥ या दो कीट लम्बा होता है, रंग ज्यादह हरा नहीं होता बल्कि कुछ रवेतता लिये होता है पत्तों के किनारे कटे हुए अपर से गोला-कार २-३ इंच तक लम्बे होते हैं चैत्र मास में बोया जाता है खौर ज्येच्ठ आषाढ़ में फूल आकर डोडा निकल आता है जिसका रंग श्वेत आकार में अखरोट के ससान बड़ा होता है इसका दूध निकाल लेने पर यह भी कृष्ण होजाता है इस फल के अन्दर जो बीज होते हैं उनको तुख्म खराखास, और तुख्म अक्षयून भी कहते हैं।

#### ऋहिफोन

को ज्यादा खालेने पर प्रारण लेलेती है परन्तु

भौषि रूप में व्यवहार करने पर बड़ा उपकार करती है। इसे लगातार ज्यादह समय तक नित्य सेवन नहीं करना चाहिये अन्यथा अभ्यस्थ बनाकर बड़ा क्लेश पहुंचाती है और सारी आयुके लिये इल्लेत लग जाती है।

#### मुख्य तल

इसमें १ = प्रकार के मुख्य खार (Alkloids)
पाए जाते हैं मार्फिया १२ प्र० श०, कोडीना ' ३
से १' ६ प्र०श०, यंकैना प्राय: ' ३ प्र०श०, नाकोटाईन ४ से ६ प्र० श०, नारमीना, पायावरीना, स्यृडोमा फाइन, कपटो पाईन, प्रोटोपाईन, हाइड्रोकोटाईन, लोडेनाईन लाडे नोजाईन, मिकोनी डाईन, राई डाईन, कोडे माईन, प्रोस्कोपाईन, लेन्थोप्टाईन और खेन्था लाईन जल १६ प्र० श०। इसके तत्वों के प्रथक प्रथक बहुन से नीव्या प्रयोग बनाए जाने हैं।

#### व्यवहार

श्रहिफेन मुख तथा त्वचा पर नेपन करने से श्रूल नाशक शक्ति कारक होती है। इसे दूमरी श्रीपिधियों के साथ मिश्रण करके लेपन करने से दर्द पसली दर्द श्रामवान, दर्द कमर, कार्वकल, गृदा किशरज व ऐसाबी दर्द तत्वण शान्त होने हैं। इसके अन्तर प्रयोग से वेचैनी प्रवराहट श्रीर श्रूल शांन होकर निद्रा श्राजाती है प्रवाहिका संप्रह्णी, श्रीर दस्तों को बन्द करके व शुक्र पुष्ट करने में विशेष महत्व रखती है। विश्चिका की प्रथमावस्था में भी लाभ देती है। प्रतिश्याय नवीन में लाभ नहीं करतो जीर्म के लिए तत्वण गुण दिखलानी है। नेशें के रोगों में भी लाभ करती है। इसको यदि अधिक खालिया जाये तो:—

#### विष लच्चग

उत्पन्न होकर प्राण नाश होजाता है यथा—: मस्तिष्क ज्ञान शून्य होजाता है । श्रांखें भाप-कने लगनी हैं और शनै । गाढ आजाती है दिल धबड़ाने लगता है बंचैनी अत्यन्त होजाती है। श्वःम गति मंद पड़ जाती है। नथूने फूलने व श्वास में खुर्राटें दार शब्द होने लगता है हृदय स्यन्दन भटकेदार होजाता है। फुफ्फुसों पर भी प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता खुरकी दौड़ जाती हैं चेहरा निस्तेज, नेत्र अध मुद्रित होजाते हैं। पुत-लियां फैलकर सिकुड़ जाती हैं। यदि श्रफीम खाने के थोड़े समय बाद ही रोगी को हिलाया इलाया जाए या जीर से पुकारा जाए तो वह एक दर चींक कर चैतन्य होने की चेष्टा करता है पर फिर अचै-तन्य होजाता है। जब ज्यादा समय होजाना है तो हिलाने डुलाने पर भी चैतन्य नहीं होता क्यों-कि इसका विष समस्त रक्त में सम्मित्तित होकर मारे शरीर एवं मस्तिष्क में व्याप्त होजाता है मनमृत्रावरोध, श्वाम कष्ट, शरीर का स्त्रिवाव, पलकों का विस्तर जाना, गहरी बे सुधी, शरीर पर्सनिसे तर एवं हाथ पैर ठन्डे होकर मृत्यु अवश्यं भावी ही जाती है ।

जब रोगी की ऋमाध्यावस्था माह्यम दें तो बड़े यत्न से चिकित्मा करनी चाहिये थोड़े बिप में सरल विकित्मा भी काम दे जानी हैं।

#### चिकिन्मा

रोगी ने त्राहिकेन स्वाया है यह पूर्णतया निश्वयहों जाने पर स्टमक परंप से पंट घो डालना चाहिये यदि रोगी को जरा भी चैतना है तो सल्केट आक जिंक या पर्न्य एपी काक २० मेन जलमें घोलकर पिलाई या राई इत्यादि दूसरी वमन कारक श्रीपधिएं पिलाकर वमन जरूर कराएं। यदि चेतन्यता न हो तो एपोमार्फाइन (Appomorphine Hypodermically Injection grain to 16 perc.c.) का सूचिका भेद श्रीत से की मात्रा में करें इससे वमन होकर सब विच निकल जाएगा। इसके वाद पुटास परमें में दे (ot. Permagnate) २० मेन जल १ पाईन्ट में मिला कर पिलाएं। हृदय व नाड़ी गिन स्वस्थ करने के लिए बेलेडीना टिक्चर ३० वृंद १ श्रीतम जल में मिला कर ऐसी एक मात्रा हर १४ या २० मिन्ट बाद देते रहें या स्ट्रिकनिया एक बटा ६० मेन के हाइपो डिर्मिक इंजैक्सन करने से दिल ब हृदय चीए। न होगा।

नीमादर व चुना मिलाकर मुंघार्थे। गीले तौलिए से शरीर को धमधमाते रहें ताकि निद्रा न आ जाए। शरीर में चुटकी काटना, और बात चीन करते रहना जिससे रोगी को नींद न आये। रोगी को यदि सोने न दिया जायगा तो उसकी मृत्यु फदापि न होगी हाथ पैरों के खिचाब दर करने को बिजली लगाना या अलसी की पुल्टिस बांधना हितकर है। मस्तिष्क पर ठन्डे व गर्म पानी के कम से तैंड़े देना युक्ति संगत है। कृत्रिम श्वास प्रच्छवास किया करना उचित हैं। कृत्रिम श्वास प्रच्छवास किया करना उचित हैं। कृत्रिम श्वास प्रच्छवास किया करना उचित हैं। कृत्रिम श्वास पन्टे बाद करते रहें जब इसका असर हो जाय तो बंद कर दें। यह उपाय रोगी को बचाने में अभ्यर्थ है। अहिफेन विषयान किए हुये रोगी को भूत कर भी मद्य या सिरके का सेवन नहीं कराना चाहिये। यह बहुत ही अनिष्ट कारी है।

#### होम्योपैथी--

मं उपरोक्त कोई मंग्मट नहीं करनी पड़ती है केवल लक्तगों के अनुसार निम्नलिखित कोई भी औषधि पिलाएं, कै होकर विष शान्त हो जाएगा—

# होम्योपेशिक विषय श्रीविधर्ये-

वैतं होना-कैंम्कर-कोफिया-एपीकाक सक्यू ट्स-कार नक्स वासीका, ऐल्बम, एन्टिसटार्ट, डिजी टेलिस, लेक्सिस, कोनियम और स्ट्रीकना। श्रकीम से बनने वाली मुख्य श्रीपधिएँ—

अगले पृष्ठ पर देखिये

# कोष्ठ नद्वारि वटी ये गोलियां अत्यन्त पाचक, कृष्ण कुशा, जिगर और मेदे को ताकत देने वाली हैं। इनके ये गोलियां अत्यन्त पाचक, कृष्ण कुशा, जिगर और मेदे को ताकत देने वाली हैं। इनके याने से भूष्य खूब बढ़ जाती है, पेट साफ और हलका रहता है, दस्त बिना तकलीक के आसानी से आजाता है, दायमी कृष्ण के लिये तो ये गोलियां अकसीर हैं। र गोलियां रात को सोते समय हुध से लेनी चाहियें। कीमन २४ गोली की शीशी॥) १२ शीशी का ४) डाक व्यय पृथक। यहत् आयुर्वेदीय औषध भागडार (रिजस्टर्ड) चांदनी चौक, देहली।

अकीम
से बनने
बासी ।
मुख्य र
श्रीपधिएं:-

3	BUSHE	Tr: Campl	Tr- opii amonata	ndo mamma	I injust on	Thatama	tuoo	Pulv. opn	Puly, Kin	Pulv.pecar	composita(]	Pulv. Ip	CIM	Pulv. Cref	Pilula Saponis Co.		Pilula P	Ext: opiiLigd	Ext: opii	Emplastum opii	नाम ड	
Cum opii	unguentum gatti	Tr: Camphora Composit	monata	Irdo	)PII		compositus.	Fulv. opn compositus	Pulv. Kino Comp ositus.	Pulv.pecae cum scilla	composita(DoversPowdr.)	Pulv. Ipecacuanhoe	cm cum opii	Pulv. Cretae Aromati	onis Co.	opii	Pilula Plumbi cum	igd	e o rochall	m opii	नाम श्राप्रजी में	
मग्हम				लेप ऋहिफोन	अहिफेनासब	,	सेपोर्जाटरी प्तम्बी कम्पोजीटस	पल्ब भ्रोपी कम्पाजीटस	पल्ब किनो कम्पोजीटस	पत्च एपी काक कम सिहा	पींडर)	पल्च एपी काक को (डोबर्स	श्रीपीमाई	पल्य करे। एरोमेटिकम	पिल्ला संपानिसका		पित्रुला प्लम्बी कम श्रोपीयम		शुद्ध ऋष्टिफेन	लेप अफीम	नाम हिन्दी में	
अर्शहर		कफहर, शूलहर दिल को शक्ति	कप्रहर, श्लीहर	श्लाहर	शान्ति कारक, प्राही निहा जनक		किश्व व श्रशं नाशक	रहर व विकासी	प्राहीब विकासी	कप्तहर, विकासी		खेंटक	विशेष गुण कारक	कफ नाश क प्राही बच्चों के लिए	" , विशेष शुद्ध		पाही व जिल्हाकी		शल नाशक निरा जनक	शूल नाशक	गुए	
ं दा में लगाएं	वर्ष के वस को	माः संदेश हाम ४ बंग एक	ुमा०से१ ड्राम नक जल मिलाकर	मलने के लिये	मात्रामं के एकमा० व संका क्	मा०४ से १४ बुवतक दिनमें ३-४	गुद्ध में रावने के लिये	र सं १० यान	सार्थ प्रसं २० में न	सा० ४ से म प्रज		मां ४ था १४ यम		मां। १० से ४० मेन ! से १मेन	मा०२ से क्ष्य न तक		मात्रा-० स 🗴 म न तक	मात्रा-४ से ३० व० तक	मात्रा- सं १ पन तक	त्वचा पर लेप करे	मात्र व प्रयोग स्थान	

١

۴

# युनानी

चिकित्सा शास्त्र भी परोक्त सिद्धान्तों से सहमत है इसलिए उनका यहां वर्णन युक्त संगत नहीं ज्ञात होता संचेप में यह दर्जे चार में सर्द व खुरक है। इसका अनुपान केसर व दारचीनी है। इसके प्रभाव में अजवायन खुरासानी लेनी चाहिए।

मात्रा-१ रत्ती तक।

#### गुण

मुस्त करने वाली, काविज, नींद लाने वाली, दर्द व सुरत इंजाल की मुकीद है, आंखों के रोगों में लेप गुराकारी है। थोड़ी मात्रा में अमृत भी है ज्यादह मात्रा में विष भी है। इससे अनेक औष-धियें बनती हैं।

# धातु पृष्ट की गोली:-

शकीम शुद्ध १० ती० काली मिरच, दारचीनी, सीठ, कतीरा, गोंदकीकर, वसर पियाबासा हरेक ४ ती० हुटबेबिलसां मुसक्फी, शकरकरा, रब्बेसूम जरम्बाद, जुन्द बेदस्तर, जदबार खताई, दरूनज शक्षकी, मस्तगी, उद्धाम प्रत्येक २ तो० खुरफा सुख्म करक्स, करनफल, दार फिलफिल, त्याना, जैन्शियन पाई नील, हरेक ३ तीला, मुश्क खालिस १ तो० मिश्री १४ तो० कुट झान कर शक् गुलाब से खरल करके चने समान वटिए बनालें। रात्रि को एक बटि खाकर उपर से घी दूभ का विशेष सेवन करें घातु पुष्ट हो जायगी।

स्तम्भन के लिए सम्भोग से १ घन्टा पूर्व खाकर उत्पर से दूध पीएं जब तक नमक न खाया जायगा बीर्यपात न होगा।

#### दर्द कान

ग्लीसरीन १ तो० टिंचर श्रोपी १ तो० मिला-कर श्रेष्ट बूर्न्ट्रे कान में हार्ले ।

#### ज़काम

चकीम व जायफल समभाग गाय के दूध में विसकर मस्तक पर तिप करें दद सर व जुक़ाम शीच नष्ट हो जाता है।

(२) टिक्चर झफीम की २।२ बृत्दें नाक में डार्ले फौरन जुकाम गायब।

#### नेत्रबिन्द्

ज़िक सल्फ ग्रेन १ वाईनम श्रोपी आधा ब्राम फटकड़ी ग्रेन २ बोरिक लोशन श्रोन्स १ मिलाकर नेत्रों में डाले। नजले की दुखती श्रांखें ठीक हो जाती है। रोही को भी गुएए कारी है।

#### स्तम्भन

जावित्री, जायफल, लालचन्दन, पीपल, केसर लोंग, सोंठ, श्रक्तरक्तरा, प्रत्येक २ तो० पाईनील, १ तो० शुद्ध रूसी सिंगशरफ गत्थक शुद्ध प्रत्येक ६ मासा, शुद्ध श्रकीम ४ तो० सबको मिलाकर २।२ रत्ती की गोलियां वनार्ले। वक्त जरूरत एक खाकर दूध पीएं त्रीर्थपत तुर्पचीज खाने के बाद होगा।

#### अर्श नाशक

एसिड गैलिक प्रेन १० एक्स्ट्रेक्ट श्रोपी प्रेन ६, एक्स्ट्रेक्ट बेलंडीना प्रेन ४, 'सादामरहम श्रीन्स १ मिलाकर मस्सों पर लगाएं।

#### श्वेत प्रदर

एसिड सत्तपयूरिक हिल १० वृन्द टिङ्चर अफीम २ वृन्द एसिड गोलक गेल्ल १० रेटे लिस ४ बृन्द एक्सट्रेक्ट श्राराट लिक्निक बृन्द १४ जल मेन्था पिप० श्रोन्स एक मिला कर ऐ.नी एक २ मात्रा दिन में ३ बार पिलाएँ।

# गर्भणी की वमन रोकने के लिये--

केपती चूर्ण मेंन १, शुद्ध ऋकीम १ मेन,एक्स ट्रेक्ट हामे साम सस मेन २-एक गोली बनाएं। नित्य प्रात: खाएं।

#### गठिया--

पुटास बाई कार्च १० घेन, बाईनम कोलची साई १० बृन्द, टि० श्रोपीयम ३ बृन्द, मैंग कार्च १० घेन मेंग सल्फ १ डाम, टि० हाये सायमस श्राधा डाम, एक्बा मेन्थापिप १ श्रोन्स मिलाकर ऐसी ३ मात्रायें बनाकर प्रान: दो पहर व सायंकाल दिन में ३ बार १-१ दें। १ सप्ताह में श्राराम हो जायेगा।

#### प्रवाहिका--

कर्नाई चूना आया मा० अकीम शुद्ध आधी रक्ती मिलाकर विलाएं दिन में एक बार दे। ३ दिन में पेविश व दर्देशान्त हो जाता है।

#### तग्याक----

रीठे को पानी में खूब पकार्वे जब माग आने तमे तो रोगो को २ ता० पिनार्थे । इससे खूब कै होकर जहर अकीम नष्ट हो जायगा।

# आयुर्वेद---

में श्रकीम की उपविष माना गया है ''भाव मिश्र तिखते हैं —

अर्क त्तीरं स्नूही ज्ञीरं लांगली कर श्रीरकम । गुंजाहिफेनो धतूरः सप्तोप विष जातयः॥ मात्रा २ चावल से १ रती—२ रत्ती से विशेष खाने पर मादक और २ मासे से विशेष मारक है। विप के लक्षण जो ऊपर वर्णन किए गए हैं। इसकी अशुद्ध न्यवहार नहीं करनी चाहिए। प्रथम इसे शुद्ध करलें तब झल्प मात्रा में न्यवहार करें तो अमृत का गुण देती है। परन्तु उयादः समय तक नित्य इमका न्यवहार मनुष्य को अभ्यम्त बना देता है भिर समय पर मात्रा न मिलने से बेचैनी आलस्य शरीर में शुल व नेत्रों से पाना जाना शुक्र होजाता है इसिलए इसे चन्द दिन खाकर तर्क कर देना चाहिए।

अहिफोन शाधन

श्रकीम को पानी में घे लेकर जरा गर्म करें श्रीर गर्म ही गर्म कपड़े की दुहेरी तह में छान लें श्रथवा दलादिंग पेपर में से छान लें तो मिट्टी इत्यादि उपर रह नायगी श्रीर स्वच्छ श्रकीम नीचे चली जायगी इसे श्रास्त पर पका कर गादा करलें यही शुद्ध श्रकीम है। १ छटांक श्रकी । शुद्ध करने पर शुद्ध श्रकीम २॥ तो० प्राप्त होती है।

#### विपनाशक

यदि श्राहिफेन का विष चढ़ जाएगा नो श्वास के साथ श्रिहिफेन की गंध श्राने लगेगी ऐसी हात्तत में निम्नलिखित कोई भी उपचार किया जायगा तो रोगी मृत्युमुख से भी बच जायगा।

- (१) केसर या दारचीनी आरगड की केपल प्रत्येक ३ मा० काली मिर्च ४, ठंडे पानीमें पीस कर रोगी को पिनाएं।
- (२) १ तोना श्वेत फटकड़ी पानी में पीस कर ३ बार १-१ घरटा बाद पिलाएं या एक दम अवस्थानुसार पिलादें।

- (३) तूतिया ३ मा० केले का श्रर्क ३ तो० में मिजाकर पिलार्चे के होकर विष नाश हो जायेगा।
- (४) यदि यह पता लगनाए कि कितनी अफीम खाई है तो उससे दुगनी मात्रा हीराहींग पानी में घोल कर पिलार्दे बिष के द्वारा दूर होगा। पेट साफ हो जाने पर साय खूब तेज बना कर पिलार्दे इससे सारे शरीर में स्फुर्ती आजाएगी कमजीरी दूर हो जांगी।

#### रसायन अफ़ीम

छोटी इलायची के बीज, अक्तरकरा १-१ तें। वंसलोचन २ तो० छोटी थीपल ६ मा० वहमन मुर्ग्य ६ मा० कपूर भीमसैनी २ मा० जानित्री २ मा० जायपल ३ मा० कस्तूरी १ मा० अनिवध सच्चे मोती ३ मा० सोने के वर्ष ३१ चान्दी के वर्क १० किनीन सल्फ ३ मा० पाई नील १नो०। मोतियों को १२ घन्टे तक गुलाव जल में खरल करो किर इसमें पाई नील, किनीनसल्फ वर्क व कपूर कस्तूरी छाल कर दो घन्टे तक घोटो और समस्य द्वाएं कपड़ छन करके इसमें मिलादो तदोपरांत शुद्ध अफीम २ तो० एक कलई दार कटोरी में

जल ४ तो० डाल कर पकाश्री जब जरा गाड़ा जाय तो उसमें उपरोक्त समस्त चर्ण झाल कर खुब मिलाओ ताकि अफीम सब में यकसां मिल जाएह। फिर एक २ रत्ती की गोलियां बनाली। रात्रिकी एक गोली खाकर उपर से मिश्री मिला द्घ पीएं जिनका जुकाम, खांसी नजला पीछा न छोड्ता हो तन्त्रण लाभ होगा। स्त्री प्रसंग में आनन्द श्राएगा स्तम्भन इच्छानुसार होगा। प्रमेह नाश होगा। शरीर का दुई लक्षत्रा कानों की सनसनाहटो दिलकी कमजोरी मस्ट्रीं की सूजन आंखों से पानी बहना इत्यादि आराम होते हैं। खूबी यह है कि कोष्ठ बद्धता नहीं होती । महासायन बात व कफ प्रकृति वालों के लिए अमृत है। पित्त प्रकृति वाले बजाये मुश्क के चन्द्रन चूरा २तो० कपड़ छन करके मिलार्ले तो हितकर हो जायगी। बटियें तौल २ कर या मशीन द्वारा बान्धनी चाहिये ताकि छोटी बड़ी न हों। इस रसायन को ४० दिन खाकर फिर छोड़ देना चाहिए ४० दिन में पर्व्याप्त लाभ हो जाता है। यदि फिर स्वानी होतो २ सप्ताह बाद सेवन करें। शतशोनुभूत योग है।

# त्रफीम-विष नाशक उपाय

# [ श्री हरवंशप्रसाद जी पाठक ]

- (१) घी पिलाकर वमन कराना बहुत लाभदायक है।
- (१) पुराने काग़जों की राख पानी में घोलकर पिलाने से वमन होकर जहर उतर जाता है।
- (३) मकोय के पत्तों का रस पिताने से अकीम का विष नष्ट हो जाता है।
- (४) बिनौले और फिटकरी का चुर्ग देने से विष उत्तर जाता है
- (४)घाग की कपास के पत्तों का रस पिलाने से विष उत्तर जाता है ।
- (६) आगर बहुत देर हो गई व अफीस पच गई हो तो आध पात्र आंत्रले के पत्ते आध सेर जल में घोट कर ३-४ बार पिलाने से सारे उपद्रव शांत हो जाने हैं।
- (७) त्र्यरण्डी की जड़ या कोंपल पानी में पीस लेप करने से त्रिथ उतर जाता है।
- (= ) दी माठा हीरा हीग २, २ बारमें खाने से विष उत्तर जाता है ।
- (६) गायका वी श्रीर ताजा दूध पीने से विष बतर जाता है।
- (१०) ऋगीठे का पानी थोड़ा सा पीने से अकीम का विष उतर जाता है।
- (११) कपास के पनों का गर्म रस. इसली के पत्तों का रस, सीताकल के बीजों की गिरी पानी में पीस कर पिलाने से अकीम का विष अवश्य नाश होता है।

- (१२) रोगी को सोने मत दो, शिर में शीवल जल की धारा छोड़ो, थोड़ी श्रांडी पिलाक्यो।
- (१३) काली मिर्च, हींग और देवदाक बराबर २ पीस कर एक २ गोली के समान खिल्ह्यों।
- (१४) वे होशी की हालत में झींक लाने की दवा सुंघाओं, शरीर को मली छौरपमीने लाने वाली दवा दो।
- (१४) नाड़ी बैठ गई हो तो लाइकर एमी-नियां १० बृंद अथवा स्प्रिट एमीनिया एगेमेटिक ३० मे ४० बृंद तक जल में मिला कर पिलाओ।
- (१६) सरकोंका की जड़ पानी में घिस कर पिलाने से अफीम का जोहर उत्तर जाता हैं।
- (१७) घी के साथ सीठ और काला भागरा पिलाने से बहर उतर जाता है।
- (१८) बच तथा हींग मट्ठा के साथ पीने से जहर उतर जाता है।
- (१६) बड़ी कटेरी के पनों का रस दृथ के साथ पीने से जहर बतर जाता है।
- (२०) नमक, मृली के बीज, शहद, सीया का क्वाथ पिलाने से जॉल्टयां होकर श्रकीम का जहर उत्तर जाता है।
- (२१) माल कांगनी के पत्तों का रस शक्ति के अनुसार ४ नोले तक पिलाने से आहर उतर जाता है। एक बार से फायदा न होने पर बलाबल विचार कर दुबाग देना चाहिये।

# बेला डोना (Belladonea)

( कविराज कृष्ण शंकर भट्ट एत्त० एम० पी० )

ಜಾಂಭಾ ಪ್ರಕಾಣ

इसके पेड़ का नाम एटोपिया वेलेडौना है इसके पत्ते जड़ और सन्व काम में आते हैं।

इस बृत के फूलने पर पत्ते तोड़ कर सुखालेते हैं शास्त्र पर पत्ते कम पूर्वक लगे रहते हैं एक के नीचे एक होते हैं उपर के पत्ते एक दूसरे के सामने होते हैं प्रत्येक पत्ता ३ से = इंच तक लग्वा होता है पत्ते की शक्त आंडाकार किनारे साफ उपर की ओर नोकदार नीचे की तरक छोटा सा उठत होता है, खुरासानी अजवायन और पत्रे के पत्तों के समान होते हैं इसकी जड़ को पत्रमड़ के दिनों में खोद कर सुखा लेते हैं यह जट अलेडिक (अंडे की शक्त) टुकड़ों में भिन्नतां है। हे से १ फिट तक लम्बे है से १ तक मोटे होते हैं, रंगन बाहर से हलकी भूरी और आंदर से मफेद, तोड़ने पर आमानी से टूट जाती है।

इसके पत्ते श्रीर जड़ों से एक सत्त्र प्राप्त होता है उसे एट्रोपीन कहते हैं। बेरंग सुई के समान पतली २ कल्में होती हैं स्वाद—कड़वा होता है।

विष प्रभाव

इसके सन्य एटोपीन के खिलाने से मुख और इतक खुश्क होकर निगताने में तक्त तीफ होती हैं नक्षर धुधांला जाती है आंखों की पुनतियां फैल जाती है त्यचा सूखी नाड़ी मंद्र यदि अधिक मात्रा में दिया जाये ते यह तत्त्त्त्त्त् शीव शुरू हो जाने हैं-चेहरा आंखें त्वचा सुर्ख हो जाती हैं-नाड़ी की गति बहुत तीझ हो जाती है कभी २ दुगनी हो जाती है। त्वचा गमें और एक समान रक्ताम हो जाती है या इस पर सुर्ख २ ददोड़े पड़ जाते हैं पुतिलयां बहुत फैल जाती हैं मूत्र तक़्तीफ से आता है कभी २ वन्द भी हो जाता है कभी अतिसार हो जाता है श्वास मंद और गाध (गहरा होता है मुख्डां होनी है कभी २ रोगी प्रलाप करता है हदय की गति हक जाने से या श्वासावरोध होने से मृत्यु होती है।

# चिकित्सा-

श्रारम्भ में सृमकपम्प से श्रामाशय को धो डालें या वमन कारक श्रीषधियों से वमन कारक श्रीषधियों से वमन कारके । टैनिक [भाजूका सत्व] टी [चाय] क्लोरल दें। मार्कीन, क्रैकीन, या पाइलो कार्पीन का इंजैक्शन करें, उत्ते जक बस्तु दें गर्भ पानी की बोतल लगायें। ½ भेन पाइलो कार्पीननाइट्टे का इंजैक्शन करें।

श्वामावरोध होने पर कृत्रिम श्वास जारी करार्ये क्योंकि एट्रोपीन मूत्र द्वारा निकलती है इसलिये कैथेटर से भी मूत्र निकालते रहें ताकि मूत्र जजब न होने पाये।

#### उपयोग

वाद्य-

इसका लिनिर्मेंट, प्लास्टर, मरहम, बेला डोना

ग्लीसरीन वरा राह स्नायविक शूल पार्श्वशृल भींका दर्द, गौट, रुमेटिज्म । गठिया ) के दर्दी में अधिक काम में आता है।

साइटिका (गृत्रसी ) में एट्रोपीन का त्त्रचा मध्य इंजैक्शन बहुत शीघ्र लाभ देता है।

दर्द और प्रदाह को दूर करने के लिए बेला डौना ग्लीसरीन, या क्लोडियम बेला डौना फौड़ों कार्ब कल गर्भाशियक शोध, अंडकोप का शोध विसर्प, आदि में प्रयोग होता है।

तिनिमैन्ट आफ बेता डोना के इस्ते मात से कंडू कम हो जाती है, दुर्गन्थ युक्त पसीने को दूर करने के लिए इसमें यूडी कोलन मिलाकर काम में तेंते हैं।

वेता डोना का मरहम खालिस या इसमें कोनाइम मिला कर बन्नासीर के दर्द श्रीर जलन को लाभ देता है।

जरुवा त्रगर किसी कारण से शोध हो जाने के कारण अपना दृधन पिला सकती हो और यदि इसके दृध को कम या खुश्क करना ही हो तो रतीसरीन वेलडौना लगाने से शोध नष्ट हो जाता है औ दृध मृत्व जाता है।

गर्भाशय के प्रदाह में ग्लीमरीन वेलाडीना लगाने स बहुत लाभ होता है। यदि गर्भाशय के मुख में बण हों छीर श्वेनप्रदर हो १ औं मृग्लीम--रीन में ४ से १० ग्रेन एक्स. वेला डाना मिला कर विलायती रुई में लगा कर प्रयोग करना लाभ देता है-।

एक्स. वेला डोना २ वे० टेनिक एसिड ७ वे० काका बटर आवश्यतानुसार मिला कर वर्त्त बनायें फिर गर्भाशय में रखें ह इससे गर्भाशय मुख अण तथा लिक्षोरिय। में यह वर्ती अधिक लाभ देती है तथा कब्ट प्रद मासिक एवं पेड़ के दर्द में भी इससे लाभ होता है। जब औक थल मस कोप (नेत्र परिचण यंत्र) नेत्र की परीचा करने के लिए पुतली को फैलाने के लिए बरतना हो एट्रोपीन ४ प्रे० की औस वाला सल्यूशन काम में लाते है यह और आंख की बिमारीयों में भी लाभ देता है।

#### अपन्तरिक प्रयोग

एट्।हीन कभी २ मर क्यूरल सेली वेशन (पारे से मुख का आना) हो रोकती है। एकपूट टांसलाइटिस (तीत्र कंठ प्रदाह ) में वेला डीना टिंचर कम मात्रा में एकोनाइट के साथ मिला कर देने से रोग रुक जाता है कभी रेचक श्रीपधियों को तीव करने के लिए या जो रेचक श्रीपधियां पेट में मरोड़ पैदा करती हैं इस की रोकने के लिये इन में प्रायः एक्स बेलाडीना मिला दिया करते हैं। बतौर इन डायरक्ट श्रोपेरी एन्ट वेलाडीना को प्रानी कब्ज और आइती कब्ज में या रक ह हाजत के समय दर्द में देते हैं। इसलिये ! से 🕴 प्रेन एक्सट्रेक्ट आफ बेलाहोना को सुबह व शाम इस्तेमाल करने से यह शिकायन जाती रहती है कभी २ जब तीब रेचक और्याधयों के प्रयोग करने पर भी दस्त नहीं होता १ या २ घेन एक्स. बेला डीना वाली बर्त्त के प्रयोग से टड़ी खुल कर हो जाती है।

इन्टम्टाइनल एटसट्रकशन ( आंतों में ककावट पड़ जाना ) पेरोटो नाइटिस ( उदर की शोध ) एन्टिराइटिस और एपेन्डी साइटिस ( आंत्र शोध ) में वेताडीनाका एल्कोहालिक एक्सट्रैक्ट खकेता या घोपियम [ खफीम ] के साथ मिलाकर देना बहुत लाभदायक होता है और उदर के शुल को इससे बहुत लाभ होता हैं।

# रक्त परि अमग और हृदय

इससे दिल के दर्श व बेचैनी की बहुत लाभ होता है कमजोर दिल वाले को यदि क्लोरो-फार्म देना हो तो इसके बजाय एट्रोपीन की पिच-कारी देना श्रच्छा होता है।

श्वास-बातिक कास, काली खांसी में विशेष लाभ देता है बुद्धावस्था की कास में और पुरानी ग्वांसी में कायदे मंद है जुक्ताम में रतु बन जब धाधक बहती हो एटोपीन के सेवन से जन्द कायदा होता है।

यहमा के रोगी का गाति स्वेद बन्द करने के लिये एटापीन इंजेंक्ट करने हैं।

वर्त्यों के रोग बृन्द २ पेशाय करने में या विस्तर पर मूत्र करने में यह अति लाभ देता है।

स्वप्त दांच में यह जिनकी मुत्रेन्द्रिय मुस्त, शिथिल होगई हो सोते हुवे बिना स्वप्त देखे वीर्य स्वजित होजाता हो उनको भी लाभ देता है।

दर्श गुर्दे में जब पथरी मुत्र पथ में छटक जाये तीव श्ल हो उसको निकालने और दर्द नध्य करने के लिये बड़ी मात्रा देने पर लाभ होता है। बस्ति प्रदाह, खंड कोष प्रदाह मूत्रकच्छ, मृत्र में एंठन होना पेंडू के सब प्रकार के दर्दी में बेलाडीना को पिलाने से बहुत फायदा होता है।

#### **औ**षधियां

१-- टिंचर वेलेडीना १० दू० टिंग् लोबीलिया ईथर १० ,,

₹0,,
१ श्रौंस
तशन्नुजी] में दें
ধ ৰু ০
ęo ,,
1 310
१ औं

ऐसी १-१ मात्रा दिन में ३ वार आवश्यकताः नुसार देना होल दिल (पलपीटेशन) श्रीर हार्टपेन [दर्ददिल] में लाभ देता है।

३—टिं० वेलेडीना	२ बृन्द
ब्रोमोफार् <b>म</b>	₹ ,,
बाइनम इपिकाक	¥ "
मिसच्या एगिडली	₹ \$to
एकाडिस्टिलेटा	्र औं

ऐसी १-१ मात्रा ४-४ घंटे बाद दें। कुक्कर ग्वांसी के लाभ देती है।

४ एक्स० बेलाडोना	🕯 म 🍳
एलोइन	4 77
स्ट्रिकनीन सल्फ	y <sup>1</sup> -7 - 9 9
पत्व एपिकाक	<u>j</u>

सव की एक गोली बनालें ऐसी १-१गोली दिन में दोबार दें पुरानी कोण्डब्ख्युला की दूर करती है।

४ एक्स <b>ं वेलेडी</b> ना	¥ -1.	ग्रे०
पल्व केपसीसाई	1	7,
एक्स० केसकरा	3	

सत्र की एक गोली बनालें आवश्यकतानुसार रात को सोते समय दें। कब्ज को दूर करती है।

# डिजिटेलिस (Digitalis)

( कविराज शशिकान्त मिश्र भिषगाचार्य )

**-:**(%):-

#### पहचान

इसके चार से बारह इंच लम्बे, ६ इंच चौड़े पत्ते होते हैं। जहां डंडी पत्ते के माथ लगती है वहां एक छोटा सा पर लगा हुआ होता है। शक्ल में अपडाकार नोक तेज नहीं होती पत्तों का किनारा कंगूरेदार (दन दानेदार) उपर की सनह लोमयुक्त और मांदसटज रंग की होती है। नीचे के भाग का वर्ण जरा फीका होता है मगर रोम इस पर अत्यधिक होते हैं। इसकी गंध हल्की मगर प्रिय, चाय के समान होती है।

स्वाद-अत्यधिक कड्वा और युग होता है।

#### विशेष विश्लेषण

#### डिजीटाकसीन:--

यह न्द्रकोसाइड की तरह का सन्य होता है डिजीटेलिस का यह सबसे अधिक नीत्र भाग है।

६—एक्स० बनाडौना एल्कोर्हालक प्र० एगरीमीन

दोनों की एक गोली बनालें रात की सोत समय यहमा रोगी का राजि स्वेद रोकने में लाभ देती हैं। ज-दिंत वेलेडीना = वृत

एक्स० कीका लिक० १४ ,, इन्स्युः ह्युक्तो १ श्री०

ऐसी १-१ मात्रा द्वा की १ गिलाम वारित बाटर में सिताकर ६-६ चंटे बाद दें। ममाने की प्रदाह में लाभ देता है।

معاولت المعطيات

यह बड़ा जहरीता होता है और इसमें बड़ी भारी शरीर में धीरे धीरे जमा होने की शक्ति होती है।

यह पानी में इल नहीं होता, ईथर में बड़ी कठिनता से इल होता है। लेकिन क्लोरो कार्म और अल्कोहल में आसानी से इल होजाता है यह सत्त्र बहुत पतली २ और खेत कल्मों की शक्ल में मिलता है।

मात्रा---ुर्क से 🖖 ग्रीन तक।

# (२) डेजिटेलेन ---

यह एक चमकदार ग्ल्कोस:इड होता है जिस में डिजीटेलिस के प्रभाव का बहुत सा भाग होता है। इसको डीजिटीलीन वेरम भी कहते हैं। पानी के १०० भाग में १ भाग मिल जाता है।

मात्रा- के से तक भीन नक।

#### (३) डीजिटिलीएन

यह एक मार्कीन के प्रकार का गलकोसाइड होता है जिसका भागायनिक असर अभीनक पूरे तौर पर मालम नहीं होमका। यह पानीम हल होजाता है और इसलिये यह हाइपोडिमिक इंजैक्शन के लिए ठीक है। पिचकारी देने की माला कि मेन है। कहा जाना है कि इस सत्य में क्यूमोलेटिव नहीं होता है। यह तीनों गलकोसाइड सत्य कार-डिक स्टीम्युलेन्ट प्रभाव रखने वाले हैं।

# (४) डीजिटोनीन

यह ग्लुकोसाइड की किस्म का सत्व है। इसका रासायनिक प्रभाव सेनेगा के जौहर सेनीन से इस कदर मिलता जुलता है कि इन दोनों के प्रयोग में कुछ अन्तर ही प्रतीत नहीं होता इसका प्रभाव कार्डिक डीप्रेसेन्ट होता है इसलिये उपर्युक्त जौहरों से यह भिन्न हैं।

# (५) डिजिटेनेन

इस जौहर पर कोई फिजिलोजिकल असर नहीं होता। उपयुक्त पांची जौहरों के रासायनिक विश्ले पर्णों में नाइटोजन नहीं होती।

स्वीट—कौलाद के मिश्रग्, साल्ट, असिटेट श्राफ लैंड, सिकीना।

मात्रा— ृसे २ ग्रेन तक (चृर्मित पर्नो के कप में)

# इसरो निर्मित औषधियां

इतप्रयुजन डिजिटेलिस (Infuson Digitalis)

सूखे पत्ते ६० घोन, खौलता हुआ जल १ पाईट इस मिश्रण में डिजो टोनीन बहुत होती है। मगर डिजीटेकसीन बहुत नहीं होती।

मात्रा—र से ४ में न वाले क्लुइड श्रींस तक। टिंक्चर डिजिटेलिम (Finetura Digitalis)

म्बुश्क पत्ते २ श्रींस शक्कोहल (६० फीसदी वाला) २० श्रींस परकोलेट (छान) कर तेवें। इसमें डिजीटेलीन श्रीर डिजीटाक्सीन दोनों होते हैं।

मात्रा-- ४ से १४ ब्रा

क्योंकि इन मिश्रणों में डिजीटेलिस के सत्व न्यूनाधिक होते हैं इसलिये बहुत से चिकित्सक चूर्णित पत्रों को श्रधिक पसन्द करते हैं।

# प्रभाव

बाह्य

पत्तों से त्वचा पर किसी कदर ख़राश पैदा होती है सगर यह निश्वय नहीं कर सके इनके सत्य त्वचा द्वारा अभिशोषित हो सकते हैं या नहीं।

#### **ऋान्तरिक**

अन प्रगाली और आंतें

आंनों के पाचक रस को कुछ उत्तेजना देता है। कभी २ थोड़ी खुराक में भी दस्त खौर वसन शुरु हो जाते हैं।

रक्त

यह रक्त में बहुत शीघ मिल ज।ता है मगर रक्त पर इस का कोई अपसर नहीं होता।

हृदय

पहला प्रभाव डिजीटेलिस का यह होता है कि दिल की गति शिथिल हो जाती है, हृद्य की फैलने की गति का समय बढ़ जाता है परन्तु सिकुड़ने के समय में कुछ फर्क नहीं आतो मगर इसकी ताक़त बहुत बढ़ जाती है यहां तक कि बड़ी गाता में देने से जानवरोंमें भी दिल बिलकुल फ.के रंग का होजाता है, क्योंकि शारी रक भाग इस कदर जोर से सिकुड़ते हैं कि दिल की साख्त के अन्दर एक बन्द भी रक्त शेष नहीं रहने देते। नाड़ी इसीलिये ताक़त बाली होजाती है मगर तेज रफतार कम होजाती है, अगर इस दबा के देने से पहले दिल की गति बेकायदा तौर पर होरही हो इस दबा के इस्तेमाल के बाद बाकायदा होजाती

है अगर वह दत्र। आन्तरिक प्रयोग के रूप में सेवन की जाये तो दूध पिलाने वाले जानवरों में दोनों विन्दो कल्जाके हरएक भागपर प्रभाव पड़ता है। पर मेंड ों में जिस समय कि एक भाग मुकड़ रहा होता है उस समय दूसरा भाग फैल रहा होता है, मेंडकों में दिल सुकड़ने की हालत में हरकत करने से रह जाता है और इस अवस्था में दिल निहायत जोर से सकड़ा हुआ होता है देखने में बिलकुल कीक रंग का होता है और किसी किसम कास्टिम्युलेशन करने से हरकत नहीं करता लेकिन दूध पिलाने वाले जानवरों में दिल अन्त में फैलने की हालत में गति करने से रह जाता है यदि डिजीटेलिस मेंडक के विन्टीकल के किसी भाग पर मुकामी तीर पर लगा दिया जावे तो वही भाग सिकुड़ता है जिसको इसे लगाया जावे, लेकिन द्य पिलाने वाले जानवरों में ऐसी हालन उपस्थित नहीं होती, बाज हैवानों में इससे श्रोरीकल सुरन होजाते हैं मगर इनको शक्ति में कुद्र फर्क नही श्राता। सारे हैवानी भ इसकी बड़ी मात्रा से स्रोगीकल की गति बहुत बेकायदा हो जाती है।

यह प्रभाव श्रांचिकतर इस द्वा के प्रयोग करते से दिल के श्रवलों पर सीधा श्रमर पड़ने के कारण होता है श्रींग यह इस प्रकार से सावित होता है कि मेंडक के दिल की डिजीटेलिम जिम स्थम मुकामी तौर पर लगाया जावे जो टानिक तौर पर ही नहीं मुकेड़ता बल्कि यदि ऐपैक्स के दुकड़े की दिल से काट दी जिसमें खयाल किया जाता है पड़े नहीं होते, इस पर इस द्वा की लगाया जावे तो इसकी भी सुकड़ने की ताकत बहुत बढ़ जाती है, श्रीर चुकों के एस्वरीश्रों के दिल पर भी इसका श्रसर पड़ता है जिसमें श्रभी पट्ठे उत्पन्न नहीं हुये होते मगर बागस के उन श्रन्त के सिरों की तेज़ी बढ़ जाती है जो बिल पर समाप्त होते हैं क्यों कि बागस को जरा सा स्टीप्यूलैंट करने से हृद्य किल्कुल चलने से बन्द होजाता है हालांकि श्रीपिंध के प्रयोग करने से पूर्व इननी ही स्टम्यूलेशन से कुछ भी श्रमर नहीं पड़ता। गमे खून वाले जानवरों में श्रगर दोनों वागस काट दिये जायें, हालांकि डिजिटेलिस से दिल के मुकड़े की शक्ति बढ़ जाती है मगर नाड़ी श्रिथिक सुस्त नहीं होती, मुमकिन है कि मेडला में वागस के केन्द्र पर भी किसी प्रकार स्टीम्युलैंट प्रभाव पड़ता हो।

डा० कुशनी महोदय ने यह सिद्ध कर दिया है कि डिजिटेलिसवर्ग की बहुत सी श्रीप-धियों से श्रन्य भागों की बनिस्वत बागस पर श्रसर पहिले शुरू हो जाता है। यह सिद्ध किया गया है थोड़ी खुराक से भी दिल एक निश्चित समय में बहुत श्रधिक काम कर सकता है। इस प्रकार हरएक बिस्ट्रीकल के सुकड़ने पर श्रधिक समय लग जाता है।

#### नाड़ी

कम मात्रा से रक्त का द्याव बहुत बढ़ जाना है यह रक्त के द्याव का बढ़ जाना किसी कद्र हद्य की शक्ति बढ़ जाने के कारण होता है, लेकिन कुल असर इस कारण से उत्पन्न नहीं होता, क्योंकि जब मंडक को डिजिटेलिस दिया जावे तो देखा जाना है मेंडक के पांव की भिल्ली खररोश की मेसिनिट्री की नाड़ियां बहुत जोर से मुकड़ने लगती हैं और इसी प्रकार का प्रभाव

छोटी नसीं में भी होता है जिनको शरीर से बिल-कुल प्रथक किया जा सकता है, और जिसमें मस-नवी तौर पर डिजीटेलिस और रक्त का दौरान मिलाकर गुजारा जावे, इसलिये जाहिर है कि नाड़ियों का सुकड़ना इनके अजलाती तकके पर हिजिटेलिस का सीधा प्रभाव पहने के कारण होता है क्योंकि स्वस्थ जानवर्रों में यह प्रभाव बानसबत इनके िनके स्पाइनल कार्ड को निकाला गया है या जिनमें इन भागों को काट दिया गया है जो इन स्थानों की परवरिश करते हैं। अधिक होता है इमलिये सिद्ध होता है कि डििटे-लिस से मेडलरी और स्पाइनल वेसी मोटर केन्द्र स्टिम्य लैंट हो जाते हैं। विचात्मक मात्रासे इन केन्द्रों और छोटी नाड़ियों की अजलाती तबक की तेजी सुस्ती में तबदीन हो जाती है और इस लिये रक्त का दबाव कम हो जाता है।

#### वृक

वृक्ष पर डिजीटेलिस का प्रभाव मुश्तका तौर पर पड़ता है, कई यों का मत है कि स्वस्थावस्था की हालत में इन पर डायोरेटिक प्रभाव पड़ता है। परन्तु बहुतसे चिकित्सक इस मत से सहमत नहीं, हृदय के रांग में भी वृक्ष के ऊपर इसके प्रभाव में ही नहीं सुकेड़ता बिलिक यदि ऐपैक्स के दुकड़े को दिल से काट दो जिसमें ख्याल किया जाता है पट नहीं होते, इस पर इस दवा को लगाया जावे तो इसकी भी सुकड़ने की ताकृत बहुत बढ़ जाती है, और चूजे के एम्बरीओ के दिल पर भी इसका असर पड़ता है जिसमें अभी पट्ठे उत्पन्न नहीं हुये होते मगर बागस के उन अन्त के सिरों की तंजी बढ़ जाती है जो दिल

पर समाप्त होते हैं क्योंकि बागस को ज़रा सा सटीम्यूलेंट करने से हृद्य बिल्कुल चलने से बन्द हो जाता है हालांकि श्रीषधि के प्रयोग करने से पूर्व इतनी दी स्टीम्यूलेशन से कुछ भी असर नहीं पड़ता। गर्म खून बाले जानवरों में अगर दोनों वागस काट दिये जार्ये, हालांकि डिजिटेलिस से दिल के सुकड़ने की शक्ति बढ़ जाती है मगर नाड़ी अधिक सुस्त नहीं होती, मुमकिन है कि मेहला में वागस के केन्द्र पर भी किसी प्रकार स्टीम्यूलेंट प्रभाव पड़ता हो।

डा० कुरानी महोदय ने यह सिद्ध कर दिया है कि डिजिटेलिस वर्ग की बहुत सी औष-धियों से अन्त भागों की बनिस्वत वागस पर असर पहले शुक् हो जाता है। यह सिद्ध किया गया है थोड़ी खुराक से भी दिल एक निश्चित समय में बहुत अधिक काम कर सकता है। इस प्रकार हर एक विन्टीकल के सुकड़ने पर अधिक समय लग जाता है।

वहत चिकित्सक भिज्ञ मत रखते हैं। अमूमन इन हालतों में डायोरेटिक प्रभाव पड़ता है इन में मत भेद इस कारण है यदि शरीर की नाड़ी की तरह बुक्क की नाड़ी सुकड़ जायें तो बहुत थोड़ा रक्त बुक्क में जाता है लेकिन डिजिटेलिससे बुक्क की नाड़ियां बहुत न सङ्कोच को प्राप्त हों तो दिल की ताकत बढ़ जाने के कारण और रक्त के वेग के अधिक होने के कारण बुक्क में रक्त अधिक आता है इसलिये मूत्र भी अधिक नि.सरित होता है।

बहुत से चिकित्सकों का मत है कि डिजिटे- लिस और डिजिटालसीन इक की नाड़ियों को

चपनी विशेषता से फैलाते हैं। मत्र बनाने वाल भागों के उपर डिजिटेलिस के असर की निसबत कुछ विश्वासनीय बात नहीं कही जा सकती।

#### शारीरिक ताप

कम मात्रा का शरीर के तापमान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। जहरीली मात्रा लेने से स्वस्थावस्था में भी शारी िक ताप कम हो जाता है।

#### श्वाम

मामूली मात्रा से खास पर कुछ भी असर नहीं पड़ता, अहरीली मात्रा से कुण्कस में रक्त के श्रधिक न जाने के कारण कमजोरी हो जाती है।

#### वात नाडी

बात नाड़ियों पर इसकी मात्रा का कोई प्रभाव नहीं होता । यड़ी खुराक से मस्तिष्क के रक्त येग में कर्क पड़ने के कारण शिर शुलहोने लगता है और सर में चक्कर आते हैं कर्ण शक्ति और नेत्र की शक्ति में अन्तर पड़ने लगना है।

इसके जहर की हानतीं में बहुत से गेगियाँ को प्रत्येक वस्तु नीली नीली नजर आने त्तगती है।

# गर्भाशय

के कारण यह सुकड़ जाना है।

#### उपयोग

वाद्य प्रयोग~

बाह्य प्रयोग में डिजिटेलिस का इस्तेमाल नहीं होता है।

#### श्रान्तरिक प्रयोग

यह औषधि प्रभावशाली खौषधियों में से एक है। विशंष कर हृद्य रोग की यह अमोध श्रीषधि मानी जाती है।

अगर किमी रोगी के दिल की गति श्रदय-वस्थित श्रीर तीब हो गई हो रो डिजिटेलिस के कम मात्रा में देने से हृदय की गति में शक्ति श्राजायेगी श्रीर नियमित चलने लगेगी तथा तेज चाल कम हो जावेगी।

डिजिटेलिस मुत्रल भी है जिसकी मृत्र कम मात्रा में रक्त वर्ण का आता हो इसके देने से ख्लू कर आने लगता है। दिल की बीमारी में जब कि रोगी को दर्द और नक्त तीफ होती है वह इस से दूर हो जाती है, क्योंकि इससे रक्त की गति भी ठीक हो जानी है चेहरे की रंगत जो नीलाहट को लिये होगई हो यह भी ठीक हो जाती है। डिस्पेनिया की नक़लीक कम होजाती है और एक दो दिन में ही रोगी की तबियत अज्ली हो जाती है वह बीमार जोकि डिजिटि-लिस को सेवन कर रहे हों उनको अगर एक दम उठा कर बैठाया जाय तो तीत्र मुच्छा श्राकर मर सकते हैं।

डिजिटिलिस के सेवन के बाद यदि वसन गर्भाशय पर स्टिम्युलैंट असर पड़ता है जिस आजाय तो इसके मायने हैं वह और नहीं चाहता ऐसी अवस्था में रोगी को डिजिटेलिस बन्द कर देना चाहिये। यह हृदय की शक्ति को बद्।ता है। अगर रोग के कारण फेफड़ों और शरीर की नाड़ी में रक्त जम जावे इसके प्रयोग सं लाभ होता है रक्त पर इसका और कोई प्रभाव नहीं पड़ता केवल रक्त का द्याव अधिक होजाता है।

# हदय के पट्टों की बीमारियां

हृदय के अन्दर यदि बसा या और किसी प्रकार की कमी है। तो डिजीटेलिस के देने से कोई लाभ नहीं होता क्योंकि जब धमनियों का खिचाब बढ़ जाये तब हृदय बीमार को अधिक जोग लगाना पड़ता है, और जो तन्तु बसा में बदल गये हैं उन के फट जाने का भय रहना है।

टाइफाइड फीवर,रुमेटिजम, स्कार्लटफीवर और घातक रोगों से बचने के बाद यदि हृदय का कार्य चीया होगया हो तो डिजिटिलस के सेवन से बहुत ताकत आजाती है इसकी क्रेंकीन के साथ देना चाहिए बहुत से मनुष्य जो नौका चलाने का ज्यायाम करते हैं या श्रीर ऐसी ही कठिन बरजिश करते हैं उनकों प्रायः श्वास करते हैं अने लगता है और उनके हृद्य का सिरा अपने स्थान से वाहर की ओर हट जाता है मगर कोई रोग हृद्य कपाटमें पैदा नहीं होता, फौज के सिपाहियों में भी कई महीनों के सफर के बाद इसी प्रकार की हालत होसकती है। इन सब में डिजिटेलिस के सेवन से बहुत लाभ होता है जब हृद्य का कार्य बेकायदा श्रीर निहायत तेज होजाये यानी पलिपटे-शन होजाये तो इस से बड़ा लाभ होता है।

इसका रक्त प्रदर में भी ऋच्छा प्रभाव पड़ता**है**।

# सिद्ध कस्तुरी रमायन तिला

रजिस्टर्ड

यह एक प्रकार का सुगन्धित तैल है जो अनेक बहुमूल्य औषधियों द्वारा बड़ी मेहनत से तय्यार किया जाना है, इसकी पूरी पूरी तारीक करने के लिये सध्यना आज्ञा नहीं देती, इसलिये केवल इतना ही बना देना पर्याप्र होगा, कि इसकी मालिश से लिक्क न्द्रीय की दुर्बलता, शिथलता, छोटापन, टेट्रापन व पतलापन दूर होकर, इन्द्रिय में टट्राप, स्थूलता, और दीर्घता आ जाती है, जिससे कि युद्ध मनुष्य भी युवा के समान आनन्द प्राप्त कर सकता है। सन्तानोत्पत्ति तथा गृहस्थ सुख से बंचिन महरूस। हुवे अनेक पुरुषों ने इस से आशातीत लाभ प्राप्त करके इस दिन्यीपिष्ठ की मुक्त कण्ठ से प्रशंमा की है। मृल्य प्रति तो० १०) ३ मारी की शिशी २॥)

बहुत आयुर्वेदीय औषध भागडार चांदनी चौक देहली।

# कर्पूर ( Camphor )

[ ले॰—एम॰ के॰ जैन H. H. P. मैनेजर 'जीवन सुधा' ] -ॐिहिं ििहिं%∽

यह एक स्टीयेरापटीन है जो सिनेमम कै-म्क्रीरा नामी पेड़ की लड़की से प्राप्त होता है। ईस्ट इन्हीज चाइना और जापान के मुल्कों से श्राता है। प्राकृतिक हालत में यह पदार्थ निहा-यत मैली शक्त में होता है। कारखानों में लाकर इसे मैली मशीनों के जरिये माफ करते हैं।

कारखानों से ये दो हालतों में बन कर आता है एक प्रकार टिकियों की हालत में जिन्हें फ्लाबर आफ कैंग्कर कड़ते हैं, दूसरे डलों की हालत में जो श्रासामी से चुरा हो जाते हैं यदि इनको अल्कोहल ईथर या क्लोरी कार्म के साथ मिलाया जावे तो इस में से एक खास किस्म की निहायत तेजा गन्य आने समती है स्वाद तेज श्रीर कड़वा हो जात! है, इसके बाद मुंह में ठएड महसूस होती है। काफ्र पानी पर तैरता रहता है। इसको जलाने से फौरन जल जाता है। जलते बक्त रोशनी अच्छी देता, परन्तु धवां बहुत करता है। साधारण नाप पर भी यह सदा उड़ता रहता है। जुरा अधिक ताप देने पर उड कर बर्तन के ठगड़ भाग पर जम जाता है। १ भाग, तारपीन के तेल २ भाग में और क्रोलिव श्रीयत के चार भाग में भनी प्रकार से इल ही जाता है। दूध, ईधर, अल्को हल और क्लोरो-फार्म में भी बखुबी हल हो जाता है।

मात्रा — २ से ४ मे न तक।

एलोपैथिक में इसके निम्नलिखित मिश्रण
तय्यार होते हैं। ब्यायुर्वेदिक ब्यौर यूनानी में बेशुमार दवाइयां इसके योग से तय्यार होती हैं।

- (१) एक्वा कैम्कोरी।
- (२) लिनिमेन्टम क्रैम्फोरी।
- (३) स्प्रिट कैंस्कोरेटा।
- (४) टिं० कैम्फोरेटा कम्पोजिटा।
- (४) कैम्फ्रोडीन।

अलावा इसके और भी अनेक हकार के मिअगों में बर्ता जाता है।

# प्रभाव

बाह्य-

बेहनी तौर पर ये कई प्रकार के लिनिमेंन्ट्रम में काम त्राना है इसको इरीटेन्ट प्रभाव के लिये बहुत से रोगों में बरतते हैं । ये चीज लोकल अनेस्थैटिक है और इसी लिये यदि कानिक कमे टिज्म या कानिक स्वैलिंग की वजह से किसी जगह की सख्ती दूर करने या बच्चोंके सीनेकी बीमारियों, माइएलजिया, न्यूरेलजिया, लम्बेगो (कमर दर्द) साइटिका (गृधमी) में दद की शान्ति के लिये इसे प्रयोग करते हैं। इसके मिश्रण से बना हुवा निम्न योग न्यूरेलजिया और दान्त के दर्द के लिये बहुत उत्तम साबित हुवा है।

[ ज्ञंप प्रष्न ६० पर देखिये ]

# सैलोल Salol.

ते० " श्री० विरक्त "

यह सोडियम सेलिसिलेट से बनता है। सेलि-सिलक एसिड और फेनोल को या सोडियम सेलि. सिलेट और फासफ़ोरल होराइड को या सोडियम सेलिसिलेट व कार्बोनाइल क्लाराइड को मिलाने से तैयार किया जाता है।

इसकी छोटी छोटी बेरंग करमें किंचित मात्र सुगंध युक्त व नि:स्वाद होती हैं।

नोट:—इसमें ६० की सदी सेनिसिलक एसिड और ६० की सदी कार्बेनिक एसिड होता है।

# घुलनशीलता-

यह जल में नहीं घुलता १ भोग-२० भाग एल्कोहल (६० की सदी) में नीज किक्स्ड और बालिटायल आइल्ज (स्थिर और ऋस्थिर तेल) में घुल जाता है इन्टम्टाइनल एन्टिसपटिक अर्थान आंतों के कीटाणुओं को मारने वाला और आनलरोसिक है।

# प्रभाव।

#### वाह्य-

अभ्रक ४ भाग और सैलोल १ भाग मिलाकर वर्गो पर छिड़कते हैं त्यह कोटाणु नाशक है।

## ग्रान्तरिक-

क्योंकि इसका प्रभाव आंतों श्रीर मूत्र संस्थानपर कीटारामाशक पड़ता है इसलिए अधिकतया इसको वृक्क-वस्त्याशय आदि मूत्र संस्थान के रोगों में ही विशेषकर वस्त्याशय शल्य की क्रियामें प्रयोग करते हैं।

पहले इसे इन्टस्टाइनल ऐन्टिसेपटिक अर्थात आंत्रिक कीट। गुनाझक होनं से है जा डार्यारया, टाइ- फ़ाइंड फीवर (आंत्रिक सन्तिपातिक स्वर यो मोतिफारा) और आंत्रिक त्य में सेवन किया करते थे लेकिन अब इसका प्रयोग कम होता जा रहा है क्योंकि बहुत से डाक्टरों का ख्याल है कि आंत्रिक कीटाणुनाशक होने में शक है फिर भी इसकी इस मतलब के लिए इस्तेमाल करना हो तो विस्मय सेलिसिलेट और सोडियम कार्बोनेट के साथ मिला कर देना चाहिए।

यह त्रांतों में जाकर सेलिसिलिक एसिड और कार्वोलिक एसिड में परिवर्तित होजाता है। इसलिए इस से कार्वोक्रमा (बोल कार्वोलिक-मूत्र में कार्वोलिक एसिड निकलना) उत्पन्न होजाने का भय रहता है। इसको न तो बड़ी मात्रा में देना चाहिए और न लगातार काकी टाइम तक, अन्यया वृक्क के रोग शोध वगुरह होजाते हैं।

# अनुभूत प्रयोग।

*	सेलोल				U	प्रेव
	विस्मथसेलिसिलेट				•	मे॰
	सोडा बाई कार्व				१०	ष्रे•
	ऐसी ३ खुराक दिन	में	3	वार	डायरिया	में
मुप	रीद हैं।					

२ सेलोल	७ घे०
वैराफ़ी लिक्चिड	<del>हे</del> ड्रां०
पल्ब एकेशी	२० ग्रे०
एकामनेमोमाई	१ झीं०

ऐसी १-१ मात्रा दिनमें ३ बार दें समरहायरिया, श्रारटीकेरिया और सिस्टाइटिसमें लाभदायक है।

3	सैलोल	१० मे
	पैराफीन	🖟 ब्रा०

श्राइल सेनेटेलाई सोरप श्रोरंशियाई पल्व एकेशी १० वृ० एका सिनेमोमाई १ औं ने ड्रा० ऐसी १-१ मोत्रा दिन में दो बार दें। सूजाव ३० में० और उसकी गठिया में साभवद है।

# सल्फोनाल (SALPHONAL)

डा० डी० डी० शर्मा।

यल हाइड्रोसल्फेट को ईसीटोन के साथ मिलाने से मरकेपटोल प्राप्त होता है। उस में पर्मेगनेट-आफ पोटेशियम मिलाने से परकेपटाल में श्रीकसी-जन मिल कर सल्कोनाल बन जाता है।

इसको वे रंग चौड़ी चौड़ी कल्में होती हैं जिनमें गंध श्रीर स्वाद कुछ नहीं होता है।

# चुलन शीलता।

४४० भाग शीतल जल में १ भाग १४ भाग खोलते पानी में १ माग ६० भाग एल्कोहल (६० फीसदी)में १ भाग ,, ,, ईथर में १ भाग ३ भाग होरोफार्म में १ भाग इस होजाता है।

मात्रा—१० से ३० घ्रेन तक चूर्ण रूप में या यूसलिज के साथ दिया जाता है या गर्म पानी में प्रताकर उसी समय पिला दिया जाता है जब क्लाकुल शीतल हो जाये।

#### प्रभाव

श्रीर श्रीपध प्रयोग । सक्कोनाल में हिपनीटिक (नींद लाने वाला)

प्रभाव होता है। इस भौषध के प्रयोग करने से हृदय सुस्त नहीं होता मगर श्वास की विकृति होजाने से मृत्यु होजाती है। इसका सेवन उन्हीं अवस्थाओं में किया जाता है जिन में क्रोरल हाइबुट का सेवन होता है क्योंकि यह आसानी से धुलता नहीं मुश्किल से बहुत समय के बाद धुलता है-इस लिये इस का प्रभाव पड़ने में दो या इस से कुछ अधिक घंटे लगते हैं भोजन करने के अधिक समय बाद असर पैदा होता है कभी कभी इस का प्रभाव यहां तक कि दूसरे दिन जाकर पड़ता है जगर इसको किसी गर्म अक में मिला कर दिया जावे तो इसका प्रभाव शीघ होता है लेकिन इसका प्रभाव इतना होता है कि यह आन तौर पर सोनेसे डेढ़ घंटे पहिले दिया जाता है। सरकोनाल सोने की आदत कम पैदा करता है और बाद में कोई बुरे लक्षण पैदा नहीं होते । सल्कोनाल का अभ्यासी होजाने से शारीरिक कमजारी दिमाग्री चीगाता मार्नासक दुवैजना मांस पेशियोंका शक्तिहास, न्युट्रेशनमें फर्क होजाता है आर क्ष्मा मंदो होजाती है इस से कभी २ शरीर के उपर दाने दाने से निकल आते हैं।

# क्लोरीन

डा॰ एम॰ एस॰ टंडन F. R. C. S. (London)

क्रामोंकोपिया में क्लोरीन पृथक बनान नहीं की इसे दो तरीकों से हासिल किया जाता है अर्थान छोरीनेटेड लाइम और कोरीनेटेड सोडियम से

प्रांमड नाइट्रो हाइड्रो होरिकम डायल्युटम में मी कोरीन होती है। इसके वैसे तो कई मिश्रया तैयार होते हैं परन्तु औपधियों में ज्यवहृत कम दोने से उनको नहीं दिया जाता है। होरींन का एक मिश्रस् अत्यन्त उपयोगी है। वह नीचे दिया जाता हैं— क्लोरीन मिकश्चर—

एक १२ औंस वाली बोतल लेकर इसमें ३० मेन पोटाशियम छोरेट को चूर्बित कर डालरें। चौर इस के उपर स्ट्रॉग हाइड्रो छोरिक एसिड को डालकर बोतल के मुंह पर मजबूत हाट लगावें। फिर बोतल को जरा हिला कर देखें यह गैस शीघ ही बननी ग्रुह होगई है तो बोतल को २-२ या ४-४ मिनट बाद हिला दिया करें। यदि शीत काल हो तो बोतल को गर्म पानी में रक्खें जब इसमें क्लोरीन गैस के उत्पन्न होजाने से बोतल सब्जमायल जर्द रंग की गैस से भर जाय तब इसमें योड़ा थोड़ा जल मिला कर हिलाते जायें, ताकि गैस पानी में हल होती जाये जब बोतल पानीसे भर जाय तब इसमें २४ या ३२ मेन किनीन सहफेट और सीरप आफ लाइम (नीवू का या नारंगी का शर्वत) मिलाहें।

बोतल में गैस उत्पन्न होने के बाद जब पानी मिलाने लगें तो थोड़ा योड़ा मिलायें और बोतल पर डाट लगा कर इसे हिलाते जायं जिससे ्गेस पानी में मिलतो जाये। यदि एक बार ही बोतल को पानी से भर दिया जाये तो क्रोरीन गैस पानी में हल होने के अलाबा बोतल से बाहर निकल आती है।

मात्रा—१-१ श्रींस की सात्रा में ३-३ घंटे या ४-४ घंटे बाद दें। यह मरीज श्राधिक कमजोर हो तो ३-३ घंटे, में श्रीर मरीज श्राधिक कमजोर हो तो ३-३ घंटे, में श्रीर मरीज श्राधिक विहास है तो ४-४ घंटे में देते रहें ७ दिन यह दवा देने के बाद ६-६ घंटे बाद १-१ मात्रा दें। बच्चों को यह श्राधी मात्रा हैं। ३-४ बरस के बच्चों को १-१ हाम। ४-७ बरस के बच्चों को ४-४ श्राम। १० बरस के बच्चों को ४-४ श्रीम प्रत्येक तीसरे या वीथे घंटे बाद यदि मिक्ट बर ते श्रीम प्रत्येक तीसरे या वीथे घंटे बाद यदि मिक्ट बर ते श्री माल्यम होता जरासा पानी मिलाया जासकता है।

टाइफाइड (मोतीमारा) के ज्वर में शुक्त से ही इसे देना चाहिए इससे जब तक काभ न होजाये भोजन का खास ध्यान रखना चाहिए।

#### प्रभाव

यह एक बड़ी जबरदस्त प्रतिनाशक श्रोर कीटाखु नाशक दवा है।

#### उपयोग

क्लोरीन गैस-होरिनेटेड लायम की शक्त में नालियों और पालानां वरीरह की बदबू दूर करने के लिये बहुत इस्तेमाल की जाती है। क्रतदार बीमारियों के बाद कपड़े को शुद्ध करने के खयाल से भी इस्तेमाल किया जाता है। कपड़े की इससे धोने के पूर्व धातु वाली बस्तु श्रीर रंगीम बस्तु कमरे से हटालेनी चाहियं या इनके ऊपर कोई सफेद वस बांध देना चाहिए। खिड़्कियों और चिम्नानयों को बन्द कर देना चाहिए । सेंधानमक ब्लैक चाक्र मेगनीज चौर सल्फ्यूरिक एसिड को मिला कर यह गैस पैदा कर सकते हैं। इस के बाद फौरन माहर आजाना चाहिए दरवाजा खूब बन्द करदेना च।हिए दरवाजी पर कागज लगा देना चाहिए। क्रोरीन वाटर बदबूदार जख्मों के धोने के काम भी भाता है। एक मुरक्कव भी जिस को इलैक्टोजोन कहते हैं का एन्टिसेपटिक प्रभाव होरीन के कारण ही होता है। यह समुद्र का पानी होता है जिस के एलकेलाइन क्रोराइड को एलकड्रानाइसिस के द्वारा खारी हाइपोक्नोराटस में तबदील किया गया हो इस की किटाखनाशक शांत इतनी ही है जितनी कि लाइकरसाडी कारीनेटी में।

#### **धान्नरिक**

मुंह की बीमारी में रारारे के तौर पर सेवन होती हैं। इस का एक अर्क जो कि स्ट्रॉग होइब्रो-क्रोरिक एसिड k बृठ पोटेशिम क्रोरेट ९ प्रेठ पानी १ फ्लुइड औं मिलांगे से बनता है

जिस में की होरोन मिली होती है स्कार्लेट फियर में इलक व नाक की पिचकारी से साफ करने के लिए लाभदायक है। इसकी वाष्प रवास नालियों में इतनो खारास पैदा करता है कि इसे कभी सेवन नहीं करना चाहिए।

# हायोसायमस Hyocymus.

[लं० डा• बी॰ रामाराष M.B. श्रायुर्वेंद शास्त्री]

खुरासाना श्रजवायन एक महत्वपूर्ण श्रोपधि होते हुए भी वैद्य इसका बहुत कम प्रयोग करते हैं। यह भारत में विदेश से श्राती है, यह इसके नाम से ही स्पष्ट है। पूर्व भारतीय वैद्य इसकी बाहर से ही प्राप्त करने थे।

यह धत्तर वर्ग की श्रीपध है। खुरासान, ईरान, मिश्र, उत्तर भारत में पारवत्य प्रवेशों में उत्पन्न होती है। खुरासानी श्रववायन श्रीर श्रववायन इस नाम से दो प्रकार की वनस्पति मिलती हैं, नाम में श्रिक्ष काधिक साम्यता होने से यह नहीं समभ लेना चाहिए कि इनके गुरा में भी मान्यता होगी। यह सोलेनेसीई वर्गकी श्रीपधामें जिसमें धत्तर बेलाडोना श्रादि विधाक प्रभावशाली श्रीपधियां हैं मान्मिलत हैं। इमका वृत्त श्रववायन के पीदे से कुछ वड़ा होता है। पत्र कट कंग्रेदार, फुल श्वेत, श्रनार की किनयों के समान परन्तु पुष्प पत्र कंग्रेदार व मूल भाग मुखी मायल होता है। पक्र कर देश होता है। जिसमें बीज होते हैं। यह श्रववायन के बीज से दुगने बड़े बुकाकार श्रीर धूमर वर्ग का होता है। खार में विज निक्त चर रहाहांना है।

# रासायनिक पदार्थ-

न्वुरासानी श्रजवायन में हायोमायमीन (Hyosoyamine) नामक सन्व पदार्थ होता है जिसकी रासायनिक रचना एट्रोपीन के समान होती है इसकी सूचिवत त्रियार्थिश कन्में होती हैं। यह एट्रोपीन की श्रपेना जल में शाझता से विलोन होजाता है। हिल श्रकोहल में शाझ हल होजाता है यह एट्रोपीन के समान नेत्र कर्नीनिका प्रसारक है। हायोमायमोन श्रन्य मोलेनेमी वृनों से भी प्राप्त होता है। जल में उबालेनेसे यह ट्रोपिक एमिड श्रीर ट्रोपीन से विभाजित होजाता है। इसके श्रलावा-हायोग्कापीन (Hyoscri-

pin) कोलीन (Cholin) फैरी आइल, अंडे की सफेदी, और एक लेसदार वस्तु, पोटाशियम नाइट्रेट में दो प्रतिकात तक हायासायमीन होता है। बीज में भी तैल, वसा, २६ प्रतिशत, एक एम्पाइर युमेटिक आइल (Empyreumatic Oil) होते हैं।

ऐलोपैथी में इसका बहुत प्रयोग होता है। यह काली जातिभी खुरामानी अजमायन (Hyoscyamus है। इस के पत्ते कुछ इंटल सहित सब को तोड़ कर ख़श्क कर लिय जाता है।

इसके पत्ते बेलाडोने और धतूरसे मिलते हुए बेरोम होते हैं।

## संयोग विरुद्ध

लंड एमिटेट, लाइकर पुटासी, सिल्बर नाइट्रेट वानस्पतिकाम्ल

#### प्रभाव

वेदनाशान्तकर (Anodyne) निद्राकारक (Narcone) श्रीर श्रवसादक (Sedative) 1

Official Preparations.

## दिंचर हायोसायमस

(Tineture Hyoscyamus)

निर्माण विधि-हायोसायमस के पत्तों और पुष्प युक्त झालाओं का नं २० का चूर्ण २ औस, अल्को-हल ४४% यथोचित। पहिले चूर्ण को २ फ्लुइड श्रीस झलकाहल से तर करके फिलटर पेपर द्वारा टफ्का कर १ पाइस्ट टिंचर में पूरा करलें।

मात्रा—। से । पलुइड ड्राम ।

## सक्सस हायोस/यमस

(Succus Hyoscyamus)

नृतन पत्रों पुष्पीं और ज्ञाखाओं को कुचलने से जो रस प्राप्त होता है उसके प्रति तीन भाग में १ भाग

# जीवन सुधा

६० प्रति शत की चलकोहल मिलादे चौर एक सप्ताह रखा रहने दें फिर फिलटर कर लें।

मात्रा-- रे १ फ्लुइड ड्राम।

# एक्सट्रेक्टम हायोतायमस

(Extractum Hyoscyamus)

विधि--नवीन पत्ते पुष्प फल और कोमल पल्लवों को कृट कर रस निकाल लें फिर उसे कमशः १३० डिगरी कारनहाइट का ताप दें। फिल्टर कर उसका रंगीन आंश प्रथक करदें, फिर उस छने हुए भाग को २०० डिगरी कारनहाइट की अगिन देकर सोडे जैसा 'घन बनालें। उस छने हुए रंगीन आंश को छानकर फिर मिलादें और लगभग १४० डिगरी के ताप पर इतना शुष्क करें कि वह मृदु अव- तेह के समान हाजाय।

मात्रा-- से न प्रे०।

# पिलुलाकालोसिन्थ डिसएटहायोसाइमाई

(Pilula Calocynthi-dis-et Hyoscyami)

निर्माण विधि-धिनकालोसिन्थ कम्पोन्ड १ औ० एक्सट्रैक्ट हायोमायसम १ औ० दोनों की सिलार्ले।

सध्या-४ सं = भे०।

नीट-आकिशल ।

# क्लोरोफ़ार्म हायोसाइमाई

(Chloroform Hyoscyami)

हायोक्तायमस के जड़ का चूर्मी ३० भाग, क्रोरी-कार्म २० भाग ।

नोट-यह क्वाराफार्म एकोनाइटीनी के समान प्रस्तुत किया जाता है !

# टिंक्चर हायांसाइमाइ रेडिसिस

(Tructure Hyoscyami Radicis)

हायोसायमस के जड़ का चूर्य ४ भाग अलकोहल (६० प्रति शत) ४० भाग में ७ दिन रखदें फिर फिलटर करलें।

मात्री-२० से ६० बून्द ।

## गुगा तथा प्रयोग

हायोसायमान जा एक इसका प्रभावात्मक सत्व है अपनी रचना में एट्रोपीन के समान होता है। यह फिक्सड अलकेतीज की उपस्थित में साधारण अग्नि पर एट्रोपीन में बदल जाता है।

इस कारण से हायोसायमस में धतूरे या बेलेडीना के समान गुण होने चाहिए परन्तु उनके प्रभाव में यह भेड़ पाया जाता है।

१-सुष्मा पर इस का अवसादक श्रासर अधिक होता है।

२-यह श्रांत्र की गति कृमिवन संकोच को तेजा करता है आमातिमार में मरोड़ को कम करता है।

३-बेलाडौना की अपेता इस से मादक प्रभाव (अज्ञानपन) तो कम होता है परन्तु मस्तिष्क पर शान्ति कारक (Sedative) तथा निद्रा जनक प्रभाव शीघ होता है।

४-वेलाडौना जैसा यह हृद्य की **बल और** उत्तेजना प्रदान नहीं करता।

४-बेलाडीना की अपेका यह मुत्रेन्द्रिय पर शान्ति कारक प्रभाव आधिक करता है क्योंकि यह बस्ति की रलेप्मिक कला की नाड़ियों के आन्त्राय भाग पर शान्ति कारक और दुर्जलता जनक प्रभाव करके मिसपेशियों के तन्तु की ऐंठन को नष्ट करता है!

६-हायं। सायमस के सत्व हायोसीन से नेत्रिपिएड का तनाव कम होजाता है परन्तु यह प्रभाव वेलंडीना के सत्व एड्रोपीन से निर्वलता जनक होता है।

७-भिन्त २ प्रकार की बेदना में मस्तिष्क की उत्तेजना को शान्त करने के लिए और नींद लाने के लिए जैसे उन्माद अनिद्वारोग, हिस्टीरिया उचा की उन्मत्तावस्था में वस्ति बेदना में इसका प्रयोग उत्तमा से हाता है।

इसलिए हायोसामीन के तरल सत्व की १-१ घंटे के अन्तर से तीस तीस बूंद को १ श्रींस पानी में मिला कर पिलाते रहें। जब नींद श्राजाये तब नहीं देना चाहिये। उन्मत्त शराबी को भी दिया जा सकता है। इसकी ४-६ मात्रा ही अपना काम कर डेती हैं।

निन्द्रा लाने के लिए " हायोसामीन " १ प्रेन को शुद्ध उद्या जल १ ड्राम में मिश्रण कर हायपोडर-मिकसिरज में भर त्वचामध्य प्रवेश करहें।

दस्तावर श्रोपिधयां जो पेट में मरोड़ दर्द पैदा करती हैं उन के इस दोष को कम करने के लिए इसे प्रयोग किया जाता है।

मृत्र मार्ग की चीस चबक को दूर करने के लिए जैसे—बिस्त-प्रदाह प्रोस्टेट प्रनिथ प्रदाह तथा अश्मरी त्रादि में विस्तिस्थ मांस पेशी त्राद्येप निवारण के लिए इसका सस्व '' हायोसायमान '' लाभ देता है यह कुछ मृत्र कारक भी है वहां होने वाल प्रदाह युक्तिमल्ला में वात तन्तुत्रां पर ज्ञान्ति कर प्रभाव करता है।

जब बार बार मुश्र विसर्जन के लिए बस्ति में दें ठन होती है तब यह विशेष लाभकारों है। उस समय इसको जारां के माथ मिलाकर सेवन करना चाहिए। इस अवस्था में मूत्रल श्रीपांधयों के माथ जैसे बुक्कु श्रीर यैजोइक एसिड में मिश्रण कर सेवन कराने हैं।

खांसी और दम। में श्वाम पथ के मंकीचन तथा ऐं उनकी कम करने के लिए, वण की जलन दर्द आदि को कम करने के लिए पुलिटम के रूप में इस्तेमाल करते हैं। कर्नानिका प्रमारण के लिए तेल में डालते हैं। यह बेलाडीना के ममान, शोध नाशक. उत्माद हर, नेत्र कर्नानिका प्रमारक और नींद लाने वाला है। थोड़ी मात्रा में यह शान्तिकारक और हद्य को शक्तियाय है। अधिक मात्रा में उस्तेनक अत्यधिक मात्रा में तिर्वलताजनक है। हद्य से सम्बन्ध रखने बाले अवयवी श्वाम, कमर आदि के विकार में इसका उपयोग किया जाना है। बच्चों में इसकी बड़ी मात्रा से सहन करने की शक्ति होती है। चीए बढ़ों में कम मात्रा भी अपना गहरा प्रभाव डालती है। धारीसायमम के मत्थ:-

# हायोमायमीनी हाइड्रोब्रोमाइडम

(Hyosemæ Hydrobromidum) यह खुरासानी अजवायनके पत्रों और सोलेनेसाई वृत्तों में पाये जाने बाले ज्ञारीय सत्व का हाइडो-ब्रोमाइड है। यह वर्ण रहित रवेदार होता है बायु के लगने पर स्थिर रहता है, गलता नहीं, स्वादमें कड़वा होता है जल में भी बता से घुल जाता है। इसका एक भाग ४ भाग जल में घुल जाता है।

#### प्रभाव

निद्राजनक (Narcotic)। मात्रा- १ से १ मेन तक

प्रयोग—मुख था त्यचा मध्य प्रवेश के लिये हायोसीन (Hvoscine)

यह हायोसोमस का ज्ञारीय सत्य है जो एक उडनशील तेल होता है, अपने प्रभाव में "हायो-सायमीन" से ४ गुना अधिक प्रभावशाली है। यह स्वयम औषध रूप से व्यवहृत नहीं होता इसके हाइ-होक्कोरेट, हाइड्रांबोमेट और लज्या काम में आते हैं इनमें अकं लक्या अधिक उपयोग में आता है।

Not official Preparations १-इञ्जैक्सिको हायोसीनी हाइपोडमिका-(Injectio Hyoscinæ Hypodermica.) शक्ति-१००० बू॰ डिलवाटर में १ प्र०। मात्रा-४ से १० बू०।

# हाइपोडमिक लमीनी

(Hypodermic Lamele)

प्रत्येक लेमीली में १२०० में० हायोमीनी हाइ-डोबोमाइड हाता है।

# गटा हायांसीनी

(Guttæ Hyoscine)

२॥ तो० डिलवाटर में २ भेन हायोसीनी हाइड्रो-बृंगमाइड होता है।

#### उपयोग तथा प्रभाव

यह एट्रोपीन से इतनी अधिक साम्यता रखता है कि कहीं २ ही कुछ भिन्नता हापाती है। यह शान्तिकर और निद्राजनक है परन्तु एट्रोपीन जैसा इसमें हृदयोक्षेत्रक प्रभाव नहीं है। इससे मस्तिकावर्ष की उत्पादक नाड़ियां कमजोर होजाती हैं इसकी १२०

मेन की मात्रा बहुत शीघ नींव ले पाती है पहले सुस्ती ऋंध स्तव्धता होकर रोगी सो जात। है उठने पर उसे किसी प्रकार की थकान या कमजोरी महसूस नहीं होती, केवल कुछ काल के लिये कंठ में स्खापन धनुभव होता है।

उन्माद श्रार मस्तिष्कके रोगों में बहुतही पुरणसर निद्वाकारक श्रीधध है। इसका सर्वोत्तम प्रभाव त्वचा में इंजैक्शन करने पर होता है। इसे १२०० प्रेन से श्रीधक मात्रा में उपयोग करना ठीक नहीं क्योंकि किसी २ में इसके सहन करने की श्रीक्त कम होती है। इससे एट्रोपीन से उत्पन्न होने वाले तोब उन्माद जैसे लज्ञ ए बहुत कम होते हैं या होते ही नहीं यह एट्रापीन से श्रीध कनोनिका को प्रसारित कर देता है इसका यह प्रभाव एट्रापीन से ४-४ गुना श्रीधक होता है।

डा॰ कास का कहना है कि:-

उन्माद में हाथासीनी हाइड्रो ब्रामाइड के प्रयोग करने पर शोघ प्रभाव पदा हाता है। रागा को बेचैनी जल्द शान्तिमय निद्रा में परिवर्तित होजाती है। रोगी सुख की नींद सोजाता है। मद्यान्याद प्रसृतिकोन्माद, या अन्य अनिद्रा रोगों में अन्याधक लाभदायक सिंख हुआ है। ऐसे अनिद्रा रोगा जिसके झगेर में उन्माद का प्रभाव छिपा हो इसके सेवनसे उसे तत्काल नींद आजाती है।

हाः वृस के कथनानुसार यह वृक्करोगों में श्राच्छा प्रभाव करता है हृदयशूल में भी सेवन किया जा सकता है।

तपैदिक के राजिस्बेद की रोकने के लिए और दमा, बार्यसाब, अफ़्रीम तथा कीकीन के नशे वाली को चिकित्सा में लाभदायक है।

जर्मन के सुप्रसिद्ध हा शनीहरलीन कहते हैं 'व्यापक अवसन्तता पैदा करने के लिए 'स्कोपीलेमीन तथा मार्कीया" की मिश्रत करके प्रयोग करते हैं जिस से आपरेशन भली प्रकार होजायें।

ज्वर सहित तीबोन्माद के रोगियों में यह विशेष लाभदायक पाया गया है इस से किसी प्रकार के नुक- सान होने की सम्भावना नहीं। यृक्क विकारों में मार्किया सर्वथा निषद्ध है और जब सब शान्तिकारक भौषाध्यां केल होजाती हैं इसका प्रयोग उस समब निभैयतापूर्वक करना चाहिए।

शुक्रमेह में हाइड्रो ब्रोमेट, हाइड्रो क्वेरिट, हाइड्रि-जोडेट, इत्यादि हायोसीन की अपेत्ता अधिक लाभ-दायक पाये गये हैं!

## हायोसायमीन

(Hyoscyamine)

यह बिल्कुल एट्रोपीन जेंसा ही होता है। इसकी रचना में कोई अन्तर नहीं होता। और हायोसीन बाहायोसिनिक एसिडमें विश्लेषण किया जा सकता है। यह स्फटिक और विकृत दोनों दशाओं में मिलता है। इसके सफेद रवे होते हैं। या श्याम धूसर रंग का सत्व पदार्थ होता है।

#### हायासायमीनी सन्फास

(Hyoscyaminæ Sulphate)

यह सोलेनेसाई ब्रुतोंमें तथा खुरासानी अजवायन के पत्तों में पाया जाने बाला एक ज्ञारीय सत्व का सल्फेट है।

यह पोला या पीतरवेत वर्ण को स्फटिकवत गंध-रहित पाउडर हैं। जा वायु में खुला रहने पर नमी से युक्त होजाता है।

स्वाद—ांतक्त और चरपरा होता है।

इसको खास तौर पर वायु से बचाते हुए गहरे अम्बरी रंग की मजबूत डाट वाली शीशी में रखना चाहिए।

## चुलनशी**ल**ता

यह २ भाग, १ भाग जल में तथा १ भाग ४॥ भाग अल्कोहल में श्रीर बहुत कम क्रोरोफार्म में तथा ईशर में घुल जोता है।

#### प्रभाव

निर्वल निद्धाजनक (weak hypnotic) कायिक शान्तिकारक और सामुद्रिक रोगों में लाभदायक है।

मात्रा $-\frac{9}{200}$  से  $\frac{1}{100}$  प्रेन तक

प्रयोग - मुख यो त्वचा द्वारा।

# ह।योमायमीनो हाइड्रोबामाइडम

(Hyeseyammae Hydro-bromidum) छोटे २ मफंद दानेदार रवे होते हैं जो ३ भाग १ भाग जल में घुल जाने हैं।

मात्रा-१ २०० से १/१०० प्रें तक

# हायोमायमीनी सल्कास के गुण तथा प्रभाव

यह दोनों जारीय पदार्था नाड़ी की गर्मी की मंद करते हैं और कनांतिका प्रसारक हैं। विश्लमकारक हैं शारीरिक तापमान की रोकते हैं, धर्मानयों के तनाव की वृद्धि करते हैं।

श्राधक मात्रा प्रयोग करने पर तहत्त्वण् नाड़ी की चाल को रोक देते हैं। बात प्रस्तता श्रास्तता श्रोर निंद्रा उत्पन्न करते हैं। हायोमीन की श्रोपेत्ताकृत हायोमीयमीन प्रभाव में एट्रोपीन से श्राधक समानता रखता है। श्राधकत्या विना विश्वम के निद्धा पैदा करता है। हायोमीयमीन एट्रोपीन से श्राधक पुतती को फेलात' है इस में विश्वम कारी प्रभाव कम श्रीर निद्धाननक प्रभाव एट्रापीन से श्राधक है। इसमें जलद नजा लाने वाला गुण रहता है यह बात मंडल को जानित देता है श्रार लोगल हाइड्रोट या मार्फिया से कम नुकसान दायक है।

डा० रिगर साहब यहते हैं: — मैं ने अशुद्ध सबस्य का उत्माद में अयाग क्या, इसकी एट्रोपीन से शुक्तना करने पर काई अन्तर माठ्य नहीं हुआ। यह कनीनिकाप्रमारक है परन्तु एट्रापीन से कम नाभदायक है।

डा० कुश्नी की सम्मति हैं: -- नौका पर सवार होने से पूर्व यदि इसे कुछ दिन नक १/१०० प्रे० की मात्रा में प्रयोग कर या इसे कुछ समय तक प्रतिदिन ६-१ घंटे पर बार बार लेते रहे सामुद्रिक रोग नष्ट करने में श्राद्धितीय हैं।

कृतिज (पद्मायात) सहित कम्पन में कम्प का राक्त के लिए तथा पारदीय पद्मायात के लिये असीय स्प्रीषध है परन्तु प्रयोग के लिये यह हाथोसीन से कम शक्ति का है।

पागलपन, अनिद्रा, मरोनमाद, दमा, कास, अर्थांग सिंहत कम्प, बात वेदना, कम्पन, इन रोगों में इसका प्रयोग किया गया परन्तु हायोसीन की अपेत्रों कम शक्ति का प्रतीत हुआ। व्यक्षता मानसिक रोग, श्रम, शंका, स्मृति अपस्मार-उन्माद पुरातन बुद्धिविकार में इसे प्रयोग किया गया।

पागलपन में बिना किमी चुरे प्रभाव के होरल की ऋपेचा निश्चित निट्ठा पैदा होती है। तीब्रोन्माद में त्वचामध्य इंजैक्शन करना ठीक होता है।

#### वान विकार

अर्थाङ्ग कम्पन में यह वह काम करता है जो किसी औपध ने कभी नहीं किया—अचेतना उत्पन्न किये बिना ही अंग के कम्पन के चार घंट तक रोक देता है। जब सब औपध्यां केल हो जाती हैं उस समय बायु कम्पन को ठीक करता है। इसी प्रकार यह बुद्धावस्था का कम्पन, पार्रीय कम्पन, हिस्टीरिकल आक्षेप नियंतना जन्य कम्पन केरिया को शमन करना है। बाल तथा युवा दोनों की अवस्था में बान को शान करना है बात वेदना में इस के प्रयोग से ज्ञान तन्तुओं को उत्तेजना कम होकर वेदना कम हो जाती है।

## ग्राह्मेप

यह आजेप को नष्ट करता है इस कारण आजेप युक्त काम श्वाम, हिचकी में लोभदायक हैं।

#### मुत्र पध

यह रेचक है, वृक्क और वांस्त की वेदना और स्वराश को नष्ट करता है।

#### निद्वाकारक

यह समस्त शरीर की वेदना शास्त करता है और नींद लाने वाली श्रीपध है। जब श्राफीम का ब्यवहार अर्नुचित होता है उस समय इस के प्रयोग से नींद श्राजाती है। मात्रा

ह।योसायमीन (स्फटिकबन् ) हैं ते से कि प्रेन मेन । हायोसायमीन (बिकृताकार) कि से के कि मात्रा में नवन उन्माद में कि से श्रेन की मात्रा में भली प्रकार हलका कर होशियारी से प्रयोग करना चाहिये। क्योंकि कुछ रोगियों में सहनशक्ति कम होती है।

हायोसायमीनी सल्फ र्यंक से रेक मेन त्वचामध्य इंजैक्शन की मात्रा के से के प्रेक श्रिथक से अधिक के कम से कम त्राह प्रेक

डाक्टरी नुस्हो

१—दित हायोसाइमाई ३० ब० सोडा वेजो एट्स १० बे० एलक्सर सिकराइनी ४ वृत इन्छ्युजन बुक्कू १ स्त्रोम ऐसी १ मत्त्रा ४-४ घएटे बाद देते रहें वस्ति प्रदाह ( सिस्टाइटिस) बुक्क प्रदाह ( पाइना-इट्स ) में लाभ देता है। २—सोडा बोमाईड १४ मे०

सक्काई हायोसाइमाई } ड्राम
सीरप पेपे वरस १ ड्रा०

जल १ ओं०

ऐसी एक मात्रा रात में सोते समय अनिद्रा

(नींद के न आने) में काम देती है।

३—हायोम।यमस हाइडोबोम।इड , ८. प्रें० मिल्कश्यर २ प्रें० गोली बना कर सीते समय पत्तावातीय कस्प में लाभ देती है।

प्र-एक्स० हायोसायमस ि ब्रेन जिन्माई विलेरियेनेट्स २ ब्रेन एक गोली बना कर दिन में दो बार लें। बात ऋबसादक है।

प्रत्यस्य हायोसायमस ३ में ० पत्य कैम्कोरी २ में ० एक गोली बना लें गत में सोते समय सुजाकी उसे जना में लाभ देती हैं।

# अभिक्रास्थ्र अस्त्र अग्निमन्दीपनी विटेका

(अजीर्ग का अनुभृत इलाज)

श्रजीर्ग रोग देखने में तो एक साधारण सा माल्यम होता है, परन्नु वास्तव में यह सब रोगों की जड़ है खाने पीने में श्रमावधानी करने से श्रवसर बदहज़ मी होजाती है, जिससे कि मुंह का मजा खराब, खाने की तरफ़ हिंच न होना, छाती में बलन, खट्टी २ डकारें, भोजन करते ही दस्त की हाजत होना, पेट में गड़गड़ाहट का होना, जी मिचलाना, श्रकारा, दिन प्रतिदिन कमजोरी का बदते जाना, इन सब हासतों में हमार्ग श्रिनसन्दीपन बटिका निहायत ही श्रवसीर है। चन्द रीज के इस्तेमाल से कुठवत हाजमा बदकर गिजा श्रच्छी तरह तहलील होने लगती हैं श्रीर श्राहार रस बनकर शरीर दिन प्रतिदिन मोटा नाजा और बलवान हो जाना है। मृल्य ४० गोली १॥)

बृहत आयुर्वेदीय औषध भागडार चांदनी चांक देहली।

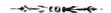
とうしゅ しょうしょう スプス スプス アイディス スプス スプス

hated aboth the thoth shot show how in the shot sh

कर्पूर २ भाग, क्लोरोकार्म १ भाग, क्लोरल हाइड्रेट ४ भाग, कार्बोलिक एसिड १ भाग, थाइमोल २ भाग।

#### श्रान्तरिक

इसको प्रतिश्याय के लिये श्रधिक बरतते हैं। दौरान खून पर इसका उत्तेजक प्रभाव पड़ता है। यह एन्टिपायोरेटिक, डायफोरेटिक अमर करता है। ये एक्सपैक्टोरेन्ट मिश्रगों में भी पड़ता है। इसे एन्टिस्पैजमोडिक तौर पर हिस्टीरिया आदि रोगों में भी दिया जाता है। बहुत से चिथित्सक इसे कालग की बीमारी में भी बड़ा गुग्गकारी पाते हैं। जहरीली मात्रा में देने से दिमारी एक्साइट मैंट होजाती है। सर में चक्कर आते हैं, नव्या सुस्त होजाती है, सर में दर्द होने लगता है। मेदे में जलन व दर्द होने लगता है। मरीज़ बेहोश होजाता है और आखिर कार मौत वाका होती है। इसमें थोड़ी सी एन्टिपाइरेटिक तासीर भी होती है। ऐसी हालत होने पर औरन स्टमक ट्याब से पेट साफ किया जाय और अमेटिक दवाई देकर वमन कराना चाहिये यदि मुमकिन होसके मैडिकल एड लेनी चाहिये।



# Have You ever Come to Use.

Oui

"Kamdeo Rasayan Pills?"

if not

# Please must try once

You won't need other tonic when you are benifited by its magical effects after a complete course of its utilization.

It is a sure remedy for:-

Postarorrhoca, Spermatorrhoca, Nocturnal Emission, Premature Ejaculation, Masturbation or Onanism, Sexual debility and Anemia.

Price-One phial 48 pills Rs. 2.0-0 Postage Extra-

Manufacturers M s. The Brihat Ayurvedia Oushadh Bhandar Chandni Chowk Delhi

and the character of th

# कैन्थरेडीज़ (Cantharides.)

( लेखक-बैदाराज श्री घरणीधर जी शर्मा शाम्त्री, श्रायुर्वेद(वार्य )

----

ह एक प्रकार की मिल्लका (मकलो) है। जी भौरे की जातियों में मानी जाती है। पारचात्य मत नुयायी इसे कैंन्थरीडिनम Cantharidinum अथवा कैन्थरेडीन ('antharidin और लैटिन में कैं थेरिस Cantharis एवं हिन्दी में तेलिन कही जाती है।

यह बहुधा हंगरी, विलायत आदि विदेशों में अधिकांश पाई जाती है। भारतवर्ष के दिल्ली एवं पूर्वीय (बंगाल आदि) प्रदेशों में भी इसकी एक प्रकार की जाति मिलती है। इसकी लम्बाई पीन इंच से १ इंच नक की होती है। इसके बाजू मिलली (सिंगुर) की तरह चमकदार और मनोहर होते हैं जो कि कुछ हरे रंग के दी पंखों से टंके रहते हैं। इस मक्वीसे एक प्रकारकी टुर्गीध निकला करती है जो बहुत नागवार ालूम पहनी है। मक्वी को सुखाकर विच्या करने पर इसकी रंगत मैली, कुछ खाकीसी होती है, जिस में कुछ २ हरे रंग की किएकार्य चमका करती हैं। इस चूर्ण का स्वाद कपैला किन्तु जलनदार होता है।

## विष श्रीर प्रभाव

इस मक्खी का मुख्य विष कैनधरेडीन (('antharidin') जो सफेद चमक दार पर्ती में होता हैं इतना उप तिप है कि एक येन (आधीरत्ती) के सौ टुकड़े किये जांय और एक भाग किसी अंग पर लगा दिया जाय, तो तुरंन

आबला (फफोला) पड़ जायगा। इस भयं कर विष को खाने के लिये अधिक मात्रा में कदापि न र्दे अन्यथा इसका शभाव मूत्राराय और जननेन्द्रिय पर हुव। इरता है और हृदय श्वास किया एवं मस्तिष्क संबन्धी तन्नुण दृष्टिगोचर हाने नगते हैं. जैसे नाड़ी की गति तीब्र होजाती है, श्वास जल्दी २ चलने लगता है और मुखा होकर शरीर में एंडन शुरू हो जाती है अंतर्रियों में मजन होकर रक्त मिश्रित दस्त आने लगने हैं। अतः अधिक मुच्छा आते २ रोगी का श्वासावरोध हो जाता है और वह मर जाता है। उचित मात्रा सं प्रयोग करने से बहुत लाभ भी होता हुवा देखा गया है किन्तु खाने के लिये इसका टिचर Tineture बना कर देवें फिर भी बड़ी समभ-दारी एवं होशियारी के साथ। कभी किसी को किंचित मात्रा भी मात्रा से ऋधिक देने पर उसके मूत्र नालिका में जलन होकर ऐलच्यू मेन श्रीर रुधिर अपने लगता है बुंद २ पेशाब होने लगता है और हर समय मृत्र त्याग करने की इक्का वनी रहती है।

# त्रयोग गुग

माधिक धर्म की खराबी में इसके टिचर का द्यवहार का मिनम (बृंद ) से ३० मिनम तक करना चाहिये। इससे गर्भाशय में रुधिराधिक होकर मासिक धर्म हो जाता है। गर्भावस्था में देन से गर्भपात हो जाता है इसलिये ऋावश्यकता पड़ने पर भी उक्त दशा में इसका प्रयोग कदापि न करे। बूक्क ( मसाने ) की शक्ति नाश होने पर मृत्र च द २ करके टपकने लगता है, उन दशा में १४ मिनम इसके टिंचर को गोंद के लुवाब के के साथ देने से बहन जल्द आराम मिलता है। इसके टिचर को ४ से १४ मिनिम्ज की मात्रा में जल के साथ मिला कर मिक्चर के रूप में देना नप्सकता को दूर करता है। धड़ के श्रधोभाग के लक्बे ( पेरे प्लंजिया ) अथवा साइटिका ( गृद्ध सी ) की विमारी में ज्ञान तन्तुओं के ऊपर इसके प्लास्टर द्वारा छाला उठाने से अव्यधिक लाभ होता है। गंज रोग । बाल खीर ) पर त्रामे से वहां के बाल पुन: उग अभेत हैं इसके लिये ? भाग कैन्थर डीन में आठ भाग है। एड तेल मिला कर व्यवहार करना चाहिये किमी जोड़ में दुई होते पर इसका प्लास्टर लगावे, नो अपर छाला उठ कर दर्द दूर हो जाता है। द्यांती में पानी इकट्टा होने पर, जैमा कि प्ल्रिमी में हो । है, इसी प्लास्टर से झाला उठाने से आराम होता है, किन्तु दर्द स्थान से हट कर ही छाला उठाना चाहिये , आख के दर्द में दोनों कन-पटियों पर छाला उठाने पर श्राराम मिलता है। छाल। उठाने के लियें बहुत ही उत्तम इसका प्लास्टर (प्रतिप : होता है । प्लास्टर कम से कम आठ घएट और अधिक १२ घण्टे तक लगा रखना चाहिये । यो तो तीन-चार घण्टे में ही हाने उठ आवेंगे, यदि हाने उठ जायं ने प्लास्टर शीब ही हटा हैं और उस पर तीसी ( अलसी ) की गरम पुल्टिस बांध देने से तज्जानित कष्ट द्र हो जाता है छाला उठाने वाले म्थान की पहले

साबुन से खूब साफ करलें और तीलिये से इतना रगड़ें कि वह स्थान बिलकुल लाल हो जाक। तदीपरान्त प्लास्टर लगावे। झाले का पानी निकालने के लिये सुई चुभी देवें और उपर से वैसलीन लगा कर बांध देवे। श्रक्छे चिकित्सक बच्चों की कुकर खांसी में गईन पर, कें (बमन) एखं पट की जलन में पेट पर भी इसके प्लास्टर हारा झाला उठा कर लाभ पहुंचाते हैं परन्तु बड़ी सावधानी के साथ. यह प्रत्येक का काम नहीं है। बुद्ध, बालक, शक्ति चीण, गर्भवती प्रभृति को झाला नहीं उठाना चाहिये। कैन्थरडीन पाउडर चूर्य) की मात्रा बहुत ही कम है श्रर्थात होने से ध प्रेन तक दिया जा सकता है।

## मिश्रग

इसके मिश्रण से कई श्रोपियां प्रान्युत की की जाती हैं। जैसे—

- (१ ऐसीटम् कैंग्थरेडीर्ना (Acetum Cantharidini) इसका दृष्परा नाम विनीगर आककैन्थरेडीन Vinegar of Cantharidin है इसमें ००५ भाग प्रतिशत कैन्थरेडीन होती है।
- (२) कैतोडियम वैसीकैनम (Callodium Vesicans दुसरा नाम ज्लिस्टरिंग क्लोडीयन अर्थात फफोला उठाने वाली दवा है।
- (३) ऐस्प्लास्ट्रम कैलीफेसियन्स Emplastrum calefacins दूसरा नाम वारमिय प्लास्टर Warming Plaster है इसमें ०,०२ भाग कैन्ध रेडीन है।
  - (४) ताइकर ऐपिसपास्टीकस Liquor Epispasticus दूसरानाम व्लिस्टरिंग लिकिवड Blistering Liquid है इसमें ०,४ भाग कैन्य रेडीन हैं।

- (५) एम्प्लास्ट्रम कैन्थरीढीनी Emplastrum Cantharidini इसमें ०'२ प्रतिशत कैन्थरेडीन है।
- (६) टिंकच्रा कैन्थरेडीनी Tinctura Cantharidini इसमें ० ०१ कीसदी कैन्थरेडीन होती है। मात्रा २ से ४ बून्द तक है।
- (७) ऋंगुऐएटम कैन्धरीहीनी Unguentum ('antharidini इसमें कैन्धरहीन की मात्रा ०.०३३ प्रतिशत है। इसे लगाने से वह स्थान लाल होजाता है।

# (१) विनेगर Vinegar (सिरका)

कैन्थेराइडीज पाउडर २ झौंस, ग्लासियल ऐसेटिक एसिड १० झौंस, पानी १० झौंस। क्रिया-कैथराईडीज के चूर्ण को पानी में भिगो कर २ घएटे मन्दाग्ति से पकावे, ठंठा होने पर उसे छान ले। तदनन्तर ऐसेटिक एसिड मिला कर एक दिन करे झौंग पुन: उसे फिल्टर (छान कर) करके ग्यालं।

# (२) बिलिस्टरिंग कलोडियम

वित्तस्टिश्ंग लिकिन्द २० भींस पाईरोग्जलीन १ श्रींस दोनों को एक बोतल में भर दें श्रीर कार्क लगाकर खूब हिलाबें, जब एक दिल होजाय, तो इसे तैयार हुना समभना चाहिये।

# (३) एम्प्लास्ट्रम कैलीफेसियन्स

(Emplastrum Calefacins)

केन्थरडीज पाउडर, जायफल चूर्ण, सीमाव तवा रोगन(श्रतारों से प्राप्त होगा) देशी मोम,रेजिन प्रत्येक चार झोंस। सो० प्जास्टर सवा तीन पींड रेजिन प्जास्टर २ पींड, उदक्ता हुवा पानी १ पाइन्ट पहले मिन्सियों के चुर्ण को खोलते हुये जल में ६ घन्टे तक भिगो रक्ख फिर कपड़े से उसे छान बाटर बाथ की गर्मीसे उसे गाटा करें तदन्तर अन्य औषियों को पिघला कर डालता जाय और मिलाता जाय। एकत्रित हो जाने पर पलास्टर की तरह जमा कर रख ले। यह बात की शोध (सृजन) चोट के लिये बहुत लाभदायक है।

# (४) ब्लिस्टरिंग लिक्विड

(Blistering Liquid)

कैन्थरेडीज आठ श्रींस, ऐसिटिक ईथर, केवल मिलाने मात्र के लिये। प्रथमतः ३ श्रींस ईथर लेकर पावडर को भिगोकर किसी चौड़े मुंद के पात्र ( प्लेट ) में जमा कर रख दे। २४ धर्म्ट परचान उस पर धीरे २ ईथर ख़िड़कता जाय श्रीर उसे एक किनारे एकतित होने दे। जब लग भग २० श्रींस अर्क हो जाय तो उसे किसी शीशी में धीरे से उतार कर खूब मजबूत कार्क लगा कर रखदे। यह फफोला उठाने के लिए उम्दा दवा है। जिस स्थान पर कई से दवा लगाई जाती है, वहां शीध छाले उठ श्रांते हैं।

# ( ४ ) कैन्थरेडीज प्लास्टर (Canthar

idis Plaster

कैन्थरेडीज वृर्ण १२ श्रींस, मोम देशी म श्रींस, भड़ की चर्ची म श्रींस, रेजिन ३ श्रींस, विन्जोयटैड लार्ड ६ श्रींस। सोम श्रीर चर्वियों की वाटर बाथ की गर्मी में पिघला कर श्रन्यान्य की बारी २ से मिला दे श्रीर ठएडा होने तक किसी लकड़ी से चलाता रहे। ठएडा होने पर रखले श्रीर ब्यवहार में ले।

# (६) टिंचर कैन्थरेडीज़ (Tinetura Cantharidis)

उक्त मिन्यों का दरदरा चूर्गा, चौथाई श्रौंस प्रृक्ष स्प्रिट १ पाइएट । दोनों को बोतल में भर कर काम लगादे श्रौर एक सप्ताह तक रख छोड़े । इसके पश्चात फलालेन या फिल्टर पेपर से छान कर रखले श्रौर समयानुकृत ध्यवहार में लावे ।

# ( ४ ) एंगुऐएटम कैन्थरेडीज

मिक्खयों का चूर्ण १ श्रींस, देशी मांम १ श्रींस, रोगन जैतून ६ श्रींस। चूर्ण को पहले तेल जैतून में १२ घरटे भिगी रक्खे श्रीर बग्तन को खूब ढकदे। तदनन्तर उस पात्र को ग्वीलने हुये पानी में १४ मिनट तक रखा रहने दे। तदोपरान्त मल मलके कपड़े से उसे छान ले श्रीर भली भांति निचोड़कर उसी में मोम डाल कर शीतल होने तक चलाता रहे। बस मरहम तैयार हो गया। जिस घाव को बाजा रखना हो, मवाद बाहर निकालना हो तो इसे वतें।

# ( = ) त्रिलस्टरिंग पेपर मोम देशी ४ श्रींस, इस्परमेंसीटी १॥ श्रींस

तेल जैतून २ श्रोंस, रेजिन पौन श्रोंस, स्वच्छं अल ६ श्रोंस। कैनेडा वाल सम चौथाई श्रोंस, कैम्थ-रेडीज पाउडर १ श्रोंस।

क्रिया—केवल कैने हावालसम की होड़ कर अन्यान्य को जल में हाल कर मंदाग्न से २ बेरटे तक पकावे, पश्चात् उसे किसी चौड़े मुख के बैर्तन मे छान ले और प्लास्टर को पान से अलग कर के बालसम मिलादे। तदनन्तर कारतूस बाला कागज की पट्टी उस पर फेरता रहे, जिससे इस में दवा लग जाये प्लास्टर के स्थान पर इसका ज्यवहार होसकता है।

# विषोपचार

कैन्थरेडीज के बिष शान्ति के लिए बंगन, विरेचन (एनीमा से दस्त कराना) कराना चाहिये ताजा अराखा खिलावे, मार्कीन या ओपियम की बत्ती गुदा में लगावे, गर्म जल में बैठावे बाली बाटर (जौ का पानी) पिलावे। रोगी का विपोप-चार शीघ ही होना आवश्यक है अन्यथा उसका प्रायान्त शीघ होने का भय है।

9



# लोबीलिया (Lobelia)

[ तेखक-श्री 'विरक्त' ]

इसके वृत्त का नाम लोबीलिया इनक्लेटा (Lobelia inflata) है। यह उत्तरी अमेरिका से आता है। इसका तना पहलदार होता है और उसमें नाली सी बनी हुई होती हैं जिसके दोनों ओर छोटे २ पर से लगे हुए होते हैं इनका वर्ण अरग्रवानी और लोमश होता है। उनके उत्पर दाग्र होते हैं इसका कैपसूल दो खाने वाला होता है जिसके बीच छोटे २ और तिकोने जालदार और भूरे रंग के बीज होते हैं बू खराश पैदा करनेवाली स्वाद पहले हलका और जब चनाया जाये तो जलन और तलखी पैदा होजाती है।

## गसायनिक विश्लेपगा---

१—तुबोलीन—यह एक तरल उड़नेवाले तेल की जाति का अल्कलाइड होना है। और ३० कीसदी उसमें उपस्थित होना है।

स्वाद इसका बहुत ही ऋधिक तेज गंध तम्बाकू जैसी होती है।

यह अल्क्लाइड लोबिलिक एसिड के माथ भी मिला हुआ होता है और इस के कल्मों की शक्ल में नमक तैयार होते हैं।

२—इनम्लंटीन

# ्विरोधी---

कास्टिक, एलकली। इनसे लोबीलीन के श्रांग श्रालग होजाते हैं।

#### मिश्रश

# टिंचर लोबीलिया ईथर-

(Tinct. Lobelia Etherea)

लोबीलिया १ भाग, स्प्रिट श्राफ् ईथर ४ भाग के साथ परकोलेट (झान) करलें।

यह टिंचर १८८४ सन की ऋषेता १ । गुना ज्यादह लोबीलिया से तैयार किया जाता है। मात्रा—४ से १४ बृत्द तक।

#### त्रभाव

#### बाह्य--

लोबीलिया का त्वचा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता मगर कहाजाता है कि त्वचा के छिट्टों द्वारा छान्दर प्रविष्ट होकर विष्तत्तत्त्वण उत्पन्न कर देता है।

#### आन्तरिक---

अभ्रणाली—साधारण या बड़ी मात्रा के सेवन करने से बहुत अधिक इरीटेन्ट प्रभाव होता है फिर इसी कारण वमन और अतिसार तीत्रवेग से प्रारम्भ होजाते हैं। लोबीलिया के प्रभाव में यह विशेषना है कि इन लक्षणों में मरीज़ बीए होजाता है, नाड़ी कमजोर होजाती है शीवल स्वेद आने लगते हैं, त्वचा का वर्ण फीका होजाना है मांमपेशियां शिथिल पड़ जाती हैं।

#### रक्तपरिश्रमण--

मंडक पर तजुनां करके देखा गया है कि हृदय पहले तो तीन गित करने लगता है, परन्तु शीघ ही मन्द मन्द चलने लगता है। डायस्टली की श्रवस्था में गित करनेसे रुक जाता है। रक्त का दवाव कम होजाता है और यह प्रभाव दोनों तरफ से पड़ता है। कुछ तो हृदय पर प्रभाव पड़ता है श्रीर कुछ श्रसर वेस्टोमोटर के केन्द्रों पर पद्माधात का हो जाता है।

#### श्वास पथ--

कम परिमाश में देने से श्वास मन्द होने लगता है बड़ी मात्रा में देनेसे श्वास केन्द्र अत्यन्त सुस्त होजाते हैं और यहां तक कि श्वास के बन्द होजाने पर मृत्यु होजाती है। कहा जाता है कि बांकाई का अजलाती नवक डीला होजाता है। वात केन्द्र—

मस्तिष्क के केन्द्रों पर तब तक कुछ प्रभाव नहीं होता जबतक कि इस द्वा को जहरीली मात्रा में न दिया जाये तब कोमा और कन्वलशंज. आचेप पैदा होजाता है मगर यह स्पष्टतया नहीं कहा जासकता कि ये लक्षण कहां तक इस के कारण पैदा होते हैं जैसे कि पूर्व वर्णन कर चुके हैं।

## श्वास केन्द्र

वेसो मोटर का केन्द्र और हृदय का केन्द्र शिथिल होजाता है अनुभव से सिद्ध हुआ है कि मस्तिष्क के मोटर के केन्द्र भी सुस्त होजाते हैं। मांसपेशी पर कुंछ असर नहीं पड़ता।

लुबेलीन प्रायः वृक्क और त्यचा के द्वारा बाहर निकलती है यह भी कहा जाता है कि डायोरेटिक और डायोकोरेटिक (पसीना लाने वाला) प्रभाव करती है।

## उपयोग--

लं।बीलियाको परगेटिव (रेचक) श्रीर श्रमेटिक तौर पर भी इस्तेमाल किया जाता है मगर इन फायदों के लिये इसका सेवन नहीं करना चाहिये क्योंकि इन से कीलैप्स का बड़ा भय रहता है।

दमा (श्वास) की बीमारी में वायु प्रणा-लियों के तनाव की शिथिल करने के लिये सेवन किया जाता है। इसके टिंचर की दस बु० इस रोग में दे सकते हैं यदि रोगी का जी मिचलाने लगे तो इस दवा का सेवन उसी समय बन्द कर देना चाहिये।

व्रांकाइटिस की बीमारी में जब छ। होप (डिस प् पीनिया) मौजूद हो तो इसका सेवन करा सकते हैं।

# विष संबंधि यूनानी, एलोपेथी, वैद्यक की कुछ साधारण बातें

[ले०-कवि विनोद वैद्य भूषण पं० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य ''अमृतघारा]

# विष क्या है ?

जो पदार्थ खाने पीने या स्वने, घाव में लगने या शरीर में छूने या काटने या डंक लगाने इत्यादि से हानि विशेष पहुंचावे या मारक चिन्ह प्रगट करे, उसे विष कहते हैं। इस परिभाषा की टिंट से एक साधारण पदार्थ भी और औपिय भी मात्रा से अधिक खाई जावे तो हानि पहुंचाने के कारण उसको विष कह सकते हैं, परन्तु विष का शहर उन्हीं पदार्थों पर वरता जाता है जिनकी स्वल्प मात्रा ही बहुत हानि पहुंचाती है और अधिक्य मृत्यु का कारण होता है। जो पदार्थ पेट अन्त तक भर कर खाने से एक मनुष्य को मार देवे वह विष नहीं कहला सकता है। विष को अधिकी में पाईजन ( Poisson) युनानी में सम्म और उर्दू में आहर कहते हैं।

#### अगद या फाद जहर

यह यूनानी शन्द बाज जहर का ध्रापमंश हैं, विष की दूर करने वाला धौर प्राण रक्तक पदार्थ बाज जहर कहताता है इसी को ध्रागद कहना चाहिए।

# फाद जहर का युनानी वर्णन

जो पदार्थ जिस पदार्थ का विष दूर करे, उसको उसका 'अगद'' या ''फाद जहर'' कहते हैं। उसे अंभेजी में Antidote (एन्टीडोट)
पुकारा जाता है। यथाहि, मारिजया का अगद्
या एन्टीडोट परमेंगेनेट ओफ, पोटाशियम है, या
वच्छनाग का निरविषी है। जिस विष का जो
विषयन है वही उसका काद जहर है, परन्तु
युनानी में काद जहर खास औषधि का नाम भी
है। यथाहि जहां लिखा हो, काद जहर मादनी
(स्वनिभ) तो प्रयोजन "जहर मोहगां से
होता है।

काद जहर उस पदार्थ के साथ द्याता है जिसमें यह गुगा हो कि विष को दूर करे, प्रकृति को सहायता दे। विष काहे सरद हो या गरम, स्वभावत: उसको दूर करने वाला है। जहर मोहरा खताई, जहर मोहरा हैवानी, जदबार खताई, नाश्यिल दरियाई, पपीता इत्यादि यूनानी काद जहर हैं। काद जहर तीन प्रकार का होता है। काद जहर हैवानी (पाशिवक विष नाशक पदार्थ) काद जहर मादनी (ख्रानज विष नाशक पदार्थ) काद जहर नवाताती (वानस्पत्य विष नाशक पदार्थ)

# जहर मोहरा हैवानी

कई प्रकार का होता है। एक बन्दर के पित्ता या आन्त से निकालते हैं। चीन और हिन्दुस्तान उसकी अपने खजाने में रखा करते थे। जो पत्थर की आकृति का होता है। दूसरा प्रकार वह है जो जंगली पशुओं चूहा, हिरण इत्यादि से निकालते हैं। एक को हजकलतीस कहते हैं और यह शीराज से आता है। एक बारहसिंहा से निकता है उसकी हज़रूल अमल कहते हैं। और कहते हैं कि कोई व्यक्ति तीन रोज तक तीन रत्ती की मात्रा को घिस कर प्रति दिन पीले तो आयुपर्यन्त कोई विष असर नहीं करेगा।

श्रकसोस ! कि यह सब प्रकार के विष श्राध्निक समय में नहीं प्राप्त होते हैं। राजाश्रों का ऐसे पदार्थ संप्रह करना काम था सो उन वेचारों को यह बात कभी सुभती भी नहीं है कुछ ऐसे पुरुष भी हैं जो यत्न से कुछ न कुछ अन्वेषण करते रहते हैं। एक प्रकार यह है कि उसे इजरुल हरया वा मुहरामार कहते हैं श्रीर पार्थविक जन्तुओं के काटने पर प्रयुक्त होता है और एक प्रकार यह है कि 'मार स्वोर' जो बकरे के पैट से निकतता है और सर्प के डंक पर लगाने से सब विष को चूस लेता है और प्राय: (सपेरों) सर्प वालों से मिलता है। हमारे पास एक टुकड़ा या फाद जहर हैवानी, को वर्षी पर्यन्त राजा लोग खाया करते थे उन की प्रशंसा अपार है। इन के कई बीग बनते हैं।

यथा निम्न लिखित योग प्राम् रहक है शरीर को सर्व विपा से शुद्ध करता है। शरीर की शक्ति और उत्तेजना को बढ़ाता है और आजए रईमा अर्थात् दिल दिमास और जिसर का शक्ति वर्धक है। युनानी योग

काद जहर है नानी ६ रत्ती, अनिवध मोती ३ रत्ती, याकृत सुर्ख ३ रत्ती, लाल वदखशानी ३ रत्ती, संग यशा ३ रत्ती, मोमियाई ३ रत्ती, अन्वर अशहब ३ रत्ती, केशर ईरानी ३ रत्ती, स्वर्ण पत्र २ रत्ती, खालिस कस्तूरी १ रत्ती, स्वर्ण पत्र २ रत्ती, खालिस कस्तूरी १ रत्ती, प्रथम कठोर पदार्थों को सीमाक पत्थर के खरल में खरल करें । पश्चात् शंव पदार्थ प्रविष्ट करके मिश्री की चाशरी बना कर सब पदार्थों को डाल कर तीन विभाग करें और प्रति दिन एक भाग खायें और अपर से प्याला उष्ण दूध का पीवें और अपर से प्याला उष्ण दूध का पीवें और अपर से प्याला उष्ण दूध का पीवें और आशाम से रहें, जब तक पूर्ण ज्ञुधान लगें, भोजन न करें और जब पूरी ज्ञुधा हो तो हलका और अच्छा भोजन करें।

## काद जहर मादनी

यह पत्थर स्नानों से निकत्तता है। देहली (इन्द्रप्रस्थ) में एक होज (जलाशय) था और उसमें पानी भरा रहता था उस में कादजहर मादनी लगा हुआ था। जिस किसी को शहर में कोई विष धारी जन्तु काटता उसका पानी लंजाकर पिला देते, आराम आ जाता था सुना जाता है कि अब उसे उखाड़ २ कर आंग्रेज लेगए हैं कादजहर मादनी प्रसिद्ध आज कल जहर मोहरा खताई ही है फादजहर मादनी श्वेत, पीन, हरित इत्यादि प्रप्रकार का होता है। असली जहर मोहरा खताई वही है कि हल्दी की प्रथम पत्थर पर घपेण करें तत्पश्चात् उसे विसें, यदि गंगन लाल हो जाने तो अच्छा है। यह भी

लिखा है कि निम्ब के पत्ते मुंह में हालने से जो कदवा पन मुंह में हो जाता है वह इसके हालने से जाता रहे और जिसका घूप में पसीना निकते वह सब से बिदया है। यह थोड़ा सा सर्प के मुंह में हालें उसी समय मार देवे। असली की मात्रा एक रत्ती, परन्तु बाजारों में जो बहुतायत से मिलता है बह तो तोला २ भी खाया जाता है विशंष अच्छा भी ३ माशा तक। यह सब विषों को दूर करता है। इसका खाना स्वास्थ्य रच्चक है और महा मारियों के दिनों में बीमारियों के चुरे असर से सुर्यांच्त रखता है, इत्यादि।

#### फादजहर नवाती

नारयत दरयाई, निरवसी, पपीता इत्यादि हैं। खूबकतां गुतेदागस्तानी, इत्यादि भी फाद-जहर हैं। इनका वर्णन हमारी पुस्तक 'फ्लेग के प्रति बंधक उपाय' में लिखा है। इच्छा हो तो वहां से लेखें।

# जहर की किस्में

यूनानी में बिय तीन प्रकार के होते हैं:— अहर हैवानी जैसे सर्प, चूहा, बिच्छू। अहर नवाती जैसे घक्तयून, धतूरा बच्छ नाग। अहर जमादी जैसे संविया, सिंदूर। जो बिष संयोग से स्वयं तच्यार किया गया हो उसकी अहर मुरक्कवा कहते हैं।

# वैद्यक में

विष को दो भागों में विभक्त किया गया है स्थावर (बेजान) खौर जंगम (जानदार) डाक्टरी में यों तो विष की बहुत किस्में हो सकती हैं परन्तु उन्होंने इस प्रकार इसे विभाग नहीं किया है, उनका विभाग उनके गुणों के सम्बन्ध से है यथा साधारणतया निम्न लिखित विभाग किए जाते हैं प्रथम Irritant (इरिटैन्ट) वह विष जिनसे वमन और दस्त बहुत हो जावें जैसे नीलाथोथा, द्वितीय नारको टैन्ट (Narco tant) जिससे दिमाग या दिल के कार्य्य मे अन्तर आजावे और शरीर में शिथिल्यादि होकर संझानाशादि हो यथा कोकेन। तृतीय नारकोटेको इरिटेन्ट (Narcotico Irritant) जिसमें उपरोक्त दोनों बातें हों।

# चतुर्थ

Corrossive (कोरोस्सिव) नष्ट क ने वाला डाक्टरी के विष बहुत से सत इत्यादि उनके आपने इनाए हुए हैं।

#### लच्च

?-अफ़ींम की श्रेगी के विषों में---

शिर पीड़ा, तिमिर, धुन्ध, पुतली का सिकुः इना, कर्णनाद, भारीपन, तन्द्रा, संज्ञानाश । २-वेलेडोना की श्रेगी के लखगा-

बेहोशी, तिमिर (नेत्रों के आगे परमाशुओं का उड़ना) चचुतारक कैलाब, मुख शीच्य, तृषा और कभी २ तन्द्रादि।

# ३-अलकाहल की श्रेगी के लद्मग--

रक्त श्रमण श्रीर मास्तिष्क्य कार्य प्रावत्य तथा दो वस्तु दृष्टिगोचर पड्ना, मांसपेशियों की श्रलप शक्तित्व श्रनियमता, पश्चात् श्रिष्टा श्रीर भयंकर श्रवस्था में संज्ञानाश। पोस्ट मास्टम---

श्रकीम की श्रेणियों में मस्तिष्क की नसीं श्रादिका भराहुआ होना श्रीर हृदय के छिटी श्रीर मिल्लियों में रुधिर का बहाव, बैलाडीना में कुछ नहीं, श्राल्काहल की श्रेणी में: सोजिश, मस्तिष्क श्रीर भिल्लियों में रक्त ज्यादह होना रुधिर का पतला होना।

# ४--विष जो पृष्ठवंश (रीड़) पर प्रभाव डालते हैं---

यथा कुचला का सत्व इत्यादि इसमें एक प्रकार की ऋचेतनना होती है जिससे शरीर जकड़ जाता है और शिर तथा पाद ऋागे को होने हैं बस यही चिन्ह हैं।

# ५-विष जो हृदय पर प्रभाव डालते हैं--

यथा बत्सनाभि, तमाल पत्र (तम्बाकु) स्त्रग्जा-लिक एसिड इत्यादि ऐसे विषों से मौत एकाकी, मृगी, निमोनिया, हदय की गति बन्द होने से होती है।

# ६-विप जो फेफडों पर प्रभाव डालने हैं---

यथा कारबोलिक एमिड । चिकित्मा का क्रम तीन प्रकार से हैं, बान्ति द्वारा या स्टमक पम्प द्वारा निकातना. उसके कार्य की रुद्ध करना और सृत्यु लज्जा को बदलना है।

विष के। वसनकारी श्रीपिध देकर वसन द्वारा निकाल देने हैं या स्मक पम्प द्वारा श्रधवा ट्यू ब जपयुक्त करते हैं जो उपस्थित हो वही उत्तम है। एपोमारकीन एक श्रीपिध होती है जिसका है। रत्ती त्वचा के मीतर प्रवेश करते से वसन श्रारम्भ होजाती है श्रीर सल्केट श्रीक जिंक २० ग्रेन (१० रत्ती) की मात्रा में श्रव्ही वान्ति कर है विकाशि विष में जब श्रम्य श्रीपिध्यों से वसन नहीं श्राती तो सल्केट श्राफ कापर (नीता थोधा) ४ से १०

प्रेन की मात्रा तक प्रयुक्त करते हैं दक्श जल में २ चमच गई के और साधारण लवण कई बार देना और किसी जानवर का पंख कंठ में फेरने से वमन आजाती है। स्टमक पम्प उपयक्त करने के अर्थ प्रथम आमाशय में पानी प्रवेश करना चाहिए वरना भिल्ली आजावेगी ट्यूब देख लेना उचित है कि हुटी हुई न हो, यदि स्टमक पम्प अप्राप्त हा तो रवड़ की नाली को भीतर प्रविष्ट करके माईफन बनाकर काम लिया जाकता है। द्वितीय कार्य विष प्रभाव उसका अगद देकर कम करना है। अगद अंग्रेजी विपों के बहुत ज्ञात हुए हैं वह पिचकारं के द्वारा जल्ही दिए जाते हैं अथवा मुख द्वारा भी पिचकारी के द्वारा देने वाली के वास्ते यदि हाईवोडिर्मिकसिरिंज उपस्थित न हो तो गुद्रा के द्वारा चढ़ा देते हैं और वह रक्त में संयुक्त होजाते हैं। यथा-

संख्या के विषों के वास्ते अगद हाईट्रेटेड प्राक्तमाइड आफ आईरन है। नाइट्रेट आफ़ सिल्वर के वास्ते लवण है।

एमोनिया, पोटास और सोडा के बास्ते सिर कावा वानस्पत्यज्ञार जल में डालकर देना ए।ज्ञालिक एभिडके वास्ते अगद मैगनेशिया वा चाक अथवा दीवार की सफेदी है।

# दुर्पा विष

वियावशिष्ट दीप का नाम दूषीविष है अथवा वह विप अलप हो, उपाय न किया गया और शरीर के भीतर पुराना होगया हो या औषधियों से दकाया गया हो, परन्तु निकला न हो अथवा वह विष ही इस प्रकार को हो कि सृत्यु या भयंकर कोई रोग सो नहीं कर सकता, परन्तु कफ़ में लिपटा हुआ वर्षों शरीर में मिला रहता है।

जिस मनुष्य के शरीर में दपी विष अवशिष्ट हो, उसके शरीर और मल के वर्ण में अन्तर आ जाता है। मुख में दुर्गेधि और रसनाशक्ति विगड़ जाती है तृषा श्रधिक होजाती है कभी श्रचेतनता श्रीर बमन भी हो जाती है। यदि यह श्रामाशय में रहता है तो उस पुरुष को बात, कक के रोग होते रहते हैं और यदि पकाशय (आंतों) में हो तो वात पित्त के रोग सताते हैं और शिर के बाल भौर रोम उलाइ जाते हैं और यदि किसी धातु रस, र्राधर माँस, मेदा, हड्डी मञ्जा वा बीर्घ्य में स्थित होजावे तो जिम में स्थित हो उसकी खरावियां आरम्भ होती हैं। शरद वाय, सेघ श्रीर वर्षा ऋतु में यह विष उपस्थित होता है। इसके द्वित होने से प्रथम यह जन्म होते हैं। निद्रा अधिक आना, शरीर भारी होजाना जुन्मा-धि स्य, रोम हर्पता, खंगड़ाई, परचान विष श्रपना वेग प्रकट करता है। पाचन शक्ति की विनष्टता भोजन से अर्ताच शरीर पर चकते. दक्तड

इत्यादि, कभी अचेतना, हस्तपाद में शोध, धातु नाश, जलीदर, वमन, अतिसार, वर्णपरिवर्तन, कदाचित ज्वर अत्यन्त तृष्णादि उपद्रव होते हैं कोई विष दूषित होकर जन्मादी बनाते हैं अधवा अपस्मार आदि करते हैं। कोई पेट फैला देते हैं। कोई वीर्थ्य विकार कर देता है।

# विषारी नाम अगद

यदि नोई दूपी विष का रोगी हो अर्थात् उस के अन्दर विष स्थित हो तो उसको स्वेद कर्म करावें तत्पश्चात् वमन विरेचन देवें। अनन्तर इसके निम्नांकित्वत अगद पिलाया करें।

योग---

पीपल, बाल्छड़, लोध, धनिया, जवाखार, छोटी इलायबी, नेत्रवाला, सोनागेक, प्रत्येक क्रमीब ३ माझ लेकर कथाथ करके मधु मिलाकर पिलाया करें। बलवान मनुष्य का दृषी विष शीध दूर हो जाता है और यदि कोई कुपथ्य करता रहे तो उपाय हो ही नहीं सकता।



# मूषिक विष (Rat-bite poison)

[ ले०--श्रायुर्वेदसूरि: कृष्ण प्रसाद त्रिवेदी बी० ए० आयुर्वेदाबार्य ]

मारा ख्याल है कि संसार में समस्त विपैले प्राणियों से जितनी हानि मनुष्यों की होती है, उस से कई गुणा बढ़ कर हानि च्हों से होती है। अन्य विपैले प्राणा तो केवल शारीरिक हानि ही करते हैं, किन्तु च्हा शारीरिक भयंकर हानि के साथ ही साथ आर्थिक हानि भी बहुत पहुंचाता है। रुई के गोदामों में आग लगा देना (ये कभी २ जलते हुये तिनकों को कई के गोदाम में ले जाते हैं), घर के करड़े वहौरा सामानों को तहम नहस कर देना, मकानों की नीव में छंद कर उन्हें कमजोर बना देना, पक्के तालाबों में छंद कर पानी को वहा देना आदि कई प्रकार की आर्थिक हानि च्हों द्वारा अज्ञात रूप में होती है। अस्तु हमें यहां पर उनके विपजन्य शारीरिक हानि की विवेचना करनी है।

प्लेग ह्या जनसंहारक भयंकर रोग, जिसमें अन्य विषधर प्राणियों के विष की अपेता कोटि गुणा अधिक जनसंहार होता हैं। इन्हीं चूहों की कृपा से सर्वत्र फैलता है। अपने प्लेग शीर्ष कि निवन्ध में हम इस विषय में विस्तार पूर्वक लिखेंग। प्लेग के आंतरिक्त कीन कीनसे भयंकर विकार मृषिक विष से होते हैं, केवल उनकी ही विवेचना इस लेख में की जावेगी।

संसार में जो कतिपय रोग मनुष्यों में देखें जाते हैं. उनकी कारण परंपरा का पता जगाने पर माल्स होगा कि विप्रकष्ट कारणों में से सब से महत्व का कारण मूर्विक विष ही है। सर्पादि विषेते जीव तो केवल काटकर या डंक मार कर ही अपने बिप को शरीर में प्रवेषित करते हैं, किन्तु चूहा पांच प्रकार से विष को मनुष्यादि प्राणियों के शरीरों में फैलाता है—

शुक्तेणाथ पुरीषेण मूत्रेणापि नत्वैस्तथा।
दंष्ट्रा भित्रां ज्ञिपन्तीह मूिषका पंचधा विषम्।।
ऋर्थात् चृहीं के दांतों में, नखों में, बीये में
मल में, और मृत्र में विष होता है। शरीर के
जिस स्थान पर ये दांतों से काटते हैं या नखों से
कुरेदते हैं, वहीं से उनका विष शरंर के ऋत्दर
प्रविष्ट हो रक्त को विकृत कर देता है। चृहों का
वीर्य, मल या मूत्र शरीर में प्रत्यक्त या ऋप्रत्यक्त
रीति से लग जाने पर भी उनका विष शरीर में
प्रविष्ट हो जाता है। कहा भी है—

शुक्रं पर्तात यत्रेषां शुक्र घृष्टैः स्पृशांतिवा । नख दंतादिभस्तिस्मन गात्रे रक्तं प्रदुष्यित ॥ (सुश्रुत)

सुश्रनाचार्य जी का कथन है कि प्रत्यत्त इनके शुक्राद्दिक शरीर पर लग जाने से तो विष का विस्तार शरीर में होता ही है, किन्तु इनका विष इतना प्रस्वर श्रीर जाज्वल्य होता है कि यदि घर की किसी भी वस्तु में उनका वीर्याद लग जाय श्रीर उस वस्तु का स्पर्श हमारे शरीर से हो जाय तो क्स अनका विष शरीर में प्रविष्ट हो रक्त की वृषित कर देता है।

भला अब बताइये कि हम चहों के विष से कैसे अपनी रहा कर सकते हैं ? ऐसा शायद ही कोई घर हो जहां चूहों का साम्राज्य न हो। इन का परिवार भी दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि करते ही जाता है। घरेल चहा वर्ष में कोई = वार बच्चे देता है, एक बार में लगभग १० बच्चे जनता है। इस हिसाव से चहाँ का एक जोड़ा वर्ष भर में ५० चहों की पैदा करता है। स्रीर प्रत्येक चहा जब ३ या ४ मास का हो जाता है, तब बच्चे पैदा करने में समर्थ हो जाता है। इस प्रकार एक जोड़े से इनकी पैदाइश का हिसाब पर मालम होगा कि ३ वर्ष में ४०६८०६४६० इतनी इनकी श्रौलाद घर में बढ़ जाती है। तब भला हम इनके विध से कैसे सुरक्षित रह सकते हैं। यही कारण है कि हमारे प्रतिशत २४ से भी अधिक भाई और वहन रक्त द्वित जन्य रोगों में फंसे हुये दृष्टिगोचर होते हैं। रक्त द्वित जन्य रोगों का विस्तार पूर्वक विवेचन करना कुछ सरल कार्य नहीं है। एक बड़ा भारी पीथा इस पर रचा जा सकता है। संजेप में यहां इ ना ही दर्शाये देते हैं कि शरीर में गांठें पड़ जाना, हाथ पैरों में सृजन, शरीर में दरारा पड़ जाना, किंदिना या कमल गट्टा के 🗹 आकार भी गांठें प्राय: गले में या बगल में या रगों में होना, सँधियों में पीड़ा, मुच्छां,श्रंग का साम्भन ज्वर, अहचि, दुर्बलता, श्वास, वमन, रोमहर्षण शरीर का पीलापन, बधिरता, मुख या नाक से रक्तस्राव, मूसे के समान शरीर में लम्बी लम्बी

प्रनिथयां होना, जानिमांद्य, दाद, खाज, चकर्त्त, फुंसियां, सिध्म (बनरफ) जादि १८ प्रकार के कुछ, मुख जीम होंठ हाथ पैर कादि का पटना, मस्रिका, विसर्प, एवं अनेक प्रभर के चर्म रोग, नेअरोग आदि रक्त के दूषित होने से सत्पन्न हो जाते हैं।

सुध्रताचार्य जी ने १८ प्रकार के चूहीं की गणना एवं उनके प्रथक प्रथक तक्षणादि का वयान किया है। विस्तार भय से हम यहां नहीं लिखते। किन्तु खेद के साथ इतना जरूर कहेंगे कि बाजकल बड़े बड़े तिथों के प्रतिकारार्थ जितना शोध लगाया जाता है तथा उनके विषय में जितना कुछ लिखा भौर पढा जाता है उसका शतांश भी शोध या लिखा पढ़ी मुधिक विष के बारे में नहीं होती है। कारण क्या है ? कारण यही मार म देता है कि या तो हम मृत्रिक विष के भयंकर परिणामों से अनिभन्न हैं अथवा हम युत्त युत्त कर मरना पसंद करते हैं बानस्वत तड़ाक फड़ाक मरने के। सर्पाद जन्य विष या अन्य विष मनुष्य को तुरन्त ही काल के गाल में भोंक देते हैं, तथा मूजिक विप धीरे २ व्यपना वही कार्य करता है, इसी से हम उसकी अवहेलना या दुर्लदय करते हैं। हमारे भ्रापि मुनियों ने इसके विषय में जितना कुछ लिखा है, उस से अधिक विशेष कुछ नहीं लिखा गया है। अस्तु!

# मृषिक दंश प्रगाली

चूहा क्रू सर्प या बावले कुत्ते के जैसा, दीड़ कर नहीं काटता। वह तो अपना दंश कार्य बड़ी युह्म के साथ करता है। जब हम घोर निद्रा की अवस्था में होते हैं, तब चहा धीरे से शरीर के

किसी भाग में, विशेषतः हाथ पैर की उंगली के पास आकर प्रथम सुंघता और फूंक मारता है। उसकी फूंक या मुख़ की लार के स्पर्श से इमारे शरीर का वह भाग बधिर होजाता है, फिर वह वहां पर चाटता है। सृंघने, फूंकने झौर चाटने के पश्चान ही वह काटता है।। इतनी कियार्थे ही जाने पर भी हम जागृत नहीं होते। यदि नींद करुची हुई तो जाग भी जाते हैं, और देखने लगते हैं कि किसने काटा । काटनेवाला तो अपना कार्यकर तरन्त रफुचक्कर होजाता है। हम देखते हैं कि दंश स्थान में थोड़ा रक्त आगया है। ध्यान रहे चहे का दंश विशेष गहरा नही होता, कितु रक्त में विप के मिश्रग् के लायक काकी गहरा होता है। इसके दंश की पीड़ा कुछ नहीं के बरा-बरही होती है। हम ख्याल कर लेते हैं कि किसी चिंउटे ने काटा होगा. उसकी उपेचाकर, फिर चादर तान कर सोजाते हैं!

# मृषिक विष कार्य

शरीर के अन्दर रक्त मार्ग स प्रवेश हुआ यह विष गुप्त रूप से अपना कार्य करता रहता है। किसी २ चृहे का विष के समाह के अन्दर ही अपने कार्य को बाहर प्रकट करने लग जाता है, किसी २ का तो सप्ताह के पश्चान । आदंशाच्छोणितं पांडु मण्डलानि श्वरोठकचिः लोमहर्षश्च दाहश्चाप्यास्तु दृषी चिपादिते। मृच्छांऽङ्क शोध घंचण्य संदशहाश्रुनिश्वराः। शिरो सुकत्वं लालास्त्रक च्छादिश्चासाध्यम् विकै:।। जहरीले चृहे के काटने पर ( जैसे सर्प विषेले नहीं होते तैसे ही सब चृहे विषेले नहीं होते, किंतु उक्त प्रकार से काटने वाले चहे प्रायः विषेते ही होते हैं) दंशस्थान से कीका रक्त स्नाव होता है, शरीर पर चकाकार मंडल उठते हैं, ज्वर आता है, अरुचि, रोम हर्ष, दाह, मूच्छां, शरीर पर सूजन, शरीर का रंग बदलना, क्लेद, बिधरता सिंग में भारीपन, मुख से लार का स्नाव होना, रक्त की वमन आदि लच्चा होते हैं।

वाग्महाचार्या जी कहते हैं:—
शुक्रं पर्तात यत्रैपां शुक्र दिग्धै: स्पृशन्तिवा।
यदक्रभक्ने स्तत्राम्ने दृषिते पोण्डुतां गते।।
प्रनथयः श्वयथुः कोथो मण्डलानि श्रमोऽक्रविः।
शीतज्वरोऽतिकक्सादो वेपथुः पर्व भेदनम्।
रोम हर्षः स्नृतिमृ च्छां दीर्घकालानु बन्धनम्।।
श्लेश्मानुबद्धवन्हाखुपोतकच्छर्दनं सनृद्।
व्यवाय्याम् विषं क्रच्छं भूयोभूयश्च कुष्यति।।

अथित मनुष्य के अंग पर जहां चृहे का वीर्य गिरता है या स्पर्श होता है, उस स्थान का रक्त दूषित होकर फीकासा होजाता है, तथा वहां पर प्रत्थि सड़ान, चकत्ते, होते हैं। फिर उसे श्रम आने लगते हें, शीतज्वर अक्षि अत्यन्त वेदना, ग्लानि, कंप, हड़फूटनसी वेदना, रोमांच, रक्तसाव मूच्छां,तथा वमन (क्रें) में चृहे के बागीक २ वच्चे से कफ में सने हुये निकलते हैं प्यास बार २ खूब लगती है। ये विकार वहें दिनों तक जारी रहते हैं। चृहे का विप सर्वशरीर व्यापी एवं कब्टसाध्य होने से, बार २ कुपित होता रहता है। जब २ वह कुपित होता है,तब २ उक्त लन्गों में उप्रता आती है।

मृच्र्छा, शोध, विवर्णता, तसिका या लालास्नाव बधिरता, ज्वर, सिर भारी होना , रक्त की वमन इन त्रचर्णों से जानना चाहिये कि विष असाध्य कोटिका है। तथा—ग्रुनबस्ति विवर्णोष्ठमाख्या-, भैर्मन्थिभिश्चितम् । खुच्खुन्दर सगन्धंच वर्जयेदाखुदूषितम् । ( वारभट )

जिस रोगी का बस्ति प्रदेश सूज गया हो, छोष्ठ (होठ) का वर्ण बदल गया हो (होठ बिलकुल काले पड़ गये हों ) जिसके शरीर पर जम्बी २ चुहों जैसी प्रनिथयां निकली हों, और जिसके शरीर से इक्दंदर की गंध जैसी गंध आने लगी हो। ऐसा रोगी भी असाध्य होता है। त्रचाएों के विषय में विशेष द्रष्टच्य यह है कि दंश स्थान में शीव्र हो सूजन झाती है , तथा वह भाग प्राय:लान वर्ण का हो जाता है। सूजन में पीड़ा भी होती है शरीर में दाह घषराहट (बचैनी) होती है चूहे के विष के ये तीव लज्ञण प्राय: मास दो मास में स्वयं ही शान्त हो जाते हैं , किन्तु शोथ प्रायः जैसे की तैसी ही बनी रहती है। कुछ काल बाद यह सूजन कड़ी पड़ जाती है। मूर्षिक विष की विलव्याता यही है कि रोगी को कुद्र समय के लिये ऐसा मालूम देता है कि शरीर में कोई विकार नहीं किन्तु कुछ दिनों बाद ही उक्त तीत्र सच्छों से वह व्याकुल हो जाता है। यह कम कई वर्षों तक जारी रहता है।

श्राधुनिक शोध से केवल इतना ही पता लगा है कि रोगी के रक्त में जो मूखिक विष जंतु होते हैं. उनका श्राकार प्रकार उपदंश (Syphilis) के जंतु जैसा ही होता है, जो जल्दी नष्ट होना नहीं जानते श्रतः उपदंश जैसा ही यह मूखिक विष विकार चिरस्थायी होता है। तथा उपदंश की ही चिकित्सा इस पर उत्तम लाभप्रद होती है। किन्तु यह शोथ हमारे लिये कुछ नवीन नहीं है। हमारे प्राचीन आवार्यों ने अपने श्वानुभव से इसी प्रकार की चिकित्सा विधि का आदेश दिया है। हमारे आर्थ बैशक में इसपर वमन विरेचन रक्तमो चन आदि की विधि दर्शाते हुए सिद्धीपिथयों में से मल्ल सिंदूर, उपदंश सुर्य मल्ल भरम, गंधक रसायन आदि उन्हीं औषधियों की उपयुक्तता बतलाई गई है जो उपदंश पर भी लाभप्रद होती है।

दोषों की प्रधानताः मृषिक विषका चिकित्सा कम जानने के पूर्व हमें यह जान लेना आवश्यक है कि इसमें किस दोष की प्रधानता हुआ करती है। बाग्भट जी का कथन है कि जहरीले चूहे प्राय: कफ प्रधान हुआ करते हैं —

## "श्लेष्मिका कण्मुन्दुरा"

व्यर्थात इनका विष भी प्राय:-कफ प्रधान हुमा करता है इसी से कक के संचय और कीप के समय व्यर्थात हेमंत और वसंत ऋतु में (वर्षा से वसत तक कारण के अनुसार) मूषिक विष का कीप (जोश) अधिकता से होता है। लिखा भी है— मूषिकानां विषं प्राय: कुरयत्यक्षेषु निर्हतम्।

(सुभ्रत)

भौर-

यथा यथं वा कालेषु दोषाणां वृद्धि हेतुषु ।। (वाग्भट)

श्रशीत शरीर में व्याप्त हुआ चूहे का विष अन्न या बदती के दिनों में प्राय: कुपित होता है, श्रथवा दोषों की वृद्धि के हेतु के श्रमुकूल यथायोग्य समय में इसका कीप होता है। मृषिक विष एक प्रकार का दूषी विष है, जोकारण पाकर बीच २ में जोशीला हो उठता है। इसके विशेष कारण इस प्रकार हैं—

प्राग्वाताजीर्ण शीताञ्ज दिवास्व प्यहिताराजै: ।
दुष्टं दूषयते धातूनतो दुषी विषं स्मृतम् ॥
द्यर्थात् पूर्व दिशा की हवा के लगने से,
द्यजीर्ण से, शीतकाल या सरदी लगने से, दिन में
सोने एवं द्यहित भोजन करने से तथा वर्षा के
दिनों में विष कुपित होकर रक्तादि धातुश्रों को
दूषित करता है, श्रतएव ही शरीर में स्थित होकर
काल पाकर कुपित होने वाले विष को दूषी विष
कहते हें।

यद्यपि मूपिक विष साधारण रूप से कक प्रधान होता है परन्तु विशेपतः म्पकों की जाति भेद के कारण या देश काल प्रकृति आहार विहारादि के अन्तर से इसमें अन्यान्य दोषों का उद्रोक एवं प्रधानत्व होन। बहुत संभव है तथा उपद्रव भी उनमें से प्रधान दोष के अनुसार ही होते हैं।

जैसा कि इम उत्पर कह आये हैं विषेते मृतिक प्रायः श्लेष्मिक होते हैं किंतु इन जाहरीते चूहों में भी कई जाति के चूहे अन्य दोषों को भी कुषित करने वाल होते हैं—

अरुगोनानितः कृद्धी वातज्ञान् कुरुने गदान महाकृष्णोन पित्तं च श्वेतेन कफ एव च ॥ महता कपिलेना सृक् कपोतेन चतुष्टयम्।

अर्थात् अक्षण या लाल वर्ण वाले मूपक विष से रक्त में वायु काईदोष होकर कुषित होता है, तथा वात संबन्धि विकारों की करता है। अत्यन्त काले वर्ण वाले मूषिक विष से रक्त में पित्त दोष की दुष्टि हो कर पित्त जन्य विकारों की प्रधानता रहती है। रवेत वर्ण वाले चूहे के जहर से रक्त में कक का प्रकोप होकर ककीत्पन्न विकारों की प्रवस्ता होती है महाकपिल वर्ण पीच युक्त रवेत वर्ण के चूहों का विष रक्त को विशेष प्रकुपित करने वाला होता है। कपोत वर्ण अर्थात् धूसर वर्ण वाले चूहों के जहर से रक्त सहित तीनों दोषों का कोप होता है। अत्व जहां जेंसे विष से जिस दोष का प्रकोप हो तथा जैसे उपद्रव हों तदनुसार ही चिकित्सा करनी चाहिये।

चिकित्सा :-- इस विषय में "वैद्यक्रवत्र" में एक बार प्रकाशित हुआ था - कि चूहे के विष का निदान निश्चित किये वाद भी उपचार में कठिनाई-यां उत्पन्न होती हैं। मिषक विष के लक्ष्ण वातरक्त रोग से मिलते जुलते से होते हैं। वात रक्त में जिस प्रकार शरीर पर चक्र के आकार उठ आते हैं ऐसे ही चक्राकार मंडल मुपिक विष में भी होते हैं विसप और उपदंश में भी ये ही सच्छा होते हैं। अतः संदेह होता है कि ये विकार मुविक विष जन्य ही हैं या कात रक्त के हैं या विसप के हैं। या उपदंश के हैं। दंश के स्थान का शोध रक्त बात की शोय जैसी होती है इस रोग से प्रस्त रोगी जब श्रारपताल में डाक्टर के सामने जाता है। तब वे स्जन पर टिक्चर आयोडीन लगाकर उसे रूख्सत दे देते हैं। रोगी चहें के काटने की शिकायत भी यदि करे तो उसकी शिकायत की श्रीर कुछ भी ध्यान नहीं दिया जाता। वे तो अपनी परिपाटी के अनुमार बाहे जिस कारण से शोध हो, टिंक्चर आयोडीन लगाकर छुट्टी पा जाते हैं, चाहे एघर रोगी की पीड़ा घटे या बढ़े इसकी उन्हें कोई पर-बाह नहीं। हमारी मान्यता है कि टिंक्चर आयो- हीन मूर्षिक विष जन्य शोध पर कदापि लाभकारी नहीं है, प्रत्युत हानिकारक है। कई केस इस प्रकार बिगढ़ जाने पर डाक्टर लोग ऐसे क्रिप्तियाय पर ब्याजाते हैं कि बस रोगी के हाथ या पांव काट हालने चाहिये और तदनुसार बेचारे रोगी के हाथ पांच व्यर्थ ही में काटे जाते हैं। रोगी भी समफ लेता है कि लैर हाथ पांच कटने पर प्राण तो बचेंगे। किन्तु यह सीदा उसे बड़ा महंगा पड़ जाता है। मूर्षिक विप सर्व शरीरमें व्याप्त होजाने के कारण वह शरीर के दूसरे भागों में बढ़े जोश के साथ उभर कर, रोगी के अमृत्य प्राणों को हरण कर लेना है। अस्त,

मृषिक विष के केस में, स्थानिक उपचार के कप में दशांग लेप का अपयोग विशेष लाभंकारी पाया गया है।

शिरीय यष्ठी- नत चन्दनैला मांसी इरिद्रा द्वय कुष्ठ बाले: । लेपो दशांग सञ्चत: प्रयोज्यो विसर्प कुष्ठ ब्रख्य शोध हारी ॥

सिरस की छाल, मुलैठी, तगर, लालवन्दन इलायची, जटामांसी, इल्दी, दार इल्दी, कूठ और सुगन्धवाला, सब द्वार समभाग लेकर महीन चूर्णकर मूचिकविष जन्य शोध पर हम गुलावजल में बांटकर लगाते हैं। धृत के साथ लगाने पर शीघ लाभ नहीं होता। गुलाव जल में घोलकर २ या ३ दिन लगाने पर शीघ ही लालमूजन घटश्य होकर, जलन और पीड़ा भी दूर होजाती है। खाने के लिये रोगी को शाक्ष्यरोक्त महायोगराज गुग्गुल का सेवन पाटला मुल की झाल के क्वाथ के साथ दोनों समय कराना चाहिये। किंतु ध्रसाध्य ध्रवस्था में कोई भी इंसाज कारगर नहीं होता। इस विषय में तेखक ने अपना अनुभव वैद्यकल्पतर में प्रका-शित कराया था, वही अविकत रूप से यहां पाठकों के साभार्य हम उद्धत किए देते हैं:—

लगभग १२ वर्ष के पहले सुरत के एक जैनी गृहस्य को यही मुखिक विप जन्य विकार हुआ था सारे शरीर का रक्त विगड़ गंया था, तथा शरीर में श्रतिशय पीड़ा थी। कई प्रकार के इलाज करने से तथा विकार भी बहुत पुराना होजाने से रोग कुछ दब सा गया था। तथापि शरीर पर विवर्णता. बधिरतादि लज्ञण स्पष्ट दिखलाई दैते थे। इस पर से हमने ख्याल किया कि उसके शरीर में प्रविष्ट हुन्या मूर्षिक विष नष्ट नहीं हुन्या है। किंतु रोगी कहता था कि रोग बिलकुल दूर होगया। खैर, हमने कहा ठीक है। थोड़े ही दिनों के बाद उन्हें श्रकस्मात ठोकर लग गई। पैर में भयंकर शोध होगई। पुनः हमारी उनसे मुलाकात हुई। स्थिति असाध्य देखकर हमारे प्रथम किये निदान का हमें पूरा विश्वास हुआ। वहीं के एक डाक्टर उस पर बार २ चीर फाइं ( आपरेशन ) करते थे। पहिंयां बांचते थे, तथा कारबोत्तिक आईल और धायहोफार्म मुक्त हस्त से बर्ते जाते थे। किंत् डाक्टर साहब को लेशमात्र भी श्रांति न थी कि रोगी के शरीर में चहे का विष है। थोड़ा सा लग जाने से ऐसी भयंकर हानत होगई (रोगी को मधमेह की शिकायत विलकुल नहीं थी ) उसका कारण भी शरीरस्थित पुरन्तन मृषिक विष ही था। चुहे के विष की श्रोर डाक्टरों का बहुत ही कम ध्यान जाता है, अत: उस विष से रोगी के शरीर का रक्त कितना बिगड़ जाता है, तथा उसका

पश्चात असर (After offects) कहां तक
गुप्त रहता है, यह बात उपचारक के ध्यान में नहीं
आती अन्त में उक्त रोगी कई दिनों तक असाध्य
दु:खदायक अवस्था में रहकर परलोक सिधार
गया। अस्तु,

चिकित्सक एवं रोगी को भी यह भलीभांति हमरण में रखना चाहिये कि छौषधि प्रयोग से शारीरिक विष के लझण दूर होजाने पर भी चृहें का विष समृत नष्ट होगया ऐसा कदापि नहीं समभ लेना चाहिये। महायोगराज गुग्गुल का सेवन, पाटला (पाद या पहाड़ मूल) की जड़ की छाल के क्वाथ के साथ, अथवा मंजिष्ठादि क्वाथ के साथ कराते ही रहना चाहिये। तथा खानपान में विज्ञेष सावधानी रखनी चाहिये खटाई, मिर्च, गरम पदार्थ एवं उत्तेजक पदार्थों से सख्त परहेज रखना आवस्यक है।

मृषिक विष प्रतिकारार्थ अन्यान्य योगः —
सर्वसाधारण के लाभार्थ हम यहां पर और
भी उत्तमोत्तम प्रयोग प्रकाशित किये देते हैं, जो
मृषिक विष के संहार में अकसीर हैं—

- (१) श्रांकोल की जड़ की छाल की बकरी के मुत्र के साथ पीसकर, यथायोग्य प्रमाण में, नित्य दो बार खिलाने से तथा इसी का लेप करने से शीध ही सर्व प्रकार के चृहों का विप नष्ट हो जाता है।
- (२) शुद्ध हरताल. कमज़ के फुल, श्रीर शुद्ध मनसिल समभाग लेकर चूर्ण कर, फिर उसमें तुलसी के रस की लगभग २१ भावनार्थे देकर शीशी में भर रक्खें। मात्रा २ से ४ रत्ती तक, तुज़सी पत्र स्वरस श्रीर शहद के साथ दिन में दो बार

चटाना चाहिये। इससे चूहे का भगंकर विष भी शयन हो जाता है।

# (३) मूपाकर्णी बुटी का प्रयोग :--

म्साकानी लता जाति भी प्रायः चौमासे में होती है इसकी लंबाई १ से ३ फीट तक, घनी शाखाओं से युक्त भूमी पर फैली हुई होती है। पत्ते चूहे के कान के आकार बाले बीच में किंचित कमानदार गोलाई लिये हुये श्वेत रोमावली युक्त हरे रगं के होते हैं।

मुमाकानी यूटी को लाकर उसके कादे से दंश स्थान को धोकर यही कादा पिलाना चाहिये इसके स्वरसका भी लेप दंश स्थान पर किया जाता है।

दंश स्थान के पक जाने पर मूसाकानी बूटी के क्वाथ से ब्रग्ण धोकर उसे घृत में पकाकर सर -हम सा बना लगाना चाहिये। तथा मुसाकानी की पत्ती ६ माझे और काली सिर्च ४ नग एकत्र घोट कर दोंनों वक्त पिलवें।

- (४) सिरस के बीजों को आक के द्धमें ३ बार भावनाय देकर इसमें छोटी पीपत का चूर्ण मिला खूब घोट घाट कर बने जैसी गोलियां बना रक्लें प्रातः साय १-१ गोली जल के साथ सेवन किया करें। अथवा आपामार्ग के कोमल तुर्गे का रस शहद मिला प्रातः साथ पिलायें।
- (४) श्वेता पुनर्नवा की जड़ झौर त्रिफला समभाग एकत्र महीन च्रां कर रक्खें। प्रातः सायं १ से २ माशं की मात्रा में शहद के साथ सेवन करने से कुछ दिनों में लाभ अवश्य होता है —

वास प्रयोगार्थ निम्न किखित भौषधियां साभ दाय ह हैं—

- (१) सिरस बीज, करॅंज बीज और नीमपत्र इन तीनों को गोमूत्र में पीस तेप करना चाहिये।
- (२) मँजीठ धमासा हल्दी सेंघानमक पानी में पीस कर लेप करें। अथवा केवल मँजीठ और धमासा का लेप भी कायदा करता है। अथवा हाथी की लीद का प्रलेप भी लाभ दायक होता है।
- (३) वित्रक मूत्त के चूर्ण के साथ पक्तकर सिद्ध किये हुए तिल तेल की रोगी के ताछ पर उस्तरे से बारीक बीरा दे र मईन करने से विशेष लाभ होता है।
- (४) नागदमन पत्र के क्वाथ से घोना उसी की लुगदी नगाते गहने से भी नाभ होता है। अथवा

राई को सिरका में पीस लेप किया करें। पुटासि यम परमैगनेट का लेप जाभदायक है अथवा जहां सूहे ने देश किया हो इस स्थान पर बहुत से घी का शीध ही लेप कर देने से भी लाम होता है।

(४) नारियल के फल के छीलड़ को १६ तोले जल से पीस लेप कर देने से मृषिक विष इस मकार नष्ट हो जाता है जैसे अम्ल कांजी इमली की खटाई को दूर कर देती है।

कहा है -

माइ कार्घ वसु भाग पेषितं ।

नारिकेल फल वल्कलोदकम् ॥

आखु संभव विषे विनाशयेत्।

तिम्तिणीक भिव साम्लकांजिकम् ॥

( वैथ मनोरमा)

# कौलचिकम (Colchicum)

[ ले०--कविराज एस० के० भारद्वाज आयुर्वेदभास्कर ]

---

इस के वृत्त का नाम Colchieum autunmale है। इसकी गार्ड जून के माम के अन्त में इकट्ठी की जाती हैं इनके छिलके उतार कर इन को आडंकल काट लेते हैं, और १४० दर्जे कारन हाइट से कम ताप पर गर्म करके शुद्ध कर लेते हैं यह औषध बिटेन से यहां आती है।

ताजी गाठें १। इंच लम्बी सौर एक इंच चौड़ी तिकोनीं शक्त की एक तरफ से चपटी और दूसरी और से महदब होती हैं। बाहर का छिल्का पत्तजा और भूरे रंग का मिल्ली के समान होता है और अन्दर का छिल्का सुर्खी मायल जाई रंग का होता है। बीच में से गांठे मफेद और ठोस होती हैं जिन में से एक दूध जैसा पदार्थ निकलता है, जिसका स्वाद कड़वा और गन्य बहुत तुरी होती है इसे जहां से तोड़ना चाहें वहीं से टूट जाता है।

#### अवयव

# (१) कालचीमीन

यह इमका एक मन्त्र श्रतकताइड है। जो छोटी र कर्नमां में मिलता है। यह एल्केहित में भूत जाता है लेकिन श्रक्मर एसिडों के मिलने से इस के सन्त्र कालवां सीईन में नवदित् होजाते हैं।

# (२) वेर्रेट्रान

यह कम परिमाण में गैतिक एसिंड के साथ मिली हुई होती है। (३) एक शकील तेल

(४) स्टार्च शूगर और गम (गोंद)

त्रिरोधी -मारे एस्ट्रैंजेन्ट मिश्रण। टिंबर बाक आयोडीन और टिंबर बाक खायकम ।

मात्रा - २ से ४ मेन - ( चूर्ण की दात्तत में)।

#### मिश्रस

एक्स ट्रॅक्टम कोलचीमाई--

(Extractum Colchici)

यह ताजा कोरम से नैयार किया भाना है। बाइनम कोलचीसाई

(Vinum Colchici)

शुष्क गांठ कालचीसाई १ भाग, शीगी वाइन ४ भाग।

भात्रा — () से ३० बृन्द । (कालचीकम सीहज )

# कालचीमाइ सेमिना

(Colchier Semina)

यह कालची कम के बृज के नीचे से इकटठे किये जाते हैं, श्रीर मुखा लिये जाते हैं।

## पहिचान

वृत्त इन का लगभग ं है है व गोत एक तरफ से नोकदार मुर्खी मायल भूरे रंग के खुरदरे और बहुत कठोर बड़ी कांठनता से चूर्ण होने बाले वीज होते हैं । गन्ध इनमें कुछ नहीं होती मगर स्वाद निहायत नेज और कड़वा होता है। मस्टर्ड सीड्ज (कालीराई के बीज) जैसे होते हैं।

## प्रभाव

#### बाह्य

स्वचापर लगात से काल विकम की इरीटैन्ट तासीर बढ़ जाती है। जिस स्थान पर लगाया जावे उस जगह हाईपरिमया होजाता है। त्वचा पर जलन पैदा हो जाती है यदि इसका चूर्ण सूंघा जावे तो छीं के आने लगती हैं।

# ञ्चान्तरीय

# मुख-आमाशय और आंत्र

कमपरिमाण की श्रीवध देनेसे बहुतसे शादिमयों पर सिवाय इसके कुछ असर नहीं होता, केवल जिगर से कुछ पित्त निकलने लगता है लेकिन बाज आदिमयों की इस से भूक उन्द हो जाती है। दस्त लग जाते हैं, जी भिवलता है। श्रीर कौलिक पेन की तरा पेट में शूल होता है। बड़ी मात्रा से मनुष्य के उदर में तीज्ञशूल होने लगता है। वमन श्रीर श्रातसार के साथ साथ रक्त भी मिला हुआ आता है श्र्यांन यह श्रीविध गैस्ट्रोइन्टस्टाइनल इर्टिट है। इन नक्षणों के कारण रोगी बहुत कमजोर हो जाता है नाइ बहुत मंद पत्रकी श्रीर तेज हो जाती है जिस को अं जो में भ्यू डीकल्स (Thready pulse) कहते हैं।

त्वचाशीतल होजाती है और इसके उपर ठंडा पसीना त्राता है श्वास मन्द होजाता है फिर मृत्यु हो जाती है। यह प्रसिद्ध है कि सारे लक्षण इस कारण से ही नहीं होते कि कालिकम का प्रभाव हृदय या श्वास के उपर पड़ता है बल्कि यह सब परिगाम गैस्टोइटिराइन्टिस का है, जिससे . यह मृत्युकारक को है. एस होता है आगर काल चीसीन को हाइपोडरिमक इंजैक्शन द्वारा शरीर के अन्दर प्रवेश करें तो तब भी यही लक्षण उपस्थित होते हैं जिससे जाहिर होता है कि अल्कलाइड काल चिकस का प्रभावशाली सत्व है रक्त में पहुंचकर रोदों में स्रवित होजाता है और यहां पहुंच कर

गैसट्रो इन्टीराइटिस के तीत्र लक्षण उत्पन्न कर देता है। बड़े अचम्भे की बात है, एक परि-मित परिमाण से अधिक सेवन कराया जाये तो किर उस से ज्यादा तंत्र लक्षण पैदा नहीं होते हैं। पशुओं में इसका हक्ष्य पर प्रभाव ठीक नहीं पड़ता लेकिन वमन और इस्त अधिक तीत्रता से आते हैं

## मांस पेशी संस्थान

श्रीषधि की ठीक मात्रा देने पर कोई प्रभाव नहीं होता है जहरीली मात्रा से भी मनुष्य के होश हवाश में कुछ फर्क नहीं खाना, ठंडे खुन वाले जानवरों की अपेसा गर्म खून वाले जानवरों में इस श्रीपथ के सहन करने की शक्ति कम होनी है, लेकिन सारे जानवरों में बड़ी मात्रा के बाद हिस (चेतना शक्ति) मफ़लूज होजाती है अन्त में मस्तिष्क व शुपुम्नाके केन्द्र मंद पड़ जाते हैं, श्वास संस्थान पर पद्माधान का प्रभाव होजाने से मृत्यु होजाती है श्रीर कालचिकम का प्रभाव मांस पेशियों पर ऐसा ही पड़ता है जैसा कि वेसोट्रीन का पड़ता है।

#### वृक् -

मूत्र पर पड़ने वाले कालचिकम के प्रभाव के बारे में डाक्टरों के भिन्न भिन्न मत हैं, परन्तु निश्चयात्मक युद्धि से कुछ कहा नहीं जा सकता कि मूत्र के परिमाण पर इस का कुछ असर होता है या नहीं। इसके विष से जब मृत्यु होती है तो इस दवा का अल्कलाइड रक्त के आन्तरिक भाग में होता है।

#### उपयोग

केवल नुक़रस (ग्रामवात) की बीमारी के श्रतिरिक्त यह दवा और किसी रोग में संवन नहीं होती । अगर इसे गठिया के दौरे के बीच में दिया जाये तो दर्द में बड़ी भारी शान्ति होती है। थोड़ी मात्रा में परिमाण के अन्दर दी जाय तो दौरे की तीवता को कम कर देती है। जब गठिया के रोगियों को डिसपेप्सिया, ऐग्जिमा, सरदर्द, न्यूराइटिम, ब्रांकाइटिस आदि शिकायर्ते हो जायें तो इस दवा से बहुत फायदा होता है यह श्रीपिध इस रोग में विशेष प्रभाव रखती है मगर यह मालम नहीं कि यह प्रभाव किस प्रकार से होता है। झक्सर इस को अन्य पित्तस्वेदक दवाओं के साथ मिला दिया करते हैं, विशेष कर जब कि पित्तरेचक श्रीषधियां किसी भामवात के रोगी को देनी हों और इन्टसटाईनल इस्टिशन के लज्जा उत्पन्नहो जार्ये तो इस के इस्तेमाल को कुछ समय केलिये छोड़ देना चाहिये क्योंकि यह दिल की सुस्त करती है।

इसके सेवन काल में कोष्ठवद्धता कभी नहीं होनी चाहिए क्योंकि यह शरीर के अन्दर जमा होना शुरु होजानी है इसलिये इस को किसी रेचक औपिथ के साथ मिला कर देने हैं। गांठों की निस्थत बीज अधिक शक्ति रखते हैं।

## ऋौपधियां

धामबात में जब शोध उप्रकृप में हो तो इस का सेवन बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ है। वाइनम कीलाजिसाई २० वृंद सोडा सैलीसिलास १२ श्रेन सोडा बाई कार्ब १६ प्रेन मैग सल्क १ द्धाम एक्वा मेन्थी पिवरेटा १ घौंस

ऐसी १-१ खुराक ३-३ घंटे के बाद आमवात के रोगी को सेवन कराना चाहिए।

हमने बहुत बार ऐसा देखा है जब श्रामवात में शोथ अधिक होती है संधियां सूजी रहती हैं रोगी शूल से वेचेन रहता है उस समय यह दवा जास प्रभाव दिलाती है।

यकृत पित्ताधिक्य या पाएकू, कामला में इस को पित्तसाव करने के लिए देना अभीष्ट हो तो उस समय मृत्रल औषिषयों के साथ देने से कौलिषकम पित्त का भाव कर देता है। क्रानिक गाउट के रोगियों में जब रोग का वेग न हो परन्तु एक दो संधि पर शोध शेष हो जरा सी सदी लग जाने पर अथवा वातल वस्तु खाते ही शूल शोध हो जाता है उस समय यह आयुर्वेदीय प्रयोग विशेष लाभ देता है।

श्वश्वगंधा १ तोला विधारा १ तोला पुरंजान शीरी ४ तोला यवजार १ तोला सनाय ६ माशा

सन को कूट छान कर सम भाग मिश्री मिला कर ३-३ माशा प्रातः सार्थं उच्या जल से सेवन कराने से जमी हुई आमवात की सन रत्यत वह जाती है।

# चाय में विषेला तत्व

[ ले०--श्री वैद्यराज ईश्वरदत्त मिश्र 'त्रायुर्वेद मिएं']



श्वाय का प्रथम उत्पक्ति स्थान चीन देश है, श्वीन के श्वितिरक्त हिन्दुस्थान तथा लंका में भी इसकी उत्पक्ति काकी होने लगी है। हमारे नव शिक्ति युवकों में इसका प्रचार देखा देखी अधिकाधिक बढ़ना जारहा है। वे लोग इस के दुर्गुणों पर ध्यान न देते हुये रात दिन प्रयोग करते हैं। हम जानते हैं कि प्राणहारी सोमल आदि विच भी युक्ति युक्त मात्रा में देने से प्राण देने वाले हो जाते हैं परन्तु इस को श्वच्छे शास्त्रानुभवी चिकित्सक ही युक्ति युक्त मात्रा में देकर प्राण देने वाला बना सकते हैं, श्वन्य नहीं।

चाय के गुण्-ः

हज, उटण, तलकी, कट्ट, विश्लेषणी, द्रव को

# हिरएयतुत्थासव

उपरोक्त प्रयोग कूट कपड़ छन कर २ छटांक लेकर मृत संजीवनी सुरा (७४ की सदी घल्कोहल वाली) १ पोंड में मिलाकर काच के डाट वाली बोतल में डाल कर रख दें। और १ मास वार फिल्टर पेपर में छान लें।

#### मात्रा

१ क्षाम से २ क्षाम तक पानी के साथ दिन में इ-४ बार सेवन करावें।

रोग

श्रामबात के लिये विशेष हितकर है।

morture and the

शोषने बाली है। इसमें खास कर टैनिक एसिड् चौर थीन के भाग निम्न लिखिन प्रकार से होते हैं टैनिक एसिड् १ गिलास में १० से १२ हिस्से तक रहता है, और थीन २ से ४ हिस्से तक।

# टैनिक एसिड्

इसका प्रभाव ४ प्रकार के ककों में से क्लेंदन नामक जो कक है उसके ऊपर इतना बुरा पड़ता है, कि मन्दागित होकर पाचन शक्ति कम हों जाती है और अंतिड़ियों में भी इसका बहुत बुरा असर पड़ता है, जिससे कि मलावरोधकादिक शिकायतें होने लगती हैं।

#### थीन

इस विषेले तत्व का प्रभाव सास कर ज्ञानेनिद्रयों पर तथा हृद्य पर घटित होता है, जिससे
कि कमशः उन्माद, हृद्य धड़कन आदि ज्याधियों
का सामना करना पड़ता है। चायके पीते ही जो
ताजगी व फुर्ती प्रतीत होती है वह इसी (धीन)
के ही गुण हैं इसके अतिरिक्त निद्रा नाशः शरीर
कम्पनभी होता देखा गया है। लोग चाय को मस्तिक को स्फूर्ति देने वाली सममते हैं यह केवल
भ्रम है इसके अतिरिक्त लोग यह भी कह सकते हैं
कि इससे हमें अभी तक कोई भी हानि नहीं हुई
किन्तु इसके गुणों का अनुभव कुछ दिन पश्चात
मालूम होगा। आजकल लोग चाय की जुराइयों पर
ध्यान न देते हुए इसे दुनियां में सभ्य संसार का

सर्वोत्तम पदार्थ मानकर उपयोग में लाते हैं फलतः वे चाय की उपासना से अपने मस्तिष्क स्थित झान तन्तुओं को निर्वल बनाकर मन्द्रांग्न का आवाहन करलेते हैं. मन्द्रांग्न से मनुष्य के शरीर पर कितना बुरा प्रभाव पड़ता है इसके विवेचन की आवश्यकता नहीं, आचार्य सुश्रुत का कथन है कि अग्नि मूलं बलं पुंसाँ रेतो म्लंहिजीवनम्। अर्थान् अग्नि ही शरीर में बल की जड़ है और शुक्क ही मनुष्य के जीवन का मृल है। अक्सर देखा गया है कि चाय के सेवन करने से खुराक बहुत कम हो जाती है। अक्सा ठीक २ परिपाक न होने से उत्तमन्स भी नहीं बन पाता, रसके अभाव से अन्य धानुएं भी चीए। होने लगती हैं जैसे कहा है —

रसाद्रक्तं ततो मांसं मांसान् मेदः प्रजायते। मेदसोम्थि ततो मज्जः मज्जाया शुक्र संभवः— त्रर्थात् रस से रक्त, रक्त से मांस, मांस से मेदा, मेदा से हड्डी, हड्डी से मज्जा, मज्जां से शुक्र कमशः बनते हैं।

इसी प्रकार इस विष रूपी चाय का असर कमशः शुक्र तक प्राप्त होकर प्रमेह आदि भयंकर रोगों को कर देता है. और होने वाले जो बालक वालिकायें हैं उनमें भी इसका दुगुंग् प्राप्त होकर जीवन भर नेत्रों में दुबलता, तथा शुक्र संबन्धी व्याधियों से प्रमिन रहते हैं। एतद्धं जिन्हें बीर्य संबन्धी कोई विकार हो अथवा बीर्य की रला चाहते हों तो नाय का सेवल कहापि न करें क्योंकि चाय में जिनने गुगा हैं वे सब बीर्य को हानि पहुंचाने बाले हैं, जैसे शुक्र का गुगा शीतल है तो चाय का उत्म, शुक्र का गुगा भारी है तो चाय का हत्का इसी प्रकार क्रमशः शुक्र के गुगा

स्तिम्ध, मधुर, गाड़ा, ऋौर पोषक हैं तो चाय के गुग कमशः रूच, कट्र, विश्लेपणी और शोपक हैं। अनएव चाय को शहयन्त हानिकर पदार्थ समम कर हमेशा इमसे दर रहने का प्रयत्न करना चाहिए। चाय पीने की श्रादत भी एक प्रकार का इयसन है जसे गांजा, भांग, शराब ब्रादि इयसनों की छोड़ने में कष्ट मालुम होता है इसी प्रकार चाय भी मनुष्यों से बहुत कठिनाई से छुटती है। एतदर्थ इस व्यसन से अपने आप को अलग रखना ही श्रेयस्कर है और जिसकी आदत पड़ गई हो उसे धीरे धीरे छोड़ देना ही लाभदायक होगा किन्तु देखा गया है चाय के प्रेमी लीग इन सब दुर्गु हों को न सनभते हुए अपने नवजात बालकों को भी इसे हितकर समभ कर पिलाने हैं परन्तु बालकों के उस स्कामल शरीर पर इस उत्तेजक पदार्थ का क्या प्रभाव पड़ता है और इस से क्या हानि होती है उसे व्यक्त करना कठिन है इस के लिये बाल चिकित्सा के एक सिद्ध हस्त डाक्टर साहब का कथन है कि मैं यशों को दिनमें तीन बार शुराब विता देना पसन्द करता है, व्यन्त चाय और काफी जैसे उत्तेजक पदार्थों को देना नहीं चाहता।" किन्तु हमारे भारत वर्ष में तो प्रीप्म ऋतु में भी इम का प्रयोग करने में नहीं संकृषित होते। एतदर्थ मेरा कथन यही है कि ऐसी उत्तेजक तथा दृ:स्वाद् बस्तु तो सेचन करना कहां तक ठीक हो सकता है कि जिस का दुःश्वाद् मिटाने के लिये द्ध और शकर मिलानी पड़ती है। यदि धितदिन पीने वाले व्यक्तियों की भी सिर्फ जल में वाय उवाल कर दे दी जाय तो उन्हें भी बमन होना असम्भव नहीं है।गा । इसीलिये यदि इस विपर्वा

चाय को त्याग कर यदि केवल दूध और शकर का ही सेवन किए। जाय तो कितना लाभदायक होगा यह बताने की आवश्यकता नहीं है। यदि चीर का भी अभाव हो तो हमारे आचार्यों के बताये हुए निम्नलिखित उथ: पान ही का सेवन करना अत्यन्त लाभदायक होगा,

#### उप:पान

श्रशः शोधमहरयो ज्वर जठर जरा कुछ मेदो विकारा । मूत्राघातास्त्र पित्त अवरा गल शिरः श्रोगि श्लाचिरोगा ॥ १॥ ये चान्ये वार्तपित्त चनज कक कृता व्याधयः सन्ति जन्तेः । नांभ्तात्रभ्यासयोगा दपहर्गत पयः पीनमंते विशायः ॥ २॥

अर्थान सूर्योद्य होने के पहले ही यदि शेनल जल का पान किया जाय तो बवासीर, शोध, संप्रदेशी, ब्वर, उद्दर के रोग, बुढ़ापे को नहीं आने देता, कोढ़, मेद रोग मूत्राघात भूत्र कृच्छ रक्त पित्त कर्ण रोग किन्द के रोग शिरोरोगकमर का दर्द नेत्रा भिष्य-न्दादि रोगों के लिये अत्यन्त हितकारक है। बात पित्त कफ और सतज सम्बन्धों जो ज्याधियां हैं, बनहें भी नाश करने बाला है, इसके अतिरक्त मलाबरोध के लिये तो रामबाण के ही समान हितकर है बड़े खेद की बात है कि ऐसे अमृत तुल्य उपः पान को प्रातः काल काम में न लाते हुए इस विपैले तत्व का सेवन करते है। मैं आशा करता है कि आप लोग विचार पूचर्क इस से मुक्त होकर अयंकर ज्याधियों से बचते हुए उप पानका सेवन कर स्वतन्त्रता को प्राप्त करेंगे।

सर्वे कुशितनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः । सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चित् दुःख भाग्भवेत

-X(II)-X(-

# अजीव व गृगीव तिला बचपन की स्वराव आदतों व युवावस्था की अरंपनत विषय वासना, इस्तमैशुन इत्याद से जो इन्द्रीय छेटी, पतनी, टेवी व दुर्शन हो जाती है इसके थोड़े ही दिन लगाने से ये सब शिकायतें वहुत जल्द दृग होकर लिगेन्द्रिय स्थूल और दद हो जाती है, और मैशुन शक्ति प्रवत्त हाकर पुरुष सन्तानीत्पत्ति के योग्य हो जाता है. और इस से किसी प्रकार की हानि नहीं होती और न छाला चगैरा ही पड़ता है। मूल्य १ शीशी २) छोटी शीशी १।) बड़ी तीन शीशियां ४) डाक टयय आदि प्रथक। हत आयुर्वेदीय औषध भागडार चांदनी चौक देहली।

एकोनाइटीच एकोनाइट (वत्सनाभ)	धत्रा	े ट्रेक निया	संबिया (हरताज) (भेंसिल)	नम
मुख कंठ में सनसनाहट बार मुंह मुझ हो जाता है के दस्त, मेदे में दर्द, जलन और गर्मी कानों में घुनघुनाहर पुतली फैली दुई, दिल का इत्त्रना, होश अन्त तक रहता है पट्ठों पर कालिज	मुल, कंठ शोष, तंत्र पिपामा, बेहोशी कै सिर में चक्कर, गशी, फिर मृत्यु। इस के नंज में चारों और दरोदीबार सुनहरी दिलाई देती हैं।	धनुवति (टिटेनश) आरोप, अंग मई कम्प नेत्र कितीका का विस्तार, नाड़ी मंद, सुनने तथा देखने की शक्ति तेज, चेहरा नीला, चेनना अन्त	त्वाने के बाद मेदे से जलन, दर्द, बेहोशी, कै अतिसार, व्यास,गलेमें ऍठन. हृद्य की गति चीया नाड़ी मंद और श्वास कट्ट, ज्वा चिपचिपी,शीतल मुख्दों होकर रोगी मर जाता है	লক্ষ
ਸ ਸ਼ਾ,	१ माशा	म् म् न न न न स	१रती से २रती तक	घातक मात्रा
१० मिनट से ६ घंटे तक		६० मिनट से वंदेतक	२० मिनट से लेकर १ दिन या १० दिन तक	घातक समय
सत्क आफ जिंकसे वमन कराये। कास्टरायल की पूरी मात्रा दे वरान्डी गर्म पानी में या एके नियां बार र देते गई काकी दे गर्म मालिश कर गर्म पानी की बोतल इघर उच्चे विजली लगायें पीठ पर राईलगायें।  गूलर चौलाई शामण्ड खार्यों जासुन इनका रम देंद्रीग दे।	को पिताना। देसी नीलेथोथे से के कराना सरको शीतल रखना उने जक वस्तु देनातेज विदेचन देने के बाद अफीम देना काकी का काढ़ा देना, एरएडमूल कल्क, बच दूध, कपास बीज कपाय, सर चेहरे गरदन पर शीतल पानी डालें।	कोवलं कार्च्यां, पान का रस गोधत क्लोर कार्म या ईथर संघाना मेदे को पुटेशियम पारमेंग- नेट से घोना पोटेशियम श्रोमाइड क्लोरल हाइड्रंट को बड़ी मात्रामें गुद द्वारा देना टि० एकोनाइट टि० वेताडोन। क्लोरोकार्म व क्लोरल इन में से किसी	स्मक साइकत से मेरे को घोता या के कराता एथोमार्कीत हाइकलोराइड का इन्जैक्शन लाइ र केरीपर क्लोपाइड १॥ प्लुइड खोंस को २ खोंस पाती में पिलायें है स्त्री मंखिया।	विकिस

जावन सुधा				११७
श्रीका लिक एसिंह •		<b>ध</b> की म	प्रिटेरियम	नाम
कंठ,मेदे में जलन श्रीर दर्द,काले रंग की खून मिली हुई वमन, खाना पीना, सांस लेना निगलना कब्ट से,तीज प्यास, श्रोष्ट श्रीर मुख का अन्दर से जलकर सफेद होना, हिक्का शरीर में पंठन श्रीर श्वासावरोध होकर मृत्यु।		सर में बक्कर, बेहोशी, (जिश्चेष्ट) अग्रेन (र अर्थानट से १२ श्वास खराटे के साथ, श्वास मंद, नाड़ी त्तीण रत्ती - घंटेतक बेहरा सुर्का, खांखें बन्द, पुतिलियां सुकड़ी हुई हिलाने हुलाने से होश में नहीं होता, श्वास में अकीम की गंथ।	श्वांतों में दुई, शीतल खेद, श्रांतिसार, वमन ठंडा पसीना श्वाकर मृत्यु होजाती है।	सन्तरा
<u>**</u>		४ मने (र रहा)	 श्र	चातक मात्रा
१० मिनट से इन्हें अधिक		४४ मिनट से १२ घंटे तक	१दिन	घातक समय
इसमें कै व स्टमक पन्प काम में न लाये। खिंदया मिट्टी, सफेरी चृता १। तोला सर्वापाव जल में घोलका दें—दूध बार २ पिलायें। विशेष विकित्सा के लियें (देखों एसिंद् कोंग्जिलिकम्)	श्वास के क्रायम करने के लिये विजली लगायें। हींग की बड़ी मात्रा पानी में घोलकर पिलायें, श्रदश्क का रस पिलायें, कपास की जड़ का चूर्यों, पीपल त्वग कपाय दें।	स्टमक पन्प से मेदेकी साफ करें, के करायें, वेहरे सर गर्दन पर शीतल जल छिड़कें, होश आने तक हथेली तलवेंको खुजलावं टहलायं, सोने न दें, होश जाने पर चाय काकी माजू इनका तेज कथ पिलायं बेहोशीके कारण के न हो तो एपोमार्फीन का इंजेक्शन देने से कौरन के होजाती है।	बीहदाने, इसबगोल, रेशाखत्मी का लुखाब देना,गोंद का पानी गुद द्वारा देना, थोड़ी मात्रा में अकीम देना, गर्म पानीसे स्नान कराना।	विकत्सा

₹ १=						
चिक्सिमा	कीमकेटखाकसोडा, मगतेशिया, सल्केट आक मगनेशिया, सिरका पिलाना तथा गर्म, पानी से म्नान कराना ।	स्टमक पम्प के मेदे की साफ करना, त्राटा पानी में योलकर पिक्ताना	स्टमकषक्य से मेदे को धोना पानी में जाहा घोल कर पिलाना ।	+	कै लाने वाली दवा, दही का पिलाना साटी बस्तु देना जैसे- इसली नीब- ज्ञाम का ज्ञाचार महा, चावल की धोवन, सोंठ पड़ी दही,	बमन कारक ज्यौषध न दो पानी में खड़िया मिट्टी मिताक्स टेबत स्पून भर पिताजो। जैतृन का तेल (२॥ छ०) १० छ० पानी दूध
वातक समय	+	+	+	×	+	+
घातक मात्रा	+	- <del> </del> -		·	+	+
तमास्	क्ठं में खुरकी व तंगी मेदे व चांनी में दर्दे प्रस्तित सांस पेशियों पर काकित अन्त में सन्यासा वस्था	नीतो या हरे रगं की तीत्र बसन, मिर दृष्, छद्र शुल, पीलिया, आतिसार।	गले का जलता सुहं जाजाना जातिसार में पित्त निकलना, इंग्ट मांच हाथ पांच का कांपना।	(देल्लो धनूरे की)	इन से मृत्यु नहीं होती यदि विषेता प्रभाव हो तो पट्टे कठोर होजाते हैं—बेहोश मनुष्य कभी र हंस पड़ता है।	मुख खोध्य जले हुए बीर उन पर कथा ? सफेद दाग (सास्ट सिप्ट) पीले या काले दाग (नाइट्रिक एसिड्र, लसक्युरिक एसिड्र)
म	एसिटेट अ।फ लेड	वृस्टिटमाफ कापर (जंगार)	श्रायोद्यीन	बेलेखीना	विभिया गांजा चरस	एसिड सलक्ष्यूरिक नाइटिक ।या साल्ट स्प्रिट

रक मिश्रम बमन। बोलने में कटा। मुख्यों। मुख बौर बोष्ठों पर सकेड़ दाग होते पट्टेनरम खौर बेकार।	+	+	सास्ट या सल्केट झाफ सोड़ा । पाइस्ट पानी वा इध में जैतून का तेल ( गा छ॰ मैं २० छ० पानी )
उद्देसे शुल और मरोड़, सूच्छों।	+	+	पांच को गर्म रखना कृत्रिम श्वासत सिरका नीवृ का रस वा चूने को पानीमें मिला कर दो । हुध दो। कैन्त का तेल −शा झ० पानी १० झ० मिला कर दो।
इससे उद्द में तीत्र शुल होता है।	+	+	हतना, गेहूं का दतिया, आत् की तिववही इसव- गोल की भूसी, वहुत सादी फंकाई जाये भिष्टी का शाफ, तेसदार बासु में मिलाकर हो, तुज्ञाव में फंस कर शीव के साथ निकक जावेगी।

		———विष-	विज्ञान
मरकरी (प या) ",	काट करने बल्ले विष मांसका विष मञ्जूली शाक	मिट्टी का तेल	귀
मरकरी मुख का खाद कसैला बमन श्रीर श्रतिसार, (प रा) । जिह्ना सफेदी मायल, मूर्ल्झ।।	वसन होना, श्वतिसार, थकान, पट्ठों की कसजोरी जिह्ना का बादासी रंग, ज्वर, नाडी तीत्र, नोट— विश्चिका के समान लेकिन हें जे में कभी ज्वर नहीं होता।	मुख तथा कंठ में जलन खौर दर्द। बमन पदार्थ में तेल की बू, श्वास में मिट्टी के तेल की बू, मुच्छो।	लंब्रा
+	+	+	घातक मात्र
+	+	+	घातक मात्रा घातक समय
मैटा और पानी घोल कर पिलाओ। फिर बसन कारक औषधियां दो। जेंसे गर्म	वमन कारक वस्तु, भरंडी का तेल र औंस बगण्डी और गर्म द्ध, बदन की गर्मी, किजिस श्वास किया।	वमन कारक दवा हो, वरांडी से पांच तथा शरीर को उधा रक्तते।	विकित्सा

+ सेहा और पानी घोल कर पिलाओ।
पिर बसन कारक श्रोषधियों हो। जेसे गर्म
पानी और नसक
लेसोनेट श्रीर बरान्डी
बसन कारक श्रोषध हो।
+ सारक हवा हो।
हथ- भैदा पानी में सिला कर हो।

रंगी के मुख पर शीनल जल के छीटे मारकर
क्योदो, गर्म बाय, किंत्रिय ज्वास किया करें
एसीनियां का मुंघायें,

अल्काहल

वनक्रसे की।

फड़कते हुए और कठोर ।

श्वास खरीटेदार पुतिलयों सुकड़ी हुई, पट्ठे

श्वास में तारपीन की गंध और और मूत्र में

चकर श्राना, पैरों का लड़खड़ाना मुख्को, खास में

सुख मंडल और नेत्र रक्त, श्रोष्ठ नील राजाना,

मद्यं की गंधा

कोकेन

रोगी । मुख कीका और दुवला, नाड़ी और

रवास तीन्न, त्वचा शुष्क, पट्ठों का कम्प, मुच्छों।

कुकर सुता (सांप की ख़तरी)

पहले बहुत ऊथम करता है फिर शन्त होजाता पिपासा, डद्र शूल बमन तथा श्रतिसार रेगी

है श्वास खरोटेदार, पुनिक्तयां फैली हुई, मुरुद्धां।

गंध, झौर ऋंधकार में चमक, नाक से खून निकलना, एंटन । दर्द तथा वसन का होना, वसन में लहसन की

भ

**फ़ारस** 

तथा दोए स्रोर पुतलियां फैली हुई, रवास में कट, नड़ी तीव कुचला

जबाड़ों का बन्द होना। खांख के ढेले उभरे हुए

जोरदार ऐंठन और पीठ का टेढ़ा होता ।

२- नमक श्रीर पानी विलान ?— वसन कारक श्रीषध

४ — कितिम श्वास रे- बरांडी पिलाना

े श्रांस, बरान्डो ।

धमन कारक द्वा,विरेचक योग, ऋरंडीका तेल

हाथ श्रीर पांच गरम रखना।

श्रेन पाठ परमेगनेट मिलाकर हो।

बमन कारक द्वा हो, १ पाइन्ट जल में १०

तेल मत दो।

काकी, क्लिंगेकार्स देना, कितिम श्वास किया षोटास १ पाइन्ट गर्स पानी में, तेज चाय ब बमनकारक द्वा दो,१० घेन पर मेगनेट आफ

संधा नमक के चूर्ण को प्रयोग तरने से सर्प विष नष्ट होजाता है। शिरस के फूनों के रस के साथ ४ दिन तक श्वेत मिरचों की भावना देकर रख छोड़े। सर्प दंष्ट मनुष्य को इनका पान नस्य और मन्जन कराना चाहिये यह सर्प दंष्ट के लिये अच्छा है। कलीहारीकी जड़ का नस्य पानी के साथ लेने से सर्प विषट्ट हो जाता है।

कृत्रिम विष:---

यह पदार्थ उन वस्तुओं के संयोग से बनता है इस लिथे इसको संयोगज विष या गर कहते हैं इस के लक्ष्ण निम्न लिखित होते हैं। रक्त म्बाव उवर, शोफ, आंखों में पीला पन, आलस्य जड़ता, खांसी, श्वास और वलक्षय कर देता है। १४ दिन या एक मांम बाद शरीर में उत्ररोक्त बाधार्ये करता रहता है इसके लिये सुवर्ण भस्म सोना माली भस्म थोड़ा सा भाग चुना मिलाकर और शक्कर मिला सेवन करना चाहिये।

श्रीर भी श्रानेक स्थावर जंगम विष हैं जिनके तिये विस्तार पूर्वक सुध्रन श्रादि प्रन्थों की देखना चाहिये।

न्नाध्वानक वैज्ञानिकों ने बड़े २ भयंकर विष रीसेज (बायबीय ) या "रेज" (तैज्ञम किरण्) निकालें हैं जिनके कि प्रयोग करने पर संसार की ज्ञण सात्र में नष्ट किया जा सकता है। ऐसे विष जो कि आकाश या वायु आदि महाभूतों के विशे-पांश संयोग से विषरूप हैं जिनको कि उन २ महा-भूतों में ही फैंलाकर च्याभर में संसार का प्रलय किया जा सकता है। ये सब भी पांच भौतिक होने पर उन २ महाभूतों का विष किया करने चाला विशेषांश उनमें मानना ही पड़ेगा। इसिल्ये विषों का प्रयोग, शब्द से, स्पर्श से रूप, रस या गन्ध द्वारा भी होन। सम्भव है। जैसे प्राचीन समय में शाप (जो कि कोध से उत्पन्न होने बाला शब्द मात्र है उस शब्दसे ही शप्त मनुष्य नष्ट हो जाता था या मारण मोहन उबाटन आदि कर्म मन्त्रों के द्वारा (जोकि शब्द मात्र हैं) करते थे। स्पर्श से भी विष कन्या आदि द्वारा प्रयोग करते थे रूपसेदिवय सपीं के दृष्टि द्वारा होता ही है रस और गंध प्रत्यन्त स्थूल हैं ही।

मेर। विचार है कि जैसे नाशक जहरीली "गैसेज" या "रेज" या अन्य कौई साधन आधुतिक मैक्कानिकों ने संसार में अत्यत्त कर दिये हैं
यदि विचार पूर्वक इस में अनुमन्धान किया जाय
तो समभय है कि इनके रोधक गैसेज या "रेज"
भी मालम की जा सकती है जिससे व्यर्थ प्रलय
को हटाया जामकता है। क्योंकि भूत पांचा ही हैं
और सारा "जोड़ नोड़" इनका ही हैं।

चन्द्रशंखर बैश

# विपैली सुन्दरी

(महावोर प्रसाद जैन)

### 

वा आव्म के निषिद्ध फल खाने के बहुत से कारणों में से एक यह भी था कि उस फल को खाने से उन्हें मन। कर दिया था, जिस वस्तु से हमें मना किया जाय न जाने उसके प्रति हमारी उत्मुक्ता क्यों और भी तीन हो उठती है। सिग-नर गिवानी को अभी उस कमरे में आये हुवे केवल दो दिन हुवे थे परन्तु उसकी हब्दि बार २ बन्द खिड़का के द्वार पर पड़ कर लौट श्राती थी। यदि सकान मालिकिन उसको बह खिड्की बोलने से मना करती तो शायद वह महीनों तक उसकी और ध्यान भी देता परन्त अब उसकी डंगलियां मकान मालिकिन की श्राज्ञा के विरुद्ध कोने से लगी हुई एक पुरानी छतर्ग की तीली निकाल कर मोड़ने में लगी हुई थीं । आखिरकार उसने मुड़ी हुई तीली से खिड़की में लगे हुए ताले का खोलकर भूमि में डाल दिया और धक्का देकर दोनों किवाड़ एक साथ खोल हाले :

खिड़की के नीचे एक अद्भुत बगीचा था। दक्षिणी इटली के उस गांव का तो कहना ही क्या जहां से वह यहां पैड्छा के विश्वविद्यालय में रसायत शास्त्र का अध्ययन करने आया था। उसने किसी दूसरे नगर में भी ऐसे विचित्र पौदों और पुरुषों का संप्रह नहीं देखा था। उद्यान के बीचों बीच हरे यक्त का बड़ा सा फुल हीज के पानी में

संगमर्भर का एक बहुत अंचा धौर पुराना कव्यारा था जिसके ट्टे हुये मुख से पानी की एक मोटी धार ऋविराम गति से निकल कर आस पास की भूमि को तर कर रही थी, पत्थर के हौज का भग्नावशंष अपनी ठोस सुन्दरता की वर्बादी को इधर उधर द्वितराए पड़ा था, परन्तु सूर्य की रंग विरंगी किरगों अब भी पहिले की भांति पानी की यूंदों के साथ खेल कर रही थीं जैसे उन्हें व्यपने चारों क्योर के परिवर्तन का जरा भी ध्यान स हो ।

यकायक गिवानी की हिट एक और के लता कुञ्ज से निकलते हुये एक बृद्दे आदमी पर पड़ी जो प्रत्येक पौदे के पास जाकर उसे श्रद्यन्त ध्यान पूर्वक देखता हुआ होज की तरफ बढ़ रहा था ऐसा माऌम होता थ। कि वह उनसे बचना च।हता है क्योंकि वह किसी पौदे को हाथ से नहीं खूता था बल्कि फैली हुई लताओं से इस प्रकार बच २ कर चल रहा था जैसे वह विषैते सर्पी के मध्य से जान बचा कर धीरे से निकल जाना चाहता हो । वह होज के पास आकर खड़ा हो गया।

हरे २ पत्तीं पर एक अत्यन्त सुन्दर सुन-

इधर उपर ऐसे तैर रहा था जैसे परियों की रानी अपने ज मर्भ द के खटोले पर बैठ कर आकाश की सैर कर रही हो। ऐसी मुन्दर तथा कोमल बस्तु इतनी भयोत्पादक होगी इस बात का गियानी को ध्यान भी न था — परन्तु उस बढ़े ने उरते २ अपना दस्ताने से मंद्रा हुआ हाथ उपरोक्त पुष्प की खोर बढ़ा कर तुरन्त पीछे खींच लिया और जोर से गता साफ करके ऊंची आवाज से "वियट्रीस, "वियट्रीस" पुकारने लगा।

"श्रभी श्राती हूं पिनाजी। सामने के मकान से श्रावाज श्राई। गिवानी को वह श्रावाज मुदिन प्रभात के उदिन होते हुये सूर्य की नाई सुन्दर जान पड़ी और ठीक श्रान्थकार को भेद कर 'उदित होते हुये सूर्य की भांति घनी हरी लगा श्रों को चीर कर एक सुन्दरी ने उस ख्यान के धुं घले बाताबरण को श्रापने श्रागमन से चमका दिया।

"वियट्टीस इधर देखो तुम्हारे त्यारे पुष्प की क्या दशा हो रही है। सुझे जान पड़ता है कि अब सुक्ते इसको बिलकुल तुम्हारे अधीनस्थ छोड़ना पड़ेगा बग्ना किसी दिन इसके निकट पहुंच कर सुक्ते अपनी जान से हाथ धाने पड़ेंगे।" बुढ़े ने कहा।

वियट्रीम ने प्रेम संपुष्त की पत्तियों भी चूम करकहा:—

"आप चिन्ता न की जिये में आपने त्यारे 'पालकृट' की आप सेवः कर न्हेंगी'' और यह कह के उसने पुष्प के नम्बे डगठन की पःनी से निकाल कर गले से चिमटा लिया। गिवाना की ऐसा माळ्म हत्रा जैसे दो सगी बहिने गले मिल रही हों। वह सुन्दर पुष्प श्रीर युवती एक दूसरे से भिन्न थे परन्तु फिर भी कितनी एकता थी उनमें ! कितनी समानता !!

गिबानी ने खिड़को बन्द करदी।

दूसरे दिन गिवानी ने मकान मालिकिन से बातों ही बातों में पूछ लिया कि खिड़की के नीचे बाला बारा जादूगर ड क्टर रिपैचिनी का है उसको मकान मालिकिन जादूगर वाली बात पर विश्वास नहीं हुआ। अस्तु, उसने विद्यालय पहुंच कर डाक्टरी के प्रौफेसर सिगनर प्रेटो वेग्लोनी से रिपैचिनी का जिक्र किया।

उन्होंने उत्तर दिया—"डाक्टर रिपैचिनी केवल पैडुआ के ही नहीं बल्कि समस्त योक्तप के भिष्णाचार्यों की नाक हैं। परन्तु फिर भी मैं तुरहें उनकी संगति से बचने की ही सलाह दृंगा—"

सिवानी ने आश्चर्य से पृत्रा कि उनकी इस सलाह का क्या कारण है ?

प्रोक्तेस्मर बेग्लोनी ने मुस्कराकर कहा:--''कर्ही तुमने उसकी लड़की वियट्टीस को तो नहीं देख लिया है जो उसके लिये इतने उत्सुक होग्हे हो-''

गिव।नी:--"जी हां. मुक्त को उन के दर्शनी का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है।

श्रीकैस्सर ने गम्भीर स्वर में कहा:—"यह तो ठीक है कि रिपेचिनी की लड़की श्रत्यन्त सुःदर है परन्तु वह स्वयम बड़ा भयानक श्रादमी है। उसने भिन्न भिन्न प्रकार के विषों का श्रतुमंधान करके यह ध्योरी बनाई है कि प्रत्येक रोग का इलाज विषों किया जा सकता है। उसके प्रसिद्ध उद्यान में संसार के सबसे श्रधिक विषेते पीदे श्रीर पुष्प एकत्रित किये गये हैं। उसे अपनी वैज्ञानिक खोज के सामने आदमी की जान की जरा भी पर्वाह नहीं है यदि तिनक भी बात जानने के लिए उसे सैंकड़ों हत्याएं करनी पड़ें तो भी बह नहीं चूकेगा। इसलिये में तुम्हें उससे बचने को कहता हूं। कि कहीं उसके किसी एक्सपैं मेन्ट का शिकार न हो जाओ यह कह कर प्रोक्तस्सर पेट्रोबेग्लोनी अपनी कलास के कमरे में चला गया।

विद्यालय से लौटले हुवे गिवानी ने गस्ते में एक फूल बेचनेवाली से ताजा गुलदस्ता मोल ले लिया और उसे लिये हुने अपने कमरे की खिड़की में जाकर बैठ गया। आज उद्यान में उसे एक चद्भुत दृष्य दिखाई पद्दा, उसका सांस रुक गया उसके गते में छंदासालग गया। चिल्लाने की कोशिश करने पर भी वह चिल्ला न सका। विय-टोस हौज के किनारे मुको हुई कल वाले सुनहरे फूल को ऐसी तन्मयता से तोड़ने में व्यक्त थी कि उसे अपने पैर की छोर पत्ती में रेंगते हवे भयानक सर्प का जरा भी ध्यान न था। गिवानी ने यकायक उसे इस खतरे से सूचित करने की मुंह खोला ही था कि एक ऐसी घटना हो गई जिसे देखकर उसका रक्त धर्मानयों में जम सागया। वियेटीस के हाथ से टूटे हवे फूल के इन्ठल से एक या दो बुन्द रस निकल कर सप पर गिर पड़ा श्रीर वह कुछ इत्यातक तड्य कर वहीं ठन्छ। हो गया मरा हवा सर्प वियटीस की दृष्टि से भी खुपा न रहा, से देखकर वह केवल मुस्कुरा दी और अपने हाथ के फून को चूमकर गले से लगा लिया

"हे भगवन् ! मैं इसे बन देवी कहूं शा विषेती नाग कन्या ?" 'गित्रानी ने मन में कहा । धीरे २ टहज़ती हुई वियट्रीस ठीक गिवानी की खिड़की के नीचे आकर खड़ी होगई न जाने किस आकर्षण से आकर्षित होकर उसकी आंखें आप से आप अपर को उठ गईं और अपनी ओर देखती हुई दो बड़ी भूरी अंखों से टकरा कर स्थिर हो गईं - कुछ सण तक दोंनें निर्मियेष नेत्रों से एक दूसरे की ओर पत्थर के युत बने देखते रहे- अन्त में गिवानी ने इस मनोहर तन्त्रा को तोड़कर अपने हाथ के फूनों को वियट्टीस की गोद में फैंक दिया। ''क्या सिगनोग अपने पड़ौसी का यह तुच्छ उपहार स्वीकार करेंगी? उसने उत्मुक्ता से पूछा।"

"धन्यवाद सिगनर। यदि होसकता तो मैं भी यह फ्ल आपकी भेंट करती परन्तु उपर उद्घालने से यह आपकी ख़िड़की तक नहीं पहुंच सकेगा।" वीयट्रीस ने अपने कोकित करठ से उत्तर दिया और सा ने बाले मकान की और चलदी। जाने से पहिले उसने गिवानी के गुच्छे की धीरे से वहीं डाल दिया।

गिवानी ने विस्मय विस्करित नेत्रों से देखा कि वियदीस के हाथ में जाकर उसके तजे फूल बिल्कुत मुरका गये थे। ऐसा माछ्म होता था जैसे उन्हें आग में कुलसा कर निकाल लिया हो।।

छ: महीने बाद।

आज गिवानी अपने कमरे में बैठा हवा इन पिछते झः मास की घटनाओं पर विचार कर रहा है जो एक २ कर के उसके मानसिक नेत्रों के सामने सिनेमा के रजतपट पर होते हुने खेल की भांति आ रहीं हैं।" कैसे वह सब से पहिले दिन अपनी खिड़की में कयन्द लगाकर चोर की नाई डाक्टर रिपेचिनी के रहस्यपूर्ण उद्यान में वियट्रीस से साज्ञान करने उतरा, किस प्रकार वह प्रथम मिलन उसके जीवन के मधुमास की सब से अधिक मधुर स्मृति में परिवर्तित हो गया, और किस प्रकार तभी से वियट्रीस की संगति उस पर अपना अन्ठा प्रभाव डालने लगी !" यही सब वह सीच रहा था।

कुछ दिन से अपने अन्दर वह एक परिवर्तन पाने लगा था, न जाने क्यों अब उससे जीवित जन्तु स्वयम घवराकर भागने लगे थे। उसी दिन विद्यालय में प्रोफ़ैस्सर ने उससे कहा था:— "गिवानी, तुम्हारे शरीर से एक प्रकार की सुगन्ध निकल रही है जिससे मेरे सिर में दर्द होने लगा है।" उस समय तो गिवानी ने उनकी बात पर कुछ 'ध्यान न दिया, परन्तु अब उसी बात ने उसके मस्तिष्क को एक अत्यन्त यन्त्रणात्मक संदेह से भर दिया। वह बेचैन होकर इधर उधर टहलने लगा कि यकायक नीचे से वियटीस के पुरारने की आवाज आई:—

"गित्रानी ! गित्रानी !! तुम ऋव तक क्यों नहीं आये, में तुम्हारी घण्टे भर से प्रतीक्षा कर रही हूं।"

थोड़ी देर बाद गित्रांनी वियट्टीस की प्रेमसुधा से छलकती हुई आखों के सामने जाकर खड़ा हो गया। उसके मुख का भाव जानकर वियट्टीस ने जान लिया कि अब उन के बीच में एक ऐसी खाई उत्पन्न हो गई है जिसे दोनों में से कोई भी पार न कर सकेगा। वह उसके साथ टहलती र सुनहरे फूल बाले होता के किनारे पहुंच गई। गितानी ने पूछा—"वियट्टीस! यह फूल कहां से

श्राया ?"

'मेरे पिता जी ने इसकी रचना की है।" वियदीस ने सादगी से उत्तर दिया—

''रचना ? इससे तुम्हारा क्या मतलब ?''

'मेरे पिता प्रकृति के जिटल रहस्यों में परि-दार्शनिक हैं। जिस प्रकार में उनकी पुत्री हूं, उसी प्रकार यह पुष्प उनके मस्तिष्क की उपज है और मेरे साथ ही इसका जन्म हुआ है।" यकायक गिवानी को फूल की श्रोर बढ़ने से रोकते हुए उसने फिर कहा—''इस फूल में बहुत से ऐसे गुग्ग हैं जिनका तुम्हें स्वप्न में भी अनुमान न होगा। ''यारे गिवानी! मैं इस फूल के साथ गहकर ही इतनी बड़ी हुई हूं, यह मेरा छोटा भाई है। इसकी गंध में जीती हूं, परन्तु आह! मुझे इस बान का कितना दुख है!"

''दुःख ! क्या तेरे भी हृदय है जिसमें करणा का स्थान है ?'' इन जलते हुए शब्दों ने वियदीस के मुलाबी गालों को कुम्हला दिया।

"हां, गिवानी, मेरे भी हृद्य है। मेरे पिता के विप प्रम ने मेरे और ससार के अन्य मनुष्यें के मध्य एक खाई खोद दी थी जिसे तुमने यहां आकर कुछ भर दी हैं।"

"विपैली नागन! यह सब तेरी ही कर्न न है। तृने मुझे भी अपने जैसा बिपैला बना डाला है। इस नाशकारी फूल की सुरन्ध से पल कर तेरे शर्रीर्रे में इसके विष का इतना प्रभाव हो गया है कि तू भी एक सांघातिक विष बन गई है। शोक! तृने अपने कुप्रभाव से मुझे भी अख्ता न छोड़ा। अब भी यदि सीभाग्यवश हम दोनों के स्वास में एक दूसरे के प्राण लेने की शक्ति हो तो खा—हम दोनों खपने होठों की मिलाकर एक घृणापाश में अपने खपवित्र जीवन का खन्त कर दें !'' गिवानी के मुख से चिनगा-रियां भड़ रही थी।

"गिवानी !" वियट्रीस दुख पूर्ण स्वर में बोली—"तुम यह क्या कह रहे हो ? मुंक अभागी पर घृष्णात्मक दृष्टिपात करके इस उद्यान से चले जाने को तुम्हें कीन रोक सकता है ?"

"पिशाबिनी ! तू मुक्त से अब भी निर्देषिता का बहाना कर रही है ? देख रिपेचिनी की पिबल्ल पुत्री की संगति का मुझे यद फल मिला है ।" पास ह बहुन से छोटे चमकीले कीड़े हवा में उड़ रहे थे। गिवानी ने उनकी श्रोग मुख करके फूंक मारी और पैशाबिक मुस्कराहट से वियट्रीस की श्रीर देखने लगा। उसके पैगे पर दस या बारह कीडे मर कर गिर पड़े थे।

"टीक है! ठीक है! यह सब मेरे पिता के विषेत विज्ञान का प्रताप है। गिवानी—तृ प्रसन्तता से मेरी जान लेले, क्योंकि तेरे कड़ बचनों को सुनकर मुझे अब इस जीवन का तिनक भी मोह नहीं रह गया है। "घुटने टेककर वड उसके सामने बैठ गई।

यकायक आशा के अन्तिम सूत्र को हाथ में लेते हुए गिवानी बोला— "प्रिये ! श्रमो हमें निराश नहीं होना चाहिये। लो यह औषधि मुझे प्रोफीश्सर बेंग्लोनी ने दी है, यह विष दूर करने के लिये असूत है। सन्भव है इससे हमारे शरीर का विप दूर हो जाये।"

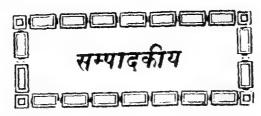
वियद्येस ने हाथ लपका कर शीशी छीन ली और एक ही सांस में उसकी सारी श्रीपिध पी गई। उसी लग डाक्टर रिपैचिनी ने वहां प्रवेश करके कहा—"पुत्री! अब से तू श्रकेली नहीं रहेगी। मेरा श्रनुसन्धान सफल हो गया है। मेरे विज्ञान ने तुम दोनों प्रेमियों के लिये ऐसी दुनियां कर दी है जिसमें तुम एक दूसरे को प्रेम की, परन्तु दुसरे मनुष्य तुम्हें भय की दृष्टि से देखेंगे!"

"श्राह! क्या श्रच्छा होता जो मुझे दूसरे मनुष्य भय के स्थान पर स्नेह की हिष्ट से देखते!" विपट्टीस ने दम तोड़ते हुए कहा—"पिता जी, इस जीवन में मैं श्रापके विष से मुक्ति न पा सकी, परन्तु मृत्यु मुझे मुक्ति का मार्ग दिखायेगी। गिवानी तेरे शब्द श्रव भी मेरे हृदय में तीर की नाई खटक रहे हैं। परन्तु वह भी मेरे शरीर के साथ यहीं रह जायेंगे। श्राह! क्या तेरी जावान में मुक्त से श्रांधक विष नहीं था?"

अभागी वियट्रीस के लिये विष जीवन था इसलिये गिवानी की श्रमृत समान श्रीषधि उसे विष हो गई! उसके प्रार्गों ने इस नश्वर शरीर से प्रयाग कर दिया।

शायद यह मनुष्य के विज्ञान का श्रान्तिम परिगाम था !!

+ + + +



उस सर्व शक्तिमान परमपिता परमात्मा की श्रनुकम्पा से श्राज जीवन-सुधा का विशेषाङ्क 'विषविज्ञान' उपस्थित कर रहे हैं। विष जैसे महत्वपूर्ण विषय पर वैद्यों की उपेत्रा देखते हुए लजा के मारे नीचे सिर भुक्त जाता है। बहत से लेख हमारे पास ऐसे आये जिनमें प्रन्थों की नक्कत के सिवाय निज अनुभव का एक भी अज्ञर न था। कतिपय डाक्टरों से अब की वार हमें अच्छा सहयोग प्राप्त हुन्ना है बहुत से डाक्टरों के लेख पढ़ने के क़ाबिल हैं। बहुत से अच्छे लेख अस-मय पर प्राप्त होते तथा स्थानाभाव के कारण न छप सके जिन्हें 'परिशिष्टांक' में दे रहे हैं। हमारे आयुर्वेद साहित्य को यवन काल में वड़ा धका पहुँचा, सैंकडो पुस्तके जला दी गई इसलिये यह विद्या आधुनिक काल में छित्र भित्र हो रही है। पर्व काल में बहुत पहिले की बात जाने दीजिये श्रभी चन्द्रगुप्त का समय बीता है उसके समय अगद तंत्र कितना उन्नतावस्था में था यह बात कौटिल्य शास्त्र की देखने से आपकी समक्त में भन्ती प्रकार श्राजायेगी इसमें एक स्थान पर निम्बा है शत्रु की की जो को नष्ट करने के लिए मुदंग या श्रान्य वादन पर श्रीपधियों के जेपकर वजाने से कीज सुनने मात्र से मर जाती थी। आजकल भी इस प्रकार की खोज हो रही है श्रभी कुछ श्रदृश्य किंग्सें मालूम हुई हैं जिनसे कई मील पृथ्वी समतल पर और सैकड़ों गज जमीन के अन्दर सिर्फ १ सैकेण्ड में प्राणनाश किया जा सकता है। यह किरण लौहे और कंकरीट की दीवारों को बड़ी सुगमता से पार कर जाती हैं और वहां स्थित मनुष्यों को मार डालती हैं।

भाजकल के विकान युग में नये २ आविष्कार हो रहे हैं—कहते हैं एक प्रकार की ध्वति का आविष्कार हुआ है उस ध्वति को "मृत्युध्विन" या "मृत्युनाद" कह सकते हैं।

यह जुपचाप बड़ी शीघता से कीजों को पल भर में धराशायी कर सकती है, आकाश में उड़ने वाले हवाई जहाजों को गिरा सकती है, बड़े २ जंगी जहाजों को समुद्रतल में डुवे। सकती हैं, फ़िलों और शहरों का पल भर में नाश कर सकती हैं।

यद्यपि यह मृत्युभ्वान मानवीय कर्गीन्द्रय से नहीं सुनी जा सकती परन्तु अपना प्रत्यकारी ज्यापार करने में कभी नहीं चुकती।

चन्द्रगुप्त के समय में विषों के ऐसे २ संयोग विकल्प मालूम ये जिन्हें दर्पण में लगा देने मात्र से उस में मुख देखने वाले की मृत्यु हो जाती थी, विधों से सिंचिन आभूषण का केवल स्परों मात्र करने और विवाक वस्त्रों के पहनने मात्र से मृत्यु हो सकती थी।

वास्तव में इस समय को उन्नत समय कहा

यह चंद मैंकेगड से लेकर १-२ मिनट में ही प्राणी का संहार कर देते हैं।

इन सब आविष्कारों से भी अधिक आश्चर्य-जनक कल्पना युद्धि का उदाहरण भगवान सुश्रुत के समय में मिलता है। उस समय में शत्रु को नष्ट करने के लिये "विषकन्य।" का प्राटुर्भाव हुआ केवल सहवास मात्र से चन्द मिनटों में मृत्यु हो सकती थी।

में इन वातों को इसिलये आपके सामने रख रहा है। आप देखें पूर्वजों का ज्ञान कितना विस्त-रित था।

#### जमालगोटा

इसके बीज श्रति त्रिपैने होते हैं बीजों में एक स्थिर तैल होता है जिस को जमालगोटे का नैत कहते हैं। यह अत्यन्त प्रदाहोत्यादक औषधियों में से एक है यदि इसकी एक वृन्द त्वचा पर रख ही जाए तो लाली या जलन पीड़ा होती है। उदर में १ वृन्द भी चली जाये पैट में दुर्द प्रारम्भ हो जाना है और ऐंठन रो दस्त भी आते हैं दस्त १ घंटे बाद आते हैं रक्तिमिश्रित भी हो सकते हैं श्रीर पनले होते हैं यह तेल श्रामाशय विशेषकर व्यांत में प्रदाह उत्पन्न कर देता है। श्लैंिमक धराकला रक्त के संचार से अधिक गहरे रंग की हो जाती है वह शोधयुक्त हो जाती है शुद्रांत्रिय रस अधिक बनता है पर पित्त अधिक नहीं बनता श्रंत्र का कृमिवत श्रांकुचन बढ़ जाता है। त्वचा पर तैन लगाने से दस्त हो जाते हैं क्यों कि यह श्रांत्र में म्बबित हो जाता है।

मुख, कंठ में जलन तथा पीड़ा होती है उदर-शूल होता है बमन होने लगता है ऐंट्रन के साथ पतले दस्त रक्त मिले होते हैं। चीएाता बढ़ जाती है। घातक मात्रा—१ बीजसे मृत्यु हो चुकी है युवा तैल की २४ बृत्द, शिशु ३ बृत्द में मर जाता है। समय—कुछ घंटे या ४-४ घंटे तक।

#### चिकित्सा

श्रामाशय को धो डालो—फिर अफीम दो श्रावश्यकता पड़ने पर उत्तेजक दवा दो, गौ का धृत, दही के साथ इलायची का चूर्ण, धिनये का चूर्ण शक्कर के साथ, नीवू की सिकंजवीन ३-३ घंटे बाद पिलायें। दही भात भोजन धिनये का जल शक्कर मिलाकर पीने से गर्मी नष्ट होता है।

#### भिलावा

प्रायः शोधनकाल में या अवलेह निर्माण समय में इसकी बाष्प लग जाये तो शोध जलन, लाली या कंडू उत्पन्न हो जाती है, या इसके विकार गर्मी आदि हों तो दही मिश्री दें। गोला तिल चिरोजी तथा दही दूध सेवन करना चाहिये। बाष्प लगने पर तिलों को दही में मिलाकर या दूध में पीसकर लेप करें, या काले तिल १ छं० नारियल की गिरी १ छं० इन को बकरी या भैंस के दूध में धिसकर लेप करें नारियल तिल या बादाम दूध सेवन करायें चावल खानेको हैं। अर्जुन-पत्र का कल्क, कसोंदी के पत्रों का कल्क, हल्दी का कल्क, बहेड़े की मज्जा का लेप करें

#### एरएड

इस के बीजों से निकाला हुआ हैल विरेचन देने के काम आता है। अरगड़ी का तैल शुल- नाशक स्नेहन नेत्राभिष्यन्द में नेत्र में डाला जाता है।

#### विष लच्चग

कंठशूल, बमन, उदरशूल, विरेचन, श्रातिदुर्ब-लता होकर मृत्यु-इसके तीन बीजों से मृत्यु हो चुकी है परन्तु १७ बीजों से बच भी गये हैं। मृत्यु समय—निश्चित नहीं।

#### चिकित्सा

श्रामाशय को घोत्रो, मार्फिया का इंजिक्शन दो, गर्म जल की बोतल से सेको, श्रावश्यकता पड़ने पर उत्तेजक दबाई दो।

## गुजाफल ( चिरमिटियां )

इस के बीज गोल श्रंडाकार रक्तवर्ण के होते हैं जिसको कि एक सिरंपर काला घट्या होना है। प्रत्येक बीज एक तिहाई डंच लम्बा चौथाई इंच चौड़ा होता है प्रत्येक का भार २ प्रेन होता है यह सोना चांदी तोलने में काम श्राता है।

इसके लक्षा सर्प विष के लक्षा से मिलते जुलते होते हैं इसल्लिये मनुष्यों की सर्प विष का भ्रम हो जाता है।

#### चिकित्मा

इसके विष में घानियां विशेष लाभदायक है तगडुल का पानी शकार के साध, गी यृत, घानिये का पानी पका कर देना चर्णहरा।

#### ७-- इ**न्द्रायगा**

बीज रहित सुखा जूदा काम में जाते हैं इमकी जड़ या फल में कैलेम्मिनिधन नामक विद्याप पदार्थ होता है जो कि ऋधिक मात्रा प्रयोग करने से दाहोत्पादक है इसे विरेचनीय ऋषिष्यों में काम लाते हैं कभी २ यह श्रूणहत्या के काम में भी श्राता है।

थोड़ी मात्रा देने से आमाशय, पकाशय उत्ते-जित होता है। इससे आमाशियक और इंद्रांत्रिय रस की वृद्धि होती है। अंत्र की मांस पोशियां उत्तेजित हो जाती हैं कुछ उदर में ऐंठन भी होती है पित्त अधिक बनता है ज्धा बढ़ जाती है आंत्र की मांस पोशियों में ऐंठन होकर पतले दस्त आते हैं।

#### विष लचग

वमन, उम्र श्रतिसार, मृर्छा फिर मृत्यु । विकित्सा

आमाशय को ख़ली कर दूध या घृत पिलाओ उत्तेजक औषधियां दो।

## =-मिद्दीका तैल

कंठ में पीड़ा होती है आमाराय में जलन.
मृच्छी, सिर में भारीपन चक्कर श्वाम तथा मृत्र में तैल की बृ, नेत्र के तारे संकुचित हो जाते हैं कभी २ ऐंठन हाथ पैरों में होने लगनी है।

#### घातक मात्रा

यान छटांक तेल से एक बार १४ मास के बच्चे की मृत्यु हो। गई है।

वसन कारक श्रीपिधियों का प्रयोग करना चाहिए स्टमकट्य व से श्रामाशय को गर्म जल से धोना, रेचक श्रीपिध देना, श्रावश्यकता पड़ने पर हह्योने जक श्रीपिध देनी।

#### ६--तम्बाक्

तम्बाकृ में क्रिया शील सत्व नीकोटीन होता है यहत अधिक घातक है इसकी १ हाप अर्थान १ बून्द प्योर नीकोटीन की मनुष्य को मारने में समर्थ है। यह फ्रांसीसी तम्बाकृ में अधिक सात या आठ प्रतिशत तक मिलना है।

यह वेरंग एक तैल सा होता है वायु में रखने से भूरा हो जाता है, मुख में भ्रत्यन्त जलन, तीहण दुर्गन्धयुक्त पानी में घुल जाता है।

२ माशा तम्बाकू के क्वाथ से मृत्यु हो गई है यहां तक कि शरीर पर तम्बाकू के पत्ते बांधने से मृत्यु हो गई है १ तोला तम्बाकू १४ मिनट में मार डालती है तथा नीकोटीन से ३ मिनट में मृत्यु हो गई हैं।

#### विप लच्चग्

सर में चक्कर, श्रंग का कम्प, ग्लानि, नाड़ी का तेज चलना, उन्मत्त होना, वमन, ठंड पसीनों काश्राना, कमजोगी, हृदय का कमजोग होना, उद्र-शुन तथा श्राध्यान पुनित्यों प्राय: प्रभागेत, सिंग का भागी होना, श्रतिसार।

#### विकित्सा

आमाशय की स्टमकपमय द्वारा धोना यदि पीड़ा हो तो थोड़ी मात्रा में अफीम देनी चाहिए, उत्तेजक दवा हो, स्ट्रिकनीन 💯 ऐन का इंजक्शन करना।

वसन के साथ दुध देना चाहिए।

## ११ - अगारिकम् एल्बम्

इसको युनानी नाम रागिक्न और वैद्यक में छित्रका कहने हैं यंजाब प्रान्त में छित्रका खुब स्वाई जाती हैं यह दें। प्रकार की होती है सबिप श्रीर निर्विष ।

यहां केवल सविष का ही उल्लेख करेंगे। विपैल क्षत्रांकुर (Poiscarin Fangi) में भित्र २ दो विपैली वस्तुयें होती है।

१—मास्केरीन ( Mascarin ) जिसका प्रभाव विलाडौना और धुस्तुर के सर्वधा विपरीत होता है।

२—दूसरा प्रभाव ठीक धत्तृरीन ( Atropine ) तथा डैट्य सिया के समान होता है।

### चिकित्सा

वमन कारक औषधियां जैसे — जिक सल्केट १४ मेन जल के साथ दें या स्टमक पम्य द्वारा मेदा साफ करें किर अफीम का सत टानिक एसिड के साथ मिलाकर दें काफी पिलानी चाहिए। कनीनिका विम्नार काल तक बार २एट्रोपीन ! मेन का त्वचा मध्य प्रवेश करें। डिजिटैलिम या मार्फीन देना चाहिए उत्तेजक औषधियां दो-राई का पलास्टर लगायें।

### १३-क्किनीन

क्विनीन के अधिक सेवन से विष तासण उत्पन्न हो जाते हैं, कार्नों में घूं घूं का शब्द होता है रात को दीखना वन्द हो जाना है वमन, अजीर्ण, भूक का न ताराना, नेव ज्योति नष्ट होना इत्यादि तासण हो जाते हैं।

यदि क्विनीन को पोटास बोमाइड जल श्रौर शर्वन में बोलकर दें तो उपद्रव नहीं होते हैं। या एसिड हाइडोब्रोमिक डिल ४ बू० के साथ दे सकते।

#### १३-कोकेन

इस की श्रिधिक मात्रा सेवन करने से विजया विष के समान उण्द्रब होते हैं। रोगी हिलडुल नहीं सकता और त्यचा के नीचे बुछ चीज रेगती हुई सी माञ्जम होती है। इसके लिये कें राकर चाय या काफी का तीत्र घोल पिला दें।

#### १४-मद्य

मद्य अधिक पान करने से वेहोशी और नींद् आती हैं। नीद में रोगी घुराटे लेता हैं इस के लिये वमन करायें। चिरकाल तक शराब पीने से अजीर्ण और निद्रानाश आदि लक्षण होते हैं अति-मात्रा पीने से हृदय और फुफुस दोनों. के केन्द्र अवसन्त्र होकर मृत्यु हो जाती हैं आसन्त मृत्यु समय अचेतनता, नेत्रों की स्थिरता और ज्याति-हीनता, नेत्र तारों का संकुचित होना, नाड़ीचीणता, पसीने का आता, श्वास खिचात्रदार होना, कभी व अलाप, ऐंठन लक्षण होते हैं।

#### चिकित्सा

वसन कारक श्रीपियां दो शामाशय की स्टमक पम्प से थां डालों। रोगी को कैलसियम होराइड (नीमादर) मिलाकर चाय, क वा पाने को दें। यदि न पी सके मेदे की धोकर कैलसियम हाराइड को स्टमक पम्प से अन्दर डाल दें। पेट पर गई का पलस्टर लगाय मुख पर शीतल जल के छीटे दें। एमाइन नाइट ट को सुवार्वे । स्टिक-भीन से , येन तक का डेजम्शन करें।

सद्भ्य रोग में शगव की आदत घीरे २ छुड़ा देनी चाहिए । चन्दनासय श्री स्वण्डासय देना चाहिए।

#### १५ -फिटकरी

पिटकरी के स्थाने से कभी मृत्यु नहीं होती है विप नज्ञण कभी हाते हैं जब कभी होते हैं तो मेदे और अति। में स्वराश होकर वमन और अतिसार होते हैं।

श्रामाश्य की घीर्य सोडियम कार्वेनिट नीम

गर्म पानी में मिलाकर पिलायें।

नोट—जब इस से विप लक्षण धीरे २ होते हैं तो भूक मर जाती है कोष्ठवद्धता रहती हैं आमाशय श्रीर आंत में थोड़ी शोथ हो जाती है। जो लोग गदले पानी को फिटकरी से साफ करके पीते हैं उनमें विपलक्षण पाये जाते हैं।

## १६--ब्रोमिज्म

सब से पहले लाल रंग के दाने मुख पर निकल आते हैं एकनी से मिलते जुलते होते हैं। यह त्वचा के द्वारा निकलतः है इसलिये ऐसा होता है।

त्वचा और श्वासपथ चेननाहीन होता जाता है। इसके बाद पौरूपशाक्त कम होने लगती है। गेगी उत्साहहीन हो जाता है बहुत जल्द थक जाता है काम करने के योग्य नहीं रहता है और युद्ध विश्वम हो जातो है खगाब अवस्थाओं में, डिमर्निश्या मैंलंगकी लिया और अन्य मिस्तिक के रोग पैदा हो जाते हैं। इनके माथ कभी र नेशों का सुखें होना भी हो सकता है। श्वास संस्थान से कफ अधिक निकलने लगता है जो मनुष्य नींद लाने के लिये सेवन करने हैं उनकी धीरे र मात्रा बदानी पड़ती है इसका परिगातम खगब होना है और मिस्तिक में विकार उत्पन्न हो जाने हैं।

इसको बन्द कर देना चाहिये और उत्तेतक दवा का सेवन करना चाहिय ।

## १=--क्रोरल हाइड्रंट

श्रकीम के समान है नींद श्राती है श्वास मंद श्रीर धीरे २ श्राने लगता है नाड़ी चीए हो जाती है। शरीर कमजोर ढीला शीतल पड़ जाता है। हद्य की गति चीए होती चली जाती है पुतलियां कैन जाती हैं रोगी बेहोश होकर मर जाता है। २-३ ड्राम से विषलत्त्रण उत्पन्न हो जाते हैं। चिकित्सा

श्रहिक्नेन की तरह, स्ट्रिक्नियां की पिचकारी समार्थे।

## कार्वोनिक गैस

यह एक गैस है नजर नहीं आती वायु से भारी होती है इस कारण नीचे की सतह पर रहती है पुगने खंडहर, कुएं सूखे, मैली नालियों और खत्तों की सतह पर पाई जाती है। प्रायः समाचार पत्रों में पढ़ते होंगे पुगने कुर्ये को साफ करने उतरे और मर गये। इसलिये पुराने कुर्वे में देख भाल कर उतरना चाहिए।

यदि खालिस गैस मृंघी जाये तो दम घुटकर मृत्यु हो जाती है। जब इसका बायु से कुछ मिश्रण हो तो सृंघने से स्मिर दर्द घबराहट होकर रोगी बेहोश हा जाता है खास स्वर्गटेदार आता है।

रोगी को शीघ्र बाहर निकाल कर खुली हवा में रक्क्वें शीतल जल चेहरे पर डालें। आक्सजन खालिस्ट मिल सके सुंघार्ये।

नोट—कर्ष में उत्तरने से पहले एक चिरारा जनाकर किसी पात्र में रखकर कुर्षे में उतारें यदि दीपक युक्त जाये तो इस ज़हरीली गैस का बहां उपस्थित होना सिद्ध होता है फिर कभी भूलकर भी कर्षे में न जायें। '

## २०-कार्चोनिक आक्साइड गैस

यह कार्योनिक गैस सेभी घातक होती है यह जलते कोयलों से जल्पन होती है जन से यह

कोयला जलाना शुरू हुआ है प्रायः ऐसे केस हो-जाते हैं। शीत काल में कोयले जलाकर रखना मृत्यु को बुलाना है कमरे में तब रखना चाहिये जब कि धुआं निकल गया हो कोयले सुर्ख होकर दहकने लगे हो तब कोई हानि नहीं होती सिर में दर्द, कनपटी की नाड़ी फड़कना कमजोर होकर मुच्छां की अवस्था में मृत्यु हो जाती है। चिकित्सा

खुली इवा में रखना एमोनियां सुंघाना किसी नाड़ी से रक्त मोज्ञण करना।

नोट—यह गैस जलनशील है इसके शोले का रंग नीलगू होता है। ईटों के पजाये से यह गैस बहुत निकलती है मामूली दीपकों में नील रंग जो लौह में दख पड़रा है वह इसी गैस का भाग है, इस गैस द्वारा मृत्यु होने पर शरीर के पट्टे और रक्त मुर्ख रंग के हो जाते हैं। यह अवस्था अन्य रोग में नहीं होती।

#### सर्प

अमेरिका के बहुत से भागों में उहरीले सपीं की बहुनायन है बहां की "टेक्सास" रियासत के सेनएन्टनी नगर में डा॰ डडली जैक्सन की अध्य-चता में डाक्टरों का एक कमीशन सप् के काटने के उपचारों की खोज कर रहा है यह सीरम-चिकित्सा को उपयोगी नहीं मानते । इन्होंने एक और ही विधि निकाली है वह यह है—

सर्प के काटने पर दंश स्थान के चारों तरफ तेज नस्तर से गहरा काटना चाहिये फिर इन स्थानों पर कांच की कुछ प्याली जिन्हें (Sucton-Cups) कहते हैं रखकार इनके द्वारा विषाक्त रक्त को खेंचकर बाहर निकाल देना चाहिये यह प्याले थोड़ी २ देर बाद दो दिन तक लगाने चाहिएं। इस से वहां को सर्पदंश मृत्यु संख्या घट कर दो की सदी कम हो गई है। अमेरिकन सरकार ने इसे अपने चिकित्सा व्यां के लिये स्वीकार भी कर लिया है।

नोट—यह चिकित्सा आयुर्वेद की ही है हमारे यहां विष को चूम कर बाहर निकालते थे ये वांच के प्यालों से वही काम लेते हैं। हमारी विधि मुख़ से चूसकर विषाक्त रक्त को खेंचना किन्हीं अव-स्थाओं में घातक है यदि मुख में ब्रग्ग हैं तो विष ब्रग्ग द्वारा उसके शरीर में फैल जायेगा अन्त में मृत्यु हो जायेगी, परन्तु यह प्यालों को विधि उत्तम है इस चिकित्सा शैली को अपनाना चाहिए।

## बिच्छू

विच्छू के काटने पर दाह, जलन, शोध उत्पन्न हो जाती है तीव पीड़ा की लहर उत्पर को चढ़नी हुई प्रतीत होनी है।

जिस श्रोर काटा है उससे विपरीत श्रोर के कान में थोड़ा सा नमक पानी में बोल कर डाल दीजिये तुरन्त लाभ होगा।

न्ता श्रीर नौमादर का लेप करने से भी लाभ होता है, इमली का बीज घिसकर लगाने से लाभ होता है, इसी प्रकार निमली का बीज घिम-देश स्थान पर जिएकाने से यह बीज सारा विष चुम लेता है।

लाइकर एमोनिया फोर्ड की फुरेरी द्रंश स्थान पर नगये, यदि पोड़ा ऋधिक हो सहन करना कठिन हो तो 'नोबोकेन' या ''कोकेन'' का इंजैक्शन कर देना चाहिए, यह फीरन पोड़ा को शान्त कर देनी है फिर किसी प्रकार का दर्व नहीं रहता । श्रपामार्ग की जड़ या लकड़ी धिसकर लगाने से भी श्राराम होता है ।

परमेंगनेट आफ़ पोटास और टाग्टांरक एसिड का चूर्ण एक रत्ती दंश स्थान पर रख कर अपर से १ वृन्द पानी डाल देने से वह उबलने लगेगा। ४-७ मिनट के बाद विच्छू का विष नष्ट हो जायेगा। होवर्स पावहर को पानी में मिलाकर लगाने से उसकी जलन और दर्द में आराम आ जाता है। ईश्वर मूल भी यही कार्य करता है।

## कुत्ते का विष

जिस स्थान पर काटा हो उस ब्रग् में लाल मिरच कड़वे तेल में पीसकर भर देने से आगम हो जाता है।

मिलवर नाइट्रंट से जला देने से लाभ होता है। प्योर नाइट्रंक एसिड भी टच करते हैं। तार-पीन का तैल पान करने से भी लाभ होता है। "औपिध विज्ञान" में विर्णित अर्लकविष चिकित्सा लिखते हैं—पहले कुत्ते के विष की चिकित्सा धतूरे के स्वरस से होती थी, रोगी को पहले २ से ३ हाम कीथले का चुर्ण खिला आध घंटे बाद १ औस धत्तृर स्वरस पिलाया जाता था, वमन रोकने के लिये गुइ आदि खिला हेते थे। रोगी को ४-४ घंटे शृप मे रखने से रोगी में पागलपन के लहागा पैदा हों तो इस से यह पता लग जाता है कि पागल कुत्ते ने काटा है। उन्माद के लहागा पकट होने के बाद शीवल जल से मनान कराते थे। रोगी को पहले से ही बांध दिया जाता था, मनान के बाद वह ठीक होने लगता था।

नोट-इसी प्रकार पागल शंदर, पागल गीदङ् इत्यादि जानवरों की चिकित्सा समिभए।

## मधुमक्खी

लाइकर एमोनियां फोर्ड उस जगह लगा दो, नकच्ंटी से पकड़कर डंक खेंच लो, इससे डंक ऊपर को उभर खाता है।

#### ततैया-भिर्

तोंग, दारचीनी का तैल तगार्वे, कार्योतिक एसिड टच करें। अमृतधारा भी लगाना लाभ देता है। लाइकर एमानियां कोर्ड लगार्ये। चुना और नीसादर मिलाकर लगार्ये।

पाश्वात्य देशों में विष तीन श्रेणियों में विभक्त किये गयं हैं—

#### १-अम्ल तिष

इन विषों में श्रम्त (Acids) अलकलीज (Alkalies) त्रादि शामिल हैं। इनके शरीर के किसी भाग में लगते ही तीव पीड़ा होने लगती है। वमन आती है मुखादि जल जाते है।

## २ -इरिटेन्ट विष ( Irritants )

मुख गला आदि । जलन कर देते हैं, प्रायः वसन अति यर मरोड़ और दर्द होने लगता है । धानुजविष और फंगी नथा बेराज के विष (Pois onous fungi and ferries) भी इन्हीं में समिमालन हैं।

३-नरकोटिक्स (Narcotics) इन से प्रायः नींद ऋाती हैं, रक्त परिश्रमण के द्वारा इनका प्रभाव मस्तिष्क पर पडता है।

#### लक्तरा-भेद

१—नींद आती है संज्ञाशून्यता, फिर थोड़ी देर बाद कीमा की अवस्था में बदल जाता है नेत्र के उपतानुमंडल (Pin-Point Pupils) विल्कुल सिकुढ़ जाते हैं। श्वास धीरे २ लम्बा होता जाता है नाड़ो मंद और सीग्र पड़ जाती है। इस विष में ऋकीम और इससे निर्मित औषिधयां सम्मिलित हैं।

२—पहले सिनिपात (Delirium) की बायस्था, तत्परचात् जिल्या (Coma) उत्पन्त करते हैं आंख के तिल फैल जाते हैं, नाड़ी तीन हो जाती है। बेलाडीना धतूरा, होरोफार्म, एल्को-हल भांग आदि इनमें गिने जाते हैं।

३—जिन से ऐंटन श्वकड़न होने लगे, गला घुटने लगे म्रत नीली पड़ जाये, ऐंटन बार बार हो, शरीर शिथिल हो नाये, ऐसे, विप स्ट्रिकनीन, एकोनाइट शुस्सक एसिड झादि होते हैं।

## श्रम्ल निष (Acid Poisons) निकित्सा—

जैतून या तेल, कोलिव आइल, घी, दूध और शन्तिकारक औषधि दो जैसे—जी के आटे का पानी (Barley Water) लस्सी आदि। यदि गले में शोध बद्ना जा रहा हो तो सेक करें, गर्म फनालैन से सेकें, पुल्टिस बांधें, गुल बनफशा पका कर गले पर बांधे। पीने के लिए शीनल पकार्थ दें।

#### इरीटेन्ट विप चिकित्सा

त्रमन कारक श्रीषधि देकर कास्टर-आइल पिलाओ, जैतून या ओलिव आयल पीने को दो। गर्म घृत, पेराकीन, जी की पेय शामक औषधियां दो।

### नारकोटीन विष चिकित्सा

रोगी के सो जाने पर भी इधर उधर से पकड़कर टहलाते रही उस के मुख गर्दन, छाती आदि पर पानी से भीगा कपड़ा थपथपाते रही ताकि जागता रहे। तेज कहवा पिलाओं।

वमनकारी पदार्थ दो।

ऐंडन और जाकडाइट ( convulsions ) हो नो बमन करायें। कृत्रिम श्वास क्रिया करों।

विष श्रवस्था में दूध, पानी, जी की सारसी तीव चाय देनी चाहिये।

# हिमाद्रिजा

# रक्त विकार की अचूक औषधि

हिमालय पर्वत की उन दुर्गम चोटियों की श्रोर जो हजारों मन बर्फ में ढकी रहती हैं, एक विशेष जड़ी पाई जाती हैं । प्राचीन काल में ऋषि मुनि इम श्रोषिष का प्रयोग करते श्राये हैं । १२० वर्ष हुये जब हमें पहले पहल यह बूटी एक पहाड़ी रियासत के राजा साहिब की कृषा में प्राप्त हुई थी। तब में श्राज तक लाखों रोगियों पर इमें श्राजमाया गया श्रोर हमेशा गुणकारी पाया है।

# रक्त विकार

के कारण पैदा हुये तमाम रोगों की एक मात्र अचूक द्वाई है। एक पैकंट मात दिन के लिये काफ़ो है। कीमत १ पैंकेट केवल १) डाक ब्यय एथक।

वृहत् श्रायुर्वेदीय श्रीपध भागडार, चांदनी चौक, देहली।

जगत् शासद्ध ( गवर्नमेन्ट बौक इष्डिया से रजिस्टर्ड )

# बृहत् आयुर्वेदीय खोषच भागडार

जौहरी बाज़ार देहली

की

पवित्र आयुर्वेदिक, यूनानी व पेंटेगट ओषियां के योक और स्रीज माव का संजित्त सुवीपत्र

ग्रध्यस्र-

रसायनशास्त्री राजवैद्य शीतलप्रसाद एगड संज़ बाहरी बाज़ार, बांदनी बांक देहली।

प्यारं मित्रा, हमने बहुत वर्षों के लगातार परिश्रम के बाद, आपके लिये बड़े २ आर्ष यन्थों से अपने प्राचीन ऋषियों की अनुभूत, पत्यज्ञ फलदायक औषधियां तैयार की हैं, जिनकों कि हमारे देशवासी अनेक वर्षों से भूते हुए थे। हमारे औषधालय की द्वाइयों की बड़े २ राजा, महाराजा, रईस, जमींदार, वकील, आकटरों तक ने मुक्तकंठ में प्रशंसा की है। आपसे साम्रह खिनय निवंदन है कि इस सूचीपत्र की आप म्वयं पढ़ें और अपने मित्रों को दिखला कर अपनी इस प्राचीन आयुर्वेदिक विकित्सा को तरफ जनकी किच बढ़ाते हुये हमारे इस परिश्रम को सफल करें।

# इवेत कुछ (सफ़ेद कोह)

# और

# उसका इलाज

शारोरिक स्वास्थ्य व सौन्दर्य के सहत्र शत्रु इस श्वत्र कुछ ( मफ़ेद कोद ) के इलाज़ को करते २ यदि आप निराश हो चुके हैं, तो आज ही हमारी श्वित्र चिकित्सा नाम बाली पुस्तक मुक्त मेगा कर पढ़ें। यदि आपका सम्पूर्ण शरीर भी श्वेत होगया है और बाल भी सफ़ेद होकर भड़ने लगे हैं तो भी आप जिन्ता न करं। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि आप हमारं इस वंशपरम्परागत ( खानदानी ) इलाज से अवश्य और शोध ही छुटकारा पाकर आरोम्य होंगे।

इमने सर्व साधारण के लाभ के लिये अपने यहाँ इस इलाज़ के लिये तीन तरीक़ें रक्ले हैं—

(१) गुरीन व असडाय लोगों की मुफ्त विकित्सा की जाती है।

SENSE OF THE SENSE

- (२) बहे २ रईस, धनवान लोगों का इलाज ठेके पर भी किया जाता है।
- (२) श्रीषिव की उचित की मत लेकर चिकित्सा की नाती हैं। खाने की दवा जो १ पास के लिये काफो होती हैं की पत ४) रुपया। दागों पर लगाने की दवा ४ गोली का ४) रुप्या।

यदि सारा शरीर श्वेत होगया है तो इसके बिये तेल मालिश की शीओ २) रुपया ।

#### टाक-व्यय पृथक् ।

बृह्व आयुर्वेदीय औषभ भागडार ( रिजिस्टर्ड ) जीहरी बाजार, देहती ।



## "वर्मार्थ काम मोक्षाणामारोग्यं मृत्तग्रुचमम्"

र्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोत्तादि व साँसारिक सुखों का आधार यह नीरोग शरीर ही है। आजकल हमारे स्वाम्थ्य की दिन प्रति दिन अधोगित क्या हो रही है, इसका मृल कारण क्या है, इसकी तरफ अभी तक किसी ने सूचम दृष्टि से विचार नहीं किया यदि हम पत्तपात शून्य होकर इस प्रश्न पर विचार करें तो हमें और कारणों के साथ २ यह भी मानना पड़ेगा कि आजकल हमारे देश में प्रकृति विकद्ध विदेशी औषधियों का अत्यधिक प्रचार हो रहा है। क्यों कि जो औषधियाँ वहाँ पर बनती हैं उनमें वहाँ के देश काल जलवायु का ध्यान रखते हुवे तैयार की जाती हैं, और जो बनस्पतियाँ यहाँ

हमारे देश में विदेश को जाती हैं, वे वहाँ पहुँचने से पहले ही सुखी और निर्वीर्य हो जाती हैं। आप विचारें कि वे हमारे लिये किस प्रकार उपयोगी हो सकती हैं, इसी सिद्धान्त को लच्च करके प्राचीन आचार्यों का यह कथन विलक्त सत्य है कि— "यस्यदेशस्य यो जन्तुस्तक्जंतस्यौषघंहितम्" अर्थात जो प्रत्यों जिस देश में उत्पन्न हुआ है, उसी देश की उत्पन्न हुई और बनी हुई श्रीपधियाँ वहीं के देश वासियों के लिये अनुकूल होती हैं, क्यों कि उन मनुख्यों का शरीर भी वहीं के जल-वायु से चिरकाल में पाषित होता है, इसिलये पाठक विचार कि शीत प्रधान पाश्चात्य देश में उत्पन्न हुड और बनी हुई श्रीष्धियाँ उष्ण प्रधान भारत देश वासियों के लिये किस प्रकार हित कर हो सकती हैं, इस कभी को पूरा करने के लिये आज यद्यपि अनेक फार्मेसियाँ व रसायन शालायें स्थान २ पर खुली हुई हैं, और साथ ही अनेक धर्मार्थ औपधालयों द्वारा देश में निर्धन जनता की सहायता भी की जा रही है, और यहाँ तक कि आयुर्वेद कृषी महोद्धि के बसन्त मालती. क्यवन-पारा, मकरध्वज इत्यादि श्रष्ट रत्नों के गुग्गों से मुग्ध होकर पारचात्य चिकित्सक गण् भी उन्हें बढ़ें गौरव से प्रयोग करने लगे, परन्तु इतना सब कुछ होते हुवे भी अभी इस बात की बड़ी ही श्रावश्यकता है. कि श्रीषधियाँ शास्त्रोक्त विधि से नैयार की हुई ठीक भाव पर मिलें, क्योंकि कुछ फार्मेसियों ने तो अपने यहाँ औपिधयों के भाव इने अधिक बढ़ाये हुवे हैं कि उतने मूल्य पर श्रीषि खरीदने में वैद्यों व श्रीषि व्यवसायियों के लिये लाभ उठाना श्रीत कठिन है, श्रीर साथ ही इससे भोली जनता की ऋार्थिक हानि भी होती है, और इसी प्रकार कुछ महातुभावों के सस्ते पन ने तो इतना आश्चर्य दिखाया है कि उन भावों पर भौषधिका ठीक र शास्त्रानुकूल सर्वोङ्ग पूर्ण होकर

बनना भी हमारी समभ से बाहर है। इन ही सब कारणों को ध्यान में रखते हुये ही हमने यहाँ इस देहली शहर में हुइत आयुर्वेदीय औषध भएडार की योजना की हुई है, और जिसमें कि हर समय कृषीपक रसायनें, रस, भर्सों, चूर्ण, अबलेह, गुटिका, घृत तेंल, अरिष्ट, आसब, चार, गुग्गुल आदि अनेक शास्त्रोंक सिद्ध प्रयोग. और हमारे २२ पुश्त से परम्परा गत प्राप्त हुवे खानदानी सिद्ध सहस्रशोऽनुभृत प्रयोग, जिनका पूरा पृशा विवरण हम आगे लिखेंगे, हर समय मौजूद रहते हैं।

हम आपको विश्वास दिलात हैं कि जिन ठीक भावों पर थोक भाव से रस भग्मादि मृल्यवान श्रीषधियाँ हम दे सकते हैं, उतनी आपको अन्यत्र मिलनी मुश्किल हैं, क्यों कि हमारा यह औषधालय एक ऐसे स्थान पर है जो कि नमाम भारत का केन्द्रीय स्थान है, इस लिये भारत के प्रत्येक स्थान स्थान से सम्पूर्ण खितान द्रव्य झौर हर प्रकार की काष्ट्रीयधियाँ यहाँ विकी के लिये बड़ी तादाद में आती हैं और हम उनको थोक भाव से लेने हैं. जिससे कि वे हमें काफी सस्ती पड़ती हैं। और भन्म रस आस-वादि द्रव्य जो कि पुराने हो कर अधिक गुग्ग दायक होते हैं, इसमें शार्क्षधर का एमाग्र है कि:---'पुरागाः स्युगु गोयु त्ताः आसवाः धातवोरसाः' इसलिये हम इन द्रव्यों को एक बार ही अधिक से ऋधिक साला में बना कर तैयार कर लेने हैं. इसका परिणाम यह होता है कि हम बहुत ही कम मुनाफा लेकर वैद्यों व धर्मार्थ औषधालयों को उसी साव में औषधियाँ देते हैं जिसमें कि वे स्वयं भी वैयार नहीं कर सकते। इसका फल यह होता है कि हमारे यहाँ की श्रीपिधयाँ बहुत ही शीघ हाथाँ हाथ बिक जाती हैं, जिससे कि वैश वन्धुक्रों की श्रीषधि बनाने के कठिन परिश्रम से मुक्ति मिल जाती है, और हमें थोड़े नफ़ में अधिक लाभ का होना इस नियम के अनुसार ज्यादा विक्री होने से अधिक आमदनी होती है, इस प्रकार इस औपधालय ने थोड़े समय में ही जो आशातीत उन्नति की है, यह सब इसके व्यवहार में सच्चेपन व सकाई का होना ही कारण है, खतएवं जो महानुभाव विकित्सा-कार्य सं समय न मिलने के कारण अथवा औषिवि निर्माण की पर्याप्त सामग्री के न होने से औषि तैयार नहीं कर सकते, ( क्यों कि इससे एक बड़ा नुकसान तो यह होना है कि जब नक रोगी के रोगा-नुकृत औषध बन कर तैय्यार होगी तब तक या ती रोग बढ़ कर रोगी को ख़तम कर देगा या रोगी आपुर होकर किमी हुसरे वैद्य के पाम चला जायगा ), इसी लिये हम ऐसे वेदा बन्धुओं से सामह सिनय निर्देटन करने हैं कि वे हमारे औषधालय से अपने यहाँ का स्थायी सम्बन्ध करलें जिससे कि वं समय पड्ने पर रागा की सलफलदायक औषधि देकर यश के भागी वन सकें। क्योंकि हमारा यह उद्दर्थ है कि आयुर्वेदिक औषवियों को शास्त्रोक्त विधि से नैयार करके भारत के प्रत्येक धानत में चिकिन त्सको के पास पहुँचावे, िससे कि देश का लाखों रूपया विदेशी कम्पनियों की पाकेट से वचकर देश की निर्धन जनता के निर्वाह के लिये पहुँच मके हमने उपरोक्त अपने पदेश्य की पूर्ति के लिये विपुत्त

द्रव्य व्यय करके एक दृहत् रसायन शाला खोली हुई है जिसमें कि बड़े बड़े योग्य आयुर्वेदाचार्यों की आध्यक्ता में सम्पूर्णरस कियायं की जाती हैं। हमारा दूसरा यह भी उद्देश्य है कि आयुर्वेद को सबी सेवा करते हुवे उसके उत्थान के लिये पठन पाठनादि व लेखादि द्वारा आयुर्वेदिक व पाधात्य मतानुसार गम्भीर रोगों का निदान व उनकी चिकित्सा का वर्णन करना। हमारे यहाँ से इस कार्यकी पूर्ति के लिये

# जीवन-सुधा

नामकी मासिक पत्रिका निकली है, जिसमें कि बड़े बड़े योग्य वैद्यों व डाक्टरों के गम्भीर गन्नपणा पूर्ण लेखों के क्रितिरक्त नवीन २ जड़ी बृटियाँ व शरीर के क्रिन्न-प्रत्ये को सुन्दर सुन्दर वित्र भी विद्यमान रहते हैं, और जिसके द्वारा बाहर के रोगियों को अपने रोग का निर्णय कराने में बड़ी सुनिया रहती है, और उनके लिख रोग के लच्छों को प्रश्नोत्तर के रूप में छापकर बड़े बड़े योग्य वैद्यों के निर्वयानुमार उनकी चिकिन्सा की व्यवस्था कर दी जाती है, इसके अतिरक्त विशेष बात यह है कि वपभर में दी विशेषाद्ध भी सुन्दर सुन्दर चित्रादि से सुसज्जित हुए पाठकों की सेवा में मेट किये जाते हैं। इस पत्रिका का इतना अपयोगी बनाने हुवे भी हमने इसका मृत्य केवल ३) तीन कपया वापिक ही रक्तवा है बास्तव से यह पत्रिका अपने ढड़ा की एक निराली ही है, यह वैद्यों के अतिरक्त प्रत्येक गृहस्थी के भी अद्दे हा काम की है, इसके द्वारा मनुष्य अनेक रोगों की चिकित्सा घर बैठे हो कर सकते हैं। इस लिये हम आपसे सामह सविनय निवेदन करते हैं कि आपकी आवश्यकना पड़ने पर जिस किसी औपिक की आवश्यकता ही, या किसी रोग को सम्मति लेनी हो अथवा कोई अनुभूत प्रयोग पृष्ठना हो तो अपने हमें निःसंकीच होकर तत्कील लिखे, आपकी हर प्रकार से सहायता को जायगी। आप लोगों की सेवा के लिये ही हमारो रस शाला आदि का जीवन है।

## वैद्यजी का परिचय

पाठक गरा ! चिकित्सा कराने से पहिले रोगी के लिये यह जानलेना अन्यावश्यक है कि चिकित्सक कितना कार्यकुशल और अनुभवी है और उसकी कितनी योग्यता है, वैद्यक व्यवसाय उनका मृतन है या प्राचीन, क्यांकि रागी के जावन मरण का उत्तरदायित्व केवल वैद्य के उपर ही निर्भर होता है, इस विषय में हमारा आ रमे यहां निवदन है कि वृहत आयुर्वदीय औषध भारखार के संचालक महादय खानदानी वैद्य है, यह चिकित्सा कार्य आपके बशमें नवीन नहीं है शत्युत २२ पृश्त से चला आरहा है, इसी लिये आपको शास्त्रीय-सिद्ध-अथागों के अतिरिक्त अपने बश परम्परागत अनुभूत अथोगों का भी विशेष ज्ञान है। आपके पिता श्री पूज्य राजवैद्य शीतलपशाद की रसायन शास्त्रा देहली एक बड़े यशस्त्री वैद्य हो गये हैं, देहली को सर्व साधारण जनता आप के नाम से भली अकार परिचित है, विशेष क्या कहना गग विज्ञान के लिये रोगी का फठिन अवस्था के समय एकत्रित

हुवं स्थानीय वैद्य त्रोर डाक्टर महाद्य भी आपकी तात्कालि की गम्भीर गवेषणा पूर्ण रोग विवेचना पर मुख थे, आपकी प्रत्युत्पन्नमित सराहनीय थी, इन ही श्री वैद्य जी के निरीच्नण में रह कर इन के सुयाग्य-पुत्र वृद्य राज एं० महाबीर प्रसाद जी ने आयुर्वेद शास्त्र का अध्ययन व चिकित्सा क्रम प्राच्य अताच्य मतानुसार सीख कर अपनी असाधारण कार्य कुशलताका परिचय दिया है, हमारे इस प्रकार के लेख से पाठक गण यह न समभे कि हम इसमें कुछ बढ़ाकर लिख रहे हैं, हमने जा कुछ लिखा है वह अत्तरशः सत्य है। हमारो इस औपवालय की सेवा से देहलां की तमाम जनता अच्छी प्रकार परिचित है।

# धर्मार्थ ओषधालय

आर विशेष बात यह है कि आपने अपने निवास स्थान पहाड़ी धीरज पर एक धर्मार्थ आपयालय भी खाला हुवा है जिसमें कि असहाय निर्धन जनता की औषध मुक्त दी जाती है, और यहाँ तक कि आवश्यक्ता पड़ने पर उनके घर पर जाकर भी मुक्त देखा जाता है।

#### विद्यालय विभाग

हम पहले ही निवेदन कर चुके हैं कि हमारा यह उदेश्य है कि पठन पाठनादि लेखादि द्वारा आयुर्वेद का प्रचार करना, इस काय के लिये जीवन सुवा मासिक पित्रका के श्रातिरिक्त हमने श्रापने यहाँ एक आयुर्वेदिक विद्यालय की भी योजना की हुई है, जिसमें कि विद्यार्थियों की आयुर्वेद की उच काटि की शिचा दकर उनकी प्रामाणिक परीचार्ये उत्तीणे कराई जाती हैं, और साथ ही उनकी किया कुराल बना कर इस योग्य बना दिया जाता है कि जिससे वे आपनी जीविका स्वतन्त्रता पूर्वक आकले प्रकार निवाह करने हुवे यशोगाजन कर सकें।

भवदीय-मैनेजर— भगवद्देव शर्मा, द्यायुर्वेदाचार्थः ।

# औपधि मंगाने के नियम

- (१) अब स पहिले के छपे हुव सूर्चापत्रों का भाव रह किया जाता है, इसा लिये पहले भावोंपर औपाध संगानका आबह नहीं करना चाहिये। (२) भाहका का याहर के आहर देने समय अपना पूरा २ पना साफ हिन्दों, उद्दें, अँगजी म स्टेशन व रेलव लाइन साहत लिखें। यदि आपक पत्र भेजन क बाद ८ यो ७ दिन तक माल या उत्तर न पहुंचे ता समक लीजिये कि आपका पत्र पढ़। नहीं गया या वह बहुंचा ही सही इसी लिये दुवारा पत्र डालना चाहिये।
- (३) जिन श्रीपिधयों का जो थाक भाव लिखा है वह पहले ही कमीशन काट कर लिख दिया गया है, इस लिये थोक भाव में कमीशन के लिये पत्र व्यवहार न करें, परन्तु हमारी फार्मेसी के थोक भाव के प्राहक वेही सममें जायेंगे जिनका पहिला आर्डर कमसे कम २०) रु० का हागा, और फिर हम उनकी अपने यहाँ के थोक भाव का प्राहक रजिस्टर नम्बर देंगे जिससे कि वे भविष्य में ४) पाँच रुपये का माल भी थोक भाव से मंगा सकेंगे।

- (४) थाक भाव में जिन श्रीषिथयों की जो तोल लिखी है उससे कम में वे नहीं भेजी जा सकेंगी।
- (५) पेष्ट श्रोफिस से श्रिधिक से श्रिधिक ५ सेर तक का पासल रवाना हा सकता है, जिसका मह मूल करीब २॥) ढाई क्षये तक होता है श्रीर रजिस्ट्रों मिन श्रांडर कोस इससे प्रथक लगती है इस लिये द्रवपदार्थ श्रिष्ट श्रांसव तैलादि रेलवेद्वारा ही मगाने चाहियें। क्योंकि इसमें महसूल भो कम लगेगा श्रीर बातलों में भर कर लकड़ी के बक्स में बन्द कर श्रांच्छी तरह भेजे जासकते हैं, श्रीर रास्ते में दूटने कूटन का डर भी नहीं रहता।
- (६) पत्र लिखते समय यह साफ २ लिखना चाहिये कि माल रेलवे या पाष्ट श्रीफिस किसके द्वारा भेजा जावे, रेलवे द्वारा माल मंगाने वालों की श्रथवा ज्यादह वजन की पाष्ट पासंल मंगाने वालों को चाहिये कि श्रीडर के साथ २ श्रीष- धिका पूरा या श्रावा मूल्य श्रवश्य भेजद, विना एडवान्स श्राय हम माल (पशगी) नहीं भेज सकरें।
- (७, बद्यां व धर्मार्थ श्रीषयालयां तथा श्रीषधि विकताश्रां के लिये खास । रयायत का जाता है उनका कम से कम ५०) चालीस कपय का एक साथ श्राहर श्राने पर उनका थाक भाव में भी १२॥) साढ़े बारह कपय संकड़ा कमीशन दिया जायगा, श्रार उन को संवा में साल भर तक हमार यहाँ का जीवन सुधामासिक पत्र भी विशेषाहों सहित मुक्त भेजा जायगा।
- (८) हमारे यहाँ उधार का लेन देन नहीं है. इस

- लिये नकृद दाम देकर या वी॰ पी॰ द्वारा माल, मंगाना चाहिय, मार्ग व्यय हर हालत में प्राहकों को हो देना होगा।
- (९) रागी का हाल लिख कर श्रीषिध मंगाने वाले माहकां को चाहिये कि राग का प्राचान इतिहास सब सिलसिले बार लिख कर बतमान लज्ञ-गों को भी लिखें श्रीर साथ ही यह भी लिखें कि श्रीषधि कितने मृल्य को भेजा जावे।
- (१०) यदि किसी बिल में अथवा पासंत की वी० पी० में भूत से दाम अधिक लग गये हों तो भी पासंत छुड़ा छेना चाहिये। फिर बिल का नंट तारोख आदि तिखकर ठीक करा लें यदि असावधानता स मूल्य अधिक लग गया होगा तो शेष मूल्य भेज दिया जायगा या आपकी पसन्द का हुई काई दूसरी चीज भेज दो जायगी।
- (११) हमारे यहाँ सं पैकिंग बहुत हाशियारी सं अनुभवा मनुष्यों द्वारा कराया जाता है। इतने पर भी यदि रास्ते में कुछ दृट-फूट हाजावे ता कार्यालय उसका जिन्मवार न होगा।
- (१२) माल पहुँचने पर याद ६पयं का इन्तजाम न होता उस आप डाकखान (डिपाजिंट) रखकर ७ सात दिन के मन्दर हा मेळुड़ा लं।
- (१३) सूचीपत्र में लिखित आष्टियों के अतिरिक्त आपको जिस औषधि को आवश्यकता हो उसको आडर आन पर वह तुरन्त आपकी आज्ञानुसार बनाकर भेज दी जायेगो, श्रीष-धालय उसकी लागतक अलावा १०) ६० सैकड़ा आधक चार्ज कर लेगा, ऐसी ऑपिंदि के बनवान के लिये कम से कम आधा मूल्य पेशगी देना होगा। लेकिन ऐसा भौष्टि १) ६० से कम मूल्य की नहीं बनाइ जायेगी।

# शास्त्रीय अनुभूत औषधियां

# ज्वराधिकार

मृत्युष्ट्रजय रस -- यह सव प्रकार के ज्वरों की खास दवा है। इसकी मधु के साथ १ रत्ती चटानी चाहिये। मृल्य ।।) तोला।

महाज्वराँकुश — इसके सेवन से वातज, धित्तज, आदि अनेक प्रकार के ज्वर, विशेषतया मलेरिया फीवर शीज ही शान्त होता है। मृल्य १ तीला का १) रु०, अनुपान अदरक का रस मधु माजा १ रत्ती से २ स्ती तक।

श्री जयमक्रल रस — इसमें सीना, चाँदी श्रादि बहुमुल्य भस्में पड़ती हैं। यह पुराने बुखार खून की कमी, श्रात्यन्त कमजीरा, विशेष-कर तपैदिक के बुखार में शीव कायदा करता है। मृत्य १३॥) तीला।

हिंगुलेश्वर — यह जाड़े बुखार की खास दवा है। मूल्य (=) नीला ।

तरुगाउन्। [र-यह नये ज्वर मे विरंतन लाकर काष्ट्रबद्धना का दूर करके ज्वर शान्त करता ! है। साक्षा १ रत्ता मिश्री के शबत के साथ, मृल्य ॥) तीला।

विषयज्वरान्तक लोड --(पुट पक) इसमे सीना, गाती, लोह, अन्नक इत्यादि बहु मृत्यवान् स्रीर पीष्टिक द्रवय पहले हैं। यह खासकर पुरानं बुखार, बारो का बुखार, म्यादी बुखार, खून की कमी, तिल्ली और जिगर के बढ़ने पर अत्यन्त लाभदायक है। भूख की बढ़ाता है, अत्यन्त पैष्टिक है। मृल्य हा। तोला! मात्रा १ रत्ती से ४ रत्ती तक अनुपान—पीपल चूगी, हींग, सैंधानमक।

ममृतारिष्ट —पुराने बुखार, मलेरिया, जिगर, तिल्ली और पाण्डु राग में भी अत्यन्त लाभदायक है। मृल्य २॥) सेर।

स्वर्णमालती वसन्त — यह पुराने बुखार, तपै-दिक (यदमा) हृदय की दुर्बलता, हर समय मन्दा-मन्दा रहतवाले ज्वरी की एक मशहूर और राम वागा दवा है। अत्यन्त बलकारक है। मृ० १४) तोला।

बृ॰ सर्व ज्वरहर लॉह— स्वर्णघटित ) मृल्य १५) तोला।

सर्व ज्वरहर लीह—यह सब प्रकार के ज्वरों की एक खास दवा है। मृत्य १) तोला। कस्त्री भाव — = ) ठपये तोला।

बृ० कस्तूरो भैरव - यह सन्निपात में दिल की कमजोरी, हाथ पैरी के ठएडे हाने पर बड़ी लाभदायक चीज है। मृ० १२) तीला।

बृहत् आयुर्वेदीय औषध भागडार ( रिजस्टर्ड ) जोहरी बाजार, देहली।

नारदीय महालक्ष्मी विलास—इस के सेवन से अनेक प्रकारके ज्वर बीसों प्रकार के प्रमेह अर्थ भगन्दरादि अनेक रोग शीघ्र ही नष्ट होते हैं, और अत्यन्त बाजीकरण है। मृ० ६) तोला।

बसन्त तिलक — इसमें कम्तृरी, सोना, मोती
श्रादि द्रव्य पड़ने हैं। हृद्य की दुर्बलता,
ठरडे पसीनों का श्राना, जीर्म ज्वर विशेष
कर तपैदिक के ज्वर श्रीर उसकी कमजोरी
को दूर कर शक्ति को उत्पन्न करता है।
मृत्य २४) प्रति तोला।

विषमञ्बरान्तक लाँह—(साने मोनी वाला) मूल्य १०) तोला।

किरातादि तेल — यह उवर से उत्पन्न शरीर की कजता और दुर्बलता तथा दाह इत्यादि की नष्ट करता है। मृत्य १६ औंस की शीशी 3) तीस कपया।

मकरध्वज-— (स्वर्गाघटित) कीमत ४) प्रति तेलि । षड्गुगावलिक।रितमकरध्वज-—

८) प्रति तीला ।

सिद्ध मकरध्वन — मृल्य २४) तोले — यह अमृत तुल्य रसायन बहुरोग नाशक है जगन प्रसिद्ध महीपधि है। छोटे खड़े रागीव-अमीर मृखं और पण्डित मल्दी तरह के लोगों ने इस अनुपम रान की मृत-कण्ड मे प्रशंसा की है। यह वहीं द्या है जिसके बल में वैद्य लोग मृत्यु के मुख्य में भी रोगी को निकाल लेते हैं। प्राज तक इसके मुकाबले की कोई औषधि किसी पाश्चात्य वैज्ञानिक ने ईजाद नहीं की। यह दुर्वलता, धातु-चोण्ता, हृदय की धड़कन, श्रमिन-मान्या, जीण्या, सिश्रपात, मोती मागा, इत्यादि कठिन से कठिन रोगों की एक मात्र सर्व-श्रेष्ठ महौषधि है। इसे तन्दुक्स्त और बीमाग दोनों ही समान-भाव से सेवन कर सकते हैं। यह अनुपान विशेष में सब रोगों की रामवाण दवा है। मात्रा—३ चावलसे १ गत्ती तक। बच्चों को श्राधे चावल से २ चावल तक देनी चाहिये।

लाक्षादि तेल —१ औंस (२॥ तोले) की की॰ ।)
महालाक्षादि तेल — एउ औंस (२॥ तोले)
—कीमत ।=)

बु॰ चन्द्रनः दि तंता — एक श्रोंसः । = )

जा कि अधिक दिन ज्वर श्राने से
शरीर में कत्तना श्रीर हाथ पैरों में जलन
होती हैं, तथा शरीरमें विशेष कमजीरी होने
पर श्रीर विशेषतया यहमा के ज्वर में इस
की मालिश से श्रमत तुल्य गुरग होता है।
बु॰ सुदर्शन चूर्या — ( भा०प्र० ) वात-पित्तादि
श्रमेक प्रकार के ज्वर, मलेरिया, जीराज्वर
श्रीनमान्द्र इत्यादि की एक श्रकसीर—
प्रसिद्ध इत्यादि की एक श्रकसीर—
प्रसिद्ध इत्यादि की मत १ एक रुपया का
८ ताला।

## **ज्वरातीसार**

सिद्ध प्रातोश्वर रस —( र०रा० सु० ) मृत्य शा) प्रति तीला

बृहत आयुर्वेदीय औषध भागडार ( रिजस्टर्ड ) जौहरी बाजार, दहली ।

कनक सुन्दर—( भै॰ र०) ॥) तोला श्रानन्द भैरव —(शा० ध०)॥) तोला

ये उपरोक्त रस ज्वर के साथ अतीसार, या पेचिश होने पर अथवा खून के आने पर अत्यन्त लाभदायक होते हैं। मात्रा रत्ती २ गरम जल मे

# अतीसार-संग्रहणी

कर्पूर रस-(र० रा० सु०) मृत्य १ तीला यह है जे की बीमारी, और सब प्रकार के दस्तों की खास दवा है।

महाराज नृपति वस्तभ-यह पुराने अतीसार और संग्रहणी में शीघ कायदा करता है। जठराग्नि को दीप्त करता है। मृल्य २॥) तो० कुटजानलेह—(शा० ध०) मृल्य॥। ८ तोला

भूटजारिष्ट-यह रक्तातिसार (ख्नी दस्तों)
रक्तपित्त, ख्नी बवासीर पैत्तिक अर्तासार
की अनुक द्वा है। मृत्य १६ औंस का

महागम्बक- १ भैं० २० ) यह वश्री कर्षट के हर अकार के रोगों की खास दश है। मृल्य १) तीला

कणाद्य लोह-यह अध्यन्त दीवन-पाचन है, और सव-प्रकार के अतिसार समहणी में विशेष फाफ्सन्द हैं।

पश्चामृत पपटी —१) नीला रस पपटी १) नीला, ताम्र पटी २) नीला लोह पपटी १) तीला स्वर्ण पर्पटी ८) तोला, विजय पर्पटी २४) तोला, विजय पर्पटी नं० २ मृल्य १०) तोला पर्पटी सेवन विधि पर्पटी सेवन के लिये मनुष्य को चाहिये कि १ रत्ती से प्रारम्भ करके बारह दिन तक १-१ रत्ती बढ़ावे, फिर १३ वें दिन से रोज एक २ रत्ती घटाकर सेवन करे पर्पटी सेवन करते हुऐ दूधया छाछ ही सेवन करना चाहिये, अञ्च नमक जल, को विलकुल बन्द कर दें तो सब से अच्छा है नहींती हल्की गिजा और फलों का रस ले सकते हैं। यह सब रोगी की अवस्था विशेष तथा बैंच की कल्पना पर निर्भर होता है। इस पर्पटी प्रयोगसे—संप्रहणी, जलों दर, शोथ (सूचन) आन्त्रिक दुर्बलता और अजीर्ण इत्यादि रोग शीघ ही नष्ट

पिष्यत्याद्यासव-मृत्य १६ श्रींस की शीशो १।)
बृ० लाई चूर्ण-मृत्य १) तीला
लोकनाय रस -कीमत१) तीला

होते हैं।

यह श्रातीसार की सर्व श्रेष्ट श्रीपिश्व है। मात्रा २ रत्ती शहद श्रथवा दही में मिलाकर सेवन करावें।

ग्रहणी गजेन्द्रवटिका—मृल्य १॥) तीला हॅम पोटली—मृल्य १) तीला वृ० ग्रहणी भिहिर तेल-मृल्य ॥) का ८ तीले लवंगरिक वृर्ण-॥) तीला

बृहत् आयुर्वेदीय ओपन भागडार ( राजिस्टर्ड ) जोहरी बाजार, देहली ।

चित्रक गुटिका—॥) वोला कपित्याष्ट्रक— ६) प्रति तोला। दादिमाष्ट्रक— ६) तोला।

## अर्श ( बवासीर )

कांकायन गुटिका — यह छै हों प्रकार की बवा-सीर के लिये अक्सोर दवा है मृ० ≈) तो० वृ॰ शूरण मोदक (च० द०) जिनको बहुत पुराना कब्ज रहता हो, मन्दाग्नि, बवासीर, सांस, खाँसी, तथा बातगुल्म हो ऐसे मनुष्यों को यह औषधि अमृत के समान गुणकारी है, इसके सेवन के साथ सब प्रकार के-गुरु (भारी) स्निग्ध (चिकने) भोजन सेवन कर सकते हैं मृल्यं ॥) ८ तोला

म्रभयारिष्ट-१६ झोंस १ पोंड १।) दन्स्यरिष्ट -१६ झोंस १ पोंड १।)

इसमें बटासीर के साथ २ रहनेवाला पुराना कब्ज मी शीच ही दूर होता है।

प्राग्रदा गुटिका -मृन्य =)॥ नोता वृ॰ कासीसादि तैंद्य-मृन्य ४ तीला (=)

हु० कासासाद तबा प्रश्निक गाला का पिष्पल्या(द नेल क्डमका (प्रतिमा) वस्ति द्वारा करने से था उसकी प्रखाने के बाद लगाने से मस्स भुलायम पड़ कर स्वयं ही बिना कष्ट के नष्ट होजाने हैं। और साथ ही चीस चवक वर्गरा भी नहीं रहती यह बवासीर के लिये एक सर्वोत्तम प्रसिद्ध तेल है। मृल्य ८ तोलं का ।।।)

अग्निमुख लोड स्वृतां और बादी दोनों तरह की

वबासीर के क्षिये सर्व श्रेष्ठ श्रीपधि है इससे बवासीर जड़ से नष्ट होजाती है मू० २)ती० बाहुशाल गुड़-मूल्य २० तोला २)

# अजीर्ण मन्दाग्नि-बदहज़मी-अरुचि

त्तवगुभारकर —यह मन्दाग्नि-श्रक्षि-वायगोला श्रादि की एक बड़ी मशहूर दवा है

कीमत १० तोला॥)

श्री रामचाण रस—( मैं० र०) यह रस वास्तव में संगहणी रूपी कुम्मकर्ण, आम बात ( गठिया ) रूपी खरदूषण, मन्दापि रूपी रावण को समृत नष्ट करने के खिल साचान रामबाण के समान है। वास्तव में यह रस उपरोक्त रोगों में बहुत शीब फा-यदा करता है। मृल्य ॥) तोला।

अग्नितुन्डी वटी--मूल्य ।=) ताला ।

वज्रक्षार -- =) तीला

शङ्खद्राव-- १ शीशी १)

श्वेत पपेटी—(स्वकृत) यह दर्र गुर्दा, बब-हज्मी, अम्ल-पित्त, सूजाक अम्लापित्त की अक्सीर दवा है। मृत्य 🖂 तोला।

महाराङ्क बटी—( भाव प्रव : 11) तीला । गन्यक बटी—१ तीला 11)

मं नीवनी वटी — यह विस्चिका (हैजा) गुम्म हैजा, शुल इत्यादि की प्रसिद्ध दवा है— अमृत के समान गुणकारों है। मूल्य एक ताला। चार आने।

बृहत आयुर्वेदीय औपध भागडार ( रिजस्टर्ड ) जौहरी बाजार, दहली ।

श्चितिकुमार रम्न—। <) तोला ।

हिंग्बष्टक — इसको भोजन के पहले शासों में घृत

से मिलाकर खाने से उदर में इकट्ठी हुई

वायु दृर होकर जठरागिन दीप्त होता है।

मू० ०)। तोला ।

## किमिरोग

किम मुद्गर रस— इसे नागरमाथे के काढ़े के साथ १-२ रत्ती सेवन करें। मू० लि तोला किम कालानल— यह रस. किम रोग (पेट में की इं पड़ने ) से उत्पन्न हुई सूजन, गुल्म, खून की कमी, जी मिचलाना इत्यादि को शीध दूर करता है। मृल्य १। तोला।

विडङ्ग लौह— यह कीड़ों को और साथ ही बवासीर, अरुचि, मन्दाग्नि, श्वास-कास वरोरह को बष्ट कर के शरीर में नवीन रक्त को पैदा करता है। मूल्य १॥) तोला। विडङ्गारिष्ट—(ग० नि०) मृल्य १॥) १ बोतला।

# पागडु—कामला—यकृत ( जिगर ) स्रीहा ( तिल्ली )

नवायस लोह — यह पाण्डुः जिगर, विल्ली की समहर दया है। इसको मधु तथा छत और छाछ से १ रनी वि उ रती तक चटाना चाहिये मृल्य १॥) तोला।

लाहासव - १६ श्रीम शांशी १।) पुनर्नवादि मेंहर १) तीला धात्रयिष्ठ इसके सेवन से हृदय की धड़कन, पारुडु-खाँसी, आदि शीव ही नष्ट होते हैं। कुमार्यासव-१६ श्रींस शीशी १।)

ममृतारिष्ट-१६ श्रास शोशी १।)

पञ्चामृत लोह मंड्र-१ तोला १)

थ्रीहारि रस-१ तील १)

# रक्त पित्त ( नकसीर ) राजयक्षमा ( तेपदिक ) खांसी

उशीरासन: -यह रक्तिपत्त पारुड, कुछ, प्रमेह अर्श: सूजन की एक श्रेष्ठ दवा है। कीमत १॥) बोतन

वासा क्ष्याह खएड - जबिक ज्यादह गर्मी से नौक-मुह से खुन आता हो, या पेशाव के रास्ते खुन आवे, तपैदिक, खांसी, या उसमें खुन मिला कर आवे ऐसी हालत में इसके सेवन से जादू कासा असर होता है। कीमत 4 तोले।।)

कृष्माग्द स्वग्द - मृल्य ५ तोलं । ) द्राक्षासन - १६ श्रीस शीशी १।) द्रान्तारिष्ट १६-

श्रींस १।) श्रंग्रासव १६ श्रींस शी: ३। यह श्रंग्रों से बना हुवा एक स्वाद्ष्ट श्रीर पौष्टिक शर्क है यह फेफड़े की हर एक

१—नोट—सब प्रकार के आसव-अरिष्ट प्रायः भोजन के बाद ही पीने चाहिये। प्रत्येक औषधि की विशेष संवन विधि पत्र द्वारा मालुम करें।

बृहत् आयुर्वेदीय ओपच भागडार (रिजस्टर्ड) जीहरी बाजार, देहली।

बीमारी के लिये बड़ी प्रसिद्ध श्रकसीर दवा है। शरीर के अन्दर नवीन रक्त उत्पन्न करके उसे सुन्दर श्रीर वलवान बनाने में श्रपूर्व है, श्रीर काष्ट्रवद्धता को दूर करती है। हु० बासावलेड—१० तोले १॥) मालतीवसन्त १२) तीला, चद्रामृतरस मृल्य ॥) तो० यह सूखी और तर दोनों प्रकार की खांसी के लिये एक मशहूर दवा है।

बसन्त तिलक — (भें० र०) मूल्य २२) ती० इस रसमें सीना-मीती-कन्तूरी इत्यादि बहुमूल्य पदार्थ पड़ते हैं, यह चय की खांसी, हृद्रीग, ज्वर, बादिकी शीच नष्ट करता है, ब्यत्यन्त पौष्टिक झीर कृष्य है। च्यमें विशेष लाभ-कारी है। मात्रा १ रन्ती से २ रन्ती तक

उपवन प्राश्च —यह खांसा सांस का एक प्रसिद्ध दवा है. छाटे, बड़े, धनी, निर्धनी सभी तरह के मनुष्य इसके गुणों में अच्छी प्रकार परिचित हैं। यह नपैदिक से उत्पन्न हुई फेकड़ों की कमजोरी का दूर करके शरीर का माटा ताजा हुए पुष्ट बना देती है। यह दिमाग़ों काम करने वालों का अमृत के समान गुण करती है, बालक वृद्ध युवा सभी इस हर मौसिम में हर मिजाज वाले मनुष्य सेवन कर सकते हैं। मृल्य ४) सर।

राजमृगांक रस —मूल्य १०) ताला यह राज-यदमा, धातुशाध, हुद्रांग (दिल की कमज़ोरी) की बड़ी लाभदायक महौपधि

चन्द्रनादि तैल-मूल्य ॥) ५ तोले सितोपलादि - ४ तो० ॥) कप केतु रस-।) तोना

## श्वाम-(दमा) हिचकी

श्वास कुठार रस—(र॰ सा० सं०) मृत्य ।।) तीला

रवास विन्ता मिण: - मूल्य (२) ताला। इसमें सोना मोता इत्यादि बहुमूल्य द्रव्य पहते हैं-यह श्वास (दमे) क लिये राम बाण द्वा है। इसकी २रसी मात्रा १ मासे बहेंदें केचूणे और मधु से देवे।

कनकासनः -(भे॰र०) यह सीने के ऊपर जमे हुए बलराम को पतला करके बाहर निकालता है। और सांस-खांसी, उरः चत ( छाती में जरूम ) रक्तपित्त, जीए-ज्वर में विशेष लाभ करवा है। मूल्य १॥) बोतल

भागी गुद्द (भैंव रु ) - मूल्य ८ तीले ॥) च्यवनशाशावलंह ४) सेर ।

# अपस्मार ( मृगी ) उन्माद [पागलपन] मूर्खा

दशम्लिरिष्ट - १६ श्रीस शाशा २। श्रश्वनन्वारिष्ट - १६ श्रीस शाशा १॥) यह

बृहत् आयुर्वेदीय औषध भागडार ( रिजस्टर्ड ) जौहरी बाजार, दहली ।

रित्रयों के हिस्टीरिया के दौरे की अकसीर दवा है, इसके अलावा मृगी-उन्माद, बेहांशी इत्यादि मानसिक रोगों को दूर कर शरीर का हृष्ट पुष्ट बना दंती है। और बात व्याधियाँ शोध हो नष्ट हाती हैं। मात्रा-र-२ ताले भाजन बाद।

चतुभु अरस - यह हर प्रकार के दौर की अनुभव सिद्ध शतिया दवा है, यह साना कम्तूरा इत्यादि बहुमूल्य द्रव्यां स बनती है-इसकी चौथाई ५ रत्ती त्रिफला तथा मधु में मिला कर घटाना चाहिये। इसके सेवन से अप-स्मार, उन्माद, इस्त कम्प, शिरकम्प इत्यादि शीव दूर होते हैं। मूल्य २०) तीला।

वातव्याथिया-फ्रालिज-लक्कवा वगैरा त्रयोदशाँग गुग्गुखु मूल्य ८ ता० ॥) इसके (भै० र०)

> संवन से गठिया, सकवा आदि वायु के रोग शीघ्र जड़ से नष्ट हाजाते हैं।

विस्ता मिंख चतुमुं क्ष , मैं० २०) मूल्य १०) ताला इसम स्वणा भस्म पड़ती है यह रस दिश आर दिमारा का कमज़ारों को दूर कर शरीर का इष्ट पुष्ट बनाता है। माजा १ रस्ता जिफला तथा मधु से।

वात गजाङ्क्ष्या - इसके संबन संकाठन से कठिन पद्माधान अमर्दि वान राग शीख नष्ट होते हैं। मात्रा २ रसी पापल का चूर्ण और मजीठ के काढ़े स । मृत्य २) तीला । लक्ष्मी विलास रस —यह ऊपर कहे हुए चतु-र्मुख रस के समान ही गुगा करने वाला है, यह विशेष कर बलवर्षक और वृष्य तथा स्तम्भक है। मृल्य १०) तोला

वृ० वात चिन्तामिंग् - यह हर तरह के दह,

किसी श्रंग का सूख जाना या कमज़ीर
हांजाना, हाथ पैर का जकड़ना, कमज़ीरों
के कारण दिख का धड़कना, फालिज वगेरा
यहाँ तक कि हिस्टीरिया और सूगी के
दारों के लिये यह अत्यन्त लाभदायक
श्रच्ह रामबाण दवा है। इसमें सोना,
धाँदी, मोती श्रादि बहुमूल्य इत्य पड़ते हैं।
इसके सेवन से युद्ध मनुष्य भी फिर जवान
होकर कामदेव के समान सुन्दर और पराकमी होजाता है। इसकी रर्सा मात्रा धनुपान रोगानुसार सेवन करें। मूल्य १५)तो०

नारायस तेल कांमत ८ ताल ।॥)

मध्यम नारायस तेल कांमत ८ ताले १) इस

में दशमृत और अष्टवर्ग की दुलभ
औषियौ तथा कस्तूरी वगेंग मूल्यवान्
सुगन्धित द्रव्य पड़ते हैं। जिसमें कि यह
वायु विकारों के नष्ट करने में एक असिद्ध
रामबास दवा है इसके नाम और गुस्सेंस
साधारस से साधारस मनुष्य भी अच्छी
प्रकार परिचित हैं। सार शरीर में या हाथ
पैर में कहां भा दद या सूजन या सुक्रता हो

अथवा लक्तवा या फालिज किसी अगम

वृहत् अधिवंदीय औषघ भागडार (रिजस्टर्ड) जौहरी बाज़ार देहली।

मार गया हो तो यह नेल मालिश करने में, पिलाने से सब रोगों को दूर करके हुई। तक के दर्द को निकालने में श्रवसीर साबिन हो चुका है। और यह हमारे यहां खास तीर से तैयार किया जाता है।

कुडनप्रसारिए। तेल-मृल्य ८ तोलं ॥)
श्रीगोपाल तेल -(कस्तूरी रहित) ८ तोले १॥)
हिमसागर तेल -मृल्य ८ तोले का १)
विष्णु तेल-मृल्य ८ तोले ॥।)
विष्णु तेल-(योग चिन्तामिएः) मृल्य ॥)
६ तोलं

# वातरक्त, कुछ, विमर्ष

कैशोर गुग्तुजु: च्डमके संःच से खुन की तमाम खराबियाँ, श्रोर कोड़, बातरक्त शीघ ही शान्त होते हैं । ध तोले ।⇒)

खदिराशिष्ट - यह सब प्रकार के कुछ, आतशक, सूजाक, वातरक्त, रक्तसम्बन्धी सब विकारों की एक अक्सीर द्वा है। मृल्य १६ औं स

माणिक्य रस-( भै० र०) इससे श्वित्र, गांतत कुछ, नामूर, उपदेश, तथा नासिका और मुख रोग शीच्र ही दूर हाने हैं। मात्रा १ रत्ती शहद या छुत से। मूल्य ३) तीला

दशाँगलंप ==) तोला बृहम्मरिचाच तेल == वोलं ॥=) अमृताद्यगुग्गुलुः १ताला।) पंचतिक्त घृत -१० तीले १) कुछराक्षम तील-१० तीले १॥)

## आमवात (गठिया)

महायोगराज गुग्तुलु (सप्तधातु मिश्रित)—मृल्य १।) तोला भर

योगराजधुम्मुलु: - मृल्य ४ तीले ।=)

यह श्रीपिध ८० प्रकार के बायु विकारों की एक ही रामवामा दवा है साधारमा में साथा-रमा मनुष्य भी इसके प्रशंसनीय गुमों से परिचित हैं। यह तिल्ली, गुष्टम, तद्र, बवा-सीर और मूजन के लिये भी बड़ी श्रवसीर महीषिध है।

सिंडनाद्गुगल (कड्ननीनाला) — यह पथरी, मृत्रक्रच्छु, काम, श्वास, आँतों का उतर आना अर्श (ववासीर) इत्यादि रोगों की सिंख रसायन है मात्रा २ रक्ती से ४ रती तक, अनुरान गरम जल या शुरुठीके काहेंसे।

बातगजेन्द्रसिंह—यह रस, गठिया रूपी हाथी के मारने में शेर के समान है। यह रस बायु नाशक होने के अलावा बड़ा ही पौष्टिक है। इसकी २ रती का मान्ना दूध से सेवन करें। मूल्य १) तोला।

शिवागुगुलु: — मात्रा ६ रत्ती से ६ मासे तक। मृल्य ४ तीला।=)

विषगर्भ तेल-यह तेल शरीर के हर प्रकार के

वृहत् आयुर्वेदीय आष्यं भागडार ( रिजस्टर्ड ) जीहरी बाज़ार देहली ।

दर्द व सूजन को शीघ ही दूर करता है,
श्रीर साथ ही लिंगेन्द्रिय की शिथिसता व
कमजोरी श्रादि के लिये भी श्रवसोर दवा
है। इसको मसलकर धूप में बैठ जायें फिर
गर्म जल से म्नान करें। मूल्य ८ तोला ॥)
बृ० सैन्धवादि तेल्ल-मृल्य ८ तोला ॥)

### शुल-अम्लिपन

यवानिकादि चूर्ण — मृल्य ≥) तोला। अवि-पत्तिकर चूर्ण मृल्य =) तोला। पहा शंखवटी — ||||) तोला।

सामुद्राधचूर्ण-इसके सेवन से, बात पित्त, कफ़ का उत्पन्न हुआ शुल, नाभि शुल, यक्रच्छु-लादि सब प्रकार के शुल शीध आराम होते हैं। मूल्य ॥) तोला

धात्रीलाइ—मूल्य १॥) तीला यह शूल, अम्ब-पित्त के लिये एक अक्सार दवा है।

शंखद्राव - यह, है जा, तिल्ली, जिगर, अम्लिपन अक्षित, मन्दाग्नि का एक बढ़िया द्वा है, शीव ही अपना असर दिखाती है। शीशी एक १)

नारिकेल लवण — इसमें परिणाम शुल और
सब प्रकार का शुल शीव शान्त होते हैं।
मात्रा १ माशे में २ माशे तक पीपलके चुर्ण
१ रत्ती में (ग्रलाकर देव मृज्य । ८) तीला
तारामन्द्रर गुद्र — मात्रा ३-६ रनी तक मृज्य ॥।)

श्री विद्याधराम्न-मृल्य २) तोला मात्रा २-४रत्ती गो दुग्ध अथवा ठंडा जल

### उदावर्त. गुल्म (वायगोला) आनाह (अफ्रारा)

नाराचरस — कीमत १) तीला । बु० इच्छा भेदी

रस — मूल्य ।॥) तीला । बज्जज्ञार — मूल्य

८ तीला १॥) इसके संबन से बायगीला —

शुल, अजीर्ग, सूजन, उद्दरीग, बढ़ी हुई

तिल्ली ये रीग जल्दी आराम हीते हैं।

मात्रा १ माशे से २ माशे एक ।

विन्दुष्टृत -यह गुल्म, अफारा, कोष्टवद्धता में पक अक्सीर दवा है इसके सेवन से पेट के किमी भी शीघ मर जाते हैं। इसकी जितनी विन्दुएं घृत में मिलाकर पी जावें उतने ही दस्त आते हैं। मूल्य ॥) तीला

दन्ती हरीतकी — इसके संवन से, विल्ली, सूजन गुल्म, बवासीर, हुद्रीग, पाण्डु, भ्रह्मी इत्यादि रोग जड़ मूल से नष्ट होजाते हैं। मात्रा १-२ तोड़े तक

गुल्मकालानल —मात्रा २ रसी हरह के क्याय से। मृल्य III) तोला

प्राणवळ्ठभ रस -यह बात वित्त, उक्, रक्तगुल्म प्रमेह, कुछ, बातरक वगैरा को शीध ही दूर करता है। इसकी मात्रा है रत्तीको दूध या उच्या जल से लेवें! मुल्य ॥) तोला

बृहत् आयुर्वेदीय औपच भागडार ( रिजस्टर्ड ) जै।हरी बाजार, देहली ।

### हृदोग (दिल की बीम।रियाँ)

मजुन घृत (भै॰ र०) मृत्य ८ ताले १)
त्रिनेत्र रस इसके सेवन में हृदय के सब प्रकार
के रोग शीघ ही आराम होते हैं। मृत्य
४) तोला।

विन्तामिण रस इसमें सोना, चाँदी की भर्से पड़ती हैं। यह फेफड़े की सब तरह की बीमारी, प्रमेह — भयंकर खाँसी और साँस की दूर करता हैं। मात्रा १ क्ती गेहूँ के काढ़े से मृल्य १२) तोला।

शंकर वटी--- अनुपान गरम जल से २ रत्ती लेवें मुल्य १) तोला ।

पार्थाद्यरिष्ट इसके सेवन से हट्टोग में उत्पन्न मानसिक कमजोरी शोध हो नष्ट होती है। मुल्य १६ धोंस शीशी १।)।

#### मृत्रकुन्छ

(पेशाव का मुश्किल से चीस चयक मार कर बाना ) मुत्राधान

(पेशाब का बन्द हो जाना)

अश्मरी (पथरी) उप्पावात (मूज़ाक)
तारकेश्वर रस —यह रम मृत्राशय ( मसाना )
की कमजीरी की दूर करके, पेशा की
खुलासा और माफ जाता है, बड़ा पीष्टिक
है मूल्य ३) तीला ।

चन्द्रपभा बटी - यह प्रमेह ( जरियान ) की बड़ी खास दवा है, इसके सेवन से स्वप्न दोष, सूज़ाक (पूर्यमेह) शीघ आराम होता है। मूल्य १) तोला।

हुशावलेह \_यह सूजाक की श्रकसीर दवा है। मूल्य ८ तोले ॥)

चन्द्नासब स्वाक श्रीर पेंत्तिक मूत्रकृच्छ की खास दवा है। मूल्य १॥) पौरड १

एलादि चूर्ण मात्रा ८ ग्र्ता । चावलां के पानी के साथ । मृत्य ॥) तोला ।

हृदृगोक्षुराद्यवलेह--मात्रा २ माशे में ४ माशे तक।

चन्द्रकता रस -३) तोला !

त्रिविक्रम रस मात्रा ्र श्राधी रत्ती विजीरे की ज़ के चृर्ण्या स्वरस से देवें। मात्रा २) तोला ।

प्रवेह, पशुपेह ( डायविटीज ) बहुमूत्र, धातु-दौर्बल्यता

न्यग्रोधादि चूर्ग यह एक बहुत उत्तम सबै प्रमेह नाशक चूर्ण है। इसके थोड़े दिन के सेवन से डी २० प्रकार के प्रमेह जड़ से नष्ट हो जाते हैं। मात्रा १ मानं से ३ माशे तक, त्रिफले के कादे से। मूल्य ॥) तोला।

देवदाव्यरिष्ट-मृत्य १६ औस १।)

चम्दनासन— " १६ " र।)

लोघासव — " १६ " १।)

ये आसव अगेर, मूत्रक्रच्छ, शुक्रमेह, मधु-मेह और धदर रोग इनको ही श्रीय शान्त

बृहत् आयुर्वेदीय औषध भागडार (राजस्टर्ड) जीहरी बाज़ार, देहली।

करके शरीर में शक्ति उत्पन्न करते हैं। भूख को बढ़ाते हैं।

बसनत कुसुमाकर — यह रस स्रोना, चाँदी, मोती, लोह इत्यादि बहु मृल्य द्रव्यों के योग से तैयार किया जाता है, यह पुराने से पुराने प्रमेह, मधुमेह को दूर कर कुछ ही दिन में शरीर में शक्ति उत्पन्न करता है. तपेदिक की स्वास दवा है। मूल्य २४। तोला।

चन्द्रप्रभा - मृल्य ॥) तोला ।

स्वर्ण बँग-मृत्य ४) तोला ।

सोमनाय रस भें रिश्न इसके सेवन से पेशाब में शकर व चर्वी का आना शीव बन्द हो । जाता है। और न्त्रियों के चारों प्रकार के । प्रदरों की तथा सोमरोग की एक बड़ी चम- । त्कारिक दवा है। बहु मृत्र को शीघ ही नष्ट । करती है। मृल्य ३। तीला।

शिलानत्वादि वटी मूल्य २०) तीला । ये गीलियाँ द्द गुर्दी, पथरी, सूज्यक, पेणाव में धानु का मिल कर ज्याना, इन सब शिकायती की दूर करने में जाद् का सा

चन्द्रनादि वृगां -- १ ताला ॥ -/ ।

**बृहद् बङ्गे**श्वर रस २०) तीला ।

म्थाल्यता [ ग्रांग का मोटापन ]

अमृताद्य ग्रमुलु मृन्य ॥ ताना।

नवक गुग्गुलु इसके सेवन से मेदः रोग ( चर्बी का बढ़ना ) कक के रोग, आम बात ( गठिया ) ये भी घ ही शान्त होते हैं। लौह रसायन मृल्य २) तोला।

### उदर रोग-जिगर-तिल्ली

नारायण चूर्ण इसमे विरेचन होकर सब प्रकार के उदररोग शीघ शान्त होते हैं। मूल्य =)

जलोदरारि रस-मृल्य १॥) तोला।

रोहितकारिष्ट —इसके सेवन से उदर के सम्पूर्ण रोग तिल्ली, जिगर, बवासीर, कुछ, कामला यह सब रोग शीघ ही शान्त होते हैं। मृल्य १६ औंस १।)

यक्रद्रि लोह — यह (यक्रत ) जिगर के रोगों की एक श्रेष्ठ दवा है। जिगर के बढ़ने से पैदा हुई कामला (आगर्यों का पीलापन ) जबर की भी शान्त करता है। मृल्य १) तीला।

शह्यदाव १) शीशी दाम १

श्रकत्वागु -- मृत्य ॥) नीला ।

कुपार्यासव — ( शा० घ०) मृल्य १६ ऋौंम को शोशी का १।)

लोहासव ...(शा॰ घ॰) मृत्य १६ ऋौंस की शी॰ का १)

लोकनाय रस-( भैं॰ ग०) मृ० २॥) तोला।

वृहत् आयुर्वेदीय औपव भागडार (रिजर्स्टर्ड ) जै।हरी बाजार, देहली ।

श्रभया लदगा— ८ तीले का १)
बिन्दु छृत—१) तीला
इच्छा भेदी रस—॥ तीला
नाराच रस—॥। तीला
विद्याधर रस—(मात्रा है रत्ती मधु के साथ)
मूल्य २) तीला
महामृत्युष्टत्रय लोह—इसके सेवन से तिल्ली—
जिगर-गुल्म यक्टन क्य (जिगर का लोटा
होजाना) पाग्र इ-कामला इत्यादि रोग
जड़ से नष्ट होजाते हैं।

### शोथ (मृजन)

पुनर्नव दि गुरु लु — (मात्रा:-१ माशा जल के साथ ) मृल्य ।) नाला
त्रिन्त्र (एयो रस मृल्य ३) तोला (मा: ३ रली से १ रली त्रापा माग के रस के साथ )
शोग कालानल रस — (मात्रा १ रली तःल मखाने के रस के साथ ) मृल्य १।। नोला
पत्रामृत रस — मृल्य १) नोला (मात्रा ३ रली से १ रली तक अदरम्य के अर्क के साथ )
इस रस के सेवन से शारीर के एक भाग में या सम्पूर्ण शरीरमें उत्पन्न हुई सूजन शीध शान्त होजाती है, और सांस, क्यांनी आदि इसके उपद्रव भी शोध तुर हो जाने हैं।
पूनर्नवाद्य। रिष्ठ — मृल्य ४० तोले का (एक पींड) का १।) कपया

गुष्क मृतादि तैत — ६ तोला का मृल्य ॥) आने दुग्धवटी — मृल्य ॥) तोला दुग्ध के साथ मात्रा १ रत्ती तकवटी — (मात्रा २ रत्ती छाछ के साथ ) इसमें नमक और पानी बन्द करके भूख प्यास में भी तक (छाछ ) ही पिलावे मृल्य १) तोला

### अन्त्रश्रद्धिः गलगगड 'कगठमाल' विद्यिः श्लीपद

शिश शेखर रस मात्रः २ रक्षी मूल्य २) तोला वातारि रस मात्रा ४ रक्षी ऋतुपान तिल तैल श्रदरख का रस । मृल्य १) तीला छुच्छन्द्री तैला महस तेल की मालिश से कण्ठ-माला बहुत शीघ श्रम् छी हो जाती है। मृल्य ॥) ५ तो ते

सिन्द्रादि तेल व्यह भो अध्यन्त लाभ दायक तेल है पहिले के समान शांध्र ही करठमा-ला को दूर करना है। मूल्य III) 4 तोला काञ्चनार गुगगुलु 4 तेले III) विदेगाग्य १६ श्रींस शीशी १।) नित्यानन्द रस मूल्य २) तोला श्लीपद गज देसरी माज रत्ती १ गरम जल सं। मूल्य III) तोला

वृहत् आयुर्वेदीय औपध भागडार (रिजस्टर्ड ) जे।हरी बाजार, दहली ।

त्रण, शोथ-भगन्दर-नाडीत्रण [नासूर]
त्रिफला गूगल मृल्य क्) तोला
सप्ताँङ्गगूगल मृल्य क्) तोला
जात्पादिष्ट्रत व, तेल यह घृत सब तरह के
जलमां की पीपको साक करके शीघही भर
देता है। मृल्य ।⇒) तोला

विपरीत महता तेल — यह चाकू तलवार खुरा आदि सं कटे हुए स्थान, उपदंश, नास्र, कोद, खुजली इत्यादि पर बहुत लाभदायक है। बृहद बरा राक्षस तेल — मृत्या) नोला। इसे जरूम में भरने से चाहे वह कैसा ही जह-रीला जरून क्यों न हो शीम ही नष्ट होता है।

जान्यः दिवर्ति — यह नासुर में अन्दर लगाने से पंप को बहुत जल्दी साफ करती है।

सप्तीवंशीत को गुगगुलु: - यह विशेष कर भग-न्दर, खाँमी, मांस, हदय, पँसवादे, कुद्दि, मसाने इत्यादि में उत्पन्न हुए शूलों को शीब हुर करता है। मात्रा ४ रत्ती मधु से।

### उपदंश-आतशक

वरादि गुरगुलु:—इसके सेवन से रक्त की खराबी, दृषित ब्रगा ( जस्म ) और आत्राककं ब्रगा सूखकर शरीर में शुद्ध रक्त का सचार होता है। मात्रा ४ रनी से २ माश्री तक सुत्य ॥ तीला

सारिवाद्यरिष्ट—यह उपदेश, वातरक, कुष्ट, सूजाक, इत्यादि रोगों के लिये एक ही अवसीर दवा है। मृत्य १६ श्रोंस १।)
फिरंग गजकेसरी—(योग रत्नाकर) मृत्य १॥)

रस कपूर (र॰ सां॰ सं ) - मृल्य १ तोला ॥)

### शीतिपत्त, उदर्द, कोठ

हरिद्रा खएड -- इसके सेवन से पित्ती का उछला कण्ड (खाज) दाद इत्यादि खून के विकास शीव ही शान्त होते हैं। ब्राईक खएड -- मात्रा ६ म.शे मृत्य।) तोला श्लेष्म(पेत्तान्तक स्स -- मृत्य ॥) तोला मात्रा २ रती,

### मञ्जूरिका (माता छोटी)

क्रषणादि चूर्ण-मात्रा १ माशे मृन्य ।) नोला । सर्वतोभद्र रस- मृन्य १५) ताला इन्दुकलावटी--मृन्य १५) नोला एलाद्यिष्ट-मृन्य १६ औंस १॥)

### क्षद्ररोग

मृषिकादि तैल-यह बच्चों की कांच के निकलने में अक्सर गुड़ा में लगाया जाता है। कुंकुमाद्य तैल-इस तैल को मुंह पर लगाने से माई, मुंहाँसे इत्यादि बहुत शीघ दूर हो

बृहत आयुर्वेदीय औपच भागडार ( रिजस्टर्ड ) जौहरी बाजार, देहली ।

कर चमड़ी मुलायम चेहरा खुबसूरत और सोने के समान रंग वाला सुन्दर बन जाता है। मूल्य ८ तोला १।)

भृं गराज तेल — इसके लगाने से बालों का गिरना, शिर का दर्द, गंजापन इत्यादि दृर हाकर उनकी जड़ें मज्ज्वत होती हैं, और वे चिकने घूँ पर वाले हाजाते हैं। मूल्य ८ तीला ॥।

चन्द्रनादि तेल इसको नाक में टपका कर नस्य लेने से, बालों का सफेद होना, जल्दी गिरना दूर होकर बाल भीरं के समान शीध ही काले रंग के निकलते हैं। मृट ८ तोला ॥)

### मुंह-आंख, नाक, कान, नेत्र के रोग

बृ० सदिर वटिका इनको मुख में रखके चृसने में कण्ड, होड, जोभ, दाँत, तालुइन के रोग शीच ही दूर होते हैं, मुख सुगन्धि युक्त और दाँत हद होकर मुह के छाले घाव वगैरा सब शांच्र शान्त हो जाते हैं। मृ० १ हिट्या हो।।

भारतेल — (भें० र०) इस तेल के कान में डाल-ने से, कान का बहना, दर्द, की हो का पड़ जाना, घुन २ व्यावाज का होना, बह-रापन, बहुत जल्द दूर हो जाता है। मूल्य

दार्चाद तेल-( मैं॰ र० ) मृल्य १ शीशी ॥)

स्विजकादि तेल -मूल्य १ शीशी।)

चित्रक हरीतकी — इसके सेवन से पुराने से पुराना जुकाम, पीनस, खांसी, सांस, मन्दाग्नि गुल्म, उदावर्त, बवासीर इत्यादि शोध नष्ट होते हैं।

चन्द्रोदयादिवर्ती—इसको चिसकर आख में लगाने से, रतींदा (रात्रि सें न दोखना) आंखमें ढलका (नेत्र स्नाव) इत्यादि शीघ ही दूर होता है।

महात्रिफलाद्यं घृतम् — जिनकी हर साल आंखें दुःचनी आती हों, दृष्टि दुर्चल हो, आंखों में खाज आंर ललाई रहती हो उनके लिये यह घृत अमृत के समान गुणकारी है। मूल्य ८ तीला १)

नयनामृताञ्चन - यह बहुत उत्तम सुर्मा है, और श्रांत्यों के सब रोगों के लिय रामबास द्वा है मुल्य १ नाचा १)

पड्बिन्दु तंल —इस तेल की प्रतिदित २-३ विन्दु नाक में डालने में बहुत दिन की पुराना (सर का दद जल्दा दूर होता है। मूल्य ८ तोला ॥)

महालक्ष्मो विलास — इसकी २ रत्ती मात्रा जल से लेने पर पुराने सं पुराना सिर का दर्द बहुत जल्द दूर होता है। मूल्य १ तोला ५)

भपागागे तन्दुलीय नस्य - (चरक ) इसकी सुवने से भाषा शोशी, सूर्यावर्त, जुलाम

बृहत् आयुर्वेदीय औषव भागडार ( रिजस्टर्ड ) जीहरी बाज़ार, देहली ।

पीनस, इत्यादि शीघ आराम होते हैं। मूल्य १ तोला ।=)

### रित्रयों के स्नास २ रोगों की कुछ औषधियां

पुष्या नुग चृता इसे १ माशे से २ माशे तक शहद में मिला कर चाटें फिर ऊपर से चावलोंका भिगीया हुवा पानी पिलावें इससे चारों प्रकार के प्रदर शीघ ही दूर होने हैं। मृत्य =) तोला।

प्रदरान्तक लाँह—यह प्रदर (सकेदी) की खास सशहूर दवा है, इससे कमर का दर्द हड़-फूटन, खून की कमी और प्रदर से उत्पन्न वायु के रोग भी शीव दूरही जाते हैं मूल्य शा) तोला।

शिलाजत विदेश—मात्रा ६ रत्ती से १॥ मारो तक अमार के रस से । मूल्य ॥) तोला । अशोकारिष्ट —यह प्रदर की एक मात्र अव्यर्थ प्रसिद्ध महीयध है इसको प्रतिदिन १।-१। तीला भीजन बाद पीना चाहिये इससे सब प्रकार का प्रदर अवश्य शीघ्र ही नष्ट होता है। मृल्य १६ औंस १:)

पत्राँगासन -मृत्य १६ कीम १।)

फलकल्यामा घृत - जिस स्त्री के गर्भ न ठहरता हो, अथवा ठडा कर गिर जाना हो, या लड़कियां हो लड़कियां उत्पन्न होती हों, उनके लिये यह घृत श्रमृत तुल्य रसायत है। इसके सेवन से हृष्ट, पुष्ट, श्रौर दीघें जीवी सन्तान पैदा होती है। मूल्य २) रु० २० तोले।

गर्भ चिन्तामणि रस—यह रस गर्भिग्गी स्त्री के ज्वर, प्रदर, दाह, और प्रसूत रोग की सर्वोत्तम औषध है। मृल्य ६) तोला।

सीभाग्य शुण्ठी मोदक — मन्य ८ तीला ॥)

सात्रा ६ माशे से २ तीला तक गर्म दूध से ।

सृतिकारि एस — मात्रा ३ रत्ती अदग्क के अर्क से ।

सृत्य १॥) तीला ।

सृतिकार्ग एस — मात्रा १ रत्ती । मृल्य २ तीला जीग्काद्यरिष्ट — मात्रा २ तीला भीजन बाद ।

### बालरोगाधिकार<sup>ः</sup>

मृल्य (६ औस १)

बालचातुर्भिद्रका — यह वश्चों के मांस स्वांसी,
ज्वर-श्रतीसार इत्यादि को रोकता है।
सान्ना ४ रसी से ८ रसी मधु या माता के
दूध से। मूल्य =) तोला।
मृद्रुचादि चूर्मा — या भी जवर सिले फायदे
करता है। मूल्य =) तोला।

बृहत् आयुर्वेक्षय ओपव भागडार (राजस्टर्ड ) जीहरी बाज़ार, देहली।

दन्तोद्गेदगदान्तकः — मात्रा २ रसी । मूल्य ॥) तोला ।

कुमार कल्याण रस मात्रा है रनी माता के दूध से। यह रस बच्चों के उबर, स्वास, बमन, इत्यादि कष्टमाध्य रोगों को दूर करके बच्चों को हुए, पुष्ट, सुनदर बनाने में अडूत गुण करती है। इसमें सोना-मोनी इत्यादि बहुमूल्य द्वाच्य पड़ने हैं। मृल्य २०) तीला।

महागम्बक मात्रा १ रत्ती से ६ रत्ती तक । मृत्य १ तीला, यह बच्चों के हरे-पीले दस्त, ज्वर, दूध गैरना वगैरा के लिये बड़ी लाभदायक श्रीपधि है।

अर्बिन्दासन यह अत्यन्तन्वादिष्ट, मीठा, बच्चों की मीटा, ताजा, बनाने वाला एक अक है। मृत्य १६ औंस की शीशी १।)

### विपरागाधिकारः

दशाँकोऽगद - एक चुर्ण है १ मणे जल के साथ लेने से सब प्रकार के कीट विष (बिच्छू आदिक जहर) दूर होने हैं। मृल्य (८) नीज । शिरोष। रिष्टम् - मात्रा १। तीला से २॥ नीले तक मृल्य १६ श्रींस १)

### रमायन-वाजीकरण

( कुम्बने बाह को बढ़ाने वाली दवाहयों ) लाइगी विलास इसके सेवन से अट्टारह प्रकार के कुछ, बीस प्रकार के प्रसे , बान, पित्त, कत के अनेक प्रकार के रांग दूर हांकर शरोर में अपूर्व शिक उत्पन्न होंकर बृद्ध मनुष्य भी युवा कं समान्य पराकमी होंकर अनेक रित्रयों से सम्भोग कर सकता है। यह अपने ढंग को एक ही दिच्यगुण युक्त अमृत तुल्य रसायन है। अत्यन्त स्तम्भन शिक्त को उत्पन्न करती है। मृल्य २) ६० तोला मात्रा ३ रती पान के अर्क से। यसन्तकृस्माकर रम — इसमें कस्तृरी, मीती, सोना चाँदी इत्यादि बहुमृल्य पौष्टिक द्रव्य पड़ते हैं यह मधुमेह (डायिवटीज) और उसमे उत्पन्न हुई कमजोरी, धानु क्षीणता दिल व दिमाग् को दुर्वलता को दूर करने के नियं एक बड़ा ला जवाब द्वा है। मृल्य

पड़्गा वित जागित मकाध्यज्ञ—८) नीला इस चमत्कारिक अमृत तुल्य रमायन, मही-षयि के गुण् बालक बृद्ध-युवा सभी मनुष्य अच्छी अकार जानते हैं। यह वही दवा है कि जिसके बल से वैद्यालीय मृत्यु के मुख्य से भी गोगी को निकाल लेते हैं आज तक इस के समान गुण् कारी दवा किसी वैज्ञानिक ने उजाद नहीं की। यही आयुर्वेदकी महत्ता

नारसिंह चूर्ण --यह एक बड़ी ही वैष्टिक, बीर्य विकारों के जिये अक्सीर दवा है। मृल्य ।) तीला

बृहत् आ उर्वेदीय ओपध भागडार ( रिजस्टर्ड ) जीहरी बाजार, देहली ।

कामदेव घृत--मृत्य ८ तोला १॥) कामानि संदीपन पोदक--मृत्य १ पाव २) मदनान्दमोदक--मृत्य १ पाव २)

श्री गोपाल तें ल — यह तेल श्रत्यन्त वायु नाशक है इसकी दो या ३ बूंद लिंगेन्द्रिय पर मालिश करने से इन्द्रिय का तिरञ्जापन व टेढ़ापन शीघ दूर होकर ध्वजभँग (नामदी) व सुस्तीपन दूर होती है।

मन्मयाञ्च रस--मूल्य २।) तीला ।

हृद्द् चन्द्रोदय मकरध्वज — इसको २ रत्ती पान में रख कर खाना चाहिय । मृत्य ६८ तीला पूर्ण चन्द्र रस —३) तोला ।

चन्द्रनादि तैल — यह तैल — रक्तित, इय. ज्वर, दाह. दौर्गन्ध्य, कुठ, कए हु इत्यादि को बहुत जन्द दूर करके शरीर में नवीन शक्ति का संचार करना है। मृल्य शा) पात्र भर। दशमृतारिष्ट — १६ श्रीम शार्शा २

शक्र बल्लभ रस — इसमें सीना, जाँदी की भर्में पहती हैं, अन्यस्त दीर्य स्तरभक, व उत्तेजक है। मृत्य १० तीला मात्रा २-८ र० तक दृथसे कामिनी निद्रावण रस — मृत्य १ तीला मात्रा १-३ रती दश से।

नोट —हर प्रकार के स्वादिष्ट व पौष्टिक पाकों के किये हमारों पाक मंत्ररः नाम की पुस्तक मुक्त मंगा कर देखिये।

### कुछ यूनानी अनभूत सिद्ध औपधियां।

इत्रिफल जवानी— नजले की शिकायत में श्र-क्सीर है. मस्तिष्क को गुद्ध करती है, सर, पेट के दर्द के लिये मुकीद है, श्रांखों की रोशनी को बढ़ावी है मूल्य )।। तोला मात्रा ६ मामे १ तोला तक।

त्रिकल कश्नीज़ी — दिमाग़ी बीमारी, पुराने ददं सर, मेदे की तपख़ीर और उस के दद की दूर करता है। कब्ज के लिये अक्सीर है, बवासीर में निशंष लाभदायक हैं। नज़ने की कुल बीमारियों में अक्सीर है। मात्रा ६ मासे से १ तोंले तक )॥ प्रति तीला

दर्पाशा—कम्पन वाय, किसी बात की भृत जाना
(स्मृति नाश), कुलंज का दर्द, मालीखोलिया, जुकाम, नज्जे में अक्सीर है, मात्रा
६ ग्ली सुबह या रात का सोते समय
अर्क गाजुवाँ से। फी तोला €)

निर्याक् नज्ञा-सब तरह की खांसी और नज्ले में मुफीद है। फी तोखा )॥

जवारिश जालीनुस (आफ्रानी)—मेर्दे की बीमारियों के लिये यूनानी हकीमों की एक मानी हुई बड़ी मशहूर दवा है, सब अवयवां की शक्ति देती है, पेट के ददें की दूर करती है, भीजन की हजम करती

बृहत् आयुर्वेदीय जीपव भागडार (र्राजस्टर्ड ) जीहरी बाज़ार, देहली ।

है, मुख की दुर्शन्ध को दूर करती है, रिहार (वायु) को खारिज करती है, जन्न (पा-गलपन) दर्द सर, बलरामी खाँसी, बादी बबासीर, गठिया, सीप, पेशाब की ज्यादती, हुवें और मसाने की पथरी में मुफीद है, बालों को स्याह रखती है। मैथुन शिक को प्रबल करती है, मूख खूब लगाती है. कब्ज़ को रका करती है मात्रा ६-६ माशे सुबह शाम की तोला –)

जबारिश कमूनी (कबीर)—मेदे और आँतों और दिल को ज़बत देती है, कब्ज कुणा, है, पेट के दद और कुलज (आंत के दर्द) को दूर करती है। खड़ी, डकोरों और हिचकी को दुर करती है। सा तोला

जबारिश मस्त्रमी — मेंदे की सदी श्रीर उस की कमजीनी की दर करती है, घड़कन, व कफ़ खतीसार, बहु मुश्रता, मुख से पानी बहने में बहुत गुरादायक है, जिसर को कृतत देती है। की तीला )।। खुराक ६ माशे।

अबाहर मोहरा- यह युनानी अद्बियात में एक मानी हुई काजीब व गरीब द्वा है इसका सेवन दिल व दिमाग की कुबन देता है, स्वासाविक शारोरिक उप्पाना की रज्ञा करता है। मुद्धां व दिल की धड़कन की दूर करता है, यह सीना, मोती, जबा-हिरान का सुरवक्षव है सस्त बीमारियों। की कमजोरी की दूर करता है, मात्रा दो चावत इसे ख़मीरा गख़ुवाँ में खावें। ४) ६० मारो

इब्बेजद्वार — दिल व दिमाग को ताक्त देती है, मिंग के पतलेपन को दृर करती है, काम शक्तिवर्धक खाँमी और नज्जे को नष्ट करती है। मोबा १-२ गोली तक सुबह या रात के समय । प्रति नोला १)

**एडबे रसीत**—बवासीर के खुन व दस्तों की रोकती है, प्रति तोला ।)

स्वमीरे गाजुवाँ अम्बरी — दिल व दिमाग, आंखों की रोशनी को कुम्बन, और ममृति शक्ति को बढ़ाना है, दिमागी काम करने वालों का अक्की चीज हैं, =) नोला

खमीरे गाजुवाँ अम्बरी (जवाहरदाला)—यह उपर के स्वमीर से ज्यादा गुराकारी हैं, प्रति तोला।) और मीन के वर्क वाला।।) तोला स्वमीरा पुरवारीट—दिल व दिमारा को ताकृत देता है, स्वक्तस्वान व दिल की धड़कन, में बड़ा मुफीद हैं। रक्तातीम्माव की कमज़ीरी को दूर करता है, मोतीमरा, और चेचक, मे बड़ी कामयाव चीज है, दानों को बाहर निकाल कर दिल की समी व घबराहट को दूर करती है। भी तोला।।)

दवात्रल मिस्क (बारिद जवाहर वाली) - धड़कन. व विमागो परेशानी को दूर कर के जीवन शक्ति और दिल व दिमाग को

बृहत् आयुर्वेदीय औषव भागडार ( रिजस्टर्ड ) जोहरी बाजार, दहली ।

कूबत देती हैं, दिला की कमजोरी व गर्मी को दूर कर के दिला को फरवा करती हैं। मृख्य III) तोला

खमीरा आवरेशम इसीम अर्शदवाला—सब तरह की (बायु मिदाबी बीमारियों की फायदा करता है दिल, दिमाग, और जिगर को ताकृत पहुँचाने में अजीब व गरीब है। खाने में बहुत ही स्वादिष्ट हैं, दिलकी धड़-कनकी जल्द द्र करता है मा) फी तोला मात्रा व माशे में ६ गाशे तक।

श्चर्क श्चम्बर ्दिल व दिमारा श्रीर श्राजा रहेमा को ताकत हैने में बेमिसाल है। हर प्रकार की मृत्छी, बवासीर या हैज (मासिक धर्म) खून के ज्यादह निकलने से जो दुर्बलता होती है, उनके लिये यह श्रमृत तुल्य है। बह श्रपना श्चमर तुरन्त हो करती है। फी बांतल २॥) ह०

श्चर्क गन्नगळ म्बरी चंहरं को सुख करता है । नवीनरक को उत्पन्न करके, दिल व दिमारा को बुक्बन देना है । फो बातल २)

माजून जानीन्म लूलुई (मोनीवाली)—
कुठवरेवार और कवपंडण का बहाती है,
सलतक से आर ब्लंब ह मैथून से, सुई,
वंद्र-अर्के का शास सांचव नवी आसे आसीर

में देखिये।

मसाने, इत्यादि में कमजीरो खाकर, दौराने खून में जो दुर्बलता आ जाती है उसकी आ सली हालन में ले आती है, लिंगेन्द्रिय में. मखनी और ताकत पैदा करनी है, जोश को देर तक क्ष्यम रखती है, मर्द की अजमन क्ष्यम रखती है, चेहरे का रंग निस्तारती है, खून खूब पैदा करती है, गई हुई शक्ति को फिर वापिस लाती है। १) फी तीले खुराक ६ माशे।

भाजून हाफ़िज़ उलज़नीन (अम्बरी) उतिकारिंजिन स्त्रियों का हमल बार २ गिर जाता है
या त्रका पैदा होने के बाद परछाँवे या
कंगड़े की बीमारी से मर जाता हा, हमल
के दिनों में उसकी इस्तैमाल करना चाहिये।
इसमें हमल नहीं गिरेगा, और यहा सम्पूर्ण
तन्दुकस्त पैदा होगा। और गर्भ वाली
स्त्री की शक्ति पूर्णतया कायम रहेगी।
कवसर नजुवें में आया है कि इसके इस्तैमाल से लड़के पैदा हुए हैं। इसकी तीसरे
महीने से ही स्वलाना शुक्र करदेना चाहिये।
मात्रा ५ मारी अस्त्र गुलाब के साथ मुबह
के वक्त खावे। मुल्य।। तोला।

प्रुफ़र्रह याकृती—सब नरह की कमज़ोरियों को दूर करती है, दिल व दिमाराको कृत्वत पहुँचा कर भूख खूब बहाती है, दस्तों और गर्भाशय (रहम) को बीमारी में चड़ी मुक्तीद है। ॥) तोला खुशक ३ माशे।

बृहत् आयुर्वेदीय अधिय भागडार (रिजस्टर्ड) जीहरी बाज़ार, देहली।

# शास्त्रीय ऋोषधियों के थोक भाव की संक्षिप्त सूची

कूपी पक	रसायनें		भीषधि नाम	ग्रन्थनाम	भूल्य			
श्रीषचि नाम	प्रन्यनाम	मृल्य	स्वर्ण वंग	थोग २०	t तो० ३)			
मकरभ्वज ( वड्गुया विज	र० स० सु०		रस कप्र	र॰ सा॰ सं०	१ वो० १)			
जारित स्वर्ण घटित विचो-				पर्पटी				
पविष संस्कारित पारद			स्वर्गा पर्पटी	₹० सा०	१तो० १०)			
वाता)			विजय पर्पटी	र० रा० सु०	श्तो• १२)			
मकरप्वज (त्रिगुखविख	**	1ती० २४)	विजय पर्पटी नं० १	••	६मा० १२)			
जारित स्वर्धं घटित )			पन्चासृत पर्पटी	मैठ २०	१तो॰ १॥)			
मकरध्वज ( हिंगुजोत्थ	40 Elle	१ मो० ८)	रस पर्पटी	र० स० स०	१ लो० १)			
परत्द्वारा निर्मित स्वर्ण			जौह पर्पटी	Py	३ तो० १)			
घटित बङ्गुस्यविज्ञास्ति)			बोद्ध पर्पटी	र०सा०सं०	e disalia.			
मकरम्बज (स्वर्षे सिन्दूर	,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	१ तो०६)	ताम् वर्षदी	स०सः सुन	१तो०१॥)			
हिगुमा वित कारित)		<b>!</b>	रवेत पर्यटी	र० रा० सु०	१तो० =)			
रस सिन्दूर ( द्विगुगा विक	रसायन	1 ती० २)	जीदर संस्या	वपदेश हर,	१तो० २)			
जारित)	सार			तथा				
रस सिन्दूर ( सम भाग	रसेन्द्र	क्तोव १॥)		वलकारक	_			
विज्ञारित )	1		जीहर ताल	रक शोधक	धती० २)			
मक्ज सिंदूर	सि० भै०	१ तो० ४)	,	कुष्ठ, उपदंश नाशकः।				
ताब सिन्द्र	र॰ साङ	१ तो० ४)	हम्मीर रस	उपवंश (भात.	१सो०२॥)			
शिका सिन्द्र	<b>31</b>	1 तो∘ ३)		शक)की खास	1412/11)			
ताम्न सिन्दूर	"	१ तो० ३)		दवा				
भाग सिम्बूर	7.0	१ तो०३)	रम माणिक्य	कुष्ठना शक	१तो० १)			

बृहत आयुर्वेदीय औषध भागडार ( रिजेस्टर्ड ) जोहरी बाजार, दहली ।

	<del>स्में</del>		भौषधि नाम	ग्रन्थ नाम	मूल्य
श्रीपधि नाम	प्रन्थनाप	मृत्य	रौष्य माचिक	,,	श्तो० २)
स्वर्गा भस्म		भूष । १सो० ४८)	श्वेत श्रश्नक भस्म	र० श० सु०	र तोव १॥)
·	j		( यह प्राय: सांस, खाँसी	15	3
रौप्य (चांदी) भस्म	र०सा०सं०	१तो० ४)	के जिये यूनीनी चिकित्सा	"	Š
रीथ भस्म नं २	,	१ तो० ३)	में काम आनी है)		3
ताम् भस्म नं १ (कञ्जली	र० रा० सु	1 तो० २)	बज्राभक भस्म	19	२ तो० ७॥) {
द्वार जारित)	, ;		कृष्णाभ्रह (सहस्र पुटित)	# N	₹ ,, ₹ °) }
ताम् भन्म नं० २ (गंधक	; 35	१ तो० १	कृष्णाञ्चक नं०१	•	,, ۱۰) <u>}</u>
जारित ।			<sub>33</sub> मॅ <b>०</b> २		
मुकाभस्मनं १ (कजलीहारा)	<b>उद्यो</b> क	१ तो० ४४)	शंख भस्म	२० सा॰ सं॰	ر = ۱۱ ,,
मुक्ता भस्म नं २ स्वेत	;	हती० ४०)	क्रपर्दिका अस्म (कौकी)	"	, H=) {
•	, , ,		प्रवात भरम (चन्द्र पुटी	11	, <b>, ,</b> mu) }
मुक्ता शुक्ति भस्म	}	स्तो० शाः	नं०१)	,,	
कौंइ भस्म नं० १	र० रा० सु०	स्तो० २॥)	प्रवास भस्म बंध २		
(हिंगुल जारित)			गोदन्ती इरिताक ,	,,	2, 10)
तौद्द भस्म नं २२ (बनौ-	<b>9</b> 2	श्लो० १॥)	गादन्ता हारताल <sub>।1</sub> गोदस्ती सस्म नं० १	14	, m=) {
विध द्वाग )		i	म्फटिका भन्म		, 511) {
वंग भस्म ( हरिताल		+ नो० ३.	पित्रल भग्म	स्य सरक्रियी	·, '—') } ·, <b>91</b> 1) }
द्वारा जारित निरुध)	,,		कांस्य भस्म	5 1	911)
	रसे० मंऽ	स्तो० सा	श्रांग भस्म (शर्क दुग्ध से	11	
		!	वनी हुई )	11	,, 11) }
नाग (मीसा अस्म नं १ .	माव <i>्सा</i> क्ष	र बार ३/	तबकी इतिनाख भन्म	र० स० स०	ः तो• ४॥) }
भैनसिल में मारी हुई			संस्थिया भाग	रस नाक्षिणी	,, a)
निरम्थ )		- 1	स्राजवर्द(गनावर्त)	र० ग० मु	(۶ ۱۰
नाग भन्म नंव २	र० सु०	र तोखें आं)	यूनार्न	मंत्रप्र र	
यश्द भन्म	**	स्तोठ भा	शकीक भस्म	गुर्ग-पुरावा गुर्ग-पुरावा	कतोव ५)
त्रिधातु (त्रिवंग भस्म )	२० था॰	१ सो० २॥		अवर- हृद्य	· ···· / /
महर भस्म	रे मार सं	<b>१ तो० १।</b> )		की घरकन	
स्वर्ण माष्ट्रिक भस्म	11	श्लो∘ २॥)		्यद्री (ब-: कः) रोगः :	
200	*3		0 0 70	-, -, -, -, -, -, -, -, -, -, -, -, -, -	

बृहत् आयुर्वेदीय औषत्र भागडार (रिनस्टर्ड ) जीहरी बाजार, देहली।

श्रीषि नाम	ग्रन्थ नाम	मृल्य	श्रीषधि नाम	ग्रन्थ नाम	मृल्य
संगेयहूद भस्म न०१	पथरी	१ सो०१)	ज्ञसरुद् सस्स	विमानी	र तोव १)
	कृष्य रोग-			कमजारी,	
	मुत्र कृष्क्	-		पैत्तिक रोग,	
_	नाशक ं			पहों की	
संगेषशव भस्म	हृदय रोग	१ सो० ॥)	,	कमजोरी,	
	<b>उन्माद</b>			बुद्धि की	
	हृत्य की	1		मन्दता,	
!	घडकन	1	कोर्पिक	3 7 <u>7</u> 7	
į	धनु स्तरभ		शीधि	•	* * .
; ;	प्रस्ता का सद् उबर,		शुद्ध रूमी शिगरक	े शाङ्गे रसेट	००ताले ४)
	हाथ पैर		(दिगुक)	भाव०	
1	र्षेठना, हिस्टीरिया।		शुः श्रामनासार गन्धक	31	२० साव २)
-		१ नो० ॥)	हिंगुकोत्थ पारद	71	२० ,, ६॥)
संगजशहत भस्म	कास, रक्त, : वसनः,	ון ייויי ד	संस्कारित पारद	रस०रा०रसा०	₹ ,, ₹o)
1	रवेलप्रदर्ग,		द्य॰ पारद	33	₹तो०१॥≔)
	स्य कृष्णुः । इनको नष्ट		शु  नयपाञ्च	1 19	१०तो ३ ३॥)
	करता है, शीतक है।		शु० वक्री हरिताब	?? ??	₹o ., ₹)
हकरबबयहृद भस्म न० २	,	५ तो० १॥३	श्च० विष	37	१०तो० १।)
यणस्थ्यामध्य सराभ गाउँ 🖣	नाशक,	1 (11 (11)	शु० भरुद्धातक	रसेञ-मावञ	₹0 n +)
	वृक्ष रोग पथरी, इनको		शु॰ मैनासंख	रसे० सुरदा	१० ,, १॥)
	नृष्ट करती		शुः कुचला विचतिन्दुक	रस०	१० ,, रा)
· • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	<b>K</b> 1		शुः गूगक	रसेव	₹ ,, 11=)
फ्रीरोज्ञा सस्य	शीतक — इदय को	+ तो० भू	श्च॰ नीजाधीता	' रसे०	₹ "   =)
,	बजदायक,	1	शुद्ध शिलाजतु नव १	भावप्रकाश	٤ ,, و)
· ; i	रक्तम्सम्भक्तं, रक्त प्रदर्		( मलाइ सूच तापी )		,, V
,	मक्सीर,		<b>श</b> ्च शिकाजतु नं २२	91	₹ <sub>3</sub> , ₹#)
	उत्तर, इनको		र्माग्नतापी		
,	नष्ट करताः ।		शिकाजीत के पत्थर	×	६० सेर हा)

बृह्त् आयुर्वेदीय औषध भागडार (रिजस्टर्ड) जीहरी बाज़ार, देहली।

(RE)								
आंपिच नाव	ग्रन्थ नाम	मुख	अविधि नाम	ग्रन्थ नाम	मृल्य			
कमवा केसर	<b>×</b>	र तों० 1-)	<b>बु</b> ० <b>क</b> स्त्रुरी भैरव	<b>मै</b> ं शा०सं०	३ मा० २॥)			
कस्त्री न०१ (बाबा-	×	१ तो० ६०)	चतुर्भु ज रस	,,,	₹ " +)			
तिब्बती )	. ×		रत्न गिरि रस	n	3 " off)			
कस्तूरी नं०२ कस्तूरी नं०३	! ×	१ सो ४८)	स्वरूप करत्री भैरव	,,	4 " u)			
कस्तूरा नं ० ६ कस्तूरी नं ० ६		१ ,, ३२)	पश्चानन रस	,,	१ तो० २)			
केशर (कारमीरी मीगरा)		१ ,, २४)	ज्वर केशरी	, ,	<b>?</b> " (II)			
		₹ ,, ₹#)	सर्वतोभद्र रस	"	,			
सधुनं० १	1	१ सेर १॥)		"	₹ " ₹)			
मधुनं० २	1	१ सेर १)	विषम	ज्बर				
सत गिजीय		१ बो० ।)	श्री जय मंगबा रस	भैचरय	६ मारी ६)			
<b>क</b> ज़ती		₹ ,, u)	रतित मंजी	11	१ तो० ॥)			
अधिकारभेद से औष	धियोंका थ	ोक मल्य	वसन्त मावती	•	३ मा० ३।)			
		1 4 8 1	दृ॰ सर्व ज्वरहर	ļ				
रस-गु	_	- 1	(सोने वाला) जौह	79	३ मारो ३॥)			
ज्वरा <b>।</b>	धेकार		सव उदरहर जीह	31	२॥ तो० १।)			
सृश्युम्बय	, रसे॰ भै० ;	५ तो० १।)	पुरपष्कविषम ज्वरास्तक स्रोह	71	३ माशे २॥)			
महाज्वराङ्ग <b>र</b> ा		4 ,, 21)	स्वच्छ्रस्य भैरव	,,,	्र तो ः ॥)			
<b>हिंगु</b> जेश्वर रस	, ,,	٧ ,, ٧)	मकरध्वत (स्वयाधित)	भैष्ठय	१ लो० ४)			
तरुष उत्रराहि	1		परगुणाविक जारित	39	१ सो० ७)			
नारदीय जयमी विजास	ग र० रा० सु०	9 23	मक्र १६ वज					
कफ केतु स्स	10 110 30	"	चिन्तामिया रस		१ तो० १॥)			
	, 55 .	( ,, H)	सिद्ध मकरध्यत्र	99	६ मारो ७॥)			
चन्दर्नाद् जोह	31 1	? ,, ?)	ज्वरारि धन्न	31	,			
रखेष्म शेखेन्द्र रस	11	₹ ,, ₹)	रवेष्म काचानस रस	<b>&gt;&gt;</b>	१ लो० २॥)			
विद्याधर रस्	33	٤ ,, ٩)		**	१ ती० ३)			
भमृत मंतर।	ग्सं=व्	١, ١١)	वेतास रस	**	१ को० रु			
सक्रिप	त चर		बोर-सबिक क्यों कर क	- 2				
	भैट्याव्यं व	े इसक्रोस्त	नोट-समित हम्मी का बा में कमी वेशी हो स		उसार मृज्य			
	,	1 42104(1)	स क्रमा व <b>श हा</b> ह	शकता <b>ह</b> ो				

बृहत् आयुर्वेदीय औषध भागदार (रिजस्टर्ड ) जीहरी बाजार, देहली।

	•	भौषधि नाम	ग्रन्थ नाम	मूल्य	}
ज्वरातीसार, अर्त		अधिन तुम्बीवटी	मैव०	<b>toato</b> 2)	<b>}</b>
भौषि नाम	प्रन्य नाम मूल्य	गं अस्ति	रसरा८ मैंष०	१ द्याम १)	Ş
सिद्ध पायोरवर	रसेन्द्र० मैंब० १ तो ० ४	महाशंखवटी	भाव०रसरा०	५ तो० २)	}
<b>६न६</b> सुम्दर	,, ,, १ तो० १	गरुवकवटी	रसायन०	१०तो० २)	. <b>ξ</b>
<b>भागन्द्रभैरव</b>	म ,, र सीव १	संजीवनं।वटी	शाईं० सं०	५ तो० १।)	{
कर्ररस	्र, "रतो० ३	) व्यक्तिकमार	रसेन्द्र	द तो० १)	}
महाराज नृपतिवह्नम	,, ,, १ तो० २।	)	,,	२ तो० १)	}
सहागम् <b>ष</b>	,, ,, २ तो≎१॥।⊳	भजीयां करटकरस	,,	२ तो० १)	}
क्षोकनाथ	,, ,, र तो० ध	)) क्राउंदरस	37	१ तो० २)	Ş
व्रद्वशासिक्त विका	,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	() इ० ज्ञवंगादिवटी	. 25	१ तो॰ २)	Š
इंस पोटली	77 77	र) चिन्तामियरस	11	२ नोट शा।)	Ş
বিশ্বৰ শুটিকা		चुवासागर रस	22	२ तो० १॥)	Ę
क्याच जोइ	1 // //	१) अस्तिसम्दीपन रस	29	१ तो० २)	, {
बातीफबादिवटी	11 11	वाद्यपत रस	19	१ तो० ३)	,
महर्या क्याट रस	39 37 5	किमि	पेट के की	डेी	Š
हिरचयगभ पेटबीरस	,, ,, १।। मात्रो	किमि सुद्गर रख	भैचस्य	र- ्थ तो० १)	) }
अशे [ब	वासीरी—	क्रिक कालानब रस	्र, रसे	द्ध (सती ० ४)	) }
व्यशः कुदार	रसेन्द्र १ ती०	ी) विद्यंग जीह	9, 9,	५ तो० 1	)
<b>च</b> न्द्रप्रसावटी	' ''	१॥) ऋमि घातिनी गुटिका	भैषज्य	२ सो० १	)
धिममुख बीइ	भै <del>य</del> ज्य k ती०	<)·	_	नगर निली	
हु० शूरवा मोवक	,, १०तो०				s ?)
प्राणवा गुरिका	.,	रा) नवायस जोड	माझे अध्या	\$	() ()
्रे कांकायम गुढिका	., . १०नो०		:	५ तो० ४।	•
वाहुशाव गुक		र्ता) पञ्चामृत जोइ मंड्र	79	1	u) v)
🗧 अजीर्ण, मन	दाग्नि, अरुचि	द्वीहारिस् <b>स</b>	95		(I) (I)
र्धाराम वाकास	रसेन्द्र ४ तीय	१॥) धात्री जीह	1 25		(1)
बृहत् आयुवे	दीय औषध भागडा	र ( रिजस्टडं ) जोह	रा बाजार	. दहला।	~~

	=	~	1	44 -4 -0 -0 - 1 - 4/44 - 4/5	
श्रीषवि नाम	ग्रन्य नाम	मृल्य	आंषधि नाम	ग्रन्थ नाम	मूल्य
विदंगाविलोह		र तो० १।)	कास संदार भैरव	भै० ००	४ तो० २)
कामजान्तक जौह	·,	२ तो० ३)	कास कुठार रस	,,,	४ तो० १)
पागडु पञ्चानन रस	75	२ नो० १।)	तरुणानन्द रस	>>>	१ सोठ २)
भागव <b>त्र</b> भरस	,,,	र लोखे १॥)	<b>म्बा</b> स	र-हिका	
चित्रकादि लौह	भैषज्य	४ तो० १)			1 3 3
प्जीहारि वटिका	,,	२ सो०३)	रवास कुअर	रसे०	र तो० १॥-)
जोकना <b>धर</b> स	भेषज्य	र तो० ३)	रवास कास चिन्तामणिर		१॥मा० ३॥)
यक्टदरि जौड	•	१ मो० २)	महाश्वासारि जौद	भेषज्य	२॥ तो० २)
महामृत्युक्षय जोह	. 55	र तो ०२॥)	बोहा चीति रस	रव्सव्सुव	२ तो० १)
	ı		कान्नेस्वर रस	"	३ मासे २॥)
रक्त, पित्त, रा	जियभ्रमा-र	वसी	अवस्मार ( मृर्ग	ो ) उन्माद	. मर्खा
माजती बसन्त	भेषज्य	१ तो० १२)	चतुर्भुज रस		१॥ मा॰ ३)
चन्द्रामृत रस	***	र तो० २॥)	उन्माद मञ्जन रस	(9	र तो० २॥)
बसन्त तिलक	ं भा० संब	₹ मा० ५॥.	बात कुलास्तक	. 13	२॥ ,, १०)
राजमृगांक रस	मै० र०	10 4)	महा वटी	31	₹ ,, ₹)
मकरभ्वेज	र० रा० सुर्व	१ ता० ४/	वात ब्याधि	यां-आमवा	'त
श्लेष्म शैलेन्द्र रस	भैट रव	ता० ३.		लिज वगैरा	
्र श्राप्तास्त्र श्राप्तास्त्र	∔∔	तं वं र)		•	
शतमृज्यादि	- <sub>37</sub> : <del>Š</del>	H are s	चिन्तामणि चतुर्मु व	भैपज्य	३ मारो छ।)
रक्तपित्त कुल कुठार		॥ ताट श्र	वात गंजाङ्कुश बूठ बात चिन्तामणि	रसेन्द्र	र ती० ६।)
	بو ا	3	ष्ट्रण वात । चन्त्रामाण सदा चंदमा विकास	,,	६ मारो ६/
यभ्यान्तक जीह	1		नवा अपगा त्यकाल बात गजेन्द्रसिंह	<b>99</b>	रता० ९)
: सृगांक रस	, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	- 1	चतुमु ख । कृष्ण )	15	र ,, ५१ १ ,, ७)
रक्षगर्भ पाटबी स्स ,	,, K		चिन्द्यामाया स्त	ः। श्रेषज्यः .	१ % ७) ६ मारो ६)
( इंदि याजी )	{		भाम वातारि रक्ष		धती॰ १)
इमगभ पोटबी रम	· ,, · · · · · · · · · · · · · · · · ·	11 mm	स्वरज्ञन्द सैर्व	. ;, रसराजसुन्दर	रा। , र)
पंचामृत रम	,, j₹	॥ सो ० २)	पुर्कांग वीर रख	र० स० स०	
The second secon			_		

बृहत् आयुर्वेदीय ओपत्र भागडार ( रिजस्टर्ड ) जैहिरी बाज़ार, देहली ।

वातरक्त-शीतिप	त, कुछ, वि	रेवत्र-	हृद्रोग (दिल	की बीमा	रेयां
विमर्प रक्त विकार इत्यादि			ऋौषधि नाम	ग्रन्थ नाप	मूल्य
भौषधि नाम	ग्रन्थ नाम	मूल्य	त्रिनेत्र रस	मैषज्य	२॥ तो० ५)
विरवेरवर रस	<b>र० श</b> ० सु०	w)	चिन्तामिण रस	77	६ माणा ५)
गवास्कुद्वारि रस	रसेन्द्र	રા ,, ક)	सोने चांदी वाला)		
वात रक्तान्तक रस	•,	ધ, , ધ)	हृत्यार्श्य रख	77	५ तो० ४)
श्रमृताँकुर स्रोह	,,	૨ ,, ધ	शंकर वटी	"	( tq 33
कुछ कुठार रस	"	લ " છો	म्त्रकुच्छ्र, मृत्राध	गत (पेशा	ब बन्द
श्बेष्म पितान्तक रम	मैचन्य	١ , ١	होना) अश्म	री ( पर्धा	1)
रस माणिक्य	,.	२ ,, ३		भैच <u>ज्य</u>	२ तोव ५)
भूत भैरव	11	२ ,, ३)			80 " W)
शृत-अम्तपि	न परिएाम	शुल	वरुणाच जौद	"	(3 °) (4 '' 8)
धात्री लौड	भैपञ्च	ं नो० णा		97 99	ં લ " છે)
महा शंस वटी	रमेन्द्र	}   ? ,, 3,11		"	પું " <b>દા</b> )
प्राण वरुक्तभ रम	<b>भै</b> चड्य	Cq ,, 18'	प्रमेह (जिरयान)	मधमेह.	
तारामस्दूरगृङः	***	, s · s	वन् (आरमान)	13.16.	नाउपा
धम्जपित्तान्तक जौह	भै० सः वर	ં સાત લો	बेल्यता-	बहुमृत्रता	
त्रिफलामंद्रर	41	ધ ત સા	   वमन्त कुसुभाकर	भैषज्य	. १॥ माशे ५)
जीला विजास	,,,	२ ,, ४		19	६ तो० २)
उदावर्त गुल्म (वा	यगोला)	आनाह	म्यस प्रभा	53	: <b>१</b> ,, ३)
नाराचरस	भैयज्य	५ तोव १।	। )  सोमनाथ रम	17	ંષ ,, સા
काँ कायनगृटिका		१० " १॥		,,	, ६ सा० ७॥)
विषयानसस्य गोपी जल	**	ુધ્યું' દ્રા હ્યું ''	) (स्वर्ण भग्म वाजी ) ) मेहमुग्दर रस		· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
्राया जल इच्छाभेवी स्म	,	ુ ભુ ભુગ ફા	1	,,,	्पताक प्र िप ,, शा)
🕻 🌠 शुरुमकालानल रस	17	۹ " و	) वृ० बंगेस्वर रस ( सोना		३ माशे ४॥)
गुरुम शार्युल रस	1 44	' (q ''' ) §	मोती वाला)	į	
बृहत् आयुर्वेद	ाय औषध	भागडार	( रजिस्टर्ड ) जी <b>ह</b> री	बाज़ार,	देहली।

भौषधि नाम	प्रन्यनाप	मृत्य	उपर	इंग	3
वसम्स तिज्ञक	भैषज्य	३ मा० 🗥)	श्रीषधि नाप	ग्रन्थनाम	मृल्य }
इन्द्र वटी	7,7	२ तो० ३॥	फिरंग गज केशरी	बोगर <b>त्या</b> कर	` {
मृ० प्रा चन्द्र	,,	६ माशे ३॥)	शुद्		}
पूर्ण चन्द्र	9.1	१ सो० ३)	शुक्र खदिर वटिका	ा । ⊹ भैषज्य	   श्तो० १)   \$
<b>उदर</b>	रोग		चन्द्रोदयादि वर्ती		१तो० ३)
<b>इ</b> च्छाभेदी स्स	भैषज्य	५ तो० १॥	चित्रक हरीतकी	99 97	२०तो० २)
बुष्काभदा रस नाराच रस	1		महा बच्मी विजास	,,	१तो० ४)
नाराच रस धोदा चोजी स्स	• • •	1	शिरः शुलादि वज्र रस	,,	पतो० १)
वादा चाजा रस जनोदरारि रस	79	3	स्त्रिया और	1	गोरं
जी कनाय स्रोकनाय	"	र , । ३)			
यकुन्ध्रीहारि जोड्	• • •		प्रद्राम्तक जीह	भ्रेषज्य	५ तो० ५)
यक्रकारात कार् त्रैजोक्य सुन्दर रस	95		गर्भ चिन्तामणि	71	१वो० ४)
	, ,	* *,	स्तिकारि रस	>9	१तो० २॥)
शोथ(मूजन) अन्त्र	शृद्धि रला	पद्भगन्दर	दम्तोद्धेदगदान्तक	75	पत्ती० ४)
त्रिनेत्रास्य रस	भैच०	श्तो ० ५)	महाराज्यक	>>	२सो०१॥=)
शोध काजानज्ञ रस	1	ः ३ २तो० ४	स्तिकान्तक रस	27	शातो॰ ६)
पन्चामृत रस	17	् ५तो० ५)	प्रवरिष्	**	२तो० १)
स्वया पर्पटी रस	23	्राती० १० विशेष	नष्ट पुष्पान्तक रस	*7	२तो० ३)
वातारि रस	97	५तो० २॥)	रजः प्रवातना वटा	71	४तो० १)
तित्यानन्द रस	"	् ५तो० ४)	कुमार कल्याय रस	15	१॥मा० ६)
<b>अग्रिमुखमँ</b> हर	99	ं • ५तो० २)	रसायन	-वाजीकर	ण
हुउल वटी	. 41	ः २नो० ४	वसन्त कुसमाकर रस	भैक्ज्य	१॥ माशे ५)
रे " तक वटी	*1	२सो० ३)	मकरध्वज	रसेन्द	१ सो० ४)
श्राशि शेखर रस	, 77	श्तो० २)	मद्नान्दमी दक	भैपउष	२० ,, २)
ह्लीपद्गत केशरी		२तो० २)	मन्मथाञ्च स्म	"	₹ ,, ₹i)
बृहत् आयुवर्द	ाय औपध	भाग्डार	( र्राजस्टर्ड ) जोहरी	बाज़ार,	देहली।

अगेषि नाम	ग्रन्थ नाम	मूल्य	औषधि नाम	ग्रन्थ नाम	मृत्य
ँबृ० चन्द्रोदय मकरण्वज	श्रे ४०	१ तो• =)	ज्वर मेरव चूर्ण मैक्ड्य)	<b>उ</b> वर	( सेर शा) है
पूर्ण चन्द्रस	17	٤., ३	निम्बादि जूर्ण भावप्र-	विषम ज्वर	१ सेंग ३) }
कामिनीविद्रावण रस	79	٠٤ ,, ٤)	काशः ;	•	\$
गुर	गुलुः		गँगाधर चूर्ण	भवीसार	१ सेर २) ह
त्रयोदशाँग गुग्गुलुः	•	२० सो २)	जासी फर्जादि चूर्य	19	ा। सेर ३)
कैशोर गुग्गुलुः	वात रक	२० तो०२)	मृ० बाई च्रां	संग्रहणी	२०ता० ६।)
महायोगराज ( सप्त भातु	े चाम वात	v ,, 1)	सर्वेगानि चूर्ण	,,,	<b>ध</b> ०तो० ६)
मिश्चित )	( गठिया )	1 1	भाग्का लवग	अग्निमान्थ	१ सेग्ड)
योगगज ( चकदत्त )	,•	२० २)	हिंग्य <b>एक</b>	71	२० मावः
सिंहनाद गुगल	श्राम वात	80 ., 81)		}	१॥=)
गोत्तुरादि गृगत	मृत्र कृच्छ	, so " st)	कपिथाष्टक	<b>प्र</b> रुचि	१ संस २॥)
	पथरी	,	चन्द्रनादि चूर्ण	प्रमेह	४ संर ३॥)
कांचनार गृगत		' to ,, (1)	ताबीशादि	कास भरुचि	१ सेर छ)
}	श्चवी ।	) •	मिनोप <b>ना</b> दि	कास जीएाँ	आ सेर ३॥)
भस्तादि गुगगुलुः	भगन्द्र	90 , ell		उत्रर	
्सप्ताँग गुग्गुलुः १	ंकुष्ठ-नाकी-वस् ^		कामदेव चुर्ण ( गस चि-	वाजीकरण	53 संर ·
६ नवक गुग्गृह्यः ८	स्थीस्यता-	\$0 n \$)	न्तामिया )		
्रे इ. चन्द्र प्रमा गुग्गृलु:	्र भगन्द्र प्रमेह	₹ ,, ₹(I)	सामुहादि चूर्गा	टद <b>रशू</b> ल	<b>३६ सेर ६</b> .
६ नम्बन्धाः । सप्तर्विशतिको गुगुलुः	भगन्द्र		यवानिकादि चूर्ण	11	२० मोऽ-
1	वस्तिशृत	(13 ,, E1)			3=)
}	श्रादि पर		यवानी शाँडव	अरुचि	२० तोसा
शिवा गुम्युखुः	श्राम वात	ं १०, १॥)			<b>⊅</b> n)
	(गठियाः)		नागयण चूर्य	ं उद्दर रोग	१ सेर २)
र्चुं चू	र्ण		पुष्मनुग चुर्गा	प्रदर रोग	१ सेंग ४
े बृ० सुवर्श - नृश		१ सेर ४)	श्वयत्तिका सूर्ण	<b>अ</b> म्ब्रिक	Ru &
}	ा विषम उवर			as del 1 /s	1
}	ावषम उवर		A-12- 2	1	

बृहत आदुर्वेदीय औषध भागडार ( राजिस्टर्ड ) जोहरी बाजार, दहली ।

रोग नाम	<b>मृ</b> ल्य	श्रीषि नाम	योग नाम	मृल्य
तिस्ली	२०तो० १)	बूट नायिका चूर्या	ं अहणी रोग	s; ₹)
जिगर-तिह्यी	२० तोञ		शोध-शून	
3	- /		<b>प</b> तीसार	
	•	मरिचादि चूर्ग	कास	si (il)
	,			•
धातु पीष्टिक	२० त <b>ा</b> ०- २॥)	समशर्कर चूर्ग	काय-श्वास	\$1 8)
वीयं विकार	२० तोजात)		য়হি	
	२० सोञा।)		सन्दर्गन	
•	२० लो०॥)	खबस्रोत्तमादि चुर्ग	ववासीर	(19 12
विकार ।	,,	व्योषादि चूर्या	<b>उत्तर।नीसार</b>	51 (1)
श्रतीसार-	४०तो०(॥)		गृह्यांद	
अरुचि		सारस्वत चुर्वा	उन्माद	21 8 <b>11)</b>
वचों की	१०तो०१॥)		प्रसेद सूत्र	5( 2)
खासी कफ्र विकार			<del>কৃত্ত্</del>	J. (7
बचों की खाँसी	१०तो० (॥)		व-अरिष्ट	
,	<b>४०तो०शा</b> )	ब्रमृतान्ष्टि	ज्ञ <b>र</b>	२ मेर ७)
		कुटनारिष्ट	धतीसार -	साः संर ४)
_			मंद्र या	,
•		विष्यस्या सव	चथ-गुल्म-	२,:मेंब २५)
वसों की	S==  H)		पागडु	
खांसा कफत		<b>ध</b> भयाग्टि	कार्ग उद्शिव-	२॥ संग ५)
ज्बर,		r	, कार	
	1	दम्यारष्ट	उद्ग विकार बवासीर	२॥ संद ५)
	21 6)	शॅम्ब दाव	गुल्म-श्रूत्र ४	ह्रामशी०४)
फ् वासी		ति <b>डेगा</b> रिष्ट		सामेर ५)
अर्जार्या	si (II) j		अन्दर का	
	जिगर-तिश्वी दन्त रोग शिरो रोग धातु पौष्टिक वीय विकार ज्वर-श्वरण्ण कड़त-रक्त-विकार। धातीसार- भविवार बच्चों की खाँसी ज्वर-पसीलां, विसप शोध स्वरभेद-पा- अरुणि वचां की खाँसी ज्वर-पसीलां, विसप शोध स्वरभेद-पा- अरुणि वचां की खाँसी ज्वर-पसीलां, विसप शोध स्वरभेद-पा- अरुणी श्वारण क्वां की खाँसी कार्या कक्त	तिस्लो २०तो० १) जिगर-तिश्वी २० तो०- १॥=) दन्त रोग १ शीशी।) शिरो रोग ५ तो० १।) धातु पौष्टिक २० तो०- ६॥) वीय विकार २० तो०॥।) करु कडन-रक्त- २० तो०॥) विकार। धतीसार- धतीसार- धतीसार- धतीसार- धतीकार। धतीसार- धतीकार। धतीसार- धतीकार। धतीसार- धतो०१॥) खांसी ज्वर-पसीलां, विसप शोध ४०तो०१॥) स्वरमेद-पा- उपावभर१॥) स्वरमेद-पा- धर्मि वर्षो की ६०तो०१॥) स्वरमेद-पा- धर्मि वर्षो की १०तो०१॥)	तिल्लो २०तो० १)  जिगर-तिह्यी २० तो० १।।  दन्त रोग १ शोशी ।) शिशरे रोग २ तो० १।) धातु पंष्टिक २० तो० २॥। वीय विकार २० तो०॥।) कफ् कडन-सक्त- २० तो०॥।) कफ् कडन-रक्त- २० तो०॥। विकार । धातीसार- ४०तो० १॥। सर्वा की १०तो० १॥। सर्वा की १०तो० १॥। स्वां की १०तो० १॥।	तिस्त्ती २०तो० १)  तिगर-तिही २० तो०- १॥=) दन्त रोग १ शोशी ।) शिरो रोग १ तो० १।) धातु पौष्टिक २० तो०- २॥) वीय विकार २० तो०॥। करु २० तो०॥। कर्म १०तो०१॥। सरस्वत चुर्ग अवारीर अवारीत्वाद चूर्ण अवारीर अवारीत्वाद चूर्ण अवारीर अवारीत्व चूर्ण अवारीत्व अवारीत्व अवारीत्व चूर्ण अवारीत्व

३हर् आयुर्वेदीय ओपव भाग्डार ( र्राजस्टर्ड ) जोहरी बाज़ार, देहली ।

श्रीषि नाप	रोग नाम	मृल्य	ऋौषधि नाम	ंरोग नाम	मूल्य	ŗ
स्रोहासव	प्लीहा	२॥सेर २।)	पत्रांगासव	स्त्रीरोग !	२ सेर	<b>*</b> )
<b>भाग्य</b> रिष्ट	पारुबु-कामना	शायेर ४॥)	ध्रस्विन्दासव	वाखरोग	२ सेर	<b>+</b> )
कुमार्थासद	उदर-गुरुम	र॥सेर ४)	कृष्मान्डासव ( योग	रवास-कास	२ सेर	۳)
<b>उशीगस</b> व	रक्त पित्त	<b>र सेर</b> २)	ांचन्तर मंग्यि )	,		
द्राचासद	चय-साँसी	२॥सेर ५॥)	जम्बीरीदाव	उदर रोग	२ सेर	=)
( योग चिन्तामणि )	<b>मरुचि</b>		बन्ध् लाद्यरिष्ट	कास-श्वाख	२॥सेर	₹n)
दाचारिष्ट	<b>"</b>	रमसेर ४)		अक		į,
<b>कॅं</b> ग्रासव	दौर्बक्यता	शासेर जा)	<b>महामजिष्ठा</b> दि	रक्त विकार	२ बीठ	१॥)
	खून की कमी			वात रक्त		
<b>कनकासव</b>	कास-ज्ञास	२॥सेर २॥)	अक्र दशमृज	प्रसृति-गोध	35 11	1)
द्रमुकारिष्ट	प्रमुत कम-	२॥सेर ५।)	<b>भक्त</b> सुदर्शन	मलेखिंग,	3° 11	<b>१</b> )
	ज़ोंगी			जीर्ष ज्वर		
<b>ध</b> रवरान्धारिष्ट	कसजीरी-	२ सेर ४॥)	पुकर्नवाष्टक	शोध-जन्न-	22 22	1)
	मुखी			न्धर		
खदिरारिष्ट	कुष्ठ-रक्त-	२ मेर ४)	1	<u> घृत</u>		
	विकार		बिन्दुपृत		२०तो०	• .
पार्यश्रीष्ट	हृद्य रोग	२ संद ४।	भ्रज्नवृत	् इदय रोग	SI	२)
	रक पित		जाम्बाद्धन	ब्रग (जस्म)	51	<b>ə</b> }
चम्दनास्य	प्रमेद्द-वीर्य-	२ सेंग आए	महात्रिफकादिष्टत	नेश्वरोग	51	२।)
	£1		कल करयाग्राध्त	स्त्री रोग (बन्ध्यात्व)ः	31	۹)
देवदाव्यंचरिष्ट	* *	व् सेंग ४)	कामदेवधृत	वाजीकरण		<b>3</b> 111)
लोधामव <sup>/</sup> श्चाय्वेत संग्रह)	धमेह प्रदर	२ मोर ४॥)	कासीमादिवन	अग्नाशक	9.7	<b>२॥</b> )
गैहितकारिष्ट	निधर निस्ती	२ मेर भा।	मा <b>द्याप्</b> त	धपस्मार-	,, ;	\$H1)
पुनर्न नाम्ब हिष्ट	शोध(सूजन	२ सेर १)		उम्माद.	•	- ',
क रविद्या <b>रा</b> हिष्ट	रक्त विकार	⇒ सेर अ॥)	भारम्यन <b>ध्</b> त	मेधाशक्ति वर्धक	SI !	१॥)
मनो कारिष्ट	धद्र .	२ सेर ४)	द्यैतयगृत	75	\$1	٦)

बृहत् आयुर्वेदीय औषध भागडार (राजस्टर्ड) जौहरी वाज़ार, देहली।

2	तैल		भौषवि नाम	रोग नाम	मूरुष
श्रीषधि नाप	रोग नाम	मृल्य	वासा चन्दनादि तैस	बद्मा-द्वय	ر از ع)
्र } किरातादि तैज	ज्वर	S   <b>3</b> )		उरःचन कास	
ई श्रॅंगारक तेल	<b>99</b>	,, રાા)		जीर्ण उवर	511 <b>a</b> )
्वाचादि तैव	,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	., ع)	माप तैल	वानग्याधि	,, ₹)
र् हे महालाचादि तैल	,,	ر, الح	मरुजतैज (संखियेकातैजः		१ तो० ४)
है १० चन्दनादि	**	<b>,,</b> 4)	. *	नपुंसकना	
ृ वृ अहणीमिहिर तैस	<b>ब्रह्</b> णी .	٠, ٩)	हिम सागर तेंल	वात रोग	20 ,, t)
र्वे बुः कासीदि तैल	ध्रशं:	., ą)	विष्णु नैल	<b>99</b>	₹0,, ₩)
े पिप्पल्यादि तैल	सर्गः	,, ३)	6.TET	tor	<b>5</b>
चन्दनादि तैल	यदमा	رب (۱	वार-णः	णि-मत्त्र	Ì
नारायम नैज	वातव्याधि	,. <b>3</b>	वज्र चार	771.220	्र (० सो० १)
मध्याम नारायण तेल	27	٠, ۴)		धजीगाँ तिल्ली	(0410 ())
कुञ्ज प्रसारियी तैल	**	ر, ع	चप्यमार्ग जार	-	,
श्रीगोपाजतेल/कम्त्रुगरहित <sub>)</sub>	वाजीकरण	,, on)	an market with	सूत्र का रु-। कना खांसी-	80 , 81) {
., (कम्त्री सहित)	,,	., १६)		करा खासा- साँस	Ş
हु० मश्चिहि तैब	यात रक	٦. ३)	2101 800		· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
बृ० सैन्धवादि	माम वात	,, ₹)	वामा भार कटेली भार	कास-स्वास	₹ ,, ₹u) {
विष्या मं जैल	( मठिया ) "	- 11	कटना चार वेजीका <b>चा</b> र	11 11	80 " 81) }
• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •		,, ÷II)		<b>मूत्रावरोध</b>	₹° ', °)}
ब्∘ विक् <b>राच्य</b> तेल	वरण	۱, ه)	इसली चार	भ नी याँ	30 i, \$(III) }
कुकमादि नेत	मुखर्मी न्द्र <b>य</b>	,, ਖ਼)	तिज चार	13	10 ,, 2)}
भुक्तगात नेत्त	शिरोगेश	" 3)	पनाग भार	रक्त गुरुम	50 ·, ₹#)}
चन्द्रनशिद् सैल	र्वातियत्तितः	ر, ع)	থাক স্থান	निरुद्धाः	Ro " ( 61) }
कार सेन	कर्गा श्रुक्ष	,, 8)	यव सार	নুরাঘান	₹5 ,, <b>१</b> 1)}
रज्ञिकादि नैज	15	,, 3,	गिल्लोय का मध्य	जीख ज्यर	راج » عا)غ
षड्विन्दु तेल	शिरो रोग 🦠	ر 3 )		व्रमह	<b>}</b>
प्रमेह पितिर तैल	यमेह	,, ع) ا	सन शिक्षाजीत नं० १	घातु <i>दौर्यस्य</i>	* ,, 3){

बृहत आयुर्वेदीय ओपन भागडार (राजिस्टर्ड) जाहरी बाजार, देहली।

श्रीपधि नाम	ग्रन्थ नाम	मुल्य	भौषधि नाम	ग्रन्थ नाम	मूल्य
धतूरे का चार	कास-श्वास	१०ती० १।)	इरिद्रा खरह	शीत पित्त	su 👣
शर पुंखा चार सर्क जनग	यकृत् तिक्की-गुल्म	१° ,, १1) ₹ ,, 11)	जिसका के उसकी संस्थान	पित्तीउछ् <b>तना</b> प्रतिश्योय-	<u>ζ</u> ιι ঽ)
श्रष्टाङ्ग जवया	मदात्व	₹ " ₹)		नजसा प्रस्त (स्री-	,, રાા)
स्व्राह-माद् कुटजावसेह	5-अवलेह-प् भनीसार- संबद्धी	कि   १ सेर १॥)	भारंगीगुड करटकारि अवलेह	रोगों पर ) कास कास	,, ३) १सोग⊁)
बृ० शूरण मोदक वासा कृष्माण्ड खण्ड कृष्माण्ड खण्ड	1	र्ड ,, १) र्ड ,, २) १ ,, ४)	सिद्ध सुपारी पाक सुपारी पाक सिद्धमान्नव पाक (रजि- स्टर्ब)	प्रदरकमजोरी ', धातुदौर्यस्य	,, ,, (9)
नारि वेख सब्द ष्टु० वासावलेड च्यवनपाशावलेड कुशावलेड	, ग्रुल कास-स्वास भानु-रोबेक्य मृत्र इ.स्कृ- मृत्राधात-	후 , · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	सालवपाक बादाम पाक श्रश्वगन्धा पाक मदनानन्द मोदक बाहुशक्तगुद	59 75 33 19	リリリ を) リリリ を) リリリ を) リリリ を その前の 知り
	उष्णवात- स्ताक(गनो स्या)		नोट – हर प्रकार के स्वादिष्ट व पौटिक पाकों के \$ निये हमार यहीं की पाक मंत्ररी नाम की पुस्तक मुक्त \$ मेंगाकर देखिये।		

### वाजीकरण संसारी भुख का मूल हैं:

### शरद ऋतु का अपूर्व उपहार

शीत काल ही के चार माम ऐसे होते हैं, जिनमे जठरानल पूर्ण रूपसे चलवान होजाता है। इसी हेतु अने क प्रकार के पाक आदि पीष्टिक व वार्जाकरण औपियां प्रायः शीत काल ही में सेवन करके शर्मा को सुपृष्ट, बलवान एवं वीयवान बना लेना चाहिय इसो के लिये पाक मंत्ररी नामक पुस्तक जिसमें बहुत से पाकों के (माजूनात) गुण वर्णन हैं मुक्त मंगा कर पहें, और अपने योग्य कोई पाक पसन्द करके सेवन करें, शारीरिक बल बढ़ाकर उसका आनन्द उठाये, और सम्पूण वर्ष हर्ष और स्वस्थता पूर्वक व्यतीत करें।

वृहत् आयुर्वेदीय औषध भागडार ( रिजस्टर्ड ) जै।इरी बाज़ार देहली ।

# हमारी कुछ खास २ खानदानी पेटेन्ट श्रोपधियां

**-→≥∘&**&-

### श्रीकामदेव रसायन की सुनहरी गोलियां

यं गोलियाँ अत्यन्त पौष्टिक और स्नायितक दुर्बलता तथा बाल्यावस्था में किये गये अनुचित कार्यों से, अथवा युवावस्था में की गई असा-वधानियों से उत्पन्न हुई नपुंसकता को दूर करने में जादू का असर रखती हैं। इनके थोड़े ही दिन के मेवन से शक्ति अपनी पूर्वावस्था को प्राप्त होजाती है, भूख खूब लगती है, जो भोजन खाया जाना है उसका आहार रस बना कर शरीर को मोटा, ताजा सुन्दर, सुडील, और ताकतवर बना देती है। मुख, सुन्दर, तेजस्वी होजाता है, और खाम कर दिसाशी काम करने वालों के लिये ये गोलियां निहायत अवसीर हैं. हर मौसिम में इस्ते-माल की जामकती हैं। कीमत धट गोलियां की शीशी २: दो कपया। तीन शीशियों के ५) डाक व्यय प्रथवः

### तक्मी विलास गोलियां ( मध्तक शक्ति वर्षक )

ये गोलिया संनाः मध्या इत्यादि बहुमुल्य द्रव्यो ने बसना है, इसलिये ये दिमासी काम करने वालों के लिये अमन का काम करनी हैं। जब कभी अधिक लिखने, पढ़ने और अनेक प्रकार के दीर्घ कालिक रोगों के कारण दिमाग कमजोर हो जाने, काम काज को दिल न चाहे, सिर में चकर, नेत्रों की ज्योती में फर्क तथा शरीर के प्रधान र अवयन कमजोर पहजाने ऐसी हालन में चिकित्सा न करने से बहुत से रोग पैदा होजाने हैं। इस लिये शारीरिक न मस्तिष्क शिक बढ़ाने के लिये हमारी लदमी निलास गोलियाँ फौरन इस्तेमाल कीजिये। बेशुमार रोगी भोगी, स्त्री पुरुप, खुद्ध युवा, इनके अड़ुत गुगों पर मोहित हो चुके हैं। मृ० १२ गोलियों की शीशी ३), ३ शीशी के ८) डाक ट्यय प्रथक ।

### प्रिया मनमोहिनी गुटिका

इसका नाम ही इसके गुणों को शकट करने के लिये काफी है, विशेष लिखने की आवश्यकता नहीं इस लिये यदि आप अपनी प्रियाको अपने उपर मुग्य करना चाहने हैं, तो अवश्य ही इन गोलियों को संगा कर इनका चमत्कार देखिये आपका हद्य समुद्र की तरह लहर मारने लगेगा आप मस्त होजायेंगे मृल्य ८ गोली शीशी १), ३ तीन शीशी २॥) डाक व्यय प्रथक।

बृहत आयुर्वेदीय अधिय भागडार (गिजस्टर्ड ) जीहरी बाजार, देहली ।

### स्वप्नदोष नाशकवटी

ये गोलियाँ स्वष्तदोष (बद् ख्वाब) के रोगियों लिये अमृत तुल्य गुराकारी हैं, इनके थाड़े ही दिन के सेवन से ख्वाब में बिगड़ना, धातु का पतला-पन, बहुत जल्द दूर होकर शरीर हृष्ट, पुष्ट, शिक-शाली बन जाता है। मृल्य २४ गोलियों की शीठ १)। ३ शोशी २॥) डाक व्यय प्रथक।

### अजीब व ग्रशंब तिला

बचरन की खराब आदतों व युत्रावस्था की अत्यन्त विषय वासना, हम्तमैथुन इत्यादि से जो इन्द्रिय छोटी, पतला, टेढ़ा और दुवल होजाती है इसके थोड़े हा दिन लगाने से ये सब शिकायतें बहुत जल्द दूर होकर लिंगेन्द्रिय स्थूल, और हढ़ होजाती है, और मैथुन शांक प्रवत्त हाकर पुरुष सन्तानी-रपित के याग्य होजाता है, और इस से किसी प्रकार की हानि नहीं होता, और न छाला वगेरा ही पढ़ता है। सुल्य १ शांशी २) छोटा शांशा १।) बड़ी तीन शींशियाँ ५) डाक व्यय आदि नथक।

### नस दीली की पोटलियां (नामदीं की अज़ाब दवा)

जिन पुरुषां ने हुन्त मैथुन, प्रकृति विरुद्ध मैथुन, श्रकाल मैथुन, श्रार श्रात मैथुन सांलङ्ग-निद्रय को बेकार कर लिया है, उन क्षा का इन पोटिलयों की एक हफ्ते तक संक्षारन सालङ्ग में कैसा ही हालापन श्रीर मुजी व कमजारी हो निहायत ताकत आजाती है। बूढ़े की मानिन्द जवान के कर देती हैं। मृल्य १४ पोटलियों की जो एक सप्ताह के लिये काफी हैं सिर्फ ३) है। डाक व्यय आदि पथक।

### सिद्ध उपदंश कुटार रमायन

[रिनम्टर्ड ]

#### ( आतशक की अक्सीर गोलियाँ )

इन गोलियों के सेवन से आतराक और उससे उर्धि हुए कुल उपद्रव अति शीध जड़से दूर होकर शरीर कुन्द्रन की भौति चमकने लगता है। न इनसे मुह आता है और न उल्टी, दस्त आदि ही होते है। क्यों के इनसे पार और मंख्ये की मिलावट नहीं है। आप आवश्यकना पहने पर तुरन्त गी- लियां मंगाकर सेवन की जिये क्यों कि यह भयानक गेग एक से दूसरे की लग कर पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है। इसलिये इसकी चिकत्सा में लापरवाहा करना बड़ी भारी नादानी है। मृल्य एक शीशी में सह में की जिस्सा के डिविया के 8)।

## काया कल्प वटी

( चम रोगा की श्रद्धत दवा )

इसके फायदे इसके नाम में ही जाहिर होते हैं। इसके सेवन से शगीर श्रित साफ चमकीला और नवजात शिशु की भांति कान्तिमान बन जाता है। सर्व प्रकार के चर्म रोग फोड़े, फुन्सी, दाद, खाज, स्याह व सकेद दाग मुंद की भाँहे, आतशक, सूजाक, के विष से उत्पन्न हुए सारे उपद्रव और चम्बल श्रादि बड़े २ भयानक रोग

बृहद् आयुर्वेदीय औषध भागडार ( रिजस्टर्ड ) जौहरी बाजार, देहली।

दूर होकर शरीर कान्तिमान होजाता है। श्रार्थात् यह गोलियाँ सर्व प्रकार के चमे रोगों के लिये एक श्राद्भुत राम बाए। दवा हैं। मुल्य १६ गोलियों का १) डाक व्यय प्रथक।

#### कृच्छ नाशक

( रजिस्टर्ड )

#### ( स्ज़ाक व कुरहा का अचुक इलाज )

रजस्वला खोंके साथ विषय करनेसे, गर्म चीजों के इस्तेमाल से अथवा चूने को तथी हुई छत पर गरमी में पेशाब करने से और थूप में अधिक देर तक काम करने से अक्सर यह राग हो जाता है। जिससे लिझेन्द्रिय के मुख पर बरम हो जाता है। जिससे लिझेन्द्रिय के मुख पर बरम हो जाता है। पैशाब में जलन, खुत और पीप का आना शुरू हो जाता है। फिर धीर २ उसमें कुरहा पड़ जाता है। इमारा छच्छ नाशक इन सब दर्नाक हालतों को एक सप्ताह ही में पूण्तया आराम कर देता है। चीस,चबक, जलन ता २५ घएट में ही जाती रहती है मूल्य फी शीशी १।) तीन शोशी एक बार लेने पर ३) डाक ब्यय प्रथक।

# वृहत् प्लीह नाशक रटी

(तिल्ली दूर करने की अवसीर दवा )

यह गोलियां तिल्ली के लिये अमृत समान गुण-कारी हैं वर्षों का बढ़ी हुई तिल्ली और पेट का बेडोजपना बहुत जल्द दृर हाकर भूख बढ़ने लगता है, और शगर में नवान रक उत्पन्न करके शक्ति देती हैं मृल्य घट गों० की० शा)

#### सर सुगन्ध

यह सर धोने का निहायत खुशबूदार मसाला है जो कि मड़ते हुये बालों की जड़ों को मजबूत करके उनको मुलायम और भैरि के समान काला बनाता है। मूल्य।) पैकंट

### वृहत् समीरं पन्नग बटी रसायन

( रजिस्टर्ड )

इसके सेवन से एड़ा से चोटी तक के सर्व प्रकार के शारिशिक दद चाहे वह वात पितादि किसी भो दाष व किसी कारण से कैसा ही सखत क्यों न हो उमे दूर करने में बिजलीकी भाँति श्रसर दिखाती हैं। ददसे बंचैन मनुष्य तुरन्त हसने लगता है। इसके श्रांतिरिक यह गोलियाँ माइवारी को साफ लाने व नलों के दद में श्रपना तुरन्त श्रसर दिखाती हैं। मूल्य ३२ गोलियों की एक शीशी का १) डाक व्यय प्रथक।

### आनन्द वर्धक तैल

यह एक अद्भुत तेज बड़ा बड़ा कामती द्वाओं के मिश्रण से खास तोर पर बनाया जाता है। इस को अपनी भिया से आलिङ्गन करन के ५-७ भिनट पहिले लिङ्गे न्द्रिय पर लगाया जाता है जिससे कि बिल्कुल बेकार, मुदी लिंगेन्द्रिय में भी चंतन्यता (तेज़ा) और दृदता का जाती है। आर परस्पर में इतना प्रेम हा जाता है कि जिसको बयान नहीं किया जा सकता; बस इसके सेबन से हो इसकी खूबियों माल्म हा सकता हैं। यह चीज बड़े २ रईसों राजाओं के सेबन करने योग्य है। प्रति शां० ५)

बृहत् आयुर्वेदीय औपव भागडार ( रिजस्टर्ड ) जीहरी बाजार, देहली ।

### कोष्ठ बद्धारि बटी

ये गालियाँ अत्यन्तपाचक, कब्ज्कुशा, जिगर चौर मेदे को ताकत देने वाली हैं। इनके खाने से भूग्य खुव बढ़ जाती है, पेट साफ और हल्का रहता है, दम्त बिना तक़लीफ के आसानी से आजाता है, दायमी कब्ज्ञ के लिये तो ये गोलियां अक्सीर हैं। २ गोलियां गत को साने समय दूध से लेनी चाहिये। कीमन २४ गोलीकी शीशी॥) १२ शीशी का ५) डाक ब्यय प्रथक।

### शुलग न हरि

इन गीलियों के सेवन से, पेट का फुलना-हवा का ज्याद्द पैदा होना, बाय गीला, शुल इन्यादि सब प्रकार के उत्तरविकार दूर होने हैं। मृत्य २४ गीली का'!!)

### अतिस्वादिष्ट चूर्ण की गोलियां

ये गोलियां बहुत ही खुण मक्ता हैं खाने के बाद १-२ गोली अवस्य ही खानी चाहिये खाना हजम होकर एक दा डकार आकर मन प्रसन्न होजाना है। बहुहजमी, कैं, जी मिचलाना हैजा (बिस्चिका) आदि के लिये निहायत अक्सीर हैं मृत्य फांठ शीणी॥)

### सिद्धश्वाम कुटार रमायन

दमा एक खीफ्नाक मज है इसका मरीज् पति दिन कमजोर व दुबला होना जाता है, इसकी तकलीफ अक्सर रात को ज्यादह होती है, दौरे के वक्त खांसते २ दम फूल जाता है, पमलियां दुःखने लगती हैं। कभी २ दम इतना उखड़ता है कि सांस लेना दुरवार हो। जाता है, मरीज़ घबरा कर उठ बैठता है। बदन पसीना २ होजाता है। इसके सिवाय खाँसी हमेशा उठती रहती है, और दम सा घुटा रहता है। एसी द्दीनाक हालतों में हमारा स्वास कुठार निहायत ही मुकीद रहता है, पहले ही दिन के मेवन से दमा बिलकुल दम जाता है। वैमें के वक्त एक दो खुराक देने से ही जाद का सा असर दि शता है, बलगम अपसानों में निकलकर रोगी को चैन पड़ जाता है, इसी तरह कुछ असें के इन्तेमाल से दमें की जड़ बिलकुल जाती रहती है। मृल्य ५० गोली ३)

### प्रतिश्याय नाशक

### ( जुक़ाम दूर करने की हुक्मी गोलियां )

नए कोर प्राने जुकाम के वास्ते अत्यस्त लाभ वायक है कुछ ही दिनों के नेवन से मिनवक शक्ति बढ़कर बार बार जुकाम होना बन्द होजाता है। दिमाग की बड़ा नाकत तेनवाली चीज है। मृत्य २४ गोलियों के एक पकेट का १)

### सिद्ध अशोंहरि स्सायन ( ववासीर का अवसीर गोलियां )

यह गालियाँ ववासारके इलाज में हुकमी श्रमर रम्बर्ता है बवासीर कितनी ही पुरानी हो खुनी

बृहत् आयुर्वेदीय औषध भागडार ( राजस्टर्ड ) जौहरी बाज़ार देहली ।

हो या बादी, कब्ज़ की शिकायत, मस्सों में चीस व चबक दर्द आदि इन सबका रका करके बहुत जल्द बवासीर को जड़ से नष्ट कर देती हैं। मूल्य २४ गोली मरहम की १ डिबिया २)

### रक्तार्श विमाचिनी गुटिका

यदि बवासीर का खुन बहुत जीर से आरडा हो तो इन गोलियों का सेवन करना चाहिय। इस से रक्त बहुत जल्द बन्द होजाता है। २४ गोलियों का दाम १)

### मरहम बवासीर

इसके लगाने से मस्से और गुदा नरम रहते हैं, दस्त आने समय तकलीफ नहीं होती, मस्सों व गुदा की सोजिश व जलन और फुलापन जाता रहता है। प्रति शीशी ॥)

# अग्निसन्दीपनी वटिका ( अजीर्ण का अनुभृत इलान )

श्रजीमा रोग देखने में तो एक साधारण सा साल्म होता है, परन्तु वास्तव में यह सब रोगों की जड़ है खाने पीन में श्रमावधानी करने से श्रक्सर बदहज्मों हाजाता है। जिससे कि मुंह का मजा घराब, खाने की तरफ किया न होना, छाती में जलने खड़ी २ डकारे, थोजन करने ही दस्त की राजन होना, पेट में गड़गड़ाहट का होना, जी मिचलाना, प्रकार, दिन प्रनिद्दिन कमजोगी का बहुने जाना, इन सब हालनों में हमारी श्राहत- सन्दीयन विद्या निहायत ही अवसीर है। चन्द राज के इस्तेमाल से कुन्वत हाजमा बढ़कर गिजा अच्छी तरह तहलील होने लगती है और आहार रस बनकर शरीर दिन भित दिन मोटा ताजा और बलवान हो जाता है। मृल्य ४८ गोली १॥)

### अमृत कर्पूर

( हैंजे की मुजर्ब उल मुजर्ब द्वा )

यह हमारे द्वालाने की तैयार की हुई जाद असर दवा है, जो क़रीब २ कुल घरंल, बीम।रियों का जो अक्सर वृद्दे, बच्चों श्रीर जवानों की होती रहती हैं पूरा इनाज है। अयः जा बीमारियाँ अचानक आक्रमण कर देती हैं - जैवं सब प्रकार के पेट के दृद्, की, हैचा, अफारा पेचिश, दौरा जुकाम, व्यासी, नजला वगेरह २ इसके इस्ते-माल से फीरन ही दर होजाते हैं। यह अमृत समान गुगाकारी द्वा है जिसकी एक बिन्द गने से उनगते ही फोरन जादू का असर दिखाती है स्वासकर बचाई ( सकामक ) गांग में निहायत मुकीद है। ताकम (पंतरा ) हैजा, मनारया बुखार के जभाने में जरूर इस्तेमाल करनी चाहिये। यह बह द्वा है जिसकी हर सनुष्य की पर से और भुमा-फिर को अपन साथ रखने की वहीं जरूरत है। यह दवा खामकर द्वें पसली,दुई-साना, दई-दाँत व दादः बद्धजमी, तिल्ली, अमन, हैजा, पंचिशः मगंडा, मिर में चक्कर ख्रम्लिपत्त इत्यादि में निहा-यत मुफीद है। मुल्य ॥) शांशी १२ शीशां ५)

बृहत आयुर्वेदीय ओपघ भागडार ( ग्रिन्टर्ड ) जोहरी बाजार, देहली ।

#### महा सुगन्धित उद्वर्तन

(निहायत खुराबृदार जिस्म पर मलने का उबटन)
यह उबटन सुहम्मद्शाह बादशाह के
लिये हुक्मा ने तैयार किया था, इसकी जिस्म
पर मल कर नहाने से जिस्म कुन्दन की तरह दम-कने लगता है, खोर जिल्दी बीमारियाँ पास नहीं
धातीं, खुशबू इतनी है कि आदमी मस्त हो जाता
है। क्रीमत की पैकेट १)।

#### बचों के कमेड़े की द्वा

कैसे ही ज़ीर से कमेड़े आते हो तीन चार सुराके देने से आराम हो जाता है। फी शोशी ॥)

समस्त समें रोग व रक्त सम्बन्धी सम्पूर्ण गोगी की

### एक मात्र दिव्य बूटी मुगाधित हरित हिमादजापणी

यह हिमालय पर्वन की उत्पन्न हुई । दृक्य गुगा बाली एक बूटी है जो कि रनार यहाँ संवन १६ ७२ से काम में लाई जाता है। इसके प्रयाग से जात-शक, कुछ जादि का विप जा कि फुटकर शरीर की सड़ा देता है, और कई २ पृश्तों तक बराबर चलता रहता है शीघ ही १ समार से जड़ से नष्ट हा कर काया का कुन्दन की तरह चमकाकर शरीर में छड़ रक्त का प्रवाह कर देता है। अप नक लाखों रोगा रोग से मुक्त होकर सुक्त ज्याठ से इसकी प्रशंसा कर चुके है। यह उपदेश (आतशक) सुजाक

(गनोश्या) अट्टारह प्रकार के कुष्ट, चम्बल, सूखा और गीली हर प्रकार की खारिश विसर्प, विस्फोट आदि दूर करने में रामबाण महौषधि साबित ही चुकी है। प्राथेना है कि आप भी बतौर नमून के कम से कम एक पाव बूर्टा जिस का मूल्य सिर्फ शो क० है, मंगाकर आजमाइश कीजिये। हमें पूर्ण आशा है कि आप एक बार में ही इसके गुणों पर मुख्य हो जायेंगे। इसका खा, पुरुष, बालक, युद्ध, सभी समान रूप से प्रयोग कर सकते हैं।

> एक बार १ मेर मंगान पर छ। रू० टाक-व्यय हर हानत में पृथक होगा ।

बुद्धि-बल वीय-बर्द्धक वयःस्थापक प्राचीन मुनियों का पैय

#### दाक्षासव

या

### "अंगूरों का गुद्ध रस"

यह शुद्ध साफ् अच्छे से अच्छे अंग्रंगे के रस से बनाया जाता है। यह सुबह शाम पायाना साफ् लाकर अग्नि का दीम करता है, इनके बल में १-१। सेर दृष्य राम्द छटांक यी रोज सहज में पच जाता है। रक्त बढ़ाने में, चेहरे को सुख कान्तिमान व तेजन्ती बनानेमें अपूर्व है,यह सभी अगूर सेवन करने बाने जानते हैं। केमिकल बांच करनपर मालूम हुआ है कि इसमे क्यारंजक (Harmo ddin) जो इस प्रकार की पाटान है जिसम आक्साजन, नाहट्रा-जन, हाइड्राजन, एवं लोह अश पाय जाते हैं, जा

बृहत् आयुर्वेदीय ओपय भागडार ( रिजस्टर्ड ) जौहरी बाज़ार, देहली ।

जीवन श्रोर रक्त-वर्धन के जिए ज्रह्मरी हैं, यही प्रोटीन जब रक्त में कम हो जाती है, द्राचासव इस कमी को प्रा कर देना है। वलवद्धक होने के कारण दिमाग्को 32 करता है. इसको बालक गृद्ध, स्त्री, पुरुष, युवः सब हो समान रूप में मेवन कर सकते है। यहर्, च्रय, खोंसो, श्वास नथा दुव-लता को महापांध है। देखने नथा खाने में, गुग्ग-लाभ में, गन्य-स्वाद सं, भाकपक, मन-माहक, दिल पसंद है। कामत था। कुं बोतल (४० ताला) पोस्ट खर्च अलग।

सा भर में ऋविक पर खास भाव होगा।

### बच्चों के सूखिया मसान की मुजर्रव दवा रब गर्भ गुटिका

ये गोलियाँ जवाहर, सीना, अम्बर, मुश्क, शेरनी का दूव और बहुत किस्म का जड़ी बृटियाँ मिलाकर तयार का जातो हैं ५० दिन के खिलाने से बचा कैसा हो सूख गया हो, तन्दुकम्त होकर हुए पुष्ट हो जाता है। ५० दिन के खिलाने और जिस्म पर लगान की द्वा का मूल्य १०)।

#### अप्रमगल तंत

वच्चे हो जनवान से पहले इस तंन की मनना चाहिया, वच्चे क जिस्सा पर जिल्हा बामारी नहीं होगा, जिस्स कुत्दन का तरह चमकने लगेगा। बचा तक्तिवर अपर छुटील होगा। सब अंग खूब पुष्ट हो जीवन, कुटबत दिनाग, अच्छा याददाशन चगर सारी तक्ष कायन पहले। इस सिकारिश करते हैं कि हर बच्चे वाला इस शीशी की खरीद कर फायदा उठावे। कीमत फीशीशी १)

### शिशु सुखदा बटिका

(हबूब हाफ़िज़-सेहत बचगान)

इन गोलियोंके हमेशा इस्तैमाल करने से वरुंच बिल्कुल तन्दुकरत रहते हैं और हालत बीमारी में इस्तैमाल करने से बोमारी दूर होकर बरुंच मोटे ताजे हो जाते हैं। निहायत अजीव व ग्रीब गालियाँ हैं। कीमत १०० गोली की १।)।

#### बचों के लिये एक सफ़्रफ़

जिससे रोजाना ।नयमित रूपमे दस्त आता है । पेट साफ रहता है । कीमत एक डिविया ।) ।

#### कुमार कल्याणक कपाय

श्लंबम नाशक

वशों के कफ, खाँमी, पसली गेग, बुखार, सनसन्त. जुकाम आदि व्याधियांमें निहायत मुकांद है। कीमत एक शीशी (1) डाक व्यय पृथक ।

### स्त्रियों की खास बीमान्यिं की चन्द मुर्फाद दवाएं पदरान्तक बटिका

(योनि माग से सफ़दे के गिश्ने को राक्रने की लाजवाब द्वा)

यह व्याधि जियों के नियं निहायत ही स्वीकनाक है। परन्तु वे इस व्याधि को शरम की

३६८ आ वेदीय औपच भागडार (रिजस्टर्ड ) जोहरी बाज़ार, देहली ।

वजह से नहीं बतातीं। इस ब्याधि के रहने से स्त्री
गर्भ धारण नहीं कर सकती, और रोज़ व राज
कमजोर होती जाती है। कमर और पेट्ट
में हमेशा ददं सा रहता है, भूख मर जाती
है। चेहरे का रंग फीका सा हो जाता है धीरे धीरे
दुबलापन आ जाता है। अरत में तपेदिक होकर
स्त्री की मृत्यु हो अती है। ऐसी हालत देखकर
उसके पति को चाहिये कि हमारे औपधालय से
अपनी प्राण श्रिया को "मद्रशानतक बटिका"
फीरन मँगाकर सेवन करावे जिसके एक माह के
सेवन से स्त्री तन्दुकरत और ताक्तवर हो जायेगी।
चेहरा ख़ुशरंग और पुर रोनक हो। जायेगा। ६०
गोली की डिबियाका मृल्य शा।) डाक ब्यय प्रथक।

### सीभाग्य वटिका मासिक-धर्म की खरावियों की लाजबाब दवा

श्रवसर श्रीरतों को मासिक धम । माह्वारी)
में नला में संख्त द्दं हुआ करता है। जिसमें बह
पत्ररा ६ उठतों है। साह्वारा बहुत कम या
बिलकुल नहां होता। श्रीर अक्सर माह्वारी के
दिन गुजरने के पश्चान मिकदार से बहुत अधिक
हो जाती है। कह्या को शुरू में हा श्रीधकता से
खून गिरता श्रीर कह राज तक जारी रहता है।
इस अकार को ज्याधियों गम का गिराने बाली
होती है और गम कदापि नहां रह अकता। इस
बीमारी से छुटकारा पाने के लिये हमारी तैयार
करदा 'सोभाग्य बिटका' माहवारी के दिन से

एक सप्ताह पूर्व सेवन करनी चाहिये। इसके सेवन करने से मासिक धर्म के मुताल्लिक कुन व्याधियाँ नष्ट हो जाती हैं। यदि दर्द के समय खाई जावे, तो दद फीरन बन्द हो जाता है। कैसी ही पुरानी बीगारी क्यों न हो उपयुक्त तरीके से ३ मांस तक सेवन करने से पूर्णत्या आराम हो जाता है।

मृत्य ४८ गोलियों की एक शोशी का ६) रुपये। डाक व्यय पृथक।

# वंभ-स्रियं की चिकित्सा

शास्त्र में अकित्म का ऑक मानी गई हैं जो श्रीलाद पैदा करने के नाकाबिल हैं। यदि इनकी चिकित्सा की जाय तो ५० प्रतिशत श्रीलादवाली हा सकती है। ऐसा स्त्रियों के वास्त बड़ी मुजरब द्वाह्याँ हमारे श्रीपधालय में मीजूद हैं। जा साहब हमारा इलाज कराना चाहें, वह हमसे पत्र ब्यवहार करें।

हम चन्द् सवालात द्रायाक्त करने के बाद इस बात का माल्म करके कि श्रोरत किस किस्म का बाक्ष हे उसके मुताबिक द्वाई तज्ञवाज करंग।

बृहत् आयुर्वेदीय औषव भागडार (रिजस्टर्ड) जौहरी बाज़ार, देहली।

### ज्वर मुसार

ये गोलियों सब प्रकार के नवीन और प्राचीन तथा वारी से आने वाले ज्वगें को जड़ से हुर कर देती है। इनके संवन से भूख और शक्ति दिन प्रति दिन बढ़ती जाती हैं, चित्त प्रसन्न हो जाता है, मले-रिया के दिनों में स्वस्थ मनुष्य भी १ गोली पात-काल दुध या गरम जल से लेते रह तो मलेरिया के आक्रमण से बचे रहगे, इनसे किसी प्रकार खुशकी या गरमी नहीं होती। मुल्य २५ गोली का ॥)

#### प्रमेह नाशक वटी

प्रमेह (जिरयान) २० प्रकार का होता है. जिसमें सबसे भयक्कर सञ्चमेह है, इस रोग में पेशाब में शिक्कर स्थित है, इसिलये पेशाब में चीटियाँ लगने लगती हैं, प्यास ज्यादह लगतो है। इसजोरी दिनोंदिन बढ़ती जाती है। हमारे यहाँ इस बीमारी के लिये खास तौर पर गोलियाँ तैयार की जाती हैं कुछ दिनों के सेवन करने से पेशाब में शिक्कर खाना बन्द हो जाता है और गई शिक्त फिर खा जाती है। मुल्य ४८ गोलियों का ४)।

### नमक मुलेमानी

जायका निहायत मजेदार है, हाजिम इस कदर है कि पेट के दर्द, बन्द हैज़ा, चुमन बगैर: बदहर जमी के गंगों की स्थानन फानन में ही दूर कर देता है, और स्थनुपानोंक साथ श्रांत्यों, मेदे व पुरुषत्वकी नाकृत देना है, गाठिया, बुखार, खाँसा दमा स्थादि बहुत स गंगों में गुग्यदायक है। चेहरे के गंग की निखारता है, जो शाशा :=)

#### ददुनाशक

नया पुरान। कैसा हो दाद हो इस दवा के दो तीन बार लगाने से जड़ में आराम हो जाता है, किसी तरह की जलन व नकलीफ़ नहीं होती। वीमत । शीशो।

#### दन्त शुल नाशक

इसकी दो तीन बुँदें ही दाँत में या डाढ़ में लगाने से फौरन आराम हो जाता है। कीमत की शीशी ()

### कर्ण शुल नाशक

कान में चीस हो या कुन्सी, या पीप निकलती हो या सूजन हो दो कतरे डालने से आराम हो जाता है। और इसी नरह दो चार दिन डालने से बिलकुल आराम हो जाता है। फी शीशी।)

### दन्त मुक्ताकर मंजन

इस मजन के सेवन से दाँतों की सब प्रकार की तकलीफे दूर होनों हैं, बत्तांसा मानी की तरह चमकने लगती हैं, दांत या मसूड़ों में कैसा हो सकत दर्द हो, दाँत हिलते हों, मसूड़े फूल गये हों. पीप व खून आता हो, बरबू आनो हो इत्यादि बीमारियों को यह मंजन लगाते ही फायदा करता है, इसकी मजेदार खुशबू बड़ी ही उत्तम हैं। कीमत।)

#### कोकिल कएड

त्राकात् को उत्तम बनाने की श्राजीबागरीस गोलियाँ हैं, ज्यास्त्रानदाताओं श्रीर गर्वेयों की जान हैं। की शीशी।)

वृहत् आयुर्वेर्दाय औषव भागडार ( रिजस्टर्ड ) जौहरी बाजार, देहली।

### महा सुगन्धित दशांग धृप

थोड़ी सी धूप लेकर धूपदान या अगरदान में डालकर रख दीजियं बहुत जल्द तमाम कमरे में खुशबू फैन जायेगी, जहाँ २ यह खुशबू पहुँचेगी तमाम किस्म के जहरीले मादों से हवा को शुद्ध कर देगी। जहाँ पर ताउन, हैजा, चेचक, मलेरिया बुखार बगैरा २ रोग फैल रहे हों वहाँ के निवासियों को इस धूप का मेवन करना बहुत जरूरी है। इसकी खुशबू निहायत दिल लुभाने वाली है कीमत की पैकेट।) की सेर २)

#### करामातो टिकिया

सब प्रकार के फोड़े, फुटिसयों को दूर करने । में जाद का काम करती है, केवल एक बार लगाते । से ही फुटिसयाँ राख की तरह डड़ जाती हैं: कीमत । २० टिकिया का पैकट ()

#### सुगन्धित बाटाम नेल

यह तेन बादाम की गिरियों की कुछ खाम सुगान्धित इच्यों में भावना देकर देशी तरीके पर तैयार किया गया है। इसकी सिर पर मलते छीन कुछ बूद मुंचने से दिल व दिमारा की बड़ी प्रकृत्रता होती है, दिमारी कमजारी, सिर का दर्द सिर का घुमना, नींद का न खाना, कानों की भिन भिनाहर खाँखों के खागे निरमिर दिखाई देना, खाँखों भी कमजोरी, रनौंधी, नाककी खुरकी, पुराना जुकाम, दाँतों का ढीलापन, वेवक्त बालों का सफेद होना. चेहरे का फीकापन बगेरा २ दुर होते हैं। दा २ बुदें कुछ खारी तक कानों में डालने में कान की खुश्की और बहरापन दूर हो जाता है, जिस्म पर मलने से बदन की ताकत बढ़ जाती है बबाई बीमारियों का असर नहीं होता। फालिज, लक्ष्याः कम्पवाय, मृगी, बीबानगी, और भूल की बीमारियों में सिर पर मलना बहुत फायरेमन्द है।

### महा सुगंधित केश वर्धन तेल ( नाल नदाने नाला खुशनुदार तेल )

बालों को गिरने से रोकता है। श्रीर मज्यूत करता है। इसके लगाने से बाल बहुत जल्द बढ़ जाने हैं। निहायत नरम, काले श्रीर चमकदार हो जाने हैं। कीमत की शी० एक रूपया १) डाक व्यय पृथक।

#### चन्द्र बदन

चेहरं के मुहासों भाई आदि को हूर कर सुन्दर बनाता है। मुन्य॥)

#### भुवासागर चटनी

यह एक निहायत हाजिस, कब्ज कुशा और बहुत ही लजीज नरम चुर्ण है केसी ही बदहज्मी हा एक साशे भर चाटने हा डकार आ जाती है, भुख लग आती है, तिबयत निहायत खुश हो जाती है। प्रति पैकट।)

#### नयन पायुष बिन्द्

इस दवाके दा तीन बिन्दु दिन में दो तीन बार आँग्व में डालन से आँग्व का दुःखना, आँग्व की कड़क, रङ्क, बक, खुजली, सूजन, रोहे, सुखी, वगैरा दुर होने हैं कामत फी शीशी।)

बृहत् आयुर्वेदीय औषध भागडार (रिजस्टर्ड ) जोहरी बाजार. देहली ।

#### अपस्मार नाशक

( मृगी की नायाब द्वा )

यह मुगी की अवसीर दवा है, इस के कुछ है दिन सेवन करने से यौवनावस्था से पहले की मुगी निश्चय जाती रहती है, सिर पर लगाने और खाने की दवा मृल्य ७) क०

#### कगठ माला की दवा

इस बीमारी की अवसर लोग जानते हैं। इस में बेर से छोटी और बड़ी २ गाँठ गले में हो जाती हैं और निहायत तकलीफ होती है। इसके लिय हमारे यहाँ की द्वा इस्तेमाल करने से यह मर्ज बहुत जल्द दूर हो जाता है। खाने लगाने की दोनों दवाओं की कीमत ४) डाक व्यय पृथक।

### ेल मंरक्षक मकरध्वज वटी

#### (ताउन से बचने के लिये बेभिसाल दवा)

इस मजं को वर्गान करने की कुछ जरूरन नहीं।
तकरीवन सबही मनुष्य इसे समभते हैं। यह एक
ऐसी संहारक ज्याधि है, ज्याधि क्या विलक जान
की दुश्मन है कि जहाँ जब यह फैलने लगती है
खान्दान के खान्दान ग्रास्त और गाँव के गाँव तबाह
कर देती है। जहाँ इस न्याधि ने एक बार अपना
बीज बी दिया तकलाफ ही देती रहती है। हमारे
कारखाने में इस ज्याधि की रोकने के लिये
"एतेग संरक्षक मकरखन बटी" नाम वाली
गोलिया नेयार हाती है। जिसे संकामक ज्याधि के
दिनों में एक एक मुबह हात्म इस्तेमाल करने रहने

से प्लेग का असर हरगिज - नहीं होता । तजुर्बे ने साबित कर दिया है कि इसमें उत्तम दवा इस मर्ज को रोकने के लिये दूसरी नहीं होगी। अलावा इस के निहायत मकद्वी दिल व दिमाग है। बड़ी २ असवी कमजोरियों को दूर करने में रामबाग है। मृन्य १६ गो० का १) डाक व्यय पृथक।

#### शोथ नाशक

इसके लेप करने से हर प्रकार की सूजन, दर्द, गाँठ ऋषि को बहुत जल्द आराम हो जाता है। यहाँ तक कि प्लेग की गिल्टों में भी बड़ी मुफीद है। कोमत भी शो०॥) डाक ब्यय चार शी० तक

### शेरनी के दूध का मुर्मा

( रिजस्टर्ड )

यह हमारे औपयालय का तैयार किया हुआ अजीवी गरीय मुद्द ख्यात सुर्मा है। इसमें शेरनी के दृथ के लियं जी मुल्क आसाम के भीलों से मिलता है वड़ी महनत करनी पड़ती है। मोती सुरा, फीरोजा लाल, बदस्यशानी, जमकंद, याकृत अकीक यमनी, लाजोक चौदी, मोना मक्खी दहना फरंग जाफान, मुश्क, अस्वर,मामीरा चीनी, भीमसैनीकपुर सगवसरी सुर्मा अस्फहानी बगेरा २ ४० कीमती अद्वियात से सबज् हरड़ के पानी में ६ माह तक कॉम के सिजबटे पर पीसा जाता है, बाद असे द्राज तक नीम की जह को खोखला कर के उसमे रखते है, इसके बाद दो बार पीसकर

बृहत् आयुर्वेदीय आपय भागडार ( रिजस्टर्ड ) जौहरी बाजार, देहली ।

काम में लाया जाता है, इसके इम्लेमाल से बहुत दिनों का अन्यापन वशर्त कि आंख की बनाबट में बिगाड़ न आया हो अच्छा हा सकता है। इस के सेवन करने वाले की आंख का कोई रोग नहीं हो सकता, दृष्टि की साफ, तेज, और गेशन करता है, ऐनक लगाने की आदत खुड़ा देना है आंखो की कमजोरी, शुक्त मातिया विन्द, आंखों की धुन्ध, जाला, फूला, खारिश, ढलका, नाखुना वराग आंख की बीमारियां में मुजरंब हैं। मूल्य की नाल ७) नमने की शीशीं ॥)

### मोतियों का सफ़द सुमी

या सुमी हमने उन साहितान के लिये नियार किया है। के जा काला जुनमा लियाना पानद नहीं करते, इसके जनाम गुरा शेरना के दूब बाल सुमें के मानिन्द ही हैं। मृत्य का नाल असमृत की शीशी।

### मदनराज सुगन्ध

प्यारी, धीमा व माठा र मस्त करत जाला सुशतृ का सकाना । मृत्य ॥ शाशी

### सुन्दर रारीर

जिस्म को खुशबृद्धर, चमकी**ला व सु**न्दर बनाने बाला उबटन । कीमत ।)

#### बीमारों की बाबत आवश्यकीय पश्न जिनके उत्तर पूरे ध्यान से तहरीर में लाकर हमारे श्रीषधालय को भेन देने चाहिये।

१—धीमारी कितनी देर से हैं और क्यों कर आरम्भ हुई ?

२ - बीमार स्त्री है या पुरुष, यदि स्त्री है, तो गर्भवती है या नहीं ?

३ --बोमार की श्रायु कितनी हैं ?

अ—बीमार क्या काम करता है ?

७ — बीमार को आदतें कैसी है, गर्म या ठंडी बीजें संवत करते म क्या असर होता है ?

् ६ - वीमार में नाकृत कैसी हैं, शरीर माटा हे या द्वला ?

9 - आयं का रंग कैसा है, जवान का जायका आरंगन कैसा है ?

८ -दस्त साफ आता है या कब्दा रहता है।

नंद का क्या हाल है ?

१० — पंताब रात दिन में कितनी बार आता है, कक अर या जलन से तें! नहीं आता ? रग केमा शता है, ठड़ा होता है या गरम ?

११ -भृष्य प्यास कैसा है १

र्-्-भोजन में क्यार वस्तुएं शासिल हैं ?

१३ वंध्यानको किसी नशा**की आदत तो**। , तेहि १

२४ - वेदा, डाक्टरा, हकीमों ने जिनका इलाज । आपने करणा मंग का क्या नाम आपको बताया ।

१ - क्या बामारी खान्दानी है ?

१६ — ञ्रलावा इसके जो जो बाते आपको अपन मरीज की बावत झात हों तहरीर फम्मावें। नार: —पश्न लिखन की आवश्य कता नहीं केवल नम्बर देखकर उत्तर लिख दें।

बृहत् आयुर्वेदीय औषध भागडार ( र्राजस्टर्ड ) जैाहरी बाज़ार, देहली ।

#### सिद्ध सालव पाक रसायन (स्वस्टर्ड)

यह रसायन वीर्य-सम्बन्धी सब दार्थों को दूर करके उसे शुद्ध पुष्ट एवं सन्तानोत्पत्ति के योग्य अमोघ बना देती है। धातु दीर्बस्य रोग से श्राकान्त होकर जिन मनुष्यों के रस, रक्त माँस शुकादि सम्पूर्ण धातु चीए हा गए हैं तथा बीर्य के पतला होनेसं स्वप्नदोष, शोधवनन, इन्द्रिय की शिथिलता, पुरुपत्वडानि, ऋषिक शुक्रपात तथा ध्वजभङ्गादि रोगों के कारण से इर्नाद्रय-सुख रहित वंशलोप की आशक्का से समय व्यनीत कर रहे है, उन्हें इस रसायन का सेवन करना संसार सुख एव सन्तानोत्पत्तिकं ात्तव अतीव सुस्वकारो हागा । यह देवा चौषांव बृद्ध पुरुषो को भो युवा नृत्य शक्तिमान् बना देतो है, दिमारा का बड़ी ताक़न देती है। इस कारगा उन लागों के लिए जिन्हें दिमागी काम करना होता है जजों, बैरिस्टरों, वर्कालों, मास्टरों. कवियों विद्यार्थिया ,क्लर्का , एव पत्र-सम्याद्की, व्याख्यानदाताचा चादि का वड़ी सुखकारी वस्तु है। हर तरह की निवंतता का दूर करने वाली एक उत्तम स्वादिष्ट अनुपम ख्राक है। सृत्य एक संग् ७) ६० १ पाव का डिल्वा २) ६०।

### सिद्ध मुपारी पाक रमायन

( रजिष्टढ )

यह दिञ्योप(घ ४० बहुमूल्य दवाआसं तेयार हाता है। योग रागा के दूर करने में इसके समान दूसरी आष्य नहां है। सहस्रा ग्लेयों जो याति-रागों का बदना सहते ५ लाचार हागई था जिन्ह गण रहने का आगा हा ने रहा था, जा स्ना-समाज में लाजात स्त्रोर दुर्शस्त होता था, जिन्हें अपनी जिन्द्गी भार माल्म होनी थी, जो सन्तान के लिए रात दिन कुछ्ती धीर तरसती थी धाज वही सौभाग्यवती देवियाँ हमारे सिद्ध सुपारी पाक रसायन के गुण्गान कररही हैं। जिसके सेवन से व खंतप्रदर, रक्तपदर, मासिकधर्म की अनियमितता, बार २ गम का गिरना, बालक हो-होकर मरजाना तथा एक बार बालक हाकर फिर न हाना, दौर की बीमारा (हिस्टोरिया) शारीरिक निर्वलता, दुवलता, सिर, कमर, नलोंका ददं, सिरका प्रमना, चहरं का फीकापन आदि अनेक रागों को यन्त्रणा में ब्रुटकर स्वस्थ और पुष्ट हाकर कई २ बालकी की माताए बन गई है। इसके सिवाय जापे की बामारा, युद्दापे की कमजारा में बड़ा मुकाद है। मूल्य एक सर ७) ६० १ पाव का डिडबा २) ६०।

#### सिद्ध कस्तूरी रसायन तिला (राजस्ट )

यह एक प्रकार का सुगान्धत तल है जो अनक बहुमूल्य औष्ध्या द्वारा बड़ा महनत से तैयार किया जाता है, इसका पूरा २ ताराफ करन के लिये सभ्यता आज्ञा नहीं दता, इसालये कवल इतना ही बना दना प्याम हागा, कि इस का मालिश मिलिझिन्द्रिय का दुबलता, ।शांथलता, छाटापन, टेट्रापन व पतलापन दूर हा कर, झन्द्रिय में हड़ता, म्यूलता, और दाधता आ जाता है, जिससे कि बृद्ध मनुष्य भा युवा क समान आनन्द प्राप्त कर सकता है। सन्तानात्पान तथा गृहम्थ सुख स वाचत (मह्म्म) हुउ अनक पुरुषा न इसम आशातात लाग प्राप्त करक इस दिव्यापाथ का मुक्त करट स प्रशासा का है। मृल्य प्रात ता० १०) व माश की शांशा हा।

बृहत् आयुर्वेदीय अपिय भागडार ( र्राजस्टर्ड ) जीहरी बाजार, देहली ।

शास्त्रों में लिखा है कि पहिले जमाने में राजा. महाराजाओं के अलावा रईसीं, नवाबीं एवं उच श्रेणी के मनुष्यों के भी सेकड़ों स्त्रियाँ हुवा करनी थीं. सर्वसाधारण मनुष्य जो धनसम्पन्नया खर्चा बदीरन करसक ने वाले थे. इच्छानुकुल स्त्रियां रखसकते थे। शासक लीग भी इसमें कोई हस्तव्य नहीं करने थे। आजकल प्राय: मनुष्य प्रश्न किया करते हैं क्यों जी आधुनिक समय में मनुष्य एक श्री से अधिक क्यों नहीं रखसकता और शासन अधिकार (Govt. Authority) भी इसकी आज्ञा क्यों नहीं देता?

इसके कई कारणों के अलावा एक सब से बड़ा कारण यह भी है कि आज कल मनुष्य शिथिलाचारी होगय है हह प्रतिशत मनुष्य ऐसे मिलेंगे जिन्होंने अपनी बाल्यावस्था एवं युवावस्था से, हस्त सेथुन, गुद्द-सेथुन, अतिमेथुन, इयादि अनुचित कार्यो द्वारा अपने बलको जीए कर्रालया है. जिन्हों के बीर्य से उत्तम सन्तान पैदा करने की शिक नहीं रही। आज कल मनुष्यों में इस शिक हीनता को देखते हुए ही शासकों ने एक खी से अधिक रखने की आजा नहीं ही। अस्तु

### यदि आप हमारी

## "कामदेव रसायन पिल्ज"

### का सवन करें।

हम विश्वास प्रवक्त कहते हैं कि ऐसी कोई बात नहीं कि आप पहिले जमाने जितनों शिक्त प्राप्त न कर लें। विल्कुन जीमा शिक्त वाले मनुष्य जो सर्वथा नपुत्सक होगये थे और पुरुष समाज में लजाने थे इन गोलियों के सेवन स महाधलवान बन गये हैं और उड़े कई दीर्घ जीवी सन्तानों के पिना होगये हैं. और मनुष्यों की भान्ति हमभी अपनी द्वा की बहुत प्रशंसा कर सकते हैं परन्तु हम इसे निर्धिक सममते हैं। जब आप इसे सेवन करेंगे यह स्वय ही अपने गुमा कह देगी। मृत्य प्रति शीशी (४८ गोली) २) डाक व्यय प्रथक

मिलने का पना बृहत् अयुर्वेदीय औषध भण्डार, चान्दनी चौक, देहली।

## सिद्ध सालव पाक रसायन

यह रसायन वीये-सम्बन्धी सब दोषों को दूर करके उसे शुरू पूछ पूर्व सन्दानीरपत्ति के योग्य असोष वना देवी है। धातु दौर्वस्य रोग से भाकान्त होकर जिन मनुष्यों के रस, रक्त माँस शकादि सम्पूर्ण धातु चीण हो गए हैं तथा बीवें के पतला होनेसे स्वप्नदोष, शोधपतन, इन्द्रिय की शिथिलता, पुरुषत्वदानि, अधिक शुक्रपात तथा ध्वजभङ्गादि रोगों के कारण से इनद्रय-सुख रहित वंशालोप की आशिष्ट्रों से संमय व्यतीत कर रहे हैं. उन्हें इस रक्षायन का सेवन करना संसार सुख एवं सन्तानोत्पत्तिके लिए बतीब सुखकारी होगा। यह देंबी औषधि वृद्ध पुर्वर्षों को भी युवा तुल्य शक्तिमान् बना देती है, दिमारा को बड़ी ताक़त देती है। इस कारण उन लोगों के लिए जिन्हें दिमागी काम करना होता है जजों, वैरिस्टरों, वकीलों, मास्टरों, कावर्थी विद्यार्थियों ,क्लकीं , एवं पत्र-सम्पादकों. व्याख्यानदाताचा चादि को बड़ी सुलकारी बस्तु है। इर तरह की निर्वलता को दूर करने बाली एक उत्तम स्वादिष्ट अनुपम खूराक है।" मूल्य एक सेर 6) ६० १ पान का डिन्ना २) ६०।

## सिद्ध सुपारी पाक रसायन

यह दिन्योपिध ४० बहुमूल्य दवाओंसे तैयार हाती है। यानि रोमॉ के दूर करने में इसके समान दूसरी श्रीषध नहीं हैं। सहस्रों स्त्रियों जो योति-रागों को वेदना सहते २ साचार हागई थीं जिन्हें गर्म रहने की आशा हो ने रहा थी, जो स्त्री-समाज में तिन्नत स्वीर दुं:सित होतो थीं, जिन्हें अपनी जिन्दगी भार मासून होती थी, जो सन्तान के लिए राव दिन कुदती और तरसती थीं आज बहा सोभारक्वती देवियाँ हमारे सिख् हुवारी पांच

रसायम के गुग्गान कररही हैं। जिसके सेवन से ने स्नेत्रकर,रस्वपदर, मासिकवर्म की अनिविभिन्नता, बार २ गर्व का गिरना, बालक हो-होकर मस्त्राना तथा एक बार बालक होकर फिर न होना, दौरे की बामार) (हिस्टीरिया) शारीरिक निर्वत्तता, दुबंबता, सिर, कमर, नलोंका दर्व, सिरका चूमना, चेहरे का फीकावन आदि अनेच रागों की यम्त्रगां से खूटकर स्वस्थ और पुष्ट होकर कई २ बालकों की माताएं बन गई हैं। इसके सिवाब जाये की बोमारी, बुदापे की कमजारी में बढ़ा मुफोद है। मूल्य एक सर ७) द० १ पाव का विक्या २) द०।

#### सिद्ध कस्त्रश रसायन तिला (संक्ष्यं)

यह एक प्रकार का सुगन्धित तेंस है जो अने के बहुमूल्य कीय्यियों द्वारा बड़ी मेहनत से तैयार किया जाता है, इसका पूरी २ ताराफ करन के सियं सम्यता आज्ञा नहीं दता, इसकियं केवल इतना ही बता दना प्योप्त हागा, कि इस का मालिश स लिज्जन्त्रिय की दुबलता, शिथलता, छाटापन, टेदापन व पत्तनापन दूर हा कर, इन्द्रिय में ददवा, स्थूलता, और दाघता आ जाता है, जिससे कि वृद्ध मनुष्य भी युवा के समान ज्ञानन्द्र भाम कर सकता है। सन्तानक्ष्मित तथा गृहस्थ सुक्स स विचत (महरूम) हुव अनक पुरुषा ने इससे आशातांत लाभ प्राप्त करके इस दिन्यापि का सुक्त करठ स प्रशासा को है। मूल्य प्रति तो० १०) ३ मारो की शीशो शा)

बृहत् आयुर्वेदीय औषध भागडार ( रिजस्टर्ड ) जौहरी बाजार, देहली ।

शास्त्रों में लिखा है कि पहिले जमाने में राजा. महाराजाओं के अलावा रईमी. नवाबी एवं उच श्रेणी के मनुष्यों के भी सेकड़ी खियाँ हुवा करनी थीं. सर्वसाधारण मनुष्य जो धनसम्पन्नया खर्चा वर्दाशन करमक ने वाले थे. इच्छानुकुल स्वियां रखमकते थे। शासक लोग भी इसमें कोई हम्नचेप नहीं करने थे। आजकल श्रायः मनुष्य प्रश्न किया करने हैं क्यों जी आधुनिक समय में मनुष्य एक श्री से अधिक क्यों नहीं रखसकता और शासन अधिकार (Gov). Authority: भी इसकी आजा क्यों नहीं देता ?

इसके कई कारणों के खनावा एक सब स बड़ा कारण यह भी है कि खाज कल मनुष्य शिथिलाच रो होगये हैं ८८ प्रतिशत सनुष्य ऐसे मिलेंगे जिन्होंने खपनी बाल्यावस्था एवं युवावस्था में. हस्त मेथुन, सुद्द-मेथुन, खानिमेथुन, इसादि खनुचित कार्यो द्वारा खपने बलको जोगा कर्रालया हैं. जिन्हों के बीर्य में उत्तम सन्तान पैटा करने की शिक्ष नहीं रही। खाज कल सनुष्यों में इस शिक्ष हीनता को देखते हुए ही शासको ने एक खी से खाल रखन की खाजा नहीं ही। खम्नु

### यदि आप हमारी

## "कामद्व रसायन पिल्ज"

#### का सवन करें।

हम विश्वास प्रवक कहते हैं कि ऐसी कोई बात नहीं कि आप पहिले जमाने जित्ना शिक्त आप न कर ने । विल्कुल झीग शिक्त वाले मनुष्य जो सबधा नपुत्मक होगये थे ख्रीर पुरुष समाज में लजाते थे इन गोलियों के सेवन से महावलवान बन गये हैं ख्रीर कई कई दीर्घ जीवी सन्तानों के पिना होगये हैं. ख्रीर मनुष्यों की भातित हमसी ख्रपनी द्वा की बहुत प्रशंसा कर सकते हैं परन्तु हम इसे निर्थंक सममते हैं । जय आप इसे सेवन करेंगे यह स्वयं ही ख्रपने गुगा कह देगी । मृल्य प्रति शीशी (४८ गोली) २) डाक व्यय प्रथक

मलने का पना बृहत् अयुर्वेदीय औषध भण्डार, चान्दनी चौक, देहली ।

## आपन मुना है

क्या ?

## संसार यही पुकार रहा है ज्वरदावानल ! ज्वरदावानल !! ज्वरदावानल !!!

# क्या आप जानते हैं ? ' जवरदावानल क्या है ?

यह मलेरिया, नव, जीर्ण, एक तरा, नेडया, चौथैय्या इत्यादि सर्व प्रकार के खरों, वर्षी की बढ़ी हुई तिली. ।जगर एवं कमल वाय (पीलिया) त्रादि के लिये एक मात्र त्र्योपध हैं ।

यही नहीं

### ज्वरदावानल

ाक उच्च श्रेमा का शास दायक (Tone) व्योषय भी है। इस के संवत स शरीर में नवा सक्ष्येदा होकर (रक्ष स्मृतना (Nachon) जो शक्षि हीनताका प्रधान कारमा है, की निवेसता शीव दुर हाजाती है शरीर हुए पुष्ट एन कान्तिमान होजाता है।

### चिकित्सक लोग

टमें वहीं मंख्या में मंगवाकर अपने मंगीजी पर प्रयोग करते हैं, श्रीर बड़ा गुगाकारी पाते हैं। साज कल मलेरिया का मीमम भी है। इस लिये जबरदोतानल मंगाकर कीरत ही इसका मैतन आरम्भ करहें, ताकि आप मलेरिया से बिल्कृत सुरक्षित रहणके। सृध्य प्रतिशीशी ॥) प्रति दर्जन द्वाः डाक व्यय प्रयक

मिलनेका पना-बृहत् आयुर्वेदीय आषधभण्डार, जाहरी बाज़ार, देहली।

जीवन सुधा

JIWAN SUDHI

DELHI.

शिशु रोंग विज्ञान



### विषय सूची

क्रमांक लेख	<del>युष</del> ्ठ	क्रमांक लेख	पृष
१शिशु (कविता)	9	२ <b>१ — गण्यों</b> का ज्यायाम	922
२—निवेदन	<b>ર</b>	२४वर्षो का स्नाम भीर उनका वज़न	१२ई
<b>३</b> —सम्पादकीय	₹	२५ डिप्बीरिया (गलरोग) चौर उसका टीव	0 . 7
४—नवजात-चिचु	£	२६ — काली खांसी (हूपिंग कफ़) उसकी	
५ — शिशु-स्वास्थ्य	93	चिकित्सा	988
≰—शिशु-पालन	42	२७रोबा <del>ण्सिका</del> चौर मसूरिका	994
७ वल रोग एवं उनकी चि	किल्सा २६	२८वर्श्वी का कम्धलशन्स (कम्प वायु)	389
८ - बालोपयोगी कृत्रिम भोज		२१ — भूष्ता रोग की धनुभूत विकित्सा	988
वस्त्र ग्राधुक्त दग्रेश	97	३०मन्यर ज्वर (टायफीर्ड्फीवर) उसकी	•
६ - वाल-जन्म, नालच्छेदन,		चिकित्सा	680
वासक का स्तन शोध।		<ul><li>३१—यीतना वा चेचक तथा उसके अनुभू</li></ul>	
		प्रयोग	949
90-बालरोग विश्वान, मृतवत् परिचर्या, बालरोग परीष		<b>६२ मात् शक्ति (कविता)</b>	940
वर्जीके चौषधि देनेके वि		३२माता की महिला	945
११—ताबुकदटक रोग चौर उस		३३टीका (वैक्सीनेशन)	950
चिकित्सा	चा चतुद्धत €०	३४ बुल्लिका सम्बद	9€4
	-	व ५ शिशुं रीगी वर चलुभूत प्रयोग	960
१२मातृ दुग्ध चौर शिशु स्व		३६शीतला रोग पर चलुभूत प्रयोग	900
पान की∤विधिः व उसके		३७ बूखा रोग का डाक्टरी मतानुसार	
कृतिम चाहार द्राचादि	41	इङ्ग्रासिय चनुवाद सीक्षत वर्षन	91919
,— वानातिसार <b>चौर</b> चिकित	हा ८४	३८मसाम रोग	999
18-बालगोच रोग भीर अस	सो नुबन्धिन्छ।	क <b>्नाम्यू भागानम् (अ</b> स्तिष्क जन संचय)	
१५-वर्जी का हेज़ा तथा गर्मी	के दस्त ६३	४० - बर्जी के सामान्य रोग उनकी चिकित्य	
<b>१६—वाल</b> रोग	£4	५१ रिकेट्स	748
१७-चित्रु सप्तक (कविता)	103	<b>४२ वर्षों का कमेड़ा (आव</b> य)	200
<b>1</b> ट—दांत निकलना	908	খৰ কৰত যালুক (শীল্বক)	201
<b>१६ — बच्चों का यकृत्</b> (किगर) वं	तेग <b>१०</b> €	४४ नेत्र रोगों पर चानुसूत प्रयोग	204
२०वास कामला उदर धूल, स		अप है किंचु (संस्थित)	288
विश्वचिका, कांच निकल	•	<ul> <li>श्रिकु-पासन और हमारी धूनें</li> </ul>	482
२१ उत्कृत्मिका रोग उसकी		as द्वाच वर्धक चनुसूत प्रयोग	38€
चिकित्सा		BC सम्बादकीय	2 <b>8</b> 0
२२ बूति का चाव व	995	४६ चतुसूत प्रयोग	
**************************************		6	<b>२२</b> ४





### जीवन सुधा---



राज वैद्य श्री पे॰ महावीर ममादजी रसायन शास्त्री व्यथ्यज्ञ-जीवन सुना ब्योर " बृहत ब्यायुर्वेदीय ब्यीपय भाडार " विशेषज्ञ खेतकुट, व्यापकी उत्तन व्याविष्कृत चिकित्सा प्रणाली से लाखे रोगी ब्यारोग्य लाम कर चुके हैं



And she described a

MIRARI ART MINI

वर्ष६

वीरनिर्वाण सं० २४६२, वि० सं० १६६३, अप्रैल, मई १६३६

मङ्क १-२

## शिशु

OTTALIA DE LA CONTRACTOR D

[ ने० चीपुन ''ची हरि जी'' सखनक | ]

यिषु है प्रेम बद्धा साकार
सुख-दुःख, जिल्ला से वह न्यारा, राग-रोव से किये किनारा,
युद्ध सिद्धदानन्द दुलारा ।

मान्यकि का प्राव्याध्वार ॥६॥

यत्रु-मित्र का नेद न जाने, सबको ही चयनाकर माने,

यरमहंस सा साधन ठाने ।

चद्दुनत है नमस्य-ठ्यापार ॥२॥

हंसकर जा वह गोदी चाता, स्वर्गिक सुख चपने संग लाता,

पाप-ताय सब तुरत नसाता ।

सक्तम सुकृतिका मधुजयहार॥३॥

दम्यति के प्रार्थों का आवर्ष, जिल्लामरी चांखों का नारा.

खोक्य-किन्यु सामक्रास किनारा।

🌕 जीवन के सुक्कान्य वह सार ॥४॥

**美國安田安田** 

NAMES AND PARTY OF THE PROPERTY OF THE PARTY OF THE PARTY

**医图像设施** 

NAMES AND ADDRESS OF THE OWNER, WHEN THE OWNER,

### अवतरण

[ लेखक-चन्द्रशेखर पारडेय "चन्द्रमणि" काठ्यसूरि ]

(9)

कहे जाते जग में वे बाल, बने जो विधिकी सृष्टि विधाल। जम्हीं पर है भविष्य का भार, करेंगे कभी देश उद्घार ॥

(3)

हमारा भी कर्त्तच्य महाइ,
वना दें उन्हें स्वस्य बलवाइ !
नह कर दें उनके सब रोग,
कला, प्रांतभाका कर उपयोग ॥

( )

न होंगे जब तक वे गद-होन,
देहेगी उनको बुद्धि मलीन ।
समी वैद्यों का चानुभव सार,
काप पत्रों में करें मलार #

(8)

हमीसे जीवनमुधा-समान,
सजाता है चयना नव-साज।
साज मुजिया मात्रा वर्षाह्र,
बनाया विपुत्त शिशुरोगाङ्क ह



## सम्पादकीय

जि शिं भारत श्रीर श्रीनम्द के साथ जि जि भारत भारत श्री भारत कार्य की उठाया गया था, यदि वह उसी पकार तथा उसी उत्साह से यह विशेषांक पूर्ण हुवा होता तो हमारे पाठक पाठिकाशों के लिए यह महान श्रव एक श्रद्भत रचना होती। किन्तु लिखते हुथे महान दुःख होता है कि यह श्रद्ध जैसा चाहिए था वैसा न यन सका तो भी जितना हुआ वह देश के वैद्य समाज की श्रवस्था होष्ट से इसगीय है।

हमके अनेक कारण हैं । आयुर्वेद माहित्य के विद्वान नेत्यक पहुन ही कम हैं । और जो योग्य विद्वान आयुर्वेद माहित्य में कुछ लिखना जानने हैं जन महानुभावों का इस छोग ध्यान ही गो। हैं। यही एक प्रवान कारण हैं कि इस समय भीने कि राष्ट्र पाटड खेरे, केखकी की बाह नी आगई है । जिसे के छान्य सम्वान की दया से लिखने छाने हैं वहीं जानुबेंद का नेत्यक यस बैठता है और मनमानी हांका करता है।

शासकल के वैधक-पत्री म से अधिकांश बैद्यक पत्री का ध्येय केवल विद्यापनवानी ही है। वह कोई छापुर्वेद की ठोम सेवान करके केवल ध्यापार दृष्टि से ही अपने पत्रों को जनम देने हैं। इस प्रकार के वैद्यक पत्र-पत्रिकार्श्या की सृष्टि अपे दिन होता है। रहतो हैं। ऐसे पत्रों की संख्या बहुत अधिक है। जब उनका लब्य हो उनकी औषधियों की विक्री बहाने की ओर लगा रहता ह तब किस अकार पत्र उत्तम और सर्वाङ्ग पूर्ण तथा सर्वाङ्ग वन सकता ह। मुयोग्य सडजन स्वयं इस पर विचार कर सकते हैं।

इन्हीं बातों को विचार कर जीवन-सुधा के मंचालकों ने ''जोवनसुधा'' का जनम आयुर्वेद का प्रचार तथा जन साधारण की आरोग्य शृद्धि के लिए ही किया। यह पांत्रका आयुर्वेद जगन तथा जन साधारण की प्रारंभ से ही ठोल सेवा कई वर्षी से करती चर्ला आ रही हैं और मिन्नियम भी इनसे ऐसीही आशा है। जीवन सुधा ने श्राप्रवेश के क्रभावां का यथाशक्ति दर करते के निरु भतन प्रयत्न किया है। इस्तिये है। इसने न्यान र मेनी पर विकासकु बासका जिला तम आरम्भ किये हैं जिलको देलका जनवा न बन केंट्स प्रयांना कें. हा पर इस रिप हा व्यक्ति भारतवर्षीय २३वें हिन्दी जहाँहरूय सम्बेलन ( दहली में हाने वाली प्रदर्शनी ) से को रोग एम्बन्धी सर्व श्राफ कल होने के कारण भारत-पदक प्राप्त हुआ है । इसके अति-रिक भारते विशेषिक श्रीत रहे हैं। इनका परि-जान (फेसला) सा पछक स्वर्ग वर्ग तक, हैं। निवत इस विक्षा रोग विज्ञाताङ्क से एसे वार्त तक थफलता प्राप्त होता। यहां एक हमारे लिये विचा-

रग्गीय विषय बना हुआ है। मैंने जिस दिन इस शिशु रोग विज्ञानाङ्क का सम्पादन भार ऋपने कन्धों पर लिया था मैं उस दिन यही समभता था कि यह श्रङ्क अन्य सब अङ्कों सं वढ़ चढ़ कर सुन्दर श्रीर सुपाठ्य होगा, किन्तु लिखते हुये महान दु:ख होता है कि जब भारी प्रयत्न करने पर भी हम इस विशेषांक की जैसा चाहिये था वैसा न बना मके तब हम बहुत ही दुःख हुआ। आयुबंद में प्राय: लेपकों का अभाव सा हो है यह हम पहिले ही लिख आये हैं। हमें उस अडू के लिये जितने लेख मिल पाये हैं उनमें कुछ लेखकों को ब्रोड़ कर याकी के लेख ऐसे हैं जिन में भारी दोष भरे पड़े हैं। पाठक तथा पाठिकार्य वा वैद्य महान्भाव सर्वेटा नवीन विषयों की खोज तथा हातवीन के लिये ही पत्र मंगाते हैं, पर जब उन्हें इन आयुर्वेदीय पत्रों में कोई नबी-नना दिखाई नहीं देनी तो वह निराश होकर ऐसे पत्रों को गई। की टोकरी में फेंक देते हैं । उस समय उनके मन को जिनना आधान व्यथं पैसे खर्च करने में पहुंचता है। उसका अनुमान हमसे लगाया जाना अति कठिन ही नहीं ने। दू:सह अवस्य है। वैदा महोदयों के लिये कैसे लेख चाहिये ? इस विषय पर हमे काफी अनुभव है किन्तु हम क्या उन्हें वैसे ही लेख इम अडू द्वारा दे रहे हैं ? यह बात भी हम पूर्णतया स्पष्ट नहीं कह सकते फिरभी हमने शिशु रोग विज्ञानाङ्क को मन्दर बनाते में यथाशक्य भरसक प्रयन्त किया है। और नेखों पर कई। इप्टि ग्यकर इनकी छानवीन में बहुत से दिन लगाये हैं, इनने पर यदि यह श्रह्म पाठकों को मचिकर प्रतीन न हो तो

हमें इस विषय में दोषी न ठहराकर लेखकीं के ज़िस्में ही यह दोष महंं।

यहां एक बान और भी में कह देना चाहुता हु कि लायों वा हजारों वैद्यों के होते हुए भी लेख बहुत ही कम पहुंच पाये हैं। श्रीर जो लेख अपये भी हैं उनमें कई एक किसी काम के न थे। इस बार मुझे देशके बैद्य समाज का बालरीग विज्ञान सम्बन्धी ज्ञानाभाव देखकर महान आश्चय हुआ। देश की जिसे चिकित्सक मण्डली के उपर देशवासी जन साधारण की अधिक श्रद्धा या विश्वास निर्भेग हैं, जिसको चिकित्सा प्रणाली श्राधुनिक पाञ्चात्य चिकित्मा प्रणाली से वहत सस्ती और मूलभ है, उस चिकित्मा प्रणाली के प्रयोग करने वाले देश के बैध समात का इस विषय के चिकित्मा विज्ञान का ज्ञानमाव होना आज बंभवीं शताब्दि की रूपि में समर्गाय है। क्या वैद्यक शास्त्रों में बालरोग सम्बन्धी निर्णय विधान अपूर्ण है अथवा वैशों की शिक्षा प्रशाली का यह दोप हैं ? वा उनके पास साधन की कभी है ? अम्य जो भी हो, दिन प्रतिदिन आधुनिक शिवा का विस्तार हो रहा है, जनता भी अब भांति समगते लगगई है, ऐसा नहीं कि वैद्यक चिकित्मा की कदर जाती रहे। आधृनिक चिकित्सा प्रणाला सं शिक्षा प्रहरण करना हरेक बैश और हकीमी का कर्नच्य है। क्योंकि चिकित्मा व्यवसाय एक महान जोकहितकर धार्मिक सेवा कार्य है, बैग, हकीम, शक्टर लोग इसदे के जीवन के विस्मेदार होते हैं। जीवन से बहकर दुनियां में कोई कर अधिक मृत्यवान नहीं होती है। इस बात की सबेधा ध्यान में रखकर

्र चिकित्सा व्यवसाय अवलम्यन करना उचित है। इस श्रद्ध के लिये हमें जितने लेखकों के नेख प्राप्त हुए हैं। उन में से कुछ की छोड़ कर शेव सभी श्रशुद्धियों से पूर्ण श्रीर विष्टवेषण करने वाले ही मिले हैं। अधिकांश में लेखकों ने केवल श्रपना नाम प्रसिद्ध करने की इच्छा से ही पुस्तकों के छाधार पर से ही लेख लिख कर भेजे हैं। कई लेखकों ने नी अपने मिनिएक की जरा भी कष्ट न दंकर इधर उधर के सामिक पत्र अधवा भिन्त २ पुस्तकों के उच्छ पर प्रच्छ लिख मारते में किसी प्रकार का भी संकोच नहीं किया। ऐसे तुंख क्या नवीन कहे जा सकते हैं ? ऐसे लेम्बों से त्रैद्यों का क्या कुछ लाभ होमकता है ? में अपने लेखक महोदयों से कर बद्ध विनय करता हैं. कि यदि वह वास्तव में आयुर्वेद की ठोस सेवा के साथ ही साथ कुछ नवीन साहित्य ्र ऐसा निर्माण करना चाहते हैं, जिस से भावी सन्तानी और वैद्यों की लाभ ही तो वह इस प्रकार के नेख निखने से बाज आवें। अपनी बुद्धि से चाहे वह स्वल्प ही लिखें पर लिखें ऐसा कि जिस से भवित्य स टोम साहित्य का निर्माण है। और भारी अभाव दर हो जाय। इधर उधर के नेखों से न श्रायुर्वेंद्र के श्रभाव ही दर हो सकते हैं और न कुछ ठोम सेवा ही आयुर्वेद की हो सकेगी। ऐसे लेग्बों से तो लेग्बक का उपहास हीं होने की मम्भावना है। इसलिये उन्हें अवश्य मेरी प्रार्थना पर एकान्त में खूब गौर से विचार करना चाहिय। शाशा है इस के लिये महद्व

तंसक महादय मुझ स्पष्ट लिखने के कारण समा-

करेंगे प्राचीन काल में भारतीय ललनायें त्रिदृषी

एवं बीरा होती थीं। वेदज्ञान तक का उपदेश दिया करती थीं । पनिषाणा सीता, पार्वनी, श्रीर कैंकेयी आदि के चरित्रों की श्रोर हृष्ट्रिपान कीजिये प्रहलाद को गर्भ ही में ज्ञानीपदेश मिला था। अप्टावक और राजा शान्तन के सातों पुत्र अपनी माता ही के उपदेश से तत्वज्ञानी हुए थे। गौतम, कस्पाद, कपिल. भागद्वाज वशिष्टादि सरीखे महा प्रत्यों को उत्पन्न करने वाली मातार्ये इसी भारत भूमि पर उत्पनन हुई थीं। यदि उन माताओं को आयुर्वेद का रहस्य मली मांति विदित न होता तो कहापि सम्भव नहीं था कि ऐसे बिद्धान श्रीतभागाली मन्तानों की उत्पन्त कर सकती।

.

पाटक एवं पाठिकाओं! इस मानव खुब्हि का वास्तविक सुख वे भारवशाली परिवार ही अनुभव करते हैं, जिसके गृहों में सन्दर बिलव्ह श्रीर निरोग मन्तानश्वलता है। जिनका त्रांट वाल शिशुक्रों के भोले भाले सीन्डर्य पूर्ण कर्ष विकस्ति पूष्प कलिका के समान विक्ले हुने मुखीं पर नित्यप्रति पड्ती है। जिनके कर्ण छहरों में उनकी नेतर्ल बाणी में उच्चारित हो दे र शब्द प्रतिश्वटा पड़ते हैं । जिनकी यंचलता से भरी हुई नाना कोड़ाओं को देख चिन्ता और अपार व्याधि की पीड़ा भी किंचित काल के विके दूर हो जानी है। किन्तु गंद से कहना पड़ता है कि वर्तमान काल में ईश्वर का दिया हुआ यह अपूर्व मुख विरले परिवारों, एवं किसी - युगुल दम्पिनेशें को ही प्राप्त होता है। क्योंकि बालको की उत्पत्ति वृद्धि और रत्ता का मुख्य भार माताओं के अधीन होता है। वर्तमान में हमारे देश की व्यधिकांश

स्त्रियों का धात्री शिता से सर्वथा कोरी रहना ही उनकी राज्यान अधःपनन का मूल कारण हो रहा है। सारत की जलनाये अधिया और अज्ञानता के कारण, न गर्भाशान की गीति, न गर्भ रहा की किया. न अमृत समय के उपचार और न शिशु-रक्षा की विधि को ही जाननी हैं। इसी कारण सैकड़ों बच्चे अल्पकाल में काल के कलेबा बत माता के हुएव आर अन्यान्य परिवार की शीक-दाय कर जाते हैं, तो कहा सन्तान मुच देखने का मीभाग्य आत नहीं होता. परन्तु फिर भी अज्ञा-नता की मारी कुल कामनिये सुयोग्य वैद्यों की आप्रधियां सेवन करने के स्थान पर अर्घ स्थाने, श्रोगा, पुतारी, सन्त माधु श्रीर वैसिंगशें की थोधा वाता पर अधिक विख्वास करती है जिनमें धन धम बांटने पर भी अभील्ड की सिद्धि नहीं होती। साथ ही सन्तानीत्यति के उचित समय की स्वीकर जीवन पर्यन्त पद्मतातो स्टर्नी है जीर स्वयं भो जनाताको बाब में चकद क्यों वार्ना बन जाती है। अनपहांम्त्रया नती ५ ।तारा ।धार्व भरगा पोपरा पर सकतो ह अग न अपना ही स्वास्त्य रका का जाग राजनी हैं। इसा से जनका सम्मति मधाबी । या अएएमान तथा हो ता अला खपनी सन्तात हा मलाह क लिमन भागतीय है। का भाक्ष का का सह विद्यान की विद्या के व्यूत्यसन होना े शंत भावस्थक है।

पन्तु इसका अन् की एक १,400 कारत. इ बह रहाकि नागत गता के नर नाग अक्षापर्य पालन करता कपना मुख्य कन यस नाग अत समका - राज उपी देश के दिशाया इसके नाम स्रोर महत्त्व की विक्कि पूल स्थेन, राज दिन विषय वासना में लिप्त रहने के कारण सन्तानी— त्यित वे बीजांकुरों की शांक्त को कमजोर कर देते हैं। एवंगर्भावस्था में भी यही रफ्तार चाल् रखकर निर्वल, निस्तेज, अङ्गों वाली कुरूप तथा हीनबीच्य और अल्पाय मन्तान उत्पन्न कर ऋपना छोर अपने देश का अनिष्ट करते चल जाते हैं। इसी प्रकार अनुचित छाहार विहार खान पान रहन सहन होने से खाज कल भारत रंगों का घर बना हुआ है।

भारतवर्षे में मानु रजक केन्द्र खीर शिशु-र तक केन्द्रों की (Maternity Centres and Baby clinics) वड़ी भारी व्यावश्यकता है। भारत में कई बयों से रेडकास सोसाइटियां काम कर रही हैं। किन्तु उनकी काज तक भी आशानु-रूप सफलता प्राप्त उहीं हुई है। इसका प्रधान कारण है प्रवन्ध का ठांक २ न होता, निम्न कर्म-चारियों की लापरवाही, हमारी भारतीय बहनीं का इस विषय में शिक्षासाय और वैद्शिक संस्थायों के उपर श्रद्धा की हीनता, में सीचता 🥬 कि क्या यह काम खाली सरकार या इंसाइ मिन्नारेशी के ही करने बीख है 🕻 देश 😘 अर्घ्य हिंद मुसलसान जनना की अपने बच्ची तथा मानु जाति के स्वाराय की और जान देला क्या अपराध है । स्वारत्य सम्पन्न सुमाताओं धार बलवान अन्तानी की हमारे देश के कम कोई प्रावश्यका नहीं है ? मेरे कथन का यह आश्य नहीं है कि सिर्फ धेंई-शिक प्रमाली से ही इन बन्द्री की बनाया जाय। चैदिशिक प्रणाली के हेगसे अने हुए होते के कारगा ही नो जनमाधारण उन्हें नहीं अपनाते हैं। इसका प्रधान कारण यहहै कि बैदेशिक चिकित्सा प्रणालंड

ķ

बहुत ही खरचीली होने से उससे जन साधारण लाभ नहीं उटा सकते। इसलिए में सादर प्रार्थना करता हूं कि सेट साहकार राजे महाराजे जन साधारण के लाभार्थ ऐसे मानू मन्दिरों वा शिशु-मंदिरों (Maternity Houses And Baby Houses) की स्थापना करें जिसमें आपुर्वेदिक रीति से उपचार किया जाय।

ब्याजकल प्राय: सभी सभ्य देशों में धरमें मन्तान प्रसव नहीं करवा कर प्रसनाओं की सुपरिचालित प्रसृतिमन्द्रमें ( Maternity House ) में भेज दी जाती हैं। वहां प्रस्व कार्य आमानी से विना किनी आफन की झेल कर करने के विष् सब मान्यना योग महायना देने वाली नर्स (बाइये) ) डाक्टरनियां हर समय उपस्थित रहती हैं। इसी से उन देशों में मन्तान प्रमय में मृत्यु मंख्या दिन पर दिन इतनी घट गई है कि नाम मात्र ही होगी । बच्चों की ेंद्राय भाल करने के लिए शिशु मन्द्रिशे का भी अन्ता प्रयत्य उन देशों में हो गया है। समीव अमीर एक के वर्षे जिस पूर्वी से बहां पलते हैं वर देखने नागभ हैं। गांध २ भ ऐसे वेन्द्र होन क कारण साक्षरण सज्जुरों तक के वनके उन स लाम उठाते हैं दिनके समय नियत काल में अधीं को दूध पिलाकर मां अपने काम में लय जानी हैं। रात्रि के नी बजे आर्थारी वक्त दूध एकर रात की देख भाल करने बाली दाई को सींप कर रातको मजे से आराम की नींद लेता है। इससे अपनी और अपने दनकों की सहत भी ठीक रहती है जो घरों में भी बच्चा पालती हैं वह भी नियत समय के पहिले जब

बच्चा जरा सा रोवे तत्र भी वह दुध नहीं पिलातीं हैं। हमारे देश की माताओं की यह बड़ी बुरी अदन हैं कि वह वच्चे को खिलाने पिलाने का एक निर्दिष्ट समय की पावन्द नहीं रहती हैं। वह अधिकतर प्यार से काम लेती हैं. बन्चा चाहे किसी कारण से भी रोने लग जाय है। ५३ इसे मुखा समग्र कर दूध पिलाने में लग आती हैं। कुसमय दृश पीकर बच्चे का हाजमा विगल जाता है और वह दिन पर दिन सुख कर कांटा वन जाता है। ( इसे ममान का रोग कहते हैं ) मां का एवं न मिलने से और ऋषाच कुखान भाजन से हैसे दो माम के बनचे की बालीबाटर र विलायती जीकापानी ) पिलाना, नाजाद्ध की छोड़कर पेटेन्ट इव्वे का दृश पिलाने से भी यह रेगा होने का भय रहना है। इस से सेकड़ों बच्चे प्रति वर्ष मरते रहते हैं । मुर्ख मानायं अपनी रालनी नहीं समन कर इस का इलाज होता, तार्वाजः संत्र, यंत्र, स्थानों सं भाइ फूंक कराती रहती हैं। कोई माता तो और भी गलता से श्यना वृध पिलान भी यन्त्र करदेती हैं। बन्दे को हर तीलरे घर्ग्ड से द्रश्र पिलाना वर्गहचे, खीर नोयजे के परचात विलक्त द्वा न देकर बच्चा क्षेत्र उस की भाग की सोजाना वाहिये। इससे वरचों की प्रात काल तक मोनेकी आहत पड़-जाती है। बच्चों को आरम्भ से जो अध्यास हाल दिया जाने वह उसी प्रकार से मीख जाते हैं। द्ध की पाचन होने के लिये कुछ समय ती अवश्य चाहिये । वारम्बार पिलाने से पाचनशक्ति कहांतक ठीक रह सकती है, ६. ६. १२. ३. ६. ६. बजे के समय दुध पिलाना चाहिये, यही दुध

पिलाने का निर्धारित समय है। इस प्रकार करते रहते से बच्चों के पेट वा जिगर की बीमारियां, बद्धकोष्ट्रता. अतिमारादि वा के होना यह श्रायः सब नहीं होते । दांत निकलने के समय बच्चों का खाना पीना बड़ी सावधानता पूर्वक रावना बाहिये। एक हो दान्त निकलने के पश्चान उसे खालिस माता का दुध न पिलाकर खुव हल्का और पतला अन्त देना चाहिए। यथा साबुदाना माठी के चावल, वाली, जो इन की खीर आदि दे सकते हैं। बाद अधिक दांत निकलने पर मुंग, मसुर की दाल- अरहर की दाल की खिचड़ी दिल्या की खीर अथवा फलों का रस आदि दे सकते हैं। १॥ वर्ष के बाद माता का दुग्ध बच्ची को छुड़ा देना बाहिये। प्रत्येक काम के लिये नियत समय का मृल्य समभना आज भी भारत-वासियों के ध्यान में नहीं श्राया है। देश के शिक्ति समाजकी जब बही दशा है तो शिक्षा दीज़ा-हीन माना और धायों का क्या अपराध है ? मातृ दुग्ध मन्तामके लिये अमृत तुल्य है, बड्डे घर की स्त्रियें इस धान की भूल कर अपने पेट की सन्तान को तीच जानि की दिवशों की पालने के लिय दे देती हैं। जिस खन से बच्चा बनता है,

उस बन्ने की बुद्धि भी बैसी ही बनती है. और उसी ख़ल से बने हुए दूध में उसकी सेहत जैसी अन्छी रह सकती है पराई माना के दृश्ध में वैसी कभी नहीं हो सकती और वंश परम्परा के रोगा दोप, गुगा, शील, स्वभाव सब बानों को जानकर तब अन्य स्त्री से अपनी सन्तान को सनन्यपान कराना चाहिए। सन्तान की माना यदि रुग्ण हो तो जहां तक बन सके विशुद्ध गाय या बकरी का दृश्य पिला कर बन्ने को पालना चाहिए।

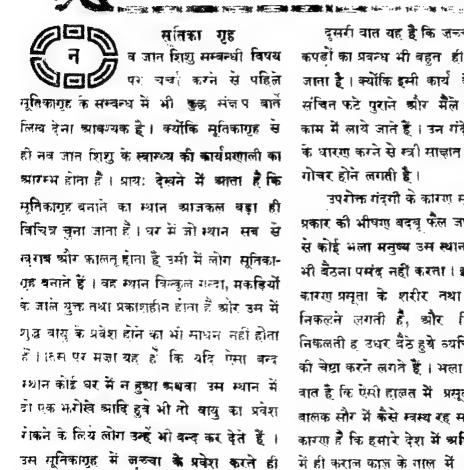
अन्त में देशवासियों से मादर प्रार्थना है कि वह यदि अपनी सन्तान की स्वरूप्य तथा दीर्घायु देखनी चाहते हैं तो उन्हें चाहिए कि प्रत्येक स्त्री को अन्य शिक्ताओं के साथ ही साथ गृहस्थ शिक्ता की पूर्ण शिक्ता दिलायें। ताकि भावी सन्तान बलवान और मेधावी तथा दीर्घायु उत्पन्न हो। इसी प्रकार वालिका शिक्ता संस्थाओं को भी गृहस्थ शिक्ता का समावेण अपने पाट्यकम में रणना चाहिए। अन्त में में प्रभु से प्रार्थना करता हुआ इस विषय का उपमंहार करता है।

डा० वेद्व्यामदत्त शर्मा त्रायुर्वेदाचार्य, धन्वन्तरि



## नवजात शिशु

( ले०-हा॰ शिवद्त प्रसाद वाजपेयी वैद्यभूषण एउ० एम० वी० ) पी० अजगैन, उन्नाव (क्०पी०)



लकड़िमों के दूं ठ सुलगा पिशे जाते 🐉 जो कि

जलने के बजाब धीरे २ मुलगते रहते हैं । इस

कारण वह सूतिकागृह चीवांस पंडा पुत्रें से परिपूर्ण

रहता है।

दूसरी वात यह है कि जच्चा बच्चा के लिये कपडों का प्रवन्ध भी बहुत ही प्रशंसनीय किया जाता है। क्योंकि इसी कार्य के लिये वर्षों के संचित फटे प्राने और मैले कुवैले कपड़े ही काम में लाये जाते हैं। उन गंदे छीर मैले कपड़ों के धारण करने से स्त्री साज्ञान भूननी सी हि गोचर होने लगती है।

उपरोक्त गंदगी के कारण मृतिकागृह में एक प्रकार की भीषण बदब फैल जाती है इस नजह से कोई भला मनुष्य उस स्थान में पांच मिनट भी बैठना पसंद नहीं करता। इन्ही सब बातों के कारमा प्रमुता के शरीर तथा कपड़ी से बदब् निकलने लगती है, और जिधर से असवा निकलती ह उधर बैठे हुये उपक्ति नाव बन्द कराने की चेष्टा करने लगते हैं। भला विचार करने की वात है कि ऐसी हालत में प्रस्ता तथा नवजात वालक सौर में कैसे स्वस्थ रह सकता है श्रीर बही कारण है कि हमारे देश में अधिकांश बच्चे सौर में ही कराल काज़ के गाल में समा जाते हैं। इस नागा सबसे पहला कर्तव्य है कि उचित और योग्य सृतिकागृह निर्माण तथा जरूवा, बच्चा के प्रवोग में काने वासे कपड़ों का अचित प्रवास

मृतिकागृह के लिये उत्तम, साफ मुक्रा और प्रकाश युक्त स्थान चुनना चाहिये, जिसमें शुद्ध वायु श्रीर मुर्च की किरगोंक जाने के जिये भरोखें तथा रोशनदान मः अवस्य होने वाहिये । ऐसा स्थान ठीक कर लेने के उपरान्त उसे लिपवा पुतवा कर सार करा नेना लाहिये तथा उससे जरुवा, वरुवा के काम में ाने वाची सभी प्रयोजनीय यस्तुये इक्ट्री करके रखवा देनो चाहिये ताकि बावश्यकता पड़ने पर िसी बन्तु का अभाग ग हो। तथा उसी समय मिल अवि । उसके बाद जरूवा की उस सुनिकागृह में प्रवेश करावे । स्तिकागृह में जरुवा बरुसा के काम से आने वाले कपड़े, बई के पहले और कलानीन के दुकड़े इत्यादि साफ धुले हुव होने चाहिये और इतनी प्रनुर मात्रा में होने चाहिय कितिस में फिर गनदे में ले कुवें ने कपड़ी के काम में लाने की आवश्यकता न पहुँ।

नव जात शिशु

त्युता के पेट म पीड़ा उत्पन्त होने पर उसे सारगृह में प्रवंश कराने, श्रीर होशियार हाइ की बुक्याकर कलन किया शारहम करें। यक अस्या होने में जिलाव हो सार पी की काट व्यक्ति है। तो 'स्रपानार्ग मृल'ं। (लट तारा) एक छहांक केकर उसे खुब वार्यक लिल पर पीन कर पर्या की दोनों रानों में प्रस्त्रमुख के इंद विदं चारों करण लिए करों। इस लेप के करने से एक घंटे में ही बच्चा उत्पन्त हो जायगा। परन्तु यह ध्यान रहे कि बच्चा पैदा हो जाने के चाद तुरन्त ही तेस को साक करदें नहीं तो गसांशय तक निकल जाने की सम्भावना है। यह प्रयोग के बल पुस्तकों का पाठ नहां है बल्कि हमारा सेंकड़ों बार का श्रनुभव किया हुश्रा प्रयोग है। श्रस्तु विना किमी प्रकार की गड़वड़ी हुये नियसानुसार वालक उत्पन्न हो जाता है।

उत्पन्न होन के साथ ही वच्चा रोने लगता है जिससे उसके देनि। फुएफ्सों व वाय प्रवेश हो। जाता हे अंग फुकुम फैल जाते हैं। यदि वस्या नहीं रीवे और न स्वास के तो समभ लेगा चाहिये कि उसकी श्वाप तला में कर भर गया हु ! इस समय बर्च का शरीर नीका पड़ जाना है जार लेख उस मध तुत्रा समनते हैं किन्तु ऐसा नहीं है। इस असय आय का पहला कर्नत्र्य हैं कि सावधानी प्रवक्त वर्षे के पैसे की पकड़ कर उल्टा टांगे जार एक साम मलायम कपहा अपना डंगली में लपेटकर उसी बच्च के मुख और गते के अन्दर का भरा हवा लेकरा (कक्) साम् कर ले. उस बातक के चृत्हों पर सावधानी के साथ थपड मारे तथा चेहरे पर ठंड जन के छीटे लगावे। उपरोक्त किया से वालक श्वाम लेने लगता हु। यदि इपसे मी श्वामा-वरीध ही ती पहल बचने के मूख की खीलकर चार छ: बार जीर से फॉक मारे ताकि राले मे अनका हका कफ भी नीच उत्तर जावे, उसके वाद ऋचिम श्वांस देः

#### क्तिम श्वाम देनं की विधि

बालक की अपने दोनों हाथों पर चिन लिटावे, एक हाथ चृतड़ के नीचे और दूसरा हाथ कन्ये के नीचे रख कर अपने हाथों की बार बार ऊपर नीचे करे किंतु दोनों हाथ एक साथ ही ऊपर नीचे न जांय जब एक हाथ ऊपर जाय तब दूसरा नीचे आवे इस प्रकार करने से आस जारी हो जाती है।

#### बालक का स्तान तथा नालच्छेदन

बच्चा उत्पन्न होने पर वह जराय के विकार-यक्त मलं और दृषित रक्तादि से श्रोतप्रोत होता है। इसलिये चाहिये कि पहले उसके मल को साफ करे श्रीर फिर कपड्छन की हुई कर्ड की गाव अथवा बेसन उसके शरीर में धीरे २ मल कर मैल ह्युड़ाले उसके बाद दशमूल, मेथी और श्रजवायन युक्त उनले हुये जल से भली प्रकार स्तान करादे। इस बात का ध्यान रहे कि शिर श्रादि कहीं भी किंचिन मात्र मल न रहे नहीं तो बच्चे के शरीर में फुन्सियां सी निकल आर्येगी जिससे वालक को श्रहुत ही दुःख उठाना पड़ता है। स्तान कराते के बाद बच्चे को मुलायम नौलिया या कपड़े से भली प्रकार पींछ दे ताकि

जल का अर्थश जरा भी उसके शरीर में न रहे। उसके बाद बच्चे की नाल में नाभी की श्रोर तीन अंगुल के बाद गरम जल से भिगोये हुये धागा की एक गांठ लगा दे, उसके तीन इंच के आगे एक धागा और बांध दे तदनन्तर उन्हीं दोनों गाठों के मध्य में तेज अस्तुरे से नाल काट दे और उसी कटी हुई वच्चे की नाभी में चार रत्ती श्रम्तली कर्त्या श्रपनी उंगली से द्याकर पैवस्त करहे. तथा चार रत्ती कस्तूरी जल के साथ पीसकर बच्चे के बीसों नाखूनों में लिए करदे।

नालच्छेदन के बाद साफ रुई अथवा फ्ला-लेन विद्या कर उसी पर बच्चे की लिटादे और उपर से भी उसी भांनि मुलायम वस्त्र उढाहे ताकि बच्चे के शरीर में स्वानादि कराने का शीत दर होकर गर्माहट आ जावे, मुख न टर्के।



## शिशु सुखदा

### वटिका

(हबूब हाफिज-सेहत बचगान)

इन गोलियों के हमेशा इस्तमाल करने से बच्चे बिल्कुल निरद्यस्त रहते हैं और बीमारी में इस्तेमान करने से बीमारी दूर होकर वर्च मोट नात हो जाते हैं निहायत अजीव व रारीव गोलियां हैं। क़ीमत १०० गोली की १।)

बृहत् आयुर्वेदीय औषधभाण्डार जौहरा बाजार, देहली।



श्रिक्षित्वि नता इस बात को भली प्रकार श्रिज श्रिक्ष अनुभव करने लगी है कि संतान श्रिक्ष के स्वास्थ्य का उत्तरदायित्व

माता पिता पर ही है। साथ ही उनको इस प्रकार का ज्ञानभी होता वला जारहाहै कि शिशु स्वास्थ्य की कुरालता के लिए उनकी भली प्रकार रजा करना परमावश्यक है। उनसे यह भी छिपा नहीं है कि इस कार्य के लिए एक योग्य चिकि-त्मक की कितनी ब्रावश्यकता है। प्रत्येक न्त्री पुरुष अपनी सन्तान के लिए अपनी सामध्यां-नुसार पूर्णक्रप से यह प्रयत्न करना है कि वे म्बरुध रहें और पूर्णक्रपेण बृद्धि को प्राप्त कर सकें। अतएव उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हवे ही वे जन्म से पूर्व और जन्म के परवान शिशु के पालन और उसकी रोगलमना इत्यादि का सारा भार चिकित्सक पर ही छोड़ देते हैं। माचीन काल में जिन विधियों से हमारी वृद्ध माताएं और धातुवां शिश्र-पालन करतीं थीं बे अब शनै: शनै: दूर होने लगी हैं, और आध-निक विज्ञान में शिशु पालन की प्रत्येक विधि का दिख्डर्शन भली प्रकार किया गया है।

नवजात शिशु की रचा

शिशु जन्म के पश्चान पहिले चौबीस बंटों में

प्रायः मृत्यु संख्या श्राधिक देखने में श्राती है श्रीर जन्म के समय किसी प्रकार की चोट इत्यादि लग जाने से जो मृत्यु होती है उसकी संख्या और भी श्राधिक रहती है, यदि जन्म के परचान शिशु की ठीक-ठीक रहा की जाय तो मृत्यु संख्या अवश्यमेव कम हो सकती है।

जिस कमरे में कि शिशु जन्म होना हो वह गर्म होना चाहिए ताकि नवजात शिशु पर शीस प्रभाव न हो, जन्म के परचान शिशु की आह त्वचा पर तीव बाल्पीकरण होने से कम्पन झारंभ हो जाता है, अनएव शिशु को तुरन्त ही कपड़े में लपेट कर या तो पालने में लिटा दे अथबा माता के पास सुला देना चाहिए। बल्कि यह और भी उत्तम है कि नवजात शिशु को पहिले कुछ बंटों के लिए एक मुलायम से गर्म विस्तर पर लिटा विया जाय और उन्तमें होट वाटर बोनल (hot water botte) रख़दो जावे, क्योंकि इससे कम्पन विलक्क बंद होजाता है।

श्वास किया

अधिकतर यह देखा गया है कि नवजात शिश की खास किया तुरन्त ही अपने आप ठीक हो जाती है। प्रसन के समय आक्सीजन गैस

कांधिक मात्रा में खर्च होती है और कार्यन बाइ आक्सायड (Carbon dioxide) अधिक इकट्ठी हो जाती है जिससे कि श्वास केन्द्र विष-लित हो जाते हैं। जन्म के पश्चात शिशु का शिर तुरन्त नीचा कर देना चाहिए जिससे कर्ध्व श्वास मार्ग से श्लंप्या और एक प्रकार का स्नाव जिसे ( Ammoniacal fluid ) कहते 🝍 ब्रुग-मता से निकल जाए, क्योंकि यह प्राथमिक स्वास क्रिया में रुकावट पैदा करता है । आरम्भ में शिश को साधारणतया लिटा देना चाहिये श्रीर इसे प्रकृति पर छोड़ देना चाहिये। यदि शिशु खास लेना आरंभ न करे तो कृतिम प्रकार से श्वास किया कराए परन्तु यह किया अत्यन्त ही सावधानी से होनी चाहिए। बच्चे के नितम्ब प्रदेश पर कभी आधात न करे। यदि शिशु ठीक समय के अन्दर २ न रोए तो शय: उसके तलवे (Soles of the feet) पर आहिस्ता ्रे आहिस्ता थपकने से बह रोना श्रुक्त कर देता है।

#### श्वास किया के उपाय

- (१) श्वास मार्गों में श्लेष्मा इत्यादि साफ् कर देनी चाहिये ताकि बायु अच्छी प्रकार अन्दर पहुंच सके। श्वर्यंत्र पर धीमा सा दवाव डाल कर श्लेष्मा को कैथेटर (Catheter) द्वारा निकाल देना चाहिये।
- (२) यदि जिल्ला अन्दर चली गई हो तो उसे बाहर की श्रोर खींच लेना चाहिए।
- (३) बारो-बारी से वाहों को शिर से ऊंचा उठाने और फिर उनको झाती तक नीचा करने से रवास किया कृत्रिम प्रकार से ठीक हो सकती

है क्योंकि इससे स्वरयंत्र बारम्बार फैलता और दवता है।

#### कमल नाल की रचा

इस में दो बातें श्रति ही आवश्यक हैं। (श्र) क्क पात का न होने देना।

( व ) विकार इत्यादि से तचाव ।

बाहरी क्रोर से पूर्णनया विषय्न (Asoptic) रक्ता करनी चाहिये क्योंकि विकार प्रायः इसी ही स्थान पर होता है।

इस पर साधारणतया एक बन्ध बान्ध देना चाहिए, पहले इसे एक म्पंज से शुक्त करदे लाफि यदि कुळ माद हो तो पता लग जाए। बन्ध त्वचा से कोई तीन सेन्टीमीटर (3em) परे होना चाहिए। यदि बहुत समीप बान्धना हो तो जिस नलिकासे कमलनाल निकली हो उसका एक बल हालदे। प्रश्चात् उसे Sterilised Gause dressing से दक कर उस पर Roller Bandage की पट्टी पेट के चारों श्रोर लपेट देनी चाहिए, पहले कुछ धन्टों में यह ध्यान रक्ते कि पट्टी पर कुछ रक्तपात के लक्ष्ण नो नहीं है।

#### "नेत्रों की रचा"

यदि माता को सृजाक इत्यादि रोग न भी हों तो भी शिशुको Gonorrhoel Opthulmia है बचाने के किए जन्म के समय उसके नेत्रों की रहा सदैय आवश्यक है । उसके नेत्रों में एक या दो प्रतिशत मात्रा का सिलवर नाइट्रट मौलयूशन एक बूंद डाल देना चाहिए और पश्चात उन्हें साल्ट सौलयूशन (Salt Solution) श्रथका बोरिक लोशन (Boric Iotion) से यो देना चाहिए। जूं हि कि शिशु जन्म हो उसकी पल्कें धीमे से पृंछ दे ताकि उसके नेत्रों में किसी प्रकार का साव न लगा रहें। पल्कों को श्रतगर कर देना चाहिए जिससे कि श्रीपिध श्रन्दर तक पहुंच सके बिद वे जारा भी प्रदाहित प्रतोत हों तो तुरन्त चिकित्सक की महायता लेनी चाहिए।"

#### "प्रथम स्नान"

यदि शिशु समय से पूर्व उत्पन्न हुआ हो इधवा कमरा बहुत ठएडा हो तो पहले स्तान में कभी शीवता न करे। यहां तक कि जब तक श्वापिक्रया और रक्त भूमण विल्कुल ठीक २ न होने लगे पहला म्नान्न कभी न कराना चाहिए। उत्तम है कि प्रथम स्तान कराते समय डाक्टर भी उपस्थित हो । स्तान के पश्चान बच्चे के शरीर पर कुछ थोड़ा निवाया जैतृन का तैल श्राहिस्ता से मसकर एक कीमल वस्त्र से पृंद्ध देना चाहिए। बहुयों में त्वचा बहुत कोमल होती है और इन्हीं प्रदेशों में विकार होने की सम्भावना रहती है अत्यव इनमें से तेल बहुत कोमलता और सावधानी से पूंडाना चाहिए। शिश की सावन और जल से म्तान कराना आवश्यक नहीं है क्योंकि इससे शात और कस्पन उत्पन्न होने का स्य रहता है।

### "शिशु के रहने का कमरा<sup>5</sup>

जहां तक हो सके शिशु का कमरा साता से पृथक होना चाहिए। ऐसा करना बच्चे के लिए खारू प्रश्न रहता है और माता को भी शान्ति और सीने में सुगमता रहती है। कमरा उपयुक्त शकार से बड़ा और हवादार होना चाहिए। पहले

कुछ दिन तक उसमें शंख (Shade) इत्यादि लगा कर रोशनी हल्की रखनी. चाहिए । वायु का श्रातनिर्यात ठोक २ होना भी श्रात्यन्त श्राक्यक है। परन्तु शिशु के समीप वायु का मोंका सीधा न श्राना चाहिए। श्रीर वस्तुएं जिन पर कि रेत जमता है कमरे में न रखनी चाहियें। कमरा सदैव साफ सुधरा रहे। रेन इत्यादि को गीले कपड़े से पुंछवाने रहना चाहिए श्रीर खिड़िक्यां व द्वार इत्यादि कभी २ पानी से धुलवा देनी चाहिए।

#### ''शिशु शय्या''

पहले श्रह्नलीस घन्टों नक शिशु की शय्या पांश्रों की त्रोर से उंची रखनी चाहिए ताकि मुख से रलेप्सा इन्यादि सुगमना से निकल सके परन्तु यदि जन्म के समय मस्तिष्क श्रथवा खोपड़ी पर कुछ चोट इत्यादि लग गई हो नो ऐसा कहापि न करें। प्रारम्भ में शय्या छोटी और कुछ मास के पश्चान बड़ी होनी श्रावश्यक हैं। गहा बिल्कुल सपाट और कोमल होना चाहिए इसे गीला होने से बचाने के लिए उस पर मोमजामा थिछा है फिर उस पर एक सकैंद चादर फैला कर बन्चे का पोनड़ा गयदे जिससे कि वह श्राट ना शोपगा कर सके। पश्चान शिशु को लिटा कर उसे एक सफेंद चादर श्रोप हलके से कम्बल से दक देना चाहिए।

"धातु"

धानृ उस स्त्री को कहते हैं जो कि शिशु की । जन्म के पश्चाम कुछ समय तक रहा करती है। अतएव वास्तव में माता ही सब से उत्तम धातृ होती है। धातृ बिल्कुल स्वस्थ, चतुर, शान्त स्वभाव और साफ सुथरी व नम् होनी चाहिए। साथ ही साथ उसका सर्व-साथारण बातों में निपुण होना भी आवश्यक है। शिशुरत्ना कराने से पहले एक बार उसका चिकि मक द्वारा निरीक्षण करा लेना चाहिए क्योंकि वच्चों को त्यरीग और सुजाक प्रायः इन धानियों द्वारा ही होता है। नवशिशु को कुटुम्ब के और बालकों और अन्य सम्बन्धियों से भी दर ही रखना उनम है।

बच्चे की पूर्णवृद्धि झौर स्वास्थ्य की उस्तित के लिये उसकी नियमपूर्वक रहा अत्यन्नावस्थक है। उच्चों के स्वभाव बड़ा शीव्रता से वनते हैं। अत्याप्त पहले ही से ऐसा यन करना चाहिए विससे कि वे बुद्धिमत्ता पूर्ण उपयोगी नियम पालन कर सकें। उन्हें द्वाय इन्यादि भी नियम पर्वक मिलना आवश्यक हैं। यदि वच्चा द्वाय पिलाने के समय सो रहा हो तो जगालेना चाहिए। परन्तु यदि वह जागा हुआ हो और रो रहा हो तो उसके आंख पृद्धि कर शान्त करने का प्रयत्न करना चाहिये। यदि वह फिर भी रोता रहे और द्वाय पिलाने का समय न आया हो तो उसके रोने की परवाद न करे। स्नान और व्यान भी निय-मित समय पर होना चाहिये।

### "दूध पिलाने की विधि"

चृकि साधारणतया माता के स्थनों में दूध तीमरे दिन उतरता है। श्रतएव उस ही दिन से शिशु के दूध पिलाने का नियम बांध लेना चाहिए माताको लग-भग २० मिन्ट तक एक बार में दूध पिलाना चाहिए, श्रीर यह किया दिन में प्रति तीन घन्टे के पश्चान और रात्रि की प्रति चार घन्टे के पश्चान कराते रहना चाहिए। दूध पिलाने के पश्चान थोड़ा सा स्वच्छ जल पिलायें जिसकी कि मात्रा पहले दिन सबसे अधिक हो ताकि

#### "तापक्रम श्रीर भार"

शिशु की बहुण शक्ति ठीक हो जाए प्रति दिन दोबार उसके शरीरका तापसान ले। यदि तापमान १०० फीरनहीट (Farenheit) से अधिक हो तो शिशु की देखभाल रखनी चाहिए। यहने का प्रतिदिन एक नियमित समय पर बस्त्र रहित भार लेना चाहिए। भार लेने का सबसे अच्छा अवसर स्नान से पहले होता ह।

#### "स्नान"

वन्त्रे को स्नान भी सबेर द्व पिलाने से पहले एक नियमित समय पर करता चाहिये। दुर्धापलाने के पश्चान स्नान कराना हानिकारक है। प्रति दिन म्नान करना आवश्यक नहीं, परन्तू म्नान मुर्य उद्य के पश्चान होना चाहिए आंत उस म्थान पर हवा न चलनी चाहिए। हवा को रोकने के लिये यदि और कोई अन्द्रामा स्थान न मिल मके तो वो कुनियों की मोधी खड़ी कर उन पर एक चादर डाल कर काम निकाल । नाल इटने के पश्चान यदि नाभि अच्छी हो जाए तो टत्र में म्नान कराना हानिकारक नहीं है। स्नान कराने और शरीर पुंजने के लिए मुलायम तौलिया प्रयोग में लाना चाहिए। प्रथम नेत्र और फिर मुख वगैर साबुन से घोकर एक कोमल वस्त्र से पुंछ देने चाहियें परन्तु मुख के अन्दर कभी स्नान कराते समय उंगली इत्यादि न डाले।

शिशु जल में दो या तीन मिनट से अधिक न रहना चाहिए, और स्नान के पश्चात शिशु की जननेद्रिय एक स्वन्छ (Sterile) रुई के फोए से आहिस्ता से पृंद्ध कर किर सारा शरीर विल्कुल सुक्त करदेना चाहिए। पश्चात समस्त शरीर पर कुछ उत्तम टैलकम पाउडर (Taleum Powder) अथवा स्वच्छ जैतून का नेल(Sterile Olive oil) मल देना चाहिए।

#### "नवशिशु के वस्त्र"

नवशिशु के वस्त्र थोड़ और सुगमता से धुलने वाले होंने चाहिए। रेशमी भौर उनी वस्त्रों से सूनी श्रिधक श्रन्छे रहते हैं क्यों कि उनी तो प्रायः त्वचा छील देते हैं। और रेशमी न गर्म होने हैं और नहीं पानी शोपण कर सकते हैं। वल्क सुनी सस्ते के साथ माथ धासानों से धुल भी सकते हैं। पहले इस मास तक शिशु को वस्त्र व जुगावें इत्यादि पहननी आवश्यक नहीं, केवन उसके शरीर को स्वच्छ और शुक्क रखने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि शिशु के नितम्ब प्रदेश की त्वचा छिल जाए तो उसे जल व सायुन इत्यादि से कभी न धोंबे बल्कि बोढ़ा जेनुन का तेन मलदे। शुक्क भीर गर्म बायु के प्रभाव से नवशिशु शीवना से अन्ति करता हैं।

### "शिशु का दैनिक कार्यक्रम"

शतःकातः ६ वजे—दृधं पिलाना और परचातः शस्या पर सुलादेना ।

प्रातःकाल दे वजे—वस्त्र उतार कर पहले शरीर का नापमान देखे और फिर उसका भार सेवे। स्नान के पहले बच्चे को कुछ सिनट के लिए खेलने और हाथ पैर चलाने देना चाहिए । कुछ सन्तरे अथवा टिमाटर का रस पिलावे और स्नान के परचान शरीर का भली प्रकार निरीच्या कर शिशु को बन्च पहना हेना चाहिए ।

प्रात:काल ६ बजे-दृध पिलाना

" ६) " शय्या पर सुलादेवे श्रीर जब शिशु जागे तो कुछ स्थच्छ जल पिलाना श्रीर यदि ऋतु श्रम्छी हो तो कुछ समय के लिए बाहर खुली हवा में सैर करानी चाहिए।

प्रान:काल १२ वजे--वृध पिलाना ।

, १२६ , — शय्या पर लिटाकर मुलादेना श्रीर जागन पर जल पिलाना चाहिए। सार्यकाल ३ वजे— दूध पिलाना ।

" ३१ " — शय्या पर मुलाना श्रोर जल पिलाना

सार्यकाल ४ देव जे — कप हे उतार कर रात्रि के वस्त्र पहनाने के पहले शिश की कुछ समय के लिए अपनी शब्या पर खेलने और लानें इत्यादि चलाने हे, पश्चान कुछ अथवा सन्तरे का रस चटावे।

सायंकाल ६ बजे—दृध पिलाना
,, ६६ ,, —पालने में लिटा देना
रात्रि को १० बजे—दृध पिलाना
,, २ ,, —दृध पिलाना
"मलोत्सर्ग?"

नव माता को यह बतला देना चाहिए कि बच्चे का प्रतिदिन मलोत्सर्ग होना आवश्यक नहीं है। यदि मल बहुत कड़ा न हो और शिशु व्याकुल न हो उठे तो हर तीमरे दिन मलोत्सर्ग होना हानिकारक नहीं होता। प्रायः एक दिन में छः से आठ बार मलोत्सर्ग होना भी अधिक नहीं। पीला और हरा व इन्छ लेसदार मल निकलना अच्छा होना है परन्तु यदि शिशु माना के दृध पर न रहना हो तो उसके मल में इन्छ दही की मी फुटकें और रलेप्मा भी आती है।

#### शंयन

नव जाति शिशु अपने जन्म के, पहले कुछ सम्ताह तक, लगभग प्रतिदिन चौतीस घन्टा में बीम या बाइस घन्टे मोना रहता। है। निद्रा गहरी और शान्तिमय होती है। फिर १ वर्ष तक वह लग-भग चौदह से मोलह धन्टे तक सोता है प्रातःकाल का दूध पिलाना जितनी जहरी छूट सके छुड़ा देना चाहिए। जन्म से ही सोने का ठीक २ ढंग मिखाना चाहिए। हर ममय शिशु धाय की गोरी में रहना, अथवा पालने का हर समय हिलाना अथवा फिसी चुप करने वाली वस्तु के प्रयोग इत्यादि की आदत डाल देना शिशु के लिए न केवल धनावस्यक ही है बल्कि

श्रथवा भूख ही वच्चे की निद्रा में साधक होनी हैं।

#### व्यायाम

व्यायाम छोटे वच्चे के लिए इतनाही आवश्यक ह जितना कि एक वड़े मनुष्य के लिए। परन्तु इस छोटी अवस्था में व्यायाम केवल खुतकर रोने और हाथ पैर जोर से चलाने में ही हो जाता है। साथ ही साथ बाहिर खुली हवा में सैर कराना भी उतनाही लाभदायक होता है। जितना कि व्यायाम।

### सूर्य स्नान

यह अत्यन्त ही लाभदायक किया है परम्तु सूर्यस्तान विचार पूर्वक और बहुत सावधानी से कराना चाहिए। शींतज्ञातु में केवल हाथ और मुख ही खुले रखने चाहिए और मीष्म व वसन्त ऋतु में प्रत्येक अल व प्रदेश पर सूर्य का प्रभाव दो मिनट से अधिक न होना चाहिए। मूर्यस्ताव की किया का समय प्रति दिन एक-एक मिन्ड बढ़ा देना चाहिए परन्तु त्वचा का रंग गहरा। भूरा (Deep Tan) होजाना अध्ययक नहीं।

यह लेख अ'मे जी में लिखा गयाथा इसका अनुबाद मिस्टर रतनलाल बी, एम, सी, महीदय दहली ने किया है हम इसके लिये उनकी धन्यवाद करते हैं।



## शिशु पालन

ले०-कविराज पं० रामदास विभिन्न आयुर्वेदाचार्य पीलीभीत

अधिका क्रिस देश के बालकों की मृत्यु मंख्या जिल्हा की बार्षिक लाखों में हो उस देश का किल्हा की क्रिक्ट अल्पकाल ही में मर्जनाश होने में

क्या संशय है ? भारतवर्ष में १००० शिशुक्रों में से लगभग ४०० बालक एक वर्ष की आयु तक पहुंचने के पूर्व ही काल के गाल में पहुंच जाते हैं। क्या यह मृत्य मंख्या अन्य देशों में नहीं है ? कदापि नहीं, यदि भारत जैसी दशा अन्य देशों की भी होती तो भारत की इस दुःख कथा रोने से क्या अभिप्राय था। भारत में इक्क्लैण्ड की अपंचा अठगुने बन्चे काल के गाल में विना सांसारिक एवं अवीधावस्था को गले लगाते हुये इस संसार के प्राणियों को जोकि नानाविध मान्तियों कुरी-तियों से जकड़े हुए हैं इनको बोप-पूर्ण हाँछ से कुछ दिन या कुछ जगा देखकर अपनी यह जांयन लीला समाप्त कर देते हैं। यात्रकल कहा जाता है कि यिना इंप्योरण्डा पत्ता नक नहीं हिलता एवं जीवन-सरण किसी के हाथ में नहीं। भारत-वासियो ! आपके इन्हें विचारों ने आपकी दरांति की है यहि यही विचार परने से चने आने तव बाज इस भारत का नामोनिशान भी द्वार से न मिलता। जिस भारत की जगद्गुर समसा तथा समपत्ति कला कीशलादिकों का भएका माना जाता गहा है क्या इन्हीं भान्तियों पर ? जिस भारत ने प्राचीन मिश्र, युनान, राम, चीन

आदि देशों को सभ्यता का पाठ पढ़ाया तथा सारे देशों का नेतृत्व किया वह भारत क्या इन्हीं भुमात्मक विचारों का शिकार था <sup>9</sup> भारत की त्र्यायुर्वेदिक एवं चैदिक सभ्यता किसी इतिहासज्ञ से छिपी नहीं। प्राचीन भारत के शारीरिक एवं अध्यात्मिक विषयक उपाय अभी तक सभग कह-लाने वाले मस्तिष्क को छ तक नहीं पाये हैं। प्राचीन रहन-सहन नथा बर्गाशम संगठन ही इस आधार पर था कि स्वास्थ्य विगडन ही न पाना था. नई सध्यना के धारा-प्रवाह में प्राचीन सभ्यता तथा ऋष्यवेद के साधन ही समात हो गये, मन्च्य विदेशीय मध्यता एवं विधियों के गुलाम बन गये और पुरुषार्थहीन होकर सब बातें। को ईरवरेच्छा पर छोड़ दिया। किन्तु इस भना-नक व्याधि का उत्पात बजाय शान्त होने के दिन प्रति-दिन अधिकाधिक होता गया जो हम लोगों के मामने मीजृद है। प्रत्येक उन्नति-र्शाल देश की उन्नति भावी वानकों पर निर्भर होती हैं और इन शिशुओं द्वारा उन्तित का संचालत समाज तथा माताओं द्वारा होता है। किन्तु मातार्ये अपने कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व को पालन नहीं करती, इसमें मानाओं का दाप नहीं किन्तु समाज का ही है क्योंकि सन्ति जातीय सम्पत्ति है और इसके कल्याण ही में देश तथा जाति का कल्याण है। इस प्रकार समाज द्वारा साधित माता द्वारा

शिशुओं से देश का कल्याए हा सकता है श्रोर होता श्राया है। सभी देशों में माना का स्थान उच्च माना जाना है अथवा विश्वेश्वर ओर विश्व के मध्य में लितन-स्नेह के सिंहासन पर मानेश्वरी विराजनी है।

#### माता का कर्तव्य

शिशु जनन ! शिशु पालन !! शिशु रक्ण !!'
यदि मानार्थे इन तीनों का पालन नहीं करती
तो वे बीर अपराधिन। यन समाज को बलहीन
निस्तेज एवं पंगु बनाती हैं !

### बच्चों की अकाल मृत्यु के कारण

१ कुरीतियों का अन्यधिक प्रचार ।

२ देश की भयंकर दरिवता।

३ धानृ शिक्षा का अभाव।

४ असमय में भ्त्रियों का माना वन जाना।

🗶 अन्य विश्वाम वेमल विवाहादि ।

#### वच्चों की अकाल मृत्यु से क्या पता चलता है

जितनो मृत्युनंत्या वालको की होगी
 उमसे अधिक श्रियों का शोचनीय दशा होगी ।

२, उस देश के मिद्धांत कार्यम्हप में प्रच-लित न होते होंगे।

ब. वहा के निवास एवं निवासी दूषित होंगे। ध, जो शिशु किसी प्रकार बच मो जाते होंगे उनकी श्रियक संख्या निस्तेज बलहीन श्रङ्ग भङ्ग श्रथवा Skeleton अर्थात् श्रस्थि चर्मा-वशेष हांचों से बाआर की रानक बढ़ रही होगी। इसलिए सदैव (!hild is the Father of man अर्थान शिशु हो मनुष्य का पिता है; का ज्यान रावकर समाज द्वारा उत्साहित मानाओं से जनन रात्रणादि का पूर्णतया पालन कराना चाहिए।

#### माताञ्चों का कर्तव्यकर्म

श्रार्थ-माताओं को शिशुओं की शुश्र्ण मम्बन्धी ज्ञान एवं श्रारोग्यशाध का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए, नांक उन्हें इस बान की कल्पना हो जावे कि किन-किन उपायों से शिशु निरोगी एवं बल-पूर्ण हो सकता है सबसे पूर्व:—

#### शरीर-विस्तार

साधारणतया नवजात शिशु १ माम के अन्दर काफी भार बृद्धि कर लेता है। प्राप्त नी माम का उत्पन्न हुआ शिशु प्राप्तः ७ पींड विश्वन श्रीर १= इंच लम्बा होता है। इसके बाद पण्लि ३-४ दिनों में उसका भाग प्रायः १४-१४ वाना कम होजाता है किन्तु सम्बक्तया द्वाध का प्रबंध होने से इस कमी की पूर्ण कर लेता है। एक यप पर्यन्त बन्ने के शरीर विस्तार का परिपाण ज्यादा बढता रहता है. विज्ञयकर ऋस्थि, मांस, शिरा धमना का विस्तार, गति आंते तीव होती है। एक वर्ष पूर्ण होने तक भार प्राय: १८-२० पींड तक हाआता है, या यूं कित्ये कि जन्मकाल के भार से द्विगुण भार ६ मास तक और त्रिगुण एक साल में होजाता है। पूर्व दो वर्षा में जो विस्तार गीत होती है उतनो अन्य बंधों में नहीं होता। इसलिए इन दो वर्षों में शिशु के दूध एवं खाय पदार्थों को ओर विशेष बध्यान देना चाहिये । बालक के प्रथम वर्ष में यदि प्रतिमास १ पौंड भार न्बद्धं तब समभना चाहिये कि पोपकद्रव्य संतोप

जनक नहीं पहुँच रहे हैं साधारणतया प्रथम वप में वृद्धि निस्नोक्त प्रकार से होती है:--

ग्र <b>वस्था</b>	बृद्धिक्रम	पूर्ण तो०
१ मास	१३ श्रींस	<b>=</b> पोंड
२ माम	३० श्रीम	६ पौंड १४ श्रौंस
¥ ,,	२७ .,	११ पौंड ६ औं म
¥ +,	२६ ,,	:३ पोंड द औस
¥ 3,	₹₹ ↔	१४ मींड ः श्रीस
ē .,	₹0 .,	१४ पींड १२ ,,
ه و ه	ξω ,,	१६ पौंड ३ ,,
= ,,	₹₹ ,,	१८ पोंड ४ "
è	<b>ર</b> ર્,.	१६ पौंड १० .,
70	₹0.,	२० पौंड १४
११ .,	११	२१ पींड ६
₹% <sub>+</sub> ,	· · ·	२२ पी <b>ड</b>

उत्पन्न श्रवस्था में वर्च की कोमल श्रान्थियां कमरा: कठोर श्रीर मजवृत वन जानी हैं। मिल्फि, फुफुम, अन्त्र,यकुल्लीहादि ने श्रावश्यक वृद्धि होपर नजवृती श्राजाती है एवं विस्तृत होती रहती है। अतः इस समय म नालको की छोर चिशेष ध्यान देना जक्षी है, इस अवस्था में आलकों को Bribs Activity मौन्यक में सामल्यकी मात्रा भ्यून होती है मारा दिन रातसीने श्रार दृष्य पीने के ही स्थ्यीत करने रहते हैं।

#### वालकों का आहार

प्रायः मातृहुन्ध है। माना जाता है और वस्तुतः बह है भी म्यामाचिक भोजन। यहि इस दुष्ध का पृथक्करण किया जावे तो इसमें निम्न वस्तुयें प्राप्त होंगी जल, शकर, वसा, कीर, साराहि यह पांचों द्रव्य बालक के स्वास्थ्य के लिए अध्यन्त लाभप्रद हैं।

#### मातृदुग्धवमा से लाभ

उक्त दुग्यवसा से बालक की Nerves की पुष्टि मिलती है, श्रीर बच्चों की देह जो हर समय उप्ण रहती है वह बसा के रामायिक त्रिश्लेषण के Brain ('hemical Process द्वारा ही होनी है!

### दुग्ध शर्करा

इसके द्वारा भी शिशु में उपगता की वृद्धि होती है।

#### चार

इससे अस्थियों में तीवृता श्राती है ताकि मांस के धारण में उपयुक्त हों।

#### जल का उपयोग

जल उक्त पदार्थी का पाचन होने पर पाक रस की रक्त तक पहुंचाने का कार्य करता है। इतके अलावा दुग्ध में प्रीटीड Proteid के मीनोजने (asemogen के रूप मे प्रा'त होता हूँ इसका उपयोग सनम्त शरीर के अवययों को बल कार्ति देना है। यदि किसी कारणवश यह उपयोगी दुश्य प्रयोग शिर् के उद्देश में न पहुंचने पावे उस अवस्था में शिशु का जीवित रहना असंभव हो जावेगा अल यदि Pretaid कम मात्रा में शिशु के उद्देशन होता है तब बालक कमजीन, विद्विद्या, कान्तिहीन होजाता है। इसके अलावा शिशु के बलहीन होने के कारण किसा रोग के आक्रमण को रोकने की शक्ति नहीं रह जाती, साधारण रोग शिशु की किसी भी समय रोगाकान्त कर सकते हैं।

उक्त पांची द्रव्य कितने प्रमाण में पहुंचने चाहिये ? Water जल ८०१ —६० १८ दुभ्यशकरा Suger है १४ ६०१ वसा Fat विद्यालयों से ६१ वसा Fat विद्यालयों से ६१ — ६२ द्वार Salt के १४ ०२६ उपने के कालका से विद्यालयों में कि शाशु को शाश को बायस्यकता है वे सब माना के दुस्य में विद्यालयों हैं।

शिशु- श्रीर दाया

प्रायः यहां भी दाया से दुध पिलाने की रीति प्रचलित हो रही है फिन्त यह प्रथा आयुर्वेद शास्त्र के विरुष्ट एवं हानिकारक हैं । इसके अनुसार चलने से प्रायः बच्चें को हानि ही होती हैं। शास्त्रों में घाय का विधान उस समय वताया गया है, जब कि माता हम्मा हो जिससे भावी शिश् के जीवन पर संकट उपस्थित हो। धाय द्वारा दम पिलाने में पहले ना योग्य घाय का मिलना ही मुश्यिल हो जाता है किन जो। धनाहर हैं वह प्रबन्ध कर भी सकते हैं पर निधन प्राणियों के लिये यह व्यसम्भव ही प्रतीत होता है, गाय तथा वकर्रा का दृश्य जनतक उसमे जल एवं औषध मिश्रम न किया जावे. तथ तक ठीक प्रकार हज्म नहीं होता । प्रायः म्यालिस दुग्ध से बच्चों को अतिसारादि का शिकायतें हो जाया करती हैं, दुध के वर्तन को सदैव स्वच्छ रखना पड़ता है, बच्चे को पिलाते समय दुध का उच्छा करना भी अनि-वाये हैं, यदि इन भंभटों में जरासी भी उपेक्षा

की, मानों शिशु पर अन्याय करके रोग की म्वयं आहान किया। किंतु मादा का दुग्ध यदि शुद्ध है नव इन अंभटों से विलक्कल अलग रहना पड़ता है क्योंकि माता का दुग्ध मीधा बच्चे के मुंह से जाकर उदरस्थ है। जाने से किमी प्रकार का दीव नहीं अता, साथ में जबनक बच्चा दुग्धपान करना रहना ह नवतक प्रायः माताण दुबारा गर्भधारण के अयोग्य होती हैं इसिलये आजकल जो देशनेविल स्त्रियां स्वयं दृध पिलाने की प्रथा को घृष्णित समझती हैं वह कम से कम शिशु के दुग्ध पान काल तक पुनः गर्भधारण के भार से बची रहनी हैं।

बच्चोंको जब चाहे तभी दुध पिला देना ठीक नहीं,
दुग्ध नियमित समय पर ही पिलाना उपयुक्त
होगा कमसे कम तीन या चार घन्टे बाद दुध
पिलाना चाहिये इससे एक तो यह लाभ है कि
शिशु नियमित समय पर ही भोजनेच्ह्रक होगा
साथ में दुग्धादि का अवकाश समय में सम्यकतथा पाक भी होजावेगा और बच्चे को अच्छी
तरह भूख भी लगजावेगी साथ में माता को भी
आराम रहता है करोकि बह यह जानती है कि
बच्चा अमुक समय में दुध पीवेगा इस तरह
गृहस्थी के कार्य संचालन में भी बाधा न होगी
इसके अलावा जब बालक भूखा होता है तब दूध
अयवा तादाद ये पीकर शुधा मिटान का यत्म
करता है परिरागम स्वरूप स्तन्य भी समाप्त होकर
नया अस्ता दुध उत्पन्त होता है।

जब शिशु ३ - ४ मीम का हो जावे तब उस-को दिन सन हो अ--६ बार दृष्ट देना चाहिये।

बालको को दुग्ध पिलाने की नालिका नीचे दी जाती हैं:-- रात दिन में माना को कितनी बार दूध पिलाना चाहिये.

सबल		निर्वल
अवस्था वि	नरात	दिनरात
पहिला दिन ३	वार १ वार	२—१
दूमरा हिन	4-6	३—२
३ दिन से २० दि		६ ३
३ रे सप्ताह से १ सप्ताह तक	2 4-8	४ - २
इ मास-४ मास त	<b>雨火</b> 一七	४—२
€ ., १२ ., ,	, <b>w</b> १	3-8

उपरोक्त तालिकानुसार दूध दिया जा सकता है किन्तु सबल बालक की इतनी मात्रा में तृष्ति न हो एवं निर्बल बालक इतनी मात्रा हज्म न कर सकता हो उस अवस्था में बुद्धिमती माता स्वयं स्थूनाधिकता कर सकती है कोई मुश्किल कार्य नहीं। दुग्धपान एक महत्व का कार्य है जिसका संचालन साताओं द्वारा ही होता है यदि यह संचालन कुपद मृखी माताओं द्वारा होता है तब इससे बालक के स्वास्थ्य पर भीषण परिवर्तन हो जाने हैं। इसलिये माताओं का कर्तव्य है कि बच्ची के दुग्धपान में सावधानता से काम लें अत्यथा माताओं को शिशु दन्तोद्यमावस्था में अस्थन कथ्य उदाना पड़गा

#### वालक और दन्तीदृगम

माता की परीका का समय नवजात शिशु के दांत निकलने के वक्त देखा जाता है। यह समय नवजात शिशु के लिये अत्यन्त कष्टकर प्रतीत होता है। यदि माता इस वास्तिक परीका में सफलामृत हुई तब शिशु को नई जिन्दगी प्राप्त

होती है। भारत में लाखों शिशु इस भयानक रोग के उपद्रवांसे संतप्त हो श्रपनी ऐहिक जीवन लीला समाप्त कर देते हैं। खेद का विषय है कि अन्य देशों की भांति भारत में बियों की शारीरिक, व गृहस्थ सम्बन्धी एवं श्रारोग्य-वर्धक नियमी का माधारण भो ज्ञान नहीं श्रोर ना ही इसका राज्यकी श्रोर से प्रबन्ध किया जाता है श्रोर जो ममाज या मामयिकपत्रिकाश्री सेवाहितेच्छक मंस्था द्वारा प्रचार भी कर रहे हैं जनता में उमका कुछ मृब्य नहीं. वे सममते हैं कि इमकी आवश्यकता तो केवल वैद्योंको है जिनका कि पेशा ही यह है। एक इतिहास और भूगोल का विद्यार्थी श्रपनी श्र'ग्रानियां पर गिन कर यह तो बता सकता है फलां स्थानपर इतने नदी,नाल व नालियां या वह २ इतिहास हैं किन्तु श्रपनी मशीनरी जिससे कि रात दिन कार्य लेना पड़ता है उसकी चिन्ता नहीं । यदि इन लोगों से कहा भी जाये तो सीधा जवाव कि वैद्य डाक्टर किस लिये हैं यह है देश का दुर्भाग्य ! अस्तुः

#### बन्चों के दांत निकालने का समय

यह आवश्यक वा निर्यामन नहीं कि अधिक शिशु के दांत एक समय या एक आयु पर निकलें। दन्तीद्गम वालक के स्वास्थ्य पर ज्यादा निर्भर हाता है। भिन्न २ अवस्थायाले शिशु ओंके भिन्न २ समय पर दांत निकला करते हैं वालकों में पहिला दांत प्राय: ४-६ मास तक निकलना है। स्वस्थ वालक के दांत ३ मास के अन्दर निकलते देखें गये हैं। परन्तु ३ मास के अन्दर बहुत कम निकलने हैं। कमज़ीर वच्चों के दांत बहुत

विलम्ब से निकलते हैं, यहां तक कि पहिला दांत ग्यारहवें बारहवें मास में निकलना शुरू होता है।

प्राय: दूध के दांत र० की मंख्या में २॥ वर्ष के भीतर निकल श्रात हैं। सामने के दो दांत छुटे महीने में दो सूपे Lateral incisors or out side cutting Teeth द्वें मास में मध्य के मसूड़े First molars, or Lateral Grinners १२ वें मास में २ मसूड़े camine Dog or eye Teeth १८ वें मास श्रीर श्रान्तिम दाह Second molars or Posterior Grinbers, दुन्मरें वर्ष निकलते हैं। अन्य दांतोंकी अपेक्षा अन्तिम दाहों में जो दूसर वर्ष निकलती हैं उनमें वालकों को बहुत कर्ट होता है।

उपरोक्त कुल दांत दृध के दांत कहलाते हैं असली दांत प्रायः छटे वर्ष से निकलना शुरू होते हैं।

#### ्वालकोंके दांत निकलते समयके विकार

दांत निकलने के समय बालक आमतौर पर हठींने चिड़्चिड़े हो जाते हैं। दूध ठीक तरह नहीं पीते, रात या दिन में ज्वर भी होजाया करता है। रक्ष विरंग दस्त आने लगते हैं। और दांत निकलने के बाद स्वयं ही उपरोक्त लक्षण ठीक हो जाते हैं।

तथा प्रत्यंक दांन निकलने के कुछ सप्ताह पूर्व लार टपकने लगती हैं आंखों से पानी बहने सगता है।

ज्वर कास तृपा श्रितिसार की शिकायत तो प्राय: हर वच्चों में कुछ न कुछ रहती ह इसके श्राताचा वमन होने लगती है तथा कान में दर्व श्रीर चर्म सम्बन्धी विकार भी आमतीर से हो जाया करते हैं यह विकार प्रायः दांत निकलते समय हुआ करते हैं इनमें माताओं को घवडाना न चाहिये यदि किसी वालक को कोई विशेष शिकायत होकर प्राण् संकटापन्नावस्था विद्यमानहो उससमय किसी योग्य चिकित्मक से सलाह करके वास्तविक चिकित्सा करानी चाहिये। दन्तोद्गम के समय शिशुत्रों के मुंह से बहुत लार टपका करती है इस लार के टपकने से दांत बहुत सुगमता से निकलते हैं इस लारको रोकने का प्रयत्न न करना चाहिये। प्रकृति की स्वभाविक किया को रोकना शिशु पर अन्याय करके अन्य रोगों को निमन्त्रित करने क ममान है। भेषज चिकित्सा के वजाय शिशु के रहन सहन वलादिकों पर विशेष ध्यान देना चाहिये। बच्चे की उल्ला जल से निर्वात स्थान में म्नान कराना भी लाभदायक होगा। फलरस यथा अंगूर, अनार, सेव वगैरह का रस भी । - २ चम्मच दे सकते हैं किंतु इस फलरस में मातृदुग्ध का सम्मिश्रण कर लिया जावे।

वित दन्तोद्गम के समय बच्चे को दृध न पचना हो उस दशा में दृध में चृते का पानी एक चम्मच मिला कर दिन में १—२ बार पिला देना चाहिये।

श्रीर यदि किसी कारणवश वालक के दांत सुगमता से निकर्ले उस समय वालक के मसूहीं को नश्तर से हल्का चिरा देना चाहिये।

दांत निकल आने पर साफ वस्त्र से दांतों व जीभ को साफ करते रहना चाहिये।

#### बालक और अफीम

बहुत सी मूर्खा क्रियां बच्चों के रोने चिल्लाने से चिद्कर उन को अफीस का आदिवना देता हैं। वे भोली मातार्ये चिंग्यक सुख के लिये अपने शिशु को सदेव के लिये दुखी बना देती हैं।

भारत में सैंकड़ों श्वियां ऐसी हैं जो बालक शा मास के होने के बाद से अफ़ीम का प्रयोग करना आरंभ कर देती हैं उनकी यह धारणा हो गई हैं कि अफ़ीमसे बालकको मर्झ दांत एवं अन्य गांकामक बीमारियां नहीं होने पातीं और रो २ कर माना को बालक अधिक कष्ट नहीं देता। किन्नु इनका यह समक्षना भयानक भूल एवं अशिचा का परिणाम है। आयुर्वेद शाखानुमार आपको ज्ञान होना चाहिये कि अफ़ीम बालक को विलाना अपने हाथों उनको Poison विप देना है और यह हानि वच्चे के कुछ बड़ा होने पर मानाओं पर सम्यक्तया विदित होजाती हैं।

अपीस एक सांघातिक भयंकर विष है, जिसमें मार्राकत, कोहिन, पेरावेरिन, नारकोटिन श्रवित. नारमीन, मेक्रोनिन सात भयंकर हलाहल विषों का मिश्रम है. और इस मिश्रम का ही नाम अशीम है अब जो माताय बालक को इन मानों हलाहली की सिलानी हैं वह शिश क स्वास्थ्य एवं भविष्य जीवन केलिये कितना खन्धं उत्पन्न कर देती हैं। बालकों की अधीस देने से वे सुस्त है। जाने है नुक्ति मारफीन और नारकोटिन रायक जो विष इस के श्रद्धर विश्वमान हैं उनमें सम्बं एवं कमजारी लाने का विशेष अवगुरा हैं, श्रीर मुस्ते। र साध र मन्द्रारित होना भी अनि-वाय है. और जब मन्दरिन होगई तब धाहार रस का ठीक पाक न होकर रक्तर्नमांगा भी ठीक न हो सकेगा, और जब रक्त निर्माण ही ठीक न हुआ तब शिश की बृद्धि, तेज, चंचलतादि नध्ट

हो जावेगी और दिन प्रतिदिन बालक का शरीर काला पड़ता जावेगा। इसके अलावा शिशु सदैव केलिये अफीमची बन जाता है। इसिवये माताओं को चाहिये कि अपने शिशुसमाज पर अन्याय न करके इस कुप्रधा को नष्ट करदें।

#### बच्चों के रोगों पर सरल योग ज्वगतिसारे

बेलगिरी १ तोला, धाय के फुल १ तो०, मीचरस १ तो०, पठानी लोध १ तो०। कुरैया झाल १ तोला।

सव को महीन कृट छानकर रखले मात्रा—१ माम के वालक को १ रसी बड़े वरुचे को श्रायु के श्रनुसार मात्रा बढ़ाईं।

#### ज्वर कासे

अतीम १ नोला काकड़ार्मिगी १ तो० नागर मोथा १ नोला । १ मात्रा-१,२ रत्ती अवस्थानुसार ।

#### ब्रच्चों के दाँतों में

जिन बच्चों के दांत कप्ट से निकलते हों उनको हरी मकोय के पंचांग का म्बरम श्रीर गुलरोगन दोनों को कुछ गरम कर ममूड़ों पर रोजाना मलना चाहिये।

#### बालकों की पसली चलने पर

घोड़ के प्रगत्न पेर के बीच के जोड़ ने पास एक गांठ होती हैं। जैसे आदिमियों के पैर की उक्कली में पड़ने पर लोग नाईसे कटवा देते हैं, उस गांठ को चाकू से काटकर छ: मासके शिशु को राई भर और इससे बड़े बच्चे को १॥ राई भर गांठ को मां के दृध में घिस कर पिलादी पसली चलना बन्द होगी।

#### वालकों के सूखा रोग पर

विलक्षन स्यामवर्ण की गी का जिसके कोई दूसरे वर्ण का दारा न हो ! सेर गौ-मूत्र लेकर असली केशर १ तोत्रा, पूर्व थोड़े गोमूत्र को खरल में डाल केशर को खुब खरल करे बाद में कुल गोमुत्र में फेशर घोलकर वा छानकर खच्छ शीशी में रखली--

माला ६ माम के बालक को ४ बुंद मातृ-दुग्ध से । ६ से अ वे वालकों को द वृंद मानुदुग्ध से । ३ दिन में लाभ मालम होने लगेगा ।

नंत- दवा ७ दिन तक पिलाना चाहिये

प्रात:---मध्याह --मार्य-- ३ समय

रङ्ग विरंगं दस्तों पर

वंशक्तीचन, पोदीना, जीगसप्रेद, छोटी

इलायची, रूमीमस्तगी, २-२ तोला कूट छान मधु से चटाश्रो ।

#### बालकों की हिचकी पर कर्लोजी १ मा० महीन चूर्ण कर मधु से दो। गलरोग गलशुण्डि शोथञ्चले

१ आयोडीन

२ पोटाश त्रायोडाईड् "

**५** पीपरमेंट

🏖 त्रायल मेंथीपिप ४ विंदु: ६ ग्लिमरीन

पूर्व कमशः दवाद्यां को नं० २ तक मेजर गिलाम में डाल नं०३ पानी डाला, घुल जाने पर शेप दवार्ये मिलाकर रखलो गले की तकलीक में फुरेरी से लेप करो।



दवा का मृल्य १० रुपये।

पता बृहत् ऋषुर्वेदीय श्रीषध भाएडार,

जौहरी बाजार, दहली

#### बालरोग एवं उनकी

### सरल सुलभ-साध्य चिकित्सा

(लेo-श्रायुर्वेद सूरि कृष्णाप्रसाद त्रिवेदी बीo एo श्रायुर्वेदचार्य चाँदा मीo पीo)

तक ही हमारे राष्ट्र के आधार विक्रित खेद है कि आज इस आधारम्तम्भ में घुन लग गया है। यदि अभी भी इस स्तम्भ की मरम्मत न की जावेगी तो अचिरकाल में हीं यह स्तंभ दह पड़ेगा और हमारी चिराभिलियन राष्ट्रद्वीर की आधा-किरण निरोहित हो जावेंगी। अभी भी समय है कि हम जागृत होकर अपने आधार स्तंभ को शीघ ही सुधारें तथा घुन को निकाल बाहर करें।

त्मारे पूर्व ज, वालक ह्या गष्ट सम्पत्ति की रक्षा बड़ी ही सावधानी एवं दक्ता पूर्व क किया करते थे। और प्रत्येक गृहस्थ जानता था कि वालकों की रक्षा रोगरूपी शत्रु से कैंसे की जावे। किंतु आज ऐसा विपरीत समय आगया है कि हमारे घर का बालक यदि किसी कारणवश जरा मुर्मा जाता है तो हम प्रवड़ा कर कि कर्त्ति बाए-साप्ट उपचार शीधता से करके अपनी सूर्वता से उसे काल के हवाले करदेते हैं, और फिर रोने बैटते हैं। अस्तु, अब विशंप प्रस्तावना न करते हुये, हम यहां पर अधिकांश में बालकों को सतानेवाले एवं हमारे हरे भरे बालोग्यान को नष्ट करनेवाल तीन रोग राक्सी, (त्रिशिरासुर)

के नाशार्थ सरलाखों की योजना किये देते हैं, जिन के प्रयोग से अवश्य ही सफलता प्राप्त होकर हमारे मनोग्धों को सिद्धि होगी—

#### य्यन्तर्गत विकार

बालक को अन्तरिक विकार कीनमा है. यह जानना बड़ा कठिन काम हं । तथापि उसके रोने से एवं अङ्गचेष्टा से तुराल वैद्य बहुत कुछ पना-लगालेना है। बालक रोने रोने शरीर के जिस स्थान पर अपना हाथ बार २ लगाता हो तथा दूसरे को उस स्थान पर हाथ नहीं लगाने देना है। या उस स्थान पर हाथ लगाने पर वह अधिक जोन से चिल्लाना हो तो समस्ता चाहिये कि उस स्थान के अन्दर आभ्यन्त-रिक पीड़ा युक्तदाह (in flamation) अवश्य हो रही है। गदि वालक रोतं-राते अपनी आंखों को बार-बार मीचता हो तो जानना चाहिये कि उसके सिर म दर्व हो रहा है। यदि मल का अवरोध हो, बमन (क्रें) होती हो, दूध पीते २ स्तन की जोर से दबाता हो या काट खाता ही। पेट में गुरगुराहट हो, फुलाबट हो, पीठ की भुकाना हो या पेट को अप्रीम पर से इत्पर की उठाता हो इत्यादि जन्नलों पर से जानना होगा कि बालक के कोच्छ में शूल, नेवना या दाह हो रहा है। मूत्र में स्कावट हो, यह रह २ कराचौंकता

हो, दचकता हो और चारों और छांर्वे-फाड र कर देखता हो तो समफना चाहिये कि उसकी विम्त (नाभी के निम्त प्रदेश) में या गुह्य स्थान में पाड़ा हो रही है ! बालक यदि अपनी जीभ को या होठों को दांनों से काटना हो तो समभना होगा कि उसके हृदय में पीड़ा हो रही ह । दांती को यदि पीमता हो तोसममना चाहिय कि उदरशूल होगा। यदि निदायस्था में वह दांत चायता हो या जगानावस्था में अपनी नाक की मजनता हो तो समनना होगा कि उसके पेट में कृमि विकार ह । बार बार बमन होती हो, प्रलाप करना हो विशेषकार शिराता हो तो अजीर्ग विकार जानमा चाहिये। यदि वेट की बांधे स्रोर की या बाहिने और की अथवा दोनों और की पसलियां थोंकनी कैसी उहलती हो, धामोच्छवाम में उसे कप्ट होता हो, कलेजे में धड़कन हो, पेट धंमा सा मालुम देवा ही या उपर की फला हुआ ही. ं और प्रायः कट्यी हो। दस्त न होते हो और स्वर वेग तात्र हो तो सममता चाहिये कि दिव्या या पसली गाँग है। महपीड़ा आदि अन्य अन्य रोगों के लजग शाम्ब्रों में विस्तार पूर्वक लिखे है। यहां विस्तार भय से नहीं लिखने।

श्रव बालकों के विशंप कप्टदायक ३ रोग श्रीर उनकी सरल चिकित्सा लिखते हैं।

#### (१) डब्ब( या पसली चलना

यह रोग बच्चों का काल ही है। प्रायः ६ मास के स्परांत बालकों को यह विशेष देखा जाता है। यह रोग प्रायः सब का परिचित है।

#### उपचार:---

कड़ इन्द्रायण के फल के बीजों को भून कर चूर्ण बना रक्खें, १ रत्ती की मात्रा में इसमें किंचिन हींग मिला, दृध या जल में घोट-कर पिला देने से तत्काल रोग शांति होती है। अथवा २ काली तुलमी के पत्तों का रम दी से चार मासे तक. शहद ४ माठी एकत्र मिलगा कर उसमें बीरबहटी इन्द्रबप्टी कीटक) दी नग और २ लौंग महीन पीस कर दिन रात में द बार चटावे. दूसरे दिन पुन: इसी प्रकार तैयार कर चटावे. तीसरे दिन वालक रोग की चुंगुल से छट जाता है। अथवा (३) करेल के पत्तों का रस मात्रा २ से ६ माठी तक दिन में ४ बार पिलाने से भी शीध लाभ होता है।

श्यान रहं उक्त प्रयोगों की मान्ना ६ मात के वालक से लेकर १॥ वर्ष तक के वालकों के लिये है, ज्यादा उमर के बालक को यथावल और शिक्त देखकर मान्ना की योजना न्यूनाधिक की जा मकती है, और वे सब प्रयोग प्राय रेचक हैं, कारण इस रोग में न्यौर रेचन के शोब लाभ प्राप्ति नहीं होती। उक्त प्रयोगों के सिवा निम्निर्लावन प्रयोग भी इस रोग में गमवाण सिद्ध हुवे हैं:—(४) मुहागा मुना हुआ १ रनी और लींग भी मुनी हुई दो नग, तुलमी के रख में पीस कर मिला देने से पेट उठना, हंपनी, खोंसी, ज्वरादि सब उपद्रव शीब ही दूर हो जाते हैं। अथवा—(४) कंटेरी के फुलों का सृक्षा हुआ जीरा १ तो०, सडजीन्यार १ तो०, करंज की

मींग १ तो०, एतुआ ६ मार्श इनको महीन पीम कर बब्रल छाल के रममें घोट कर मृंग जैसी गोलियां बना रखना । मात्रा दो गोली से ४ गोली तक, मां के दृध में या गर्म जल में घोल कर पिलाना, तरन्त लाभ होता है।

नीट:—वालक की अजीर्णावस्था में अज्ञानवश उसे वार २ इध पिलाया जाता है, जिससे उसका कफ दोप विकृत होकर उसे तीवृ क्वर. सलावरोध, मृत्र की कमी या मृत्राधान, कास. श्वास इत्यादि धिकार होकर उसका पेट जोर जोर से हिलता है, उपर को उठता है। यही विकार आरो यहकर कफविशिष्ट सन्निपान (निमोनियां) में परिगान होकर मृत्य का कारण हो जाता है। ऐसी अवस्था विठीप में हमारे निम्न प्रयोग शतशः लाभकारी सिद्ध हुए हैं—

(१) पांहरफेटा बृटी (इसे इवहा बृटी भी कहते हैं. यह शरद ऋतु में प्रायः सर्वत्र होती हैं) पंचाङ्ग सिहत महीन चुर्ण करें. उसमें से दो से 3 सामा चर्ण लेकर उसमें पीपल (ऋक्ष्यः) के 9 या ६ फलों का महीन चुर्ण मिला, माना के देश के साथ 3 या 9 यार पिलाने से शीख ही लाभ होता हैं। (एक दम मृंह से धर घर ज्वास लेना, आंखें फाइ देना या आंखों का टिमर्टिमाना बन्द होना ये अमाध्य लच्चण हैं) परचात— रिलोय, नीम की छाल, मुलैटी, वायविखंग, मनाय, सींफ और फाकड़ मिसी इन ७ द्रव्यों को प्रत्येक १—१ माशा लेकर जीकूट कर, २० तोले जल में पकावे, २॥ तोला बल दोप रहने पर ज्याम ६ माशे मिश्री मिलाकर छाधा सबेंगे और आधा शाम को पिलाने । १७ दिन तक इस क्वाध

का सेवनकरा देने से बालक पूर्वन हुन्द्रपुष्ट होकर फिर सहसा किसी भी रोग का बाकमण उस पर नहीं होने पाता।

यदि उक्त कफ विशिष्ट सन्तिपान (निमी-नियां) होकर, फुफ़ुसों में सदाह शोफ़ होगया हो सो बालक की छाती को अलमी की पुल्टिश से सेंकते रहना चाहिए, तथा इस रोग में वैसी भी प्रारम्भ से ही छाती और पेट पर मेंकना और पुल्टिमें बांधना हितकारक है। निमोनिया की अवस्था में तीबू रेचक औपधि कदापि नहीं देनी चाहिये। उक्त गिलोय आदि क्वाथ में त्रिभ्यत-कीर्नि रम की मात्रा चौथाई रसी से आधी रसी तक देना विशेष लाभप्रद है।

#### - E -

#### बालापस्मारः ---

(कमेड़े, श्राचेपक व्याधि विशेष ) इसमें बालक का पेट फुलने लगता है, कंठ में युर पुर शब्द होने लगता है और श्राचेपक (('onvulsions)) श्रयीन शरीर के श्रद्धों में खींचातानी होने लगती है, बिकुत हो जाते हैं, श्रांखों की पुनलियां उपर को चढ़ी हुई दिखाई; देती हैं, सर्वाद्ध में कंप होता है। इस तरह बार २ रह २ कर बालक की दशा होती है। इसके बार २ दौरे हुआ करते हैं। जब रोग का दौरा होता है, तब बालक एकरम कांप कर, हाथों की मुद्धियां भींच कर, हाथ पैर कड़े कर, कभी २ धनुपाकार तनता है, चेहरे का रंग एकरम बदल जाता है। बेहोश हो जाता है, दांत किटकिटाते हैं, बह कभी २ बड़े कष्ट से कराहता है। किसी २ के मुख से फेन निकलता है, किसी के नहीं भी निकलता

हैं। नाड़ी की गति एक इस सन्द सूहम होती है। ऐसी दशा में वह कभी २ मल मृत्र भी कर देता है, श्वास बड़े कष्ट से लेता ह। कुछ मिनिटों बाद रोग का दौरा कम हो जाने पर उसे कुछ स्वस्थता सी प्राप्त होती है। यह ज्याधि बड़ी जान-मारू हैं। इसमें बालक की शिक्त एकदम जीए होती चली जानी है। यह ब्योध्य औषधाएचार न किया जावे तो बालक शीघ काल कविलन होजाता हैं। इसी ज्याधि को 'स्कन्दापरमार' या स्कन्द्रप्रह' भी कहते हैं।

#### उपचार:---

यह रोग प्रायः बालक की माना या उसके पालकी की असावधानी से होना है । जिस बालक के खान पान में ठीक निगरानी नहीं रक्वी जाती उसे ही प्रायः यह सारक रोग कष्ट देता है। अत्याय प्रथम रोगोत्पादक कारणों की दुर करना है। ही इसका क्या किसी भी त्याचि का मुख्य उपचार है। तदनन्तर रोगी बालक की मल शुद्धि करानी चाहिये।

यदि दूध पीनं वाला वालक हो तो शीध ही उसकी माता की. या जिस्मका वह दूध पीता हो दुख्यपृद्धि कर श्रीपिध्यां सेवन कराना प्रथमा-वश्यक कार्य है। साथ ही साथ उस बालक को थोड़े से शुद्ध रंडी के तेल में शुद्ध (श्रसली) शहद मिला रे बार चाटना चाहिये, श्रीर थोड़ा सा रीठा का फेन गुदामार्ग में प्रवेश कराने से उसका दस्त खुल जाता है। यदि इससे भी मल शुद्धि ठीक २ न हो तो—

हरड़, बहेडा, अतिविधा, काकड़ासिगी, वाय-विडङ्ग, कुडाञ्चाल, और भारंगीमूल इनको अलग अलग सिल पर थोड़ा-थोड़ा चिस कर । जल या दृध के साथ चिस कर ) पिला देवे, श्रीर पेट पर गरम पोटली से सेंकना चाहिये।

यदि जबर आदि कोई अन्य उपद्रव न हों, और एकदम रोग का दौंग हो जाय तो शीतल जल के छींटे मुख पर मारे, और होश में आने पर (या न आने पर भी । उसे प्याज काट कर सु वावे । श्वेत या लाल कोई भी प्याज लेकर काटकर या पत्थर से कूट कर, वालक की नाक के पास ने जावे और दूर करने, इसी प्रकार वार-बार करें, और बीच २ में गुलावजल या शीतल जल के छींटे मुख पर मारते रहें।

रोग का दौरा निकल जाने पर जब बालक होश में आवे तब उसे कुछ जिला पिला कर शांति के साथ मोने देवें या मुला देवें । फिरसे रोग का दौरा न होने पावे इसलिए यदि बालक छ: मास के अन्दर का हो तो एक महीन कपड़े की आठ तहें कर, उसे रेंडी के तेल में भिगोकर (तेल टफकने न पावे इसलिए उसे थोड़ा निचाड़ कर) बालक के ताल पर बांध देवे. जबतक यह रंडी के तेल से तर किया हुआ कपड़ा उसके ताल पर रहेगा रोग का दौरा न होने पाएगा। साथ ही साथ बच का महीन चूर्ण घी में मिला कर बालक के समस्त शरीर पर घीरे-घीरे मर्दन करना चाहिये।

उक्त किया के साथ ही में बालक की माता को चाहिये कि थोड़ी सी श्रजवायन अपने मुख में बवाकर उसकी लार दूध में मिला कर बालक को पिलावे, ऐसा करने से बालक का पेट साफ होकर रोग का दौरा बन्द होजावेगा। श्रार गूगल, श्रगम, राल श्रीर सरसों सम-भाग लेकर कुछ कृट कर इसका धूप करे, इससे हवा स्वच्छ होकर वालबह की शांति होती हैं! श्रथचा केवल वच की ही पृप देने से ही लाभ होता हैं।

ब्राह्मी का रस निकाल कर उसमें उत्तम शहद मिला बालक को थोड़ा २ दिन रात में कई बार चटाते रहना चाहिये।

यदि वालक की उमर छः मास के उपर हो तो इस अवस्था में प्रायः अपचन के कारण पेट में किमि हो जाते हैं, और इस रोग का सम्बन्ध इन किमियों से भी होजाता है। अतएव निस्त लिखित कवाथ सेवन कराना लाभदायक है।

बायविद्रंग, अजनायन, नीमकी ह्याल प्रत्येक ५, २ तोला लेकर जबकूट कर, १ पाव जल मिला क्वाथ करें, और अष्टमांश काहा तैयार कर ह्यानकर उसमें डीकामाली (मिश्री) १ माशा मिला बालक की थोड़ा २ पिलावें। इसके सेवन कराने से कीटा कि. नियों स साक् होकर, उसे फिर यह रोग कटट नहीं पहुंचा सकता।

साथ ही में बच का महीन चूर्ण १ या २ रसी शहद के साथ शतः सार्य चटाना लाभ-प्रदृष्टि।

एक वर्ष के उपर के बालक की उपर्युक्त उपचार वधायीग्य प्रमाण में किया जाना चाहिए। इतना सब करने पर भी विशेष दोप-दृष्टि के कारण यदि रोग का जोर न चट नो निस्नोक्त रीति से शंखभस्म का सेवन कराना आशु लाभप्रदृष्टि।

एक औटा शंच लेकर उसे जाना ( यशद )

की डिब्बी में बन्द कर उस डिब्बी को चूल्हे की या भट्टी की घधकती हुई आग में रख देते। जब डिब्बी खूब लाल होजाय, तब उसे बाहर निकाल स्वांग शीतल हो जाने पर अन्दर का शङ्क निकाल महीन चूर्ण कर रक्खें। इसे १ या दो रत्ती की मात्रा में दुग्ब के साथ प्रातः साय पिलाने से तत्काल लाभ होंना है।

इस पर लांछन किया ( दागना ) उत्तम लाभदायक है। हर्ल्डी का एक लंबासा टुकड़ा लेकर उसका एक छोर आग पर रख जलावे. और मस्तक पर भी के पास नस के ऊपर कुशलता पूर्वक दाग देवे। और ऊपर गैं-धृत लगा देवे।

इत्यादि कई उपाचर हैं, किंतु हमने यहां मुख्य २ अपने म्वानुभूत प्रयोगों का लोकोपका-गर्थ प्रकट कर दिया हैं। गोग के दौरे की बेहोशी की हालत में उसे होश में लोने के लिए।

१ मिरम के बीज और करंज के बीज सम-भाग, थोड़ से जल में घिम कर आंखों में अ जन कर देने से इस रोग का दौरा तुरंन दूर होकर बालक होश में आजाता है, अथवा—(२) रसील मैनिमल और कपूतर की बीट इन तीनों को सम-भाग लेकर जल में घिस कर अन्जन करदेने से भी दोश आजाता है। अथवा (६) आंख की जड़ को बकरी के दूध में घिस कर उसकी दो या चार वृन्दें नथनों के अन्दर छोड़ देने से भी लाभ होता है।

इस रोग के प्रतीकारार्थ 'वालापस्मार हर के गौघृत' निम्न प्रकार तैयार कर हमेशा स्वन कराते रहना उत्तान लाभदायक है—

गाय का दूध, गाय का दही और गाय के ही

गोबर का रस तीनों समभाग एक कर, उसमें चौगुना गाय का घृत (ताजा मिला, मंदाग्नि पर पकार्वे, जब घृत मात्र शेप रहे, तब उसे छानकर शीशी में भर रक्खें। इस घृत को रोज दो या तीन बार प्रत्येक बार दो से तीन माझ तक द्ध में मिला पिलावें।

यह रोग पुनः न होने पावे एतदर्थ निम्न बातों पर पूर्ण ध्यान देना आवश्यक है—

- (१) जब तक जालक माता का दुग्ध पीता हो, तब तक माता को पूर्ण बूझचर्य का पालन करना चाहिए । इनना भी यदि न हो सके, तो प्रसूति के परचान पुनः ऋतु प्राप्त होने तक कहापि पुरुष संग नहीं करना चाहिये।
- (२) बालक की अधिक कदन नहीं करने देना चाहिये, उसके कदन का कारण शोधकर तुरन्त ही उसका उपचार करना चाहिये। उसका पेट साफ हैं या नहीं इस बात की ओर अवश्य ही ध्यान देना चाहिए।
  - (३) बालक को विशुद्ध दृध पिलाना चाहिये तथा दृध की मात्रा परिमित होनी चाहिये।
  - (४) विशेष ध्यान में रखना चाहिये—िक रोग निवारणार्थ उपचार अनुभव युक्त तब्झ वैद्य के ही द्वारा कराना चाहिए। अपह, अनुभव दीन, कुशिद्यित, आचारहीन मनुष्य या स्त्री के द्वारा बालकों का इलाज कराना मानों उसे जान बुभकर काल के गाल में भोंक देना है।

श्रीर भी विशेष मार्के की वात, तख़रे

को घंटा—इस रोग पर आधुनिक विज्ञापन बाजों की ऐसी कई औषधियां अपनी शान बतला रही हैं, जिनमें बोमाइड या तत सहश ही मस्तिष्क शिक्त को निर्वल, सत्व हीन बनाने वाले एवं अनावश्यक मुस्ती या निद्रा लाने वाले द्रव्यों का मिश्रण हुवा करता है। इन औपधियों के सेवन कराने से रोग की जड़ दूर नहीं होती तथा आगे चलकर दुष्परिणाम यह होता है कि बालक निर्वुद्धि या पागल भी हो जाया करता है। अत-पन्न बहुत ही समक वृक्तकर औपधोपचार करना या कराना चाहिए।

## ३ पारिगर्भिक विकार एवं बालशोष

गर्भवती माता का दूध पीने से बालक कृश हो जाता है, उसे बहुत श्रुधा लगती, हमेशा खाब खाब किया करता है। पेट सामने बढ़कर हाथ पैर मुखने लगते हैं। ध्यान रहे पेट में ४ माम का गर्भ होजाने पर माता को अपना दृध कदापि नहीं पिलाना चाहिये. अन्यथा उसे मुखा रोग बालक स्वय हो जाने की मंभावना है।

माता के विकृत दूधके कारण, श्रथवा श्रपचन के कारण, श्रथवा माता पिता का उपद्ंश जन्य विकार वालकके शरीर में प्रतिष्ट होजाने से, या जीर्ण ज्वर के कारण वालक्तय सूखा रोग' वालकों को होजाता है। उसकी त्वचा फुलसी हुई सी, फुरियां पड़ी हुई सो होकर वह कुश होता चला जाता है उसका चेहरा मात्र उम्र दिखाई देता है। वह मुस्त पड़ा रहता है। उसके कानों के लम्बकों की कर्णपाली को जोर से दबाने पर भी उसे किचनमात्रभी वेदना नहीं मालूम देती।

# बालोपयोगी कृत्रिम भोजन, शिशुशयन, दन्तोद्रम इत्यादि

( लेखक—वैद्यरत्न पं० सोङ्कारप्रसाद शर्मा मिपक्शास्त्री आ० विशास्त्र प्रधान चिकित्सक—श्री मारवाडी औषधःलय, देहसी। )



लक सनुष्य रूपी वृज्ञ का मल ह जब मृल में ही दीमक (कीड़) लग जाने हैं तब वृज्ञ क फलने फलने

की श्राशा करना ही नयथं हैं।

भारतवर्ष के अन्दर आज यालतन्त्र का पूर्ण झान न होने एवं माता पिताओं की अभावधानी के कारण प्रतिवर्ष अमंख्य वालक कुटिल काल के कवल (प्राम) बन जाते हैं। जो यथाकधंधित दैवयोग से बच जाते हैं— वे बेचारे युवाबस्था को प्राप्त होते ही अपने स्वास्थ वनने की विता से लगे हुए देखने में आते हैं।

तेत है आज जीरप्रमंत्रा भारतभूमि तुर्वल-देहवारियों (रोगियों) का खजाना वनी हुई है। देश की उन्नति और अवनति जानकों पर ही निर्भर हुआ करती है, बालक हा आगे जनकर देश के कर्णवार (नेता) दोते हैं, बालक देश की मीलिक सम्पन्ति होते हैं, बालक माता पिता की परमानन्द के देने बाले होते हैं। जिन परी में स्वस्थ बालकों का इतस्तन: धुमना होता है उन

कृद्ध तिनों के बाद कक के विकार काम आदि शकर ब्वर आने लगता है। तथा फिर क्वय के संपूर्ण लक्का प्रकट होकर शीघ ही मृत्यु साजातं हैं।

#### उपचार--

प्रथमारं भे अस्तितं पक श्रीपंथयां देती नाहियं। द्रानासव, करे जासव श्राद् श्रथवा मंजीवनी गृटिका गौदुग्ध के साथ या शहद के साथ सेवन करता हितपद है। माथ ही साथ गिम्न लिखित प्रयोग विशेष लाभवायक सिद्ध हुवे हैं। (१) जहरमोहरा खताई की खारपाँठ के रम में घोटकर, शराव सम्पुट में राव राजपुट में सम करले । मात्रा १ रती, घी के साथ देवे, तथा इसी सस्म को घी में मिला शरीर पर मालिश करें, अथवा इस भस्म को लालादि तैल में मिला बालकके सर्वाङ्ग पर मालिश करना उत्तम लाभकारी है। अथवा (२) अपामार्ग की पत्ती १ तीना में लौंग । अतीस, वंसलोचन प्रत्येक ४-४ रती मिला, तथा खूब खरल कर मटर जैसी गोलियां वना रक्यें । प्रात: सार्थ एक दो गोली माता के दूध या शहद में मिला चटाना चाहिये।

घरों की शोभा स्वर्ग से किसी प्रकार कम नहीं कही जा सकती। अधिक क्या मानवीमृष्टि में जो कुछ हैं वे बालक ही हैं। जिस प्रकार मकान की मज़्वृती के लिये आर्राम्भक भिन्नि का पुष्ट होना आवश्यक है उसी प्रकार मानव शरीर की मज-वृती के लिये बालक रूपी आर्राम्भक भिन्नि का पुष्ट होना अत्यन्त आवश्यक है।

#### बालोपयोगी ऋत्रिम भोजन

यहां वालीपयोगी कृत्रिम भाजन से दुग्ध छुड़ाने के समय दिये जाने वाले बन्त से नात्पर्य है। यालक को यह कृतिस भोजन "अथैनं जान-दशनंद्रामेगापनयेत्स्ततातु "इस आयुर्वेदोपदेश क अनुसार दांतीं के निकल जाने पर देना चाहिये। बालक की जाउरापित दांत निकलने पर ही अन्त की पचाने में समर्थ होती हैं । श्राय: बालकी के कई दांत नीवें दशवें महीने में निकल जाते हैं. ् तभी से शर्ने:२ अन्त देना आरम्भ करना चाहिये । महमा मान्य वस्तु का खुड़ाना और श्रमान्य बन्तु का सेवन करना हानिकारक होता है। ऐसा करने से बच्चे कमज़ार एवं रोगी होजाने हैं । इसलिये द्ध के साथ ६ हलका श्रीर स्वादिष्ट भोजन खाने की देना चाहिये जो श्रामानो से पच मके। साधारणतया यथाप्रकृति नीचे लिखी वस्तुएं देनी चाहियें:-

चावल, मूंग की दाल, खील का हलुवा, मीठा—फीका श्रीर नमकीन गेह्ं का दलिया (तवे पर घृत में भूनकर बनाया हुआ) बाजरे श्रीर जवार की रोटियां, पत्तों ( चीलाई वगैरा ) का शाक, श्रांगूर सन्तरा आदि फल श्रीर उनका रस, बादाम किश्लिमश आदि दिमागी शक्ति और खून को बढ़ाने वाले मेवे। इसके अलावा कभी-कभी मत्तृ और मिश्री मिला कर वनाये हुए लड्डू भी देने चाहियें । दुम्ब छुड़ाने के समय बालकों के लिए वाम्भट ने तीन प्रकार के मोदक लिखे हैं—

"प्रियालमञ्जमधुकमधुलार्जासतीपलैं: । अप-स्तन्यस्य संयोज्यः प्रीगानी मीदकः शिशोः । दीपनी वालविल्येलाशकंराताज सन्त्रीभः । संमाही धात-कीपुण्य शर्करालाजनपंगोः ॥" इनके सेवन करने से बालक प्रमन्त चित्त रहते हैं, आर द्य छोड़ने पर भी उनके शरीर में कमजोरी नहीं होती। हैं।

यदि बालक को श्रांतिसार, तमन, बदहज्मी, बादि बीमार, होजाय तो नत्तद्रोगहर श्रोपधी का मोजन के साथ संसिक्षण कर देना चाहिए, जिस से बालक को श्रालग कीषध लेने में नकलीए न उटानी पहे। यद्यपि श्राजकल वाजार में बालकों के खाने की बहुत मी बस्तुर्थे मिलती हैं, जैसे बिस्कुट, हवलरोटी, मेलिनम साहच का जनाया हुश्रा बच्चों का खाना श्रादि, किन्तु ये बस्तुर्थे हमारे देश के बालकों के लिए उननी उपयोगी नहीं जिननी हमार देश में उत्पन्न हुई एवं रोजाना ताजा बनाई हुई बस्तुर्थे होती हैं।

## शिशु पालन विधि

शिशु के गर्भम्थ होते ही उसका पालन करने की आवश्यकता होती हैं। गर्भस्थ शिशु का हिता-हित माता के आधीन होता है, इस्मिल्ए माना को चाहिये कि गर्भस्थ बालक के हित को ध्यान में रखकर आहार विहार का आचरण करे।

इसी तरह माता के हित आहार विहार न करने छे गर्भ में जी-जी; दोष उत्पन्न होजाया करते हैं उनका सिवस्तार वर्णन चरक संहिता के शारीर स्थान की जातिसृत्रीय श्रध्याय में मिलता है।

- १. गर्भिग्गी को अच्छी तरह भूख लगने पर नियन समय में नियमितरूप से हृद्य, द्रव्य, मधुर, स्निग्ध और अग्नि को दीपन करने वाला भोजन करना चाहिये।
- २. भोज्यपदार्थों को अच्छी तरह चवाकर खाना चाहिए, जिससे रस अच्छा वनता है और गर्भ को ताकृत मिलती है।
- ३. भोजन करते ही किसी कार्य में न लगना चाहिये, किन्तु भोजन करने के अनंतर थोड़ी देर इधर उधर घुमना और विश्राम करना चाहिये।
- ४. कभी २ गर्भिणी को प्रातःकाल ही भूख लग जाया करती हैं, ऐसी हालत में थोड़ा हलका भोजन करना द्विकर होता है। भूख को द्वाना उचित नहीं।
- मिंगी को उपवास न करना चाहिये,
   उपवास करने से गर्भ में दुर्बलता होती है।
- ६. प्रात:काल उठने ही शिथिलना का अनुभव होने लगे नो थोड़ा धारोछए या गर्म दृध पीलना चाहिए ।
- ७. वस्त्र साफ, ख्राँग हील पहिनना चाहिए, वस्त्रों को कस कर पहिनने से वालक के ख्रङ्ग प्रत्यक्ष जिनने सुडौल होने चाहिए उनने सुन्दर नहीं होने पाने ।
- म. जबतक वरुचा पैदा न हो तबतक आदर्श स्त्री पुरुषों के जांबन चरित्र मुनने चाहिए। ग्यास-कर पहले दूसरे और तीमरे महीने में मधुर शांतल और द्रव भोजन सेवन करना चाहिए।

चौथे महीने में दृध श्रौर मक्खन मिला हुश्रा भोजन खाना चाहिए। इस ममय गर्भस्थ शिशु के श्रङ्ग प्रत्यङ्ग व्यक्त होते हैं, इसलिये श्री की द्विहदया मंज्ञा हो जानी है अतः इस महीने से स्त्री जिन २ वस्तुश्रों में श्रिभिलापा करे वे सब देना चाहिए। अभिलपित वस्तुश्री के न मिलने से गर्भस्थ बालक के अङ्ग विकृत हो जाते हैं-''दौह दिवमाननात कुब्जं कृष्णि खंजं जडं वामनं विकृताचमनच्ंवा नारी सुतं जनयति। पांचवे मास में दुग्ध घृत से मिला हुन्ना हलका भीजन ग्वाना चाहिए। छटे महीने में दुग्ध घृत के साध पौष्टिक पदार्थांका सेवन करना चाहिए। इस समय सेवन की हुई वादाम मिश्री श्रादि वस्तुएं वालक की मस्तिष्क शक्ति को मजवृत बना देती हैं। सानवें और ब्याठवें महाने में पांचवे तथा छठेमाम की तरह उपचार करना चाहिए। विशेष कर इस समय चिकनी यवागू प्रभृति का सेवन करना उत्तम होता है । प्रसवपर्यन्त इसी प्रकार उपचार श्रावश्यक है। नौर्वे महीने में स्वच्छभूमि में यथा-विधि वनं हुए सृतिकागृह् में प्रवेश करना चाहिए । प्रसव के समय वृद्ध चतुर ख्रियों का पास में होना श्रत्यन्त श्रावश्यक है, जिससे प्रमव के समय होते वाले आकस्मिक कष्टों से जच्चा और बच्चा दोनों को किसी प्रकार की हानि न पहुँचे।

उत्पन्न होते ही शिशु की अपरा से अलग करना चाहिये, कभी-कभी बालक थैली के अन्दर बन्द हुआ पैदा होता है यदि ऐसा हो तो चतुर दाई की मात्रधानी के साथ थैली को फाड़ डालना चाहिए। शिशु के मुख को संधा नमक मिले हुए घृत से माफ कर देना चाहिए। तदनन्तर अष्टांगुल परिमाण नाप वर नाल को काट देना चाहिये, नाल काटने समय बहुत होशियारी रखनी चाहिए क्योंकि नाल के अधिक खिचाब से नामि का फूलना, पीड़ा होना, पकना ये विकार होजाया करते हैं। वालक के शिर (तालुस्थान) पर घृत में भीगा हुआ फोया रखना चाहिए, और हरिद्रा आदि मांगिलिक वस्तुओं से मिला हुआ उद्धर्तन या चन्द्रनादि, लाझादि किमी तेल की मालिश कर फलालेन से पोंछ कर गुनगुने जल से स्नान कराना चाहिये। वालक कभी कभी भूमिष्ठ होते ही प्रसृति पीड़ा से पीड़ित होने के कारण मृर्छित होजाता है. वैसी अवस्था में शिशु के मुख पर शीतल अथवा गर्म जल के छीटे लगाना, हवा करना आदि उपचार करना चाहिए।

यदि उत्पन्न हुए बातक के अङ्ग प्रत्यंग जुड़े हुए हैं। या उनमें ओर किसी प्रकार की विकृति हैं। तो सुयोग्य चिकित्मक के द्वारा शीध उपचार करवाना चाहिए।

मश्रुत में लिखा है-- "धमनीनां हदिस्थानीं विवृत्तत्वादनन्तरम् । चत्रात्रात्रिरात्राद्वा क्षिणां मन्यं प्रवतेते । तस्मात्प्रथमेऽद्धि मश्रुमपिरनन्तामिश्र मन्त्रपूर्त त्रिकालं पाययेत्, द्विताये लद्दमणासिद्ध मिप्, तृतीयेच । संभवतः प्राचीन समय
में तीसरे या चाथे दिन दुग्ध प्रवृत होता हो, किंतु वर्तमान समय में प्रथम दिन ही स्तनों में दूध त्राने लग जाता है, अतः सर्व प्रथम जो दुग्ध स्तनों में आये उसे निकाल देना चाहिए । अन्यथा शिशु को कास श्वास वसन होने का भय रहता है।

बालक को लेटकर कभी दूध नहीं पिलाना चाहिये क्योंकि लेटकर दूध पिलान से शिशु के कर्णमान होने का भय रहता है, इसलिये बालक को गोद में लेकर एक हाथ उसके शिर के नीचे उपधान की तरह लगाकर बैठे र दूध पिलाना अच्छा रहता है। दूध पिलाने बक्त पहले दाहिना और फिर बायां स्तन बच्चे को देना चाहिए। बहुत सी मानाएं कभी जल्दी और कभी विलम्ब से बच्चों को दूध पिलाया करती हैं, जल्दी पिलाया हुआ दूध ठीक नहीं पचना और विलम्ब से पिलाया हुआ पूच और पाचनशक्ति को नष्ट कर देना है। इसलिये दूध पिलाने के लिये समय का नियन होना परमावस्यक हैं.—

पहिते महीने में १-१ घंटे के फामले के दूसरे महीने में २-२ घंटे के अन्तर से, तीलरे मास से छंटे मास तक तीन २ घंटे के जिलम्ब रें, मानवें महीने से नीवें या दशवें महीने तक ४-४ घंटे से दूध पिलाना चाहिये। यद्यपि वालकों की देह बृद्धि के लिये माना का त्थ ही अधि ह उपयोगी होता है तथापि किसी कारणवश माना के दूध न उत्तरना हो अथवा माना के केंद्रे ने होगया होता थाय का या प्रकरी और गाय का दृध देना चाहिये।

यदि बन्चे को धाय का दृष पिलाया ताय तो उसके अन्दर नीचे लिखे लक्ष्मो का होना आवश्यक है—

भाय समान जाति और कुल की हो. ग्वस्ता से शांत और बच्चे से प्रोम रखने वाली हो. जाते बच्चे की मां हो, मध्य ऊमर की हो, नारोग ो, शरीर से म्थूल या कुश न हो, हित आहार

कनीयसी।।" युवावस्था वालों के लिए जिस श्रौपधी की मात्रा = रत्ती हो तो १-मास से ३ मास तक के बच्चों के लिए उस श्रौपधी की | रत्ती की मात्रा पर्याप्त होती है । मात्रा के विषय में यह केवल दिग्दर्शन मात्र है, क्योंकि मात्रा का कोई निष्चत परिमाण नहीं होता । लिखा है-"मात्राया नास्यवस्थानं दोप मिनवलं वयः । ज्याधि द्रव्यंच कोष्ठंच बीद्य मात्रां प्रयोजयेत ।।" इस-लिये दोप वगैरह को देखकर बालकों के लिए श्रोपधी की मात्रा का निश्चय वैद्य को स्वयं करना चाहिए । इस प्रकार श्रायुवेंदीय पद्धति के श्रनु-सार शिष्युपालन होने से बालक हुष्ट पुष्ट बल श्रौप बुद्धि से युक्त होते हैं, तथा सदा नीरोग रहते हैं ।

## शिशुशयन

वालकों के सोने के लिये १०-१२ वर्ण्ट का समय अवश्य होता चाहिये । प्रायः वर्च्यों का विश्राम सोने में हा सिम्मिलित होता है। वालकों को तंने प्रारीर कभी न सुलाना चाहिये । दूथ पीने और भोजन करने के बाद तत्काल वर्च्यों को मुलाने से दुख व भोजन का पाचन ठीक नहीं होता, इलिलए थोड़ी देर दहरकर मुलाना चाहिए। वालक को खोंचा या एकदम सीधा कभी न मुलाना चाहिए। वालक को महमा ज्याना न चाहिए । वालक को महमा ज्याना न चाहिए । सहमा ज्याने से वालक भयभीत हो जाता है। मुलाने के लिये वर्च्यों को क्ये या जंबा लगाकर हिलाना न चाहिए, ऐसा करने से मदा वर्च्यों को वेंसे ही सोने की आदन पड़ जाती है। बहुनसी लियां वर्च्यों के रोने से तंग आकर

अफीम देकर बच्चों को सुला देती हैं. बच्चों को नहों की बस्तु खिलाना बहुत खतरनाक होता है' ऐसा करने से बालक चिड़चिड़े स्वभाव के हो जाते हैं। श्रीर उनके मस्तिक तथा हदय पर बहुत खराब प्रभाव पड़ता है। सोते हुए बालक को श्रक्ता छोड़ कर कहीं न जाना चाहिए। श्रभी थोड़े दिनों की बात है कि एक मालिन श्रपनी एक वर्ष की छोटी बच्ची को श्रांगन में मोती हुई छोड़कर कहीं बाहर चली गई थी, पीछे से एक पागल कुत्ता घर में श्रुस गया जिसने उस अबोध बालिका को कई जगह जख़मी कर दिया। रात को मोते हुए बच्चों को तीन चार दफे श्रवश्य संभाल लेना चाहिए, क्योंकि मोते हुए बच्चों के श्रोदने का यस अलग होजाने से ठंडक लगकर जुख़ाम खांसी श्रांट वीमारियां होजाया करती हैं।

#### वालकों के वस्त्र

वालकों के खोड़ने, विद्धाने खोर हारीर में पिहनने के कपड़ सदा वजन में हलके मृदु, साफ खीर मुगन्धयुक्त होने चाहिए। वालकों के वस्त्री के विषय में चरक संहिता में लिखा है — "शयनासना स्तरण्यावरणानिकुमारस्यमृदुलपुर्श्वाचसुगन्धीनिस्युः, स्वेद मलजन्तु मन्ति मृत्रपुरीपोपसृष्टानि च वच्यानि स्युः, असित संभवेदस्येषां तात्येव च सुप्रज्ञालितो-पचार्नान सुव्धितानि शुद्धशुष्काण्युपयोगं गरुद्धे-युः। " राले मल मृत्र लगे हुए कपड़ों को उपयोग न लाना चाहिए, अगर नये कपड़ों न मिलें तो रोजाना उन्हीं कपड़ों को अच्छी तरह साबुन से घोकर सुखा करके। उपयोग में लाना चाहिए। वालकों के पहिन्ने के लिए शांतकालमें उनी गरम

कपड़े, और गर्मी के दिनों में इकहरे सफ़ेद खदर के कपड़े अच्छे रहते हैं। बालकों को कभी चुस्त कपड़े न पहिनाने चाहियें, चुस्त कपड़ों के पहि-नने से बालकों को श्वास लेने में कष्ट होना है, श्रीर उनके हृदय तथा फुफुसों को बहुत हानि पहुंचती है। जिससे शरीर के अन्दर रक्त का परि-भूमण् ठीक नहीं होता हैं । इसी प्रकार अधिक ढीले कपड़े भी पहिनाना ठीक नहीं, क्योंकि डीले कपड़ों में बालकों के हाथ पांच उलभ कर गिरने का भय रहता है। बालकों की खटिया पर बिछाने वे लिए उनी कम्बल और ओढ़ने के लिए हलकी रजाई होनी चाहिए। अधिक वजनदार कपड़ों का उदाना अच्छा नहीं क्योंकि वज्नदार कपड़ी से बालक दब जाते हैं और उन्हें खास लेन तथा करवट बदलने में बहुत तकतीफ होती है। वालक के ओहने विद्वाने और पहिनने के कपड़ी 🄞 को मदा धूपित करना चाहिए। जिससे कपड़ों में लगे हुए खराव कीटासु नष्ट हो जाते हैं। धूप किन वस्तुओं से लगाना चाहिए इस विषय में चरक लिखता है- "भूपनानि पुनर्वामसां शयना-सनास्तरगुप्रावरग्णानाञ्च यवसर्पपातसीहिंगु गुग्गु-लुवचाचौरकवयःस्थागोलोमोजटिलापलङ्कपाशोक-रोहिएीं सर्पनिर्सीकाणि वृतयक्तानिस्यः॥"

#### आभूपण

आजकल कम उम् के वालकों को सोने चांदी के आभूपण पहिनाकर उनके हाथ पांच कम दिए जाते हैं, जिससे पुष्ट होने वाले उनके खंग सहा के लिये दुवले पत्ते गह जाते हैं। कभी २ इन गहनों के लोभ से बदमाश लोग बोलकों को

उड़ा कर ले जाया करते हैं और गहने उतार कर उनको मार डालते हैं। इसलिए सुख सम्पत्ति विनाशक ऐसे आमूपण बालकोंको कभी न पहिनाने चाहियें। चरक लिखता है-

"मण्यस्व धारणीयाः कुमारस्य खङ्गरुरुगव-यषृपभाणां जीवतामेव दक्षिणेभ्यो विषाणेभ्यो-Sप्राणि गृहीनानिस्युः, ऐन्द्रयाद्याण्नौपधयो जीव-कर्षभकौ च, यानि चान्यान्यपि बाह्मणाः प्रशंसे-युरधर्ववेदिवदः।" इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि शाचीन समय में गहने बालकों को स्वास्थ्य वृद्धि के लिए पहिनाये जाते थे न कि आजकल की शारीरिक शोभा के लिए। तरह केवल जिन वस्तुओं का गहनों के लिए उन्लेख है वे सब गले में माला की तरह पहिनाई जाती थीं। इस प्रकार के आभूपगों से न तो वालकों को किसी प्रकार का कप्ट होता था और न अर्झों के दुवलें पतल होने का भय ही रहता था। यह ही नहीं मिण्यां मूर्यादिप्रहों की पीड़ा निवारण करने वाली होने के कारण बालकों की यहपीड़ा नहीं होनी थीं (आजकल भी बहुत से मगुष्य सूर्यादिमहों का दोप निवारण करने के लिए य गुठियों में मिण्यां जड़वा कर पहिना करने हैं) फेट्री आदि दश औपधियां बल्यगण की और जीवक ऋषमक जीवनीयगण की होने के कारण इतसे भी बालकों के स्वास्त्य पर अन्। प्रभाव पड़ता था। इसी अकार खड़ आदि पशुकी के श्रृंगाओं से भी लाभ ही होता था। क्येंकि विना किमी खास मतलब के आचार्य यह कभी नहीं लिखता कि शूंगों के अग्रमाय जीवित पशुर्धी के और दाहिने शुंगों के ही होने चाहिये।

यदि वर्तमान समय में बहुमूल्य मणियों को छोड़कर इन्हीं श्राभूषणों का व्यवहार किया जाय तो बालकों का बहुत कुछ उपकार हो सकता है।

#### वास स्थान

का बासस्थान अत्यन्त रमशीक मजवृत साफ और हवादार होना चाहिये। जिसमें सर्व का प्रकाश अच्छी तरह आसके, अन्धकार न रहे। जिसक भीतर पशु, कुत्ते, बिल्लियां, चुंहे, सांप आदि घातक जानवर न घुसने पार्वे। वास स्थान में जहां बालक का अधिक आबा-गमन हो वहां दरी या और कोई मोटा वस्त्र विद्या इत्रा रहना बाहिए, जिससे किसी कारणवश गिरने पर भी बालक को अधिक आधान न पहुंचे। वासस्थान में ऋतु के अनुकूल ओढ़ने विज्ञाने और पहिनने के कपड़े अवस्य रहने बाहियें। कुमारागार के अन्दर एक तरफ जल-स्थान, स्नानघर, पेशाबघर, और टट्टीघर अवश्य बने हुये होने चाहियें। वासस्थान में वालरका के निमित्त मरमों श्रादि मांगलिक वस्तुर्थे श्रवश्य रहनी चाहियें। श्रीर कुमारागार के अन्दर, पवित्र मनुष्यों, बढ़ वैद्यों और आत्मीयजनों के मिवाय किसी को न आने देना चाहिये। मकान को नित्यप्रति धूपित करना परम आवश्यक है। धूप की श्रीपधियां पीछ "बालकों के वस" इस शीर्षक में लिखी गई हैं। इस प्रकार के यथाविधि बने इयं वामस्थान में बालकों का स्वास्थ्य अच्छा रहता है, ऋौर वल-वर्ग और बुद्धि की वृद्धि होवी है।

#### बालकों के दांतों का निकलना

जय बालकों के दांत निकलने आरम्भ होते हैं, तब उनको नाना प्रकार की व्याधियां हुआ करती हैं। बालक चीरणकाय होजाते हैं। बहुत से बालकों को तो इतना भयंकर कष्ट होता हैं कि उनके देह में केवल हड़ियां ही अवशिष्ट रहती हैं। इसलिए आयुर्वेद में लिखा हैं—

"प्रष्टभंगे विहालानां बहिएएख्र शिखोद्गमे। दन्तोद्भेदे च त्रालानां निहकिख्रिन दृयते ॥"

वालकों के दांत निकलने का समय एक जैमा नहीं होता है, किंतु अधिकतर बालकों के दांत पांचवं या छुटे महीने में निकलने आरंस होते हैं। दांत निकलने के समय मस्हों भे जलन होना, मसुद्दों का फुलना और लालगंग हो जाना, मुख से लाग टपकना, आंखीं से पानी वहना, साधारण ज्वर का होना, हरे पीले और फंट हुए दस्तों का लगना, बमन होना, रूर्न ब्राना, उदर में पीड़ा होना ब्रादि लग्नु है। मसूड़ी में व्याज होने लगती है जिससे वच्चे 📏 पीते समय माना के स्तनां को मसूड़ो**ं से** द्वाय<sup>ी</sup> करते हैं। और मिट्टी कंकर आदि जो वस्तु हाथ नग जाती है उसे समुद्धां से पपोलने नगते हैं। इस समय माना पिता को बचने का देख रेख बहुत सावधानी से करनी चाहिये। कभी २ निर्वल होने के कारण बच्चों को अन्य सांधानिक ब्या-धियां हो जाती हैं, श्रीर माता पिता दांत निकलने की वजह से समक कर उपेदा कर देते हैं, जिस से बच्चों का बचना कठिन हो जाता है। इस लिए दांत निकलने की वजह से होने बाली व्या-

धियों का योग्य वैद्य के द्वारा निर्णय और उप-चार कराना चाहिए । यद्यपि लिखा है—

"दन्तोद्भेदोत्थरोगेषु न बालमति यन्त्रयेत्। स्वयमञ्जूपशास्यन्ति जातदन्तस्य ते गदाः॥"

तथापि चिकित्सा कराने से कष्ट कम होता है, और दांन बहुत सुगमता से निकलते हैं। इस लिए दांतों के निकलने के समय होने बाले रोगों के निवारणार्थ नीचे इस योग लिखे जाते हैं—

- (१) दांतों के शीघ्र निकलने के लिए दन्त-पाली को शहद मिले हुए पीपल के चूर्ण से अथवा धाय के फूल, आंवलों के चूर्ण से घर्षण करनाचाहिए।
- (२) पीपला धाय के फूल, श्रांबला, कसेक, बच, मुर्वा, गिलीय, पाठ, कुटकी, अतीम जीव-नीयगण की श्रीपधियां इन सबसे कल्क साध्य घृत बना कर गर्म दृध के साथ बानक की पिलाना चाहिए। इससे दांतों के निकलने में सुगमता होती है।
- (३) मंजीठ, धाय के फूल, लीथ, मिनागरमीथा, खरैटी, दोनों कंटाई, छोटे बेल क कच्चे फल, कपास के फल इन सब औपधियों का क्वाथ, दहीं का पानी और दूध इन सबसे यथाविधि घून सिद्ध कर बालकों को दांतों के निकलने से होने वाले रोगों के निवार्णार्थ देना चाहिए।
  - (४) पीपल, पीपलामृल, चन्य, चित्रक, सींठ, श्रजवायन, श्रजमीद, हर्ल्दा, मुलैठी, दारु-हल्दी, देवदार, बायबिङ्झ, छोटी इलायची, नाग-केशर, नागरमोधा, कचूर, काकड़ाकिंगी, विड-नमक, श्रश्रकभरम, शंखभरम, लोहमरम स्व-

र्णमाज्ञिकसम, इन मव श्रीपिधयों को समान भाग लेकर दूध में घोट कर एक रत्ती प्रमाण गोलियां बना लेना चाहिये। इन गोलियों से दंत पाली को घिसने से तथा श्रवस्थानुसार मात्रा में जिलाने से यालकों क दांत बहुत जल्दी निकल श्राते हैं श्रीर दांन निकलने के कारण से उत्पन्त हुए ज्वर, श्रातसार श्रादि रोग श्रवश्य निवृत्त होजाते हैं। यह दस्तोद्भेद गदान्तक नाम का रस है।

(४) अतिविषा, काकड़ासिंगी, पीपल इनका चूर्ण शहद के साथ चटाने से खांसी, ज्वर, बमन में फायदा होता है।

बहुत से बालक दांतों के साथ ही पैदा हुआ करते हैं, और बहुत से बालकों के ऊपर के दांत पहले निकला करते हैं, ऐसा होना श्रशुभ माना गया है। यदि ऐसा बच्चा पैदा होतो शांतिकर्म कराना लिखा है।

## बच्चों की खराब आदतें मिट्टी खाना वगैरह

दांत निकलने के समय जब बालकों के मस्हों में खाज आने लगती है उस समय बच्चें मिट्टी या कंकर जो हाथ लगता ह, उसे खाने लगते हैं। इस समय बच्चें की निगाह न रखने से शनै: र उनमें मिट्टी खाने की आदत पड़जाती है, जो छुड़ाने पर भी नहीं छूटती है। उदर में पहुंची हुई मिट्टी पांडु आदि रोग उत्पन्न कर दंती है। इसलिए दांत निकलने के टाइम पर बच्चेंग की मिट्टी खाने से बचाने का पूर्ण प्रयत्न करना चाहिये। जब मिट्टी के पास जाते या मिट्टी को

हाथ में लेते देखें उसी वक्त मिट्टी हाथ से छुड़ारें और वानक को वहां से अलग करदें। खासकर छुमारागार बनाने को आवश्यकता इसीलिए होती है कि बालक ऐसी त्वराब बस्तुओं से अलग रहे। यदि बालक को मिट्टी ग्वाने की आदत पड़ गई हो, तो उसे छुड़ाने का उपाय करना चाहिए। इस आदत को छुड़ाने के लिए शहद के साथ मण्डूर खिलाना चाहिए। और मिक्तिका खाने से उत्पन्न हुए रोगों में वाग्भट में कहा हुआ पाठादिधृत देना चाहिए!

कुछ बालकों में बिस्तरे पर टट्टी पेशाब करने की खाराब आदत पड़ जाया करती है, यह आदत माता की असावधानी से पड़ती है, अगर माता रात को एक या दो बार बच्चे को उठाकर पेशाब करा देवे और प्रातः सायं नियत समय पर शौच करा देवे तो ऐसी आदत नहीं पड़ती हैं। यदि ऐसी आदत पड़जाय तो बच्चे को खाने के लिए दी जाने बाली बस्तुएं परिमाण में देनी चाहिए। दस्तावर और पतली बस्तुएं न देना चाहिए। जहां तक हो सके खिचड़ी बाज रे की रोटी और महा देना चाहिए।

अधिकतर वर्षे देखादेखी वीड़ी, सिगरेट तम्बाह, भाग आदि सादक वस्तुओं का व्यवहार करने लग जाते हैं. इससे उनके फेफड़ी और हृदय पर खराब प्रभाव पहला है। सुख से दुर्शय आने लगता है, दांत पीले और काले हो जाने हैं। इसलिए ऐसी खागब चीड़ी से उच्चा की बचाव रक्षण चाहिए।

प्राप्तः बालक अयने घरवांनां को तैमा करने देखने हैं, स्वयं भी वैंमा करने लग जाया करते हैं। इसलिए बालकों के सामने किमी से मगड़ा करना, गाली देना, किसी पर कोध करना श्रच्छा नहीं, बालकों के सामने जहां तक हो सके श्रच्छे शब्दों का ही प्रयोग करना चाहिये। श्रारंभ से ही बालको को जैसे सांचे में डालने का उपाय किया जाता है वे बैसे ही हो जाते हैं।

प्राचीन सयय में भारतवर्ष के अन्दर बहुत से वैद्य बालतन्त्र के विशेषण्य होते थे बालक के गर्भस्य होते ही गर्भ पृष्टि का प्रयत्न करना, गर्भिणी के आहार विहार की देख रेख परना वालक के उत्पन्न होते ही उसका सावधानी से पालन पोपण करवाना, माता व गाय के दूध की परीज्ञा करना, दूध में किसी प्रकार का विकार होने पर उसको शुद्ध करना, बाल-गेगों की चिकित्मा करना आदि उन उन भिणवरों का प्रयान कार्य होता था।

आज इस विपय की कोई प्राचीन संहिता न होने सं तथा उपलब्ध उपलब्ध मंहिताओं में अकरणवश लिखे हुए इस विषय का सर्वाङ्ग प्रथकसंबह न होन से एनद्वि-पवक पर्याप्त ज्ञान का अभाव दिखाई देता ह । इसी अभाव को दूर करने के सिंह चार से प्ररित होकर जीवन-सुधा के संचालकों ने जो वालरोग विज्ञान विशंपांक निकालने का सद्योग किया है वह सर्वथा प्रशंसनीय है। ऐसे विज्ञे-पांको से बेदा समुदाय तो लाभ उठाता ही है किंतु सर्व साधारण का भी बहुत कुछ उपकार होता है। द्याशा हे इस पत्रिका के संचालक इसी गरह भविष्य में भो ऐसे विशेषांक निकाल कर आयु-बेंद की उन्निति करने में सहायक होंगे।

# 🔪 शिशु स्वास्थ्य 🎤

( ले॰—प्रो॰ जगदीश मित्र जी वैद्य शिरोमणि सम्मोहिनी विद्या विशारद, योग चिकित्सक सम्मोहिनी ऋश्रम देहली )



शु जन्म काल से ही श्रत्यन्त कोमल श्रद्धों का होता है। गर्भावस्था में उसकी रज्ञा का परमात्मा ने विशंष

प्रबंध किया होता है, भोजन पहुंचाने के विशेष प्रबन्ध के श्रांतिक शिशु को बाहर की ठोकर श्रीर चोट से बचाने का यह प्रबंध होता है, कि उस के शरीर के हुई गिर्द चारों श्रोर थेंली में पानी भरा रहता है और वह पानी उत्पत्ति काल में योनि को चिकना और तर करके बच्चे को बाहर श्राने में श्रामानी पैदा करता है, जहां वह माता के प्रस्व के कष्ट को कम करता है वहां गर्भ में शिशु की बाह्य श्रावाों से भी पूरी रज्ञा करता है श्रांत गर्भावस्था में शिशु पानी के कोमल विस्तर में श्राराम करता है श्रीर पानी का यह गिलाफ उसकी चारों श्रोर से लपेटे रहता है।

जिस प्रकार बीर सागर में विष्णु भगवान् अपनी शक्ति लदमी और सरम्वती को लिए शेप नाग पर प्रलय काल में श्राराम करते हैं और उत्पत्ति काल श्राने पर उनकी नामि से कमल नाल को भांति एक नाल निकलती है और उस बीर सागर पर एक कमल प्रगट होता है। श्रीर कमल से संसार उत्पत्न करने वाली शक्ति

मद्या के रूप में उत्पन्त होती है और अंसार का फिर से प्रादुर्भाव होता है। ठीक इसी तरह जब रज, बीर्य गर्भाशय में इकट्टे होते हैं तो कुछ कैमिकल परिवर्तन के पश्चात उस जल पिंड में एक शिशु की काया बनती हैं और उस काया की नामि से कमलनाल की मांति एक नाड़ी पैदा होती है, जो माता के गर्भाशय के पर्दे में ऐसी जगह चिपटती है जहां से रुधिर और गिजा लाकर उस जलपिंड को पूरा बालक बनाने का कारण होती है अर्थात सृष्टि उत्पत्ति जैसी घटना बालक उत्पत्ति के लिये होनी हैं।

शिशु जब बाहर श्राता है उसके श्राने से पहिले परमात्मा उसके पालन पोपरा का पूरा प्रवन्ध करता है, दुःख से जाये उस बालक के लिये 'मां' के हृद्य में श्रमीम प्रेम उत्पन्त होता है श्रीर छातियां दूध से भर जाती हैं श्रीर प्रेम के बेग से दूध बहने लगता है जिसकी बच्चा पीकर स्वस्थ रहना है।

शिशु स्वास्थ्य के लिये माता का स्वास्थ्य ठीक होना आवश्यक है, मैंने वच्चों के इलाज में जितना अनुभव किया है उससे मैं इस परिणाभ पर पहुंचा हूं कि वच्चों की बहुधा दीमारियां वदहजमी के कारण होती हैं और वदहजमी माता के दृध की खराबी के कारण होता हैं साधा-

रण दूध फैंकन अर्थात के करने के रोग से लेकर सृक्षिया मसान या बच्चीं का दिक 'तंक रोग माता की ओर से बरुचे में श्राते हैं। श्रप्त: जब बरुचा रोगी हो तो उसकी माता अथवा दूध पिलाने बाली का खान पान और दिनचर्या देखनी चाहिये श्रोर उसका खान पान श्रोर दिन वर्या ठीक करनी चाहिये, क्योंकि द्व के हारा ही रोग बच्चे के शरीर में उत्पन्न हाते हैं माता की खूराक और माना के मानों का वडने पर गहरा असर पड़ता है। माता की जहां अपना ब्राहार सान्त्रिक और शुद्ध रखना चाहिये वहां कामोत्पादक चित्रों और वार्तालाप से पूरा परहेज रखना चाहिये, तीव काम मनोष्ट्रति और काम-चेष्टा दुध की गदला और भारी कर देती हैं वच्चे की मां को विषयभोग नहीं करना वाहिये, यदि यह असम्भव हो तो उसके तत्काल पश्चान बच्चे को दुध नहीं पिलाना चाहिये, और जब मन्तक में काम विचारों की घनघोर घटा छ। रही हो और काम इच्छा अपने पूरे देग में हो तो भी वच्चे को दूध नहीं पिलाना चाहिए, इसी प्रकार जब बहुत कोध हो और दिसारा में बड़ी तीवता और मनमं अत्यन्त अनुताप हो ना भा द्ध नहीं पिलाना चाहिए।

यदि कोई माता श्रपने बच्चे को स्वस्थ रावना चाहती हैं तो अपने बच्चे को दृध पिलाने का समय नियत करे और नियन समयक श्रलावा दृध न पिलावे यदि बच्चा रोये तो उसके रोने का कारण समकते का यत्न करना चाहिए। चुप करने के लिए बे समय दूध नहीं पिलाना चाहिये, और दूध पिलाते समय मनमें शांति और धैर्य

होना चाहिबे, चबराहट, काम और क्रोध बिल-कुल न हो जो माता श्रीवम में रहती है श्रीर अपनी रिाजा देने के लिए समय नियत करती है उसे बच्चे के रोगी होने का कभी कष्ट उठाना नहीं पड़ेगा। बच्चे को स्वस्थ रखने के लिए और बच्चे को रोग मुक्त करने के लिए औपधियां इतना लाभ नहीं पहुंचाती जितना माता का संयम, जो वैद्यराज शिशु रोगों में केवल शिशु को है। श्रीपधि देते हैं, वह शीब रोगी को रोग मुक्त नहीं कर सकत, कारण के नाश से कार्य का नाग स्वयं होजाता है, दूध की खराबी से तो अच्या रोगी हुआ। दूध का सुधार न करके अलासनी का इलाज करते जाना ठीक नहीं, माना गा हाजमा ठीक न रीने से बरुव का हाउमा है प्रदे जाता है, भारी गिजा माता खाजावे तो। के दे क पेट में दर्द होने लगता है, अतः बच्चे के एए में माता किसी न किसी अर्श में कारण जनव होती है, अतः बच्चे को औपधि देते हुए समा का इलाज भी अवश्य करना चाहिये, यदि यापरिश्र माता को विलाना मुनासिव न समभा 🕫 वौ उसकी दिनचर्या उसकी खुराक श्रीर। ध्यक्त मार्नामक अवस्था अवस्य सुधरनी चाहिए वाहि शोध वच्चा अच्छा हो जावे।

कठिन और दुःसाध्य रोगों में मां कि हो। निगरानी करनी चाहिये, क्योंकि कई अपने ओर ध्यान न देने के कारण दुकल कि करने हुए भी बक्षे का रोग मुक्त नहीं िया सकता, अब कुंझ शिशुरोग के विषय में नि जाता है।

ेशियु च्रिक बहुत कोमल होता है वह य

निम्नलिखित प्रकार से रोगी होता है - अधिक सर्दी लग जाने से जो कि बहुथा ठंडी हवा समने और कपड़े काफी न होने अथना हवा में यकायक कपड़े उतार देने से या रात में असाब-धानी से, इससे शिशु को जुकाम, खांसी, निमो-निमां दर्द पसली आदि हो जाना है।

श्यमा गर्मियों में गर्म हवा लगजाने से, यच्चे की उबर हो जाता है, दस्त श्रामे लगते हैं या कमेड़ा हो जाता है, या किसी दूसरे रोगी यच्चे के साथ खेलने से काली कांगी जमरा और दूसरी खूत को बीमारियां लगजाती हैं, श्रथमा मां की बनपहरेजी से, उसका छाती का दूध लगाव हो जाने से इमसे श्रिथिक भयंकर रोग हो जाते हैं, जो बहुधा बदहजमी से प्रारम्भ होते हैं, बच्चा दूध डालने लग जाता है, उसको कभी क्या के माथ अबर हो जाता है, कभी जिना ज्वर कब्जा हो जाता है, और कभी कमी लगते हैं, जो कभी रवेत होते हैं, श्रीर कभी कमी हरें, पील दस्त आते हैं।

बच्चों को स्वस्थ रखने के लिये यह श्राव-रक्त है कि उन कारणों से बच्चों की रज्ञा की कि, जिनसे बच्चा रोगी हो जाता है, सिट्टियों में बच्चे को सिट्टी से-जासकर प्रातः और सार्थ बचाया जावे. हर रोज बच्चों को धूप में सिट्टियों किन दिया जावे, बचा के दिनों में टीके लगवाये जावें. और गली में रोगी बच्चों से खेलने न दिया जावे. गर्मियों में खू से शीर गर्मी से बचाया जावे. ठंडे पानी से दो तीन बार निहताम जावे. श्रादि!

बबहुज्मी में यदि कृष्य हो तो एक चम्मच

केस्त्रयाल अर्थात शुद्ध श्रारंडी का तेल श्रथका रेखंद कीनी, इरड़ थोड़े पानी में भिसं श्रीर थोड़ी सींठ को धिसकर एक छोटा जन्मच पानी वनाकर दिन में एक दो बार पिला दिया जावे, तो कच्च दूर हो जाती है, बदह जमी जाली रहती है श्रार बच्चा स्वस्थ हो जाता है, यदि पेट दर्द फरे तो पेट को सेकें श्रीर सींक का श्रक्ष थोड़ा २ दें श्राराम होगा, यदि इस्त आवें तो पहिले ही बन्द न करे, किंतु उपर का नुमखा देवं, श्रीर यदि श्राराम न हो तो हर्ल्का प्राती श्रीपिय दें, थिंद दस्त सफेद हो तो गर्म काबिज दें, यदि इस्त समज या पील हों तो मरद काबिज दवायें दें, छोर दूथ देने में बिलम्ब डालकर दें, छोर माना भी गिजा हल्की श्रीर कावज जैसे मूंग की दाल खावल सेवन करे।

बक्न को यदि दस्त अधिक आवे तो बहुपा इस समय ज्वर भी हो जाता है, और आंखें अन्दर धंस जाती हैं बक्ना बहुत निहाल हो जाता है, दस्तों में पानी और फुटकड़ी जुरी र होती हैं, पहिले तो तुर्श यू आती है, फिर बदयू आने लगती हैं, प्यास ज्यादा लगती हैं, और बक्ना बहुत बेचेन होता हैं, और बक्ने की हालत बड़ी जिताजनक हो जाती हैं और कई बार यह रोग गर्मी की अधिकता के कारण विस्कृतिका, में तबहील हो जाता हैं, जब इस रोग का हमला अधिक भयंकर हो तो बच्चे को १०२ दर्ज का ज्वर भी होता हैं, मुंह में झाले निकल आते हैं, भूख कम हो जाती है, और हररोज बस्चा स्खने लगता है, बालकों को कमें का हीरा होने लगता हैं, को बार २ आती हैं जो दवा या पानी दिया

जावे वह निकल आता है, और प्यास बहुत सताती है, पेट फूल आता है, कई बार उसमें मरोड़ की तरह दस्त आने लगते हैं, अब मैं दोनों प्रकार के दस्तों का इलाज लिखता हूं— सफेद दस्तों के लिये।

- (१) लोधपठानी, गुलंधावा, बेलिगरी, जीरा सफेद, हींग थोड़ाभुना हुआ बराबर वजन लेकर कूट झान कर रक्खे और ४ रसी से एक मासा तक मां के दूध में हल करके दिन में तीन बार दें।
- (२) चाक साफ ४ मासे, लौंग २ मासे, जा-यफल १ मासे, दारचीनी ३ मासे सौंफ २ मासे, जीरा सफेद २ मासे, कालीमिर्च २ मासे, खांड १३ मासे कूट कर वारीक सफूफ बनालें और जव आवाज के माथ सफेद दस्त आवे तो इसमें से १ रत्ती से ४ रत्ती तक बच्चे की आयु अनुमार द।

प्यास के लिए थोड़ा २ अर्क सींक दें यह प्रयोग सफेद दस्तों का सिद्ध और श्रमृक इलाज है।

हरे पीले दम्न आने की वीमारी बहुत भयं-कर होती है और अमाध्य होने की तरक ज्यादा भुकाय रखती है अधिकतया यह रोग गर्भी के मीमिस में और दांत निकालने के समय होता है इसके लिये अनुभव सिद्ध दो नुसखे नीचे लिखता है।

(१) कहरूबा ३ मासे, गोंट कीकर का ४ मासे, अनार का फूल ३ मासे, चाकसू ६ रत्ती, रसीत ६ रत्ती, नरकचूर २ रत्ती, अहर मोहरा २ रत्ती पीम कर इंसवगील के लुखाब में खरल कर के २ रत्ती की गोलियां बनावें दिनमें दो या तीन बार गौ के दूघ में घिस एक २ गोली दें। प्यास दूर करने के लिये पानी जोश देकर श्रीर ठंडा करके दें या श्रर्क गाश्रोजवान, वेदमुश्क, श्रकें केवड़ा बाहम मिला कर दें।

अनार के पत्ते पीस कर ताल पर रक्खें और उस पर गीला कपड़ा ठंडे पानी से तर करके रक्खें और कपड़े को तर रक्खें।

(२) गुलेधावा ६ मासे, कमलगट्टा की गिरी ६ मासे, जीरा सफेद ३ मासे, तवाशीर ३ मासे, झोटी इलायची ३ मासे, बेलगिरो ६ मासे, कपूर १ मासा इन्द्र जौ ६ मासे पीस कर सफूफ बनावें और तीन रक्षी से १ मासे तक दहीं के पानी में इल करके दिन में तीन बार दें।

बच्चे के पेट पर नाभी के इर्द गिर्द रसौत, ३ मासे फिटकरी २ मासे और अनार के हरे पनी ६ मासे रगड़ कर लेप लगावें नांक अन्तड़ियों की खराश और सोजिश शीध चली जावे।

गिज़ = माता का दूध पीना हो तो देर थे के बाद वही दूध पिलार्थे यदि गाय आदि। का दूध पीना हो तो पहिले तो चार पांच यन्टे अत बत करार्थे फिर दूध फाड़ कर केवल दूध का पानी दें या आश जो हैं।

हमारे डाक्टर भाई इस रोग में लिसमिथ मैंलीमिलम १ म न, मीडा आईकार्य २ में न, मैंलील आधा में न आदि शर्वत में मिला कर दिया करते हैं. परन्तु मेरे अनुभव में उपर के नुमखे इनसे. बहुत शीध लाभ परने वाले हैं।

अहां तक पन पड़े अफीम का सेवन न करावें और बहुत तेज कावजात न दें यदि देने की आय- श्यकता समर्फे तो एइतयात से थोड़ी मिकदार में दें, गो डाक्टर भाई भी कभी २ कम्पींड टिक-चर श्राफ कैम्फर देते हैं, परन्तु जहां तक हो ऐसी श्रीपधी से बचना ही चाहिए जिसमें श्रफ्यून पड़ी हो ऊपर के होनों नुसम्ब बहुत बढ़िया हैं वही निरोगता देने में काफी हैं इस रोग में माता को हलकी गिजा जानी चाहिए श्रीर काम कीड़ा से बिलकुल परहेज रखना चाहिए।

#### नीचे लिखी वार्तों का पूरा ध्यान रखा

- (१) यदि बच्चे के शरीर पर फुन्सियां, सुखें धच्चे (Roshes) आदि निकर्ले तो फीरन उनकी तरफ ध्यान दो और बच्चे की टैम्प्रेचर लो।
- (२) यदि ज्वर हो जावे तो घबराक्यो नहीं, परन्तु बच्चे को दूसरे तम्दुरुस्त बच्चों से जुदा करके आराम हो, यदि कब्ज़ हो तो कब्ज़ दूर कर दो और कोई साधारणसी अवरनाशक औषधि हो।
- (३) जिस कमरे में वीमार बच्चे की रक्खों बह अच्छा हवादार हो परन्तु किसी दरवाजे के आगे बच्चे का विस्तर न लगावी जिससे सीधी हवा बच्चे की बाकर लगे, सीधी हवा के मोकों से बच्चे की बचाना चाहिए।
- (४) जब बच्चा सो रहा हो तो उसको मत जगावो चाहे वह समय उसको दूधदन का या दबा दैने का भी क्यों न हो उसके बेदार होने पर उसे जो देना चाहते हो दो।
- (४) जब बच्चे को जुकाम हो जाने, तो सापरवाही मत करो। सापरवाही करने से कई भयानक रोग सांसा, निमोनिया स्वर आदि पैदा हो जाते हैं।

- (६) जब बच्चे का गला खराब हो तो भी ला परवाही न करो क्योंकि इससे काली खांसी श्रीर खुनाक (Diptcheris) श्रीर म्यादी ज्वर होजान का भय होता है।
- (७) रोगं: वच्चे की सेवा करते समय यह कभी मत सोचो कि तुम भी शायद रोग प्रस्त न है।जावी, इस प्रकार के बहम की अपने पास भी न फटकने हो।
- (द) करवा दूध बच्चे की गाय या भैंस का कभी मत दो बल्कि जब गाय का दूध देना हो तो तीन हिस्से दूध में एक हिस्सा पानी मिलानो और उसको गर्म करो एक जोश आ जाने तो छानकर थोड़ी मिसरी मिला कर ठंडा करके दो, फिर भी मां के ताजे दूध जैसी उच्छाता उसमें होनी चाहिये।
- ( ६ ) जब साधारण उपचार से लाभ न हो तो फीरन बच्चे को योग्य वैद्य डाक्टर या हकीम दिखाना ।
- (१०) यदि आप बच्चों को तन्द्र स्त देखना चाहते हूँ तो बच्चे को कभी मैला न रहने हो, स्नाम कर कपड़े मैंने न रहने दो झोटे बच्चे को स्नुली ताजी हवा हल्की धूप और साफ मिट्टी में खेलना बढ़ा म्बास्थकर है परन्तु मिट्टी में खिलाने के परचान बच्चों को निहता धुला कर साफ़ कपड़े पहनाने चाहिये।
- (११) बच्चा यदि राल ज्यादा टपकावे तो बोड़ी फिटफड़ी पानी नीम गर्म में हल करके उसके मुंह को अम्दर से साफ कई से दिन में दो तीन बार साफ कर दो, और यदि मुंह पकने के कारण राल बहती हो तो इस तरह मुंह साफ करने के

# 🐠 बाल रोग 📆

ले॰ - आयुर्वेदार्गाव, आयुर्वेदमार्तण्ड पं॰ रामगोपालमिश्र राजवैद्य आयुर्वेदाचार्य - गोंदिया, (सी.पी.)

#### बाल जन्म

🗪 📆 नक के भूमिष्ठ होते ही सबसे बा 🛔 पहिले यह देखना चाहिये कि 🚉 🗓 🚾 बालक सजीव है श्रथवा निर्जीव सजीव बालक शीघ्र ही रोना आरम्भ करता है पर फिर भी कई बालक सजीव होकर भी रहन नहीं करते ! ऐसे समय घवराने की आवश्यकता नहीं प्रत्युत उस समय शाबता से यह देखने की श्रावश्यकता है कि उसकी गर्दन से नाल का लपेटा तो नहीं लगा है। यदि लगा है तो त्रन ससे हटाने का प्रवन्ध करे अन्यथा प्राण जाने का भय है। और ऐसा नहीं हैं तो फिर धैर्य रखकर इसके शरीर के क्लंद को मृद् बस्त्र से पींछ कर बलाद्य तेल उसके शरीर से लगावे और उसके कान के पास संद-संद कांसे के बर्नन से शब्द करें। ऐसा करते से प्रमुख देवना के कारण मुर्द्धित बालक में स्फृतिं आकर वह करून करने लगेगा। कभी इन उपायां से वह कदन न करे

तो जानना चाहिये कि इसके गत्नेमें क्लंद चिपका हुआ है और इसीलिये इसकी मुर्छा के साध श्वामोच्छाम क्रिया बन्द हैं । निराश न होकर उमके गले में उंगली धीरे से देकर उसके गले के कफ को निकाले और मृख पर हलका छीटा उँडे जल का देवे और पीठ और पेट की हलका अपथपाय कानों में जोरों की फ़ंक लगार्वे इनने पर भं: रुदन न करे नो एक वर्नन में ताजा जल, और दुसरे में मंदोष्ण जल भरकर उस बालक की प्रथमत: ताजे जल वाले पात्र में शरदन तक डुवोकर वाद मन्दोष्ण जल में उसी प्रकार गरहन तक बैठा हुआ इबोवे इस प्रकार एक-एक सिनट क्रमंख चार पांच बार करे। और साथ ही बार २ हाती की आहिस्ता मर्ले यह सब विधि करने पर भी यदि यह कदन न करे तो फिर जान लेवे कि यह जन्मने ही मरा उत्पन्न हुआ है। जन्म से वालक के न रोने में मुख्यतः गर्भाशय द्वार में बहुत काल तक वालक का शिर फंसा रहना,

पश्चान मुहागा २ मासे शहद ग्वालिस १ तीला में मिला कर रक्तवी और फुनेरी से उम की जवान, मसूड़ों और हल्क में दिन म दो तीन वार लगाया-करो, राल बहना और मुंह पकना बन्द हो जातेगा। र्याद इन नियमों का ध्यान रक्योगे तो आपका प्याग वच्चा सदा स्वस्थ रहेगा और यदि कोई रोग कभी आभी जावेगा तो शीघ नाश हो जावेगा और आप को कभी चिन्ता और खेद के अधाह सागर में निमम्न नहीं होना पड़ेगा। अथवा बालक का अशक होना, या गर्भोत्सर्जन के पूर्व माता की किट अस्थि (कद्यस्थि) और बालक का शिर इनके मध्य में नाल का दब जाना, अथवा हाथ के या शास्त्र के सहारे बालक को निकालते समय उसकी छाती और मन्तक पर दबाव पड़ना आदि अनेक कारण हुआ करते हैं और इन्ही कारणों से बालक में खास लेने की शक्ति नहीं रहनी इसकिये उसका श्वासवरोध हुआ रहता है, उसके सम्पूर्ण गात्र शिथिल, त्यचा रक्तिन की गानि मनद होनी है, बालक अपनी अशक्तिवावश मनवन भिष्ठ होता है।

#### नालच्छेदन

यालक के जनमते ही उपर्युक्त प्रकार की जांव करनेके बाद अर्थान बालकके हदन सुनने के पींछ बक्चे की नाल को आंगुलियों की चिमटी में लंकर जब तक उसमें रक्त की गति का बोध होता हो नावच्छेदन में शीघना न करे । कारण उस काल में बालक की नाल से बालक की दो तीन दिन पर्यन्त होने लायक रक्त उसके शरीर में पोपाणीय कार्य के लिए जाता है और यही कारण उसे दो-तीन दिन तक जन्म के बाद कुछ न देने पर भी उसका पोषणीय कार्य चल सकता है। कथित नाल के एकत की गति को बंद होने में तीन-चार मिनट लगता है। श्रीर उसके बन्द होने पर ही बच्चे की नाल को बच्चे की नाभी से ३-४ श्रंगुल छोड्कर स्वच्छ और मजयूत रेशमोधागे से कसकर बांधे और बाद में तेज साफ ज़री या केंची से कार्ट। नालच्छेदन करने वाली दाई के हाथ, तख सहित स्वच्छ धोये हुए होने चाहियें।

उसी प्रकार उसके हथियार भी साफ घोये हुये होने चाहियें, निवपत्र के उच्छा अल से हाथ और नालच्छेदन की छुरी को धोलेना उत्तम होता है। नालच्छेदन के बाद नाभी से लगे नाल के कटे भाग पर तैल न लगावे, छनीं राख गोबरी की लगाकर कपड़ा लपेट देना चाहिये, जिससे नाभी नहीं पके और नाल फिर है दिन में मुख-कर गिर जायेगी। किसी समय यदि नाल की मटका श्राने या किसी गल्ती से नाभी में शोध हो कर यह एक जाय और उसमें राध आने लगे अथवा उसमें चत पड़ जायं तो ताभी से रक्त-स्राव होने लगना है ऐसे समय में नाभी शोध होने ही उसे कपास के फोर्च से हलका सेकें. राध पड़ने पर स्वह नीम के मंदीपण जल से धोकर उस पर कंबी के पनों के कल्क. सप्तपर्ण बीज के म्बरम द्वारा सिद्ध किये तैल का फीया धरें, या त्रिफला जलाकर उसकी राख बुरकावें या पीपल की छाल या इमली की छाल का कपड़छान किया चूर्ण नैल लगाकर बुकार्व । शीद्र हो वरण पूर्ण होगा, बालक के नेत्रों की जन्मते ही स्वच्छ करना चाहिये और स्नान कराते समय मंदोष्ण जल से साफ धो देना चाहिय।

#### शिशु स्नान

बालक के जन्मते हो उसके शरीर पर एक प्रकार का श्वेत क्लंद होता है उसे पोंछकर मंदोष्ण जल से साफ धोकर मुलायम कपड़ से उसके श्रक्कों को साफ पोंछ देना चाहिये। बाद मंदोष्ण तेल मर्दन करके चने के बेसन से रगड़ कर उसके शरीर को स्वच्छ कर देना चाहिये। बालक को स्नान कराने के बाद शरीर स्वच्छ करके

इसके सिर के तालुभाग पर रेंडी का तंल मंदोष्ण कर लगाकर उसी तैल का फोया धर देना उत्तम होता है अथवा शीत काल हो तो यत्किचित कायफल बुरका देना हितावह होता है। इसी समय एक अंगुली रेंडी का तैल उसके हलक में चटा देना या मधु चटाना चाहिये। ऐसा करने से उसे दस्त साफ आकर कोष्ठगत दोष तष्ट हो जाते हैं कोई २ घृत, मधु या मक्खन मध् विपम भाग में मिलाकर चटाते हैं, उदरगत गर्भोटक बदि गिराना वालक मुख से उत्तम समभा जाय तो मैंधव और घत मिश्रित करके चटाने से वमन भी गिर जाता है। वर्तमान में इसे कोई नहीं करते। स्तात विधि छाटि उपरोक्त विधियों को करके बालक को स्वच्छ बख्न में लपेट मुख खुला रम्बकर लिटा देवें ब्रोर सुनिकागार में ब्रङ्गीठी से उध्याता कायम रखे। छोटे बच्चों की बड़े मनुष्यों कंडे के समान से या से म्नान न करार्वे. उधग जन श्रयवा मावृत से स्तान न करावें, कारण ठंडे जल को बालक का रक्त सहन करने योग्य न रहने से उसे मदी होना मंभय है। अधिक गर्म जल से स्नान कराना भी चर्म की कीमलता में हानि प्रद है। श्रीर मोड़ा मिश्रित रहने से माबुन संस्तान कराना भी तुक्तसान करने और उसे कष्ट पहुंचाने वाला हैं, इसलिए मंदीव्या जल से स्तान कराना उत्कृष्ट होता है।

#### दुग्ध पान

वालक के जन्म के वाद माता को दूध दूसरे तीसरे या चौथे दिन आता है यह बात प्रथम प्रस्ता स्त्री के लिए प्रायः लागू है। अतः स्तान के बाद तीन चार बार की प्रस्ता स्त्री के बालक की आर प्रथमतः प्रस्ता होने वाली के बच्चे की जब उसकी माता के स्तन में दूध न आवे तब तक समान जलयुक्त गर्मी दिया दूध मोटे शुद्ध कपड़े में छान कर किंचित ही उष्ण रहे फोये से देना चाहिये अथवा सारिवा मृल, गो घृत और मधु में घिस कर चटाना चाहिये। गुड़ का पानी अथवा केवल शहद देना चाहिए। शिशुके मल मूत्र करने के बाद और माता के स्वस्थ होजाने के वाद उसके स्तन में दूध आने पर स्तनपान कराना चाहिए।

#### बच्चे को सुलाना

बच्चे को दुध पिला कर दाहिनी करवट पर मुलाना चाहिए। बांई करबट पर भूल कर मुलाना नहीं क्योंकि ऐसा करने से बच्चों का यक्त जो कि शौशव काल में उसके अन्यान्य अवयवीं से वड़ा होना है। उसका भार जठर पर पड़ने से उस बालक के लिये कष्ट का कारण हो जाता है। यही नहीं प्रन्युन ऐसी श्रादन रत्यने से कभी कभी बालक का यकृत बद् जाता है धनुष्टंकाराहि अन्यान्य व्याधियं पैदा हो जाती हैं । श्वलपत्र वानक की दाहिनी करवट ही सुलाना हितकर है इसे स्मरण रखना चाहिए । शिशु की स्बद्धध्य रता और शरीर वृद्धि की दृष्टि से शिशु की जिला की पूर्ण आवश्यकता है और यही कारगाहै कि जन्म के बाद शिशु कुछ दिनों तक खुव सोता है। इस अवस्था में बालक जब सोवे तब ही उसके पैरी को बस्त्र से इक देना चाहिए। उंस् काल में खा-लिस सरसी या रेंडी का तेल उसके शरीर से मल कर भूप में सुलाना अवजा है। वर्षा में तैश मर्दन के बाद कोयलां की श्राग पर अजवाईन श्रीर लहसून के छिलके छोड़ कर दोनों हथेली पर वालक को चित्त लेकर ऊ चे से धृंत्रा देना और गर्मा देना उत्तम है लेकिन यह काम चतुराई से कुर्ती के साथ करें, इसमें एक बार चित करके धंआ वार पट दिया कोई जाता है इस कृति से वालक को रोग नहीं होता. बालक के नाक, मुंहमें अधिक धुद्धां न भरजाय यां गहरा सैक न लगे इस वात-की मावधानी रावना जरूरी है। जाड़ें में भी इस विधि की कर सक्ते हैं उप्स काल में केवल तिली का तेल ही महंन करना चाहिये। बालकको जहांतक है। पालनेमें अल्लाना चाहिये क्योंकि पालने में मदल विस्तर पर सुलाकर भुलाने भंडमंद वाय लगकर उसे मुखद नींद श्राती हैं।

## वालक के निवासस्थान का दीप

बालक के निवासस्थान में अलमी, मरमों या तिली के तेलका दीपक रखना चाहिये। बालक की आदन होती है कि वह प्रकाश को एक टक लगाकर देखना हैं उसे इसी में आनन्द आता है दीप, तेज प्रकाश बाला न रक्ता जाये, मंदप्रकाश बाला दीप ही उसके लिये हिताबह है, कारण तेज प्रकाश से उसकी कोमल आंखों को जास होकर हांप्ट मन्द होती हैं। मिट्टी का तेल या गैस अथवा विजली के दीप से उसे रिहत रखें।

## सशक्त, निरोगी, वजनदार, बालक होने में कारण

शिशु पालन में दक्ता से काम जेने पर उत्तम शुद्ध पौष्टिक गुरायुक्त दुग्ध ही बालकमें शर्तिया निरोगता और बजनकी ठीक मिकदार को उत्पन्न करता हैं। पर फिर भी साधारणतया १२-१४ वर्ष वाली स्त्री का बालक अशक्त, रोगी, हलके वजनवाला,श्रद्धाय होना निश्चित है कारण कि थोड़ी अवस्था वाली माताका गर्भाशय पूर्णत: वृद्धि को प्राप्त नहीं होता । गर्भाशय छोटा होनेसे उसमें वालक की वृद्धि होने में हानि होतीं हैं। कभी कभी सात माम में जिन माताओं को बालक हो जाते हैं वे यद्यपि जीते हैं दीर्घायपी भी होते हैं पर सप्तधातुओं की पूर्ण वृद्धि ही हुये विना उनके पैदा होजाने से वे निर्वल तो अवश्य ही होते हैं । जिन साताओं के सोलह अठारह और वीस वर्ष की अवस्था में वालक होते हैं वे निरोगी सशक्त और वजनदार होते हैं एवम् प्रथम बार के वालक से दूसरी और तीसरी बार के तो और अधिक निरोगी मशक दीर्घायुर्ध तथा बुद्धि में भी निपुरा होने हैं।

## बच्चों के रोग निदान श्रीर चिकित्सा

शिशु को रोग होने पर उसकी गई। सावधानी से जांच करना चाहिये, क्योंकि वह स्वयं तो यता कुछ नहीं मना एवम नाई। से भी पृणं ज्ञान होना कठिन रहता है अतएव बाह्य दिग्वाई देनेवाले लच्चणों के साथ साथ वालक के मल मूत्र की भी जांच करना चाहिये, सिरपर हाथ स्वकर उच्चण हैं या ठंडा, पेटको अंगुली के प्रतिघात से देने वायु से पेट फलना है अथवा जोरों से पेट उज्जलता है या नहीं, मंडल के पास ऊंचा हो रहा है आदि और छाती को आंखों से देखने पर तथा कफादि

की आबाजकानों से सनने के बाद अंगलो से द्वारी पर हलका प्रतिघात करके देखे, मुंह में झाले तो नहीं पड़े हैं। जीभ में मल का जमाव तो श्रधिक नहीं है, अथवा जीभ लाल ता नहीं है। जीभ फटोसी ता नहीं है, कान में से पीव तो नहीं बहता है। गुदा में गुदापाक तो नहीं है। दांत ता नहीं निकल रहे हैं । यदि निकल रहे हैं तो मलड़ों पर शोध ह्या रही है क्या, बालक मुंह चपचपाना है क्या ? मुंह में अंगुली देने पर अंग्रली की जोरों से दवाना है क्या ? बालक नाक म्बजनाता है क्या ? गुदद्वार को खुजनाने का प्रयत्न करता है ? इस्त में मुहमिकमी तो नहीं हैं ? इतर की हालत में कान और चतड़ टेंड हैं क्या?वच्चा दांत पीमता है क्या ? आदि अनेकहों प्रकार से देख व पछ और समम कर निदान का निश्चय करना चाहिए तब कही बालक के रोग का पता बैद्य को मिल सकता है।

#### वालक की आंपिध व्यवस्था

वालक को जो भी औषिय कराने का निश्चय किया जाय उसमें उसके सेवन की सृथिया का श्वव्य प्यान गया जाय क्योंकि कोमलाङ्ग शिशु तीद्र कटु और जार पूर्ण श्रीपिवयों के सेवन में श्व्यमर्थ होता है। उसे ऐसे अनुपान वाली श्रीप-थियों का देना महान कष्ट का कारण होता है। इस्तिष् उमकी प्रत्येक श्रीपिथ में या उनसे श्रतु-पान सूद्म प्रमाण में होना चाहिए उमी के साथ बती, गुटी, चूर्ण श्रादि जो भी देना हो उसे उसकी माता के दुण्य में इस प्रकार तर कर देना चाहिए कि उसमें गाइपन विलक्षत न रह जास और फिर उसमें इस मधु मिलाके उसे सावधानी से सीप या चमचे में पिलाना चाहिए।शिशु की रोगाकान्त दशा में जहां तक हो उसकी माता को ही श्रांपधि खेवन कराना चाहिये। श्रावश्यका ममम कर बालक को खेवन कराना उपयुक्त होता है।

#### बालक का स्तन शोथ

वालक के जन्म के बाद दमरे अथवा तीमरे दिन किसी किसी शलक के स्तनों में शोध आ जाना है हाथ से देखने पर गलेमें गांठें प्रनीत होती हैं। यद्यपि यह शोध अपने आप कुछ दिन में दूर हो जाता है और इसलिए उसकी चिकि-त्मा करना कोई महत्वपूर्ण विषय नहीं माना जाता है, पर कभी २ उस शोध से जालक को उबर हो जाता है, उस समय यह दृथ पीना तक नहीं उपयुक्त समस्ता इतना ही नहीं इसी शैशव काल में म्नन शोध होने बाल बालक को क्या कुछ श्रवस्था बीनने पर उन स्तन मन्धियों के कट श्रीर भरं पन का अनुभव करना पड़ना है, जो जवानी के अरिभ काल में लड़कों के म्तनों में उठी हुई गांठें प्रायः देखने में आती हैं। कभी २ इन गांठीं में अत्यधिक पीड़ा देखने में श्राती है, कविन स्थल पर इन्हीं गांठों के कारण होटे लड़कों के स्तन जवान लड़की के समात उठ हुए देखने में श्राते हैं, अनएव वालक के स्तन शाय न ही इस लिए उसका प्रतिवेचक उपाय करना ही ठीक 崀 बह यह है कि दूसरे या तीसरे दिन शोध होने के पूर्व तैल ऋदि मर्दन करने के समय बालक के स्तन को इलकासा दाने ऐसा करते से आर्रास्थक काल के माता के दुग्धपान से एकत्र हुए स्तन विकार का द्रवांश बातक के स्तन से वकी सरस्रता

भविशान हो, येद त्यासद न शमा शास्त्री ए**म**.वी. कविराज हो, वेदव्यासदत्त शरी शास्त्री एम.वी. ए ण्म, ही, ऋष्युर्वेदाचायः, यदा बाचस्पानः आयुर्वेदः मस्सि धन्वस्त्रीर के धनक सबन जालस्वर । त्राप जावसम्धा के म्याया जातस्या लेखक है छोर इस अब के सम्पादक है।

# *6 बालरोग विज्ञान्* **२**

( लें o — हाक्डर वेदच्यासदत्त शर्मा शास्त्री, वेद्य वा चस्पति एम० वी० एम० हो० इस श्रद्ध के सम्पादक

#### शिशु पालन

लक की नाड़ी ( नाल ) बा काटने और स्नान कराने के कुद्ध समय परचान बालक

को कुछ उदणहुन्ध जो समपरिमाण जल के साथ जरा जरा । में किया गया हो पिलाना चाहिये। इसके पश्चान बालक के मलमृत्र त्याग कर लेने श्रीर शिशु की माता के कुछ स्वस्थ होजाने पर शिशु को स्तन पान कराना चाहिये। "नाड़ी काटना और प्रसवान्त की स्तन पीड़ा की बानों को एक नजर देख लेना चाहिये। बालक के भूमिछ होते के बाद से इक्कीस दिन तक शिशु को कथी जिला न सुलाया जावे। डाक्टर फिशर का कथन है कि बालक के उत्पन्न होने के बाद शिशु को प्रथम दो तीन सप्ताह अधिकांश समय बार्ये करवट की अपेला दाहिने करवट सुलाना

से छं। ही वृंद के प्रमाण में निकल आता है, और यालक को किसी प्रकार का कच्ट नहीं होता है। और नतन शोध भी नहीं होता यदि इस चिकित्सा के न करने। पर किसी बालक को स्थन शोध हो भी जाय तो उसे पुराने कपास के फोये से मन्द सन्द २-४ दिन सेंक देना चाहिये जिससे भावी सहुट टल जाता है।

- 48

चाहिए । ऐमा न होनं से धनुष्टङ्कारादि रोग हो सकते हैं ।

बालक का शारीर बढ़ने के लिए बालक की नीद की आवश्यकता होती है, अतः जन्म के वाद बुद्ध दिनों तक बच्चा सीता है। ऐसी अवस्था में शिश जब मोए तब उसके पात्रों को बख से ढंक देना चाहिए। शुद्ध कच्ची धानी का सरसों का तेल मलकर शिशु की शरद ऋतु की धृप में मुला रखना अच्छा है। फिर भी प्रत्येक ऋतु में तेज वाय या लू आदि से वच्चों का शरीर बचाना चाहिये, पहले कुछ उद्या जल में शिशु के भवल हो जाने के बाद उसको ठंड जल में स्नान कराने का अभ्यास कराना चाहिय। ऐसा होने से सदी खांसी की उतनी आशंका नहीं रहनी। हमार यहां का प्राचीन नियम है कि स्तान के समय प्रथम शिर पर कुछ जल डालकर पीछ शरीर भिगीया जाता है। यह नियम बहुत ही अन्छा है। डाक्टर फिशर ने इसका अनुमोदन किया है।

जब तक वस्ता दुग्ध पीता हो तबतक माता को रात्रि जागरण करना चाहिये। समय बिता-कर तिल्हाना, लाना, श्रविक लट्टा, मीठा, ग्वाना श्रविक कोध, शोक, प्रमृति करना न चाहिबे, नहीं तो बाहक का रोग बढ़ सकता है।

यहि बढ़ने की माता को कोई रोग हो वा माता

के स्तन में यथेष्ट दुध न हो तो शिशु को गदही या गाय का दूध पिलाना चाहिये। गाय का दध यदि गाढा हो तो उसके साथ समभाग जल श्रीर दुग्ध शर्करा (Sugar of milk) मिला गर्म-कर शिशु को पिलाना चाहिये। अधिक दृध पिलाना या ऋधिक रात्रि को पिलाना या सोतं से उठाकर दूध पिलाना अहितकर है। और जब तक बक्तचेको भूत्वन लगे तत्र तक कुछ भी देना उचित नहीं। साधारणतः यच्चे का उद्र (पेट) नर्म देख उसकी भूव का हाल समभना चाहिये । एक वर्ष या भावपंतक शिशु को दूध पिलाया जा सकता है।

शिश आह-इस साम में हाथ पैर से और एक दो वर्ष की आयु में पैरों से चलते लगता है। किन्तु वह यदि १= मास के पश्चात भी चल न मके, तो उसे उपयुक्त स्नाहार स्नार चिकित्ना की व्यवस्था करना चाहिये। शिष्ठु को सम्प्रण दांत निकल आने पर उसे पुराने चावल का खुव गर्म भात खिलाने का अभ्याम कराना चाहिये। शिशु की श्रीपधी जलमें न मिला उसे वटिका(Puries) या अगुवटिका ( Godsles ) में मिला सेवन कराना सुविधाजनक है।

मृतवत् भृमिष्ट शिशु र्दार्धकालं की प्रसन्न वेदना के बाद या प्रस्ति के जगयु में दोप रहने से शिशु मृतवत भूमिष्ट होता है। रक्त संचालन-यंत्र की किया कक जाने से खाम प्रश्वाम लोप हो जाता और शिशु से नहीं सकता।

इस श्रवस्था में दिस्त लिखित प्राणाली श्रव--लम्बन करना चाहिये:-शिशु के भूमिष्ट होते ही

उमकी नाभिनाड़ी न काट उसके मुख और गले का श्लेष्मा और क्लेंद्र शीघ्र ही माफकर देना चाहिये। इसके परचान उंगलियों से बच्चे की नाक दबा उसके मुख में इस प्रकार फूंक मारना चाहिये, जिससे वह शिशु की छाती तक पहुँचे श्रीर उसकी पसुली धीरे २ इस प्रकार से दवार्ये जिमसे यह फूंक उसकी छाती से बाहर निकल श्राये । प्रति मिनट में १४, १४ बार इस तरह वाय प्रवेश कराने और निकालने से १० मिनट के अन्दर बच्चे की श्वाम प्रश्वाम किया आरम्भ ही सकती है यदि १० मिनट में कोई उपकार न हो, नो शिशु के मुख या छाती हर एक बार किंचिन उश्गुजल, इसके पश्चान ठएडे जल के छीटे बार-देना चाहिये। माथ २ मृखं हाथ से शिशु के हाथ पैर श्रीर पीठ की मलना चाहिये। शिशु के मुख पर हवा लगने में किसी प्रकार की स्वावट न है।।

#### वालरोग परीचा

होटो से छोटी पीड़ा को वालक सहन नहीं करमकता उस के रोने और पीड़ित स्थान में वार-बार हाथ लगाने से तथा बहुत विचार से वच्चों के रोगों की परीक्षा करनी चाहिय।

- (१) सिर में शुल होने से बच्चा श्रपने सिरपर हाथ रक्का करता है और कान खेंचता है। उसके माथे का चमड़ा मिकुड़ जाया करता है तथा वालक शीब श्रांख मीचना है।
- (२) गले में दर्द होनेसे वालक गले में हाथ लगाता है।
- (३) उदर में दर्द होने से बालक बारम्बार अपने अर्क्षों को पेटकी ओर सिकाइता है पेटको दवाने से रोता है।

- ७) यदि गुदा में दर्द होता ह तो बालक को 'याम अधिक लगती है, मुद्धित होजाता है, मुखमलीनसा रहता है आते बोलने लगती हैं और सांस अधिक चलता तथा मलमूत्र नहीं होता।
- (५ अच्छा भला शालक मधिक गोने लगे तो उदरशूल समभना चाहिये।
- (६) दृध पीनेत्राला बच्चा जिह्ना बाहर निकाले तो प्यास जानना ।
- (७) सर्दी होकर नाक बन्द होने से बालक दूध पीते समय दूध छोड़ कर मुख से सांस लेता है तो सर्दी गर्मी समर्थना।
- (=) चार मास तक वालक के रोने में श्रांस् नहीं निकलते यदि पांचर्वे मास में श्रांसू न निकलें तो उस वालक को रोगी जानना।
- (६) यदि वालक बरावर रोता ही रहे श्रीर चुप न होता हो तो उसके सम्पूर्ण शरीर में दर्द समफना ।
- (१०) दर्द पहचाननं की यह भी रीति है कि जहां दर्द हो बालक उम स्थान को बार २ छता है तथा दूसरे किसी व्यक्ति का हाथ वहां पर लग-जाय तो बहुत रोनं लग जाना है।
- .११) यदि बालक मोता उठता ही रोवे, जीभ निकाल और इधर उधर मस्तक हिलावे तो जानना चाहिए कि बालक भूखा है दूध पिलाने से बालक चुप हो जाता है।
- (१२) जूं, चींटी, मच्छर के कानेट, किसी वस्तु के चुभने और बहुत देर तक एक ही करवट से सीते रहने से भी बालक रोता है।
- (१३) बालक का पेट स्वभाविक मोटा होता है यदि पसली के नीचे दोनों और फुलता हो तो

- तिल्ली श्रीर जिगर बढ़ा हुवा मममना श्रीर पेट में कृष्य जानना चाहिए।
- (१४) यदि बालक के सिर में ददे होने श्रीर वह बोलकर नहीं बनला सके तब वह बालक श्रांखीं को मीचकर मिर को इधर उधर धुनता रहता है।
- (१४) जब बालक का पेशाव रक जाता है, और विल्कुल ही नहीं श्राता तब पेड़ में या नामि में दर्द या रोग सममना चाहिए। वा मृत्र में कंडट हो जाने पर बालक का मुख लाल हो जाता है श्रीर पेट फूल जाता है इसकी गर्मी से प्यास श्रीयक लगा करनी है, बालक बेहोश भी हो जाया करना है।
- (१६) जब बंच्चे का पाखाना श्रीर मूत्र दोनों ही एक साथ रुक जावें, तब बच्चे का चेहरा पीलापन लिये उतरा मा हो जायेगा श्रीर पेट के छने से अफारा मा जान पड़ेगा।
- (१७) यदि बच्चे को पट का रोग हो तो उसमें उसके पेट की रगें बालती रहेगीं। कभी र अफारा (पेट ऊपर को उठा सा दोनें और मल मूत्र के कक जाने के कारण से कें होने लगती है।
- (१८) यदि बालक के हृदय में पीड़ा हो तो बालक अपनी जीभ को दांतों के नीचे बार २ दबावेगा। होठ और दांत खूब चबावेगा और हाथों की मुद्री भींच कर बड़े जोर से उंची सांस बोड़ेगा।
- (१६) यदि बच्चे के पेट में किसि (चूरने-श्रार्थात कोड़े) या जूं होचें तो वालक श्रापनी माता की या धाय को चूची को दांतों से काटेगा। (२०) यदि बालक के गुदामें श्राथवा कान

नाक श्रादि स्थानों में कोई रोग होगा तो प्रायः बालक को कब्जी होगी श्रीर वालक चौकन्ना सा होकर चारों तरफ देखेगा। ऐसी दशा में नर्स का काम है कि वह बालक के हाथ, पांव, मुख, कान, श्रांख, जोड़, गर्दन, सिर, कमर, गुद्दा, श्रादि सभी छोटे बड़े श्रङ्कों को एक र करके देखे श्रीर श्रनुभव से बालक के रोग का निरचय करे तथा समीप रहने वाली माता श्रादि सब स्त्रियों से उसके विषय की पृद्ध नाइ करें।

(२१) नीरोग बालकों का पान्वाना पनला पीला और कुछ हरा होता है और दुर्गन्ध श्राती है यदि इसमें कुछ उलट पुलट हो तो रोगी समम शीव ही चतुर तैंद्य, हकाम, डाक्टर का इलाज करना चाहिये।

## नाड़ी सम्बन्धी साधारण ज्ञान

- (क) निरोग बालक की नाड़ी १ मिनट में ६० से ६४ वार चलती है।
- ( ख ) किमी की ४० और अधिक से अधिक ६० तक चलती हैं।
- (ग) मूर्मि में जन्मते ही बड़े बालक की नाड़ी की गति १३० से १४० बार चलती है। एक बचे के आयु बाले बालकों की नाड़ी की गति ११४ से १४० बार तक चलती है। दो वर्ष के आयु बाले बालकों की नाड़ी की गति १०० से ११४ तक चलती है। तीन वर्ष की भायु बाले बालकों की नाड़ी की गति ६६ से १०० तक, चार से सात वर्ष तक ६० से ६४ तक। ६ से १४ वर्ष तक ६० से ६४ तक। ६ से १४ वर्ष तक ६० से ६४ तक चलती है। युवावस्था में एक मिनट में ६० बार तथा बुद्धावस्था में ४० से ६४

तक एक मिनट में नाड़ी की गति होती है। जिस रोग में नाड़ी की गति १२० से १४० बार एक मिनट में हो तो उसकी मृत्यु निकट सममना। इस क्रम से नाड़ी आदि की परीक्षा कर लेना उचित है।

(नोट) यह भी स्मरए रहे कि बालकों को जो रोग होते हैं वह कुछ जन्मज, कुछ स्वाभाविक, कुछ आहार परिएाम श्रींग कुछ बुद्धि क अपराध यानी माता पिता की मूखेता से होते हैं इस लिये सब बातों को ध्यान में रख कर चिकित्सा करना चाहिये।

#### वालापयोगां नियम

- (१) बालक को अत्यन्त हल ह हाथ से उठाना और लिटाना चाहिये जिसस उसके कोमल शर्गर पर थोड़ा भी आधात न पहुंचन पाव ।
- (२) स्रोते हुए बालक की सहसा न जगाना चाहिए। क्योंकि इससे भयभीत होकर वह रोग-मस्त हो सकता है।
- (३) ध्यार करते समय वालक को नीच करके न उछालना चाहिए और मिर नीचे करके पाव पकड़ कर कदापि नउठावे, इससे बालक डर जाता है तथा वायु का प्रकोप हो जाता है।
- (४) छोट बालक को जबतक उसमें बेंठने की शक्ति न आ जाय तबतक उसको कदापि बैठाने का प्रयत्न न करना वाहिए, इससे कुनड़ा-पन होने का डर ह।
- (४) छोटे २ खिलौनों को पाकर अथवा जो वस्तु वालक के हाथ में आती है, स्वभावतः उसको वह मुख में डालता है, इमिलए उसके में इाथ

कोई ऐसी झोटी वस्तु न देनी चाहिए, जो गले के भीतर जा सके, इससे प्राण संकट उपस्थित होने का डर रहता है।

- (६) बालक को सधुर बचनों से सदा प्यार करना और प्रिय बस्तु खिलीने आदि से प्रसन्न रखना चाहिये।
- (७) वालक को निर्जन स्थान, उन्ती नीची जगह में, कुंचा, गडढ़ा, तालाय, नदी के ममीप मृते घर में, लता युन्न के नीचे न छोड़ना चाहिए। तीन्तरण यायु, घाम, चिजली, की चमक, अग्नि, पानी, धुआं, शांत और छ आदि से बचाना चाहिए।
- (=) पलड़ वा गोर्टा जहां रहने से बालक को प्रसन्तता हो उसकी उसी प्रकार रखना चाहिये, किन्तु जहां तक सम्भव हो पलझ पर रखना श्रीष्ठ हैं, क्योंकि गोर्टा में अधिक रखने से बालक का उदर मंद्वित होता है।
- (ध हाथ पांव हिलाते रहने से बालक प्रसन्त रहता है और उसकी पाचन राक्ति बढ़नी है। उसकी पाजने में लिटाकर हिलाने रहने से वह प्रसन्तता पूर्वक हाथ पैर चलाता हुआ राजी रहता है।
- (१०) बालकों का श्रेष्ट आहार माना का दृध है, यदि माता के स्तनों में दूध की न्यूनता हो तो दिन में कई बार थोड़ा २ गाय या बकरी का दृध पिलाना उत्तम है,
- (११) यदि रवहदार शीशी द्वारा बालक को दूध पिलाया जाये तो दूध पिलाने के अनन्तर हर बार शीशी को गरम जल से अच्छी तरह धो कालना चाहिये। शीशी गन्दी रहने से अनेक

प्रकार के रोग उत्पन्न होजाते हैं।

- (१२) यदि दूध पीनेवाला वालक ऐसे रोग में प्रसित हो जाय, जिसमें उपनास करना श्रमिवार्य हो तो भी उसको लन्धन न करावे बरन धाय को हलका भोजन देकर पश्य से रखना चाहिये।
- (१३) दूध पीने वाल वालक के रोगी होने पर उसकी माता के स्तनों पर श्रीयधियों का लेप करा कर सूक जाने पर थी डाले, फिर बालक की दुग्ध पान कराना चाहिये।
- (१४) प्राय: त्रियां वालकों को चुन कराने के तिये भयानक जन्तुओं का नाम लेकर अथवा परछाही आदि दिखा कर डिराती हैं। इससे वालक के डरपोक और रोगी होने का अन्देशा रहता है।

(१४)गृहकार्य के सुभीते के लिये कितनीही स्त्रियां बालकों को सुलाने के लिएअपीम का सेवन कराती हैं, जिससे वह नहीं में सीया रहे, किन्तु उन की इस मुर्खता का बालक के स्वास्थ पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। मस्तिष्क बिगड़ जाता है। और अफारादि रोग घेर लेते हैं, जिससे उसका जीवन संकटमय हो जाता है।

#### बालक का वजन व आकार

उत्पन्न होतं ही बालक की तौल ३ सेर से ३॥ सेर वा लम्बाई ५४से ३० इंच तक होती है।

## शिशु चर्या

इसके उपरान्त बालकों की शिशुचर्या के लिये यह बान याद रखनी वाहिये कि वालकों के सोने का कमरा साफ हवादार लम्बा चौड़ा होना चाहिए वर्षा ऋतु और सर्दी के मौसम् में घर के दरवाजे बन्द रखना चाहिए जिससे बच्चों की ठंड म लग जाय। जब तक बच्चे की बैठने और चलने की शक्ति न हो जाय तब तक उसको बैठालने और चलाने की कोशिश न करे।

#### बन्नों को खोषधि देने के नियम

- (क) जो बालक दूध पोता है उसकी दूध पिलाने बालों की दबा करें।
- (ख) जो दूध भी पीता हो और अन्त भी खाता हो तो बालक और दूध पिलाने वाली दोनों की दबा देना चाहिए।
- (ग) जो सिफ् अन्त खाता हो तो केवल बालक को ही दवा देवें।
- (घ वालक को त्वा की मात्रा खुब मोच समम कर देनी चाहिए।
- (क) जनम से लेकर १ माम तक १ रती, २ माम तक २ रती, ३ माह तक ३ रती, अर्थान १ वर्ष तक १२ रती, १ वर्ष से उपर को १ माज तक औपि देने का नियम है। इस पर भी वैद्यों को बालक का बलावल देख भाग कर औपि की मात्रा देनी योग्य है, यदि रमादिक औपि यो देनी पर्दे तो उनकी मात्रा। बहुत ही न्यून हो और बालक जिस अनुपान में खा मके उसी में दवा देना जिवन है। यदि शास्त्रीक अनुपानों में न खा मके तो माता के दुग्ध में देना अथवा उन औपि यो तो माता के दुग्ध में देना अथवा उन औपि यो तो साता के सननों पर करवा दें, इससे बालक औपि आमानी से खा सकेंगे।

## माता के दृधदेनेका समय श्रीर परिमाण तथा रीति

प्रथम दिन से लेकर तीन दिन तक पेऊआ (इसके बनाने की यह रोति है कि एक छोटे मिट्टी के वर्तन में अजवायन १ मासा, नीम के पत्ता १ नग, गुड़ एक ती० जल ४ तोला में गरम करें, जब ३॥ तोला जल शेष रह जाय तब उतार छानकर बच्चे को थोड़ा २ पिलार्वे।

कहीं २ उत्पन्न होते ही बालक को दूध देना प्रारम्भ कर देते हैं । यद्यपि उपर की रीति से बहुत लाभ होते देखा गया है, और दो तीन दिन के परवान जब माता को दूध उतर आने, तबबह दूध ही देना चाहिये यदि प्रारम्भ से दूध ही देना पड़ तो गाय या बकरी का दूध में बाधा जल मिलाकर उसे अग्नि पर चहारें जब जल जलजाय तब थोड़ी मिश्री मिलाकर निम्न लिखित रीति से पिलावें।

१—एक नोला द्ध में १० वृंद चूना का नितरा हुवा जल मिलाकर दें।

२—यदि वच्चे का पेट फुला हुवा हो तो एक नोला सोंफ को दो छटांक पानो में श्रीटावे श्रीर जब ३ नोला इंप रह जाय तब उतार छात इस क्वाय की २० वृंद १ तोला दृध में डालकर पिलार्वे।

इम रीति से दूध पाचन भी हो जायेगा और चल भी करेगा । विशेषकर नीचे के कोस्ट के हिसाब से दूध देना चाहिये।

## बचों को द्ध पिलाने के समय-विभाग कीतालिका

वालक की ऋायु	दूध देने का समय	१ बार की दूध की मात्रा	१ दिन की दृध की मात्रा
प्रथम सप्ताह्	दो २ घंडे में	ऋाधी छटांक	पांच छटांक
२ से ६ मप्ताह तक	अहाई २ घंटे में	एक छटांक	६ से = इटांक तक
७ म० से ६ मास तक	तीन २ घंटे में	डंड से दो झटाफ तक	६ सं १२ ह्रटांक तक
द से १० माम तक	साढ़े तीन २ घंटे में	२ से २॥ इटांक तक	रव से २० छटांक तक
११ से १४ मान तक	, चार २ घंटे में	२।। से ३ छटांक तक	१४ से २२ छटांक तक

जो बनने वर्ष १। वर्ष के मवासिर वा १। सेर तक दृष पीते हैं बह बड़ हुए पुष्ट होते हैं। ऐसे प्रवार्ध को वा वर्ष तक दृष ही पिलाना चाहिये। दृष आया पानी हाल कर हल्का कर लेला चाहिए। गांह दृष से उठव होकर रोग उत्पन्त हो प्रात हैं। एए गुनगुना अतिहण ) देना चाहिए रण्डा पानी नहीं दिलावा चाहिए और थेंदा मोठा भी मिला लेना, विना मीठे के दूप हजम नहीं होता। यदि शीशी से दृष पिलावे तो हर बार शोशी को गरम बल से थी लेना चित्रत है। प्रात्क को जब रोध तब ही दृष पिलाने से बच्चों को भवत हो जाता है इसलिये बालक रुचि से जित्ना दृथ पिये उतना ही नियम से पिलाना चाहिये।

जब बालक के चार २ इांत निकल आवें तब मातृहाना तथा अगरोट जल में पका कर या अगरोट का बिस्कुट देंकें, यह केवल दो बार देना चाहिये बाकी समय में दूध ही पिलाना। जब छः या आह दांन निकल आवें तब एक समय विचाई। या दाल चावल विजाना और जब यह भली प्रकार पाचन हो जाय तब थोई। २ रोटी भी देना शुरू कर दें। निरे अन्न पर बच्चों को कर्भा न रक्कों, थोड़ा बहुद दृष ६ वर्ष की अवस्था तक अवस्थ पिलाना चाहिए।

## नार वर्ष से अधिक आंयु वाले वानकां को दध पीने का समय

शानःकाल इस पान से बल आर अस्ति की बृद्धि होतो है अतः शानः कान जिनना सिल सके बलावन के अनुसार दृष अवस्य बालक को पिलाना।

तीयरे पहर चार बजे दृध पाते से भा बल और अग्नि की वृद्धि होती है। राबि को भोड़त के ५० २००० विश्वाद होते हैं। अत्यस्त बल, आयु और बुद्धि की वृद्धि होती है।

नोट: यह नियम चार वर्ष की आयू से लेकर बाल, युवा और बृद्धों तक के लिये हैं। चार पर्प से कम की आयु वालों को पीछ लिखे नियमानुसार दूध देना चाहिये।

# तालु कण्टक (सिंखया मसान) रोग और उसकी अनुभूत चिकित्सा

( ले०-डा० व्यासदत्त शर्मा )

पर्याय—नालुकण्टक, सूखियामसान, मगरवी सुचल्टी, सुख्या, मिठवा, Marasmus मूखादि रोग कहते हैं।

#### तालुकण्टक रोग

तालुमांसे कफः कुद्धः कुरुते तालुकगटकम् । तेन तालु प्रदेशस्य निम्नता मूर्व्ति जायते ।। तालु पाते स्तन द्वेषः कुन्झात्पानं शक्टद्रवम् । तृपास्य कण्डवित्तरुका ग्रीवा दुर्धगताविमः ॥

विकृत आहारादि और दूपित दूध के पीने से क्षक कृपित होकर पालकों के तालु (क्षोपड़ी के नीचे का भाग दिमारा) में तालु करटक रोग उत्पन्न होता है। इससे तालु प्रदेश में नीचा गढ़दा उत्पन्न होता है, स्तनपान से होप अर्थात कठिनता से थोड़ा दूध पीता है। शरीर से रक्त माम सूख कर केवल अस्थि-पिजर रह जाता है, हरा, पीला तथा खुजरीदार दस्त आता है। प्याम बढ़ जाती है, मुख में खुजली वा निनवां होकर बाल हो जाता है और वमन होती है। आंख करठ और मुख में दर्द और दूध की के करना, और मरदन गिर पड़ना आदि लक्त प्रकाशित होते हैं। इसको सूखिया-पसान वा सुवरदी सखवा और निठवा सुवादि कहते हैं।

## सुखबा (सुघण्टी रोग) की सरल परीचा

ममरक्ली वा सुघन्टी रोग की परीक्षा के लिये वालकों को प्रायः उनकी मातार्थे सक्खी सारकर खिलाती हैं, क्योंकि इस रोग में । मक्खी खिलाने से वमन नहीं होती और अन्यथा वमन होकर वे तुरन्त बाहर निकल आती है। परन्तु इस घृणित परीचा से हानि की सम्भावना रहती है। उभकी परीक्षा का सरल उपाय यह है, कि रोगी अलक के तालु के गड् हें में डेंड् दो मासे गुड़ का एक टुकड़ा एव कर इसको गेहुं के आदे की टिकरी से दवा कर वस्त्र से बांध दे श्रीर तीन चार घंटे के बाद खोल कर देखने से माफ पता चल जाता है कि इसको तालुकण्टक रोग है या नहीं ! यदि रोग होगा तो गुड़ उड़ जायेगा और यदि रोग न होगा तो गुड़ ज्यों का न्यों बना रहेगा । दूसरी परीक्ष इस प्रकार से करनी चाहिए कि मुख्यी के अन्डे का पानी एक कदाईनुमा बिद्धली पियाली में हाल उस पर बालक को बैठा दें, यदि सुखबा रोग होगा तो गुड़ा मार्ग से वह अ दे का पानी लिंच कर शिश्र के पेट में चला जायगा, यहि सेन न होना तो पानी ज्यों का त्यों बना रहेगा।

यह सुघएटी रोग की उत्तम श्रीपिध है। जब तक शरीर में रोग का श्रांश शेष रहेगा तबतक प्रति दिन अपडे का पानी सुखता जायेगा श्रीर रोग मुक्त होने पर पानी का सूखना बन्द हो जायेगा। प्रत्येक दिन प्रातःकाल एक वा दो श्रक्ट का पानी मुखाना यथेश है।

#### सुखा रोग की चिकित्सो

१-सुच्चे मोती, वंश लोचन, कहुए की सूखी खोपड़ी, सफेद इलायची के दाने एक २ माशा ले दो तोला गुलाब के अर्फ में पीस मूंग की बराबर गोली बना एक एक गोली चार चार घंटे में ताजे जल से दें।

स्नेतप-कहुए की खोपड़ी ३ माशा, केशर, अफीम एक २ माशा ले २॥ नोला तिल्ली के तैल में आग पर जनावें फिर छान कर सब शरीर पर सर्ले।

३-वच्चों के सूखा मसान आदि सब रोगों पर कब्ज और बदइजमी के। दूर करने वाली महाँधि:—

मुच्चे मोती चार ग्ली, जहरमोहरा श्रमली ६ मा०, पत्थर वेर ६ माशा, दरियाई नारियल ६ मा०, कायुली पीलीहर्ड ६ मा०, मगज कमल गट्टा ६ मा०, वंशलोचन ६ मा०, छोटी इलायची के दाने ६ मा०, जर्दक ६ मा० कपड़ छान कर श्रक गुलाव में अवरल करके मूंग समान गोली बनाकर एक गोली प्रात: साम मां के दूध या श्रक गुलाव में हैं। यह श्रदुभृत योग है।

४-वच्ची के ज्वर सुखादि सब रागी

कटैया के फूल की केरार, बसगंध, जायफल,

केशर, लॉग, बड़ी पीयल, मदार की जद, प्रत्येक दक २ बाना मर दरस्द की जद ११ रुपया भर अदरत चार । हपया भर, सैंजने की छाल आठ आना भर, गूदा खंमार सफेंद दो बाना भर तीनों नमक तीन तोला, इन सब श्रीषिधयों को दूट छान कर अदरक के रूप में बोट गोला बना ६ बंगला पान में लपेट उपर से भीगा कपड़ा या मिट्टी चदाकर मन्द श्राग्न में पका कर मूंग बरावर गोलों बनाकर प्रातः सायं १-१ गोली देने से बच्चों के ज्वर मृत्या आदि रोग अच्छे होते हैं।

५- शास्त्रीक महामारिचादि तैल सुर्घटी (सूला रेग पर:--

यह रामबाण सिद्ध हुवा है, इस तैल के १४ दिन मालिश करने से मुखा रोग में ब्राशाजनक लाभ होते देखा गया है इसकी मालिश एक मास पर्यन्त करनी चाहिये! महा मारिचादि तैल का योगभाव प्रकाशादि में देख कर बनालें।

#### सुखा रोग के अन्यान्य योग

(६) हींग एक सरसों के दाने बराबर खदरक का रस, तुलसी पत्र का रस, भैंस के गोबर का रस, और मधु चार २ बूंद प्रति दिन प्रातः साथं काल एक मास पर्यन्त चटाने से निरसन्देह सूखा रोग का नाश हो, जाता है। यह योग अनुसूत है इसके साथ निरनस्थ "बालमृत-वटी" का भी खेवन कराने से सूखा रोग से प्रस्त सरखासन्न सैकडों बालकों ने खारोग्य लाभ प्राप्त किया है।

(७) बालामृतत्रटी — कपूर, केशर, छोटी इलायची का दाना, और जावित्री तीन २ माशे । इन्द्रयन, कुरैया की छाज, खस, जहरमोहरा खताई जायकल, पीपल, मुलहठी और कमीमस्तरी छः छः माशे । अतीस, अनार की कली, काकरासिंगी धनियां, नागर मोथा, बबर का गोंद, बेलिगरी, वंशलोचन, सुगन्धवाला और सौंठ एक २ तोला । मत्र का चूर्ण करके एक घड़ी अर्क गुलाब के माथ खरल में घोट कर उड़द बराबर गोली बना छाया में सुखालें । यह बटी अनुपान भेद से सेवन करान से बालकों का ज्वर, खांसी ध्वाम, बमन और प्रहाणी आराम होते हैं।

इस रोग में नारायण तैल वालक के सर्वाक्त में मर्दन करना लाभकारी है। सरसों का उवटना न करावें, केवल तैल का मलना श्रीष्ठ है। सुघण्टी रोग विलम्ब से छुटता है इसलिये दो चार दिन श्रीपिय विलाने से कोई विशंप लाभ नहीं प्रगट होता। इक्कीस दिन के उपरान्त आरोग्य होने तक श्रीपिययों का सेवन कराना आवश्यक ह। श्रीधक बढ़े हुए रोग में तैलाम्बंग, श्रेनेप श्रीय व्यक्ति की श्रीपिययों का माथ ही प्रयोग करना चाहिये। रोग की आर्गिभक श्रवस्था में किमी भी खान वाली श्रीपियों के सेवन कराने से पूर्ण लाभ होता है।



**阿斯斯斯斯斯斯斯** 医肾





नगरतायः जोक्षाप्रजाद होता भिषक शाक्षा जायुवेद विशासि प्रयान विकित्तमक आमापवाद्यं जोष्यालय देहती

# मातृदुग्ध और शिशु स्वास्थ्य

( लेखक - पं० भगवह व शर्मा श्रायुर्वेदाचार्य, भन्पादक )

प्रकृति देवी ने मनुष्यको उत्पन्न करने के साथ ही उसके भोजन दुग्ध को भी उत्पन्न किया है। इससे यह सिद्ध है कि बच्चों की सर्व श्रेष्ठ प्रधान खराक मातृ इग्ध है। हमारे प्राचीन आचार्यों ने इस बात को बढ़े जोरदार शब्दों में कहा है कि-मात्रेव पिवेत्स्तन्यं तत्परं देहवृद्धये । अर्थान माता का दूध ही बच्चों की पुष्टि के लिये सर्वश्रोध्य श्रमुपम खूराक है, जगन्नियन्ता परमा-त्माने बच्चे के पालन पोषण का प्रधान आधार उसकी माता के ऊपर ही पैदा किया है अर्थान उन की माताओं के स्तन में अमृतरूप दुग्ध का फरना रक्षा है, जब तक यह कुद्रती भरना चलता रहता है, तब तक उसे छोड़कर किसी भी कृत्रिम पदार्थ की शिश के लिये आवश्यकता नहीं गहती। परन्तु बाहरी सभ्यता तेरी भी विचित्र लोला है जहां जीवन के अन्यसाधनों में फैशन की बाद आई वहां बेचारे इन श्रवीध पराधीन शिशुखों को भी तृते नहीं छोड़ा, उनको उनकी प्रकृतिदस गिजा मातृ वृथ से खुड़ाकर श्रनेक प्रकृति वितद बनावटी भोजनों से सवा के लिये उनको कमजौर कर दिया। आजकल प्रायः प्रथम तो प्रस्ताओं की छाती में दूध ही नहीं रहता, जिनके हौता है वे मुंह में स्तन देशा भी सभ्यता के विरुद्ध सममती है। ये अपने बच्ची की गाय, बकरी अबवा विलायती दूध देकर पालती हैं। प्रत्येक सममन्तर

माता पिता जान सकते हैं कि कृतिम खूराक पर बच्चों का पालन करना किस प्रकार विघ देने के समान हैं, क्योंकि जितने क्याचे मरते हैं उनमें से अधिक प्रायः आहार के दोष से ही मरते हैं। इमिलबे यदि मातायें यह जानलें कि बच्चों का पालन किस प्रकार करना चाहिये, वे स्वस्थ किस तरह रह मकते हैं, तथा उनको छाती में दूध किस तरह यथेष्ट पैदा हो सकता है, और इन कृत्रिम खूराकों से क्या २ हानि होतो है, तो अवस्य ही हमारे देश के बच्चों की मृत्युसंख्यामें भागी कमी होकर देश में सुख शांति विराजमान हो सकती हैं।

ऐसी कीनसी माना होगी जोकि अपने बच्चे को श्वस्थ, सबल और बुद्धिमान देखने की कामना न करती हो परन्तु केवल कामना करने से ही क्या होता है जब तक कि उसके लिये उचित प्रवन्ध्य न किया जाये। बालक का जैसा पालन पोषण होगा वह बैसा ही बनेगा, बीज या पोटा जिस प्रकार से सीचा जायेगा उसका बैसा ही वृत्त तैयार होगा। क्या हम ईश्वर प्रदत्त आहार न कराकर बालक को स्वस्थ व सुखी बना सकते हैं? यदि हम ऐसा सममते हैं तो हमारा भारी भूम है। निर्वल व रोगी बच्चोंकी जन्म देकर क्या मातापिता उनसे सुल की आशा कर सकते हैं? कभी नहीं। जब हम अपने देश के बच्चों की दशा देखते हैं तो हदा बंध उठता है। भावस्य भवनिक बीख-

पड़ता है। क्योंकि वाल्यकाल में ही उचित श्राहार न मिलने से मनुष्य निर्वल और दुवले पनले दीख पड़ते हैं। भोजन मे जो हड़ियों को बलवान् पुष्ट और बढ़ानेबाल उपादान होने चाहियें, उनके न होने से ही वे निर्यल और वेकार होकर बढ़ती हैं श्रीर शरीर का बोक ठां है न संभाल सकते के कारण वे 'देडीमेडी हो जाती हैं। जिसके फल-स्वरूप बनचे। में इस्थि विकृति तथा अभ्यान्य घोर व्याधियां पैटा हो जाती हैं । यह बात ध्यान में रावनी चाहिए कि प्राणी मात्र के भिन्न २ शरीरों में उनकी प्रकृति के अनुसार एक प्रकार की अलगर विज्ञंपता देखने में आती है इस लिये भिन्न २ बालकों के लिए स्वामायिक छाहार भी भिन्न २ ही होने चाहियें। जैसे एक प्रकार की भूमि के धृच दृसरे प्रकार थी भूमि में जैसे होने चाहियें वैसे उत्तम नहीं पैदा होते। इसी प्रकार शिशु के लिय जितना उसकी माता का दूध प्रकृति के अनु-दूल हो सकता है, उतनी ये बनावटी गिजाये नहीं हो सकती।

सम्भव है कि बालक को ये कृतिम दूध जैसे कन डेस्ट् मिस्क (Condensedmilk) अथवा Dried milk दृष्ट्रिट मिल्क अथवा अनेक प्रकार के विलायती दृश्य जो कि वस्त्यों को दिए जाते हैं, उनसे प्रारम्भ में कोई खरावो दिखलाई न देवे, परन्तु कुछ दिनों के बाद इनसे पोषित बस्त्यों में बदहजमी नथा एक प्रकार की खाज स्कर्जी Seervey और भी अनेक वीमारियां पैदा होजाती हैं। इस विषय में टाक्टर चिड़ेल का कहना है कि मीनिवच नगर में वालकों की प्रदर्शनी हुई थी इसमे जिस बालक को सब से मोटा, ताजा और

तोल मे भारी होने के कारण इनाम मिला था वही बच्चा मेरे पास घेट श्रामन्डव्हीट के श्रोपधालय में हाथ पेरें। की बकता ( श्रस्थि विकृति, का चिकित्सा कराने आया, इसकी मांस पेशियां भी दुवल था। यह बच्चा केवल कन इंस्ट मिल्क व कान क्लावर नाम की वनी हुई बाजारू चीजो स पला था। बच्चा का प्रकृति के अनुकूल आहार का मात्रा जानने के । ५२ यह भी, देखना जरूरी है, कि उसका शारीर अन्दी तरह पुष्ट होता है या नहीं,।माथ 🗸 उसका पाचन शक्ति भी बढ़नी है या नहीं। इन सब बातो के लिय माता का ही दूध मंत्र स अच्छा हो मकता है, मा की छाती सबच्चे के जन्म के साथ २ द्ध श्राजाता है, फिर ज्यों २ वच्चा बद्ना चला जाता है, उसी शकार माना के दूध में भी परि-बतन होता जाना है। इस परिवर्तन के साथ २ धीरे २ वच्चे की पाचनशक्ति भी बढ़ती जाती है। पेदा होते ही बच्चे के लिये उसके अनुरूल भोजन द्ना बहुत कठित काम है, क्योंकि प्रारम्भ के तीन दिनों स साता करननों , संदूध नहीं उतरता, ऐसी अवस्था मे अनेक बार प्रसृताएँ व दाइयां वच्चां का श्रहानवावश साधारण दूध पिला देती हैं जिसस बच्चों की बहुत कष्ट भोगना पहला है, ऐसी अवस्था में थाड़ा थोड़ा शहद और घी सिलाकर दिन में तीन बार दे मकते हैं, अथवा उबला हुआ शुद्ध जल ठंडा करक थोड़ी सी चीनी के साथ १-८ चम्चा दिन में तीन ध बार दे सकते हैं इसके बाद बच्चे को दूध पिलाना अत्यन्त आवश्यक है, इससे माता की द्वाती में उच्चेजना होती है जिससे गर्भाशय

सिकुड़ता है, और बच्चे को इस थोड़े से पेवस दृध के मिलने से उसकी श्रांतों के आकुंचन प्रसारण में यृद्धि होती है जिससे कि ४ या ४ विरेचन होकर श्रांतोंकी शुद्धि होजाती है। बालक की पृष्टि श्रोर स्वास्थ्य के लिये जो पदार्थ जम्बरी हैं वे सब माना के दृध में होते हैं।

# माता का दृध और उसके अवयव

मातृ दुग्ध में इन दृश्यों कं। इतनी श्रावश्य-कता है कि यदि इनमें से कोई एक भी कम होजावे तो बच्चे की प्रश्नित विगड़ जाती हैं। इनमें सब से ज्यादह श्रामिप जातीय (मांस जातीय) भी जन ही सब से श्राविक श्रावश्यक हैं, उससे कम स्नेह जातीय श्रीर उससे कम शर्करा, उससे कम लवण जातीय फिर श्रन्य श्रनंक चीजें होनी श्रावश्यक हैं। शरीर तच्च विद्या के श्रनु-सार बच्चों को श्राहार देते समय याद रक्ष्यें कि उसमें सब वस्तुएं उसी परिमाण में मौजूद हैं या नहीं जितनी कि होनी चाहियें। यदि उस परिमाण में श्रन्यर हो जावेगा तो उसका परिणाम बहुत बुरा होगा क्योंकि माता के दूध में उपरोक्त सब उपादानों के ठीक २ मात्रा में मोजूद होने से ही बच्चों की पृष्टि श्रीर वृद्धि उत्तम हो सकती हैं।

# मातृ दुग्ध पान

मनुष्य के अतिरिक्त अन्य प्राणियों में विवेक बुद्धि त होने पर भी वे अपनी स्वाभाविक इच्छा तथा प्रेम से ही अपनी सन्तान का पालन भली प्रकार करते हैं, परन्तु नवीन सभ्यता, स्तेह, ममता आदि से स्त्रियों की स्वाभाविक इच्छाये बद्धा गई हैं जिसके कारण अनेक मातार्थे अपने

बच्चों की लाभ के बदले अपनी अज्ञानता से हानि पहुंचा देती हैं। अनेक प्रस्तायं अपने बच्चे को मनमाने तौर पर दूध पिला देती हैं जहां उन्होंने देखा कि बच्चा रोया भट उन्होंने उसके मुंह में स्तन लगा दिया। बालक भूख से रो रहा है या उसे कोई तकलीक है इस बात पर वे जरा भी ध्यान नहीं करती। बालक को यिना क्रम या जब जब वह रावे भट दुग्ध पिला दना बड़ी भारी नाहानी हैं, क्योंकि नवजात शिशु का पक्वाशय इस योग्य नहीं होता कि वह इतनी जल्दी दुग्ध हजम कर सके इमिलिये वे दुग्ध गेरने लगते हैं, मन्दाग्नि होकर हरे, पीले दस्त आने लगते हैं, जिगर बढ़ जाता है जिससे बच्चा दुर्वल और कमजोर हो जाता है।

## दुग्धपान का नियत समय

माता को चाहिये कि बच्चे को नियमपूर्वक दूध पिलाने की आदत डाले अगर ठीक र समय के अन्तर से दूध पिलाया जावे तो हाजमा बहुत ही अच्छा हो जाता है और बच्चा भी ठीक उसी समय में दूध के लिये रोवेगा, फिर दूध पीने के बाद वह आनन्दपूर्वक खेलता बहुंगा जिससे माता अपने अन्य गृहकायों को भी अच्छी प्रकार कर सकेगी और बच्चे का शरीर भी स्वस्थ रहसकेगा, दूध पिलाने की ही खराबी से प्रति वर्ष कितने ही बालक मौत के मुंह में चले जाते हैं। और अनेकों को बदहज़मी तथा पेट के अन्य रोग भी हो जाते हैं, जब र बालक रोये तब र उसे दूध पिलाने की रीति अच्छी नहीं क्योंकि इससे बालक की आदत भी बिगड़ती है। जल्दी जस्दी दूध पिलाने से दूधमें आमिष जातीय पदायं की अधि-

कता हा जाती है जिससे बच्चे के पेट में खरावी हो जाती है, द्वाती का दूध वच्चे के पाकाशय में १॥ घरटे में इजम होता है और आध घरटे पाकस्थली को आराम भी देना चाहिये, इस तरह पर दो घण्टे के बाद बच्चे को दुध पिलाना उचित है फिर धीरे २ वच्चे की अवस्था बढ़ने के माय २ त्राहार का परिभाग भी बढ़ना जाता है इसलिये ज्यों २ उसर बढ़े बैसे २ ऋधिक समय का अन्तर देकर इध पिलाना चाहिये क्योंकि फिर एक बार ही बच्चा पर्याप्त मात्रा में दूध पीलेता है, इमलिये एक बार दुध पिला हर फिर एक घएटे बाद जब और बड़ा होवे तब श्रदाई घंटे बाद फिर तीन घंटे बाद इस तरह दुग्ध पिलाना चाहिये । एक बार कितना दुग्ध बच्चे कोपीना चाहिये इसकी निश्चित मात्रा नहीं बताई जामकर्ता। वस इतना ही समभना चाहिये

कि बच्चा पर्याप्त मात्रा में दूध पीने के बाद स्तन को स्वयं ही छोड़ देता है, यदि अधिक दूध पी जाने तो डाल भो देगा। स्तन से भी एक छटांक दूध म्वीचने में सब वस्चीं को बरावर समय नहीं लगना। कोई २ जल्दी स्वीच। लेता है आर कोई देर में, ज्यों २ बच्चे की आयु बढ़तां है बैसे २ उसकीदृध ग्वीचने को शक्ति भी बढ़ती हैं, यदि दूध बालक की कम मिलता हो स्तन ठीक न खिचता हो तो चाहिए, कि दध पिलाने के पहले छाती को कुछ दबा कर मुलायम करने त्रीर दृग्ध पिलाते समय भी स्तन की माता दावती रहे तो दुग्ध ठीक निकलता रहेगा। अनेक वैज्ञानिकों और प्रत्थकारों ने इसवात का परिमाण नियत किया है कि किस उम् का बालक स्तनमें से कितना दुग्ध खींच सकता है। इन लोगों ने दुग्ध पिलाते से पहने और पीछे बचने का सही बजन करके यह निर्मालियन परिमाण स्थिर किया है ।

# अवस्थानुसार वच्चों को कितनी बार और कितना दूध देना चाहिये।

थालक की उमर	प्रथम दिन	हुसरा हिन	तीमरे दिन से १४ दिन नक	१४ दिन से रेट दिन तक	दूसरा मास	नोमरा मान	चौथं माम सं छ्ठे मास तक	हुँउ संतथवे मास तक
एक बार की मात्रा	! !	्र <sub>ी</sub> । ।	्री	1 ]-}	2 -3	्रा-ीर्ट्ड	1-5	5-6
	श्रीम	अस	औस	श्रोंम	श्रींस	श्रींस	श्रीम	श्रींस
कितने बार दूध पिलाना चाहिये	10	10	10	10	8	8		6
दिन रात में दूध पोने का	2}-5	5-7 }		10-17- <u>]</u>	16-24	24-30	28 <b>–</b> 35	3037
मोझ परिणाम	श्रींस	श्रींस		औंस	श्रीम	स्रोस	श्रींस	स्रोत

सामान्यतया अपर लिखित नालिका है अनु-सार बच्चों की दूध पिनाने से ने रवस्थ मोट ताजे रहते हैं, परन्तु सम्भवं है किन्हीं कमजोर व अधिक सबल शिशुओं पर यह नियम न लग मके परन्तु फिर भी अपर लिखी नालिका का पालन कराना शिशुओं के लिये अत्यन्त लाभप्रद मिछ होगा।

## म्तन पान कराने की विधि

वास्तव में माता के स्तन पान विना शिशु का ठीक ठीक पालन पापणा नहीं हो सकता, जिस समय शिशु अपने हाथों से स्तन पकड़ कर दृध पीता है नो गानो वह समसना है कि भगवान ने यह स्तन मणी अमृतकलश तरे लिये प्रदान किये हैं। और यही तुम्हारी प्राणा रज्ञा के लिए

Taken from "Swastnya and Rog" By the Kind Permission of Dr. Friekinath Varma Civil Surgeon.

यदि माता की तन्दुकस्ती इस योग्य हो कि वह बच्चे को स्तनपान करा सके तो धाय या अन्य उपर के दूध को कभी नहीं पिलाना चाहिए। परन्तु कभी २ ऐसा भी देखा गया है कि बच्चे माता धौर धाय दोनों के दूध को पीते हैं। यह बहुत बड़ी रालती है इससे दक्षे की प्रश्नुति ठीक नहीं रहती।

माना को चाहिये कि वह वच्चे को गाँद में लेकर दूध पिलावे, उस के मुंह के उपर एक दम स्तनों को न छोड़ कर अपने हाथ से संभाल कर धीरे र होशियारी से बालक को दूध पिलावें, क्योंकि यदि बिना अपने हाथ से मंभाले बच्चे को दूध पिलाया जावे तो रुका हुवा दूध माता की छाती में एक दम उन जना पदा करके बाहर निकल पड़ता है इस से कभी र बालक का मुंह दूध से

भर कर। उस कें नथनों में चला जाता है जिस से कि उसका श्वास कक कर यह घवरा जायेगा। एकदम स्तनों की बच्चे के उपर लादने से दूसरी यह भी खराबी हो जाती है कि वच्चे की नाक पर द्याच पहता है इस अवस्था में सब अब प्रत्यंगों के कोमल होने से उसकी नाक के चपटी हो जाने का हर है। यदि माता एक हो स्तन से वच्चे की दूसरे स्तन में अधिक दूध आकर स्तन में अधिक दूध आकर

वह तना करेगा जिस से स्तनों में पीड़ा हो जाती ह. और बच्चा भी एक ही करवट देर तक पड़ा रहने से दु:बी होजाता है। एक बड़ी खराबी यह होगों कि एक तरफ का स्तन पीते रहने से वह उसी तरफ देखता रहेगा। जिस से की आंखें टेढ़ी हो जावेंगी और वह भैंडा हो जायेगा एक बार में वह मा लगभग १५ मिन्ट तक दूध पीता है इतने

समय में वह इतना दूध पी तृता है जो कि उसकी उदरपूर्ति के लिये काफ़ी होता है यदि इस से श्रधिक देर तक वह दूध पीता रहे तो समभना चाहिये कि माता के दूध में पाष्ट्रिक द्रव्यों की न्यूनता है। बच्चे को जब दाहिन स्तन से द्ध पिलावे तय दाहिनी करवट और जब बाये म्तनसे दूध पिलावे तब बाईं करवट माता की लंटना चाहिये अर्थान वच्चे का सिर माना की उसी वाज् पर रहना चाहियं जिस करवट वह सोनी हुई हो श्रीर फिर श्राहिस्त से दूसरे हाथ से सान की पकड़ कर बच्चे के मुंह में देवे जिस से उसका बोम बच्चे के मुंह और नाक पर न पड़े । बदि बालक दूध पीते २ मं। जाबे तो उसे उठाने की श्रावस्थकता नहीं इसे मोने देन। चाहिये और कुछ देर बाद स्तन की धीरे से हटा जेने पर उसके जागने का डर नहीं रहता, नहीं तो एकदम सतन हटाने से बच्चा जाग कर फिर दूध पीने लगता है. दूध पीने के बाद उठके की प्यार न करें क्यों कि प्रायः वह मो जाता है फिर दूसरी बार दूध पीने के समय ही वह जानता है यदि पहिले जाग भी उठे तो बह रोता नहीं बल्कि चूप चाप पड़ा रहता है, ठीक समय पिर दूध पिलाने से माना श्रीर बच्चा दोनों ही भंसट से बचजाते हैं ऐसी अदिन हालना शिशु और माता दोनों के लिये ही हितकर है कभी २ बच्चा दूध पीने के एक घन्टा बाद रोने लगता है, उस समय माताएं समकती हैं बह भूख से रोता है इसलिए उसे जैसे तैसे द्ध पिलाने की ज्यर्थ चेष्टा करती हैं। बच्चों का कुसमय एकदम रोना उनके भूखे होने का लक्षण नहीं है, इस का कारण बच्चे के पेट में दर्द का

होना है, श्रीर उस दर्द का कारण विकृत दूध का पीना है! क्नार्यावक (Nervous-नर्वस) थकावट मानमिक उरोजना, क्रोध, चिड्चिड़ाहट इत्यादि से माता का दूध विकृत हो जाना है, इसी प्रकार यदि माना के दूध में केसिन या मक्खन की मात्रा ऋधिक हो जाये नी बच्चे कि पट में ददे होना संभव है, दर्द के बाद सरमी का तेल गर्म करके पेट पर सल देने से बहा लाभ पहुंबता है। ऋनियमित समय में बार शहुध विलाने से भी माना का दुध गाढ़ा हो कर बच्चे की पाचनशक्ति बहुत खराव हो जात: है। दूध पिलाने के साधन यद्यपि अनेक हैं परत्तु साधारणतय। आज कल रबड़दार नाली बाली कांच का शीशी, स्तन द्वारा रुई या फोहे द्वारा द्ध पिलाते हैं। इन में म्तन-पान सर्व श्रीष्ठ हैं, परन्तु उपर का दूध पिलाने के लिये कांच की शीशा का इस्तेमाल भी बहुत अच्छा है, क्योंकि एक नो उससे द्ध पीते समय बच्चा यह ही समभता है, कि मैं माता के स्तन से हा द्ध पी रहा हूं, दूसरे अपनी इच्छानुसार श्रामानी से जिनना चाहना है दथ पोन्ना है वह रोता भी नहीं है, परन्तु द्ध पिलाने के बाद उसे गरम जन से खूब श्रन्छं। तरह साफ करतेना चाहियं। यदि यह साफ न की जावे तो इस माधारणमा बान से बड़ा भारी नुकसान पहुंचता ह । कटोरी या कई के फोई द्वारा दथ पिलाने का तरीका अच्छा नहीं हैं, क्योंकि इससे शिशु दसरे के हाथ से दूध पीने के कारण या तो वह भूखा रह जायमा या ज्यादह दृष पीजावेगा, और यदि द्ध सावधानी पूर्वकन पिलाया जावे तो बक्बे के नाक में भी गिर कर उसे धसका था सकता है।

### म्बच्छता

जिस प्रकार बड़े आदमी के लिये जिना हाथ मुंह धाय भोजन करना अत्यन्त हानिकारक हैं, बैसे ही विना सान घोष बच्चे को दथ पिलाना अत्यन्त आपत्तिजनक है। शिशु को द्रथ पिलाने के पीछे और पहने दोनों बार स्तनों को शुद्ध जन से अच्छी प्रकार थे। डालना चाहिये। अज्ञान मानाओं के इस किया की उपयोगिता की न सम-मनं क कारण शिण की बहुत से भयंकर रोगीं का सामना धरना पड़ता है। ऐसी बहुत कम स्त्रियां हैं जिनको यः माठम होगा कि बायु में अनेक प्रकार के होटे २ असंख्य कींड मीजद हैं, जिनकी हम श्रपन इन नंत्रों से तो क्या अण्वीक्तग यंत्र की महायता से भी बहुतों की नहीं देख सकते. उनमें से कुछ अच्छे और कुछ सुरे भी होते हैं। े वे हर समय हमारे व्याचपदर्थी की खराव करने की घात में लगे रहते हैं, दूध को खट्टा करना नाड़ों को मद्य के रूप में परिएत कर देना. ईख के रस या गुड़ की सिरके का रूप दे देना, पके हुए फल नथा मृत पशुश्रों को मड़ाना यह इन्हीं कीड़ों का कार्य हैं। बच्चे के स्तनपान करन के बाद माता के स्तन पर दूध का कुछ उच्छिष्ट भाग तथा बच्चे के मुंह की लार लगी रह जाती 🖏 फिर वायू में घूमने वाले कीड़े बैठकर माता के म्तनको विपाक्त कर देते हैं, यदि स्तन धरे नहीं दिया जाय तो कीड़ों का वह विष स्तनों में लगा रहेगा, श्रीर जब बच्चा दूध पायेगा, तब पहली घूट वह-इन विषेते द्रव्यों की दूध के साथ पी जाता है। उसके श्रतावा बच्चे की कार से स्तनों के भीगने

से फिर उस पर कपड़ों के स्पर्श से प्रति दिन थोड़ा २ मल इकट्टा होता रहता है जो कि दूध पीने के साथ २ शिशुक्रों के पेट में उतर कर अनेक रोगों को उत्पन्न करता है। परन्तु अज्ञानवश मानायें इन बातों पर ध्यान नहीं देती, इसीलिये बच्चों को दूध पिलाने के पहले स्तनों का धोना अत्यन्त ही जरूरी है। कोई २ डाक्टर कहते हैं कि बोरिक लोशन (Boriclotion) से भी सनों को धोनं रहना चाहिये। दूध पिलानं के बाद बच्चे का संह भी पानी से अच्छी तरह माक कर देना चाहिये यदि उसका मुंह दूध से भागात्ह्वा ही छोड़ दिया जावेगा तो भी सक्तिवयां बैठ कर वहां पर विष पैदा कर दंती हैं ! चीटी भी लग सकती हैं। कभी कभी तो जिल्ली, कुत्ता वर्गेग्ह भी बच्चे का मुंह चाट जाने हैं। माता की चाहिये कि रोते हुए बच्चे की द्रध कभी न पिलावे क्योंकि बोलने समय श्रोर रोते समय श्वास नली का मार्ग जोकि अन्त प्राणाली से विल्कुल मिला हुवा होता है खुल जाता है ऐसी अवस्था में दूध खाम नती में पहुंच कर बच्चे के दम गुटने का अन्देशा रहता है।

# स्तनपान न कराने से माता को हानि

जो माता जान बूककर अपनी प्यारी मन्तान को हृद्य से लगा कर दूध नहीं पिलाती वह बास्तव में जननी नहीं धार्तिनी हैं । बच्चे का पालन पोषण जिस प्यार से माता कर सकती है उस तरह और कोई संसार में नहीं कर सकता। माता सादात् सनेह की देवता अनन्त प्रेम और अनुपम उपकार की मूर्ति है उसके दूध के बिना

सन्तान की शारीरिक मानसिक उन्नति हो ही नहीं मकती। आजकल अनेक हिए गां नृतन मध्यता में पड़ कर केवल के शन के कारण ही श्रपने बच्चों को उध नहीं पिलाती। वे यह समगती हैं कि उध पिलाने से हमारा स्वास्थ्य खराव हो जायेगा। और स्तन दील पड़ कर कुरूपता आजायेगी, परन्तु इन फैशन पसंद स्त्रियों को यह बात अच्छी तरह याद रावनी खाहिये कि जिस प्रकार द्रध न पिलान का दुष्परिणाम बच्चे को भोगना पड़ना है, उसी प्रकार मातायं भी उस हानि से वच नहीं सकतीं। यदि प्रस्ता अपने स्तनों का दुध वच्चे को नहीं पिलाती तो उसके फिर से गर्भवती होने की आशंका रहती हैं, इस प्रकार जल्ही २ गर्भवनी होने से वह कमज़ीर हो जायेगी, और गर्भस्य शिशु के पानन पीपण के निये जिनना बल उसके शरीर में होना चाहिये उनना नहीं रहते से सन्तान भी दर्वल पैदा होगी, इसलिये वह शीच पुन: पुन: बच्चा बनने के कष्ट से भी बच जानी है। इसी प्रकार बच्चे की माताके दूध न पिलाने से माना का उस पर प्यार कम हो जाता है एकी हालत में बच्च का भी माता पर कम ध्यार होना स्वभाविक हैं। जिस घर में माता का ब्रोम मन्तान पर और मन्तान को भक्ति माता पर कम हो जावे उस घर में सुख शांति नहीं रह सकती। मन्तान को दुध पिलाने से प्रथम तो माता अपने बरच को दिन प्रतिदिन मोटा नाजा होते देखका प्रसन्त होती रहती है, इस पत्रित्र प्रोम और प्रस-त्तता के कारण साता का द्ध वच्चे की पुष्टि में बान्यन्त महायवान होता है। बाग्तव में बच्चे की दृथ पिकाने से माता का शरीर दुर्बल नहीं होगा

बल्क मजवृत होता है। इसमें उनको भविष्य में छाती की बीमारी भी नहीं होगी। जो मातायें प्रकृति के इस नियम का उल्लंबन करती हैं उनके स्तन फूल जाते हैं उनमें पीड़ा होने लगती हैं।

# शुद्ध दुग्ध परीचा

प्राचीन श्राचार्यों ने शुद्ध निविकार, बच्चे की प्रकृति के श्रमुकून मातृदृश्य के विषय में लिखा है:—

# नीरेस्तन्यं यदे क्रीस्यादविवर्णमतन्तुमत्। पारादृरं तनु शीतंच तद्द्रग्धं शुद्धमादिशेत्॥

अर्थात्—माता का दृग्ध यदि पानी में डालने से उसमें मिल जावे, तार न छोड़ और किसी प्रकार का रंग न देवे, पनना, शीनल हो तो उसे अरुड़ा दृथ समभना चाहिये।

साधारणतया दृथ तेने के बाद बच्चे की नृष्ति-हो जावे दृथ को न उन्हें, उसे किसी प्रकार की अशान्ति या बेचैनी, पेट में दर्द, अकारा वरेरा न हो, प्रधाना साफ हो इन लज्ञाों से हम कह-सकते हैं कि वह दृथ माना का बच्चे के लिये हिनकारी है।

# द्ध के दृपित होने के कारण

तिमदाहार भक्तायाः श्रुधितायाः विचेतमः ।
प्रदुष्टधानोः गर्भिण्या स्तन्यरोगकरं शिशोः ॥
प्रधान विमद्ध भोजन करने वाली, भूख से पीड़ित,
स्रश्य चिन्न वाली, दृषित धातु वाली, श्रीर गर्भिणी
स्त्री के दूध पीने से शिशुके रोग पैदा हो जाते हैं ॥
वालय में माता के भोजन, रहन सहन, मानसिक
जिनारों का प्रभाव शिशु पर काफी पड़ता है,
अनेक वार देखा गया है कि माता ने जहां कोई

ाबिज चीज खाई कि बच्चे को तुरन्त ही कब्ज होगया, थोड़े से गुरु पदार्थ के खाने से बच्चे को दम्त शुरु होजाते हैं। इमलिये अनेक बार बच्चे को रोग होने पर माता को ही श्रीपध दो जाती है श्रार उस से फायदा हो जाता है। इसलिये माता जबतक बरुचेको दूधपिलाती रहेलवतक उसे हल्का शीव पचान बाला ही भोजन देना जरूरी है। यह बहुन ही बुरी प्रथा है कि जच्चा को अनेक प्रकार के मेवे जात, पौष्टिक गुरु पदार्थ दिये जाते हैं, इस सं कभी २ प्रसृता को मन्दारिन, अतीसार, बदहजुमी बगैरा हो जाती है । जब तक माता बच्चे को दृश पिलानी रहे तब तक उसे प्याज, लहसून, गरम मसाले, शराब वरोरा श्रादि उत्तेजक पदार्थ न खाने देवें, क्योंकि उन चीजों के खाने से उन की गन्ध माता के दूध में आजाती है, तियंकि बन्बे पमन्द नहीं करते और इन चीजों सं पित्त बढ़ कर शिश के म्वास्थ्य को हानि भी पह चती है।

मात् दुग्ध के अभाव में

हमने अमी नक जो लिखा वह सब मंत्र प से माना के दृश की उपयोगिता के विषय में ही लिखा हैं। इसमें शक नहीं कि माना के दूध से ही बच्चे पूर्ण आरोग्य और हृष्ट पुष्ट होते हैं, अन्य उपर के गी, बकरी, भैंस इत्यादि अथवा धाय के दृध इस का समता नहीं कर सकते। अनेक खिद्वान पुरुषों ने इस बात की परीज्ञा कर यह निश्चित सिद्धान्त पर ही रक्का जाता है उनमें = प्रतिशत शिशुओं को पाचनशक्ति की बोमारी होती है और उनके दांत नक्षा अध्ययां दुर्बल होजाती है। और जो कुदरती

(माता का दूध) गिजाक्षीर कृत्रिम गिजा दोनों के सहारे पालन किये जाते हैं उनमें ४४ प्रतिशत, और केवल माता के द्धपर पत्नने वाल शिशु सिर्फ २४ प्रतिशत हो बीमार देखे जाते हैं। परन्तुजन माता बीमार हो, दुबंल हो या मरगई हो या उस के दध में पीष्टिक पदार्थी की कमी हो। श्रथवा दूध बहुत जल्दी सूख जावे या हो तो इतना कम हो जिससे कि वच्चे का पेट न भर सके, अथवा माता के स्तन में फोड़ा, या मुजन हो या त्रम्य कोई सय, मृगी, हिस्टॉरिया, उपदेश, जीए ज्वर वगैरा वीमारी हो तो ऐसी हालत में मां को वच्चे का दूध नहीं देना चाहिये ऐसी अवस्था में वालकों की जीवनरज्ञा के लिये श्रन्य कृत्रिम ख्राकों की शोध अवस्य करनी ही पड़ती है। तब अन्य तीन ही प्रकार के ऐसे साधन कांप रह-जाते हैं कि जिसके ऊपर शिश का जीवन निर्भर है। (१) धातृदुग्ध, (२) गाय या वकरी का दध, (३) कृत्रिम दध

## धाय का द्ध

भारत में श्रित प्राचीन काल से प्राय को रावने का प्रथा चली श्राती है, त्रित्रय कुल की मानमर्यादा तथा हिंदु जाति के प्राण, महाराणा प्रताप के नाम को श्राज कौन नहीं जानता, जिनकी श्रद्भत वीरता, स्वदेश प्रेम से इतिहास के पृष्ठ रंगे पड़े हैं, उन्हीं श्रायंकुल भूषण महाराणा प्रताप के पिता महाराणा उदयसिंह के वुभते हुवे जीवन दीपक को श्रपने हृदय के धन प्राण्प्यारे शिशु की बलि, निर्देश हत्यारे बनवीरसिंह को देकर बचाने की श्राश्चर्यजनक कथा का श्राज भी इतिहास साही है।

यदि इस भयंकर परिस्थित में धाय ने अपने कर्त्तव्य का पालन न किया होता तो आज भारत के इतिहास की काया पलट हो गई होती और श्रकवर जैसे कूटनीतिज्ञ सम्राट ने स्तियों की कुल परम्परागत मानमर्यादा को सम्पूर्णनया खरीद लिया होता, परन्तु ऐसा होना नहीं था जो कुछ हवा वह एक सुवाग्य धाय के अनुपम उपकार का ही फल है। बास्तव में माना के बाद दूसरा दर्जा धाय का ही हूँ इन्हीं वात्सल्य. दया, अनुपम प्रेमादि सद्गुलों से धाय को उपमाना या मन्तान-पालिका कहते हैं। इसीलिये धाय के रखने के पूर्व उसमें इन गुएों का होना आवश्यक हू धाय अंगहीत या बदशकल न हो, बद्धाचारिगी अधान मेंथन से रहित हो, यच्चे के समान जाति वाली और उसके समान प्रकृतिवाली हो, नीराग हो अथान उसे अतिशक, मृजाक, चय, कुप्र बगैरा रोग न हो, जिसके बच्चे जिद रहते हो, लोभ न करने वाली हो, अधेड उमर वाली हो, छोर वह हमेशा शांत स्वभाव, स्वभाविक प्रेम वाला सन्तान पालन, में होशियार हो, उसका दूधशुद्ध रह, द्वित ऋाहार बिहार बाला हो । धायको नियुक्त करने के बाद उसकी; निगरानी की बड़ी श्रावश्य-कता है, यदि |हो सके तो उसे अपने पास ही रखता चाहिये श्रीर उसके भीजन पर विशेष ध्यान दिया जावे, वह जैसा भोजन करेगी वैसा ही द्ध शह बनेगा, जैसा दूध होगा वैसा ही वञ्चका पालन पोषण होगा, दश्र का मस्तिष्क पर बड़ा अद्भुत प्रभाव पड़ता है, चरित्र निर्माण के साथ उसका गहरा सम्बन्ध हूँ इस बात को ध्यान में रखते हुवे धाय की हल्का, पीष्टिक, सान्त्रिक आहार

दूध, फल, सबजी वगैरा ही देना चाहिये। यह समभना चाहिये कि इसे जो छुछ विलाते हैं वह सव एक प्रकार से बच्चे को ही खिला रहे हैं, इसीलिये उसके खाने पीने में किसी प्रकार की कमी या ऋव्यवस्था नहीं होनी चाहिये। भोजन के बाद उसके और शरीर की सकाई पर विशेष भ्वान देना चाहिये, साथ ही उसके स्नान, शयन, द्रध पिलाना इत्यादि काम नियम पूर्वक समय पर होने चाहिये जिससे कि बच्चे की बैसी ही कादन पड़े. यदि भाग खालमी, विलामधिन हो जावेगी तो वच्चा भी वैसा ही होगा। धात्र की महा बसन्त-चित्त, सन्तुष्ट मनवाली होना चाहिये. ज्यादह म्बाने पीने में लोजुप न होना चाहिये। पाय की बच्चा सींपकर माना की निश्चन न होना चाहिये समय र पर पास बैठकर उसकी शारीगिक उन्नति तथा म्बास्थ्य ५र पूरा ध्वान करते रहना चाहिये. हर दसवें दिन ठीक उसी समय पर कपड़े उतरवा-कर बच्चे का बजन करते रहना चाहिये, स्रीर कभा २ त्रपने हाथों से उसे हिलोरी ।देकर पव-कारना, विलाना, शिका देनी चाहिये, विना न करनेसे वरचे का माता पर प्रेम कम हो जाता है।

# गाय या वकरी का दूध

परनतु धाय के रखने में विद्यो र कठिनाइयों का सामना करना पिड़ता है, प्रथम तो आजकला प्राचीन जैसी न धाय हैं और न उनके रखने बाले परिवार ही हैं। पहले तो, योग्य धाय का (मिलना) ही मुश्किल है, मिलने पर उसके लिये। उचित प्रवन्ध करने में, धन की बड़ी आवश्यकनाहि जाकि साधारण जनता की शक्ति से बाहर की सात है। इस लिये भारत में धीरे धीरे इस का रिवाज भी कम हा रहा है। अतारव धाय के न मिलने पर बच्चों की जिन्दगी का खाधार गाय, भैंस, बकरी, खथवा गधी का दूध या ऋतिम दूध ही है। वाग्भटाचार्य ने लिखा है स्तन्या भावे पयश्छागं गव्यं वातद्गुणंपियंन, इस्वेन पंचमुलेन स्थिर्या वा सितायुतम् ॥

शर्थात माना या वाजक द्धक प्राप्त न होने पर वकरा अथवा गो के दृध की लघु पद्धमूल (शक्षणी, प्रष्टपणी, छोटी,वड़ी दोनों कटेली, गोत्यम ) से या केवल शालपणी असे पकाया हुवा दृश (मधी मिला कर वच्चे को देना चाहिये।

# द्ध पकाने की विधि

शालपर्गी अदि श्रीपध र नौले, दृध = आठ नेलि,जल ३२ नेलि पकाने २ दूध मात्र जबर शेष ह जावे तब उसे उनार छान मिश्री मिला कर पिलावें इसमे दवाई की पोटली वांध कर डालना ही उत्तम है। गी या बकरी का दूध स्त्री के दूध जैसा नहीं होता इस लिये उसे जल मिला कर हल्का कर के शिश के पचाने योग्य बनाना चाहिये । नवजात शिशु के लिये १ छटांक द्ध में २ छटांक जल मिला कर खूब खौला कर थोड़ी मिश्री मिला कर पीने को देवें। हमेशा यह ध्यान गई कि दूध गौ का या बकरी का सामने का निकाला हुवा होवे, ृ्बाजार का निकला हुवा दूध ऋशुद्ध श्रीर वासी पानी से मिला हुवा म्वाली के मैले कुचैले वर्तन में भर कर ऋता है जोकि शिशु की पाचनशक्ति के भ्रत्यन्त प्रतिकृत होने के कारण भयंकर रोगी को तन्म देता ह। दूध पकते समय भी बहुत

मावधानी की आवश्यकता है, जिस वर्तन में वह श्रीटाया जाने उसे गरम जल से साफ कर लेने के बाद उस में दूध और जल डाल कर किसी दूसरे वर्नन से इक कर उवालना चाहिये क्योंकि उसका मुंह खुला रखने से हुध में से गैस उड़ कर पुष्टि प्रद तन्व भारी हो जाते हैं। दूध जितना ज्यादह अंटिकर गाढा हो जायेगा वह उनना है। बालक के प्रतिकृत होगा, इसी।लये द्व की १४ मिनट तक उचलना जब उसमें उफ़ान श्राने लगे काफी है। द्ध में पानी मिलाने की मात्रा शिशु की पाचनशांकपर ही निभर है, जब बच्चा नीन मास का हो जावे ना गाँके दूध में या वकरी के दूध में बरावर का जल मिला कर देना चाहिये इसके बाद ६ मास के बच्चे की तीन भाग दूध १ भाग पानी मिलाकर १ माल तक दं सकते हैं। पानी का मिलाना एकदम विलक्कल बन्द न करदेना चाहियं, ऐसा करने से बालक को बिलकुल अपन होने की आशंका रहती हैं।

वकरी का दथ मों के इथ से हल्का होता है और भैस, को दृध मों के दृध से भी भागी होता है इसालिय उसे बच्चे के उपयोग में लाना नहीं चाहिये। कोई २ मनुष्य गधी का दूध भी पीते हैं, यह दृध बहुत हल्का गुगा में माता के दूध के समान होता है, इसकी उवालने की आवश्यकता नहीं होती। चोड़े मुंह बाली १ शीशी या बोतल में भरकर मजबूत कार्क लगाकर रखदें में जब पिलाना हो तब एक बर्न में गरम जल करके उसमें इसे बुबोकर खोलकर फिर शीशी में से निकाल कर पिलाना चाहिये।

श्रमर बच्चा ज्यादह कमजारहो श्र**मेर उसे** 

दूध किसा प्रकार हजम नहीं होता हो तो उसे
तैयार की हुई गिजायें अथवा डिब्बे का दूध जो
किसी अच्छे कारणाने का बना हो देदेना चाहिये,
परन्तु इन बनावटी दूधें ही के किसा हो हो सकती
बच्चे की परवरिश अच्छी प्रकार नहीं हो सकती
उसे बीच २ में ताजा गौ या बकरी का दूध
अवस्य देना चाहिये नहीं जो सकी हा बुगां और
हांत कमजोर हो जायेंगे।

# खराब दूध से होने वाले रोग

इस जगत में उत्पन्न हुवे पदार्थों में दूध ही ही सब से उत्तम, अमृतरूप एकपेय पदार्थ है, जोकि वनस्पति भोजी, मांस भोजी दोनों प्रकार के प्राणीयमें की अत्यन्त प्रिय है इसीलिये आयुर्वेद में इसका गुरा वर्णन करते हुवें सर्वप्राराभृतां सात्म्यम्"--अर्थात् यह सब प्रकार के प्राणियों के लिये हितकारक वस्तु है इस प्रकार गुण वर्णन किया है। फिर विशेषकर गौ के दूध का तो प्रक्रि-तिक रूप से ही इस प्रकार का रासायनिक संगठन ह कि वह जन्म से लेकर भरण पर्यन्त मनुष्य की स्वस्थ एवं हटब्युच्ट रखना है, गोक ही दूध में वे मब पोटिक अवयव ठीक २ मात्रा में मंगठित होते हैं जिनका इस मनुष्य शरीर की जितनी मात्रामें स्रावश्यकता है। इसीलिये द्ध के सन्य जानवरों में सिर्फ गाँ को ही माना का नाम दिया जाता है क्योंकि इससे बहुत समय तक परिवार के बच्चों का पालन पोषण होता रहता है। दूध इतना उपयोगी होते हुवे भी यदि उसके इस्तेमाल में माबधानी, स्वच्छता, श्रथवा नियम न रक्वा जावे तो वह शीव ही सर्वकर रोगों को जनम देने में सहायक होता है। ताजाद्ध निकलने के श्राधा घंटा बाद तक यदि वह बिना उबाल रक्ला रहे तो उसमें जीव पैदा होने लगते हैं, और थोड़े ही समय में वे उसमें बढ़जाते हैं। इसीलिये इसका सब से अच्छा उपाय यही है कि दूध उबाल कर ही काम में लाया जावे, बालकों के रोग अधिकतर अपवित्र दूध के कारण ही होते हैं, क्योंकि आजकल अनेक मातार्ये नवीन मभ्यता में पड़कर अपनी प्रिय सन्तान को स्तन पान न करा कर उपर के अप्राकृतिक दूपित दूध को देकर अपने प्यार बच्चों को अनेक रोगों का शिकार बना देती हैं।

डाक्टर जोनस्टाक ने श्रपने श्रनुभवसे वहां के स्वास्थ्य विभाग की सूचना देकर यह बनाया कि द्यित कीटाविष्ट द्ध के कारण ३१७ टाइफोइड (Typhoid) के कैस, १२४ स्कार लंट फींबर ( Searlet fever ) केकेस तथा २४ डिपायेरिया (Dyptheria) के केस एक समय में उन के देखने में आये। पहले टाइफइड का कारण मैला पानी समका जाता है परन्तु अब अपित्रदूध की तरफ इसका कारण ध्यान आकर्षित हुवा इसी प्रकार डा० डेन्टिन ने १८ टाइफाइहांक केमी में १४ को अस्वच्छ दूधके कारण ही बताया। सन् १८१७ में इंगलैंड से अशुद्ध दूध के कारण ही डिपथ-रिया का बचा फ़ैली थी । मन् १८६८ में फिलेडे हिक्या में भिन्न भिन्न घरों में रहने पाले मनु-च्यों तथा बच्चों को भी यही रोग हुवा जिसका. कारण वड़ी वड़ी खोज के बाद अग्रुद्ध दूधनिकला बल्किएक बात यह खास देखने में आई कि एक कुट्म्ब द्ध उवाल कर काम में लाता था और दसरा विना गर्म किये ही। अन्त में विना



CAPT, MOOL SINGH BAZAZ Lorent to be a property NAL SARAK DELHI



वद्य चक्रवनी काशानाथ शमी कविराज आयुर्वेदाचाय । प ः रामनारायण जी मिश्र हर्षल स्त्रायुर्वेदा चार्य चिकित्सक बाबा काली कमला बाले मालीबाड़ी उहली



ा प विधनाथ तो शास्त्रा आयुर्वेदाचाप ार्थान्यसंपन सोनान हो। कालात पालाभात ।



(रायपुर । सी. पा.

# <del>टिं</del>डुग्धपान सम्बन्धी विचार

( ते - विश्वनाथ द्विवेदी शास्त्री, प्रिन्सिपल ललितहरि कालिज पोलीभीत )

जिस समय बच्चा जन्म लेने योग्य होने सगता है उस काल से ही प्रकृति आहार की योजना करना प्रारम्भ कर देती है। जिससे जन्म ले लेने के बाद बह अपने पोषण सामग्री को प्राप्त करके एक नियमित रूप से अपनी बृद्धि प्रथ में अग्रसर हो सके।

एतदर्ध माता के स्तनों में दुग्य प्रन्थियां परि-यद्भित होना शरम्भ करती हैं और प्रसवकाल के समीप उनका आकार व परिग्णाम पूर्विचे वा बड़ा हो जाता है। वह देखने में पीन उन्नत व कठोर मारुम होने लगते हैं। इस समय स्तन चूनुक टढ़ व कृष्ण बेरे में आयृत्त हो जाता है और स्तन यून्त कृष्ण व उन्नत हो जाते हैं। इसमें का द्रव ईयद् पीत श्वेत वर्ण का होता है।

प्रसिव होने के बाद इसमें एक प्रकार का रस निकलने लगता है। जो ध्रमृत की तगह मधुर ब बालक के शरीर बृद्धिकर पदार्थी से युक्त होता है। केवल इसे ही पीकर नव शिशु अपनी जोवन बाजा की ध्रमिचल कप से धारण करता हुआ हदता है। इस रस को ही जो ध्तनों से निकलबा है दूरध के नाम से पुकारते हैं।

## स्वस्थ दुग्ध

शिशु का स्वास्थ्य माता के शुद्ध व स्वस्थ दूष के उपर ही निर्भर है। श्रतः जब दुग्ध शुद्ध वहीं होता बच्चा फीरन रोगों का शिकार बन जाता है। श्रतः दुग्ध की विशुद्धता की तरफ विशेष ध्यान देना उचित है।

#### पहिश्वान

जिस दुग्व में शरीर पोषक हर प्रकार के पदार्थ, प्रोटीन, बसा, कर्वाज, लवए, जल इत्यादि उचित मात्रा में हों वह ही शुद्ध दुग्ध कहला सकता है। प्राचीन चिकित्सक शुद्ध दुग्ध उसे कहते हैं जो देखने में श्वेत, मन को प्रसन्त करने बाला, जल में डालने पर विवाग न हो, पानी में मिल जाय।

#### अशुद्ध दृग्ध

जो जल में डालने पर नीचे बैठ जाय, वर्गा नीला, पीला धूम्र वर्ग का प्रकट करे, देखने में चुरिएत माछूम हो वह छाष्ट्र दुग्ध है जिसके

उपाल कर पीने वाले परिवार को हो डिफ़-श्रीरिया मालम हुन्ना। इसलिये यह ध्यान रखना पाहिये कि यदि अपने बच्चों को आप बिना हो गर्म किया हुन्ना दूध देते हो तो उन्हें अनेक भयं-कर रोगों का शिकार बनाते हो। दूध के विषय में यह संदिष्त विवरण पाठकों के सामने रशकर श्रव हम लेख को समाप्त करते हैं यदि इसके विषय में विस्तार पूर्वक लिखा जाय तो एक बहा मन्य बन सकता है। श्राशा है बिद्वान पाठक इतने ही लेख से विषय को श्रव्हों प्रकार समक्ष कर मेरे इस परिश्रम को सफल करेंगे।

पीते ही बालक क्षेत्ररोचक, मंदाग्नि अनोसारादि रोगों का शिकार बन जावे।

### दग्ध विकृत होने के जारग

जब माताएं बच्चों की अवस्था को ध्यान न देकर हर प्रकार के इच्छानु कुल अहार द्रव्य, अमन सबस, कड़वा व लाग युक्त भोजन करती हैं. मिण्या बिहार जैसे बार बार भोजन, अधिक मद्य-पान, दिन में मोना. मल-मृत्र के बेग को रोकता, दही, तिल, पिटी इत्यादि के बने गरिष्ट आहारों को करती है. व्यायाम इत्यादि से बुगा। करती हैं तो उपर्यं क कारगों से बात, पिक, कक दुष्ट ब बृद्ध होकर कीरवाही खोलमों में पहुंच कर उन्हें दुष्ट कर बैसे ही लक्षण पेटा कर देते हैं इन दुष्ट दुश्यों को पीकर बालक अस्वस्थ हो। जाता है और उसकी देव तुल्य आभा नष्ट होकर दुश्य ब कातरता के चिन्हों को धारण करती है।

यदि दृश्य स्वस्थ है नो दृश्य पिलाने की रीनियों को न जानकर कितनी ही मातायें ऋपने शिशुओं को रुग्ण बना देती है।

#### दग्ध पिलाने की रीतियां

प्रकृति के यन्तर जितने भी दुःथपान करने वाले जीव हैं सबी के बनचे जन्म से ही दुग्ध पान की चेष्टा करते हैं। गाय भैंस का बनचा पैदा होते ही खड़े होकर दृध पीने के निमित्त मां के धनों के पाम खड़ा होकर दृध पीना प्रारम्भ करना है किन्तु दुनियां की सब से सम्य कहलाने वाली जाति मनुष्य जाति का बच्चा पैदा होने पर बिल्कुल निर्माह होता है उसे दृध पिलाने के निमित्त मां के सनों के पाम लगाना पड़ता है। उसके मुख में सनों को स्पर्श कराया जाता है तब वह पीने की चेष्टा

करता है अतः दूध पिलाने को विधि न जानकर कितनी अवोध मातार्थे अपने स्तेह की मूर्ति को बार बार अधिक दूध पिलाकर करण कर देती हैं। इन्हें हमेशा ध्यान रखना चाहिये कि उन्हें मंतीप च धैर्य के साथ काम लेना होगा।

१— चौबीस (प्रथम चौबीस घंटे) घंटे में उसे प्रथम दिन २॥ नोला दृध केवल पिलाना चाहिए। क्योंकि प्रारम्भिक ३ दिनों का माता का दुख रेचक होता है। इसमें पोषक पदार्थी की साममी कम होती है। बच्चा भी धारम्भ में इससे अधिक नहीं चूम सकता। उसके आमाश्य की समाई भी इतनो होती है। दृध भीने के कुछ घंटे के बाद इस दृध के पीने से एक या कभी कभी दो भी दश्त काते हैं और बच्चे के आतो का मल जो सभिवस्था में जमा था वह निकल कर आतें साफ हो जाती हैं। इन्हें राभी मल के नाम से पुकारने हैं।

२—दूसरे व तीसरे चौवास घंटों में इसकी सावा बुछ (करीव १ तोने तक ) श्रीर बढ़ाई जा सकती है। इन दो दिनों के दृध में भी रेचन शक्ति होती है किन्तु प्रथम दिनापेचा कम होता है।

३—अय वन्त्रे की थोड़ा थोड़ा दृध ६ घंटे के अन्तर से (पलाना आयश्यक है। यह धा बन्चे अपनी इन्झा पूर्ति करने पर स्वयमेव दृध पीना वंद कर देते हैं किन्तु इससे माताओं को प्रेम के आवेश में आकर पुनः दृध पिलाना हितकर नहीं है। साथ ही प्रथम तान दिनों में पर्याप्त दूध होता ही नहीं जिसकों वे अधिक पान करें। चौथे दिन से दृध अधिक बनना प्रारंभ होता है। प्रारंभिक दिनों में प्रसवावस्था के कट व अधिक रक्तादि

विहगत होने के कारण दुग्ध कम बनता है ।

४—जब प्रस्ता जिस ने प्रथम बार ही प्रसव किया है उसे स्तन पान कराते समय जब कि बच्चा स्तन चुसता है एक प्रकार की बच्चेनी व गुद गुदी मालुस होती है अतः वे शीव ही बच्चे को दुख पिलाना बंदकर देती हैं। इसमय इस किया के होने से बच्चे कमजीर व चिड्चिड़े तथा रीते बाले होजाते हैं। और अन्त में रीगी होजाते हैं।

प्रतीकार ऐसी राता बनने बालियों की प्रमृता अनने से पूर्वही स्नन संगडल के उत्पर रिवटफाइड स्प्रिट या सृतसंजीवनी सुरा की एक कुरेरी प्रातः सायं लगा देना चाहिए इस से उस सं रपणास्तित्व नष्ट होकर हदना आती हैं और हुए जिलाने वक्त वेचेंनी या गुद गुदी नहीं सचती।

४—वडे स्तन वाली माताओं की हमेशा ध्यान रावना चाहिए कि दूध पिलाने वक्त वे स्तन को अपन हाथीं द्वारा पकड़ कर बच्चे के मुंद में रावें। अन्यथा तन मुंद्द व नाक पर पड़ कर धामावरीध करके वच्चे की मृत्यु का कारण बनेगा।

६ -बार बार दूध न पिलाकर थोड़ा थोड़ा दृथ निश्चत समय पर पिलाना चाहिए जिससे उसका पाचन ठोक हो सके।

७ -दूध पान कराने के काल में माता को हमेशा सान्त्रिक आहार जो शीघ्र पचने वाला व पौष्टिक हो सेवन करना चाहिए। श्रजीर्गा व अध्यशन करना उचित नहीं है।

=-श्रधिक दूध पिलाने से वच्चों को श्रजीएं हो जाता है या वे उल्टी कर देते हैं। श्रतः श्रधिक दृध बाग बार नहीं पिलाना चाहिए।

## माता का रहन सहन व पध्य।पध्य

पहले बतलाया जा चुका है कि माता का दृग्ध ही बच्चे का जीवन है अतः जो मानएं दुग्धपान काल से मिण्याक्षाहार, व्यम्ललवरण कड़वा नीखा पदार्थ, मदा, वामी, क्षभिष्यंदी ब तुजर भीजन करती हैं वे अपने शिशु के लिए मीत की बुलानी हैं क्योंकि इन कमों से दुग्ध दृषित हो जाता है और वह दृषित दुग्ध वच्चे की रोगी बनाना है। इस समय मानस्कि स्थितियों को संभाल कर रखने से मेथुनादि अपकृत्यों से दृग्धने में ही कल्याण है। पण्य भीजन जो पाचक पीष्टिक व रक्त तथा दुग्ध वह के हो खाना चाहिए। अपण्य पदार्थों का परिन्याग करना ही अं यस्कर है। इस विषय पर अहत से विज्ञ लेखकों ने लेख दिये होंगे अतः इसके उत्पर विज्ञाप विचार न करके हम आगे बढ़ते हैं।

# द्ध पिलाने से फायदा

१-द्रिय का पीना जितना ही वालक के पत्त में हितकर हैं उतना माना के पद में भी। इस के पीने से बच्चे की बृद्धि होती हैं। साथ ही बच्चे के स्वन चूमने से कभीशय धीरे धीरे संकृचित होने लगता हैं। इसका कारण दुग्ध चूमने से उत्पनन हुई एक शारीरिक प्रतिक्रिया है

२ — दूध जैसा प्राकृतिक और पौष्टिक आहार वच्चे के लिए दूमरा नहीं है। यह उसके प्रत्यंग वर्धन के लिए उपयुक्त है अन्य आहार उसे न तो पच ही सकते हैं न इतने पोपक ही हो सकते हैं।

चुग्ध वृद्धि के लिए अत्युत्तम वस्तु है ।

इसमें हर एक पदार्थी के भाग इतने सूदम क्यों में प्रविभक्त होते हैं कि वच्चे का नया आमाशय उन्हें शीघ्र हो पचा सकता है।

४—दूध न पिलाने पर स्तन की दुग्ध बनाने वाली प्र'थियां शुष्क हो जाती हैं। मानाएँ रूग्णा हो जाती हैं। स्तन शोध व व्रण्युक्त होता है। व छोटा तथा दीला व शुष्क हो जाता है। जो अस्वास्थ्य का प्रथम लक्षण है।

४—दृध का पिलाना गर्भाशय, गर्भनालिका व डिम्ब प्रान्थियों को निरोग रखने वाला है।

६- जो स्त्रियां अपने वच्चों को दृध नहीं पिलातीं वह स्तन के सौंदर्य और दाड्य की भले ही रहा कर सकें किन्तु रोगी वन जाती है। नलों का दर्द, कमर का दर्द, रजस्त्रात्र की कठिनना इत्यादि कई रोगों की शिकार वन जाती हैं। उनकी सुबुमारता नष्ट होकर उद्धन्तना पैदा हो जाती हैं।

७—दुग्ध गर्भाशय से सम्बन्ध रखने वाली उन प्रणालियों का जो मनन तक जाती हैं एक उत्तम रम व वच्चों का खाद्य है। जो मुंह में रखन्त्र पिलाने से दृष्ति नहीं होता व सद्यः रक्त प्रचेप की तरह बलबढ़ के व शक्तिप्तर होता है।

# अधिक द्ध पिलान मे जन्ना वन्ना की दशा

बच्चा पैदा होने के बाद अपने पालन पोषण का कुल भार अपनी माता पर डालता है। जब ६ महीने बीतने लगते हैं तो बच्चे के दांत निक-सना प्रारस्भ होते हैं और दो बर्य तक कुल दांत निकल आते हैं। दन्तोद्रम के अर्थ हैं कि बच्चा अब अन्न खाने योग्य होता जा रहा है और इसके श्रद्ध श्रव श्रन्त के उपर श्रद्भनी किया पूर्ण रूप से कर सकते हैं।। इस काल में बच्चा तीर श्रीर श्रन्त दोनों खाने योग्य हो जाता है। द्वितीय वर्णान्त काल में वह श्रधिकतर श्रन्त के उपर ही निर्भर करना प्रारम्भ कर देता है श्रीर इसके परचान काल में वह श्रन्तभुकु हो जाता है। प्रकृति के इस नियम के श्रनुसार दो वर्ष तक दूध पिलाना उचित है।

१॥ वयं नक का कालही उपयुक्तकाल है क्यों कि असव काल से हैं। माना की शारीरिक अवस्था बहुत हो दयनीय हो जाती है। पश्चात काल उसका दुग्ध पान काल के नाम से पुकारा जा सकता है, यह दुग्ध जिसे बच्चा पीना है माता के भक्तांश अन्त से उत्पन्त रम का मार भाग है जो रक्त न बनकर दृध के रूप में परिएत होता और वच्चे का स्वाभाविक सान्विक भोजन है। श्रव: यह निश्चित है कि जब बच्चा अधिक दिनों का है तो दूध की श्रावश्यकता अधिक उसके लिये होती है और वह सब माता से ही प्रहरण करता है। अतः ,वहुत सा पोषक अ श माता के शरीर में न लीत होकर बच्चे के निमित्त जाता है ऋत: उसका जीवन पोपण नहीं हो पाना। वे माताएं जो दुग्धपान काल में उपयुक्त पौष्टिक आहार नहीं प्राप्त करती बहुत ही दुर्वल ब कम-जोर हो जाती है उनकी मांसपेशियां शिथिल व ढीली पड़ जाती हैं यौवनावस्था के स्थान जगश्रवस्था के लच्छा दृष्टिगोचर होते हैं। ऐसी माताएं शीघ ही एक दो प्रसव के बाद ुद्धा की तरह जान पड़ने लगती हैं। उनके मुंह के कपर की बहु मन मोहक हास्य व मुसकान,

जो स्वाभाविक थी जो कपोल अक्रण राग रंजित थे एक दम दूर होजाते हैं वहां पर विषाद के विह व पाएडु वर्ग ही अवशंप रह जाता है। कपोल गर्तयुक्त दिखलाई पड़ते हैं। अब अधिक काल सक दुग्ध पिलाना उनके पल में हानि का और शर्मिक नित्रयों को त्त्रय हो जाता है। बहुतों को गर्माशय के गेम होते हैं। अध्ययों के पोपक व बहु क पदार्थ अधिकतर दृध के साथ निकल जाने से वे निर्वल व क्लान्त हो जाती हैं। अध्यि यों के पोपक यां कमज़ीर होने लगती हैं और तो और नित्रयों के सौंदर्थ का विशालश्रंग मदन का बीड़ा कंटुक उगेजद्वय हीने व बड़ हो जाते हैं अतः अधिक काल तक दुग्धपान कराना स्त्री के पल में बहुत ही हानि कर है।

इन प्रमानाओं को यदि कोई बड़ा रोग होजाय और उनमें काम ज्वर इत्यादि उपमर्ग प्राप्त हो जाये तो उनके लिये मीधा यमालय ही स्थान होता है।

तो नरचे आधिक दिनों तक दृध पीते रह जाते हैं उनके पोपक व पायक आंगों का विकास वहत ही अलप होता है वह निशास्ता (Starel) इत्यादि वस्तुओं को पचाने की बहुत ही कम शक्ति रखते हैं अतः उनकी बाढ़ के अनुकृत जितना पोपक सामान तीर और अल्न दोनों से प्राप्त हो सकता था उतना प्राप्त नहीं हो पाता अतः उनकी वृद्धि ठीक नहीं होती वे हृष्ट पृष्ट बलिष्ठ न होकर हो जाते हैं। उनकी बाढ़ रुक जाती है। पायक संस्थान संबन्धी रोग (अजीर्ण, अतीसार,कञ्जियंत, विवंध ) इत्यादि से अपने पोपग्गोत्तर काल में इमेशा पीड़ित रहते हैं, ऐसे वालक अधिकतर कुवड़े हुवा करते हैं अत: दूध का अधिक कालतक पिलाना माना के पन्न में तो बहुत हानिकर हैं। उनके शरीर के पोषगा के लिये अवकाश देना भी आवश्यक हैं अत: दुग्धकाल १॥ वर्ष का ही अन्युत्तम हैं, इसके उपगन्त जन्ना बन्ना दोनों को हानिकार हैं।

# दुग्धवर्धक उपाय

बहुत सी श्रवस्थाओं में माता का दुग्ध कम होता है श्रतः उन्हें वाद्य उपायों द्वारा अड्डाकर बच्चे के पोपगार्थ प्रयोग करते हैं।

शास्त्रों में बहुत से दुग्ध वर्धक उपाय हैं } किन्तु उनका उल्लेख करना लेख कलेवर को बढ़ाना होगा। अनः प्रधान व अनुभूत प्रयोगों का उल्लेख किया जा रहा है।

- १—पंचजारक पाक के सेवन से दुरव बहुता है। २—शताबरी घृन, शताबरी क्वाथ की दूध के साथ सेवन करना दर्य बर्धक है।
- ३— प्रामकः ब्रीर जीरे के चृणं में बरावर की शक्रर मिलाकर २ पैंसे भर का नित्य सेवन दूध बढ़ाता है।
- ४- वला क्वाथ-( म्बरेंटी ) दृग्ध के साथ दुग्ध-वर्धक हैं।
- ४—हर प्रकार के पोल्टिक मधुर फन्न दुस्थ-वर्धक हैं।
- ६—मूंग यामसूर की दालका सेवन दुग्ध वर्धक है फ—तौ के सत्त् या परमल (धान के खीलों) के सत्त का घोल बनाकर पीना दुग्ध वर्धक है ।

केवल दुग्ध को शक्कर के साथ सेवन करना
 दुग्ध वर्धक है।

 मन प्रमन्न करने वाले आहारों से दुग्ध स्वयमेव बढ़ता है।

# किस अवस्था में माता को दूध नहीं पिलाना चाहिए

१--माता का यदमा से पीड़ित होना।

२-- कंप बात ( Chorea ) में ।

३—प्रसव के बाद जब उसकी भयानक उप-द्रव जैसे रक्तपान (Haemorrhagia) प्रसृत-ज्वर, प्रसृतोनसाद, विपाद ज्वर द्वयादि होने पर।

**४** -- चीरानुपक्षिति ।

४—दुग्ध प्रदान काल में गमें स्थिति ।

६—किसी प्रकार के संकाभक व जुतवाती वीमारी होने पर।

७—वृश्य प्रदान काल में किसी प्रकार के उच व्याधि की उपस्थित में।

=-द्राध विकृत हो जाने पर ।

# शिशु की अवस्था जिसमें दुग्धपान अनुचित है

१---दुश्य वरावर पीते रहने पर सा वर्णने के बजन की वृद्धि कम होते जाना या दुवंत होना।

२—श्रजीमो इत्यादि उत्तर सम्बन्धी रोगों की उपस्थित में भी दुस्तपात करना हानिकर है। ऐसे अवसरों पर ऋत्य धात या बाहरी दुस्तों की ही पिलाना ठीक है।

३—माता के दुग्ध के हजम न होने पर।
इत्यादि

## दुग्ध कल्पना

जब कि उपर लिखे कोई दोष माता में उप-स्थित होते हैं तब उमका दूध बच्चे को न दिया जाकर धाय, गौ, बकरी, भैस, गर्दभी या उटनो के दूध का विधान किया जाता है।

## धाय के द्ध

माता के दूध के अभाव में दूध पिलाने के लिये नो धाय रखी जाने यह उच्च दण की रोग रहित. माता के आयु की, स्नेह बन्मल प्रेम करने वाली व अनुस्तत पर्याधर बाली, हम मुख्य प्रिय भाषण करने वाली व यच्चे पर अपने पुत्र की तरह प्रम करने वाली हो। इसके विपरीत लज्ञणीं वाली भाष अयोग्य होती है और बच्चे का पोषण उनसे नहीं होता।

दृश्य-पाम करने से पूर्व उसके स्तर्नी का शोधन श्रीपियों के लेपन व श्वरण हारा करके तब बच्चेक पीनेक निमित्त प्रयुक्त करना चाहिए। जिससे अच्चा किसी रोग का शिकार न बने। बाय इर एक मनुष्यों की सुलभ नहीं ही सकती। खत. अभाव में सी उन्थ या बकर के दृश्य का प्रयोग हित्तकर व सु अ होता है।

भारतवर्ष में दुश्याभाग से हमेशा रे हुश्य का हा प्रयोग अधिक होता त्यावा है। उद्यीप माना के दुश्य की समता गर्धा व घोड़ी के दूथ करते हैं उनमें जलादि सम्मिश्रण की आवश्यकता नहीं पड़ती, किन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से प्राचीन चिकित्सक इनके दृश्य का प्रयोग वच्चे की मन्द बुद्धि करने बाला बतलाते हैं।अत: विकेप पार्थक्य होते हुवे भी गो दृश्य ही प्रयोग में।अधिक लाया

जाता है इससे उपयुक्त दोप नहीं होने। दग्धों क जाती है। मिश्रम के ज्ञान के लिये एक सरिम नीचे दी

<b>2000:0000</b>	<b>)000</b> 000000000000000000000000000000000	(*************************************		TO COMPANY	00000000000000000000000000000000000000
नाम दृध	श्रोटीन	वसा	कर्रीज या शर्कग	लुबग्ग	जल विशेषना
श्री दुग्ध	<b>Y Y</b>	3:=0	7,50	ક*સ્⊌	१3 उड
मी दुम्ब	3,8	y'o	<b>)</b> '&	o'sk	दउंद४ शयः शेटीन <b>व</b>
					शक्तर में अस्तर है।
घोड़ी ,,	ર, ૦	१'२०	<b>አ</b> *ξ <u>አ</u>	စုံ နှင့်	<b>६० ७६</b> बसाक्स है
गधी 🦟	ન ને	१"६४	€.00	c yo	ष्टर्ध्य बहुत मिलता है
्करी ,,	ક્ષ ર	ક્રાંદ≃	<b>జి క</b> ే	० उ६	द्यां ७१ ब्रोर्टान हा धका है
भेगः	<b>६</b> '११	5'44	प्र <b>'१</b> ७	ويت	चर् <b>६०</b> प्रोटीन वसा <b>बहु</b> त
					श्रधिक हैं।

गो दस्य में माना के दृथ से कुछ अन्तर है। स्थी दस्य में प्रोटीन कम व शकरा अधिक है। तथा मो दस्य में प्रोटीन अधिक और शकरा कम है इन दोनों में एक ऐसा पदाथ पाया जाताह जो आमाश्य में जाकर दहा की तरह रूप धारण करता है। दूसरा पदार्थ श्वेतक ( Lactad allomost) पाना जाता है जो तरलायस्था में ही रहता है। अनः श्रीय पच जाता ह अस्य दस्यों में या कम अपूर्ण होता है। साथ ही ये क्षाप्य भी हैं। अनः मातृहुखानाय में गोदस्य का प्रयोग हा शास्त्र सम्मन है।

गोदुम्य स एक साग दुम्धश्रेतक (Lacted albumen) और ३ साग अन्य पदार्थ का होता है। स्तन चीर में आधे से अधिक साग दुम्धश्रेतक का होता है अतएव गोदुम्ध पिलाने के पूर्व ही उसे स्तन चीरवत पतला करना आवस्यक है।

श्रव यदि जल मिश्रण कर उसे पतला करते हैं तो वह पतला तो हो जाता ह किन्तु उसमें की शर्करा जल के परिमाण अधिक होने से कम हो जाती हैं श्रीर बसा भी तदपेचा कम ही हो जायगी श्रत: उसकी मधुग्ता की कायम रखने के लिये उसमें मलाई व शक्कर का श्र्चेप हालता श्राबद्धक होता है।

गो दुःध में जो जल मिश्रित करना । वह दवाला हुटा परिष्कार तोना चाहिए। प्रारम्भिक भेदनी का माता का दृध उपयुक्त मिश्रिण का नहीं होता। अत: उपण जल में थे:डी मी दुग्ध शकरा का (Sugar of nilk) प्रदेप हातकर ही काम में लाया जाना चाहिए। कीसरे दिन से एक व दश के हिसाब से मिला हुआ गो दुग्ध व जल में २ चम्मच छोटे चाय के चम्मच से दृग्ध शकरा मिला देनी चाहिए। अब से यह दृश्य का प्रबन्ध नियमित व समय के आधार पर देना चाहिए। मात्रा—पाधारण स्थित में रहने वाले स्व-स्थ शिगु के लिथे प्रथम २४ विटे में २॥ तोले दूध से प्रधिक नहीं कोता चाहिए। इसको ही धीरे २ बढ़ाकर प्रथम माम के अन्त में १ छटांक ब व दूसरे माम के अन्त पर १॥ छटांक होना चाहिए। अधिक हुए । पिलाने से स्वस्थ शिशु भी वमन कर देगा। उशहरणार्थ कुछ मिश्रग्ए दिए जाते हैं।

तीसरे से पांचवे दिन तक के दिए जाने वाले मिश्रखः—

१--द्रम्य ६ से ६ माते । द्रम्य शकंरा १ माझे । जल २ नीले

विधि --दृश्य शर्करा को पहले पानी में मिलाओ। श्रव इसे दस्य में मिला दो।

समय इसे दिन के प्रयेक हो घंटे के बाद द्यार रात में केवल हो बार ही देना चाहिए। प्रत्येक तीमरे दिन इसकी मात्रा बढ़ाते जाना चाहिए,इस प्रकार बढ़ाते हुने दशवे दिन यह नुसखा व्या पहुँचेगा। जो मात्रानुकृत शिशु के पन में हिनकर होगा।

२० द्ध शती १० माझे
दुध शर्मा २ साझे
जल २ तीले
सलाई २ माझे

विधि—हुन्य शर्करा को पानों में मिलाकर मलाई मिला द्ध में मिला हो। इसी प्रकार प्रत्येक बस्तु भीरे २ बहाना चाहिए और इस नग्ह के इसमें काम में लॉन पर बालक के स्वास्थ्य के अनुकूल रहना है। द्सरे मास में दिया जाने वाला मिश्रयः-

इ-- हुम्ब १२ तोले ४-- तीलरे मास में। दुम्ब शर्करा ३ मासे दुम्ब १३-१४ तोले मलाई ४ मारो दुव् शर्करा ४ मारो जल नोले मलाई ६ मारो जल ४ तोव

चिधि पूर्ववत है।

जैसे जैसे मिश्रण दहना जायगा समय भी द घंटे के बदले था। श्रीर दे इस कम से बहता जायेगा श्रीर गति में एक बार ही केवल देना होगा। हरएक मिश्रण के निए का कम १०० हि० का० का होना चाहिए। बहुत से चिकित्सक इह मास के बाद ही जल रहित दग्ध देने की सम्मित देते हैं ऐसी हालन में दिन में २ या १ बार श्रक गाजबां या वेदमुख देना उचित हैं। श्रम्थथा यक्कन बसा का पाचन न कर सकते के कारण खराब हो जाता है श्रीर बच्चा रेगी हो सकता के हैं। इन मिश्रणों के श्रितिक चुणींदक (Linne water) या बाली (Barley water) इत्यादि का भी उपयोग करना हितकर हैं।

किन्तु इस समय निशास्ता मिश्रित बस्तुश्रों को देने के लिये बहुत से चिकि सक अपनी सम्मति नहीं देते। वर्गोंकि श्रांतों के श्रन्दर निशास्ता (Starch ) के पचाने वी शक्ति विस्कृत ही कम होती हैं।

कृत्रिम आहार

आजकत बाजारों में कई किस्म के कृतिम दुग्ध पाये जाते हैं। विज्ञान की दृष्टि से ये उचित शरीर पोषक नहीं हैं। साब ही केवल दुग्धकाल में व्यवहत होते हैं। इन के सेवन से ब्रुह्त से ब्रुह्मर- संस्थान संबंधी रोग बच्चों को हो जाते हैं। इत में प्रसिद्ध हरिलक्स मेल्टेड मिल्क- मैसल्ज मिल्क, बेविजफुड, ल्यूजफुड, ग्लेक्सो इत्यादि हैं दुग्धा भाव में हानिकार होने पर भी धाय न रख सकने बाजों को इन दुग्धों का प्रयोग किसी हर तक उचित है। यद्यपि इन के लाभ पूर्व बागित ताजे गोद्ग्य की तरह नहीं होते। इनमें भी कर्वोज व शर्करा की मात्रा अधिक होनी है और पोपक बस्तु (Vitarrines) नहीं के बगबर होते हैं अतः व मास से कम उन्न के बच्चों की खिलाने से अजोगी, महागिन, अतिसार व विवंध पैटा करते हैं। इन कृत्रिम बाहारों के डिट्बी में उनके बनाने की विधि लिखी होती हैं अतः उन्हें यहां नहीं लिखा है

## दुग्धपान की विधि-

नयजात शिशु कभी भी इस प्रकार के दुखीं को या बाब दुखीं को अपने आप नहीं पी सकते अतः उनके लिए प्रबंध करना पड़ता है। आजकल बाजारों में उध चूसने की बोतलें बनी बनाई मिलती हैं। कोई शीश की, कोई बिल्लीर की, कोई लम्बी कोई किश्तीनुमा इत्यादि। इनमें किश्ती-नुमा सब से उत्तम है उस पर नम्बर भी खुदे होते हैं जिस से दुध के खर्च होने का अंदाजा मिलता जुलता रहता है। इस में चुसनी रबर की लगी होती हैं यह कीमती हो। लेनी चाहिए। सस्ती चूसनी से चूसने समय कुछ हिस्से चलें, जानेसे रोगोत्यादक हो जाती हैं। यह पीन इंच लम्बी होनी चाहिए। लम्बाई अधिक होने पर बच्चे को चूसने के उपरान्त नालु कण्टक इत्यादि रोग पैटा हो सकते हैं। इस चूमनो में एक ही छिट्ट होना है। इस से बच्चा बहुत कम दृध चूमने चूसने धवरा जाता है। अतः इसमें २ या २ छिट्ट मूई से और बना देना चाहिए। क्योंकि माना के स्तन वृत्त में ७ छिट्ट होने हैं उनसे यह दृध मरलना से चूमता है।

## विशुद्धता

१—हर बार पिलाने के पश्चान बीतल की उन्नलते हुने या गर्म पानी से थॉलना चाहिए। खन्न नुशसे साफ कर तब काम में लाना चाहिए। साबुन या सौभाग्यद्रव (२ तो० सुहागा क १ संग्पानी में डाल कर) से थाना भी ठीक हैं।

२ -- एक बार दृथ पिलाने के बाद का वचा हुवा दृथ फ्रेंक कर पुन: नया दूब पिलाने के लिये प्रयोग किया जाते।

३-हर चार प्रयोग करने के बाद बॉनल व चुसना साफ करना चाहिए।

४—ताजा टुग्घ का मिश्रमा प्रयोग करते वक्त उमका कारमान शरीर के नापमान ६५० पाठ का होना उचित हैं।

४--दृध को पात्र में डाल कर उन्नलने हो। दो मिनट नक उन्नल जाने के बाद उतार कर ठंडा करलो। श्रीर ब्रान कर मिश्रण के काम में लाबो। अन्यथा श्रिधिक उन्नलने पर पोपक द्रव्य (Vitamines) नष्ट हो जाते हैं।



# वालातिसार वालातिसार

( ले॰—आयुर्वेदाचार्य थी हरदयाल वैदा वाचम्पनि, प्रो॰ डी० ए० वी० आयुर्वेदिक कालिज लाहीर )

प्रायः तुग्धाशी और कभो २ चीरान्नभोजी बरचों को यह रोग होता है।

पर्याय नाम पिचानिमार, छुनदार दस्त, गरमी के दस्त, इन्फेकिमम डायरिया, समर डाय-रिया इन नामों से यह रोग प्रत्यान हैं।

इसके भेद साधारण और तीव भेद से यह दो प्रकार का होता है। दोनों प्रकार के रोग के लक्कण भिन्न २ हैं। अवस्था, अवधि, परिगणम और चिकित्सा भिन्त २ हत्या करती हैं।

कारण—मिलिन आहार, बाजारी दृध, गादा दृध, माता का अन्युष्ण पदार्थी का सेवन करना, आवश्यकता से अधिक भोजन देना, दुर्गनिधत वायु सेवन, अशुद्ध वायुप्ण गृद्ध में निवास, गुरुपाकी द्रव्यों का भोजन, बच्चों का मिलिन रावना, अधिम अस्तु और उपमा की अन्यधिक दृद्धि प्राय. उस रोग का कारण होते हैं। पाञ्चात्य चिकिन्सक इस रोग को अपनन करने बाते कीट विशेष मानते हैं।

#### **मम्प्राप्ति**

उपयुं क कारणों से अन्ति हियों की अलेपिसक कला में पित्ताधिकय के कारण यागणा शांकन दर्बल हो जाती है। जिसके कारण बार २ विरेचन होते हैं। रोग के साधारण कोप में यही दशा रहती है। विद्याप प्रकोप में अन्ति हियों की अलेपिसक कला में शोध आ जाता है। ऐसी अवस्था में उचिन चिकि- त्मा से दशा मुधर जाती हैं। अनुचित उपायों के कारण भीतर से आंर्ने एक जाती हैं और परिगणम भयंकर हो जाता है।

लच्या-कभी २ यह रोग मन्द्र गति से अरम्भ होता है। इस अवस्था में मल का वर्ण पीन प्रभ होता है। साधारणावस्था सं कुछ पतला होता है। एक दो दिन यह दशा रहने के पश्चान पतने और पीन दस्त शाने लगते हैं। दस्तें की संख्या दिन रात से ६, १० से ऋषिक नहीं होती । इसके साथ ही ज्वर भी हो जाता है। वेचैंनी बढ़ जाती है । निद्रावस्था में अबेत पड़ा हुआ बालक महमा चौक पड़ना है। यहि जबर बढ़ जाय तो वसन भी आरम्भ हो जाती हैं। मल अस्ल गन्ध से युक्त तथा फुटकीटार हो जाता है। दो तीन दिन मल की यह दशा रह कर प्रकृत गर्भ पर आ जाती है। इस दशा में भूख नष्ट हो जाती है। द्ध आदि किसी पदार्थ के स्नाने की इच्छा उसका नहीं होती। बालक की जिहा पर खेत पपड़ी मी जम जाती है। जिह्ना के किनारी श्रीर मुख में झाले पड़ जाते हैं । बालक का वर्ण पीत हो जाता है। अत्यन्त दुवलता दिस प्रति दिन बढ़ना जाती है । ८, ४० दिन यह दशा रहने के परचान यदि प्रकृति महायक हो तो शनैः २ दस्त घटने लग जाते हैं । उपयुक्ति मत्र लज्ञण क्रमशः श्रल्प बल होकर मिटने लग जाते हैं। बालक की बेचेनी कम हा जाती है। क्षधा की खोर प्रवृत्ति होने

लगती है । खाया हुआ भोजन आमाशय में टिकने लग जाना है। ज्वर विच्छेदावस्था में परिएत हो जाता है। यदि प्रकृति सहायक न हो तो रोग के मद नवरण स्थिरता कर लेते हैं। यही दशा शीतकाल के आरम्भ तक बनी रहती है। विद्याप प्रकोषारम्भ में ज्वर् का तापमान १०२ तक हो जाता है। वेचैनी बढ़ जाती है। बालक का स्वभाव चिड्निं हो जाता है। प्राय: श्रङ्गमर्द का लक्षण उत्पन्न हो जाता है। हाथ पांच एंडने ताम जाने हैं । अन्यन्त देवित्य के साथ बाथ तन्द्रा में पड़े रहने की दशा उत्पन्न हो जाती हैं। वसन का उपद्रव वट जाता है। वसन की वृद्धिंगना वस्था में प्रथम तो पटा हुआ। दृश निकलता है, नदनु नेमदार पतला पानी और कमो २ पित्त मिश्रित तरल भी ऋता है। दुम्धेतर ऋत्य पदार्थ जो स्थामाशय में पहुंचाया जावे फौरन वापिस अजाता है । भूख विलकुल नष्ट होजाती है । तुपा की अस्यंत बृद्धि होजाती है। इस विश्रंप प्रकोपा-बस्था के प्रारम्भ में गुद्दनिःस्तृत मलका चर्गादि साधारम् प्रकेशपावस्था जैसा है। रहता है, परन्त बाद में मलका वर्ण हरित, दर्गन्धियुक्त तथा पतला होजाना है। श्रन्त्रस्थ रलेग्सिक कला के खण्ड (छिहुड़े ) भी मल में पाए जाते हैं (खण्ड देखन के लिए बच्चे के मत्त को ध्वच्छ पात्र में डालकर स्वच्छ जलसे धो कर देखना चाहिए) दस्तों के निरंतर हाने पर भी पेट फुल जाता है । पेट में साधारण अथवा मरोडों की तरह का दर्व उठता है। बमन विरेचनों की संख्या २४ घंटा में ३०—३४ तक पहुंच जाती। मल मात्रामें श्रल्प होता है। यदि जीवन शेष हो नो यह दशा ४-४ दिन रह कर प्रतिक्रियावस्था को उत्पन्न करती है। प्रतिक्रियावस्था में उपर्युक्त सब लक्षणों की भयंकरता मृदुता में परिणत होने लगती है। इस समय उचित चिकित्मा स्नादि की महायत। से रोगी रोगमुक्त हो जाता है। स्रन्यथा मंमार से मुक्त हो जाता है।

## परिणाम

इस रोग के आक्रमण से पूर्व यदि वालक स्वस्थ और बलवान हो एवं चिकित्सा और पथ्य अपथ्य पर पूर्ण ध्यान दिया जावे तो परिगणम शुभ होता है।

यदि बालक पूर्व ही रोगी, मन्दान्ति पीड़ित हो और चिकित्मा के पाद चतुष्ट्रय का स्रभाव स्थवा वैपम्प हो तो परिणाम स्रशुभ होता है।

रोग निदान करते हुए चिकित्सक को रोग के समस्त लच्चणों को भली प्रकार ध्यान में रखने हुए, यह निर्णय करके चिकित्सा में प्रवृत्त होना चाहिये कि रोग साधारण है या विद्याप ।

# विकित्सा

चिकित्सा आरम्भ करने से पूर्व वैद्य की हो चार बार्ते ध्यान में रखनी चाहियें। प्रथम यह कि वच्चों के रोगों का मार्मिक चुद्धि से निर्णय करना चाहिए। क्योंकि बालक अपने मुख से अपने कष्ट का वर्णन नहीं कर सकता, अतः वैद्य को अपने अनुभव से ही उसके साधारण और विद्येष कष्ट का ज्ञान करना होता है। बच्चे की माता धाय अथवा अन्य परिचारक रोग वृत्त करते हुए, उस कष्ट का निद्यंप वर्णन करते हैं। जिसके द्वारा उनको अधिक परेशानी होतो है।

ये लोग जिस कप्ट पर जोर देते हैं वह भले ही मृल व्याधि न हो। परन्तु उन्हें उस लच्चरा से विशेष कप्ट होता है। अनुभवी वैद्य को परिचारकों द्वारा बताए हुए कप्ट पर सोलह आने निर्भर रह कर अपने अनुभवजन्य निर्णय को निलावजनि न दे देनी चाहिए।

उचित निर्णय कर लेने के पीछे औषध व्यवस्था का समय आता है। रोगी के घर वालों की इस समय यह चीव पुकार रहती है कि इसे फोई बढ़िया छोर तत्काल दस्त वन्द करने की आपध दी जावे। अनुभवी चिकित्सक परिचारकों की इस चीत्कार का क युगा मानते हैं और त उस पर कियाशील ही होते हैं। वे अपने नियम के अनुकुल वालक के रोग को दूर करने में अयत्नशील होते हैं। परन्तु नण २ चिकित्सक प्रायः ही रोगी के परिचारकों की इच्छा के अनुमार चिकित्सा करने पर उदान हो जाते हैं। ऐसी दशा में कभी २ तीव संमादक छोपधादि के प्रयोग से अल्पकाल के लिए मल कक तो जाता है। परन्तु साध में बच्चे का पेट फुल जाता है। दस्तों में पेट कुलने का लक्षण भयावह होता है।

## अ।पध

अल्पवयम्क बन्धे के लिए प्रायः ऐमी ही श्रीपर्धे चुननी थाहियें जो तीचण न हो, अधिक उपण तहीं, विषयुक्त न हो तथा जिम योग में यहुतमी औपधीं का संप्रद न हो। कारण कि बन्धे के शार्शिक यन्त्र एवं मन अत्यन्त कीमल होते हैं। तीचण और विषाक्त औपर्धे तुरन्त बुरा अमर करती हैं।\*

\*रोग के साधारण प्रकोप में निम्नलिखित अंपियों को इसी विधि से मैंकड़ों बार हमने खयं प्रयोग किया है। सब से प्रथम बच्चे को एरएड तेल का विरंचन देना चाहिए। एरएड तेल अत्युच्चकाटिका हो । साधारण एरण्डतैल हानि-कर होता है। परगडतैल की मात्रा—३-६ माशा हो, खाएड के साथ श्रथवा दृध के साथ देना चाहिये । परन्तु ध्यान रहे कि विरेचनार्थ उन्हीं बच्चों को एरण्डतैल देना चाहिए जिनको श्रत्यन्त तृपार्वाह न हो और मुख तथा शरीर का बर्ण अत्यधिक पीन न हो गया हो। यदि कपर की दशा अपन्न हो नी--(१) असलनाम का गढा ६ माशा, अर्क गुलाव ४ तोला, में भिगोकर ममल कर छान लेवे और मिशरी मिलाकर रख लेवें। इसी का एक २ चिमचा बार २ देने **से** विरेचन कार्य भली भांति होता है। (२) मींफ, मुनका, गुलवनफशा, फन गुलाव विवीरी प्रत्येक ४--४ माहाः पाकार्थजन १६ नोतं. अवशिष्ट क्वाध-१ तोने । इसको भः विस्त्वा २ भर की मात्रा से प्रयोग करे। ३ - हरड, बहेडा, श्रामला, धनियां, प्रत्येक द्रव्य का चुर्ण ३--३ माशा. फाण्ट विधि से = नोला जल में फाण्ट बना कर गव लेवे। तृपा की अधिकता पर इस फाण्ट में मिशरी मिलाकर देवे। यदि उदा में पीड़ा की श्रिधिकता हो तो समग्र फाएट में ३ माशा सीवचल लबए पीम का मिला कर रख लेवे। एक २ चिमचा देने से इच्छित लाभ होता है। इन तीनों योगों से इस रोग में विरेचन कार्य करने से मंशय रहित विजय प्राप्त होती है। इस आ-रिम्भक कार्य के परचान अन्तिहियों को दशा

सुधारने के लिए—सिद्ध प्राग्णेश्वरस \* श्रयवा महागंधक† को उचित मात्रा— में से १ रसी, श्रनुपान माता का दूध, यदि बालक बड़ा हो तो—बेल-र्गारी, इन्द्रजी, इनके क्वाथ से देने चाहियें।

# विशेष प्रकोपावस्था को चिकित्सा

इस अवस्था में रोगी की अनंक कब्द होते हैं। अनुभवी चिकित्मक का सर्व प्रथम कर्त्तव्यकर्म यह होना चाहिए कि जिस नज़ए। या उपद्रव से रोगी अधिक क्लेश पाग्हा हो उस की चिकित्मा प्रथम आरम्भ करें। रोग की इस दशा को निवारण करने के लिए नीचे कुछ योग लिखे जाने हैं। इन्हीं योगों को प्रथक र अदल बदल कर अथवा मिश्रित करके प्रयोग किया जाता है। ईरवगनुमह से इसी चिकित्मा मरणी से लाभ हो जाता है। नीचे लिखो मात्रा १-३ वर्ष तक आयु की जाननी चाहिए।

१—म्योनाकत्वक चूर्ण १-२ माशा, तग्डु-लोदक २ तोला, उत्तम मधु ६ माशा । सब को शीशी में डाल कर मिला लेवें । मात्रा १-३ माशा यह योग उस समय श्रीधक लाभ करता है जब मलका वर्ण श्रिति पीत श्रीर पतला हो । इससे शनै: २ दस्तों की संख्या घटती है ज्वर श्रीर प्यास दोनों का हास होता है।

२-मरोड़ उठने कीसी पीड़ा श्रथवा पेट में श्रकारा हो तो-सोंठ, पीपल, धनियां, इन्द्रजी, बेलगिरी समभाग। सौचर्चललवण सब से आधा। मिला कर रख लेवे। मात्रा-४ रसी श्चनुपान - उष्णोदक। एक दिन में ४-६ मात्रा देने से ही उक्त दोनों उपद्रव शांत होते हैं।

३—यदि मल के साथ रक्त झाता हो तो मुख्या हरह, मुख्या त्रास्ता, मुख्या बीह और मुख्या सेव-१-१ तोला लेकर स्वच्छ खरल में पीम लेवे। वच्चों को मिठाई की तरह थोड़ा २ इसे लेह के रूप में ही देना चाहिए। और पानी के साथ घोल कर भी १-३ माशा की मात्रा से दिन गत में ४-६ वार प्रयोग कराने से आशानीत लाम होता है। यह एक अद्भन गुण कारक योग है।

ध--मृहम पिष्ट दुम्यपायमा (सेलख़ड़ी) २-४ रत्ती, बेलगिरी के हिम अथवा शर्बत अञ्जवार के माथ देवे।

४—सेलखड़ी (चाक) के चूर्ण की २ । २ रनी की मात्रा जल से टी हुई लाभ करती हैं।

यदि दम्तों के माथ २ के की ऋधिकता हो तो दरयाई नारियल और कमलडोड की गिरी को ऋर्थगुलाव के माथ धिस कर बार २ पिलावें। इस से वमन का उपद्रव दूर होता है।

अथवा बहेड़े क' मन्त्रा को अर्धगुलाव में घिम कर देने से भी वमन की अधिकता नष्ट होती है।

इन्ह्यामलकी चृर्ण को ऋर्क गुलाव में मिला कर मिश्री से मीठा कर के पिलाने से भी कै का आना तुरन्त बन्द हो जाना है।

६-मीठे अनार के साथ फिटकड़ी की भस्म १ रत्ती देने से भी बार २ के का आना कक आता है।

<sup>\*</sup> १-्रसेन्द्रसार ब्वरातिसाराधिकार।
† कुल्युतिसाराधिकारोकः।

१०—श्रथवा दक्षिणी सुपारी का वस्त्रंपूत चूर्ण १ तोला, इलरी का बस्त्रपूत चूर्ण १ तोला, शंख-भॅस्म १ तोला। सबको मिला कर रखलवे। मात्रा—१—२ रक्षी, श्रनुपान जल। इस उक्तम योग से कभी २ श्राशातीत लाभ होता है। वहीं के लिए इसकी मात्रा—१ माशा होगी।

११—इनके श्रतिरिक्त जब रोगीको उपद्रवादि का कष्ट न हो तो रसेन्द्र चूर्ण्(भैषज्य रत्ना०), श्रभ-बटिका, लघुमिद्धाभक, महागंधक, सर्वाक्सभुंदर, सिद्धप्रागंध्वर, पीयूपवर्ल्ला, नृपानबल्लभ श्रावि रस मी श्रावश्यकतानुसार उचित मात्रा में प्रयोग कराए जा सकते हैं।

१२ - हानेक बार इस रोग में यह भी देखना पड़ा है कि स्थान परिवर्षन से त्रन्त लाभ हीता है। १६६४ का बुन ह कि एक रोगी बालक हम दिखाया गया जो निरम्तर हो मास रोग के आक्रमणों द्वारा प्रतिक्रियायस्था से पूर्व की श्रवस्था तक पहुंच चुका था। अनेक श्रौषधे ही सर्थी परन्तु कुछ लाभ नहीं हुवा। उधर जन का महीना था, इस मास में लाहीर में कितनी अस्तिवर्षी होती हैं यह वही जान सकता है, जिसे जन मास में लाहार ऋाने का सौभाग्य या (दौर्भाग्य) प्राप्त हो. तीय अग्निवर्षा के कारण धौंपधों से इस्छित लाभ न हुआ। तदनु गेगी के पिता की यह सलाह दी गई कि बह इस वालक की हरिद्वार से जावे। इस बच्चे की आयु तीन वर्ष से कम ही थी, कुछ स्रीपर्धे साथ देदी गयी। परन्तु हरिद्वार पह चने पर प्रथम दिन औषध का कोई प्रयोग नहीं हुआ। प्रदर्शित विधि से बालक को रांगा प्रवाह में म्नान कराया गया और गंगा जस

का ही पान उस दिन होता रहा। दूसरे दिन बालक के पिता ने जो समाचार पत्र द्वारा भैजा उसका आशय इस प्रकार है- प्रातः हरिद्वार पह चते ही हम साघे कपुरथला वालों की धर्मशाला पह चे और उसी धर्मशाला के श्रत्यंत रस्य बाट पर बैठ कर बच्चे को गंगा जल से भीगे बस्त्र से देक विया। थोडी देर के पश्चात गंगाजल से उसके समस्त अङ्ग धो निए गए। थोड़ा ६ जल ही श्रापकी श्राह्मानुसार देतं रहे। इसका परिग्रास यह हवा कि लाहौर की अपेका उनसे वस्त भी कम श्राए और एक बिडाप बात यह हुई कि दो माम के परचात बच्चे ने यहां आकर निरन्तर ४ घंटे की गहरी नींद ली है। निदा के पश्चान बेचेंनी बहुत कम थी. ज्वर का नाम निशान न था। इसी दिन सार्यकाल उसे एक मोला के क्रारीय महा चटाया गया। पाठक गरा। यह बुल पढ़ने का कर इस लिए आपको दिया गया है कि कभी र जब श्रीपधारि का प्रभाव ऋतु अथवा परिस्थिति अनुकृत न होने से नहीं होता तब पेसे रोशियी को केवल स्थान परिवर्तन से ही लाभ होखाना है वह बालक ईप्यर कृपा से स्थम्य है। मय बिकिन्सक इसके जीवन से निशश हो चुके थे।

१२—मोजन—ऐसे रोनी को द्रव और क्षीनल ओजन हिनकर होता है। जर कम हो तो मूंग को दाल पसली सी देनी चहिए। जन्यका— सांड तक, झाड, समूर मूच, संतरे का रस, काबार का रस, खीड़ोंक सच्च क्षीप स्वपकादिक हिस, सागूराता, आदिर।

१४ परिचर्या---गेगी का विस्तरा प्रति दिन बदल देना चाहिए। विस्तरे पर पुष्पादि रखने

# क्षितालशोषरोग<sup>क</sup>

( प्रो॰ बालकराम शुक्ल शास्त्रो, शास्त्रावार्य, ऋायुर्वेदाचार्य, আयुर्वेदाचार्य, আयुर्वेदाचार्य, আयुर्वेद विद्यालय हपीकेश । )

्षयांच मृखा रोग, सुखन्ना, तालुकण्टक,

## विवरण

जो बालक कक से दृषित माता का दृष्य पीते हैं और मात्रा से अधिक प्रति दिन मोते हैं। गुरु, मधुर, श्रित स्तिन्य, द्वन, शोतल जलादि पदार्थ सेवन करते हैं। श्रीर विशुद्ध वीर्य वांन पदार्थी का सेवन करते हैं। उन वालकों के शरीर में कक कपित होकर रमवाही मोतों का अवरोध कर देता है। श्रित रम से उत्पन्त होने वाली रक्तादि धानुश्चों का विधि पृत्रेक उत्पत्ति नहीं होती है। इससे शरीर जीता है। जीता है। श्रीर श्रक्ति प्रतिखाय, ज्वर, कामादि रोग पैटा हो जाते हैं। इससे बालक मूख जाता है। कैवल उसका चिकना मफेद मुख माल्यम होता है। और नेत्र मफेद स्तिस्थ दिखलाई पड़ते हैं। कोमल तानु में गढ़ा पड़ जाता है। इससे इसको तानुकाटक, भी

कहिए बालक के शरीर को शीतल जिल से भीनी परंत्र कारा पोछना बाहिये। इसकी पिपासा पर पूर्ण प्यान रखना काहिए। कनरा स्वच्छ कीर स्वाहर हो। इस प्रकार आपरेण करने से यह तुष्ट रोम अवस्य हूर हो जाता है।

----

कहते हैं। तालु में गढ़ा पड़ जाने से तालु कुछ र बाहर निकल आता है। इससे बालक को दूध पीने में बहुत कठिनता पड़ती है। अथवा, कभी र दूध पीता भी नहीं है। दूध न पीने से और भी किसी प्रकार का आहार सेवन करने में असमर्थ हो जाने पर शरीर के पीपण न होने पर शरीर केवल अस्थि कंकाल मात्र ही दीख पड़ता है। इससे इसको बाल शोप कहते हैं। उधाक्तम सल ते—

यथोक्तम् सृश्रुते— शोपणात् रसादीनां धातृनां शोषद्वत्यसिधीयते । श्रष्टाङ्गसंप्रद्वे बालशोषस्य लक्षणं प्रोक्तम्— श्रत्यादः स्वप्न शीतास्त्रु श्लेश्मिकस्त स्य सेविनः । शिशोः कफेन रुद्धेषु स्रोतःसु रस्त्राहिषु ॥ श्ररोचकः प्रतिश्यायो ज्वरः कासस्य जायते । कुमारः शुप्पति ततः स्निग्ध शुक्ल सुखेक्णः॥ (श्र० स० ३)

#### तालुकराट लक्ष्यम्

वालु मांसे ककः क्रुद्धः कुरुने तालुकरटकम् । तेन तालु प्रदेशस्य मिन्नता मूध्नि जावते ॥ तालुपातः स्तनद्वे पः कृष्ट्यारात्मने सक्त्रवम् । कृष्टिक् करठीस्य क्रुवा सीम्बद्धवरता समिः ।

## साम्बर्भाव

बाल शोप का साम्यमात्र पारचात्य विकित्सा पद्मिक स्थिटस (Bickets) के साथ है संस्था है। यद्यपि बहुत लक्षण भिन्न हैं, किन्तु कुछ साम्यभाव मिलता है। इसका मुख्य कारण यह है कि बालक के भोज्य पदार्थ में खाद्योज (Vitamin) ही, श्रोर, खाद्योज, ए, का स्रभाव मानते हैं। यहरोग अयोग्य झाहार यथा—शैशव काल में श्वेत सार की अधिकता, घृत दुग्ध मक्खन का स्रभाव। गर्भावस्था में जननी की दुर्बलता, इससे बाजूक दूध पिलाने में असर्थता, अशुद्ध जलवायु क्यू सेवन, अशन, वसन, वास स्थानादि का होष, बिशुद्ध वायु का श्रभाव, पवित्रता, शुद्धना का स्थान, ये इस रोग के प्रवर्तक कारण है। और शिल्म प्राप्त माना पिना को लय ( ट्यूवक्यू लोमिम ) है। अध्वा उपदंश (मिकलिस) का रोग है तो उसकी मन्तान के अवश्य ही यह रोग होता है।

# सम्प्राप्ति

श्रित्यमां के आभ्यन्तर में समुचित मात्रा में खिटक, रामकारम लवगा नहीं स्थिर होते हैं। अस्थिक विकास की जगह में विकृत रूप से कर्ले (सेल्स) परं रहते हैं। खिटक लवगा अस्थियों के श्रिक्त ही रह जाता है। श्रीर अध्यापि के सिम्रास चिरकाल तक संपुक्त न हो करके पृथक पृथक रहते हैं। शिर में चिरकाल तक श्रीर श्रुक्त हों रह जाता है। श्रीर में चिरकाल तक श्रीर श्रुक्त हों से क्यानास्थ के मध्य भाग में ) श्रीर श्रुक्त हों स्था रहते हैं। जिस से ब्रह्म रहते से अस्थियां सपाट होने से अप्या श्रीर करोतिमंदल की अस्थियां सपाट होने से चपटा शिर मान्युम होना है। इस समय बालक के कित्री कि कारण कि ब्रह्म होने के कारण कित्री हों होती है। यक्ष न, खीहा बढ़ जाती है।

लमीकामन्थियां वृद्धि को प्राप्त हो जाती है। शोखिताल्पता ( एनीमिया ) उपस्थित हो जाती ह।

#### लत्तण

डेढ़ श्रीर अदाई वर्ष के मध्य में प्राय: यह रोग बालक को होता है। यह रोग गुप्त रूप से शुरू होता 🛭 । कई महीने तक तो इसका ज्ञान भी नहीं होना है। प्रथम लक्षणों के मध्य में बालक के ललाट में और उत्पर के खड़ में स्वेद निकलना है। मदा बालक बिह्नल रहता है, रोमा रहता है। श्रीर शान्ति पाने के लिये शीत अथवा उद्या ऋतु होवे. प्रत्येक ऋतु में ऋोदे हुवे कपड़ों को फेंकता रहता है। उसका शरीर अत्यन्त कोमल हो जाता है। उमको हिलावे, इलावे तत्र भी वह चुपचाप रहता है। कभी कभी उसके मुत्र में अधिक माजा से फाम्फेट चुर्गा पाया जाता है। उसका पंट फूला रहता है। उसमें आध्मान के लक्षण मिलते हैं। सम्पूर्ण अध्यियों का प्रान्त भए। विद्रोप करके वृद्धिः प्रकोष्ट्रास्थि का नीचे का भाग, श्रीर जंबा-स्थिक भी नीचे का भाग फुल जाता है। सब पसलिया टेढ़ी पड़ जानी हैं। पुष्ठवंश, आमे श्रथवा पीछ की श्रोग, कभी, दाहिनी, वाई तरफ टेडी होजाती है। शिरकी कपालास्थियों के सीवन मोटे हो जाते हैं। उसके बाद अन्यान्य अस्थिया भी देही होजाती हैं। वस्त्रम्बल की कस्थियां, कब्तर के बस के आधार के समान होजाती है। वन्ति चौड़ी होने से चपटी होजातो है। शिर चपटा, चतुष्कोरा होजाता ह । सम्पूर्णरन्ध (पन्ही-नेली ) विलम्ब से मिलते हुवे देखे आले हैं। शिर की अस्थियां स्थूल हो जानी हैं। उन पर



14

以内閣は内容以外

八下海北州海及門 साहत्यात्वापं वेशवर पर यसावरद जो परत विद्यावर्षस्यः । वाज्यः सानासम् (देहली)



S. F. W. S. F. B. S. F. A.

क्षिकात व असरद्भाव शास्त्री रकावकण नीर्व याःय्वेदाचार्य धन्यन्तां राभनाांशयन एएड सत्त देहना



पर चन्द्रशंखर पागंडेय अन्द्रमांगा काट्यसार , बन्नाया थले ही । रायबरेली )



पंक नानकनन्त्र याप्यं दाचाय 31 शिलन्द पार्मिमी-मन्द्री हहा लाहीर ।

पापनर प्रेस. देहली ।

LEWING TOWN TOWN TOWN TOWN TO THE FOREIGN TOWN

मन्धियां बन जाती हैं। बालक के दांत देर में निकलते हैं। और दांन बाहर निकलने पर श्रिधिकतर वे तथ हो करके नष्ट हो जाते हैं।

### उपद्रव

श्वाम, काम, हरे, पोलेदस्त न्यूमोनिया (फुप्कुमप्रदाह) धनुस्तम्भ (टिटैनम ) आद्वेप, शिरस्तीय (Hydroceusptrale Phalus) आदि अनेक उपद्रव देखे जाते हैं।

रक्तपैनिक कोमलास्थि (स्काबीरिकेटस)

बालकों के जब यह रोग तमण अवस्था में
प्रकट होता है। तथ इसको तमणारिय कोगलत्व कहने हैं। श्लीर उसमें जब रक्तिय के लहाए उपस्त हो जाते हैं। उन समय सब लहाए पूर्व के तुल्य होते हैं। इसके आक्रमण में कभी र उर्वस्थि फूल जाती हैं। श्लीर अस्थियरा कला के अन्दर रक्त के पहुंच जाने से वह भी फूल जाती है। इसमें अस्थि कोमलता, शोध, दांत के मसूड़ों का सूजना विद्याय करके देखा जाता है।

## चिकित्सा

वालक का श्राहार विहार विल्कुल शुद्ध परिमित होना श्रावरयक है। श्रीर पीने के लिये शुद्ध
दूध बालक के लिये देवे। बालक के मल को
धूद रक्ते। शुद्ध एरण्डतेल कभी कभी प्रयोग
करे। इससे पालाना शुद्ध होता रहता है। जहां
भैट खुढ़ी साफ वायु श्राती होने उस मकान में
बालक को रक्तें। सूर्य प्रकाश भी शरीर में
बाला बाहिये। बालक को संतरा, श्रनार, पपीता,

श्रादि पौष्टिक पदार्श देवें। श्रयांत जिस चीज में विटामिन ए, श्रीर, विटामिन ही, होवें वह चीजें बालक के लिये श्रात उपयुक्त हैं। यदि माना का दूध बच्चा पीता है, उस माना की, खादोज (बिटामिन) ए०, डी०, उचित मात्रा में सेवन करावं। जो मानाय गर्भिणी दशा में खादोज, ए०, डी०, का उचित मात्रा में सेवन करती हैं उनके बालकों को यह रोग नहीं होता हैं। जो बच्चे धूप में खेलने रहते हैं। उनको भी यह रोग कम होता हैं।

अन्यपरीहा - कभी २ मूर्य स्त्रियां मक्ली मार कर भी वच्चे को रोग की परीझा के लिये खिलाती हैं। यदि रोग होगा तो बमन नहीं होगा, अन्यथा बमन होगा। यह परीझा भी हानिकारक हैं।

गुड़ीय परीचा

बालक के तालु के अपर जो गर्त है। उसमें दो मापे गुड़ रखकर गेड़ के आदे की लोई बनाकर रख देवे। उपर से पट्टी यांघ देवे। चार घंटे के बाद पट्टी खोलने पर रोग का निश्चय हो जावगा यदि रोग होगा, तो गुड़ गायब हो जावगा। और रोग के न होने पर गुड़ ज्यों का त्यों उसी स्थान पर रहेगा।

तालुवृद्धि चिकित्सा

यदि बालक का तानु बढ़ गया होवे तो उसको उपर ददा देवे। और जवासार, मधु, मिला कर रगड़ना चाहिये। अथवा, पीपल, सींट, गोवर का रस, सैन्या लवण, इन सब की मिला कर रगड़ें। तालु के गढ़ें में मलना चाहिये।

यथोक्तं वाग्भट्टे-

तत्रोत्त्रिय यवज्ञारसैन्धवाभ्यां प्रतिसारयेत । तालुतद्वत्कणाशुं ठी गोशकृद्रस सैंधवे । श्रंगवेरादिप्रयोगः

आर्द्रक, हल्दी, भंगरा, इनको समान माग में ले करके कल्क बना कर गोला बना लेवे। उसके उपर बट के पत्ते लपेट कर धागा बांध देवे किर उनके उपर गोबर का लेप कर देवे। करडों की कृष्ति में पकावे। जब गोबर सूख कर जलने लगे। उनी लमय निकाल लेवे। किर उसको कपड़े पर रहा कर उसका रस निचोड़ लेवे वह रस नातु, मुख पर लेप करे। नेत्रों पर भी सिक्चन करे। इसका ४० दिन नक प्रयोग करें। इससे पूर्ण लाभ होता है।

यथोक्तं बाग्भट्टे----

श्रंगवेगनिहास्त्रंगं कल्किनं वट पहनेः। बध्वारोशकृतः िध्तं कृष्ट्ले स्वेदयेनातः। रसेनिविवेशकशस्यं नेत्रं च परिपेचयेत्। स्वन्यविवेदः।

हरीतको, बीटा यचा एटा इनकी समान भाग में ले करों करक बना नवे। उसमें मधुन् मिला कर जाना कि दुध के साथ बटाबे इससे तालुपात कराज़ हो जाज़ है। एक वर्ष के बालक के धारते कराज़ की मात्रा चौथाई रत्ती है।

यथोत्तं भैपज्यरत्नावन्याम्-

हरीतको व वाकुष्ठकल्कं मानिकमयुतम् । पीत्वाकुमारः स्तन्येन मुच्यतेतालुपाननात् ।

शंखकीट प्रयोगः

शंख जो बजाने के लिए व्यवहार किया जाता

है। बिहार, कलकत्ता श्रादि शहरों में श्रधिक मिलता है। उसका कीड़ा लेकर मुखा लेके, फिर उसका सूदम चूर्ण कर लेके। एक रसी की मात्रा से मधु के साथ दिन में दो बार व्यवहार करे। इससे रोग समूल नष्ट हो जाता है।

जहरमोहरा खताई की भस्म

जहरमोहरा खताई को लेकर खुतकुमारी के स्वरस में घोट कर टिकिया बना कर सुखा देवे। किर उमको सकोरों में बन्द करके कपड़ मिट्टी करके सुखा देवे। खार ४ सेर उपलों की खरिन में भरम कर देवे। मात्रा १--२ र तक शर्वन धनार के साथ देवे खार लाज़ादि तेल की मालिश करके बच्चे की धृपमें एक घंटे खेलने दें। इससे पूर्ण लाभ होता है।

# हिंगु-प्रयोग

कुड थोड़ा ला घो तथे पर डाल कर शिन पर रस्ते । जब तथा गरम हो जाने, तो उस पर हींग हाल देवे । करछनी से चलाश जाने, जब हींग का फुला हो जाने, तथ उसर लेने । किर शोशी ने रख लेने । मात्रा , रसी ले करके उसमें अदरक का रस ४ वृंद, तुलसी की पिनावों का स्वरंत ४ वृंद, भेंस के ताजे गोयर का स्वरंस ४ वृन्द, शहद = वृन्द मिलाकर सुबह शास पटाने । छोर मिरचादि तंज को मालिश करें। तेल का मालिश ४० दिन तक बराबर करना चाहिए, तन पूरा लाम होता है ।

महागन्धक योग-

( भैपज्य रत्नांबलो प्रोक्त ) से भी पूर्ण लाभ होता है । (इति शंम्)

# \*बच्चों का हैज़ा और गर्भी के दस्त \*

( लेखक-श्री कैपटन डाक्टर मूलसिंह बजाज देहली।)

CAPT. MOOL SINGH BAZAZ, B. SC. M. B. B. S.

( Later M. S., & P. C. M. S. )

इसको मेदे और अन्ति हुयों की सोजिश भी कहते हैं, यह मर्ज अन्ति हियों में गड्चड़ पैद। करता है छोर याम तौर पर मेरे पर भी अपना श्रामर डान्तवा है। जो बच्चे शाम तीर से उपर का एथ पीते हैं, उनकी यह रोग अकसर हो जाया करता है । सगर मां का दूध पीने वाले भी बच्चे इनसे युवे नहीं हैं। गर्मियों और गर्मियों के शारम्य में अक्षय पैदा हो जाना है इस रोग के रोगी प्रत्येक मोसिम में मिल अवने हैं। बड़े ं शहरों में लोड़न कटर फैला हआ होना है कि अगर एक भाग से पहले मरने वाने वच्चों की मिननी की जाने तो कम से कम अने इस नर्ज के शिकार हुवे होंगे। अगर उन तमाम बच्चों की मिनती ा जावे जी कि उस रोग से मरे हैं। तो कम से कम ६० प्रतिशत उपर का दूध पीने वाह्य सा वा होंगे। इस मृत्यु संख्या का यदि पूर्ण ध्यान रचना जावे तो इस रोग के कारण भी वे श्चरुद्धी तरह जान सकेंगे। उन जरासीमों को जो कि इस रोग का कारण होते हैं उनको छोड़ कर उन कारणों को तरक आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं जो कि इस वीमारी के पैदा करने में मददगार होते हैं या इसकी पैदायश के जिन्मे-वाः '

२-मंसेप से देखने पर मालूम होगा कि अयोग्य भोजन या उसकी बेपर्वाही होना इस रोग में विजंप कारण हैं। श्रथवा द्ध जो बच्चों को दिया जाता है, उसकी । असलियन ही ठीक नहीं है या उसे सावधानी पूर्वक नहीं रक्त्या गया. श्रीर हाथों नथा बनेनों की सफाई अच्छी तरह से नहीं की गई। जिससे उसकी माहियन में भी कर्क छ। गया होगा और किसी तरह के जरासीम भी दाखिल हो गये होंगे। बच्चों की मातार्थे अकसर इन वातों के सममते में अनभिज्ञ रही हैं कि बच्चों के लिये जो दूध देवें यह निहायन ही तन्दुक्रम्त गायों से निकाला जावे, और विकालने के लिये हाथ शांर वर्तनी का उतना माझ होना जास्ती है जैसे डाक्टर लोग औपरेशन क्यांत ममय किया करते हैं, कर्ता इनवें की नाड़क और नन्धी २ अन्तिहियों में बचा दारिया हो हर दूध की शक्त को ही धएल दिया करती हैं, श्राम-तौर पर गाय का दूब जबकि वह यचने के पेट में जाकर जमता है। मां वे दूध की निसवत वडा जमाव पैदा करता है। लेकिन जब इस वृध को वेएहिनयाती से रक्ला जावे और मिक्वयां और गर्दोम्बार की उस तक पहुंच हुई हो, या गर्मी के मीसम में उसको उग्ही जगह में न रक्खा गया हो श्रीर वह श्रध फटे की हालत को पहुंच चुका हो श्रीर बच्चों को दिया जावे तो इसका नतीजा यह होता है कि दूध का बड़ा मोटा फॅकड़ा बनकर बच्चे की कुन्वते हाज़ में को जायल करके इसके मेदे श्रीर श्रन्तिड़ियों को खराब करके उनकी बा-कायदा कारग्वाई में तबदीली पैदा कर देगा।

श्रलामात--यह तबदीली जो अलामात पैदा करती हैं वह निस्त लिखित हैं:--

प्रारम्भ में वच्चे को बेद्यारामी महसूम होनी शरू होती हैं। मातायें आम शिकायत करती हैं कि बच्चा रोता है और किसी हालन में उहरना नहीं हैं। मुमकिन हैं इस हालत में थोड़ी सी हरारत भी महसूस हो। कुछ अमें के बाद प्रक्या क्रय करता हैं जिसमें मोटे २ फॅकडे द्ध के जिनमें सटाई की बदबू आती हैं दिखाई देने हैं। बक्चा द्ध पीने से इन्कार करता है और बढ़ि जबरन दिया जाने तो कय कर हालता हैं। शुरू में तो पालाना मामूली होता हैं मगर वह भी घंटों बाद पनला फटा हुन्त्रा, बदवृदार लाज रंग का या सफेद रंग का या पारे के रंग का होता हैं। सादाद में पाछ।ना तोन चार बार ही हो या छः, श्राठ, इस तक पट्टच जावे नो मुमकिन हैं कि बुखार बद्कर १०२ डिमी वा १०३ तक पहुँच जावे और बच्चा किमी क़दर निढाल होना शुरू हो जावे। अगर क्टचे का दूध पीना वन्द नहीं किया गया तो क्रय और दस्त की तादाद बद जाती है और बच्चे की निढासी भी बढ़ती जाती है और उस का रंग पीला पड़ जाता है। बजन बड़ी जल्दी कम होजाता है, और नब्ब की रफ्तार भीमी वानी कमजोर पड़ जाती है। दस्तों की तादाद भी बढ़

जाती है और उनके साथ आंव (Mucus) व खून भी नमृदार हो जाता है, मिक्कदार में दस्तः छोड़े होजाते हैं। और दस्त फिरने वक्त बच्चे की तकलोफ़ होती है, पेशाय की मिक्कदार भी बहुत कम हो जाती है, मुमकिन है कि इसमें चरवी बग़ैरह भी नमूदार हो जाते। सख्त किस्म की बीमारी में यह तमाम भलामात इन्तह। दरजे तक पहुंच जातो हैं। बच्चेकी हालत ख्राव हो जाती है। पाखाना बेख़बरी में निकल जाता है, चेहरे पर मुरियां पड़ जाती हैं। आंखे अन्दर धम जाती हैं और बच्चा आख़िंग इस हालन में खाया हो जाता है।

वीमारी का श्रन्जाम—हर एक Case में Prognosis खतरनाक होता है इसलिये इसका इलाज बहुत जल्दी श्रीर वड़ी श्रहतयात से करना चाहिये वरना जान का खतरा है।

इलाज—इलाज में सबसे पहले और जरुरी यान यह है कि क्योंही बच्चे में इस बीमारी का शुवा हो उमकी दूध हेना बिलकुल बन्द फर दिया जावे और २४ घण्टे तक जरूर बन्द रक्या जावे। Castoroil बरौरह से उसकी अन्तिक्यां साफ करदी जावें और २४ घण्टे तक उसे Glucose का 'पानो देना चाहिये। चीनी बिलकुल नहीं हेनो चाहिये। अगर शुरू में ही अहतहात की जावे। यानी दूध देना वन्द कर दिया जावे तो यह अतरनाक बीमारी जल्दी ही कावृ में आजाती हैं, लेकिन कई बार सिर्फ दूध का रोकना, और मेदे और अंतिहरों का साफ करना ही काफी नहीं होता, ऐसी हालत में डाक्टरों का मराबरा लेना ज़करी



# बालरोगाः



( लेखक--श्रायुर्वेदाचार्य कविराज, नानकचन्द्र वैदा शाखी, श्रायुर्वेदघुरीए, श्रायुर्वेदरत्न, लाहीर )

यह सर्व साधारण को विवित है कि "बाल" तीन प्रकार के होते हैं यथा 'त्रिविधः कथितो बालः तीरान्नोअय वर्रानः। इति

श्रशीत तीन प्रकार के बालक कहे हैं?. केवल दुग्ध पान करने बाला यह श्रवस्था बालक की तब तक रहती हैं जब तक उसके दान्त नहीं निकलते। प्रायः हर एक शिशु को ६ मास के श्रन्तर दान्त निकलने लग जाते हैं। इस समय बालक की 'श्रन्त प्राशन" का विधान

अन्नप्राशनम् - शास्त्रों में वर्णन किया है। यथा चोक्तं गृह्य सूत्रे —

होता हैं, ताकि यह खतरनाक वीमारी बढ़ न जावे। अहितयात-इस वीमारी से बच्चों को

वचाने के लिये यह जरूरी हैं, कि गर्सी में खास कर उसके दूध और दूध वाले जानवरों की खास आहतियात रक्सी जावे, दूध अच्छी गाय का लिया जावे, और एक दक्षा उवालने के बाद ठंडी जगह में या वर्फ में रक्खा जावे। वोतल और रवड़ की टूंटी को वो बार साफ पानी से धो देना चाहिये और एक या दो बार सोझावाई कावे से भी लाफ कर लेना चाहिये। मक्खी वर्गेरह से अहतियात रखनी चाहिये। बेच की सलाह से अगर गाय का दूध मुवाफिक न हो तो उसका और इन्तजाम कर देना चाहियें।

"षष्ठे मासेऽन्नप्रारानम्" अर्थात् जन्म से लेके छटे मास में कुमार को अन्तप्राशन कराना चाहिए। वेदोक्त विधि से हवनादि कर्म करके मधुरादिषट रसयुक्त द्रव्यों को एक उत्तम पात्र में रखकर क्रमार को जिसने स्नानादि कर लिया हो पवित्र वस्त्रालंकार से सज्जित कर एक बार अन्न खिलावें तदनन्तर उस बालक को भूमि पर बैठाकर उसके आगे हिन्दी, अंब्रेजी उर्द आदि की पुस्तकें तथा शास्त्र, बस्त्रादि उसके सन्मुख रख दें तब वह बालक जिस पदार्थ को पकड़ ते वही उसकी जीवन वृत्ति का हेतु होजायगा अर्थात् उसी विद्या को बह पढ़कर वा शस्त्रादि कर्म द्वारा अपनी वृचि कमाकर निर्वाह जीवन भर करेगा ऐसा निश्चय है। इस प्रकार विधिवत् संस्कृत शिशु दीर्घायु तथा निरोग होता है। दो वर्ष तक बालक को द्ध तथा अन्त का अभ्यास कराना पोछ केवल अन्त हो दिया जावे तो लाभकारी होता है फिर इसे दूध भी पिलाया जाये तो अन्त के बिना नहीं एड सकता।

प्राणः बालकों की माता के दुग्ध की विकृति से मनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं तथा बच्चों के दान्त निकलना भी रोग की उत्पत्ति का कारख होता है। दांतों के निकलने के समय बालकों को बिझेष करके अपर, विडभेद्र,कास, झदिं, शिरोज्यबा, धामिष्यन्द (नेज रोग) शोध तथा विसर्प आदि रोग होजाते हैं। इनके उपाय चिकित्सा में वर्षन किए आयेंगे।

# दृषित स्तन्य के लच्चण

वातदुष्ट स्तन्यपान से वालक की वात व्याधियें तथा दालक जीए स्वर, आंगों का कुश होना, मल तथा मृत्र का बद्ध हो जाना होता है।

पित्त दुष्टस्तन्य से—स्वेद, मल भेद, कामला रोग, तथा का होना तथा मर्वोङ्ग उष्ण रहे और ब्रन्य पैत्तिक रोग हो जायें।

करु दुण्ट स्तन्य से—लार का ऋषिक गिरना, करु के रोग वर्षान दुग्धपान में जरुचि, शिर को मारीपन, निहां से पोड़िन, कियाशृत्य (जड़) शुल्युक्त, ग्वेत नेत्र, तथा वमन होना आदि हों। दो दोषों के मिश्रण से वा रूबे दोप जनित स्तन्य में दोपानु हल वानण जान लेना चाहिए। शिशु की तीव वा करूप पीड़ा की यक्त्वे के अधिक वा अल्प रोने से जानना चाहिए। क्याधियें जो बड़ों को कही हैं वही यक्त्वों में हो जाती हैं। इस लिए देश काल कल कादि को जानकर उनका प्रनिकार करना चाहिए।

बालकों की अं। प्रधानाता यथा—संशोधनन शिशु के लिए शर्याश्वाह के शने के समान श्रीप्रध देना इसके पश्चान हो भाग के अनन्तर एक विह्न की वृद्धि करने जाना अश्वीत एक वय से उपर के शालक को वेर की विशी के समान श्रीप्रध हैं, अर्थात जो शालक दूध तथा अन्त खाने हैं, उसे छोटे बेर के समान श्रीप्र अन्त खाने वाले को बड़े वेर के समान श्रीप्र अन्त खाने वाले को बड़े वेर के समान श्रीप्र अन्त खाने वाले को बड़े वेर के समान श्रीप्र अन्त खाने वाले को बड़े वेर के समान श्रीप्र अन्त खाने वाले को बड़े वेर के समान श्रीप्र अन्त खाने वाले को बड़े वेर के समान श्रीप्रध देना खाति हैं। जो शालक केवल दुख्य ही पीता हो उसकी श्रीप्रध पिलाना चीति में तथा जो दुखान्त त्याता है तो झानी स्था

बालक दोनों को औषधि देना चाहिये। केवल अन्त खाने वाले को ही अश्विष्य देना युक्त होता है। छोटे बच्चे को यदि रोग उत्पन्त हो जाये तो धान्नी के स्तनों पर यथा दोप हर औपधी का लेप कि शिशु को पिलाना चाहिये। लंघन धान्नी को ही कराना चाहिये वालक को लंघन नहीं दिया जाता। "बालक को रोगानुमार हर एक द्रव्य का निषेध हो सकता है परख्य स्तन्य का वर्जन नहीं होता"। यदि स्तन्य का अभाव हो तो वकरी या मौ का दुग्ध जो हित हो वह देना चाहिये।

नाभिशोथ—होजाने पर वालक को मृत-पिरुड ब्राग से गर्म करके उसके ऊपर दुख्य हाल कर उससे स्वेदन करने से शोध शोब शान्त हो जादा है।

नाभिषाक होजाने पर बकरी के मलकी जलाकर उसपर लगाने से शान्ति होती है। अथवा कीरो बुनी की न्यवा का चूर्ण तथा चन्द्रत चूर्र का चूर्ण में । मान्त होती है। अथवा चूर्ण में । मान्त होती है। श्रथवा हान्द्रा, लोध, प्रियंगु, मुल्हेठी, इनके क्वाथ से तेल का पार करोड प्रभवत करें प्रथवा इन्हीं और्याध्यों को ध्रसकर शैल लगाकर उपर वुरकी देने से नाभिषाक शान्त होता है।

जो बालक देर से उत्पन्न हुआ हो परश्च दुाध न पीये तो उसकी जिद्धा को मैन्धवलवण, आमला, हरड़ का चूले कर मधु तथा घुन में मिला रंगाई इसके सेवनसे बालक दूध पीने लगजाता है।

स्तन्यदेशि की शान्ति के लिये कुठ, हरड़, बच, ब्राह्मी, स्वण भस्म, मधु तथा चृत के सम्बद्ध और पाठा शहत के साथ चटावें। अथवा प्रियंगु, सक्जीखार, लवण, मधुके साथ देने से स्तम्यदीष जीतन शूलांकि शान्त होते हैं यदि उदर में बच्चे के कृमि हों तो इन्हीं श्रीषधियों में विदंग का चूण् मिलाकर देने से लाभ हो जाता है।

जो बालक दुग्ध पीकर वमन करहे उसे शहत, घृत, दोनों कटेली के फल का रस तथा पद्मकोल चूर्ण मिला कर देवे फिर वमन नहीं होता।

मनन्य दोप से यदि ज्वर हो गया हो तो उम बालक की नानी, और शहत क साथ कुटकी का चूर्ण चटावे ज्वर शान्त हो जाना है। अथवा नागरसोधा, हरीनकी, निम्वपट, परवलपत्र, मुलैटी इनका क्वाध करके कुछ गरम ही देने से बच्चों के सब ज्वरों को नष्ट करना है। यह जितने प्रयोग दिये गये हैं अनेक बार अनुभन्न किये जा चुके हैं।

#### व्यरनाशक धूप -

गुगलु, वच. क्रूट. हाथी फा चर्म, भेड़ का चर्म. निम्तपत्र. मधु खृत इन सत्र की यथा लाभ लेका हुठ छान ध्पाना ला, इप से उका शीच नष्ट हो जाता है। क्लिसोने—

सींठ, अतीस, नागरमोथा, नेत्रवाला, इन्द्र जी इनसे किया क्याथ बालकों के उत्तिरीय की शान्त करता है।

#### श्रामातिसार में---

परवल का मूल, सौंठ, वृच, विखंग, शजमोद पिप्पत्ता इस सब् श्रीपधियों का क्वाथ करके देने से शीम लास होता है के अल्लास करके

श्रन्यच्च--

कोन्डमेद में —श्राम की गुठली का करक बना कर उसका स्वरम मधु मिश्रित करके देने से शीघ श्राराम होता है।

श्रधवा---

विस्वमृत्य के क्वाथ में लाजा तथा चीनी को मिला कर देने से बच्चों के वमन छातिमार शान्त होते हैं। सुरक खांसी—

जीर सेवन करने वाले बालक की यदि शुष्क काम (Whooping Cough) हो जाये तो उद्द का क्वाथ करके तथा घृत से छोंक देकर घाष्ट्री की पिलाने से शीव्र लाभ करता है। खांसों में---

मुनकाः ेपलीः शुग्ठीः, इतका चूरा करके मधु के साथ चडाने से पांच प्रकार की खांसी की लाभ

श्रास-

पिपली, जनामा, मुतका, नाकड़ासिंगी, तबाशीर इनका चृण मतु घुन के साथ घटाने से बच्चों के श्वाम काल तथा जरूर की दूर करना हैं। यह सब प्रयोग अतों के निकतने से जो रोग उत्पन्न होने हैं उस समय देने से लाभकारी मिद्ध हुए हैं।

## विसर्प रोग

विन्तर्पस्तु शिशोः प्राणनाशनो वस्तिशीर्षजः पद्मवर्णो सहायद्यः रोगो दोपत्रयोद्भवः ॥ शांत्राज्यां हृदयं याति हृदयाच्च गुरं ब्रजेत् ॥ अर्थान् यह महापद्म नामक रोग तीनों दोपों

से एत्पन्न होकर बच्चों का प्राण नाशक होता है, यह एक प्रकार का विसर्प, वस्ति तथा शिर पर होता है अर्थान शंख से हृदय तक हो जाता है पुनः हृदय से गुरा तक पहुँच जाता है।

#### चिकित्सा---

परबल के पत्ते, त्रिफला, निम्ब, हल्दी, अन-न्तमूल इनका क्वाथ शहद मिला कर पिलाने से चत. विस्फोट, विसर्प तथा ज्वर को नष्ट करता है। लेप ----

श्रमन्तम्ल, कमल, चन्द्रन, मुस्तक, रक्त चन्द्रन, पुरुडरीक मजीठ, मुलैठी, सरमों इन्हें पीस तन करने से लाभदायक होता हैं ! पानी से लेप करने से विसर्प शान्त होता है।

#### क्रुणक माह

कुकुराकः जीर दे।पाच्छिश्नामेव वर्त्मान । जायते तेन तन्नेत्रं कण्डूग्रब स्रवेन्म्हः, शिशोः कुर्याल्लनाटान्निकृट नामाववर्षगम् ॥ न शक्तोत्यर्क प्रभां इप्दुं न वर्त्मोन्मीननज्ञमः ॥

अर्थात द्राय दीप से बच्चों के नेब मार्ग में कुकुणक रोग उत्पन्न होता है [जिससे नेत्रों में करक और लाव होने लगता है और वालक अपने मस्तक तथा अजिकृट नामा आदि को हाथों से रगड़ता है और वह न तो सूर्य की ध्रय की देख सकता है और न नेत्र बन्द करने की समर्थ रखता है।

#### चिकित्सा---

गोवर में मालुस्तन्य ( दूध ), कट्ट तेल और कांजी मिला करके कपड़े में बांध कर गरम २ स्वे-दन करने से यह रोग शांत हो जाता है।

#### कुकूणकहर वर्ति---

दोनों हल्दी, लोध, मुलैठी, कट्टरोहिएी, निम्बपत्र, ताम्ररज मिलाकर वर्ति वना कर श्रंजन करने से लाभदायक सिद्ध हुई है।

#### यालेप--

त्रिफता, लोध, दोनों सांठी, सोंठ, दोनों कटेरी इनका लेप गर्म करके नेत्रों पर लगाने से हितकर होता है। अथवा-

#### आश्वोतनं -

चिकित्मा ....

विधारे कार वरम मधु में मिला कर आश्री-

#### पारिगर्भिक निदानं

'भातुः कुमारी गर्भिण्याः स्तन्यं प्रायः पित्रननपि । कासारिनमाद बमधुस्तन्द्रा कार्ग्याटकीच भूमै: ॥ युज्यते कोष्ट्रयुद्धया च तमाहः पारिगाभकम्।।

अर्थान गर्भिगी माना के स्तनपान करते से बालक की पारिगर्भिक रोग होता है उसमें कास. श्रम्तिमान्यः वमनः, तन्द्राः, कृशताः, श्रक्तिः भुमादि रोग होते हैं । इस रोग में प्राय: अग्निवद्ध के औपध लाभदायक होती हैं।

मुलैठी, त्रिफला, अजमोद, मौठ, पिपली, सींफ, इनका क्वाथ कर वच्चे की पिलाने से लाम होता है, अथवा अग्नित्रही वटी की मात्रा ष्ट्राधी रनी उपए जल से दिन में दो बार देने से शीघ नाभ होता है।

#### वालकण्टक

तालुमध्ये कफ: क् ब्र:कुरुते तालुकएटकम् तेन तालु प्रदेशस्य निम्नता मृष्नि जायते ॥ तालुपातः स्तनद्वेषः कृष्ट्यात्पानं शकृद्द्रवम् ॥ रृष्टिच्चि करुठास्य रुजा पीवा दुर्घरता विमः ॥

श्रशीत कफ कुपित होकर तालुके मध्य भागको निम्न करदेता है, जिससे तालुपात होना, स्तन हूं ब बच्चा दूध कठिनतासे पीता है, मल पतला, तृष्णा नेत्र कठ तथा मुख में पीड़ा श्रोर वमन होता है।

चिकित्सा— हरड़, यच, कूठ इनका कल्क मधु मिलाकर स्तन्य के साथ पीने से लाभ होता है। अथवा अनन्त मृल, तिल, लोध, मुलैठी इन का क्वाथ करके मुख साब हो तो मुख को उक्त क्वाथ से धोर्ये।

मुख्याक में अध्वत्यवृत्त की छाल तथा पत्रों में मधु मिला कर लेप करें नो लाभदायक होता है।

गुदापाक में रसीत से गुदा को लेप करें या रसांजन पिलायें बाश्चन्य पित्तव्ती किया हित होती है।

#### परवात्तक रोगमाइ-

"दुष्टं मलादिभिमांतुः स्तन्यं मंपियतः शिशोः। यदाहि कृपितं पिनां गुदं समिभिधावति।। तदा सञ्जायतं तत्र जलीकोदर सन्तिभः। बृगः मदाह श्रारको ज्वर कासकरः परः॥ करोति पीतकञ्चापि वर्चस्तन्यं भवेदपि! श्राः परचात्तकं नाम व्याधि परम दारुगः॥

श्रथीत दोषों से दूषित स्तन्य के पीने से बालक को यदि पित्त कुर्वित हो कर गुदा में प्राप्त हो जाये तो जोंक के उदर के समान मण दाह-युक्त तथा श्रत्यन्त रक्तवर्ण श्रीर ज्वर कास सहित हो जाते हैं और देह को पीला करके

मलस्तम्भ कर देते हैं, इस रोग को परचात्तक कहते हैं जो भयंकर होता है।

चिकित्सा — यहां सर्व प्रथम जींक लगवा देनी चाहियें तथा चीर वृत्तों की छाल के क्वाथ से धोना चाहिये। और रक्त चन्दन, दोनों सारिवा शांखनाभि इन को पीम कर इनका लेप लगादें और इन्हीं द्रव्यों को पीस कर मधु में चटा दे ती परचानक रोग शान्त हो जाता है।

श्रमन (विजयसार) बृज्ञ के पुष्पों की गोली बनाकर चायलों के जल से दें तो शींच लाभ होता है।

### दांतोंके न उत्पन्न होने का हेतु-

"दन्तमृलाश्रितो वायुर्दन्तवेष्टान्विशोपयन । यदा शिशोः प्रकुपितो नोत्तिष्ठन्ति तदा द्विजाः ॥ श्रथात दन्तमृल में रहने बाला वायु जब कृपित होकर दन्त वेष्ट मांस को मुखा देता है तब दन्त उत्पन्न नहीं होते ।

चिकित्सा—धव के पुष्प, पिपली इनका चूर्ण कर मधु के साथ दन्तपाली को घर्षण करें अथवा आमले के रस के साथ उक्त औपधियें मिलाकर प्रयोग करें।

#### यकाल दन्तोत्पात लच्छमाइ---

"सद्यो जातस्य दृश्येत यस्यदृन्तस्य सम्भवः । तं बालं गत्तसं विद्यात्सवलोक भयावहम् ॥,,

श्रर्थात् जो बालक उत्पन्न होते ही दान्तयुक्त हो तो उस बालक को राज्ञस जानना चाहिये बालक शीघ्र ही माता का घातक होता है। इसी प्रकार जिस बालक के दांत प्रथम, द्वितीय, तथा वृतीय मास में निकलें वह पिता का घातक होता है। चतुर्थ मास में दांत दिखाई दें तो भाई को मारता है और यदि पांचवें में दिखाई दें तो माना मर जाती है। श्रौर यदि छटे मास में दांत दिखाई दें तो माना मर जाती है। श्रौर यदि छटे मास में दांत दिखाई दें तो माता पिता का घन नष्ट हो जाता है इसी प्रकार सप्तम मास में भी दांतों की उत्पत्ति श्रच्छों नहीं मानते, श्रौर श्रष्टममाससे चतुर्दशमास पर्यंत दोनों का उत्पन्न होना ऋषियों ने शुभकारक कहा है।

#### दांत पीसना--

महाशिनोहि बालम्य चालयत्यनिलः शिराः ।
हन्ताः शय्या प्रमुप्तस्य दन्तैः शब्दं करोत्यतः ॥
अर्थान् स्व द्रव्य खाने वाले बालक का वायु
हनुम्थित शिराओं को चालन करता है इसलिये
दांनों में सोये हुए के कट २ शब्द होता है जिसको
शायः लीग दांत कीचना कहने हैं, यह बान

चिकित्मा---कर्चट (ककोड़ा) शाक को पकाकर बच्चे के पैरों पर नेप करने से दांती का कटकटाना शीघ बंद हो जाता है यह कई बार देखा गया है।

#### बालशाय गेगमाह-

मन्दारिनर्त्रहु विष्मृत्रो हत्यमानास्थि पंजरः । शुष्कः स्थिर महद्रोगः शोप इत्यनियीयते ॥

अधीन जिस बालक की मन्दारित हो जाये और मल मूत्र अधिक श्रांने लगे और उसका अस्थि पंजर ही दिखाई दे तथा मूखता चला जाये तो यह महान रोग शोप कहाता है" एताहश शिणु को कई एक लोग सायेबाला कहते हैं वास्तव में इस रोग का कारण मन्दाग्ति होता है परंच ध्यान न देने पर तथा मल मूत्र श्रधिक श्राने से मली प्रकार इसका रस नहीं बनता अतः यह मूखता चला जाता है।

चिकित्सा एसे बालक को देखकर स्नेह वस्ति का प्रयोग कराना चाहिये, तदनन्तर घृत से चतुर्थांशा अश्वगंधा का कल्क लेकर दशगुण दुग्धमें पाक करें, बालकको दुग्धमें आठ विन्दुसे २० विन्दु तक दोनों समय मिलायें। और प्रातः सांयें घृत, चीनी, होटी इलायची के अनुपान से प्रवाल आधी रत्ती की मात्रा चटायें। इस उपचार से कई एक बालक निरोग होगये हैं। तथा चतुष्पाद जीयों के नाव लेकर इसका थूप दें यह भी लाभदायक सिद्ध हुआ है। अन्य भी रास्तादि, गोठ्योदि घृतों का सेवन भी कहा है। परच्च उपर का प्रयोग सिद्ध है। लेख को अधिक न बढ़ाकर कुछ अन्य अनुभृत प्रयोग देकर समाप्त करता है। यथा:—

वन, दोनों कटेरी, पटा, कुटकी, अतीस, मुस्तक, मुनकका, खज्र आदि द्रव्य लेकर घृत सिद्ध कर दांतों की उत्पत्ति के समय बालक की पिलाने से दस्तीत्पना जनित दोषों का दृर कर देता है,

वृतादि यथा— अथवा शुण्ठीः सम्भातु, भागीः समुद्रफेत इन औषधियों का एकः कर्ष लेकर द्विगुण जल के साथ ३२ तोते पृतपाक करें पुनः आहार जीर्ण होने पर उस बालक को पिलार्षे यह कास खास को लाभ करता है और हिस्टेरिया के वेग में अत्यन्त लाभ करता है।

अथवा श्रजा तथा गोतुम्ध, देवदार, शुरुठी, जीरक, श्रजवायन पिपलामूल, पिपली, कुटकी, इन द्रव्यों को समान भला लंकर सौबोर, दिश, मद्य इनसे धृतपाक करे यह घृत पारिगभिक रोग को नष्ट करता है।

तैलम-वहेदा, वच, कुठ, हरिताल, मैर्नासल इनके कल्क से तैलपाक किया हुआ बच्चों को प्रिंतकर्ण रोग से रज्ञा करता है।

अन्यच्च--लाक्षारस के समान तिल तैल चतुर्गु स मस्तु ( तोड़ ) से "निम्न श्रीपध डालकर सिडकों, राम्ना, रक्तचन्द्रन, कृट, गुस्तक, असगंध, हरिद्रा, सौंफ, देवदारु, मूर्वा, बुटकी, सम्हाल्ह-

के बीज श्रादि से बनाया तेल बालकों के ध्वर, भूत बाधा, आदि को मालिश करने से दूर करता है और बल वर्ण की करता है।

यथामति यह बालरोग चिकित्सा सहित वर्णन किए हैं इसमें बालग्रह नहीं वर्णन किए क्योंकि वह पहले ऋष्विनी कुमार पत्र में प्रकाशित हो चुके हैं। जो बैंग इन रोगों को भली प्रकार जानकर चिकित्सा में प्रवृत्त होंगे वह अवश्य इन प्रयोगों द्वारा यश प्राप्त करेंगे । इति शम

# अष्टमंगल तैल







· PORT & Secretary design of the control of the con

... #@@@@@@@@@@@@@@@@@@@

# ( वच्चों को स्वस्थ व मोटा ताजा बनाने वाला )

बच्चों को निल्हबांत से पहले इस तैलको मजना चाहिये, बच्चे के जिस्म पर जलदी बोमारी नहीं होगी, जिम्म कुन्दनकी तरह चमकते लगेगा। बचच ताक्कतवर और सुडौल होगा। सब श्रद्ध खूब पुष्ट हो जार्येने, फुब्बत दिमारा. अच्छी याददाश्त वरौरा सारी उम्र कायम २ हेंने । हम सिफारिश करते हैं कि हर बच्चे बाजा इस शीशी को खरीदकर फायदा उठावे। कीमत

बृहत् आधुर्वेदोव अत्यव भागदार जौहरी बाजार दहली ।

# 00

काव्यमूरि पं० चन्द्रशंखर पाएडेय 'चन्द्रमिए'







(१) निज देश के भूरि भविष्य तुम्हीं, प्रतिज्ञातियों के अभिमान प्रतिमा प्रिय प्रम की होते हुए. मिस्सियों से भी हुई खान तुम्ही ॥ मोद मनाने हुए, देवता उर गोद में वरदान तुम्हीं। कुल इक प्रास्त हैं, प्रास्त की प्रास्ता है, बने बाहर के प्रिय प्रास्त तुम्हीं।।

कुल कीर्ति, अग्बंड धनाट्यता का, जितना मुख सारे जहान वह एक तुम्हारी स्वर ताल-तरंगित मनोहरता-पगी, माहमयी हैं।। मुसकान मृर्च्छना का, सुख नित्य के अस्फुट गान में है। छति स्त्रर्शिम आमा-पृदान में है।। कमलावलियों से हजार गुना

Ų

CONTROL CONTRO **SOCOORGE GOOGE GOOGE GOOGE GOOF SOCOOF GOOGE GOOCH GOOGE GOOCH GO** 

अलचित देशसे आकर, स्वादु-सुधा बरसाते यहां। किस नेह का नाता लगा करके, स्वजनों को सदा हरसाते यहां !! युग नैन की प्यालियों से ये, अलौकिक मादकता अलकाते यहां। मुसकानि या चन्द्रिका है विधुकी, अथवा तुम मोती लुटाने यहां॥

मिनटंत हैं स्नंह की श्रृंखला, या युग नाग में मोती पिरोये हुए। अथवा नभ-तारक आ छिपे हैं, किसी हेतु निर्जा गांत खोवे हुए।। मुख-मानम में बसे बाल मराल या श्रांस के बिन्दू जिलाये हुए। हुकड़े यह रीए। के हैं या, सरीमह चीर-समुद्र में धार्य हुए।।

लालिमा जोहित पृर्धे हिमशुं से निम्मत आनन की छवि न्यामें।

लालिमा लोहित पूर्ण हिमशुं से समित श्रानन की छित न्यामा ।
पाया कहा यह सीम्य न्यभाव ये, मानापमान-प्रमानता धारी
। नत्य प्रमन्नता के पुतले बने, सत्य समानता के व्यवहारी ।
चित्र बनाकर चित्र ही में छिपे, केसी शिवित्र है चित्रकारी ।
(६)
चित्रना-शाकिनी-चंगुल में फरेंगे, मानम में कसहाम तुम्हीं हो ।
जतेंगे जीर्था कलेगा में पड़ी जीयनटायिनी श्वाम तुम्हीं हो ।
हेटे, फंस हिलकी उलामी हुई श्रणा अर्थ अभिलाप तुम्हीं हो ।
हेटे, फंस हिलकी उलामी हुई श्रणा अर्थ अभिलाप तुम्हीं हो ।
(७)
कीप कुनेर का सारा छटाकर भी, हम श्रात तुम्हीं नहीं पाने ।
कीनसा पुष्प-प्रमाद बने हुए, मैंजुल गीद में मोद मनाने ।।
नश्वर विश्व में सार से हेकिंग, सृष्टि का कार्य सदव चलाते ।
श्रामो, तुम्हारा सदैव है स्वागत ! स्वागत !! स्वागत गान हैं पाने ।।

अभिक्षा, तुम्हारा सदैव है स्वागत ! स्वागत !! स्वागत गान हैं पाने ।।

अभिक्षा, तुम्हारा सदैव है स्वागत ! स्वागत !! स्वागत गान हैं पाने ।।

# दाँत निकलना

( लेखक – श्री० डा० युद्धवीरिमह् जो एच० एम० डी. कृचा वृजनाथ देहली )

जब तक बच्चे के डांन नहीं निकलते हैं। तब तक उसके जीवन की आशंका ही रहती हैं। बच्चा बहुत कोमल होता है, और उसकी जरामी भी खराजी से. या अमावधानी से भयंकर रोग पैटा हो जाने की सम्भावना रहती है, डांन निकलने का समय भिन्त २ वालकों में भिन्त २ होता हैं. याँ तो किसीर बालकके जनम से ही तांत निकल आते हैं, या किसी २ के एक यो दो दांत या सब डांत निकलते ही नहीं या बहुत देरमें निकलते हैं, ऐसा बहुत कम होता है, साधारशतया बालक तन्द्रक्त हो तो छटे मास के लगभग मसदे कलते श्रह होते हैं. सातर्वे मास में दांत निकलने लगते हैं. २॥ ढाई या तीन वर्ष के बीच में बच्चे के सर डांत निकल अने हैं, ये डांत कुल २० होते हैं छाम दूश के इांत कहलाने हैं. 🗴 -६ वर्ष के याद ये डांन गिरने शुम है। जाते हैं और इनको जगह दूसके दात निकल आते हैं.. १० ११ वर्ष तक सब दोन निकल आने हैं, २० वीस वर्ष के लगभग श्रास्त्रिमं हार्दे निकल काता हैं, जिनकी अक्कन हाइ (निजडमद्ध-- windomtooth) कहते हैं।

- (१)वच्चों के दांत इस प्रकार निकलते हैं ४ से = मास के बीच में किसी समय अधिकतर ६- - भास में सामने के नीचे के दो दांत साथ २ निकल आने हैं
- (२) इसके निकलने के दो तीन सफाह बादश्राट दस मास के विश्व में पहले ऊपर के सामने

के दो दांत फिर उनके तथा नीचे वालों के इधर उधर एक २ दांत निकलता है, इस प्रकार साल-भर के पहिले ही चार उपर के चार नीचे के कुल आठ दांत निकल आने हैं इनको छेदन (इन-साईजर) कहते हैं

- (३) फिर साल सवा साल के अन्दर २ बीच में एक २ दांत की जगड़ छोड़ कर होती श्रोर उपर नीचे एक २ डाढ़ कुल ४ डाढ़ें निकल श्राती हैं। इनके निकलने के चार पांच सास बाट—
- (४) डेट और दो साल के बीच में सुरा अर्थान जो जगह खाली रह गई है उस जगह तेज नौकवाल कपर नीचे दोतों और चार दांत निकल काते हैं, इनके निकलने में वालक की थोड़ा बहुत कप्र होता है, प्रायः आंखें दुखने। आजाती है, इसलिये इनको आंखों वाले दांत भी कह दिया करते हैं, इसके निकलने के पांच हैं मान बाद।
- (४) दाई तीन वर्ष के भीनर सब से आधिर में डोनों ओर उपर नीच डाइ निकल श्राती हैं इस प्रकार ये बीस दूध के डोन होते हैं।

साधारणतया मातायें सममती है कि दांत तिकलने के समय तालक का दस्त, बुएएर, खांसी श्रादि कष्ट हुआ ही करते हैं इसलिये वे उनकी कुछ परवाह नहीं करतीं कल यह होता है कि रोग उभस्प धारण करके वालक के लिये कष्टकर अथवा घातक तक हो जाता है।

बात यह है कि बच्चा अगर स्वस्थ हो और उसके मसड़े किसी विशेष कारण से सख़्त न हों तो बहुधा दोन निकालने में कोई कष्ट नहीं होता है, यदि हो भी तो मसुद्धे के फुलने से व्वरांश या बचैनी हो जाती है, परन्तु दांन निकलने के समय मदी, खांसी, इस्त, फ़्रान्सयां श्रादि सभी के कारण वांत नहीं होते । बात यह होती है कि ६ मास के बालक प्राय: हरएक चीज को चुमना व ह्याना चाहते हैं, पर न वह चवा सकता है, और न साल भर पहले उस में दूध के अनिरिक्त किसी चीत की पत्राने काशकि ही होती है। लेकिन माताय प्रायः भिठाई श्रावि चार्ने ऐसे समय बालक की देनते। हैं । जिससे उनके पेट में विकार होकर ताना प्रकार के रोग होजाते हैं। जो सब यानी के सिर मंड जाने हैं, इमलिये ऐसे समय जो रोग हो उनकी उसी प्रकार चिकित्सा कराती चाहिये जैसे वे प्रचानत्या होते हैं। । दांत सुगमता से निकलने के लिये यह जरूरी है कि बच्चे की अन्तादि विलकुल न रिया जावे जिस से वह वीभार न पढ़ कर और स्वस्थ अवस्था में दान निकाल हो ।

गवर क छलों जो चाजार में विकते हैं वह बालक के गल में बांध देने चाहियें। उन को बालक चुमता है। उम से मसूई फूटन तथा दांन निकलन में फासातो रहनी हैं। छल्ल को साफ रखना चाहिये। धूल मिट्टी से बचाये रखना चाहिये, यदि बालक का मसूड़ा फुला हो तो खाक्टर से नहतर से चिरवा देना चाहिये। सुहागा आंच पर फुलाकर उस में शहद मिला कर उनुती में मुलायम मलमल का कपड़ा लपेट शहद में तर करके मसूद्दे पर धीरे २ मलने से दांन जल्दी निकल श्राते हैं। यदि बच्चे का स्वास्थ्य श्रच्छा होगा और माता उसका ध्यान रक्ष्येगी तथा उसे श्रन्ट सन्ट खाने को नहीं देगी तो दांन निकलने में बिलकुल कष्ट न होगा या बिलकुल थोड़ा होगा।

कभी कभा जब ममूदा बहुत ही सख्त होता है श्रीर दांत किटनाई से निकलता है तो वालकों को ममुदा मुजने से हो तेज बुखार, दस्त गशी, (दौरा) श्रादि हो जातें है। दौरा श्रादि हों तो घबराना नहः चाहिये। बालक को श्राराम से लिटा कर मिर पर गीजा कपड़ा रक्खें, ठंडे पानी के छीट मुह पर देवें। या गर्म जल से बच्चे को स्नान कराये, श्रीर तुरन्त डाक्टर को बुला कर दिखाना चाहिये।

हीरा, बुचार की तेजी वर्ती राष्ट्रीयः तब ही होते हैं, जब बच्चे की कट्या होना हैं, इसिलये यांत निकलने के दिनों में कट्य नहीं होते देना चाहिये दीर से जब होशा हाथि तो पखाने की जगह पिचकारी लगा कर दस्त करा देना चाहिये।

जब बच्चे के सब दांत निकल आवे तो उन को मंजन वर्षों से से साफ करते रहता चाहिये, नहीं तो अकसर दृश के दांतों में हो कीड़ा लग जाता है जिसका असर आगे निकलने बाले दांती पर भी पड़ता है।

प्र-६ वर्ष की आयु के बाद यह सब दांत शिरने लगते हैं और नये दांत उनकी जगह आ जाते हैं वे सब दूर होते हैं। इन दांतों के निकलने के समय बालक बड़ा होजाता है, और कोई कष्ट नहीं होता।

२०-२५ वर्ष की आयु में जब अकल **डाढ़** निकलती है तब थोड़ा कष्ट अधरय होता है।



# यकृत् ( जिगर )



( लावक -- श्रीव डा० युद्धचीरसिंह एच० एम० डी० )

भयद्भर हैं। जिस्स एड जाता है या स्कृत जाता। पेटका फुलना श्लांबों के प्रपोट भारी होने, हाथ है या इसके अन्दर सजन हो जानी है यद्यपि इस पांच प्रवापेट पर सूजन होनी ये इसके खास रोग में वननों की मृत्यु तुरना नहीं होती। न्योर

महीनों रोग सनाना है। परन्तु कहा किये नहीं बनना और रोग बदना ही जाना है। इसलियं जिनम् के रोग का जरा भी सन्देन होने पर तरन्त अच्छे दाक्टर से इस्टान कराना चाटिचे ंचल-कृत उपेना नहा वरनी चाहिया । प्रारम्भ भे साधारण वरहणसी . बालकार उपान हो कर एक गांधपुरून व अधिक माला में उत ही जाना है। सक

Ausmu. (एकंभिया) रकत्वता।

अधिक लगनी या विलक्त न अगनी जार हलका बुखार रहना वे इसके बार्यात्मक चिन्ह है वही हुये जिगर में वृत्वार तेज्, दस्त, श्राधिक हीते हैं। भूक अधिक लगने लगनी हैं। बाहिनी पमलियों के नीचे बढ़ा हुआ जिगर कड़ा मान्त्रम होने लगता

वनचों के लिये जियर की वीमारी बड़ी है। जिससे भयद्भर पीलिया हो जाता है। ्लाउमा हैं। ऋँ।र श्रन्त में पेट में पानी भर कर

> दरत में जन इत्यादि आकर या जोर का पीलिया हो कर बस्ये की मृत्य ही जाती है। जी दवाये इस रोग से वास-दायक साधित हुई है। उसमे से गुल्य २ के ताम हम नीचे देने हैं परन्त कीनमी द्या कब दी जावें यह धन्छे चिकित्सकः की सलाह के विता नहीं देती चाहिये।

कार्डम, कान्मेक, फास-फोरम, केल्केरिया आसु, चेलिडोनियम, हाईड्-पोडाफाइलम, स्टिम, श्रायोडियम, मार्कसोल,

चाइना, त्रायोनिया, आर्सेनिक, केल्केरिया-नाईकोपोडियम, नक्सवामिका, लेप्टीड़ा, नेट्ममूर, नेट्मसल्फ, इत्यादि लचल के अनुसार हैं।



# CAMERA PORTRATIS

AND

Amateurs Developing

PRINTING DEPOT.

Life Like Water

OIL COLOUR PAINTINGS.

Distinctive enlargement

PHOTO IN ANY CONDITION.

High Class Picture Framing

AT DAREEBA, DELHI.

#### WHEN

IN

# DELHI

Please

ENJOY YOUR EVENINGS

At

- 1. The New Royal Cinema
  - 2. The Cinema Majestic
  - 3. Jubilee Talkies
    - 4. The Central Talkies

Publicity Manager,

The General Talkies Ltd.,

(Proprietors of the Above Cinemas)

DELHI.

# वाल कामला हुन्य

लेखक--श्रायुर्वेदार्णव, श्रायुर्वेदमार्तण्ड पं० रामगोपाल मिश्र राजवैद्य, श्रायुर्वेदाचार्य गौंदिया (मी०पी)

जन्म के बाद १० - १४ दिन में प्रायः किसी किमी बालक को कामला रोग के ममान उपदव प्रकट होते हैं, बालक का शरीर और उसके नेत्र-गोलक का श्वेतांश पीला दिम्बाई देता है यह रोग गर्भ के पूर्ण दिवस में न जन्मने बाले बालक की या भगभी दशा में ज्वराकान्त रहने वाली माता के गर्भ से जन्म लेने बाले बालक की अधवा निर्धल शरीरी जन्मे हवे बालक की अथवा गर्भ की श्रवस्था में श्रवध्य सेवन करने वाली माता के बालक को होता है। इसके लिए - गेंडी का तेल अंदाज तीत चार मासे एक दो दिन का अन्तर देकर पांच मात बार चटाने से इस्त मात्र होकर बालक रोगमुक्त हो जाता है। यह उत्तम सर्लोपाय है !! यह दरचे को ऋमृताष्ट्रक क्वाध ६ मास सुबह और शाम! मधुयुक्त करके देना चाहिए भोजनीतर अञ्चारिष्ट ३- ३ मासे प्रमाण में देना उत्तम होता 👝 । इन सरलोपचार विवि से बालक के शरीर में रतने बाना मन्द ज्वरांश भी दुर हो जाता है।

### बालक की नाभि बहुत बढ़ जाने पर-

जिस समय नालच्छेदन करने में गलतो से नाल को भटका लगजाता है उस समय ही नाभी-पाक आदि उत्पन्न होते हैं यदि न भी पके तो भी नाभि का भाग उंचा उठ छाता है। इसलिए इटी हुई नाभी को बैठाने का प्रयत्न करना चाहिए। एक मिट्टी के देले कोगर्म करके उस पर गाय का दृध मींचे और उसमें से जो बाफ़ निकले उससे बच्चे की नाभी को दृर से सेके। ऐसा करने से नाभी का शोध और बढ़ी हुई नाभी अपनी योग्य स्थिति में आजाती है। नाभीपाक के बिषय में नालच्छेदन में वर्णन कर दिया गया है।

### नेत्र रोग

शिशुको जन्मके १-२ दिन बाद कभी कभी नेत्र-पीड़ा से आकान्त होना पड़ता है यह रोग मगभां दशा में माना के श्रिधिक दिख आदि सेवन से अथवा उपदंश जिन्न विकार के कारण वालकको होता है। इस की शीब चिकित्सा न करने पर वालक को अंधा होने का भय उपस्थित होता है!

उपचार---जायकल, अफीम, फिटकरी, पठानी लोध इनको पानी में घिमकर किंचित उच्छा करे श्रीर पलकों पर सावधानी से लेप करे जिससे श्रीपिश शिशु के नेत्रा में न चली जाय !

### दन्तद्गम

बच्चों के दांत कितलने का माधारणतया आयुष्णमान ६- =-१० मास के अन्दर ही है। पिहले सामने नीचे के दो, बाद अपर के दो, इस कम से ३ वर्ष में बीम दांत दूध के पूर्ण होते हैं क्वांचन किसी वालक को जन्मते ही दांत देखने में जाते हैं। दूध के दांत किसी किसी वालक को उमके अस्थिरीण के कारण एक डेढ़ साल तक भी नहीं आते। सात्र्ये वर्ष में दूध के दांत गिरना

श्चारम्भ हो कर पक्के दांत श्राना प्रारम्भ होते हैं वृद्धि दाढ को छोड़ कर सम्पूर्ण पक्के दांत १४-१६-१= वप के भीतर आजाते हैं और इसी समय में = दांत और भो अधिक आकर २= दांत पूर्ण होते हैं इन के अतिरिक्त केवल बुद्धि दाई अवशिष्ट रहती हैं वे २० से २४ वर्ष के भीतर आकर ३२ दांत पूर्ण हो जाते हैं । छोटे बालक को आरम्भिक दन्नोदभव कान में नाना रोगों का सामना करना पड़ता है। जिस में मुख्यतः सिर-टर्ट, बमन, खांसी, उत्रर, नेत्रपीड़ा, पनकों में कथा २ होना, पतने फटेफटे हरे, पीने दम्त, शक्ति हीताना, मृत्य से राज का स्वाब, ममुड़ों में मृजन निदानाण, निदिनावस्था में चमकना, नेत्रों की प्रकाश का समहा होना, पाचन किया में गड़बड़ी, नाडी की ऋनियमित मन्द्राति, मन्द्री में सरस्रा-हर होना, मृह चयनपाना, क्रांप्रबद्धता, स्रानेप आदि होते हैं और दांत बाहर धार्त ही ये अजगा श्चपनं आप शमन हो जाते हैं लेकिन ऐसे काल मे र्याद उस उपदर्श पर उपेक्षा की हारि डाली जाय ते। महान हानि है। सकती है। अताव इन उपद्रवीं को गांति के लिये सरलीपचार करना हिना वह होना है : उन्नोद्भव काल की पीड़ा टेड काल की अपेक्षा शीएम में कम कष्टदायक होती है. शहरों की अवेचा प्रामी में कष्टकन होता है, अशन की अपेबा मधन बालक को कम पीड़ा होती है। दस्तादुभव काल में माना या वाई की पःत्र कर शीव पचने वाले अन्न के। सेवन करना चाहिय । दन्तोदुभव काल में जो जो रोग और उपद्रव हो उनके अनुमार विचार कर औपधोप-चार करना चाहियं लेकिन फिर भी पाचन क्रिया

का ध्यान रखतं हुए वालक को पाचन चूर्ण, घूटी श्रादि श्रवश्य देने रहना चाहिये, मस्हें फुलें हों तो उनका छेदन करावें श्रथवा धवपुष्प, पीपल, श्रामला इनका चूर्ण मधु में मिलाकर मस्हों में थोड़ासा मल देवें। श्रीर इस तरह कई बार मलें।

सफेद अपराजिता की जड़ की रेशम के धारी में बांध कर बालक के गले में पहराबें सथवा जस्त और तांबे के तार को एक में एट उती कपड़े में सीकर बालक के गले में बांधे, दांत विना पीडा के मर्तिता से निकर्लेंगे । बालक की कटडी हो तो बड़ी हरड़ . कावा समक, भूना सहासाई र पुटपाक से ।मिकाला हुन्ना एर्ग र पुष्प का स्वरस सब की पूर्वा बना कर प्रमाण से देवें । या रेडी का तेल चटाकर उस्त करावें । पत्र ले उस्त होते हों तो धारे २ रोकें एकदम बंद न करें । दस्त होते हवे अथवा कव्हां होने पर यदि पेट में आध्यान हो तो पाचन और्पाच युक्त दस्त गोकन का अथवा पाचन श्रीपधि युक्त दम्त कराते का प्रबंध करें। इंतोइभव काल में सम्पूर्ण उपद्रव शमन के लिये शंखवटी १ रनी प्रमाण उसके साता के द्रध में देवें. अन्त व्याने वाले वालक की उद्या जल से देवें। लवस भारकर या हिस्वध्यक २-३ रसी प्रमास नेकर १ तंत्रल प्रमागा बन्नकार युक्त करके उस की माता के दूरध से देवें अन्न खाने बाले की किंचित बढ़ा कर मात्रा मंत्रीधा जल से देखें। हरड्, बच, मुलैठो, लबंग, पपीता, कालानमक हींग भूना इनकी माता के दृश्य में घिम कर प्रमारा पूर्वक देवें। हरड़, अतीम, कुलीजन, वेल-गिरी, काला नमक, इनको घिस कर प्रमाण युक्त देवें । अतीस काकड़ामिंगी, पोपल, यन, इनकी

त्रुटी प्रमाण पूर्ण देवें। इन वृद्यों में हींग मूंग प्रमाण त्रेये। काला नमक भी उतना ही लेवें शेष श्रोपिधयों वा १-१ रनी प्रमाण पिसा हुआ द्रव्य लेवें, अपर लिखी वृद्धी ज्वरनाशक, कासनाशक पाचक है। दूसरी वृद्धी मलरोधक, पाचक, कफ निःसारक हैं। तीमरी वृद्धी कफ़नाशक ज्वरनाशक हैं। समूदों की सृजनपर बड़ी हरड़ शहद या दृध में विसवर लगावें। पेट फुला हो तो हथेली में अन्यंद्धी का तेल लगाकर उसके द्धारा शलक का पेट संके। अफ की प्रचलना हो तो छातीकी हथेली से अरंदी का तेल लगा कर मोके, आवश्यकता समस कर ज्यरें ही का पर पर्ना में अरंदी का तेल लगा कि चिन उरण कर पर प्राचन के पर पर पर्मा ।

#### वालक का उद्रशूल

किंग से अथवा सरदी से अथवा माता के दृश्य विकृति से वालक के पेट में गूल होता ह, दृश्य करूत होजाता है। वालक पेट का छुने देता नहीं, माता के स्तन वाबना है दांत रहने पर काट खाता है।

उपचार—शिष्णु के पेट की हाथ की हथेली में रेंडी का नेल लगा कर सेंक ता, चड़े बच्चे का पेट कपास के फोहे से या रेती की पोटली या नमक की पोटली से संकता। किसि से दर्द ही नो सनाव के पत्तों का रस व्यजवाईन, डीकामाली, हींग, कालानगर युक्त करके मां के दूध और मधु से देना। पान के बीड़े में श्रजवाईन डाल कूट कर रम निकालना और पिलाना। पेट में वायु के कारण दर्द हो तो शंखबटी १ रसी ममाण मां के दूध से देना या लवणभास्कर या हिस्बष्टक २—४ रसी प्रमाण लेकर ४ सरसीं प्रमाण या एक चावल प्रमाण वज्हार युक्त करके मांके दूधसे देना या रेंडी तेलमें सोंठका चूर्ण और सोंचलनमक युक्त करके पिलाना । श्रजीर्ण से दर्दे हो तो शंखवटी देना या सोंठ, हरड़, काला-नमक घिसकर देना। पेट पर रेंडी क पात गंडी का तेल लगाकर कुछ उच्छा करके बांधना या नगरपान बांधना।

#### बालक का अतिसार

वालक को दस्त लगने पर किस रोग के उपद्रव स्वरूप ये हैं इसकी भली प्रकार जांच कर लेने पर ही बाँपधि देने का निश्चय करना उत्तम होगा अन्यथा लाभ की संभावना नहीं रहनी। इसलिए अजीर्गा, दंतीद्भव पीड़ा, आंत में अपक्व अन्त का अंश रहना, किमिदीष, ऋतुपरिवर्तन आदिकों में से किस कारण के सम्बन्ध को लेकर दस्त होते हैं इसे भली प्रकार समक लेना आवश्यक हैं।

अर्जाण से दस्त होने पर लवए भास्कर २ या ४ या उम् के मान को देखकर १ या १॥ मान्या और वज़ झार १ या २ चावल अमाण, वय मानातुसार देखकर मां के दूध या उपण जल से दिन में तीन वार देवें, हिम्बर्टक अंद्रेवा पूर्व में कही गई घूटी या इम हा प्रमाण में शांचचटी भी दे सकते हैं। देनोंद्रेशव समय के अतिमार में और शीत के कारण होने वाले ज्वरातिमार में भी कथित आपिधयों को देने से ठीक पाचन होकर दस्त अन्छ होजाते हैं पेट भी नहीं फूलता। यह दस्त के साथ पेट फूला हो नो भी ये ही कथित औपिधयें हिनकर होती हैं। दस्त होते हों, पेट फूला हो और वमन या वमनेच्छा साथ ही हो तो

भी उपयुक्त योग हित करते हैं । खट्टो गंध वाला, लसीका, फेनदार मल श्रोर साथ में मरोड़ भी हों तो आम की गुठली या आम की छाल को मां के दूध में घिस कर अथवा जल में घिस कर उपर्य क्त किसी भी एक श्रीपिध को मिश्रित कर के देने से आशु लाभ होगा। कोचड़ समान मल श्रीर श्रधिक तृपा रहने पर पपीता या मुलहठी को मां के दूध या जन में घिसकर उसमें उपयुक्त कथित किसी एक योग का सिजा कर देवें। श्राम युक्त मल और उसके माथ रक रहने पर बिल्व का गृदा मां के दूध या मंदीप्ण जल में धिसकर उपयुक्ति किसी एक योग को देवें। चावल के घोवन जैसा अधवा फटे दूध जैसा सफेद मल वा कक मिश्रित मल वाला दस्त होने पर भी उपर्य कत कोई एक योग देवें। साधारण दस्त हों तो माजूफल या पपीता दृध में धिसकर देवें अथवा जायफल विसकर दो सरसों प्रमाण देवें। अथवा आम की सृखी गुठली वर्नागरी रक्त चंदन, कुड़े की छाल इनकी घिमकर मधू दूध युक्त कर के देवें। रक्तयक होते हों तो आम की छाल चिमकर अथवा अनार के भीतर की खाल चिमकर मधुयुक्त करके देवे या रक्त चन्द्रन छाम की गुठत्ती, वेलगिरी, पर्धाता विसकर देवें या अनार के रम में मिला चागती बना चटावें।

कृमि दोप जन्यद्मत ही तो सहतृत की छाल की चिम कर मधु युक्त कर देवें अथवा पूर्व कथित किमी एक योग के माथ डिकामाली चिम कर देवे या उन किसी योग के माथ कीटभद्र रम र चावल प्रमाण लेकर वायविडंगयुक्त चिसे और

देवें । दुर्गघयुक्तमल होने पर श्रजवाइन के क्वाथ में रेन्डी का नेज मिलाकर देवें। श्रामातिसार हो तो जामुन, आम. औदुम्बर की छाल को द्ध या पानी में घिसकर उसमें थोड़ा प्रमाण चने का निथरा जल मिलाकर देवें। बेलफल को घिसकर उसमें थोड़ा अर्क सौंफ मिलाकर देवें। कुडे की छाल, अनीम, इन्ट्रजब, सोठ, बेलगिरी, रक्तवंदन अनार की छाल को विसकर देवें। सरीड़ के साथ दस्त हो तो मरोरफली की और मोंठ की भूनकर पानी या दृध में घिसकर देवे। रक्तातिसार हो तो कोमल अनार का रस चन्द्र वृंद शर्करा युक्त करके या सञ्जयुक्त करके देवें। आस की खाल को चूने के नितरे पानी के साथ विस कर देवें। पर्गावीज के पत्तों कारस मधु या सिक्षा युक्त करके देवे । अद्रातिनिङ्गिक की छाल की धिमकर मधुयक्त कर देवें । विल्वपत्र का रम मधु दृधयक्त करके देवें। जामुन की छाल चिसकर मध्यक करके देवें ! सृखं आवलों को दूध में धिमकर देवें । ज्वरातिसार हो तो नागरमोधा, पीपन, श्रतीस, काकड्रासिगी का यम्त्रपृत चूर्ण १-२ रची लेकर मां के दृध से देवें। श्रधवा लोध, इन्द्रजय, जायफल, बेलगिरी, इनकी मां के दूध में धिसकर देव ।

# वालक की मंग्रहणी।

लक्षण वह मनुष्य के ही समान समसे।
माजुष्टल और सींट दूध में विसकर देवें। पूर्व
कांधन व्यक्तिमार में जिन पाचन योगीं को कहा
है उनमें से कांई एक देवें। लहसन की एक जबई
में निल प्रमाण व्यक्तीस रख भूनलें और उसे घोट
कर दूध में मिला करके देवें। लवण भारकार की

बेलफल के धासे के साथ या उद्या जल से देवें।

# निद्रा में दांत खाना

यह बालक की पाचन किया में व्यत्यय श्राकर या मस्तिष्क में रक्त का द्वाव पड़ने वाले कारणों से श्रथवा मलावष्टंभ से श्रारम्भ होता है बाद में एक त्यादन पड़ जाती है श्रतण्य इसमें श्ररंष्टीके तैल का हलका रेचन|देकर पूर्वक्त कथित पाचक योगों में से किसो एक को देना श्रारम्भ करें।

# दुग्धगोट

गायक वृध पर पाले जाने वाले बच्चों को विधियत वृध न पिलाने से उनके पेट में छोटी मछली के आकार वाली गोटें जम्बी लम्बी जम जाती हैं। पेट बढ़ जाता है, फुलता है सल मुत्र, कक जाता है, डच्चे के समान लच्चा दिखाई देते हैं।

उपचार: - अगंडी का तेल मंदीणा द्य से या जिसला जल में जिसके देना। अथवा जिसला क्याथ बना कर प्रमाण से उन्न का मान देखकर देना। या विशिष्णी मृत के कशाथ में १-२ रनी पापड़ खार युक्त करके देना। अथवा १-२ रनी पापड़खार नाएक प्रमाण गुड़ और माना का दूध मिलित करके देना। छोटे करेने के पत्तों के रस में टंकण १-२ रनी फूलाया हुआ मिलाकर देना, गोमृत्र में हरड़ और हल्दी को जिसकर देना। इस रोग को सराटा, सायरा भी कहते हैं। इसमें पूर्व कथित दूध की गोट के अतिरिक्त पेटमें जाला सा जम जाता है।

# शिशुके यकृत श्रीर लोहाकी वृद्धि

बालक को बाल्य काल में बाई करवट मुलाने

की आदत डालने से उसके यक्कत का बोम जठर पर पड़ने से उमके पाचनमें व्यत्यय आकर प्लीहा वृद्धिहोती है और कभी यक्कत अधिक लटक जाता है याने बढ़ जाता है कभी उत्रगंश आदि कारणोंके रहने पर भी प्लीहा और यक्कत वृद्धि होती है, कभी कभी दृष्पित दुख के कारण भो ऐसा होता है कभी बालक को हमेशा गोद में ही टांग रहने से यह होता है क्वचित दृष्पित या कृत्विम दृष्प पान के कारण प्लीहा की समान बालक के पेट में दृष्की चीप जमकर भी प्लीहाबृद्धि का भाम होने लगता है।

उपचार: सरफोंका को जड़को माता के दृश्या जल में विसकर शांखवटी २ चावल प्रमाण देना किथवा लवणभास्कर २-३ रत्ती, बळ्लार १-चावल प्रमाण दृश्य यांश्रेमंदोषण जल से देना।

### कोष्ठबद्धता श्रीर श्राप्मान

मातृदुस्य के न पचने से, वायु से, माता के इम्बुचित व्यवहार से, गी दुस्य के न पचने से, यक्कन की खराबी से, कोष्ठबद्धता होकर वायु सरना मन कृत जाता है ब्यार आध्मान होता है (पेट कृत जाता है)।

उपचारः चड़ी हरड़, काजानमक, सीठ, वच, हीरा भूनी और फुलाया हुआ मुहारा। गोमृत्रमें चित्रकर देना। अथवा संख्वती गोमृत्र से देना अथवा लक्ष्म भारकर और वज्रवार प्रमाण युक्त मंदीया जल या दूध से देना। अथवा प्राव्या प्राव्योत, जब, पानी में चित्रकर नाभी के चारों और मण्डनाकार लेप देना दस्त होकर पेट साफ होगा। सीयाबीज, सीठ इनका क्याय शर्करायुक्त कर दे देना।

#### पसली चलना

सबने श्रीर फुफफुस नथा पसलियों के भीतरी
भाग में एक पतली जलसाबी त्वचा है उस
त्वचा से हुवा जलसाब फुंफफुस श्रीर पसली के
घर्षण काल में फुफफुस की रक्षा करना है, लेकिन
त्वचा पर शीत का प्रभाव पड़ कर कभी कभी वह
श्रिषक मिकदार में स्ववने लगता है उस समय
में फुफफुस की कियामें व्यत्यय खड़ा होकर श्वासीच्छवास की क्वा ह करना है। ऐसी दशा में
पेट के विल से वालक की श्वास लेना पड़ता
है और इसी से पेट जोगें से धमन करना हुआ
वार बार प्रमित्यों की ऊंचा उठाता है। इसी रोग
को प्रकी चलता कहते हैं। इस में श्वांस बढ़ता
है पेट बार बार चलायमान होता है, फुला रहना
ह धमिलिये बार बार उपर उठती हैं, नाक सुखना
हे अथवा बहता है सल मुखका इस्वरोध होता है।

उपचार—पात का बीड़ा बालक के योग्य हलका सा अलावें उससे १०-१४ दाने अववाईन. २ वावल अनाम सीठ डाल कर कृटे और नीचोड़ कर रस निकाल उस रस में उतरेंड के पुर्धों का घटणक झार निकाल रस १० वृदि, भुना सुद्धारा २ रसी डाल कर मधु और मो का दुध मिला कर बालक को पिलावे। स्वर्ण होंगी के पत्र का कलक दुध में सिलावे और हां कर पिलावे।

श्रपासार्ग पंचांग, पारम पीपल की दाल, नीम की द्वाल मत्र को जलाकर राग्व करे और नार विधि से भार निकाल । समय पर १ जावल भर प्रमाण में उच्छा जल से देवे। वश्र भार भी देना उत्तम हैं। माजूफल, मरोइफली, छोटी हरड़, कालाबोल, समभाग का चूर्ण कर, २ रत्ती प्रमाण इ्थ में देवे।

गोमूत्र में मिला कर पूर्व में कही घृटी देवे। अरंडी का तेल चटार्वे। 'कभी २ माता के अपध्य संबन से बालक के पेट में कफ के जाले से पड़ जाने हैं जिससे वायु की गति का अवरोध हो कर श्वसन किया में व्यत्यय खड़ा हो कर भी यह रोग होता है, इसे प्रायः समनी कहा जाता है, और मन लग्नण पमली चलने के ममान ही होते हैं पर यह चानक होता है। इस पर उपयक्ति कथित उपचारों के ऋतिरिक्त इनके। भी काम में ला सकते हैं। गामध को छान कर उसमें छुड़ थोड़ी इन्दी विसे बीर भुना देवाए २ रता जान कनद्वनीं की डांडी नपाक रहाँग वृक्ताका हंडाकर पिताबे। पेट की मैंक पेट पर अर्गड़ी के परी में अरंदी का तेल लगा कुछ गरम कर पैट पर यांच करेली की जड़ शिसूत्र में पिसकर देवे। करेले के पनों का या छोटे करेलों का स्वरम १०-१५ वृद्ध प्रमाण में इल्दी मैंधव युक्त करके देवे । नवमाद्र की मां के दूध में धिम कर देवे । भागरे का रम हींग युक्त करके देवे।

बालविष्विका (हैजा)

माता या बीलक के श्रजीमं से यह रोग होता है दम्न क्रय दोनों होने हैं मल मूत्र में बर्ब श्राती है हाथ पांच एँठने हैं। श्रीवबर्टी देना, श्रद्धकता रम और प्याजका रम, कपास फलकरस में युक्त करके देना। केशर श्राधी रन्ता नीम्बू के रम में घोट लबग्रभास्कर युक्त करके देना। प्याज के रम में हींग डाल कर देना,। बोप उपचार श्रतिसार श्रादि के समान ही करना।

# उत्फुालिका ( डब्बा पसली ) रोग का निदान तथा चिकित्सा

( लेखक--श्रायुर्वेदाचार्य पंo रामनारायण हपुँल मिश्र श्रायुर्वेदरत्न रायपुर C. P.)

( ऋायुर्वेदोक्त-संचिप्त-परिभाषा)

घनाध्मानं निरोधक्र स्वास कासादि संभवः।

उत्मुल्ल कृत्तिर्भवनि घन जीरस्य सेवनातः।।

यह रोग श्रम्य देशीय बालकों की अपेता
भारतीय बालकों में विशेष रूप से पाया जाता है
श्रीर उसका प्रधान कारणा भारतीय माताश्रों का
श्रम्य विश्वास तथा श्रिशिक्षा है। बहुधा मानार्ये
बालकों के रोने का एक मात्र कारणा सूक को
मानती है। जहां बालक रोने लगती है। कोई
कोई माता तो बालक की इच्छा न होते हुवे भी
श्रेमावेग में दुध पिलाने लगती हैं। इस प्रकार

श्रानियमित रूप से वालकों को दृध पिलाने से उनकी श्रादत विगड़ जाती हैं, श्रीर वे माता की देखते ही दृध मांगने लगते हैं। ऐसे वालक बड़े होने पर भी बार २ दृथ पिलाने के लिए तंग किया करते हैं। श्रिधकांश मातायें गर्भवती होने पर भी वालक के रोने के भय से दूध पिलाना बन्द नहीं करतीं श्रीर बच्चे भी थोड़े बड़े होने पर सरलता पूर्वक मां का दृध पीना बन्द नहीं करते, यहां तक कि पेट भर श्रन्त स्वान वाले बच्चे भी मां का दृध चुमते रहते हैं। इस प्रकार श्रनियमित रूप के दृध पीने तथा पिलाने का परिशास

# गुद्रम् श-काँच निकलना

यह रोग मिट्टी खानेवाले वच्चों की या आव मरोड़ वाले बच्चों की अथवा अतिसार पीड़ित बालक की, माता से दुर्बल हुये बच्चों की हाता है इसमें किचने पर गुदा बाहर आती है, रक्त गिरता है, क्बच्ति बड़ी उम्र के मनुष्य की भी यह देखने में आता है। कासीस के जल से गुदा धीना, माजूफल और फिटकरी की पानी में घोल कर गुदा धीना। सहदेखी के रस की हाथ में लगा गुदा दाबना। आम्रातक के पत्तीं

का रम पिलाना । हरड़, बच, कुछ, हर्नी, श्रज-बाईन दृध में विसवर देना । गाय के गोबर की पाटली बना सेंकना. कटेली को जड़ को दृध में विसकर देना । मंकासुर जिसके माड़ की फली चपटी बड़ी लांबी, फूल लाल, पने इमली के समान होते हैं स्टेशनों पर प्रायः लगाये जाते हैं उसके बीज का चूर्ण बुरका कर गुदा द्याना । बयूल की फली धव पुष्प के काथ में बालक को बैटाना । जासुन, आमला इनके पत्तों के काथ में बालक को बैठाना, कोमल कमल पत्र का रस देना । यह होता है, कि बालक बार बार उत्कृल्लिका रोग से पीड़ित होते हैं।

बच्चों के दांत निकत्तते समय दूध अधिक पीने से तथा अपचन से उन्हाल्लिका रोग उत्पन्त हो जाता है। दांत निकलतें, समय कमजोर बच्चों को खांसी, युखार और अतिमार कमशः अथवा एक साथ होता रहना है, जिसमें बच्चे निर्वल हो जाते हैं, ऐसी अवस्था में यदि दोगों की सान्ति-पातिक अवस्था उत्पन्त हो जाय तो उन्हाल्नका हो जाने की आधिक सम्भावना रहनी है।

मिध्या विहार ग्रहार के माता एकमात्रखाद्य दूध को दूषित भी बच्चों के रोग उत्फल्लिका उत्पन्न में सहायता पह चाते हैं। बहुत से वच्चे जन्म से ही उन्फल्लिका के शिकार बन जाने हैं। डाक्टर लोग इसे निमोनिया कहते हैं किन्तु आयुर्वेद में इसे बालकों को होने वाला पृथक रोग माना गया है। यद्याप इस रोग के बहुत से लक्ष् निमोनिया से मिल्ते जलते हैं, तथापि यह बड़े मनुष्य तथा म्ब्रं। को होने बाले निमोनिया से कुछ भिन्न प्रतीत होता हूं ' इस लिए इसे यदि 🖫 निमोनिया ही कहा जाय तो इसे बच्चों का निमो-निया कहना अधिक अच्छा होगा ।

यह रोग वालकों को होने वाने द्वन्द्वज ज्वरों की मान्निपानिक अवस्था का है। इस अवस्था के प्रारम्भ काल में ही जीवत उपचार होजाने से धीरे २ एक सप्ताह में रोगी आराम हो जाता है किन्तु किंचित असावधानों होने ही रोग भीपण रूप धारण कर देता है और ३२ घण्टे के अन्दर ही रोगी के प्राण ने लेता है।

#### सम्बाप्ति

जब बालक भारी दुग्व का पान करता है, तब उसकी जठराग्नि उसे ( दुग्व को ) पचाने में असमर्थ हो जाती है। दुग्ध का परिपाक ठीक न होने पर, उससे बना हुआ रस (क क्युक्त और दूगित हो जाता है। यह कक दूपित रस का मल है। जब प्रकृति द्वारा रस मंशोधन कार्य प्रारम्भ होता है, तब वह (कफ ) विवस्थलस्थित अवयवों में श्रोकर जमने लगता है, इस प्रकार कुनकुम, वांम नलो आदि कक से लिएत हो जाती है।

दृषित दुग्ध पान करने वाले बालक की पाचन किया विलम्ब से होते रहने के कारण यकुन कमजोग हो जाना है, उसके निर्वल होते ही जठरास्ति (पिन) भी न्युत होजाता है. श्रतः यकृत अन्न का पाचन, रस का रंजन और रक्त का शोधन उचिन मात्रा में नहीं कर पाता। बुदक भी दृषित रस से बने हुए रक्त की छानने में असमये सिद्ध होते लगता है। परिणाम यह होता हें कि मल क बिना छने ही रक्त को हृदय के पाल पहुंचना पड़ता है, अशुद्ध रकत की पाकर फ़फ़ और हदय जोरों से शोधन कार्य झारस्भ करते हैं शरोर में रकत की मंत्रालन किया जोरी से होने लगतो है, जिससे एक प्रकार की श्रम्ब-भाविक उपमा अवन्त होका रकत स्थित होगी को दम्ब करना प्रारम्भ करती हैं। इस प्रकार रस और रकत दोनों एक साथ कुपित होकर भयंकर उन्हल्लिका ज्वर उत्पन्न करते हैं।

मिश्या आहार विहार से नाभि के निचले प्रदेश में रहने वाली समान तथा अपान वायु कुपित होकर जब प्रतिलोम गति को प्राप्त होती है, तब कफ और पित्त को बिगाड़कर उनकी प्रधानता में कमशः उपरोक्त रस और रक्त को दूषित करती है। यही कारण है कि इस रोग में वायु की प्रबलता विशेष रूप से मालम होती है।

इस रोगकी प्रायः दो अवस्था देखी जाती हैं:—

(१) इसमें बात सध्य रहता है किन्तु पित्ता श्रीर कुफ कमशः उल्बरण (प्रधान) होते रहते हैं।

लक्ष गा- ज्वर का बेग १०४° से १०४ तक रहता है। कभी व्यर १०६ तक पहुंच जाता ह श्रीर कभी एकदम न्यून हो जाता है। नाड़ी कम-जोर हो जाती है, गला घड़घड़ाने लगता ह। निद्रानाश, तृष्णा श्रीर हृदय में पीड़ा होती ह। मल खीर गुत्र बहुत देर में और ऋल्पमात्रा में होता ह । पमलियां जोर से चलने लगती हैं, श्वास प्रश्वास में कठिनता और उपना मालम होती है। ज्वर के बेग से कफ सुख़ने लगता और फुसफुम और श्वास नली में प्रदाह उपन्न हो जाता है, खांमा आती है नाभीस्थान उठा हुआ रहता है और पसली के नीचे के भाग में गढ़डा पड़ने लगता है। विरेचन देने से काला, पीला लाल हरा कई रंग का बदब्दार कफयुक्त और दाह्यक मल होता है। मल निकलते समय शब्द युक्त बायू भी बाहर निकलती है। बायु के अनु-लोम होते ही पेशाय होता है और बालक की घवराहट और बेचैनी बहुत कुछ कम होजाती है।

(२) अवस्था—इसमें वात श्रधिक, पित्त मध्य और कक अल्प होता है। वालक थका हुआ-सा मार्द्धम होता है। चेहरे का रंग काका हो जाता है, खांस लेने में अल्पन्त कष्ट होता है। ज्वर का वेग १०३° से १०४° तक रहता हैं, दोनों पसलियों के नीचे गढ़े पड़ने लगते हैं। पेट वायु से भरा रहता है, छूने से कठोर माल्म होता है। सूखी खांसी आने लगती हैं, क्वता बढ़जानी हैं। रूवता के कारण फुस २ प्रदाहयुक्त होकर सूज जाते हैं। नाक सूख जातो है, बालक मुख से श्वांस लेने लगता है, मूछ का विसर्जन अति विलम्ब में होता है।

### चिकित्सा

इस रोग में कृपित दोपों के अंशों की कल्पना सरलता पूर्वक नहीं की जा सकती। इसमें कभी पित्त बढ़ा हुआ माल्म होता है तो कभी कक और कभी दोनों। कभी कक को शमन करने से पित्त बढ़ने लगता है और कभी पित्त के शमन होने से कफ़ की वृद्धि होने लगती है। इसलिए उत्किल्लका में वात पित्त को शमन करने बाली मध्यवर्ती चिकित्सा करना चाहिए। इसमें वसन श्रोर विरेचन दोनों हितकारी हैं। अनुवासन वस्ति द्वारा वाय को अनुलोभ करने से दोनों दोप सर-लता पूर्वक शमन हो सकते हैं। चिकित्सक सर्व प्रथम वायु का अनुलोम और शमन करने का उपाय करे । वायु के शांत होते ही ऋत्य दोप आप ही आप शांत होजावेंगे। वायु के अनुलोम होते ही दूषित कफ और पित्त स्वयं शरीर से बाहर निकलने लगते हैं। याद केवल बाय ही अपनी प्रधानता से बिगड़ा हो तो वह भी अनुलोम होते ही शांत होजावेगा, इमलिए इस रोग में वायु को शीध अनुत्रोम करने वाली औषधियों का प्रथम प्रयोग करना चाहिए।

### (१) उत्फुल्लिकांतक वटि (स्वकृतयोग)

गोरोचन है तोला, उसार रेबंद १ तो०, शुद्ध मुहागा २ तो०, मुलेंठी ३ तो०, नामी शंख की भस्म २ तो०, गोदन्ती हरताल भस्म २ तो०।

विधि—सत्र को पत्थर के खरत में डालकर पान के रस में ५२ चण्टे चोटे। एक रनी की गीतियां बनाकर छाया में सुखानें। मात्रा एक गीली से र गीली तक। अनुपान—शहद पान का रस. मां का दूध, इशमृत का क्वाथ। गुल्- उपरोक्त कथित समस्त नजागीं सहित रोग की नाश करता है।

# २-उत्फुल्लिकारि

तीरवहदी १ तीं ०. शुद्ध चाकिया मोहागा १ तीं ०, उसारे रेवेड एक तीचा, मुवर्णमानिक एक तीं चा, मुवर्णमानिक एक तीं ०, नामि शंत्र भरम १ तीं ०, सितीयलादि ४ तीं छ। व्याप-स्वकी २४ पंडे तक त्यूब मर्चन कर शीशी में अर कर स्वन्ते। च्याप्यात-मा का द्य करम् कर काथ। नमय-रेगा के ल्डिंगा- गुलार दिन में तीन चार जार । मात्रा- १ रेनी से २ रेनी तक

### १-व्याधिमीयन रम

वीकिया सुरामा १८० र तेल उलारे रेथंड् १ तेला, मोरोपन १ तेल अब नका का ३ मा०, कस्रो भा मामा।

विधि-समस्त श्रीपाधियों की खरण में डाल कर कंटकारी, भूगेंगाज, श्राग करेले के पत्ती के रस में कमशा श्राट २ घंटे की भावना देकर आही रसी से १ रसी तक की गीली वनावें। अनुपान—मां का दूध तथा वंगला <u>पान</u> का रस।

गुण-सर्व लक्षणीयुक्त डब्श रोग को ममूल नाश करेगा। इसमं चायु को अनुलोम । करने की अद्भुत शक्ति है।

## समयानुकूल तत्कालिक सरल चिकित्मा

- (१) नाक सुखने पर गाय का शुद्ध वी एक दो वृंद नाक में डालना चाहिये।
- (२) फुण्कुस के आकात्त होने पर एन्टी-प्रलोजिस्ट का लेप करना चाहिये ! बच्चे के बचस्थल और पसलियों पर एक पतला कपड़ा लपेट कर उन कपड़े पर अलसी और सरसों का गर्म लेप करना चाहिये। निमोनियां की टालव में बच्च स्थल की सरम रखता उन्हाम है।
- (३) पंत पृत्यंत पर पेट की एरण्ड के लेप से संकता त्याहिये। हींग, लेघा नमक और अजवाहन का कुलकुना लेप पेट पर कराना त्याहिये। श्राय वहां, अदित्य रस डादि आची रत्ती की माजा ने प्रयोग करना व्यक्तिये।
- (५) मलावरेख में अनुवासन वास्त के द्वारा लिख हात:काल पेट के मल को शीब राहर निकाल देना चाहिये। साम अवस्था में, वसन विशेचन द्वारा दायों को बाहर निकाल कर दोषों की शिक्त के कम करना बुद्धिमानी और दूर द्विता प्रदर्शित करने वाला कार्य है।
- (४) पेशाय न होने पर पत्थर वेर को थिस कर नाभि पर लेप करना चाहिये।
  - (६) अत्यन्त कमजोर चालक को संशोधन

श्रीपिध न देकर पाचन छौर शमन करने वाली श्रीपिध देना चाहिये । श्रादित्यरस, शंस वटी, व्याधिमोचन रस (श्राल्प मात्रा में ) मुक्रण वसंत मालती, शंख भम्म, फुलाया हुआ सोहागा आदि । होपों को पाचन श्रीर शमन करने वालो श्रीपिव्यां हैं, इनमें से किसी एक का प्रयोग करना चाहिये । श्रमुवामन वस्ति लगाकर मलाशय को शुद्ध कर देना चाहिये । श्रमुवामन वस्ति न प्राप्त हो। सके तो मायुनकी बनी गुद्दा में प्रवेश कर मल निकाल देना चाहिये । १५न मन वाले निवील वालक के मलाशय की शुद्धि श्रावश्यक नहीं, इसके रोग को शमन श्रीर पाचन श्रीपिधयों के हार। ही लीतने का प्रयन्त करना चाहिये ।

(अ) यालकों की चिकित्सा में वैद्य को भीरज पुरिस्ता से काम लेना चारिये। कोई भी योगपिकी मात्रा कुपिन बोधों के अव्हों को बिना जाने न निश्चिम करना चारिये। एकडम शीवल भीर उपए उपचार करना हानिप्रद है । वैद्य के साथ २ घरवालों का भी कर्तंत्र्य है कि वे वैद्य के आदेशों का अन्नरशः पालन करें। जवनक बालक सिन्तपःतिक अवस्था से परे न हो जाय तबतक दूध नहीं पिलाना चाहिये। दशमूल का अर्धाववेष क्वाथ पन्द्रह २ मिनिट में चम्मच से पिलाते रहने से कृपिन दोषों का क्रमशः शमन और पाचन होने लगता है। पकता हुआ निष्केत वेग रहित और दोपहन जल बालक की पीन देना चाहिये। दानाः द्रादिम आदि का तर्पण अन्य मात्रा में बार २ देन रहने से बानक के पन की हानि नहीं होती।

(द) अत्यन्त दाह में वकरी के द्ध का लेख हाथ पैर ए तनुश्रों में करना चाहिये। मस्तक पर भी उसका फोल्या रखना हितकारी हैं। निहासाय में वयरी का दूध आंख में बार बार डालें। रहने से बालक यो थोड़ी तींद आने लगती हैं।

# प्रत्येक माता विवा कहलाने वालों को अस मन्देश

यनवीं के पस से रोग ( न्युमोनियां ) की क्रिक्सिय कैंगप

# कुमार कल्याणक कषाय

जय कि होटे बन्नों को खांसी य पमली चलना इत्याहि रोग हो जाये तय प्राया वे कमजीरों के कारण उन पल तम को बाहर निकालने में दूसमध्ये हैं ति हैं जिसके कारण उनका धास कक कर वे मृत्युमुख में चले जाते हैं, ऐसे मझंकर साथ में छाप हमारो इस जराया को तीन ही मात्राओं का चमत्कार देखें। इसके सेवन से कक, खांसी पसनी चलना युवाय, जुकाम, पेट का छाफारा शीब दूर हो कर शिशु मृत्यु सुख से बच जाता है। बड़ी उत्तम द्वा है, प्रत्येक बच्चे वाले को पास रखने थोग्य है। कीमत फो शीशी।।)डाक व्यय प्रथट।

पना--वृहन् श्रायुवेदीय श्रीपथ भाग और जीहरा वाजार, देहली ।

# सूतिका आक्षेप Puerperal Manir

( ले० - डा० भवानीप्रसाद गुप्ता ( उत्साही ) आयुर्वेद शास्त्री एम० बी० प्रोप्राईटर दि लहमए। मैडिकल हाल रसरा यू० पी०, बांच महेन्द्र पो० पटना )

किसी २ प्रसूता को प्रसव के पूर्व या पश्चात एक प्रकार का आचेप देखा जाता है जो निस्न प्रकार है:—

श्रचानक श्राचेप होकर प्रस्ता संझाहीन होकर धराशायों हो जाती है, शिरा और स्नायुश्रों में तनाय होती हैं श्रीर मुख की श्राकृति विकृत हो जाती है, श्रांखें यूमने लगती हैं, रमना बाहर श्रा जाती है मुख द्वार से रक्त मिश्रित माग उठने लगता है। ऐसी श्रवस्था १४-२० मिनटों तक रह कर स्वारूथ्य लाभ करती है यह दशा बार २ हो सकती है।

### स्विकोन्माद

प्रसव के बाद दुग्ध पिलाने की अवस्था तक ये रोग होता है। इसका कारण भय चिन्त। निर्व-लगा और शक्ति से अधिक समय तक दुग्धपान कारण है, रोगिएपी की आकृति पागल की तरह होतो रहती है। अचानक दुग्ध और मूत्र बन्द हो जाता है।

#### शीवोत्पन्न शिशु का स्वास्थ्य

यह जानने के लिये कि पैदा हुवा शिधु स्व-स्थ है अथवा अस्वस्थ यह जानने के लिये अनेक साथनों की आवश्यकता है किन्तु वह हमारे गृह-स्थों के लिये असम्भव सा जान पड़ता है। ऐसी सूरत में शिधु की छाती और पेट माप कर उसी के अनुसार वजन जान कर फिर हदय स्पन्दन

नाड़ी को फड़क और फुफ़ुम इत्यादि की परीज्ञा करनी पड़ती है। देखिए धात्रीविद्या (Nursery या Midwifery ) एक सुयोग्य चिकित्सक केवल श्रांबों से देख कर ही स्वास्थ्य निश्चित कर सकता है यह कोई बड़ो बात नहीं है । साधारणतया शिशु जब योनि द्वार से बाहर होता है तो उसी समय जोर से चिहाना या रोता है यही स्वस्थता की निशानों है, जब शिश्र योनि द्वार से बाहर होते ही न रोवे तो उसे श्रस्वम्थ जान रुलाने की चेटा करनी चाहिये इस समय के हदन से फेफड़े में बाय प्रवेश कर उसे फैला देती है जिसके द्वारा श्वास प्रश्वासको किया होने लगती है। जिस समय शिशु योनि हार से बाहर हो उसी समय उसे माफ कपड़ों अथवा जल द्वारा साफ कर देना चाहिये । यदि मुख, नाक, श्रांख, कान इत्यादि इन्द्रियां मेद से भरे ही नी उसे सावधानी से साफ कर देना चाहिये और साफ बाय में ले जाना चाहिये। जब शिशु के रुदन में विलम्ब हो रहा हो तो समभना चाहिये कि प्रसब बेदना देर तक हुई है और प्रमय में विलस्व हुआ 🕻 । ऐसा अवस्था में शिशु का दम वन्द होकर मृत्यू तककी आशंका होती है, किन्तु इस समय उजलत नहीं करना चाहिये क्योंकि मृत्यू देर से होती है मगर शिशु मृतवन दशा में देर तक पड़ा रहता. ह, ऐसी दशा में फुलालैन या कोई गरम मुलायम

वस्त्र से अथवा मोटे और सूती कपड़े से ही शिशु के बदन के गर्दन के नोचे के कुल हिस्से ढक देना चाहिये और शिशु के मुंह पर शीतल जल के ब्रीटे देते रहना चाहिये। यदि अवस्था में कुछ भी मुधार न दिखाई दे तो उसकी छाती पर भी कभी कभी शीतल जल के ब्रीटे देना चाहिये यदि इस पर भी अवस्था न मुधारे तो शिशु की नाक बन्द कर उसके मुंह में जोर से फुंक देना चाहिये। जब देखे कि फेफड़े फुन गए तो शिशु की छाती को धीरे धीरे दबा कर हवा निकाल देना चाहिये और फिर नाक बन्द कर फूंकना और हवा निकाल देना चाहिये और फिर नाक बन्द कर फूंकना और हवा निकालना चाहिये। ऐसा बार २ करने से कुद ही मिनट में हदयम्पन्दन और नाड़ी यलने लगती है फिर कोई भय नहीं रह जाता।

शिशु नाभि

नाभि छंदन का रामय भी शिशु के लिये जो खनरे से धाली नहीं है नाल काटने के लिये जो हाछ (नाक या केची) हो वह नृतन छौर तेज होना चाहिये। और उसे गरम पानं ते लुए नो ता देना चाहिये, ताने के। भी इसी प्रकार खाला देना चाहिये और फिर साफ कपें से पीछ पीछ कर बायु के कीटासुओं से बचा रचने के लिये किसी पात्र में छिपा देना चाहिये पात्र, तिर्मल श्रीष्ट होता हैं और वह वर्तन भी गरम पानों से शुद्ध किया होना चाहिये, नाल काटने वाली दाई युवा सुन्दर और प्रसन्त चित्त की होनी चाहिये और उसे उपदंशादि कोई रोग न होना चाहिये अन्यथा शिशु का भविष्य निरापद न होगा। प्रसंब के पूर्व ही गर्भवती को साफ कपड़े पहना देना चाहिये, खीर दाई को गरम जल तथा साबुन से स्नान

करा कर साफ कपड़े पिन्हा देना चाहिये, फिर जब नाल काटने का समय हो तो उस के हाथों को पहले मावुन श्रीर गरम पानी से साफ करा कर परमैंगिनेट पोटाम के लोशन श्रथवा पियोर ईथर से घुला कर फिर गरम पानी से घूला कर साफ कपड़े से पोंड़ देना चाहिये। नाल काटने वाली दाई के हाथ कस्पित न हों इस पर विशंप ध्यान देने की आवश्कता है। दाई चतुर और क्वालीफाइड होनी चाहिये मृत्यी दाई सब कुछ होने पर भी कुछ गलनी अवस्य ही कर जाया करती है। जिस का परिग्णम प्रमृता या शिशु दोनों में से एक को अवश्य ही भोगना पड़ता है। जब तक नाल शिशु की नाभि और प्रमुता की योनि से लगा रहेगा तब तक शिशु के शरीर से माता के शरीर में और माता के शरीर से शिश के शरीर में रक्त बरावर छाता जाता रहेगा इस निये जब शिशु के शरीर में रक्त भरेगा तो शिशु चैंतस्य श्रीर तस्टुक्स दिखाई देगा श्रीर जब माता के शरार में रन्ध भरेगा तब शिष्टा सम्ब और अम्बस्य दिवाई देगा नाल बांधते समय इस बात पर बरावर धान रखना चाहिये। जन देखें कि रक्त शिशु के शरीर में भर गया है और शिशु की श्वाम १२राम किया ठीक है तथा नाल का स्पन्दन बन्द हो गया है, तब नाभि से ड़ेंद्र दो इ'च दूर पर मजबूत गांठ देना चाहिये फिर एक ऐशी ही गांठ धोड़ी दूर पर देना चाहिये और बीच में से सावधानी से काट देना चाहिये । नाल काटने के बाद जब तक शिश को स्नान न करावा जाये, तव तक गरम कपड़े से इक कर रखना चाहियें फिर स्नान कराने के बाद एक साफ कपड़े की कई

तह करके बीच में से काट लो जिस से कपड़े के बींच एक गोल छिद-०-हो जावे। यह कपड़ा चपतदार कम से कम एक बालिश्त का होना चाहिये छिद्र में नाभि डाल कर दोनो सिरे कपड़े के दोनों पार्श्व के तरफ लगा देना चाहिये फिर दो इंच चौड़ा साफ कपड़ा लेकर उसे लम्बा ही चार चपत कर लेना चाहिये। यह कपड़ा लम्बाई में ४-४ इंच होना चाहिये इस चपतदार कपड़े को उंगली में या किसी चिकने लकड़ी में लपेट कर निकाल लेना चाहिये यह आकार में पाइप की तरह होना चाहिये छौर इस के भीतर नाभि प्रवेश कर पहले कपड़े के छिद्र पर इस प्रकार रखना चाहिये 🕝 यह पाइप नारियल के तेल में भीगा होना चाहिये, इस पाइपदार कपड़े से जो भाग नाभि का निकला हो उसे पेट के तरफ मोड देना चाहिये और उपर से एक मोटे कपडे को रख बांध देना चाहिये नाकि नीचे के कपड़े और मुहा हुआ नाभि हुटने न पाये कपड़ा बांधने ममय यह भ्यान रावना चाहिये कि कपड़ा कम न जाये, प्रतिदिन एक बार ऐसा हो करना चाहिये।

#### स्नान

नाल काटन के बाद शिशु के समम्न शरीर में नारियल या मरमों का तेल मलकर गरम जल से म्नान कराकर मुखे और साफ, कपड़े से बदन खूब अच्छी तरह पींछ देना चाहिये जिमसे तेल और पानी सभी खूट जाये फिर मूखे और साफ कपड़े से डक देना चाहिए। प्रतिदिन जल की चयाता कम करने जाना चाहिए, नाकि के - धदिनों में बह शीनल जल प्रयोग के योग्य वनजाय। खिशु के कपड़े हमेशा साफ और शुद्ध होने चाहिये, माता (प्रसूता) को भी सदैव साफ सुथरा रहना चाहिए शिशु श्रीर प्रसूता दोनों को मुलायम बिम्तर रखना चाहिए, श्रीर रहने का स्थान बिल्कुल साफ सुथरा श्रीर हवादार हो, तथा धुनां धूल से वंचित रहना चाहिए।

#### मल

शिशु योनि द्वार से बाहर होने के कुछ देर बाद पन्ताना (मल त्याग) करता है। यह सर्ब-प्रथम मल गोंद की तरह चिप चिपा काला गांडा या सन्जी लिए हुवे होता है, कभी मलस्याग में विलम्ब भो होता है जिसके कारण पेट अफर जाता है, और कुछ पेट में वेदना भी होने लगती है। ऐसी अवस्था में शिश को निदा का अभाव होजाता है, और हाथ पांच तथा शरीर एँठते लगता है। ऐसी हालत में यदि माता का दूध पिला दिया जाये और खारी नमक ४ रत्ती कापूर आयल (अरंडी का तेल) १। माठा एक चीनी के खरल में खब चोटकर बरासा गरम कर नाभी के चारों नरफ लगा दिया जाये. और पान की एक नली ( इंडल ) तेकर उसपर काष्ट्रश्यल फिलमरीन लगाकर गुदा मार्ग में प्रवेश कर भीनर बाहर करने से पाग्याना बाहर निकल श्राता है। किन माना का दथ पीने के कुछ देर इ'तजार कर यह किया करनी चाहिए क्योंकि माना का दूध भी विरेचन का काम करता है।

#### घनुष्टंकार (Tatanus)

कारगः:

जन्म के दूसरे दिन से लेकर एक मास के अन्दर तक यह रोग प्रकाश पाता है, यह रोग अधिकतर नाल काटने के ही दोष से होता है। तथा अन्य भी कारण हैं जैसे "गन्दगी" गन्दे गृह, गन्दी हवा, गन्दे कपड़े, प्रसूता के भोजन का दोष, नाभी में पेव पड़ना हत्यादि।

#### लजग:--

श्रारंभ में श्रधिक नदन, जबहों का बन्द होना,
मुख नहीं खुलना दूध नहीं पीना हाथ पांच का
कठिन होना, एँठ जाना, मुख से माग (फेन)
निकलना, प्रायः शरीर एठकर धनुष की नरह
आगे या पीछे की तरपः देदा होजाना (YoineContractor or Canveltion) नेश्र की पुतनियां कीने की तरफ, चली जाती हैं. और श्रांख
खुली श्रीर फैली हुई होनो हैं। इस प्रकार
यार बार शालेप (फिर)श्राता रहता है, स्वास कष्ट,
नाही अल्यन्त द्वागामी, कभो तीव ज्वर भी

होता है, मांस पेशियों में वेदना, प्यास की श्रधिकता मुख गला और जीम का सूखना, कोष्ट बढ़, कभी मूत्रावरोध भी होता है, श्रानिद्रा, रोगी का संबाहीन नहीं होना, सांइस्फेटिक (एलो पैथिक) के मत से क्रिटल बेसिलस ( Baistle Bacillus ) नामक जीवाणु हो इस रोग का कारण होता है श्रीर इसमें मृत्यु संख्या श्रधिक होती है।

नोट: —यदि गाल, होठ और कंठ सुसे हों शरीर और नाखून का रंग नीला हो दिल धड़कने लगे, अथवा दिल की चाल और शारीरिक उप्णता घटने लगे तो ऐसी अवस्था में भूतकाचा का स-न्देह होता है। पेट की गड़बड़ी से शिशु इटपटाता है और सोता नहीं है इसलिये शिशु और माता दोनों के खाद्य पदार्थों पर विशंप ध्यान रखना चाहिए। (इतिशम्)

# बच्चों के कमेडे की रामबाण दवा

इस भयँकर रोग के दौरे कितने ही जल्दी २ अथवा देर तक क्यों न आते हों, हमारी इस खानदानी दवाई के सेवन करने में ही इस रोग से सदा के लिये शीघ ही छुटकारा मिल जाता है। मूल्य फो शीशी ॥) आने । डाक व्यय पृथक ।

पता-- बृहत् आयुर्वेदीय श्रीषध भाण्डार जौहरी वाजार देहली



# बच्चे का स्वार्ख्य



( ले॰-प्रधानाध्यापक व चिकित्सक, दा श्रीतम होम्यो पैथिक

टू निक्न कालेज मेरठ शहर )

प्राचीन समय में जब मन्ष्य कठिनाईयां सहन करने के अभ्यस्त होते थे तो शैशवावस्था से ही माताएं श्रपनी प्रिय सन्तान को कठिनाइयां सहन करने का अभ्यस्त बना देती थीं। बच्चों को कटोर एवं पथरीली पृथ्वी पर शयन कराना-व्यायाम कराना-खेलने-गृहने देना स्वतंत्रवा से व खड़न्दवा से इच्छानुसार दोइने, खेलने देना । ज्याद: गीह में लिए २ न फिरना क्योंकि इस से शिशु कोमल हो जाते हैं और सदैव रोगी ही यन रहते हैं। एक वार हमने किसा पुस्तक में अवलोकन किया था कि जर्मनी में प्रथा थी कि वहां पर प्रसर्वोपरान्त कीमल शिश की गईन नदी के बकीने टेंड जल में स्तान कराया जाता था नाकि वहां की नीहण शीत को बह बनचे लहन अपने के अध्यक्त है। जाएं। परन्तू भारत करणप्रधान देश है इसलिए यहां पर उद्धार जल से स्नान कराना शिशु के लिए व्यक्तिश्व हित्रसर है। प्रस्व से छ: साम पायस्त ऋतु के अनुकृत लगेर तालमान के सहस उद्या जल से तैलाम्बेगीपरात्त म्लान कराना चाहिये। अन्युत्तम हो कि आम जल म थोड़ा साबुर-या सोड़ा अथवा एक काराजी सीम्यू का अर्क डाल लिया जाए। हमारे विचार में १ । 😄 मास की ब्रायु के बाद बजाए फरण, जल के स्वच्छ ताज जल से स्नान कराना अत्यन्त स्वास्थ्यवर्द्ध क है। पर इस में भी १ कानजी नीम्बूका अर्क

चाहिए श्रीर स्तान से पूर्व नैनाभ्यंग इत्वश्य कर लेना चाहिए। बच्चों के सर पर एकदम जल का तरड़ा न दें क्योंकि इससे सुबकिंश्याजाती है श्रीर ठन्ड होने या दम युटने का भय रहना है इस से उचित है कि एक टीत के बड़े टब में बैठा कर



(इस वश्चे का शरीर कितना सथा हुआ है पाठक जरा ध्यान से देखे)

स्तान कराया जाए। एतर ४ भिन्ट से स्वादा टबमें न बैठाना चाहिए। पाना से निकाल कर माफ ब मुलायम नेलिया से भली प्रकार स्वस्छ करके किसी मुलायम कपड़े में टक कर श्रीर गोदमें लेकर राने २ हिलाने बुलाते रहें सदुपरान्त दुरधपान कराना चाहिए। स्नान ऐसे स्वान में कराना चाहिए कि जहां पर बायु का तेज कोका न आता हो एत-दर्थ वन्द कमरे में स्नान कराना अत्युक्तम है। दुम्ध पानोपरान्त स्नान कराना अहिनकर और रोगोत्पादक हैं।

### बच्चों का व्यायाम

प्रमयोपरान्त के बद्नसे स्पष्ट हैं कि नवारांतुक शिशु किसी कष्ट या श्रुचा के पीड़ीत होकर रदन नहीं कर रहा है यक्ति स्वच्छ वायु को अन्दर प्रविष्ट करके पुरक्तमों को संचालन करनेका प्रयत्न यर रहा है स्वायकास क्रिया से रक्त का संचार शुरू हो जाना हैं । स्वन्छ वायु प्रत्येक जीवके लिए अध्यन्त आवस्यक पदार्थ है। गर्भावस्था में शिशु ये फुफ्स भिने और सिकुड़े हुए रहते हैं, श्वांस किया वन्द्र रहते। हैं श्रीर सारा कार्य श्वांस व पापण का जराय द्वारा ही होता रहता है परन्तु प्रसब के बाद उसमें बहुत बड़ा तबदोलियां होजाती हैं। सर्व प्रथम जराय स्पन्दन मस्तिष्क में बन्द होता है तदोपरान्य शर्ने २ नीचेक अवयवींमें बन्द होता हुआ नाभी में रुक जाता है और जराय ढीला पड जाता है तो समस्त रक्त संचालन क्रिया बच्चे के शरीर में बन्द होजाती है आर यह वही समय होता है जब कि बच्चे के चिल्लाने काशब्द मुनाई देता है। इस रुदन से वायु उसके फुफुसों में प्रविष्ट होती हैं इसलिए सीर गृह ऐसे स्थान में हो जहां शुद्ध स्वच्छ वायु का पर्याप्त मात्रा में मंचार हो। सूर्यरिम भी आती हों ताकि हानिपद और सूदम कीटाणुत्रों का संहार होता रहे और जच्चा व बच्चा के स्वारध्य पर बुरा प्रभाव न पड़ सके कार्स कि एक मास तक वच्चे को अस्तवर्ष की प्रथानुसार गृह से बाहर निकालना श्रशुभ सूचक बतलाया जाता है और दरअसल हूँ ठीक भी क्योंकि कोमल शिशु बाहर की सर्द गर्म व नीच्ण वाय श्रादि को कोमलता के कारण से सहन नहीं कर सकता श्रीर रोगी हो जाता एक मास के बाद प्रात: मार्य मानाएं खुद वच्चों की लेकर खुले स्थानों बाग बगीचीं में शने २ भूमण किया करें इमसे स्वास्थ ठीक रहना है और शीध ही शिशु व माता हुन्ट पुज हो जाते हैं। वच्चों को खूब ख़लने कृदने भागने दीड़ने देना चाहिये क्योंकि यही उनके हुट पुष्ट श्रीर म्वारण्य ठीक करने का सर्वीकृष्ट साधन हैं। अपने आराम की खानिर बच्चों को खेल कृत् व शारागुल से रोकना नहीं चाहिये, क्योंकि वचपन में भी ब्यायाम की उतनी ही आवश्कता ह जितना अधेड़ उमर में। छोटे वच्चों का व्यायाम इतना ही पर्याप्त है, कि उन्ह खूब कसे हुए पलंग पर लिटाद ताकि वह स्वच्छन्दता पृथक हाथ पेर हिला कर व्यायाम कर सर्के । ४-४ माम सफ बच्चां की बैठाना या खड़ा करना हानिकारक हैं। क्योंकि उनका का नल व लचकदार पीठ व मोवा की अध्यया शरीर भार से मुक जाती हैं इस से वच्चा सारी आयु के तिये कुबड़ो ही नहीं बल्कि उसके फ़ुरहुस हृदय और मेदे पर भार पड़ने से पाचन किया खराब हो जाती है। बच्चों को क चा उदालना कुराना भी झानिशद है तथा साथ मं शयन कराना भी स्वास्थ्य काशक है। कारण कि विकानवेत्ताओं ने यह प्रमाखित कर दिया है कि दो मनुष्यों के एक साथ शयन करने से जो मनुष्य हुष्ट पृष्ट होगा वह जीए या कमजोर मनुष्य के शरीर वाईलंट पोर्म(Vitality) अपनी
श्रीर खींच लेगा श्रीर कमजीर मनुष्य श्रीर भी
व्यादा कमजीर हो जायेगा यही कारण है जो बड़े
मनुष्य या माता के साथ बच्चों को शयन कराने
से वह सदैव रोगी श्रीर जीए बने रहते हैं।
सदैव बच्चों को भलो प्रकार ऋतु अनुकूल बस्त
पहना व उदा कर पालने में प्रथक शयन करने का
अभ्यस्त बना देना चाहिए। इससे एक तो खारण्य
टीक रहेगा दूसरे समय पर ही बच्चा जुधित
होकर दुग्यपान कर सकेगा यह नहीं कि पास लिटे
रहने से जब आंख खुली दूध पीना शुरू कर दिया
श्रीर श्राजीण से प्रसित होकर वमन, दस्त होने
लगे श्रीर रोगी वन गया।

बच्चों के रोगों की चिकित्सा का प्रकरण बहुत बृहत है इसलिए हम उस प्रकरण को यहां पर न लेकर नृतन विधि से बिना श्रीपधि के चिकित्सा व्याख्या करते हैं इससे यथेप्ट लाम होगा। एक वर्ष के रैश मानों की व्यख्या करते हैं, इसी प्रकार प्रथक र मास में किस रत्न की पूजा करनीव किसको धारण करने से रोग शांत होता है व्यारेवार श्रांकित करते हैं। जिस माम में वच्चा रुग्ण हो कोष्टकानुसार एक धारण कराना श्रोर पूजा करना तत्वण रोग शांत करता है, इस वात का हमने सहस्त्रों वार श्रांत करता है, इस वात का हमने सहस्त्रों वार श्रांत करता है, इस वात का हमने सहस्त्रों वार श्रांत करता है, इस वात का हमने सहस्त्रों वार श्रांत करता है, इस वात का हमने सहस्त्रों वार श्रांत करता है, इस वात का हमने सहस्त्रों वार श्रांत करता है, इस वात का हमने सहस्त्रों वार श्रांत कर किया है, व्याप भी श्रांत करके हमारे परिश्रम की सराहना करें श्रांर श्रंपची प्रिय सन्तान को कड़वी श्रांत तीच्ण श्रोंपधियों के विषों से वचायें।

ाम माम	महीना	कीनमा रन्न धारण कराना चाहिए	किस रत्न की शिव मृति वना
			पूजना चाहिए।
माघ	जनवरी	गो सेदक	मेंदर अरोर्ड
फाल्युन	परवरी	एमीथ <u>े</u> स्ट	चन्द्रकानत
यें त्र	मार्च	<b>संग</b> यमव	स्वर्ग
वैमाख	श्रद्रेत	नीलम	हीस
बंद	मई	धर्काक	पन्ना
आपाद	न्न	पन्ना	मुक्ता
श्रावगा	जीलाई	पालंक	नीतम
भाद्रपद	श्रमन	स्त्राच	मांगाक
क्वार	मिनम्बर	कारकीनक	गीमेवक
कार्तिक	अक्टूबर	पारीभद्र	प्रचाल
श्रमहन	नवस्वर्	पुष्पगग	लहमनियां
पृष	दिसम्बर	नाल	पुष्पराग

महीं की शांति के लिये जिस मह का श्रकीप हो। उसका रत्न धारण करने से शीघ राग दूर होकर आरोग्यता प्राप्त होती है।

नामपह	इसके प्रकोप में कीन रत्न धारण करें	
सूर्य	माग्गिक्य	
चन्द्र	मुना	
<b>मंग</b> ल	मृ'गा	
बुद्ध	पन्ना	
बृहस्पनि	पुष्प राग	
शुक	हीरा	
शनिवार	नीलम	
गह	लहस्रानया	
केतु	जरकुर	
againmag a	with emphasial commonwealth and an experience and	

रत्न की धारण कराके वच्चे की सावधानी

से'रखना चाहिए ऐसा नहीं कि किसी उचक्के को मौका मिल जाये और बच्चे को प्राणों का भी भय हो जाए। रत्नों का शरीर से स्पश करते रहना ही फलप्रद होता है इस वास्ते स्वणीदि धातु में भली प्रकार जड़वाकर शरीर में पहनाव और उपर से कपड़ा पहनादें। जो भी रत्न धारण किया जाए २ रत्ती से कम का नहीं अन्यथा कोई लाभ नहीं होगा। रत्नों की परीक्षा पर आगामी अर्थ में प्रकाश डाला जाएगा खूब परीक्षा करके रत्न लेने चाहिए।

# सौभाग्य वटिका

## मासिक-धर्म को ख़राबियों की लाजवाब दवा

श्रवसर श्रीरतों को मासिक धर्म (माहवारों) में नलों में महत दृष्टे हुआ करता है। जिस-से वह घवरा २ उठती है। माहवारी यहुत कम या बिलकुत नहीं हाता। श्रार अकसर माहवारी के दिन गुजरने के परवात मिकदार से बहुत श्रिधिक हो जातो है। कड़यों के शुह्न में ही अधिकता से खून गिरता और कई रोज तक जारी रहता है। इस प्रकार की व्यावियां गर्भ को गिराने बाली होती हैं श्रार गर्भ कदापि नहीं रह सकता। इस बोमारों से जुटकारा पाने के लिये हमारी तैयार करदा "सोभाग्य विका" माहवारी के दिन से एक सप्ताह पूर्व सेवन करनी चाहिये। इस के सेवन करने से मासिक धर्म के मुतालितक कुल व्याधियां नष्ट हो जाती हैं। यदि दर्द के समय खाई जावे, तो दर्द फीरन बन्द हो जाता है। कैसो ही पुरानी बोमारी क्यों न हो उपर्युक्त वरीके से ३ मास तक सेवन करनेसे पूर्ण्तया श्राराम हो जाता है।

मृल्य ४८ गोलियों की एक शीशी का ६) रूपये। डाक व्यय प्रथक।

बृहत् आयुर्वेदीय श्रीषध भाण्डार जौहरी बाजार, देहली।

# बच्चे का स्नान, शिशु का आकार और वजन

(लेक-चैद्यराज डा० धरणीधर शर्मा वैद्यशास्त्री L. M. S. H. M. E, बायवैदाचार्य, कछवा मिर्जापुर I

भ्दीपनं वृष्य माय्ष्यं स्तानमोजो बलप्रदम् । कंड्र मल श्रमस्वेद तन्द्रा तृड् दाह पाष्मनुत् ॥ भा०

स्तान करने से श्राप्त प्रदीप्त होती है, शक्ति. श्राय. त्रोज बढ़ कर उत्साह और यल की बृद्धि होती है, और खुनली, मैल पसीना, परिश्रम, श्रालम्य, तृपा, दाह श्रीर पाप श्रादि विनष्ट होते हैं। शीनल जल से स्नान करने से शरीर की बाहरी उद्याता भीतर प्रवेश करके मनुष्यकी जठरारिन को दीप्त कर देती है। इसी कारण से स्तान करने के पश्चान भाव सालम पड़ती हैं । ठंडे जल से ही सर्वदा स्तान करना लाभदायक होता है, किन्तु चंदि बात और क्फ का प्रकाप होता हुमा जल से ही स्तान करना चाहिये। ज्वर, अतियार, नेत्रदर्द, कर्णेशल, बातरीम, अजीर्ण, अक्षाम,पीनम, अदि रोगी में स्नान करना वर्जित है। भीजन के पश्चान स्तान करना स्वारम्य के लिये ह्यांनप्रद है। स्तान करने के अनन्तर कामल वस्त्र से अंगी की भली भांति पाँछ देना चाहिय ।

श्रारायता के लिये स्तान की कितनी श्रावश्य-कता है यह श्रव्ही प्रकार विदित हो गया किन्तु श्राधकांश श्रनपढ़ स्त्रियों नवजात शिशु को स्तान कराना बहुत बुरा समभती हैं। यह उन की भारी भूल है। नालच्छेदन भीर नालबंधन हो जाने के पश्राम् बच्चेका माताको सुप्रवस्थ करना चाहिये। तदन्तर वालक को स्नान कराने के लिये चतुर दाई को तत्पर हो जाना चाहिये । यहतसी मूर्खा दाइयां अपने पैरों को नङ्गा करके पसार देती हैं और वालक को श्रीधि मुख उसी पर लिटा कर स्नान करानी हैं। लेकिन यह कुप्रधा अन्यन्त हानिप्रद है। उन्हें इस रांति को परिवर्तन कर निस्त प्रकार से स्नान कराना चाहिये।

प्रथम बच्चे के शरीर में चैसलीन, सरमीं, गरी, या तिल के नैल का मदेन कर दे। तत्पश्चान कांमल वस्त्र द्वारा उसके शरीर में का (Vernikcaseocsa or cheesevernish, चिपचिपाहर युक्त एक पदाध है ) मैल की धीरे २ पींद्र हाले। नदननग् वेसन ( चने का शाला ) श्रथवा सायुन से ऋत विश्लेषान्यार शीतल या उठ्छ जन से स्तान करा है । यदि शीन ऋतु हैं। तो ६०-६४ संटिम ह की उपलाना का जल पात्र में भरना चाहियं किन्तु जब ३४ मेटिमंड जल की गर्मी गई नो वालक के म्नानोपयोगी उत्तम होता है। यह नाप ( Bath Thermamitor ) बाब थर्मामीटर (इच्छा जल सापक यंत्र ) से जानी जानी है। किया यह है कि गहम सक में उन्ह यंत्र का पारद वाला माग हिलामा जाता है तब पारा उसके गर्मी से उपर चढ़ने सगता है । जब पारा ६४ सेंटिय है वर पर्नुच जाव तो पानी को



TO THE SECOND SECOND

18

Ą

· Mary

15

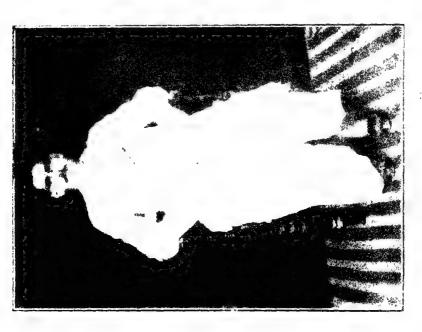
H. M. H. M.

N.

シアで シアンス

क्षिम् ते शिवशका जो वसा आनाय प्रवस्ति। फायाल

MANUAL STOCK STOCKS ON STO



SO SO SON WINDOWS

त्र प्रश्नमण्डम् स्टास्य सञ्ज्ञान्। कन्नाः नोम्स्य

HIGHERT SHE SHELL SHELL

तीचे उतार कर काम में लावे । यद्यपि भागीए सित्रयों के हाथों का चमड़ा श्रधिक कार्य करेने से कठोर हो जाता है, अन्यद्या वे अपने अंगुलियों द्वारा जल की स्वयं परीचा कर सकती हैं। यदि उन हेंपरीचा करने की आवश्यकता हो तो गरम जल को एक पतले, हलके गिलास में भर कर श्रपने गालों पर लगावें। यदि साधारण उच्चाता उन्हें मालूम हो, जिसे वह सह सकती हों तो वैसे ही जल से स्नान कराने के योग्य सममें। श्रीष्म ऋनु में तांजे जल से ही स्नान करा देन हानित्रद न होता । स्नान कराने के बाद शीध कीमल स्वच्छ वस्त्रों से आच्छादित गई दार या कोमल विद्योंने पर मुला दें।

म्नान कराते समय इस वात पर ध्यान रखना श्राबश्यक है कि सहसा वालक की पानी में न डाल हैं। मनान किसो टप या कोई टॉटीदार पात्र संकराना चाहिये। पहले उसका पैर पानी में हालना चाहिए थीर यदि कमण्डल आदि टोंटी दार पात्र हो तो बालक के पैर से पानी छोड़ना आरम्भ करें जो कि बहुत अंच श्रार से न छोड़ा आय । अगर टब हो तो बालक का मस्तक पानी के ऊपर रख कर स्नान करावें । साबुन और पानी से उसके समस्त शरीर को हल्के हाथ से अच्छी प्रकार थी डार्ले किन्तु सिर की पूर्ववत पानी के बाहर रक्खें। तदनन्तर बच्चे को बाहर निकाल कर स्वच्छ फलालेन के दुकड़े अथवा स्पञ्ज (Spunj) से उस र शरीर को मल दे और सिर को विद्राप सावधानी के साथ साफ करे। इसके बाद मुलायम तीलिये (अ गोझे) से पींड दे और उसके सारे शरीर पर संग जराहत, जावल का

बाटा या बोरिकएसिड की युक्ती छिड़क दें। उस से त्वचा सम्बन्धी विकार दूर हो जाते हैं। इसी प्रकार ऋतु और वालक के स्वास्थ्य अनुकृत प्रति विन उवटन सरसों का तेल लगा कर ठंडे जल से स्नान कराया करें । इस से उसकी स्वास्थ्य सदैव उत्तम रहेगी और वह सुख की नींद से सोवेगा। अर्वाचीन युग की न्त्रियां आधुनिक शता प्रणाली रहन-महन में बेतुका फंस कर साबुनका श्रधिक व्यवहार करती हैं। उन्हें इस बात पर किंचित् विचार नहीं कि वे ही तो अपना जीवन श्रीर सौन्दर्यता का नाश कर नुकी हैं, तो उन श्रवीध नवजात शिशुश्री की लावण्यता इन कुवम्तुक्षों के दुरूपयोग से क्यों धूल में मिलावें। सायुन से वालक की मुन्दरता जाती रहती है, क्यों कि लक्ता के नाचे बसा (चर्बी) इस के उप-योग से जमने नहीं पाती और चमड़ी पतली पड़ जाती है। इसका दृष्परिगाम यह होता है कि बच्चे की आदन विगड़ जाती ह और उसे थोड़ें ही में सर्दी और थोड़े ही में गर्भी का अनुभव होकर वह श्रधिकांश ध्यस्वस्थ्य रहता है। मातार्थे अपनी अनभिज्ञता निर्देषिता प्रगट कर भूत-प्रेत का प्रकोष मान कर पीर, मसजिद में दौड़ी जाकर अपना वातक धन और धर्म सब नष्ट कर देवी हैं। अतः साबुन के स्थान पर यदि चने का बेसन व्यवहार में लावें तो अत्युत्तम हो। जो कि साबन लगाने में ही अपनी बङ्ग्पन समर्भे तो वे इस बात का विशेष ध्यान रक्खें कि बालक के नेत्री में वह न लगे नहीं तो उसे कह होगा।

शाकीर श्रीर वजन स्वास्थ्य परीक्षा के लिये वालक को वौताना

# डिप्थीरिया (Diphtheria) व नाम गलरोग

(लेखक-वैद्यचकवर्ती पं० काशीनाथ शर्मा कविराज आयुर्वेदाचार्य चिकित्सक बाबा काली कमली वाला धर्मार्थ औषधालय मालीवाड़ा देहली ।

यूं तो बालकों के ऐसे बहुतसे रोगहें जो उनको भयंकर यंत्रणायें श्रविवेन्य कच्छ कल्पनायें देते हुने शीव मृन्यु समीप ने जाते हैं परन्तु उन सब में डिप्योरिया भी अपनी कम शान नहीं रखना यद्यपि अधिकांश चिकित्मा शाम्त्रों में जहां तक इसका बगान मिलनाह । प्रायः सभी इसको बाल रोग केनाम से संबोधित करते हैं परन्तु बान्नविकता इससे कुछ विभिन्न है जहां बहुध्य प्रतिशत बच्चों की और वह भी ऐसे जो स्नम पायी हैं होताहै वहां यह ४ प्रतिशत अनिरिक्त आयु में भी होता देखा गया है । जिन चिकित्मकों को इसकी चिकित्मा करने का अवसर प्राप्त हवा है वह इसकी भयं-करना व दुःखर घटना से पृणात्या परिचित हैं प्रमृत लेख में इस ही पर विचार किया जायगा

## निदान

डिप्शिरिया गालकों के गले का सांक्रामिक अति अस्ताध्यरोग है इसका उत्पन्न होना माताओं के आहार विहार पर ही निर्भग है। जो मातायें अजीए पैदा करने वाले गरिष्ट समय के प्रांतकुल अतिशीत या अतितीत्रण वस्तुओं वा इस्तेमाल करती हैं उनका दृश्य दृष्ट हो जाता है. बच्चे का प्रारम्भिक पोपण दृष्य दृष्ट हो जाता है. बच्चे का प्रारम्भिक पोपण दृष्य दृष्ट हो जाता है. बच्चे का प्रारम्भिक पोपण दृष्य दृष्य ही होता है. उस ही के उपर शरीर की आरोग्यता तथा मींदर्यता निर्भग है डिप्थीरिया के अन्दर वायु और कफ को प्राथान्यता तोती है, जो दृष्ट दृश्यपान करते हैं उनके प्राथाना हो यह भयकर हाने हैं और पांच मात दिन में ही यह भयकर हपधारण कर लेते हैं जिससे बच्चे की तगाम

लाकर मैंने लाभ उठाया है, प्रकाशित करता हूं।

जब बालक अधिक चमक र कर रोये, ए ठे
देदा हो जाय, कातरादि खाये, और उद्दर टटोलने
से कठीर मान्हम दे नो उसे अवस्य मलाबरोध
(करज) की शिकायत समनना चाहिए। उक्त
अवसर पर बाजाक रेंडी के नेल से मैंघच का
सूदम वृर्ण थोड़ा थोड़ा गर्म कर देवे और उसे
उदर पर धीरे २ मर्टन करें। लगभग आधे बंटे
तक मर्दन के बाद एक मोटी हुई की गही बना
हमी तेल द्वारा तर करके (भिगोकर) नाभी पर
१ घंटा तक रक्या गृहने हैं। तदनन्तर चनेकी हाल

की पानं: से पीस फिर उसे थोड़ घी से भून डाले कीर उसी नाभी पर रखकर उपर से १ पना वंगला पान रखकर बांच हे । इस किया से अवश्य दस्त आकर समस्त उद्दर विकार नष्ट होंगे। जब इससे दस्त न हो तब शुद्ध रेंडी का तेल १०-१४ वृंद माना के दूध में छोड़कर पिलावें इससे अवश्य दस्त होगा। यदि यक्टिकागदि कारणों से मलावरोध हो तो मुख्यन: उन रोगों की हा चिकित्मा करें। मूलरोग नष्ट होने से कच्छ स्वयं दूर हो जायगा।

# काली खाँसी (Whoopeing Cough)

(लेखक - कविराज पं० धर्मानन्द जी शास्त्री श्रायुर्वेदाचार्य प्रो० गुक्कुल कांगड़ी।)

पश्चिय--

श्वास मार्ग श्लैष्टिमक कला के प्रदाह के माथ स्नायिक उसे जना के कारण आहे प और कुरो की तरह शब्द युक्त काम को ''हपिंग कफ" या काली प्यांमी कहते हैं। यह एक तीव्र संक्रामक रोग हैं। बार एक बार होने पर पुनः आक्रमण को सम्भावना बहुन कम रहती है। कारण

यह रोग बाल्यावस्था में विशेषतः २ से १२ वर्ष तक की कायु में होता है। श्रांत शीत और कटुतिक कपाय द्रव्योंका श्रांत सेवन, बनी वस्तीमें निवास, दूषित वारु, श्रांथक परिश्रम, शीत का लगना इस के कारण माने जाते हैं। कास की दशा या श्रांतिस्याय में उत्या तीदण द्रव्योंका सेवन करने से श्रेंकियल या ट्रांकियल रजाण्ड्स शोथयुक्त हो जाते हैं। जिससे नेगम स्नायु पर द्वाब पड़ता है तो ग्यांसी हो जाते। है। परन्तु किन्हींके विचार में इसका विशेष कारण एक अकार का कोटाणु

ऐसा हो कि जिसमें स्वच्छ ह्वा छाती हो रोगी के कपड़े रोज़ाना वदलते रहना चाहिए और उन उनरे हुने कपड़ों को दूसरे कपड़ों में नहीं मिलाना चाहिये उनको कार्बोलिक सायुन से या नीम के साबुन से धुलवा कर दुवारा काम में ला सकते हो। रोगों के अच्छा हो जाने पर फिर वह कपड़े काम में नहीं लाता चाहिए, रोगी के थूक को और है जिसे "वैसिलस परद्रस्तिन" कहते हैं। यह रोगी के शुक श्वास वस्त्र आदि द्वारा दूसरे स्वस्थ मनुष्यों में संक्रमण कर जाता है। अतः घर में एक वालक को यह रोग होने पर दूसरे बच्चों को भी इसके साथ रहने से यह शोब ही धर लेना है और क्रमशः सारी बस्ती के बच्चों में फैल जाता है;

## संप्राप्ति--

इसमें पहिले वायु प्रणाली तथा सूदम वाय् प्रणालियों में कफ पित्त का प्रकोप होता हैं जिन से ये लाल और तोभयुक्त हो जातो हैं। बाद को बात प्रकोप होने से या बायु प्रणालियों की श्लेष्मिक भिल्ली में विषजन्य तीम उत्पन्त होता है ता हुउ हुउ का शब्द होने लगता है। साधा-रणतः यह रोग ४ से २१ दिन तक प्रन्तु विशंषा-वस्था में कहीं २ दो या तीन मास तक भी पाया जाता है।

नाक के मैल को उसी वक्त जला देना चाहिए श्रीर रोगी के परिचारक सुयोग्य श्रातुर परिचर्या में निपुण जोकि समय समय पर चैंद्य की सलाह से काम करने वाले हों होने चाहिये। विषम बाद करने वाली श्रीरतों को पास में उहीं श्रांत देना चाहिये। लचरा-

इस रोग की तीन श्रवस्थायें देखने में श्राती है। (१) सदी की श्रवस्था (Catarrhalstege) (२) श्राचेपक दशा (Spesmodie Stage) (३) श्रारोग्योन्मुखावस्था।

१ प्रतिश्याय की अवस्था—यह शर्ने: शर्ने: श्रांर कभी अवस्थान श्रारम्भ होती है। जिसमें सामान्य क्वर १००-१०१ तक होता है। नित्र लाल और नामिका तथा नेत्रों से पाना गिरता है। बार २ छींक आता और मूर्था खांमा होती है। जब घींचे २ खांमी बढ़ती जाती और घांतिक मण धारण कर लेती है तो नामिका आदि स्वाब बन्द हो जाते हैं और द्वितीय अवस्था आरम्भ हो जाती है।

२-श्रा तेपक श्रवस्था—इसमे घातक काम के वेग श्राने लगने हैं श्र्यान यांभी २--३ मिनट तक लगातार श्रानी है श्रीर गले में एक प्रकार का लोभ या श्रवरे।धसा प्रतात होता है जिससे रोजी की पता चलता है कि कब श्रांभी उठने वाली है। इस श्रवस्य में रोजी खांमते वक्त भीतर ध्यांस नहीं ले सकता केवल बाहर हा फंकता है। कुछ देर तक लगातार धांसने पर वह एक लम्बा खांस लेता है जिससे हट प्रव्य निकलता है। खांसने वक्त रोजी का चेहरा नीलवाले और नामिका श्रादि से जल-श्राव होता है। ४--० बार इस प्रकार वेग उठने पर कुछ गढ़ी और चिकनी रेलभा निकल श्रानी है या वमन हो जाती है तो रोजी को श्राराम माल्यम होता है। वेग तील होने से खांमते वक्त गले श्रीर कपोलों की नसे फल जाती

तथा रोगी स्वेदसे तर हो जाता है। कभी २ किसी के तीव वेग के कारण नासारक लाव और मिस्तिक धमनी के फटने से मूर्छी भी हो जाती है। और हाथ पैरों में तीव ब्राविप (फटके) होने लगते हैं। धार किसी के खांसने से मूत्र निकल जाना या कांच बाहर निकल धाती है। यदि वेग देर तक रहे और विराम मिला हो तो वायु-कांग्र विस्तृत हो जाते हैं।

३ आरोग्योनमुखावस्था-- में खांसी का आक्रमण दंग में होता है थार आरोपावस्था क्रमशः घटने लगती है। वसन नहीं होता तथा श्लण्मा आसानी से निकलने लगती है। गेणी धीर रम्बस्य हो जाता है।

## भावीफल

कोई विद्याप उपद्रव न होने पर परिणाम शुभ होता है। अधिक रक्तकाव, मृद्धी तथा अधिक दाय येग की अवस्था में परिणाम अच्छा नहीं होता है।

## विकित्स(

यह रोग सामधिक होता है अतः वांद्र कोई
उपद्रव आदि न हो तो चिकित्सा न करने पर
कोई हानि नहीं। शरीर तथा वायु प्राणालियों को
दुर्वलता दूर होने पर यह स्वतःशात हो जाता है।
यदि रोगी का खाया पीया हुआ स्व निकल जाय
और दुर्वलता बढ़नी जाय तो चिकित्सा कराना
जरूरी है। किर भी विदेशों की भीति यह रोग
हमारे यहां चातक नहीं होता। इसमें पहिले प्रतिश्याय के साथ ज्वर होता है अतः Ferena में
थोड़ासा बाइनमर्णयकाय मिलाकर देना चाहिये।

चेष्टाच्यों में उसको अरपनत दुःख प्रतीत होने लगता है और अस्पनत विद्वल होजाता है।

## लच्चण

इपमें प्रथम वले में माधारण दर्द मान्द्रम होने लगता है और एक नध्तात के अन्दर २ गर्ने की कुछ जमीन लाल रंग की और गहरासी मालुम होने लगता है इसका कारण यह है कि बातजन्य गले का रूजना से इक्वे के खांसने श्चादि से गला दिल जाता है और अन्दर लाल-रंग का याव दिखाई देने लगता है और गलसुओं के उपर और अस पास सफोद रंग का चमड़ा दिखाई देने लगन। है और श्रति तीयू ज्वर हो जाना है ऐसे नदाए मालूम हो तो सममता चाहिये कि वच्चे को डिप्धारिया हो गया है डाक्टर लोग इसका क्रिसिजन्य हा मानने हैं जिस का हमार बाय्वेट मनातुमार भी अविरोध हैं। हालांकि अध्वेद के रोगों के प्रति दोषों की ही समवापि कारण साना है। क्योंकि सांकामक जितने भी रोग होते हैं सब किमिजन्य ही होते हैं लंकामक रोगों का क्रिमजन्याय सिद्ध चरक के कुछ प्रकरण में किया है क्योंकि कुष्ट भी एक संकामक रोग ह लिखा है ( कुप्ठिन त्रिदोपाणि सांक्रमीर्गण्चात्परांतं ) अतः डिप्यीरिया के अन्दर विषेत किमी गले में जाकर विकार पैदा कर देते हैं, गले में क्योंकि घात्र हो जाता है जत: बच्चों को दूध पीने में लांमने छींकने में रोने में भयंकर दर्द मालुम होता है रोगी बच्चे के खांसने जीकने धूकने झूंठा दूध पीने, पास में सोने आदि कारणों से हो अन्य

बच्चों की भी यह रोग पैदा हो जाता है, अतः हिष्योरिया के रोगो वच्चे की एकांत स्थान में रखना चाहिये और इसके झूंठे बरतनों को अगिन दिखा कर मांज घोकर गरम जल से काम में लाना चाहिये और छोटे बच्चों की उस बच्चे से दूर रखना चाहिये। क्योंकि इस रोग के कीटाख रोगी बच्चे के खांसने आदि से कौरन ही दूसरे बच्चे में प्रवेश कर के डिप्थीरिया पैदा कर देते हैं।

## चिकिन्सा

हमारं आयुर्वेद शास्त्र में यदापि इसका कोई नाम निर्देश नहीं किया तथापि समय की गित के अनुसार वैद्य मात्र को इसकी चिकित्सा तथा लवा समक्ते चाहिये। इसका ऋन्तर्भाव करठ-गत रोगों में करके दोपातमार चिकित्सा करनी चातिये । लिखा है कि - विकार नामा क्रशलो न जिहीयान कराचनः नीहमवीवकाराणो नामनी-स्ति भ्रवास्थिते।। भ्रतः इसकी चिकित्सा वात कक का प्रधान ओर पित्त को गीए। मानते हुवे करनी चाहिचे । आयुर्वेदमतातुसार इसकी स्वतंत्र व्याधि के रूप में नहीं माना जा सकता इसमें कंठ की रोहयना से और दोशों की आधिकयता से गले में पैदाहुने जरूम की ब्रशायन चिकित्सा करनी चाहिये। छोटो इलायची के बीज, शोतल चीनी, कमीला इनको मस्यन में मिला कर लगाना अन्यत्तम है, अथवा सैथिलटेडस्त्रिट में कापुर मिला कर लगाना चाहिय। श्रगर वच्चा इल्ले करने लायक हो तो कचनार की छाल दो तोजाको आधा सेर पानो में पका कर गरारे करने चाहियाँ, उत्रर के लिये अतिविधादि चूर्ण, कपद

भस्म शंख भस्म तीनों को मिला कर मधु के साथ चटाना चाहिये। ध्यान रहे की ज्वर एक साथ कम न हो जाय, ज्वर का श्रतिशीध कम हो जाना खतरनाक होता है आम टोपों को पचाने हुवे ज्वर को धीरे ५ कम करें छोटों को ६ मासे से १ तीला तक आर बड़ों की २ तोला तक हाज्ञामव पिलाना चाहिये। और ऐसी श्रीपधी भी साथ में इंते रहना चाहिये कि जिस से एक दस्त रोजाना माफ आजाया करे, छोटे बच्चों को दस्त न होने पर म्लेमरान की बत्ती से दश्त कराना चाहिये और बाहर से गलस्कों को हुई आदि से महाता र सेकी और फलों का रस पीने की वे व्याधि की अवस्था-नुसार चत्र बैंदा ऋत्य उपयुक्त श्रीपधियां भी देवे और सफाई पर विशेष ध्यान देता रहे ताकि मकान में रोगोत्पादक कीटाए। न वढें।

## डिप्थीरिया में टोका

Anti To xine एन्टी टोक्सीन. यह हाक्टरी में एक ही श्रीपांत्र इस रोग के लिये विज्ञापना से मानी गई है जिसका कि इस रोग को अन्द्रा करने में टाक्टरी में दूसरो श्रीपध कोई मुकावला नहीं कर सकती इसका टीका लगाया जाना है Hypo dermicNoedleहाई पो ट्रामिकनीटील, यह एक सुई है इसके द्वारा यह श्रीपध मांस तक पहुंचाई जाती है। इस टीका लगाने की सुई को थोड़ी देर गरम पानी में ट्याली श्रीर उस शीशी को जिसमें की एन्टी टोक्सीन है थोड़ी देर Alcohol, शराब में रक्खो बाद को शीशी का मुई खोल कर श्रीषध मुई में खींचलो श्रीर की से कुछ नीचे के भाग

को पानी से खुब साफ करके सुखाकर वहां पर Tincture Icodine टिंचर श्रायोडीन लगा दो और तब त्वचा को उपर को आंगुलियों में पकड़ी श्रीर टीके की सुई को त्वचा की सीध पर रक्त्वो और इस तरीके से चुनाश्रो कि सुई मास तक ही जाने पावे गोगी की श्रवस्थानुसार ३,००० से ४,००० यूनिट तक श्रांयध डाली। ऐसे एक या दो टीका लगाने से रोगी को आराम हो जाता है यह भयंकर रोग वच्चों में ही नहीं अपित वड़ों में भी हो जाता है अतः इस रोग के फैलने के समय हरेक मनुष्य को आवश्यक है कि वह नमक मिश्रित जल से कुल्ला करता रहे और तमक के पानी की फरेंग होट बच्चों के गले में लगाना रहे ऐसा करने से श्लैष्मिक माददा अन्दर इकटा नहीं होना श्रीर पेट की सफाई पर विदेश ध्यान रखता रहे श्रोर दूध पिलाने वाली मानाश्रों को भी चाहिये कि अत्यन्त परहेज से रहें क्योंकि बच्चों का म्बामध्य मानाओं के उपर ही निभर है और हो सके तो शेग के होने से पहिने ही(Anti toznie) एन्ट्री टीक्सीन का टीका हरेक परचे बड़े की लग-बालेना चाहिये जल, बाय, देश औं कान इस के उपर विशेष ध्यान रखना पाहिये क्योंकि इन रे शुन है।जाने अ लांकामक रोनी का उत्पत्ति होती है रोगी के लिये जहां तक हो सके फ़िलटर किया हुआ पानी काम में जाना चाहिये। और जिस कमरे में रोगी हो उसकी पानी में फिनायल डाल कर धोना चाहिये या क्रिमीनाशक जो द्रज्य हैं जैसे की वच, गूगल, सरमों, नीम के परो श्रादि इनकी कमरे में धूनी देनी चाहिए कमरा

या मृत्युक्जय । रत्तीमें व्योपादिचूर्ण या चातुर्भद्रचूर्ण ३ रती मिलाकर मधु से देना चाहिये। यदि गले में दर्द श्रीर शोथ हो तो थोड़ा युक्तलिप्टिम का तेल डाल कर बाष्प लेनी चाहिये। या तारपीन युक्त तेल गरम जल में भीगे हुवे चम्त्र से संक करना चाहिये । श्रीर त्रिकुटा चूर्ण (मोटा) की पोटली में बांध कर मृंघना चाहिये, या युकांलपांटस तेल को समाल में डाल कर मृधना चाहिय। कक को निकालने के लिये चुमने के योग्य छोटी इलायची वीहदानाः निशास्ता, मुलंडी, खमखम के बीज, कतीरा गींत एक २ साग मिश्री ३ भाग की बनो हुई गीलियों से थोड़ा सा पापरसेंट मिला कर चुमने की देना पातिये। इस से कण्डदाह श्रीर कास में आराम आता है।। यदि खास निजयों में उहन अधिय हो तो (जिस से बार २ आक्षेप यक्त काम बेग उटते हैं ) दशमूल कपाय के माथ चातुर्भद्र देना चाहिये। श्रथवा बाहनम इपिकाक, श्राहफेनामव, श्रीर यवत्तार मिला कर देना चाहिये। यदि वेग श्रीर श्राह्मे प, कास देर तक रहते हों श्रीर विराम काल अल्प तथा शुष्क कास हो तो रोगी की रहा के लिये 'श्रमोनियम बोमाइड़ें श्रल्प मात्रा में देना चाहिये। यदि वमन डारा ध्याया पीया हुआ सब निकल जाय तो पिचकारी में पोपक द्रव्य श्रंदर पहुंचाना चाहिये।

आरोग्योन्सुम्बावस्था में -भाग्यंबनेह तथा चयवनप्रश देने में लाभ होता है। इस रोग में कभी २ काल बांसे का जार दशमूल कपाय से बहुत लाभ करता है। भोजन मृदु और सुपाच्य होना चाहिये। गुरु और अधिक भोजन से कष्ट बढ़ जाता है। साथ ही मलाबरोध की तरफ भी ध्यान देना चाहिये।

# वृहत् समीर पन्नग वटी रसायन

( रजिस्टर्ड )

इनके नेवन से यही में चोटी तक के सर्व प्रकार के पारीति। तह चाहे वह वात विकादि किन भी क्षेत्र में किनी कारण से कैना ही सख्त क्यों न हा उन दू. कान में विज्ञाना की भांति बातर दिखानी हैं। दर्द से वेचेन मनुष्य मुख्य हंसने लगता है। इत के चार्तिक्षित यह गोलियां माहवारी को साफ लाने व नालों के दर्द में बापना तुरम्य चारर दिखाती हैं। मुख्य ३२ गोलियों की एक बीबी का 4) डाक्संब्यय पृथक।

पता-वृहत् आयुर्वेदीय औषध भाण्डार जीहरी वाजार, देहली।

# **ॐारोमाान्तका और मसूरिका**ं≪∗

(लेखक-श्री० कविराज पं० धर्मेन्द्रनाथ जो शास्त्री छायुर्वेदाचार्य धन्वन्तरि)

श्रभी तक भी ठीक २ यह पता नहीं चला है कि ख़सरा सबसे पहले किस देश में और किस समय आरम्भ हुआ। अगर इसके इतिहास को उठाका देखें तो मामूली ज्ञान यह होना है कि अभी तक प्रामाणिक खोज इसके सम्बन्ध में नहीं हुई है, अमेरिका के डा० हरस्यमन आर डा० विल्यन ने लिखा है कि सर्व प्रथम यह रोग अमे-रिका के देहातों में फैला था उस समय इस रोग के निवारण करने के लिए अनेक साधन काम में जावे गये थे उपरोक्त डाक्टर इसका इतिहास इस प्रकार बर्गन करते हैं कि सन्१६४६ में यह रोग अमेरिका के देहातों में फैला था उस समय इस रोग की उत्पत्ति श्रोर चिकित्सा पर वहां के अनेक प्रसिद्ध अकटरों की राय थी कि अह रोग उन लोगों की नहीं होता जो गाय से इस निकालने हैं यम इसा आधार पर आज भी चैत्रसीत का प्रयोग किया आता इ यह चैत्रसीन गाय के धनों के समीप से प्राप्त होती है होंग का उक्त भारतयां में भी इसी का ट्रांका लगाया जाता है, जो इतिहास पाटकी के सामने कक्या गया है है। मकता है कि एनोपेथिक चिकिता के विद्वानों के। इस रोग की उत्पत्ति और चिकित्सा का ज्ञान १६४६ में हुआ हो किन्त् आयुर्वेड में यह रोग श्रत्यन्त प्राचीन प्रन्यी में पाया जाता हैं। इस से पना चलता है कि यह रोग नवीन नहीं किन्तु

श्रात्यन्त प्राचीन हैं इसमें सन्देह नहीं कि इस रोग में टीका लगाना लाभप्रद सिद्ध हुआ है किन्तु टीका ही इसकी कोई श्रद्भृत चिकित्सा नहीं हैं लाखों टीके लगे हुए गेगी पुनः इस गेग से प्रसित होते हैं और उनका जीवन मौत की घड़ियों को गिनता हैं

## गंग पेदा होने का समय

यह रोग आमतीर पर छोट बच्चों के पैदा होता है इसकी उत्पत्ति १ सान के या इससे कम उम्र के बच्चों से लंकर १४-१४ साल तक के बच्चों को अधिक होती है यह रोग क्षिया की अपेना पुरुषों के अधिक होता है साधारण्य. भारतवर्ष में रोमान्तिका को छोटा माता और मम्रिका को बड़ी माता कहा जाता है

## रामान्तिका का उत्पत्ति काल

छोटी माता निकलने से पहले सारे शरार में दर्द होबा है तथा ज्यर का बेग होता है अक्सर अन्तर है दिन तक एक मा ज्यर है ते के बाद शरीर पर दाने दिग्याई पहने लग जाने हैं यह दाने व्यक्षियतर लालरंग के होते हैं रोमांतिका या छोटी माता में कोष्टावरोध या उद्यामय, अक्षि काम आंग कष्ट से श्वांम किया वा होना अधिक पाया जाता है रोमांतिका या छोटी माता में दानों के भला प्रधार वाहर निकलने पर यह रोग कष्ट-माध्य हो जाता है

## मस्रिका या नदी माता

यह रोग संयोग विरुद्ध भोजन और दूषित जल और वायु से पैदा होता है, मसूरिका या वड़ी माता की पिड़का या फुड़ियां मसूरिका की दाल की शक्त की होती हैं, इसीकिए इनको मसूरिका कहा जाता है, इस रोग के पैदा होने से पहले सारे रीग में खुजली और दर्द तथा चित्ता की स्थिरता भूम खाल का फटना, शरीर का रङ्गलाल तथा आंखें लाल होना होता है तथा ज्यर का वेग होता है।

रमधानुगत सम्रिका---जलविम्ब की तरह अथान छोटे फकोल की तरह होती है और फूट-जाने से पानी निकलता है यह मुख्यमाध्य हैं इस को आमतीर से लोग दुलारी माता कहने हैं।

रक्तगत मसूरिका—लाल और पतले चर्मयुक्त होती है यह जल्दी पक्षजानी है और फूटने पर रक्तस्राय होता है रक्त अधिक दूपित न होने से यह भी सख साध्य है।

मांसरात मस्रिका- यह कठित स्तिग्ध और मोटे चमें विशिष्ट होती हैं इससे शरीर में शूल-वत वेदना, नृष्णा, करह, ज्यर और चित्त में चंचलता होती हैं

मेदोगत मस्रिका-यह मण्डलाकार, कोमल किचित बाधक अची स्थूल वेदनायुक्त होती है इसमें अत्यधिक ज्वर मनोविभूम चित्त में चंचलता और सन्ताप आदि उपद्रव होते हैं।

श्रम्थि श्रीर मजागत मसूरिका—तु द्राकृति, गात्रवर्णयुक्त रूस, चिवड़े की तरह यानि कुटे हुए चौड़े चावल की नरह विपटी और कुछ ऊंची होती है इसमें श्रन्यधिक मोह, वेदना, चिक्त की अस्थिरता, और मर्म स्थान के फटने की तरह पीड़ा तथा सर्वोङ्ग में भूमर के काटने कीसी तक-लीफ होती है।

शुक्रगत सस्रिका—यह चिकती सूदम अत्यंत वेदनायुक्त और देखने में पक्के आम की तरह पक्को नहीं होती इसमें गील कपड़े से शरीर पौछा गया मालम पड़ता है और इसमें चित्ता को अस्थिएता, मूर्जा, दाह और उन्मत्ताता अधिक मालम पड़ती है।

### साध्यासाध्य---

उपर लिखी समुरिका में त्रिदोषज, चर्मदल-गन, मांस, मेद, श्रस्थि, मञ्जा और शुक्रगत मसुरिका तथा ममृरिका, असाध्य जो मुंगे की तरह लान रक्न कोई जामुन का नरह कोई तमाल फल या भिलिया फल की तरह होती है वह असाध्य जानती चाहिये। जिस मस-रिका गंग में, खांमी, हिचकी, चित की विभूमता तथा अस्थिरता अत्यधिक कष्ट प्रद, तीव ज्वर, प्रलाप, मुच्क्षी, नुष्णा, दाह गात्र मुर्णन, अतिनिद्रा मुख, और आंख से रक्तमात्र और कंट से घुर-घुर शब्द और अतिबेदना सहित श्वास स्नाता हो तो उसे असाध्य जानना चाहिये। अगर मस्रिका रोगी को ज्यादा व्यास लगे और हाथ पैर आदि पटकने लगे या उछलने आदि लगे या मुख को छोड़ केबल नासिका सं हा लम्बे २ श्वास लेने लगे तो उसकी मृत्यु निश्चय जानना चाहिए।

(रोमान्तिका और मसूरिकाकी चिकित्सा) इन दोनों रोगों में अधिक एवं किया या अधिक शीतल किया करना जीवत नहीं इ अधिक त्रारम्भ सहसा होता है। रोगी का स्वास्थ्य साधारण दशा में होता है। रोग के दौरे एक बार त्रारम्भ होकर उम् भर तक चल सकते हैं। इन रोगों को एक दूसरे से पहचानने के लिये धिशेष लक्त्रण नीचे तालिका में लिखे गये हैं।

## मगी

दौरे से पूर्व-प्रायः रोगी किसी न किसी प्रकार का aura (ओरा) अनुभव करता है।

आरम्भ-सहसा कभी कभी विशेष प्रकार का शोर करता है।

कनवलशन्स—कम्पन नियमित रूप से गहरी होती जाती है। पहिले छोटी छोटो फिर तीत्र और जोरदार जो बिलकुल स्वतंत्र तथा बगैर अर्थ (Non Purposive) के होती हैं। मुख नीला हो जाता है। जिन्हा कट सकती है। मल मृत्र का अनेतातस्था में उत्मर्ग हो सकता है। अनेता-बस्था में रोगी गिरने हे चोट खा सकता है।

चैतन्यता—हमेशा नष्ट हो जाता है।

श्रांखों के लज्जा-पुतलों फैली हुई और उस

पर प्रकाश का कोई प्रभाव नहीं होता। कंजकटाइवा संज्ञा शुन्य हो जाता है।

तैरे का बान्य होंग कह मिनटों से श्राधिक

दीरे का अन्तर—दीरा कुछ मिनटों से अधिक देर तक नहीं रहता।

दीरे का अन्त-रोगी दौरे के उपरान्त पागल सा रहता है और नींद महसूस करता है।

## हिस्टीरिया

दीरे से पूर्व---रोगी के गले में गोलामा, अथवा सांस का घुटना अथवा हृदय श्रवमाद या विचारों की श्रसम्यकता श्रनुभव करता है।

श्चारम्म - कभी सहसा कभी घीरे २ रोगी प्रायः चिल्लाता है।

कनवलशान्य—दौरे की गहराई श्रनियमित होती है, रोगी चिल्लाना है अङ्गो में सख्ती जरा देर तक रहती है और वह लोट लॉट कर हो सकती है। तीव कम्पन प्रायः Pusdosive (श्रथं सहित अर्थान रोगी ठीक होने को कोशिश में जिन श्रङ्गों से चेष्टा करता है उन्हीं का विशेष मंकीच होता हैं) होते हैं। जिह्ना प्रायः नहीं कटनी। सल मूत्र का उत्मर्ग नहीं होता । मुखाभी नीला नहीं पड़ना श्रार शायद ही कभी रोगी गिर कर चोट खाना हो।

चेतुन्यता-मर्वथा नष्ट नहीं होती।

आम्बो के लच्चण—पुनली पर प्रकाश का प्रभाव वना रहता है और कंजकटाइवा संज्ञा शुन्य नहीं होता।

दोरे का अन्तर-पायः ४ मिनट से अधिक होता है और कभी कभी एक एक घंटा रह कर फिर लौट सकता है।

दीरे का अन्त-दीरे का अन्त होने पर रोगी रोता है, हंसता है या चिल्लाता है कभी कभी बिल्कुल वेसुध पड़ा रहता है। रक्त बिष- यच्चों में कतवलशान्म के कारगों में इनका मुख्य स्थान है। प्रायः सभी तीन ज्वर जिनमें कोई विद्याप दूषणा (Ingection) पाई जाती हैं जैसे (Typhoid) टाइफाइड, मर्गूरका, रोमान्तिका, प्लेग नमीनिया, श्रादि की तीन दशाओं में कनवलशन्म श्रारम्भ हो जाते हैं। रिकेटम के रोगियों को भी प्राणः कनवनशन्स के नोरं पड़ा करते हैं। उनका कारण शायद श्रांत्रिक- बिप होता है। बहुन से रोगियों में जिनके मृत्र में दृष्णा (Bacillaria) होती हैं। कम्पन के दोरे देखे जाते हैं श्रांर इसके कारण को प्रायः हम मृल जाया करते हैं।

## Reflex Causes

बहुतसे आन्तरिक विष्-जैसे आंशिक विष (Intestmal toxmes), कोष्टावडता, पाचनके विकार, अन्त्र के कृमि, दांतों का निकलना आदि मस्तिष्क को उत्तेजिन करने रहते हैं जिमसे प्रायः कनवलशन्स दोजाया करते हैं।

मस्तिष्क की अम्बन्धता-मस्तिष्क के यहत से रोग जिनमें मस्तिष्क के उपर अस्वाभाविक अधिक दबाब पड़ता है उनमें कनवलशनम उत्पन्न हो जाते हैं। इनमें निम्न रोग विशेष उल्लेखनीय हैं (१) मस्तिष्क के अर्वुद, मस्तिष्क के अर्वुद, मस्तिष्क में तरल बुद्धि) प्रसव के समय शिर पर अधिक मार पड़ जाना इत्यादि। यदि रोगी का सिर तना हुआ या आंखों में भैंगापन (Squint) हो तथा अन्य जन्म स्वरं राम (Meningitia) का ध्यान हो जाना चाहिये।

मस्तिष्क में बाह्य तथा श्रान्तरिक कारणों से रक्त माव हा जाने से भी कनवलशन्स उत्पन्न हो जाती है और बह कतवलशन्स बहुधा पद्माचात में अन्त हुआ करती है। कभी कभी cartex (कारटैक्म) में थोड़ा सा रक्तमाव होने पर कोई बिशंप पद्माधात के लच्या उत्पन्न नहीं होते पर्नत कुद्ध समय के उपरान्त मृगी के सदश होंदे पड़ने आरम्भ होते हैं आर वह दौरे जीवन भर पड़ते रहते है। बहुधा रोग के निदान विनिश्चय में घोला लग जाया करता है। ऐसी दशा में इस बात का निश्चय माता आदि से पूजकर करना चाहिए कि दाँरे से पूर्व या उसके माथ म कोई पत्तावात इत्यादि के लतगा हुए थे या नहीं ? यह देखा गया हैं कि प्रायः आधे रोगियों में दौरे उसी दिन से श्रागम्भ हुवे होतं हैं जिस दिन रक्तसाव हुआ हो श्रीर छन्यों में कुछ समय उपरात श्रारम्भ हुए होते हैं।

## मस्तिष्क में रक्तस्राव

श्वासाबरोध—ऐसे रोगों में जिनमें श्वास प्रणाली या कण्ड प्रसित होता है और श्वासावरोध होता है प्रायः कनवलशन उत्पन्न हो जाने हैं यह बड़ी तीन गनिके होते हैं। वच्चेको वड़ा कप्ट होना है और अचेतावस्था में पड़ा हुआ इटपटाता है। यह दौरे प्रायः बुरे परिणाम के सूचक होते हैं और यदि तत्काल ठीक निदान और उचिन चिकित्सा न की जाय तो मिनटों में बालक से हाथ घोना पड़ता है। इन रोगों में Laryingismus stridulus स्वर यंत्र शोध (Laryingitis) तथा हिप्यीरिया विशंष उल्लेखनीय है।

इन सब के निदान का सहल उपाय यह है कि

बच्चे की श्रावाज़ श्रीर श्वास की पहचानना चाहिए। यदि बच्चे के रोने के श्रथवा बोलने के स्वर में कुछ परिवर्तन हो श्रीर श्वास में घड़-घड़ाइट हो और कष्ट प्रतित हो तो गले के रोगों का मन्देह उत्पन्त होजाना चाहिये श्रीर तत्काल ही उसके उपचार का प्रवन्ध किया जाना चाहिये।

परिणाम (Prognosis) बच्चों की कन-बलरान्स का अन्त युवकों को अपेता अच्छा होता हैं। परन्तु तीब ज्वरों तथा श्वासावरीध के रोगियों में बहुत से रोगियों का अन्त निराश में होता है।

चिकित्सा कनवलशन्म के रोगियों में सब से पहिले चिकित्सा उनके पाचन तथा आंत्र संस्थान की करनी चाहिये। क्योंकि उनका पाचन संस्थान बड़ी शीघता से विगड़ जाता है और उनके ही फलस्वरूप यह तमाम लजगा हो सकते है। इसलिये बच्चे को पहिले प्रचुर मात्रा में आरंड: का तेल तथा चूने का पानी मिलाकर है और फिर थोड़ा थोड़ा हर चोथे बंद बाद अन्य चिकित्सा के साथ भी देते रहें। प्रे पाउड़र, मैगिनिश्या या सोड़ा भी प्रयोग किये जा सकते हैं। प्रय: ६० प्रतिशत रोगो इस चिकित्सा से टीक हो जाते हैं परन्तु अन्यों में निल प्रकार पृत्र तांत्र करने के बाद रोग निश्चय करना चाहिये।

कतवलशन्स की शान्त करने के लिए ब्रोम.-इड (Bromides) विशेष कर एसोनियम, ब्रोमाइड का १ से १० भेन में प्रयोग करना पारिये इसके साथ 1 से दो ब्रोम नक क्लोरल हाइडू भी दे सकते हैं तेज दशाओं में गर्म जल का स्तान ज़ें भी लाभदायक सिद्ध हुआ है क्लोरोकार्म का सुंधाना या इन्जेंकशन भी बड़ी शीधता से अन्त कर देता है, और बहुत थोड़ी मात्रा हो काकी होती है। श्वासावरोध वाले रोगियों में जिनमें श्वास की अधिक काठनता हो trachestomy (श्वासप्रणाली में चीग देकर उसमें श्वास के लिएएक नली लगा देना) की आवश्यकता पड़नी है।

दीरे के उपरान्त उपचार—जिन रोगियों को वार वार दीरे पड़ते हैं उनकी विकित्सा दीरे के अन्य दिनों में करनी आवश्यक है। बच्चे के साधारण स्वास्थ्य का सदा ध्यान रखना चाहिये। करज तथा अन्य पाचन के विकार न होने दी। पेट में यदि हुमी हों तो उनकी नष्ट करने की चेप्टा करनी चाहिये। भोजन पीण्टिक तथा शीम पचने वाला हो वसा का प्रचुर मात्रा में होना आवश्यक है। फल, दूध, जी का दलिया मक्यन, टिमाटर, पालक-रोटी अच्छे भोजन हैं। मिनष्क तथा शरीर को पुष्ट करने बाले योगों का प्रयोग करना चाहिये। स्वर्ण भस्म, आक्षाचृत, शंखादृली और अश्वरांचा के योग यहे लाभदायक हैं। निस्त योग मेरे प्रयोग में बड़े लाभदायक सिद्ध हुने हैं।

(१) नायफल-जानिकी-लचंग तथा केशर यह सव वरावर मात्रा में घोटकर १, १ रत्ती की गोलियां बनावें दिन में ४ बार एक एक गोली हैं। ४०दिन तक प्रयोग करने पर मायः मृगी चादि भी नक्ट हो जाते हैं। क्टवा पुष्ट होता है और रारव काल की हरेक बीमारी सब्ट होसी हैं।

# बालशोष

लेखक श्री पं रामगोपालजी मिश्र ग दिया सी. पी.)

सस्बीटी रोग-बालशोष-

रजस्वला माता का दूब पोने से अथवा माता के दूपित दुश्व के कारण से, दूसरा रजस्वला कियों के द्वारा गोडी में विलाय जाने से अर्जाण या श्रपच से रस दृष्टि होकर यह राग होता है।



इस बच्चे को शिस्थान है।

इसमें मंद कार बालक की देत के ना रहता है जिससे रक्त उपार होकर मृत्यता जाता है। एक की और इसका खारामन गृह रूप बाना नहीं होता, बालक के चर्म पर मलबंट पड़ने लगती हैं। चृतड़ सूख जाता है, उसका चमड़ा जूल उठता है। कान में चिमटी देने से बच्चा।रोता नहीं। मक्खी

मारकर निगलाने से यमन श्राता नहीं, यह बाल शोष रोग की पहिचान हैं। कक, श्वाम, खांसो ज्वर से बालक श्राकान्त रहता हैं, दग्त में कब्ज रहता हैं, पमिलयों श्रीर द्वाती पर चर्म चिपक जाना है।

उपचार-लज्जाल की जड़ी काले धारो में बांध इनवार को धूप देकर गले में वांधे। घुषु की ब्रावाज पर काने धारों में अन्द गांट वांध गते में बांधे। मरघट का पैसा गले में बांधे। अर्कमूल क १०-१४ दुकड़ों की काल धारी में पिरोकर इत-बार को धूप दे गले में बांबे। ब्रिफला क्बाध ३-६ मासे प्रसागा में मधुयुक्त करके दिन में इ बार देवें। कुत्ती का दूध मां के दूध में मिलाकर पिलावें। त्रिफला क्वार और गामुत्रवृक्त करके देवे। चिरायनाः देवदाहः गिलीयः पिन पापडाः छोटी हरडू, मुनका, लाल चन्द्रन, इनका क्याथ मध्यक्त करके देवे। बुमार्यास्थ या उशारासव अथवा चन्द्रनामव या द्वाचायव वृद्धि के प्रमाण में मात्रा का निश्चय करके देवे प्रथम कथित घुड़ियों को भी पाचन सुधारने के लिए देता रहे। इस निबंध में संदिष्त यात रोगों की चिकि-

त्मा महित दिया है। जेख बढ़ने के भय से जमा चाहते हैं। बाल रोग बहुत प्रकार के हैं जिनमें फिर भी मुख्य रोगों का वर्णन निवंध में प्राय: बहुत कुछ लिखा गया है।

## बालशोष पर अनुभूत प्रयोग

(ते० प० बातकराम जी शुक्ल ऋषुर्वेदाचार्य (ऋषिकेश)

विषयलागडु (कलकंदरा) का स्वरस निकालें।
फिर उसमें स्वरस का चतुर्थांश तिल का तैल
डाल कर तैल पाक विधि से तैल तैयार करें।
रंग के लिये रतन ज्योत पकते समय डाल देते।
इससे रक्त वर्ण का तैल तैयार होगा। इस तैल
को प्रात:काल प्रति दिन बच्चे के सब शरीर में
मालिश करें। डौर श्रधो लिखिन नुत्थादिबटी
खाने के लिये देवें।

## तुत्थादिवटी

तृतिया को श्राम्त पर लोहे के पात्र में रख कर २१ त्रार द्धि का तोड़ उस पर छोड़ें। इस मांति तृतिया गुड़ हो जाता है, फिर तृतिया से दूना कत्था मिलावे। फिर जल से घोट कर मृंग के वरावर गोली बनावें।

मात्रा १ गोला, अनुपान—मधु, समय प्रातः सांयम, इस प्रयोग से ६० प्रतिशत बालशोय से बच्चे अन्छे, हो जाते हैं । बैद्यवस्तु अनुभव करें।

## अतिबला (कंघी) का विचित्र प्रभाव

श्रिनिवला (कंघी) का दाई पत्तियां लेकर लगे हुवे यंगला पान पर राख कर वंदा उम पान की चवावे। फिर उस चये हुवे पान की पीक की लेकर बालक के पृष्ट वंदा पर गुदा के चार श्रांगुल उत्पर तक मालिश करे। १४ मिनट तक लगातार मेठदण्ड पर मालिश करता रहे। फिर शुद्ध वस्त्र से पेंछ देवे। फिर श्रुष्ट पर स्वेत की दे निकलते हुवे दिखाई पड़ेंगे उन्हे चिमटो से पकड़ कर खीच लेवे । इस मांति कीड़ों को निकाल कर फेंक देवे। यह योग रिववार के दिन किया जाता है। इसी मांति दूसरे रिववार को भी यही प्रयोग करे और गरीच ब्राह्मणों को भीजन दक्षिणा आदि देवे। इस से अवस्यमेव लाभ होता है। कोई वैंच अपामार्ग का ७ पत्तियां लेकर बंगला पान पर राव कर उपरोक्त विधि का अनुकरण करते हैं। इस से भी लाभ होता है।

## उत्फ्रन्लिका ( पेरीटोनाइटिम )

उमारेकेवन ६ मासा, मुमब्बर १ तीला. कस्तूरी २ माशा, गोरोचन ६ मामा, पान के रम से घोट कर मूंग के वरावर गोली बनावे। मात्रा १ गोली, अनुपान, उथा जल से पिस कर तीन २ घंटे के बाद प्रयोग करे। इस से दस्त होने पर खास की उध्योगिन शान्त हो जाती है। और झंर की चर्वी पमलियों पर, छाती पर सालिश कर कई से सेक देते ही रोग शान्त हो जाता है।

## अस्पमार

वात की दुर्ग्ट से मिन्निक के झान तन्तुओं में
प्रवाह होने से अथवा मृगीकीद के क्यान्न होजाने
से बानक और वड की मृगी रोग होना है, मुंहमें
फेन जाना, स्वानाश, सवाझकंप, विस्कारित नेत्र,
शुन्यत्व, स्वेद्धाना, पांव हाथ घिसना इन लक्षणी
वाला मृगी रोग होता है। उपचार--टकण भूनकर
दिन मे तान घर मां के दूध म देवें, १-१॥ रसी
त्रच मधु या दूध में घिमकर देना। फेखरोट
को बीज निर्मुन्धी रसमें घिसकर क्रेना। क्याबरोट
को बीज निर्मुन्धी रसमें घिसकर क्रेने करना!
भिलावें की बीज दूध में घिसकर देवें। बान्ही
बटी, स्मृतिसागर छादि में से एक बान्ही सिरप
से देना।

# बालशोष (तालु कटंक)

( लेखक-श्रायुर्वेद मनीषि. वैद्यराज पंडित देवकरणवाजपेयी. वैद्यशास्त्री. माहित्य रत्न ! उत्तरीपुरा कानपुर )

श्राजकल बालशीपरोग बहुत श्रधिक वढ़ रहाँ हैं हमारेयहां इस रोगमस्त बालक के शिरमें गढ़ के स्थान पर विशेषतः रित्रवार या मंगलवार को लोहे की मलाई से दारा देते हैं। यह किया फेबल एकशार करने हा से रोगी रोगमुक्त होजाता है। इस उपाय से श्राज तक लाखों जाने बचाई जानुकी हैं। मेरे शाम के निकटवर्ती एक स्थान में १ नाई के यहां कोई ४० वर्ष से यह किया की जाती है। यहां पर इस रोग के रोगी सकड़ों कोम से श्राने हैं श्रीर लाभ उठाकर जाते हैं। यदापि यह किया उत्तम है पर इसे सिद्धहरून श्रभ्यामी ही कर सकता है।

आज हम इस रोग पर एक ऐसा अन्युत्तम और सरल योग सहस्रोंबार का अनुभूत प्रगट करते हैं जो शतप्रतिशत लाभकारी सिद्ध होगा

इस रोग के कारण— माता का अशुद्ध भोजन दिन में सोना. शोक. तथा जिता करना. प्रति वर्ष गर्भ धारण का स्वभाव पड़जाना. प्रसूतावस्था में अधिक मैथुन करना. दूध का दूषित होना. वालक को अधिक मीठा खिलाना. माता के दूध में स्वरी प्रकृति का होना इत्यादि । इन कारणों का माता के स्तन पर प्रभाव पड़ना है, एवं वह (माताका दूध)
दूषित हो जाता है। यह दृषित दूध आंतों की
किया को विगाइता है। जिससे आंतों
में शोध और पहुत होटी २ प्रन्थियां भी उत्पन्न
हो जाती हैं. तथा बालक को दस्त आने लगते हैं।
रस. रक्तादि शारीरिक धातु यथोचित नहीं वनने
जिससे बालक होगा हो जाता है।

लाहाग-यह रोग धीरे २ प्रकट होता है। वालक की दिनभर दस्त आया करते हैं। ज्वर मदेंब बना गहता है. कभी २ उत्तर भी जाता है किंतु समग्र नहीं। हाथ पैरों के नलवे गरम, कान ठंडे गहते हैं। पेशाब कम होता है। मुख्य मृख्या है। नाल दब जाता है। शिर में ताल के स्थान पर गढ़ा पड़ जाता है और बहां धीरे २ धवकारा होता रहता है।

यक्कृत्—िकिया के ! विगाड़ से अग्निमाद्य. प्रतिश्वायादि होते हैं। शरोर मृखकर कांटासा हो जाता है। समस्त शरीर में कुरियां पड़ जाती है। बालक इतना निर्वल हो जाता है कि वह अपनी प्रीवा को नहीं संभाल सकता है। प्यास अधिक लगती है और बमन होती है। बच्चा मां का दूध

नहीं पीता, दिन रात रोया करता है और नाक विमा करता है। घीरे घीरे सिर हिलाया करता है। यह दशा रोग के प्रवल होने पर होती हैं। श्रिश्य वीवाण यंत्र से देखने से उसके रक्त में रोग जीवाणु दिखलाई देत हैं। यह रोग खूत वाला है। इसमें वालक के कानका निचला हिस्सा ज़ोर से भी दवाने पर वह रोता नहीं है।

विशेष मुचना-१-माना का दूध पिलाना विल्कुल बन्द करदे। २-बाहरी (कपर) शुद्ध दुग्ध पीने को देवे। ३-मीठा खिलाने से रोग प्रवल होता है अन मिठाई देना सर्वधा बन्द कर दे। ४-रोगा के पस्त्रों को माबुन से साफकर के प्रप में मली भाति मुखाने रहना चाहिये. क्योंकि उनमें बहुत दुगुब आया करती हैं।

## चिकित्मा

यहापि इस रोग का बहुत सी श्रोपिश्या है परन्तु हम आज अपने प्रिय पाठकों को एक स्थाप योग भेट करते हैं। इस के केवन सात जिल्हाल सृष्य हमें बालक को भी भार प्रयाजन ह जाने होता है।

मृखा गंशनाशक वटी- मंगानम्मः प्रानाको निममः सेत की लीपभम्मः किटागी-स्ताः स्वान्तमः प्रोप्त (शुद्रशत्व) की भम्मः श्राप्त स्वान्तमः प्रोप्त (शुद्रशत्व) की भम्मः श्राप्त स्वान्तमः प्रमान हुट हत्या स्वान्तम् स्वारः छोटी-प्राप्त स्वान्तम् प्रमान श्राप्त स्वान्तम् प्राप्त स्वान्तम् स्वान्तम्यस्वान्तम् स्वान्तम् स्वान्तम् स्वान्तम्यस्वान्तम् स्वान्तम् स्वान्तम्यस्वान्तम्यस्वान्तम् स्वान्तम्यस्वान्तम्यस्वान्तम्यस्वान्त सान्ना—१ गोली या अवस्थानुसार न्यूनधिक समय-प्रातः सार्य ।

अनुपान—जाड़े के दिनों में शहद के साथ। बरसात में-शरबत अनार या मिश्रों के जलाव में दें-(मिश्री के २० तील जलाब में १ तीला भुना जीरा मिला लेना चाहिये)। गर्मीके हिनों में शरबत कामनी के माथ हैं।

गुगा बालकों का मावा रोग- ज्वर, दृध-हालना, श्रनेक प्रकार के दस्तों का श्राना झादि सम्पूर्ण विकार २१ दिन से झावन्य नष्ट हो जाते हैं। यदि यह श्रीपध ४० दिन सेवन करादी जाये तो बालक पहिले से दृना मोटा नाआ हो जाना है।

विशेष अनुभव-श्यामा गां का १ वीतल मृत्र लेकर उस में से थीडे से मृत्र में १ तीला असली काशमीरी केशर घीट कर सम्प्रणं बीतल में मिला दें और डार लगाकर ६ दिन तक रख छोड़े। फिर उसमें से १ माझ तह लकर उस के साथ उपरोक्त बटी शांत वीपहर गींर शाम की खिलायें। इससे ३ दिन में ती बालक भी हालत बदल जाती हैं, आर १०-१५ दिन में बालक चंगा हो जाता। फिर हम इसा अनुपान से सबह शाम ४० दिन तक दवा अवश्य देते हैं। मुझे आज तक इससे बढ़ कर कोई अस्य योग नहीं। मिला और न किसी रोगी न चाराम न होते के, शिकायत की। मैंने इस से असाध्यावस्था तक के रोगियों नक को अच्छा किया है। आप भी वरतें और फलाफल अवश्य प्रकाशित करें।

## Subscribe to

## VAIDYA SARATHY

An Anglo-vernacular monthly Medical Journal mainly devoted to
AYURVEDA (the Hindu System of Medicine). A
Commentary of the Uthara Sthana of AshtangeHridaya in Sanskrit will also be published
serially in this journal.

# Annual Subscription Rs. 3 Only THE BEST MEDIUM FOR ADVERTISEMENTS.

Rates and terms on Application.

Contributions on the Ayurvedic System of Medicine and other allied sciences, in English or in Sanskrit are solicited from the well-wishers. of Ayurveds

## SAMPLE COPY FREE ON REQUEST

For further particular please write to:-

THE MANEGER,

VAIDYA SARATHEY

Vayaskara Arya Vilasom Oushadhasala Bldg.,

KOTTAYAM (S. INDIA.)

## Advertise your Soods

THROUGH

## SLIDES

At the following four best Cinemas . f Delhi:--

- 1. The New Royal Cinema, Fort Road.
- 2. The Cinema Majestic, Near Funtain.
- 3. The Jubilee Talkies, Fountain Road.
- 4. The Central Takies, Aimerigate.

For particulars apply to:--

Publicity Manager.

The General Talkies Ltd.

(Proprietors of the above Cinemas)

# Enteric Fever or Typhoid Fever

( ले॰ "स्विका प्रमाद (मल वैद्य मृप्ण एल० एव० आयुर्वेदिक कोलिज पीलीभीत । )



्रिं तिमान समय में मन्धर ज्वर ्रिं ( Populai ( 1009 ) का दे संसार के अन्दर अधिक प्रकीप हो रहा है. यह २ लक्टर तथा



( डा० जिलोकीन य . पांची भोजन्याता रे प्रदा)

वैद्य इस रोग की कठिन अनम्या में चिकित्सा करने में अममयंता प्राप्त करते हैं, किन्तु कुछ समय से आयुर्वेद समाचार-पत्रों में इसकी चर्चा मिलती हैं। आज कल इसे 'मोनीमाला' के नाम से मुशोभिन कर रकवा है ? यह रोग प्रायः वक्त्वों के पाया जाता है । विशेषकर ४-६ वर्ष वाले बालक पर इसका स्थाकमगा होता है, २७-२८ वर्ष वाले मनुष्य भी इससे पीड़ित पाये जा चुके हैं. किन्नु कम संस्था में । इसकी साधारण दिन्दी सापा में 'मोनी काला' के नाम से पुकारते हैं।

संस्कृत भाषा यें इसको—सन्धर ज्वर के नाम से पुकारते हैं।

अङ्गरेजी I neash में इसकी Triptoid Preser or Linteric Preser के नाम से प्रधान है।

युनानी में इस तारकी, मुवारकी के नाम से पुकारत है। तथा जिल्लानीनप भी कहते है। बहुत से चिकित्सक इसे व्यक्तिक ख्या कहते हैं ' इसका विद्यापर्याश्चर स्थान्स्य स्थान

यह एक गांधु संकामक गंग होता है. जिसमें जुड़ान्त्र के लसीका पन्थि समृत में शोध और वृगा हो जाते हैं, ज्वर शनै: २ चढ़कर कुछ समय रहकर शनै: २ उतर जाता, इस बुखार म प्राय: तीन सफाह लग जाते हैं।

कारण्—इसका कारण् एक विशेष क्रकार का दण्डाकार जीवाणु है, जिसे "वैसिलस टाई. फोसिस" कहते हैं यह जीवाणु रोगी के आन्त्रिक कृण, भूवाशय, पित्ताशय, प्लीहा, रक्त और þ,

पिड़काओं में रहता है। ये रोगी के मल मूत्र तथा कभी र स्वेद में भी उपस्थित होते हैं, रोग मुक्त होने के पश्चात् भी यह मल-मूत्र में आते रहते हैं। यह संक्रमबाहकों के मल-मूत्र में भी रहता है। इस दूषित मल-मूत्र से निम्नोक्त प्रकारों से आहार द्रव्यों तक पहुँ चकर उनको दूषित करते हैं, और रोग प्रसार का कारण वनते हैं।

मल मूत्र से मक्खी, मच्छर श्रादि कीटाखुओं को पैरों के साथ लेकर श्राहार द्रव्यों पर जा बैठते हैं श्रीर उन्हें दूषित कर देते हैं।

२ रोगी या संक्रमक बाहक के दूपित वस्त्रों को ऐसी जगह न घोया जाय जहां का पानी पीने वाले पानी में मिल जाये।

३ गन्दी नालियों द्वारा मल नलकों या नदियों में चला जाता है और पीने के जल को दूपित करके रोग फैलने का कारण बनता है।

४ कभो २ यह बायु के सम्पर्क द्वारा शरीर में प्रविष्ट हो जाते हैं और यह रोग उत्पन्न कर देते हैं। इसी प्रकार अन्य कारणों से भी यह रोग उत्पन्न हो जाया करते हैं।

अ्रान्त्रिक ब्बर प्रायः सारे भूमण्डल पर होता है परन्तु अधिकतर उच्चा प्रदेशों में श्रीर वहां पर भी प्रीच्म वर्षा तथा शरद ऋतु में अधिक होता है।

सम्प्राप्ति—रोगाणु अन्त्र में जाकर लसीका मन्धियों के समृह में शोध उत्पन्त कर देते हैं। यह शोध धीरे २ वढ़ने लगता है! दूसरे सप्ताह में वृग्ग बन जाते हैं और उनके ऊपर से श्लैष्मिक कला के टुकड़े महने लगते हैं इसमें यक्कत प्लीहा बढ़ जाते हैं। लज्ञगा—यह रोग शनै: २ आरम्भ होता है प्रारम्भ में शिर में शूल होता है, ऋक्षमर्द विख्वनध अरुचि ये लज्ञग प्रतीत होते हैं किञ्चिन ज्वर भी रहता है दिनों दिन लज्ञग तीबू होते जाते हैं और ज्वर बढ़ता जाता है और दो चार दिन में रोगी अशक्त हो कर शब्या की शरग लेता है।

आयुर्वेदिक मतानुसार

अधुर्वेद सिद्धान्तों के द्वारा यह ज्ञात हुवा है कि नवोन ज्वर में घृत खाने और पसीने के रोकने में ज्वर, दाह, अतीसार, वमन, निद्रानाश, तालु जिह्ना शोध आदि लहाएों के सहित गले में उत्तरते हुये मरसों के बरावर दाने मोती में देख पड़ते हैं, उन्हें मन्धर ज्वर कहते हैं।

आधुनिक मतानुसार भन्यर ज्वर की संतत ज्वर (स्यादी वृत्वार) कहते हैं यह रोग संकामक होता है अनुचित श्राहार विद्वार में तथा तक्षण ज्वर में थी पान करने से यह रोग उत्पन्न हो जाया करता है। इसिलिये कभी २ रोगी के सन्तिकट बैठने में तथा रोगी के जुड़े वर्तन में खाने पीने से या किसी विकाप सम्पर्क से यह रोग उत्पन्न हो जाया करता है। अतः वालकों को रोगी के पान से सर्वता पृथक रखना चाहिये। बालकों को यह रोग फुरफुस प्रदाह (निमोनिया) के बाद भी होते देखा गया है परतु विकाप ज्वरादि रोगोर्म ही यह मन्थर ज्वर पाया जाता है।

त्त्त्रण—इसका आक्रमण वालकों पर एका-एक ब्राजाता है श्रीर एक हफ्ते तक रातदिन एकसा ज्वर चढ़ा रहता है। सिर्फ प्रातःकाल कुछ कम हो जाता है परन्तु किर ज्यों का त्यों चढ़ जाता है धीरे २ ज्वर का बेग बढ़ने जगता

है प्रथमावस्था में ज्वर का तापमान १०२ हिपी या इससे ऊपर रहता है। शरीर स्पर्श करने से जब्गुता प्रतीत होती है, मस्तिक पर स्वेद, शिर में शुल विडबन्ध होता है। कभी २ पतले दस्त कभी शीत और कभी उच्छाता मालूम होती है साथ ही साथ मूर्छा व प्रलाप रहता है, खास लेने में कष्ट माल्रम होता है तृष्णा अधिक रहती है। जिन्हा मैली रहती है पेट फूला रहता है रात में इसका श्रधिक प्रकोप रहता है। प्रथम सप्ताह ही में या दसरे सप्ताह में सरमीं बरावर मोती सहश पिडका गले या छानी पर उत्पन्न हो जाती हैं नाही की गनि बल्हीन तथा भारी चलने लगती है। नाभि के नीचे दवाते पीड़ा प्रतीत होती है श्रीर उस समय कार का तापमान १०४ या १०४ हिमी तक पहुंच जाता है श्रीर कभी २ प्रलाप और कम्पादि लक्ष्ण भी होते हैं, ओठों और दांतों पर मल जमा हो जाता है, श्रांखे स्तन्ध्र व तेज-हीन हो जाती हैं। इसमें ऋति तीत्र ताप "टाकसी-मिया'' श्रतिसार, रक्त स्नाव या उदरक कला शोध से मृत्य हो जाने का भय रहता है, कभी २ यह श्रवस्था एक सप्ताह से बढ़ कर २-४-६ सप्ताह तक भी चली जाती है इसमें मुख विलकुल सुर्ख पड़ जाता है कभी कभी शरीर पर विशेषतः ग्रीवा भौर उदर पर श्वेत वर्ण की सायदाने के समान जोटी २ पिढ़िकाये निकल आती हैं जिनको कि बहुत से लोग आन्त्रिक उत्तर की पिड़कार्य कहते हैं परन्तु बास्तव में यह खेद प्रथियों के मुख पर शोप के कारण होती हैं जो भीष्म ऋत में अति स्वेद से प्रत्येक सन्तत ज्वर में हो सकती हैं। तुवीय सप्ताह में शनै: २ ज्वर कम होने लगता है

चतुर्थ सप्ताह में ज्वर उतर जाता है परन्तु दुर्बलता रहती है जिससे पुनः होने का भय रहता है
आन्त्रिक ज्वर काफी भयानक रोग होता है इस
में १४-२० प्रतिशत रोगी मर जाते हैं। बच्चे इस
रोग को वड़ों की अपेता अच्छा सह सकते हैं
और उनमें मृत्यु संख्या भी कम होती है परन्तु
दूध पीते बच्चे इससे कम बचते हैं। अति स्थुल
अति द्यीण तथा शराबी मनुष्य के लिये यह रोग
बहत भयानक होता है।

उपद्रव--१ श्रिति तीत्र ताप, २ टाकसीमिया प्रलापादि, ३ श्राष्मान ४ रक्त स्नाव ४ उदरक कला शोध, ६ फुरुकुस प्रदाह, ७ वृक्क शोध-शच्या बूए।

रोग मीमांसा—पूर्वीक लक्षणों से राग का पहिचानना कठिन नहीं है क्योंकि जिह्ना का बर्गा इसे बिलकुल स्पष्ट कर्दिते हैं परन्तु जब ज्वर अकस्मान् या शीध ही अपनी सीमा पर पहुंच जाता है तो इसे विपम-ज्वर तथा सन्तत ज्वरों से पृथक करना कठिन होता है। इसकी मीरम की "बिहाल परीका" और रक्त, मलमूत्र में से कीटाणु वृद्धि करके पहिचानकर की जाती है। तथा या जो क्रियासिद्धि भी बहुत कुछ रोग के झान में सहायता देती है।

उपचार—प्रथम सप्ताह से यदि ज्वर रोकने का प्रयत्न किया जाय तो दूसरे सप्ताह में समस्त लक्त्गणों की तीवृता हो जाती है। ऋतिसार तथा प्रलाप संज्ञानाश आदि लक्ष्मण होकर रोग ऋसाध्य हो जाता है यदि कोई उचित कारण न मिला तो तीसरे सप्ताह में ज्वर हल्का हो जाता है, मोतीमाला के दाने कंठ से हटकर छाती पेट जंघावों तक आ जाते हैं। नाड़ी की गति कम हो जाती है जिहा साफ हो जाती है तथा दस्त कम हो जाते हैं रोगी का बल बढ़ने लगता है तथा भूख लगने लगती है।

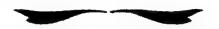
चिकित्मा--आन्त्रिक उत्तर के रोगी के मलादि निराकरण का समुचित प्रवन्ध होनाचाहिये परिचारकको स्वच्छना की नरम् विशेष ध्यान देना चाहिए। इसके लिए प्रति शोधक वैकसान का इन्जे त्यान सा देना चाहिए इस रोग में भोजन की तरफ विशेष धान देना चाहिये जबतक ज्बर हुट न जाय तयतक भीजन नहीं देना चाहिये। यति देवे तो मृदु और तरल पदार्थ देना चाहिये कठिन परार्थ नहीं देना चाहिए। परन्तु वरुवों को लंधन नहीं कराना चाहिए उनकी गाय का द्य उपानका द्वा चाहिए उसमें तुनव अपन भी डाल देना चाहिए। ससी के पूर्ण विनाय हेता चाहिए उसे किन्ने न देता चाहिए सह। लेड रहने से रोगी की शाब आराम होगा परन्तु बहुधर देवा गया है कि सहा लेटे रहने से शरपात्रण हो जाने का भय रहना है। श्रम, उसे करबट बरलते रहना चाहिए। ट्रम्फे श्राविभिक्त सरार पर विकटाफाइड स्पिपट लगाकर जिंक ोल ह स्टाप पथा इस्टिङ्ग पाउउर मल देना चाहिए यदि कोण्डवद्धता के नवण हों ना मृदु विरेचन देना चाहिए और यि अनिसार हो तो ''सि इ प्राण्डवरस्म, कर्पु र रम-शंख भस्म पाठादि

क्वाथ या कपूरितसवद्वारा उपचार कराना चाहिए। रोगी को प्रकाशयुक्त कमरे में रखना चाहिए रोगी के वस्त्र इत्यादि बिलकुल साफ होना चाहिए और कमरे में गूगल की धूप देनी चाहिए, कमरे में मनुष्यों की अधिक संख्या न होनी चाहिए, रोगी को पिलाने के लिए निस्त लिखित क्वाथ देना, चाहिए।

## मन्थ ज्वर पर अनुभृत योग

नागरमोथा, नुलमीपत्र, गिलोय, वामापत्र, कटेरी की जड़, मीठ, लीग, निगु एडी, पोहकरमुल अजवायन इन समम्न औषधियों की वरावर शिव रहने पर उतार छानकर मन्यरज्वर वाले की प्रातः तथा मायंकान १ तीठ या २ तीठ पिला देना चाहिए इससे मन्थरज्वर अवश्य नष्ट ही जवेगा। प्रथम-रीग मुक्त होजान पर शृंग का युप नथ्य परवल का युप देना चाहिए तथा ज्वरमुक्त हो जाने पर भी एक मानाइ नक ज्वर नाशक औषधि का प्रयोग करना चाहिए।

नंतर—शिशुशे के दन्तेद्राम काल में विशेष-त्या कीले निकलन के समय एक प्रकार का विषम ज्यर होता है जिसे साधारणत्या डांत निकलने का बुखार कहते हैं। इसमें उससे चिकित्सा की भिन्तता है। स्यादी बुखार तो स्याद पर चला जाता है और दन्तज्यर दांत निकलने पर उत्ह जाता है। (सम्पद्दक)



## 

( लेखक-म्यायुर्वेद विशारद पं० प्रभुनारायस त्रिपाठी "सुशील" प्रजावैद्य )

&**`\$**~**\$**\$~**\$**\$~**\$**\$~**\$**\$~**\$**\$~**\$**\$

यह एक भयानक रोग है। इसे संस्कृत में शीतला आयुर्वेद में मसूरिका (मसूर की दाल के आकार में निकलने के कारण ही यह नाम-करण समक पड़ता है-मसूराकृति संस्थाना पिड़िका सा मर्सारका ) तथा प्रचलित नाम "माता" है। वसंतऋत में यह रोग ऋधिक उत्पन्न होता है, इस कारण बंगाली बैंद्य इसे बसंत रोग भी कहते हैं। आयुर्वेद में यह रोग रक्तपित्त प्रधान या विस्फोटक श्रादि से मिलता जुलता ही उन्हीं का एक भेद माना गया है। डाक्टरी मत से इसे रफोटब्बर कहा जाता है तथा साधारण भाषा में इसे पाकाशय की गरमी से उत्पन्न एक प्रकार का विपेता ज्वा कह सकते हैं। चेचक तो इसका तुकी नाम है। श्रायुर्वेद में इसका भली भांति बर्णन आया है। इसके रोकने और इसके होने पर इससे आराम पाने के उपाय काको लिखे गए हैं।

प्लंग और कौलरा (हैजा) के समान चेचक का रोग भी भयानक तथा एक से तूमरे को लग जाने वाला (contagious) कठिन संकामक है। जिस मनुष्य को यह रोग होता है उसके मुख, नाक तथा शरीर के चमढ़े में दुझ इस प्रकार का जहरीला असर होता है जो पास में रहने वाले

मनुष्य को तुरन्त लग जाता है। फु'सियों की रत्बत व सुरंड की छूत चेचक के रोगी का शरीर जूने से, उसका झूंठा पानी पीने से, झूंठा भोजन करने से, रोगी के मल-मूत्र-धूक-पसीना श्रादि के।स्पर्श या उसके व्यवहार किये गए कपड़ों. विछौनों, चारपाई या वर्तनों को अपने काम में लाने से स्वस्थ मनुष्यों को यह रोग हो जाता है। वाय। द्वारा भी यह रोग एक दुसरे तक बहुत अधिक फैलता है और इस प्रकार से यह रोग तुरन्त विस्तृतत्तेत्र में फैल जाता है। इसका विष वायु के साथ मिलकर उसे दूषित कर देता है। श्रौर फिर यह दूषित वायु सांस के द्वारा शरीर में प्रवेश कर विकार उत्पन्न कर देती है। कभी कभी इसकी खूत का प्रभाव गर्भस्थ बालक तक पहुंच जाता है। रोगी के मर जाने पर भी उसके शरीर से विष निकलता रहता है जो आस-पास के लोगों को हानि पहुंचा सकता है। बच्चों में शायः यही होता है कि घर के एक बच्चे को चेचक निकली और यदि सावधानी न रक्खी गई तो घर के सब बालकों को चेचक निकलती है। कभी-कभी हुन्ना-बूत का विशेष ध्यान न रखने से मुहल्ले भर के वालकों को कष्ट उठाना पहुंता है। अस्तु, वे लोग जिन्हें यह रोग पहले कभी नहीं हुआ, सदा सशंकित रहते हैं, कि न जाने यह बीमारी किसको किस समय लग जाय। वास्तव में यह है भी बड़ा भयानक रोग। एक बार प्रकट हो जाने पर यह चेचक का रोग अपनी धन्तिम दशा पर पहुंच कर ही समाप्त होता है। धारम्भ में इसकी रोक आसानी से की जा सकती है, पर यदि प्रारम्भ में लापरवाही की गई तो प्रति सप्ताह यह रोग १७० मनुष्यों पर आक्रमण

क न जाने अन्य रोग ही उत्पन्न हो जाना, बच्चों भीर ग जाय। क्षियों में निमोनियां का हो जाना आदि अड़चनौं रोग। एक के सिवा अक्सर मृत्युष तक हो जाती हैं। रोग अपनी शीतला से जिहाशोध, गर्भाशय में शोध, शरीर होता है। के अवयवों में शोध, कोष्टबद्धता, बायु, खांसी जा सकती पार्श्वशूल, नेश्ररोग, रक्त पित्त, फोला, अय्ड-कोष ठी गई तो वृद्धि, गर्भ पात, उन्माद, हलकापन, आदि अन्य आक्रमण अनेक रोग भी हो जाने हैं। अगर रोगी किसी चेचक (माता) का रोगी

कर उनमें से १२२ रोगियों की तो यमलीक अवस्य ही पहुंचा सकता है।

लोग जितने रोगों से नाना प्रकार के कष्ट पा रहे हैं, उन सब में यह महा कष्टदायक रोग है। इस रोग से लोगों में श्रांतकसा छा जाता है। रोगियों को अत्यन्त कष्ट और बेचेनी होने के सिवाय उनमें से बहुतरे तो अज-भंज हो अ बे बहरे नथा कुम्प हो जाने हैं, स्रत शकत स्वस्व हो जानी है, फेफड़ों का स्वराव हो जाना और तरह बच भी जाता है तो रोगी के शरीर पर चचक के निशान रह जाते हैं। श्रांकों पर इसका बुरा श्रभाव होता है। कभी-कभी तो एक या दोनों श्रांकों खराब हो जाती हैं। श्रनेक लोग इस रोग के द्वारा श्रपनी श्रांकों को बैठते हैं-काणे हो जाते हैं श्रांकों में फूली पड़ जाती है। श्रन्य बीमारियों में मनुष्य बीमार होकर जब श्रच्छा हो जाता है तो कोई चिन्ह शरीर पर नहीं रह जाता है जि इस रोग से बीमार होकर श्रच्छा होने पर हर के बदस्रत दारा तमाम शरीर पर सदा के कि होने पर मनुष्य कर्त्इ नहीं पहचाना जा सकता है। सब से बुरी बात तो इस रोग में यह है कि इसके शिकार मारत के माबीसर्वस्व—छोटे छोटे बालक ही होते हैं। निरपराध बच्चे ही इसके चंगुल में अधिक फंसते हैं।

चेचक का भर्यंकर रोग प्रायः प्रत्येक देशों मत्येक ऋतु, प्रत्येक अवस्था, प्रत्येक जाति में होता है। पर अनुभव से देखा गया है कि यह रोग जब दक्तिए दिशा की हवा श्रधिक चलती हैं, तब होता है। शहर में [उपण्ता श्रीर तरी अधिक हो तो भी यह वीमारी फूट निकलती है। इसका विज्ञेष प्रभाव शीन देशों की अपेसा गर्म देशोंमें, जहां पर न अधिक गर्मी पड़ती हैं स्त्रीर न श्रधिक सर्वी बहां इसका असर कम पड़ता है, गोरों की अपेचा सांबल और काल रंग वाले मनुष्यों को, जवानी और बढ़ों की अपेता बच्चों को, घनी लोगों की ऋषेजा गरीबों को तथा ऋन्य ऋतुओं की अपेदा शीत काल तथा दर्मत ऋतू में अधिक होता है। बगुर्ने कि गर्मी थोड़ी बहुत अवश्य रोज पड़े। प्रीष्म ऋतु में ज्यादा गर्मी पड़े श्रीर वर्षा ऋतु में भी कुछ गर्मी शेष हो तो वर्षा ऋतु के बाद भी शीतला निकलती है। ख़ुश्क मिजाज के मनुष्यों को यह बहुत ही कम निकलती है। गर्म अकृति के मनुक्यों को इस रोग के होने की श्राधिक संभावना रहती है। साल भर याद के नालकों को यह रोग कम होता है। यह रोग जीवन में एक ही बार होता है। यह संयोगवश दुवारा हो ती वह उतना भयानक नहीं होता ! कभी कभी तीसरी बार भी यह रोग हो जाता है परन्तु करोड़ी में किसी एकाध को।

जब चेक्क की बीमारी फैल रही हो सो निम्न किखित छपाय करने पाहिये ।

## चेचक रोधक प्रयोग

- १. नीम की कोमल पत्ती और मुलह्ठी दोनों को सम भाग में पीस कर दो रशी की गोलियां बना कें। दोनों समय दो दो गोलियां ठंडे पानी से खावें।
- नींम के बीज, हल्दी, बहेड़ा की मींगी सम भाग ठंडे पानी में घोट कर दोनों समय पीने से शीतला नहीं निकलती।
- नीम की पत्ती ग्यारह श्रदद और पांच काली मिर्च मिला कर श्राध पाव जल में पीस नित्य पीने से प्रायः रोग नहीं होता।
- ४. इमली के बीज को पानी में भिगों कर द्विलका निकाल १ तोला बीज ४ तोला पानी में पीस ६ मासा शहद मिला नित्य पीने से रोग नहीं होता।
- इसली का बीज १ नग, हल्दी १ मासा दोनों को शीतल जल के साध दोनों समय पीने से रोग नहीं होता ।
- ६. हल्दी को महीन पीस गुलाब के अर्क में घोट गोलियां बना ले. बंचक के मौसम में इनको सेवन कराने से बच्चे चेचक से सुरिह्तत रहते हैं। यदि चेचक निकल आई हो तो भी दोनों समय १-१ गोली खिलाने से चेचक फौरन इस जाती है। मात्रा आयु के बिचार से कम अथादा कर सकते हैं।
- ७. घोड़ी के तूथ में क्स्त्र मिगोकर रखते
   जामरयकतानुसार थोड़ा सा क्स्त्र पानी में मिसी
   कर पिलार्वे ती चेचकरे बच्चा सुरक्ति रहता है।

- इ. चमेली के पत्तों का रस, केले का पानी, श्रद्धसे के पत्तों का रस, मुलैठी और शहद इन को समान भाग में लेकर पीले।
- चमेली के पनों का रस निचोड़ कर उसी
   के बरावर शहद मिला कर पीवे।
- १० चन्दन सफेद, मुलैठी, मुनक्का, कुटकी, गिलोय इनका कादा बना कर पीवे।
- ११. जिस समय बालक उत्पन्न हो तो नाल के रिधर को बालक के पेट के भीतर न जाने हें बाहर की और सूतना चाहिये, नाल काटकर उसमें अनिवधे मोती १२ संख्या में नामि की ओर डाल कर उपर से बांचे। नाल निकल जाने पर १ मोती प्रतिदिन के हिसाब से १२ दिन तक खिलाये इस से सारी आयु शीतला रोग से बच्चा सुरत्तित रहता है। यदि नाल में न रख सकें तो भी २ सप्ताह तक अवश्य अनिवधे मोती खिलाये।
- १२. गर्भ चिन्ह प्रकट होने पर गर्भिणी को २१ दिन तक १ मासा रसीत को जल में घोल और पानी को निथार कर पिलावे तो वालक प्रायः शीतला रोग से सुरज्ञित रहता है।
- १३. गदही के प्रसव होने पर प्रथम दिन का दूध वच्चे की पिलायें तो चेचक नहीं होती।
- १४. जिस बच्चे की बेचक निकतने का भय हो उसके शरीर में कदान का बड़ा दाना पहले से ही बांध देना चाहिये। जिनको निकल आई हो उन को बड़ी हड़ की गुठली गूदा व फल सहित जल में घिस कर शहद के साथ चटाने से लाभ होता है। खांसी आने लगी हो तो ४ वृंद अदरख का रस मी मिला देना चाहिये।

## वेचक-विकित्सा-

- १. जब शीतला प्रकट होने, वाली हो ले केला, सफेद चन्दन, अडूसा, मुलहटी या चमेली के पत्ते का रस किसो एक में शहद मिला कर पीने तो यह कम निकर्ल और दूर हों।
- २. शीतला के दिनों में यदि एक अनविधा मोती गुड़ में लपेट कर खिलाबे तो दो सप्ताह तक तो शीतला से सुरक्ति रहें और निकले भी बहुत कम।
- ३. मुनक्का ११ दाने, सोने का वर्क १, केशर १ रत्ती श्रर्क गावजवान में घोल कर शीतो-षण जल के साथ पिलाने से दाने शीघ निकल आते हैं।
- भ. खूबकला हाथ की हथेली और पांच के तलवों में मले और उसको पानी में उबाल कर उसका बफारा दे नथा ऊपर से बस्त्र हक दें तािक पसीना निकतं और मुनक्का व खूबकला को औटा कर मिश्री मिला कर पिलावें तो इससे ज्वर को भी खाराम होता है और दाने भी सुगमता से निकलते हैं।
- ४. शीतला के दाने जब भर, जांय तो गन्ने के दांत को सिरके या अर्क शालाय में या केबल जल में चिम कर उनके ऊपर लगाया जाय तो जलन व खाज सब नष्ट हो कर बहुत शीघ अच्छे हो जाते हैं।
- ६. खाज आदि करने से जबाकि दाने खराब हो जाते हैं तथा भयानक दशा हो जाती है तो गर्ज का दांत धिस कर उसका लेप बदन पर करने से उन को आरोग्य कर देता हैं और खुरंड इस मकार उतर जाता है कि अवांभा होता है।

७. जब शीतला खूब भर जाती हैं और नालान से उनके उपर का खुरंड उतारा जाता है तब बहुत पीड़ा होती है ऐसी दशा में गबे की लीद की राख बुरकने से या उसकी धूनी देने से जलन आदि की पीड़ा दूर होती है और वह स्थान साफ़ हो जाता है।

म. यदि दानों में खुजली हो तो भोजपत्र
 माफ की पत्ती की घृती देना चाहिये।

 राल का सरहम श्रीर काफ़ुर का मरहम लगाने से दानों की खुजली दूर होती है।

१० सफेदचंदन, श्रह्नुसा, नागरमोथा, गिलीय, दाय समभाग का दूध में काढ़ा बना कर देने से शीतला के खबर की पहली श्रवस्था में लाभ होता है।

११. बड़, गूलर, पीपल, श्राम, दाख के वृत्तों का चूर्ण बहती हुई शीतला पर खिड़कना बहुत लाभ दायक है।

१२. राल, होंग, लहसन की धूनी देने से शीतला के बहाब में क्रांम नहीं पड़ते तथा यदि पड़ गये हों तो आराम हो जाता हैं।

१३. मुरदासंग, पुराने बांस की जड़, चना, चावल का आटा, पुरानी हुड़ी, ख़्रवृजे की मीगी बकाइन की मींगी, कूट, सब को पीस छान मेथी के लुआब व आलसी के लुआव के साथ उवटन की तरह रात को मले और सबेरे भूसी तथा गर्म पानी से धो कर स्नान कर डाले तो शीतला को खुजली व निशान हुर हो जाते हैं।

१४. फु'सियों में पीप बनैरह बहने लगे तो उन पर जंगली करहीं की राख जिड़कने से घाव सुख जाते हैं। १४. यदि घात्र पक जांय तो दूच श्रीर जला-शय के श्रन्दर के कंकर पीस कर लेप करने से लाभ होता है।

१ - कलौं जी के पत्तों का काढ़ा बना कर उस में हल्दी डाल कर पीने से भयंकर से भयंकर शीतला का नाश होता है।

१७. छोटा पंचमूल, वड़ा पंचमूल, आमला, रास्ता, ख्स,धमासा, गिलोय, धिनयां और नागर-मोथा इन का कादा इस रोग में अत्यन्त उपयोगी है।

१८. शीनला को शोध मुखान तथा उस के चिन्ह न पड़ने देने के लिये गोमूत्र का व्यवहार बड़ा लाभ दायक होता है।

१६. यदि शीतला के दाने निकल कर फिर अन्दर चले जाय तो कचनार की छाल का काढ़ा रत्ती भर सोनामक्खी के साथ देना चाहिए।

२०. मंजीठ की छाल, पिलायन की छाल, बड़ की छाल. सिरस का काढ़ा भी गुएकारी हैं।

२१. वांस की द्वाल, तालीस, लाख, विनीला, मसूर का त्राटा, जो का श्राटा, बच, श्रतोस श्रीर थी इन का धूनी देने से बड़ा लाभ होता है।

२२. खैर की छाल, नीम के पत्ती, सिरस की छाल, गुलर को छाल, इन की पीस कर लेप करना बड़ा हितकारी है।

२३. जब स्थिति श्रसाध्य हो तो नीम के पत्ते भित्तपापड़ा, पादा, परवल, परवलकडुआ, कुटकी, सफेदचन्दन, खस, श्रामला, श्रद्धसा, धमासा, का कादा देना चाहियें।

२४. श्रंजीर ज दं ७, मसूर की दाल विना जिलका की १ मासा, कतोरा, सोंफ, ६-६ माशा

सब को १२ तोला पानी में उत्राले ४ तोला शंष रहने पर मसल- छान कर पिलावे।

२४. शीतला के कारण आंख में फोला ही जाय तो शीतला की खुरंड गुलावजल में विस कर लगाने से नाश होता है।

२६. ऋांकों में शीतला के दाने निकर्ले तो लिसोड़े की छाल पीस कर गाढ़ा गाढ़ा लेप करने से लाभ होता हैं।

२७. तत्काल निकाला हुआ धनियां का पानी और खट्टें अनार के पानी से आंखों को धोते रहना शीतला रोगी की आंखों की रज्ञा के लिए लाभकागे हैं।

२०. मुलहरी का काढ़ा टपकाना उस समय लाम दायक हैं, जब दाने आंख में निकल आवें! २६. सेव के गुद्दे का जुम आंखों में लगावे

तो श्रांग्वां को कोई भय नहीं बहना । पहले तो

दाने निकलेंगे नहीं, यदि निकलेंगे तो शीघ स्थाराम हो जायंगे।

३०. शीतला के निकलने से जिस के नेत्रों में फोला हो जाय तो गर्ध का दांत। अर्क गुलाब में घिस कर नित्य लगावे तो फोला जाता रहता है।

३१. श्रकं गुलाव में माजूफल विस कर श्रांख में टपकान से लाभ होता है।

३२. मेंहदी के ना जपनो पीस कर पैरों के नलुद्रों पर लेप करने से दाह शांत हो कर चेचक के कारण नेजों के विगड़ने का भय नहीं रहता।

23. जब छाने अच्छे हो जायें और उन के चिन्ह रह जायं नो चिन्ह दूर करने के जिए मुखे बांस की जड़, का जो आटा, बाक़ला का आटा, खरबुजा की सीगी, चाबल, मिश्री, बादाम की सीगी सब को कृट छान सक्यन में मिला कर सला करें तो चिन्ह दूर होते हैं।

## ज्वर मुरारि

ये गोलियां सब प्रकार के नवीन और प्राचीन नथा बारी से माने वाले ज्यरों को जड़ से दूर कर देती है। इनके संवन से भूख और शक्ति दिन प्रति दिन बढ़ती जाती हैं, जिस प्रसन्म हो जाना हैं, मलेरिया के दिनों में स्वस्थ मनुष्य भी १ गोली प्रातः काल दूध या गरम जल से लेता रहे तो मलेरिया के ब्राक्तमण से बच्चे रहेंगे, इनसे किसी प्रकार की खुशकी या गरमी नहीं होती। लाखों रोगियों पर श्रद्धभूत है मूल्य २४ गोलों का ॥)

बहद आयुर्वे दीय श्रीपधालय भाण्डार,

जौहरी बाजार देखती ।

**MONIMARY PERSONAL PROPERTY CONTRACTOR CONTR SECRECASOS CONTRACTOR CONTRACTOR** 

# मातृ शांके

( ले॰-श्रीमती इन्द्रिगदेवी जी शास्त्रिमी बेंचा, शायुर्वेदमणि नारीश्रारेक्यमन्दिर, गनेशर्गज, लखनक।)







इम देवियाँ थीं निज गृहों में, दिव्य भारतवर्ष था सुख-शान्ति थी, सम्मान था, स्वातन्त्र्य या उत्कर्ष था ॥ वामाङ्ग बन कर भी सदा, दाचिएय दिखलाती रहीं। निज कीर्ति की वह वैजयन्ती मंजु फहराती रहीं ॥१॥ इस कौन थीं, क्या हो गईं हा, आर्यभारत नारियाँ। की बेड़ियों से हैं, जड़ीं सुकुमारियाँ परतन्त्रता जो शक्ति थी अवला हुई वह, अंग चारु अपंग है

इस विरंव के वैचित्र्य का, यह भी अनोखा रंग है ॥२॥

# माता की महिमा

श्रपार कब्ट सहने की अद्भृत सीमा देखनी हो तो माता को देखिए, अद्वितीय और अलीकिक अनुपम और स्वर्गीय प्रमांकी छटा देखनी हो। तो जरा माता की गोद में जा बैठो, निस्काम कर्म, नि:स्वार्थ सेवा का पाठ पढ़ना हो तो माता से जा पड़ो, देश में बीर, धीर, धीमान्, उदार मन्तान पैदा करनी हों तो माना की मिन्नत करो, क्रान्ति उत्पन्न करनी हो तो माता को स्रोत बलाखी। सदाचार और धर्म की शिला कीन देगा ? माता ! सत्य का मंत्र कौन सिखा सकता है? माता! युद्ध में जुक्त पड़ना कौन मिला सकता, और बुजदिल कीन बनायेगा ? माता! माता तू अनन्त शक्ति है, तू ही भक्ति है, ज्ञान कर्म और मुक्ति तू ही हैं। तेरी गोद में बैठकर जिसने पठ नहीं पढ़ा यह दुनियां में कोल हुआ। माता ! जिसे तुन जो कुछ मिलाया भडी लेकर वह संसार में अवतीर्ग हुआ । मां ! कृष्ण और राम नेरी गोद में पते, ईसा झीर मुसा, मुहस्मद श्रीर दयानन्द शंकर और वृद्ध सबने सब कुछ नुमसे ही पाया। तुने इनको जो पाठ पढ़ाया वही दुनियां को वे पढा गये।

स्त्री ! तेरा जीवन तुच्छ होता ! तो तुझे कौन रिगनता !! तू शायद पुरुषी की भीग सामग्री ही होती, यदि तू माता न होती । तुम्ममें और पुरुष में क्या फके है जो पिता और माता में है । तू मां (ले॰--श्रो० डा० युद्धबीर सिंह जी, एच० एम० बी० होम्योपैधिक धर्मार्थ श्रीपधालय देहली।

है अम्मां, वे पिता जी हैं, वे बाबू जी हैं। वे आप हैं तू-तू है, गांधी को तूने गोद में विकास है, भगवान बुद्ध को तूने अपना दूध पिलास है और दयानन्द को तूने स्नेह पूर्वक अपनी गोद में पाला है मां तू सब कुछ है। जाग माता, जाग, अनन्त शक्ति का अयोग कर और कन्दों का हरण कर।

हमान तहें, हु ही राश्विधी हमारी।

किसान हु है शृही है ज़िल्ह्यों हमारी॥

दिल है यहन में तृही बाह्य में गिक्कि तृही।
तेरे ही में स्विकी हैं दिल की सभी हमारी॥
तृहीं का कीदा हिल में मान हमेगा देवें।
हर हा तुने ही बारेबें उत्काम भरी हमारी॥

माता को बार २ नमस्कार करे। आज माता ही के सम्बन्ध में पूर्व पाठिकाओं के सामने कुछ निम्बने लगा हो।

कीनमा ऐसी माना होगी जिसे माना वनने में गौरव मुख और आनन्द न हो। माना की महिमा महान है-माना का आदर, माना की शक्ति, और माना बनने का आनन्द अपार है। माना बनने की इच्छा भी सबमें अनुक्तित है, अन्त्य है, परन्तु माना बनने की जिम्मेवारी विकट है। माना क्या नहीं कर सकती, पुरुषों को शुरुवीर बनाना, घरों को स्वर्ग बनाना, राक्तिशाली बीर सन्तान पैदा करना सब बुख माना के बार्ये हाथ के खेला है। एक पुरानी कहानी याद आती है कि एक समय राजा और रानी में बहस हुई। राजा ने कहा कि सब के जो पुत्र होगा में उसे उच्च कोटि का योद्धा -बीर सिपाही बनाऊंगा। रानी ने कहा उचित है, परन्तु आपके हाथ बनाना क्या खाक है, आप तो कुछ नहीं कर सकते सिर्फ बोज बोने के अधि-कारी हो। भक्ति, योद्धा, दास जो कुछ चाहुं बह तो में ही बना अकतो हूं। राजा ने कहा घमन्ड की हंमी हंमकर कहा अच्छा देखें बनाना, हमारी तुम्हारी शर्त रही। रानी ने उसी दिन से निश्चय किया कि अब के जो पुत्र उत्पन्त होगा उसको भक्त बनाऊंगी।

भक्तों की कथा मुनना, उनके चित्र देखना, साधु पुरुषों का मन्त्रंग करना उसने आरम्भ किया और अपनी भावना को हद कर लिया। उत्पन्न होते ही पुत्र को चैसी ही कथा मुनाना और उपन्देश देना आरम्भ किया। जब बड़ा होकर पुत्र पिता के अधिकार में आया तो उन्होंने सिपाहियों के कतंब्य सिखाने शुरु किए, और योडा बनाने के उपन्य किए। रानी निश्चिन्त थी आखिरकार

बीस वर्ष का होते२ पुत्र साधु हो गया, और राजा की एक न चली, राजा ने हार मानी।

कथा पुरानी हैं, पर उसके बाद एक नहीं लाग्वों करोड़ों रानियों से राजा हार मान चुके हैं, औरपुरुप जाति अपना हार को उच्च स्वर में स्वीकार कर रानी का स्वस्व दे चुकी है।

मातृमान पितृमान् । आचार्यवान् पुरुषीवेद ॥

रानियों! उसरानी ने तो अपना स्वस्व सिद्ध किया था, पर आज तो सारे संसार के राजा तुम्हें तुम्हारा स्वस्व दे रहे हैं। तुम इसे पहिचानो और महण करो। वास्तव में माता का काम कीई नहीं कर सकता। माता-माता है। इसिलये है माताओ ! आओ! आपके कर्तव्यों पर थोड़ा विचार करें और देखें कि आज मनुष्य जाति की चिलतावस्था और भारत की हीनदशा को सुधारने में आप कितनी मदद कर सकती हैं। आशा है आप इसी विषय पर पूर्ण विचार कर अपनी महान जिम्मेवारी को महसूस कर के दुखी भारत को सुखो वनाने का प्रयत्न करेंगी।



# टीका (वैक्सी नेशन Vaccination)

( ले॰- शो॰ पं॰ भगवह व शर्मा ऋायुर्वेदाचार्य 'संपादक' )

टीका लगाने की रीति प्राचीन काल से भारत-बंध स्त्रार चीन में प्रचलित था परन्तु १७६६ ईसवी में एडवर्र जैनर ( Edward Jamer ) ने जब एक म्बाला के मुंह से यह कहते ख़ना कि मेरे बाज में अब गो को स्तन का चेप लग गई हैं इमिलिये अब मुक्ते चेयक नहीं निकलेगी, उसने बहुत समय तक यह भी देखा कि गीशालाओं में गौबों के स्तती पर एक प्रकार की छीटी २ पीपदार फुन्सियां पैदा हो जानी है, और फिर एकदम यह रोग म्वाली में फैल जाना है, और धीरे २ इन म्बाली में चेचक के प्रति अनता (महनशीलना) उत्पन्न हो जाती हैं। दूसरी बात उसने यह भी देखी कि जिसकी पटले चेचक निकल चुकी है. उन्हें गोश्रों के हारा यह भेग नहीं होता. इससे दमने यह निश्चय किया कि यदि एक बार भी की चेचक की शर्मार में शंबद करा दिया जावे ती फिर यह भेग या ते। पेट्राटा न होता या इस का ऋसर बहुत कम होगत, इस तरह से यह प्रथा वरावर चल सकती है, बस यह घटना थी कि जिस न इस टीके के परीकर भे प्रवृत्त किया और यहीं से टीके का प्रारम्भ भी हुया। जेनर के मन्य में चेचक के टीक का खुने तीर पर खुब रिवाज था, क्यों कि उस समय टीका लगाने से जो विकार उत्पन्न होते थे वे इतने तीव न होते थे जितना कि

स्वयं चेचक रोग। ऐसा कभी नहीं होता था कि चेचक के दाने संख्या में इतने अधिक फट पड़ कि व आपम में एक दूसरे से मिल जावे वा रक्त जारो हो जावे, जो फन्मियां निकलमा थी थे श्रिधिक से श्रीधिक २०० होती से ज्यादत न होती थीं। ईमाइयों के आगमन से बहत पहिले भी भारत में बाबाब लोग चेचक का टोका लगाया करते थे वे शानकानमें वेचक के राये रोगिया की गतवर्ष के रोगियों के दानों के स्वेव हुए खिल्ही से टीका लगाते थे। उस समय यह रिवाज चीस, अर्थ, तथा अन्य प्रदेशों में प्रचांतन था। चेत्रक को रोकने के बारने टीका रिनना उपयोगी है। यह जेनर साहव ने अच्छी तरह बता विया । पहले उन्होंने साथ का चेयक की रन्यत एक आदमी के बाजू में पहुंचाई, थोड़े दिनों में जहा टाका लगाया था बहां पर गी की चेचक की तरह का दाना उठा, फिर उस दाने से रन्यत लेकर दूसरे ब्राटमा के लगाया, जिससे फिर उसी तरह का दाना उठा और उम से फिर दूमरे के लगाया, इत प्रकार उस इक्टर ने हजारी पर यह कार्य किया श्रीर सफल हुवे। जिनके यह टीका लगा वे चेचक से बच गये, कहते हैं इस नवीन रीति के निकालने की प्रशंसा में सरकार से हाक्टर साहव को एक लाख रुपया पारितोषिक मिला.

जब से यह रीति निकली तत्र से चेचक नहीं
्निकलती या कम निकलती है, इसका प्रमाण
यह है कि दोनों ध्याना के की तुलना करलो
कि चेचक कहां पर भयंकर छीर बातकरूप में
निकलती है, जिन तरुण मनुष्यों की टीके के
बाद चेचक निकलती भी है तो उसका यह कारण
है कि उनमें टीके का प्रभाव शने कम हो गया
है, छीर किर भी उतनी घातक रूप में नहीं
निकलती।

## टीका लगान का समय-

क्योंकि लेकक ख्यानक वन्नों का है। रोग हैं, इसीलिए इसना श्रांत नगायाने में लेन करना वहां भारो गलनी है। यहि बीध्यन्यणं ऋतु न हों श्रोर बच्चे की पंत्रिक्ष अतिसार खांकी, बुखार, ख्यांकी, खारिश, अवंश वर्षेण रोग न हों, सन्दुरुसी अन्त्री हो तो झः सप्ताह की उमू से तीन मास तक के बच्चे की टीका लगाना उत्तम है। श्रथ्या दांत निकलने से पूर्व ६ माम तक भी दीका लगाना श्रेष्ठ है। परन्तु जबिक आस पास चक्क फेल रही हो तो उस समय श्रायु का ऋख ख्याल न करके जन्म के तीमरे दिन बाद ही टीका लगाना देखें, यदि श्रावश्यक सममी जावे तो गर्भवती स्त्री को भी टीका लगा सकते हैं। टीका लगाने की गीति—

टीके का प्रयोजन यह है कि गाय की चेचक का श्रंश शरीर के अन्दर पहुंचा कर उसे शोपण किया जाने। टोका प्राय: बाहु के बाग्र भाग पर अंसच्छदा मांस पेशी पर या उसके नीचे अथवा कोहुनी के मोड़ के नीचे लगाया जाता है। टीका समाने योग्य स्थान को पहले गरम जल और

माबुन से या किसी कीटाणु नाशक द्रव्य से श्रथवा किंचरशायोडीन से हल्का लेप करना चाहिये, फिर बायें हाथ से उसके हाथ को नीचे की कार्टोर स पुकड़ें । जिससे ऊपर या सामने को श्रोग जिल्द तन जावें, फिरे का गए के चंचक की रत्वत लेकर नश्तर की नोक में रक्खें इसे तिरहाँ करके त्वचा में अन्दर प्रवेश करा दें जिससे नाम मात्र खन भी अञ्च निकल स्थावे चराभर नश्तर की नोक को वहीं रहने देना चाहिए। जिससे कि रतृवत बाहर न आये और वहीं सूख सके, फिर रत्यार की निकालकर उस स्थान को अरुद्धी तरह मसल दें, परन्त या, रत्यत निकत जावे या मन्देह हो तो आध आध हाँच के करतर से पिर इसी प्रकार लगाते हैं। इसरी विधि यह है कि उपरोक्त विधि से बाह की पकड़कर त्यचा की सुई से गींद दे फिर रत्वत उस पर लगा देवें।

## तीसरी विधि:--

वाहु की उसी प्रकार पकड़ कर वैक्सीन की सुई में भरकर त्वचा में इस तरहा॥ अन्दर पहुंचावें। कहीं कहीं शिगाफ (चीरा) जगाकर फिर वैक्सीन (रत्वत) की मसल देते हैं। इस की और भी अनेक विधियां हैं। टीके के उपर पट्टी वगैरा बांधने की कोई आवश्यकता नहीं है, सिर्फ गौज ही काफी है या इसके जिए उक्कन जैसी चीज (कवर) आती है उसका इस्तेमाल

टीका लगाने के पश्चात् चिकित्सा-

टीका लगने के बाद बाहु को कुछ देर तक खुला रक्खें जिस से वह स्थान सूख जाय, फिर घी या मक्खन लगा दें अथवा बैसलान और बोरिक एसिड़ मिलाकर लगाये. सफेट्टा क्याहर गरी, और धुना हुआ मक्खन मिलाकर लगादें। अगर उबर हो तो बायु से बचाकर लिटा दें. कास्ट्रल का हल्का जुलाब देवें. ओर डोली बाहों का दुग्ता पहिनायें जिससे बूगा में रगड़ न लगे, मक्खी, धूल, मिट्टो. बगैरा से रजा करें। बच्चे को गधी का दूध पिलान से और शरीर पर ममलने से चेचक निकलती।ही नहीं, इसीलिए सम्भव है हिन्दु शास्त्रों में शीतला की सवारी गधा माना गया है और उसकी पूजा का विधान है।

## टीके के अच्छी प्रकार लगने के लच्चण --

जब किसी स्वाम्थ शिशु के विधि पूर्वक टीका लगाया जाये. तो पहिले दो दिन तक टीके वाले स्थान पर कोई चिन्ह प्रकट नहीं होता नीसरे दिन उस स्थान पर गोल गोल, चपटी, लाल रंग की, सख्त फून्सिया निकलती हैं और ४-६ वे दिन इनमें खेंडे के समान गोलाकृति, नीलापन लिए. किनारों पर उंचा बीचमे दवा हुआ फ़र्पाना हो जाना है, पहिले यह फफोला देखने मे \*बच्छ मोतो वी तरह चमकता है, परन्तु उयें। उयें। वहा होता जाता है यह बीच में से दवता जाता है और इसके चारों छोर एक गहरा लाल और उभरा हुन्ना मंहल वन जाना है। यह ब्राठवे विन पूर्ण होकर आवरण बन जाता है. ये वाने चेचक की नगह के ही निकलते हैं, आठ दिन बाद यह आवरम् पककर रंग में भूरा, तना हुआ श्रीर उठा हुआ होता है, इसके नीचे चिपचिपी स्वच्छ लसीका भरी हुई रहती है जो जरा सी किसी चीज के चुभने पर बहु जिस्हाती है, इससे अन्य बच्चों को भो टीका लगाया जाता है, फिर्र ह वें दिन आवरण पर भी पिडिकायें निकल आतो हैं, इसके चारों श्रोर एक मंडल सा , जाना है इस अवस्था में कुछ सार्वाङ्गिक लक्स जैसे भूव का न होना, वंचनी, जी मिचलाना, वमन, सिर, कमर, पीठ इनमें दर्द, ज्वर हल्का १०० डिमी के लगभग होता है। दसबे बारहवें दिन दांनों का लमी का गदली होने लगती है, मूखना मुरकाना प्रारम्भ होता है। मूखने पर स्थाम वर्ण लिये फुन्मी हो जाती हैं फिर १४वे दिन मुखकर एक जिलका सा रह जाता है जो कि शाया २१वं दिन वह भी उतर जाना है, छिलका उत्तरने के बाद एक सुखी सायल निशान रह जाता है यह निशान चेचकजतांक कहलाता है। यदि उपरोक्त प्रकार से टोका लगान पर फफोला न पड़े या उसमें नीर (लसीशा) न भरे नो समग्रता चाहिये कि टीका लगाने का नाइ श्रमर नहीं हुआ, ऐसी दशा में फिर से टोका लगाना चारिये, तब टांका उठ आवे तो उसे कटने से बचा मा पार्वहर्य यदि बट कपड़े का **रगड** से फुट गया तो उसका पीप बदन में और जगह लग कर भी फोड़े पैटा कर देगा। चमता---

र्टाका लगाने रो शरीर में एक प्रैकार का विज्ञानीय द्रव्य प्रवेश कराया जाता है जो स्वभा-वन: शरीर में पैदा नहीं होता, इसिलये इन विज्ञा-तीय द्रव्यों के पर्दु बने पर शरीर उनकी वृद्धि को रोकने के लिये उनके प्रतिकृत वस्तुयें तैया करता है, जिनके परिणाम स्वरूप फफोले वगैर

का पड़ना, अवर इत्यादि का आना लक्षण प्रकट होते हैं, इन लज्जाों के साथ शरीर में चेचक नाशक वस्तुषं बनती हैं, वस शरीर के अन्दर चेचक नाशक वस्तुओं का तैयार करना ही 'टीका लगाने का उद्देश्य है। यद्यपि टीका लगाने से नेचक नाशक बस्तुर्ये शरीर में सदा के लिये कायम नहीं रहतीं, जैसे २ समय बीतता जाता है बैसे २ शरीर की तबदीली के साथ २ इन वस्तुओं की शक्ति भी कमजोर होती जाती है। इसलिये यह जमता स्थायी नहीं रह मकती, श्रतएव दुवारा टीका =-१० वर्ष बाद फिर लगवाना उचित है. यदि कोई व्यांक चेचक के प्रति विशेष प्राही है य। उसे चेचक के गोंगयों की परिचर्या करनी पड़े अथवा चारों नरक चेचक फैल रही हो तो ऐसी हालत में तीसरी बार भी टीका लगवाना अच्छा है। शेप जोवन के लिये टीके का लगाना अनाव-श्यक है ।

#### टीके पर आसेप---

अनेक मनुष्यों का कथन है कि टीका लगाने से कोई लाभ नहीं क्योंकि टीका लगे मनुष्यों के फिर चेचक का निकलना इस बात के लिये काकी प्रमाग्। है कि इससे चेचक के प्रांत समता पैदा नहीं होती, प्रत्युत इसके विपरीत विजातीय वस्तुओं के प्रवेश से शरीर में अनेक प्रकार के भयंकर रोगों का जन्म होता है जिसके कारण स्वारध्य में वड़ी हानी होती है दूसरी बात यह है कि इससे शरीर की रोग नाशक स्वभाविकी शक्ति का हास होता है। इस के अतिरिक्त टीके से कमी कभी आतशक, यदमा, कुन्न, धनुस्तम्भ, विसर्पं, स्वचा रोग इत्यादि भी पैवा हो जाते हैं।

#### उत्तर---

टीका लगाने से पहले यह अवस्य देख लेना चाहिये कि जिस शिशु की चेंचक की लसीका से टीका लगाया गया है वह अस्वस्थ तो नहीं है, उसे बंशागत फिरंगोपदंश, यदमा इत्यादि तो नहीं है, जहां टीके के लिये लसीका बछड़े या गौ वगैरा से ली जाती है। वहां पर फिरंगोपदंश का तो उसमें कोई प्रश्न ही नहीं है, अतएव टीके की लसीका की परीचा अच्छे प्रकार करनी चाहिये। परन्तु टीके का लगाना सिद्धान्तत: एक आवश्य-कीय चेचक नाशक सर्वोत्तम उपाय है।

### टीके की लसीका (लिम्फ)---

यद्यपि टीका लगाने के लिये लसीका कई प्रकार से प्राप्त की जाती हैं। परन्तु प्रायः जब वच्चे की बाजू पर गाय की चेचक का दाना खुब श्रम्बी तरह निकलं तो उस दाने की रतुवत से टीका लगाते हैं। इसमें कुछ संवेह नहीं कि पहले गाय की चेचक की लसीका से टीका लगा कर फिर उस टीकें से रतृवत लेकर दूसरे में उससे फिर तीसरे में इसी तरह लगाना श्रच्छा नियम है और वास्तव में इस तरह की रतूबत पहुंचाने तथा गाय की चेचक की लसीका में कोई अन्तर नहीं परम्तु फिर भी गाय के थन की चेचक से ताजी लसीका लंकर टीका लगाना श्रति उत्तम माना जाता है। परन्तु यह सर्वत्र उपलब्ध नहीं हो सकती। इसीलिये जब कभी किसी स्वस्थ वरुचे के वेचक निकली हुई हो तो सातवें या आठवें दिन जब दाने खुब फूल कर उसमें रत्वत भरी हुई हो उस समय वाने की नोक पर धीरे से छेद करें बिससे खन न निकलने पावे और जितनी रत्वत

स्वयं निकले उसे किसी शीशी में ले लें दबावें नहीं. एक शन में से इतना लर्माका प्राप्त हो जाती है जो कि पांच बच्चों को अच्छी प्रकार लग सके। १५ पीता बच्चा और काले लड़कों की लर्मीका जिनकी त्वचा मोटी और साफ है गोरे बच्चों की ४पना उत्तम समभी जातों हैं। जब कई टीके लगे हो तो एक की छोड़ उन प्राका सबीं से जो राप प्रवाही परह उठे हुक हो लर्माका ले लेना चाहिये इससे उस बच्चे की कोई हानि नहीं होती।

टीके का खुरण्ड जो कि स्वयं गिरने वाला हो उसे एक पीतल की छोटी खरल में थोड़ जल से पास कर दृध की तरह कर ले जो कि ज्यादह गाड़ा और पतला भी अधिक न हो इससे भी टीका लगाना चाहिये क्योंकि खुरण्ड जे कई हफ्ता तक चेचक का असर काकी रहना है, एक बड़ा राज्या हो तीन पार्टीस्यों के लिये टीके के वास्ते वारा है। जा टाका गोज न हो या वानों से पीप निव स्ता हो, इन्छे प्रभाग न उसरे उससे लसीका न तेनी चाहिये।

### श्रीकामदेव रमायन की सुनहर्ग गोलियां

ये गोलियां श्रायस्त पोष्टिक श्रीर स्वायिक दुर्वलता तथा कात्यावस्था में किये गये श्रानुचित कार्यों से. श्राथवा यु ॥वस्था में का गई श्रायावशानियों से उत्पन्न हुई नयुं तकता को दूर करने में जाह का श्रायर रखता है। इतके थोड़े हा दिन के सेवन साशिक श्रावी एवांवस्था को प्राप्त हो जातो है. भ्या खुब लगती है. तो मोजब खाया जाता है उसका श्राहीर रस बना कर शरीर को गोटा, ताजा सुन्दर सुडील, श्रीर ताकत्वयर बना देती है। मुख सुन्दर श्रीर तेजस्वी होता है, श्रीर खास कर दिमाशी काम बालों के लिए ये निहायत श्रावसीर हैं, हर मौसम में इस्तेमाल को जा सकती हैं। कामत ४६ गोलियों को शोशी २) दो रुपये। तीन श्रीशियों के ४ डाक ब्या प्रथक। मिलने का पताः

इहत् आयुर्वेदीय श्रीपथ भाण्डार,

# छिका ग्रान्थ (Thyroid)

( श्री अक्टर निजलोकीनाथ जी वर्मा सिवल सजन) ( स्वाम्थ्य प्रीर रोग से उद्ध्व )

यह प्रान्थ गर्दन में स्वर यन्त्र के सामने (नका) डाला जाता है। प्रत्थि के बहुने से एक गहीं है। धरना जब जल या भोजन में । योजन

रहता है, कन्याओं में योवन धारित के समय यह रोग ऐसा होता है कि उसम दिन बहत तेती से मन्धि कुछ पह जाया करती है । यह स्वासाविक । यहना है, तहन वनत तेज चलती ने प्रांगी पात है। इसकी चिकित्या की कोड जाकरकता जिसे हैं हिए की चर्चा है जे जुनीस पनक जाह्य र स्पन्न व सागरी पूरे वागसे बहा तब धाव

च्यांन क्सानीता

सायम होता है।

#### मृत्ना

तय चिन्स्भा संस्थितिहर पनम कास नती वस्ती या वह । १ भ ग्रहिः, स्त भ ब-स्वी होता हर

वं क्या होती <sub>ध</sub> योगसाय र लिश्चित्र अस्तर जनकां यप यनने र ला म र्शन्स त नागा के हैं। 5 1 m 1 5 4184 -ग्रापर से तरफ ार वहा इ पहाड़ी में यह शंग बहत । १३६ ह । ऐसे स्थानी वा चन अंग्रेग उबाल कर पीता चाहिये। कटल



१० मः वः भत्या समि उभरा उहे।

र रारत के बाद दूर परना चाहिचे, पाचन शांक ठाक परनी चाहिये और औषधियों द्वारा भायोह न शरीर से पहुंचाना चाहिये। २-३ प्रेन मोन्यिम आयोहा-

बहुत बड़ी हो जाती हैं और रोग पुराना हो जाता है तो श्रोपरेशन द्वारा उसका हदा हुना भाग

इड् प्रति दिन खाना फायदा करना है। जब प्रत्थि

मरंग होते हैं. आबाज मोटी खोर जिहा नहीं खोर म् । से बाहर कित ने रस्ता है। बालक पहत सम्ती संवास मना । वर नाम यूरि भग तम ्रात है। उपनी नतना नी पनी स्थाना, कई ।पे र्या का का का का भागती चल पाता। नाफ से र्गाम नेने में लाश्च भार है। नव्य पहत समत

ा ५ तप्रसाम

रहती है शरीर का ताप जितना होना चाहिये उससे कम रहता है और हाथ पैर ठंडे रहते हैं। कर छोटा (बौना) दांत देगे से निकलते हैं और उनमें जल्दी कीड़ा लग जाता है। ऐसे बालक को अकसर क्रव्ज रहता है और थोंद निकली रहतो है। नाभि अकसर फूली रहती है। ब्रह्मरंध्र ( खोपड़ी के अगले भाग में जो गढ़ढ़ा होता है ) अक्सर खुला रहता है।

#### चिकित्सा

चुल्लिका मन्यि का रस खिलाने से रोग घट

सकता है। रस फायदा करने के लक्षण ये होते हैं—क्रव्ज जाता रहता है, त्वचा में सुर्खी झा जाती है, बाल मुलायम और चिकने होने लगते हैं। हाथ पैरों में गर्मी माल्यम होने लगतो है। आवाज साफ हो जाती है, बच्चा चैतन्य दिखाई देने लगता है और चलने लगता है, जो बसा (चर्ची) जगह २ इकट्ठी हो गई भी बह भव कम हो जाती है। बच्चा समभ की वालें करता है, कद बढ़ने लगता है। चुल्लिका श्रान्थ का प्रयोग उम्रभर करना पहला है।

स्वास्थ्य आरे रोग 0 इस प्रन्थ के प्रसिद्ध लेखक श्रीमान हाक्टर त्रिलोकीनाथ जी वर्मा सिबिलसर्जन महोदय हैं। इसमें बड़े २ कठिन रोग जैसे यहमा. चेचक, स्वतरा हंजा, इनफ्ल्यूए जा इत्यादि रोगों के लजग और उनसे बचने के उपाय, तथा संदोप में उनकी चिकित्सा भी बड़ी उत्तम सरल हिन्दी भाषा द्वारा लिखी है, इसके अनिरिक्त प्रतिदिन कार्य में आने वाल अनेक प्राहरण्य, मामाजिक, तथा म्बाम्ध्य मन्बन्धी विविध विषयीं की बड़ी वैज्ञानिक रीति से गवेपणा पूर्ण लिएकर विद्वान तेखक महोद्य ने गागर में सागर की युक्ति को चरितार्थ करके अनेक सन्दर २ करीय ४०० चारसी मनोरंजक चित्रों से अलंकृत करके ६०० एवं संख्या में इस 0 अपूर्व प्रन्थ को समाप्त किया है। इस पुस्तक को इतना उपयोगी तथा लो प्रिय बनाते हुये भी इसका मूल्य सब साधारण के लाभ के लिये सिर्फ ६) मात्र रक्त्या है। यह विशेष कर वेद्य वनधुत्रों को वड़ी ही उपयोगी तथा इट्यक्सम करने योग्य है। श्रीर प्रत्येक गृहस्थ के लिये गमय पड़ने पर एक योग्य वैद्य व हाक्टर का काम दे सकती हैं। मैं पाठकों से अनुरोध करता हूं कि वे इस पुम्तक से लाभ उठाकर लेखक महोदय के परिश्रम को सफल करेंगे। मैनेजर, जीवनसुधा कार्यालय, देहली।

# शिशु रोगों पर अनुभूत प्रयोग

( लेखक राव शिवरात प्रमाद शर्मा ऐचव एमव व व अत्रेगेन उन्हांच पूर्व पीव )

#### वालामन

कत्तरका नण ॥ लेकर नार सेर पानी गरम रह उत्तर । १९८८ रहर दिन उत्तर उपरका पानी विनार का १९८१ । सुनारी शतीला सर्यावडंग



डाक्टर शिवदनः प्रतार शक्षी वाजपेशी बैदा भूषण H. M. B. बाजरीन ( उल्लाब)

२ तो. श्रामला २ नंति हर्र बड़ो १ तो. बहेड़ा १तो. सींफ १तो. होटी इलायची ६मा. काकड़ार्मिगी ६ मा. सींठ ६ मा. मिर्च ६ मा. पीपरी ६ मा. नागरमोथा १ तो जा हर कर 2811 तन काथ कर और याथां रह जाने पर उसी जुना से नितार हुये जने कर अग दे नहन्दर जल ६ वराप्तर भिष्ण हाल कर नहर से प्राप्त प्राप्त प्राप्त कर नहर भिष्ण होते कर नहर से से प्राप्त प्राप्त कर निवार से सिलात है या उच्च निवार के प्राप्त कर निवार है। या प्राप्त कर सिवार है। या सिवार कर सिवार है। या प्राप्त कर सिवार है।

#### वालशोप तेल

मकोय पत्ती म्बरम, तालमायानी पत्ती म्बरम, पानस्वरम, सहदेई स्वरम. कंघो (ककडें) स्वरम, भंगरा स्वरस, पाकुमारी स्वरम, प्रत्येक छाध पात्र. पुनर्नवाम्ल S = वकरी वा दृध आ काले तिल का तेल S१, कपूर १ तो. मुलहटी १ तो. देवदार, वायविद्यंग, नागरमोधा, काकड़ासिंगी, वच कड़वी, हर्ल्यं, लाजचन्द्रन. कुठ. असगंध, हाकहल्यं, रास्ता प्रत्येक १ तोला कुट कर कत्क बना ले। फिर समस्त वस्तुये एक में डाल कर मध्यम छांच से तेल सिद्ध करले। इस तेल के मर्दन करने छौर कानों में तथा सिर में लगाने से बच्चों का सूला

रोग निश्चय आराम हो जाता है। दमारा सैकड़ो बार का अनुभूत है।

#### उदरामय हर

वल के करचे क का गृहा डा। मीचरम 5 — आमुबीज 5 — नागरमीथा 5 — जायफल १ तो. इन्द्रलव १ तो, घाय के फूल १ तो. लेकर कूट ले घोर उम्म जल में काड़ा धनावे । धनुर्थाश रह जाने पर उतार कर छान के । फिर उमीमें 5२ मिश्री मिला कर चारानी जनाले। धर्म्यों के धर्मों के लिये यह शर्बत स्थनन उपयोगी है । मात्रा रमाणा से ६ माशा तक दिन में तीन बार बलानुसार देना चाहिये।

### वालकों क चुन्नों (कीड़ों) की दवा

बचवों के पेट में जीड़े हो जाने हैं जिन्हें मित्रयां चुन्ने कहनी हैं। इन कीड़ों के हो जाने से बालक की गुदा सुर्ख हो जाती है और गुदा स्थानमें बद्दत छोटे > लाल वानेसे प्रतीत होने हैं। नथा साथ ही बच्चों की फड़े र हरे. वांच रंग रे प्रम होते नगते हैं उम दस्त में जान मिर्न के से वीज वित्वाई पहले हैं। उस समय बन में को मुबद, दोपतर, शाम जायपिडंग एक अथवा को अवद मां के दूध में पीत पर विकास चाहिये, अथवा ''होमियोपेश्वक की दवा 'सिना'' ३० ( Cina 30 ) स्वह, शाम एक २ बुंद जल में मिला कर या दूध चीनोमें मिला कर देना चाहिये। लाने के प्रयोग के साथ ही बच्चे की गुताने ध्यरगड के पत्तों का स्वरम हिन में तीन बार लगाना चाहिये, अथवा एरएड के तेल में काम मेंदूर मिला कर प्रत्येक दस्तके बाद बज्बेकी गुदा

में लगा देना चाहिये। उपरोक्त प्रयोगों द्वारा चुन्ने भाराम हो कर वच्चों के दस्त अवस्य बन्द हो जाते हैं। इमारा यालमृत भी चुन्नों में लाभकारी है।

#### बच्चों के मुख रोग के प्रशंग

- (१)— मुहागा भना, सदके कथा, छोटी इलायची दाना, हजरउलयहर समान भाग कृट कपइछान कर गय ले। इह छोपधि की दिन में चार बार तथा गत में दी बार दक्षे छे मुंद् में मूखा हा लगान से लाल छोग सफंद दोगों पकार के मुंद धाना भाराम हो जाते हैं।
- (२) मुहागा भूनकर त्योल करने फिर वारीक पाम कर शहद में मिलाकर रख ले। यह द्वा दिन, रान में दिः बार लगाने से दोनों प्रकार के मुद्दे अवश्य आराम हो जाने हैं।

#### काली खांसी या हपिंग कफ

(Whooping cough)

श्वाम नली की बलग्म उत्तरन करने वाली मिलली के प्रवाद का नाम इपिंग कफ (काली खांमी) है। यह रोग व्यधिकतर बच्चों की हो होता है। इसी बीमारी को छुकुर खांसी भी कहते हैं। इसमें बड़ी अयंकर कण्टकर खांसी खाता है, खांमतेर बच्चा बेदम ही जाता है, खांमी काने के समय बच्चे का चेहरा मुखं हो जाता है, उसके गले से 'हुं' या ''हुप'' शब्द होता है इसी कारण इसको हुपिंग कफ कहते हैं। खांमतेर बच्चे को बमन तक हो जाती है तब खांसी शांति होती है। थोड़ी ही देर में फिर आक्रमण होने पर पहले के ही सांति हातात होती है। इसमें बच्चों को बहुत ही तकलीफ होती है। इस खांसी के लिए हमारा एक अनुभूत प्रयोग है उसे जनना के लासार्थ प्रकाशित करने हैं।

काकहासियी १ तो०. सिचं कार्ला १ तो०. सींठ १ तो०. पीपींग छोटा १ तो०. सार्गा १ तो०. एड्रा हर्ग का बक्कल ४ तो०. बहेंद्दे का बक्कल १ तो०. आंवला १ तो०, ट्रीटी कटेंग मृल १ तो०.पुरक्रमृत १ तो०. तेथा नमक १तो०. कटेंगी के फुल १ तो०: सांभीर नमक १तो०. काला नमक १ तो०. वरक-चनमक १तो०. जवात्वार १तो०. वासा चार १तो०. कटेंगी चार १ ता०।

समस्त बस्तृष्यों को क्षट पास कर चूगा बना

कर शीशी में रख लें। मात्रा तीन वर्ष तक के बन्चे के लिए १ माशा इससे वड़ों को १॥से दो माशा तक गुनगुने जल से दिन, रात में चार बार देना चाहिए। इस श्रोपधालय के साथ हो यदि पामाउनेह भी बलानुसार हो बार दिया जाय ती विदेशप उपकारी है।

होमियोपेधिक में होसेरा '६०" (Drosera), कक्कम कें क्टाई २०" (Coccus cacti ३०) और 'कोर्गालयम कबन ३०" (Corallium Rubrum ३०) लक्कणानुसार छ:२ घंटे पर एक २ बूंट अथवा एक युंट में दो मात्रा करके जल के साथ देने से श्रवण्य लाभ होता है।



#### 

( हपूब हाफिज-सेहत बचगान )

इन गोलियों के हमेशा इम्तेमाल करने से बच्चे बिलकुल तन्दुरस्त रहते हैं। आर हालत वीमारी में इस्तेमाल करने से बोमारी दूर होकर बच्चे मोटे ताज़े हो जाते हैं। निहायत ब्राजीव व ग्रीब गोलियाँ हैं। कीमत १०० गोलो को १।)

बृहत् ब्यायुर्वेदीय श्रीपय भागडार, जीहरी बाजार देहली ।



शीवला भारत हा प्राचीत उस होग है पोर लोक में पीतका, मलरिका, देवी, भारा, नेवक प्राद प्रमेक नावीं से विश्वात है प्राप्त प्राद प्राचीन व्यवस्थी ने इस विश्वीदक रोग है जन्मरीत माना है और इसका कारण विधेची वायु कहा है, परन्तु माध्याचार्यने इसका मस्यिका नाम से प्रथक ही यगान विधा है। वापकी प्रीर पूनानी वार्षी ने इस विश्वात विधा है। वापकी प्रीर प्रमुक्त सना है

साधवानार्य के सत्तातुसार इस नेस की उत्पत्ति का कारण क्षांचक चरपरे, खट्टे, खारा परार्थ, परस्पर विकद्ध भोजन, प्रविक भेड़िन, दुर्जर शाक आर दृश्ति जन बायु तथा कर प्रदी का प्रकोप हैं इन्हीं कारगों से कृषित हुये बातादि दोप दुख्ट रक्त के संसर्ग से मस्र्के सहस पिडि-काओं को उपन्त करने हैं।

शीतला के प्रथम ज्वर, कन्द्र, शरीर हटना, तृपा, जाह, अकवि, चिन्तमा त्वचा पर शोध लाउनेच तथा शरीर का रंग विगड़ जाना आदि लच्छा होते हैं

माधवायायं ने वातज, पित्तज, एकज, कफज, त्रिहोपज, रोमान्तिका तथा रस, रक्त, मांस मेदोरित्य मञ्जा शुक्रगत त्राद् समूरिकाओं का प्रथक २ वर्णन किया है परन्तु भावसिक्ष ने इसके गान नेद इस प्रकार माने हैं।

श्रीताता त्रिम से जले हुने के समान रक लाग पिना के होप से जन महिन कही २ पर त्रथना सम्पूर्ण शरीर में फारोले हो जाये उन्हें शीनला कहते हैं इनकी त्रबीध २१ दिन की है यह प्रथम सप्ताह में निकलती है, जितीय सप्ताह में प्रश्ती है जीर तृतीय सप्ताह में सृष्य जाती है।

होह्या—कोदों के समान यात आंग कक रो जो ताने निकलने हैं उन्हें कोहबा कहते हैं इनकी अर्जाध १२ दिन की होती हैं ये बिना पर्के ही शान्त हो जाती हैं।

पाशिसदा—जो दाने गर्भी के कारण उत्पन्न हो जार्थे और जिनमें खुजली हो उसे पाणिसदा कहते हैं इसकी श्रविध सात दिन की होती है।

दु:खकोद्रवा—जो दाने गई के सहश वानकों के मुख पर उत्पन्न हो जाने हैं उन्ह दु:ख कोद्रवा कहते हैं।

चर्मजा - जिसमें बहुत मी छोटीर फुं मियीं के समिश्रण से काले रंग के मंडलाकार चकत्ते से बन जाते हैं उन्हें चर्मजा कहते हैं।

कुष्टजा--जिसमें उरद के समान दाने के

संमिश्रण से लान गा के मंडलाकार चकते से वन जाते हैं उन्हें कुष्टजा कहने हैं।

यहां पर हम प्राचीन श्रन्य लक्षणों वा विश्ले-पण न करके अर्थाचीन चिकित्मकों की प्रचलित रीति के श्रनुमार कुल प्रकाश जावना चाहते हैं जाक्टरी मतानुसार यह रीम तीन मागी में विभक्त हैं Measles (मीजिल्म) Chicken Pox (चिक्रन पोक्स) है all Pox (स्माल प्रक्म)।

#### Mehasles (मीजेल्स) रोमान्तिका, खसरा

यह एक साधारण संकामक रोग है और साप्रारणत. ३-४ वप का अवस्था वाले बच्चों की अधिक हुआ करता है इस रोग का विष श्वास द्वारा शरीर में भ्वेश करता है इस रोग की अवधि ६-१४ दिन तक की है वैसे तो यह साधारण रोग है, परन्तु ज्वर के साथ काम एवं उद्दर विकास होने के कारण कभी कभी र बड़ा स्थावह हो जाता है।

इस रोग में सर्व प्रथम प्रतिश्याय (जुकाम) हुझा करता है, फिर त्या आ जाता है उनर के तीसरे चौथे दिन शरीर में खुजली साद्यमहोंने लगती है और छोट र दाने निकल आते हैं इसके दाने सब से पहिले मुख पर निकलते हैं फिर हाथ और गले पर। इसके बाद कमराः छाती तथा सम्पूर्ण शरीर में हो जाते हैं इसके दानों में मक्सी के काटने के सहरा पीड़ा होती है और खुजलाने पर कुछ समय के लिए शान्त हो जाती है इसका क्वर प्रथम मण्ताइ ही में कम हो जाता है और त्या दूसरे सप्ताह में पूर्ववन हो जाती है परन्तु इस रोग का भय तीन सप्ताइ तक बना रहता है इसांलए दूसरे बच्चों को २१ दिन तक इस रोगो से पृथक गवना चाहिये।

नाक तथा आंखों से पानी यहना, आंखों का दृखना, थोड़ी खांसी, ज्वर, ज्वास में कष्ट, तथा, प्राटः एकाएक चीक पड्ना, मुख का वर्गा रक्त होना नथा नामरे चाथं दिन ग्रहीर पर छोटे छोटे वाने निकत खाना, आदि इस रोग के लवल हैं इस रोग र कारण रोगी बहुद शिविन हो। जाता है अरेशरीर का बर्ग लाल हो जाना हु ाने कम निक्नते के कारण शरीर के भीतर ख़जाता का प्रकोप अधिक होता है। इस रोग में इबर शान्त करन के लिए विरेचक छाप्रवियों का प्रयोग कभी भूलकर भी न करना चाहिये। इस रोग में टंडर से बचाने की बड़ी ही आवश्यकता है क्योंकि इसके रोगी को थोड़ी सी ही ठंडक लगने में काम एवं उटर विकार बढ़ जाता है, यदि यह रोग सम्तिष्क का और बढ़ता है तो सन्निपान हो जाता ह यदि पुरकुमों की छोर बढ़ना है तो प्रवाम क्रिया अधिक वेगवर्ता हो जाती है और कुक्म प्रवाह हो जाता है यदि इसका भुकाब उदर की श्रीर हो जाता है तो अतिसार (दस्त) श्राने लगते हैं इमिल्य रोगी को बाहर खुली हवा में न निकलने देना चाहिए श्रोर रोग बढ़ जाने पर विद्धाने पर लिटाकर रखना चाहिए क्योंकि एकाएक शांतल बाव के संसर्ग से रोग के और भी बढ़ जाने की संभावना बनी रहती हैं।

इस रोग में मांस मञ्जली तथा तेल लगाना निषिद्ध है-यदि उदर विकार तथा खांसो है तो खरारोट कादि हल्या पथ्य देना चाहिए। मुनक्तीं की खोर भी काभटायक हैं।

#### Chicken Pox चिकेन पीक्स

(ब्रोटी माता)

यह एक प्रकार का साधारण संसर्गजन्य रोग है इस रोग से स्माल पौक्स के समान विशेष किसी प्रकार की हानि होने की संभावना नहीं रहती। यह रोग बहुधा छोटे बच्चों के ही होता है बैसे तो इस रोग की अवधि १४ दिन तक की है परन्तु अधिकतर इसके दाने पांचवे छटे दिन ही सुख जाते हैं परन्तु इस रोग का भय ४ सप्ताह तक बना रहता है। इस कारण रोगी को ? माह तक दूसरे बच्चों से अलग रखना चाहिये। इस रोग में सर्व प्रथम ज्वर झाता है फिर २-१ दिन के अनन्तर सबसे पहिले छाती और पीठ पर दाने निकलते हैं फिर सम्पूर्ण शरीर में हो जाते हैं। परन्तु मुख पर नहीं निकलते दाने निकलने के तीमरे चौथे दिन उनमें से पानी निकलने लगना है और दाने सूख जाते हैं। बहुतेरे व्यक्ति भूम-बश इसको स्माल पौक्स समक लेते है। पर्न्त इसमें और स्माल पौक्समें बहुत अन्तर है। स्मील पौक्स में सबसे पहिले दाने मुख पर निकलते हैं फिर कमशः नीचे की श्रीर सब श्रद्धों से निकलते हैं परन्तु इसमें मृत्य पर दाने निकलते ही नहीं छानी और पीठ से आरम्भ होकर सम्पर्ण शरीर में फेल जाते हैं इसमें द्वांटे २ दाने निकलने के कारण स्माल पीनम के समात मृत्व जाने पर निशान नहीं बनाते ! जैसा स्माल पीक्स मे बड़े वेग से ज्वर आने के कारण तापमान अधिक हो जाता है बैंसी इसमें नहीं होता । स्माल पास्स में क्यर आने के तीमरे चौद्यं दिन दाने निकलते हैं परन्तु इसमें २-१ दिन में ही निकल आते हैं।

#### Small Pox

(स्माल पौक्म) शीतला, बड़ी साता यह बड़ा भयानक अत्यधिक औपसर्गिक रोग है इ की संकामक शक्ति श्रन्य रोगों से श्रधिक है इसका विष अधिक दूर तक अपना प्रभाव नहीं छोड़ता शीतला के रोगों को स्पर्श करने से तथा उसके शरीर को दूपित बायु के संसर्ग से अयवा शीतला के दाने का पीव श्रादि लगने से यह रोग छोटे बच्चे से लेकर बृद्ध तक मब के लिये हो जाया करता है यह रोग श्रपना स्मारक चिन्ह जीवन भर के लिये रोगी के शरीर पर कुछ न कुछ अवश्य छोड़ जाता है किसी २ को यह अन्धा, काना, लंगड़ा, लला भी कर डालता है। वसन्त तथा शरदऋतु में इसका प्रकीप होता है। यह रोग एक ज्यक्ति को प्राय: एक हो बार होता है क्योंकि इसरी बार रोग के बाक्रमण से बचने के निने उक्तव्यक्ति को शक्ति प्राप्त हो जानो है।

जय शरीर में इस रोग का विष उत्पन्न हो जाता है तो प्राय: १०-११ दिन तक तो शरीर बड़ा ही शिथिल रहता है फिर ज्यर बड़े प्रवल नेग से जाता है क्यर का नापमान १०४ अथवा इससे भी अधिक हो जाता है जिर पीठ अथवा कमर में पीड़ा होती है जमन तन्द्रा एवं कम्प होता है ज्यर के नीमरे चौथे दिन सबसे पहिले मुण्य पर मसूर जैसे लाल २ छोटे २ दाने निकल आते हैं दो एक दिन में कमशाः गते छाती पीठ आदि सब अहाँ में निकल आते हैं और बड़े छालों के रूप में हो जाते हैं दाने निकलने के अनन्तर क्यर कम हो जाता है जाता है जाता है को जाता है से निकल ते के अनन्तर क्यर कम हो जाता है जब दाने निकलते हैं अनन्तर क्यर कम हो जाता है जब दाने निकलते हैं अनन्तर क्यर कम हो जाता है जब दाने निकलते हैं अनन्तर क्यर कम हो जाता है जब दाने निकलते हैं अनन्तर क्यर कम हो जाता है जब दाने निकलते हैं अनन्तर क्यर कम हो जाता है जब दाने निकलते हैं अनन्तर क्यर कम

पानी निकलने लगता है और पांचवें छटे दिन इनमें पीव पड़ जाती है तो जबर का वेग पुन: बढ़ जाता है पके हुये दाने पीले रंग के उठे हुये होते हैं उनका मध्य भाग दबा हुआ होता है उनके चारों श्रोर का स्थान रक्तवर्ण का होता है पीव पड़ जाने पर यह दाने फुट जाते हैं श्रायवा काले पड़ कर सूखने लगते हैं उसकी अवधि १२ दिन सं २१ दिन तक को होती है परन्तु इमका संसर्ग ७ स्थाह तक बना रहता है इस कारण १॥ माह तक अन्य व्यक्तियों को रोगी से पृथक रहना चाहिये।

यदि यह दाने विना पके ही बैठ जायें तो मांघातिक सममना चाहिये दूर २ पर खलग २ सफेड रंग के दाने अच्छे होते हैं यदि दाने पास पास होने से काले या लाल रंग के चकत्ते से बन जाये तो उन्हें मांघातिक सममना चाहिये।

प्राचीन मतानुसार (यदि रोगी के निम्तस्थ लक्ष्म हों तो उस रोगी की चिकित्सा नहीं करनी चाहिये।

कोई प्रवाल के समान कोई जामुन के समान कोई लोह जाल के समान कोई अलसी के समान दोष के भेद से अ नेक वर्ग के दाने हों खांसी, हिचकी, बेहोशी. अत्यन्त वेग से ज्वर, मूर्छी, वकवाद, अत्यन्त तथा एवं दाह खूटना, तथा मुंह, भाक, आंख से रक्त का बहना व कंठ में धुर २ राज्य करके श्वास बड़े कष्ट से लेता है।

जो रोगी निरस्तर जन्दी २ नासिका से ही स्वास लेता हो ऐसा रोगी भी वायु के दृष्टित हो जोने से सुना हो दुक्ती हो होना ही अस्य स्थार स्थार के सुना हो है। होना हो अस्य स्थार

शीतला के अन्त में कलई, कोहनी और कंधों का शोथ भी बड़ी कठिनता से चिकित्सा करने योग्य होता है।

डाक्टरी मतानुसार इस रोग से बचने का उत्तम उपाय टीका लगवाना है पहिले तो टीका लगवाने वालों के शीनला निकलता ही नहीं है यदि निकलता भी है तो अपना प्रभाव अधिक नहीं दिखाती। आजकल बहुन से मनुष्यों की यह धारणा हो गई है कि टीका लगवाने से हानि के श्रीतिरक्त कोई लाभ नहीं होता ऐसे मनुष्यों को यह बान अवश्य स्मर्ण रखनी चाहिये कि यदि स्वच्छता नहीं रखी जायगी तो उस दशा में टीका लगवाना बिलकुल व्यर्थ होगा दूसरे शीतला का टीका चिकैन पाक्स में लाभ दायक नहीं होता।

जिम घर में शीतला का प्रकोप हो उस घर के बालकों को टीका लगवा देना चाहिये क्योंकि टीका का प्रभाव प्रायः सात वर्ष तक ही रहता है। कभी २ इसकी अवधि घट वढ़ भी जाती है परंतु स्वच्छता प्रत्येक दशा में आवश्यक है।

जिन लोगों की खाज, खुजली, ज्वर, श्रती-मार, उपदंश श्रादि गेग हो उन्हें कभी भूल कर भी टीका नहीं लगवाना चाहिये। यदि किसी कारण टीके में घाव हो जाये तो शीवल जल खे घोकर वेग्निक एसिड लगा देना चाहिये इससे घाव श्रच्छा हो जायगा।

यह रोग कीटागुजन्य नहीं श्रिपतु वासु जिनत है क्योंकि इस रोग का विष श्वास द्वारा श्रारोग्य मनुष्य के शरीर में प्रवेश करता है इस क्षिये शीतका के रोगी को प्रथक किसी ऐसे दूसरे कमरे में रखना चाहिये जिसमें चिशुद्ध वायु के त्र्याने जाने का प्रवन्त हो परन्तु प्रकाश त्र्यधिक न हो।

जो मिनवयां गरितना के पीप पर बैठ कर बाजार की मिटाइयों अपना घर के पाद्य साम-ब्रियों पर बैठ जाती हैं उनके खाने वालों को गह रोग हो जाता है इस पारण रो। के दिनों में बाजार की मिटाइयां कभी भूल कर भी नहीं खानी चाहिये और घर की खाद्य सामित्रयों पर मिनव्यों की न बैठने देना चाहिये।

यह ज्यान संज्ञामक रोग इ इस रोग हा विष दोनों एवं तुरन्टों तक ही सारित वर्ग हे श्रापित रोगी से सम्पर्क रखने वाल कपड़ीं विद्यानों प्यालों में भी इसका विष पाया जाता है इस कारण रोगी से सम्पर्क रखने वाली वस्तुओं की किसी दूसरे वालक हो न देने: चारिये करोकि इससे दूसरे वालकों को ना रोग हो जाता है रोका के कमरे में चित्र जादि न धुलने वाली वस्तुयें न रखनी चाहिये करोंकि ऐना वस्तुयों के संसग से श्रन्य व्यक्तियों को भी रोग होने की सम्भावना बनी रहनी है।

यह रोग श्राधकतर मिन्ययों द्वारा ही फैलता है इस कारण रोगी के शरीर पर मिन्छयों को न बैठने देना चाहिये द्रश्वाजे पर चिक या पर्दा हाल देना चाहिये जिससे मिन्ययां रोगी के समीप न पहुंच सके रोगी की परिचर्ग्या के लिये एक ही व्यक्ति को उसके समीप रहना चाहिये और परिचर्ग्या करने बाले को बड़ी पवित्रता तथा सावधानता से रहना चाहिये क्योंकि रोगी के स्पर्श एवं पीय खुरन्ड मादि के लगने से दूसरों को भी रोग हो जाया करता है। डाक्टरी मतानुसार शीतला में उन्नरको अवस्था में दघ, सानृदाना, असरोड, डवलरोटी, आदि पठप देना चाहिये और पीने के लिये शीतल जल देना चहिये शातला के हाजी के पकने पर दृष्य तम पुरान चावल देना चाहिये।

याद सुप्त तथा किसी शरार के किसा भाग में गिरिक अने निक्षते तो पर्क लगात से यद ब सुजन शांत हो जाता है।

ताथ पैरों में याधिक जलन होने पर जल से करड़ा भिगोकर बाध देना चाहिये।

स्वंद प्राप्त को चृते का पानी किसी शीशी में मिला कर पिडिकाओं पर लगाने से विज्ञेप लाम होता है।

शांतला के रोगी को दृध, थी, तेल, मांतर महाती, गृट, चटपटे, खड़ी, तमकीन, गुरुपाक, का तथा शांतल पदार्थी का सेवन तेल मालिश तथा शांतल बायु, चन्डनादि लेप, स्तान, कोध, चिन्ता, मेथुन, बमन विरेचन आदि अपध्य है।

यदि रोक्ष नमक के लिये विशेष आग्रह करे तो मैन्या नमक दे देना चाहिये वह भी बहुत कम मात्रा में देना चाहिये क्योंकि नमक खाने से सुजली अधिक होती है।

शीतला में उपण तथा शोतल पदार्थ अधिक प्रयोग करना हानिकारक है क्योंकि अधिक ठल वस्तुओं के प्रयोग से दाने अच्छी तरह नहीं निकलते जिससे रोगा को अधिक कष्ट होता है और शीतल बस्तुओं के अधिक प्रयोग से कास आदि हो जाती है।

होसिकोत्सव पर बालकों को धनविषे मोसी तथा भुना हुआ गोला (नारियस) सिसाने नकः भरम्परा गत नियम है वास्तव में इस नियम के पालन करने से प्रायः शीतना का प्रकीप नहीं होता।

शीतला के दिनों में केवल गीला (गांग) बच्चों की खिलान से शीतला का प्रकीप नहीं होता, दूध पीन वाले बच्चों की शीतला के प्रकीप बचाने के लिये गीला उनकी मानाओं की खिलाना चाहिये।

चेचक के दिनोंमें नीम की कींपल काली मिर्च के माथ घाट कर पीने से चेचक का प्रकीप नहीं होता।

वासा का स्वरस मधुके साथ चाटने से शीतना कम निकलती हैं।

पूर्व रूप में नीम के पत्ते और हल्दी सम भाग लेकर पानी में पीस कर शरीर पर लेप करने से फुन्सियां नहीं निकलती।

पश्य श्रादि का समुचित प्रबन्ध होना ही इस रोग से बचने का पर्याप्त साधन है इसमें किमी बिशेप चिकित्सा की श्रावश्यकता नहीं इससे बचने का मुलभ उपाय स्वच्छता तथा एक मात्र चिकि-त्सा, सतर्क ग्रुश्र पा है।

भारत धर्म प्राधानय देश हैं इसी लिये हमारे प्राचीन परान्परागत नियमों में कुछ न कुछ वैज्ञानिक रहस्य अवस्य हो छिपा हुमा है, क्योंकि भारतीय धर्म के नाम से उस कार्य को बड़ी सतकता से नियमित रूप से कर लेते हैं। धीर उसमें किसी प्रकार की बंदि नहीं होने देते यही आरख हमारे शीतजा के उपचार में है क्योंकि देवों का प्रकीप तारों के कारण उन नियमों को बड़ा हो सनर्कता से पातन करते हैं कहीं देवी

श्राधिक रुष्ट न हो जाय।

जिस परिवार में शीतला का प्रकोप होता है उस प्राची के व्यक्तियों को नमक, हल्दी, तेंल, धी के बने परार्थ, शाक आदि न खाने का पर-स्परागत विधान है तथा गोवर से लीप कर सुगन्धित द्रव्यों की धूप देने, लौंग का पानी छिड़कने और नीम के पत्तों से हवा करने श्रादि में वैज्ञानिक रहस्य छिपा हुआ है क्योंकि रोगी को इल्डी देने से उसके शरीर में उद्याता और बहेगी. नमक दंने से खुजली और होगी, दूध, घी, तेल, ऐने से शोघ पककर सूखने में बाधा पड़ेगी। इसी कारण ऐसी बस्तुओं के सेवन का निषेध कहा गया है परन्तु सम्पूर्ण परिवार को यह नियम इस कारण पालन करना पड़ता है कि रोगी धर में जिन बस्तुश्रों को देखेगा उनको अवश्य मांगेता इसलिए यह नियम सारे परिवार की मालना पड़ता है और अभी तक चला आ रहा है।

गोबर में फिनाइल के समान विषेत कीटा-एखों के मारने की शिक है इस कारण लीपने का विधान है सुगन्धित द्रव्यों की पूप देने तथा लींग का पानी छिड़ने से शीतला की विषेली बायु विशुद्ध होती है नीम की/पत्तियों के पंक्स बनाकर रोगी की दवा इस कारण की जाती है कि इसकी बायु शीतल होती है इस कारण रोगा को शान्ति मिलतों है तथा मिन्द्रयां नहीं बैठनें पाती और बायु शुद्ध होती है।

वास्तव में शीतला के रोगों के लिये नीम के समान मुलभ और अध्यर्थ कोई दूसरी औष्धि नहीं, नीम शीतला में अमृत के समान अपना प्रभाव दिखलाता है और मरते रोगी को भी वर्ष लेता है आयुर्वेद के मतानुसर टीका के समान प्रभाव दिखाने वाला नीम है, इसके सेवन करने बालें के पहिले तो शीतला निकलती ही नहीं है यदि किसी कारणवश निकलती भी है तो अधिक कष्ट नहीं देती क्योंकि लिखा है:--

रसो निम्बस्य मंजर्या पीतश्री हो हिताबह: । हिन्स रक्तविकारक्ष बात पिना कर्फ तथा ॥ चैत्र मास में नीम का लाल २ कोपर्ले पानी में घोंट कर पीना हितकारक हैं. इसके सेवन से बात, पिना, कफ, जिनत रोग तथा रक्त विकार शांत होता है।

यदि शीतला में उपद्रव न हो तो उस दशा में कभी भूलकर भी श्रोपाध देने की श्रावश्यकता नहीं हैं क्योंकि विना उपद्रव के शीतला नियमानु- सार विना कष्ट के स्वयं हो शांन हो जाती हैं यदि रोग उपद्रव युक्त हो श्रीर रोगी को श्राधिक कष्ट हो नो श्रवस्य चिकित्सा करानी चाहिये परन्तु उस दशा में भी केवल नीम के ही प्रयोग से श्राशानीन लाभ होता है।

रोगी के कमरे में नित्य नये नीम के पत्तों को मंगाकर स्थान २ पर रख्न देना चाहिये तथा कमरे के दरवाजे पर नीम की बन्दरवाल बांध देनी चाहिये। यदि रोगी को अधिक दाह (जलन) हो नो रोगी के नीचे नीम के पत्तियोंकी विद्धा देना चाहिये और रोगी के उपर पनियों का मंहप सा बना देना चाहिये तथा परिचायक को नीम की पत्तियों का चमर बना कर उससे रोगी को हवा करना चाहिये।

यद्रि रोगी को तूपा अधिक बढ़ जाय तो नीम

की पत्तियों का नेटाया हुआ पानी देना चाहिये यदि रोगी यह जल न पिये तो नीम की छाल को जलाकर उसका बुकाया हुआ पानी देना चाहिये।

यदि रोगी के छालों में श्रधिक जलन हो तो नीम की कोपलों को पीस कर उसका लेप कराना चाहिये।

याद दाने श्रच्छी तरह न निकले हों तो नीम की लाल २ पत्तियां पीस कर पिला देनी चाहिये।

यदि दास ऋधिक गहरे हो गये हो तो नीम का तैल लगाना चाहिये। ऋस्तु, शांतला का कोई भी उपद्रव हो नीम के उपयोग से तन्त्रण शान्त हो जाता है।

यदि किसी रोगी को उसकी मान्त्वना के लिये श्रीपिय देने की श्रावश्यकना पड़े तो एक भाग पिखे हुये मोती श्रीर उसमें दी भाग सन गिलीय मिलाकर देना चाहिये।

्रशीतका के पक जानेपर दानों में खुजली श्रिधिक होती है परन्तु ऐसी दशा में खुजलाने से चाब हो जाते हैं श्रीर सृक्ष्मे पर बड़े २ दाग पड़ जाते हैं।

ख्रन्ट द्युटने पर कपूर मिलाकर तिलका तैल या नर्शियल का तैल मलना चाहिये।

स्तुरन्टों के सूट जाने पर नीम के पत्तों का पानी उवाल कर रोगी को रनान कराना चाहिये और शरीर पर धुली हुई निली का नैल मलना चाहिये।

रोगी के आरोग्य होने पर उसके अच्छे कपड़ों को उबलते हुये पानी में डालकर थी डालना बाहिये और पुराने कपड़ों को जला देना चाहिए। तथा चारपाई आदि को धृप में डाल देना चाहिए।

### Wasting in infants. बच्चों का सूखा रोग

(Dr. B.D. Jain, L.M.S., S.A. (Lond.) Sadar Bazar, Diputy Ganj, DELHI. )

It may be defined as a condition in infants in which 'presenting symptom' is loss in weight respect organic disease being inconspicaces or altogether absent. Wasting occurs more commonly during first 6 months of infants' life.

The chief couses of wasting are.

#### 1. Starvation.

(a) More underfeeding either from ignorance or carelessness may be the cause of wasting—such as giving too small feeds or giving greatly diluted milk, condensed or cow's milk.

#### Inability to suck.

(b) From some mechanical difficulties such as here-lip, facial paralysis, mose blocking, weakness, such as in premature infants—babies born betwee the normal term of 14 months.

Or if suckling is too painful such as from stomatitis.

Or if the hole in the text is too small.

A mother complained of loss of weight in a baby one month old & weighing 6 lbs.

He was being artificially fed. The slight modification in the diet did not prevent loss in weight. In the first week, he lost 2 ounces & in the

इस बीमारी की खास जाहिरी श्रलामत हैं, वजन में कमी का होना, खास बीमारी को श्रला-मतें या तो होतो नहीं हैं श्रीर जो होती भी हैं तो बहुन कम, श्राम नौर पर यह बीमारी एक मास से ६ मास तक के बच्चों में पाई जाती है।

#### मुखारोग के खास कारण

१-(म) नावाकफियत या सुस्ती की वजह से बच्चों को कम खुराक का देना-

जैसे कि कमती दूध का पिलाना या अगर अपर का दूध देते हों तो उसमें ज्यादा पानी का मिलाना।

#### (ब) चूसने की ताकत का कम होना-

इसके कई कारण हो सकते हैं जैसे होट का मोटा होना, मुंह पर फालिज का होना, नाक का रुका हुआ होना, अठमासा या सतमासा होने के कारण कमजोरी का होना, मुंह का आना, अथवा स्तन या विटकने का स्रास्त बहुत छोटा हो तो भी बच्चा अच्छी तरह दृध नहीं पी सकता एक दफा एक महिला ने मुझे एक मास के बच्चे को विखाया जिसे यह रोग था-बच्चे को डिब्बे का दृध दिया जा रहा था उसकी ख्राक में तब-दीली कर देने पर भी उसके बजन में कुछ फर्क नहीं पढ़ा, एक हफ्ते में उसका एक छटांक बजन कम हुआ अगले हफ्ते में फिर पौन छटांक वजन कमती हो गया। कोई खास कारण प्रतीत न होता next there was further loss of 1½ ounces. On investigation no cause could be found. At last the feeding bottle was examined, the hole in the teat was found to be very small, which did not allow the child to suck sufficient quantity of milk. The old teat was replaced by a new one & the child gained weight rapidly one pound in 2 weeks.

#### II. Prematurity.

A baby born infore the normal term of PI months, usually born at the seventh & eighths is a premature infant. They generally become wasted.

There are several reasons for this

- (a) They are too weak to suck properly so that they get insufficient quantity of food.
- (b) Premature intent requires a large amount of food to maintain its body temperature which leaves no surplus for the purposes of growth.
- (e) Such infants have feeble powers of digestion & possibly of essimilation.

#### Ill. Improper feeding.

This is a very common cause.

- (a) By giving too small & too weak feeds.
- (b) By giving too large & too strong feeds. So therefore a child will start gaining wt. when the amount or strength of feeds is reduced.
- (c) By giving ill balanced mixture which is too rich in one of the

था। उसकी दूध पिलाने की बोतल देखने पर माल्म हुआ कि उसके विटकने का सूराख़ वहुत छोटा है-एक नया विटकना बदल दिया गया और वच्चे ने अगले दो हफ्तों में वजन में आध सेर नरक्की की।

#### २-सतमासी या श्रठमासी पेदायश--

जो बच्चे हैं। माम की पूरी श्रवधि से पहले पैदा हो जाते हैं-खास तौर पर सतमासे या श्रठ-मासे बच्चे उनको यह रोग कई कारणों से हो जाता है।

- (ऋ) उनमें दूध चूमने की नाक़त बहुत कम होती है।
- (व) सनमासे या श्रठमासे वस्त्वों को श्रपनी गरमी कायम रखने के लिए ज्यादा खुराक की जरुरत होती है और इसी कारण से उनकी सारी खुराक उनकी गर्मी कायम रखने में खर्च हो जाती है और उन्हें अपना वजन बदाने के लिए खुराक नहीं रहती।
- (ज) इन वच्चों के पचाने की शक्ति बहुत जीसा होती है।

#### ३-गलत सुराक--

यह श्राम कारण है।

- (अ) बहुत कम या बहुत- पतला वृभ देना।
- (व) बहुत ज्यादा या बहुत गादा दूश देना। ऐसी हालत में मिक्दार कम करने या दूथ की जरा पतला कर देने से बच्चों का वजन बढ़ने लगता है।
- (अ) का इस किस्मका तूथ देना जिसमें फैट चर्ची (Fat ) करनो हाइब्रेट (Carbohydrate)

constituents of food, the commonest being the relative excess of fat.

#### IV Dyspepsia --

Dyspepsia is common either as cause or consequence of wasting.

The symptoms of dyspersia may

miso suddenly and end in cases of
summer dree bose leading eventually to core a wasing or more
frequently dyspersic comes on gradually sibe result of the continued
we of a result of the continued
be of a resultable or ill balanced
lists

Some guide as to the nature of teeding error can be derived from a state of the state.

#### (i) Excess of fat--

the diet is the commonest starting point of a dyspepsia is indicated by a stipated, pile, scapy stools which he not athere to the napkin a clothered for the purpose

#### (ii) Excess of casein--

milk curi lands to voniting of curd, passage of tough white particles in the stools which are insolvable in a mixture of alcohol & other.

#### (iii) Suger-

which is most easily digested of all food constituents & least likely to lead to trouble, but if present in the food in amount which is beyond the infant's digestive capacity; the stools are apt to be loose, watery, acid & their passage attended by much flatulence. Usually all these types of श्रीर प्रोटीन (Protein) गलत मिक्रदार में मिले हुए हों-श्राम तीर पर रालती क्यादा फट के होने के कारण होती है।

#### बदहजामी

चदहज्ञमी के कारण सृष्या रोग हो जाता है। और सृषा रोग होने के कारण बब्हज्जमी हो जाती है।

कभी तो वदहजमी शुरू में ही हो जाते हैं जोकि बढ़ते बढ़ते गरमों के दस्तों में तबदील हो जाती है और इसी कारण से मरीज को सूबा रोग लग जाता है आम तौर पर यह बदहामी ठीक किस्म के दूध के न मिलते के कारण होती हैं। बच्चे को दूध ठीक किस्म का मिल रहा है या नहीं यह बात उसके दस्तों से माद्धम की जा मकती है।

१—दूध में चिकनाई जैसे मक्खन वगैरा (Fat) का ज्यादती से खाम तोर पर बच्चों को बदहजमी ज्यादह हो जाता है-ऐसी हालत में दस्त पीला-पीला खार चिकना (Soapy) होता है। बच्चों के पीतड़े या नेपिकनक माथ चिमटता नहीं है खार कटा-कटा होता है बच्चे को कटा भी होता है।

२--कॅमीन (Casein कं: ज्यादती से बच्चे दूच गेरने लगते हैं दस्त में सखत सफेद-मफेद जर्रे नजर आते हैं इन जर्रों को अगर अलकोक्डल ईथर) (Alcohol & ether)के मिक्सचर में घोला जाय तो नहीं घुलते।

३--ब्रा (Sugar)सबसे जल्दी हज्म होने वाली चीज है इससे बच्चोंको तकलीफ कम ही होती है मगर भगर यह भी दूथ में ज्यादह मिक्कदार में

\

dyspepsia are mixed up.

# V. Primary or Ideopathic wasting.

A wasting in which on apparent cause can be found for the wasting. There is nothing wrong with food, there are no signs of dyspepsia but the child simily wastes

Such cases are emmonest in very voung babies, often the patient is the youngest child of a large family or is a two or adegitimate. This seems to be arease of true assimilation but why it tails is not quite known. (Its true nature has baffled all investigation).

#### VI Organic causes.

( Causes of wasting which are in the organs of the body )

Any organic discree is apt to be attended he wasting as one of its consequences, but here we are only concerned with cases in which wasting is the rios: outline a mytom & the signs of organic disease are incon-pictions or alregether absent. In this correction, opedirst thinks of the great wasting discrea of childhood. Tubercal sis aretal towever it is not common during first if months of infancy when wisning usually occurs; besides it has piresical signs chest, abdomen or dands. Tuteroulosis is most to be suspected when there are no signs of digostoo, derangement & when rectal temperature is persistently high.

हो तो बच्चों को पतले पतले जोरदार दस्त हैं ने लगते हैं और उनके साथ हवा ज्यादह खारिज होती है।

श्राम तौर पर यह अब किश्म की वदह अम मिनी हुई होती है।

#### एक खास किस्म को सुखा रोग-

वाज मर्तवा ऐमा होता है कि कोई ख़ास मर्ज जाहिर नहीं होता-खूराक भी ठीक मिलती है वद-हज्मी भी नहीं होती मगर किर भो वच्चा सूखता जाता है।

श्राम तौर पर यह बीमारी उन बच्चों में पाई जाती है जो या ता ऐसे माना पिता से पैदा हुए हों जिनके उमसे पहले बहुत भी जीतानें हो चुकी हों या जोड़ते हुये हों छीर या नार्याज्य मंनान हो। इन हालतों में हाजमा बिलकुल ठीक होता है किर भी बच्चा क्यों मृखना जाता है यद बात के अभी विज्ञान हारा निर्धारित नहीं की जा मकी है।

(जसनानी वज्हात (Organic causes) ( जुन्या रोग के कारण जी जिस्म के हिस्सी में भोजूड होते हैं।)

जिसम के किया भी हिस्से में कोई खाम बीमारी हो तो वह सूखा रोग का कारण हो सकती है--( तेकिन यहां पर हम केवल उनही हालतों पर विचार कर रहे हैं जहां रोग का खाम लझ्ला बच्चे का स्वते जाला है और जहां कोई दूसरी जिसमानी बीमारी प्रतात नहीं होती) इस सिज़-सिले में मक्से पहली जिस्मानी बीमारी जिस पर खायाल जाता है वह है राजगदमा (Tuberculo-

#### VII congenital syphilis

Amongst the causes of wasting it is comparatively rare. Syphilitic taint may interfere with nutrition & childre, with syphilitic taint will improve remarkably when they are put on grey powder.

#### VIII. Diseases of lungs.

Such as chronic broncho-phenmonia late a emprona. The forcer may be afebrile only a few moist sound or doubtful singificance might be detected with the stethoscope which would suggest it.

Cuclul percussion would detect dull e-s which would suggest empreus

### IX. The other organic cause is conge-heart disease.

The steel scope would stootmurmure over year & like -the signs of heart decree. In a tensor a courtdisasse occurs without seriouses. In some theorem manner in (heart-disease) interferes with contrition & leads to wasting.

#### Complication's

The wasted infants are prore to infections such as hels, abscesses, tuberculesis, B ('oli infections infective enteritis brought pheniumia, acidosis nephritis & idiopathic cedema dehydration—drying of walr trom the system.

#### Prognosis

Or Outlook on life is always

हांड Rectal) तेकिन यह रोग मास तक के बालकों को छाम तौर पर नहीं होता है और मृत्वा राग इन्हों ह मास तक के बालकों को होता है— और अगर यह रोग उन्हें होता भी है तो फेफड़ों पेट और अन्थियों (Glands) से पता लग जाता है। राजयलमा का प्याल उन्हीं यहचों में करना चा हिये जिनमें हाज में की कोई खराबी ना माल्म होती हो और जहां उसकी गुदाई हगरत (Temperature) वरावर झ्यादह रहनी हो। पेदाइड़ी आतुश्क Congenital Syphilis

सूचा रोग के कारणों में से एक यह भी कारण हो सकता है—परन्तु यह आमतीर पर यहुन कम होता है। आतिशक का मादा होने की वजह से उच्चा अपने वजन में तरकती नहीं कर सकता। जिन बच्चा में पेंबाइश से आतशकी माद्दा हो, जो अगर उन्हें में पाउडर (Grey Powder) दिया जाने नो यह बहुत अच्छी तरककी करते हैं।

#### फफड़ों के रोग

फेफड़ों की फिल की में नवाद (Latenterop, mea) पड़ जाने से ब्लींग सांम लेने की न । में जराश ही जाने से (Brancho Presmonia) भी यह गेग ही जाना हूं और सदेशिमकीप (Stehescope) की नली द्वारा प्रनीत की जास-सकती है।

दिल का राग Hert Disease

गर वीमारी सटैथिन Stathe-cope ) उत्तर प्रनीस हो सकता है। दिनक सा उत्तर और नीचे के हिस्से से उसकी धार्मा धीसी **सावास** सह- 81

doubtful even when everything is going on well, a sudden collapse occurs & proves fatal, on the other-hand sudden & spontaneous improvement may occur at any moment even in worst eases. More frequently there is a gradual improvement chickend by many relipses improvement occurs rapidly after teeth are out,

#### Treatment.

The treatment of a wasting infant requires great patience & resonnee on the part of physician & nurse. The treatment is both hygienic & dietetic.

#### Hygienic.

Freshair, sunshine cleanliness, warmth, especially keeping tect & legs warm & are all great aids to success. Good mothering is also important the infant wants plenty of cuddling & amuzing. Great-care should be taken to see that the wasting infant does not get chilled when being washed. Next comes the important question of feeding.

Feeding is very great importance. Overfeeding does much greater harm than underfeeding. One must not be too eager of increasing weight. Mothers and Nurses are great offenders in this respect.

Once a mother took into her head fatten her 4 menths baby too quickly. She started feeding the baby on butter—unknown to other members of the family. The baby

चानी जो सकती है। कभी कभी यह रोग विना इस आधाज के भो हो जाता है। दिल के रोग खुराक के पाचन में बाधा डालकर सूखा रोग के कारण होते हैं।

सुला रोग की और नाधायें Complications

सूखा रोग के वच्चों को छून के रोग भी हो बाया करते हैं जैसे-फुन्सि, -फोड़े, तपेदिक, श्रांतों की सूजन (Infective Entritis) मांस की नली में खराश का रोग (Broncho Pneumonia) जिस्म की मृजन तथा जिस्म में दस्त व के से पानी की कमी होना (Dehydration) इत्यादिक।

#### नतीजा (Prognosis)

इस रोग का भाराम होना संदेहात्मक होता है मरीज को ठीक चलते २ एकदम कोई ऐसी बाधा हो जाती है जो उसके जीवन को कठिन बना देती है। लेकिन इसके साथ यह भी बात है कि ठीक औपधि के उपलब्ध होने पर खराब से खराब रोगी भी बहुत जल्द भाराम होते देखा गया है।

भामतौर पर रोगी भी हे थीरे तरककी करता है भीर इसी दरम्यान में उसे कई वाधाओं की भी लांचना पड़ना है। जब पहले दांत निकल भाते हैं तो बच्चे को बहुत जल्द ही भाराम होना शुक्र हो जाता है।

#### लाज--

स्ता रोग से पीड़ित बालकों के इलाज करने बाले भौर उसकी सेवा शुभुषा करने वालों को got severe diarrhoea. He was passing 12-13 motions a day—nearly all blood with some mucous. The milk was stopped, the child was storved for one day only Gluesse water 7% was allowed during this starvation period. The diarrhoea abited and the haby gradually recovered. Later his mother confessed to me that she had been feeding him on butter to tatten him.

It is a common and a grave mi. take to get the baby to put on weight too quickly, by various devices. This has just the opposite effect and not unoften endangers the life of the baby.

Feeding should be changed reluctant-Iv cantiously Before starting a new food it is well to clear our the lowels with a small dose of castoroil-half tax spoonful made into emulsion and to stop all food if acute symptoms of hava intoxication supervised (Glucose and water being allowed) for a few hours, at most for a day but not for top long as wasted infants do not stand starvation well, for long. Glucose and water for one day, Whey and Barley water next day. Then gradually put on milk too. In case the food is rich in sugar it should not be reduced too rapidly or collapse will occar. Breast milk is the best food in most cases : but in case artificial milk is to be given, one should be selected which is rather pour in fat, rich in carbohydrates and whose protein is in digestible form (that it forms ourds of Casoin.

(Nursing) उसकी देख रेख तथा इताज बहुत इतमीनान और सोच समक्षकर करना चाहिए।

इलाज में सकाई और खुराक पर खास ध्यान देना आवश्यक है।

सफाई — साफ ह्या, सुर्यकी रौशनी, जिस्मानी-सफाई, काफी गरमी, मकाबी तथा मच्छरोंसे बचाव हाथ और पैरों का गरम रखना इत्यादिक वालक को घच्छा होने में यहुत मदद देते हैं। मां को खास श्रह्तयात की खकरत हा। बच्चे को जहां तक हो सके खुरा रखन की कोशिश की जाए। सूखा रोग से पीड़ित बालक को निहलाते बक्त ठंड नहीं लगनी चाहिए।

श्रव खुराकका सबसे जहरी सवाल श्राता है -खुराक-

माताओं तथा देख करने वालों को यह बहुत स्वयाल होता है कि हमारा बच्चा बहुत जल्द मोटा हो । जिसके परिणामस्बद्ध्य के उसकी बहुत ज्यादा दूध पिलाने लगते हैं । यह बात खास ध्यान रखने वाली है कि बच्चे ज्यादातर ख्राक की बहुतायत से बीमार होते है निक कमी को बजह से ।

एक दका एक माता को यह सूकी कि वह अपने वार महीन के वच्चे को खूब मोटा करे। उसने उसे छिपे छिपे मक्त्रन खिलाना शुरु कर दिया। नतोजा यह हुआ कि बच्चे को दस्त लग गए और दिन में १२-१३ दस्त होने शुरु हो गए और दस्तों में बहुत ज्यादह खून व आंव (murcus) आनी शुरु हो गई-बच्चे का दूध एक रोज के लिए बिलाकुल बन्द कर दिया गया सिर्फ ग्लोकोश वाटर (glucose) थोड़ी थोड़ी मिक्करर में The following two are good digestible.

- Sweeteno eondonsed milk;
   drachms—3 ounces of water.
- 2. halt cream dried milk Cow & Gate:

One drahm of half cream milk to one owner of water.

It steels contain excess of fit which indicates severe for indigestion, the baby should be fed on whey with Mellin's food. If digestion of casoin is at fault—by the presence of indigested curds by steelstally peptoniced milk carried milk—(2 gr. soda Ciras to ounce of milk) or dried milk should prevent it. In less common cases of sugar indigestion and intexication the socalled protein milk is often very useful.

As to size of teeds and intervals feeds should be smaller, intervals not too large in proportion to wasting and exhaustion that is, more vasted and exhausted the child, the smaller and more frequent feeds should be given 3 hours.

#### Drugs.

are not of much use in wasting except to meet certain special indications, such as Cohe flatulence etc.

Grey powder does good even if there is no syphilitic taint—possibly by correcting constipation or by stimulating digestive secretions.

Spirits Vinum Gallici is also helpful in cases where there is much exhaustion with subnormal temperature. It is a common custom to anoint wasting दिया गया दस्त गाने बन्द हो गए श्रीर बच्चा धीरे २ ठीक होता गया, अन्त में उसकी मां ने मेरे सामने यह ऋबूल किया कि वह उसे मोटा करने के लिए मक्खन विलाती थी।

यह एक आम राजनी है कि बच्चों को मोटा करने के लिए बहुत से माधनों का उपयोग किया जाता है इसका जिलकुत उलटा परिएाम होता है और कभी २ बालकों की जान तक का खतरा हो जाता है।

खुराक तबदील कर देनी चाहिये और नई खुराक देने से पहिले बच्चे का मेदा थोड़े थोड़ अरंडी के तेल के ऐमुलशन (castoroilemulsion) से माफ कर लेना चाहिये और हालत खराब मालम हो नो कुझ घंटों के लिए दूध को रोक देना मुनामिब हैं। मूखा रोग के बच्चों को एक दिन से ब्यादा भूखा नहीं रखना चाहिये क्योंकि वह इससे ज्यादा बरदारत नहीं कर मकत एक दिन केवल ख्लकोज या जो के (Glucose or Barle) पानी पर रखने के पश्चात बच्चे को धीरे धीरे दूध देना चाहिये।

श्रगर पहले बच्चे को दूध में ज्यादह यूरा मिलती रही हो तो इस बृरा को एकदम नहीं घटाना चाहिये वर्ना नुकसान होता है मां का दूध बच्चे के लिये सर्वोत्तम खुराक है लेकिन श्रगर बच्चे को उपर का दूध देना पड़े तो ऐसा दूध देना चाहिये जिसमें (fat) कमती मिकदार में Carbohydrate ज्यादह मिकदार में श्रीर (Protain) ऐसी किस्म का होना चाहिये जो जल्दी हन्म हो जाय इस किस्म का दूध श्रञ्छा होता है।

मीठा सुखाया हुन्ना-दूध (Sweet and Co-

babies with codliver oil, but it is a very dirty practice and highly objection oble, the child can hardly obtain any appreariable amount of nourishment by such a method at the most it can help in retaining some degree of heat. Almond Oil would be much less offensive, and could retain that as effective as Calliver Oil, whilst adequate clothing is more effected than codliver or almond Oil.

# Some hints for mothers in the management of the babies.

- 1. Breast milk is the best of all milk toods, Artifield reeding should only be resorted to unless mother's milk is insufficient for the baby or mother is too weak to suckle it.
- 2- Food the baby regularly every 3-4 hours, nothing sould be given in between, it would be much better for mother and the baby's argestion if the last feed were given at 10 F. M. and nothing during the night. The next feed should commence at 4-0 or 5-0A.M. when the baby awakens. After a few days the baby will sleep quickly and let the mother sleep peacefully too.
- 3. After each feed the child should be made to lie down for half an hour but not moved about in the arms.
- 4. Do not keep the baby always in arms, but let it lie on the cot for most

ndense) माशं दृध डेड़ इटांक पानी में मिला कर या आधे मकन्न वाला सुखाया हुआ दूध (Half cream Dried Milk)

६ मार्श दूध एक छटांक पानी में मिलाकर अगर दस्तों से (Fat) की ज्यादनी माल्स हो तो बच्चों को मेंलिन्स फूड़ (Mellins Food) अच्छा रहता है अगर दस्तों से केंसनि (Cassein) की ज्यादनी माल्स हो तो दूध में २ रत्ती की छटांक के हिसाबसे सोडियम मिटरेट (Soda Citrate) मिला देने से यह शिकायन दूर हो जायगी।

दूध की मिकदार और देने का समय बच्चें की सहत पर निर्धारित है जितना ज्यादह कम-जोर बच्चा हो उतना ही थोड़ा थोड़ा दूध ज्यादह दफा देना चाहिये और जितना मजबूत बच्चा हो उतना ही ज्यादह दूध कमती दफा देना चाहिये श्राम तौर से कमजोर बच्चों के लिये यह समय दो से तीन धंट तक का होना चाहिये।

#### दवाइयां--

सूखा रोग में दबाइयां ज्यादा मदद नहीं करती है बल्कि यह सूखा रोग की बाधाओं की दूर करने के काम में लानी चाहियें में पाउडर (Grey Pow-(ler) एक बहुत अच्छी दवा है-चाहे बच्चे की आतशकी मादा न भी हो तो भी यह कब्ज की दूर करके और हाजमे को दुरुस्त करके बच्चे की बहुत कायदा पहुंचाती है।

जब बहुत कमजोर और थका हुआ हो तो (Spt. Vinum Gallicii) बच्चों को फायदा पह चाती है।

श्राम तौर पर हाक्टर लोग बच्चों को कीड-लिवर श्रायल (Cod Lwer Ail सूखा रोग में मालिश करने को बताते हैं यह फजूल बात है क्योंकि यह बहुत बदबूदार of the time during the day, otherwise, it will form a habit and would always like to be nursed in the arms, which would be very inconvenient for the mother.

- 5. Baby's feet should be kept warm and free from dampness especially in cold, damp weather.
- 6. The baby should not be clothed too heavily as beavy clothes hinder the child's breathing.
- Avoid the baby catching chill or cold while being washed,
- 8- Let the child sleep 3-4 hours during the day and let him sleep early at night -7-0 P.M. as an infant requires mostly 2 things eating and sleeping.



होता है। इससे सिर्फ बच्चे की थोड़ी सी गरमां कायम रहता है। बादाम रोगद भी यह काम कर सकता है। श्रीर इसमें यू विलकुल नहीं होती और उतनो ही गरमो कायम रखता है परन्तु ठीक बस्त्रों का पहनाना की डलिवर आयल ला बादाम रोगन से ज्यादद कायदा करता है।

#### मातात्र्यों के लिए कुछ हिदायतें

१-माता का दूध सब दृधों से अच्छी खुराक हैं। उपर का दूध सिक उस हा लमय देना चाहिये जब मां की दूध कम आता हो या गहीं आता हो और या मां बहुत कमजोर हो।

२-वच्चे को दूध हर ३-४ घंटं के बाद देना चाहिये। आखारी दका रात को १० बजे दूध देकर फिर सुबह चार पांच बजे से शुरू करना चाहिये। इससे मां और बच्चा दोनों सुखी रहते हैं।

३- दूध पिलाने के बाद आध घंटे तक बच्चे को लेटे रहने देना चाहिये। और गोदी में लंकर खिलाना नहीं चाहिये।

४-जहां तक हो सके च्याचे को ोदी की श्रादत न डालो श्रीर पालने में या खाट पर लेटने दो। वरना श्रागे जाकर इससे बड़ी दिक्कत होती है।

४-वच्चं के पैरों को गरम रक्ष्यो । ठंडा और गीला होने से बचाच्यो । बरसाती हवा और मच्छरों से बचाच्यो ।

६-यच्चे को बहुत भारी और बहुत ज्यादह कपड़े मत पहनाओ। इससे उसकी सांस लेने की किया में बाधा पहुँ चती है।

७—निहलाते बक्त खास खबाल रक्को कि कच्चेको हवान लगे।

८—वण्चे को जहां तक हो सोने दो क्योंकि बण्चे की तरकों के लिये नींद और खुराक को ही क्यादह जरूरत होती: है।

# BY YOUR

# "JIWAN SUDHA"

AND

ALL OTHER BEST

### **MAGAZINES**

Published all the world over from:-

# Messrs. J.M. JAINA & Bros.

Authorised Agents 10r:-

The Publications, of the Government of India, the Government of Punjab, and the Government of U.P. AGRA & OUDH:

Books-Sellers, News Agents & Stationers.

Phones: -

5064 MORI GATE, DELHI.

3496 CANNAUGHT PALACE, DELHI

# IF YOU WISH TO BUY OR SELL SHARES

Of any Progressive and Sound Limited Concern
THEN PLEASE

Correspond with:-

Sri Krishna, Seth, Esq. B.A.,
SHARE & STOCK AGENT,

CHANDNI CHOWK

DELHI

# बेकार नवयुवकों की ज़रूरत

मुक्ते १५ पहे लिखे ऐसे नवयुवकों की जरूरत है जो ३५) से ७५) रु० मासिक नौकरी पर काम करना चाहते हों। प्रार्थनापत्र के साथ अपनी तालीम का पूरा २ हाल

लिखना भी आवश्यक है।
पार्थनापत्र भेजने का पता—
मि॰ रामनाथ कालिया, बी॰ ए॰,
चांदनीचोक, देइली।

### हाइड्रोकपत्ज Hydrocephalus मास्तिष्कजलसंचय

(लेखक श्री वैद्यराज पं॰ महावारप्रवाद जी संवाह जावन सुना)

बच्चों के दिमाग में दो प्रकार का दाह हुआ करता हैं (१) जो तन्दुरुस्त बच्चों को भी हो जाया करता है । (२) प्राय: सिकरापयुलस मिजाज (यदमा प्रकृति) के बच्चों को ही हुआ करता है । इनमें पहले को इनकैफलाइटिस (Incephlitis) कहते हैं और दूसरे को एक्यूट हाइड्डो कफल्ज कहते हैं।

(१) पहली किस्म का प्रदाह बक्चों की बहुत ही कम होता है। (२) दूसरी क्रिस्म अर्थान एक्यट के लक्षण सिवि जाते हैं इसके लक्षणें को तीन दर्जो में विभक्त करते हैं। १ ( पहले पर्जे में बहुत भी अलामात दिमारा के कंजरचन ( खून क जमाव ) की पाई जाती हैं। और बुखार रहा करता है। जिसके उत्तरने बढ़ने का कुछ निश्चित समय नहीं। यच्चा सुस्त और उमका मिजाज चि इचिड़ा हो जाता है। चेष्टा करने में सुस मालम होता है, रोजाना की खेल कृद उसे नहीं भाती, कभी २ तिवयत में ऐसा ही जाता है कि खेलते २ एक दम कक जाता है और दीड़ कर श्रपने सर को माता की गोव में छुपा लेता है श्रीर हाथ से सिर को पकड़ कर दर्व सर की शिकायन करता है, या सिर्फ यही कहता है कि में अब शक गया हूं और सोच बाहता हूं। कभी २ ऐसा होता है कि उसका सिर धूम जाता है। तब भोचका सा खड़ा रहकर इधर उभर ताकता रहता है, जब यह शक्य सतम हा जाते

हैं, तब या तो से देना ह या होश में आकर फिर खेत में लग जाता हु। यदि नन्हा बच्चा हो तो मां का गोद में खांक खाकर लिपट जाता है। जो वच्चे बल किर सकते हैं वे चलते वक्त अपने एक पांच की घमीट कर और कक २ कर चलते हैं। मन्द्रविन रहतों हैं, कभी २ खेलने २ एक हम खाना मांग बैठना है, भोजन देने पर इनकार कर देता है। कभी २ खाते बक्त उवकाईयां आती हैं, श्रीर के करना चाइता है, प्यास कम होती है, बाज दुर्फे खाने पीने दोनों से ही नफरत होती है कभी २ तो सिर्फ खाने के बाद ही की कर देता है। कभी:खाली पंट भी के हो जाती है। जिससे स्रवज्ञ रंग की रत्रवत निकलती है। पर इस बमन से कुछ भी फायदा गर्जी होता, यद्यपि दिन में दो तीन बार से ज्यादह के नहीं होती लेकिन कई रोज नक बरावर होती रहती हैं। सिर भारी इसमें दर् ज्यादा होना जाता है, पेट विगड़ा रहता है क्योंकि शुरू ही से कहत रहता है। पाखाना कम भिन्त २ रंग का बद्दुदार होता है, जिसमें पित्त कम निकलता है, जवान के किनारे और नोक सुखं होते हैं बीच का हिस्सा सफेद होता है. नब्ज तेज और बेबायदा, बच्चा शय: निहा सी मैं पड़ा रहता है, बाज दफें दिन में २-३ बार सोना चाहता है, लेकिन बेचैन रहता है अच्छी प्रकार सो नहीं सकता, दांत पीसता है सोते समय आंखें ख़ुनी रहती हैं। जरा सी शाहट या विना कारण

ही खींफ लाकर चौंक पड़ता है। रात के यक्त बत्ती को रोशनी की वर्दाश्य नहीं होती, याद रहे कि ये सारे लक्षण एक ही बचने में नहीं पाये जाते। अगर भीजून भी हों तो बरायर एक सा नहीं

जल मन्तिष्क (Hydrocephalus) हाइड्रोकफल्ज

(भी । डा० त्रिलोकीनाच दर्मा के मौजन्य से प्राप्त)

यह कन्या पांच वर्ष की है, यह अभी अपने सहारे न बैठ सकती है, न खड़ी हो सकती है, योच भी नहीं सकती, तिर कितना बड़ा है। गर्भाशय ही में रोग ही जाने से इसके मस्तिष्क के कोण्ठों में जन अधिक इकट्ठा होगया। मस्तिष्क फैल कर खड़ा होगया है, इसके साथ साथ खोपड़ी की जनती हुई हिब्दमां भी फैल गई हैं, और खोपड़ी बड़ी होगई है, रोग असाध्य है।

रहते। यक्के की हालत प्रति-त्या वदलती रहतो है। कभी खुरा कभी सुस्त हो जाता है। यह दर्जा अक्सर ४-४ रोज तक रहता है। अगर उस समय रोग का निश्चय न होकर इलाज न ही सके तो ब्रितीय अवस्था पर रोग पहुंच कर लक्ष्य प्रकट करता है तब यह असाध्य होता है, इस दर्जे में बच्चा बिल्कुल सुस्त और फिकरमन्द सा रहता है। बैठने की ताकत नहीं रहती शाय: सीना ही चाहता है। श्रांखें अक्सर बन्द, माथे पर त्योरी बढ़ी रहती है, हिलने में तकलीफ होती है, जब तक बुताया न जावे नींद में पड़ा रहता है। वातचोर्ते होश की करता है, लेकिन बहुत कम, मिजाज, चिड्चिड़ा और ठंडे सांस भरता रहता है या जोर २ से चीखें भार कर दर्द सरकी शिकायत करता है। अब रात जाती है तन ये लक्ष्ण बढ़ जाते हैं। इसीलिये कभी तो जोर २ से रोता है कभी वहकता है, नाड़ी निर्वल और श्राहिस्ता २ चलती है, के बन्द हो जाती है। कब्ज बढ़ जाता है, पेट दब जाता है।

(३) तीसरा दर्जा —इसमें बच्चा ऐसा गाफिल हो जाता है कि उसे होश में लाना मुश्किल
हो जाता है। बाज़ दफे कमेदा होकर बच्चा बिलकुल बेहोश हो जाता है। कमेदे के बक्त शरीद के
एक भाग में बनिस्वत दूसरे माग के व्यादह रेंठन
होती है। कमेदे के बाद एक हिस्सा या तो बिलकुल निरचेष्ट हो जाता है। दूसरा भाग आप ही
आप हरकत करता रहता है। कमेदे के बक्तजिधर
की तरफ पेंठन व्यादह होती है, भायः बही भाग
निरचेष्ट होता है। जब यह तीसरा दर्जा पूरी तरह
हो जाता है तो बच्चा एक पांव मैका देता है दूसरे

को पेट पर सिकोडकर बेडोश चित्र पड़ा रहता।है हाथ कांपते हैं। बच्चा अपने होठ और नाक को नोंचता रहता है यहां तक कि खून निकाल लेता है एक हाथ जननेन्द्रिय पर एखे रखता है दूसरे को अपने चेहरे और सिर पर फैरता रहता है। कभी सिर ठएडा कमी गाम कभी चेहरा मुर्ख कभी फीका होता है। धमनीस्पन्दन अत्यन्त कमजोर होती हैं । आखिरकार हृदय पर हाथ रखने से ही नव्ज मालूम होती हैं। आंखों की प्रतितयां स्थिर श्रीर फैल जाती हैं, बेहोशी की हालत में बच्चेका मंह खुद व खुद चलता रहता है मानो कुछ चवा रहा है या निगल रहा है। बाजदफे एक ही कमेड़े में यरचा चल देता है या ऐसी हालतमें कुछ दिनों तक जिन्दा रह सकता है। याद रखना चाहिये कि यह रोग जिस नरह वर्णन किया गया है उसी नरह हमेशा प्रकट नहीं होना प्रत्येक रोगी में कुछ न कुछ फर्क अवस्य मिलता हूँ। जैसे किसी के कमेड़ा सारे शरीर में होता है किसी के एक तरफ होता है। किसी को कन्बरुशन के बाद फालिज हो जाता है किसी के हांथ पांच विचकर सिक पेंठते ही रहते हैं। कोई बीमार अर्मे तक बेहोश पड़ा रहता है कोई जल्द मर जाता है। लेकिन ऐसी भिन्नता से रोग निर्णय करने में कोई कठिनाई नहीं होती। पूर्वस्व---

इस रोग के आरम्म होने से महीनों पहले बच्चे की ताकत बटती जाती है कह दुबला होता जाता है। कभी ९ सुस्तार, सांसी, ग्रुपानारा, प्राय: क्रम्ज़ रहता है, कभी २ हाथ पाँच में दर्द, सिरमें वर्द की शिकायत करता है, दिन व दिन हासत स्तराब होती जाती है। बुखार ज्यादह हो जाता है, बच्चा सुरत हो जाता है, अब सिर के दर्ष की शिकायत नहीं करता, यकायक किसी रात को बेचैन हो जाता है, कमेड़े थाने लगते हैं, रोग ज़ाहर हो पड़ता है।

मृत्यु पश्चात् रोगी परीचा-

मृत्यु बाद दिमाग को स्रोलने से इसके पर दें सफेद धुन्धले नज़र आते हैं और जदं रक्त का लिस्क (रन्वत) और दिमाग के परदों तथा अन्य अक्कों में ट्युवर कल के छोटे २ दाने पाये जाते हैं। दिमाग के खानों में स्तृत का पानी पाया जाता है।

कोई वच्चा सामकर तपेदिक (यहमा) रोग से पोडित पिता माता के रज वीर्य से उत्पन्न हो बिना किसो प्रत्यच कारण के हमते था महानों से जो मार हो और जब कभी वह निद्रा में या सुम्न माल्डम हो सांसी को अधिकता हो ऐसी अवस्था में एक्यूट हाइड्रोक्सकज की शंका करनी चाहिये। क्योंकि थोड़ी २ और लगातार खुश्क खांसो इस रोग के प्रारम्भ में प्राय: हुवा करती है। कभी २ कै(बमन) भी होती है, धमनीस्यन्दन में यदि कमी वेशी होतो इस रोग के पैदा होने में शंक नहीं करना चाहिये। यह रोग प्राय: वच्चों में ४ साल में पूर्व ही पैदा होता है।

कारस---

यहमा की सम्भावना वाले बच्चों को प्रायः होता है दुवलापन, कष्ट से दांतीका निकलना, सिर पर चोट बगैरा लगना, यकायक हरना, ज्यादह गुस्सा होना, ये सब एकसाइटिक (सन्निकृष्ट) कारस हैं। यह बीमारो तीन प्रकार से शुरू हो सकती हैं, १-मस्तिष्क के लज्ञण क्रमशः पैदा होते हैं। २-जिना किसी विशेष पूर्वकृष के एकदम सिर-दर्द, ब्वर और कमेड़े से यह रोग प्रारम्भ होजाता है। ३-यह रोग गुप्त कृष से इस प्रकार प्रारम्भ होता है कि चेचक के दूर होने के बाद या किसी और त्वचा रोग के अन्त में थोड़े २ लज्ञ्ण प्रकट होते हैं।

#### परिखाम---

इसका परिणाम भयंकर होता है, जब यह बीमारी किसी तन्तुकस्त बच्चे को यकायक तीवता से हो जाती है। परिणाम कभी अच्छा भी। निकल सकता है, परन्तु जब यह रोग क्रमशः या गुष्त रूप से निर्वल यहमा प्रकृति के बच्चों को होता है तो इसका परिणाम सदा बुरा ही होता है।

#### चिकित्सा--

इस रोगकी पूर्वावस्था में ही यदि उपयुक्त चिकित्साकी जावे तो बीमारी कका सकती है, जब लहाए पूर्वाक्य से प्रकट हो जावें तो चिकित्सा से बहुत कम कायदा होता है। जिम प्रकार यहमा के रोकने को कोशिश की जाती है। उसी प्रकार हममें भी कोशिश करते हैं। जिम वंश में इस रोग से पीड़ित होकर कई बच्चे पहले मर चुके हो या वे इस रोग की नरक विज्ञेष माही हों, तो माता को चाहिये कि वह अपने बच्चे को दूध न पिलावें किसी तनस्तुकृत भाय का दूध पिलावें और अले को देहात में रक्खें। सही से बचावें, भोजन सादा होना चाहिये, चिरकाल तक केवल बच्चे को दूध ही देते रहें, जब तक उसकी

चार डाद श्रीर ऊपर नीचे के सामने के दांत न निकल आर्वे तबतक दूध देना धन्द न करें। खुली हवा का सेवन अत्यन्त लाभप्रद है। दांत निकलते समय बच्चे की रहा का ध्यान अवश्य रखना चाहिये. ताकि काली खांसी या चेचक की खत न लग जावे। कब्ज न होना चाहिये। पेट की बीमारी को मामूली न समका जावै,। फौरन ही एरएडीका तेल या सनाय देकर पेट साफ करें, जब कभी सिर गरम श्रीर बच्चा बेचैन मालम होवे फौरन एक दो ब्रोन कैलोपेल खिलाकर थोई। थोड़ी मात्रा में दें। जब तक खुलकर दस्त न आवें सल्फेड श्रीफ मगनेशिया इस प्रकार खिलावे-सल्फंट औफ मगनेशिया २ हाम, सीर्प औफ श्रीरंज, २ ड्राम, कैरवे वाटर ६ ड्राम सब को मिलाकर रखर्ले तीन माल के बच्चे को २-२ डाम देवें। ज्वर और कब्ज़ हो तो भो इसको ही देवें। विज्ञंप जरूरत न होवे तो जोकें न लगावें, श्रावश्य-कता पड़ने पर धोड़ी ही लगावें, क्योंकि यहमा प्रकृति बच्चों को खून निकलवाने की बद्रारत बहुत ही कम होती है। रोग से खूटने के बाद शक्तिदायक निम्न लिखित प्रयोग देवें --

इन्फ्यूजनकलाम्बे का क्वाध र श्रीस र ट्राम इनफ्यूजन रवरव ४॥ ड्राम, दिंचर श्रीरंज्यशाई १॥ ड्राम सबको मिलाकर १ साल के वच्चे को दिन में दो बार ३ ड्राम की मात्रा में पिलावें। सिरदर्व की शिकायत बार र होती हो तो गर्दन के पीछे सिटिन लगा देवें क्योंकि सिर के पास से पीप निकलते रहने से प्राय: हाई ड्रोक्फलज का दौरा रक जाता है। यदि इस रोग के रोकने का श्रवसर ही न मिले तो इसकी चिकित्सा तीन

#### प्रकार से होती है।

१---प्रथम खुन निकासने से, २---मुसहिल ( जुलाम) देना। ३--पारद के प्रयोग देना।

(१) जिन बच्चों की यसमा प्रकृति हो उनके खून निकालनेमें बहुत सावधानी करनी चाहिये औरोग की प्रथम अवस्था में जोक द्वारा खून निकालें परन्तु दूसरे दर्जे के शुरु होने पर फिर खून न निकालें।

#### (२) रेचन---

इस रोग में रेचन से बड़ा फायदा होता है। परन्तु खुलकर दस्त आना ही काफ़ी नहीं है, किन्तु इख दिन तक दस्त बरावर आते रहना चाहिये। कब्ज दूर होने के बाद थोड़ी २ मात्रा में किसी रेचक औषधिको ४-४ या ६-६ घरटे बाद खिलाना चाहिये। और कभी २ वस्ति कर्म, भी करते रहना चाहिये।

#### (३) पारद के प्रयोग---

ये पारे के प्रयोग भी विरेचक श्रीषियों के साथ ही देना उत्तम है। सिर पर ठएडे जल का सिचन करना भी लाभप्रद है।

#### माहार-

जब लक्ष्मा उमक्ष्यमें हो, श्रीर जीमियलाता हो, कब्ज रहता हो, ऐसी हालत में बहुत श्रल्प मात्रामें मोजन देना चाहिये। श्रीर बाद में भी बहुत ही हल्की गिजा जैसे सागुदाना देना चाहिये। श्राप्तीम—

जब यह रोग मयंकर रूप में हो और बच्चे को दीवाने की तरह जोश श्रा जावे। श्रीर देचन श्रीपिध देने पर दिमागी गरमी और चेहरे की मुर्खी दूर होगई हो और नव्ज भी जल्द श्रीर कम-जोर चलती हो और फिर भी जोश दूर न हुवा हो तो अफीम के खिलाने से चैन पड़ जाता है श्रीर वच्चा सो जाता है। श्रीर जागने के वाद भी उसे श्रीराम मालम पड़ता है।

श्रीर जब यह रोग उम्रह्म में न हो, परन्तु ज्यों २ बढ़ता जाता है, मरीज के प्रलाप, वेचेनी, श्रीर दर्व सिर की शिकायत होती जाती है, श्रीर उसकी रातें बड़े कब्ट से कटती हैं, उसे तेज इलाज को बिलकुल वर्दास्त नहीं होती। श्रतएव इस श्रव-स्था में जब श्रीर कोई चिकित्स काम न दे सके तो श्रफीम की पूरी मात्रा देने से लाभ होता है।



### बच्चों के साधारण रोग तथा उनकी

चिकित्मा

( लेखक—डा० कन्हेयालाल जैन चीफ मैडिकल आफिसर चिल्डू न फी डिस्पैन्सरी होज काजी देहली )

यूं तो बच्चों की वीमारियां बहुत हैं परन्तु साधारणतया दो प्रधान हैं। (१) बदहज़मी (२) म्बांसी । अन्य दो प्रकार के रोग ओर हैं जिन्हें प्रधान में गिन सकते हैं (१) लारारी, त्रधांत शारीरिक कमजोरी (२) नाफहमो, প্রথান मस्तिष्क सम्बन्धा कमजीरी। इन्हे छोड़कर बच्चों को थ्रोर कोई ऐसा उपादा खतरनाक मर्ज नहीं होता जिनके लिये उनके वारिमान उन्हें किसी चिकित्सक के पास ले जावे, ये ही चार प्रकार की वीमारियां प्रधान हैं जिनके इलाज के लिये किमी चिकित्मक की अवश्यकता पड़ती है। इन चारों रोगों पर एक एक पर एक एक विशाल मजमून लिखा जा सकता है परन्तु यहां हम बद्हज्मी पर कुद्र थोड़ा सा निम्बेंगे।

स्रार थोड़ी बहुत अहतयात की जावे स्रीर बर बक तशासीस की जावे स्रीर सही-मही इलाज हो तो बहुत-सी जानें अस सकती हैं, बदहज़ भी की तीन खास खलमानें हैं (१) पेट का दर्द (२) के स्रीर (३) दस्त का होना, जब कभी मातायें सिर्फ यह ही बयान करे कि बस्चा रोता है कोई नई बात नहीं बेबजह चीखता चिल्लाता है तो फीरन समक लेना चाहिये कि पेट के द्रद की बजह से बस्चा बेचैन है बस्चे के रोने के स्रीर भी श्रमबाब हैं मगर पेट के द्रद का रोना खाम तरह का होता है जिनको बस्चों की बीमारियों का तजुवीं है उनको तशासीश में दिक्कत नहीं

होती। दोयम बच्चों का रोना मनकर हर एक सिरफ आवाज सुन कर ही पेट के दरद की पह-चान नकता है इस दूरद की खास पहिचाने हैं-(१) जब बच्चा रोता है पेट पर घटनी को सकोड़ लेताहै, अगर पेट देगा जावे तो मालूम होगा कि पेट मन्त है और तना हुआ है हाथसे जरा दबाइये नो शायद यांतों का हरकत भी महसम हा। कभी २ ना अनिहियां गाँउ मामुली नोर पर चलती फिरनी नजर आनी हैं तीसरे रिहा स्वरिज होने से वच्चा रोना वंद कर देना है पाटक ग्रांसाल करंगे कि प्रशीस पेटका दर्द हम कहर आम क्यों है इसका बहुत सी एजदात हो सकता है मेंग खयान में बचनों की गिजा जो उनको दी जाती है बच्चों के पेट के दर्द में कारण है अगर वह सही तौर पर हज सन हो तो इस फिस्म के तेजाव बन जाते है जिनसे आंनों और मेरे मे खराश पैदा हो जाती हैं दूसरे अगर ऊपर का दूध दिया जाय और वह भी बेकायदे पिलाया जाय तो मेदे में पहुंच कर दृध बुरी तरह फटता है बड़े २ और मस्त टुकड़े बन जाते हैं। जब वह आगे को बढ़ते हैं तो पेट का दर्द होना लाजमी है नीमरे यह बजह भी हो सकती है कि बदहजमी की वजह से आंतों में हवायें अधिक वने रियाह रुकने से आंतों में तनाव ज्यादा हो जाता है। सिर्फ तनाव ही ऐसा दुरद पैदा कर देता है कि बच्चे उसको वरदास्त नहीं कर सकते श्रीर रोते हैं:--



THE STATE OF THE PARTY OF THE P

Dr K L Jain, L S M F. Mele 1 O in tindren' inc Disjet mes, Drim

पेट के दरद का इलाज बड़ा आसान है प्रथम एक इलका सा मुसहिल दें फिर वच्चे को चूने का पानी एक चमचा दिन में चार वार दृध के साथ देत रहें अगर ररद की हालनमें यह इलाज किया जाय तो दरद जाना रहेगा और अगर बाद दरद के भी थोड़ा थोड़ा मुमहिल और दृश पानी देते रहें तो कभी ररद की शिकायन नहीं होगी अलावा ददहज़ भी के पेट का दरद एक और चजह से भी हो सकता है और वह बचह ममाना और मुस्दे का तरद हैं शिजापा वेंगतहाली की बजह से अंग पाना की लिख्लत की बजह से आंब आने लगती है यहां दरद को बजह होना है अगर बच्चों के निहलांवे की आप देखें तो उन पर जदें रंग के पहले होर धारिक वारीक वेंगिक ऐसिहकी कहमें भी नजर प्रांचेंगी।

कों —यन यो में इथ डाजने और को करने की शिकायनों भी उहुन शाम हैं यह शिकायनों एक तो इस तरह की होनी हैं कि बच्चे देखने में अच्छे खासे होने हैं बोई दूसरी शिकायत नहीं होती सियाय दूध डालने हैं। को अपने के। यह शिकायन अमुमन उन बच्चों की होनी हैं जिनके मेदों में गिजा मेदों की जमामत से ज्यादा पहुंच जाये ज्यादा शिजा को वह कै करके निकाल देते हैं ज्यादातर बदनीयत बच्चे इस रोग का शिकार होते हैं खाने के मंज में जो कुछ सामने आनाह खालेते हैं उनका इलाज यही है कि उनके खाने की निगाददारत की जाये और जब यह बदनीयत और लालची बच्चे उसमें मुबतिला हों तो उनको फाका कराया जाये। इसके अलावा जिगर और मेदा की खाराबी में भी के की शिका-

यन हो जाती है। जिगर की खाराधी की वजह से जो के होती है उसके दौरे रह रह कर पड़ा करते हैं। इसका इलाज भी ज्यादा दुशवार नहीं ग्रिजा कम कर दोजिये और (Glucose) अर्थान अंग्र की शक्कर का शर्वत पिलाइये एक ही खुराक करई तौर पर के को रोक दंती है जोर जगर के चन्द न भी हो तो दौरा ज्यादा देर तक नहीं रहता (Glucose) असर जकर दिखाती है, के के दौरे होने पर ज्यादातर जिगर की खराबी को दखल होता है। लेकिन अंग्र महारीन (Migrain) के मरोजों की के भी उसके बहुत मुशाबा होती है भाइगरीन बचपन में होती है जीर काविल इलाज के बाद इस बोमारी से बिल-कुल निजात मिल जाती है।

मेदं की कैरी तरह का होती हैं अब्बन फीरी अनी अपजी दोयन परानी और दर की। कभी कभी पुरानी के दाइमी सूरत भी अस्तयार कर लेती है पहिले किस्म की को की नशस्त्रीस थीर इलाज दोनों बहुत आसान हैं, मरीज की लाने वाला हाल कहना है (१ के को शुरू हुये ज्यादा अरसा नहीं हुआ थोड़ो देर से शुरू हुई है (२: जब से शुरु हुई है बराबर हो रही है बंद ही नहीं होती (३) के के साथ बुखार भा है और पिंडा गरम रहता है जवान खुरक है और चेहरे पर भुरियां पड़ी हुई हैं। इस के का सबब मेद की खरात्री होती है वदहजारी की वजह से या सरदों लग जाने के सबब से मेदे के अन्दरूनी जानिव वरम होता है। इस तरह की कै दाज श्रीकात दूसरी बीमारियों में भी होती है। कई एक शदोद अमराज की इनतदाई अलामत इसी तरह की के होती है। मसलन निमोनियां और गरदन तोड़ बुखार में के छोर मितली अक्सर हुआ करती है। महज के को वजह से कोई भी डाक्टर कतई तीर पर यह नहीं बता सकता कि इन वोमारियों में से चीन की वजह से के हो रही है। अकलके डाक्टर अपनी राव के वताने में जल्दी नहीं करता। नशाणीश न बनाने के यह मानी नहीं हैं कि इलाज भी न किया जावे। मेंदे की कै, में इलाज का एक ही असूल है।

गिजा बंद कर दीजिये धौर इस तरह की चीजें दीजिये कि मेदे की भिल्ला पर खलीश पैदान करे मसलन (Gluese) और (Almin water बहुत अन्छी चीर्जे हैं । नुसखा:- Gloese अगुर की शकर एक इराम (चार माईा) पानी आधी छटांक दिन में जितनी मतेबा बच्चा पानी मांगे दीजिये। अगर के ब्यादा हो ने। मोडा-बाइकार्व तीन प्रीन इजाका कर दीिये। नुसया नं र:--पेल्यन बाटर भी बहत आसानी से हर एक बना सकता है इसके अलावा पट की सपाई के लिये Calomel बहुत अच्छी चीज है। वड़ों के मुकाबले में बच्चे केलोमन बरदास्त भी खुव कर नेते हैं। केलामन 🖟 सीडा बाइकार्य २ मोन इस तरह म सफ्फ बना लीजिये और २-२ घंटे के बाद बच्चे की ही जिये ही चार सहका के बाद दबा दने की जरूरत न पड़ेगी।

(२) पुरानी कैं रक्ता रक्ता देर पाके बढ़ती है इस प्रकार की कैं ज्यादा सिद्दत के साथ शुरु नहीं होती। कभी कभी ऐसा जरूर होता है कि एक साथ शुरू हो जाती है इस किस्म की के में ज्यादा इमकान इसका है कि मेदे की छोटी खांत से मिलने की जगह तंग हो गई है। वच्यों में खासी तादाद इस मरज में मुबतला होती है। यह दूसरी बात है कि मर्ज तंशखीश न किया जावे, इस मजे की सही तशखीश और फीरी इलाज पर बच्चे की जिन्दगी का दारोम हार है अगर गलत नशखीश हो और इलाज में देर का जावे तो इस कदर ज़ई के हो जाता है कि आपरेशन का मुतहम्मल हो नहीं हो सकता और मेंदे के मुंह बंद होने की या तंथ होने की हालत के सिजकल आपरेशन ही बाहद इलाज है। इस मर्ज की तशखीश भो ज्यादा काठत है। अगर नीचे लिखी चन्द अलामान मीजुर हो ती आप आपरेशन का मश्चरा दे सकते हैं।

(१) कें यकलक्त और दूर तक जावे (२) मेरे के इलाके में पेट पर आतें चलतो किरती नजर आयें। इसी जगह पर एक गृमड़ी मी महलूल हो अगर आप पेट की हाथ से द्याकर देखें। (३) कब्ज यह भी बहुत बुरा मजी है कई कई दिन तक बुजाबन नहीं होती।

दस्त-यह हाज में को बंतरतीयों की अलामत है। इनका बहुत ही अहम यामारी रुवाल करना चाहिये। साठ की सदी बच्चों की बोमारियां हाज में के बिगाड़ की बजह से होती हैं। हाज में की बीमारों का इनाज जल्द से जल्द कर देना चाहिये मामूली वार्तों में दस्त आने लगते हैं। इस्त आने की वजह कई होती हैं (१) मेदे के फेल में कुछ नुक्स। यह कोई बड़ी खराबी नहीं होती सिर्फ मेदा अपने काम में दीला पढ़ जाता है और (Hydro Chloaie and) हाई-हो क्लोरिक ऐसिक की मिकदार काफी नहीं

बनती मेदें की रत्यत इतनी तेच नहीं होती कि रिजा को अच्छी तरह हजम करे और वीभागी के जरासीम जो खिजा में शामिल हो जाने हैं उनको सम हालें। वस जरासीम थीर मेदे में ए जा भी गड़बड़ से हाजमा सागब हो जाता है और दश आने लगते हैं। इसरी वजह यह होती है कि शिजा जो वरुने खाते हैं मसलन दूब या फल इन में जरासीम बहुत बामरत से हीते हैं और तन्त्रस्त सेदे की रत्वत भी इनकी खुनी तौर पर नहीं सार सवती बच्चों की ज्यादा तारदाय इन हो जरायीय की व्योप दस्त का शिकार तेनी है। इन इस्तें का बच्चों की खेतन पर भी शासर पड़ना है उसके ज़िलाज से उनकी तीन किसती में तमनीम किया जा ं संपत्ना है। १--भारा दान नन्दुस्त बच्चों की मी कमी र एक आध्य दशा व्यावाता है सिक् खाने की अहतयात से एक या आध खुगक दवा सं बन्द हो जाने हैं और बनवें की सेरत पर कोई स्वास असर नहीं पड़ता । २ कमजीर करने वाल दम्त यस्त्री की गाहे र आया ही करते हैं। इन दुनों की नजह से बह कभी पनप ही नहीं पाने, जो रिका बाते हैं इजन ही नहीं होती जुड़ा बरन नहीं हो पाती दस्तों के रास्ते निकल जाती है। २--हैज- तुमा दस्त। इन दस्ती के याद बच्या बहुत ही नाताकृत हो जाता है आंखों में हलकी और तमाम जिसम पर मुर्रियां पड़ जानी हैं यह तीनों हालतें महज़ दस्तों को देखकर ही तशाखीश नहीं कर सकते किसके दस्त किस प्रकार के हैं लेकिन हां तमाम वातों को निगाह में रखकर एक डाक्टर आसानी से तशखीश कर सकता है दस्तों में दो तरह की अलामत होती हैं एक मुकामी और दूसरी आम ।

१-मुकामी अलामत-दस्तों की हालत में अन्ति इसे बहुत तेज हरकत करने लगती हैं और जल्द २ घूमती हैं इसका नतीजा यह होता है कि (Bib) या पित्त गिजा में अच्छी तरह नहीं मिल पाना बग़ैर हज़म हुई शिजा जल्द ख़ारिज हो जाती है और ईमी जजह से दस्तों पर पित्ती का रंग सालिज होता है। यह हमेशा सब्ज रंग के होते हैं।

२—इस्त यहत तो बदरूतार होते हैं उमकी वजह भी यही होती हैं कि मिजा छोटी आत में इनती देर नहीं रहती कि अच्छो नरह हजम हो जाते, बरीर हजम हुने खारिज हो जाती है और बड़ी आत में पहुंच कर जब फफती है तो मज़ना शुरु हो जाता है। इस बदनू में ताकुत मेटा करने जाते की जयादनी की बहुत दखल होता है।

३-नेजी-इस किसम के दस्तों में जिजा के सड़ने की वजह से एक खाल वज्युदार नेजान पैना होता है। अगर जिजा में चर्का उजहा हो नो यह खीर उपहा कमरत से पैना होता है इस तेजानियत भी बजह से दस्त आने के बाद मल-रज के इदे गिर्द जलत हो जाती है करीन की खाल सुर्व हो जाती है और बाज खीकात आले पड़कर बाद में जखाम भी हो जाते हैं। दस्त में अगर तेजाबियत ज्यादा हो तो समकतो कि बच्चों की रिजा में शकर और चरबी को जरू-रत से ज्यादा जुज शामिल हैं।

४-पीपदार और चिकनेदस्त--इस श्कार के दस्त इस बात का पता देते हैं

### रिकेट्स

( लेखक डा० हरीचन्द्र गुप्त एम० वी० वी० एम फिलिशियन एएड । अंत गई सङ्क देहली )

स्किंट्स—

इसकी कभी अने जी बीमा ी (इझिलश डिजीज) भी कहते हैं क्योंक इसकी पहल पहल एक अमे ज शकर क्योंक इसकी पहल पहल एक अमे ज शकर क्योंका ले (क्या में मही तीर पर वापन किया था, एक्यून (Riolean) शब्द एक फूलीमां भाषा ((Riquits) के निवस का ग्या है, जिसका अथ हैं शंड की हड़ी की क्या वह बादमी जिसकी डिलीफिटीज हो। ये चह बादमी जिसकी डिलीफिटीज हो। ये चह बीमारी हैं. जीकि शिजा में कुछ अनासर कम होते को बजह से पन्ची की बाज तीर पर होती हैं, जिलमें कि हड़ियां नरस पड़ जाती हैं। और खुछ अन्दर्सी हिस्से के त्वतीती हो जाती हैं यह गेंग इस मुख्य में प्राथा पावा जाता हैं। इस राम के कारण मुख्य भी प्राधिक होती हैं।

#### कारण-

िन्नयों का ऋपने बच्चों को दूध न पिलाना, कियों का ऐसे काम में लगा रहता जैसे कि मिली या फेक्टरियों में जिससे बच्चों की परवरिश पूरी

कि वहीं आंतों में स्वरावी आगई है। इस दस्तों के साथ में आम अलामान भी खास तौर पर तुमायां होती हैं। जवान और जिल्द देख कर भी तशस्त्रीश में वहीं सदद मिलती है और जिल्द में नहीं हो सकतो हैं। ज्यादह मु जान आवादी जिससे कि नमाभ तन्द्रकरती खराब हो जाती है। निधंनना, अज्ञान भी कारण है। इस योनारी के नारे दो प्रकार के सिड़ान्त हैं। (१) एक मिड़ान्त वाल यह कहते हैं कि भोजन में एक विज्ञाप प्रकार की र्वाप्त । विदासीन हो) के न होने से होती हैं। और विदेमीत ही प्राप स्तैतिक पदार्थी से पाई जाती है। यह चीज चुने की शरीर में जड़व करती हैं। इसके नहींने से चना शरह से पहर निश्व जाना है। और हांडुया चुने रहित रह जानी द्वे । जिसके काम्या पश्चिमं सम्भ शंकर मुख्यानी है। (२) दूसर शिद्धाना जाल कहते हैं कि यह वीमारी ताजा हवा की कमी, ज्यादह आबादी. व्यायाम की कमी, प्रायः सुरज ो रोशनी की अभी से होती हैं, सम्भव हैं। दोनों ही कारण होते हों।

लक्षमा—इस रोग के दो प्रकार के लक्षण जानने चाहियें (१) लम्बा छास्थियों के सिरे मोटे हो जाते हैं। यद्यपि वे छन्छी प्रकार मुझे हुई नहीं होती, क्योंकि इस बीमारी में श्रस्थि बनाने

मुरियां पड़ जार्ये और वह लोच श्रीर लचक वाकी न रहे जो स्वस्थ वच्चे में होती है तो यह वहुत हो खतरनाक श्रलामत है। की ज्यादह कोशिश होती हैं छार कामयाबी के साथ बहुत कम हड़ी बनती है। जिसका लाजमी नतीजा यह निकलता है कि वह जगह जहां से कि हड़ी बननी शुरू होती है यानी मिरे पर ज्यादह मोटी होती है, इसी वजह से पसलियों के मिरे भी मोटे होते हैं। और छाती की हड़ी के हदे गिई गोल २ उभरे हुये दाने मालम होते हैं। जो कि माण भी तरह लगते हैं जोकि (Rickety-rose ) विकेटिरीजि कहलानी हैं। इसा तरह खोपड़ी की हड़ियां भी बीच में मोटी हो जाती है।

दूसरे प्रकार के लचगा—जो हड़ी में ठोने हैं में वे हैं कि हड़ी नरम हो जानी है अर्थान इसमें दूस कम हो जाता है (कैलिसयम-फोस्फा-इट) जिसकी बजह से हड़ियां मुझ जाती हैं। टांग पौर बाजू की हांडुयां खम था जाती हैं।

आभ्यन्तिश्व अङ्गों में परिवर्तन— फेक्ट्र, मेदे, आंतों की सूजन, जिससे निमोनियां, वांमा, कीं, दस्त वगैंगा ऐसे रोगा वस्त्रों को खूद और भाग बाग होते हैं। दूसरा परिवर्तन यह होता है कि शम्दक्ती हिस्से बढ़ जाते हैं। जैसे निहली जिगर के ये परिवर्तन आस्थियों की तब-दीली से ज्यादा सात्रनाक हैं।

#### राग के भेद-

(१) एक्यूट रिकेटस जिसमें कि बीमारी वहुत जल्द आती है, और अन्दरूती अझों के लक्षण खास तौर पर पाये जाते हैं। हुड्डी की तबदोलियां बहुत कम होती हैं। हड्डियोंमें दर्द होता है और बच्चेको पसीना बहुत आता है।

(२) दूसरा रिकेट्स—जिसमें खाम तर परी हिंड डयों की तबदीलियां क्यादह पाई जाती हैं। श्रीससेटाईप (Osseos-type) कहनाती है। इसके विडयों क्याद्र भुइना हैं और वे शस्त्रच-कित्सा से ११६ होती है।



(३) नासरा भेद—जिसमें आभ्यन्तरिक अङ्गों में सुज्ज है ते हैं, (कटारल वैराइटि Caterrhal-variety) इसी किस्त में तहनी की हडिडयां तो ठीक कानों हैं। लेकिन वे असीसार, खांसी वगैरह का उन्हीं इत रहते हैं। (४) योबा नेर् ित्तें दिन्न ने ए जोड़ डीले हो लाने हें साम ने बार दिनार नेरें जा समते हैं. जेले कि एएट कीन इकता केरी बेटिक बेराइटि इन्हें हैं। यह तक कोप बाद रखनी सारिये कि अपन तुम कि है यनचे को देखी जिस ह इस लेन के लेल कर पंत्र सीने सीन बह इस्सा पार की समझ हो तो हत पास पाती में से एक अन्या होता । (१) विशेष्टल (२) दिसामा तक्षण का अने (२) विशेष्टल (सीने बह वीमार्ग ६ साम की इस से पहले सीने होती खाँर एक भाग की एस के पात होना होती

(१) राज वे पहल देश वे पूछ होते हैं। जीन देख में कि जाते हैं, जोपहि में वर्त तुंग ें अपने हैं। बैटना आर बलना देश के संख्यत हैं। (६) हड़ ही के मिरे मोटे हात हैं छोर खासकर प्रवृतिकी में (३) हिंदि ह्यां मुं जानी हैं (४) रिनं टे हेड एक स्रोर वासारी है जिलका सम्बन्ध कि से है। विसे हाइडांक करता कहते हैं। विकटी असने वह निर पेसा साहम होता है कि किया पहिला में बन्द करके चौकोर बराबा एवा हो ! उसका साधा चौड़ा और चपटा होता है जाने आंखों के अपर विल्कुल मीधा लकार में जाना है, ऐसा ही वह बिलकुल कनपटी पर चपटा मालूम होता है। हाइडोकफलंड के वच्चे का सिर गोलाई में होना हैं और माथा आंखों पर सुका हुआ होता है इसी ११ अपटी पर भी बाहर की भुका हुआ होता ,

हाइड्राय क्लाज में सिर की चोटी भी गोलाई में होती है, अर्थान रिकैटि का सिर लम्बा चौड़ा चपटा होता है।

(४) पांचया भेद—बाज दफे रीढ़ की हह ही में रोवेंटिक किस्म में देदा सा ख्रम हो जाता है जो कि रोड की हड़ हो की सपैदिक पोट्स दिजीज) Pola disease से मिलता हुआ होता है लेकिन जांच करना विलक्षण आनान है। असर वस्त्रे को बरालों से पकड़ के उपर उठाया जाये तो रिकेटी का मोड़ (देदापन) या खम जाता रहता है और तपेंदिक का मोड़ बेसा ही रहता है। जो कि बाहर को निकता हुआ होता है। जो कि बाहर को निकता हुआ होता है, क्योंकि आम तौर पर वस्त्रों के आदिस्यों के निकता बड़ा जियर श्रीर शिल्य Polvis होती है ये दोनों सबब रिकेट्स में आदर्भ यह जाते हैं यानो जियर पड़ा हो जाता है और पैल्यिस यह ब्रोटी है यानो जियर पड़ा हो जाता है और पैल्यिस बहुत ब्रोटी हो जाती है।

२ - दूसरा - रिकैटा यच्ची के पट्ठ दीले होते हैं, इसीलिये पेट बाहर की निक्य काला है।

३ तीसरी बात—इन वस्ती के मरी श्रीर श्रांतों की बामारियां श्राम तीर से होती हैं। जनसे ज्यादह हवा र्खापने श्रीर पेट बाहर की श्रा जाता है, ऐसे बस्सी में श्रीर निशानियां तुम रिकट्स कीपाश्री ती तशाबीश निरिचत ही जाती है।

#### इलाज:--

१-सब से पहते बच्चे की ताकत हाजमा ठीक करना चाहिये क्योंकि उसके मेदी और खांत वरा रा में सूजन होती है। इसलिये पहते पहत दस्त, के, भूकका न लगनाके मुआफिक इताज करो।

२-इसके बाद उसकी ख़राक तबदील करो श्रीर वह किस तरह करनी चाहिये के निशासता श्रीर शक्कर को कम करो । श्रीर वृत श्रीर परोटोन को ज्यादा करो । गाय का दूध (Cod liver oil) और १॥ साल के बच्चे को २ ( Point ) श सेर २४ घंटे में देना चाहिये बहुतसी चीजें हैं जिनकी बच्चोंको जरूरन होती है। इसमें पृत बेरोटीन, फासफोरस, लोहा बगैरा है श्रीर यह ऐसी बीमारी में जल्दी शुरु कर देना ंचाहिये । जुने के नमक देने का जरूरत नहीं क्योंकि द्ध में यह बहुत होते हैं। अगर वरुचे में कमी चुना हों तो (Iron) नमक दो शिजा के साथ २ रोशनी, हवा का जरूर ख्याल रखना चाहिये। सुरजकी रोशनीमें वच्चेको बेंटाना चाहिये। स्नासतौर पर मुबहको श्रगर सूरज की रौशनी न मिल सके तो Ultre Violet Rays डालना चाहिये। हमारे मुल्क में सूरज की रोशनी की कोई कमी नहीं, लेकिन जल्दी अच्छ। कराने के लिये (Ultra Violet, Ray) के (Exposure) भी ठीक रहते हैं । हड़िडयों के मुझ जाने को

ठीक करने के लिये कभी सरजन की मदद लेनी पड़ती है लेकिन यह बात खुब याद रखने की है यह हिंड इयों का मुद्र जाना बीमारी के ठीक होने के बाद खुद बखुंद मी ठीक हो जाता है बाज वफा हिंदुयों को मुद्रने से बचाने के लिये बीमारी के दौरान में हमको दोनों टांगे इक्ट्री बांध देनी चाहिर्ये या टांग पर (Splints) लगाना चाहिये जो के पैर के तीचे तक जावे।

आजकल (Vi.tam) की अद्वियात खास आती है उनको इस्तेमान करने से बहुत जल्द बीमारी र्टाक हो जाती है।

इनके बाकायदा इस्तेमाल से बहुत फायदा होता है यही चीर्जे अगर गर्भवती स्त्री को पिछले तीन माह गर्भ में दी जावें तो वच्चे को यह बीमारी होती ही नहीं।

६ या ७ साल या १२ साल की उमर में होती है इस में हिंद् डयों की वीमारी क्यादा होती है इसका इलाज सरजन कर सकता है और वैसे इसको रोक्रने के लिये वही अयवियात काम त्राती हैं।

allen sillen intanoalle calleneallen allen allen TOO GENERAL STREET वैद्यां के लाभ की वात

उत्तम औपिध बनाने के लिये उत्तम और सस्ता सतिगिलोह हमसे मंगाइवे। बड़े २ श्रीपधालय हमसे मंगाकर लाभ उठा रहे हैं। एक बार अवश्य परीक्षा करें। मू० ८० तोला ६) एक सेर मंगाने पर डाक व्यय माफ होगा।

पता वैद्यवर बलदेवराम गुप्ता गड़ी अब्दुल्ला खाँ (सहारतपुर) यु० पी० CONTROL CONTROL CONTROL CONTROL CONTROL CONTROL

### बच्चोंका कमेडा (आक्षेप Convulsion)

(ले०-- आ० वि० प० श्री देवदत्त जी शर्मा वैद्य शास्त्री शंकरगढ़ गुरूदासपुर (पं**जा**य)

बातज आजेप के कारण वालकों का मृत्यु भंख्या दिन-दिन बढ़ती जा रही है। इसीसे आज इस भयानक और कष्टतायक रोग के विषय स उलित चर्चा की जाती है। देश में प्रतिमास इजारों नहीं लाखों अचले इस पाजी रोग का शिवार पनते हैं जोग लक्ष्ये भी हजारों हो घर इसने उजाद दिये हैं। लेखक ने अपने जीवन म अनेक क्रिया ऐसी देखी हैं जो कड़-कड़ रहने जनकर भी निःसंसास रही है।

निदान अहं भेग सर्वत्र प्रामद हैं, सभी इस रोग से प्रतिचित हैं इसिन्ये इस गेग का निदान देकर अधिक विषय बढाना अच्छा नवी सममता केवल इतना ही अलग्ब देना है कि इस रोग य देरि के समय बच्चे के मुंह से काग श्राकर बच्चा वेहीश ही जाना है। जब तक इस रोग का दौरा फिर समाप्त गहीं होता बच्चे की होश नहीं आती। बहुत से बच्चे बेहीशी में ही इस संसार से सदा की चल बसते हैं। इस रोग में बच्ची की मृत्यु प्रायः दम घुटकर होती है, इसलिये इस रोग से खुब सचेत रहना चाहिये। जरामी अमाव-थानी वालकों की मृत्यु का कारण वन जाती है, क्योंकि वह बहुत ही कोमल होते हैं। जिस वक्ते को आरम्भ में मुख में भाग (फेन) आकर बेहोशी (मूर्छा) हो, समभ लेना चाहिये कि इसे वातज आहोप (कमेड़े) का रोग है। इस वर्च्च के लिए उसी समय श्रागे बताये हुए उचित उपचार का प्रवन्ध करना नाहिए।

#### चिकित्मा

अध्वदं के मतानुसार यह रोग वातज है।

यूनानी हकीम खून ( रक्त ) की गमी-खुरकी से ही

इस रोग का होता मानते हैं। जय कि की इस

रोग का होता मानते हैं। जय कि की इस

रोग का होता हो, उसे उसी समय खुली हवा में

मिलिये छीड़ दो कि कि कि जाया। अने के लिय
दीरे के समय वर्षों की गीए में लेकर बैठ जाता
है और मुंह सिर सब यक्षों का लेयट देती हैं,

यह बात ठीक नहीं है। कभी कभी मुंह पर

कपहा डाजने से यक्षों का दम रक जाता है आर

मृत्यु हो जाती है। इसिलये दीरे के समय कभी

वर्षों के मह की न हकी।

दीरे के समय किसी लकड़ी, कलम, पेशिल चम्मच या कलड़ी की हंडी आदि का सिरा वस्च के मुंह में फीरन इसलिये दे दी, कि जबड़े बन्द न होने पार्चे। यदि अबड़े बन्द हो जायेंगे नी पिर अधिक कष्ट होगा और जबड़े भी बड़े यन से खुलेंगे, इसलिये यह उपाय शीघना पूर्वक करो। तब तक यह बालक के मुंह से न निकालो जब तक कि बालक रोने न लगे। समय पर यदि कुछ न मिले नो अपने हाथ की आंगुलियों में ही कपड़ा लपेटकर आंगुली बच्चे के मुंह में डाल दो और तब तक न निकालो जब तक बच्चा रोने न लगे। अथवा यूं करें कि, जब कमें हे का दौरा हो उसी समय मन्दों बता दूध किसी चम्मच, सीपी या कहें के फोहे से बालक के मुंह में डाल दो। दूध डालने में देर न करो, उसी समय डालो। समय पर इप के अभाव में अधोध्या जल ही डाल दो। दूप और जल एक बार से र तील से आधिक गड़ा ते। धारे लीरे कई बार करके दो। जब नक दूध या जल पहली बार का अन्दर न पहुंच जा। सब लक्ष कर से ब्यायाव होते की बारांका करी करती है।

इस नेम ः उम कर कर गले का मुही जब पुर जानी है नसी वचन की मृत्यु होती है, इस जिसे नचने का मुह बंद न होने दा। मुंट बंद न राजने से श्वास आता रहेगा और मुंह में ५घ या पानी जाने से गले में तरी रहेगा जिससे फिर मुड़ी घुटने का भय न रहेगा। यच्या अवश्य यस जायेगा।

#### कुछ अनुभूत आपि

(१) स्वेत रंग की दूवां (तून) पान सर्वत्र विता में सुरागता से प्राप्त होती है। इसक दो-चार पति और एक कानी मिर्च डालकर जरा से पानी के साथ रगड़ लें। अब डानकर डाग्नि पर जरा कवीं क्या कर पिलार्चे। जिस बच्चे के अन्दर यह पहुंच जायगी वह अवश्य अल्पकाल के बाद ही रोन लगेगा। मृत्यु के भय से बचाने के लिये यह एक ही दिन्य बनस्पति है। यह शीध ही बच्चे को होश में ले आती है। इस रोग के लिये यह महास्त्र के समान काम करती है। यह होनी चाहिये ताजी सुखी हुई कुछ भी प्रभाव नहीं

#### दिखाती ऐसा हमारा अनुभव है।

जहां जनव पर सफेद दृव न मिल वहां हरो दृव ही खेत दृव के समान देते। यह भी लाभ नो अवश्य करती है, पर जुरा देर में।

जहां कुछ न मिले वहां कवोष्ण जल ही दे दो। पर देवें कुछ ज़रूर। जब मुह में काम आना प्रारम्भ हों उसी समय दुध या पानी २०-३० वृद वालक के मुह के डाल दो। दूध भी इस रोग के लोग को शोध समाप्त कर देने के लिये शद्भुत अपिंध है। अनेक वालकों के प्रारम इसी ने बचाये हैं।

#### अ। संपानतक---

हृष्याभृकभस्म, लागमागिक्य रक्ष, १८ वस्त ११शव १८सारी, जावित्रा, जायकान, व्यास, १८०वुरा ११न्येव हेद्दे-हेद्द् साहा धीर सुलभी काः पा मंजरा र नोल्प !

#### बिध--

सपको खूप ६८ कर चूरा करे और किए सब खरता च टाल कर पान कार कालो तुलको के स्वरस को १-१ भावका देकर बाजरे व वसवर गोली बनावं । दाया में सुवा कर रखें।

#### मात्रा---

आधी से एक गोली तक ।

#### **अनुपान**-

तुलसी का रस। तुलसी अनुपान में कोई भी ली जा सकतो है, पर जंगली तुलसी न होनी चाहिये।

#### समय-

दिन में २ बार। रोग की प्रवल अवस्ता में ३ बारो गुरा-

मृगी, वायुका कमेड़ा, तड़का इत्यादि वायु रोगों में राम वाण है। योगरत्नाकर का लदमी नारायण रस भी इस रोग के किये विशेष लाभ-दायक सिद्ध हुआ है इसलिये यहां उसका योग भी दिया जाता है।

#### लच्मी नारायख रस-

शुद्ध शिगरफ १ नोला शुद्ध वत्मनाभ १ तोला इन दोनों को खरल में डाल कर अदरख के रस में ३ घंटे तक खूब घोटो। फिर इनमें शुद्ध गंधक १ तोला, फुलाया हुआ मुहागा १ तोला, कृटकी का हुर्या १ तोला, अतीम का चुर्या १ तोला, पीपल होटी का चर्ण १ तोला, शुइा छाल का चुर्ण १ तोला अम्रक भरम १ तोला और लाहौरी नमक १ तोला मिलालो और एक घंटे नक घोटो। फिर वन्सी (जमाल गोटे की जड़) का क्याय क्रमण्य इनमें डालो और तीन विन तक धोट

बाद में मैनफल का क्यांश मिलाकर ३ दिन तक ख्व घाटाई कराओं और गोली बनने लायक हो ने पर २-२ रसी की गोली बना छाया में सुखा कर किसी शीशीमें बंदकर बिट लगाकर रख दो। यही लहमी नारायण रस हैं। मात्रा १ से तीन गोली तक। अनुपान अदग्त का रस। आलेप आदि में ३-३ घंटे के अन्तर से जब तक आराम न हो देते गहें। १६ गोली से अधिक एक दिन में किसी को न दें। करवों को ख्व विचार करवें। उनकी जायु है अनुपार मात्रा प्रथम ठीक करतें और फिर विचारपूर्वक दें।

गुण-पीड़ाशामक, क्वरज्ञ, खेवल । क्षप्योग-सन्तिपात. हिस्टेरिया, बच्चों का कमेड़ा,, आधा शीशी, शूल, शूलयुक्त अन्य रोग, अतिसर और सृतिका रोगों में उपयोगी है। निमोनिया रोग की तृतीयायस्था में जब बातिकार और प्रनाप अधिक हो उस समय लक्ष्मीनारायण रसकी र-२ गोली तगरादि क्वाध (इसका योग भी योग रत्नाकर के प्रलापक सन्निपाताधिकार में हैं।) के साथ दिन में तीन बार देने से अद्भुत लाभ दिग्वाई देता हैं। हमने सैंकड़ों बार परीज्ञा करके यह बात जानी है। बैद्यों को अवश्य इस रसको बनाकर लाभ उठाना चाहिये। हमारे प्रतिदेन व्यवहार की औषध है। सभी प्रकार के रोगों में (बिशंपकर बात रोगों में) विचार पूर्वक लक्ष्मीनारायण रस देकर लाभ उठाया जा सकता है।

#### बाङ्गल-योग

पत्नी पाईरीन (Antipyrin) नामक आंगल गौपन सर्वत्र बाजारों में डाक्टरी दूकानी से गर्दने ल्य पर मिल जाती हैं। डाक्टर लोग विपम क्वर या अन्य क्वर कम करने के लिये इसका व्यवहार करने हैं। हमने इसे कमेंडे में अधिक लाभदायक पाया है। इसी से यहां एमका उल्लेख किया जाता है।

पत्टी पाईरीन का न्यवहार उसी समय करे जब कमेडे का दौरा हो। कमेडे के दौरे के समय यदि बच्चा आठ दम वर्ष के अन्दर का हो तो २ रसी दवा एक चमच गरम दूध में घोल कर बसी समय पिला दें। २ वर्ष से आठ वर्ष तक के बच्चे को १ रसी एन्टी पाईरीन एक चमच गरम दूच में मिलाकर दें। दो वर्ष से कम आयु के बच्चे के लिये केवल जाधी रसी दवा का व्यवहार करना चाहिये।

### कण्ठ शालुक (Tonsils गदूद)

(लंब-साहित्याचार्य बैद्य पंब घनानन्द पन्त विद्यार्णव बाजार सीताराम देहली)

इस गलप्रन्थ (शाख्य ) (Tonsils) में दाह भौर शोथ होता है (Acutetonsilitis) साथ ही दाह शोथ के अन्य लक्षण भी होते हैं। यह रोग कहीं प्रधान और कहीं अन्य रोग के साथ उपद्रव भूत भी होना है। प्रधान के दो भेद होते हैं। नवीन और पुराना। अनेक रोगों में इनके मुंह के सब अंकुर विकृत हो जाते हैं अथवा इसके भीतर पीप पड़ जातो हैं। अर्थान-विद्रधि बन जाती है। इसके चिकित्सा अच्छी प्रकार जाननी चाहिये।

**द्धार्ग**—माता पिताको शाखक (टौन्मिल) हो तो सन्तान का भी होता है, शरीर में ठंड लग ने से भी होता है श्रामवात होने से प्रथम या हो जाने पर लोगोंका शाल्क (टोन्सिल) बढ़जाता है।

लच्या—(१) ज्वर १०२ से १०४ तक,
(२) गले की वेदना कान तक फैलती है, (३) नियलने बोलने में क्लेश, (४) गले के मीतर घाव
होता है, गला सदा शुष्क माद्धम होता है, स्वर
बदल जाता है, शीवा का मंचालन कम होता है,
(४) गले के भीतर परीचा करने पर शास्त्रक बढ़ा
हुआ रक्तवर्ण देख पड़ता है और गले के नीचे
का रास्ता (सप्तपध) हकने को हो रहता है।
बदकर दोनों शास्त्रक-परस्पर आपस में एक दूसरे
को स्पर्श करते हैं। पहिले पहिला फिर दूसरा
शास्त्रक या दोनों साथ ही बढ़ते हैं, जिह्ना के पीछे

एन्टीपाईरीन (Antipyrin) के स्थान पर एन्टी फेब्रीन (Anti Febrin) और बोमाइड ब्राफ पोटास (Bromide of Potash) का भी व्यवहार किया जा सकता है। मात्रा और अनु-पान एन्टी पाईरीन के समान ही है। जिन घरों में बच्चे को यह रोग हो उनके माता पिता को प्रथम से ही इन ब्रीपधों में से किसी श्रीपध को अपने घर में रखना चाहिये।

#### एक और आफ्रल योग

R.

Pulvis Rhei Co. Gr. XX. Gum Ammoniaci Gr. X. Balsam Peru M. X. Bulsam Tolu M. X
Syrup Scilla D. II.
Olei Anisi M. VI.
Infusi Scnaga D. IV.
Aquae Camphori D. VI.
M. Ft. Mixture
Signa A Teaspoonful to be given
every four hours,
R.

श्रर्थात्—एक ड्राम (६० वृंद) चार-चार घंटे बाद दें। जब कमेडा उठे उसी समय एक छोटा चमच भरकर बच्चे को दे दें। लाभ होगा।

गले के भीतर दोनों तरफ दोनों शाखक फुलकर सुपारी के दाने के समान हो जाते हैं। दोनों के सूज जाने पर प्रलाप भी हो जाता है। तालुदेश श्रीर जिह्ना शोध से लाल हो जाती है, जिह्ना बड़ी हो जाती है। पहले यह शोधस्थान, शुष्क होता है पश्चान चिपकदार लुसिका से आवृत होता है कुछ निगला नहीं जाता है, मुख से लार अपने श्राप टपक पड़ती है मुख के भीतर जावड़े में वेदना होती है। अतएव गोगी मुंह नहीं खोल सकता, इससे गले के भीतर देखने में बड़ी अम-विधा होती है। परीचा करने के लिये मुख के भीतर धीरे २ तर्जनी को प्रवेश कर शालुक की खब-स्था देखने पर शय: शालुक टीन्सिल में जगह २ रवेत वर्ण इत होते हैं श्रीर आस पास लाल होता है बाहर जावड़े के पास समस्त कक् प्रनिधयां फूल जाती हैं, अनिद्दें होता है (६) शिरोनजा, ं अरति, मैली जिह्वा, सुखदुर्गन्ध, श्वामदुर्गन्ध, भूख कम, कोष्टकाठिन्य, मुत्रघोगरक्तवर्ण होता है। यह कंटशात्वक का प्रदाह औषध प्रयोग से ठीक श्राराम भी हो जाता है। यदि श्राराम नहीं होता है तो शालक कसश: पक जाता है। यदि नहीं पकता है तो ३ दिन से १२ दिन में अच्छा हो जाता है। परन्तु अच्छा हो जाने पर भी बह स्वाभाविक की ऋषेता वड़ा रह जाता है। जो शास्त्रक पकता है उससे ३-४ दिन बाद जाड़ा लगकर ब्वर धाता है, व्यत्यन्त वेदना होती हैं, और शाखक के भीतर सरम राहट होती है ऐसा होनेपर समभना चाहिये कि शास्त्रक (टान्मिल) पक गया है। साधारगुन: शान्त्रक अपने आप ही कट जाता है। यदि नीद

की हालतमें फूटता है तो पीप रक्त पेट में चला जाता है। अन्य समय फटने पर मुख से बाहर निकलता है। स्थानिक लक्षण द्वारा रोग निर्णय सहज है भावि फल शुभ होता है परन्तु कभी २ खामरोध वा पोपणा भाव से मृत्यु हो जाती है। नृतन कंठ शालुक (टोन्सिल ) चिकित्सा

प्रथमावस्था में सचिकित्मा हो जाने से शालुक पकता नहीं, बालक व युवाओं को विप के यांग हिंगुलेश्वर, कफकेत, आदि विशेष फल देते हैं। बुद्धों के शालुक में विष की नहीं देना चाहिये। शालक होने के ३-४ घन्टा मध्य में विष के योगी के प्रयोग विशेष लाभ देते हैं। २४ घंट बाद विष के योगों का व्यवहार न करे। प्रथम एक रेचक श्रीपधि देकर ४-४ घन्टे बाद झानन्द भैरब. बृहत्कफकेत्, हिमुलेखसादि का अयोग रोगी की श्रवस्था की मात्रा से करें, यदि २४ घंटे के भीतर 🕨 ब्बर, ब्रदाह यन्त्रगा कम न हो तो फिर विप के योगों को काम में न लावे। श्रामवान बाले रोगियों के कण्ठ शालक में योगराज गुगल चन्द्रभा गूगल आदि औषधि देवे। महालद्मी विलाम सब अवस्थाओं में हितकर होता है। शालुक के रोगी का पेट मृद् विरेचन से प्रति-दिन साफ रखें। रोग की प्रथमावस्था में यदि शास्त्रक (टौन्मिल) को चीर दिया आय तो (बिस्नाच्य कण्ठ शास्त्रकं माधयेत्त्रिङकेरिवन । मु०) वेदना 👯 🤏 हो जाती है पकने की भी सम्भावना नहीं रहती। इस प्रकार चीरा दें कि रक्त श्रिधिक निकलें <sup>फि.र</sup> थोड़ा सोहागा छोड़कर या स्वतन्त्र पंचवल्कल क्वाथ से, केबल गूलर के पर्लों के क्वाथ से कुल्ले कराई । इस प्रकार इस बारह बार एक

दिन में कुल्ले करावें। रसीत के पानी में घोलकर कुल्ला करावें। वातच्न दशमूलादि क्वाथों का नाई। स्वेद (भपारा) भी देवें। गल के बाहर जिस तरफ का शालक बढ़ा हो। दोनों श्रोर हो तो दोनों तरफ श्रलसी की खल वा गोधूम की भुस्सी में थोड़ा लवण मिलाकर उपनाह स्वेद (पुलटिस) करने से भी वेदना शोध प्रभृति शान्त होते हैं। इससे शालक (टानिसल) पकने वाला हो नो पक भी जाता है। जब शालक पककर पीप बाहर निकल जाय ने बाद में बीमार को ताकतवर दवा श्रभ, लोह, मकरध्यज, श्रान्त नुगड़ी वटी, प्रवाला-दियोग दें। श्रामवात रोगा को श्रामवानक रसो-नपिएडादि का भी प्रयोग करावें।

#### पथ्य---

प्रदाहावस्था में दूध में घरफ डाल कर दें और अब पकने लगे तब जितना गरम २ दूध पिया जाय उतना ही अच्छा। जिनके शालक में फिर २ प्रदाह हो जाता है उनके लिये नीचे लिखी प्रतिषेधक चिकित्सा करनी चाहिये।

(१) गले के चारों नरफ प्रति दिन ठण्डे जल से धोर्चे।

मोह्या २ रत्ती, श्रकरकरा का चूर्ण १ मासे जल एक छटांक मिला कर प्रति दिन कुल्ले करने से पुनराक्रमण नहीं होता।

#### पुराने शालूक की चिकित्सा-

शालुक ( टीन्सिल) का प्रदाह पुनः २ होने से शूल इतना बढ़ जाता है कि शालुक बाने बालक की छानी कबूतर को सी हो जाती है, कभी ज्वर भी रहता है, म्बास्थ्य अच्छा नहीं उहता। रोगीको श्वास लेने में क्लोश होता है, राब्द अच्छी तरह नहीं कुन सकता, मुंह से श्वास लेने से जो २ रोग हो सकते हैं वे तो होते ही हैं इनके अतिरिक्त बालक की बुद्धि सन्द हो जाती है, शकल बदल जाती है, चेहरा देखने से बालक बेवकूफ सा विदित होना है, पढ़ने में अपने 'सहपाठियों से भी पीछे रहता है। खांसी रहती है, गला आ जाता है, जरा २ जुकाम हो जाता है। श्वास वायु पूरा न पहुंचने से रक्त ठीक शुद्ध नहीं होता। ऐसे अवसर पर शान्हक को निकलवा देना चाहिये।

यदि शालुक (टॉन्मिन) अपेना से छोटा हो तो (१) पंचवल्कल त्रिफलादि संकोचक औपधौ के क्वाथ से (२) अकरकरा त्रिकलादिचूर्ण एक को वा समस्त मधु से मर्ले । गरारे करवाने से अच्छा लाभ होता है।(३) चरकोक्त कालक चुर्ए के मर्दन से भी लाभ होता है । (४) व्यदिरादि गुटी का चूसना भी लाभप्रद है । यदि रोगी कण्ठमाला चय प्रकृति यस्त हो तो प्रात: सायं मात्रा से च्यवनशाश, मकरध्वज, नवायम चुर्गा का सेवन करावें, रोगी धनी हो तो समुद्र के कितारे की जल बायु परिवर्तन करे, इस प्रकार पुराना बड़ा भी शान्द्रक (टानिमल) ठीक हो जाता है। शाख्क के अतिरिक्त गत्ने के भीतर नाक के पींछके भागमें छोटी २ रम प्रनिथयां एडिनौइड्स होती हैं। अयों २ वालक वड़ा होता जाता है वे प्रनिथयां स्वतः छोटी हो जाती हैं। परन्तु कुछ पालकोंमें यह मन्थियां बढ़ी ही रहती है यदि शाल्क ह होनों तरफ या एक तरफ बढ़ा रहे जैसा प्राय: होता है तो इनसे भी म्वास्थ्य वच्चे का विगड़ता हैं, अप्रि नहीं होती। इनका सम्बन्ध कान के साथ

### नेत्र राग

(40-Dr. N. S. Mitra Incharge of Dr. Shroff's Charitible Eye Hospital Delhi)

शिश जीवन में जो साधारण नेत्र रोग देखें जाते हैं उनके विषय में आप लोगों को कुछ कहने का छवसर जीवन सुधा के सम्पादक महाशय ने दिया 🕏 ।

(१) Trachoma-यह रोग भारतवर्ष में और विशोप कर हमारे पानत में बहत साधारण है। पलक के श्रम्बर में वाने हो जाते हैं और उनकी रगड से Cornea के उत्पर जस्म भी हो जाते हैं। प्राभी में अशिजिता माता अपने शिश-श्रों की आखों के अन्दर इस रोग को अन्द्रा करने के लिये अपनी मनमानी द्वाईयां भर देती हैं। यह द्वाइयां माधारणतः यहन Irritants होती हैं और इससे नेत्रों को बहुत नुकमान भी पहुंचता है। गत दश वर्ष में हमने कितने सहस्र ऐसे नेत्रों को देखा जो कि माता की अविवे-

चना से समस्य जीवन के लिये बिगड गई हैं।

(र) शिशु के जन्म के समय यकि माता की Gouorrinae हो तो जन्म के बाद वर्ज्य की आंख लाल हो जाती है और इसमें से पीले रंग का मवाद आने लगता है। यह बहुत खनरे की वात है क्योंकि इससे वनचे साधारणतः अन्धे हो जाते हैं। पश्चिमी देशों में इस रोग का प्रचार पहिले यहत अधिक था, परन्तु आजकत Crade की व्यवस्था और Maternity hygeine की उन्तिन से इस रोग का प्रचलन बहुत कम होगया है। इस रोग के प्रतिशोध के लिये शिशु के जन्म के बाद उनके नेत्रों में 1 Silver nitrate solution एक एक बुद हाल दिया जाना है। माना की उपयुक्त चिकित्सा से श्रीर शुद्ध व्यवस्था से इस रोग का विस्तार प्रायः यन्द हो सकता है।

हीन से कान के कठिन रोग होने हैं। श्वास लेने में क्लेश होतेसे विशेषतः निद्धितावस्था में वालक घरघराता है, बच्चा बेबक्क होता है, शुक्त काम, पुरानी सरवी, मुख श्राधा जुला रहता है। कभी कफ़के माथ मिला खून भी निकलताहै। अतएव इन्हें इंडिनंडर्म उपशाखक नाम से कहें तो उचित हा होगा। शादक का कएठरोड़िगी (डिप्यीरिया) से क्वचित निहान में मन्देह होवे और निश्चित निदान न होसकते पर तत्काल न हो सकने पर

तत्काल दिप्यरीया का इन्जैक्शन देना उचित नहीं मानते हैं ।

#### उपशालक रस ग्रन्थियों की चिकित्सा-

दिन में १-४ बार खरिर, बस्बुख़ादि कपाय वृत्त क्वाधसे गरारे और ४ रत्तो स्वर्जिक्षार १ झटांक पानी की पिचकारी है गला धोवें । इनसे लाम न होने पर अध्य चिकित्सा करे।

१. शान्त्रक में यदि कानों से कम सुनाई दे तो खर्ण वक्र के सेवन से लाभ होता है।

- (के) माता पिता के जातशक होने के कारण उसका प्रभाव शिशु के नेत्रों में भी पहता है। साधारणतः १ से १२ वर्ष तक की कावत्या में बालक के नेत्रों में Interostial keratitis हो जाता है। इसके साथ जन्म गत जातशक के जीर लक्षण भी पाये जाते हैं, वांतों की लराबी कान की लराबी, और नेत्रों की लराबी एक साथ पायी जाती है। इसके प्रतिशोध के लिये प्रथम कर्साव्य यह है कि पिता माता के रोग की उपयुक्त चिकित्सा हो। जिस बंश में माता का हमल गिरने का या विकलाझ शिशु के जन्म का इतिहास हो उनके रक्त की परीक्षा होनी चाहिये। जीर इस रोग के प्रारम्भ से ही रक्त के शोधन के लिये शिशु की उपयुक्त चिकित्सा होनी चाहिये।
- (४) उपयुक्त आहार न मिलने के कारण समस्त शरीर पर जैसा असर होता है उस प्रकार नेजों में भी खराबी पायी जाती है। आप लोगों को झात होता कि हमारे खाणों के साथ Vitamin के झमाव से बच्चों की आंखें सुख जाती हैं और किसी किसी अवस्था में २८ घंटे के अन्दर प्रवत्त भी जाती हैं। प्रायः यह बच्चे बचते नहीं है। हम लोगों को उचित है कि प्रत्येक शिशु के आहार पर अधिक ध्यान दें। ताकि Xcrosis या Keratomalacia होने का अवसर न हो। हमारे दरिद्र देशमें Infanitile marasmus का प्रायुमीव अत्यन्त अधिक है। जवतक देश की सामाजिक और आधिक अवस्था को उन्तति न होगो सबतक इस रोग को हम दूर नहीं कर

सर्वेगे।

- (४) प्राम प्रान्तों में शिक्षा के समान और इसंस्कार के कारण चेचक का टीका लगवाने का प्रचार बहुत कम है। चेचक का दाना जिस अकार समस्त शरीर में निकलता है, उसी प्रकार नेत्र में भी हो जाता है और उसके कारण जरूम होकर वालक अन्त्रे हो जाते हैं। इसलिये यह अत्यन्त आवश्यकीय है कि टीका लगने का प्रचलन और अधिक हो जाय।
- (६) भगवान ने हमको दो आंखें दी हैं इस कारण कि हम दोनों से अपना काम जिया करें। आप लोगों ने देखा होगा कि बहुत से बच्चों की १ आंख बेंहगी होती है। इसका इलाज यदि धारम्भ से ही कराया जाय तो बड़े होने पर भी बालक दोनों आंखों से काम लेसकता है। इसकी चिकित्सा बहुत परिश्रम और धैर्य साध्य है परन्तु माता पिता की सहयोगिता होने पर इसका फल आधक आशापद है।

इम लेख का यह उद्देश नहीं है कि बालकों के नेत्र रोग का सम्पूर्ण विवरण आप लोगों को दीयाजाय, उसके लिए प्रथक पुस्तककी आवश्यकता होगी। इम आपका ध्यान इस और दिलाना चाहने हैं कि शिशु-जीवन से ही दृष्टि शक्ति की प्रयोजनी-यता का यथायोग्य अनुमन आपको होना चाहिए। और न कि केवल नेत्र रोग की चिकित्स परन्तु दृष्टि की उत्कर्ष साधना करना और इस उद्देश्य से राजशक्ति और प्रजाशिक की सम्मलित चेटा होनी चाहिये।

No 1

### नेत्रााभिष्यन्द

(तेo—डाo केo डीo तलनियां चिकित्सक चूड़ामणि भिषगाचार्य प्रिन्सिपत श्री शिव कैलाश श्रायुर्वेद विद्यालय बागेश्वर अल्मोड़ा )

धक्सर शिशुओं को नेत्राभिष्यन्त ( श्रांख उठना या दुखना ) विशेष देखा जाता है यह रोग बड़ा उम्र वालों को बहुत कम होता है बालकों की गृहाइयों पर इस रोग के विकार प्रविष्ट रहते हैं। जो मक्खियों के द्वारा श्रन्य स्वरूध्य बालकों में इसका रोगाख प्रविष्ठ होता है और वे बालक भी इस रोग से कट उठाते हैं नेत्र की लालों, त्रांख न खोल सकना, तेज कड़क व जलन, इसका प्रधान जिन्ह है। इस पर भी शीत ऋतु में इसका विकार कम व उच्छा तथा वर्ग ऋतु में विज्ञेष संकामण पाया जाता है ज्यों ही मार्च शुरू हमा यह रोग फैलने लगता है एवं कटम्ब के जहां एक बालक की यह रोग आ घेरता है वहां अन्य वालक भी इस रोग से नहीं बूटने पाने इतना ही नहीं एक बार का आक्रमण दो चार दिन शान्त होने पर भी पुनः फिर से नया आक्रमण प्रारम्भ हो ६ माह तक एवं अनवरत कम से बालकी की यह रोग मताता ब्राता है। गुरु भोजन, उप्ण वार्य पदार्थ व शोत तथा मैला रहना इस रोग को पाल रहना है।

यदि यह रोग हो जाय तो इस वात का विशेष स्मरण रहे कि ३ रोज तक छात्र में कोई दवा न हाला जाय पश्चात तीन रोज के दवा हालना प्रारम्भ करे।

तथा असावधानी । अन्ट सन्ट द्वा हालने से यह रोग अपना भयंकर रूप धारण कर आंख को ले ह्वता है श्रस्तु इसके निवारणार्थ शतशोनु-

हर किस्म की श्रील दुखने पर ऋहि ड्रोपलेशन नं० १ Eye Drop Lotion

र्जिक सल्क (Zinc Sulph) 🥦 प्रोन बोरिक ऐत्पिड (Boric acid) १० प्रोन

कोकान हाइड्डो क्लोर (Cocain hydroch) २ प्रोन

बिस्टिल्ड वाटर १ औन्स सबका मिश्रण स्वच्छ शीशी में रख लो। मात्रा---दो तीन बुंद हर चार घंटे परचाम ् डालो।

यह दवा आंखों में नहीं लगती। श्राई ड्रीप लोशन नंब २ Eye Drop Lotion No. 2

नेत्र विन्दु नं० २ झारगीरोल Arcyrol धर प्रेन चिम्टिल्ड वाटर १॥ श्रीन्म

नोट—डिस्टिन्ड वाटर के स्थान में नं० १ का गुलाब जल डालने से दवा श्रीर भी गुणप्रद हो जानों है।

दीनों का मिश्रण नच्यार कर हर दूसरे घंटेमें दो रोज तक हाल एक या दो रोज नागा कर दो जरूरत पड़ने पर पुन: हालो दवा आंखों में नहीं जर्मती वरावर हालना टीक नहीं।

#### Eye Drop Lotion No. 3

#### नेत्रविन्दु नं० ३

श्ररजेन्टी नाइट्रास
Argenti nitras
हिस्टिल्ड वाटर
दोनों का मिश्रण २-२ वृंद हर ४-४ घन्टे
पश्चान हालों।

#### Eye Drop Lotion No. 4 नेत्रविन्दु नं ध

Milver proteinite प्रोद्रारगोल १ औन्स उम्हा गुलाब जल Rose water २ पींड

दोनों का मिश्रग तैयार कर बोनल में कर लो।

हर १-१ घन्टे बाद २-३ वृंद हालो नेत्राभि
ध्यन्य, नेत्र की लाली जलन व कड़क पर बहुन

पायदा करना है पर याद रहे १ हफ्ता लगातार

हालने परलान फिर १ हफ्ता नहीं डालना चाहिये।
वनों आंखें कुरूप हो जावेंगी। विशेष कर बच्चों

के लिंगे ये बहुत मुफीद हैं और दवा आंखों में

हालते ही शीतलता लानी है। लाली तथा रोगी को

तत्काल चेन देती हैं बाज २ बालकों को १ था २

बार के डालने मात्र से ही फायदा नजर आता है

इस दवा का विशेष गुण भीष्म व शरद कालक

नेत्राभिष्यन्द पर होता है। वर्षा व हेमन्त ऋतु में

इससे कम फायदा देखने में आया है। नथा बनो

हई दवा कभी खराब नहीं होती।

#### नेत्राचिन्दु नं० ४

Eye Drop Lotion No. 5

बोरिक पेसिह ४० में त कास्टिक १० में न उम्दा गुलाव जल ४ औन्स उपरोक्त सब द्रव्यों का मिश्रण तण्यार कर हर दूसरे यन्टे में २-३ बूंद हालो।

गुण-नेत्राभिष्यन्त सुर्खी व जलन पर शीव गुणपद है।

#### नेत्राभिष्यन्द पर

Zinci Oxide

- (१) जिंक श्रीक्साइड १-२ मेन माता के दूध में घोल श्रांख पर डाली दिन को २-२ मर्रतवा डाली यह नेत्र रोगों पर उत्तम है विशेष कर नेत्राभिष्यन्द पर।
- (२) नेन्नों के रोगों—लाजी जलन व कड़क पर माता का दूध बार वार आंखों में टपकाना चाहिये।

(३) शुद्ध रसीत १ श्रीन्म गुलाय जल ४ श्रीन्स शुद्ध फिटकरी १ श्रीन्स

सवका एकत्रित मिश्रण दिन के दो तीन बार आंख में डालो इस योग से शीतऋतु व वर्षाऋतु की आंख दुखनी (नेत्राभिष्यन्द्) शीघ्र अच्छी होतो है पर दवा जरा लगती है।

(४) मण्डा मार्का गुलाबी रंग, शुद्ध फिटकड़ी, बोरिक ऐसिड, भीमसेनी कपूर सबको बरावर ते १ प्रहर खरत कर शीशी में रखलां इसे शुद्ध शीकों की सलाई से आंख में आंजने से आंखी

### नेत्राभिष्यन्द

(ले॰—हा॰ के॰ डी॰ तलनियां चिकित्सक चृड़ामिए। भिषमाचार्य प्रिन्सिप न श्री शिव कैलाश आयुर्वेद विद्यालय बागेश्वर अल्मोड़ा )

व्यक्सर शिशुच्ची को नेत्राभिष्यन्द ( श्रांख उठना या दुखना ) विज्ञेप देखा जाता है यह रोग बड़ो उम्र वालों को बहुत कम होता है बालकों की गुहाइयों पर इस रोग के विकार प्रविष्ट रहते हैं। जो मक्खियों के द्वारा अन्य स्वरध्य बालकों में इसका रोगाणु प्रविष्ट होना है और वे वालक भी इस रोग से कष्ट उठाते हैं नेत्र की लाली, आंध न खोल सकना, तेज कड़क व जलन, इसका प्रधान चिन्ह है। इस पर भी शोत ऋतु में इसका विकार कम व उद्या तथा वर्षा ऋतु में विशेष संकामण पाया जाता है ज्यों ही मार्च ह्या हथा यह रोग फैलने लगता है एवं कुटम्ब के जहां एक वालक की यह रीग आ घेरता है वहां अन्य वालक भी इस रोग से नहीं बूटने पाते इतना ही नहीं एक बार का आक्रमण दो चार दिन शान्त होने पर भी पुन: फिर से नया आक्रमण प्रारम्भ हा ६ साह तक एवं अनवरन कम से बालकों को यह रोग मताना त्राता है। एक भोजन, ऋषा वीर्य पदार्थ व शीत तथा मैला रहना इस रोग की पाले रहना है।

यदि यह रोग हो जाय तो इस बात का विशेष स्मरण रहे कि ३ रोज तक आंख में कोई दवा न दालो जाय पश्चात तीन रोज के दवा डालना धारस्य करे।

नथा श्रमावधानी **व** श्रन्ट सन्ट द्वा हालने से यह रोग श्रपना भर्यकर रूप धारण कर श्रांख को ले ह्वता है अस्तु इसके निवारणार्थ शतशोतु-भूत योग आगे दिये हैं।

हर किस्म की श्रांत दुखने पर

ऋाई ड्रोपलेशन नं॰ १ Eye Drop Lotion

No 1

जिंक सल्फ (Zine Sulph) है में न बोरिक ऐतिह (Borie acid) १० में न कोकीन हाइड्डो क्लोर (Cocain hydroch) २ में न

हिर्मटल्ड वाटर १ औन्स सबका मिश्रण स्वच्छ शीशी में रख तो । मात्रा—दो तीन वृंद हर चार घंटे पश्चान

यह दवा आंग्वों में नहीं लगती। आई डीप लोशन नं॰ २ Eye Drop Lotion No. 2

नेत्र विन्दु नं० २ बारगीरोल Argyrol ४४ घेन हिस्टिल्ड वाटर १॥ श्रीन्म

नोट — हिस्टिल्ड वाटर के स्थान में नं० १ का गुलाय जल डालने से दवा और भी गुण्पद हो जातों हैं।

दोनों का मिश्रण तच्यार कर हर दूनरे घंटेमें दो रोज तक हाल एक या हो रोज नागा कर दो जकरत पड़ने पर पुन: हालो हवा कांखों में नहीं लगती वरावर हालना ठीक नहीं।

#### Eye Drop Lotion No. 3

#### नेत्रविन्दु नं० १

अरजेन्टी नाइदास

Argenti nitras

४ म न

हिस्टिल्ड व।टर

२ श्रीन्स

दोनों का मिश्रण २-२ बूंद हर ४-४ घन्टे परचान डालो।

#### Eye Drop Lotion No. 4 नेत्रविन्दु नं० ध

Silver proteinite

प्रोटारगोल १ प्रौन्स उम्दा गुलाव जल Rose water २ पौंड

दोनों का मिश्रण तैयार कर बोतल में कर लो।

हर १-१ घन्टे बाद २-३ वृंद हालो नेत्राभिध्यन्द, नेत्र की लाली जलन व कड़क पर बहुत
फायदा करना है पर याद रहे १ हक्ता लगातार
हालने पश्चान फिर १ हक्ता नहीं हालना चाहिये।
वनी श्रांखे कुरूप हो जार्वेगी। विशेष कर बच्चों
के लिशे ये बहुत मुफीद हैं और दवा श्रांखों में
हालते ही शीतलता लाती है। लाली तथा रोगी को
तत्काल चैन देती है बाज २ बालकों को १ या २
वार के हालने मात्र से ही पायदा नजर श्राता है
इस दवा का चिशंष गुण श्रीष्म व शरद कालिक
नेत्राभिष्यन्द पर होता है। वर्षा व हेमन्त ऋनु में
इससे कम फायदा देखने में श्राया है। तथा वनी
हुई दवा कभी खराब नहीं होती।

#### नेत्राविन्दु नं० ४

Eye Drop Lotion No. 5

बोरिक रेसिड

४० घेत

कास्टिक

१० मे न

उम्दा गुलाव जल

४ श्रीन्स

उपरोक्त सब द्रव्यों का मिश्रण तण्यार कर हर दूसरे घन्टे में २-३ बूंद डालो।

गुण्—नेत्राभिष्यन्द सुर्खी व जलन पर शीव गुण्पद हैं।

#### नेत्राभिष्यन्द पर

Zinci Oxide

- (१) जिंक धौक्साइड १-२ में न माता के दूध में घोल धांख पर डालां दिन को २-२ मर्रतवा डालो यह नेत्र रोगों पर उत्तम है विशेष कर नेत्राभिष्यन्द पर।
- (२) नेघों के रोगों—लाली जलन व फड़क पर माता का दूध बार वार आंखों में टपकाना चाहिये।
  - (३) शुद्ध रसीत १ श्रीन्स गुलाव जल ४ श्रीन्स शुद्ध फिटकरी १ श्रीन्स सबका एकत्रित मिश्रण दिन के दो तीन बार

सवका एकत्रित मिश्रण दिन के दो तीन बार आंख में डालो इस योग से शीतऋतु व वर्षाऋतु की आंख दुखनी (नेत्राभिष्यन्द) शीच अच्छी होतो है पर दवा जरा लगती है।

(४) मर्ग्डा मार्का गुलाबी रंग, शुद्ध फिटकड़ी, वोरिक ऐसिड, भीमसेनी कपूर सबकी बराबर के १ प्रहर खरल कर शीशी में रखली इसे शुद्ध शीश की सलाई से आंख में आंजने से आंखों का दुखना लाली व आंखों के कई रोग दूर होते हैं पर दवा लगती बहुत है। १ वर्ष से कम उन्न के बालकों पर इसे प्रयोग नहीं करना चाहिये। योग उत्तम है।

(४) श्वेत गुलाब के फूल का स्वरस ले— किञ्चित् शुद्ध फिटकड़ी मिला बांख में बाजने से माई आंख अच्छी होतो है। यह कुछ कम लगती है व अच्छी है।

(६) नीम पत्र स्वरस में शुद्ध फिटकड़ी मिला भांख में २-३ वृंद आलने से नेत्राभिष्यन्द नष्ट होता है, दवा लगती है।



<del>BBBBBBBBBBBBBBBBBBBBBB</del> शिशु रिवयता-श्री धरणीधर शर्मा शास्त्री आयुर्वेदावार्य कक्षवा, मिर्जापुर । सुनि तव तोतर बात, पवि हियह हुलसात। श्रानंद-कानन-नेह-नहाते, आशा मलय समीर बहाते, सुख-बसन्त पितु हिय उमंगाते, जब मधुरी मुसकात, सुन तव तीतर बात ॥१॥ चंचल चखन चपल चित् किलकत. इत-उत अविट मगन मन थिरकत, निर्निमेष वत्सलता निरसत, परसि प्रफुल्लित गात । सुन तर तोतर बात ॥२॥ वीर युवा बनि कीर्ति कमाते, अरिमुख दरि रख रङ्ग मचाते, स्द्रशाली कुडुम बनाते, जनि जननी पुलकात । सुनि तव तोतर बात ॥३॥ होगा भावी देशोत्थान, पितरों को दोगे जलदान, तुम से हैं कल्याण महान् , आत्रो सुल मय तात। सुनि तब तोतर बात ॥४॥ दर्शन, काच्य तर्क विज्ञाना, बड़ो, लहो, जन यश सन्माना, भन्य देश को शिष्य बनाना, हो ऋषियों की जात। शिशु

सुन तव तीतर बात ॥४॥

### शिशुपालन और हमारी भूलें

( लेखक-कविराज भी शिवशरण जी वर्मा, फगवाहा )

प्रिय पाठक बृन्द !

शिशुओं की शोचनीय दशा आप से जिपी नहीं है। हमारे बच्चों का स्वारूप्य दिन प्रति दिन गिर रहा है। रोग बढ़ रहे हैं। धाप तनिक ध्यान से देखें तो मालूम होगा कि इनकी मृत्यु संख्या पहले से बहुत अधिक है। भारतवासियों की प्रधोगति के कारणों में शिश्रपालन में की गई भूलों को भी शामिल किया जा सकता है। मेरा यह सदीव प्रयत्न रहा है कि वैदा सन्मेलनी में पधारने क्षान वैद्यों के सन्मुख इसका सही सही फोटो खींचा जावे। सम्मेलनों में सभी का श्रधि क ध्यात वृ'टी प्रचार, सिद्धवोग सूनते वा स्नाने श्रथवा अनावस्यक प्रस्तावीं के पास करवाने की श्रीर ही लगा रहता है। स्त्रियों व बच्चों का शारीविक अधीर्गात की और बहुत कम ध्यान दिया जाता है। यही कारण है कि सम्मेलनी में साधारण जन ममुह अधिक भाग नहीं लेते । सम्मेलनों के माथ २ वच्चों की नुमायश का भी प्रबन्ध होना चाहिये, ताकि वहां पर गृहस्थियों की बहुत उत्तमना से व मरलना पूर्वक शिशुपालन पर शिला दी जा सके। माताओं को उनकी भूनों से आगाह किया जावे। श्राहा। है आप इस सम्मति की पसन्द करेंगे। मरा विचार है कि आगामी वर्ष कगवाई में जब पंजाब शस्ताय वैद्य सम्मेलन का ऋधिवे-शन होगा तो में इस श्रीप्राम की अमली जामा पतनाक्रीता । इस वर्ष परोपकार सेवा समिति क्त शहा के वार्षियेल्सब पर मैंन इसा बोबाम की

पेश किया या । जनता ने इसे बहुत पसन्द किया, कोई ८० वनचें की शारीरिक परीचा की गई उन ८० बच्चों में से केवल १४ वरचे ऐसे निकले जो कि सहा २ मानों में स्वस्थ व मुन्दर कहे जा सकते थे। मेरा विचार था कि शायद स्त्रियां अपने वच्चों को तुमायश में लाकर तुलवाने व परीचा करवाने से हिचकचार्वे । परन्तु मेरा खयाल उल्हा निकला। हमारी देखा देखी फगवाड़े की निकट-वर्ती आर्य ममाजों के वाधिकोत्मवों पर भी इसी प्रोप्राम को अपनाया जाते लगा है। बच्चों के पालने का विषय बढ़ा सरल व सुगम समभा जाता है पर यदि बास्तव में सोचा जावे तो मान-ना पहेगा कि यह विषय बड़ा विकट बड़ा पेचीहा और बड़ा ही ज़िम्मेबारी का है। नव मातार्थे तो इस में सर्वथा अनिभन्न होने के कारण वरूवों के किये अधिक हानि का कारण वन जाती हैं। नव-जान बच्चों की देख रख प्रत्येक प्रकार से करनी पहती है। ऋत का खयाल, भाहार का खयाल, वन्त्रों का ध्यान, शुद्धताई का खयाल, कच्चे के मिजान का ध्यान तथा अन्य रोगीं का ध्याम रम्बना प्रावरयक होता है। माशाओं को मट माञ्चम करना होता है कि वच्चे को किसी प्रकार का कष्ट अथवा पीड़ा तो तहीं, रात्रि को उत्तर ती नहीं हो जाता। कही कर्ण पीड़ा तो नहीं। क्या पाखाने का रंग ठीक है। इत्यादि इत्यादि। आप तनिक साधारण लोगोंके वरों में आकर देखें पता चतेगा कि उनके मकानात में न ती शुद्ध बाव के

मवेश के लिये कोई भरोका हो है और नही धुआं निकलने के लिये चिमनी। बच्चों व माता-श्रों को मकानों की निचली मंजिल में सीले ब अन्धेरे कमरों में जीवन ब्यतीत करना पढ़ता है। सील धुआं व गंदा वाय शिहा व प्रस्ता पर वहत मुरा प्रभाव डालती है । बच्चों के बीमार होते पर किसी योग्य वैद्य से मलाह लेनी अनावश्यक समनी जाती है। आप विदेश के बच्चों के म्बाध्य पर खयाल दोड़ाईचे वहां लाखी रुपया वर्ग्यों की लूबमुरन व स्वस्य बनाने वाले नियमों के प्रधार पर लगा विया जाता है। वहां के लोग ठोस कार्य करते हैं। इसी अभिप्राय के लिये बड़ी २ सभायें स्थापित हैं वे सभायें प्रयत्न काती हैं कि मामों में जाकर स्त्रियों को इन सब वालों के सम्बन्ध में आगाह करते हैं। हम इस को एक इस से भूल गये हैं। साना कि बड़े बड़े शहरों में भरकारी तौर पर बच्चों की नुमायश का प्रवन्ध होता है। परन्त वहां पर जनता पर पाश्चा-न्य चिक्रित्मा प्रणाली का प्रभाव डाला जाता है। श्रायबंद को न तो ऐसी होने वाली नुमायशों से लाभ हैं और न लोगों के दिलों पर आयुर्वेद चिक्तिया प्रणाली के लिये किसी प्रकार का लगाव ब प्रेम ही पैदा होता है। हमारे समम्मलन तब तक सफल नहीं फहलाये जा सकते जबनक कि साधारण स्त्री पुरुष हमारे प्रोपाम से लाम न उठा सकें। मेरी हादिक इच्छा है कि इस अपाल को प्रत्येक हृदय तक पहुंचाया जावे। मैं इसे किया-स्मक रूप में देखना बाहता हूं।

वस्त्रों की बढ़ती मृत्यु संस्था के कारणों की कहें भागों में विभक्त किया जा सकता है, तथापि समझा सद्देश ाहार इसका एक गुरुष वारण है।

उन्हें जहरत से कम या अधिक खिलाना पिलाना, बे समय विलाना पिलाना, दोषयुक्त आहार दूधादि का देना, उन्हें उचित समय से पूर्व ही श्रन्नादि का देने लग जाना, मिट्टी खाना, दूध में खांड का प्रयोग अधिक करना अथवा विलक्कल ही न करना इत्यादि २ ऐसी बहुत सी बातें हैं कि जिसके कारण बच्चे का शरीर दुबंल होना शुरू हो जाता है। कमजोरी दिन प्रति दिन बढ़ती रहती हैं। यहां तक कि वह सूख कर कांटा सा ही जाता है। उनकी शक्त अत्यन्त हरावनी मुरभाई हुई, बीचा पतली, टांगे कमजोर, रंग पीला, व श्रंग होल पड़ जाते हैं। पालाने का समय स्थिर नहीं रहता। प्रायः कब्ज् रहता ह । प्रम्बाना हरा पीलासा, अथवा भूरा, या खेत व चिपकने वाला लेसदार होता है। अस्त का अनपचा भाग इसमें अधिक होता है। माताये धेम वश अधिक दुध उन्हें पिला देनी हैं। जिस का नतीजा बदहजमी होता है। माता के अस्वस्थ होनं से अथवा उसके अधिक समय तक दूध पिलाते रहने से वह दूध बच्चे के शरीर के लिये आवश्यक अवयव पहुंचान के अयोग्य होता है। विलायता दूध के डिब्बे लाखी की संख्या में भारतवर्ष मं त्रिकते हैं। साधारणतया समभा जाता है कि उक्त डिच्बे वच्चों के लिये लाभ कारी होते हैं पर यान श्रधिक द्वान बीन स काम लिया जावे ता वह इत ने प्रयोजनीय सिद्ध नहीं होते जितना कि गाय का ताजा दूप अथवा धात्री प माता का अपना ज्ञीर । उनके ात्रध्यक धवयव (बाईटमीन) बहुत घट हुये होते हैं। उनसे पन हुयं बच्चे इतस मक बूत नहीं होते।

बच्चों को बिस्कट खिलाने का रिवाज दिन प्रति दिन बढ़ रहा है। बड़े बच्चों के लिए तो यह इतने हानिकारक नहीं पर दो वर्ष से नीचे की श्राय वाले बच्चों के लिए बहुत बुरे साबित होते हैं। इन में निशासता अधिक होता है। श्रीर वह बहुत देर से पचता है। छोटे बच्चों के दांत नहीं होते श्रीर उनका श्रामाशय कोमल होने के कारण ऐसे भारा पदार्थ का आत्मी करण नहीं कर सकता। तब हाजमें का खराव हो जाना अनिवार्य ही है। निधेन गृहम्थो अपनी आर्थिका-कस्था के कारण दुध का यथेष्ट प्रबन्ध नहीं कर सकते। दसरी श्रोर धनाट्य व्यक्ति भी इस दोप से मुक्त नहीं हैं। वे दूधके साथ २ मक्खन लोगा मलाई का अधिक प्रयोग करते हैं। अतः दोनों श्रे शियों के बच्चे बीमार रहते हैं। यह कहा जा सकता है कि प्रामों में बच्चे तनिक स्वस्थ व भारी बजनी होते हैं उसका कारण वहां की खुली बाय है। यदि शहरी कच्चों का भी खुला वाय में रोजाना घुमाने का प्रवस्थ हो जाय हो। यह कमी बहुत हुद तक पूरी हो सकती है। मामों की गन्दगी मैले के हर, इस प्रोमाम में बाधा डाल सकते हैं। इस बान के लिए वहां के लोगों में प्रचार की आवश्यकता है कि ऐसी गंदगी व ढेगदि फलांश रोग का कारण हो जाते हैं। शीतला, मस्रिका, विपैले ज्वर, मलेरिया, ज्लेग हैं जा, पेचिश ऐसी ही बानों से पैदा होते हैं। अमीर गृहस्थियों के वच्चों की खराक में यदि कार्वोहाई होट मांडादि का भाग बढ़ा दिया जावे और गरीव बच्चों के झाहार में कार्योहाई है है को कम कर दिया जावे तथा वसा का भाग बढ़ा दिया जावे नो

यामाशियक रोगों की दशा कुछ सुघर सकती है।
ये अमीर यच्चे जो अधिक मक्स्यन मिठाई के
खाने के कारण खूब फूले हुए मोटे २ दिखाई
देते हैं वास्तव में इतने मजवूत नहीं होते। वे
शीघ यक जाते हैं और शीच २ बमन दस्त
ज्वरादि रोगों में फंसे रहते हैं। उनके माता िपता
सदा ही डाक्टरों की राय से पाईपवाटरादि
औपधियों का प्रयोग करते २ उनके मेदे को एक
तरह से दुर्वल बना डालते हैं लेकिन असली
कारण की ओर ध्यान तक नहीं देते। उनके
आहार में यदि खांडा। दका भाग बड़ा दिया जावे
तो आमाशय तिनक ठीक मा हो जाता है। पर
यह देखने में बात आती है कि खांड के अधिक
देने से चुनमुने पैदा हो जाते हैं पेट में जलन हो
जाती है और अफारा हो जाता है।

अतः ऐसी दशा में गन्ने को खांड न देकर अंग्री शकरा अथवा ग्लुकोज देनी चाहिए। दूध में यदि मुनक्का के दो नान दाने उवाल कर डाल दिये जावें तो भी वर्च को बहुत लाभ पहुंचता है। पर कभीर फीका दूध देना भी लाभकारी होता है। अफारा हटाने के लिए मीए का पानी दूध में डाल देना चाहिए। मानायें यदि तनिक ध्यान से काम लें ना बक्चों की वीमारियां उनके आहार का क्याल रखने से ही दूर हो सकती हैं। पर हमारी मातायें असली कारण पर ध्यान न देकर धागे ताबीज पर अपना विश्वास जमाए रहती हैं। इसमें मातओं का दोप भी क्या है जब उनको उस बात का पता ही नहीं है कि आहार के दोप से भी बच्चे बीमार हो सकते हैं तो वह बहुत हद तक इस बात से

### सर्व बाल रोगों पर सर्वोत्तम स्वादिष्ट अर्क

( ले॰ - डा॰ के॰ डो॰ तल्निवां भिषगाचार्य अलमोड़ा )

चूना कलई जिना बुमा हुआ) ढाई २॥ सेर अमलास (गूदामात्र नया) पाव सेर-२० तो० हरड़
व श्रां टंकण-१४-१४ तोला गुलवनफराा, सींफ
स्वेतजीरा, गुलाव के फूल, उन्नाब, वायिविद्या,
मुनक्का (द्रांजा) सींठ आठों १०-१० तोलं, मुलेटी,
पीपल छोटी काकड़ासिगी तीनों ४-४ तोलं,
अतीम. मत्व नीख़ दोनों १॥ २॥ तोलं, इत्रगुलाव,
चन्दन तेल, सत्य नीसादर, तेल दाल चीनी,
१-१ तीला, कपूर देशी, फूल पोदीना (पेपरमन्ट)
६-३ मांश, सत्व अजवायन ६ मांशं TinetCapsicum दिग्चर कैपसीकम एक ड्राम Spt
Choloroform स्पिरट क्लोरोफार्म चार ड्राम
Acid HydroCyanic dil. पेसिड हाइड्रो
स्पानिक डिल दो ड्राम।

विधि-चीनी, इत्र गुलात, पिपरमेन्ट, कापूर, सत अजवायन, दीनों तेल, सत्व नीव,

वरी ठहराई जा सकती हैं। इस बात के दोगी हम स्वयं हैं जो इधर ध्यान तक नहीं देते। यह बल पूर्वक कहा जा सबता है कि हमारे कुट्वों की मृत्यु संख्या दिन पति दिन बढ़ रही हैं, और बढ़ती रहेगी। अतः यही निवेदन हैं कि इमकी रोक थाम के लिए आवश्यक कहम उठाना चाहिए।

सत्व नौसादर, टिकचर कॅप्सीकम, स्पिरिट क्ली. रोकार्म, ऐसि डहाइड्रो स्यानिक डिल, इनको छीड़ शेष सब वस्तुओं को जौकूट कर तो। चूने की साफ ब्रौटते १॥ऽ मन पानी में बुकालो । चूना यंटे-धंटे बाद एक बड़ी कलाईदार करछी से हिलाइये ऐसा १० बार करके ३ घंटे बाद चूने के कपर जमी हुई मलाई फेक दें। पानी धीरे फलई दार एक वह डंग या मिही के सटके में डाल जी कूट वाली औषधियां भी डाल दे व हल्की ह्यांच से पकावे अष्टमांश क्याध शंप रहने पर साक कपड़े से तीन मरतवा छान २॥ सेर चीनी मिला पुनः आंच दे। एक सार की चाहानी हो जाने पर उतार ले व शीतल हो जाने पर पुनः छान नीवृ सत्व व नौसादर मत्व का महीन चूरा मिला रख दे। दो रोज तक घंटे-घंटे भर बाद दव। हिलाने जाने पश्चान ७ रोज तक द्वा के बरनन को न हिलाबे फिर नवें रोज बाद ऊपर का अकं या तो पिचकारी से वींच ने या धीरे से निधार लें। नीचे का जमा काक उसमें न मिलते पावे। अब इस अर्क में काफ़ूर अजवायन पेपरमिन्ट का पिमलाया हुआ अके और टिक्चर केपिसिकम, स्पिरिट क्लोरोसाम, प्रसिक हाइड्रो स्यानिक डिल, गुलाब इत्र, तेल चन्दन व तेल दाल चीनी मिला कागदाद शीशियों में भर ले।

गुगा---यह वच्चों के सर्व रोगों पर उत्तम है।

#### दुग्ध वद्ध न का अनुभूत योग

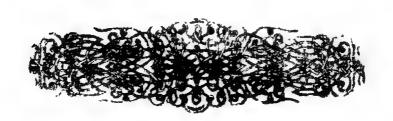
3.4.4	or .1	स्य अध्यक्ष	41.1
शतावर उत्तम	211	शालव पञ्जे	की ऽ।
श्रसगन्ध	21	मूसर्ला स्वेत	5=
मूमली स्याह्	21	बीजवन्द काले	21
सौंठ	21	<ul><li># गोला (खोपड्</li></ul>	त) अ।
* छुहारा	21	<ul><li>चादामगिरी</li></ul>	211
नागकेशर ऋस	रलीऽ-	<b>*</b> पिस्ता	5=
* द्राचा बीज र	हित ऽ१	जायफल	5-
लॉंग १	तोला	पीपन होटा	१ नोला
मिर्च काली २			5=
अष्टवर्ग (निश्चि	ान)ऽ॥	ज्ञीर विदारी कन	<b>₹</b> 54
वहमन स्वेत			58
<b>*</b> मिश्री	<b>ZX</b>	* वी गाय का	2811
*स्वर्णवर्कः १	नोला	तालमस्याना	5=
कमलगढ़े	s=	सिंघाड़	2=
गोश्चर वड़	z=	* सन्व गिलोय	s=
<b>*</b> नाजा खोवा	52		

निर्माण विधि—(\*) इस निशान की वस्तुओं को छोड़कर अलग श्रलग सुखा कृट कपड़ छन कर ठीक ठीक नोलकर एक पात्र में करने जावी।

फिर शहद, मिभी, घी, खोवा को छोड़ सब शंष समान की सिल बट्टे पर पिट्ठी कर लो। परचात इसे भी चूर्णों पर खूब मिलालो। श्रव ताजे खोये को घो में इतना भूनों कि बादामी रंग का हो जाय पर जलने न पावे परचात् जमीन में चामनो को उतार मिश्री का चूरा मिला लो जब मिश्रो पिघल जाय नो उपरोक्त चूर्णोदिक द्रव्य मिला खूब घोट लो। याद रहे शहद चासनी ब दवा के शीतल होने पर ही मिलाया जावे। श्रव २-२ तोले के लड़ू बांध बाहर से याद चाहो तो चांदों के वर्ष लपेट हो।

म।त्रा-१ लड्डू पात्र मग धारोष्मा गोद्ध के साथ यदि धारोष्मा दुग्ध न मिने तो स्त्रचा बत्राना दुत्रा दृष्ध ही पर्याप्त है।

गुष्य—माता की काफी द्ध उनरेगा।
निवंतना दर हा पाँछिकना आवेगी नया रक्त का
मक्त्वार होगा दिल दिमारा की पूर्ण तालगी।
मिनेगी प्रसुता के सर्व रोग दूर हो आनन्द प्राप्त
होगा तथा ये दृश्य बर्ड क लहु पाने में आत्यन्त
स्वादिष्ठ होगे। तथा बालक को भा इसके सेचन
से बिल्ड्ड शुद्ध दुग्ध मिलेगा।





करने ने क्रमार्थ देवी जी है। 7,1 1 1 1 - 1 लय जनन इत्य ज्यार वह प्रदेशाचा । सुप्ता कार व वसार वी में

學學 医医子宫足术

### "जीवन-सुधा के शिशुरोगविज्ञान का सम्पादकीय

#### शिशु पालन

वंद्यक चिकित्सा के सुविख्यान पत्र त्रावनसुधा का शिशु रोग-विज्ञान कड़ पाठकों के सामने हैं। विद्यान लेखकों ने बालरोग सम्बन्धी और शिशु पालन विपयक बहुज्ञान संबत्तित लेखों से पत्र के इस विशेपांक की श्री बृद्धि की है। श्रागे चल कर पाठक उन्हें खुद हो पढ़कर उनसे लाभ उठावेंगे।

शिशु पालन और शिशुकी की व्याध सम्बन्धी ज्ञानकारी पुस्तकें षाजनक हिंदी भाषा में दुलँभ क्या नहीं के बराबर है।

रिश्यु पालन के लिए जो कोई खास झान और विद्या की आवश्यकता है यह बात कम सं कम हमारे देश में किसी ने भी नहीं सोची।

हमारी मानाश्रों को तो शिशु पालन विषयक परमात्मादत प्राकृतिक झान के सिवाय श्रीर इत्य माल्यम ही नही। पहले जुमाने में शायद हमारी पूर्वजाये कुछ जानती बी, लेकिन श्राजकल की लड़कियां इन वातों से इतनी श्रनभिज्ञ हैं कि देखने में दुःख माल्यम होता है। श्राजकल भले ही लड़कियों के स्कूल मीर कालिजों में ज्योमेट्री, बीजगणित श्रीर मृगोल की काफी शिला मिले, इतिहास की बड़ी तिमार रात की की जीवन मरण समस्या मादत्व और शिश्र पालन सम्बन्धी झान प्राप्त करने का

कोई साधन नहीं। इस लिए ऐसे २ पत्रीक जिसमें इन विषयों पर सुप्रकाश डाला गया है। हमारे लिए विशेषतः रित्रयों के लिए श्रीर शिशु चिकिन्सकों के लिए परमावश्क है।

मानव जाति का सार धन शिशु है। जिस देश और जिस जाति में स्वस्थ सबल श्रीर सुसन्तानों की जननी न हो नो उस जाति का धरानल से बिलुप्त होना अथवा निर्वल बनकर पराधीन श्रीर गुलाम होकर जिन्दगी विताना सुनिश्चित है। भारतवर्ष में सन्नानों की जन्म मंख्यामें कोई कभी नहीं है। लोक संख्या दिन पर दिन बदनी जा रही है।

बल्क ३३ करोड़ से माढ़ पैतीस करोड़ हो
गये। भारत में शिशुओं की जन्म संख्या तथा
मृत्य संख्या में कोई कमी नहीं है। यहां पर
साधारणतया एकर खोंक एक ढेढ़ दर्जन वर्ज्य भी
कुछ ज्यादा नहीं समझे जाते हैं। अधिक सन्तान
बतीको भाग्यवती करके ही मानते हैं। निःसन्तान।
नारी तो समाज और परिवार में घृणा और
अश्रद्धा से देखी जाती है। "पुत्रार्थ कियते
भार्याः।" यह एक मंस्कृत कहावत है। पुत्र
भारतीय जीवन का गृहस्थाश्रम का चरम लह्य है,
पुत्र ही पिन्डदाता नरक त्राता, पुत्र जनक जननी
के परम सुख का कारण है। श्रतएव सन्तान
प्राप्ति के लिए भारतीय नारियां जो कुछ करती हैं
और कर सकती हैं सो भी थोड़ा है। निःसंताना

नारियों का देव पूजन, बार कर नेम आधार, तीथ, जप मंत्र करना यहां कौन नहीं जानता है ? लेकिन उन्हीं गोदी के लाल आखों के तारों को किस ढंग से पालन करना होगा। किस प्रकार परवरिश करने से वह वन्द्रकृत सक्तवस् और हर क्रिस्म की बीमारियों के शिकार न बन कर सुखी जीवन व्यतीत कर सकते है इसी झान की अपूर्णता भारत के हर प्रान्त की स्त्रियों में है। सन्तान प्राप्ति के लिए उन्हें जिवने रक्कम वेरक्रम के धर्माचरण सिखाई जाती हैं। सन्तान पालन के लिए कहीं शतांश से एकांश भी वह नहीं जानती हैं। यह उनका दोप नहीं है। यह हमार। दोष है। शिशु पालन, चिकित्सा विज्ञान का ही एक विभाग है। देश की चिकित्सक मण्डली को चाहिये कि मन्तान पालनऔर शिशु रोग चिकित्सा सम्बन्धी वार्तो पर प्रकाश हाल कर जन साधारण का उपकार करें।

शिशु जन्म के बाद नहीं बिल्क गर्भस्य होने के दिन से ही शिशु की प्रकृति पालन पर ध्यान देना चािह्ये। स्वस्थ माता पिता की सन्तान ही स्वस्थ होते हैं। दूपित रोग बस्त माता अथवा पिता को सन्तानकी आशा करना व्यर्थ है। जत-एव हरएक मन्तान कामी मनुष्य को अपनी सेहत के बारे में ध्यान रखना चािहये। पितृ रोग, जिसमें फिरंग रोग (Syphilis) सर्व प्रधान है प्रधानत: योवनावस्था के अत्याचार का फल है इस रोग में सूज़ाक की मांति लोग नि:सन्तान नहीं बनते, अपितु अधिक सन्तान, और विशंपत: गेग दृषिन बिद्धत सन्तान उत्पन्न होती हैं। इस रोग में अधिकांश गर्भ नष्ट भी हो जाता है।

इस रोग से प्रस्त पिता को सन्तान वसवान और स्त्रश्च होती प्रायः असम्भय है। गूंगा, बहरा बनना दिमागी कमजोरी हिंदुयों और प्रन्थियों की बीमारियां लेकर आजीवन दुख भोगना उनके लिये मानो कम फल चुकाना है।

इस रोग की चिकित्सा आजकल बड़ी आसानी से हो सकती है। अस्तु उक्त रोग अस्त व्यक्ति पिता अथवा माता बनने से पहिले भावी सन्तान की कल्पाशा कामना से अपने को निरोग बना लें, बरना इनके लिए निःसंतान ही होना अच्छा है। तपैदिक भी बैसा ही और एक भयंकर रोग है जो बंशगत व्यधि समभी जाती है। आज कल अवस्य तपैदिक (यन्तमा) आवी हवा के दोष से जनाकीण शहरों में बहुत होने लगा है, लेकिन बंश गत होने के कारण मन्तानों पर शीध आक-मण करना सम्भव है। मुद्धी, मृगी, बात व्याधि आदि भी बंशगत रोगों में शामिल हैं।

वंशगत रोगों को छोड़कर गर्भावस्था में भी
माता के स्वास्थ्य के अनुमार सन्तान दीर्घायु,
होएायु विलष्ठ, अथवा निर्वत हो सकती है।
गर्भावस्था में माता का खाद्य, वस्त्र, परिश्रम,
विश्राम, रहन-सहन आदि सभी वातों का असर
भावी संतान पर होता है। अतएव मुसंनान प्राप्ति
के लिये पहला कर्तव्य है गर्भवती माता की
हिफाजत करना। गर्भकालीन अवहेलना की
वजह से कितने अकमण्य, चिर रोगो जन्म लाभ
करके यथा भार से जगत को सताते हैं इसका
क्या कोई ठिकाना है ? गर्भिणी की शुश्रुपा की
बोर काफी ध्यान देना चाहिये। आजकल हर
सभ्य देश में गर्भावस्था में शिश्रु पातन

(Cantenetal clinics) के जगर बहुत जोर देखें हैं। हमाने देश में भी वैद्यक मन्धों में गर्भोपचार के जिसे बावेक प्रकार के नियम सम्म और पान भोजन की व्यवस्था है। जमर हम कहें न पालन करें-बीद दु:ख उठायें तो दोष हमास ही है। जमीन की शक्ति लेकर हो तो बीज पैदा होकर शिक्तशाली दुख बनता है। से ज ठीक नहीं हो तो फल कैसे ठीक होगा। माता का शरीर ही जसल संज है। मातृधर्म पालन करना प्रत्येक सुसाता का कर्तव्य है।

गर्भिणी ंचिकत्सा नारीरोग चिकित्मा का एक प्रधान का है। गर्भ कालीन उपचारों को हर बालिका को सिखाना ज हरी है। बालिकाओं के स्कूल कालेज की पाठिविधि से अन्य विषयों को हटा कर मातृ भाषा में जननी उपयोगी विषयों को सिखाना शिला विभाग का कर्त ज्य है। माता और शिशुकों के उपर ध्यान न देने तक हमारी जाति की प्राकृतिक उन्नति होना सर्वधा असम्भव है।

शिशु जीवन तीन भागों में बांटा जा सकता है। (१) गर्भ कालीन (Cautenaial) (२) शिशु कालीन (Infantple) (३) वाल्यावस्था (Cli-Idhood)। गर्भकालीन जीवन तो दशचान्द्र मान मास यूं माधारण भाषा में नौ महिना दश दिन है। यह नौ महीना दश दिन माता के शरीर के रक्त शुद्धि के जपर ही सन्तान का भावी समुद्राय जीवन निर्भर है। गर्भ कालीन माता की हरेक पीड़ा का प्रभाव शिशु के जपर ही सन्तान साता की हरेक पीड़ा का प्रभाव शिशु के जपर होता है। यूं भी देखने में खाता है कि वसन्त मोतीनगरा आदि रोगका गर्भस्य शिशु के जपर भी

प्रकोप हुवा है। इसलिए जहां तक बने माता की नीरोग स्थान में शुद्ध बायु युक्त कमरों में चानन्द पूर्व क संबंधी जीवन ।वताना चाहिए। अतिरिक्त नश्रीको चीजों को बरतना। अधिक मैथुन, अधंना परिश्रम, रंज, फिक, गुस्सा, गर्भी इन वाती से सन्तान रोगी और विकलांग पैदा होती है। अगर शारीरिक वैकल्य न भी हो तो मानसिक विकृति, कुलभावी होना तो अधिक सम्मव है। गर्भावस्था में श्रमिमन्य की जननी और नेपोलियन की माता युद्ध कथा अवग्र करती थीं श्रीर उनके 'श्रमिमन्य श्रीर नेपोलियन जैसे बोर सन्तानी की उत्पत्ति इतिहास प्रसिद्ध है। माता जो कुछ करती है, जो कुछ सोचती हैं और जो कुछ बोलती है सभी बातों का श्रसर सन्तान पर कुछ न कुछ होता है। भारतवर्ष में सन्तानों को कमी नहीं है। लेकिन दीर्घजीवी सुसन्तानों की खास कमी है। हर साल एक एक बच्चा जन देना और बाद में उन्हें अपने भाग्य से ही बचरे के लिए छोड़ देना पशुकों का भी धर्म नहीं है। पशु सन्तान से मनुष्यसंतान जन्म समय में अधिक निसहाय और अपनी रहा करने में सर्वथा असमर्थ ही होती है। इसलिए मनुष्य जैसा बुद्धिमान प्राची भपनी सन्तान के लिए हर विषयों को तैयार रखता है। माता के पास नी महीने का समय है। इस नी महीना के अन्दर भावी संतान के लिये सब कुछ तैयार रखना कर्राच्य है। बाज घरों में संतान प्रसव के समय मैंने देखां है एक टुकड़ा साफ कपड़ा, एक लोटां गरम पानी का भी मिलना मुश्किल हो जाता है। सिफ अशिकित घरों में नहीं पढ़ें लिखे अच्छे र परिवारों में भी यह बाते होती हैं। मानों संवान

प्रसव जैसी एक अचानक देवी घटना है ? यह क्या कम मूखेता है ? इस देश में जूतछात का बहुत परहेज हैं। अतएव प्रसुति घर में कूत छात की असम्भव प्रकार की व्यवस्थाए होती हैं गर्भ कोई रोग नहीं है। सन्तान प्रसव भी कोई बीमारी नहीं। इत की असली बीमारी मोतीभारा वेचक, हैजा, तपेदिक से लोग इतना परहेज नहीं करते हैं, जितना कि मामूली जापे में परहेंज और छतहात का वृथा आडम्बर फैला देते हैं, जिस से कभी २ प्रसुता और नवजात शिशु का भी जीवन संशय में हो जाता है। जापे के हरेक काम मेंल और गन्दगी से भरे होते हैं। घर के जितने बेकार और मैले २ कपड़े तथा घर का सब से छोटा अन्धेरा वरार ताजी हवा का कमरा, नीच जाति की धाय, फिर हजारों किस्म के रस्म रिवाजों को जकडबंदी में भारतीय लालों के जन्म का शुभ मुहुर्न प्रारम्भ होता है। यह जनम स्थान क्या ? केंद्रवाना में बंद होना जैसा है। ऋधिकांश घरों में भूत प्रेत के भय से प्रसित घर वालों ने रोगों का भी इलाज न करवाके सयाने दिवाने गंडा ताबीजों की शरण में प्रसता और शिशु को बोड़ देते हैं। शिशु का धनुषटंकार रोग जो कि आंवल नाल को मैली कैंची या दूरी से कतरने से होता है, उसका कारण भूतों का ही उपद्रव बनलाया जाता है । वैसे ही (nickets) सुन्वा अथवा रमशान रोग (बालशोप) जो कि शरीर के अन्दर उपयुक्त खाद्याभाव के कारल होता है उसे भी लोग भीतिक व्याधि सममते हैं।

जापे से जो गड़बड़ी शुरू होती है, वह आगे भी चलनी रहती हैं। शिशुकाल में शिशु को किस

ढंग से पालन करना चाहिए, प्राय: माताए यह जानतीं ही नहीं, बच्चों को समय असमब द्ध पिलाना, जब रोवे जब जी चाहे स्तन दान करना माता और संतान दोनों के लिए हानि कर है। हर तीसरे घंटे में रात दिन में ही बार प्रथम है माह के लिए ठीक हैं। रात को बच्चा और जच्चा दोनों को ही सोना चाहिये। रात भर बच्चे के मुंह में जाती लगा कर रखना बुरी श्रादत है, इससे सिवाय बदहजमी आदि बच्चे के रोगों श्रीर माता की कमजोरी के कुछ नहीं होता, बच्चे को ज्यादा दूध पिला कर बीमार करने के बाद (Boby weter ) बेबी वाटर, माईप बाटर, वालामृत बादि सेवन कराना, श्रधवा अपने द्ध को खराव समभ कर छड़वा कर हिटवे के द्ध पिजाना अथवा अन्त को देदेना हमारी मानाओं का शिश पालना विषयक ज्ञानाभाव का ही कारण है। बड़े घरानों में इन्हीं कारणों से बहुत वच्चे मरते हैं। अपने बच्चे की खुब दुध न पिला कर नीच जातीय उपमाता के हाथों सम्भाल देना फिर अपने बच्चे से उसे छुड़ा कर वह चाहे कोई भी देश में और कैसे भी बड़े से बड़े घर में हो बड़ी बुरी बात है। यस्चे की नियम पूर्वक दूध पिलाने में माता की सेहत और तन्द्रकस्ती नहीं विगड़ती है।

माता का दूध घी शिशु के लिए श्रमृत है। जो इस श्रमृत से शिशु जीवन में वंचित हुआ है वह वड़ा समागा है। जिस शरीर से शिशु की उत्पत्ति होती है, उसी शरीर का सार रस दूध ही उस सन्तान के जीवन का शर्रमिक एक वर्ष, कम से कम शुन्त निकतने तक लाय होना

र्जीचत है। प्रथम छै माह तो केवल स्तन दुग्ध ही पिलाना चाहिए। अगर कोई कारणवश माता का शरीर अस्वस्य हो और वह बच्चे को अपने दूध से पाल न सके तो बकरा का गधी का श्रथवा नौ का दूध ही पिलाना चाहिए। उपयुक्त जल मिश्रम से यह दूध विशेषतः वकरी का दूध वरुचों के लिए बड़ा मुफीद होता है। मगर डिब्बे का दूध जैमा ग्लाक्मो, इंग्लिक्स आदि हो तो उसके संग फलों का रस जैसा अंगूर, अनार टिमाटर, सन्तरा श्रादि का रम सेवन करवाना चाहिए। एक मास की उम् से चाय के चम्मच के बराबर दोनों बक्त देना चाहिए। फीं के रस में 'जीवनी का' (विदा मिन्म Vita mines) होनी हैं। Vitamines शरीर धारण के लिए खाद्यों में अति आवश्यक बस्तु है । इस जीवनी का अभाव से ही मश्लन का मर्ज (Nichets) हर्दियां, टेडी होजाती हैं।

शिशुओं के उदर रोग श्रीर दन्तोद्भेद कालीन पीड़ायें होनी हैं। माता के दूध में जीवनी का अचुर परिभाग में होना श्रावश्यक है। इस लिए माता के खाद्यमें भी फल, ताजा दूध, मक्खन आदि होना चाहिए। खाद्य की कभी क कारण ही बहु शिशु मृत्यु होती है।

शिशु पालन में छः विषयों पर विशेष ध्यान देना चाहिए ११) खाद्य, (२) समय (३) नियम (४) विश्राम (४) वस्त्र (६) वजन

शिशु प्राकृतिक प्राणी है उसे शह से जो आदर्ते हाल दी जार्येगी, वह उसे ठीक ठीक पालन करता जायगा। जिन बच्चों को समय पर दूध पीना, नहाना, सोना इत्यादि की आदत पड़ जाती है वह नोरोग ओर माना की कम सताने वाले होते हैं। वे ही आदर्त भिष्ठिय में अच्छी आदर्ती की नींव बन जाती हैं।

खाने के अलावा बच्चों के कपड़ों के ऊपर भी काफा ध्यान देना चाहिए, रंग विरंगी रेशम और नफ़ीस कपड़े और जेवरों के बजाय जो कपड़े बदन पर ठीक आजावें और आवश्यकताओं को पूण करे वहीं कपड़े अच्छे हैं। अधिकांश घरों में नवजात शिशु को कुरता वगैरा पहिनाना देशाचार के निष्द्र सममते हैं, लेकिन आज बीसवीं सदी में इन देशाचारों के पीछं पड़ जाना बेवकूफी है। शिशु के जम्म से पहले ही इसके लिए कपड़ा लत्ता बनवा कर रखना चाहिए।

हवा और रोशनी हर पेड़ पत्तों के लिए जैसी आवश्यक है बच्चे के लिए भी वैसी ही चाहिए। शरीर के उत्पर काफी कपड़ा हो तो सदी में भो किवाइं खोलकर कमरे में सो सकते हैं। इन मामूली बातों की उपेचा करके ही लाखों बीमारियों में आए दिन फंसकर हमारे अनमील लाइले लाल दुनिया संचल वसते हैं। इस लिए हर देश की जन्म और मौत को संख्या से श्रीसतन भारत को संख्या श्रधिक है। जहां मंट ब्रिटेन श्रीर श्रमेरिका के संयुक्त राष्ट्रों में संकड़ा छ: बच्चे एक साल की उम् में गुजरते है वहां हमारे देश में श्राधा से भी ज्यादा बच्चे गुजर जाते हैं। दिन पर दिन अमेरिका और अन्यान्य सभ्य देशों में जैसे सन्तितिनग्रह के उत्पर नारियों का बड़ा ध्यान है, अगर भारत में जन्म की संख्या उसी परिमाण में कम होने लगे तो शीघतया हमारी जाति का हाय होना सम्भव है। आजकल के ज़माने में हर साल एक २ बच्चा होना श्रीर मर जाने से कहीं सन्तति निमह के नियमों को पालन करना ही शब्दा है।

एक बच्चे की तीन साल की बायु के पहले दूसरे बच्चे का जन्म हो तो दोनों के लिए और उनसे बद्कर माना के लिए मौत के बगवर हैं। कमजोर दस बच्चों की अपेक्षा स्वस्थ सम्पन्न दो ही सन्तान अच्छी हैं।

प्राचीनकाल में स्वस्थ दीर्घाय होने के लिए लोग संयमी नियमी श्रीर ब्रह्मचारी रहते थे। होनहार सन्तान के लिए माता पिता तपन्या करते थे। आजकल वह भुनहरा अतीत स्वप्नवत् है। हमने पारचात्य जाति का श्रतुकरण किया है तो अन्धानुकरण किया है। उनके अच्छे गुणों को तो अपनाया नहीं, उनके शिध् पालन स्वास्ध्याचार आदि का कोई असर हमारे अपर नहीं पड़ा है. हमने श्रपनाया है उनके फैशनों को, उनके सिने-मात्रों को, उनकी ऐश की चीजों को। भारत जैसे विशाल देश में इस वीसवीं सदी में भी एक उपयुक्त शिशु-संस्था या शिशु झाश्रम की शिशु शाला नहीं है, और उधर रूस जर्मनी आदि देशों में हजारों शिशु-शालार्ये (क्रेश) आदि खुल गए 🕏 । हजारों नारियां शिश-पालन कारिएरी धात्री वन रही हैं। हमारी नारियों को ऐसे क्या काम हैं ? लाखों विधवार्थे किस सुसीवत की रोटी खाती हैं। उन्हें बड़ी जल्दी और बहुत ज्यादा संख्या में चाहिए कि इन लोकहितकर कार्यों में हाथ बटार्वे । फिजूल गप्प लड़ाना, तारा, शतरंज खेलना धौर बहुत समय सो, बैठकर खोना मानों बढ़े मरानों की खियों का उच्च कुलका अभिमान है। पुरुष जाति के हर कोत्र में प्रवेशाधिकार लाभ करने के लिये कौन्सिल इस्म्बली तक में लड़ने वालियों के लिये यह तो एक ऐसा कोत्र है जहां पुरुषों का कोई अधिकार ही नहीं । देश और जाति को बनाने वाली माताओं का ही शिशु-पालन कार्य सबसे प्रधान और पहिला कतन्य है। पुरुष की जननी, पुरुष की आत्री, पुरुष की जिलाने वाली नारी-शक्ति क्या कोई साधारण वस्तु है। दुनियां अगर किसी के कब्जे में है तो नारियों के ही हार्यों में है। नारो जाति अपना कर्तव्य नहीं समक पाई है, इसलिए दुनियां में इतना द्वत्द और दुल है।

हमें कमं चाहिये, कमं भ आनन्द है नारी का आनन्द शिशु-पालन में हैं। इसलिये शिशु-रोग चिकित्सा धीरे धीरे नारियों के हाथों में जाने लगी है। एक माता शिशु को जैसा समम सकती है पुरुष का वैसा सममना कठिन है।

शिशुश्रों के रोगों में सब से प्रधान दांत निकलते समय की न्याधियां हैं। दांत निकलना शिशु-जोवन का एक संकट काल है। लेकिन दांत निकालना भी प्राञ्चितक है। पहले से श्राहार बिहार के नियमों को ठीक तरह पालने से दांव निकलने में तकलीफ कम होती है। धाज कल बिजली के नेकलेस (गुलुवन्द) बहुत इस्तेमाल करते हैं। दांत निकलते समय माता को बड़ी सावधानी से खाना पोना और रहन-सहन की स्रोर खूब ध्यान देना होगा। दूध के दांत जिनमें कीलें (श्वदन्त) सब से ध्यादा तकशीफ होती हैं निकलने के बाद शिशुत्व समाप्त होकर बाल्य जीवन आरम्भ होता है। प्रथम का तीन वर्ष काल ही बही समय है। इसके बीच माता के और एक मंतान हो जाय तो बड़ी मुमीयन की बात होती है। इसी गांच वपकाल में बच्चा बोलना जो कि मनुष्य का नर्व श्रेष्ट गुण हैं मीखना है। अगर किमी बच्चे से बोलना छोग मुनने का कोई व्यति कम है तो इसी एक में उसका जहां तक बने इलाज भी अग नेना चाहिये।

ार पांच वय की क्षाय तक प्रची के थिए। पांच को द्वार भाग कि बाह्य अंध्वन का तासम है। पान वय अवद्याद प्रची-विद्यारम्भ करन सायक में जाते हैं।

यह पात्र अप ती शिशु-जावन-काल है। इसमें जात है कि और बीमारियों होती हैं, वा पाद्या-भाव अंति जो हुए रोग होता है उसका फल मन्द्र प्रजासन भोगता है।

भिण-जारत के अधान रोगों में माता लगगा, डि ध्योरियाः ज्यापान सेग ( बालशोप ) सदी, ज्ञाम, विकास सेवन बात (Canvahas) प्रधान है। वाकी मनुष्या की जो कुड़ रोग होत हैं। या: वे भागव रेगा अब लामकर तपंतक शिधु में हो। लग्हाचेन एक लिये उच्चपन स हा त्या है उस हिंद उन्हर ता राका लगवा तेता अन्हा है। उसरे बार दी वष वे अन्दर श्रीरणक पार उपवाले तो और भी उनस र। बचपन म न्या तहा से दीमा लग जाय तो बड़ा माना था सय बहुपरिमाण में जाता रहता है। यंचक स एक्त सूरत दिगड़ जाती है। श्रनेक वार एक दाव अंग विकत और बेगार भी हो जाने है। गौत्रों को तपैदिक बहुन होता हैं श्रीर बकरियां की विलक्कन नहीं। इसलिए बच्चों को बकरी का दध तो पिलाना अच्छा है ही अगर

गाय का दूध पिलावें तो उद्यालकर ही पिलाना चाहिए। शिशुं को जल देने में कभी रोकना नहीं चाहिये, नवजात शिश् को मंद्रा अथवा शहत मिला कर जल पिलाना चाहिये। रात को उथवा दिन के अन्य समय में प्यास हो नो दुध न पिलाकर जल पिलाना चाहिये, शुद्ध जल उद्या कर अलहहा स्ट्राईं में अथवा कोई पांगकार साफ पात्र में दक कर राव लेना चाहिये।

शिशु एक प्राकृतिक प्रामी है। उस उकृति के अनुसार हा पालना चाहिये अपने मनमजी नियमों से नहीं। फिर शिशु मुक प्रामा हूं। पपने रोग का कष्ट कह कर चताना उसके वश अ नहीं हैं. इसिलये शिष्ठु की जगर्सी भी तक्लाफ की प्रारम्भ से ही गीर से इलाज करना आदिये आर रिएए रोगों के अभील चिकित्सक व अनुसवी वैद्य व वास्तरों से हा चिक्तिया करता. चाहिये। भाइना फांक्सा गंडा ताबी व ही छाशुरीन चिकि-स्या का प्रधान उपाय नहीं है। इस उक्तपायी के कारण शिशुओं का कान से हुई दिल होती है। यच्या पेदा होने के नात्र जाता दशन लेना चाहिये । तवजान शिशु का बजन ७ से १२ पीड याता ॥ संग से . संग तक होता है । ता पीड के नीचे ने वजन वाले बच्चों का जीना और पलना मुश्विल है। स्वस्थ शिशु हैं मास के बाद दुगुना ोर एक साल के नाद तिगुना वजन का होता है ६, १२, १८ पौंड, अथवा ७ १४, **२१** पौंड वजन साधारण भारतीयों के वच्चों के लिये ठीक हैं। दृष्टर वर्ष में २८ पोंड और तानरे वर्ष में ३२ पौंड ठीक वजन है। वजन लेते में वहम करने की कोई बात नहीं, बजन से ही बच्चे की

सेहत का ठोक २ पता चलता है।

श्रतपव शिशु पालन के लिए इन दश नियमों को हमेशा ध्यान में रखना चाहिये।

१ शिशु प्राकृतिक प्राणी है प्रकृति अनुसार उसके सब काम के लिये समय नियत होना आव-श्यक है समय पर दूध पिलाना, निहालाना, सुलाना और खिलाना चाहिये।

२ शिशु बुद्धिजीवो मनुष्य प्राणी ह । उसे पशुर्थों की भांति पालन न करके बचपन से बेसे उसकी बुद्धि का विकास हो इस ढंग से पालना चाहिये। शिशु रंगीन चित्रों को और उजाले की बहुत चाहता हैं। शिशु के मनोरंजन के ऊपर सर्वदा ध्यान रचना चाहिए।

शिशु के लिये शुद्ध वायु श्रीर सूर्य किरण
 चाहियें।

क्ष शिशु के लिये मातृ दुग्ध श्रमृत है । उस का स्वाद्य श्रोर, पानीय शुद्ध, हल्का और बल बद्ध क होना चाहिये ।

श्रीशु की अच्छी आदतों के आधीन
 करना चाहिये।

६ शिशु का वजन तीलना चाहिये।

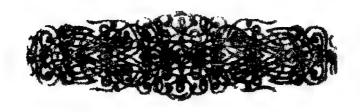
भर्वदा उसे साफ सुथरा रखना चाहिये।

निहलाना, मुख, दांत, केश, नम्लून श्रीर चर्म परिष्कार रखना चाहिये।

म्हिरा के वस्त्रादि साकसुबरे ऋतु अनुसार हलके, उनी, सूती आदि होने चाहिए। भारी जेवर, वस्त्र और अत्यधिक आभूषणों का आवश्यकता नहीं है। वस्त्र शरोरीपयोगी न अ्यादा दीला अथवा तंग हो। रोजाना कपड़े वदल देना चाहिए टर्डा पेशाव से सने हुए कपड़ों में बच्चे न रहने पार्च। इन इस नियमी को ब्यान देकर शिशु का पालन किया जावे तो आशा है मानाओं को शिश् वियोग और रोगप्रसित शिशुओं के लिए दु:स्र उठाना नहीं पड़ेगा।

मारत के हर प्रांतमें शिशुशालाओं श्रीर शिशु पालन सम्बन्धी शिद्धा संस्थाओं का श्रावश्यकता है। जन साधारण श्रीर सरकार दीनों की इस श्रीर ध्यान देना चाहिए।

श्रम में लुद श्रीन श्रधिक कुछ शिश्यपालन के बारे में लिलकर शिश्यपालन श्रीर शिश्य रोगों के बारे में बिद्धान लेखकों के लेखों की तरक पाठकों का ज्यान दिलावी हूं। मुझे श्राशा है इस विशंपाङ्क की विशंपना से सर्व साधारण लाभ बठायेंगे। —हा० कुन्तलकुमारी देशी



### अनुभूत प्रयोग

नं १ वसों की घुट्टी---

यदि कब्ज़ हो तो बनफराा, मनाय, श्रमलतास का गूदा हर एक तीन माशा बड़ी हैंड, छोटी हैंड, बायबिड़ंग, नाबन्तुम्बा, गुलाब का फुल हर एक दो माशा, दाख उन्नाब, हर एक ३ दाने १० नोला पानी में भिगो कर २,४ उपाल देलें, छानकर थोड़ी भी तुरंजवीन और बूग़ मिलाये, दिन में २, ३ बार कपड़े की बन्ती से चुसाये। नं० २ जन्म घड़ी—

सींफ मा० १, मुनका दा० १, वार्यावहंग, नाकस, नर कचूर, वक्कन हुँड वहां, गुलाव का फ़ल, मनाय, हर एक १ माशा उन्नाव दा० १ क्रमलतास का गूड़ा मा० ६ (यदि बच्चे को तीन दस्त से अधिक आवें तो इस घुटी को देना बन्द करवें )

नं०३—(बाज वच्चों में पैदा होने से दृसरे से पांचवं हिन तक कामला (आंखें पीली होना) रोग हो जाता है। याद यह हल्का सा हो तो दो तीन दिन मं स्वयं ही जाता रहता है नहीं तो उसकी माता को ये दवाइयां पिलानी चाहियें।(A) अर्क मकीय ४ तो० अर्क कासनी ४ तो० शर्वत अनार ३ तो० मिलाकर प्रातः व सायंकाल पिलावे। ४०,१० वृंद शर्वत दीनार वक्वे को चटायें।

- (B) कर्सीदी की १ पत्ती मां के दूध में पीसकर करुने की पिलार्बे।
  - (C) यदि कृष्य होने तो पहले अरंडी का

तेल मार्श २ मां के दूध में मिलाकर पिलाक बाद में हाइड्रारजराई कम केटा है प्रेन, सोडा बाई कार्व २ मेन, पत्थिरियाई कम्प० २ प्रेन इसकी १ पुड़िया बनावे। ऐसी १--१ पुड़िया सुबह शाम मां के दूध में मिलाकर बच्चे को पिलावें।

नं० ४-बच्चे की नाभि फू.ना Umbilical Hermia जिसमें नाक बाहर की उमर आती है। प्रयोग—कपड़को १ गई। रखकर वारीक रबड़ की पट्टी से लपेट दें। या शीशं का बुरादा या मुरमा पोटली में बांधकर फूली हुई नाभि पर रख के कपड़ा या रबड़ की पट्टी लपेट दें। यह प्रयोग ३, ४ महीने तक बराबर जारी रक्खे।

#### नं०५--कचे का नामिशाध

नाल काटने के बाद यदि वस्त्रे की नाभि पक्त जावे तो उसे नीम के पानी या कार्बीलिक लोशन से घो दिया करें और यह लेप करें, मुस्हासंग, संदूर, सेलखड़ी इन्हें सुर्में के मानिन्द बागिक पोसकर हुई से ज़स्म पर छिड़क दें। बन्चे की कुड़ा न होने दें।

#### नं ६ - बच्चे की आंख दुखना ।

श्योग, एक रत्ती किटकरी शा तोले गुलाव के अर्क में घोलकर १, १ यून्द दिन में दो तीन बार डालें। और आंखके चारों तरफ गिलेश्वरमनी फिटकरी, छोटी हड़, मेंहदी के पने हर एक २ माशे, अफीम १ रत्ती मां के दूध में पीस कर लेप करें।

#### नं०७--वच्चों की म्बांसी-

काकड़ासिगी बहुत बारोक पंप्सकर थोड़े शहद में मिलाकर दिन में कई बार करके बच्चे की घटावें। अगर कब्ज जोर मीने पर बलरामब हुत हो तो गुलबनफशा, मुलहदो. लाबुबो, सौंक, हंसराज, १-१ मा० मबीज मुनक्का दो दाने, अंजीर घोषाई दा०, खत्मी, खुब्बाजी १- मा० मबबो दो छंटाक पानी में द्रशान में अब चौबाई रह जावे तो छानकर शहद या पुराना सुद इसा० मिलाकर थोड़ा थोड़ा पिलावें। यदि बच्चे का पैदायश के बक्त से चालाम राज तक ६ मा० शहद रोजाना चटा दिया करे तो पनला की बोमारों न होगी।

#### नं =--वच्चीं की काली खांसी-

(Whooping couga)

अफोम चार गाई, जाफान तीन माई, दारचीनी इ नार, नीक ४ मा , गुगल ४ मार, मार, गोन्दकतारा ४ मार, जहरमोहरा ४ मार, अवड़ा- मिगी ४ गार, वारहिएगा जला हुद्रा ४ मार, सबको वारीक पासकर वीटदान के लुखाब में बाजर गोला गोलायां बनावी। बहुत छोटे बच्चे को एक गोली, उससे बड़े को हो, मां के दूध में या अर्क गोज़वों के माथ है अक्सीर है।

#### मं १ १ -- प्रची ा पन्ता मान

होंग ३ मा०, २ ५ तु भी ३ मा०, पीपल ३ मा०, यवतार ३ माशा, जदबार ३ माशा, चोक ३ मा०, सुहागा भुना हुआ ३ माशा भवको लेकर शहद में घोटकर बाजरे बराबर गोलियां बनावें। दो रसी गोलियां मां के दूध में, घोलकर दें, ज्यादा बड़े बच्चे को उसकी उसर के मुताबिक।

#### नं० १०--- बच्चों की छाती पर बलगम बोलना--

इसमें रोगनवादास में मोम डाल कर पिघला-कर छाती पर मालिश करें। नं० ११ - - बच्चों की पसली (टस्का ) -

अमलनास का गृहा माशा ३, कुड़े की छाल माशा ३, विसांद के बीज नग २, चिड़ियों की बीट नग ४, इस नोला पानी में उन्नलें जब डाई तोला रहे छानकर १ नोला शहद मिलावे। दिन भर में ३-: बार करके पिलावें।

( अनुभृत यायुर्वेदाचार्य ए० देवकीन दन रामा दहली )

नं ० १२-- बच्चे की हिचकी -

बच्चे की बदहरूमी का इलाज छरे, गहेन तक पानों में बिठादें। अर्क सींक, अर्क पीदीना या अर्क सीया थोड़ा धीड़ा पिलावें। मीर के पैथ ने का चन्दा अवादर नीथाइ रूपि वर्त शहद में मिलाकर चटायें।

नं १३ - बच्चे को इशदा प्याम लगना-

इसमें वंशलीचन ६ माशा, कमलगहंट की गिरी १ नोला इसकी एक मिट्टी के वर्तन में आध्याव श्रक गाजुवां में भिगीर्ट इसी में से जग जगमा रिनाते गहें।

नं० १४-- बच्चे का पेट अफरना-

श्ररंडी के तेल में र-ध्वृत्द तारपीन का तेल ।

मिलाकर पट पर चुपड़ दे और कई से हल्का
हल्का सेकें। मींफ, नर कच्यू, कालीहड़ हर एक
ध माशा, मुदागा भुना हुआ १ माशा, १ रसी हींग
सबका पीसकर श्रदरक के पानी में मूंग वरावर
गोलियां बनावें। एक गोली दिन में ६-३ बार दें।

#### पुस्तक परिचय

#### (१) पंचभृत विज्ञान---

मूल संस्कृत और हिन्दी भाषानुवाद सहित, नाकार २० x ३० १६ पेजी, पृष्ट संख्या ३१० पुस्तक की छपाई बरोंरा प्रशंसनीय है। मूल्य २) प्रगोता और प्रकाशक आयुर्वेदिक एएड यूनानी तिबिब कालेज देहली के सीनियर प्रीफेसर, आयु-र्वेट के प्रकारह पहित कथिराज थी उपेन्ट्रना न दास जी भिषयाचार्य कान्य, व्याकरण, मान्य तीर्थ, मांच्य मागर महर याजार (देहली )। यद्यपि अप्यर्वेद साथ के भिक्ति स्वरूप पचभूतों का बागेन -रक समात आदि आयुर्वेदाय तथा पुराण, दशन वंडानि भ विद्यमान होते हुवे भी उत्त २ क्षतायीं रू मत भेद तथा प्रकारान्तर है। विशेष अपने करने के कारण अब के जिन स पाइचान्य वंजानिक साम्त्रताय इस पाञ्चमहलक ्रसिद्धान्त की कपोल काल्पा एवं अवैज्ञानिक बता का इसका नुलोन्छ्द अस्य चाहते हैं। उसा पंच भत के स्वरूप निर्णयाथ तन नवस्वर मार मे पुरुष चीत्र बनारम 💀 एक अभूत पुत्र विद्वत सम्मेलन हुन्ना था, उन अम्मलन म पद्मानूत पर जितने भी श्राचीप है उन्होंने ध वे सब ने सब २० प्रम विचाराथ सम्मेलन से पेश । २ ये गये थे। उन्हीं प्रश्नां की लदय कर श्री कांबराज जी ने प्रस्तुत पुस्तक में अपनी अकार्य युक्ति व तके हारा प्रमाणी लहित पश्चभूनों का स्वरूप निर्णय करते हुये आधानक विश्वान वाद कि साथ तुलना भी है, और स्थान २ पर पारचात्य वंझानिक ,सिद्धान्तों की अपूर्णता व अस्थिरता को दिग्याया है, नि:सम्देह इस पुस्तक में पाछा भौतिक जैसे नाड सिद्धान्त की ऐसा सरल हिन्दी भाषा द्वारा समभाया गया है, कि जिसर इस एक ही पुरनक को पदने के बाद पक्कभू। विषयक ज्ञान में अन्य प्रसंद देखनेकी आवस्यकता नहीं रहती । वैद्यवन्ध्र

तथा विद्वान् पाठकों से हम श्रानुरोध करते हैं कि वे इस अभूत पूर्व रचना से लाभ उठाकर कविराज जी के परिश्रम को सफल करें।

#### त्रिदोप विज्ञान--

इसके भी रचयिना, प्रकाशक, साइज, झपाई वगैरा सब उपरोक्त पञ्च-भूत विज्ञानवत ही हैं। केवल भेर इतना है कि इसकी 99-मंख्या २८० ंपर मूल्य १॥) है। आयुर्वेद के आधार भूत विदोष मिद्धान्त पर आधुनिक वैद्यों ने भी त्रिदीप के स्वरूप, गुए, धर्मादि के विषय में कितने विरुद्ध मन मनान्तरों की सृष्टि करडा ली है, या बान बायुर्वेदझीं से छिपी नहीं हैं, उन ब्राह्में पीं का लिसकरण् करके त्रिटोप का मिद्धान्तत: स्वरूप, रुगा, धर्मादि सिद्ध करने के लियं काशी विद्वत्स-स्मेलन में जो विचार्य विषय रक्खे गये थे उन्हीं की लक्ष्य कर कमशः यह पुस्तक लिखी गई है, प्रस्तात पुर क में विद्वान लेखक ने दर्शन और विज्ञान की सहायता से मिद्धान्ताभास विरुद्ध मत म पन्तरों का स्वरंडन करके त्रिदोषवाद के सिद्धान्त के इस प्रकार सरल कीर सार गर्भित यूक्तियों से उर्गन किया है जिनको समम लेने है बाद त्रिदोप वाद में मन्देह करने का अवनाश ही नहीं रहता, परन्तु इस पुस्तक की पढ़ने से पूर्व पद्ममूत विज्ञान कें। अवश्य पढ़ लेना चाहिये, हमारी सम्मति सें इन दोनो पुस्तकों दी। युर्वेद् विद्यालयों के पाठव कम में रखना चाहिये, स्तेतक प्रायः अधे शिक्ति वेंद्य व क्षात्र ही आधुनिक विज्ञान से मोहित होकर व्यायुर्वेद के सिद्धान्तों को उपेता करने लगते है। हम कविगाज जो की इन दोनों अपने रचन नार्ज का हवय से स्वागत करते हैं और अपने धुपालु प्राहकों से अनुरो । करते हैं कि वे कम से कम एक बार आपकी इन दोनों पुस्तकों को मंगा त्रर अवस्य पड़ें।

### निवेदन

प्रिय पाठक गए !

आज हम उस परम पिता जगन्नियन्ता भगवान् की कृपासे जीवन सुधाका यह 'शिशुरोम-विद्वान'' आपके कर कमलों में उपस्थित कर रहे हैं। हमारी उत्कट इच्छा थी कि हम इस विशेषाह को और भी सर्वाङ्गपूर्ण एवं सुन्दर सुपाठ्य ठोस सामग्री से परिपूर्ज करते परन्तु विशेषाह का कलेवर बढ़ जाने के भय से फिर भी इसको सफल एवं उपयोगी बनाने के लिये निरन्तर परिश्रम करके जो कुछ हम तैयार कर सके हैं वही आपकी भेंट करते हैं।

सब से प्रथम हम अपने कृपालु अद्धेया माननीय श्री० डा० त्रिलोकीनाथ जी वर्मा सिविजन सर्जन महोद्य के अत्यन्त आभारी हैं जिन्होंने अपने अमूल्य चित्रों को देकर इस विशेषाङ्क के सुन्दर बनाने में बढ़ी सहायता दी है, और साथ ही हम अपने आंजस्त्री लेखक महोदय श्री० डा० वेदच्याम दत्त जी शर्मा शास्त्री तथा श्रीमती डाक्टर कृन्तलकुमारी जी देवी के अत्यन्त अनुगृहोत हैं. जिन्होंने इमारो प्रार्थना पर अपना अमूल्य समय देकर इस विशेषांक का सम्पादन कार्यभार स्वाकार कर अपनी अमृतमयी रचनात्रों से इसे विभूपित किया है। इसी प्रकार हम अपने कृपालु लेखक श्री डा॰ कन्हेंया-साल जी जैन मैडीकल आफ़्सर children free dispensary काजीही व देहली महोदय का भत्यन्त भन्यवाद करते हैं कि जिनका कृपा से ही हमें स्थानीय योग्य डाक्टर महोदयों की अमृल्य रचनार्ये प्राप्त हुई और अन्त में हम अपने रूपालु श्रद्धेय लेखकों को भी नहीं भूल सकतेकि जिन्होंने अपने अमूल्य तेख भेज कर इस विशंषाङ्क को सुन्दर सुपाठ्य रचनाओं से पूर्ण किया है, परन्तु फर भी इम अपने कृपालु लेखकों से एक नम्र निवेदन करना चाहते हैं कि हमन विशेषाङ्क की विषयसूची में यह लिख दिया था कि जो लेखक महोदय जिस विषय पर लिखना स्वीकार कर वे उन विषयों की सूचना दे दें ताकि क्षेष विषयों को भी पूरा कर दिया जाने परन्तु लेखक वर्ग ने हमारे निवेदन पर ध्यान नहीं दिया। फल यह हुआ कि एक ही विषय पर कई लेखों के आने से पुनरावृत्ति हो गई। किसी किसी महानुभाव ने सभी विषयों पर थोड़ा २ लिख दिवा। इसलिये हम सम्मानास्पद लेखक मंडल से नम्न निवेदन करते हैं कि वे अपने लेखों में मौलिकता व अनुमवपूर्ण खोजों का ही अवस्य भ्यान रखें, केवल मन्यानुवाद से काम नहीं चल सकता। अन्त में में अपने माननीय लेखक वर्ष तथा क्रपालु प्राहकों से सविनय निवेदन करता हूं कि वे भित्रध्य में भी तदा स्नेह पूर्ण दृष्टि रखेंगे। तथा विझेषाङ्क के विस्तार के भय से जिनकी अमूल्य रचनायें हम नहीं छाप सके हैं उनके लेख भविष्य में अवस्य छापे जार्थेशे।

सम्पादक जगवद्देव शर्मा

### THE DHARMARAJYA

**BBBBBBB**BBBBBBBBBBBBBBBBBBBBB

Iliustrated Weekly.

The only first-rate journal of the capital of India devoted to Hindu Religion, Culture & Civilization Conducted

UNDER THE SPIRITUAL GUIDANCE

OF

H.H. Shri Jagadguru Shankarcharya Maharaj of PURI.

It is the BEST MEDIUM for ADVERTISING
SWADESHI MANUFACTURES.
KINDLY ASK FOR THE RATES.

Price per Copy

One Anna

For further particulars please write to:-

The General Manager,

THE DHARMARAJYA ILLUSTRATED WEFKLY.

MANGAL BUILDINGS, Behind The Lloyd's Bank, Chandni Chowk,

DELHI.

## INSURE

YOUR

LIFE

WITH

The Commonwealth Assurance Co., Ltd.

OF

POONA

Wanted

INFLUENTIAL & ENERGETIC AGENTS ON SALARY AND COMMISSION

For particulars please write to:-

The Secretary.

The Commonwealth Assurance Co., Ltd.

Chandni Chowk

D. F. L. H. I.

### सिद्ध सालव पाक रसायन

। रिनम्टर्ड ।

यह रसायन वंश्वे-सम्बन्धी सब दोषों को दूर करके उसे शुद्ध पष्ट एवं सन्तानीत्पत्ति के थीरय विसीय बना देता है। धातृ दीर्बल्य गेंग से स्वाकात्त होकर जिन सन्त्यों के रस, रक्त सीस शुक्रादि सम्प्रणें धातृ जाण हो गण है तथा बीय के पतला होनेसे स्वानदीं प्रशिव्यतन, इत्तियं की शिक्षिलती परपत्तदानि, व्यधिक शुक्रपात तथा भ्वजसद्धादि रोगों के कारण से इत्तियं सुख्य रहित वशलीप की साथकी से समय व्यतात कर रहे हैं, उत्हें इस रसायन का सेवत करना समान सुख्य एवं सत्तानी त्याल वे किए अत्वाव सम्बक्षण होगा। यह देवी औषधि बुद्ध पुरुषों की भी युवा तृत्य शक्तिमान बना तेला है (देशा का वहाँ) तथित देवी है। इस कारण उन लोगा के लिए जिन्हें दिसायी काम करना होता है इस कारण उन लोगा के लिए जिन्हें दिसायी काम करना होता है एवं पत्त-सम्पादकों, वाल्य शक्तियान का वहाँ पत्ति हो है। स्वर्ण विद्याधियों क्लकों एवं पत्त-सम्पादकों, वाल्य वाल्य स्वर्ण की है। सुख्यकारी वस्तृ है हर तरह की विवेत्रता की दूर करने वाल्य करने वाल्य स्वर्ण है। सुख्यकारी वस्तृ है हर तरह की विवेत्रता की दूर करने वाल्य करने वाल्य स्वर्ण है। सुख्यकारी वस्तृ है हर तरह की विवेत्रता की दूर करने वाल्य करने वाल्य स्वर्ण है। सुख्य एक सेवर प्रस्ता का हिट्या २० हर

八京京東京 白班教育 日本於北京東京東京大学大学

とれば ながないな

### मिद्ध मुपारीपाकरसायन

र रजिस्टन् र

यह क्यापार १ ८० वहमून्य न्वाद्धा से तैयार होता है क्यानि गर्गर यह करने में इसके लगान प्रमान क्यापा करा है सहस्य श्विया जा यानिसमा की वेदना सहते र लावार होगई था। जाने सम्मान में लिति बार इ एउन हीता थीं, जिन्हें अपनी जिन्हों। भर माल्म दोती था, जा स्वीन्समान में लिति बार इ एउन हीता थीं, जिन्हें अपनी जिन्हों। भर माल्म दोती था, जा सत्तान के लिए रान दिन कुट्ना प्रीर तरमता थीं बाज वहीं सामास्यवर्ता देविया हमारे सिद्ध सुपारी पाक रसायन के रामकान कर्यही है। जिससे सेवन से वे स्वेत तर, रक्तप्रदर, मामिक वर्म की श्रानियामितिया बार र सम के सिरना वालक हो होकर मरजाना तथा एक बार बालक हो हर फिर न होना, दीर का बाम के सिरना वालक हो स्वलात निवलता, दुवेलना, सिर, कमर नलोंका दद, सिरका यमना चेहरे का काकापन खादि खनेक रागा की यन्त्रसा से खुट्नर स्वस्थ श्रीर पुष्ट होकर कई र बालकों की मानाए बन गई है। इसके सियाय जापे की बामारी, बुढ़ाये का कमजोरों में बड़ा मुक्ति है। मुल्य एक सेर ९) कर १ पाव का (इट्ना २ कर

# रक्त विकार की अत्रक ओपि<sup>श</sup>

हिमालय पर्वत की उन दुर्गम चोटियों की कुलारों मन बर्फ़ में उकी रहती हैं, एक विशेष जड़ी पाइ कि हैं। प्राचीन काल से ऋषि मुनि इस ऑपिधि का प्रयो करते आये हैं। १२० वर्ष हुये जब हमें पहले पहले थे बूटो एक पढ़ाड़ी रियासन के राजा साहिब की कृषा से प्रा हुई थी। तब से आज तक लाखों रोगियों पर इसे आज़मा गया और हमेशा गणकारी पाया है।

के कारण पैदा हुये तमाम रोगों की एक मात्र अच् द्वाई है। एक पैंकेट मात दिन के लिये काफ़ी है क़ीम ९ पैंकेट केवल ९) डाक व्यय पृथक।

बृहत् आयुर्वेदीय आपध भागडार, चांदनी चाँक, देहली